મળવાનું ઠેકાણું
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કુવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

×
પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૦૦૦
વીર સંવત્ ૨૪૮૮
વિક્રમ સંવત્ ૨૦૧૮
ઈસવીસન ૧૯૬૨
×

મુદ્રક
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
ઘીકાંટા રોડ. અમદાવાદ

प्रश्नव्याकरणसूत्रकी विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१	मङ्गलाचरण	१—२
२	अवतरणिका	३–१३
	प्रथम अध्ययन–प्रथम भाग	
३	आस्रव और सवर के लक्षणों का निरूपण	१३–१८
४	पहला अधर्मद्वार का निरूपण	१९–२६
५	" मृपानादरूप " दूसरा अधर्मद्वार का निरूपण	२७–३५
६	" ययाकृत् " नामके तीसरा अधर्मद्वार का निरूपण	३६–३९
७	स्थलचर चतुष्पद प्राणीयों का निरूपण	४०–४२
८	" उरः परिसर्प " के भेदों का निरूपण	४३–४४
९	भुजपरिसर्प के भेदों का निरूपण	४५–४६
१०	खेचर जीवों का निरूपण	४७–५०
११	प्राणियों के वधके प्रकार का निरूपण	४१–५३
१२	चतुरिंद्रिय जीवोंकी हिंसा करने वालोंके प्रयोजनका निरूपण	५४–६२
१३	पृथिवीकाय जीवों के हिंसा के कारण का निरूपण	६३–६७
१४	अप्‌काय जीवों की हिंसा करने के प्रयोजन का निरूपण	६८–
१५	' वायुकाय ' जीवों की हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	६९–७०
१६	'वनस्पतिकाय' जीवोंकी हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	७०–७४
१७	स्थावरादि जीवों को कैसे २ भावों से युक्त होकर हिंसक जन मारते हैं उनका निरूपण	७४–८४
१८	जातिनिर्देशपूर्वक मदबुद्धि वाले लोक कौन २ जीवों को मारते है उनका निरूपण	८५–८६
१९	कौन २ जीव पाप करते है उनका निरूपण	८७–९०
२०	जैसे २ कर्म करते है वैसा ही फल प्राप्त होनेका निरूपण	९१–९६
२१	नरक मे उत्पत्ति के अनन्तर वहा के दुःखानुभवका निरूपण	९७–१०४
२२	पापि जीव नरकों मे कैसी २ वेदना को कितने काल भोगते है उनका निरूपण	१०५–१०६

२३ नारकीय जीव क्या २ कहते है वह वर्णन १०६-१०८
२४ परमाधार्मिक नारकीय जीवों के प्रति क्या २ करते हैं उनका कथन १०९-११०
२५ वेदनाओं से पीडित नारक जीवों के आक्रंद का निरूपण १११-११७
२६ परमाधार्मिकों के द्वारा की गई यातनाओं के प्रकार का निरूपण ११७-११८
२७ यातना के विषय मे आयुधों (शस्त्रों) के प्रकारों का निरूपण ११९-१२१
२८ परस्पर में वेदना को उत्पन्न करते हुए नारकीयों कि दशा का वर्णन १२१-१२७
२९ नारक जीवों के पश्चाताप का निरूपण १२८-१३०
३० तिर्यग्गति जीवो के दुःखों का निरूपण १३१-१३६
३१ चतुरिन्द्रिय जीवों के दुःख का निरूपण १३७-१३८
३२ त्रिन्द्रिय जीवो के दु ख का निरूपण १३८-१३९
३३ द्विन्द्रिय जीवों के दुःख का वर्णन १४०-
३४ एकेन्द्रिय जीव के दुःख का वर्णन १४१-१४४
३५ दु खों के प्रकार का वर्णन १४५-१५१
३६ मनुष्यभव मे दु'खों के प्रकार का निरूपण १५२-१६३

दूसरा अध्ययन

३७ अलीकवचन का निरूपण १६४-१६८
३८ अलीकवचन के नाम का निरूपण १६८-१७४
३९ जिस भाव से अलीक वचन कहा जाता है उसका निरूपण १७४-१७९
४० नास्तिकवादियों के मत का निरूपण १८०-२०५
४१ अन्य मनुष्यों के मृषाभाषण का निरूपण २०६-२१४
४२ मृषावादियो के जीव घातक वचन का निरूपण २१५-२४१
४३ मृषावादियो को नरक प्राप्तिरूप फलप्राप्ति का वर्णन २४२-२५२
४४ अलीक वचन का फलितार्थ निरूपण २५३-२५६

तीसरा अध्ययन

४५ अदत्तादान के स्वरूप का निरूपण २५७-२६१

४६ अदत्तादान के तीस नामों का निरूपण २६४–२६९
४७ पञ्चम अन्तर्द्वारगत तस्करों (चोरों) का वर्णन २७०–२७५
४८ परधनलुब्ध राजाओं के स्वरूप का निरूपण २७६–२८२
४९ परधन मे लुब्ध राजाओं के सग्राम का वर्णन २८३–२९६
५० अदत्तादान (चोरी) के प्रकार का निरूपण २९७–३०१
५१ सागर के स्वरूप का निरूपण ३०२–३०६
५२ तस्कर के कार्य का निरूपण ३०७–३१७
५३ अदत्तादान के फल का निरूपण ३१७–३२२
५४ चोर लोक क्या फल पाते है उनका निरूपण ३२२–३३०
५५ अदत्तग्राही चोर कैसे होकर कैसे फल को पाते है उनका निरूपण ३३०–३४६
५६ अदत्ताग्राही चोर जिस फल को पाते है उसका निरूपण ३४७–३५४
५७ अदत्तग्राही चोर की परलोक मे कौन गति होती है उनका निरूपण ३५४–३६०
५८ जीव ज्ञानावरण आदि अष्टविध कर्मों से बधदशाको प्राप्तकर ससारसागर मे रहते हैं इस प्रकार का ससारगागर के स्वरूप का निरूपण ३६०–३७७
५९. किस प्रकार के अदत्ताग्राही चोरों को किस प्रकार का फल मिलते है उनका निरूपण ३७८–३८६
६० तीसरे अध्ययन का उपसहार ३८७–३९०

चोथा अध्ययन

६१ अब्रह्म के स्वरूप का निरूपण ३९१–३९५
६२ अब्रह्म के नामों का और उसके लक्षणों का निरूपण ३९५–४००
६३ मोह से मोहित बुद्धिवालों से अब्रह्म के सेवन के प्रकारों का निरूपण ४००–४०३
६४ चक्रवर्त्यादिको का और उनके लक्षणों का वर्णन ४०३–४१९
६५ वलदेव और वासुदेव के स्वरूप का निरूपण ४१९–४४३
६६ अब्रह्म सेवी कौन होते है ? उनका निरूपण ४४३–४४४

६७ युगलिकों के स्वरूप का निरूपण ४४५–४६७
६८ युगलिनीयों के स्वरूप का निरूपण ४६७–४८९
६९ चौथे अन्तर्द्वार का निरूपण ४८९–४९४
७० चोथा अध्ययन का उपसंहार ४९४–४९८

पांचवा अध्ययन

७१ परिग्रह के स्वरूप का निरूपण ४९९–५०६
७२ परिग्रह के तीस नामों का निरूपण ५०७–५१२
७३ जिस प्रकार से जो जीव परिग्रह करते हैं उनका निरूपण ५१२–५२७
७४ मनुष्य के परिग्रह का निरूपण ५२८–५३९
७५ परिग्रह से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है उनका निरूपण ५४०–५४६
७६ पाचवा अध्ययन का उपसंहार ५४७–५५०

दूसरा भाग–पहला अध्ययन

७७ पाचसंवर द्वारों के नाम और उनके लक्षणों का निरूपण ५५१–५५८
७८ प्रथमसंवरद्वार का निरूपण ५५९–५६९
७९ अहिंसा के महात्म्य का निरूपण ५७०–५७२
८० अहिंसा धारण करने वाले महापुरुष के स्वरूप का निरूपण ५७३–६०१
८१ अहिंसा को पालन करने को उद्यत होने वालों के कर्त्तव्य का निरूपण ६०२–६१६
८२ अहिंसाव्रत की 'ईर्यासमिति' नाम की प्रथम भावना का निरूपण ६१७–६२२
८३ 'मनोगुप्ति' नाम की दूसरी भावना का निरूपण ६२३–६२५
८४ 'वचनसमिति' नाम की तीसरी भावनाके स्वरूप का निरूपण ६२६–६२८
८५ 'एपणासमिति' नामकी चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण ६२९–६३९
८६ 'निक्षेप' नामकी पांचवी भावना का निरूपण ६४०–६४२
८७ प्रथम अध्ययन का उपसंहार ६४३–६४८

दूसरा अध्ययन

८८ सत्य के स्वरूप का निरूपण ६४९–६८४
८९ 'अनुवचिन्त्य समिति' नाम की प्रथम भावना के

स्वरूप का निरूपण ६८५–६८८
९० 'क्रोधनिग्रहरूप' दूसरी भावना का निरूपण ६८९–६९२
९१ 'लोभनिग्रहरूप' तीसरी भावना का निरूपण ६९३–६९६
९२ 'धैर्य' नाम की चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण ६९७–७००
९३ पांचवी 'मौन' भावना के स्वरूप का निरूपण ७००–७०४
९४ अध्ययन का उपसंहार ७०५–७१०

तीसरा अध्ययन

९५ अदत्तादानविरमण के स्वरूप का निरूपण ७११–७२१
९६ कैसा मुनि अदत्तादानादि व्रत का आराधन नहीं करते उसका निरूपण ७२२–७२७
९७ कैसा मुनि इस व्रत का पालन कर सकते है उसका निरूपण ७२०–७४०
९८ 'विविक्तवसतिवास' नाम की प्रथम भावना का निरूपण ७४१–७४७
९९ 'अनुज्ञातसंस्तारक' नामकी दूसरी भावना का निरूपण ७४८–७५१
१०० 'शय्यापरिकर्म वर्जन' रूप तीसरी भावना का निरूपण ७५२–७५६
१०१ 'अनुज्ञातभक्त' नामक चौथी भावना का निरूपण ७५७–७६०
१०२ 'विनय' नामकी पांचवी भावना का निरूपण ७६१–७६४
१०३ अध्ययन का उपसंहार ७६५–७७०

चौथा अध्ययन

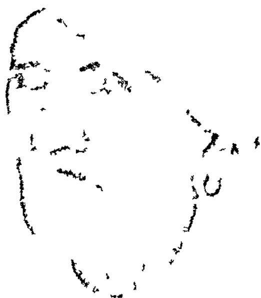
१०४ ब्रह्मचर्यके स्वरूप का निरूपण ७७१–७८८
१०५ ब्रह्मचर्य आराधन का फल ७८९–७९५
१०६ ब्रह्मचारी को आचरणीय और अनाचणीय आदिका निरूपण ७९६–८०३
१०७ 'असंसक्त वासवसति' नामकी प्रथम भावना का निरूपण ८०४–८०८
१०८ 'स्त्रीकथा विरति' नामकी दूसरी भावना का निरूपण ८०९–८१५
१०९ 'स्त्रीरूप निरीक्षण' वर्जन नामकी तीसरी भावना का निरूपण ८१६–८१८
११० 'पूर्वरत पूर्वक्रीडितादि' विरति नामकी चौथी भावना का निरूपण ८१९–८२५
१११ 'प्रणीतभोजनवर्जन' नामकी पांचवी भावना का निरूपण ८२६–८२९
११२ चतुर्थ अध्ययन का उपसंहार ८३०–८३४

पांचवा अध्ययन

११३	परिग्रहविरमण का निरूपण	८३५–८४५
११४	त्रसस्थावर विषयक अपरिग्रह का वर्णन	८४६–८५२
११५	अकल्पनीय वस्तु का निरूपण	८५३–८६०
११६	कल्पनीय अशनादिक का निरूपण	८६०–८७०
११७	संयताचार पालक की स्थिति का निरूपण	८७१–८८९
११८	' निस्पृहा ' नामकी पहली भावना का निरूपण	८९०–९००
११९	चक्षुरिन्द्रिय संवर ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	९०२–९१५
१२०	' घ्राणेन्द्रियसंवर ' नामकी तीसरी भावना का निरूपण	९१६–९२२
१२१	जिह्वेन्द्रियसंवर ' नामकी चौथी भावना का निरूपण	९२३–९२९
१२२	' स्पर्शेन्द्रियसंवर ' नामकी पांचवी भावना का निरूपण	९३०–९४१
१२३	अध्ययन का उपसंहार	९४२–९४८
१२४	दशमाङ्ग मे श्रुतस्कधादि का निरूपण	९४९–
१२५	शास्त्रप्रशस्ति	९५०–९५३

–:समाप्तः–

રૂા. ૫૦૦૧) આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી



સ્વ. શેઠ મુકુન્દચંદજી બાલીયા (પાલીવાળા)

અમદાવાદ.

श्रीमान् सेठसाहेब श्री मुकनचन्दजी बालियाजीका

संक्षेपमें जीवनचरित्र

श्रीमान् सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी साहब पाली (मारवाड़) के निवासी थे। आपका शुभ जन्म सवत् १९४० फाल्गुन कृष्ण पक्ष ८ रविवारको हुआ था। आपका पवित्र वंश सदा धर्मशील, विद्याप्रेमी और उदारचरित रहा है। आपके परम पूज्य पितामह श्रीमान् सेठ सा श्रीपूनमचन्दजी साहब बालिया थे। सेठ सा. श्रीपूनमचन्दजी साहब बालिया के दो पुत्र थे, एक श्री राजारामजी साहब और दूसरे श्रीअगरचन्दजी साहब। आगे चलकर श्रीमान् सेठसा. श्री राजारामजी सा के श्री ताराचन्दजी साहब और श्रीमुकनचन्दजी साहब करके दो पुत्र थे, किंतु अगरचन्दजी सा के पुत्र नहीं था। इसी लिए श्रीमान अगरचन्दजीसाहबने अपने भाईके ही पुत्र श्रीमुकनचन्दजी साहबको दत्तक (गोद) ले लिया। श्रीमान सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी शुरू से ही बड़े होनहार, धर्मशील और उदार थे। सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी श्रीमती श्री सुगनकुवर बाईजी भी धर्मशीलता एव उदार व्यवहार मे आपके ही समान थी श्रीमती श्री सुगनकुवर बाइजी की धर्मश्रद्धा का सु प्रभाव आज भी आपके कुटुब पर अच्छी तरह दिखाई देता है। आप दोनों ने धर्म के दीपक से न केवल अपने परिवार को ही प्रकाशित किया है, किंतु जीवन मे अपने सपर्क मे आनेवाले सभी धर्म प्रेमी जिज्ञासुओ को धर्म श्रद्धालु बना ने का पवित्रकार्य किया है। यों सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी सा बड़ी सरल प्रकृतिके सज्जन थे। व्यापार आपका समुद्रपार अनेक देशो में फैला हुआ था। आपकी जमींदारी भी खूब थी। आपके रहन-सहन और व्यवहार से सदा सादगी टपकती थी। जितने आप



શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી
રાજકોટ.

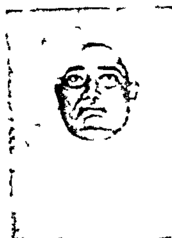


શેઠ નામજી નામજી વીરાણી
રાજકોટ.



શે૦ મીશ્રીલાલજી અને જેરતનાજજી લુણીયા
અમદાના

આ૫મુરબ્બીશ્રીઓ



(૨૧.) શેઠ હરખચંદ કાલીદાસ વારીઆ
ભાણવડ.



શ્રી કોઠારી હરગોવિંદભાઈ જેચંદ
રાજકોટ.



શેઠ શ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(૨૫) શે૦ શ્રી ધારશીભાઈ જીવણભાઈ
સોલાપુર



(૨૧.) શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

उदार-चरित थे, उतने ही आप शास्त्रों के ज्ञाता भी थे। खास करके धर्मशास्त्रमे आपका अच्छा प्रवेश था। ज्योतिषशास्त्र के भी आप मर्मज्ञ थे कहने का तात्पर्य यह है कि सोने में सुगन्ध की तरह आप पर भगवती, सरस्वती और देवी लक्ष्मी दोनो का समान रूपसे आशीर्वाद का हाथ रहा। पाली के आबालवृद्ध सभी आपके गुणों को आज भी भूले नहीं है। आपकी तरफ से पालीमें कन्याशाला, हाईस्कुल आदि शैक्षणिक संस्थाएँ चल रही हैं, जिनमें प्रति वर्ष कई विद्यार्थी विद्यालाभ प्राप्त कर रहे हैं। गरीब, अपग और अनाथों के लिए भी आपकी तरफ से सदाव्रत अनाथालय और प्याउए चल रही हैं। आयबिल खाता भी आपकी तरफ से पाली मे चल रहा है आपका स्वर्गवास संवत् २०१८ कार्तिक शुक्ल द्वितीया शुक्रवारको हुआ।

श्रीमान् सेठ श्री मुकुनचन्दजी सा. के श्री हस्तिमलजी श्री मोहनराजजी श्री माणेकलालजी श्री मदनलालजी ये चार पुत्र और एक पुत्री श्री बसतकुवर मौजूद है, एवं सबसे बडे पुत्र श्री सोहनराजजी सा. एव सबसे छोटी पुत्री श्री सज्जनकुवरबाई स्वर्गस्थ हुए है। सेठ साहब के पाच पौत्र हैं, तीन पौत्रियां हैं और एक प्रपौत्र है इस तरह सेठ साहबने अपने सामने चार पीढियों को फलते फुलते देखा है।

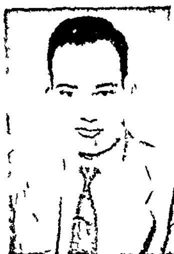
पूज्य आचार्य श्री जैनधर्मदिवाकर आगमोद्धारक श्री महाराज साहब श्रीघासीलालजीकी देखरेखमे वर्षो से कई शास्त्र ग्रन्थोका लेखन, प्रकाशन और सपादन होरहा है। समस्त जैनागमोका आप भारतकी अद्यतन भाषा में संस्कृत-प्राकृत हिन्दी गुजरातीमे-सरल व्याख्याए करके जैन धर्मकी अभिवृद्धि कर रहे है। श्रीमान सेठसाहब के सुपुत्रोने अपने पिताश्री के पुण्यस्मरणार्थ शास्त्र प्रकाशनमे उदार सहायता की है।

श्रीमान् सेठ सा की पाली-जोधपुर-ब्यावर-अहमदाबाद-मुबई मे अनेक पेढिया है। ईश्वर कृपा से बालियाजीके परिवार सुखसपत्ति का सदा अनुभव करते रहे।

सेठ श्री पूनमचन्दजी ग़ालिया

- श्री राजारामजी
  - श्री ताराचन्द ी
  - श्री मुकनचन्दजी
- श्री अगरचन्दजी
  - अपने भाईके लड़के श्री मुकनचन्दजी को गोद लिया
    - श्री सोहनराजजी
    - श्री हस्तीमलजी
    - श्री वस तकुवरबाई
    - श्री मोहनराजजी
      - (१) पाच पोत्र
      - (२) तिन पात्रीयां
      - (३) एक प्रपौत्र
    - श्री माणेकलालजी
    - श्री म दनल ालजी
      - श्री सज्जनकुवरबाई

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



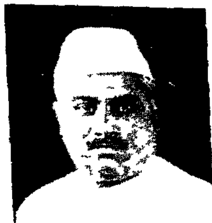
(સ્વ.) શેઠ શ્રી દિનેશભાઈ કાન્તિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



(સ્વ.) શ્રી છગનલાલ શામળદાસ બાવસા
અમદાવાદ



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી-રાજકોટ
(દીક્ષા લીધા પહેલા શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



શેઠ શ્રી જેશિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ



(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

*

ગરેડીયાકુવા રોડ—ગ્રીન લોજ પાસે,

રાજકોટ

*

દાતાઓની નામાવલી

*

શરૂઆત તા. ૧૮-૧૦-૪૪થી તા ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીમા
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના મુબારક નામો.

*

લાઈફ મેમ્બરોનુ ગામવાર કકાવારી લિસ્ટ

*

(નાની ભેટની રકમો આપનારનુ, તથા રૂા ૨૫૦થી
ઓછી રકમ ભરનારનુ નામ આ યાદીમા સામેલ કરેલ નથી)



૧૬	શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી લૂણીયા ચડાવતવાળા	અમદાવાદ	૫૫૦૨
૧૭	શેઠ રામજીભાઈ ચામજી વિરાણી એન્ડ સમરતબેન રામજી વિરાણી ટ્રસ્ટ	રાજકોટ	૫૦૦૧
૧૮	એક જૈન ગૃહસ્થ	અમદાવાદ	૫૪૭૫

નોટ –ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફથી અમદાવાદમા પાલડી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ ન ૨૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો વાર જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેનુ રજીસ્ટર તા ૨૩-૩-૬૦ ના રોજ થઈ ગયેલ છે

મુરબ્બીશ્રીઓ–૨૫

(ઓછામા ઓછી રૂા ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઇ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઇ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઇ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મ્હેતા ગુલાબચદ પાનાચદ	રાજકોટ	૩૨૮૯ાાા–ના
૪	મ્હેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલટ્રસ્ટ હ શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઇ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૮	શેઠ લહેરચદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચદ લહેરચદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચદ વસા હા મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભાઇ	મુબઇ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ હા શેઠ ચન્દ્રકાત વીકમચદ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મ્હેતા સોમચદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	જામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૩	દોશી કપુરચદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	જામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઇ	પોરબદર	૧૦૦૧
૧૬	શ્રીમાન ચદ્રસિહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા	૧૦૦૧

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ—૧૮

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ની મદદ આપનાર)

નબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતીલાલ મગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચદભાઈ, નગીનભાઈ વ્રજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કોઠારી જેચદ અજરામર હા હરગોવિંદભાઈ જેચદભાઇ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવનભાઇ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામલદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જેશીગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હે શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતીલાલભાઇ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીબાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઇ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારકટ્રસ્ટ હા શેઠ દુર્લભજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૩	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારકટ્રસ્ટ હા શ્રીમતિ મણીકુવરબેન દુર્લભજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારકટ્રસ્ટ હા છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હે ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ અને કુટુબજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

૧૫	શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	,,	૫૦૦
૧૬	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	,,	૫૦૧
૧૭	સ્વ પિતાશ્રી નદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચંદ શાંતિલાલ (જાણુઆવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૧૮	શ્રી જૈનસ્થા સંઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૯	શેઠ તારાચંદ પુખરાજજી	ઔરંગાબાદ	૫૦૦
૨૦	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	,	૫૦૦
૨૧	મ્હેતા મુળચંદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ	પ્રાંફા	૭૫૦
૨૨	શેઠ હરખચંદ પુરૂષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૩	,, કેશરીમલજી વરતીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૪	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા, બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઈ	ખાખીજાળીયા	૫૦૧
૨૫	શ્રી ખીમજીભાઈ બાવાભાઈ ફુલચંદભાઈ ગુલાબચંદભાઈ, નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઈ	મુંબઈ	૫૦૧
૨૬	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ	મુંબઈ	૫૦૧
૨૭	સ્વ કાંતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાલચંદ માકરચંદ	,,	૫૦૧
૨૮	કામદાર—રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	,,	૫૦૧
૨૯	શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૩૦	વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,,	૫૦૧
૩૧	શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચંદ	ખારરોડ	૫૦૧
૩૨	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મહેતા	પ્રાંફા	૫૦૧
૩૩	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	પ્રાંફા	૫૦૧
૩૪	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૫	શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નંદકુવરબેન	જામનગર	૫૦૩
૩૬	શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૭	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૮	વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૯	મહેતા શાન્તિલાલ મણીલાલ હા કમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૪૦	શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીસાબેન	,,	૫૦૧
૪૧	શેઠ મોહનરાજજી મુકુનચંદજી બાલીયા	,,	૫૦૧
૪૨	સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નીલક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાબેન તથા મંગુબેન	અમદાવાદ	૫૦૧

૧૭	મ્હેતા સોમચંદ નેણશીભાઇ (કરાચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧
૧૮	શાહ હરિલાલ અનોપચંદ	ખંભાત	૧૦૦૧
૧૯	મોદી કેશવલાલ હરીચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુંબાઇ	૧૦૦૦
૨૧	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨	શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ. સૌ. ચંચળબેન	અમદાવાદ	૧૦૦૩
૨૩	શેઠ કરમશી જેઠાભાઇ સોમૈયા હા. અ. સૌ. માકરબેન	મુંબાઇ	૧૦૦૦
૨૪	શેઠ પોપટલાલ ચત્રભૂજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫	શ્રી સ્થા. જૈન લીમડી સંપ્રદાયના ક્ષમાગુણ નીધી પુજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શીષ્ય પ્રવર પંડીત રત્ન શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે પુન્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હ. શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો—૧૨૫

(ઓછામાં ઓછી રૂા ૫૦૦ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ મુંઝાભાઇ વેલશીભાઇ	વઢવાણશહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	જોરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા. ગોરધનભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણંદ હા. અમીચંદભાઇ	ખાખીજાળીયા	૫૨૭
૫	મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ. મણીબાઇ તરફથી હા. મુળચંદ દેવચંદ સંઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચંપાબેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ મનહરલાલ પ્રાણજીવનદાસ	મુંબઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શાહ શાંતિલાલ માણેકલાલ	,,	૫૦૧
૧૨	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઈ (કરાચીવાળા)	લીમડી	૫૦૧
૧૩	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૦
૧૪	મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,,	૫૦૦

૬૨	અ સૌ લીલાવતીબેન ઇશ્વરલાલ	,, ૫૦૨
૬૩	હેમાણી પ્રભુદાસ ભાણજી	કલકત્તા ૫૫૧
૬૪	શેઠ લક્ષ્મણદાસ મેજરામ	અમદાવાદ ૫૦૧
૬૫	શ્રી સ્વા જૈન મોટા સંઘ	રાજકોટ ૫૦૧
૬૬	શેઠ ચાંદમલ્લ ખીરધીચંદ	નાસિક સીટી ૫૦૧
૬૭	ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છજલાણી હ ધનવતીબેન તથા કિરણબેન	દિલ્હી ૫૦૧
૬૮	શેઠ હંસરાજજી પૂર્ણમલજી કાકરીયા	ગોગોળાવ ૫૦૧
૬૯	શ્રી શ્વે સ્થા જૈન સભા	કલકત્તા ૫૦૧
૭૦	શેઠ તેજસિંહજી ફતેલાલજી છાજેડ	ઉદેપુર ૫૦૧
૭૧	શેઠ રતનચંદ લક્ષ્મીચંદ	મુંબઈ ૫૦૦
૭૨	શાહ ઉમરશી ભીમશીભાઈ (સ્વ પિતાશ્રી ભીમશીભાઈ તથા માતુશ્રી પાલાબાઈ તથા ધર્મપત્ની પાનબાઈના સ્મરણાર્થે)	મુંબઇ ૫૫૨
૭૩	શાહ શામલભાઈ અમરસીભાઈ	અમદાવાદ ૫૦૨
૭૪	મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નૌતમલાલ	મુંબઇ ૫૦૧
૭૫	શેઠ ભીખચંદ્ર લાલચંદ્ર	પીપલગામ ૫૦૧
૭૬	બેન મોહનીબેન મહેતા	મુંબઈ ૫૦૧
૭૭	શ્રીમતી મોઘીબેન નવલચંદ શાહ હ મોતીબેન	લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર) ૫૦૧
૭૮	શ્રીમતી વિમલાજી સૂરજમલ મહેતા	બેલગામ ૫૦૧
૭૯	ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચન્દ્ર વકીલ બી એ એલ એલ બી,	રાજકોટ ૫૦૧
૮૦	સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના સ્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની રાજકુંવરબેન	સતારા ૭૫૧
૮૧	શેઠ મોહનલાલજી મંછાલાલજી હ રમણીકલાલ (પૂ મુનિશ્રી ફતેચંદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી)	જયપુર ૫૦૧
૮૨	શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા	ધારડી ૫૦૧
૮૩	શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચંદજી સાદેરાવવાળા (પૂજ્ય ફતેચંદજી મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ ના શિષ્ય ચાંદમલજી મ ના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ ૫૦૧

૪૩ પારેખ જયંતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હા વિનુભાઈ ,, ૫૦૧
૪૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ વાકાનેર ૫૦૧
૪૫ શ્રી સ્થા જૈન સઘ બોટાદ ૫૦૧
૪૬ શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી જોવર (બરાર) પીપળગાંવ ૫૦૧
૪૭ સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચદના સ્મરણાર્થે તેમના
ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા ભાઈ
જયતીલાલ તથા પૂનમચદભાઇ વડોદરા ૫૦૧
૪૮ શાહ અચળજીદાસ શુકનરાજજી હા શુકનરાજજી અમદાવાદ ૫૦૧
૪૯ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઇ ધધુકા ૫૦૧
૫૦ અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા ઘાટકોપર ૫૦૧
૫૧ મહેતા શાતીલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદમાવતી
શાતિલાલ મહેતા અમદાવાદ ૫૦૦
૫૨ શેઠ હીરાચદજી વનેચદજી કગરીયા હુબલી ૫૦૧
૫૩ શેઠ છોટુભાઇ હરગોવિદદાસ કટોરીવાળા મુબઈ ૫૦૧
૫૪ પારેખ રતિલાલ નાનચદ મોરબીવાળા તરફથી તેમના
પિતાશ્રી નાનચદ ગોવિદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
ધમપત્ની અ સૌ વસત બહેનના અઠાઇતપ નિમિત્તે
હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
૫૫ સ્વ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
શીવકુવરબાઇ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
૫૬ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચદ પારેખ મુબઈ (માટુગા) ૫૦૧
૫૭ શ્રી લીમડી સપ્રદાયના ગચ્છાધીપતિ પૂ આચાર્ય
મહરાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા
શેઠ જેશીગભાઇ પોચાલાલ (મહરાજ શ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૫૮ સ્વ શ્રી વિનયમૂર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ જેશીગભાઇ પોચાલાલ (મહરાજશ્રી છોટાલાલજી
સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૫૯ બા બ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જૈનવાલા તરફથી
તેમની દીક્ષા પ્રસગે વીરમગામ ૫૫૧
૬૦ શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયચદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
૬૧ શેઠ પોપટલાલ હસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૯૮	શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ હ. પ્રમુખ બાબુલાલ કટારીયા	હિંગણઘાટ	૫૦૧
૯૯	લાલાજી રામલાલજી રોશનલાલજી (અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી)	દીલ્હી	૫૦૧
૧૦૦	સ્વ. મહેતા મંગળજી મણીલાલજીના સ્મરણાર્થે હ. તેમના ધર્મપત્ની ગુણવંતીબહેન મહેતા	પોંડેચેરી	૫૦૧
૧૦૧	ખાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ (મહાવીર ટેક્ષટાઇલ સ્ટોર્સ)	બેંગલોર	૫૫૩
૧૦૨	શ્રીયુત તારાચંદ ગેલડા ટ્રસ્ટ	મદ્રાસ	૫૦૧
૧૦૩	શેઠ ગુલરાજજી પુનમચંદજી મહેતા	કીસનગઢ	૫૫૧
૧૦૪	શેઠ અમરમલજી ત્રીકમચંદજી	ઇંદોર સીટી	૫૫૧
૧૦૫	ઠાનુગા ધીગડમલજી સુલતાનમલજી ઠવાડ ગઢમીયાણા વાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૬	લાલાજી નવરતનચંદજી ચોરડીયાના ધર્મપત્ની શ્રીમતી રાજકુમારીબેન	દીલ્હી	૫૦૧
૧૦૭	શેઠ ચીમનલાલ રૂપચંદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૮	શેઠ કાનજી પાનાચંદ ભીમાણી ટ્રસ્ટ	કલકત્તા	૫૦૧
૧૦૯	શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી	,,	૫૦૧
૧૧૦	અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી સ્વધર્મી બંધુઓ તરફથી	દીલ્હી	૫૦૧
૧૧૧	સ્વ. વિનયચંદજી પારેખના સ્મરણાર્થે લાલા પૂર્ણચંદજી રતનચંદજી પારેખની વતી હ. શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાંત સ્વભાવી મહાસતીજી કુલકુંવરબાઇના ઉપદેશથી)	દીલ્હી	૫૦૧
૧૧૨	શ્રીમતી બદામબાઇ મીશ્રીલાલજી લૂણીયા ચંડાવતવાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૩	શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૪	શાહ હરખચંદ અમરચંદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૫	શાહ જગજીવનદાસ વૃન્દાવનદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૬	શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી જૈનભૂવન	કલકત્તા	૫૦૧

૮૪ શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી મમન્દરલાલજી હ મોતીલાલજી — બડોત ૫૦૧

૮૫ શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચદજી સાકરિયા (પૂ મ શ્રી સ્વામીદાસજીના સપ્રદાય પૂ મ શ્રી ફતેચદજી મ ના શિષ્ય ૫ મુની શ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી — સાદેરાવ ૫૦૧

૮૬ સ્વ ગોરીશકર કાળીદાસ દેસાઇના સ્મરણાર્થે હ ભૂપતલાલ ગૌરીશકર — ઇદાર ૫૦૧

૮૭ શેઠ સાહેબ શ્રી નર્મેરામભાઇ હસરાજભાઈ કમાણી — જમશેદપુર ૫૦૧

૮૮ સ્વ મહાસજી શ્રી ધનદેવીજી મ મા ના સ્મરણાર્થે સ્વ ખૂબચદજી સખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જય- દેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા ફુલમતીજીના ઉપદેશથી — દિલ્હી ૫૦૧

૮૯ શ્રીમાન લાલાજી કપૂરચદજી બોથરાના ધર્મપત્ની શ્રીમતી ,વસતદેવી હા લાલા રાજમલજી હેમચદજી તરફથી (મહાસતી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા ફૂલમ તિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી) — દિલ્હી ૫૦૧

૯૦ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે શ્રી અસ એસ જૈન મહિલા સઘ તરફથી (અનેક ગુણાલકૃત મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ સા ની પ્રેરણાથી) — દિલ્હી ૫૦૧

૯૧ સ્વ લક્ષ્મીચદજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી હસ્તે સઘવી હેમતકુમાર જૈન — દિલ્હી ૫૦૧

૯૨ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ધન્નોમલજી સુજતી ના સ્મરણાર્થે હસ્તે શ્રીમતી નગીના દેવી — દિલ્હી ૫૦૧

૯૩ લાલાજી કસ્તુરચન્દજી ખુશાલચન્દજી સચેતી હ જ્ઞાનચદજી — અલવર ૫૦૧

૯૪ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સોમચદ દફતરી હ ગૌરીશકર દુર્લભજી દફતરી — મુંબઈ ૫૦૦

૯૫ શેઠ સોમચદ જેઠાલાલ ઘેલાણી હ ચુનીલાલભાઇ જોડીયાવાળા — મુબઇ ૫૦૬

૯૬ શેઠ ફોજમલ્લજી સુલતાનમીહજી બોરદીયા — અમદાવાદ ૫૦૧

૯૭ શેઠ છગનલાલ શામજીવિરાણી તથા શ્રીમતી વૃજકુવરબેન છગનલાલ વિરાણી ટ્રસ્ટફડ તરફથી શેઠ છગનલાલ ભાઈના સ્મરણાર્થે — રાજકોટ ૫૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈન સઘ
હા શેઠ ચદુલાલ અચરતલાલ ૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઇ બાલાભાઈ C/O શાહ બાલાભાઇ મહાસુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી ૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી શેઠ હા ડૉ કુ સરસ્વતીબેન શેઠ ૨૫૧
૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ કાતિલાલ જીવણલાલ ૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ ૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ ૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ પોચાલાલ પિતાબરદાસ ૨૫૧
૨૧ દેસાઇ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઇલાલ અમૃતલાલ ૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય ૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આત્મારામ ૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચદ ૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદાસ ઉમેદચદ ૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાત કસ્તુરચદ ૨૫૧
૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૨૮ શાહ શાતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાગધ્રાવાળા ૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચપાલાલજી ૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા ૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા ૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી
બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચદ જવાહરલાજી બરડીયા ૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઈ (મગળદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન ૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ માતુશ્રી મુળીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા કકલભાઈ કોઠારી ૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ ૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ જાખડાવાળા હા. પાર્વતીબેન ૨૫૧

૧૧૭ પૂ દાદાજી સ્વ કપુરચંદજી તથા દાદીજી
કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે હ લાલા
ફુલચંદજી અને શ્રીમતી વીમલકુવરી જવેરી
નીવતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી
ફુલમતીજીના ઉપદેશથી) દીલ્હી ૫૦૧
૧૧૮ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ અમદાવાદ ૫૦૧
૧૧૯ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ ગણેશમલ્લ ગુલાબચંદ બરોરા ૫૦૧
૧૨૦ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ભદેસર ૫૦૧
૧૨૧ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય કુમારડી ૫૦૧
૧૨૨ ગાંધી ભુરાલાલ નાનચંદ મુંબઇ ૫૦૧
૧૨૩ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગલૂડીયા
એડીસનલ કમીશ્નર અજમેર ડીવીઝનવાળાના
ધર્મપત્ની અ સૌ માણેકકુવરબેન તરફથી હ
ખુશાલસિંહજી ગલૂડીયા જયપુર ૫૫૧

૫૮૪—લાઇફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ		૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા ફકીરચંદભાઈ		૨૫૧
૩	શાહ કાંતિલાલ ત્રીભોવનદાસ		૨૫૧
૪	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ		૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ		૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઇ મંગળદાસ		૨૫૧
૮	સ્વ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા કાનજીભાઇ અમૃતલાલ દેશાઈ		૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ		૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ		૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી		૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય હા વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ		૨૫૧

૬૩ અ સૌ બેન લાભુબેન મગનલાલ હ શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ
વઢવાણ શહેરવાળા ૩૦૧
૬૪ અ સૌ બેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૫ દોશી ફુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હ દોશી છબીલદાસ ફુલચંદભાઈ ૨૫૧
૬૬ લાલાજી રામકુવરજી જૈન ૨૫૧
૬૭ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
૬૮ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
૬૯ સંઘવી સૂર્યકાંત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે
હ સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૭૦ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
૭૧ મહેતા મૂળચંદ મગનલાલ ૨૫૧
૭૨ વૈદ્ય નરસિંહદાસ માકરચંદના ધર્મપત્ની રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે
હ હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
૭૩ શાહ ફુલચંદભાઈ મુલચંદ હ હસમુખભાઈ ફુલચંદભાઈ ૨૫૧
૭૪ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા ૨૫૧
૭૫ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ જશવંતલાલ લલ્લુભાઈ ૩૦૧
૭૬ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૭ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા
(ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૮ કુમારી નલીનીબેન જયંતીલાલ ૨૫૧
૭૯ સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઈના સ્મરણાર્થે
હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૦ સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દિવાળીબાઈના
સ્મરણાર્થે હ રતીલાલ માણેકલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૧ મહેતા દેવીચંદજી ખુબચંદજી ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના સ્મરણાર્થે
હ મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
૮૨ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કોઠારી ઠે૦ લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ૨૫૧
૮૩ સ્વ૦ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ માફતીયાના સ્મરણાર્થે
પુનાબેન તરફથી હ દરશનભાઈ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા ૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ ૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઇ છગનલાલ ૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા ૨૫૧
૪૪ સંઘવી બાલુભાઇ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ સૌ ચંપાબેન તથા વસંતબેન તરફથી ૭૫૧
૪૫ અ સૌ. વિદ્યાબેન વનેચંદ દેસાઈ વર્ષીતપ તથા અઠાઇ પ્રસંગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેસાઈ ૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ ૨૫૧
૪૭ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ ૩૫૧
૪૮ અ સૌ કંકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની) ૩૦૯
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયંતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૦ અ સૌ શાંતાબેન (દીનુભાઇ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૧ અ સૌ સુનંદાબેન (રમણુલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૨ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હ વાગમલજી રૂગનાથજી ૩૦૧
૫૩ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઇ ૨૫૧
૫૪ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા ૩૦૧
૫૫ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે હા રમણુલાલ માણેકલાલ ૨૫૧
૫૬ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી ૩૦૧
૫૭ શ્રી સારંગપુર દ આ કો સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ રમણુલાલ ભગુભાઈ ૨૫૧
૫૮ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઇ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે હ દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા ૨૫૧
૫૯ શાહ પુનમચંદ ફતેહચંદ ૨૫૧
૬૦ શ્રીયુત ચતુરભાઇ નંદલાલ ૨૫૧
૬૧ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઇશ્વરલાલ મહેતા ૨૫૧
૬૨ શાહ જીવણજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમૃતભાઈ ૨૫૧

૧૦૫ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનંદી પંડિત મુનિશ્રી છોટાલ મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૧૦૬ અ સૌ કાંતાબેન કાળીદાસ ઠે કુમાર બુક બાઈંડીંગ વર્કસ ૨૫૧

૧૦૭ સ્વ હીંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૦૧

૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૧૦૯ શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી ઠે ચુ ટી ગોપાણી એન્ડ સન્સ ૩૫૧

૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧

૧૧૧ શાહ શાંતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧

૧૧૨ સરસ્વતી પુસ્તકભંડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧

૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા શાહ ભુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરસીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે હા શેઠ સોમચંદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા) ૩૦૧

૧૧૬ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદ્રજી ડુંગરવાલ રાજાજી કાંકેરડાવાળા (મુનિશ્રી માંગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૧૧૭ ડો ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ ૨૫૧

૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૨૦ સરસ્વતી ભંડાર ૩૫૧

૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા ૨૫૨

૧૨૩ નામદાર વાડીલાલ દતીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨

૧૨૪ કુમારી ચંપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦

૧૨૫ કુમારી ઉષાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૪૫૧

૧૨૬ કુમારી ચંદ્રાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૨૪૧

૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અંબાલાલ ૩૫૧

૮૪ શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૫ ભાવસાર જયતીલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૬ ભાવસાર દિનુભાઈ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૭ ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૮ ભાવસાર કનુભાઇ સાકરચદ	૨૫૧
૮૯ શેઠ ભેરૂમલજી સાહેબ જોધપુરવાળા	૨૫૧
૯૦ સ્વ બેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુદણીવાળાના સ્મરણાર્થે હ શાતિલાલ વર્ધમાન	૨૫૧
૯૧ સ્વ કચરાભાઈ લહેરાભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાતિભાઈ કચરાભાઇ	૨૫૧
૯૨ એક સ્વધર્મી બધુ હ શાહ રીખબદાસજી જયતિલાલજી	૨૫૧
૯૩ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ (સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૯૪ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરીયાપુરી સપ્રદાયના પૂ૦ તપસ્વી મહારાજશ્રી માણેકચદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૯૫ બેન જેકુવર વ્રજલાલ પારેખ	૨૫૧
૯૬ શેઠ પુનમચદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા	૨૫૧
૯૭ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા ઠે ડૉ ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા	૩૦૧
૯૮ શેઠ રાજમલજી ઘાસીલાલજી કોઠારી કોશીથલવાળા	૨૫૧
૯૯ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી ઠે રતીલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૧૦૦ ભાગ્યવતી અરવીદકુમાર ઠે અરવીદકુમાર સકરાભાઈ ભાવસાર	૨૫૧
૧૦૧ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા	૨૫૧
૧૦૨ સ્વ આસીબાઇ તથા વસ્તીમલજી ભોમાજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચદજી ઓસવાલ કેરુવાળા	૨૫૧
૧૦૩ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે હા શીરેમલજી કીશનમલજી સોજતવાલા	૨૫૧
૧૦૪ સ્વ શેઠ વકતાવરમલજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ ધીશ્રાલાલજી મુલ્તાનરાજજી શીનારીયા (જોધપુરવાલા)	૨૫૧

૧૦૫ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનદી પંડિત મુનિશ્રી
છોટાલ મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૧૦૬ અ સૌ કાંતાબેન કાળીદાસ ઠે કુમાર બુક બાઈડીંગ વર્કસ ૨૫૧
૧૦૭ સ્વ હીંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના
સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૦૧
૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે
હા ભાવસાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૧૦૯ શ્રી ઉમેદચદ ઠાકરશી ઠે ચુ ટી ગોપાણી એન્ડ સન્સ ૩૫૧
૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૧૧૧ શાહ શાંતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
૧૧૨ સરસ્વતી પુસ્તકભડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧
૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક ભડાર હા શાહ ભુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧
૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે
હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરસીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે
હા શેઠ સોમચદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા) ૩૦૧
૧૧૬ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચદ્રજી ડુગરવાલ
રાજાજી કાકેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૧૧૭ ડૉ ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ ૨૫૧
૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભડાર ૩૫૧
૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક ભડાર ૩૫૧
૧૨૦ સરસ્વતી ભડાર ૩૫૧
૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા ૨૫૨
૧૨૩ કામદાર વાડીલાલ દલીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨
૧૨૪ કુમારી ચપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦
૧૨૫ કુમારી ઉષાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૪૫૧
૧૨૬ કુમારી ચદ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૨૪૧
૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧
૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અબાલાલ ૩૫૧

૧૨૯ ખરડિયા ચાંદમલ્લજી જવાહીર લાલજી ૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા ૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચંદ ઝવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ
હ વકીલ બાબુભાઈ હીંમતલાલ ૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા ગાડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુંગરવાલ ૨૫૧

અટત્રર

૧ શ્રીમતી ચંપાદેવી કે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ શેઠ ચાંદમલ્લજી મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂષભકુમાર સુમતિકુમાર જૈન ૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
મણીબાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાંત, તથા વીનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ ૩૦૧

આણંદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઇ ૨૫૧

આકોલા

શેઠ કંચનલાલ રાઘવજી અજમેરા કે મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ
કું (પૂ સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઇગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ જૈન ૨૫૧

ઇન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઇ જેતપુરવાળા
(અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે)
હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઇલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૩૫૧

ઉદયપુર

૧	શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૨	શ્રીમતી મોહીનીબાઇ કે રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૩	અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહેતલાલજી નાહરના ધર્મપત્ની, હા શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૪	શેઠ છગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૫	શેઠ મગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ ડાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા	૨૫૧
૭	સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી માખલાના સ્મરણાર્થે હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ માખલા	૨૫૧
૮	શેઠ ભીમરાજજી થાવરચંદજી બાફણા	૨૫૧
૯	શ્રીયુત મોહનલાલજી મહેતા	૨૫૧
૧૦	શેઠ પન્નાલાલજી ગપ્રેરાલાલજી હીગડ	૨૫૧
૧૧	શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧
૧૨	શેઠ કસ્તુરચંદજી નારૂમલજી	૨૫૧
૧૩	શ્રી યૂ એલ કોઠારી	૩૦૧
૧૪	બાબૂ પરશુરામ છગનલાલજી શેઠ	૨૫૦
૧૫	શેઠ કનૈયાલાલજી ડારૂલાલજી જૈન	૨૫૧
૧૬	શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ આમડ	૩૫૧

ઉપલેટા

૧	શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨	સ્વ બેન સતોકબેન કચરા હા ઓતમચંદભાઇ, છોટાલાલભાઇ તથા અમૃતલાલભાઇ વાલજી (કલ્યાણવાળા)	૨૫૧
૩	શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઇ હા પ્રતાપભાઇ	૨૫૧
૪	દોશી વીઠ્ઠલજી હરખચંદ	૨૫૧
૫	સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો જયંતીલાલ રમણીકલાલ	૨૫૧

૧૨૯ બરડિયા ચાંદમલ્લજી ઝવાહીર લાલજી	૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમદીર પૌષધશાળા	૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચદ ઝવેરચદ સારગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ હ વકીલ બાબુભાઈ હીંમતલાલ	૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા ગાડાલાલ ભીખાલાલ	૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુગરવાલ	૨૫૧

અટવર

૧ શ્રીમતી ચપાદેવી ઠે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી	૨૫૧
૨ શેઠ ચાંદમલ્લજી મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત	૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂષભકુમાર સુમતિકુમાર જૈન	૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની મણીબાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વીનોદરાય	૨૫૧

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ	૩૦૧

આણુદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઇ	૨૫૧

આકોલા

શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા ઠે મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ કુા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧

ઇગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચદ જૈન	૨૫૧

ઇન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઇ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે) હા અરવિદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઇલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧

કેરામગઢ

૧ શ્રી શ્વે સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સંઘવી ઠાકરશીભાઇ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હીંમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુંદણી-(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઇના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધ્રાફાવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ ધ્રાફાવાળા ૨૫૧

કુશળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીજાળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાઘોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ સૌ બેન જમકુબાઇ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હ નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ. શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હ ભાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

ઉમરગાવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઇ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરૂષોત્તમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા ઘેલાભાઇ તથા આત્મારામભાઇ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન ઠે જેસીંગભાઇ ઈશ્વરલાલભાઇ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ મીયાગામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સંઘ હ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હ ઠાકોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

કન્નામગઢ

૧ શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સંઘવી ઠાકરશીભાઈ મંઘજીના સ્મરણાર્થે
હ. શાહ હીંમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુંદણી-(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના સ્વ. સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ. શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધ્રાફાવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ ધ્રાફાવાળા ૨૫૧

કુગળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીજાળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાઘોડા

૧ સ્વ. પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ. અ. સૌ. બેન જમકુબાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હ. નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ. શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હ. ભાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

ઉમરગાંવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરૂષોત્તમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડૉ મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડૉ રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઈશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન ઠે જેસીંગભાઈ ઈશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ મીયાગામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સંઘ હ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હ ઠાકોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા
હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર ૩૦૧
૪ સ્વ કોઠારી રૂપાશકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરબેન ૨૫૧
૫ કોઠારી ગુલાબચદ રાયચદ રાજુનવાળા ૨૫૧
૬ જમાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા ચુનીલાલભાઈ ૨૫૧
૭ માસ્તર હકીમચદ દીપચદ શેઠ ૨૫૧

ગોદીયા

૧ સ્થા જૈન સઘ હ શાહ પ્રેમચદ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી) ૨૫૧

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧
૨ સ્વ પ્રેમચદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચદ ૩૦૧

ઘટકણ

૧ શાહ ચદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

ઘોલવડ (થાણા)

૧ મહેતા ગુલાબચદ ગભીરમલજી ૩૦૦

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચદ્રભાણ શોભાચદ ગાદીયા ૨૫૧

ચુડા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા રતીલાલ મગનલાલ ગાધી ૨૫૧

ચોટીલા

૧ શાહ વનેચદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા, જૈન સઘને ભેટ ૩૦૧

ચારભુજારોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચદજી બાબેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

૧ દોશી ઝવેરચદ વલભજી ૨૫૧

જલેસર (બાલાસોર)

૧ સઘવી નાનચદ પોપટભાઈ થાનગઢવાળા ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ ૩૫૭

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા ૩૦૦
૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાન્તિલાલજી ભોગ્લાવાળા
(મુનિશ્રી ચાદમલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ખભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ ૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીભોવનદાસ મગળદાસ ૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૧
૪ શાહ ચદુલાલ હરીલાલ ૨૫૧
૫ શાહ સાકરચદ મોહનલાલ ૨૫૧
૬ શાહ શકરાભાઇ દેવચદ ૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચદ ૨૫૧
૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
૯ બેન લલિતા માણેકલાલ ૨૫૧

ગાધીગામ

૧ શાહ મોરારજી નગજી એન્ડ કપની ૨૫૧

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ ૨૫૧

ગુલાબપુરા

૧ શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સઘ
હ માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા ૨૫૧
૨ શ્રી ઓસવાલ પચાયત હ ગુલાબચદજી ચોરડીયા ૨૫૧

ગોડલ

૧ સ્વ ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપત્ની કમલબાઈ
તરફથી હા માણેકચદભાઈ તથા કપુરચદભાઇ ૨૫૧
૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
લીલાવતી સાકરચદ કોઠારીના બીજા વર્ષીતપની ખુશાલીમા ૨૦૧

૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હ. નગીનભાઈ (જસાપુરવાળા) ૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ ૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ ૨૫૧
૨ કાદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
જણકબેન તરફથી હ. શાંતિલાલભાઈ ગોંડલવાળા ૨૫૧

જોધપુર

૧ શેઠ નવરતમલજી ધનવંતસિંહજી ૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપલજી સામસુખા ૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજજી પદમરાજજી ભંડારી ૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા ૨૫૧

જોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ ૨૫૧

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ કનૈયાલાલ ખી મોદી ૨૫૧

ડોઢાયચા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ ૨૫૦

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્થા. જૈન સંઘ હ. એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. બગડિયા નરભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જંકશન) ૨૫૧

તાસગાવ

૧ સ્વ. ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
ઢાકુબાઈના તરફથી હા. શેઠ રામચંદજી ૩૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા. સુખલાલભાઈ ૨૫૧
૪ હંસાબેન અરવીંદ હા. ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્ની અ સૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવન્તગઢ

૧ શ્રીમાન સુન્દરલાલજી નેમીચંદજી તકેસગ	૩૫૧

જામખંભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણુનંદ	૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઈ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઇ	૨૫૧
૩ ડો સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧
૫ વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઈ પુનાતર	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હ હરિલાલભાઈ (હાટીનામાળીયાવાળા)	૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઇ	૨૫૧
૬ શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ બેન સુરજકુંવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧

૩ શેઠ અમૃતલાલ ડીંગજીભાઈ હ નગીનભાઈ (જસાપુરવાળા) ૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ ૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ ૨૫૧
૨ કાંદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
જબકબેન તરફથી હ શાંતિલાલભાઈ ગોંડલવાળા ૨૫૧

જોધપુર

૧ શેઠ નવરતમલજી ધનવંતસિંહજી ૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપલજી સામસુખા ૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજજી પદમરાજજી ભંડારી ૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા ૨૫૧

જોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ ૨૫૧

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ કનૈયાલાલ ણી મોદી ૨૫૧

ડોંડાયચા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૨૫૦

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્થા જૈન સંઘ હ એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ ખગડિયા નરભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જંકશન) ૨૫૧

તાસગાવ

૧ સ્વ ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
ઢોઢુબાઈના તરફથી હા શેઠ રામચંદજી ૩૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા સુખલાલભાઈ ૨૫૧
૪ હંસાબેન અરવીંદ હા ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓધડ ખધાર (કગચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેગારજી ૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલાજી પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧
૨ શ્રીયુત કીશનચંદજી મહેતાબચંદજી ચોરડીયા
હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાબચંદ જૈન ૨૫૧
૩ અ સૌ સજ્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧
૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૫ લાલાજી ગુલશનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૬ બેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે મહેતાબચંદ જૈન
(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીજી મહાસતિજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧
૭ શ્રીમાન લાલાજી રતનચંદજી જૈન ઠે આઈ સી હોઝીયરી ૨૫૧
૮ સ્વ લાલાશ્રીચંદજી ડુંગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી
હુકમચંદજી જૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર
તરફથી ભેટ હ વિનયકુમારી ૩૫૧
૯ સ્વ લાલા ચંપાલાલજી ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાભચંદજી
તથા હીરાલાલજી તરફથી હ ચાતાદેવી ૩૫૧
૧૦ એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી હ મહેતાબચંદજી જૈન ૩૦૧
૧૧ એક સ્વધર્મી બંધુ તરફથી હસ્તે વિજિયાકુમારી બેન ૩૦૧
૧૨ બાબુ નિરંજન સિંહજી જૈન ૨૫૧

ધ્રાફા

૧ શેઠ મણીલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

ધાગધ્રા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હિંમતલાલ સંઘવીની તપશ્ચર્યાર્થે
સંઘવી ચીમનલાલ પુરસોતમદાસ સંઘવી તરફથી ૩૦૫

૨ મઘવી નરસિહદાસ વખતચદ	૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન મોગ સઘ હ મગળજી જીવરાજ	૨૫૧
૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિદદાસ	૨૫૧
૫ કોઠારી કપુરચદ મગળજી	૨૫૧

ઘોગજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૩૫૧
૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઈ	૨૫૧
૩ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઇલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ ગયચદ પાનાચદના સ્મરણાર્થે હ ચીમનલાલ રાયચદ શાહ	૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જેચદભાઇ	૨૫૦
૬ દેસાઇ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાના ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હ કુમારી હેમુમતી	૨૫૧
૭ એક સદ્ગૃહસ્થ હ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વમનજી મહેતા	૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઇના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હ પટેલ દલીચદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચદ કાળીદાસ જામખભાળીયાવાળા	૨૫૧

ધધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨ સ્વ ગુલાબચદભાઇના સ્મરણાર્થે હ વોરા પોપટલાલ નાનચદ	૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હ શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ	૨૫૧

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઇ	૨૫૧

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧

નદુરબાર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શેઠ પ્રેમચદ ભગવાનલાલ	૨૫૧

નાગોર

૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કું સાગરમલજી લુંકડ ડેરવાળા તરફથી — ૨૫૧

પાલનપુર

૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ હ મહેતા હરીલાલ પીતાંબરદાસ — ૨૫૧

૨ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હ કેશવલાલ જી શાહ — ૨૫૧

પાણમણા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શાહ છોટાલાલ પૂંજાભાઈ — ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે
હ ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ — ૩૦૧

પ્રાંતીજ

૧ સ્થા જૈન સંઘ હ શ્રીયુત અંબાલાલ મહાસુખરામ — ૨૫૦

પુના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદજી કેવળચંદજી ધોકા — ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજજી હસ્તીમલજી સાદડીવાલા — ૩૦૧

૨ મહેતા કુંદનમલજી અમરચંદજી સાદડીવાલા — ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા
હ નાનચંદ પ્રેમચંદ શાહ — ૨૫૧

૨ સ્વ માતુશ્રી જબકબાઈના સ્મરણાર્થે
હ દેશાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ — ૨૫૧

બરવાળા-ઘેલાશા

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હ તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી — ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ હ મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ — ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણ્સારી ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બેગજા

૧ શેઠ ગાગજી ટેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેલાકી

૧ શ્રી ન્યા જૈન સઘ હ શેઠ હન્તીમલજી હસ્તીમલજી રાકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો ન્વા જૈન મઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેંગલોર

૧ શેઠ કીશનલાલજી ફુલચંદજી માહેબ ૨૫૧
૨ અજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીણાભાઈ ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીયા ૨૫૧
૬ ફોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ મૌ ચાતાબેન વસનજી ૨૫૧
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના
ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ગુંદાવાળા) ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઇ ઝવેરભાઇ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ છોગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવલ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજાય

૧ જ્ઞાન મદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા છકોટી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતગઢવાળા
હા. પૂનમચદજી શેરમલજી ઓલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઇ હરખચદ (માનકુવા સ્થા જૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા

૧ શ્રી માંડવા સ્થા. જૈન સંઘ
હ. અ. સૌ. કંચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાવ

૧ શ્રી સ્વા. જૈન સંઘ હ. ફતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

માંગરોલ

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ નાનજી ૨૫૦
૨ દોશી ગીરધરલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦

મુંબઈ તથા પરાંઓ

૧ સ્વ. શ્રી પિતાશ્રી કુંદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ મોતીલાલજી ન્યુણમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
૨ વર્ધમાન સ્થા. જૈન સંઘ હ. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી) ૨૫૧
૩ અ. સૌ. કમળાબેન કામદાર હ. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી) ૨૫૧
૪ સ્વ. માતુશ્રી ડબીબાઈના સ્મરણાર્થે હ. તેમના પૌત્ર
હકમીચંદ તારાચંદ દોશી (અંધેરી) ૨૫૧
૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ. સૌ. કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
૭ સંઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૮ વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હ. ત્રંબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
૯ શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧
૧૦ સ્વ. જટાશંકર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ. રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી ૩૦૧
૧૧ ઘેલાણી વલભજી નરભેરામ હ. નરસીંહદાસ વલભજી ૨૫૧
૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૩ ત્રીભોવનદાસ માનસિંગભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. શાહ હરખચંદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧
૧૫ સ્વ. પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોંડલવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. વૃજલાલ શામળજી બાવીસી ૩૦૧
૧૬ શાહ રવિચંદ સુખલાલભાઈ (દાદર) ૩૫૧

૧૭	સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ આશારામ વતી જશવતલાલ શાતિલાલ	૨૫૧
૧૮	ગાધી કાતીલાલ માણેકચદ	૨૫૧
૧૯	શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઇલાલભાઈની ફ્રુા (ડાદીવલી)	૨૫૧
૨૦	અ સૌ લાડુબેન હ રવજીભાઇ શામજી ,,	૨૫૧
૨૧	સ્વ માતુશ્રી માણેકબાઇના સ્મરણાર્થે હ શેઠ વલભદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨	એક સદ્ગૃહસ્થ હ શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩	શેઠ ખુશાલભાઇ ખેગારભાઇ	૨૫૦
૨૪	શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫	સ્વ માતુશ્રી ગોમતીબાઇના સ્મરણાર્થે હ શાહ પોપટલાલ પાનાચદ	૨૫૧
૨૬	ડોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચદ જુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭	વોરા ઠાકરશી જસરાજ	૨૫૧
૨૮	કોઠારી સુખલાલજી પુનમચદજી (ખારરોડ)	૨૫૧
૨૯	અ સૌ બેન કુદનગૌરી મનહરલાલ સઘવી ,,	૨૫૧
૩૦	કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચદભાઇ	૨૫૧
૩૧	દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હ દલીચદ અમૃતલાલ દેસાઇ	૨૫૧
૩૨	સ્વ ત્રીભોવનદાસ વજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે હા હરગોવિંદદાસ ત્રિભોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩	તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચદ	૨૫૧
૩૪	શેઠ સરદારમલજી દેવીચદજી કાવેડીયા (સાદડીવાળા)	૨૫૧
૩૫	શેઠ નેમચદ સ્વરૂપચદ ખભાતવાળા હ ભાઈ જેઠાલાલ નેમચદ	૨૫૧
૩૬	શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઈ	૩૦૧
૩૭	શ્રીમતી મણીબાઇ વ્રજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફડ હ વ્રજલાલ દુર્લભજી પારેખ	૨૫૧
૩૮	દડિયા અમૃતલાલ મોતીચદ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૩૯	દોશી ચત્રભુજ સુદરજી ,,	૪૦૧
૪૦	દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ ,,	૪૦૧
૪૧	દોશી પ્રવિણચદ ચત્રભુજ ,,	૩૮૧
૪૨	શેઠ મનુભાઈ માણેકચદ હા આટકાયા નરસેરામ મોરારજી ,,	૨૫૧
૪૩	શાહ કાતિલાલ મગનલાલ ,,	૨૫૧

૪૪ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર	૨૫૧
૪૫ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ		૨૫૧
૪૬ શાહ શીવજી માણેકભાઈ		૨૫૧
૪૭ મેસર્સ મવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કું હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૪૮ શાહ નગીનદાસ ફુલચંદ (વેરાવળવાળા)		૨૫૧
૪૯ મહેતા રતીલાલ ભાઇચંદ		૨૫૧
૫૦ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા		૨૫૧
૫૧ બેન કેશરબાઇ ચંદુલાલ જેશીંગભાઈ શાહ		૨૫૧
૫૨ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ સૌ ચંચળબાઇના સ્મરણાર્થે હા માગભાઇ ચીમનલાલ		૨૫૧
૫૩ ધી મરીના મોર્ડન હાઇસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી		૨૫૧
૫૪ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા		૨૫૧
૫૫ શેઠ રમીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમના માતુશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે		૩૦૧
૫૬ શ્રીયુત જસવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા		૨૫૦
૫૭ શાહ કુંવરજી હંસરાજ		૨૫૧
૫૮ દડીયા જેઠાલાલ ત્રીકમજી		૨૫૧
૫૯ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ઉમાલાલ અભેચંદ		૨૫૧
૬૦ શાહ જેઠાલાલ ડાયાભાઈ ધ્રાંગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ		૨૫૦
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જમાણીના સ્મરણાર્થે હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તથા કેશવલાલભાઇ		૩૫૧
૬૨ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે હા શાહ બાપાલાલ અંબાલાલ		૨૫૧
૬૩ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ મશ્કારીયા (ચુડાવાળા)		૨૫૧
૬૪ શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા		૨૫૧
૬૫ શાહ રતનશી મોણશીની કું		૧૫૧
૬૬ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા		૨૫૧
૬૭ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ		૨૫૧
૬૮ સ્વ પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે હા કેશવલાલ વીરચંદ		૨૫૧
૬૯ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા		૨૫૧

૭૦ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ
હા કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા (મલાદ) ૨૫૧
૭૧ સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાહ કાનજી પતુભાઇ ,, ૨૫૧
૭૨ અ સૌ પાનબાઇ હા, શેઠ પદમશી નરસિંહભાઈ ,, ૨૫૧
૭૩ સ્વ નાગશીભાઇ સેજપાલના સ્મરણાર્થે રામજી નાગશી ,, ૩૦૧
૭૪ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસઈવાળાના સ્મરણાર્થે
હા જગજીવન વણારશી ગોડા ,, ૨૫૧
૭૫ સ્વ કાનજી સુળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જ્યતિલાલ કાનજી ૨૫૧
૭૬ શાહ પ્રેમજી માલશી ગગર ,, ૨૫૧
૭૭ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
સ્વ નાનબાઇના સ્મરણાર્થે ,, ૩૦૧
૭૮ સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે
હા શાહ દામજી રાયશીભાઈ ,, ૩૦૧
૭૯ શાહ વરજાગભાઇ શીવજીભાઈ ,, ૨૫૧
૮૦ શાહ ખીમજી સુળજી પુજા ,, ૨૫૧
૮૧ અ સૌ સમતાબેન શાતિલલ ઠે શાતીલાલ ઉજમશી શાહ ,, ૨૫૧
૮૨ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજબેન તરફથી
હા તનસુખલાલભાઈ ,, ૨૫૧
૮૩ સ્વ પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે
હા દેવશી હંસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા ,, ૨૫૧
૮૪ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી) ૨૫૨
૮૫ શેઠ ત્રંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર શાસ્ત્રભંડારને ભેટ (માટુંગા)૨૫૧
૮૬ અ સૌ બેન રંજનગૌરી ઠે શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ ,, ૨૫૧
૮૭ શાહ નટવરલાર દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા , ૨૫૧
૮૮ દોશી ભીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા ,, ૨૫૧
૮૯ શાહ ગોપાળજી માનસંગ ,, ૨૫૧

૯૦ દોશી ફુલચંદ માણેકચંદ	,,	૨૫૦
૯૧ શેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાહ્માવાળા	,,	૨૫૧
૯૨ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ હ શાહ રવિચંદ સુખલાલ	(દાદર)	૨૫૧
૯૩ શાંતિલાલ ડુંગરશી અદાણી	,,	૨૫૧
૯૪ શાહ કરશન લધુભાઇ	,,	૨૫૧
૯૫ કીસનલાલ સી મહેતા	શીવ	૨૫૧
૯૬ માતુશ્રી જીવીબાઇના સ્મરણાર્થે હ શામજી શીવજી કચ્છ ગુંદાળાવાળા	ગોરેગાવ	૨૫૧
૯૭ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની નેણબાઇ વતી હ જેઠાલાલ રાયશી	,,	૨૫૧
૯૮ શુશીલાબેન શંકરાભાઇ કે નવીનચંદ્ર વસંતલાલ શાહ	વિલેપાર્લે	૨૫૧
૯૯ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા		૨૫૧
૧૦૦ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા)		૩૦૧
૧૦૧ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ સૌ. બેન કસુંબા ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા)	શીવ	૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉજમશી વીરપાળ હ. શેઠ કેશવલાલ ઉજમશી	૩૦૧

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ સુંદરજી	૩૫૧

મોમ્બાસા

૧ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી મહેતા	૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ	૨૫૦

મહેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદમશી	૨૫૧

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી બેંકર્સ	૨૫૦

રતલામ

૧ અનેક ભકતજનો તરફથી હ શ્રીમાન કેશરીમલજી ડક
(શ્રી કેવળચંદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણુપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હ ડૉ નરોતમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧

૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઇ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હ શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઇ વસાણી ૩૦૧

રાણુવાસ

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા બાબુ રીખબચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઇના સ્મરણાર્થે
હ શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧

૨ કાળુરામજી ચાંદમલજી સચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ ડાઇગ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીત્તલીયા ૨૫૧
૩ શેઠ મનુભાઇ મુળચંદ (એન્જીનીયર સાહેબ) ૨૫૧
૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ પ્રસંગે ૨૫૧
૫ શેઠ પ્રજારામ વીઠલજી ૨૫૧
૬ બેન સર્યુબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧

૯ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એકઝીકયુટીવ એન્જીનીયર) ૨૫૧
૧૦ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (પ્રાગધ્રાવાળા) ૨૫૦
૧૧ હેમાણી પેલાભાઈ મનચંદ ૨૫૧
૧૨ દફતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
હેમકુવરબાઈ તરફથી હ જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
૧૪ પારેખ ગીવલાલ ઝુઆભાઈ ગોગ્ખામાવાળા હ. અ સૌ કંચનબેન ૨૫૨

રાપર

૧ પૂજ્ય વાલજીભાઇ ન્યાલચંદભાઈ ૨૫૧

ગમપુર

૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેકર ૩૫૧

રાવટી

૧ શેઠ મિયાચંદજી જુહારમલજી કટારિયા ૩૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે
હ ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
હ ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
સમરત બહેન તરફથી હ, જયતિલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ નેમચંદ સવજી મોદી હ ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલ તથા જેશીંગભાઇ ૨૫૧

લાખેરી

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હ અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એન્જીનીયર સાહેબ) ૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા જૈન સંઘ હ શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચકુભાઇ વખતચંદ ૨૫૧

લીમડી (પંચમહાલ)

૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧
૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧ા~
૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ ૨૫૧
૪ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શાહ શાંતીલાલ ગુલાબચંદ ૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા ૨૫૧

લુધિયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દિલ્હીવાળા ૨૫૧

વઢવાણ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઇલાલ ઠે૦ શાહ સવાઇલાલ ત્રંબકલાલ ૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હ રતીલાલ મગનલાલ ૨૫૧
૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હ જીવણલાલ ગફલદાસ ૨૫૧
૧ શેઠ કાંતિલાલ નાગરદાસ ૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧
૬ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઇ ૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરણ ૨૫૧
૮ વોરા ડોસાભાઇ લાલચંદ સ્થા જૈન સંઘ
હ વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઇ લાલચંદ સ્થા જૈન સંઘ
હ વોરા પાનાચંદ ગોબરદાસ ૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧
૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ તથા વોરા ચત્રભુજ મણીલાલ ૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઇ ૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની
અ સૌ કમળાબેન રંગુનવાલા ૨૫૧
૧૫ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ પ્રોફેસર ૨૫૧

૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧

૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચંદ પુંજાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

વડીયા

૪ શેઠ ભવાનભાઇ દાળાભાઇ પંચમીયા ૨૫૧

વલસાડ

૧ શાહ ખીમચંદ મુલજીભાઇ ૨૫૧

વણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચંચળબેન તથા
પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

વટામણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ ડાયાભાઈ હલુભાઈ ૨૫૧

વાંકગાવ

૧ શેઠ માણેકચંદજી રાજમલજી બાફણા ૨૫૧

વાકાનેર

૧ ખંઢારીયા કાંતીલાલ ત્ર્યંબકલાલ ૨૫૧

૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટભાઇ મોરબીવાળા
હા પ્રાણલાલ ચુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

વીછીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા અજમેરા રાયચંદ વ્રજપાળ ૨૫૧

વીરમગામ

૧ માસ્તર વીઠલભાઈ મોદી ૨૫૧

૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ ૨૫૧

૩ શાહ મણીલાલ જીધણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧

૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ બેન લીલાવતીના
વર્ષીતપ નિમિતે હા શાહ કાંતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦

૫ સ્વ શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે હા ચુનીલાલ નાનચંદ ૨૫૧

૬ સ્વ શેઠ મણિલાલ લક્ષ્મીચંદ ખારાઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમના પુત્રો તરફથી હ ખીમચંદભાઇ ૨૫૧

૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા અનુભાઇ ૨૫૧

૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતબાઈના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ

૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

૬ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૩૦૧

સુવઈ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી સુવઈ સ્થા જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ ૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

સોજત

૧ અ સૌ ધીસીબેન લાલચંદજી મહેતા (ફતેહનગર સંઘને ભેટ) ૩૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઈ ૩૦૧

૨ સ્વ બેન ચન્દ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

હાટીના માળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦

૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે હા તેમના નાનાબેન અ સૌ મંજુલાબેન ભગવાસદાસ ગાંધી ૨૫૧

*

તા. ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૧૭ આદ્ય મુરબ્બીશ્રી
૨૫ મુરબ્બીશ્રી
૧૨૩ સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪ લાઈફ મેમ્બરો
૫૪ બીજા કલાસના જુનો મેમ્બરો

———

૮૦૩

દરેક દાતાઓનો સમિતિ તરફથી આભાર માનું છું

લી સેવક,

રાજકોટ તા ૩૧-૧૨-૬૧ **સાકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ**

મંત્રી,

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रति-विरचितया
सुदर्शिन्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

श्री-प्रश्नव्याकरणसूत्रम्

(मङ्गलाचरणम्)

(इन्द्रवज्राभेद-बुद्धिवृत्तम्)

श्रीसिद्धराज स्थिरसिद्धिराज्य-
प्रद गत सिद्धिगतिं विशुद्धम्।
निरञ्जन शाश्वतसौधमध्ये,
विराजमान सतत नमामि ॥१॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

नानालब्धिधर सुरासुरनुत सन्देहमोहच्छिद-
दीप्त शासनभास्कर गणधर शुद्ध विपद्धारकम्।
ज्ञाताशेषविशेषवस्तुनिचय तेजस्विन मुक्तिग,
वन्दे त सतत विशुद्धचरितं श्री गौतम सर्वथा ॥२॥

"प्रश्नव्याकरणसूत्रका हिन्दी अनुवाद"

मङ्गलाचरण—

मैं उन सिद्ध भगवन्तको नित्य नमस्कार करता हूं कि जो निरञ्जन-अष्टकर्ममल रूप अजन से सर्वथा विहीन-हो चुके हैं और इसी कारण जो मुक्तिरूप सौधके मध्य में विराजमान हो रहे हैं। जिनके सन्मार्गपर चलने से जीवोंको स्थिर सिद्धरूपी राज्यकी प्राप्ति हो जाती है। जो स्वय अत्यत विशुद्ध बन चुके है। और सिद्धि नामक गति प्राप्तकर चुके हैं॥१॥

પ્રશ્નવ્યાકરણસૂત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ

મગળાચરણ—

હુ તે સિદ્ધ ભગવાનોને હમેશા નમસ્કાર કરૂ છુ કે જે નિરજન અષ્ટ કર્મમળરૂપ અજનથી તદ્દન રહિત થઈ ગયા છે, અને એ જ કારણે જે મુક્તિરૂપ ભવનની મધ્યમા વિરાજમાન થયેલ છે, જેમને બતાવેલ સન્માર્ગે ચાલવાથી જીવોને સ્થિર સિદ્ધિરૂપી રાજ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે જેઓ પોતે અત્યત વિશુદ્ધ બની ગયેલ છે, અને સિદ્ધિ નામની ગતિને પ્રાપ્ત કરી ચૂકયા છે ॥ ૧ ॥

(द्रुतविलम्बितवृत्तम्)

कमलकोमलमञ्जुपदाम्बुज-
विमलबोधिदबोधविबोधकम् ।
मुखसुशोभिसदोरकवस्त्रिक
गुरुवर सदय प्रणमाम्यहम् ॥३॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

जैनीं सरस्वतीं नत्वा, वृत्तिरेषा सुदर्शिनी ।
प्रश्नव्याकरणे सूत्रे, घासिलालेन तन्यते ॥४॥

मै उन गौतम गणधर को मन, वचन और काय से नित्य नमस्कार करता हू कि जिन्हो ने तपस्या के प्रभाव से अनेक लब्धियो को प्राप्त कर लिया है । जिन्हें सुर और असुर आकर नमस्कार करते हैं, जीवों केसदेह और मोह जिनके प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं, जो शरीर की कान्ति से दीप्त बने रहते हैं, जो शासन के भास्कर हैं भगवान् महावीर प्रभु के जो अन्तिम गणधर हुए है, रागादिक दोषों से सर्वथा विशुद्ध बन चुके हैं, जीवो की विपत्ति को जो नाश करने वाले हे, केवलज्ञान के प्रभाव से जिन्हों ने समस्त जीवादिक वस्तुओं को अच्छी तरह से जान लिया है, जो तेजस्वी है तथा जो मुक्ति को प्राप्त कर चुके है ॥२॥

मै उन दयालु गुरुवर को नमस्कार करता हूँ कि जिनके मनोहर चरणकमल कमल के जैसे कोमल है और जो विमल बोधिको देने वाले बोध के दाता है तथा जिनका मुख सदा सदोरकमुखवस्त्रिका से विराजित रहता है ॥३॥

હુ તે ગૌતમ ગણધરને મન, વચન અને કાયાથી નમસ્કાર કરૂ છુ કે જેમણે તપસ્યાના પ્રભાવથી અનેક લબ્ધિયોને પ્રાપ્ત કરી છે, સુર અને અસુર આવીને જેમને નમન કરે છે, જેમના પ્રભાવથી જીવોના સદેહ તથા મોહનો નાશ થઈ જાય છે, જે શરીરની કાંતિથી જાજવલ્યમાન રહે છે, જે શાસનના દિવાકર સમાન છે, જે ભગવાન મહાવીરના અન્તિમ ગણધર છે, રાગાદિ દોષોથી જે તદ્દન વિશુદ્ધ બની ચૂકયા છે, જીવોની મુશ્કેલીઓને જે દૂર કરનારા છે, કેવળજ્ઞાનના પ્રભાવથી જેમણે સમસ્ત જીવાદિક વસ્તુઓને સારી રીતે જાણી લીધી છે, જે તેજસ્વી છે તથા જેમણે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી લીધેલ છે ॥ ૨ ॥

હુ તે દયાળુ ગુરુવરને નમસ્કાર કરૂ છુ કે જેમના મનોહર ચરણ, કમળના સમાન કોમળ છે, અને જે વિમળજ્ઞાન દેનાર બોધના દાતા છે, તથા જેમનુ મુખ સદા દોરા સહિતની મુહપત્તિથી શોભે છે ॥ ૩ ॥

इह खल्वतिविचित्राकारेऽपारेऽसारे संसारे धनादिभिर्विविधोपायैः सुखार्थं प्रयतमाना अपि जना न केऽपि वास्तविकं सुखमनुभवन्ति किमत्र परिहारनिदानमिति, सति विचारसंभारे मोक्ष एव निरतिशयसुखसाधनमिति सिद्ध्यति। आसूक्ष्मैकेन्द्रियः सकलोऽपि लोकः सुखाभिलाषी दुःखविमुखश्च दृष्टोऽतस्तस्य

तीर्थंकर प्रभुकी वाणीको नमन कर मैं घासीलाल इस प्रश्नव्याकरण सूत्र पर यह सुदर्शिनी नाम की टीका बनाता हूं ॥४॥

इस अतिविचित्रताकार अनियत स्वभाववाले अपार असार संसार में धन आदि विविध उपायों से सुखप्राप्ति के निमित्त समस्त संसारी जीव प्रयत्न करते रहते हैं फिर भी यहां संसार में कोई भी जीव वास्तविक सुख का अनुभव नहीं कर पाता है तो इसका कारण क्या है जब यह विचार किया जाता है तो मालूम देता है कि यहां पर जितना भी सुख है वह वास्तविक सुख नहीं है-सुखाभास है कारण वह इन्द्रिय और मनसे उत्पन्न होता है। वास्तविक सुख तो मोक्षमे ही है, क्यों कि वह सुख निरतिशयरूप आत्यंतिक है। त्रैकालिक दुःखके अत्यन्ताभावसे विशिष्ट जो परमानंद सद्भावरूपता है वही निरतिशयता है। इस प्रकार का निरतिशयरूप जो सुख है वह संसार में नहीं है। क्यों कि सांसारिक सुख दुःखानुषक्त है। और मोक्ष का सुख ऐसा नहीं है। इसलिये सूक्ष्म एकेन्द्रिय से लेकर समस्त पचेन्द्रियतक के प्राणी सुख के अभि-

---

તીર્થંકર પ્રભુની વાણીને નમન કરીને હું, 'ઘાસિલાલમુનિ' આ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્ર પર આ 'સુદર્શિની' નામની ટીકા બનાવું છું ॥ ૪ ॥

આ અતિ વિચિત્રાકાર, અનિયત સ્વભાવવાળા, અપાર, અસાર સંસારમાં ધન આદિ વિવિધ ઉપાયોથી સુખ પ્રાપ્ત કરવા માટે સમસ્ત સંસારી જીવો પ્રયત્ન કરતા રહે છે, છતાં પણ આ સંસારમાં કોઈપણ જીવ વાસ્તવિક સુખનો અનુભવ કરી શકતા નથી તેનું શું કારણ છે, એવો વિચાર જ્યારે કરવામાં આવે છે ત્યારે એવું લાગે છે કે આ સંસારના જેટલા સુખ છે તે વાસ્તવિક સુખ નથી, પણ સુખનો આભાસ જ છે કારણકે તે ઇન્દ્રિય અને મનથી ઉત્પન્ન થાય છે વાસ્તવિક સુખ તો મોક્ષમાં જ છે કારણકે તે સુખ નિરતિશયરૂપ છે ત્રૈકાલિક દુઃખના અત્યંત અભાવવાળી જે પરમાનંદ સદ્ભાવરૂપતા છે, તેને જ નિરતિશયતા કહે છે એવા પ્રકારનું નિરતિશયરૂપ જે સુખ છે તે સંસારમાં મળતું નથી કારણકે સાંસારિક સુખ દુઃખાનુષક્ત છે મોક્ષનું સુખ તેવું નથી તેથી જ સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિયથી લઈને પંચેન્દ્રિય સુધીના સમસ્ત પ્રાણી સુખની

निरतिशयसुखसाधनं निर्णेतव्यम् । निरतिशयं च सुखं त्रैकालिकदुःखात्यन्ताभाव-विशिष्टपरमानन्दसद्भावरूपं पारमार्थिकमेव न त्वैहिकं, तस्येन्द्रियनोइन्द्रियसंयोगजन्यतयोत्पत्तिविनाशयोरविनाभावनियमाद्दुःखानुषक्तत्वात् , मरुमरीचिचयोच्चावचजलतरङ्गभङ्गविभ्रमवदसारत्वाच्चेति मोक्षस्यैव प्राधान्यमामनन्ति महामुनयः, तस्मादात्यन्तिकसुखमधिजिगमिषुणा मोक्षार्थे यतितव्यम् । मोक्षश्च ज्ञानक्रियासेवनेनैव भवतीति ज्ञानक्रिये एव तत्कारणं सिषाधयिषितव्यम् , अन्यथा

लाषि और दुःख से विमुख होते हुए दिखलाई पड़ते हैं। अतः यह निर्णय करना आवश्यक हो जाता है कि उस निरतिशय सुख का साधन क्या है? जब इस प्रकार का विचार गहराई के साथ किया जाता है तो यही निश्चित होता है कि उस सुख का साधन केवल एक मोक्ष ही है। संसार नहीं है-क्यों कि संसार जन्य जो सुख होता है वह इन्द्रिय और मन के संयोग से जन्य होने के कारण उत्पत्ति और विनाश का अविनाभावी होता है और इसलिये वह दुःख से बीच २ में मिश्रित रहा करता है। अतः मृगतृष्णा में ऊँची नीची जल तरगों के विभ्रमकी तरह यह असार होता है। इसलिये निरतिशय सुख का साधन संसार नहीं हो सकता है-केवल एक मोक्ष ही हो सकता है। ऐसी ही महामुनियोकी मान्यता है। इसलिये जो प्राणी इस निरतिशय सुखको प्राप्त करनेके अभिलाषी हैं उन्हें मोक्ष प्राप्तिमें ही प्रयत्न करना चाहिये, मोक्ष की प्राप्ति जीवोंको ज्ञान और क्रिया के सेवन करनेसे ही होती है। अतः ज्ञान और क्रिया ये दोनो ही उसके कारणरूपसे साधनके

ઇચ્છાવાળા અને દુ ખથી વિમુખ થતા દેખાય છે તેથી તે નિર્ણય કરવો જરૂરી થઈ પડે છે કે તે નિરતિશય સુખનુ સાધન કયુ છે? જ્યારે તે પ્રકારનો ઊંડો વિચાર કરવામા આવે છે ત્યારે એ જ નિશ્ચય પર અવાય છે કે તે સુખનુ સાધન કેવળ મોક્ષ જ છે, સસાર નથી કારણકે જે સુખ સસારજન્ય હોય છે તે ઇન્દ્રિય અને મનના સયોગથી પેદા થયેલ હોવાથી ઉત્પત્તિ અને નાશને પ્રાપ્ત કરનારૂ હોય છે, અને તેથી તે વચ્ચે વચ્ચે દુ ખથી મિશ્રિત રહ્યા કરે છે તેથી તે મૃગજળના ઊચા નીચા જળતરગોના વિભ્રમના જેવુ અસાર હોય છે તે કારણે નિરતિશય સુખનુ સાધન સસાર થઈ શકતો નથી પણ એક માત્ર મોક્ષ જ તેનુ સાધન બની શકે છે એવી જ મહામુનિયોની માન્યતા છે તેથી જે પ્રાણીને તે નિરતિશય સુખ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા હોય તેમણે મોક્ષ પ્રાપ્તિ માટે જ પ્રયત્નો કરવા જોઈએ જીવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ જ્ઞાન અને ક્રિયાના સેવનથી જ થાય છે તેથી જ્ઞાન અને ક્રિયા એ બન્ને તેના કારણરૂપ હોવાથી

मोक्षस्याप्यभावात् सुखप्राप्तेर्दूरमयाण स्यात्। सत्येव हि ज्ञाने इष्टानिष्टोपादान हानोपायविचारसञ्चारो भवति । तदभावे प्राणिनामास्रवेष्वेव नित्य प्रवृत्तिः स्यात् तस्मात् ज्ञान परमादरणीयम्। तच्चात्र श्रुतरूप गृह्यते स्वपरोपकारित्वात्। तदत्र प्रश्नव्याकरणमेव।

ननु शास्त्रस्यादौ मध्येऽन्ते च कृत मङ्गल निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं भवति, अध्येतारश्च शास्त्रधारणावन्तः प्रथन्ते, शास्त्र च शिष्योपशिष्यपरम्परागामि जायते- शिष्टाचारविषयत्वाच्च मगल कुतो न कृतमिति चेदुच्यते-

अत्र भगवदुक्तसाक्षाच्छ्रेयोभूतशास्त्रस्यैव मङ्गलरूपत्वात् मङ्गलमाचरितमेव तथापि शृणु-अस्मिन् शास्त्रे आदिमङ्गल "जबू इणमो" इति भगवदामन्त्रणेन,

---

लिये इष्ट है। अन्यथा मोक्षका अभाव हो जावेगा और इस तरहसे फिर सुख की प्राप्ति होना बहुत कठिन बात हो जावेगी। ज्ञानके होने पर ही इष्ट और अनिष्ट पदार्थोके उपादान (ग्रहण) और त्याग करनेमे जीवोकी बुद्धि लगती है। ज्ञान के अभावमे नहीं उस समय तो केवल आस्रवोंमें ही वे रोकटोक प्रवृत्ति होती रहती है। इसीलिये ज्ञानको परम आदरणीय कहा गया है। ऐसा वह ज्ञान स्व और पर का उपकारक होने के कारण यहा श्रुतरूप ग्रहण किया गया है। वह श्रुतरूप ज्ञान यहा प्रश्न व्याकरण ही है।

शका—शास्त्र की आदि में, मध्य मे, और अत में किया गया मगलाचरण निर्विघ्नरूप से उसकी परिसमाप्ति के लिये होता है-तथा जो उस शास्त्र के अध्येता होते हैं वे उस शास्त्र की धारणा से सुशोभित रहा करते ह और इस तरह से वह शास्त्र शिष्योपशिष्य परपरागामी बन जाता है। तथा शास्त्र की आदि मे, मध्य मे एव अन्त मे मगला-

---

સાધન તરીકે યોગ્ય છે નહીં તો મોક્ષની પ્રાપ્તિ થશે નહી અને એમ થવાથી સુખની પ્રાપ્તિ ઘણી મુશ્કેલ બની જશે જ્ઞાન હોય તો જ ઈષ્ટ અને અનિષ્ટ પદાર્થોના ઉપાદાન-(ગ્રહણ) અને ત્યાગ કરવા બાબતમા જીવોની બુદ્ધિ કામ કરી શકે છે, જ્ઞાન ન હોય તો નહી ત્યારે તો (તે જ્ઞાનના અભાવે) ફક્ત આસ્રવોમા જ રોકટોક વિના પ્રવૃત્તિ ચાલ્યા કરે છે તે કારણે જ્ઞાનને અત્યત આદરણીય બતાવ્યુ છે એવું તે જ્ઞાન સ્વ અને પરનુ ઉપકારક હોવાથી અહી શ્રુતરૂપે ગ્રહણ કરવામા આવેલ છે અહી પ્રશ્નવ્યાકરણ જ તે શ્રુતજ્ઞાન છે

શકા-શાસ્ત્રની શરૂઆતમા, મધ્યમા, અને અન્તે કરવામા આવેલ મગળાચરણ નિર્વિઘ્ને તેની પરિસમાપ્તિને માટે હોય છે તથા જેઓ તે શાસ્ત્રનુ અધ્યયન કરનાર હોય છે તેઓ તે શાસ્ત્રની ધારણાથી સુશોભિત રહ્યા કરે છે, અને એ રીતે તે શાસ્ત્ર શિષ્યોપશિષ્યની પરપરા સુધી પહોંચે છે તથા શાસ્ત્રના આરભમા,

मध्यमङ्गलं प्रथमसंवरद्वारे अहिंसा भगवतीवर्णनेन अन्त्यमङ्गलं च "नायपुत्तेण वीरेण भगवया पयासियं" इत्यालापकेन च विज्ञेयम्, इत्यलं विस्तरेण।

अथ प्रश्नव्याकरणमित्यस्य कः शब्दार्थः? उच्यते प्रश्ना =अङ्गुष्ठादिविद्याः, ते व्याक्रियन्ते=प्रतिपाद्यन्ते यस्मिन्निति प्रश्नव्याकरणम्, अत्र-अष्टोत्तरं प्रश्नशतम्। अष्टोत्तरमप्रश्नशतम्। अष्टोत्तरं प्रश्नाऽप्रश्नशतम्। या विद्याः, मन्त्रा वा पृष्टा एव

चरण करना ऐसा शिष्ट पुरुषों का आचार भी है-तो फिर शास्त्रकार ने इस सूत्र मे मंगलाचरण क्यों नहीं किया है?

उत्तर—इस प्रकार की आशंका ठीक नहीं है, क्यों कि भगवान् द्वारा कहा गया यह शास्त्र साक्षात् मंगल स्वरूप है अतः यह स्वयं ही मंगलरूप है अतः स्वयं मंगलरूप बने हुए शास्त्र में मंगलरूपता होने से शास्त्रकार ने उसे निबद्ध करने की अपेक्षा मंगलाचरण किया ही है। फिर भी सुनो-शास्त्रकार ने इस शास्त्र मे "जंबू इणमो" इस भगवान् के आमंत्रण से आदि मंगल, प्रथम संवर द्वार मे भगवती अहिंसा का वर्णन रूप मध्यमंगल, और "नायपुत्तेण वीरेण भगवया पयासियं" अन्तमें इस प्रकार के कथन से अन्त्यमंगल किया है, ऐसा जानना चाहिये। अब इस विषय मे और अधिक कहनेसे क्या लाभ।

शंका—"प्रश्नव्यकरण" इसका शब्दार्थ क्या है?

उत्तर—अंगुष्ठ आदि विद्याओं का नाम प्रश्न है। ये प्रश्न इसमें विस्तार पूर्वक प्रतिपादित किये गये है। इसलिये इससूत्रका नाम

મધ્યમા અને અન્તે મંગળાચરણ કરવું તેવો શિષ્ટ પુરુષોનો આચાર પણ છે છતા પણ સૂત્રકારે આ સૂત્રમા મંગળાચરણ કેમ કર્યું નથી?

ઉત્તર—આ પ્રકારની આશંકા યોગ્ય નથી, કારણકે ભગવાન દ્વારા કહેવામા આવેલ આ શાસ્ત્ર જ સાક્ષાત્ મંગળસ્વરૂપ છે, તેથી તે પોતે જ મંગળરૂપ છે તેથી સ્વયં મંગળરૂપ બનેલ શાસ્ત્રમા મંગળરૂપતા હોવાથી શાસ્ત્રકારે તેને સૂત્રરૂપે બાધવાની અપેક્ષાએ મંગળાચરણ કર્યું જ છે વળી સાભળો શાસ્ત્રકારે આ શાસ્ત્રમા "जंबू इणमो" આ પ્રમાણે ભગવાનના આમંત્રણથી આદિ મંગળ, પ્રથમ સંવરદ્વારમા ભગવતી અહિંસાના વર્ણનરૂપ મધ્યમંગળ, અને "नायपुत्तेण वीरेण भगवया पयासियं" અન્તમા એ પ્રકારના કથનથી અન્ત્યમંગળ કર્યું છે, એમ સમજી લેવું હવે આ વિષયમા વધુ કહેવાથી શો લાભ?

શંકા—"પ્રશ્નવ્યાકરણ"નો શબ્દાર્થ શું છે?

ઉત્તર—અંગુષ્ઠ આદિ વિદ્યાઓનું નામ પ્રશ્ન છે તે પ્રશ્નોનું આ સૂત્રમા વિસ્તારથી પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું છે તેથી તેનું નામ પ્રશ્નવ્યાકરણ પડ્યું છે

शुभाशुभ प्रतिपादयन्ति ते प्रश्नाः। एव ये अपृष्टा एव शुभाऽशुभं वदन्ति ते अप्रश्नाः। ये पृष्टा अपृष्टाश्च कथयन्ति ते प्रश्नाऽप्रश्नाः। तथा अन्येऽपि अतिशयाः, नागकुमारैः सुपर्णकुमारैः अन्यैश्च भवनपतिभि सह साधूनां संवादाः, इत्यादयः सन्ति।

नन्दीसूत्रवाचनाकाले प्रश्नव्याकरणे पञ्चचत्वारिंशदध्ययननिबन्धः समुपलब्ध आसीत्। तदुक्त नन्दीसूत्रे-"से किं त पण्हावागरणाइ? पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तर पसिणसय, अट्ठुत्तर अपसिणसय, अट्ठुत्तरं पसिणाऽपसिणसय। त जहा-अगुट्ठपसिणाइ, बाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अन्नेवि विचित्ता दिव्वा विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघविज्जति५। पण्हावागरणाण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्टयाए दसमे अगे एगे सुयक्खधे, पणयालीस अज्झयणा, पणयालीस उद्देसणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणतागमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एवं आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूवणा से त आघविज्जइ। पण्हा वागरणाइ"॥

प्रश्नव्याकरण हुआ है। इनमें १०८प्रश्न, १०८ अप्रश्न, और १०८ही प्रश्नाप्रश्न हैं। जो विद्याएँ अथवा मत्र, पूछने पर शुभ और अशुभ का कथन करते हैं वे प्रश्न हैं। जो विना पूछे ही शुभ और अशुभ कहते हैं वे अप्रश्न हैं। तथा जो मिश्ररूप में पूछने पर-शुभ और अशुभ दोनों को प्रगट करते हैं। वे प्रश्नाप्रश्न हैं। इसी तरह और भी अतिशय एव नागकुमार, सुवर्णकुमार तथा अन्य भवनपतियों के साथ, साधुओं के सवाद इसमें प्रदर्शित किये गये हैं।

नंदीसूत्र के वाचनाकाल में प्रश्नव्याकरण में पैंतालीस अध्ययनरूप

તેમા ૧૦૮ પ્રશ્ન, ૧૦૮ અપ્રશ્ન, અને ૧૦૮ પ્રશ્નાપ્રશ્ન છે જે વિદ્યાઓ અથવા મત્ર, પૂછવામા આવતા શુભ અને અશુભનુ કથન કરે છે, તેમને પ્રશ્ન કહે છે પૂછ્યા વિના જ શુભ અને અશુભ બતાવનારને અપ્રશ્ન કહે છે તથા જે મિશ્રરૂપે-પૂછવામા આવતા શુભ અને અશુભ બન્નેને પ્રગટ કરે છે તે પ્રશ્નાપ્રશ્ન કહેવાય છે એજ રીતે બીજા પણ નાગકુમાર, સુપર્ણકુમાર તથા અન્ય ભવનપતિઓની સાથે, સાધુઓના ઘણા સવાદ આ સૂત્રમા બતાવવામા આવ્યા છે

નદીસૂત્રના વાચનકાળમા પ્રશ્નવ્યાકરણમા પિસ્તાળીશ અધ્યયન સમુપલબ્ધ

तदनन्तर स्थानाङ्गसूत्रवाचनावेलाया पञ्चचत्वारिंशदध्ययनेषु दशाध्ययनान्येवोपलब्धान्यासन्-तदुक्त स्थानाङ्गे—

"पण्हावागरणदसाण दसअज्झयणा पण्णत्ता। त जहा—उवमा, सखा[२], इसिभासियाइ[३], आयरियभासिया[४], महावीरभासियाइ[५], खोमगपसिणाइ, कोमलपसिणाइ[७], अद्दागपसिणाइं[८], अगुट्ठपसिणाइ[९], बाहुपसिणाइ[१०]" ॥ स्था० १०ठा।

इदानी तु पूर्वोक्तानि अध्ययनानि विच्छेद गतानीति हेतो-पञ्चास्रवपञ्चसवरात्मकदशाध्ययनानि समुपलभ्यन्ते।

तपः सयमाराधकाः सौधर्मादिदेवलोकेषु समुत्पद्यन्ते, उत्कृष्टतपःसयमाराधकास्तस्मिन्नेव भवे मोक्षमाप्नुवन्ति किन्तु येषामायुष्य सप्तलवपरिमित हीन ते कर्मक्षयाऽभावात् विजयादि विमानेषु समुत्पद्यन्ते, इति नवमाङ्गे अनुत्तरोपपातिकसूत्रे वर्णितम्।

निबध समुपलब्ध था। यह बात "से किं त पण्हावागरणाइ? से लेकर "से त पण्हावागरणाइ" तक के इस नदीसूत्र के पाठ से पुष्ट होती है। इसके बाद स्थानाङ्गसूत्र के वाचनाकाल में पैंतालीस अध्ययनों मे से केवल १० ही अध्ययन उपलब्ध रह गये। जैसा कि स्थानाङ्गसूत्र के इस पाठ से प्रमाणित होता है कि "पण्हावागरणदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा" इत्यादि। पर अब तो इस समय वे उपमा, सख्या, ऋषिभाषित आचार्यभासित, महावीरभासित आदि दश अध्ययन भी उपलब्ध नही है, क्यों कि इनका विच्छेद हो चुका है। इसलिये पांच आस्रव और पाच सवर सबधी ये दश अध्ययन ही उपलब्ध हैं।

नौमा अग जो अनुत्तरोपपातिक सूत्र है उसमें ऐसा वर्णन किया कि तप सयमके आराधक जीव सौधर्म आदि देवलोकों में उत्पन्न होते हैं।

(પ્રાપ્ય) હતા તે વાત 'से किं त पण्हावागरणाइ? થી લઇને "से त पण्हावागरणाइ" સુધીના આ નદીસૂત્રના પાઠથી સિદ્ધ થાય છે ત્યારબાદ સ્થાનાગસૂત્રના વાચનકાળમા પિસ્તાળીશ અધ્યયનોમાથી ફક્ત દસ જ ઉપલબ્ધ હતા તે વાતનુ સ્થાનાગસૂત્રના આ પાઠથી પ્રતિપાદન થાય છે-"पण्हावागरणदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा" ઈત્યાદિ પણ અત્યારે તો ઉપમા, સખ્યા, ઋષિભાસિત, આચાર્ય ભાસિત, મહાવીરભાસિત આદિ દશ અધ્યયન પણ ઉપલબ્ધ નથી, કારણકે તેનો વિચ્છેદ થઈ ગયો છે તેથી પાચ આસ્રવ અને પાચ સવર સબધી આ દશ અધ્યયનો જ ઉપલબ્ધ છે

અનુત્તરોપપાતિકસૂત્ર નામનુ જે નવમુ અગ છે તેમા એવુ વર્ણન કરવામા આવેલ છે કે તપ સયમની આરાધના કરનાર જીવ સૌધર્મ આદિ-

उत्कृष्टतपःसंयमाराधनेन संयमवतामङ्गुष्ठदर्पणविद्यादिसंसिद्धयः समुत्पद्यन्ते, ताभिस्ते प्रतिवादिप्रश्नानुत्तरन्ति । तदुपलब्धिः सम्प्रति नास्ति, विच्छेद गतत्वात् । इदानीं तु पञ्चास्रवपञ्चसंवरप्रतिपादनपरं प्रश्नव्याकरणमुपलभ्यते ।

उत्कृष्टतपःसंयमाराधनं हि पञ्चास्रवपञ्चसंवरज्ञानं विना न भवति-इति-आस्रवसंवरस्वरूपनिरूपकमिदं प्रश्नव्याकरणं निरूप्यत इति नवमाङ्गेन सहास्य संबंध ।

अस्मिन् प्रश्नव्याकरणे पञ्चास्रवपञ्चसंवरात्मकानि दशाध्ययनानि सन्ति, तत्रास्रवसंवरभेदाभ्यां द्वौ भागौ तयोरास्रवस्य बन्धकारणत्वेन पूर्वं निरूपणं,

---

तथा जो उत्कृष्ट तप संयम की आराधना करते हैं वे उसी भव में मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु जिनकी आयु सातलव परिमित है हीन है वे कर्मक्षय नहीं कर सकते हैं इसलिये कर्मक्षय के अभाव से वे विजयादिक विमानों मे उत्पन्न हो जाते हैं।

उत्कृष्ट तप संयम के आराधना से संयमशाली जीवों को अंगुष्ठ-विद्या दर्पणविद्या आदि विद्याएँ सिद्ध हो जाती हैं। इनसे वे प्रतिवादियों के प्रश्नों का उत्तर देते रहते हैं। इनकी उपलब्धि इस समय इनके विच्छेद हो जाने के कारण नहीं होती है। इस समय तो पांच आस्रव और पाच संवर के प्रतिपादन करने में तत्पर मात्र यह प्रश्नव्याकरण उपलब्ध हो रहा है। उत्कृष्ट तप संयम की आराधना पाच आस्रव और पाच संवर इनके ज्ञान हुए विना नहीं हो सकती है। इसलिये आस्रव और संवर के स्वरूप को निरूपण करने वाला यह प्रश्नव्याकरण निरूपित किया जाता है। यही नौवें अंग के साथ इसका संबंध है।

દેવલોકોમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા જે ઉત્કૃષ્ટ તપ સંયમની આરાધના કરે છે તેઓ એ જ ભવમા મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે, પણ જેનુ આયુષ્ય સાતલવ પરિમિત છે, હીન છે, તેઓ કર્મોનો ક્ષય કરી શકતા નથી તેથી કર્મક્ષયને અભાવે તેઓ વિજયાદિક વિમાનોમા ઉત્પન્ન થાય છે

ઉત્કૃષ્ટ તપ સંયમની આરાધનાથી સંયમશાળી જીવોને અંગુષ્ઠ વિદ્યા, દર્પણ વિદ્યા આદિ વિદ્યાઓ પ્રાપ્ત થાય છે તેમની મદદથી તે પ્રતિવાદીઓના પ્રશ્નોના ઉત્તરો આપે છે તેમની ઉપલબ્ધિ (પ્રાપ્તિ) આ સમયમા તેમનો વિચ્છેદ થઈ જવાથી થઈ શકતી નથી હાલમા તો પાચ આસ્રવ અને પાચ સંવરનુ પ્રતિપાદન કરનાર ફક્ત આ પ્રશ્નવ્યાકરણ જ ઉપલબ્ધ થઈ શકે છે પાચ આસ્રવ અને પાચ સંવરનુ જ્ઞાન થયા વિના ઉત્કૃષ્ટ તપ સંયમની આરાધના થઈ શકતી નથી તે કારણે આસ્રવ અને સંવરના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરનાર આ પ્રશ્નવ્યાકરણનુ નિરૂપણ કરવામા આવે છે એ જ નવમા અંગ સાથે તેનો સંબંધ છે

ततस्तत्परिहारोपायभूतसंवरवर्णनं भगवता कृतम्। नहि कोऽपि मेधावी दुःखस्वरूपस्याऽपरिज्ञाने तत्परिहारोपायपरिमार्गणं विधत्ते, नह्यसंसिद्धे ज्वरादिरोगे तच्चिकित्साऽऽवश्यकत्वमुपपद्यते, अतः पूर्वमास्रवपञ्चकमुद्देशक्रमप्राप्तं नामतः प्रदर्शयति। आस्रवेष्वपि पूर्वं हिंसानिरूपणं कृतम्, असत्यादिभिरपि हिंसाया एव जायमानत्वेन हिंसायाः प्रधानभूतत्वात्, अतः प्रथममास्रवद्वारमाह—"जम्बू-इणमो" इत्यादि।

इस प्रश्नव्याकरण में पाच आस्रव और पाच संवर के संबध को लेकर दस अध्ययन हैं इसलिये इसे दो भागों मे विभक्त किया गया है। आस्रव का वर्णन बंध का कारण होने से प्रथम भाग में किया गया है और संवर का वर्णन आस्रव के परिहार का उपायभूत होने के कारण उसके बाद में द्वितीय भाग में किया गया है। कैसा भी बुद्धिमान् पुरुष क्यों न हो जबतक वह दुःख के स्वरूप से अपरिज्ञात रहता है तो वह उसके परिहार करने के उपायभूत मार्ग की गवेषणा नहीं करता है, तथा जैसे ज्वरादिरोग की संसिद्धि के अभाव मे अर्थात् उसके पूर्ण निदान के अभाव मे उसके शमन के उपाय की गवेषणा नहीं होती है, उसी तरह जबतक आस्रवतत्त्व का परिज्ञान जीव को नहीं हो जाता है, तबतक संवररूप उसके निरोधकभूत मार्ग को जानने की भी जिज्ञासा उसको उत्पन्न नहीं हो सकती है। इसलिये सब से पहिले उद्देशक प्राप्त पांच आस्रवों को उनके स्वरूप को आगे विशेष स्पष्ट करने के अभिप्राय से सूत्रकार नाम लेकर प्रदर्शित करते है। इन पाच आस्रवों में भी सूत्र-

આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા પાચ આસ્રવ અને પાચ સંવર વિષેના દસ અધ્યયન છે, તેથી તેના બે ભાગ પાડવામા આવ્યા છે આસ્રવો બંધના કારણરૂપ હોવાથી આસ્રવોનુ વર્ણન પહેલા ભાગમા કરવામા આવ્યુ છે, અને સંવર આસ્રવના પરિત્યાગને માટે ઉપાયરૂપ હોવાથી તેમનુ વર્ણન આસ્રવના વર્ણન પછી બીજા ભાગમા કરેલ છે ગમે તેવો બુદ્ધિશાળી માણસ હોય પણ જો તે દુઃખના સ્વરૂપથી અજાણ રહે તો તેનો પરિહાર કરવાના ઉપાયરૂપ માર્ગની પ્રાપ્તિ તે કરી શકતો નથી તથા જેમ જ્વર આદિ રોગોમા તેનુ પૂર્ણ નિદાન કર્યા વિના તેનુ શમન કરવાનો ઉપાય જડતો નથી તેમ આસ્રવતત્ત્વનુ પરિજ્ઞાન જ્યાસુધી જીવને થાય નહી, ત્યાસુધી તેમને રોકનાર–તેમના નિરોધક–સંવરરૂપ માર્ગને જાણવાની જિજ્ઞાસા તેનામા ઉત્પન્ન થઈ શકતી નથી તેથી સૌથી પહેલા ઉદ્દેશપ્રાપ્ત પાચ આસ્રવોના નામ સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે તેમનુ સ્વરૂપ આગળ જતા વિસ્તારથી સ્પષ્ટ કરવામા આવશે તે પાચ આસ્રવોમા પણ સૂત્રકારે સૌથી

अत्र "तेण कालेण" इत्याद्युत्क्षेपवाक्य वाच्यम्। चम्पानगर्या सुधर्मस्वामिनः समवसरण, तत्र कोणिको नाम राजा, धारिणी नाम देवी'त्यादि वर्णन मौपपातिकसूत्रादवसेयम्। सुधर्मस्वामिनो जम्बूस्वामिनश्च वर्णन ज्ञातासूत्रस्य प्रथमाध्ययनतो विज्ञेयम्। जम्बूस्वामिनः सुधर्मस्वामिनश्च प्रश्नोत्तरवाक्य प्रदर्श्यते–

कार ने पहिले हिंसारूप आस्रव का जो निरूपण किया है उसका कारण यह है कि हिंसा से अतिरिक्त जो मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ये आस्रव द्वार हैं उनसे हिंसा ही उत्पन्न होती है। इसलिये उस हिंसा में प्रधानता आने से अब सूत्रकार सर्व प्रथम उसी हिंसा रूप आस्रव द्वार का निरूपण करते हैं–" जबू इणमो " इत्यादि।

इस सूत्र की सगति के लिये इस में " तेण कालेण " इत्यादि उत्क्षेपक वाक्य सबधित करलेना चाहिये-अर्थात उसकाल में और उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी। उसके शासक कोणिक राजा थे। उनकी रानी का नाम धारिणी देवी था। तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए वहा सुधर्मास्वामी का आगमन हुआ-इत्यादि प्रकार का समस्त वर्णन जैसा औपपातिक सूत्र में किया गया है वैसा ही जान लेना चाहिये और उसे " जबू इण मो " इस सूत्र की सगति निमित्त यहा लगा लेना चाहिये। सुधर्मास्वामी और जबू स्वामी का वर्णन ज्ञाता सूत्र के प्रथम अध्ययन मे किया हुआ है। सो यह भी वहा से ही जान लेना चाहिये। अब जबूस्वामी और सुधर्मास्वामी की इस प्रश्नव्याकरण

પહેલા હિંસારૂપ આસ્રવનુ નિરૂપણ કર્યું છે તેનુ કારણ એ છે કે હિંસા સિવાય મૃષાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન અને પરિગ્રહ, એ જે આસ્રવ દ્વાર છે, તેમના વડે હિંસા જ ઉત્પન્ન થાય છે તે કારણે તે હિંસામા પ્રધાનતા આવવાથી, સૂત્રકાર સૌથી પહેલા એજ હિંસારૂપ આસ્રવદ્વારનુ નિરૂપણ કરે છે–"जबू इणमो"ઈત્યાદિ

આ સૂત્રના સબધને માટે તેમા "तेण कालेण" ઈત્યાદિ ઉત્ક્ષેપક વાકયનો સબધ જોડી દેવો જોઇએ એટલે કે તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામની એક નગરી હતી કોણિક રાજા ત્યાના રાજા હતા તેમની રાણીનુ નામ ધારિણી દેવી હતુ તીર્થંકર પરપરાનુસાર વિહાર કરતા કરતા ત્યા સુધર્માસ્વામીનુ આગમન થયુ ઈત્યાદિ પ્રકારનુ આખુ વર્ણન જેમ ઔપપાતિક સૂત્રમા કરાયુ છે તે પ્રમાણે સમજી લેવુ અને તેને "जबू इणमो" આ સૂત્રના સબધને માટે અહીં જોડી દેવુ જોઇએ સુધર્માસ્વામી અને જબૂસ્વામીનુ વર્ણન જ્ઞાતાસૂત્રના પહેલા અધ્યયનમા કરેલ છે તો તે પણ ત્યાથી સમજી લેવુ જોઈએ હવે જબૂસ્વામી અને સુધર્માસ્વામી વચ્ચે આ પ્રશ્નવ્યાકરણસૂત્રને વિષે જે પ્રશ્નોત્તરરૂપે

मूलम्-"जइण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण अयमट्ठे पन्नत्ते। दसमस्स ण भंते अगस्स पण्हावागरणाण समणेण ३ जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? जबू ! दसमस्स अगस्स समणेण जाव सपत्तेण दो दारा पण्णत्ता। आसवदारा य सवरदारा य। पढमस्स ण भंते ! दारस्स समणेण ३ जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? जबू ! पढमस्स ण दारस्स समणेण जाव सपत्तेण पच अज्झयणा पण्णत्ता। दोच्चस्स ण भंते ! एव चेव ! एएसि ण भंते ! अज्झयणाण अण्हय सवराण समणेण ३ जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? । तएण अज्जसुहम्मे थेरे जबू नामेण अणगारेण एव वुत्ते समाणे जबू अणगार एव वयासी"—

छाया-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन नवमस्याङ्गस्य अनुत्तरोपपातिकदशानामयमर्थः प्रज्ञप्तः। दशमस्य खलु भदन्त ! अङ्गस्य प्रश्नव्याकरणानां श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? जम्बू ! दशमस्य-अङ्गस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन द्वे द्वारे प्रज्ञप्ते-आस्र-

सूत्र के सबध मे जो प्रश्नोत्तर रूप वातचीत हुई है उसको प्रकट करते हैं- 'जइण भंते' इत्यादि।

हे भदन्त! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं अनुत्तरोपपातिक दशाङ्ग नामके नवमे अ ग का जब इस प्रकार से अर्थ प्ररूपित किया है-तो उन्ही यावत सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रश्नव्याकरण नामक दशवें अ ग का क्या अर्थ निरूपित किया है ? इस प्रश्न के उत्तर मे सुधर्मास्वामी ने उनसे इस प्रकार कहा-हे जबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने इस प्रश्नव्याकरणरूप दशवें अग के दो द्वार प्ररूपित किये हैं उसमे पहिला आस्रव द्वार है और

વાતચીત થઈ છે તેને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—"जइण भंते !" ઈત્યાદિ

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર, કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે, તેમણે અનુત્તરોપપાતિક દશાગ નામના નવમા અગનો જો આ પ્રમાણે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે, તો તે સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામના દસમા અગનો કયો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સુધર્મા સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ—હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ દસમા અગના બે દ્વાર પ્રરૂપિત કર્યા છે, તેમા પહેલુ

वद्वार च संवरद्वार च। प्रथमस्य खलु भदन्त! द्वारस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सप्राप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि?। जम्बू! प्रथमस्य खलु द्वारस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन पञ्च-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि। द्वितीयस्य खलु भदन्त!० एवमेव। एतेषां खलु भदन्त! अध्ययनानाम् आस्रवसंवराणां श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः?। ततः खलु आर्य सुधर्मा स्थविरः जम्बूनाम्ना अनगारेण एवमुक्तः सन् जम्बूमनगारमेवमवादीत्—'जम्बू इणमो' इत्यादि।

मूलम्—"जंबू इणमो अण्हय संवर,—विणिच्छिय पवयणस्स-णिस्सदं। वोच्छामि निच्छयत्थं सुभासियत्थं महेसीहिं ॥सू०१॥

टीका—'हे जम्बू!' इत्यामन्त्रणेन जम्बूस्वामिनं प्रति सुधर्मास्वामी प्राह—'हे जम्बू! इणमो' इदम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं प्रश्नव्याकरणशास्त्रं 'वोच्छामि'

दूसरा संवर द्वार है। हे भदन्त! प्रथम द्वार के श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं कितने अध्ययन प्ररूपित किये हैं? इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मास्वामी ने उनसे कहा-हे जंबू! यावत् सिद्धिगति नामक स्थानको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने प्रथम द्वारके पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं।

प्रश्न-द्वितीय द्वार के हे भदंत! कितने अध्ययन प्ररूपित किये हैं।

उत्तर—जंबू! इतने ही अध्ययन द्वितीय द्वार के प्ररूपित किये हैं। जंबूस्वामी ने पुनः सुधर्मास्वामी से पूछा कि-हे भदन्त! इन आस्रव एवं संवर संबंधी अध्ययनों का अर्थ यावत् सिद्धिगति नामक स्थानों को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने कैसा प्ररूपित किया है? इस प्रकार अनगार जंबू स्वामी से पूछे गये स्थविर आर्य सुधर्माने उन जंबू अनगार

આસ્રવ દ્વાર છે અને બીજું સંવર દ્વાર છે "હે ભદન્ત! સિદ્ધિગતિને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યાં છે?" આ પ્રમાણે જંબૂસ્વામી વડે પૂછવામાં આવતા સુધર્માસ્વામીએ તેમને કહ્યું—'હે જંબૂ! સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પામેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રથમ દ્વારના પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યાં છે"

પ્રશ્ન—"બીજા દ્વારના કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યાં છે?"

ઉત્તર—"એટલા જ અધ્યયન બીજા દ્વારના પણ પ્રરૂપિત કર્યાં છે" જંબૂસ્વામીએ ફરીથી સુધર્માસ્વામીને પૂછ્યું કે-હે ભદન્ત! સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પામેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે તે આસ્રવો અને સંવર સંબંધી અધ્યયનોનો અર્થ કેવો પ્રરૂપિત કર્યો છે? આ પ્રમાણે અણગાર જંબૂસ્વામી

वक्ष्यामि=त्वां प्रति प्ररूपयिष्यामि। तत् कीदृशमित्याह-'अण्हये'त्यादि-'अण्हयसवरविणिच्छियं' आस्रवसंवरविनिश्चित, आस्रवन्ति=आगच्छन्ति कर्मजलानि आत्मसरसि यैस्ते आस्रवाः=कर्मबन्धहेतुभूताः प्राणातिपातादयः, यद्वा-आस्रवणम्-आस्रवः-आगमनम्। स द्विविधः-द्रव्यतो भावतश्च, तत्र द्रव्यतो यज्जलान्तर्गतनावादौ छिद्रैर्जलागमनम्। भावतस्तु-प्राणातिपातादिभिरात्मनि कर्मागमनम्। ससारसागरान्तर्गतात्मनौकाया प्राणातिपातादिछिद्रैः कर्मजलागमनमिति भावः। स प्राणातिपातादिरूपः पञ्चविधः। संव्रियन्ते=प्रतिरुध्यन्ते

से ऐसा कहा—'जंबू इणमो०' इत्यादि।

टीकार्थ-इस सूत्रमें "जंबू" यह पद संबोधन अर्थमें प्रयुक्त हुआ है। इससे यह लक्षित होता है कि सुधर्मास्वामी जंबू स्वामी से कहते हैं कि (जंबू इणमो) हे जंबू! मैं अनुपद वक्ष्यमाण प्रश्न व्याकरणरूप शास्त्र (वोच्छामि) तुमको कहूँगा। (अण्हयसवरविणिच्छियं) इस शास्त्र में आस्रव एवं संवर का निर्णय उनके लक्षणो एवं भेदादिकों के कथन पूर्वक किया गया है। "विणिच्छियं" पद का अर्थ है विशेषरूप से निर्धारित करना। तथा आस्रवका अर्थ है कर्मबंधके हेतुभूत प्राणातिपातादिक। इनके द्वारा ही आत्मरूपी तालावमें जलतुल्य कर्मोंका आगमन होता रहताहै। जिस प्रकार तडाग मे जल के आने के लिये नाले हुआ करते हैं उसी प्रकार आत्मा में भी प्राणातिपात आदि रूप नाला द्वारा ज्ञानावरणीय आदि कर्मरूप जल का आना होता रहता है। अथवा-आना यह-आस्रव है यह आस्रव द्रव्य और भाव के भेद से दो प्रकार का कहा गया है।

વડે પૂછાતા સ્થવિર આર્યસુધર્માએ તે જંબૂ અણગારને કહ્યુ—"जंबू इणमो" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ સૂત્રમા "जंबू" પદ સબોધન અર્થમા વપરાયુ છે તેથી એ લક્ષિત થાય છે કે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે કે "जंबू इणमो" હે જબૂ! હુ આ નીચે પ્રમાણેનુ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ શાસ્ત્ર "वोच्छामि" તમને કહીશ "अण्हयस्वरविणिच्छियं" આ શાસ્ત્રમા આસ્રવ અને સવરદ્વારનો નિર્ણય તેમના લક્ષણો અને ભેદાદિના કથનપૂર્વક કરવામા આવ્યો છે "विणिच्छियं" પદનો અર્થ વિશેષરૂપે નિર્ણિત કરવો, તથા આસ્રવનો અર્થ કર્મબધના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાતાદિક થાય છે તેમના દ્વારા જ આત્મારૂપી તળાવમા જળ સમાન કર્મોનુ આગમન થયા કરે છે જેમ તળાવમા પાણી આવવા માટે નાળા હોય છે, તે જ પ્રમાણે આત્મામા પણ પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ નાળા દ્વારા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મરૂપ જળનુ આગમન થતુ રહે છે અથવા આવવું તે આસ્રવ છે તે આસ્રવ દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી બે પ્રકારનો.

प्रविशत्कर्मजलानि आत्मसरसि यैस्ते संवरा –कर्मनिरोधहेतुभूताः प्राणातिपात विरमणादयः। यद्वा–संवरणं संवरः–स्थगनम्। अयमपि द्विविधः द्रव्यतो भावतश्च। तत्र द्रव्यतस्तथाविधचिक्कणमृत्तिकादिभिः सलिलोपरि तरत्तरण्यादेरनारतप्रविशन्नीराणां विवराणां पिधानम्। भावतः प्राणातिपातविरमणादिभिरात्मनि प्रविशत्कर्मणां निरोधः। असावपि प्राणातिपातविरमणादिरूपः पञ्चविधः। ते विनिश्चीयन्ते=

जल के भीतर पडी हुई नौका में छिद्रों द्वारा जो जल का आना होता है वह द्रव्यास्रव है। प्राणातिपात आदि अशुभ क्रियाओं द्वारा आत्मा में जो कर्मों का आना होता है वह भावास्रव है। तात्पर्य केवल इसका यह है कि संसार रूप सागर के अन्तर्गत इस आत्म रूप नाव में प्राणातिपात आदि छिद्रों द्वारा कर्मरूप जल का आगमन होना रहता है वह आस्रव है। कर्मागमन हेतुभूत यह प्राणातिपातरूप आस्रव पांच प्रकार का है। आत्मारूप सरोवर में प्रवेश होने से कर्मरूप जल जिन क्रियाओं से रुकता है उनका नाम संवर है। प्राणातिपात आदि रूप क्रियाओं से विरमण होना यही कर्मों के रोकने का उपाय भूत संवर है। अथवा रुकना इसका नाम संवर है, यह संवर भी द्रव्य और भाव की अपेक्षा दो प्रकार का है–चिकनी मृत्तिका आदि से जल के ऊपर तैरती हुई नौका आदि का छेदों के कि जिनसे निरन्तर उसमें जल आ रहा हो बंद कर देना यह द्रव्य की अपेक्षा संवर है, तथा प्राणातिपातविरमण आदि उपायों से आत्मा में प्रविष्ट होते हुए कर्मों का रोकदेना यह भाव की अपेक्षा संवर है। यह संवर भी प्राणातिपात आदिकों के विरमण

બતાવ્યો છે પાણીમાં પડેલી નૌકામાં છિદ્રો દ્વારા જે જળનું આગમન થાય છે તે દ્રવ્યાસ્રવ છે પ્રાણાતિપાત આદિ અશુભ ક્રિયાઓ દ્વારા આત્મામાં જે કર્મોનું આગમન થાય છે તે ભાવાસ્રવ છે તેનું તાત્પર્ય એટલું જ છે કે સંસારરૂપી સાગરની અંદર આ આત્મારૂપી નાવમાં પ્રાણાતિપાત આદિ છિદ્રો દ્વારા કર્મરૂપી જળનું જે આગમન થયા કરે છે તેને આસ્રવ કહે છે કર્માગમનના કારણરૂપ તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાંચ પ્રકારના આસ્રવ છે કર્મરૂપ જળ જે ક્રિયાઓથી આત્મારૂપ સરોવરમાં પ્રવેશ પામતું અટકે છે તે ક્રિયાઓને સંવર કહે છે પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓનું વિરમણ થવું એ જ કર્મોને રોકવાના ઉપાયભૂત સંવર છે, અથવા સંવર એટલે રોકવું તે સંવર પણ દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ બે પ્રકારનો છે પાણીમાં તરતી નૌકાના જે છિદ્રોમાંથી પાણી પ્રવેશ કરતું હોય તે છિદ્રોને ચીકણી માટિ આદિથી બંધ કરી દેવા તે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ સંવર છે, તથા પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ ઉપાયોથી આત્મામાં પ્રવેશ કરતા કર્મોને રોકી લેવા તે ભાવની અપેક્ષાએ સંવર છે તે સંવર પણ પ્રાણાતિપાત

है कि यह प्रश्नव्याकरणशास्त्र प्रवचनरूप प्रफुल्लित पुष्प के रस जैसा सार भूत है। इसमे आस्रव और संवर तत्त्वका सुन्दर निर्दोष विवेचन हुआ है। और यह विवेचन तीर्थंकर परंपरा के अनुसार जैसा होता आया है वैसा ही हुआ है।

भावार्थ—टीकाकार ने "आस्रवति-आगच्छति, कर्मजलानि यैस्ते आस्रवाः, यद्वा-आस्रवणम् आस्रवः संव्रियन्ते-प्रतिरुद्ध्यन्ते प्रविशत्कर्म-जलानि यैस्ते संवरा, यद्वा संवरण संवरः" इस प्रकार से आस्रव और संवर की व्युत्पत्ति की है, उससे प्रथम व्युत्पत्ति के अनुसार कर्म-बंध के कारणभूत प्राणातिपात आदि क्रियाओं को आस्रव कहा गया है कारण कि इन्हीं के द्वारा जीव नवीन२ कर्मों का बंध करता रहता है। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार आने मात्र का नाम आस्रव कहा गया है सो यह, द्रव्य और भाव के भेद से दो प्रकार का कहा गया है। द्रव्यास्रव कर्म-बंध का कारण नहीं है। कर्मबंध का कारण तो भावास्रव ही हैं, क्यों कि प्राणातिपात आदिरूप भावों से ही कर्मों का आगमन होता है। इसी तरह संवर के विषय मे भी जानना चाहिये। संवर, आस्रव का निरोधक होता है। छिद्रों के द्वारा नौका मे जल का आना यह आस्रव के स्थानापन्न है और उन छिद्रों को बंद कर देना यह संवरके स्थानापन्न है।

અર્થ છે કે આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્ર પ્રવચનરૂપ વિકસિત પુષ્પના રસ જેવું સારભૂત છે અને આ વિવેચન તીર્થંકર પરંપરા પ્રમાણે જે પ્રમાણે થતુ આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ થયું છે

ભાવાર્થ—ટીકાકારે આ રીતે આસ્રવ અને સંવરની વ્યુત્પત્તિ કરી છે—"आस्रवति-आगच्छति, कर्मजलानि यैस्ते आस्रवा" (જેના દ્વારા કર્મજળ આવે છે તે આસ્રવો કહેવાય છે) અથવા "आस्रवणम् आस्रव" (આવવું એટલે આસ્રવ) "संव्रियन्ते-प्रतिरुद्ध्यन्ते प्रविशत्कर्मजलानि यैस्ते संवरा" (જેના વડે કર્મજળ પ્રવેશ પામતુ અટકે છે તે સંવર છે) અથવા "संवरण संवर" (સંવર એટલે જવું) તેમાંથી પહેલી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે કર્મબંધના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓને આસ્રવ બતાવ્યા છે બીજી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આગમન માત્રનું નામ આસ્રવ બતાવ્યું છે તો તે દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી બે પ્રકારના કહેલ છે દ્રવ્યાસ્રવ કર્મબંધનું કારણ નથી કર્મબંધનું કારણ તો ભાવાસ્રવ જ છે, કારણકે પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ ભાવોથી જ કર્મનું આગમન થાય છે એ જ પ્રમાણે સંવરને વિષે પણ સમજવું સંવર આસ્રવનો નિરોધક (રોકનાર) હોય છે, છિદ્રો દ્વારા નૌકામાં જળનું પ્રવેશવું તે આસ્રવના સ્થાન સમાન છે અને તે છિદ્રોને બંધ કરી દેવા તે સંવરના સ્થાન

'यथोद्देश निर्देश', इति न्यायेन फलतो नामतश्चास्रवप्रकारानाह— 'पचविहो' इत्यादि ।

मूलम्–पंचविहो पण्णत्तो जिणेहि इह अण्हओ अणादीओ।
हिसा१ मोस२ मदत्त ३ अबभ४ परिग्गह ५ चेव ॥सू०२॥

टीका—'जिणेहिं' जिनैः=रागाद्यन्तरङ्गरिपुविजेतृभिरर्हद्भिः इह=जिन शासने ससारे वा, 'अण्हओ' आस्रव 'अणादीओ' अनादिकः—नास्यादिः प्रथमोत्पत्तिर्विद्यते इत्यनादिकः। उपलक्षणत्वादस्य 'अपर्यवसितः' इत्यपि द्रष्टव्यम्,

---

प्राणातिपातादिरूप भाव, प्राणातिपात आदि विरमणरूप भावसवर से प्रतिरुद्ध होते है। और ऐसा होने से ही कर्मों का आगमन रुकना है। "निश्चयार्थ"में 'निः' शब्दका अर्थ दूर होना है। तथा चयका अर्थ ज्ञानावरणीयादि कर्मपुज है। वह कर्मपुज जिस स्थानसे दूर हो चुका है ऐसा वह स्थान मोक्ष है, और वह मोक्ष जिसका प्रयोजन है वह निश्चयार्थ शास्त्र है। अथवा निश्चय का अर्थ मोक्ष है। इस मोक्ष की प्राप्ति के लिये ही इस शास्त्र का प्रणयन हुआ है ॥सू०१॥

उद्देशके अनुसार ही निर्देश हुआ करता है इस न्याय को लेकर सूत्रकार फल और नाम की अपेक्षा अब आस्रव के प्रकारों को प्रकट करते है—'पचविहो पण्णत्तो' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जिणेहिं) जिनेन्द्र देवने (इह) अर्हन्त प्रभुके शासनमे अथवा इस ससारमें (अण्हओ) आस्रव (अणादीओ) अनादि (पण्णत्तो)

સમાન છે પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ ભાવ, પ્રાણાતિપાત આદિ વિરમણરૂપ ભાવસવરથી અટકે છે અને એમ થવાથી જ નવીન કર્મોનુ આગમન રોકાય છે "निश्चयार्थ" મા "नि" શબ્દનો અર્થ 'દૂર થવુ' થાય છે તથા 'चय'નો અર્થ જ્ઞાનાવરણીયાદિ કર્મપુજ છે તે કર્મપુજ જે સ્થાનથી દૂર થઈ ગયો છે તેવુ સ્થાન મોક્ષ છે અને તે મોક્ષ જેનુ પ્રયોજન છે તે નિશ્ચયાર્થ શાસ્ત્ર છે અથવા નિશ્ચયનો અર્થ મોક્ષ પણ થાય છે એ મોક્ષની પ્રાપ્તિને માટે જ આ શાસ્ત્રની રચના કરવામા આવી છે ॥ સૂ. ૧ ॥

ઉદ્દેશ પ્રમાણે જ નિર્દેશ થયા કરે છે તે ન્યાયે સૂત્રકાર ફળ અને નામની અપેક્ષાએ હવે આસ્રવોના પ્રકારોને પ્રગટ કરે છે—"पचविहो पण्णत्तो" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"जिणेहिं" જિનેન્દ્ર દેવે "इह" અર્હંત પ્રભુના શાસનમા, એટલે કે આ સસારમા "अण्हओ" આસ્રવોને "अणादीओ" અનાદિ "पण्णत्तो" પ્રજ્ઞપ્ત

प्रवाहापेक्षया नानाजीवापेक्षया च ससारस्यानाद्यपर्यवसितत्वात्। आस्रवस्य सादित्वे सपर्यवसितत्वे च स्वत एव विरमणे सिद्धानामिव ससारिणामपि कर्मबन्धाभाव प्रसङ्गः स्यात्। के ते पञ्चास्रवाः? इत्याह-'हिंसा' इत्यादि, हिंसा=जीव-

प्रज्ञप्त किया है। (हिंसामोसमदत्त अवभ परिग्गह पचविहो चेव) यह हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह, इस प्रकार से पांच तरह का ही है। रागादिक अन्तरग रिपुओं को जो निर्जित कर लेते हैं उनका नाम जिन है। जिन प्रभु ने जो आस्रव को अनादि कहा है उसका कारण यह है कि यह ससार अनादि और अपर्यवसित है। यद्यपि भव्य-जीवों की अपेक्षा ससार मे अनादिता होने पर भी अपर्यवसिता नहीं बनती है फिर भी नाना जीवों की अपेक्षा यह बन जाती है। आस्रव ससारी जीवों के ही होता है, मुक्त जीवों के नहीं। ससार मे रहने वाले जीव ही ससारी जीव है। यह ससार प्रवाह एव नानाजीवों की अपेक्षा जब अनादि अनत है तो यह बात बन जाती है कि आस्रव भी अनादि अनत है। अथवा यदि यों भी कह दिया जावे कि आस्रव ही ससार है और ससार ही आस्रव है। तो इस पक्षमे भी आस्रवमे अनादि अनतता सुघटित हो जाती है। कारण इसकी प्रथमोत्पत्ति तो बनती नहीं है। यदि आस्रवको एकान्ततः सादि और सपर्यवसित ही माना जावे तो इस स्थिति में यह आस्रव जबतक ससारी जीवमे नहीं हुआ-तबतक वह जीव सिद्धों

(બતાવ્યા) કર્યા છે "हिंसामोसमदत्त अबभ" परिग्गह पचविहो चेव" તે હિંસા, અસત્ય, ચોરી, કુશીલ અને પરિગ્રહ એમ પાચ પ્રકારના છે રાગાદિ આતરિક દુશ્મનોને જે જીતે છે તેને જિન કહે છે જિન પ્રભુએ આસ્રવોને અનાદિ બતાવ્યા છે તેનુ કારણ એ છે કે આ સસાર અનાદિ અને અપર્યવસિત અનત છે જો કે ભવ્યજીવોની અપેક્ષાએ સસારમા અનાદિતા હોવા છતા પણ અપર્યવસિતા બનતી નથી, છતા પણ નાના જીવોની અપેક્ષાએ તે બને છે આસ્રવ સસારી જીવોને જ થાય છે, મુક્ત જીવોને થતા નથી સસારમા રહેનાર જીવો જ સસારી જીવ છે આ સસાર પ્રવાહ અને નાના જીવોની અપેક્ષાએ જો અનાદિ અનત છે તો એ વાત પણ નક્કી થઈ જાય છે કે આસ્રવ પણ અનાદિ અનન્ત છે અથવા જો એમ પણ કહેવામા આવે કે આસ્રવ જ સસાર છે અને સસાર જ આસ્રવ છે, તો એ રીતે પણ આસ્રવમા અનાદિ અનતતા સુઘટિત થઇ જાય છે કારણકે તેની પ્રથમ ઉત્પત્તિ તો સભવી શકતી નથી' જો આસ્રવને એકાન્તત સાદિ અને સપર્યવસિત (સાન્ત) જ માનવામા આવે તો તે પરિસ્થિતિમા તે આસ્રવ જ્યા સુધી સસારીજીવમા

घातः १। 'मोस' मृषा–असत्यभाषणम् २। 'अदत्त' नदत्तमदत्त=परद्रव्यग्रहणम् ३। 'अबंभ' अब्रह्म–ब्रह्म=कामसेवनत्याग' न ब्रह्म अब्रह्म–अकुशलानुष्ठान स्त्री पुंस सङ्गो मैथुनमित्यर्थः ४। 'परिग्गह' परिग्रहः–परिगृह्यते=आदीयते इति परिग्रहः स च नवविधः—'धन१, धान्य२, क्षेत्र३, वास्तुक४, रूप्य५, सुवर्ण ६, कुप्य७, द्विपदः८, चतुष्पदश्चेति९। 'चेव' चेव चेति समुच्चयार्थः, एव शब्दोऽ-

की तरह कर्मबंधनसे मुक्त ही रहेगा। तथा सपर्यवसित माननेमें भी यही आपत्ति रहेगी। इस तरह संसारी जीवों के भी कर्मबंधन के अभाव का प्रसंग आकर प्राप्त होगा। इसलिये यही मानना चाहिये कि यह आस्रव-प्रवाह नाना जीवों की अपेक्षा अनादि अनंत है। अपर्यवसित यह पद मूल गाथा में नहीं है। फिर भी अनादि पद से उसका उपलक्षण किया गया है। प्रमाद के योग से जीव का घात होना यह हिंसा है। प्रमाद के योग से असत्य भाषण करना इसका नाम झूठ–मोस है। प्रमाद के योग से पर के द्रव्य का ग्रहण करना अदत्तादान चोरी है। काम सेवन करने का परित्याग करना इसका नाम ब्रह्म है। इस ब्रह्मका नहीं होना अब्रह्म है। अर्थात् मैथुन सेवन करने रूप अकुशलानुष्ठानमें प्रवृत्त रहना सो अब्रह्म है। जो ग्रहण किया जावे उसका नाम परिग्रह है, यह परिग्रह नौ प्रकारका है–धन१, धान्य२, क्षेत्र ३, वास्तु ४, रूप्य ५, सुवर्ण ६, कुप्य ७, द्विपद ८ ओर चतुष्पद ९। "च" यह शब्द यहाँ

ન થાય ત્યાં સુધી તે જીવ સિદ્ધોની જેમ કર્મબંધનથી મુક્ત જ રહેશે તથા સપર્યવસિત માનવામાં પણ તે જ મુશ્કેલી નડશે એ રીતે સંસારી જીવોમાં પણ કર્મબંધનના અભાવની સ્થિતિ આવી જશે તેથી એમ જ માનવું જોઈએ કે તે આસ્રવ પ્રવાહ નાના જીવોની અપેક્ષાએ અનાદિ અનંત છે 'અપર્યવસિત' પદ મૂળ ગાથામાં નથી છતાં પણ અનાદિ પદથી તેનું ઉપલક્ષણ કરવામાં આવ્યું છે પ્રમાદના યોગથી જીવની હત્યા થવી તે હિંસા ગણાય છે પ્રમાદના યોગથી અસત્ય બોલવું તેનું નામ જૂઠ–મોસ છે પ્રમાદના યોગથી પારકાનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવું તેને અદત્તાદાન–ચોરી કહેવાય છે કામ સેવન કરવાનો પરિત્યાગ કરવો તેનું નામ બ્રહ્મ છે આ બ્રહ્મનો અભાવ હોવો તે અબ્રહ્મ છે એટલે કે મૈથુન સેવન કરવા રૂપ અશુભ અનુષ્ઠાનમાં પ્રવૃત્ત રહેવું તે અબ્રહ્મ કહેવાય છે પરિગ્રહ એટલે ગ્રહણ કરવું તે પરિગ્રહ નવ પ્રકારનો છે—(૧) ધન, (૨) ધાન્ય, (૩) ક્ષેત્ર, (૪) વાસ્તુ, (૫) ચાંદી, (૬) સુવર્ણ, (૭) કુપ્ય, (૮) દ્વિપદ અને (૯) ચતુષ્પદ "ચ" શબ્દ અહીં સમુચ્ચયાર્થક છે

वधारणार्थः। हिंसादिभेदतः पञ्चविधा एव आस्रवाः सन्तीत्यर्थः। अनेन दशाध्ययनस्य प्रश्नव्याकरणसूत्रस्याद्यानि पञ्चाध्ययनानि सूचितानि ॥सू०२॥

अथ प्रथमाध्ययने कतिद्वाराणि? इति द्वारनिरूपणार्थं श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिन प्रत्याह—'जारिसओ' इत्यादि।

मूलम्—जारिसओ१, जंनामा२, जहयकओ३, जारिसं फल देइ४। जेवि य करेंति पाव ५, पाणवह त निसामेह ॥सू०३॥

टीका—स प्राणिवधरूप आस्रव 'जारिसओ' यादृशकः=यत्स्वरूपः, यादृशं तस्य स्वरूपमस्ति, 'ज नामा' यन्नामा यानि=यत्सरूपकानि नामानि सन्ति यस्येति स यन्नामा भवति। 'जहयकओ' यथा च कृतः=प्राणिभिः यथा येन मन्दतीव्रादिपरिणामेन कृतः=समाचरित—आचरणविषयीकृतः। आचरितः सन् 'जारिस' यादृश नरकगमनादिक फल 'देइ' ददाति। 'जेवि य' येऽपि च 'पावा'

समुच्चयार्थक है और "एव" शब्द अवधारणार्थक है। इससे यह पुष्ट होता है कि आस्रव, हिंसा आदि के भेद से पाच ही प्रकार का है। कमती वढती नहीं है। इस कथन से सूत्रकार ने दस अध्ययनात्मक इस प्रश्नव्याकरण शास्त्र के आदि के पाच अ ययन सूचित किये हैं॥सू २॥

अब सुधर्मास्वामी "प्रथम अध्ययन मे कितने द्वार हैं" इस जबू स्वामी के प्रश्न का उत्तर देने के लिये द्वार निरूपण के निमित्त कहते हैं 'जारिसओ ज नामा' इत्यादि।

टीकार्थ—यह प्राणिवधरूप आस्रव (जारिसओ) जैसा है (ज नामा) जितने इसके नाम है (जहयकओ) प्राणियोद्वारा यह जिन मन्द तीव्र आदि परिणामो से किया जाने पर (जारिस फल देइ) जिस प्रकार का उन्हें

છે, અને "एव" શબ્દ અવધારણાર્થક છે તેનાથી એ વાતને પુષ્ટિ મળે છે કે આસ્રવ, હિંસા આદિના ભેદથી પાચ જ પ્રકારના છે વધારે કે ઓછા નથી આ કથનથી સૂત્રકારે દશ અધ્યયનવાળા આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્રના શરૂઆતના પાચ અધ્યયન સૂચિત કર્યા છે ॥ સૂ ૨ ॥

હવે સુધર્માસ્વામી "પ્રથમ અધ્યયનમા કેટલા દ્વાર છે" એ પ્રકારના જબૂસ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર દેવાને માટે દ્વારનિરૂપણને નિમિત્તે કહે છે— "जारिसओ ज नामा" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ "जारिसओ" જેવો છે, "ज नामा" જેટલા તેના નામ છે, "जहयकओ" પ્રાણીઓ દ્વારા તે મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી કરાતા "जारिसं फल देइ" જે પ્રકારનુ તેમને નરકાદિરૂપ ફળ આપે છે, તથા

पापाः-पापकर्मशीलाः 'पाणवह' प्राणवध-प्राणाः सन्ति येषामिति ते प्राणाः= प्राणिनः 'अर्श आदित्वाद च्, तेषां वधो=हिंसा प्राणवधस्त जीवघात 'करेंति' कुर्वन्ति 'तं' तत्=प्रथमास्रवद्वारं वक्ष्यमाण 'निसामेह' निशामयत=शृणुत। हे जम्बूः! मम कथयतः श्रृणु इत्यर्थः, अत्रार्षत्वाद् बहुवचनम् ॥सू० ३॥

सम्प्रति 'जारिसओ' यादृशः, इति द्वार विवृण्वन् प्राणवधस्वरूपमाह— 'पाणवहो' इत्यादि।

मूलम्–पाणवहो नाम एसो जिणेहिं भणिओ–पावो१, चंडो२, रुद्दो३, खुद्दो४, साहसिओ५, अणारिओ६, णिग्घिणो७, णिस्संसो८, महब्भओ९, पइभओ१० अइभओ११, बीहणओ १२, तासणओ१३, अणज्जओ१४, उव्वेयणओ य, णिरवयक्खो १६, णिद्धमो१७, णिप्पिवासो१८, णिक्कलुणो१९, निरयवास निधणगमणो२०, मोहमहब्भयपयट्टओ२१, मरणवेमणस्सो२२, पढम अहम्मं अव्वयस्स ॥ सू०४ ॥

नरकादिरूप फल देता है, तथा (जे वि य पाणवह करेंति) जो पापी इस प्राणवध को करते हैं यह सब विषय इस प्रथम आस्रवद्वार में कहा जावेगा। सो (त निसामेह) हे जबू! तुम उसको सुनो।

भावार्थ—सुधर्मा स्वामी इस गाथा द्वारा यह समझा रहे हैं कि हे जबू! अब इस हिंसारूप प्रथम आस्रवद्वार का स्वरूप, नाम और फल इन तीन द्वारोंसे इस हिंसारूप प्रथम आस्रवद्वारका निरूपण किया जायगा। तथा साथ २ में यह भी स्पष्ट कहा जायगा कि इस प्राणिवध को कौन जीव करते हैं। इस गाथा में "पाणवह" इस पद से प्राण जिनके होते हैं ऐसे प्राणी एकेन्द्रियादिक गृहीत हुए हैं। उनका जो वध है वह प्राणवध है ॥ सू ३ ॥

"जे विय पावा पाणवह करेंति" જે પાપી આ પ્રાણવધ કરે છે, તે સમસ્ત વિષય આ પહેલા આસ્રવદ્વારમા કહેવામા આવશે તો "सो त निसामेह" હે જબૂ! તુ તે સાભળ

ભાવાર્થ—સુધર્માસ્વામી આ ગાથા દ્વારા એ સમજાવે છે કે હે જબૂ! આ હિંસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વારનુ સ્વરૂપ, નામ અને ફળ એ ત્રણેનુ દ્વારા વડે નિરૂપણ કરવામા આવશે તથા તેની સાથે એ પણ સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે એ પ્રાણવધ કયા (પાપી) જીવ કરે છે આ ગાથામા "पाणवह" એ પદથી જેને પ્રાણ હોય છે તેવા એકેન્દ્રિયાદિક પ્રાણી ગ્રહણ કરાયેલ છે તેમનો જે વધ છે તેને પ્રાણવધ કહે છે ॥ સૂ ૩ ॥

टीका—'पाणवहो' प्राणवधो नाम 'एसो' एषः=वक्ष्यमाणः 'जिणेहिं' जिनैः 'भणिओ' भणितः=कथितः। स चायम्—'पावो' पाप –पापप्रकृतीना बन्धकारणत्वात्। 'चंडो' चण्डः–क्रोधजनकत्वात् 'रुद्दो' रौद्रः–रौद्ररसप्रवर्तितत्वात्, 'खुद्दो' क्षुद्रः–क्षुद्रजनाचरितत्वात्, 'साहसिओ' साहसिकः–असमीक्ष्यकारि जनप्रवर्तितत्वात्। 'अणारिओ' अनार्य –अनार्यपुरुषैराचरितत्वात्। 'णिग्घिणो' निर्घृणः–न विद्यते घृणा=पापजुगुप्सा येषा ते निघृणाः=निर्दयाः, तैराचरितत्वात्। 'णिस्संसो' नृशंसः–क्रूरकर्माचरितत्वात्, 'महब्भओ' महाभयः–महाभयजनकत्वात्, 'पइभओ' प्रतिभयः–सकलप्राणिनां भयहेतुत्वात्,

---

अब सूत्रकार 'जारिसओ' इस द्वार का विवरण करते हुए प्राणवध के स्वरूप को कहते हैं–'पाणवहो नाम एसो' इत्यादि।

टीकार्थ-(एसो पाणवहो नाम) यह प्राणवध (जिणेहिं) जिनेन्द्र देवने (पावो) पाप प्रकृतियों के बंध का कारण होने से पापरूप १, (चंडो) क्रोध का जनक होने से, चंडरूप २, (रुद्दो) रौद्र रस से प्रवर्तित होने के कारण रौद्ररूप ६, (खुद्दो) क्षुद्र जनों द्वारा आचरित होने के कारण क्षुद्ररूप ४, (साहसिओ) अविचार शील मनुष्यो द्वारा किया हुआ होने के कारण साहसिक रूप ५, (अणारिओ) अनार्य जनों द्वारा विहित होने के कारण अनार्यरूप ५, (णिग्घिणो) दया विहीन हृदयवाले मनुष्यों द्वारा सेवित होने के कारण निर्घृणरूप ७, (णिस्संसो) क्रूर कर्मवाले जनों द्वारा किया हुआ होने के कारण नृशंसरूप८, (महब्भओ) महान् भयका जनक होने के कारण महा भय रूप९, (पइभओ) समस्त प्राणियोको भयका हेतु–

હવે સૂત્રકાર "जारिसओ" આ દ્વારનું વર્ણન કરતા પ્રાણવધનું સ્વરૂપ કહે છે—"पाणवहो नाम एसो" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"एसो पाणवहो नाम" આ પ્રાણવધ "जिणेहिं" જિનેન્દ્ર દેવે (૧) "पावो" પાપ પ્રકૃતિયોના બંધનું કારણ હોવાથી પાપરૂપ, (૨) "चडो" ક્રોધને પેદા કરનાર હોવાથી ચંડરૂપ, (૩) "रुद्दो" રૌદ્ર રસથી પ્રવર્તિત હોવાને કારણે રૌદ્રરૂપ, (૪) "खुद्दो" ક્ષુદ્રજનો દ્વારા આચરિત હોવાથી ક્ષુદ્રરૂપ, (૫) "साहसिओ" અવિચારી મનુષ્યો દ્વારા કરાતો હોવાને કારણે સાહસિકરૂપ, (૬) "अणारिओ" અનાર્ય લોકો દ્વારા કરાતો હોવાને કારણે અનાર્યરૂપ, (૭) "णिग्घिणो" દયારહિત હૃદયવાળા લોકો દ્વારા કરાતો હોવાથી નિર્ઘૃણરૂપ, (૮) "णिस्संसो" ક્રૂર કર્મવાળા લોકો દ્વારા કરાતો હોવાને કારણે નૃશંસરૂપ, (૯) "महब्भओ" મહાન ભયનો જનક હોવાથી મહાભયરૂપ, (૧૦) "पइभओ" સમસ્ત પ્રાણીઓને ભયનો હેતુભૂત હોવાને કારણે પ્રતિભયરૂપ, (૧૧) "अइभओ"

'अइभओ' अतिभयः-मरणान्तभयजनकत्वात्, 'बीहणओ' भयानकः भयोत्पादकत्वात् 'तासणओ' त्रासनकः अकस्मात्क्षोभजनकत्वात्, 'अणज्जओ' अन्याय्य -न्यायादनपेतं=युक्तं न्याय्यं, न न्याय्यः-अन्याय्यः न्यायार्जितत्वात्। 'उव्वेयणओ य' उद्वेजनकः=उद्वेगकरः-हृदयोद्वेगजनकत्वात्। चकारः समुच्चयार्थः। 'निरवयक्खो' निरपेक्षः-निर्गता अपेक्षा परप्राणिविषया यस्य स तथा परप्राणत्राणवाञ्छावर्जितत्वात्, 'णिद्धम्मो' निर्धर्मः -श्रुतचारित्रधर्मवर्जितत्वात्, 'णिप्पिवासो' निष्पिपासः-प्राणिस्नेहरहितत्वात्, 'णिक्कलुणो' निष्करुणः-दयाभाववर्जितत्वात्, 'निरयवासनिधणगमणो' निरयवासनिधनगमनः, निरयवासः=नरकावासः, तत्र गमनमेव निधनं=पर्यवसानं अन्तिमफलं यस्य स निरयवासनिधनगमनः नरकप्रापकत्वात्।

भूत होने के कारण प्रतिभयरूप १०, (अइभओ) मरणान्तभयजनक होने से अतिभयरूप ११, (बीहणओ) भय के उत्पादक होने से भय-कारकरूप १२, (तासणओ) अकस्मात् क्षोभ का कारण होने से त्रासनकरूप १३, (अणज्जओ) अवैध होने के कारण-अनीति रूप होने के कारण अन्यायरूप १४, (उव्वेयणओ) हृदयमें उद्वेग का जनक होने से उद्वेगकर्त्तृरूप १५, (निरवयक्खो) परप्राणी के प्राणों की रक्षा करने की वाञ्छा से रहित होने के कारण निरपेक्षरूप १६ (णिद्धम्मो) श्रुतचारित्र रूप धर्म से वर्जित होने के कारण निर्धर्मरूप १७, (णिप्पिवासो) प्राणियों के प्राणों के प्रति ममता भाव से रहित होने के कारण निष्पिपासारूप १८, (णिक्कलुणो) दया भाव से रहित होने के कारण निष्करुणारूप १९, (निरयवासनिधणगमणो) तथा नरकगमन ही जिसका अन्तिम फल है ऐसा होने के कारण निरयवास-निधनगमनरूप २०, (मोहमहब्भयपयट्टओ) यह

જનના જોખમરૂપ હોવાથી અતિભયરૂપ, (૧૧) "बीहणओ" ભયને ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી ભયકારકરૂપ, (૧૩) "तासणओ" અચાનક ક્ષોભના કારણરૂપ હોવાથી ત્રાસનકરૂપ, (૧૪) "अणज्जओ" અવૈધ હોવાથી-અનીતિરૂપ હોવાને કારણે અન્યાયરૂપ, (૧૫) "उव्वेयणओ" હૃદયમા ઉદ્વેગ પેદા કરનાર હોવાથી ઉદ્વેગકારક, (૧૬) "निरवयक्खो" પર પ્રાણીના પ્રાણોની રક્ષા કરવાની ઇચ્છાથી રહિત હોવાને કારણે નિરપેક્ષરૂપ, (૧૭) "णिद्धम्मो" શ્રુત-ચારિત્રરૂપ ધર્મથી રહિત હોવાને કારણે નિર્ધર્મરૂપ, (૧૮) "णिप्पिवासो" પ્રાણીઓના પ્રાણો તરફ મમતા ભાવથી રહિત હોવાને કારણે નિષ્પિપાસારૂપ, (૧૯) "णिक्कलुणो" દયા-ભાવથી રહિત હોવાથી નિષ્કરુણારૂપ, (૨૦) "निरयवासनिधणगमणो" તથા નરક ગમનજ જેનુ અંતિમ ફળ છે, એવો હોવાને કારણે નિરયવાસ નિધનગમનરૂપ,

'मोहमहब्भयपयट्टओ' मोहमहामयप्रवर्तकः, मोहः=अज्ञानम् स एव महाभयहेतुत्वात् महाभय तस्य प्रवर्तको य स मोहमहाभयप्रवर्तकः। 'मरण-वेमणस्सो' मरणवैमनस्यः-मरणेन=मृत्युरूपकारणेन प्राणिना वैमनस्य=दैन्य यस्मात् स मरणवैमनस्य दीनमन. कारित्वात्। 'पढम अहम्म'= प्रथममधर्मम् अधर्मद्वारम् 'अव्वयस्स' अव्रतस्य=व्रतरहितस्य ॥ सू० ४ ॥

प्राणवध मोह-अज्ञान रूप महाभय का प्रवर्तक है २१, और (मरणवेमणस्सो) इस से प्राणियों मे मृत्युरूप कारण को लेकर के दीनता आती अतः यह मरण वैमनस्यरूप है २२, ऐसा (भणिओ) भगवान ने कहा है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा प्राणिहिंसारूप आस्रव कैसा है यह बात सूत्रकार ने स्पष्ट की है, वे कहते हे कि यह प्राणिहिंसारूप आस्रव पापप्रकृतियों के बध का कारण है। कारण हिंसा करनेवाला जीव प्रमाद के योग से प्राणों का व्यपरोपण कर्त्ता होने से पापप्रकृतियों का ही बधक होता है. अत' यह प्राणिहिंसा पापरूप है। पर की हिंसा करते समय आत्मा में क्रोध परिणति तीव्ररूप से रहती है, क्यों कि हिंसक जीव हिंस्य जीव जैसो २ अपनी रक्षा आदि के कारणकलाप जुटाता है उन्हें क्रोध के आवेश में तन्मय होकर नष्ट करता है-इसलिये यह प्राणहिंसा चडरूप प्रकट किया गया है। इसी तरह रौद्र आदि रूपता भी इस मे अपने २ उन २ भिन्न २ कारणों को लेकर घटित कर लेना चाहिये। इस प्रकार से ये प्रथम आस्रवरूप अधर्म द्वार है। इसमें प्राणिहिंसा का क्या स्वरूप है यह स्पष्ट किया गया है ॥सू०४॥

(२१) "मोहमहब्भयपयट्टओ" ते प्राणुवध, मोह-अज्ञानरूप महाभयनो प्रवर्तक छे, अने (२२) "मरणवेमणस्सो" तेनाथी प्राणीओमा मृत्युरूप कारणने लीधे दीनता आवे छे, तेथी ते मरणवैमनस्यरूप छे, एवु "भणिओ" भगवाने भाखेल छे

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ કેવો છે તે વાતનુ સૂત્રકારે સ્પષ્ટીકરણ કર્યુ છે તેઓ કહે છે કે તે પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ પાપ પ્રકૃતિયોના બધનુ કારણ છે કારણ કે હિંસા કરનાર જીવ પ્રમાદના યોગથી પ્રાણોનો નાશ કર્તા હોવાથી પાપપ્રકૃતિયોનો બધક હોય છે, તેથી તે પ્રાણવધ પાપરૂપ છે પરની હિંસા કરતી વખતે આત્મામા ક્રોધપરિણતિ તીવ્રરૂપે રહે છે, કારણ કે હિંસ્યજીવ જેમ જેમ પોતાના રક્ષણ માટે પ્રયત્ન કરે છે તેમ તેમ હિંસક જીવ ક્રોધના આવેશમા તલ્લીન થઇને તેનો નાશ કરે છે, તે કારણે પ્રાણવધને ચડરૂપ કહેલ છે એ જ રીતે રૌદ્રરૂપતા આદિ તેના લક્ષણો પણ ભિન્ન ભિન્ન કારણોને લઈને ઘટાવી શકાય છે આ રીતે તે પ્રથમ આસ્રવરૂપ અધર્મદ્વાર છે તેમા પ્રાણીવધનુ કેવુ સ્વરૂપ છે તે સમજાવવામા આવ્યુ છે ॥ સૂ ૪॥

पूर्वं प्राणिवधस्य स्वरूपमुक्तम् , इदानीं यन्नामेति प्रतिज्ञातानि तस्य नामान्याह—' तस्से 'त्यादि ।

मूलम्–तस्स य इमाणि नामाणि गोणाणि हुंति तं जहा–पाणवह१, उम्मूलणा सरीरओ२, अवीसभो३, हिंसविहिंसा४, तहा अकिच्चं च५, घायणाय६, मारणाय७, वहणा८, उद्दवणा९, निवायणा य१०, आरभसमारभो११, आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणगालणा य सवट्टगसखेवो१२, मच्चू१३, असजमो१४, कडगमद्दण१५, वोरमणं१६, परभवसकामकारओ१७, दुग्गतिप्पवाओ१८, पावकोवो य१९, पावलोभो य२०, छविच्छेओ२१, जीवियंतकरणो२२, भयकरो२३, अणकरो२५, वज्जो२५, परितावण अण्हओ२६, विणासो२७, निज्जवणो२८, लुपणा२९, गुणाण विराहण३० त्ति वि य तस्स एवमादीणि णामधेज्जाणि हुंति तीस पाणवहस्स कलुसस्स कडुयफलदेसगाइं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तस्स य ' तस्य च प्राणवधस्य ' इमाणि ' इमानि अनुपद वक्ष्यमाणानि ' नामाणि ' नामानि ' गोणाणि ' गोणानि–गुणनिष्पन्नानि ' हुंति ' भवन्ति 'तीस' त्रिंशत् , 'तं जहा' तद्यथा–'पाणवह' प्राणवध =जीवघात.१, ' उम्मूलणा सरीराओ ' उन्मूलना शरीरतः=वृक्षोत्पाटनमिव उन्मूलना जीवस्य

प्राणिहिंसाका इस प्रकार स्वरूप कहकर अब सूत्रकार इसके कितने नाम हैं यह प्रकट करते हे—' तस्स य इमाणि ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तस्स गोणाणि इमाणि नामाणि तीस हुंती) उस प्राणिहिंसाके ये गुणनिष्पन्न तीस नाम हैं (तं जहा) वे इस प्रकारसे हैं (पाणवह) जीवघात१, (उम्मूलणा सरीराओ) शरीरसे वृक्षको उखाडनेकी तरह जीवकी उन्मूलना२,

---

પ્રાણીવધનું આ પ્રકારનું સ્વરૂપ સમજાવીને હવે સૂત્રકાર તેના કેટલા નામ છે તે પ્રગટ કરે છે—" तस्स य इमाणि " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"तस्स गोणाणि इमाणि नामाणि तीस हुंति" તે પ્રાણવધના ગુણ પ્રમાણે ત્રીસ નામ છે " तंजहा " તે ભેદ આ પ્રમાણે છે—(૧) " पाणवह " જીવહત્યા, (૨)"उम्मूलणा सरीराओ"વૃક્ષને ઉખાડવાની જેમ શરીરમાંથી જીવની ઉન્મૂલના,(૩)

शरीरादिति२। 'अवीसभो' अविश्रम्भः–अविश्वास –प्राणवधकारकेषु जीवानां विश्वासो नैव भवति इति हिंसाया अविश्रम्भकारणत्वादविश्रम्भव्यवहारः३, 'हिंसविहिंसा' हिंस्यविहिंसा हिंस्यानां=जीवानां विहिंसा प्राणवियोगः अजीवानां हिंसाया अभावात् 'हिंस्यानां' मितिकथितम् ४। ननु अरूपिणः हिंसैव न सम्भवति इति हिंसविहिंसेत्युक्तावपि किमायातमितिचेन्न स्वरूपत एव प्राणवियोगरूपहिंसायाग्रहणमाणत्वात्। उक्तञ्च—

"पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः।
प्राणादशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥ १ ॥"

'तहा अकिच्चं च' तथा अकृत्य च–तथा तेनप्रकारेण अकृत्यम्–अकरणीयं भगवता निषिद्धत्वात् ५। 'घायणा य' घातना च–हननं ६। 'मारणा य' मारणा च प्राणपीडनम् ७। 'वहणा' हननम् ८। 'उद्दवणा' उपद्रवणम् ९, 'निवायणा' निपातना–यस्य यावन्तः प्राणाः सन्ति तस्य तेभ्यः निपातनं=दूरीकरणम्, यद्वा–'तिवायणा' इति पाठे त्रिपातना–त्रयाणां मनोवाक्कायानां पातना=व्यसना १०, 'आरभसमारभो' आरभ्यन्ते=विनाश्यन्ते इति आरम्भाः=प्राणिनः तेषां समारम्भ=परिताप –"परितावकरो भवे समारभो" इति वचनात्। आरम्भो वा कृष्यादिव्यापारः तेन समारम्भः=प्राणिपीडनम् ११। 'आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयनिट्ठवणगालणा य संवट्टगसंखेवोत्ति' आयुःकर्मण उपद्रवः भेद निष्ठापनं गालना च संप्रवर्तकः संक्षेप, आयुःकर्मण उपद्रवः=समुच्छेदः, भेदः=विनाश, निष्ठापनं=समापनम्, गालना=निस्सारणम्। संवर्तकः–सर्वबलसामर्थ्यादीनां संकोचनम्, संक्षेपः–अभावकरणम् १२। 'मच्चू' मृत्युः=मरणम् १३, 'असंजमो' असंयम –न

(अवीसभो) अविश्रभ३, (हिंसविहिंसा) हिंस्यविहिंसा४, तथा (अकिच्च) अकृत्य५, (घायणा) घातना६, (मारणा) मारण७, (वाहणा) हनन८, (उद्दवणा) उपद्रवणा९, (निवायणा) निपातना१०, (आरभसमारभो) आरभ समारभ ११, (आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणगालणा य संवट्टग संखेवो) आयुकर्म का उपद्रव, भेद, निष्ठापन, गालना, संप्रवर्त्तक, संक्षेप१२, (मच्चू) मृत्यु१३, (असंजमो) असंजम१४, (कडगमद्दण)

"अवीसभो" અવિશ્રંભ, (૪) "हिंसविहिंसा" હિંસ્યવિહિંસા, (૫) "अकिच्च" અકૃત્ય, (૬) "घायणा" ઘાતના, (૭) "मारणा" મારણ, (૮) "वाहणा" હનન, (૯) "उद्दवणा" ઉપદ્રવણા, (૧૦) "निवायणा" નિપાતના, (૧૧) "आरभसमारभो" આરભસમારભ, (૧૨) "आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणगालणा य संवट्टगसंखेवो" આયુકર્મનો ઉપદ્રવ, ભેદ, નિષ્ઠાપન, ગાલના, સંપ્રવર્ત્તક, સંક્ષેપ, (૧૩) "मच्चू" મૃત્યુ, (૧૪) "असंजमो" અસંજમ, (૧૫) "कडगमद्दण" કટક

सयमोऽसयम. सावद्यानुष्ठानम् १४। 'कडगमद्दण' कटकमर्दन-कटकेन=सैन्येन किलिञ्जेन वा आक्रम्य मर्दनं, प्राणवधकारणत्वादोपचारिकः प्राणवधे कटकमर्दन व्यवहारः १५। 'वोरमण' व्युपरमण जीवस्य प्राणतो वियोजीकरणम् १६। 'पर भवसकामकारओ' परभवसक्रमकारक=नरकनिगोदादि चतुर्गतिससार पुनः पुन परिभ्रमणहेतुत्वात् १७। 'दुग्गइप्पवाओ' दुर्गतिप्रपात.-दुर्गतौ नरकादि दुष्टगतौ प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपात'=नरकनिगोदादि कुगति दायकः १८। 'पावकोवो य' पापकोपश्च=पाप कोपयति=प्रवर्धयति इति पापकोप, महल्पापोत्पादकत्वात्, यद्वा-पापस्य कोपकार्यत्वात्पापकोपः क्रोधस्वरूप इत्यर्थ. १९, 'पावलोभो य' पापलोभश्च-पाप लुभ्यति=धातुनामनेकार्थत्वात् सश्लिष्यति यस्मात् स पापलोभः= पापागमनद्वारलक्षणः २०। 'छविच्छेओ' छविच्छेदः-छवि=शरीर तस्य छेदः= कर्तनमिति छविच्छेद=शरीरकर्तनम्। यद्वा-शरीरावयवच्छेदनम् २१।

'जीवियतकरणो' जीवितान्तकरण=प्राणोच्छेदकर २२। 'भयकरो=भयदा यकः २३। 'अणकरो' ऋणकर'-ऋण=अनेकेष्वपि भवेषु नानाविधदुःखभोगैरपि दुरपनेयस्वरूप करोतीति ऋणकरः २४। 'वज्जो' वर्ज्य=त्याज्यः। अथवा वज्र- मिव गुरुत्वात्, तत्कारि प्राणिनामधःपातकत्वाद् वा वज्रम् २५। 'परितावण अण्हओ' परितापनाश्रवः=परितापनारूप आस्रवः। भव भव सन्तापकत्वात्२६, 'विणासो' विनाशः-प्राणनिर्गमनरूप' २७। 'निज्जवणो' निर्यापना=निर्यापयति= निर्गमयति प्राणिन'-प्राणानिति निर्यापना=प्राणनिस्सारणम् २८। 'लुपणा' लोपना-प्राणिप्राणविगमनम् २९। 'गुणाण विराहणा' गुणाना विराधना=श्रुत-

---

कटकमर्दन१५, (वोरमण) व्युपरमण१६, (परभवसकामकारओ) पराभव- सक्रमकारक१७,(दुग्गइप्पवाओ) दुर्गतिप्रपात१८,(पावकोवो) पापकोप१९, (पावलोभो) पापलोभ२०,(छविच्छेओ) शरीरका नाश२१,(जीवियतकरणो) जीवितान्तकरण२२, (भयकरो) भयकर२३, (अणकरो)ऋणकर२४, (वज्जो) वर्ज्य२५, (परितावण अण्हओ) परितापनाश्रव२६, (विणासो) विनाश२७, (निज्जवणो) निर्यापना२८, (लुपणा) लोपना२९, (गुणाण विराहणा)

મર્દન, (૧૬) "वोरमण" વ્યુપરમણ, (૧૭) "परभवसकामकारओ" પરાભવ સંક્રમકારક, (૧૮) 'दुग्गइप्पवाओ" દુર્ગતિ પ્રપાત, (૧૯) 'पावकोवो" પાપકોપ, (૨૦) 'पावलोभो" પાપલોભ, (૨૧) "छविच्छेओ" છવિચ્છેદ, (૨૨) "जीवियतकरणो" જીવિતાન્તકરણ, (૨૩) 'भयकरो" ભયકર, (૨૪) "अणकरो" ઋણકર, (૨૫) "वज्जो" વર્જ્ય, (૨૬) "परितावण अण्हओ" પરિતાપનાશ્રવ, (૨૭) "विणासो' વિનાશ, (૨૮) "निज्जवणो" નિર્યાપના, (૨૯) "लुपणा" લોપના,

चारित्रगुणानां भञ्जना ३०। 'ति त्रि य' इत्यपि च=' इति ' शब्दः समाप्तिसूचकः अपि चेति समुच्चयार्थः। 'तस्स' तस्य-प्राणिवधस्य ' एवमाईणि ' एवमादीनि= उक्तरूपाणि 'तीस' त्रिंशत् 'नामधेज्जाणि' नामधेयानि ' पाणवहस्स ' प्राणवधस्य, 'कलुसस्स' कलुषस्य=पापरूपस्य 'कडुयफलदेसगाइ' कटुकफलदेशकानि=अशोभन परिणामबोधकानि 'हुति' भवन्ति। एतावता ' ज नामा ' यन्नामेति, द्वितीय प्राणवधनामद्वारमुक्तम् ॥सू०५॥

गुणोंकी विराधना३०, । (एवमादीणि) इत्यादिक ये (तीस) तीस, (नामधेज्जाइ) नाम प्राणिहिंसाके (हुति) है। यह प्राणिहिंसा (कलुसस्स) पापरूप है। उसके ये तीस नाम (कडुयफलदेसगाइ) अशुभ परिणाम के ही बोधक हैं। इस तरह यह 'ज नामा' इस नामका द्वितीय प्राणिहिंसा द्वार कहा है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्रद्वारा प्राणिहिंसाके गुणानुसार कितने नाम है अथवा हो सकते है यह कहा है। इस प्राणिहिंसाका प्रथम नाम प्राणिहिंसा है, प्राणिहिंसा का अर्थ पाच इन्द्रिय, तीनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास इन सभवित दश प्राणो का वियोग करना। एकेन्द्रिय जीवके४ चार प्राण, दो इन्द्रिय जीवके ६छ प्राण, तीन इन्द्रियवाले जीवके७ सात प्राण, चौ इन्द्रिय जीवके८ आठ प्राण, असज्ञीपचेन्द्रिय जीवके९नव प्राण और सज्ञीपचेन्द्रिय जीवके १०दस प्राण होते है। इस तरह भिन्न २ जीवोंमें सभवित इन प्राणोंका प्रमादके योगसे वियोग करना इसका नाम प्राणिहिंसा है,यह प्रथम भेद हुआ१। प्राणिहिंसाका यह पर्यायवाची शब्दहै।

અને (૩૦) "गुणाण विराहणा" ગુણોની વિરાધના, "एवमादीणि" ઈત્યાદિ "तीस" ત્રીસ "नामधेज्जाइ" નામ પ્રાણુવધના "हुति" છે તે પ્રાણુવધ "कलुसस्स" પાપરૂપ છે તેના આ ત્રીસ નામ "कडुयफलदेसगाइ" અશુભ પરિણામના જ બોધક છે આ પ્રકારનુ આ "जनामा" એ નામનુ દ્વિતીય પ્રાણુવધ દ્વાર ભાખેલ છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણુવધના ગુણાનુસાર કેટલા નામ છે અથવા હોઈ શકે છે તે બતાવ્યુ છે તે પ્રાણુવધનુ પહેલુ નામ પ્રાણુવધ છે પ્રાણુવધનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—પાચ ઇન્દ્રિય, ત્રણ બળ, આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ સભવિત દશ પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તેને પ્રાણુવધ કહે છે એકેન્દ્રિય જીવને ચાર પ્રાણ, દ્વિઇન્દ્રિય જીવને છ પ્રાણ, ત્રિઇન્દ્રિય જીવને સાત પ્રાણ, ચતુરિન્દ્રિય જીવને આઠ પ્રાણ, અસજ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવને નવ પ્રાણ અને સજ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવને દસ પ્રાણ હોય છે આ રીતે જુદા જુદા જીવોમા સભવિત એ પ્રાણોનો પ્રમાદના યોગથી વિયોગ કરવો તેને પ્રાણુવધ કહે છે આ પહેલો ભેદ થયો પ્રાણુવધનો તે પર્યાયવાચી શબ્દ છે પ્રથમ પ્રાણુવધ તે

प्रथम प्राणिहिंसा, यह सामान्य अर्थका बोधक होनेसे सामान्य शब्द है और इसका पर्यायवाचीरूप प्राणिहिंसा विशेप अर्थका बोधकहोने से विशेप शब्द है। इस तरह से गुण निप्पन्नता इन सब नामों में जानना चाहिये। इसका खुलासा इस प्रकार से है-जमीन से जैसा वृक्ष उखाड़ देते हैं उसी तरहसे शरीर से जीवका निकाल देना यह जीवकी शरीरसे उन्मूलना (उखाडना) है। इस उन्मूलनामें जीवकी पर्यायका विनाश होना है, और जीव को कष्ट होता है अतः यह प्राणिहिंसा है। यह दूसरा भेद२। जो जीव हिंसक, निर्दयी, हत्यारे होते हैं उनमें जीवो का विश्वास नहीं होता है इसलिये हिंसाको अविश्वास का कारण होने से उसमें अविश्रंभ का व्यवहार करदिया गया है। यह तीसरा भेद ३। हिंस्य विहिंसा-अजीवों की हिंसा नहीं होती है-हिंसा तो जीवोंकी होती है इसलिये यहां पर हिंस्य पद से जिन जीवों की हिंसा होती है वे ग्रहण किये गये हैं। इन हिंस्य जीवों के प्राणोंका वियोग इस प्राणिहिंसा में होता है इसलिये इसे हिंस्यविहिंसा कहा गया है। यह चौथा भेद ४।

प्रश्न—जीव तो अरूपी है-जो अरूपी होता है उसकी हिंसा होती नहीं है फिर हिंस्यविहिंसाका व्यपदेश प्राणि हिंसामें क्यों किया?

સામાન્ય અર્થનો બોધક હોવાથી સામાન્ય શબ્દ છે અને તેનો પર્યાયવાચી પ્રાણવધ શબ્દ વિશેષ અર્થનો બોધક હોવાથી વિશેષ શબ્દ છે આ રીતે એ બધા નામોમા ગુણયુક્તતા સમજી લેવી તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—જમીનમાથી જેમ વૃક્ષને ઉખાડી નાખવામા આવે છે એ જ પ્રમાણે શરીરમાથી જીવને કાઢી નાખવો તે જીવની શરીરથી ઉન્મૂલના કરી કહેવાય છે તે ઉન્મૂલનામા જીવની પર્યાયનો વિનાશ થાય છે, અને જીવને કષ્ટ થાય છે, તેથી તે પ્રાણવધ ગણાય છે આ બીજો ભેદ થયો જે જીવ હિંસક, નિર્દય, હત્યારા હોય છે, તેમનામા જીવોને વિશ્વાસ હોતો નથી, તે કારણે હિંસાને અવિશ્વાસનુ કારણ ગણીને તેમા અવિશ્રભનો વ્યવહાર કર્યો છે આ ત્રીજો ભેદ થયો હિંસ્ય-વિહિંસા-અજીવોની હિંસા થતી નથી હિંસા તો જીવોની જ થાય છે, તેથી અહીં હિંસ્ય એટલે જે જીવોની હિંસા થાય છે તે જીવો એ પ્રમાણેનો અર્થ ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે તે હિંસ્ય જીવોના પ્રાણોનો વિયોગ તે પ્રાણવધમા થાય છે તેથી તેને હિંસ્યવિહિંસા કહેવામા આવેલ છે આ ચોથો ભેદ થયો

પ્રશ્ન—જીવ તો અરૂપી છે-જે અરૂપી હોય છે તેની હિંસા થતી નથી તો પછી હિંસ્યવિહિંસાનુ આરોપણ પ્રાણવધમા કેમ કર્યું છે?

उत्तर—शंका ठीक है यह तो हम भी कहते हैं कि जीवरूप अरूपी पदार्थ की हिंसा नही होती है, परन्तु यहा हिंसा से तात्पर्य सम्भवित प्राणों का वियोग करना लिया गया है। पाच इन्द्रिय-कर्ण, चक्षु, घ्राण, रसना, स्पर्शन, ३ बल-मनबल, वचनबल, कायबल, आयु एव श्वासोच्छ्वास, इन प्राणो का जिस प्रवृत्ति से वियोग होता हो उसका नाम हिंसा है ४। तथा-अकृत्य-सिद्धान्तों मे जीवो की हिंसा करने का प्रभु ने निषेध किया है, क्योंकि यह कृत्य, अकृत्य-अकरणीय है, इसलिये उस रूप से यह अकृत्य होने के कारक प्राणिहिंसाको अकृत्य कहा है यह पाचवा भेद है ५। घातना-अर्थात्-घात करना छठा भेद है ६। प्राणों का वियोग करना केवल यही हिंसा नही है किन्तु जिन कृत्यो से प्राणियों के प्राणोंको पीडा पहुँचती हो ऐसे कृत्य भी हिंसा ही हैं, 'यह बात मारणा पद से सूत्रकार ने प्रदर्शित की है। सातमा भेद ७। हनन-वध करना, यह आठवा भेद ८। उपद्रवण-विनाश करना, यह नौवा भेद ९। निपातना-जिस जीव के जितने प्राण होते हैं उन जीव के उतने प्राणों का विनाश इस प्राणवध द्वारा होता है इसलिये इसे निपातना शब्द से व्यवहृत किया गया है। अथवा इस पद की जगह

ઉત્તર—શકા બરાબર છે એ તો અમે પણ કહીએ છીએ કે જીવરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિસા થતી નથી પણ અહી સભવિત પ્રાણોનો વિયોગ કરવો, એવુ હિસાનુ તાત્પર્ય લેવામા આવ્યુ છે પાચ ઇન્દ્રિય-કાન, નેત્ર, નાસિકા, રસના અને સ્પર્શેન્દ્રિય, ત્રણ બળ-મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ પ્રાણોનો જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનુ નામ હિસા છે

તથા અકૃત્ય-સિદ્ધાતોમા પ્રભુએ જીવોની હિસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરવા યોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણવધને અકૃત્ય કહ્યો છે આ પાચમો ભેદ થયો

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છટ્ઠો ભેદ છે પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તે જ કેવળ હિસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોચે છે એવા કૃત્યો પણ હિસા જ છે તે વાત 'મારણા' પદથી સૂત્રકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો હનન-વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપદ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના—જે જીવોને જેટલા પ્રાણ હોય છે તેટલા પ્રાણોનો વિનાશ આ પ્રાણવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ "तिवायणा" પદ

" तिवायणा " ऐसा पद जब माना जावेगा तब इसकी छाया त्रिपातना होगी और इसका अर्थ तन मन वचन और काय, इनका ध्वंस करना ऐसा होगा, दशमा भेद १० । आरंभ समारंभ–आरंभ शब्द से जिनका विनाश किया जावे ऐसे, अर्थात् विनाश किया जाता है जिनका वे हैं आरंभ अर्थात प्राणी उनका जो समारंभ–परिताप वह है आरंभ समारंभ। प्राणिहिंसामें जीवोंको परिताप होता है यह बात स्पष्ट और अनुभवगम्य है। अथवा–कृष्णादि कर्म का नाम आरंभ है, इस आरंभ से जीवोंके प्राणोंका पीड़न होताहै। यह ग्यारहवा भेद ११। इसी तरह जीवकी आयुका उपद्रव समुच्छेद, भेद विनाश, निष्ठापन–समाप्तकरना, गालना–निकालना, संवर्तक–समस्तबल, सामर्थ्य आदि का संकोच करना, संक्षेप इनका अभाव करना, यह बारहवाँ भेद १२। मृत्यु–मरण तेरहवा भेद है १३। इन्द्रियसंयम और प्राणसंयम धारण करने से प्राणीयों की रक्षा होती रहती है। असंयमी जीव से यह रक्षा बनती नहीं है, अतः असंयम को प्राणिहिंसाका अंग कहा गया है। इसी अभिप्राय से यहां उसे उसका पर्यायवाची नाम कहा है। सावद्य अनुष्ठान का नाम ही तो असंयम है। यह चौदहवां भेद १४। कटक मर्दन का अर्थ है–कटक–

માની લેવામાં આવે તો તેની છાયા "त्रिपातना" થશે અને ત્યારે તેનો અર્થ મન, વચન અને કાયનો ધ્વંસ કરવો, એ પ્રમાણે થશે આ દસમો ભેદ છે આરંભસમારંભ–આરંભ શબ્દથી જેમનો વિનાશ કરાય એવા અથવા વિનાશ કરાય છે જેમનો તેવા પ્રાણી એવો અર્થ થાય છે તેમનો જે સમારંભ પરિતાપ તેને આરંભ સમારંભ કહે છે પ્રાણુવધમાં જીવોને પરિતાપ થાય છે, તે વાત સ્પષ્ટ તથા અનુભવગમ્ય છે અથવા ખેતી આદિ કર્મનું નામ પણ આરંભ છે તે આરંભથી જીવોના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે આ અગિયારમો ભેદ છે એજ પ્રમાણે જીવના આયુનો ઉપદ્રવ–સમુચ્છેદ, ભેદ–વિનાશ, નિષ્ઠાપન–અંત, ગાલના–નિકાલવુ, સંવર્તક–સમસ્ત બળ સામર્થ્ય આદિનો સંકોચ કરવો, સંક્ષેપ તેમનો અભાવ કરવો, તે બારમો ભેદ છે મૃત્યુ–મરણ તેરમો ભેદ છે ઇન્દ્રિયસંયમ અને પ્રાણુસંયમ ધારણ કરવાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થયા કરે છે અસંયમી જીવથી તે રક્ષા થઈ શકતી નથી, તેથી અસંયમને પ્રાણુવધનું અંગ કહેલ છે તે કારણે જ તેને અહીં પર્યાયવાચી નામ ગણેલ છે સાવદ્યઅનુષ્ઠાનનું નામ જ અસંયમ છે આ ચૌદમો ભેદ છે કટકમર્દન શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે–કટક–સૈન્ય દ્વારા હિંસાના

उत्तर—शंका ठीक है यह तो हम भी कहते हैं कि जीवरूप अरूपी पदार्थ की हिंसा नहीं होती है, परन्तु यहा हिंसा से तात्पर्य सम्मनित प्राणों का वियोग करना लिया गया है। पाच इन्द्रिय-कर्ण, चक्षु, घ्राण, रसना, स्पर्शन, ३ बल-मनबल, वचनबल, कायबल, आयु एवं श्वासो-च्छ्वास, इन प्राणो का जिस प्रवृत्ति से वियोग होता हो उसका नाम हिंसा है ४। तथा-अकृत्य-सिद्धान्तो में जीवों की हिंसा करने का प्रभु ने निषेध किया है, क्यों कि यह कृत्य, अकृत्य-अकरणीय है, इसलिये उस रूप से यह अकृत्य होने के कारक प्राणिहिंसाको अकृत्य कहा है यह पाचवा भेद है ५। घातना-अर्थात्-घात करना छठा भेद है ६। प्राणों का वियोग करना केवल यही हिंसा नहीं है किन्तु जिन कृत्यो से प्राणियों के प्राणोंको पीडा पहुँचती हो ऐसे कृत्य भी हिंसा ही है, 'यह बात मारणा पद से सूत्रकार ने प्रदर्शित की है। सातमा भेद ७। हनन-वध करना, यह आठवा भेद ८। उपद्रवण-विनाश करना, यह नौवा भेद ९। निपातना-जिस जीव के जितने प्राण होते है उन जीव के उतने प्राणों का विनाश इस प्राणवध द्वारा होता है इसलिये इसे निपातना शब्द से व्यवहृत किया गया है। अथवा इस पद की जगह

ઉત્તર—શંકા બરાબર છે એ તો અમે પણ કહીએ છીએ કે જીવરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિંસા થતી નથી પણ અહી સંભવિત પ્રાણોનો વિયોગ કરવો, એવું હિંસાનું તાત્પર્ય લેવામાં આવ્યું છે પાંચ ઇન્દ્રિય-કાન, નેત્ર, નાસિકા, રસના અને સ્પર્શેન્દ્રિય, ત્રણ બળ-મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ પ્રાણોનો જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનું નામ હિંસા છે

તથા અકૃત્ય-સિદ્ધાંતોમાં પ્રભુએ જીવોની હિંસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરવા યોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણવધને અકૃત્ય કહ્યો છે આ પાંચમો ભેદ થયો

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છઠ્ઠો ભેદ છે પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તે જ કેવળ હિંસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે એવા કૃત્યો પણ હિંસા જ છે તે વાત 'મારણા' પદથી સૂત્રકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો હનન-વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપદ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના—જે જીવોને જેટલા પ્રાણ હોય છે તેટલા પ્રાણોનો વિનાશ આ પ્રાણવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ "तिवायणा" પદ

उविच्छेदरूप कहा है। यह इक्कीसवा भेद २१। प्राणवध जीवन का अतकर-विनाशक होने से जीवितान्तकरणरूप कहा गया है। यह बावीसवा भेद २२। प्राणवध के अवसर उपस्थित होने पर जीवों को भय होता है अत इस भय का कारक होने से प्राणवध भयकर है, ऐसा कहा गया है। यह तेवीसवां भेद २३। इस प्राणवध को करने वाला प्राणी अनेक भवों में भी नाना प्रकार के दुःखो को भोगता रहता है फिर भी इस से उद्भूत पापरूप ऋण का वह शोधन नहीं कर पाता है, इसलिये इसे ऋणकररूप कहा गया है। यह चौवीसवा भेद २४। विवेकी जो व्यक्ति होते हैं वे इस प्राणवध से सदा दूर रहते हैं इसलिये इसे वर्ज्य-छोडने योग्य-कहा है। अथवा 'वज्ज" की संस्कृत छाया 'वज्र' भी हो सकती है। वज्र जिस प्रकार गुरु (भारी)होता है उसी प्रकार यह प्राणवध भी अपने को-आचरित करने वाले प्राणी को अधःपात नरक निगोद आदि में पतन का कारण होने से वज्र के जैसा भारी होता है। यह पच्चीसवां भेद २५। भव भव में प्राणी इसके करने से सन्तापरूप परितापना को पाता है इसलिये इसे परितापनारूप आस्रव कहा गया है। यह छब्बीसवा भेद २६। विनाश प्राण का विध्वसन करना। यह सत्ताइसवां भेद २७। निर्यापना प्राणियों के प्राणो को निकालना। यह अट्ठाइसवा भेद २८। लोपना-प्राणियों के प्राणों का लोप करना-दूर करना।

અતકર-વિનાશક હોવાથી જીવિતાન્તકરણરૂપ બતાવ્યો છે આ બાવીસમો ભેદ છે પ્રાણવધનો પ્રસગ ઉપસ્થિત થતા જીવોને ભય થાય છે, તેથી તે ભયકારક હોવાથી તેને ભયકર કહેલ છે આ તેવીસમો ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર પ્રાણી અનેક ભવોમા અનેક પ્રકારના દુખો ભોગવ્યા કરે છે, છતા પણ તેના કારણે ઉત્પાદિત પાપરૂપ ઋણને તે ફેડી શકતુ નથી તે કારણે તેને ઋણકર નામ આપ્યુ છે આ ચોવીસમો ભેદ છે વિવેકી વ્યક્તિ એ પ્રાણવધથી સદા દૂર રહે છે, તેથી તેને વર્જ્ય-છોડવા લાયક કહેલ છે અથવા 'વજ્જ"ની સસ્કૃત છાયા "વજ્ર" પણ થઈ શકે છે વજ્ર જે રીતે મોટુ હોય છે તે પ્રકારે પ્રાણવધ પણ, તે કરનાર પ્રાણીને અધ પાત-નરક નિગોદ આદિમા પતન થવાનુ કારણ હોવાથી વજ્રના જેવો ભારે હોય છે આ પચીસમો ભેદ થયો જે કરવાથી વ્યક્તિને દરેક ભવમા સતાપરૂપ પરિતાપના-પીડા સહન કરવી પડે છે, તેથી તેને પરિતાપનારૂપ આસ્રવ કહેલ છે આ છવીસમો ભેદ છે વિનાશ-પ્રાણનો વિધ્વસ કરવો, તે સત્યાવીસમો ભેદ છે નિર્યાપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને નિકાલવા, તે અઠ્ઠાવીસમો ભેદ છે લોપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને લોપવા-દૂર

सैन्य द्वारा दूसरों पर हिंसा के अभिप्राय से आक्रमण करना। यह सैन्यमर्दन प्राणिहिंसाका कारण होता है फिर भी इसे जो प्राणिहिंसा रूप कहा है वह उपचार से ही कहा गया जानना चाहिये, यह पन्द्रहवा भेद १५। जीव का प्राण से वियुक्त करना यह व्युपरमण है। यह सोलहवां भेद १६। प्राणिहिंसाको जो परभव सक्रम कारक कहा है उसका भाव यह है कि यह प्राणिहिंसा नरकनिगोदादि चतुर्गतिरूप ससारमे परिभ्रमण का कारण बनता है। यह सत्रहवां भेद हुआ १७। इस प्राणिहिंसा के प्रभाव से जीव नरकादि दुर्गतियों में ही जाकर जन्म लेता है इसलिये यह दुर्गति प्रपातरूप कहा है, यह अठारवां भेद १८। सकल पापोंका यह कोपक-उत्पादक है, इसलिये इसे पापकोप कहा गया है। अथवा पाप, कोप का कार्य होता है इस अभिप्राय से यह प्राणिहिंसा कोप स्वरूप है ऐसा भी कहा जा सकता है। यह उन्नीसवा भेद १९। इस प्राणिहिंसा को करने वाला व्यक्ति केवल पाप का ही आलिंगन करता है-पापकर्म को बांधता है, इसलिये प्राणवध पापलोभरूप है। यह बीसवां भेद २०। छविच्छेद-छवि का अर्थ शरीर है, इसका छेदना छविच्छेद है। प्राणवध में शरीर अथवा शरीर के अवयवों का छेदन होता ही है, इसलिये इसे

ઉદ્દેશથી બીજા ઉપર આક્રમણ કરવુ આ સૈન્યમર્દન પ્રાણિવધના કારણરૂપ હોય છે છતા પણ તેને જે પ્રાણવધરૂપ કહેલ છે તે ઔપચારિક રીતે જ કહેલ છે એમ સમજી લેવુ આ પદરમો ભેદ થયો

જીવને પ્રાણથી વિયુક્ત—રહિત કરવો તેને વ્યુપરમણ કહે છે, આ સોળમો ભેદ છે પ્રાણવધને જે પરભવ સક્રમકારક કહેલ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે તે પ્રાણવધ નરકનિગોદાદિ ચાર ગતિરૂપ સસારમા પરિભ્રમણ કરાવનાર છે આ સત્તરમો ભેદ છે આ પ્રાણવધના પ્રભાવથી જીવ નરકાદિ દુર્ગતિયોમા જ જઈને જન્મ લે છે, તેથી તેને દુર્ગતિ પ્રપાતરૂપ કહેલ છે આ અઢારમો ભેદ છે સકળ પાપોનો તે કોપક-ઉત્પાદક છે, તે કારણે તેને પાપકોપરૂપે દર્શાવ્યો છે અથવા પાપ, કોપનુ કાર્ય હોય છે તે કારણે આ પ્રાણવધ કોપસ્વરૂપ છે, એમ પણ કહી શકાય છે આ ઓગણીસમો ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર વ્યક્તિ કેવળ પાપનુ જ આલિંગન કરે છે-પાપકર્મો બાધે છે, તે કારણે તે પ્રાણવધ પાપલોભરૂપ છે આ વીસમો ભેદ છે છવિચ્છેદ-છવિ એટલે શરીર, તેનુ છેદન તે છવિચ્છેદ કહેવાય છે પ્રાણવધમા શરીર અથવા શરીરના અવયવોનુ છેદન થાય છેજ તેથી તેને છવિચ્છેદરૂપ કહેલ છે આ એકવીસમો ભેદ છે પ્રાણવધ જીવનનો

दुःखोत्पादनप्रसक्ता =परपीडाकरणपरायणा. 'इमेहिं' एतेषु=प्रत्यक्ष लक्ष्यमाणेषु 'तसथावरेहिं' त्रसस्थावरेषु 'जीवेहिं' जीवेषु 'पडिणिविट्ठा' प्रतिनिविष्टाः=तेषां रक्षणाद् द्वेषयुक्ताः 'बहुविह' बहुविध 'बहुप्पगार' बहुप्रकारम्=अनेकभेदप्रभेद-सहित, 'भयकर' भयजनक 'पाणवह' प्राणवध=जीवहिंसा 'करेंति' कुर्वन्ति। 'किं ते' ते=त्रसस्थावरेषु द्वेषवन्तः 'किं' किं कुर्वन्ति? पाठीनादि जीवान् 'हणंति' घ्नन्ति, इति वक्ष्यमाणेन सम्बन्ध। तानेव दर्शयति-'पाठीणे'त्यादि। 'पाठीण-तिमि-तिमिंगिल-अणेग-झसविविहजाइमंडुक्क-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविह-गाह-दिलिवेढय-मंदुय-सीमागारपुलुय-सुसुमार बहुप्पगारा' पाठीन-तिमि-तिमिंगिला-ऽनेकझष-विविधजातिमण्डूक-द्विविध-कच्छप-नक्र-मगर-द्विविध-ग्राह-दिलिवेष्टक-मन्दुक-सीमाकार-पुलक-सुसुमार-प्रकाराः, तत्र-पाठीनाः= तन्नामका मत्स्यविशेषा, तिमय मत्स्यविशेषा', तिमिंगिलन्ति इति तिमिंगिलाश्च, महामत्स्याः।

"अस्तिमत्स्यस्तिमिर्नाम शतयोजनविस्तर'।
तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः॥१॥" इतिवचनात्।

अनेकझषाः=विविधाः क्षुद्रमत्स्याः, विविधजातयो मण्डूकाः = नानाजा-

---

ऐसे जीव (त च पुण) इस (भयकर) भयप्रद, (बहुविह) बहुविध और (बहुप्पगार) अनेक भेद प्रभेद सहित (पाणवह) प्राणवध को (करेंति) करते हैं। (इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं) इन प्रत्यक्षीभूत त्रस और स्थावर जीवो की रक्षा करने के विषय में (पडिणिविट्ठा) द्वेषयुक्त होते हुए प्राणवध करते हैं, (किं ते) वे क्या २ करते है इस बात को अब सूत्रकार "पाठीण" इत्यादि पदो द्वारा प्रकट करते हैं– (पाठीण-तिमि-तिमिं-गिल-अणेगझस-विविहजाइमंडुक्क-दुविहक-च्छभ णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय मंदुय-सीमागार पुलय सुसुमार-

---

આ "भयकर" ભયપ્રદ, "बहुविह" બહુ વિધ અને 'बहुप्पगार" અનેક ભેદ પ્રભેદ સહિત, "पाणवह" પ્રાણવધ કરે છે, "इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं" એ પ્રત્યક્ષીભૂત ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની રક્ષા કરવાની બાબતમા "पडिणिविट्ठा" દ્વેષયુક્ત થઇને પ્રાણવધ કરે છે, "किंते" તેઓ શુ શુ કરે છે એ વાતને હવે સૂત્રકાર "पाठीण" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે-"पाठीण-तिमि-तिमिंगिल-अणेगझसविविहजाइ-मडुक-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय-मंदुय-सीमागार-पुलुय-सुसुमार-बहुप्पगारा" એવા જીવો નીચે પ્રમાણે છે—પાઠીન, તિમિ, તિમિંગલ, અનેકઝષ, અનેક જાતિના દેડકા, બન્ને પ્રકારના કાચબા, નક્ર,

अथेदानी 'जहयकओ' यथाकृतः इति तृतीय द्वारमाचष्टे 'त च पुणे'त्यादि।

मूलम्–त च पुण करेंति केइ पावा असजया अविरया अणिहुयपरिणामदुप्पओगा पाणवहं भयकरं बहुविहं बहुप्पगारं परदुक्खुप्पायणपसत्ता इमेहि तसथावरेहिं जीवेहि पडिणिविट्ठा किं ते? पाठीण–तिमि–तिमिगिल–अणेगझस–विविहजाइमंडुक-दुविह-कच्छभ-णक्क-मगरदुविह-गाह-दिलि वेढय-मंदुय-सीमागार-पुलुय-सुंसुमार बहुप्पगारा जलयरविहाणा कए य एवमाई॥सू०६॥

टीका—त च=प्राणिवध 'पुण' पुनः 'केइ' केऽपि केचिद्वैरयाशयः 'पावा' पापाः=पापप्रकृतयः 'असजया' असयताः=असमाहितेन्द्रिया 'अविरया' अविरता =पापकर्मनिवृत्तिरहिताः, 'अणिहुयपरिणामदुप्पओगा' अनिभृतपरिणामदुष्प्रयोगा =अनिभृतः=उपशमवर्जितः परिणामः=अध्यवसायो येषा ते अनिभृतपरिणामाः, दुष्टा प्रयोगाः=इन्द्रियनोइन्द्रियव्यापाराः येषा ते दुष्प्रयोगाः, अनिभृतपरिणामाश्च ते दुष्प्रयोगा इति अनिभृत परिणामदुष्प्रयोगाः, 'परदुक्खुप्पायणपसत्ता' पर-

यह उन्तीसवा भेद है २९ और गुणविराधना–श्रुतचारित्रगुणों का भङ्ग करना यह तीसवाँ भेद है ३० इस तरह ये प्राणवध के ३० पर्यायवाची शब्द गुणनिष्पन्न प्रकट किये गये है ॥सू०–५॥

अब सूत्रकार "जह य कओ" इस तृतीय द्वार के विषय में कहते हैं—'त च पुण' इत्यादि।

टीकार्थ–(केइ पावा) कितनेक पापप्रकृतिवाले (असजया) असमाहित इन्द्रियवाले, (अविरया) अविरतिसपन्न, (अणिहुयपरिणामदुप्पओगा) उपशम रहित परिणामो वाले, और इन्द्रिय एव मन के दुष्टव्यापार वाले (परदुक्खुप्पायणपसत्ता) पर प्राणी के लिये दुःखोत्पादन मे परायण

કરવા, તે ઓગણત્રીસમો ભેદ છે અને ગુણવિરાધના–શ્રુતચારિત્ર ગુણોનો ભગ કરવો, તે ત્રીસમો ભેદ છે આ રીતે પ્રાણવધના ૩૦ પર્યાયવાચી શબ્દ તેમના ગુણ સહિત પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે ॥ સૂ ૫ ॥

હવે સૂત્રકાર "जह य कओ" એ તૃતીય દ્વારનુ વર્ણન કરે છે—"त च पुण" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"केइ पावा" કેટલાક પાપપ્રકૃતિવાળા "असजया" અસમાહિત ઇન્દ્રિય-વાળા, "अविरया" અવિરતિ યુક્ત, "अणिहुयपरिणामदुप्पओगा" ઉપશમ રહિત પરિણામોવાળા, અને ઇન્દ્રિય અને મનના દુષ્ટ વ્યાપારવાળા "परदुक्खुप्पायणपसत्ता" પર પ્રાણીને માટે દુઃખોત્પાદનમા પરાયણ એવા જીવો "तच पुण"

शशकाः प्रसिद्धाः। 'पसर' प्रसराः द्विखुरा वन्यपशुविशेषाः, 'गोणा' गावः 'रोहिय' रोहिताः=चतुष्पदपशुविशेषाः, 'हयगयखर' हया गजाः खराश्च प्रसिद्धाः। करभाः=उष्ट्राः 'खग्ग' खड्गाः=एकशृङ्गा आटव्याश्चतुष्पदविशेषाः 'गेंडा' इति लोके ख्याताः येषां गमनकाले उभयोरपि पार्श्वयोः पक्षतुल्यानि चर्माणि लम्बन्ते, 'वानर' वानराः=प्रसिद्धाः, गवयाः=वर्तुलकण्ठा गो सदृशा 'रोझ' इति प्रसिद्धाः। 'विग' वृकाः=श्वापदजन्तुविशेषाः 'भेडिया' इति प्रसिद्धाः, 'सियाल' शृगालाः प्रसिद्धाः, 'कोला' शूकराः 'मज्जार' मार्जाराः=बिडाला 'कोलसुणह' कोलशुनकाः=आटव्यमहाशूकराः 'सिरिकंदलगावत्त' श्रीकन्दलका-

अनेक और शृग जैसी शाखाएँ फूटती हैं। इनके सीगों की जो भस्म बनती है उसे विषाण भस्म कहते हैं। इनके दो खुर होते हैं। और ये जगल में ही रहते हैं। (उरब्भ) उरभ्र नाम मेंढे का है। (ससय) शशक नाम खरगोश का है। (पसर) प्रसर एक जाति का जानवर होता है, इसके दो खुर हुआ करते हैं। यह जगल में ही रहता है। (रोहिय) "रोहित" यह भी चार पैरोंवाला एक जानवर विशेष होता है। (हय) हय-नाम घोड़े का है, (गय) गय-गज नाम हाथी का है। (खर) खर नाम गधे का है। (करभ) करभ ऊँटका नाम है। (खग) खड्गीको हिन्दी भाषा में गेंडा कहते हैं। इसके एक ही सींग होता है, यह जगल में ही रहता है, इस के पैर चार होते हैं, जब यह चलता है तो उस समय इसकी दोनों तरफ पखों जैसा चमड़ा लटकने लगता है। (वानर) वानर नाम बदर का है। (गवय) गवय रोझका नाम है, यह गायके जैसा होता है। और इसका कठ गोल होता है। (विग) वृक यह हिंसक जतु होता है और इसे हिन्दी भाषामें भेड़िया कहते हैं। (सियाल) "शृगाल" यह जगली

અનેક ઉપશાખાઓ ફૂટે છે તેમના શીંગડાઓની જે ભસ્મ બને છે તેને વિષાણ ભસ્મ કહે છે તેમને બે ખરી હોય છે, અને તેઓ જગલમા જ રહે છે "उरब्भ" ઉરભ્ર નામ ઘેટાનુ છે "ससय" શશક નામ સસલાનુ છે "पसर" પ્રસર એક જાતનુ જાનવર છે, તેને બે ખરી હોય છે અને તે જગલમા રહે છે "रोहिय" 'રોહિત' પણ એક ચોપગુ પ્રાણી છે "हय" હય એટલે ઘોડો, "गय" ગય એટલે હાથી, "खर" ખર એટલે ગધેડો, "करभ" કરભ એટલે ઊંટ, "खग्ग" ખડ્ગી એટલે ગેંડો, તેને એક જ શીંગડુ હોય છે, તે જગલમા જ રહે છે, તેને ચાર પગ હોય છે જ્યારે તે ચાલે છે ત્યારે તેની બન્ને તરફ પાંખો જેવી ચામડી લટકતી રહે છે "वानर" વાનર કપીને કહે છે "गवय" ગવય એટલે રોઝ, તે ગાયના જેવુ હોય છે અને તેની ડોક ગોળ હોય છે "विग" વૃક એક જગલી પ્રાણી છે તેને રીછ કહેવામા આવે છે "सियाल"

अथ स्थलचरेषु चतुष्पदप्रकारानाह—'कुरंग०' इत्यादि।

मूलम्—कुरंग रुरु सरभ चमर सवर उरब्भ ससय-पसर-गोण रोहिय-हय-गय खर-करभ-खग्ग वानर.गवय-विग-सियाल कोल-मज्जार-कोलसुणह-सिरिकंदलगावत्त-कोकंतिय--गोकण्ण-मिय-महिस वियग्घ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ अच्छभल्ल-सद्दूल-सीह--चिल्लल-चउप्पय-विहाणाकए य एवमाई ॥सू०७॥

टीका—कुरंगा=हरिणाः, रुरवो=मृगविशेषाः, सरभाः=वन्यपशुविशेषा विशालकायाः, अष्टापदाः 'परासरे'ति ख्याताः ये महागजानपि पृष्ठे स्थापयन्ति, चमराः=वन्यगावः येषां केशानां चामराणि भवन्ति, सवराः अनेकशाखशृङ्गाः द्विखुरा आरण्यपशवः 'साभर' इति प्रसिद्धाः 'उरब्भ' उरभ्रा'=मेषाः, 'ससय'

किया करते हैं, तथा इनके सिवाय और भी जो जलचर जीव होते हैं-उन्हें भी मार कर ये आनंद मग्न बनते हैं॥ सू ६॥

अब सूत्रकार स्थलचर तिर्यञ्चों मे जो चतुष्पदों के प्रकार है उन्हें इस सूत्र द्वारा प्रकट करते हे-'कुरंगरुरु' इत्यादि।

टीकार्थ-(कुरग) कुरग हिरणको कहते हैं। (रुरु) रुरु नाम भी मृगका है, परन्तु यह सामान्य मृग से विशेष प्रकार का होता है। (सरभ) सरभ नाम अष्टापद का है। यह शरीर में विशाल होता है। परासर भी इस का दूसरा नाम है। ये महागजों को भी अपनी पीठ पर बैठा लेता है। (चमर) चमरी गायों का नाम चमर है। इनके बालों के चामर बनते हैं। (सबर) सबर को हिन्दी भाषा में साभर कहते है। इनके सींगो में

હિંસા કર્યા કરે છે, અને તે સિવાયના બીજા જે જળચર જીવો હોય છે, તેમની પણ હત્યા કરવામા તેમને મજા આવે છે ॥ સૂ-૬॥

હવે સૂત્રકાર સ્થળચર તિર્યચોમા જે જાનવરોના પ્રકારો છે તેમને આ સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરે છે—"કુરગરુરુ" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"કુરગ" હરણને કુરગ કહે છે, "રુરુ" રુરુ પણ મૃગનો એક ખાસ પ્રકાર છે "સરભ" સરભ અષ્ટાપદ નામના પ્રાણીને કહે છે તે શરીરે વિશાળ હોય છે તેનુ બીજુ નામ પરાસર પણ છે તે મોટા હાથીઓને પણ પોતાની પીઠ પર બેસાડી શકે છે "ચમર" ચમરી ગાયોને ચમર કહે છે તેમના વાળમાથી ચામર બને છે "સવર" સબરને સાબર કહે છે તેના શીંગડામાથી બીજી

साम्प्रतमुरःपरिसर्पप्रकारानाह—'अयगर' इत्यादि।

मूलम्—अयगर—गोणस—वराहि—माउलि—काकोदर—दब्भ पुप्फा-आसालिय-महोरगा उरग विहाणा कए य एवमाई॥सू०८॥

टीका—अजगर-गोणश वराहि मुकुलि-काकोदर-दर्भपुष्प-आशालिक महोरगोरगविधाना कृताश्च एवमादीन्। अजगराः=प्रसिद्धाः, गोणशाः=फणरहितद्विमुखसर्पविशेषाः 'वराहयः' दृष्टिविषसर्पाः येषां दृष्ट्या विषावेशो भवति। मुकुलिनः=ईषत्फणकारकाः, काकोदरा =सामान्यसर्पाः, दर्भपुष्पाः=सामान्यफण-

नाम है। (सद्दूल) शार्दूल, (सीह) सिंह एवं (चिल्लल) चित्रक ये सब मांसभक्षी जंगली जानवर हैं और स्थलचर हैं॥ सू ७॥

अब सूत्रकार उरःपरिसर्पके भेदों को प्रकट करते हैं—'अयगर गोणस' इत्यादि०।

टीकार्थ-(अयगर) अजगर यह बहुत अधिक मोटा सर्प होता है, धीरे २सरकता है, जिस प्रकार सामान्य सर्प आहट पाते ही बहुत शीघ्र भग जाता है वैसे यह नहीं भग सकता है। (गोणस) गोणश यह भी एक प्रकार का सर्प ही होता है, परन्तु इसके फणा नहीं होती है, व्यवहार में लोग ऐसा कहते हैं कि इसके दो मुख होते हैं, इसका दूसरा नाम दुमुही भी होता है। (वराही) वराहि-यह वह सर्प है कि जिसकी दृष्टि में विष रहता है, जिसे यह देख लेता है उसके विष का आवेश हो जाता है, इसका दूसरा नाम दृष्टिविष सर्प भी है। (माउलि) मुकुली-यह वह सर्प है जो अपने फण को थोड़ा ही विस्तारता है, ज्यादा नहीं,

भल्ल" तरक्ष, अच्छ भल्लु, ते रीछोना ज नाम छे "सद्दूल" शार्दूल, "सीह" सिंह अने "चिल्लल" चित्रक ए सघळा मांसभक्षी जानवरो छे, अने स्थळचर छे ॥सू ७॥

हवे सूत्रकार "उरःपरिसर्प" पेटे चालनारा सर्पोना भेद बतावे छे— "अयगर-गोणस" इत्यादि

टीकार्थ--"अयगर" अजगर-ते बहुज वधारे मोटो साप छे, ते धीमे धीमे सरके छे जे रीते सामान्य सापो सहेज पणु आवाज थता तरतज भागी जाय छे तेम तेओ भागी शकता नथी "गोणस" गोणुश-ते पणु एक प्रकारनो साप ज होय छे, पणु तेने फेणु होती नथी व्यवहारमा लोको एवुं कहे छे के तेने बे मुख होय छे, तेनु बीजु नाम 'दुमुही' पणु छे "वराहि" वराहि-ते एवो सर्प छे के जेनी दृष्टिमा ज विष रहे छे, जेने ते जुवे छे तेने तेनु झेर चडे छे, तेनु बीजु नाम दृष्टिविष सर्प पणु छे "माउली" मुकुली ते एवी जातनो सर्प छे के छे पोतानी फेणुने थोडा प्रमाणुमा ज फेलावे छे,

वर्त्ताः=श्रीकन्दलकाः आवर्त्ताश्च उभे सजातीया एकखुरजीवविशेषाः, 'कोकतिय' कोकतिकाः=लोमटकाः 'लोमड़ी' इति भाषायाम्, 'गोकण्ण' गोकर्णाः=द्विखुर चतुष्पदजन्तुविशेषाः, 'मिय' मृगाः, 'महिस' महिषा, 'वियग्घ' व्याघ्राः, 'छगला' अजा 'दीविय' द्वीपिकाः 'दीपडा' इति भाषायाम्, 'साण' श्वान = आटव्या. कुक्कुराः 'तरच्छ' तरक्षाः, अच्छभल्लाः-भल्लूकजातिविशेषाः 'सद्दूल शार्दूलाः='सीह' सिंहाः, 'चिल्लला' चित्रकाः-श्वापदजन्तुविशेषाः। एषां द्वन्द्व समासः। 'चउप्पयविहाणाकए य एवमाई' चतुष्पदविधानाः कृताः तांश्च एवमादीन्=चतुष्पदविशेषान् कुरङ्गादीन् घ्नन्तीति परेण योजना ॥सू०७॥

जानवर है-जो रात को "हुआ हुआ" बोला करता है। (कोल) कोल-शूकर एव (मज्जार) मार्जार ये हिंसक जानवर हैं। (कोलसुणह) "कोल शूकर" ये शूकर के ही भेद हैं और सामान्य शूकर की अपेक्षा शरीर में विशाल होता है। (सिरिकंदलगावत्त) श्रीकन्दलक और आवर्त्त ये भी जानवर हैं और इनके एक खुर होता है। इन दोनों की जाति समान होती है। (कोकतिय) कोकतिका नाम लोमड़ी का है, यही बड़ी चालाक होती है। (गोकण्ण) गोकर्ण एक प्रकार का जानवर होता है, इसके दो खुर होते हैं, और पैर चार होते हैं। (मिय) मृग, (महिस) महिष, (वियग्घ) व्याघ्र यह हिंसक जीव है और सिंह जैसा ही होता है। (छगल) बकरा बकरी का नाम अज है। (दीविय) द्वीपिका यह भी मांस भक्षी शिकारी जानवर है, इसे तेंदुआ कहते हैं। (साण) जगली जो कुत्ते है जिन्हें शुनी-कुत्ता कहा जाता है वे यहा "साण" शब्द से गृहीत हुए है। (तरच्छ) तरक्ष, (अच्छभल्ल) अच्छभल्ल, यह रीछों का ही

'શ્રૃગાલ' એક જંગલી પ્રાણી છે, જે રાત્રે "હુઆ હુઆ" બોલે છે તેને ગુજરાતીમા શિયાળ કહે છે "कोलसुणह" કોલ-શૂકર અને "मज्जार" માર્જાર હિંસક જાનવરો છે "કોલ શૂકર" તે શૂકરનો જ ભેદ છે, અને તે સામાન્ય શૂકર કરતા શરીરે મોટુ હોય છે, "सिरिकंदलगावत्त" શ્રીકન્દલક અને આવર્ત્ત એ પણ જાનવરો છે અને તેમને એક ખરી હોય છે તે બને સમાન જાતિના છે "कोकतिय" લોકડીને કોકતિક કહે છે, તે ઘણી ચાલાક હોય છે "गोकण्ण" ગોકર્ણ એક પ્રકારનુ પશુ છે "मिय" મૃગ "महिस" મહિષ અને "वियग्घ," વ્યાઘ્ર હિંસક પ્રાણીઓ છે અને તે સિંહ જેવા જ હોય છે "छगल" બકરા બકરીને અજ કહે છે "दीविय"દ્વીપિકા માસાહારી શિકારી પશુ છે તેને તેદુઆ કહે છે તે ચિત્તા જેવુ હોય છે જંગલી કૂતરાઓને શુની-કુત્તા કહે છે, "साण" શબ્દથી અહીં તે જંગલી કૂતરાઓ સમજવાના છે "तरच्छ अच्छ

प्रमाणशरीरा मनुष्यक्षेत्रबहिर्भाविनउरःपरिसर्पविशेषा', एषां द्वन्द्वः । उरगविधानाः=उरगप्रकारा कृताः । तान् च एवमादीन् 'घ्नन्ति' इत्यनेन सम्बन्धः ॥सू०८॥

अथ भुजपरिसर्पभेदानाह—' छीरल० ' इत्यादि ।

मूलम्—छीरल—सरंव—सेह—सेल्लग—गोधा—उंदुर—णउल—सरड—जाहक—मंगुस—खाडहिला—चाउप्पइय—घरोलिया—सरीसिव गणे य एवमाई ॥ सू० ९ ॥

टीका—क्षीरलाः, शरम्बाः, 'सेहा.' तीक्ष्णकण्टकाकुलकाया , शैल्यकाः, एते सर्वे भुजपरिसर्पविशेषाः । गोधाः=प्रसिद्धाः, उन्दुरा =मूषकाः, नकुलाः प्रसिद्धाः

है । (महोरगा) महोरग ये वे सर्प हैं कि जिनका शरीर एक हजार योजन का होता है, तथा ये मनुष्य क्षेत्र से बाहिरी क्षेत्रों में उत्पन्न होते हैं । (उरगविहाणाकएय) ये सब भेद उर.परिसर्पो के हैं पापी जीव इन्हे मारते हैं ॥ सू ८ ॥

अब भुजपरिसर्प के भेदों को सूत्रकार प्रकट करते हैं—' छीरल-सरव ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(छीरल—सरव-सेह गोधा-उदुर-णउल सरंड-जाहक मगुस खाडहिला—चाउप्पइय—घरोलिया—सरीसिव गणे य 'एवमाई) क्षीरल, शरम्ब सेह ये वे जीव है कि जिनका शरीर कांटों से युक्त रहता है । सेह को हिन्दी भाषा मे " सेही " कहते हैं, इसका आकार श्रृगाल जैसा होता है, इसके शरीर पर तीखे नुकीले काले और सफेद रग वाले काटे होते हैं । ये भेद भुजपरिसर्पो के है । गोधा—गुहेरेको मानो कहते हैं यह भित्ति पर इतनी मजबूती के साथ चिपक जाती है कि इसे पकड़ कर चोर

મહોરગ, તે એવા સર્પ હોય છે કે જેમનુ શરીર એક હજાર યોજનનુ હોય છે, તથા તે મનુષ્ય ક્ષેત્રથી બહારના ક્ષેત્રોમા ઉત્પન્ન થાય છે "उरगविहाणाकएय" આ બધા ઉર પરિસર્પોના ભેદ છે પાપી જીવો તેમની હત્યા કરે છે ॥સૂ ૮॥

હવે ભુજપરિસર્પના ભેદોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—" छीरलसरव " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"छीरल, सरव, सेह, सेल्लग गोधा उदुर, णउल, सरड, जाहक, मगुस, खाडहिला, चाउप्पइय, घरोलिया, सरीसिव, गणे य एवमाई" ક્ષીરલ, શરમ્બ, સેહ, તે જીવો કાંટા થી યુક્ત શરીરવાળા હોય છે સેહને ગુજરાતી ભાષામા સાહુડી કહે છે તેનો દેખાવ શિયાળ જેવો હોય છે, તેના શરીર પર તીક્ષ્ણ, અણીદાર, કાળા અને સફેદ રંગના કાંટા હોય છે તે ભુજપરિસર્પોના ભેદ છે " गोधा " પાટલા ઘોને કહે છે તે દિવાલ પર એટલી મજબૂત ચોંટી જાય છે.

धारिणः। आशालिकाः, उरःपरिसर्पविशेषा। एते च चक्रवर्तिवासुदेवबलदेवादीनां स्कन्धावारमध्ये ग्रामनगरादिषु वा एतेषां विनाशकाले सामुदानिककर्मोदयात्-असञ्ज्ञिनो मिथ्यादृष्टय. सम्मूर्छिमपञ्चेन्द्रिया अन्तर्मुहूर्त्तायुष्काः जघन्येनाऽङ्गुलस्यासंख्येयभागपरिमितयाऽवगाहनया, उत्कर्षेण द्वादशयोजनपरिमितयाऽवगाहनया विष्कम्भबाहल्येन तदनुरूपां भूमिं विदार्य समुत्पद्यन्ते। अन्तर्मुहूर्त्तानन्तरं तन्मरणे-स्कन्धावारादीनां सहसा विनाशो भवति। 'महोरगा' योजनसहस्र-

क्यों कि फण को अधिक विस्तार करने की इसमें शक्ति नहीं होती है। (काकोदर) काकोदर सामान्य सर्प का नाम है। इसी तरह (दब्भपुप्फ) दर्भपुष्प भी वह सर्प होता है जो सामान्य रूपसे फणा से युक्त होता है, परन्तु यह अपने फणा को तानता नहीं है, बीन बजाने पर भी यह प्रकृतिस्थ बना रहता है। (आसालिय) आशालिक भी सर्पों की एक विशेष जाती है। ये चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, आदिकों के सैन्य के निवासस्थानमें अथवा ग्राम नगर आदिकों में भूमि के नीचे उत्पन्न होते हैं, इनके विनाशकालमे सामुदानिक कर्मका उदय होता है, स्कन्धावार-छावनी तथा गाम नगरादि जमीन मे उतर जाते हैं प्रायः मर जाते हैं ये असज्ञी मिथ्या दृष्टि होते हैं, इनका जन्म सम्मूर्च्छिम होता है, इनके पांचो इन्द्रिया होती है। इनकी आयु अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है इनके शरीर की अवगाहना जघन्य से अगुल के असख्यातवें भाग प्रमाण होती है तथा उत्कृष्ट से द्वादश योजनप्रमाण होती है, अन्तर्मुहूर्त के बाद इनका मरण हो जाता

કારણકે વધારે પ્રમાણમા ફેલાવવાની શક્તિ તેનામા હોતી નથી "काकोदर" કાકોદર સામાન્ય સર્પનુ નામ છે એજ પ્રમાણે "दब्भपुप्फ" દર્ભપુષ્પ પણ એક એવા પ્રકારનો સર્પ છે કે જે સામાન્ય રીતે ફણાથી યુક્ત હોય છે, પણ તે પોતાની ફણાને ફેલાવતો નથી, મોરલી બજાવવામા આવે તો પણ તે ફણાને વિસ્તાર્યા વિના મૂળ સ્થિતિમા જ રહે છે "आसालिय" આશાલિક, પણ સર્પોની એક ખાસ જાતિ છે તે ચક્રવર્તી, વાસુદેવ, બલદેવ આદિના સૈન્યના નિવાસસ્થાનમા અથવા ગામ નગર આદિમા ભૂમિની નીચે ઉત્પન્ન થાય છે, તેમના વિનાશ કાળે સામુદાયિક કર્મનો ઉદય થાય છે સ્કન્ધાવાર-છાવણી તથા ગામ નગર આદિ જમીનમા ઉતરી જાય છે સામાન્ય રીતે મરી જાય છે તેઓ અસજ્ઞી મિથ્યાદૃષ્ટિ હોય છે તેમનો જન્મ સમૂર્છિમ થાય છે, તેમને પાચે ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમનુ આયુષ્ય અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ છે, તેમના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી અગુલના અસખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ હોય છે, તથા ઉત્કૃષ્ટે બાર યોજન પ્રમાણ હોય છે અન્તર્મુહૂર્ત પછી તેમનુ મરણ થઇ જાય છે "महोरगा"

कोस–कुच–दगतुड–ढेणियालग–सूईमुह–कविल–पिंगलक्खग-कारंड–वक्कवाग–उक्कोस–गरुल–पिंगल–सुय–वरहिण–मयण-साल–नदीमुह–नंदमाणग–कोरंग–भिंगारग–कोणालग-जीवं जीवक-तित्तिर–वट्टग–लावग-कपिजलग–कवोतग–पारेवग–चडग ढिक–कुक्कुड–मेसर–मऊर–चओरग–हयपोंडरीय–करक–चीरल्ल –सेण–वायस विहाण–सियचास–वग्गुलि–चम्मट्ठिल–विततपक्खि समुग्गपक्खि–खहयर विहाणाकए य एवमाई जल थल खचा-रिणो य पचिंदिए पसुगणे वियति य चउरिंदिए य विविहे जीवे पिय जीविए मरणदुक्खपडिकूले वराए हणंति वहुसकि-लिट्ठ कम्मा ॥ सू० १० ॥

टीका—कादम्वाः=कलहंसाः, कङ्काः=पक्षिविशेपा वलाकाः='वगला' इति भापा प्रसिद्धाः, सारसाः=प्रसिद्धाः 'आडा' जलचर पक्षिविशेपाः 'आडा' इति भापायाम्। 'सेडी' सेटी, कुल्लाः, वञ्जुलाः, 'पारिप्पव' पारिप्लवाः=पक्षि-विशेपाः कीराः=शुकाः, 'सउण' शकुना 'शकुनपक्षिविशेपाः, 'दीविया' दीपिका

अव खेचर जो तिर्यंच हैं उनके भेदों को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं—'कादव कक वलाका' इत्यादि०।

टीकार्थ–(कादव) कादम्व–कलहंस (कंक) कक–पक्षिविशेप (वलाका) वलाका–वगुला (सारस) सारस–इसी नामका प्रसिद्ध पक्षी है (आडा) आडा–जल में तैरने वाला पक्षी जिसे भापामें 'आड' कहते हैं (सेडी) सेटी (कुलल) कुलल (वजुल) वजुल (पारिप्पव) पारि-प्लव पक्षिविशेष (कीर) कीर–तोता (सउण) शकुन–पक्षिविशेप,

---

હવે જે ખેચર–નભચર તિર્યંચો છે તેમના ભેદોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે- "कादव, ककवलाका" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"कादव" કાદમ્બ–કલહંસ "कक" કંક–એક જાતનું પક્ષી, "वलाका" બલાકા–બગલું "सारस" સારસ–એ નામનું પ્રસિદ્ધ પક્ષી "आडा" આડા–જળમાં તરનારૂં એક પક્ષી જેને સંસ્કૃતમાં "આડા" કહે છે "सेडी" સેટી "कुलल" કુલલ "वजुल" વંજુલ "पारिप्पव" પારિપ્લવ એ પક્ષીઓની ખાસ જાતો છે "कीर" કીર–પોપટ "सउण" શકુન–પક્ષીની એક જાત "दीविय"

शरटा=कृकलाशा, जाहकाः=कण्टकव्याप्ताङ्गाः, मगुसा =भुजपरिसर्पविशेषाः, खाडहिलाः=श्वेतकृष्णरेखाऽङ्कितदेहाः भुजपरिसर्पविशेषाः। चातुष्पदिकाः=चतुश्चरणा भुजपरिसर्पविशेषा। 'घरोलिया' गृहगोधिकाः 'छिपकली-घरोली' इति प्रसिद्धाः। एतेषा द्वन्द्वः। एवमादीन् सरीसृपगणान् 'घ्नन्ती'ति सम्बन्धः ॥सू०९॥

अथ खेचरभेदानाह—'कादंब' इत्यादि।

मूलम्—कादंब-कंक-बलाका-सारस आडा-सेडी-कुलल-वंजुल-पारिप्पव-कीर-सउण-दीविय-हंस-धत्तरट्ट-भास-कुली-

रात्रि मे चोरी करने को ऊपर दुमजिले आदि मकान पर चढ़ जाते हैं यह कमन्द की तरह भित्ती पर लटक जाती है। उन्दुर नाम मूषक का है। नकुल नौला को कहते हैं। शरट नाम कृकलाश का है, यह गले में लाल होता है और बैठा हुआ अपना मस्तक हिलाया करता है, छिपकली जैसा इसका आकार होता है, मारवाड़ आदि राजस्थान में "करगेट्या' कहते हे। जाहक वे भुजपरिसर्पविशेष हैं कि जिनके शरीर पर काटे रहते हैं। मगुस भी इसी प्रकार के भुजपरिसर्प विशेष है। खाडहिल को हिन्दी में गिलहरी कहते हैं, इसके शरीर पर जो रोमराजी होती है वह सफेद और काली रेखा से युक्त होती है, यह वृक्षों पर रहती है। चातुष्पदिक चार पैरों वाला भुजपरिसर्प विशेष होता है। घरोलिया को हिन्दी में छिपकली कहते हैं, यह मकानों के भीतर भीत पर छत पर चिपकी रहती है। निर्दयी हिंसक जीव इन्हें तथा इनसे भिन्न जो और भी भुजपरिसर्प विशेष हैं उन्हें मारते हैं ॥सू ९॥

કે તેને પકડીને રાત્રે ચાર ચોરી કરવાને માટે બે ત્રણ માળના મકાનપર ચડી જાય છે, તે કબન્ધની જેમ ભીંતપર લટકી જાય છે "उदुर" એટલે ઉદર "णउल" એટલે નોળીયો, "सरड" એટલે કાચિંડો તેનુ ગળુ લાલ હોય છે અને તે બેઠો બેઠો પોતાનુ શિર હલાવ્યા કરે છે, ગરોળી જેવો તેનો આકાર હોય છે માર-વાડ આદિ રાજસ્થાનમા તેને " કરગેટ્યા " કહે છે, જાહક, એ એક જાતના ભુજપરિસર્પનો ભેદ છે તેમના શરીર પર કાટા હોય છે મગુસ પણ એજ પ્રકારે ભુજપરિસર્પ છે, "खाडहिल" એટલે ખિસકોલી તેના શરીરપર જે રૂવાટી હોય છે તે સફેદ અને કાળી રેખાથી યુક્ત હોય છે, તે વૃક્ષો પર રહે છે તે ચાતુ-ષ્પદિક, ચાર પગ વાળુ ભુજપરિસર્પ વિશેષ છે 'घरोलिया' તેમને ગુજ-રાતીમા ગરોળી કહે છે તે મકાનોની અદર ભીંત તથા છત પર ચોટી રહે છે નિર્દય હિંસક લોકો તેમની તથા તેમના સિવાયના બીજા પણ જે ભુજપ રિસર્પ વિશેષ છે તેમની હત્યા કરે છે ॥ સૂ-૯॥

'भिंगोडी' इति प्रसिद्धाः, 'कोणालग' कोणालकाः=जलचरपक्षिविशेषाः, जीवञ्जीवकाः=चातकाः, तित्तिराः='तीतर' इति लोके प्रसिद्धाः, 'वट्टग' वर्तकाः=पक्षिविशेषाः 'बटेर' इति भाषायाम्। 'लावग' लावकाः=प्रसिद्धाः, 'कविंजलग' कपिञ्जलकाः=तन्नामकपक्षिणः 'कवोतग' कपोतकाः='कबूतर' इति प्रसिद्धाः, 'पारेवग' पारावतकाः=तज्जातीया एव 'चडग' चटकाः='चिडी' इति प्रसिद्धाः, 'ढिंक' ढिङ्काः=ढिङ्कपक्षिणः, 'कुक्कुड' कुक्कुटाः=प्रसिद्धाः, मेसरा= पक्षिविशेषाः, 'मऊर' मयूराः=प्रसिद्धाः, 'चओरग' चकोरकाः=प्रसिद्धा एव 'हय-पोंडरीय' हृदपुण्डरीकाः=जलचरपक्षिविशेषाः, 'करग' करकाः 'चीरल्ल' चीरल्लाश्च पक्षिविशेषाः 'चील' इति प्रसिद्धाः 'सेण' श्येनाः 'बाज' इति भाषाया 'वायसवि-हाण' वायसविधानाः काकपक्षिभेदाः, 'सियचास' सितचापाः=श्वेतचापपक्षिणः, 'वग्गुलि' वल्गुल्य –'वागल' इति प्रसिद्धाः, 'चम्मट्ठिल' चर्मास्थिलाः चर्मचटका इति भाषाया, 'विततपक्खि' विततपक्षिणः 'समुग्गपक्खि' समुद्गपक्षिणः, एते

पक्षी (भिंगारग) भृङ्गारक–भिंगोडी (कोणालग) कोणालक–जलचर पक्षि-विशेष (जीवजीवक) जीवजीवक–चातक (तित्तिर) तित्तिर–तीतर (वट्टग) वर्तक–बटेर (लावग) लावक–लावा (कपिंजलग) कपिंजलक इस नाम का पक्षी (कवोतग) कपोतक–कबूतर (पारेवग) पारापतक कबूतर के जातिविशेष (चडग) चटक–चिड़िया (ढिंक) ढिंकपक्षी (कुक्कुड) कुक्कुट–मुर्गा (मेसर) मेसर (मऊर) मयूर और (चओ-रग) चकोर ये सब पक्षिविशेष हैं (हयपोंडोरीय) हृदपुडरीक–जलपक्षि-विशेष (करक) करक–पक्षिविशेष (चीरल्ल) चीरल्ल–चील, (सेण) श्येन बाज (वायसविहाण) वायसविधान–कौवा पक्षी के भेद (सियाचास) श्वेतचाप पक्षी (वग्गुलि) वग्गुली–वागल (चम्मट्ठिल) चर्मास्थिल–चम-गादड (विततपक्खि) पिततपक्षी (समुग्गपक्खि) समुद्रपक्षी, खहयर–

ભિગોડી "कोणालग" કોણાલક એક જાતનુ જળચર પક્ષી "जीवजीवक" જીવ-જીવક–ચાતક "तित्तिर" તિત્તિર–તેતરપક્ષી "वट्टग" વર્તક–બટેર 'लावग" લાવક–લાવા "कविंजलग" કપિંજલક–એ નામનુ પક્ષી "कवोतग" કપોતક–કબૂતર "पारेवग" પારાવતક–પારેવુ કબૂતરની જાતનુ પક્ષી "चडग" ચટક–ચકલી "ढिंक" ઢિંક પક્ષી "कुक्कुड" કુકકુટ–કૂકડો "मेसर" મેસર "मऊर" મયૂર અને "चओरग" ચકોર એ બધા જુદી જુદી જાતના પક્ષીઓ છે "हय पोंडरीय" હૃદપુડરીક–તે નામનુ જળચર પક્ષી "करक" કરક–પક્ષિવિશેષ "चीरल्ल" ચીરલ્લ–સમડી "सेण" શ્યેન–બાજ "वायसविहाण" વાયસ વિધાન કાગડાની એક જાત "सियचास"શ્વેતચાપ પક્ષી "वग्गुलि" વલ્ગુલી–વાગોળ "चम्मट्ठिल" ચર્માસ્થિલ–ચમગાદડ "विततपक्खि" વિતતપક્ષી "समुग्गपक्खि" સમુદ્રપક્ષી

=कृष्णचटकाः,हंसाः=नीरक्षीरविवेचका पक्षिणः 'धत्तरट्ठ' धार्तराष्ट्रकाः=श्यामचरणचञ्चु हंसाः, 'भास' भासाः 'कुलीकोस' कुलीकोशा =पक्षिविशेषा 'कुच' क्रौञ्चाः=क्रौञ्चपक्षिणः ये शरदि ऋतौ माद्यन्ति मधुरध्वनिं च कुर्वन्ति, 'दगतुड' दकतुण्डाः, 'ढेणियालग' ढेणिकालकाः, 'सूईमुह' सूचीमुखा 'कविल' कपिला = पक्षिविशेषाः, 'पिंगलक्खग' पिङ्गलाक्षाः=पिङ्गले अक्षिणी येषां ते पिङ्गलाक्षाः= पीतलोचनपक्षिणः 'कारड' कारण्डकाः=वतक इति लोके प्रसिद्धाः, 'चक्कवाग' चक्रवाकाः=प्रसिद्धाः, 'उक्कोस' उक्कोशाः=कुरराः कुरज पक्षिविशेषाः, 'गरुल' गरुडाः=प्रसिद्धाः 'पिंगल' पिङ्गलाः=रक्तशुका 'सुय' शुकाः=रक्तमुखशुकाः, 'वरहिण' वर्हिणः=पिच्छधारिमयूराः 'मयणसाल' मदनशलाकाः='मेना' इति भाषायाम्, 'नंदीमुह' नन्दीमुखाः, 'नदमाणग' नन्दमानकाश्च पक्षिविशेषा, 'कोरग' कोरङ्काः=तन्नामकाः पक्षिणः 'भिंगारग' भृङ्गारिकाः

(दीविय) दीपिका-कालीचिड़िया (हस) हस-नीरक्षीर को जुदा करने वाला पक्षी (धत्तरट्ठ) धार्तराष्ट्रक-जिनके चरण और चोंच दोनों काले होते हैं ऐसे हस (भास) भास और (कुली-कोस) कुलीकोश पक्षि-विशेष है (कुच) क्रौंचपक्षी-जो शरद ऋतु में मदोन्मत्त होते हैं एव मधुर ध्वनि किया करते हैं (दगतुड) दगतुड (ढेणियालग) ढेणिकालक (सूईमुह) सूचीमुख (कविल) कपिल, ये भी पक्षि विशेष हैं। (पिंगल क्खग) पिङ्गलाक्ष-पीलेनेत्रवाला एक जात का पक्षी (कारड) कारण्डक-वतक (चक्कवाग) चक्रवाक-चकवा (उक्कोस) उत्क्रोश-कुरर, (गरुल) गरुड (पिंगलसूय) पिंगलतोते, (सूय) शुक-लालचांच वाले तोते (बर-हिण) बर्हि-पिछेवाले मयूर (मयणसाल) मदनशाल-मैना (नदीमुह) नदीमुख (नदमाणग) नन्दामानक, और (कोरग) कोरक इन नाम के

દીપિકા-દેવચકલી "हस" હસ-નીરક્ષીરને જુદા કરનારૂ પક્ષી "धत्तरट्ठ" ધાર્તરાષ્ટ્રક-જેમના ચરણુ અને ચાચ કાળા હોય છે તેવા હસ "भास" ભાસ અને "कुलीकोस" કુલીકોશ-પક્ષીની ખાસ જાતો "कुच" ક્રોચપક્ષી-જે શરદઋતુમા મદોન્મત્ત થાય છે અને મધુર ધ્વનિ કર્યા કરે છે "दगतुड" દગતુડ, "ढेणियालग" ઢેણિકાલક "सूईमुह" સૂચીમુખ "कविल" કપિલ એ પક્ષીની ખાસ જાતો છે "पिंगलक्खग" પિગલાક્ષ-પીળા નેત્રવાળુ એક જાતનુ પક્ષી "कारड" કારડક-બતક "चक्कवाग" ચકવાક-ચકવા "उक्कोस" ઉક્કોશ-કુરર "गरुल" ગરુડ "पिंगल" પિંગલ-લાલ પોપટ "सुय" શુક-લાલ ચાચવાળા પોપટ "वरहिण" બર્હિ-પીછાવાળો મોર "मयणसाल" મદનશાલ-મેના "नदीमुह" નદીમુખ "नद माणग" નન્દમાનક અને "कोरग" કોરક નામના પક્ષીઓ "भिंगारग" ભૃગારક-

टीका—'इमेहिं' एभिः वक्ष्यमाणैः 'विविहेहिं' विविधैः=नानाप्रकारैः 'कारणेहिं' कारणैः=वक्ष्यमाणप्रयोजनैः त्रसान् प्राणान् घ्नन्ति अबुधा जनाः इत्यग्रेण सम्बन्धः। 'किं ते' कानि तानि प्रयोजनानि ? इत्याह–'चम्मे 'त्यादि। 'चम्म' चर्म=शरीरत्वचा, तदर्थं यथा 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' इत्यादि। 'वसा' वसा=शरीरस्थधातुविशेषः, 'चर्बी' इति भाषा, 'मंस' मांस, मेदो=देहस्थ चतुर्थधातु-

इस प्रकार प्राणिवध के प्रकारों को कहकर अब सूत्रकार उसके प्रयोजन के प्रकारों को कहते हैं–इमेहिं विविहेहिं ' इत्यादि।

टीकार्थ-जो अबुध–अज्ञानी मनुष्य हैं वे (इमेहिं) इन वक्ष्यमाण (विविहेहिं) नानाप्रकार के (कारणेहिं) प्रयोजनों के वशवर्ती होकर (हिंसति तसे पाणे) त्रस जीवों की घात करते हैं। इस प्रकार का संबंध १३वें सूत्र में कथित " अबुहा इह हिंसति तसे पाणे " इन पदों को लेकर यहां लगा लेना चाहिये। (किं ते) जिन प्रयोजनों को लेकर अज्ञानी–प्राणी त्रस जीवों की हिंसा करते हैं वे प्रयोजन क्या २ हैं–इसी विषय को सूत्रकार " चम्म–वसा–मंस–मेय " इत्यादि पदों द्वारा स्पष्ट करते हैं, वे कहते हैं कि (चम्म–वसा–मंस–मेय–सोणिय–जग–फिप्फिस–मत्थुलिंग–हियय–अंत–पित्त–फोफस–दंतट्ठा) अबुधजन जो इन प्राणियों की घात करते हैं उसमें कितनेक प्राणियों का उनकी (चम्म) त्वचा प्राप्त करने का प्रयोजन रहता है इसलिये वे उनका घात करते हैं, कितनेक प्राणियों का उनकी (वसा) चर्बी प्राप्त करने का उद्देश्य होता है, कितनेक

આ પ્રમાણે પ્રાણીવધના પ્રકારો વિષે વાત કરીને હવે સૂત્રકાર તેના ક્યા ક્યા હેતુઓ હોય છે તે બતાવે છે–" इमेहिं विविहेहिं " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–જે અબુધ–અજ્ઞાની મનુષ્યો છે તેઓ "इमेहिं" આ પ્રમાણે "विविहेहिं" વિવિધ પ્રકારના "कारणेहिं" પ્રયોજનને વશ થઇને "हिंसति तसे पाणे" ત્રસ જીવોનો ઘાત કરે છે આ પ્રકારનો સબંધ ૧૩ મા સૂત્રમા કહેલ " अबुहा इह हिंसति तसे पाणे " આ પદોની સાથે ત્યા જોડવો જોઇએ "किंते" જે હેતુને ખાતર અજ્ઞાની–જીવ ત્રસ જીવોની હિંસા કરે છે તે હેતુઓ કયા કયા છે–એ વિષયને સૂત્રકાર " चम्म–वसा–मंस–मेय " ઇત્યાદિ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે તેઓ કહે છે કે "चम्म, वसा, मंस, मेय, सोणिय, जग, फिप्फिस, मत्थुलिंग हियय, अंत, पित्तफोफस, दंतट्ठा" અબુધ લોકો તે પ્રાણીઓની જે હિંસા કરે છે તેનો હેતુ કેટલાક પ્રાણીઓની બાબતમા તેમનુ "चम्म" ચામડુ પ્રાપ્ત કરવાનો હોય છે, કેટલાક પ્રાણીઓની "वसा" ચરબી પ્રાપ્ત કરવા માટે તેમનો વધ કરાય છે,

मनुष्यक्षेत्रबहिर्भाविपक्षिण ='खयहरविहाणकए य एवमाई' खचर विधाना कृताः, तानेवमादीनुक्तमकारान्। तथा 'जलथलखचारिणो य-पचिंदिए पसुगणे' जलस्थलखचारिणश्च पञ्चेन्द्रियान पशुगणान् 'वियतिय चउरिंदिए' द्वित्रिचतुरिन्द्रियान् 'विविहे जीवे' विविधान् जीवान् 'पियजीविए' प्रियजीवितान् 'मरणदुक्खपडिकूले' मरणदुःखप्रतिकूलान् 'वराए' वराकान=दीनान् 'वहुसकिलिट्ठकम्मा' बहुसक्लिष्टकर्माणः=समधिकदुष्टाचरणाः जनाः 'हणंति' घ्नन्ति=मारयन्ति॥सू०१०॥

एवं प्राणिवधस्य प्रकाराण्यभिधाय सम्प्रति तत्प्रयोजनप्रकाराण्याह— 'इमेहिं' इत्यादि।

मूलम्—इमेहि विविहेहिं कारणेहिं, किं ते? चम्म-वसा-मंस-मेय-सोणिय जग-फिप्फिस -मत्थुलिग हिय -अंत-पित्त फोफस-दंतट्ठा अट्ठि-मिज-नह-नयण- कण्ण ण्हारुणि- नक्क- धमणि-सिंग-दाढ़ि-पिच्छ विस-विसाण-वालहेउ ॥ सू० ११ ॥

विहाणाकए य) ये मनुष्य से बाहिर रहने वाले पक्षी। ये सब खेचर जातिके प्रकार है। इन्हें तथा (एवमाई) और भी इनसे भिन्न जो (जलथल खचारिणो य पचिंदिए पसुगणे) जलचर, स्थलचर, एवं खेचर पञ्चेन्द्रिय पशु हैं उनको इसी प्रकार (बियति य चउरिंदिए य) द्वीन्द्रिय, तेन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय ऐसे (विविहे जीवे) नानाप्रकार के जीवों को कि जिन्हें (पियजीविए) अपने प्राण प्रिय हैं और (मरण दुक्खपडिकूले) मरण जन्य दुःखों से जो सदा डरते रहे हैं, ये दु ख जिन्हें प्रतिकूल हैं, एवं जो (वराए) दीन हैं उन्हें (बहुसकिलिट्ठकम्मा) अत्यन्त दुष्ट आचरण वाले मनुष्य (हणंति) मारते है॥सू १०॥

खहयर, विहाणाकए य" ते मनुष्यथी દૂર રહેનાર પક્ષી છે એ બધા ખેચર જાતિના પ્રકારો છે તેમને તથા "एवमाई" તે સિવાયના બીજા પણ જે "जल थल खचारिणो य पचिंदिए पसुगणे" જળચર, સ્થળચર અને ખેચર પંચેન્દ્રિય પશુઓ છે તેમને તથા એજ પ્રમાણે "बियतिय चउरिंदिए य" દ્વીન્દ્રિય, ત્રિઇન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય એવા "विविहे जीवे" વિવિધ પ્રકારના જીવો કે જેમને "पियजीविए" પોતાના પ્રાણ પ્રિય છે અને 'मरण दुक्खपडिकूले" મરણજન્ય દુઃખોથી જે સદા ડરતા રહે છે, તે દુઃખો જેમને પ્રતિકૂળ છે, અને જે "वराए" દીન છે તેમને "बहुसकिलिट्ठकम्मा" અત્યંત દુષ્ટ આચરણ વાળા મનુષ્યો "हणंति" હણે છે ॥ સૂ-૧૦॥

"रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः" इति 'नह' नखाः, 'नयण' नयनानि=नेत्राणि 'कण्ण' कर्णाः 'ण्हारु' स्नायुः=अङ्गप्रत्यङ्गबन्धननाडीविशेषः 'नक्क' नासिका='धमणि' धमन्यो=नाड्यः, 'सिंग' शृङ्गाणि प्रसिद्धानि, 'दाढि' दंष्ट्रा 'पिच्छ' पिच्छ=मयूरादिपिच्छ, 'विस' विषं=कालकूटादि 'विसाण' विषाणानि=गजदन्ताः, वाला=केशाः, एषां 'हेउ' हेतु हेतुमाश्रित्य अस्थिमज्जादिहेतोरित्यर्थः, 'हिंसंति' इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥सू०११॥

मज्जा नामक छठवी धातु विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नह) नखों का प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नयण) नयन-नेत्रों को प्राप्त करने का, कितनेक का (कण्ण) कान प्राप्त करने का कितनेक का (ण्हारुणि) स्नायुओं को अग प्रत्यगों को बाधने वाली नाडि विशेषों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (नक) नासिका प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (धमणि) धमनियां-नाडियां प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (सिंग) शृंगों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (दाढि) दाढों को प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (पिच्छ) पिच्छों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (विस) कालकूट आदि विष प्राप्त करने का, कितनेक का उनके विषाण-गज दन्तों को प्राप्त करने का और कितनेक का उनके (वाल) वालों को प्राप्त क ने का, उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अबुधजन इनकी हिंसा करते हैं॥ सू-११॥

વધ તેમની "मिंज" મજ્જા નામની છટ્ટી ધાતુને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "नह" નખોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "नयण" નેત્ર પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "कण्ण" કાન પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ "ण्हारुणि" સ્નાયુઓને અગ પ્રત્યગોને બાધનારી કોઈ નસ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનુ "नक्क" નાક પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ તેમની "धमणि" ધમનીઓ-નાડીઓ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટ-લાકનો વધ તેમના "सिंग" શિંગડા પ્રાપ્ત કરવા માટે, કેટલાકનો વધ તેમની "दाढि" દાઢો પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "पिच्छ" પીંછા પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનુ "विस" કાલકૂટ આદિ વિષ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના વિષાણુ હાથી દાતને પ્રાપ્ત કરવા માટે, અને કેટ લાકનો વધ તેમના "बाल" વાળ પ્રાપ્ત કરવાને માટે કરાય છે તે હેતુઓ-પ્રયો-

विशेप , 'सोणिय' शोणित=द्वितीयधातुविशेषः, 'जग' यकृत्-उदरदक्षिणभाग स्थ मासग्रन्थि , ' फिप्फिस ' फिप्फिस-अन्त्रस्थितमासविशेषः, ' फेफड़ा ' इति भाषाया, ' मत्थुलिंग ' मस्तुलिङ्ग=मस्तक भेजक ' हिय ' हृदय=हृदयमासपिण्ड 'कलेजा' इति प्रसिद्ध, 'अंत' अन्त्र 'आत' इति भाषा, ' पित्त ' पित्त=पित्ताशयः, फोफसं=शरीरावयवविशेषः ' दतहा ' दन्तार्थं=दन्ताः=प्रसिद्धाः, एतेपामर्थाय। पुनः-'अट्ठि' अस्थि प्रसिद्ध, 'मिंज' मज्जा=वीर्यजनकपष्ठधातुविशेप । उक्तञ्च—

प्राणियों का उनके (मस) मांस प्राप्त करने का, कितनेक प्राणियो का उनकी (मेय) मेद जो देह की चतुर्थ धातु है उसके प्राप्त करने का, कितनेक प्राणियों का उनके (सोणिय) शोणित प्राप्त करने का, कितनेक प्राणियो का उनके (जग) यकृत् को-उदर के दक्षिण भाग में रही हुई मांसग्रथि को प्राप्त करने का, कितनेक प्राणियों का उन के "फिप्फिस" फिप्फिस को आतो मे स्थिति मास विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक प्राणिओं का उनके (मत्थुलिंग) मस्तक के भेजे को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (हिय) हृदयमासपिंड को जिसे कलेजा कहते हैं प्राप्त करने का (अंत) आंतों को प्राप्त करने का (पित्त) पित्ताशय प्राप्त करने का, कितनेक का फोफस शरीरावयव विशेप-प्राप्त करनेका, कितनेक का उनके दातो को प्राप्त करने का प्रयोजन होता है तथा (अट्ठि-मिंजनह-नयण-कण्ण-ण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिंग-दाढि-पिच्छ-विसाण-वाल हेउ) कितने का उनकी (अट्ठि) अस्थि हड्डी प्राप्त करनेका कितनेक का उनकी (मिंज)

કેટલાક પ્રાણિયોનુ "मंस" માસ પ્રાપ્ત કરવાના ઉદ્દેશથી તેમને વધ કરાય છે કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમની "मेय" મેદ જે દેહની ચતુર્થ ધાતુ છે તેને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "जग" યકૃતને-પેટના જમણા ભાગમા આવેલા માસ ગ્રંથિને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના આતરડામા રહેલ માસ વિશેષને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટ-લાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "मत्थुलिंग" માથામાના મગજને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણિઓનો વધ તેમના "हिय" હૃદય માસ પિંડ કે જેને કાળજુ કહે છે તેને પ્રાપ્ત કરવાને માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "अंत" આતરડા પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમનાં "पित्त" પિત્તાશય પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "फोफ्स" શરીરનુ એક ખાસ અવયવ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, અને કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના દાત પ્રાપ્ત કરવાને માટે થાય છે તથા "अट्ठि, मिंजनह नयण, कण्ण, ण्हारुणि, नक्क, धमणि, सिंग, दाढि, पिच्छ, विसाण, बालहेउ" કેટલાકનો વધ તેમના "अट्ठि" અસ્થિ-હાડકા પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો

"रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः' इति 'नह' नखाः, 'नयण' नयनानि=नेत्राणि 'कण्ण' कर्णाः 'ण्हारु' स्नायुः=अङ्गप्रत्यङ्गबन्धननाडीविशेषः 'नक्क' नासिका='धमणि' धमन्यो=नाड्यः, 'सिंग' शृङ्गाणि प्रसिद्धानि, 'दाढि' दंष्ट्रा 'पिच्छ' पिच्छ=मयूरादिपिच्छ, 'विस' विषं=कालकूटादि 'विसाण' विषाणानि=गजदन्ता, वाला=केशाः, एषा 'हेउ' हेतु हेतुमाश्रित्य अस्थिमज्जादिहेतोरित्यर्थः, 'हिंसंति' इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥सू०११॥

मज्जा नामक छठवी धातु विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नह) नखों का प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नयण) नयन- नेत्रों को प्राप्त करने का, कितनेक का (कण्ण) कान प्राप्त करने का कितनेक का (ण्हारुणि) स्नायुओं को अग प्रत्यगों को बाधने वाली नाडि विशेषों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (नक्क) नासिका प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (धमणि) धमनियां-नाडियां प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (सिंग) शृंगों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (दाढि) दाढों को प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (पिच्छ) पिच्छों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (विस) कालकूट आदि विष प्राप्त करने का, कितनेक का उनके विषाण-गज दन्तों को प्राप्त करने का और कितनेक का उनके (बाल) बालों को प्राप्त क ने का, उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अबुधजन इनकी हिंसा करते हैं॥ सू-११ ॥

વધ તેમની "मिंज" મજ્જા નામની છટ્ઠી ધાતુને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "नह" નખોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "नयण" નેત્ર પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "कण्ण" કાન પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ "ण्हारुणि" સ્નાયુઓને અંગ પ્રત્યંગોને બાધનારી કોઈ નસ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનુ "नक्क" નાક પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ તેમની "धमणि" ધમનીઓ-નાડીઓ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટ-લાકનો વધ તેમના "सिंग" શિંગડા પ્રાપ્ત કરવા માટે, કેટલાકનો વધ તેમની "दाढि" દાઢો પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના "पिच्छ" પીંછા પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનુ "विस" કાલકૂટ આદિ વિષ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના વિષાણુ હાથી દાંતને પ્રાપ્ત કરવા માટે, અને કેટ લાકનો વધ તેમના "बाल" વાળ પ્રાપ્ત કરવાને માટે કરાય છે તે ઉદ્દેશો-પ્રયોજનોને માટે અબુધ લોકો તેમની હિંસા કરે છે॥ સૂ-૧૧॥

अथ चतुरिन्द्रियादीना हिंसाप्रयोजनमाह—' हिंसंति य ' इत्यादि।

मूलम्—हिंसंति य भमरमहुकरिगणे रसेसु गिद्धा, तहेव तेइंदिए सरीरोवकरणट्ठयाए किवणे, बेइंदिए बहवे वत्थोहर परिमंडणट्ठा ॥ सू० १२ ॥

टीका—'ये' च-पुनः ' रसेसु ' रसेषु=मध्वादिषु ' गिद्धा '=गृद्धा =तद्रस लोलुपाः हिंसकाः जना मध्वादि ग्रहणार्थं 'भमरमहुकरिगणे' भ्रमरमधुकरीगणान् भ्रमराः=कृष्णवर्णाः लोकभाषया पुस्त्वविशिष्टाः, मधुकर्यः=लघुमधुमक्षिकाः लोक भाषया स्त्रीत्वविशिष्टाः, तेषा गणान्=समूहान् हिंसन्ति। 'तहेव' तथैव ' तेइंदिए ' त्रीन्द्रियान्=यूकामत्कुणादीन् ' सरीरोवकरणट्ठयाए ' शरीरोपकरणार्थं=शरीरस्योप कारार्थं शयनकाले मत्कुणादिकृतदु खनिवारणार्थं हिंसन्ति। तथा 'किवणे' कृप

अब सूत्रकार चतुरिन्द्रिय आदि जीवों की हिंसा करने वालों का क्या प्रयोजन होता है-इस बात को प्रकट करते हैं-' हिंसति य भमरमहुकरिगणे ' इत्यादि।

टीकार्थ-(रसेसु गिद्धा) जो अबुध-अज्ञानी जन मधु (शहद) आदि रसों मे लोलुप होते हैं वे उन मधु आदि रसों को प्राप्त करने के अभिप्राय से (भमरमहुकरिगणे हिंसति) भ्रमर भ्रमरियों के समूह मारते हैं। भ्रमरियों से, मधुको एकत्रित करने वाली मधु मक्खियों का यहा ग्रहण करना चाहिये। (तहेव) इसी तरह (किवणे) दीन ऐसे (तेइंदिए) जू खटमल आदि तेइन्द्रिय जीवों की (सरीरोवकरणट्ठयाए) अपने शरीर के उपकार के लिये अर्थात् शयनकाल में जो खटमल आदि द्वारा उनके शरीर में काटने जन्य दुःख होता है उस दुःख को निवारण करने

હવે ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવોની હિંસા કરનારનુ શુ પ્રયોજન હોય છે, તે સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે-" हिंसति य भमरमहुकरिगणे " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-' रसेसु गिद्धे" જે અબુધ-અજ્ઞાની લોકો મધુ-મધ આદિ રસોમા લોલુપ થાય છે તેઓ તે મધ આદિ રસોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે "भमरमहुकरगणे हिंसति" ભ્રમરો તથા ભ્રમરીઓના સમૂહની હત્યા કરે છે ભ્રમરીઓ એટલે અહીં મધ એકત્ર કરનારી મધમાખીઓ સમજવી "तहेव" એજ પ્રમાણે "किवणे" બિચારા "तेइंदिए" જૂ, માકડ આદિ તેઈન્દ્રિય જીવોની હત્યા "सरीरोवकरणट्ठयाए" પોતાના શરીરના ઉપકારને માટે એટલે કે સૂતી વખતે માકડ આદિ જે જતુઓ કરડે છે અને ઉઘમા ખલેલ પહોચાડે છે

णान्=दीनान् 'वहवे' बहून् 'वेइंदिए' द्वीन्द्रियान् 'वत्थोहरपरिमंडणट्ठा' वस्त्रोपगृहपरिमण्डनार्थम्, 'वत्थ' वस्त्राणि 'ओहर' उपगृहाः=लघुगृहा' तेषा 'परिमंडणट्ठा' परिमण्डनार्थ=शोभार्थम्, तत्र वस्त्राणा परिमण्डन कृमिरागेण रञ्जनम्, उपगृहाणा परिमण्डन शङ्खशुक्तिचूर्णेनावलेपनम्। यद्वा-अर्थशब्दस्य प्रत्येकमभिसम्बन्धे-वस्त्रार्थम्, उपगृहार्थं, मण्डनार्थं चेति। तत्र पट्टसूत्रादि वस्त्रनिर्माणे कृम्याद्युपघातः, उपगृहनिर्माणे मृज्जलादिषु पुतरकाद्युपमर्दनम्, हारादिपरिमण्डननिर्माणे शुक्त्याद्युपहनन भवत्येव ॥सू०१२॥

के अभिप्राय से वे उनकी हिंसा करते हैं। इसी तरह (वेइंदिए) शंख शुक्तिका आदि जो बिचारे दो इन्द्रिय जीव हैं उन बहुत से दीन जीवों की भी (वत्थोहर परिमंडणट्ठा) वस्त्र, उपगृह-लघुघर की शोभानिमित्त हिंसा करते हैं। कृमिराग से वस्त्रों का रगना यह वस्त्रों का परिमंडन है। शख, शुक्तिका के चूने से छोटे २ घरो का पोतना यह उपगृहों का परिमंडन है। अथवा अर्थ शब्द का प्रत्येक के साथ सबध करने पर ऐसा भी इस पद को अर्थ होता है कि वस्त्र के निमित्त, उपगृह के निमित्त और मण्डन-हार आदि भूषण के निमित्त पट्टसूत्र आदि वस्त्र के निर्माण में कृम्यादि जीवों का उपघात होता है, उपगृहों के निर्माण में मिट्टी जल आदि मे रहे हुए लट आदि दो इन्द्रिय जीवों का उपमर्दन होता है, तथा हार आदि आभूषणों के निर्माण करने मे शुक्ति आदि जीवों का हनन होता है।

भावार्थ--भ्रमर, मधुकरी आदि जो चार इन्द्रिय वाले जीव हैं, तथा

રણ માટે તેઓ તેમની હિંસા કરે છે એ જ રીતે "वेइंदिए" શખ શુક્તિકા આદિ જે બિચારા દ્વિન્દ્રિય જીવોની પણ "वत्थोहरपरिमंडणट्ठा" વસ્ત્ર ઉપગૃહ લઘુઘરની શોભાને નિમિત્તે હિંસા કરે છે કૃમિરાગથી વસ્ત્રોને રગવા તે વસ્ત્રોનુ પરિમડન કહેવાય છે શખ, શુક્તિકાના ચૂનાથી નાના નાના ઘરોને લીપવા તે ઉપગૃહ પરિમડન કહેવાય છે અથવા 'અર્થ' શબ્દનો દરેકની સાથે સબધ જોડવાથી આ પદનો એવો પણ અર્થ થઈ શકે છે કે વસ્ત્રને માટે, ઉપગૃહને માટે અને મડન-હાર આદિ ભૂષણને માટે પટ્ટસૂત્ર આદિ વસ્ત્ર બનાવવામા કૃમ્યાદિ જીવોનો ઉપઘાત થાય છે, ઉપગૃહોની રચનામા માટી, જળ આદિમા રહેલ લટ આદિ દ્વિઇન્દ્રિય જીવોને ઘાત થાય છે, તથા હાર આદિ આભૂષણો બનાવવામા શુક્તિ આદિ જીવોની હત્યા થાય છે

ભાવાર્થ—ભ્રમર, મધમાખી આદિ જે ચાર ઇન્દ્રિય વાળા જીવો છે, તથા

पुनरप्याह-'अण्णेहिय' इत्यादि ।

मूलम्-अण्णेहि य एवमाइएहि वहुहिं कारणेहिं अबुहा इह हिंसंति तसे पाणे, इमे य-एगिंदिए वहवे वराए, तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारभंति । अत्ताणे, असरणे, अणाहे, अवधवे, कम्मनिगडवद्धे, अकुसल-परिणाम मदबुद्धि-जणदुविजाणए, पुढविमए, पुढविसंसिए, जलमए, जलगए, अणलाणिलतणवणस्सइगणनिस्सिए य, तम्मय तज्जीए चेव, तदाहारे तप्परिणयवण्णगंधरसफासवोंदिरूवे अचक्खुसे य चक्खुसे य तसकाइए असंखे थावरकाए य सुहुमवायरपत्ते य सरीरनामसाधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जाव इमेहि विविहेहि कारणेहि किं ते ? ॥सू०१३॥

जू खटमल आदि जो तीन इन्द्रिय वाले जीव हैं, एव शख शुक्ति आदि जो दो इन्द्रियवाले जीव हैं, इनकी हिंसा करने का उद्देश्य जीवों का क्या होता है यह बात सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा प्रकट की है । जो प्राणी रस मे गृद्ध बने हुए हैं वे भ्रमर मधुकरी आदि जो रस को एकत्रित करने वाले जीव है उनकी तथा जो प्राणी अपने शरीर आदि के उपकार-करने के अभिलाषी हैं वे लोक जू खटमल आदि जीवों की एव जो वस्त्र उपगृह आदि के निर्माण करने के अभिलापी है वे शख शुक्ति आदि दो इन्द्रिय जीवो की हिंसा करते हुए बिलकुल विचार नही करते हैं ॥सू १२॥

જૂ, માકડ આદિ જે ત્રણ ઈન્દ્રિયવાળા જીવો છે, અને શખ છીપ આદિ જે બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવો છે, તેમની હિંસા કરવા પાછળ લોકોને શો હેતુ હોય છે તે સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કર્યું છે જે માણુસ રસમા ગૃદ્ધ-લોલુપ બનેલ છે તેઓ ભ્રમર આદિ રસ એકત્ર કરનારા જે જીવો છે તેમની તથા જે લોકો પોતાના શરીર આદિના સુખનો જ વિચાર કરનારા છે તેઓ જૂ, માકડ આદિ જીવોની અને જે લોકો વસ્ત્ર, ઉપગૃહ આદિના નિર્માણુની અભિલાષાવાળા છે તેઓ શખ, છીપ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોની હિંસા કરતા બિલકુલ વિચાર કરતા નથી ॥ સૂ. ૧૨ ॥

टीका —' अण्णेहि य ' अन्यैश्च ' एवमाइएहिं ' एवमादिकैः=पूर्वोक्तसदृशैः 'बहुहिं' बहुभिः=नानाविधैः ' कारणसएहिं ' कारणशतैः 'अबुहा' अबुधाः=अज्ञानिनो जनाः इह=अस्मिन् जीवलोके ' तसे पाणे ' त्रसान् प्राणान्=द्वीन्द्रियादीन् 'हिंसति' हिंसन्ति=घ्नन्ति । तथा-' इमेय ' इमांश्च=अग्रे वक्ष्यमाणान् ' एगिंदिए ' एकेन्द्रियान् पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिलक्षणान् 'बहवे' बहून्=अनेकान् ' वराए ' वराकान्=दीनान् , तथा-'तयस्सिए चेव' तदाश्रितान् चैव=पृथिव्या केन्द्रियाश्रयस्थितानपि 'अण्णे' अन्यान् 'तणुसरीरे' तनुशरीरान्=सूक्ष्मशरीरान् 'तसे य' त्रसांश्च 'समारभंति' समारभन्ते=उपमर्दयन्ति । कीदृशान् तान् ? इत्याह-'अत्ताणे' अत्राणान्=त्राणरहितान् रक्षकाभावात् , 'असरणे' अशरणान्=शरणदातुरभावात् ,

फिर भी कहते हैं—' अण्णेहि य ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(अण्णेहि य एवमाइएहिं बहुहिं कारणसएहिं अबुहा इह हिंसति पाणे) इत्यादि और भी नानाविध इसी प्रकार के सैकडों कारणों से अज्ञानी जीव इस लोक में द्वीन्द्रियादिक त्रस जीवों की हिंसा करते हैं। तथा (इमेय) वक्ष्यमाण इन (बहवे) अनेक प्रकार के (वराए) दीन (एगिंदिए) पृथिवीकाय, अप्काय तेजःकाय, वायुकाय, वनस्पति काय रूप एकेन्द्रिय जीवों को और (तदस्सिए चेव) इनके आश्रित रहे हुए (अण्णे) दूसरे पूर्वोक्त त्रस जीवों से अतिरिक्त (तणुसरीरे) छोटे शरीर वाले (तसे य) त्रस जीवों की (समारभंति) हिंसा करते है। इनकी हिंसा करते हुए जो इन अज्ञानी प्राणियों को संकोच नहीं होता है उसका कारण यह है कि ये (अत्ताणे) इन एकेन्द्रियादिक जीवो का कोई रक्षक नहीं है इसलिये रक्षक के अभाव से ये सब त्राण रहित है। (असरणे)

વળી પણ સૂત્રકાર કહે છે—" अण्णेहिय ' ઈત્યાદિ

' अण्णेहिंय एवमाइएहिं बहुहि कारणसएहिं अबुहा इह हिंसति तसे पाणे" ઈત્યાદિ બીજા પણ એવા જ પ્રકારના સેકડો વિવિધ કારણોથી અજ્ઞાની જીવ આલોકમા દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ જીવોની હિંસા કરે છે તથા " इमेय " આ પ્રમાણે તે " बहवे " અનેક પ્રકારના " वराए " બિચારા " एगिदिए " પૃથિવીકાય, અપ્કાય, તેજ કાય, વાયુકાય, વનસ્પતિકાયરૂપ એકેન્દ્રિય જીવોની અને "तदस्सिए-चेव" તેમના આશ્રયે રહેલા "अण्णे" બીજા પૂર્વોક્ત ત્રસજીવો ઉપરાતના " तणुसरीरे " નાના શરીરવાળા "तसेय" ત્રસજીવોની " समारभंति " હિંસા કરે છે તેમની હત્યા કરતા તે અજ્ઞાની જીવોને સંકોચ થતો નથી કારણુ કે " अत्ताणे " તે એકેન્દ્રિયાદિક જીવોનુ રક્ષક કોઈ નથી તેથી રક્ષકને અભાવે તે બધા ત્રાણહીન-(નિરાધાર) છે " असरणे " તે પૃથિવ્યાદિ જીવો ભાગી જઈ

'अणाहे' अनाथान्=स्वाम्यभावात्, 'अबंधवे' अबान्धवान्-सहायकाभावात्, 'कम्मनिगडबद्धे' कर्मनिगडबद्धान्-कर्माण्येव निगडानि बन्धकत्वात् तैर्बद्धान् कर्मराहित्याभावात्, 'अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए' अकुशलपरिणाममन्दबुद्धिजनदुर्विज्ञेयान्-कुशलः=तत्त्वातत्त्वविवेकसम्पन्नः, परिणामः=अन्तःकरण येषां ते कुशलपरिणामाः, न कुशलपरिणामा = अकुशलपरिणामाः= आत्मौपम्यदृष्टिविकला इत्यर्थः मन्दा=हिंसाजनितनरकनिगोदाद्यनन्तभवभ्रमणकटुकफलविवेचनशून्या-बुद्धिर्येषां ते मन्दबुद्धयस्ते च जना इति अकुशलपरि-

ये पृथिव्यादि जीव भगकर जा नहीं सकते, इनके आश्रित त्रस जीव यदि भगकर कहीं जावें भी तो कोई ऐसा नहीं है जो इन्हें शरण प्रदान करे अतःशरणदाता के अभाव से ये अशरण हैं। (अणाहे) कोई इनका स्वामी नहीं है इसलिये अपने स्वामी के अभाव से ये बिचारे अनाथ हैं। (अबंधवे) इनकी कष्ट में कोई सहायता करने वाला नहीं है इसलिये सहायक के अभाव से ये अबान्धव हैं। (कम्मनिगडबद्धे) उस प्रकार के कर्मों का सद्भाव होने के कारण कर्मरूप निगड-बेडी से ये बंधे हुए हैं। (अकुसल-परिणाम-मंदबुद्धिजणदुव्विजाणए) अकुशल परिणाम वाले मंदबुद्धि जनों द्वारा ये दुर्विज्ञेय है। तत्त्व और अतत्त्व का विवेक जिनके अन्तःकरण मे जगता है वे कुशल परिणाम वाले जीव हैं। इस तरह का कुशल परिणाम जिनका नहीं है अर्थात् सब जीवों के ऊपर जिनकी दृष्टि आत्मौपम्यवाली नहीं है और जो इस बात को भी नहीं जानते है कि हिंसा करने से नरक निगोद आदि अनन्त भवो मे भ्रमण करने रूप कटुकफल को

શકતા નથી, તેમને આશ્રિત ત્રસજીવ જો ભાગીને કોઈપણ જગ્યાએ જાય તો પણ કોઈ એવુ નથી કે જે તેને શરણ આપે, તેથી શરણદાતાને અભાવે તેઓ અશરણ છે "अणाहे" કોઈ તેમનો સ્વામી નથી, તેથી સ્વામીને અભાવે તેઓ બિચારા અનાથ છે "अबंधवे" કષ્ટમા તેમને સહાય કરનાર કોઈ નથી, તેથી સહાયકને અભાવે તેઓ અબાંધવ છે "कम्मनिगडबद्धे" તે પ્રકારના કર્મોનો સદ્ભાવ થવાને કારણે કર્મરૂપી બેડી વડે તેઓ બંધાયેલ છે "अकुसल-परिणाम-मंदबुद्धिजणदुव्विजाणए" અકુશલ પરિણામવાળા મંદબુદ્ધિયુક્ત લોકો દ્વારા તે દુર્વિજ્ઞેય-સમજવુ-મુશ્કેલ છે જેમના અંતઃકરણમા તત્ત્વ અને અતત્ત્વનો વિવેક જાગૃત થાય છે તે કુશલ પરિણામવાળા જીવ છે આ પ્રકારનુ કુશલ પરિણામ જેમનુ હોતુ નથી, એટલે કે બધા જીવો ઉપર જેમની દૃષ્ટિ આત્મવત્ નથી, અને જે એ વાતને પણ જાણતા નથી કે હિંસા કરવાથી નરક, નિગોદ આદિ અનંત ભવોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ કડવા ફળો ભોગવવા પડે છે,

णाममन्दबुद्धिजनाः तै मिथ्यात्वोदयेन 'दुर्विज्ञेया' 'एते हीनदीनाः प्राणिनो रक्षणीयाः, इति ज्ञातुमशक्यास्तान्, 'पुढविमए' पृथिवीमयान्=पृथिवीकायिकान्, 'पुढवि ससिए' पृथिवीसंश्रितान्=अलसप्रभृति द्वीन्द्रियान् 'जलमए' जलमयान्-अप्कायिकान् 'जलगए' जलगतान् पूतरकादि त्रसान्, 'अणलाणिलतणवणस्सइगणनिस्सिए य' अनलाऽनिलतृणवनस्पतिगणनिश्रिताश्च=अनलः=अग्निः, अनिलो = वायुः, तृणानि = दर्भादीनि वनस्पतयः=वनस्पतिकायभेदा अग्रबीजादयः,-तृण वनस्पतिकायिकमेन पुनर्वनस्पतिग्रहणं तद्गत सूक्ष्मादिसकलभेदस्यापनार्थम्, तेषां गण =समूहस्तस्य निश्रितान् अनलाद्याश्रितान् च शब्दात्-तेजस्कायिकादींश्च, तथा-'तम्मयतज्जीए' तन्मय तज्जीवान्=तत्र तन्मयान् पृथिवी कायिकादीन्

भोगना पड़ता है, इस तरह के ज्ञान के अभाव वाले मन्दबुद्धि है, उन जनों द्वारा मिथ्यात्व के उदय से "ये हीन दीन प्राणी रक्षा करने योग्य है हिंसा करने योग्य नही है" यह बात जानी नही जा सकती है इसलिये ऐसे प्राणियों द्वारा ये जीव नही जाने जा सकते अतः ये अज्ञानी जीव (पुढविमए) पृथ्वीकायिक जीवों को तथा (पुढविससिए) पृथिवी के आश्रय रहे हुए अलस आदि द्वीन्द्रिय जीवों को इसी तरह (जलमए) जल कायिक जीवों को तथा (जलगए) जलकायिक जीवों के सहारे रहे हुए पूतरकादि त्रस जीवों को, तथा (अणलाणिलतण वणस्सइगणनिस्सिए) अग्निकायिक जीवों को और अग्निकाय के सहारे रहे हुए त्रस जीवों को और वायुकायिक जीवों के सहारे रहे हुए त्रस जीवों को, तृणरूप-वनस्पतिकायिक जीवों को, एव वनस्पतिकाय के भेद प्रभेदो के सहारे रहे हुए त्रस जीवो को भी मारते है। यही बात "तम्मयतज्जीवए"

આ પ્રકારના જ્ઞાન વિનાના જીવો મંદબુદ્ધિ છે તે લોકો દ્વારા મિથ્યાત્વના ઉદયથી "આ હીન દીન પ્રાણીઓ રક્ષા કરવાને યોગ્ય છે હિંસાને યોગ્ય નથી" એ વાત પણ સમજી શકાતી નથી તે કારણે એવા જીવો દ્વારા તે જીવોને જાણી શકાતા નથી, તેથી તે અજ્ઞાની જીવ "पुढविमए" પૃથ્વીકાય જીવોની તથા "पुढविससिए" પૃથ્વીને આશ્રયે રહેલ અળસિયા આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોની, એ જ પ્રમાણે "जलमए" જલકાયિક જીવોની તથા "जलगए" જલકાયિક જીવોને આશ્રયે રહેલ પૂતરકાદિ ત્રસજીવોની, તથા "अणलाणिल तणवणस्सइगण निस्सिए" અગ્નિકાય જીવોની અને અગ્નિકાયને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની, વાયુકાય જીવોની અને તેમને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની, તૃણરૂપ વનસ્પતિકાય જીવોની અને વનસ્પતિકાયના ભેદ પ્રભેદોના આશ્રયે રહેલ ત્રસજીવોની હિંસા કરે છે એ જ વાત "तम्मय तज्जीवए" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા કહેવામા આવે

तज्जीवान् पृथिव्यादि निश्रितार्थेन, 'तदाहारे' तदाधारान्=ते पृथिव्यादयः आधारो येषां ते तान् तदाधारान्=पृथिव्याद्याश्रयान् अथवा 'तदाहारे' तदाहारान् ते पृथिव्यप्तेजोवायवादय एव आहारो येषां ते तान् तदाहारान् 'तप्परिणयवण्णगंधरसफासबोंदिरूवे' तत्परिणतवर्णगन्धरसस्पर्शबोंदि (शरीर) रूपान्=तेषामेव पृथिव्यादीनां परिणता वर्णगन्धरसस्पर्शा यां बोंदिः=शरीरं सैव रूपं=स्वभावो येषां ते तथा तान्, 'अचक्खुसे य' अचाक्षुषान्=चक्षुरगोचरान् 'चक्खुसे य' चाक्षुषांश्च चक्षुरिन्द्रियविषयान् 'तसकाइए' त्रसकायिकान् त्रसन्ति उष्णाद्यभितप्ताः सन्तः विवक्षितस्थानादुद्विजन्ते=गच्छन्ति छायाद्यासेवनार्थं स्थानान्तरमिति त्रसाः, यद्वा-त्रस नामकर्मोदयात् त्रस्यन्ति इति त्रसाः=त्रसनामकर्मोदयवर्तिनइत्यर्थः, तेषां कायोराशिस्तत्र भवास्त्रसकायिकाः, तान्, कियतः? इत्याह-'असंखे' इत्यादि-'असंखे' असंख्यान् 'थावरकाए' स्थावरकायान्, विष्ठ-

---

इत्यादि पदों द्वारा कही जाती है-(तम्मयतज्जीवए) पृथिवी कायिक आदि जीवों को तथा पृथिवी आदि के सहारे रहे हुए जीवों को, (तदाहारे) जिन जीवों के वे पृथिवी आदिक आधारभूत हैं ऐसे जीवों को अथवा पृथिवी आदिक ही जिनका आहार है ऐसे जीवो को (तप्परिणय वण्णगंधरसफासबोंदिरूवे) तथा पृथिव्यादिकों के वर्ण, गंध, रस, स्पर्शो से जिनका शरीररूप स्वभाव परिणित हो रहा है, तथा (अचक्खुसे य) जो चक्षु इन्द्रिय विषयभूत नहीं है, और (चक्खुसे य) जो चक्षु इन्द्रिय के विषयभूत भी हैं ऐसे त्रस जीवों को-उष्णादिक से सतप्त होकर जो छाया आदि के सेवन के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, अथवा त्रस नामकर्म के उदय से जो युक्त है वे त्रस हैं, ऐसे त्रस जीवों को, तथा-(असंखए थावरकाए य) असंख्यात स्थावर कायों को, स्था-

---

છે—"तम्मयतज्जीवए" પૃથિવી કાયિક જીવોને તથા પૃથિવી આદિને આશ્રયે રહેલ જીવોને 'तदाहारे" જે જીવોને તે પૃથિવી આદિ આધારભૂત છે એવા જીવોને અથવા પૃથિવી આદિ જ જેમનો આહાર છે એવા જીવોને "तप्परिणय वण्णगंधरसफासबोंदिरूवे" તથા પૃથિવી આદિકોના વર્ણ ગંધ, રસ, સ્પર્શોથી જેમનો શરીરરૂપ સ્વભાવ પરિણત થઇ રહ્યો છે, તથા "अचक्खुसे य" જે ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ નથી, અને "चक्खुसे य" જે ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ પણ છે એવા ત્રસ જીવોને ઉષ્ણતા આદિથી દુઃખ પામીને જે છાયા આદિના સેવન માટે એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ જાય છે, અથવા ત્રસ નામકર્મના ઉદયથી જે યુક્ત છે, તેઓ ત્રસ ગણાય છે એવા ત્રસ જીવોને, તથા "असंखए थावर काएय" અસંખ્યાત સ્થાવરકાયોને-સ્થાવર નામકર્મનો ઉદય જેમને છે તે સ્થાવર

तीति स्थावरः, स एव काय=शरीर येषां ते स्थावरकायाः=प्रसृतशीताऽऽतप सन्तापाद्युपेतत्वेऽपि अन्यत्र गन्तुमशक्ताः स्थावरनामकर्मोदयवर्त्तिनः पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतय, तान् 'सुहुम-बायर-पत्तेय-सरीरनामसाहारणे' सूक्ष्म-बादर-प्रत्येकशरीरनामसाधारणान्, सूक्ष्म च बादर च प्रत्येकशरीर च-सूक्ष्मबादरप्रत्येकशरीराणि, तानि नामानि=नामकर्माणि येषा ते सूक्ष्मबादरप्रत्येकशरीरनामानः, ते च ते साधारणाश्च सूक्ष्मबादरप्रत्येकशरीरनामसाधारणाः, तान्। तत्र सूक्ष्माः=चर्मचक्षुरग्राह्याः पृथिव्यादिकेन्द्रियाः, बादरा =तएव चर्मचक्षुर्ग्राह्याः, प्रत्येकशरीराः=येषामेकमेक जीव प्रतिभिन्न भिन्न शरीरमुपजायते ते पृथिव्यादयः। साधारणाः-येषामनन्ताना जीवाना साधारणमेक शरीर भवति ते कन्दमूलादय,

वर नाम कर्म का उदय जिनके हैं वे स्थावर हैं अथवा जो शीत आतप आदि बाधा को सहते हुए भी अन्यत्र गमन करने में अशक्त हैं अपनी इच्छा से चल फिर नहीं सकते हैं-ये स्थावर है ऐसे ये स्थावर पृथिवी, अप्, तेज वायु वनस्पति जीव है, इन जीवों को तथा (सुहुम-बायर-पत्तेय-सरीर नाम साहारणे) सूक्ष्म, बादर, प्रत्येक शरीररूप नाम कर्म के उदय वाले जीवो को, तथा साधारण शरीर नामकर्म के उदयवाले जीवो को, चर्मचक्षुओं से जो देखने में नही आते है वे सूक्ष्म जीव है, तथा जो चर्मचक्षुओं द्वारा देखे जाते है वे बादर है, ये सूक्ष्म और बादर भेद पृथिवी आदि एकेन्द्रिय जीवों के होते हैं, प्रत्येक वे जीव हैं कि जिनका भिन्न २ शरीर होता है, ऐसे पृथिव्यादिक जीव होते हैं क्यों कि इनका अपना २ भिन्न २ शरीर होता है इन जीवों को, तथा साधारण वे जीव है कि जिन अनत जीवों का एक ही शरीर होता है, ऐसे वे जीव कदमूल आदि वन-

કહેવાય છે અથવા જે શીત, તાપ આદિની મુશ્કેલીઓ પડવા છતા પણ અન્યત્ર ગમન કરવાને અશક્ત છે, પોતાની ઈચ્છાથી હલનચલન કરી શકતા નથી તે સ્થાવર છે એવા જે સ્થાવર પૃથિવી, અપ્, તેજ, વાયુ અને વનસ્પતિ જીવો છે તે જીવોને, તથા "सुहुम, वायर, पत्तेय, सरीर नामसाहारणे" સૂક્ષ્મ, બાદર, પ્રત્યેક શરીરરૂપ નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, તથા સાધારણ શરીર નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, ચર્મચક્ષુઓ વડે જે દેખી શકાતા નથી તે સૂક્ષ્મ જીવો છે, તથા જે ચર્મચક્ષુઓ દ્વારા જોઈ શકાય છે તે બાદર જીવો છે તે સૂક્ષ્મ અને બાદર પૃથિવી આદિ એકેન્દ્રિય જીવોના હોય છે 'પ્રત્યેક જીવ' એ જીવો છે કે જેમના અલગ અલગ શરીર હોય છે, પૃથિવ્યાદિક જીવ એવા હોય છે કારણકે તેમને પોત પોતાનુ ભિન્ન ભિન્ન શરીર હોય છે તે જીવોને, તથા સાધારણ જીવો એ છે કે જે અનત જીવોનુ એક જ શરીર હોય છે, એવા જીવો કદમળ આદિ વનસ્પતિકાયિક હોય છે તે જીવો તે પ્રકારના કર્મો-

ते अनन्ता अपि जीवास्तथाविधकर्मोदयसामर्थ्यात् समकमेवोत्पत्तिदेशमधिवसन्ति, समकमेव तच्छरीरमाश्रिताः पर्याप्तिं समारभन्ते, समकमेव पर्याप्ताः भवन्ति। समकमेव च प्राणापानादि योग्यपुद्गलान् गृह्णन्ति। यच्च–एकस्य जीवस्याहारयोग्यपुद्गलोपादानं तदेवान्येषामनन्तानामपि भवतीति। 'अणते' अनन्तान् 'अविजाणओ' अविजानतः=''एते घातका अस्मान् हनिष्यन्ति '' इति ज्ञानविकलान् एकेन्द्रियान् 'परिजाणओ य' परिजानतश्च स्ववधदुःखमनुभवतश्च द्वीन्द्रियादीन् 'जीवे' जीवान् 'इमेहिं' एभिः=अनुपद वक्ष्यमाणैः 'विविहेहिं' विविधैः=नानाप्रकारैः 'कारणेहिं' कारणैः=प्रयोजनैः 'हणंति' घ्नन्ति=येषां घात कुर्वन्तीत्यर्थः। किं ते ? कानि तानि पृथिव्यादि–हिंसायाः कारणानि ? इत्याह–'करिसणे'त्यादिना ॥सू० १३॥

स्पति कायिक होते हैं। ये जीव तथाविध कर्मोदयो के वश से एक साथ ही उत्पत्ति देश मे रहते ह, एकसाथ ही इनकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण होती है। इस तरह एक ही साथ पर्याप्त होकर अनत जीव एक ही साथ प्राणापानादि योग्य पुद्गलों को ग्रहण करते हैं। इनमे जो एक जीव का आहार होता है वही अन्य अनत जीवों का भी होता है। इस तरह के (अणते) अनत साधारण जीवों को कि–(अविजाणओ) " जो यह नहीं जानते हैं कि ये घातक जन हमे मारेगे " इस प्रकार के ज्ञान से विकल हो रहे हैं ऐसे एकेन्द्रिय जीवो को, तथा (परिजाणओ य जीवे) जो अपने वधादि सबधी दुःखों को जानते हैं, ऐसे द्वीन्द्रियादिक जीवों को, (इमेहिं) इन अनुपद वक्ष्यमाण (विविहेहिं) नाना प्रकार के (कारणेहिं) प्रयोजनो से (हणति) मारते हैं। (किंते) वे पृथिव्यादि की हिंसा के कारण कोन२ है ? वह 'करिसण' इत्यादि अगले सूत्र से कहते हैं॥

દયને કારણે એક સાથે જ ઉત્પત્તિ દેશમા રહે છે, એક સાથે જ તેમની શરીર-પર્યાપ્તિ પૂર્ણ થાય છે એ રીતે એક સાથે જ પર્યાપ્ત થઈને તે અનત જીવ એક સાથે જ પ્રાણાપાનાદિ પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે તેઓમા એક જીવનો જે આહાર હોય છે તે જ આહાર અન્ય અનત જીવોનો પણ હોય છે આ પ્રકારના "अणते" અનત સાધારણ જીવોને કે–"अविजाणओ" "જે તે નથી જાણતા કે એ ઘાતક લોકો અમને મારી નાખશે" એ પ્રકારના જ્ઞાનથી જે રહિત છે એવા એકેન્દ્રિય જીવોને, તથા "परिजाणओ य जीवे" જે પોતાના વધાદિ સબધી દુખોને જાણે છે એવા દ્વીન્દ્રિય આદિક જીવોને, "इमेहिं" આ હવે પછીના પદોમા દર્શાવેલ "विविहेहिं" વિવિધ પ્રકારના "कारेणहि" પ્રયોજનોથી "हणति" મારે છે "किं ते ?" તે પૃથ્વીકાય આદિની હિંસાના કયા કયા કારણો છે, તે "करिसण" ઇત્યાદિ હવે પછીના સૂત્ર દ્વારા કહેવામા આવે છે

अथ पूर्वं पृथिवीकायहिंसाकारणान्याह—'करिसण' इत्यादि० ।

मूलम्--करिसण पोक्खरणी वावि-वप्पिण कूव सर-तलाग-चिइ चेइय -खाइय-आराम--विहार-थूम पागार-दार- गोउर अट्टालग-चरिया सेउ-संकम पासाय-विकप्प-भवण-घर सरण लयण आवण-वेइय-देवकुल-चित्त सभा पवा-आयतण आवसह-भूमिघर-मंडवा-णकए-भायणभंडोवगरणस्स य विविहस्स य अट्ठाए पुढवि हिंसंति मंदबुद्धिया ॥ सू० १४ ॥

टीका-'करिसण' इत्यादि । 'करिसण' कर्षण=कृषिः 'पोक्खरिणी' पुष्करिणी =समचतुष्कोणा कमलकाननकान्तिकमनिया पयःपूरपूरितपातालकुक्षितला नानाविधचित्रविचित्रपतत्रिकुलकूजितपुञ्जितपुलिनमण्डलमण्डनसुरम्या, 'वावि'

१ 'केयारो वप्पिण वप्पो' इति 'पाइअलच्छीनाममाला'।

भावार्थ—जो आत्मबोध से विकल प्राणी हैं वे स्थावर और त्रस जीवों की नाना प्रकार के प्रयोजनों के वशवर्ती होकर विराधना करते हैं। पृथिवीकाय आदि स्थावर जीव हैं, क्यों कि इनके स्थावर नामकर्म का उदय है। द्वीन्द्रियादिक त्रस जीव हैं, क्यों कि इनके त्रस नामकर्म का उदय है। इसी कारण से स्थावर जीव अपनी इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर चल फिर नहीं सकते हैं। त्रस जीव अपनी इच्छा-नुसार चल फिर सकते हैं ॥ सू०१३ ॥

अब सूत्रकार उन कारणों को कहते हुए प्रथम पृथिवीकाय की हिंसा के कारणों को कहते हैं—' करिसणपोक्खरिणी ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(करिसण) कृषि–खेती के निमित्त, (पोक्खरिणी) पोक्ख

ભાવાર્થ—જે પ્રાણીઓ આત્મબોધથી રહિત છે તેઓ સ્થાવર અને ત્રસ જીવોની અનેક પ્રકારના પ્રયોજનથી દોરાઇને હિંસા કરે છે - પૃથિવીકાય આદિ સ્થાવર જીવ છે, કારણકે તેમના સ્થાવર નામકર્મનો ઉદય થયો હોય છે દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ જીવ છે, કારણકે તેમના ત્રસ નામકર્મનો ઉદય થયો હોય છે એ જ પ્રમાણે સ્થાવર જીવ પોતાની ઈચ્છા પ્રમાણે એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ જઈ શકતા નથી ત્રસજીવ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે હરીફરી શકે છે ॥સૂ ૧૩॥

હવે સૂત્રકાર તે કારણોને બતાવતા પ્રથમ પૃથિવીકાયની હિંસાના કારણો આપે છે—' करिसणपोक्खरिणी " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"करिसण" કૃષિ–ખેતીને નિમિત્તે "पोक्खरिणि" પોકખરિણી-

वापी = दीर्घायामा ' वप्पिण ' वप्राणि = क्षेत्राणि, 'कूव' कूपा ' सर ' सरः-कृत्रिमजलाशयः 'तलाग' तडागस्तदितरः प्रसिद्ध एव, 'चिइ' चिति , मृतकदहनार्थं काष्ठचयनम् , 'चेइय' चैत्यम्-मृतकोपरिस्मारकचिह्नम् , 'खाइय' खातिका= परिखा, आरामः गृहसमीपोपवनम् , विहारः=विह्रियतेऽत्रेति विहारः क्रीडास्थानविशेष., 'थूम' स्तूपः=स्मारकस्तम्भः 'पागार' प्राकारः 'गढ़' इति भाषाप्रसिद्धः, 'दार' द्वारं प्रसिद्धम् , गोउर' गोपुर=पुरद्वारम् , 'अट्टालग' अट्टालकः='छत' 'अटारी' इति प्रसिद्धः, 'चरिया' चरिका=दुर्गनगरयोर्मध्यस्थितः अष्टहस्तप्रमाणः हस्त्यादि सचारमार्गः, 'सेउ' सेतु ='पुल' इति प्रसिद्ध , 'सकम ' सक्रमः=सक्रम्यते येन स सक्रम =जलगर्तपारकरणाय पाषाण काष्ठरचित मार्ग , 'पासाय' प्रासाद =नृपगृहम् विकप्प' विकल्पाः=तद्भेदाः 'भवण' भवनानि, भवनमायामापेक्षया किञ्चिदल्पमुच्छ्रायमान भवति, प्रासादस्तु आयामद्विगुणोच्छ्रायः, इति प्रासादभवनयोर्विशेषः,

---

रिणी-पुष्करिणी के निमित्त (वावि) वापी-वाव के निमित्त (वप्पिण) वावडी के निमित्त (कूव) कूप कुवा-के निमित्त (सर) सर-कृत्रिम जलाशय के निमित्त (तलाग) तलाग-तड़ाग के निमित्त (चिइ) चिति के निमित्त (चेइय) चैत्य के निमित्त (खाइय) खातिका के निमित्त (आराम) आराम का निमित्त (विहार) विहार के निमित्त (थूभ) स्तूप के निमित्त (पागार) प्राकार के निमित्त (दार) द्वार के निमित्त (गोउर) गोपुर के निमित्त (अट्टालग) अट्टालिका अटारी के निमित्त (चरिया) चिरिका के निमित्त (सेउ) सेतु-पुल के निमित्त (सकम) सक्रम के निमित्त (पासाय) प्रासाद्-राजमहल के निमित्त (विकप्प) विकप्प-विकल्प के निमित्त (भवण) राजमहल विशेष-उनके लिये

પુષ્કરિણીને નિમિત્તે "वावि" વાપી-વાવને નિમિત્તે "वप्पिण" વાવડીને નિમિત્તે "कूव" કૂપ-કૂવાને નિમિત્તે "सर" સર-કૃત્રિમ જળાશયને નિમિત્તે "तळाग" તલાગ-તળાવને નિમિત્તે "चिइ" ચિતિને નિમિત્તે "चेइय" ચૈત્યને નિમિત્તે "खाइय" ખાતિકા-ખાઈને નિમિત્તે "आराम" આરામ-બગીચાના નિમિત્તે "विहार" વિહારને નિમિત્તે "थूम" સ્તૂપને નિમિત્તે "पागार" પ્રાકાર કિલ્લાને નિમિત્તે "दार" દ્વારને નિમિત્તે "गोवर" ગોપુરને નિમિત્તે "अट्टालग" અટ્ટાલિકાને નિમિત્તે "चरिया" ચરિકાને નિમિત્તે "सेउ" સેતુ-પુલને નિમિત્તે "सकम" સક્રમને નિમિત્તે "पासाय" પ્રાસાદ-રાજમહેલને નિમિત્તે "विकप्प" વિકલ્પ-વિકલ્પને નિમિત્તે "भवण" એટલે કે એક પ્રકારના રાજમહેલ માટે,

'घर' गृहा =प्रसिद्धा, 'सरण' शरणानि=सामान्यगृहाणि, 'लयण' लयनानि पर्वतवर्त्ति पाषाणगृहाणि, 'आवण' आपणाः=हट्टाः, 'वेइय' वेदिका=परिष्कृता भूमिः, 'देवकुलानि=यक्षगृहाणि, 'चित्तसभा' चित्रसभा-चित्रयुक्तसमास्थानम्, 'पवा' प्रपा=पानीयशाला 'प्याऊ' इति भाषा प्रसिद्धा, 'आययण' आयतन=यज्ञशाला, 'आवसह' आवसथः-तापसाश्रमः, 'भूमिघर' भूमिगृह=गुहारूप पृथिवीगृहम्, 'मडवाण' मण्डपाः=पटनिर्मितगृहास्तेषां, 'कए' कृते-एतन्निमित्तमित्यर्थः। तथा 'भायण भडोवगरणस्स' भाजनभाण्डोपकरणस्य भाजनानि=सौवर्णराजतादीनि, भाण्डानि=मृण्मयानि शरावादीनि, उपकरणानि=उदूखल मुसलादीनि एतेषां समाहारद्वन्द्वे-भाजनभाण्डोपकरणम्, तस्य च 'विविहस्स य' विविधस्य च=अनेकप्रकारस्य 'अट्ठाए' अर्थाय=प्रयोजनाय 'मदबुद्धिया' मन्दबुद्धिकाः=स्वपरहिताहितविवेकविकलाजनाः, 'पुढवी' पृथिवीं 'हिंसति' घ्नन्ति ॥सू०१४॥

(घर) घर के निमित्त (सरण) शरण-सामान्यगृह के निमित्त (लयण) लयन-पर्वतवर्ति पाषाण घर के निमित्त (आवण) आपण-हाट के निमित्त (वेइय) वेदिका-चोतरे के निमित्त (देवकुल) देवकुल-यक्षायतन के निमित्त (चित्तसभा) चित्रसभा-चित्रयुक्त सभा के निमित्त (पवा) प्रपा-प्याऊ के निमित्त "आययण" आयतन-यज्ञशाला के निमित्त (आवसह) अवसथ-तापसों के आश्रम के निमित्त (भूमिघर) भूमिगृह के निमित्त (मडवाणकए) मडप के निमित्त तथा (भायण भडोवगरणस्स य विविहस्स य अट्ठाए पुढविं हिंसति मदबुद्धिया) नाना प्रकारके भाजन भाडोपकरणके निमित्त मन्दबुद्धिजन पृथिवीकाय जीवोंकी हिंसा करतेहैं।

भावार्थ—पृथिवी कायिक एकेन्द्रिय जीव है। इस एकेन्द्रिय जीव की हिंसा करने का निमित्त-प्रयोजन क्या होता है-इस विषय को सूत्र

"घर" घरने निमित्ते "सरण" शरण सामान्य गृहने निमित्ते "लयण" लयन पर्वतवर्ति पाषण घरने निमित्ते "आवण" आपण-दुकानने निमित्ते "वेइय" वेदिका-ચોતરાને નિમિત્તે "देवकुल" દેવકુલ-યક્ષાયતનને નિમિત્તે "चित्तसभा" ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્ત સભાને નિમિત્તે "पवा" પ્રપા-પરબ નિમિત્તે "आययण" આયતન યજ્ઞશાળાને નિમિત્તે "आवसह" આવસથ-તાપસોના અશ્રમોને નિમિત્તે "भूमिघर" ભૂમિગૃહને નિમિત્તે 'मडवाणकए" મંડપને નિમિત્તે, તથા "भायण भडोवगरणस्स य विविहस्स य अट्ठाए पुढविं हिंसति मदबुद्धिया" અનેક પ્રકારના ભાજન, ભાંડોપકરણને નિમિત્તે મંદ બુદ્ધિવાળા લોકો પૃથ્વીકાય જીવોનીહિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—પૃથ્વીકાયિક જીવો એક ઇન્દ્રિયવાળા હોય છે, એ એકેન્દ્રિય જીવની હિંસા કરવાના નિમિત્તો પ્રયોજનો કયા કયા હોય છે, તે વિષે સૂત્ર

कार ने यहा निर्दिष्ट किया है। मदबुद्धिजनों से यहा तात्पर्य स्वपर हित के विवेक से विकल जनों से है। जिन्हें स्व और पर का विवेक नहीं है ऐसे प्राणी ही कृषी आदि इन उपर्युक्त कारणों के वशवर्ती होकर पृथिवी कायिक जीव की हिंसा किया करते हैं। कृषीकर्म प्रसिद्ध है। जिसके चारो कोण समान हों, कमल जिसमें विकसित हो रहे हों, अगाध-जल जिसमे भरा हो, नाना प्रकार के कलरव से जिसके तट मण्डित हो ऐसे सुरम्य जलाशय का नाम पुष्करिणी है। जिसका विस्तार दीर्घ हो उसका नाम वापी है। हिन्दी में इसे वावडी कहते हैं। अनाज के बोने का जो स्थान होता है उसे क्षेत्र-खेत कहते हैं। कृत्रिम जलाशय का नाम सर है। स्वाभाविक जलाशय का नाम तडाग है, इसे हिन्दी में तालाब कहते हैं। चिता का नाम चिति है, जो मृतक के दाह सस्कार के निमित्त श्मशान में लकडियों के ढेर के रूप में चिनी जाती है। किसी मृतक की यादगार में जो उसका स्मृति चिह्न स्वरूप भवन आदि बना दिया जाता है उसका नाम चैत्य है। किले के परकोटे के चारों ओर जो गहरी खाई होती है कि जिसमें जल भी भरा रहता है उसका नाम खातिका-खाई है। घर के पास के बगीचे का नाम आराम है, नगर से कुछ दूर पर जो जनों का क्रीडा स्थान होता है उसका नाम विहार है। जो स्मारक

કાર આ સૂત્રમા સ્પષ્ટીકરણ કરે છે અહીં મદબુદ્ધિજનોનો અર્થ, પોતાનુ અને પારકાનુ હિત ન જાણનાર લોકો થાય છે જેમને સ્વ અને પરનો વિવેક હોતો નથી એવા જીવોજ કૃષિ આદિ ઉપર કહેલ કારણોને વશ થઈને પૃથિવી કાયિક જીવની હિંસા કર્યા કરે છે કૃષિકર્મ પ્રસિદ્ધ છે એટલે તેને વિષે સ્પષ્ટીકરણની જરૂર નથી જેના ચારે ખૂણા સમાન હોય, જેમા કમળો વિકસ્યા હોય, જેણા ઊડુ પાણી ભરેલુ હોય વિવિધ પ્રકારના કલરવથી જેનો તટ મડિત હોય એવા સુદર જળાશયને પુષ્કરિણી કહે છે જેનો વિસ્તાર લાબો હોય તેવી વાવને વાપી કહે છે હિંદીમા તેને વાવડી કહે છે, અનાજ વાવવાનુ જે સ્થાન હોય છે તેને ક્ષેત્ર ખેતર કહે છે કૃત્રિમ જળાશયને સર કહે છે ચિતાને ચિતિ કહે છે, જે મૃત શરીરને અગ્નિદાહ દેવાને માટે લાકડાના ઢગલા રૂપે ખડકવામા આવે છે કોઈ મૃત વ્યક્તિના સ્મરણાર્થે જે ભવન આદિ બનાવાય છે તેને ચૈત્ય કહે છે કિલ્લાની દિવાલની ચારે તરફ જે ઊડી ખાઇ હોય છે, અને જેમા પાણી પણ ભરેલુ રહે છે તે ખાઇને ખાતિકા ખાઈ કહે છે ઘર પાસેના બાગને આરામ કહે છે નગરથી દૂર જે લોકોનુ ક્રીડા સ્થાન હોય છે

स्तंभ बनाया जाता है वह स्तूप है। प्राकार-जिसे हिन्दी भाषा में गढ़ कहते हैं। नगर में प्रवेश करने का जो प्रधान द्वार होता है उसका नाम गोपुर है। दुमजिले आदि मकानों के छत को अटारी कहते हैं। दुर्ग और नगर के बीच में जो आठ हाथ प्रमाण का मार्ग होता है कि जिससे होकर हाथी आदि आते जाते रहते हैं उसका नाम चरिका है। जल की धारा प्रवाह को पार करने के लिये जो पाषाण अथवा काष्ठ का उस पर मार्ग बना दिया जाता है उसका नाम संक्रम है। ऐसे स्थान नदी नालों आदि जलाशय प्रदेशों पर बने हुए रहते हैं। राजमहल प्रसिद्ध है, इसे संस्कृत भाषा में प्रासाद कहते हैं। भवन-लम्बाई की अपेक्षा कुछ थोड़ी कम ऊँचाई वाला होता है। तथा जो प्रासाद होता है वह भवन की अपेक्षा द्विगुणित ऊँचाई वाला होता है। सामान्यघर का नाम शरण है। पर्वत के पास जो पत्थरों के घर बने हुए होते हैं उनका नाम लयन है। दुकान का नाम हट्ट या हाट है। परिष्कृत भूमि का नाम वेदिका है। देवकुल-यक्षायतन-यक्ष के स्थान को कहते हैं। जिस सभा-स्थान में चित्र होते हैं उसका नाम चित्रसभा है। जहां लोगों को पानी पिलाया जाता है उसका नाम प्याऊ है। यज्ञशाला का नाम आयतन, तापसाश्रम का नाम आवसथ, पृथिवी के नीचे बने हुए घर का नाम

વિહાર કહે છે સ્મારક સ્તભને સ્તૂપ કહે છે કિલ્લાને પ્રાકાર કહે છે નગરમા પ્રવેશ કરવાનુ જે મુખ્યદ્વાર હોય છે તેને ગોપુર કહે છે બે માળના આદિ મકાનોની અગાશીને અટારી કહે છે દુર્ગ અને નગરની વચ્ચે જે આઠ હાથ પહોળો માર્ગ હોય છે, કે જ્યા થઈ હાથી આદિ આવે જાય છે, તે માર્ગને ચરિકા કહે છે પાણીના પ્રવાહને ઓળગવાને માટે તેના પર પથ્થર અથવા લાકડાનો જે માર્ગ બનાવવામા આવે છે તેને સક્રમ (પુલ) કહે છે એવા સ્થાનો નદી, નાળા, આદિ જળાશયો પર બનાવેલા હોય છે રાજમહેલ શબ્દ જાણીતો છે તેને સસ્કૃત ભાષામા પ્રાસાદ કહે છે ભવનની ઊંચાઈ પ્રાસાદ કરતા ઓછી હોય છે ભવન કરતા પ્રાસાદની ઊચાઈ બમણી હોય છે સામાન્ય ઘરને શરણ કહે છે પર્વતની પાસે પથ્થરોના જે ઘરો હોય છે તેમને લયન કહે છે દુકા-નને હટ્ટ અથવા હાટ કહે છે ચોતરાને વેદિકા કહે છે દેવકુલ યક્ષાયતન યક્ષના સ્થાનને કહે છે જે સભાસ્થાનમા ચિત્રો હોય છે, તે સભાસ્થાનને ચિત્રસભા કહે છે જ્યા લોકોને પાણી પાવામા આવે છે તે જગ્યાને પ્યાઊ-પરબ કહે છે યજ્ઞશાળાને આયતન, તાપસના આશ્રમને આવસથ, જમીનની અદર બનાવેલ

अथाऽप्कायहिंसाकारणान्याह—'जलं च' इत्यादि ।

मूलम्— जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थ धोवण-सोयमाइएहिं ॥सू०१५॥

टीका—'मज्जणय' मज्जनक=स्नान 'पाण' पान 'भोयण' भोजन 'वत्थधोवण' वस्त्रधावन=वस्त्रप्रक्षालनं 'सोय' शौचम् 'आइएहिं' आदिभिः=मज्जनाद्यनेक कारणैः 'जलं च'=अप्काय हिंसन्ति ॥सू०१५॥

अथाग्निकायहिंसाकारणान्याह—'पयण' इत्यादि ।

मूलम्—पयण-पयावण-जलण-जलावण-विदसणेहिं अगणिं ॥सू०१६॥

टीका—'पयण' पचन-स्वय, 'पयावण' पाचनमन्यैः 'जलण' ज्वलन=स्वहस्तेन प्रदीपनम्, 'जलावण' ज्वालनम्=अन्यैः, 'विदसण' विदर्शन=प्रकाशकरणम्, एभिः कारणैः=प्रयोजनैः 'अगणिं' अग्निं हिंसन्ति ॥सू०१६॥

भूमिघर या तलघर, तबू का नाम पट्टघर, अथवा मडप है । चादी सोने के बने हुए वर्तनो का नाम यहा भाजन एव मिट्टी के बने हुए वर्तनों का नाम भाड है । उदूखल (ओखली) तथा मुसल आदि को यहा उपकरण से ग्रहण किया है ॥सू० १४॥

अब अप्काय की हिंसा करने के प्रयोजन को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं— 'जल च मज्जण य ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(मज्जणय) स्नान, (पाण) पान, (भोयण) भोजन, (वत्थधोवण) वस्त्रप्रक्षालन, (सोय) शौच, इत्यादि कारणों को लेकर (जल च) अप्काय-जलकाय की हिंसा करते हैं ॥ सू०१५ ॥

अब अग्निकाय की हिंसा करने के प्रयोजन को सूत्रकार करते

घरने भूमिघर अथवा तलघर अने तबूने पटघर अथवा मडप कहे छे चांदी सोनामांथी बनावेल वासणोने भाजन अने माटीमांथी बनावेला वासणोने भाड कहे छे खांडणियो तथा सांबेला आदिने अहीं उपकरणथी ग्रहण करेल छे ॥ सू १४ ॥

हवे अप्काय (जळकाय)नी हिंसा करवाना प्रयोजनने सूत्रकार स्पष्ट करे "जल च मज्जण य " इत्यादि

टीकार्थ—" मज्जणय " स्नान, " पाण " पान " भोयण " भोजन, " वत्थधोवण " वस्त्रधोवा, " सोया " शौच इत्यादि कारणोने लीधे अपूकाय जळकायनी हिंसा थाय छे ॥सू० १५॥

हवे अग्निकायनी हिंसा करवाना प्रयोजनोने सूत्रकार बतावे छे—

अथ वायुकायहिंसाकारणान्याह—'सुप्प' इत्यादि ।

मूलम्—सुप्प-वियण-तालियंट-पेहुण-मुह-करयल सग्गपत्त-वत्थ एवमाइएहिं अणिलं ॥ सू० १७ ॥

टीका—'सुप्प' शूर्पः=अन्नशोधनोपकरणविशेष, 'छाज' 'सूपडा' इति भाषाप्रसिद्धः 'वियण'व्यजन=वंशशलाकादिनिर्मितम्, 'तालियंट' तालवृन्त 'ताडपत्ता' इति प्रसिद्धम्, 'पेहुणग' पेहुणक=मयूरपिच्छकृतव्यजनं 'मुह' मुख

हैं—'पयणपयावण' इत्यादि ।

टीकार्थ-(पयण-पयावण-जलण-जलावण-विदंसणेहिं अगणिं) स्वयं भोजन बनाना, दूसरोंसे भोजन बनवाना, स्वयं अग्नि जलाना, दूसरोंसे अग्नि जलवाना, तथा दीपक जलाकर प्रकाश करना, इत्यादि प्रयोजनों को लेकर अग्निकाय की हिंसा करते हैं ॥ सू०१६ ॥

वायुकाय की हिंसा करने के प्रयोजन को सूत्रकार कहते हैं—'सुप्पवियण' इत्यादि ।

टीकार्थ-(सुप्प वियण-तालीयंट पेहुण मुह-करयल सग्गपत्तवत्थएवमाइएहिं अणिलं) सूपसे जब पछाड़ कर अन्न आदि शोधन करते हैं तब, वंशशलाका आदि से निर्मित पखे से जब हवा की जाती है तब, ताल-वृक्ष के पत्ते से बने हुए पखे से जब हवा की जाती है तब, मयूर के पिच्छों से निर्मित पखे से जब हवा की जाती है तब, मुख

"पयणपयावण" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"पयण, पयावण, जलण, जलावण, विदंसणेहिं अगणिं" જાતે ભોજન બનાવવાને, બીજા પાસે ભોજન બનાવરાવવાને, પોતે અગ્નિ સળગાવવાને, અન્ય પાસે અગ્નિ સળગાવરાવવાને, તથા દીવો સળગાવીને પ્રકાશ કરવા, ઇત્યાદિ પ્રયોજનોને માટે અગ્નિકાયની હિંસા કરે છે ॥સૂ૧૬॥

હવે વાયુકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—

"सुप्प वियण" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"सुप्प, वियण, तालियंट, पहुण, मुह, करयल सग्गपत्त वत्थ एवमाइएहिं अणिलं" જ્યારે સૂપડા વડે ઝાટકીને અનાજ સાફ કરાય છે ત્યારે, વાસની સળીઓ આદિમાંથી બનાવેલા પંખા વડે જ્યારે હવા ખવાય છે ત્યારે, તાડના પાનામાંથી બનાવેલ પંખા વડે જ્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, મોરના પીછામાંથી બનાવેલ પંખા વડે જ્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, જ્યારે કોઇ નિમિત્તે મુખથી

'करयल' करतल=हस्ततल 'सगगपत्त' सागपत्र=वृक्षविशेषपत्र 'वत्थ' वस्त्रम्, 'एव-माइएहिं' एवमादिभिः=इत्यादिभिर्वायूदीरकविद्युद्व्यजनादिसाधनैः 'अणिल' अनिल=वायु हिंसन्ति ॥सू० १७॥

अथ वनस्पतिकायहिंसाकारणान्याह—'अगारे'त्यादि ।

मूलम्—अगार- परियार-भक्ख-भोयण--सयणासण-फलग-मुसल-उखल-तत-विततातोज्ज-वहण-वाहण-भंडग-विविहभवण-तोरण-विटंग-देवकुल-जालयद्धचद-निज्जूहग-चंद-सालिय-वेइय-णिस्से-णिदोणि-चंगेरी-खील-मंडव सभा-पवा-ऽऽवसह-गधमल्लाणु लेवणं-वर-जुय-नगल-मेइय-कुलिय-सदणसीया रह-सगड-जाण-जोग्ग-अट्टालग-चरिअदार-गोपुर-फलिहा-जंत-सूलिया लउड-मुसंढि-सयग्घी-वहुपहरणा-वरणुवक्खराण कए अण्णेहि एवमा-इएहिं वहुहि कारणसएहि हिसति तरुगणे भणिए अभणिए य एवमाई ॥ सू० १८ ॥

से जब किसी निमित्त फूक मारी जाती है तब, और खुले मुह बोलते हैं तब, जब हाथों से ताली बजाई जाती है तब, जब पत्र शाक के पत्तों को साफ करने के लिये उन्हें हाथ पर झटकारा जाता है तब, और जब वस्त्र के अचल से हवा की जाती है तब, तथा बिजली आदि के पखों से जब हवा की जाती है तब वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। तात्पर्य इसका यह है कि जितने भी वायूदीरक साधन है उन से वायु काय के जीवों की हिंसा होती है ॥सू-१७॥

अब वनस्पति की हिंसा करने के प्रयोजन को सूत्रकार कहते हैं-

ફુક મારવામા આવે છે ત્યારે, જ્યારે ખુલ્લે મોઢે બોલવામા આવે છે ત્યારે જ્યારે હાથે વડે તાળી વગાડવામા આવે છે ત્યારે, જ્યારે શાકના પાનને સાફ કરવાને માટે હાથથી ઝાટકવામા આવે છે ત્યારે તથા વીજળી આદિના પખા વડે જ્યારે હવા ખાવામા આવે છે ત્યારે વાયુકાય જીવોની હિંસા થાય છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે હવા ખાવાના જેટલા સાધને છે તેમનાથી વાયુકાય જીવોની હિંસા થાય છે ॥સૂ. ૧૭॥

હવે વનસ્પતિકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે.

टीका—'अगार' अगार=गृह 'परियार' परिचारः=जीविकाः, खड्गादि कोशो षा 'भक्ख' भक्ष्याणि=मोदकादीनि 'भोयण' भोजनानि=ओदनादीनि, 'सयणासण' शयनासनानि-शयनानि=मञ्च पर्यङ्कादिशय्याः; आसनानि-भद्रासनादीनि 'फलग' 'फलकानि=काष्ठनिर्मितवस्तुविशेषाः 'तख्ता' इति भाषा प्रसिद्धानि 'मुसलमुदूखल च प्रसिद्धम्, ततानि=वीणादीनि-विततानि=मुरजभेर्यादीनि, 'आतोज्ज' आतोद्यानि=वाद्यविशेषाः, 'वहण' वहनानि=पोतनौकादीनि यानपात्राणि 'वाहण' वाहनानि=शिबिकादीनि 'भडग' भाण्डानि=गृहोपकरणानि, 'विविहभवण' विविध भवनानि=सर्वतोभद्रादिभवनानि, तोरणानि=द्वारशोभाकारिवन्दनमालादीनि, 'विटग' विटङ्काः=कपोतपालेयः 'छज्जा' इति भाषा प्रसिद्धाः, देवकुलानि=यक्ष गृहाः, 'जालय' जालकानि=गवाक्षविशेषाः, 'अद्धचंद' अर्धचन्द्राः=अर्धचन्द्राकार-

---

'अगार-परियार-भक्ख' इत्यादि।

टीकार्थ-(अगार) अगार-गृह, (परियार) परिचार-जीविका अथवा खड्गादिकोश-म्यान, (भक्ख) भक्ष्य-मोदक आदि खाने योग्य द्रव्य, (भोयण) भोजन-ओदनादि द्रव्य, (सायणासण) शयनासन-मञ्च पर्यङ्क आदि शय्या, भद्रासन आदि आसन, (फलग) फलक-काष्ठनिर्मित वस्तुविशेष-तख्ता, (मुसल) मुसल, उदूखल-ओखली (तत) तत-वीणा आदि वाद्य (वितत) वितत-मुरज भेरी आदि बाजे, (आतोज्ज) आतोद्य वाद्यविशेष, (वहण) वहन-पोत, नौका आदि यान पात्र, (वाहण) वाहण शिबिका आदि, (भडग) भडक-गृह के उपकरण, (विविहभवण) विविध भवन-सर्वतोभद्र आदि मकान, (तोरण) तोरण-द्वार की शोभा वर्धक वदन-माला आदि, (विटग) विटक-कपोतपाली-छज्जा, (देवकुल) देवकुल यक्षगृह, (जालय) जालकगवाक्ष-खिडकी, (अद्धचंद) अर्धचद्राकार

"अगार, परियार-भक्ख" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"आगार"અગાર-ગૃહ "परियार" પરિચાર-જીવિકા અથવા તલવાર આદિનુ મ્યાન "भक्ख" ભક્ષ્ય-લાડુ આદિ ખાવા લાયક દ્રવ્ય "भोयण" ભોજન-ભાત આદિદ્રવ્ય "सयणासण" શયનાસન-ખાટલો પલ ગ આદિ શય્યાના સાધનો, ભદ્રાસન આદિ આસન "फलग" ફલક લાકડાની પાટ, પાટિયુ "मुसल" સાબેલુ, ઉદ્દખલ-ખાડણિયો "तत" તત વીણા આદિ વાદ્ય "वितत" વિતત-મુરજ ભેરી આદિ વાજીત્રો "आतोज्ज" આતોદ્ય-એક પ્રકારનુ વાદ્ય વિશેષ "वहण" વહન પોત નૌકા આદિ, વાહન-પાલખી આદિ "भडग" ભડક ગૃહના ઉપકરણો, "विविहभवण" વિવિધ ભવન-સર્વતોભદ્ર આદિ મકાન "तोरण" દ્વારની શોભા વધારનાર વ દનમાલા આદિ "विटग" વિટક-છજ્જુ "देवकुल" યક્ષગૃહ "जालय" જાલક-ગવાક્ષ બારી "निज्जूहग" બારી "अद्धचंद" અર્ધચન્દ્ર અર્ધચન્દ્રાકાર સોપાન

सोपानविशेषा, 'निज्जूहग' निर्य्यूहकाणि=द्वारोर्ध्वभागबहिर्निर्गताः घोटकाद्याकाराः काष्ठविशेषाः, 'चदसालिय' चन्द्रशालिकाः=प्रासादोपरितनशाला: 'वेइय' वेदिका=प्राङ्गणे कृतोपवेशनस्थानम्, 'णिस्सेणि' नि श्रेणिः 'सीढी' इति प्रसिद्धा 'दोणि' द्रोणिः=लघुनौका, 'चगेरी' तृणादिनिर्मितपात्रविशेषः 'टोकरी' इति भाषा प्रसिद्धा देशीशब्दोऽयम्, 'खील' कीला =प्रसिद्धा, 'मडव' मण्डपाः=पटगृहाः, द्राक्षादिमण्डपा वा, सभाः=जनोपवेशनस्थानानि, 'पवा' प्रपाः पानीयशालाः, 'आवसह' आवसथाः=तापसाश्रमाः 'गध' गन्धाः=गन्धद्रव्याणि, 'मल्ल' माल्यानि=कुसुमानि=माल्य=कुसुमस्रग् वा, 'अणुलेवण' अनुलेपनं=चन्दन, 'अवर' अम्बराणि=वस्त्राणि, 'जुय' युगानि 'झूसरा' इति भाषा प्रसिद्धानि, 'नगल' लाङ्गलानि हलानि, 'मेइय' मेतिकानि यैः कृष्टक्षेत्र मृधते, 'कुलिय' कुलिकानि हलभेदा 'सदण' स्यन्दनो रथविशेषाः, 'सीया' शिबिकाः-'पालखी' इति

सोपानविशेष, (निज्जूहग) निर्य्यूहक-द्वारके उर्ध्वभागमें बाहर की ओर लगे हुए घोड़ा आदि के आकार वाले काष्ठ विशेष, (चदसालिय) चद्रशालिका-प्रासाद के ऊपरकी शाला, (वेइय) वेदिका-आगनमें बैठने के लिये बना हुआ स्थान, (णिस्सेणि) निःश्रेणी-नसेनी-सीढी, (दोणि) द्रोणी-लघुनौका डोंडी, (चगेरी) चगेरी-तृणादिसे बना हुआ पात्र विशेष, जिसे चगेर भी कहते हैं, (खील) कीला, (मडव) मडप-पटगृह अथवा द्राक्षादि मडप, (सभा) सभा-मनुष्योंके बैठने का स्थान, (पवा) प्रपा-प्याऊ, (आवसह) आवसथ-तापसाश्रम, (गध) गध-सुगधि द्रव्य, (मल्ल) माल्यकुसुम आदि माला-कुसुमों की गुथी हुई पुष्पमाला, (अणुलेवण) अनुलेपन-चदन, अम्बर-वस्त्र, (वरयुग) युग-झूसरा-जुवारी, (नगल) लागल-हल, (मेइय) मेतिक-वखर, जिससे जुता हुआ खेत

વિશેષ, નિર્યૂહક-બારણાની ઉપર બહારની બાજુએ લગાડેલ ઘોડા આદિના આકારના કાષ્ઠ વિશેષ "चदसालिय" ચંદ્રશાલિકા-પ્રાસાદના ઉપરની શાળા "वेइय" વેદિકા-આગણામા બેસવા માટેનો ચોતરો, "णिस्सेणि" નિશ્રેણી નિસરણી, "दोणि" દ્રોણી નાની નૌકા 'चगेरी" ચગેરી તૃણાદિમાથી બનાવેલ પાત્ર વિશેષ જેને ચગેર પણ કહે છે "खील" ખૂટો "मडव" મડપ-તબૂ અથવા દ્રાક્ષાદિનો મડપ "सभा" સભા-માણસોને બેસવાનુ સ્થાન "पवा" પ્રપા પરબ "आवसह" આવસથ-તાપસોનો આશ્રમ "गध" ગધ-સુગધિ દ્રવ્ય "मल्लाणुलेवण, મલ્લ-માલ્ય કુસુમ આદિની માળા, અનુલેપન ચદન, અમ્બર વસ્ત્ર "युग" ઝૂસરા ધૂસરી "नगल" લાગલ હળ "मेइय" મેતિક વખર જેનાથી ખેડેલુ ખેતર એક

प्रसिद्धाः, 'रह' रथाः-प्रसिद्धाः, 'सगड' शकटानि=प्रसिद्धानि, 'जाण' यानानि=शकटविशेषाः, 'जोग्ग' युग्यानि=जम्पानविशेषाः, 'अट्टालग' अट्टालका =प्राकारोपरिवर्ति स्थानविशेषाः 'चरिअ' चरिका =नगरप्राकारमध्यस्थाष्टहस्तप्रमाणमार्गाः 'दार' द्वाराणि=प्रसिद्धानि, 'गोपुर' पुरद्वाराणि, 'फलिह' परिघा अर्गलाः 'यता' यन्त्राणि=प्रसिद्धानि 'सूलिया' शूलिकाः=शूलारोपणकाष्ठानि, 'लउड' लकुटाः=यष्टयः, 'मुसढि' शस्त्रविशेषाः, 'सयग्घी' शतघ्न्य =शस्त्र विशेषा , महाशिलासु या उपरिष्टात् पातिता सत्यः शतानि घ्नन्ति, एव 'बहु' बहूनि=अनेकानि 'पहरण' प्रहरणानि=शस्त्राणि खड्गतोमरतीरादीनि 'आवरण' आवरणानि=स्फुरकाणि 'छरपला' इति प्रसिद्धानि उवक्खराण' उपस्कराणि=गृहोपकरणानि, कपाटादीनि, तेषा 'कए' कृते=एतदर्थं, तथा 'अण्णेहिय' अन्यैश्च, 'एवमाइएहिं' एवमादिकैः

एकसा किया जाता है, (कुलिय) कूलिक-हलविशेष, स्यदन-रथविशेष, (सीया) शिविका-पालखी, (रह) रथ-सामन्य रथ (सगड) शकट-गाडा, (जाण) यान-वाहन विशेष, (जोग्ग) युग्य-जम्पान विशेष, (अट्टालग) अट्टालक-प्राकार के ऊपर का स्थान विशेष (चरिका) चरिका-नगर और कोट के मध्य का आठ हाथ प्रमाण का मार्गविशेष, (दार) द्वार, (गोपुर) गोपुर-पुरद्वार (फलिह) परिघा-अर्गला वेंडा, (जत) यत्र, (सूलिया) शूलिका - शूलारोपण काष्ठ (लउड) लकुट-यष्टि-छडी, (मुसढि) मुसढी शस्त्रविशेष, (सयग्घी) शतघ्नी-शस्त्रविशेष जिससे एक ही वारमे सौ मनुष्य मार दिए जाते हे तथा (बहुपहरणा) अनेक प्रहरण-शस्त्रखड्ग,तोमर,तीर आदि, आवरण-छरपला,(वरणुक्खराणकए) उपस्कर -कपाट आदि गृहके उपकरण इन सबके लिये तथा (अण्णेहिं एवमाइएहिं)

સરખુ કરવામા આવે છે "कुलिय" કુલિક એક પ્રકારનુ હળ "सदण" સ્યદન એક જાતનો રથ "सीया" શિબિકા પાલખી "रह" રથ "सगड, શકટ ગાડુ 'जाण" યાન વાહન વિશેષ "जोग" યુગ્ય બે પ્રાણીથી ખેચાતા વાહનો "अट्टालग" અટ્ટાલક કિલ્લાની ઉપરનુ ખાસ પ્રકારનુ સ્થાન "चरिय" ચરિકા નગર કોટની વચ્ચેનો આઠ હાથની પહોળાઈનો માર્ગ વિશેષ "दार" દ્વાર "गोपुर" ગોપુર શહેરનુ મુખ્ય દ્વાર "फलिहा" પરિઘા આગળિયો "जत" યત્ર શૂલિકા "सूलिया" શૂળીએ ચડાવવા માટેનુ કાષ્ઠ "लउड" લકુટ યષ્ટિ છડી "मुसढि" મુસઢી શસ્ત્રવિશેષ "सयग्घी" શતઘ્ની એકજાતનુ શસ્ત્ર જેનાથી એક જ વારમા સો માણસો મારી શકાય છે, તથા "बहुपहरणा" અનેક પ્રહરણ શસ્ત્ર ખડગ તોમર તીર આદિ "वरणुवक्खराणकए" આવરણ ઉપસ્કર કપાટ આદિ ઘરમાના ઉપકરણો એ બધાને માટે તથા

एव मकारैः 'बहुहिं' बहुभिः 'कारणसएहिं' कारणशतैः=प्रयोजनशतैः 'भणिए' भणितान् उक्तान् 'अभणिए य' अभणिताश्च=अनुक्ताश्च, एवमादीनुक्तप्रकारान् 'तरुगणे' तरुगणान्=वनस्पतिसमूहान् 'हिंसंति'=विनाशयन्ति ॥सू०१८।

कीदृशान् जीवान् कीदृशा हिंसकाः किमर्थं घ्नन्ति ? इत्याह—'सत्ते' इत्यादि।

मूलम्—सत्ते सत्तपरिवज्जिए उवहणंति दढमूढा दारुणमई कोहा माणा माया लोभा हासा रती अरती सोय वेदत्थ जीय धम्मत्थ कामहेऊ सवसा अवसा अट्ठाए अणट्ठाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—'दढमूढा' दृढमूढाः=सातिशयविवेकविकलाः, 'दारुणमई' दारुणमतयः=क्रूराशयाः जना, 'सत्तपरिवज्जिए' सत्त्वपरिवर्जितान्=बलहीनान्

और भी इनसे अतिरिक्त (बहुहिं कारणसएहिं) अनेक प्रयोजनों के लिये (भणिए अभणिए य) जो यहां पर कहे गये और जो नहीं कहे गये हैं, (एवमाई) उन सब तरुगण वनस्पति समूहकी हिंसा करते हैं। ससारी अबुधजन इन पूर्वोक्त वस्तुओ के निर्माण के लिये वृक्षों को काटते हैं। वृक्षों को काटना ही वनस्पति जीवों की हिंसा करना है। इन उपर्युक्त वस्तुओं का निर्माण वृक्षों के काष्ठ से होता है। ॥ सू० १८ ॥

त्रस स्थावर जीवों को कैसे २ भावों से युक्त होकर हिंसक जन मारते हैं सूत्रकार इस सूत्र द्वारा स्पष्ट करते हैं—'सत्ते सत्तपरिवज्जिए' इत्यादि।

टीकार्थ-(दढमूला) जो सातिशय विवेक से विकल हैं-जिनके विवेक

"अण्णेहिं एवमाइएहिं" ते सिवायना "बहुहिं कारणसएहिं" બીજા પણ અનેક પ્રયોજનોને માટે "भणिए अभणिए य" કે જે અહીં કહેવાયા છે કે નથી કહેવાયા "एवमाई" તે બધા તરુગણ વનસ્પતિ સમૂહની લોકો હિંસા કરે છે સસારી અબુધ લોકો પૂર્વોક્ત વસ્તુઓ બનાવવાને નિમિત્તે વૃક્ષોને કાપે છે વૃક્ષોને કાપવા એ જ વનસ્પતિ જીવોની હિંસા છે ઉપર કહેલી વસ્તુઓ વૃક્ષોના કાષ્ઠમાથી થાય છે ॥ સૂ ૧૮ ॥

ત્રસ સ્થાવર જીવોને કેવા કેવા ભાવોથી યુક્ત થઈને હિંસકજન મારે છે તેનુ આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—"सत्ते सत्तपरिवज्जिए" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"दढमूला" જે અતિશય વિવેકથી વિકલ છે જેમના વિવેકરૂપ ચક્ષુઓ

दीनान् 'सत्ते' सत्त्वान्=पृथिव्यादीन् 'उवहणति' उपघ्नन्ति=मारयन्ति, कस्मादित्याह—'कोहा' क्रोधात्, 'माणा' मानात् 'माया' मायाया=कपटात् 'लोभा' लोभात् 'हासा' हास्यात् 'रइ' रते=रागात् 'अरइ' अरतेः=द्वेषात् 'सोय' शोकात् 'उपघ्नन्ति' इति सम्बन्धः। किमर्थम्? इत्याह—'वेयत्थजीयधम्मत्थकामहेऊ' वेदार्थजीवधर्मार्थकामहेतोः, अत्र हेतुशब्दस्य प्रत्येकमभिसम्बन्धः। 'वेयत्थ' वेदोक्तानुष्ठान, 'जीयः' जीवः=जीवन, 'धम्म' धर्मः=कुलजात्यादिलक्षणः, 'अत्थ' अर्थः=धन, 'काम' कामाः=शब्दादयः इत्येतेषा हेतोः=कारणात् 'सवसा' स्ववशाः=स्वाधीनाः सन्तः, 'अवसा' अवशाः=पराधीनाः-परनिर्देशवर्तिन, 'अट्ठाए' अर्थाय=प्रयोजनाय 'अणट्ठाए' अनर्थाय-अप्रयोजनाय-निरर्थकमित्यर्थः

रूप चक्षुओं पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है। और (दारूणमई) जिनके परिणाम अत्यत क्रूर बन चुके ह ऐसे प्राणी (सत्तपरिवज्जिए) बल हीन दीन (सत्ते) पृथिव्यादिक जीवों की (उवहणति) विराधना करते हैं-वह विराधना किस कारण से करते हैं सो कहते है (कोहा, माणा, माया, लोभा, हासा, रति, अरति, सोय) क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक से करते हैं। अर्थात् इन परिणामो से युक्त होकर हिंसक पृथिवी आदिक जीवों की हिंसा करते हैं। किसलिये करते है? (वेयत्थ जीयधम्मत्थकामहेऊ) वेदार्थ, जीवन, धर्मार्थकाम के लिये करते हैं, यहां हेतु शब्द का सबध प्रत्येक के साथ में कर लेना चाहिये-वेदार्थ वेदोक्त अनुष्ठान के लिये, जीवन के लिये, धर्म के लिये, अर्थ-धन-के लिये, काम-शब्दादिक पाचों इन्द्रियों के विषयों के लिये, इन्हीं सब कारण कलापों को लेकर (सवसा) स्वाधीन अथवा (अवसा) पराधीन होकर (अट्ठाए) प्रयोजन के लिये अथवा (अणट्ठाए य)

પર અજ્ઞાનનો પર્દો પડેલ છે, અને "दारुणमई" જેમની વૃત્તિઓ અત્યત ક્રૂર બની ગઈ છે એવા જીવો "सत्तपरिवज्जिए" બલહીન, દીન "सत्ते" પૃથ્વીકાય આદિ જીવોની "उवहणति" હત્યા કરે છે તે હિંસા કયા કયા કારણે કરે છે તે સૂત્રકાર કહે છે–"कोहा, माणा, माया, लोभा, हासा, रति, अरति, सोय" ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, હાસ્ય, રતિ, અરતિ, શોક આદિ વૃત્તિઓથી યુક્ત થઈને હિંસક જીવો પૃથિવીકાય આદિ જીવોની હિંસા કરે છે શા માટે તેમ કરે છે? "वेयत्थ जीय धम्मत्थकामहेऊ" વેદાર્થ, જીવન, ધર્માર્થકામને માટે તેમ કરે છે વેદાર્થ–વેદોક્ત ધર્મ ક્રિયાઓને માટે, જીવનને માટે, ધર્મને માટે, અર્થ–ધનને માટે, કામ–પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયને માટે, એ બધા કારણુ સમૂહોને લીધે "सवसा" સ્વાધીન અથવા "अवसा" પરાધીન દશામા હોવાથી "अट्ठाए" પ્રયોજનને

'तसपाणे' त्रसप्राणान्=द्वीन्द्रियादीन् जीवान् 'थावरे य' स्थावरांश्च पृथिवीकायादीन् हिंसन्ति=घ्नन्ति ॥सू०१९॥

उक्तार्थमेव विशदयन्नाह—'मदबुद्धिया' इत्यादि ।

मूलम्-मंदबुद्धिया सहसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति, अट्ठा हणंति, अणट्ठा हणंति, अट्ठा अणट्ठा-दुहओ हणंति, हस्सा हणंति, वेरा हणंति, रती हणंति हस्सा वेरा रती हणंति। कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति, कुद्धा-लुद्धा मुद्धा हणंति, अत्था हणंति, धम्मा हणंति, कामा हणंति, अत्था धम्मा कामा हणंति ॥ सू० २० ॥

टीका—' मदबुद्धिया' मन्दबुद्धिकाः=मिथ्यात्वोदयात्तत्त्वाऽतत्त्वविवेकरहितमतयः, 'सवसा' स्ववशाः=स्वतन्त्राः सन्तः, स्वेच्छया 'हणंति' घ्नन्ति, 'अवसा' अवशाः=पराधीना सन्तः घ्नन्ति, 'सवसा अवसा' स्ववशा अवशा 'दुहओ' उभयतो

अनर्थ—विना प्रयोजन के लिये (तसपाणे) द्वीन्द्रियादिक त्रस प्राणियों की एव (थावरे य) पृथिवीकायादिक एकेन्द्रिय स्थावर-प्राणियों की (हिंसति) हिंसा करते हैं ॥ सू० १९ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार कहते हैं—' मद बुद्धिया सवसा हणति ' इत्यादि।

टीकर्थ-(मदबुद्धिया) मिथ्यात्व के उदय से तत्त्व और अतत्त्व के विवेक से जिनकी बुद्धि शून्य हो रही है ऐसे प्राणी (सवसा) स्वतन्त्र बनकर अपनी इच्छानुसार त्रस स्थावर जीवों की (हणति) हिंसा करते हैं। इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

ખાતર અથવા "अणट्ठाए" વિના પ્રયોજને "तसपाणे" द्वीन्द्रिय આદિ ત્રસ જીવોની અને " थावरे य " પૃથિવીકાય આદિ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની " हिंसति " હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમજાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે– " मदबुद्धिया सवसा हणति " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–" मदबुद्धिया " મિથ્યાત્વનાઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા જીવો "सवसा' સ્વતંત્ર હોવા છતાં પણ પોતાની ઈચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોની " हणति " હિંસા કરે છે એ જ પ્રમાણે જે માણસ " अवसा हणति " નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન બનીને

घ्नन्ति, अर्थाय, अनर्थाय, तदुभयतो घ्नन्ति । हास्यात् वैरात् रतेर्घ्नन्ति, हास्यवैर-रतिभ्यो घ्नन्ति। किंभूताः सन्तो घ्नन्ती? त्याह 'क्रुद्धा इत्यादि। 'क्रुद्धा' क्रुद्धाः =क्रोधयुक्ताः, 'लुद्धाः' लुब्धान्=विषयगृद्धाः । 'मुद्धा' मुग्धा =मोहवशाः घ्नन्ति।

है–वे भी इन त्रस स्थावर जीवों की हिंसा करते हैं। (सवसा अवसा दुहओ हणंति) तथा स्वतत्र और परतत्र दोनों प्रकार से होकर भी इन जीवों की हिंसा करते हैं। तथा (अट्ठा हणति) ये जीव जीवों की हिंसा प्रयोजन से करते हैं और (अणट्ठा हणंति) अनर्थ–विना प्रयोजन के निरर्थक भी करते हैं (अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणंति) कोई २ ऐसे भी जीव हैं। जो कुछ जीवों की हिंसा अपने स्वार्थ से करते हैं। और कितनेक जीवों की हिंसा स्वार्थ न भी हो तो भी करते हैं। (हस्सा हणति) ससार में ऐसे भी हिंसक जीव हैं जो जीवों की हिंसा हास्य के कारण ही कर डालते हैं, (वेरा हणंति) कितनेक ऐसे भी हैं जो जीवों की हिंसा वैर के निमित्त को लेकर करते हैं। (रई हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो रति–आमोद प्रमोदके निमित्त को लेकर जीवों की हिंसा करते हैं। (हस्सा वेरा रति हणति) कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो एक ही साथ हास्य वैर और रति–आमोद प्रमोद के निमित्त को लेकर जीवों की हिंसा करते हैं। वे कैसे होकर हिंसा करते हैं–(कुद्धा–हणति) कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो क्रोधी होकर जीवों की हिंसा

પણ એ ત્રસ સ્થાવર જીવોની હિંસા કરે છે "सवसा अवसा दुहओ हणति" તથા સ્વતંત્ર અને પરતંત્ર, બન્ને પ્રકારથી યુક્ત થઇને પણ જીવોની હિંસા કરે છે તથા "अट्ठाहणंति" તે જીવોની હિંસા તેઓ અર્થ સકારણ કરે છે અને "अणट्ठाहणंति" અનર્થ–અકારણ–નિરર્થક પણ કરે છે "अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणति" કોઈ એવા પણ જીવો હોય છે કે જેઓ કેટલાક જીવોની હિંસા પોતાના સ્વાર્થને કારણે કરે છે અને કેટલાક જીવોની હિંસા સ્વાર્થ ન હોવા છતા પણ કરે છે "हस्सा हणति" સંસારમા એવા કેટલાક હિંસક જીવો પણ છે કે જેઓ જીવોની હિંસા હાસ્ય–આનંદને ખાતર જ કરે છે "वेरा हणति" કેટ-લાક એવા પણ જીવો છે કે જે જીવોની હિંસા વેરને નિમિત્તે કરે છે "रई हणति" કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે રતિઆમોદ પ્રમોદને ખાતર જીવોની હિંસા કરે છે "हस्सा वेरा रती हणति" કેટલાક જીવો એવા પણ છે કે જેઓ એક સાથે હાસ્ય, વેર અને રતિ–આમોદ પ્રમોદને નિમિત્તે જીવોની હિંસા કરે છે તેઓ કેવી વૃત્તિથી જીવોની હિંસા કરે છે? "कुद्धा हणति" કેટલાક જીવો

'तसपाणे' त्रसप्राणान्=द्वीन्द्रियादीन् जीवान् 'थावरे य' स्थावरांश्च पृथिवीकायादीन् हिंसन्ति=घ्नन्ति ॥सू०१९॥

उक्तार्थमेव विशदयन्नाह—'मदबुद्धिया' इत्यादि ।

मूलम्-मदबुद्धिया सहसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति, अट्ठा हणाति, अणट्ठा हणाति, अट्ठा अणट्ठा-दुहओ हणंति, हस्सा हणंति, वेरा हणति, रती हणति हस्सा वेरा रती हणति। कुद्धा हणाति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति, कुद्धा-लुद्धा मुद्धा हणति, अत्था हणाति, धम्मा हणंति, कामा हणंति, अत्था धम्मा कामा हणंति ॥ सू० २० ॥

टीका—' मदबुद्धिया' मन्दबुद्धिकाः=मिथ्यात्वोदयात्तत्त्वाऽतत्त्वविवेकरहितमतयः, 'सवसा' स्ववशाः=स्वतन्त्राः सन्तः, स्वेच्छया 'हणति' घ्नन्ति, 'अवसा' अवशाः=पराधीना सन्तः घ्नन्ति, 'सवसा अवसा' स्ववशा अवशा 'दुहओ' उभयतो

अनर्थ—विना प्रयोजन के लिये (तसपाणे) द्वीन्द्रियादिक त्रस प्राणियों की एव (थावरे य) पृथिवीकायादिक एकेन्द्रिय स्थावर-प्राणियों की (हिंसति) हिंसा करते हैं ॥ सू० १९ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार कहते हैं—' मद बुद्धिया सवसा हणति ' इत्यादि।

टीकर्थ-(मदबुद्धिया) मिथ्यात्व के उदय से तत्त्व और अतत्त्व के विवेक से जिनकी बुद्धि शून्य हो रही है ऐसे प्राणी (सवसा) स्वतन्त्र बनकर अपनी इच्छानुसार त्रस स्थावर जीवों की (हणति) हिंसा करते हैं। इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणंति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

ખાતર અથવા "अणट्ठाए" વિના પ્રયોજને "तसपाणे" દ્વીન્દ્રિય આદિ ત્રસ જીવોની અને "थावरे य" પૃથિવીકાય આદિ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની "हिंसति" હિંસા કરે છે ॥ સૂ ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમજાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે– "मदबुद्धिया सवसा हणति" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"मदबुद्धिया" મિથ્યાત્વનાઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા જીવો "सवसा" સ્વતંત્ર હોવા છતા પણ પોતાની ઈચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોની "हणति" હિંસા કરે છે એ જ પ્રમાણે જે માણસ "अवसा हणति" નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન છે તેઓ

अथ यद्यपि—उद्देशक्रमानुसारेण 'जारिस फल देइ' इति चतुर्थ फलद्वार पूर्व वक्तव्य, तथापि फलस्य कर्त्रधीनत्वेन कर्तु प्राधान्यात्, अल्पवक्तव्यत्वेन सूची-कटाहन्यायाच्च पूर्व 'जेविय करेंति पावा पाणवह' इति प्रथमप्राणवधद्वारस्य

करते है जो स्वाधीन होने पर हिंसा कर्म में रत हो जाते हैं। कितनेक जीव ऐसे भी होते हैं कि जो हिंसक जीवों की सगति आदि के पराधिन होकर हिंसा करने लग जाते हैं। बहुत से ऐसे भी प्राणी है जो अपने लिये हिंसा करते है और बहुत से जीव ऐसे भी होते है कि उठते बैठते चलते फिरते विना किसी प्रयोजन के भी जीवों की हिंसा करते हैं। बहुत से जीव ऐसे भी हैं कि वे चाहे स्वतत्र रहे या परतत्र रहे किसी भी स्थिति में रहें पर फिर भी हिंसा करने से नहीं चूकते हैं। कोई जीव किसी दूसरे जीव को वैर के कारण मार डाल्ते हैं, कोई अपनी हँसी करने के कारण मार डालते हैं। और कोई २ ऐसे भी प्राणी हैं जो रति के कारण-चित्त खुशी में रहने के कारण-जीवों की हिंसा-शिकार करते हैं। इत्यादि और भी इसी तरह के कारण सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा प्रकट किये हैं जो ऊपर अर्थ में कहदिये है। इनके सिवाय दूसरे कारणों से भी हिंसा करते हैं ॥सू०२०॥

अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि उद्देशक्रम के अनुसार यद्यपि "जारिस फल देइ" यह चतुर्थ फलद्वार पहिले कहना चाहिये था तो

હોવા છતા પણ હિંસા કર્મમા લીન રહે છે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે હિંસક જીવોની સગતિ આદિ વડે પરાધીન હોવાને કારણે હિસા કરવા લાગે છે કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે સ્વાર્થને ખાતર હિસા કરે છે, અને ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે જે ઉઠતા, બેસતા, હાલતા, ચાલતા, કોઈપણ પ્રયોજન વિના જીવોની હિસા કરે છે ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે તેઓ સ્વતત્ર હોય કે પરતત્ર હોય કોઈપણ સ્થિતિમા હોવા છતા પણ હિસા કરતા અટકતા નથી કોઈ જીવ બીજા જીવોને વેરને કારણે મારી નાખે છે, કોઈ હસી-મજાકને ખાતર મારી નાખે છે, અને કોઈ કોઈ જીવો એવા પણ હોય છે કે જે રતિને કારણે-મનના આનદને ખાતર જીવોની હિસા (શિકાર) કરે છે ઈત્યાદિ બીજા પણ એ જ પ્રકારના કારણો સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કર્યા છે, જે ઉપર બતાવી દેવામા આવ્યા છે તે સિવાય બીજા કારણોથી પણ તેઓ હિસા કરે છે ॥ સૂ ૨૦ ॥

હવે સૂત્રકાર એ સ્પષ્ટ કરે છે કે ઉદ્દેશોના ક્રમ પ્રમાણે જોકે 'जारिस

एव 'कुद्धा लुद्धा मुद्धा' क्रुद्धाः लुब्धाः मुग्धाः-क्रोधलोभमोहवन्तः घ्नन्ति। 'अत्था' अर्थाः=धनार्थिनः, 'धम्मा' धर्माः=धर्मार्थिनः-जाति कुलधर्माभिमानवन्तः 'कामा' कामाः=कामार्थिनो घ्नन्ति। एव 'अत्था धम्मा कामा' अर्थ धर्मकामार्थिनो घ्नन्ति ॥सू०२०॥

करते हैं, (लुद्धा हणति) कितनेक ऐसे है जो केवल लोभ के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं, और (मुद्धा हणति) किननेक ऐसे भी हैं जो केवल मोहाधीन वृत्ति होकर जीवों की हिंसा करते है। (कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो क्रोध, लोभ, मोह इन तीनों के वशवर्ती बनकर जीवों की हिंसा करते हैं। (अत्था हणंति) कितनेक ऐसे भी जीव है जो केवल धन के अर्थी होकर ही जीवों की हिंसा करते है, (धम्मा हणति) कितनेक ऐसे भी है जो धर्मार्थी-जाति धर्म और कुलधर्म के अभिमानी होकर जीवों की हिंसा करते हैं। (कामा हणति कितनेक ऐसे भी है जो कामार्थी इन्द्रियों के विषयों को भोगने की लालसा के वशवर्ती होकर जीवो की हिंसा करते हैं और (अत्था धम्मा कामा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो अर्थ, धर्म और काम, इन तीनों के वशवर्ती होकर जीवो की हिंसा करते हैं।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने हिंसा करने की विचारधारा वाले जीवों को कहा है, वे कहते है कि किननेक जीव ऐसे भी हुआ

ક્રોધમા આવીને જીવોની હિંસા કરે છે 'लुद्धा हणति" કેટલાક કેવળ લોભને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે, "मुद्धा हणति" કેટલાક એવા પણ લોકો હોય છે કે જે કેવળ મોહાધીન થઈને જીવોની હિંસા કરે છે "कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति" કેટલાક લોકો એવા પણ છે કે જેઓ ક્રોધ લોભ, મોહ એ ત્રણેને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે "अत्था हणति" કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે ધનને માટે જ જીવોની હિંસા કરે છે "धम्मा हणति" કેટ-લાક એવા પણ જીવો છે કે જે ધર્માર્થે-જાતિધર્મ અને કુળધર્મના અભિમાનને કારણે જીવોની હિંસા કરે છે "कामा हणति" કેટલાક એવા પણ જીવો હોય છે કે જે કામાર્થ-ઇન્દ્રિયોની વિષય લાલસાને વશ થઈને જીવોના હિંસા કરે છે, અને "अत्था धम्मा कामा हणति" કેટલાક એવા પણ જીવો હોય છે કે જે અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણેને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રમા સૂત્રકારે હિંસા કરવાની વિચારધારાવાળા જીવો બતાવ્યા છે તેઓ કહે છે કે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે વીન

'वाहा' व्याधा'=मृगघातकाः, 'कूरकम्मा' क्रूरकर्माण' – दुष्टकर्मकारिणः,- 'वाउरिया' वागुरिकाः=वागुरा=मृगबन्धन तया चरन्ति ये ते वागुरिकाः= जालेन मृगबन्धकाः, 'दीविय-बधणप्पओग-तप्पगलजाल-चीरल्लगायसदन्भ वग्गुरा-कूड छलिया हत्था' द्वीपिक बन्धनप्रयोगतप्रगल्जाल-चीरल्लगायसीदर्भवा गुरा कूटछेलिकाहस्ता –'दीविय' द्वीपिका=व्याधस्य कृत्रिमा हरिणी या मृगाकर्षणार्थं स्थाप्यते 'बधणप्पओग' बन्धनप्रयोगः=मृगादि बन्धनोपकरण, 'तप्प' तप्रः =मत्स्यग्रहणी लघुनौका, 'गल' बडिश=मत्स्यवेधन कण्टक इत्यर्थः, 'जाल' प्रसिद्ध,

वाले मनुष्य, (मच्छबधा) मत्स्यबन्ध-मछलियो को मारने वाले धीवर (साउणिया) शाकुनिक-पक्षियोंकी शिकार करने वाले चीड़ीमार, (वाहा) व्याध-मृग की शिकार करने वाले बहेलियाजन, (कूरकम्मा) क्रूर कर्मा-दुष्टकर्म करने वाले मनुष्य, (वाउरिया) वागुरिका-जाल से मृग को बाधने वाले बाघरी लोग, (दीविय-बधणप्पओगतप्प-गल-जाल चीरल्लगा यस दब्भ-वग्गुरा-कूडछलिया हत्था) द्वीपिका-व्याध द्वारा मृगों को लुभाने के लिये बनाई गई कृत्रिम हरिणी, बधन प्रयोग-मृगादि जीवों को बांधने के उपकरण, तप्र मछली पकडकर जिसमें धीवर रखते जाते हैं ऐसी टोकरी, अथवा मछली जिस पर बैठकर पकड़ी जाती है ऐसी लघु नौका, गल-बडिश, बशी जिसके अग्रभाग में आटा या जीव का कलेवर आदि लगाकर मच्छीमार उसे पानी में डाल देते हैं मछली जैसे ही उसे खाती है तो उसका वह नुकीला अग्रभाग उसके कंठ में विंध जाता है, बस मच्छीमार फिर डोरे से बंधी

कूरकम्मावाउरिया" "सोयरिया"सौકરિક-સુવરનો શિકાર કરનારા મનુષ્યો,"मच्छबधा" મત્સ્યબંધ-માછલિયોને મારનાર માછીમારો, " साउणिया " શકુનિક-પક્ષીઓને શિકાર કરનાર પારધિઓ " वाहा " વ્યાધ-મૃગનો શિકાર કરનાર શિકારીઓ, " कूरकम्मा " ક્રૂરકર્મા-દુષ્ટ કર્મ કરનારા મનુષ્યો, " वाउरिया " વાગુરિકા—જાળમા મૃગને ફસાવનારા વાઘરી લોકો, " दीविय, बधणप्पओगे तप्प, डाल, जाल, चीरल्लगा-यस, दब्भ' वग्गुरा, कूडछलिया हत्था " દ્વીપિકા-વ્યાધ દ્વારા મૃગોને લલચાવવાને માટે બનાવેલી કૃત્રિમ હરિણી, બધનપ્રયોગ-મૃગાદિ જીવોને બાધવાના સાધનો, તપ્ર-મછલીને પકડીને માછીમાર જેમા મૂકે છે તે ટોપલી, અથવા જેમા બેસીને માછલા પકડવામા આવે છે તે નાની નૌકા, ગલ-બડિશ, બસી-જેના અગ્રભાગ પર લોટની કણેક કે અળસિયા આદિ જીવોના કલેવર લગાડીને માછીમાર તેને પાણીમા નાખે છે, માછલી જેવુ તે ખાવા જાય છે કે તરત જ તેનો અણીદાર અગ્રભાગ તેના કંઠમા પરોવાઇ જાય છે

पञ्चममुपद्वारमाह–'कयरेते' इत्यादि ।

मूलम्–कयरे ते ? जे ते सोयरिया मच्छबंधा साउणिय वाहा कूरकम्मा वाउरिया दीविय-बंधणप्पओग-तप्पगल-जाल-वीरल्ल-गायसदब्भ वग्गुरा-कूडछलियाहत्था हरिएसा उणिया यविदंस गपासहत्था वणचरगा लुद्धगा महुघाया पोयघाया एणीयारा पएणीयारा सरदह-दीहिय-तलाग-पल्लग-परिगालण-मलण सोतबं-धण सलिलासय सोसगा विसगरस्स य दायगा उत्तणवल्लरदव-ग्गिणिद्दयपलीवका कूरकम्मकारी ॥ सू० २१ ॥

टीका–'कयरे ते' कतरे ते प्राणवधकर्तारः ? इति प्रश्ने सत्युत्तरमाह–'सोयरिया' इत्यादि–'जे ते' ये ते 'सोयरिया' सौकरिकाः=सूकरघातकाः 'मच्छबंधा' मत्स्य-बन्धा =मत्स्यघातका धीवरा इत्यर्थ , 'साउणिया' शाकुनिकाः=पक्षिवधोपजीविनः,

---

भी फलद्वार न कह कर जो प्रथमप्राणवध द्वार का पचम उपद्वार कहा जा रहा है उसका कारण यह है कि फल, कर्त्ता के आधीन होने से पहिले कर्त्ता की प्रधानता रहती है, दूसरे कर्ता के विषय में वक्तव्य भी अल्प है तो सूची कटाहन्याय से पहिले " स वि य करेंति पावा पाणा-वह " इस प्रथमप्राणवध द्वार का यह पचम उपद्वार ही कहा जा रहा है ' कयरे ते ' इत्यादि ।

टीकार्थ–प्रश्न (कयरे ते) प्राणवध करनेवाले वे कौन २ से प्राणी हैं ? उत्तर–(जे ते) वे य २ हैं–(सोयरिया, मच्छबधा, साउणिया वाहाकूर कम्मा वाउरिया) (सोयरिया) सौकारिक–सुअर की शिकार करने

फल देह " એ ચોથુ ફલ દ્વાર પહેલા કહેવુ જોઈતું હતુ, છતા પણ ફલદ્વારનુ વર્ણન ન કરતા પહેલા પ્રાણુવધદ્વારનુ પાચમુ ઉપદ્વાર વર્ણવવામા આવ્યુ છે, તેનુ કારણ એ છે કે ફળ, કર્ત્તાને અધીન હોવાથી પહેલા કર્ત્તાની પ્રધાનતા રહે છે અને બીજુ કારણ એ છે કે કર્ત્તાની બાબતમા વક્તવ્ય–કહેવાનુ પણ થોડુ છે, તેથી સૂચી કટાહન્યાયે પહેલા " जे विय करेंति पावा पाणवह " આ પ્રથમ પ્રાણુવધ દ્વારનુ આ પાચમુ ઉપદ્વાર જ વર્ણવવામા આવી રહ્યુ છે–

" कयरे ते " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–પ્રશ્ન—" कयरे ते ? " પ્રાણુવધ કરનારા તે કયા કયા પ્રાણીઓ છે ? ઉત્તર—"जे ते" તેઓ નીચે પ્રમાણે છે–"सोयरिया, मच्छबधा साउणिया

मधुघाताः='मधु' ग्रहणेन तन्मक्षिका घातकाः 'पोयघाया' पोतघाता=पक्षिशिशु-हिंसकाः 'एणीयारा' एणीचारा -एणी=हरिणीं चारयन्ति=पालयन्ति अन्यान् मृगान् गृहीतु ये ते एणीचाराः, 'पएणीयारा' प्रैणीचाराश्च व्याधविशेषा एव। 'सरदहदीहियतलागपल्लपरिगालणमलणसोत्तबधणसलिलासयसोसगा' सरोद्रह दीर्घिका तडाग पल्वल परिगालन मलन स्रोतोबन्धन सलिलाशयशोषका, तत्र-सरः=सामान्यजलाशयः, ह्रदः=अगाधजलाशयः, दीर्घिका=वापी, तडाग =प्रसिद्धः, पल्वल=अल्पसरः, एतेषां परिगालनेन=मत्स्यादि ग्रहणाय जलनिस्सारणेन, मलनेन=मन्थनेन, स्रोतोबन्धनेन=जलप्रवाहनिरोधेन च 'सलिलाशयान्=जलाशयान् शोषयन्ति ये ते तथाभूता, 'विसगरस्सय' विषगरस्य च-विष=प्रसिद्ध, गरः=सयोगजनित विष, तयोः समाहारे तस्य 'दायगा' दायकाः जीवोपघातार्थं विष-

---

मधु-शहद को लेने के लिये जो मधुमक्खियों का घात कर देते हैं वे, (पोयघाया) पोतघातक-पक्षियों के बच्चों को मारने वाले, तथा (एणीयारा) जो मृगों को पकड़ने के अभिप्राय से मृगी-हरिणी को पालते हैं वे, तथा (पएणीयारा) जो प्रैणीचार-व्याधविशेष होते हैं वे, तथा-(सर-दह-दीहिय-तलाग-पल्लल-परिगालण-मलण-सोत्तबधण-सलिलासयसोसगा) जो सर सामान्य जलाशय, द्रह-अगाधजलाशय, दीर्घिका-वापी, तडाग, पल्वल-छोटाजलाशय, इनके जल को मत्स्यादि ग्रहण करने के अभिप्राय से जो निकाल देते हैं, तथा इनके जल का जो मन्थन-विलोडन करते हैं, अथवा इनमे जिन स्रोतों से जल आता है उन्हें बद कर देते हैं, इस तरह से जो सलिलाशयों को सुखा देते हैं वे, तथा (विसगरस्स य दायगा) विष-हलाहल जहर, गर-सयोग जनित

મધમાખીઓની હિંસા કરે છે તે, " पोयघाया " પોત ઘાતક-પક્ષીઓના બચ્ચાને મારનારા તથા- " एणीयारा " જે મૃગોને પકડવાને માટે મૃગી-હરિણીને પાળે છે તે લોકો, તથા " पइणीयारा " જે પૈણીચાર-એક પ્રકારના વ્યાધ-હોય છે તે, તથા " सर, दह, दीहिय, तलाग, पल्लल, परिगालण, मलण, सोत्तबधण, सलिलासयसोसगा," જે સર-સામાન્ય જળાશય हृद-અગાધ જળાશય, दीर्घिका-વાવ, તલાવ, पल्वल-નાનુ જળાશય, વગેરેના પાણીને માછલા વગેરે ગ્રહણ કરવાના હેતુથી બહાર કાઢી નાખે છે તથા તેના જળનુ ને મન્થન કરે છે અથવા તેમા જે સ્રોતો દ્વારા પાણી આવતુ હોય તે સ્રોતોને બધ કરી દે છે આ રીતે જે લોકો જળાશયોને સૂકવી નાખે છે તે લોકો તથા " विसगरस्स य दायगा " વિષ-હળાહળ ઝેર, ગર-સયોગ-જનિત વિષ આદિ જીવોને મારી

'चीरल्लग' चीरल्लकः-श्येनाभिधो हिंसकपक्षिविशेषः-योऽन्यपक्षिवधार्थं पाल्यते, 'आयस' लोहनिर्मितबन्धनविशेषः, 'दब्भ' दर्भः=दर्भमयबन्धनविशेषः, 'वगुरा' वागुरा=पाशः, कूटछेलिका=कूटाजा, सिंहादि मलोभनार्थं चित्रलेप्यादिमयी छगलिका एते हस्ते येषां ते तथाभूताः। 'हरिएसा' हरिकेशाः=मातङ्गाश्चाण्डला इत्यर्थः, 'उणिया य' कुणिकाश्च तत्सेवकाः 'वीदसगपासहत्था' वीतसकपाशहस्ताः =वीतसकाः=मृगपक्षिबन्धनसाधनानि, पाशाश्च, ते हस्ते येषां ते वीतसकपाशहस्ताः, 'वणचरगा' वनचरकाः=किराताः, 'लुद्धगा' लुब्धकाः=व्याधाः, 'महुघाया'

हुई इस वंशी को तान लेते है, विंधी हुई मछली इसी के साथ बाहर निकल आती है और मच्छीमार इसे पकड़ लेते हैं। जाल-मछली आदि पकड़ने की एक प्रकार की जाल, चीरल्लक-हिंसकपक्षिविशेष यह पक्षी अन्य पक्षियों को मारने के लिये शिकारियो द्वारा पाला जाता है, आयस लोह का बना हुआ बंधन विशेष, दर्भ-दर्भमय बंधन विशेष, वागुरा-पाश, कूट छलिका-बनावटी बकरी जो सिंहादि जानवरो को लुभाने के लिये बनाकर रखी जाती है, ये सब जिनके हाथो में है ऐसे प्राणी। इस सब प्राणीवध के कर्त्ता जानना चाहिये। तथा (हरिएसा) हरिकेश-चाण्डाल, (उणिया) कुणिक-चाण्डाल के सेवकजन, (वीदगपासहत्था) वीतसक-मृग एवं पक्षियों के बांधने का साधन और पाश जिनके हाथ में हैं ऐसे (वणचरगा) किरात। ये भी प्राणवध के करने वाले माने गये है। (लुद्धगा) लुब्धक-व्याध, (महुघाया) मधुघातक-

त्याબાદ માછીમાર દોરીથી બાંધેલી તે જાળને ખેંચી લે છે, તેમાં ચોંટી ગયેલી માછલીઓ તેની સાથે જ બહાર નીકળી આવે છે અને માછીમાર તેને પકડી લે છે જાળ-માછલા આદિ પકડવાની એક પ્રકારની જાળ, चीरल्लक-એક હિંસક પક્ષીનુ નામ, તે પક્ષી બીજા પક્ષીઓને મારવાને માટે શિકારીઓ વડે પળાય છે आयस-લોઢાનુ બનાવેલુ એક જાતનુ બંધન, "दब्भ" દર્ભનુ એક જાતનુ બંધન, वागुरा-પાશ, कूटछलिका-નકલી બકરી કે જે સિંહ આદિ જાનવરોને લલચાવવા માટે બનાવીને રાખવામા આવે છે, એ સઘળી ચીજો જેમના હાથમા છે તેવા સઘળા જીવો પ્રાણવધ કરનારા હોય છે તથા "हरिएसा" હરિકેશ-ચાંડાળ, "उणिया" કુણિક-ચાંડાળના સેવકો, "वीदसगपासहत्था" વીતસક-મૃગ અને પક્ષીઓને બાંધવાનુ એક સાધન અને પાશ જેના હાથમા છે એવા "वणचरगा" કિરાત વગેરે પ્રાણવધ કરનારા મનાય છે "लुद्धगा" લુબ્ધક-વ્યાધ, "महुघाया" મધુ ઘાતક-મધ લેવાને ...

'सक' शकाः=शकदेशोत्पन्नाः, 'जवण' यवनाः=प्रसिद्धाः, 'सवर' शवराः=शवरदेशोत्पन्ना भिल्लाः 'बब्बर' बर्बराः=बर्बरोऽनार्यदेशविशेषस्तत्र भवा बर्बरा 'काय' कायाः=कायदेशविशेषोद्भवाः' मरुड ' मुरूण्डाः=मुरुण्डदेशीयाः, ' उदाः ' अनार्यविशेषाः ' भडग ' भटकाः=भटकदेशवासिनः ' तित्तिय ' तित्तिकाः=तित्तिकदेशजाताः, ' पक्कणिय ' पक्कणिकाः=तद्देशजाताः, ' कुलक्ख ' कुलक्षाः=अनार्यदेशोद्भवाः, ' गोड ' गौडाः=गौडदेशोत्पन्नाः, ' सिंहल ' सिंहलाः=सिंहलद्वीपोत्पन्नाः, 'पारस' पारसाः=पारसदेशजाताः, 'कोंच' क्रौञ्चाः=क्रौञ्चदेशोद्भवाः,'अंध' आन्ध्राः=अन्ध्रदेशोत्पन्नाः, 'दविल' द्राविडाः=द्रविडदेशजाताः, 'बिल्लल' बिल्वलाः

' इमे य बहवे मिलक्खुजाईया ' इत्यादि।

टीकार्थ-(इमे य) अनुपद वक्ष्यमाण ये (बहवे) बहुत से (मिलक्खु जाईया) म्लेच्छ-जातीय-अनार्य हैं। (किंते ?) वे कौन २ हैं

उत्तर—(सक) शक-शक देशवासी, (जवण) यवन-प्रसिद्ध है, (सवर) शबर-शबर देशोत्पन्न भील, (बब्बर) बब्बर-बर्बर नाम के अनार्यदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (काय) काय-इस नाम के देश विशेष में जन्मे मनुष्य, (मुरुड) मुरुण्ट-मुरुण्डदेश में पैदा हुए मनुष्य, (उद) उद-इस जाति के अनार्य मनुष्य, (भडग) भटक-भटक देशनिवासी मनुष्य, (तित्तिय) तित्तिय-तित्तिक देश के मनुष्य, (पक्कणिय) पक्कणिक-देश के मनुष्य, (कुलक्ख) कुलक्ख-कुलक्षनाम के अनार्य देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गोड) गौड-इस जाति के मनुष्य, (सिंहल) सिंहल-सिंहल द्वीप में उत्पन्न हुए मनुष्य, (पारस) पारस-पारस देश में उत्पन्न हुए

બહવે મિલક્ખુજાઈયા " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"इमेय" નીચે પ્રમાણેની " बहवे " ઘણીખરી "मिलक्खु जाईया" મ્લેચ્છ જાતો-અનાર્ય છે " किं ते ? " તે અનાર્ય જાતિ કયી કયી છે?

ઉત્તર–"सक" શક-શકદેશના રહેવાસી "जवण" યવન, "सवर" શબર -શબરદેશના વતની ભીલ, "बब्बर" બર્બર નામના અનાય દેશના વતનીઓ, "काय" એ નામના દેશમા જન્મેલા મનુષ્ય, "मुरुड" મુરુડ-દેશમા જન્મેલા લોકો, "उद" એ જાતિના અનાર્ય લોકો, " भडग " ભટક દેશના રહેવાસી, "तित्तिय" તિત્તિક દેશના વતની, "पक्कणिक" પક્કનિક દેશના લોકો, "कुलक्ख" કુલક્ષ નામના અનાર્ય દેશના લોકો, "गोड" ગૌડ જાતિના લોકો, " सिंहल " સિંહલ-સિંહલદ્વીપના લોકો, " पारस " પારસ-પારસ (ઇરાન)મા જન્મેલા લોકો,

प्रयोगकर्त्तार इत्यर्थः । 'उत्तणवल्लरदवग्गिणिद्दयपलीवगा' उत्तृणवल्लरदवाग्नि-निर्दयप्रदीपकाः-उत्तृणानां=वर्धिततृणानां वनानां, वल्लराणां=गहनवनानामरण्यक्षेत्राणां वा, दवाग्निना=दावानलेन निर्दयं=दयारहितं यथास्यात्तथा प्रदीपकाः= प्रज्वालकाः, 'कूरकम्मकारी' क्रूरकर्मकारिणः=कठोरकर्मकर्तारः घातकाः घ्नन्ति= प्राणवधं कुर्वन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः ॥सू० २१॥

तानेव जातिनिर्देशपूर्वकं वर्णयति-'इमेय बहवे' इत्यादि ।

मूलम्-इमेय बहवे मिलक्खुजाईया, के ते ?, सक-जवण-सवर-बब्बर-काय मरुडो-द-भडग-तित्तिय पक्कणिय-कुलक्ख-गोड-सिंहल-पारस कोचंध-दविल-विल्लल-पुलिंद-अरोस-डोंव-पक्कण-गंध हारग-बहलिय-जल्ल-रोम-मास-बउस-मलया-चुंचुया-य चूलियग-कोंकणग-कणग-सेय-मेया-पण्हव मालव-महुर-आभासिय-अणक्ख चीण-लासिय-खस-खासिया-नेहुर-मरहट्ठ-मुट्ठिअ-आरव-डोविलग कुहण-केकय-हूण-रोमग-रुरु-मरुया-चिलायविसयवासी य पावमइणो ॥ सू० २२ ॥

टीका--'इमेय' इमे च-अनुपदं वक्ष्यमाणाः 'बहवे' बहवः 'मिलक्खुजाईया' म्लेच्छजातीयाः=अनार्याः सन्ति। 'किं ते ?' के ते ? इत्याह-'सके' त्यादि।

विष, इन्हें जो जीवों को मारने के अभिप्राय देते है वे, तथा (उत्तण-वल्लर-दवग्गि-णिद्दय-पलीवगा) जो निर्दय होकर उत्तणों को-वर्धित-तृणवाले वनों को वल्लरों को गहनवनों को अथवा अरण्य के खेतों को दावानल से जला देते हैं वे सब (क्रूरकम्मकारी) क्रूरकर्मकारी माने गये है और ऐसे प्राणी ही प्राणवध के करनेवाले होते हैं ॥सू०२१॥

सूत्रकार इन्हीं प्राणियों को जाति निर्देश पूर्वक वर्णन करते हैं—

નાખવાને માટે જેઓ તેમને ખવરાવે છે તેઓ તથા ' उत्तण-वल्लर, दवग्गि, णिद्दय पलीवगा " જે નિર્દય થઈને ઉત્તૃણોને વર્ધિત તૃણવાળા વનોને, વલ્લ-રોને,-ગહન વનોને, અથવા વનના ક્ષેત્રોને દાવાનળ લગાડીને સળગાવે છે તે બધાને "क्रूरकम्मकारी" ક્રૂરકર્મ કરનારા માનવામા આવે છે અને તેવા જીવોજ પ્રાણવધ કરનાર છે ॥ સૂ ૨૧ ॥

સૂત્રકાર એજ પ્રાણીઓનુ જાતિના નિર્દેશ સહિત વર્ણન કરે છે " इमेय

निसयवासी य ' चिलात विषयवासिनश्च, चिलातदेशवासिनोऽनार्याः, 'पावमइणो ' पापमतयः=पापबुद्धय. सन्ति ॥ सू०२२ ॥

पुनरपि केके जीवाः पाप कुर्वन्तीति तान् दर्शयितुमाह-'जलयर' इत्यादि।

मूलम्-जलयर-थलयर-सणप्फय-ओरग-खहयर-संडास-तोंड-जीवोवघायजीवी सण्णी य असण्णिणो पज्जत्ते अपज्जत्ते य-असुभलेस्स परिणमे एए अण्णे य एवमाई करेंति पाणाइवायकरणं। पावा पावाभिगमाः पावमई पावरुई पाणवहकयरई पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमता तुट्ठा पाव करेत्तु हुतिय बहुप्पगारं ॥ सू० २३ ॥

टीका—' जलयर-थलयर-सणप्फओरग-खहयर-सडासतोड जीवोवघाय-जीवी ' जलचर स्थलचर सनखपदोरग-खचर सदंशतुण्ड जीवोपघातजीविनः= जलचरा =ग्राहादय , स्थलचरा =चतुष्पदाः, सनखपदा =नखयुक्तचरणाः=व्या-

---

निसयवासी य) चिलात देशवासी मनुष्य, ये सब अनार्य हैं (पावमइणो) इनकी बुद्धि पापकर्म मे रत रहती है। ये जितने भी नाम के कहे हैं वे सब पापकर्म में रतमतिवाले हे और ये प्राणवध के करने वाले हैं ॥ सू० २२ ॥

अब सूत्रकार फिर यह कहते हैं कि कौन२ से जीव पाप करतेहैं— ' जलचर थलचर ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जलयर) ग्राह आदि जलचर जीव,(थलयर) चतुष्पद-गाय, भैस, आदि चार पद वाले स्थलचर जीव, (सणप्फय) नखयुक्त पैरोंवाले

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સઘળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " पावमइणो " તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ બતાવી છે તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમા રત-લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ પ્રાણુવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે "जलयर थलचर " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-"जलयर" ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, "थलयर" ચતુષ્પદ-ગાય,ભેસ આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, " सणप्फय " નહોર યુક્ત પગવાળા વાઘ આદિ

बिल्वलदेशोद्भवाः, 'पुलिंद' पुलिन्दाः-पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, 'अरोस' अरोषा = अरोषदेशजा , 'डोंब' डोंबाः=डोम्बदेशोद्भवाः, 'पोक्कण' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, 'गधहारग' गन्धहारका=गन्धारदेशजाताः, 'बहलिय' बहलिकाः =बहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः-रोमा मासाः 'बउस' बकुशाः मलयाः 'चुचुया य' चुञ्चुकाश्च, 'चूलियग' चूलिकाः 'कोंकणग' कोंकणकाः 'कणग' कनका 'सेय' सयाः 'मेया' मेदाः, 'पण्हव' पह्लवाः, 'मालव' माल्वाः 'महुरा' मधुराः, 'आभासिय' आभाषिकाः, 'अणक्ख' अनक्षाः 'चीण' चीनाः 'लासिय' लासिकाः खसाः 'खासिय' खासिकाः 'नेहुर' निष्ठुरा 'मरहट्ठ' महाराष्ट्राः 'मुट्ठिअ' मौष्टिकाः, 'आरबाः' 'डोबिलग' 'डोबिलका , कुहणा केकया , हूणाः, 'रोमग' 'रोमकाः 'रुरु' रुरवः 'मरूया' मरुकाः, 'जल्लाः' इत्यारभ्य मरुकपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्तन्नामक म्लेच्छदेशविशेषोद्भवाः, 'चिलाय

मनुष्य, (कोंच) क्रौच-क्रौच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश मे उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (विल्लल) बिल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिंद) पुलिंद-पुलिंददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोष-अरोषदेशज (डोंब) डोंब-डोम्ब देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (बहलिय) बहलिय-बहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ल) रोम, मास बकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कोंकणक, कनक, सेय, मेद, पह्लव, मालव, मधुर, आभिषक, अनक्ष, चीन, लासिक,खस, खासिक, निष्ठुर, महाराष्ट्र, मौष्ठिक, आरब, डोबिलक, कुणह, केकय, हूण, रोमक, रुरु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के म्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं। तथा (चिलाय-

"कोंच" क्रौच-क्रौच देशमा जन्मेला लोको, "अध" आध्र-आध्र देशमा जन्मेला लोको, 'दविल" द्राविड-द्राविड देशमा जन्मेलालोको, "विल्लल" બિલ્વલ તે નામના દેશમા જન્મેલા લોકો, "पुलिंद" પુલિંદ-પુલિંદ દેશના લોકો, "अरोस" આરોષ-આરોષ દેશમા જન્મેલા, "डोंब" ડોબ-ડોબ દેશમા જન્મેલા, "पोक्कण" પોક્કણ- દેશના લોકો, "गध" -ગાધાર દેશમા જન્મેલા લોકો, "बहलिय" બહલિક-બહલી દેશમા ઉત્પન્ન થયેલ લોકો, એજ રીતે "जल्ल" રોમ, માસ, બકુશ, મલય, ચુચુક, કોકણક, કનક, સય, મેદ, પહ્લવ, માલવ, મધુર, આભાષિક, અનક્ષ, ચીન, લાસિક, ખસ, ખાસિક, નિષ્ઠુર, મહારાષ્ટ્ર મૌષ્ઠિક, આરબ, ડોબિલક, કુહણ, કેકય, હૂણ, રોમક, રુરુ, અને મરુક તે બધા તે તે દેશમા જન્મેલા લોકો છે તથા, "चिलाय विं सयवासो य" ચિલાત

विसयवासी य ' चिलात विषयवासिनश्च, चिलातदेशवासिनोऽनार्याः, ' पावमइणो ' पापमतयः=पापबुद्धयः सन्ति ॥ सू०२२ ॥

पुनरपि केके जीवाः पाप कुर्वन्तीति तान् दर्शयितुमाह–'जलयर' इत्यादि।

मूलम्–जलयर–थलयर–सणप्फय–ओरग–खहयर–संडास-तोंड–जीवोवघायजीवी सण्णी य असण्णिणो पज्जत्ते अपज्जत्ते य–असुभलेस्स परिणमे एए अण्णे य एवमाई करेंति पाणाइवायकरणं। पावा पावाभिगमा पावमई पावरुई पाणवहकयरई पाणवहरूवाणुट्टाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्ठा पाव करेत्तु हुतिय बहुप्पगारं ॥ सू० २३ ॥

टीका—' जलयर–थलयर–सणप्फओरग–खहयर–सडासतोंड जीवोवघायजीवी ' जलचर स्थलचर सनखपदोरग–खचर सदंशतुण्ड जीवोपघातजीविनः= जलचरा =ग्राहादय , स्थलचरा'=चतुष्पदाः, सनखपदा =नखयुक्तचरणाः=व्या-

---

विसयवासी य) चिलात देशवासी मनुष्य, ये सब अनार्य हैं (पावमइणो) इनकी बुद्धि पापकर्म में रत रहती है। ये जितने भी नाम के कहे हैं वे सब पापकर्म में रतमतिवाले हे और ये प्राणवध के करने वाले हैं ॥ सू० २२ ॥

अब सूत्रकार फिर यह कहते हैं कि कौन२ से जीव पाप करतेहैं— ' जलचर थलचर ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(जलयर) ग्राह आदि जलचर जीव, (थलयर) चतुष्पद–गाय, भैंस, आदि चार पद वाले स्थलचर जीव, (सणप्फय) नखयुक्त पैरोंवाले

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સઘળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " पावमइणो " તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ બતાવી છે તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમા રત–લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે "जलयर थलचर " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"जलयर" ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, "थलयर" ચતુષ્પદ–ગાય,ભેસ આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, " सणप्फय " નહોર યુક્ત પગવાળા વાઘ આદિ

विल्वलदेशोद्भवाः, 'पुलिंद' पुलिन्दाः-पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, 'अरोस' अरोषा= अरोषदेशजा, 'डोंव' डोंवाः=डोम्बदेशोद्भवाः, 'पोकण' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, 'गधहारग' गन्धहारकाः=गन्धारदेशजाताः, 'बहलिय' बहलिकाः =बहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः-रोमा मासाः 'बउस' बकुशाः मलयाः 'चुंचुया य' चुञ्चुकाश्च, 'चूलियग' चूलिकाः 'कोंकणग' कोंकणकाः 'कणग' कनकाः 'सेय' सयाः 'मेया' मेदाः, 'पण्हव' पह्लवाः, 'मालव' मालवाः 'महुरा' मधुराः, 'आभासिय' आभाषिकाः, 'अणक्ख' अनक्षाः 'चीण' चीनाः 'लासिय' लासिकाः खसाः 'खासिय' खासिकाः 'नेहुर' निष्ठुरा 'मरहट्ठ' महाराष्ट्राः 'मुट्ठिअ' मौष्टिकाः, 'आरबाः' 'डोविलग' 'डोविलकाः, कुहणा केकया, हूणाः, 'रोमग' 'रोमकाः 'रुरु' रुरवः 'मरुया' मरुकाः, 'जल्लाः' इत्यारभ्य मरुकपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्तन्नामक म्लेच्छदेशविशेषोद्भवाः, 'चिलाय

मनुष्य, (कोंच) क्रौंच-क्रौंच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश मे उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (विल्लल) बिल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिंद) पुलिंद-पुलिंददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोष-अरोषदेशज (डोंव) डोंब-डोम्ब देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (बहलिय) बहलिय-बहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ल) रोम, मास बकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कोंकणक, कनक, सेय, मेद, पह्लव, मालव, मधुर, आभिषक, अनक्ष, चीन, लासिक,खस, खासिक, निष्ठुर, महाराष्ट्र, मौष्ठिक, आरब, डोविलक, कुणह, केकय, हूण, रोमक, रुरु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के म्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं। तथा (चिलाय-

"कोंच" ક્રૌચ-ક્રૌચ દેશમા જન્મેલા લોકો, "अध" આધ્ર-આધ્ર દેશમા જન્મેલા લોકો, 'दविल" દ્રાવિડ-દ્રાવિડ દેશમા જન્મેલાલોકો, "विल्लल" બિલ્વલ તે નામના દેશમા જન્મેલા લોકો, "पुलिंद" પુલિંદ-પુલિંદ દેશના લોકો, "अरोस" આરોષ-આરોષ દેશમા જન્મેલા, "डोंब" ડોબ-ડોબ દેશમા જન્મેલા, "पोक्कण" પોક્કણ- દેશના લોકો, "गध" -ગાધાર દેશમા જન્મેલા લોકો, "बहलिय" બહલિક-બહલી દેશમા ઉત્પન્ન થયેલ લોકો, એજ રીતે "जल्ल" રોમ, માસ, બકુશ, મલય, ચુચુક, કોકણક, કનક, સય, મેદ, પહવણ, માલવ, મધુર, આભાષિક, અનક્ષ, ચીન, લાસિક, ખસ, ખાસિક, નિષ્ઠુર, મહારાષ્ટ્ર મૌષ્ટિક, આરબ, ડોવિલક, કુહણ, કેકય, હૂણ, રોમક, રુરુ, અને મરુક તે બધા તે તે દેશમા જન્મેલા લોકો છે તથા, "चिलाय विं सयवासी य" ચિલાત

विसयवासी य ' चिलात विषयवासिनश्च, चिलातदेशवासिनोऽनार्याः, ' पावमइणो ' पापमतयः=पापबुद्धयः सन्ति ॥ सू०२२ ॥

पुनरपि केके जीवाः पाप कुर्वन्तीति तान् दर्शयितुमाह-'जलयर' इत्यादि।

मूलम्-जलयर-थलयर-सणप्फय-ओरग-खहयर-संडासतोंड-जीवोवघायजीवी सण्णी य असण्णिणो पज्जत्ते अपज्जत्ते य-असुभलेस्स परिणमे एए अण्णे य एवमाई करेंति पाणाइवायकरणं। पावा पावाभिगमा' पावमई पावरुई पाणवहकयरई पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमता तुट्ठा पाव करेत्तु हुतिय वहुप्पगार ॥ सू० २३ ॥

टीका—' जलयर-थलयर-सणप्फओरग-खहयर-सडासतोड जीवोवघायजीवी ' जलचर स्थलचर सनखपदोरग-खचर सदशतुण्ड जीवोपघातजीविनः=जलचरा =ग्राहादय , स्थलचरा =चतुष्पदाः, सनखपदा =नखयुक्तचरणाः=व्या-

---

विसयवासी य) चिलात देशवासी मनुष्य, ये सब अनार्य हैं (पावमइणो) इनकी बुद्धि पापकर्म में रत रहती है। ये जितने भी नाम के कहे हैं वे सब पापकर्म में रतमतिवाले हैं और ये प्राणवध के करने वाले हैं ॥ सू० २२ ॥

अब सूत्रकार फिर यह कहते हैं कि कौन२ से जीव पाप करतेहैं— ' जलचर थलचर ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जलयर) ग्राह आदि जलचर जीव, (थलयर) चतुष्पद-गाय, भैंस, आदि चार पद वाले स्थलचर जीव, (सणप्फय) नखयुक्त पैरोंवाले

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સઘળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " पावमइणो " તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમાં લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ બતાવી છે તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમાં રત-લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે "जलयर थलचर " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-"जलयर" ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, "थलयर" ચતુષ્પદ-ગાય,ભેંસ આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, " सणप्फय " નહોર યુક્ત પગવાળા વાઘ આદિ

घ्रादयः, उरगाः=सर्पा, खचराः-पक्षिणः श्येनादय, सदंशतुण्डाः=सदंशमिव तुण्डो येषा ते सदंशतुण्डाः=ढङ्ककङ्कादि पक्षिण, एषा द्वन्द्वस्ततः ते च ते 'जीवो पघातेन=जीवहिंसया जीवन्ति – इति, जीवोपघातजीविनश्चेति तथोक्ताः। 'सण्णीय' सञ्ज्ञिनश्च 'असण्णिणो' असञ्ज्ञिन 'पज्जत्त अपज्जत्ते य' पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च=सर्वे जीवा-पर्याप्ता अपर्याप्ताश्चेति द्विविधा भवन्ति तत्र पर्याप्तयो विद्यन्ते येषां ते पर्याप्ताः पर्याप्तनामकर्मोदयात् पर्याप्तियुक्ता जीवाः, ते द्विविधा लब्धिपर्याप्ताः, करणपर्याप्ताश्च। ये सर्वा अपि पर्याप्तीः पूरयित्वा म्रियन्ते न ततः प्राक् ते लब्धिपर्याप्ताः, ये पुनः शरीरेन्द्रियादीनि करणानि

व्याघ्र आदि जीव (ओरग) उरग-छाती के सहारे चलने वाले सांप, (खहयर) श्येन आदि पक्षी खेचर जीव (सदसतोंड) सदश-सडासी के जैसे मुखवाले ढक कक आदि पक्षी (जीवोवघायजीवी) ये सब जीवों की हिंसा करके अपना जीवन निर्वाह करने वाले हैं। तथा (सण्णीय) जिनके मन है ऐसे सज्ञी पचेन्द्रिय जीव और (असण्णिणो) जिनके मन नहीं है ऐसे असज्ञी पचेन्द्रिय जीव, ये सब पाप करके प्रसन्न होते हैं। जलचर से लेकर असज्ञी पर्यन्त के जितने भी जीव है सब (पज्जत्ते अपज्जत्ते य) पर्याप्त और अपर्याप्त होते हे । पर्याप्त नामकर्म के उदय से जिनकी अपनी२ योग्य पर्याप्तियां पूर्ण हो जाती हैं वे पर्याप्त जीव हैं, और जिनकी पर्याप्तिया पूर्ण नही होती है वे अपर्याप्त जीव हैं। ये पर्याप्त जीव लब्धिपर्याप्त और करणपर्याप्त के भेद से दो प्राकार के होते हैं। जो समस्त पर्याप्तियों को पूरण करके ही मरते है

જીવો, "ओरग" ઉરગ-પેટે ચાલનારા સાપ, "खहयर" બાજ આદિ નભ ચર પક્ષી, "सदसतोड" સદશ-સાણસીના જેવા મુખવાળા ઢક, કક આદિ પક્ષીઓ "जीवोवधाय जीवी" એ બધા જીવોની હિંસા કરીને પોતાનો જીવન નિર્વાહ કરનાર જીવો છે તથા "सण्णीय" જેમને મન છે એવા સજ્ઞી પચે ન્દ્રિય જીવ, અને "असण्णिण्णो" જેમને મન નથી એવા અસજ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવ, એ બધા પાપ કરીને પ્રસન્ન થાય છે જળચરથી લઈ ને અસજ્ઞી સુધીના આ જેટલા જીવ છે તે બધા "पज्जत्ते अपज्जत्ते य" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત હોય છે પર્યાપ્ત નામકર્મના ઉદયથી જેમની પોત પોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિઓ પૂર્ણ થઈ જાય છે તેમને પર્યાપ્ત જીવો કહે છે અને જેમની પર્યાપ્તિઓ પૂર્ણ થતી નથી તે જીવોને અપર્યાપ્ત જીવો કહે છે પર્યાપ્ત જીવોના બે ભેદ છે (૧) લબ્ધિ પર્યાપ્ત (૨) કરણપર્યાપ્ત જે જીવો સમસ્ત પર્યાપ્તિઓ પૂરી કરીને

निर्वर्तितवन्तस्ते करणपर्याप्ताः। तदितरे-अपर्याप्ताः। 'असुभलेस्सपरिणामे' अशुभलेश्यपरिणामाः=अशुभलेश्याः=संक्लिष्टलेश्यायुक्ताः परिणामाः=अध्यवसाया येषां ते, एते पूर्वोक्ताः 'अण्णे य' अन्ये च=अन्येऽपि 'एवमाई' एवमादयः= एतादृशा प्राणिनः, 'पाणाइवायकरण' प्राणातिपातकरण=प्राणातिपातानुष्ठान 'करेंति' कुर्वन्ति, पुनरपि तदेवाह-'पावा' इत्यादि-'पावा' पापाः=पापकर्म-तत्पराः, 'पावाभिगमा' पापाभिगमाः=पापमेव अभिगमः=स्वीकारो येषां ते तथा 'पावमई' पापमतयः=पापबुद्धयः, 'पावरुई' पापरुचयः=पापे एव रुचि=रनु-रागो येषां ते तथा, 'पाणवहकयरई' प्राणवधकृतरतयः=प्राणवधे कृता-रतिः= प्रीतिर्यैस्ते तथा, 'पाणवहरूवाणुट्ठाणा' प्राणवधरूपानुष्ठाना=प्राणवधरूपमनुष्ठान

इसके पहिले नहीं वे लब्धिपर्याप्त जीव हैं। तथा जो जीव शरीर इन्द्रिय आदि करणों की रचना को पूर्ण कर चुकते हैं वे करणपर्याप्त है। इनसे भिन्न जो जीव हैं वे अपर्याप्त हैं तथा (असुभलेस्सपरिणामे) जिन जीवों के अध्यवसाय-परिणाम-संक्लिष्ट लेश्यायुक्त हैं (एए) ये तथा (अण्णे य एवमाई) इनसे भिन्न और भी ऐसे ही प्राणी (करेंतिपाणाइवाय करण) प्राणातिपातरूप पाप के करने वाले होते हैं। इसी बात को सूत्रकार "पावा" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं (पावा) जो पापकर्म करने में तत्पर है, (पावाभिगमा) पाप प्रवृत्ति ही जिन्हें स्वीकृत है, (पावमई) जिनकी बुद्धि पापमय हो रही है, (पावरुई) पापकर्म में जिनकी रुचि अधिक से अधिक रूप में सजग रहती है, (पाणावहकयरई) प्राणवध में जिन्हे आनद आता है (पाणावहरूवाणु-

---

મરે છે-તે પહેલા મરતા નથી, તેમને લબ્ધિ પર્યાપ્ત જીવો કહે છે તથા જે જીવો શરીર ઇન્દ્રિય આદિ કરણોની રચના પૂર્ણ કરી નાખે છે, તે જીવોને કરણ પર્યાપ્ત કહે છે તેમનાથી જે ભિન્ન પ્રકારના જીવો છે તેઓ અપર્યાપ્ત છે, તથા "असुभलेस्सपरिणामे" જે જીવોના અધ્યવસાય-પરિણામ- સંક્લિષ્ટ લેશ્યા યુક્ત હોય છે "एए" તેઓ તથા "अण्णेय एवमाई" તે સિવાયના બીજા પણ એવા જ પ્રાણીઓ "करेति पाणाइ वायकरण" પ્રાણાતિપાત રૂપ પાપ કરનારા હોય છે એજ વાતને સૂત્રકાર "पावा" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે "पावा" જે પાપકર્મ કરવાને તત્પર હોય છે, "पावाभिगमा" પાપ પ્રવૃત્તિ જ જેમણે સ્વીકારેલી છે "पावमई" જેમની બુદ્ધિ પાપમય થઈ ગઈ છે, "पावरुई" પાપકર્મમા જ જેમની વૃત્તિ વધારેમા વધારે જાગૃત રહે છે, "पाणवह कयरई" પ્રાણવધમા જેમને મજા આવે છે, "पाणवहरूवाणु

ग्रादयः, उरगाः=सर्पा, खचराः-पक्षिणः श्येनादय, सदशतुण्डाः=सदशमिव-तुण्डो येषा ते सदंशतुण्डाः=ढङ्ककङ्कादि पक्षिण, एषा द्वन्द्वस्ततः ते च ते 'जीवो पघातेन=जीवहिंसया जीवन्ति – इति, जीवोपघातजीविनश्चेति तयोक्ताः। 'सण्णीय' सज्ञिनश्च 'असण्णिणो' असज्ञिन 'पज्जत्त अपज्जत्ते य' पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च=सर्वे जीवा-पर्याप्ता अपर्याप्ताश्चेति द्विविधा भवन्ति तत्र पर्याप्तयो विद्यन्ते येषा ते पर्याप्ताः पर्याप्तनामकर्मोदयात् पर्याप्तियुक्ता जीवाः, ते द्विविधा लब्धिपर्याप्ताः, करणपर्याप्ताश्च। ये सर्वा अपि पर्याप्तीः पूरयित्वा म्रियन्ते न ततः प्राक् ते लब्धिपर्याप्ताः, ये पुन' शरीरेन्द्रियादीनि करणानि

व्याघ्र आदि जीव (ओरग) उरग-छाती के सहारे चलने वाले सांप, (खहयर) श्यन आदि पक्षी खेचर जीव (सदसतोंड) सदश-सडासी के जसे मुखवाले ढक कक आदि पक्षी (जीवोवघायजीवी) ये सब जीवों की हिंसा करके अपना जीवन निर्वाह करने वाले हैं। तथा (सण्णीय) जिनके मन है ऐसे सज्ञी पचेन्द्रिय जीव ओर (असण्णिणो) जिनके मन नहीं है ऐसे असज्ञी पचेन्द्रिय जीव, ये सब पाप करके प्रसन्न होते हैं। जलचर से लेकर असज्ञी पर्यंन्त के जितने भी जीव है सब (पज्जत्ते अपज्जत्ते य) पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं। पर्याप्त नामकर्म के उदय से जिनकी अपनी२ योग्य पर्याप्तियाँ पूर्ण हो जाती हैं वे पर्याप्त जीव हैं, और जिनकी पर्याप्तिया पूर्ण नही होती हैं वे अपर्याप्त जीव है। ये पर्याप्त जीव लब्धिपर्याप्त और करणपर्याप्त के भेद से दो प्राकार के होते हैं। जो समस्त पर्याप्तियों को पूरण करके ही मरते हैं

જીવો, "ओरग" ઉરગ-પેટે ચાલનારા સાપ, "खहयर" બાજ આદિ નભ ચર પક્ષી, "सदसतोंड" સદશ-સાણસીના જેવા મુખવાળા ઢક, કક આદિ પક્ષીઓ "जीवोवघाय जीवी" એ બધા જીવોની હિંસા કરીને પોતાનો જીવન નિર્વાહ કરનાર જીવો છે તથા "सण्णीय" જેમને મન છે એવા સજ્ઞી પચે ન્દ્રિય જીવ, અને "असण्णिण्णो" જેમને મન નથી એવા અસજ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવ, એ બધા પાપ કરીને પ્રસન્ન થાય છે જળચરથી લઈને અસજ્ઞી સુધીના આ જેટલા જીવ છે તે બધા "पज्जत्ते अपज्जत्ते य" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત હોય છે પર્યાપ્ત નામકર્મના ઉદયથી જેમની પોત પોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થઇ જાય છે તેમને પર્યાપ્ત જીવો કહે છે અને જેમની પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થતી નથી તે જીવોને અપર્યાપ્ત જીવો કહે છે પર્યાપ્ત જીવોના બે ભેદ છે (૧) લબ્ધિ પર્યાપ્ત (૨) કરણપર્યાપ્ત જે જીવો સમસ્ત પર્યાપ્તિયો પૂરી કરીને

महोसिण सयापतत्त–दुग्गधविस्स–उव्वेयजणगेसु वीभच्छदरिसणिज्जेसु य निच्चं हिमपडलसीयलेसु कालोभासेसु य भीम गंभीर लोमहरिसणेसु णिरभिरामेसु निप्पडियार वाहिरोगजरापालिएसु अईव निच्चधयारतमिस्सेसु पइभएसु ववगयगह–चंद–सूर–णक्खत्त–जोइसेसु मेयवसामसपडल- पोच्चड-पूयरुहिरुक्किपण विलीण-चिक्कणरासिया वावण्णकुहिय चिक्खल्लकद्दमेसु कुकूलानल–पलित्तजालमुम्मुर असिक्खुरकरवत्तधारासु निसिय विच्छुयडक निवातोवम-फरिस अतिदुस्सहेसु य अत्ताणा असरणा कडुयदुक्खपरितावणेसु अणुवद्ध निरतरवेयणेसु जमपुरिससकुलेसु ॥ सू० २४ ॥

टीका—'तस्स य पावस्स' तस्य च पापस्य=प्राणवधस्वरूपस्य पाप वृक्षस्य 'फलविवाग' फलनिपाक="प्राणातिपातस्य नरकनिगोदादि दुःखरूप कटुफल भविष्यती"ति पापपरिणाम, 'अयणमाणा' अजानन्त पापकर्माणः 'नरकतिर्यग्योनिं वर्धयन्ति' इत्यग्रेण सम्बन्ध', वेदनामेव वर्णयति–'महब्भय'

इस प्रकार "जे वि य करेंति पावा पाणवह" यह प्रतिज्ञात पांचवां प्राणवधकर्त्तृद्वार कह दिया–अब सूत्रकार "जह य कओ जारिस फल देइ" यह चतुर्थ फल द्वार कहते हे–'तस्स य पावस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तस्स य पावस्स) इस प्राणवधरूप पाप वृक्षका (फलविवाग) नरक निगोद आदि दु खरूप कटुक फल भोगना होगा इस वात को (अयाण माणा) नही जानते हुए पापीष्ठ जीव (नरयतिरिक्खजोणिं

આ રીતે "जे वि य करेंति पावा पाणवह" તે પ્રતિજ્ઞાત પાચમા પ્રાણુવધકર્તુદ્વારનુ વિવેચન સપૂર્ણ થયુ હવે સૂત્રકાર "जह य कओ जारिस फल देइ" આ ચતુર્થ ફલદ્વારનુ વિવેચન કરે છે "तस्स य पावस्स" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ"—तस्स य पावस्स" આ પ્રાણુવધરૂપ પાપવૃક્ષનુ "फलविवाग" નરક નિગોદ આદિ દુખરૂપ કડવુ ફળ ભોગવવું પડશે, તે વાતને "अयाणमाणा" નહીં જાણનાર

कार्यं येषा ते तथा, 'पाणवहकहासु' प्राणवधकथासु=प्राणिहिंसावार्तासु= अभिरमता। अभिरमतः प्रसीदन्त सन्तस्ते 'बहुप्पगार' बहुप्रकार नानाविधं 'पाव' पाप 'करेंतु' कृत्वा 'तुट्ठा' तुष्टाः =प्रसन्ना 'हुति' भवन्ति ॥सू० २३॥

पूर्वं 'जेविय करेंति पावापाणवह इति प्रतिज्ञात पञ्चम प्राणवधकर्तृद्वारं निरूपित, सम्प्रति 'जहयकओ जारिस-फल देइ' यथा च कृतः प्राणवधो यादृश फल ददाति इति चतुर्थं फलद्वार प्रतिपादयन्नाह-'तस्से' इत्यादि।

मूलम्-तस्स य पावस्स फलविवाग अयाणमाणावड्ढंति महब्भयं अविस्सामवेयण दीहकालबहुदुक्खसंकड नरयतिरिक्खजोणिं। इओ आउक्खए चुया असुभकम्मबहुला उववज्जंति नरएसु हुलिय महालएसु वयरामय कुड्ड-रुद्द निस्संधि-दार विरहिय-निम्मद्दव-भूमितल-खरामरिस-विसमणि रयघर चारएसुं

द्वाणा) प्राणवधरूप कार्य करना ही जिनका एक अनुष्ठान है और (पाणावह कहासु अभिरमता) प्राणियों की हिंसात्मक वार्ताओं में जिन्हें रस मिलता है, ऐसे जीव (बहुप्पगार) नानाविध (पाव करेत्तु) पाप करके (तुट्ठा) सतुष्ट (हुति) होते हैं।

भावार्थ—जलचर, थलचर आदि जितने भी तिर्यंच हैं, एव पक्षी आदि जितने भी खेचर जीव है—चाहे वे सज्ञी हो चाहे असज्ञी हो पर्याप्त हो चाहे अपर्याप्त हो यदि ये जीव घात करके अपना निर्वाह करते हैं तो पापी है—पापकर्म मे रत है। जिन जीवो के परिणामों में अशुभलेश्या वर्तती रहती है, जो पापमय कृत्यों मे आनन्द मानते हैं इत्यादि प्रकार के जीव भी पापी और पापकर्म रत है ॥ सू. २३ ॥

ठाणा" પ્રાણુવધનુ કાર્ય જ જેમનુ એક અનુષ્ઠાન છે, અને "पाणवहकहासु अभिरमता" પ્રાણીઓની હિંસાત્મક વાર્તાઓમા જેમને રસ પડે છે, એવા જીવો "बहुप्पगार" વિવિધ 'पावकरेत्तु" પાપો કરીને 'तुट्ठा" સતોષ "हुति" પામે છે

ભાવાર્થ—જળચર, સ્થળચર આદિ જે જે તિર્યંચ છે, અને પક્ષી આદિ જેટલા ખેચર (નભચર) જીવો છે તેઓ સજ્ઞી હોય કે અસજ્ઞી હોય, પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય પણ જો તેઓ જીવોની હત્યા કરીને પોતાનો નિર્વાહ ચલાવતા હોય તો તેઓ પાપી છે-પાપકર્મમા રત છે જે જીવોના પરિણામોમા અશુભલેશ્યા પ્રવર્તતિ હોય છે જેઓ પાપમય કૃત્યોમા આનદ માનતા હોય તે, ઈત્યાદિ પ્રકારના જીવો પણ પાપી અને પાપકર્મમા રત હોય છે॥સૂ.૨૩॥

रत्नप्रभादिषु 'हुलिय' शीघ्रम् 'उववज्जति' उत्पद्यन्ते। कथम्भूतेषु नरकेषु?–इत्याह—'महालएसु' महालयेषु=क्षेत्रस्थितिभ्या महत्सु 'वयरामयकुड्डरुद निस्संधिदारविरहियनिम्मद्दवभूमितलखरामरिसविसमणिरयघरचारएसु' वज्रमयकुड्य–रुन्द्र–निस्सन्धिद्वारविरहितनिर्मार्दवभूमितलखराऽमर्शविषमनरकघरचारकेषु =वज्रमयकुड्यानि=वज्रभित्तयः, रुन्दाः=विस्तीर्णाः, देशी–शब्दोऽयम्, विस्तीर्ण-वाचकः निस्सन्धयः=सन्धिरहिताः, द्वारविरहिताः=गमनागमनद्वारवर्जिता, निर्मार्दवभूमितलाः=कठोरतरभूमिभागाः, तथा खरामर्शा=कठिनस्पर्शाः, विषमाः=उच्चावचा, नरकगृहा=नरकावासा एव चारका=बन्दिगृहाः येषु नरकेषु ते तथा तेषु, 'महोसिण–सयापतत्त–दुग्गन्ध–विस्स–उव्वेयजणगेसु' महोष्णसदाप्रतप्त–दुर्गन्ध

(असुभ कम्मबहुला) प्राणीवधजन्य पापकर्म के भार से अत्यत दबे हुए होकर (नरएसु) रत्नप्रभा आदि पृथिवियों में (हुलिय) शीघ्र ही (उववज्जति) उत्पन्न हो जाते हैं। ये नरक (महालयेसु) क्षेत्र तथा स्थिति की अपेक्षा महान् हैं तथा (वयरायमकुड्डरुदनिस्सधिदारविरहिय निम्मद्दव भूमितल खरामरिसविसमणिरयघरचारएसु) (निरयघर-चारएसु) नरकावासरूपबन्दिगृह (वयरामयकुड्ड) वज्रभित्तिवाले है। (रुद) अत्यत विस्तृत हैं (निस्सधि) सन्धि रहित हैं। (दारविरहिय) गमनागमन के साधनभूत द्वार से हीन और (निम्मद्दव) मृदुता रहित (खरामरिस) कठोरतर (विसम) ऊंचे नीचे भूमिभागवाले हैं। (महो-सिण सयापतत्त–दुग्गधविस्स–उव्वेयजणगेसु) (महोसिण) इनमें सदा उष्णजन्य वेदना रहा करती है। (सयापतत्त) ये निरन्तर तापसे व्याप्त

જીવ મનુષ્ય ભવમાથી મરીને "असुभ कम्मबहुला" પ્રાણીવધને કારણે ઉત્પન્ન થયેલા પાપકર્મના ભારથી અત્યત દબાયેલ એવા તે જીવો "नरएसु" રત્ન પ્રભા આદિ પૃથ્વીઓમા 'हुलिय" તરત જ "उववज्जति" ઉત્પન્ન થઈ જાય છે તે નરક "महालयेसु" ક્ષેત્ર અને સ્થિતિની અપેક્ષાએ મહાન છે તથા "वयरामय कुड्ड रुद निस्सधिदार विरहिय निम्मद्दव भूमितल खरामरिसविसम णिरयघर चारएसु" "निरयघरचारएसु" નરકાવાસરૂપ બન્દિગૃહ "वयरामय कुड्ड" વજ્રની દિવાલોવાળા છે, 'रुद" અત્યત વિસ્તૃત છે, "निस्सधि" સન્ધિરહિત છે 'दारविरहिय" અવર જવર માટેના દ્વારોથી રહિત છે, અને "निम्मद्दव" મૃદુતાથી રહિત "खरामरिस" કઠોરમા કઠોર "विसम" ઊંચા નીચા ભૂમિ ભાગવાળા છે "महोसिण सयापतत्त–दुग्गधविस्स–उव्वेयजणगेसु" "महोसिण" તેમા સદા ઉષ્ણતા જન્ય વેદના રહ્યા કરે છે, 'सयापतत्त"

इत्यादि-' महब्भय ' महाभया 'अविस्सामवेयण ' अविश्रामवेदनां=प्रतिसमयमनुभूयमानाऽशातवेदना, ' दीहकालबहुदुक्खसकड ' दीर्घकालबहुदुःखसङ्कटां= दीर्घकालमभिव्याप्यवर्तमानैः बहुभिर्नानाविधैः शारीरमानसैर्दुःखैः सङ्कटा=सङ्कुलां, तादृशीं ' नरयतिरिक्खजोणिं ' नरकतिर्यग्योनिं=नरकेषु तिर्यक्षु च या योनि= उत्पत्तिस्थानं तां ' वड्ढंति ' वर्धयन्ति=तासु तासु नानाविधासु योनिषूत्पद्य च महावेदनामनुभवन्तीत्यर्थः । ते प्राणवधकारकाः नरकतिर्यगादि कुयोनिषु परिभ्रमणं कुर्वन्तो जन्म मरणाद्यविच्छिन्नपरम्परया यथा घोरातिघोरदुःखमनुभवन्ति तथोच्यते-' इओ ' इत्यादि-ते प्राणवधकारकाः ' आउक्खए ' आयुःक्षये ' इओ ' इतः=मनुष्य भवात् ' चुया ' च्युताः-मृताः सन्तः ' असुभकम्मबहुला ' अशुभकर्मबहुलाः=प्राणिवधपापकर्मप्रचुरा सन्तः ' नरएसु ' नरकेषु=

वड्ढति) नरक तिर्यंच योनि को बढाते हैं जो योनि (महब्भय) अत्यतभयप्रमद, एव (अविस्सामवेयण) प्रतिसमय अनुभूयमान अशातवेदना सम्पन्न है-तथा (दीहकाल बहुदुक्खसकड) जिसमें दीर्घकालतक जीव नाना प्रकार के शारीरिक एव मानसिक दुःखो को भोगा करता है। ऐसी उस विविध शारीरिक मानसिक दु खों से सकुल नरक तिर्यंच योनि को वढाते है। तात्पर्य इसका यह है कि जो प्राणवध करनेवाले जीव हैं वे उन २ नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होकर महान् वेदनाओंका अनुभव करते रहते हैं। इस प्रकार नरक तिर्यंच आदि कुयोनियों में परिभ्रमण करते हुए वे प्राणवधकारी जीव जन्म मरण आदि की अविच्छिन्न परम्परा से जिस प्रकार घोरातिघोर दुःखों को भोगते हैं, अब सूत्रकार इसी विषय को यहा स्पष्ट करते हैं (इओ आउक्खए चुया) आयु के क्षय होने पर मनुष्यभव से मरकर प्राणवध कारक जीव

ચોનિને વધારે છે, જે ચોનિ " महब्भय " અત્યત ભયપ્રદ, અને " अविस्साम वेयण " પ્રતિકાળે અનુભવાતી આશાતા વેદનાથી યુક્ત છે, તથા " दीहकाल बहुदुक्खसकड " જેમા દીર્ઘકાળ સુધી જીવ વિવિધ પ્રકારના શારીરિક અને માનસિક દુખોને ભોગવ્યા કરે છે એવી વિવિધ શારીરિક અને માનસિક દુખોથી યુક્ત, તે નરક તિર્યંચ ચોનિને તેઓ વધારે છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે પ્રાણુવધ કરનાર જીવો ઉપરોક્ત વિવિધ ચોનિયોમા ઉત્પન્ન થઈને મહાન વેદનાઓ અનુભવે છે આ રીતે નરક તિર્યંચ આદિ કુયોનિયોમા પરિભ્રમણ કરતા તે પ્રાણુવધ કરનારા જીવો જન્મ મરણ આદિની અતૂટ પરપરા પૂર્વક જે જે પ્રકારના ભયકરમા ભયકર દુખો ભોગવે છે, તે વિષયનુ હવે સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરે છે " इओ आउक्खए चुया " આયુષ્યને। ક્ષય થતા પ્રાણુવધકારી

मस्तकशूलादय, जरा=वार्धक्य च, तैः पीडितेषु=व्याप्तेषु, 'अईवनिच्चधयारतमिस्सेसु' अतीवनित्यान्धकारतमिस्रेषु=अतीव=अत्यन्त नित्यान्धकारेण तमिस्रेषु=घोरान्धकारस्वरूप-माप्तेषु, अतएव 'पइभएसु' मतिभयेषु=प्रतिवस्तुभययुक्तेषु, 'ववगयगहचदसूरणक्खत्तजोइसेसु' व्यपगतग्रहचन्द्रसूरनक्षत्रज्योतिष्केषु =ग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कवर्जितेषु, 'मेयवसामसपडल पोच्चडपूयरुहिरुक्किण्णविलीणचिक्कणरसियावावण्णकुहियचिक्खल्लकद्दमेसु' मेदोवसामासपटलपोच्चडपूयरुधिरोत्कीर्णविलीनचिक्कणरसिकव्यापन्नकुथितचिक्खलकर्दमेषु=मेदः=शरीरस्नेहविशेष, वसा=चर्वी इति भाषा, मास=प्रसिद्ध तेषां यत्पटल=राशिः 'पोच्चड' गिलगिलायमान पूय='पीप' 'परू' इति मसिद्ध, रुधिर=शोणित तेन उत्कीर्णं=व्याप्त विलीन=सभृत, चिक्कण=गुन्द्रवत्, 'रसिका' विकृतरुधिर व्यापन्न=विनष्टस्वरूपम् अतएव-कुथित=दुर्गन्धित 'चिक्खल' शिथिलकर्दमः, कर्दमः=घनकर्दमश्च येषु ते तथा तेषु। 'कुकूलानलपलित्तजालमुम्मुरअसिक्खुर

अवस्था है इनकी पीडा यहा प्रतिकार-उपाय रहित होती है। (अईव णिचधयारतमिस्सेसु) यहां पर सर्वदा घोरातिघोर अधकार रहता है। (पइभएसु) यहां की प्रत्येक वस्तु भय से भरपूर रहती है। (ववगय गहचदसूरणक्खत्तजोइएसु) न यहां पर कोई ग्रह हैं न कोई चन्द्र है, न सूर्य है, न नक्षत्र हैं। (मेयवसामसपडल-पोचड-पूय-रुहिरुक्किण्ण विलीण-चिक्कण-रसिया वावण्णकुहियचिक्खल्लकद्दमेसु) मेद, वसा-चर्वी और मास का ढेर इन स्थानों में सदा लगा रहता है। तथा पोचड गिलगिलायमान पूय-पीव, एव रुधिर से व्याप्त, गोंद के समान चिकने भरे हुए व्यापन्न दुर्गंधित ऐसे विकृत खून, से तथा चिकने घनकर्दम से ये स्थान सदा व्याप्त रहते हैं। (कुकूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-

માથાનો દુખાવો આદિ જે રોગો છે વૃદ્ધાવસ્થા આદિ જે અવસ્થા છે, તેમની પીડાનો ત્યા કોઇ પણ ઇલાજ હોતો નથી તે પ્રતિકાર રહિત હોય છે, "अईव णिचधयारतमिस्सेसु" અહીં કાયમ ઘોરમા ઘોર અધકાર રહે છે "पइभएसु" અહીંની દરેક વસ્તુ ભયજનક હોય છે "ववगयगहचदसूरणक्ख जोइसेसु" અહીં કોઇ ગ્રહ નથી, ચન્દ્ર નથી, સૂર્ય નથી કે નક્ષત્ર પણ નથી "मेयवसा मसपडल-पोचड-पूय-रुहि रुक्किण्ण-विलीण-चिक्कण, रसियावावण्णकुहिय चिक्खल्लकद्दमेसु" મેદ, વસા ચરબી અને માસના ઢગલા તે સ્થાનોમાં સદા પડેલા હોય છે તથા પોચ્ચડ-કિચ્ચડ અને પૂય પીબ તથા રક્તથી વ્યાપ્ત, ગુદરના જેવા ચીકણા, ભરેલા દુર્ગંધમય વિકૃત લોહીથી, તથા ચીકણા કાદવથી તે સ્થાનો સદા છવાયેલા રહે છે "कुक्कूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-असिक्खुर

–विश्रोद्वेगजनकेषु तत्र महोष्णाः=अत्यन्तोष्णाः, सदा प्रतप्ताः=निरन्तरतापयुक्ताः, दुर्गन्धा =अनिष्टगन्धयुक्ताः, विश्रा =अपक्वमांसवत्पूतिगन्धाः, अतएव-उद्वेगजनका=उद्वेगोत्पादकाः, तेषु 'बीभच्छदरिसणिज्जेसु' बीभत्सदर्शनीयेषु=घृणितदर्शनेषु 'निच्च' नित्य 'हिमपडलसीयलेसु' हिमपटलशीतलेषु=हिमपटलमिव शीतला ये ते तथा तेषु 'कालोभासेसु' कालावभासेषु, काल=श्यामलोऽवभासः=कान्तिर्येषां ते तथा तेषु कृष्णवर्णेषु 'भीमगभीरलोमहरिसणेसु' भीमगम्भीरलोमहर्षणेषु–तत्र,भीमाः=भयजनका गभीराः–अतलस्पर्शा अतएव लोमहर्षणा =रोमाञ्चकारिणस्तेषु=तत्स्वरूपश्रवणमात्रेण–रोमाञ्चोत्पादकेषु 'णिरभिरामेसु' निरभिरामेषु = अशोभनेषु 'निप्पडियारवाहिरोगजरापीलिएसु' निष्प्रतिकारव्याधिरोगजरापीडितेषु=निष्प्रतिकाराः=प्रतिकाररहिता व्याधयः=कुष्ठादयः रोगा

रहते हैं। (दुग्गध विस्सउव्वेयजणगेसु) अनिष्टतर दुर्गंध से भरपूर रहते है। विस्र–कच्चेमास के जैसी यहा सदा दुर्गंध आती रहती है, इसलिये नारकियो को ये सदा उद्वेग के उत्पादक होते रहते है। (बीभच्छदरिसणिज्जेसु य) देखने में ये बड़े असुहावने घृणित प्रतीत होते हैं। (निच्च हिमपडलसीयलेसु) सदा ये हीमपटल के जैसे शीतल होते हैं (कालोभासेसु) इनकी काति काली होती है। (भीमगभीरलोमहरिसणेसु) इन नरकावासों मे जीव को सदा भय ही भय रहता है। ये आवास कितने गहरे है इनका पता नही पडता है। इनके स्वरूप श्रवण मात्र से ही जीवों के शरीर में रोमाच खडे हो आते है। (णिरभिरामेसु) ये सब अशोभन हैं। (निप्पडियार वाहिरोगजरापीलिएसु) यहा की जो कुष्ठ आदि व्याधिया है, मस्तकशूल आदि जो रोग हैं, वार्धक्य जो

તેઓ નિરતર તાપથી વ્યાપ્ત કરે છે, "दुग्गधविस्सउव्वेयजणगेसु" સૌથી ખરાબ દુર્ગંધથી ભરપૂર રહે છે વિસ્ર–કાચા માસના જેવી દુર્ગંધ ત્યા સદા આવ્યા કરે છે, તેથી નારકીઓને તેઓ સદા સતોષ પેદા કરનારા હોય છે "बीभच्छ दरिसणिज्जेसु य" જોવામા તે ઘણા જ બેડોળ–ઘૃણા થાય તેવા હોય છે "निच्च हिमपडलसीयलेसु" તેઓ સદા હિમના થર જેવા શીતળ હોય છે 'कालो भासेसु" તેઓ દેખાવે કાળા હોય છે "भीमगभीरलोमहरिसणेसु" તે નરકવાસોમા જીવોને સદા ભય જ રહે છે તે આવાસો કેટલા ઊડા છે તેની ખબર પડતી નથી તેના સ્વરૂપનુ વર્ણન સાભળતાજ જીવોના શરીરના રોમાચ ઉભા થઈ જાય છે "णिरभिरामेसु" તે બધા શોભા વિનાના છે "निप्पडियारवाहिरोगजरापीलिएसु" અહીંની કુષ્ઠ આદિ જે વ્યાધિયો

मस्तकशूलादय, जरा=वार्धक्य च, तैः पीडितेषु=व्याप्तेषु, 'अईवनिच्चधयारतमिस्सेसु' अतीवनित्यान्धकारतमिस्रेषु=अतीव=अत्यन्त नित्यान्धकारेण तमिस्रेषु=घोरान्धकारस्वरूप-प्राप्तेषु, अतएव 'पइभएसु' प्रतिभयेषु=प्रतिवस्तुभययुक्तेषु, 'ववगयगहचदसूरणक्खत्तजोइसेसु' व्यपगतग्रहचन्द्रसूरनक्षत्रज्योतिष्केषु =ग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कवर्जितेषु, 'मेयवसामसपडल पोच्चडपूयरुहिरुक्किण्णविलीणचिक्कणरसियावावण्णकुहियचिक्खल्लकद्दमेसु' मेदोवसामासपटलपोच्चडपूयरुधिरोत्कीर्णविलीनचिक्कणरसिकव्यापन्नकुथितचिक्खलकर्दमेषु=मेदः=शरीरस्नेहविशेष, वसा=चर्बी इति भाषा, मास=प्रसिद्ध तेषां यत्पटल=राशिः 'पोच्चड' गिलगिलायमान पूय='पीप' 'पस' इति प्रसिद्ध, रुधिर=शोणित तेन उत्कीर्णं=व्याप्त विलीन=सभृत, चिक्कण=गुन्द्रवत्, 'रसिका' विकृतरुधिर व्यापन्न=विनष्टस्वरूपम् अतएव-कुथित=दुर्गन्धित 'चिक्खल' शिथिलकर्दमः, कर्दमः=घनकर्दमश्च येषु ते तथा तेषु। 'कुकूलानलपलित्तजालमुम्मुरअसिक्खुर

अवस्था है इनकी पीडा यहा प्रतिकार-उपाय रहित होती है। (अईव णिचधयारतमिस्सेसु) यहा पर सर्वदा घोरातिघोर अधकार रहता है। (पइभएसु) यहां की प्रत्येक वस्तु भय से भरपूर रहती है। (ववगय गहचदसूरणक्खत्तजोइएसु) न यहां पर कोई ग्रह हैं न कोई चन्द्र है, न सूर्य है, न नक्षत्र हैं। (मेयवसामसपडल-पोचड-पूय-रुहिरुक्किण्ण विलीण-चिक्कण-रसिया वावण्णकुहियचिक्खल्लकद्दमेसु) मेद, वसा-चर्बी और मास का ढेर इन स्थानों में सदा लगा रहता है। तथा पोचड गिलगिलायमान पूय-पीव, एव रुधिर से व्याप्त, गोंद के समान चिकने भरे हुए व्यापन्न दुर्गंधित ऐसे विकृत खून, से तथा चिकने घनकर्दम से ये स्थान सदा व्याप्त रहते हैं। (कुकूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-

માથાનો દુખાવો આદિ જે રોગો છે વૃદ્ધાવસ્થા આદિ જે અવસ્થા છે, તેમની પીડાનો ત્યા કોઈ પણ ઇલાજ હોતો નથી તે પ્રતિકાર રહિત હોય છે, "अईव णिचधयारतमिस्सेसु" અહીં કાયમ ઘોરમા ઘોર અ ધકાર રહે છે "पइभएसु" અહીંની દરેક વસ્તુ ભયજનક હોય છે "ववगयगहचदसूरणक्खत्त जोइसेसु" અહીં કોઈ ગ્રહ નથી, ચન્દ્ર નથી, સૂર્ય નથી કે નક્ષત્ર પણ નથી "मेयवसा मसपडल-पोचड-पूय-रुहि रुक्किण्ण-विलीण-चिक्कण, रसियावावण्णकुहिय चिक्खल्लकद्दमेसु" મેદ, વસા ચરબી અને માસના ઢગલા તે સ્થાનોમાં સદા પડેલા હોય છે તથા પોચ્ચડ-કિચ્ચડ અને પૂય પીબ તથા રક્તથી વ્યાપ્ત, ગુદરના જેવા ચીકણા, ભરેલા દુર્ગંધમય વિકૃત લોહીથી, તથા ચીકણા કાદવથી તે સ્થાનો સદા છવાયેલા રહે છે "कुकूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-असिक्खुर

करवत्तधारसुनिसियविच्छुयडकनिवातोवमफरिसअतिदुस्सहेसु ' कुकूलानल प्रदीप्तज्वालमुर्मुरासिक्षुरकरपत्रधारसुनिशितवृश्चिकदशनिपातोपमातिदुस्सहेषु, कुकूलानलः=करिषाग्निः, खदिराग्निर्वा, प्रदीप्ता च ज्वालेति प्रदीप्तज्वाला=प्रवृद्ध-वह्निशिखा च, मुर्मुरः=भस्ममिश्रोऽग्निकणः, असिः=खड्गः, क्षुरः=नापितोपकरण, करपत्र=काष्ठभेदकशस्त्रविशेषः तेषा धारेति असिक्षुरकरपत्रधारा, सुनिशितवृश्चिकदशनिपातः=सुनिशितास्तीक्ष्णा ये वृश्चिकदशा =तत्पुच्छकण्टकास्तेषा निपातश्चेति द्वन्द्व एभिरुपमा=सादृश्य यस्य स तथाविधः स्पर्शे येषा ते तथा अतएव ते च ते अति दुस्सहाः=अत्यन्तदुःखेन सहनयोग्यास्तेषु, ' कडुयदुक्खपरितावणेसु ' कटुकदुःखपरितापनेषु = कटुकैः = दारुणैर्दुःखैर्दशविधक्षेत्रवेदनारूपैः परितापन येषु तेषु ' अणुबद्धनिरतरवेयणेसु ' अनुबद्धनिरन्तरवेदनेषु=अनुबद्धा=अनुक्षण व्याप्ता निरन्तरा=अविच्छिन्नवेदना=पीडा येषु तथा तेषु ' जमपुरिससकुलेसु ' यमपुरुषसकुलेषु, यमस्य-दक्षिणदिक् लोकपालस्य पुरुषाः-

असिक्खुर-करवत्तधार सुनिसियविच्छुयडकनिवातोवम-फरिसअतिदुस्सहेसु) इनका स्पर्श कुकूलानल-करीषाग्नि अथवा खदिराग्नि के जैसा, प्रवृद्ध-वह्नि की ज्वाला के जैसा, मुम्मुर-भस्ममिश्रित अग्निकण के जैसा असि-तलवार की धार के जैसा, खुर-क्षुरा की धार के जैसा, करवत-करोंति की धार जैसा, एव अत्यत तीक्ष्णवृश्चिक के डक के द्वारा काटने जैसा है, इसी कारण ये स्थान अत्यत दुस्सह बन रहे हैं (कडुयदुक्ख परितावणेसु) दशविधक्षेत्र वेदनारूप दारुण दुःखों द्वारा जहां जीवों को सदा सताप ही सताप भोगना पडता है तथा (अणुबद्ध निरतरवेयणेसु) यहा प्रतिक्षण अविच्छिन्न असह्य पीडा होती है। एव (जमपुरिससकुलेसु) यम-दक्षिण दिशासबधी लोकपाल के अम्ब अम्बरीषादिक

करवत-धारसुनिसियविच्छुयडकनिवातोवम-फरिस अतिदुस्सहेसु " तेमनो स्पर्श कुकूलानल-करिषाग्नि अथवा खदिराग्नि जेवो, प्रवृद्ध-अग्निनी ज्वाळा जेवो, मुम्मुर-भस्म-मिश्रित अग्निकणो जेवो, असि-तलवारनी धारना जेवो खुर-छरीनी धार जेवो, करवतनी धार जेवो, अने अत्यत तीक्ष्ण वीछीना डख जेवो छे ते कारणे ते स्थानो अत्यत दुःखदायी होय छे " कडुयदुक्ख परितावणेसु " दश प्रकारना क्षेत्र वेदनारूप दारुण दुःखो द्वारा ज्यां जीवोने सदा सताप ज भोगववो पडे छे, तथा अणुबद्धनिरतरवेयणेसु " त्यां दरेक क्षणे अविच्छिन्न असह्य पीडा भोगववी पडे छे अने " जमपुरिससकुलेसु " यम देवोथी ते सदा घेरायेला होय छे यम-दक्षिण दिशाना लोकपालना अम्ब,

अम्बाम्बरीपादयः परमाधार्मिका असुरकुमारदेवास्तैः सकुलेषु=व्याप्तेषु-एता-दृशेषु नरकेषु ते प्राणवधकर्तारः 'अत्ताणा' अत्राणा=त्राणरहिताः दुःखनिवारका-भावात्, अतएव 'असरणा' अशरणा =शरणरहिताः रक्षकाभावात्, 'उववज्जति उत्पद्यन्ते इति सम्बन्धः ॥सू०२४॥

मूलम्–तत्थ य अंतोमुहुत्तलद्धिभवपच्चएणं निव्वत्तेंति उ ते सरीरं हुडं बीभच्छदरिसणिज्ज बीहणगं अट्ठिण्हारुणह रोमवज्जियं असुभगं दुक्खविसयं, तओ य पज्जत्तिमुवगया इंदिएहिं पचहिं वेदेंति वेदणं असुहाए वेयणाए उज्जलबल विउल-कक्खडखरफरुसपगाढपयंडघोरबीहणगदारुणाए,किंते२५॥

टीका—'तत्थ य' तत्र च नरकेषु उत्पत्त्यनन्तरं ते पापकर्माणः 'अंतोमुहुत्तलद्धिभवणपच्चएण' अन्तर्मुहूर्तलब्धिभवप्रत्ययेन=अन्तर्मुहूर्तस्य वैक्रियलब्ध्या

परमाधार्मिक असुरकुमार जाति के देवों से ये सदा सकुल रहते हैं। ऐसे इन नरकोमा प्राणवध के करने वाले जीव (अत्ताणा) दुःखनिवारक के अभाव से त्राण रहित एव (असरणा) रक्षक कोई न होने से अशरण बन (उववज्जति) उत्पन्न होते है।

भावार्थ—प्राणवध करनेवाले जीव जो पापपुज का सचय करते हैं। उसके प्रभाव से वे यहां से मरकर शीघ्र ही नरक मे जन्म लेते हैं। नरकों में जीव की कैसी हालत होती है एव वहां की क्या स्थिति है यही बात सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा समझाई है ॥ सू २४॥

टीकार्थ-(तत्थ य) उन नरकों मे उत्पत्ति के अनन्तर (ते) वे पापकर्म वाले जीव (अतोमुहुत्तलद्धि भवपच्चएण) अन्तर्मुहूर्त्त मे प्राप्त वैक्रियल-

અમ્બરીષ આદિ પરમ અધામિક અસુર કુમાર જાતિના દેવો છે પ્રાણવધ કરનારા તે જીવો એથી તે નરકોમા "अत्ताणा" દુ ખ નિવારકને અભાવે ત્રાણ રહિત અને "असरणा" કોઈ રક્ષક નહીં હોવાથી અશરણ દશામા "उववज्जति" ઉત્પન્ન થાય છે

ભાવાર્થ—પ્રાણવધ કરનારા જીવ જે પાપપુંજનો સચય કરે છે તેના પ્રભાવે અહીંથી મરીને તરત જ નરકમા ઉત્પન્ન થાય છે નરકોમા જીવોની કેવી હાલત થાય છે અને ત્યાની કેવી પરિસ્થિતિ છે, એ વાત સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા સમજાવી છે ॥સૂ ૨૪॥

ટીકાર્થ–"तत्थ य" ઇત્યાદિ, "तत्थ य"તે નરકોમા ઉત્પત્તિ થયા પછી "ते" તે પાપકર્મ કરનારા જીવ "अतोमुहुत्तलद्धिभवपच्चएण" અન્તર્મુહૂર્તમા પ્રાપ્ત વૈક્રિય

भवप्रत्ययेन च, = भवप्रत्ययः = भवन्ति कर्मवशाः जीवाः अस्मिन्निति भवः = नरकादिजन्म, भव एव प्रत्ययः=कारणं यस्य तत् भवप्रत्यय=तेन–नरकजन्मकारणेन 'सरीरं=शरीरं नरकभवसम्बन्धिदेहं, 'निव्वत्तेति' निर्वर्त्तयन्ति=रचयन्ति। कीदृशं शरीरम्? इत्याह—'हुंड' अस्फुटावयवं, बीभच्छदरिसणिज्ज' बीभत्सदर्शनीयं=विकृतस्वरूपं 'बीहणगं' भापकं भयजनकम्, 'अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जियं' अस्थिस्नायुनखरोमवर्जितं=स्पष्टं, असुभगम्=असुन्दरम्, दुक्खविसयं' दुःखविषयं=क्लेशबहुलं शरीरं निर्वर्त्तयन्तीति सम्बन्धः। 'तओ य' ततश्च=शरीरनिर्वर्तनानन्तरं 'पज्जत्ति' पर्याप्तिं = आहारशरीरेन्द्रिय–प्राणापानभाषामनःपर्याप्तिं

ब्धि से और भवप्रत्यय से–नरक जन्म के कारण से वे (सरीरं) शरीर को नरकभव संबंधी शरीर को (निव्वत्तेति) बना लेते हैं। तात्पर्य कहने का यह है कि नरकों में जो जीव नारकी जीव की पर्याय से उत्पन्न होता है उसका अन्तर्मुहूर्त्त में ही नारकी का शरीर बन जाता है, क्यों कि इस शरीर के बनने का कारण वहां पर जन्म लेना है। इस शरीर के अवयव अस्फुट रहते हैं इसलिये इसे (हुंड) हुंड कहा है और (बीभच्छदरिसणिज्ज) यह शरीर–विकृत स्वरूपवाला होता है इसलिये बीभत्स दर्शनीय कहा है। (बीहणगं) यह शरीर भयजनक होता है और (अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जियं) अस्थि–हड्डियों से, स्नायु–नसों से तथा नख और रोम से रहित (असुभगं) असुन्दर और (दुक्खविसयं) क्लेश बहुल होता है। (तओ य) इस प्रकार शरीर की रचना

લબ્ધિથી અને ભવપ્રત્યયથી–નરકમાં જન્મ થવાને કારણે તેઓ "सरीरं" શરીરને–નરકભવ સંબંધી શરીરને "निव्वत्तेति" બનાવી લે છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે નરકમાં જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમનું અન્તર્મુહૂર્તમાં જ નારકીનું શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યાં જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાનું કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને "हुंड" હુંડ કહ્યા છે અને "बीभच्छदरिसणिज्ज" તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળુ હોય છે તેથી તેને બીભત્સ દર્શનીય કહેલ છે "बीहणगं" તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને "अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जियं" અસ્થિ–હાડકાંઓથી સ્નાયુ–નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, "असुभगं" અસુંદર અને "दुक्खविसयं" ક્લેશ યુક્ત હોય છે, "तओ य" આ પ્રકારની શરીરની

'उवगया' उपगताः=प्राप्ताः-सन्तः 'पचहिं' पञ्चभिः 'इंदिएहिं' इन्द्रियैः= श्रोत्रादिभि 'असुहाए' अशुभया=अशातरूपया, 'वेयणाए' वेदनया-अशात-वेदनीयकर्मोदयजनितया 'वेयणं' वेदन=कुम्भीपचनानि दुःख 'वेदेंति' वेद-यन्ति=अनुभवन्ति। कीदृशया वेदनया? इत्याह—'उज्जलबलविउलकक्खडखर फरुसपगाढपयडघोरवीहणगदारुणाए' उज्ज्वलबलविपुलकर्कशखरपरुषप्रचण्डघोर भीषणदारुणया=उज्ज्वला=तीव्रानुभावात्मकर्पत्वात्, बला=बलवती अनिवार्यत्वात्, विपुला=विशाला परिमाणरहितत्वात्, कर्कशा = कठोरा प्रत्यङ्गदुःखजनकत्वात्, खरा=तीक्ष्णा-अन्त करणभेदकत्वात्, परुषा=निष्ठुरा-सुखलेशरहितत्वात् प्रगाढा -प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात्, प्रचण्डा=भयानका-आत्मनः-प्रतिप्रदेशव्यापित्वात्

हो जाने के अनन्तर (पज्जत्तिमुवगया) आहार, शरीर, इन्द्रिय, प्राणापान, भाषा और मन, इन पर्याप्तियों को प्राप्त हुए वे नारकी जीव (इंदिएहिं पचहिं) श्रोत्रादिक पाच इन्द्रियों द्वारा (असुहाए वेयणाए) असाता वेदनीय कर्म के उदय से जनित अशुभ अशातरूपवेदना से (वेयण) कुंभी पचनादि दु'खों का (वेदेंति) अनुभव करते हैं। यह अशातरूपवेदना उन नारकी जीवों की (उज्जलबल विउल-कक्खड खरफरुसपगाढपयडघोरवीहणगदारुणाए) उज्ज्वल-तीव्रानुभावशाली होती है, बल-अनिवार्य होने से बलिष्ठ होती है, विपुल परिमाण रहित होने से विशाल होती है, (कक्खड) प्रत्येक अंग दुःख जनक होने से कर्कश-कठोर होती है। खर अतरग की भेदक होने से तीक्ष्ण होती है। (फरुस) सुख के लेश से रहित होने के कारण निष्ठुर होती है। (पगाढ) प्रतिक्षण असमाधि की उत्पादक होने से प्रगाढ है (पयड) आत्मा के

રચના થઈ ગયા પછી "पज्जत्तिमुवगया" આહાર, શરીર, ઈન્દ્રિય, પ્રાણાપાન, ભાષા અને મન એ પર્યાપ્તિઓને પ્રાપ્ત કરીને નારકી જીવ "इंदिएहिं पचहिं" શ્રોત્રાદિક પાચ ઇન્દ્રિયો દ્વારા "असुहाए वेयणाए" અસાતા વેદનીય કર્મના ઉદયથી જનિત અશુભ અશાતારૂપ વેદનાથી "वेयण" કુ ભમા ર ધાવા આદિ દુ ખોનો "वेदेंति" અનુભવ કરે છે તે નારકી જીવોની તે અશાતારૂપ વેદના "उज्जलबलविउल-कक्खड-खर-फरुसपगाढ पयडघोरवीहणगदारुणाए" ઉજ્જવળ-તીવ્ર અનુભવવાળી હોય છે बल-અનિવાર્ય હોવાથી પ્રબળ હોય છે, विपुल-પરિમાણ રહિત હોવાથી વિશાળ હોય છે "कक्खड" પ્રત્યેક અ ગમા દુ ખ જનક હોવાથી કઠોર હોય છે, खर-હૃદય ભેદક હોવાથી તીક્ષ્ણ હોય છે, फरुस-સહેજ પણ સુખથી રહિત હોવાને કારણે નિષ્ઠુર હોય છે, पगाढ- દરેક પળે અસમાધિની ઉત્પાદક હોવાથી પ્રગાઢ હોય છે, पयड

भवप्रत्ययेन च, = भवप्रत्ययः = भवन्ति कर्मवशाः जीवाः अस्मिन्निति भवः = नरकादिजन्म, भव एव प्रत्ययः=कारण यस्य तत् भवप्रत्यय=तेन-नरकजन्मकारणेन 'सरीर=शरीर नरकभवसम्बन्धिदेह, 'निव्वत्तेति' निर्वर्त्तयन्ति=रचयन्ति। कीदृश शरीरम्? इत्याह—'हुड' अस्फुटावयव, बीभच्छदरिसणिज्ज' बीभत्स दर्शनीय=विकृतस्वरूप 'बीहणग' भापक भयजनकम्, 'अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जिय' अस्थिस्नायुनखरोमवर्जित=स्पष्ट, असुभगम्=असुन्दरम्, दुक्खविसय' दुःखविषय=क्लेशबहुल शरीर निर्वर्त्तयन्तीति सम्बन्धः। 'तओ य' ततश्च=शरीरनिर्वर्तनानन्तर 'पज्जत्ति' पर्याप्तिं = आहारशरीरेन्द्रिय-प्राणापानभाषामनःपर्याप्ति

ब्धि से और भवप्रत्यय से-नरक जन्म के कारण से वे (सरीर) शरीर को-नरकभव सबधी शरीर को (निवत्तति) बना लेते हैं। तात्पर्य कहने का यह है कि नरको मे जो जीव नारकी जीव की पर्याय से उत्पन्न होता है उसका अन्तर्मुहूर्त्त मे ही नारकी का शरीर बन जाता है, क्यों कि इस शरीर के बनने का कारण वहा पर जन्म लेना है। इस शरीर के अवयव अस्फुट रहते हैं इसलिये इसे (हुड) हुड कहा है और (बीभच्छदरिसणिज्ज) यह शरीर-विकृत स्वरूपवाला होता है इसलिये बीभत्स दर्शनीय कहा है। (बीहणग) यह शरीर भयजनक होता है और (अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जिय) अस्थि-हड्डियों से, स्नायु-नसों से तथा नख और रोम से रहित (असुभग) असुन्दर और (दुक्खविसय) क्लेश बहुल होता है। (तओ य) इस प्रकार शरीर की रचना

લબ્ધિથી અને ભવપ્રત્યયથી-નરકમા જન્મ થવાને કારણે તેઓ "सरीर" શરીરને-નરકભવ સબધી શરીરને "निवत्तति" બનાવી લે છે કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે નરકમા જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમનુ અન્તર્મુહૂર્તમા જ નારકીનુ શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યા જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાનુ કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને "हुड" હુડ કહ્યા છે અને "बीभच्छदरिसणिज्ज" તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળુ હોય છે તેથી તેને બીભત્સ દર્શનીય કહેલ છે "बीहणग" તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને "अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जिय" અસ્થિ-હાડકાઓથી સ્નાયુ-નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, "असुभग" અસુદર અને "दुक्खविसय" ક્લેશ યુક્ત હોય છે, "तओ य" આ પ્રકારની શરીરની

विशेषः, महाकुम्भी=घटाकृतिपात्रविशेषस्तयोर्मध्ये, सूत्रे जातित्वादेकवचनम्। 'पयण' पचन-मोदनादेरिव 'पउलग' प्रकुलनम्=सीसकवद्गालनम्, 'तवग तलण' तपकतलन=तपको लोहपात्रविशेष 'तवा' इति भाषाप्रसिद्धः, तस्मिन् तैलादिभिरपूपवत्तलनम्, 'भट्ठमज्जण' भ्राष्ट्रभर्जनं च-भ्राष्ट्रभर्जनपात्र-'भाड' इति प्रसिद्धः, तत्र भर्जन चणकादेरिव, इत्येषा द्वन्द्वस्तानि च 'लोहकडाहुक्कड्ढणाणि य' लोहकटाहोत्क्वथनानि च=लोहकटाहः='कढाई' इति भाषाप्रसिद्धः, तत्र उत्क्वथनानि=औषधिवदुत्कालनानि 'कोट्टवलिकरणकोट्टणाणि' कोट्टवलिकरणकोट्टनानि=कुट्टे=क्रीडया वलिकरणाय, कुट्टनानि=करचरणाद्यवयवत्रोटनानि-शरीर 'खण्डशः' कृत्वा काकादिभ्योऽर्पणानीत्यर्थः, 'सामलितिक्खग्गलोहकंटगअभिसरणापसार-

'कदुमहाकुभीए' इत्यादि।

टीकार्थ-नारकीजीव नरकों मे (कदुमहाकुभीए) कदु-लोहमय विशाल पात्रविशेष में तथा घटाकृति जैसे महाकुभी मे ओदनादिक की तरह (पयण-पउलण-तवग-तलण-भट्ठभज्जणाणि य) (पयण) पकाये जाने के (पउलण) सीसक-राग की तरह गलाये जाने के, (तवगतलण) गर्म लोह के तवा पर तैलादिक में तले गये पूआ आदि की तरह तले जाने के (भट्ठभज्जणाणि य) भाड में भुजे गये चना आदि की तरह भुजे जाने के दुःखों को प्राप्त करते हैं। तथा (लोहकडाहुक्कड्ढणाणि य) जैसे लोहे की कढाई में औषधियाँ उबाली जाती है उसी तरह वहा पर वे भी बड़े २ कडाहो मे उबाले जाते हैं। (कोट्टवलिकरणकोट्टणाणि य) बलि देने के लिये अनायास ही उनके कर, चरण आदि अवयवों को वहा तोड दिया जाता है-शरीर को खड २ करके वहा काकादिकों के लिये

महाकुभीए" ईत्यादि

टीकार्थ-नरकी जीव नरकोमा "कदुमहाकुभीए" "कदु" लोढाना विशाळ पात्र-विशेषमा, तथा घडाना आकारना महाकुभीमा ओदनादिकनी जेम "पयण-पउलण, तवग, तलण, भट्ठभज्जणाणि य" "पयण" रधावाना, "पउलण" सीसानी जेम ओगळवाना, "तवगतलण" लोढाना गरम तेलना तावडामा तेलना मालपूवा आदिनी जेम तळावना, "भट्ठभज्जणाणि य" तावडामा शेकाता चणा आदिनी जेम शेकवाना दुःखो अनुभवे छे तथा "लोहकडाहुक्कड्ढणाणि य" जेवी रीते लोढानी तवीओमा औषधियो उकाळाय छे एज रीते त्या तेमने पण मोटा तावडाओमा उकाळवामा आवे छे, "कोट्टवलिकरणकोट्टणाणि य" बलि देवाने माटे अचानक तेमना हाथ पग आदि अवयवोनु त्या छेदन करवामा आवे छे शरीरना टूकडे टूकडा करी त्या कागडा आदिने

घोरा=विकटा-श्रवणेऽपि दुःखजनकत्वात्, भीषणा=भयोत्पादिका-प्रतिप्राणि-भयजनकत्वात् दारुणा=हृदयसंक्षोभकारिणी प्रतिकाररहितत्वात्, तथा-भूतया वेदनया पापिनो दुःखमनुभवन्तीति सम्बन्धः ' किं ते ' कानि तानि दुःखानि? तान्यग्रेऽनुपदे वर्णयिष्यते ॥ सू०२५ ॥

अथ तान्येव दुःखानि वर्णयति-कंदु महाकुम्भीए ' इत्यादि ।

मूलम्—कदुमहाकुंभीए पयण-पउलण-तवग-तलण-भट्ठ भंजणाणि य लोहकडाहुक्कड्ढणाणि य कोट्टबलिकरणकोट्टणाणि य सामलि तिक्खग्ग-लोहकंटग-अभिसारणा पसारणाणि, फालण विदारणाणि य अवकोडकबंधणाणि, लट्ठिसयतालणाणि य, गलग बलुल्लंबणाणियसूलग्गभेयणाणि य, आएसपवंचणाणि य खिंसणावमाणणाणि य विघुट्ठपणिज्जणाणियवज्झसयमाइयाणि य॥२६॥

टीका—' कदुमहाकुंभीए ' कन्दुमहाकुम्भ्योः=कन्दुः=लोहमयविशालपात्र

प्रति प्रदेश में व्यापक होने से प्रचण्ड-भयानक होती है, घोर-सुनने में भी दुःखजक होने से विकट होती है, (बीहणग) हरएक प्राणी में भय की सचारक होने से भीषण-भयोत्पादिका होती है, (दारुणाए) इसका वहा कोई इलाज नहीं होता है इसलिये यह हृदय को सक्षोभकारिणी होने से दारुण होती है। इस प्रकारकी वेदना से पापी जीव नरकों में दुःखों का अनुभव करते हैं। (किंते) वे दुःख कौन कौन से हैं वह इसी के अगले सूत्र मे कहेंगे॥सू २५॥

अब सूत्रकार " किंते " इन पदो द्वारा सूचित दुःखों को कहते हैं—

આત્માના દરેક પ્રદેશોમા વ્યાપેલી હોવાથી પ્રચડ ભયાનક હોય છે, ઘોર-સાભળતા પણ દુખજનક હોવાથી વિકટ હોય છે, " बीहणग " દરેક પ્રાણીમા ભયનો સચાર કરનાર હોવાથી ભીષણ-ભયકર હોય છે, " दारुणाए " તેનો ત્યા કોઈ ઇલાજ હોતો નથી, તેથી તે હૃદયમા ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી દારુણ હોય છે આ પ્રકારની વેદનાથી પાપી જીવ નરકોમા દુખોનો અનુભવ કરે છે " किंते " તે દુખો કયા કયા છે તે હવે પછીના સૂત્રમા બતાવવામા આવશે ॥ સૂ ૨૫ ॥

હવે સૂત્રકાર " किंते " દ્વારા સૂચિત દુખોનુ વર્ણન કરે,

मवञ्चनानि=प्रतारणानि मखरोष्णसन्तप्तवालुका निकरानेकक्षणपरिक्रमणोपताप प्रदीपितपानीय पानातितृष्णस्य समुदञ्चज्जलवीचिरुचिमरीचिनिचय जलाशयं ●-दिश्य तत्र पानाय प्रेषण, 'गच्छ तत्र ते पिता 'समागतः' इत्याद्यनेकविधः प्रवञ्चना इति भावः', 'खिसण विमाणणाणि' खिसनविमाननानि=खिसनानि= जातिकुलादिनामनिर्देशपूर्वक निन्दनानि, अत एव विमाननानि तिरस्करणानि 'विघुट्ठपणिज्जणाणि' विघुष्ट मणयनानि=विघुष्टाना="स्वकृतपापकर्मणा फलानि भुङ्क्ष्व" इत्यादिभिर्निष्ठुरवचोभिर्निर्भर्त्सितानां मणयनानि=वध्यस्थाननयनानि। एतानि किं हेतुकानि ? इत्याह—'वज्जसयमाइयाणि' अवद्यगतमातृकाणि- अवद्यशतमातृकाणि-अवद्यशतानि=मन्दतीव्रादिपरिणामेन कृतानि पापशतानि,

सपवचणाणि य असत्य वस्तुविषयक आदेशरूप आज्ञा से उन्हें प्रतारित (ठगना) किया जाता है-वहा पर नारकीजन पहिले उस नवीन नारकी को प्रखर उष्ण से सन्तप्त वालुका पुज की ऊपर अनेकवार घूमाते हैं। इससे उसकी गर्मी से उसकी प्यास अधिक से अधिक मात्रा में जब प्रदीपित हो जाती है तब उसे बनावटी जलाशय दिखलाकर वहा वे भेज देते हैं इस तरह उसे वहां वार २ प्रतारित किया जाता है "जाओ वहां तुम्हारा पिता आया है" इत्यादि अनेकविध वचनों द्वारा वे उसकी प्रवञ्चना किया करते है। (खिसणविमाणाणि य) जाति, कुल आदिके नामनिर्देपपूर्वक उसकी वहा निंदा की जाती है। तिरस्कार किया जाता हैं। (विघुट्ठपणिज्जणाणि य) "अपने किये हुए पापकर्मों का तुम फल भोगो" इत्यादि निष्ठुर वचनों से उसे निर्भर्त्सितकरके वध्य स्थानों पर लाया जाता हैं। (वज्जसयमाइयाणि य) इस तरह नाना प्रकार के इन दु:खों को नरकों में मन्द, तीव्र आदि परिणामो द्वारा किये गये

શૂળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે "आएसपवचणाणि य" અસત્ય વસ્તુ વિષેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે નવીન નારકી જીવોને પ્રચડ ઉષ્ણતાથી સારી રીતે તપેલી રેતી પર અનેકવાર ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃષા જ્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણમા પ્રદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જળાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે-ઠગવામા આવે છે' જાઓ, ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે" ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચનો દ્વારા તેઓ તેની હાસી કર્યા કરે છે "खिसणविमाणणाणि य" જાતિ, કુળ આદિના નામનો નિર્દેષ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે "विघुट्टपणिज्जणाणि य" "તે કરેલા કર્મોનુ ફળ તુ ભોગવ" એવા નિષ્ઠુર વચનોથી તેમને ધમકાવીને વધસ્થાનો પર લઇ જવામા આવે છે "वज्जसयमाइयाणि य" આ રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્રઆદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલ સેકડો પાપોને કારણે

णाणि ' शाल्मलि तीक्ष्णाग्रलोहकण्टकाभिसारणापसारणानि=शाल्मलिः=' सेमल ' इति ख्यातो वृक्षविशेषस्तस्य ये तीक्ष्णाग्रा लोहकण्टका इव कण्टकाः, तेषु अभिसारणापसारणानि च = कर्षणापकर्षणानि ' फालणविदारणाणि ' फालनानि=वस्त्रवत्स्फाटनानि, विदारणानि=क्रकचादिना काष्ठवद् द्वैधीकरणानि ' अवकोडगबंधणाणि' अवकोटकबन्धनानि=ग्रीवाया हस्तयोश्च पश्चाद्भागानयनेन बन्धनानि, ' लट्ठिसयताडणाणि ' यष्टिशतताडनानि=यष्टिशतैस्ताडनानि, ' गल गवलुल्लबणाणि ' गलकवलोल्लम्बनानि=गल एव गलकः=कण्ठः, तस्मिन् बलात् =बलपूर्वकम् उल्लम्बनानि=वृक्षशाखादौ उद्बन्धनानि, ' सूलग्ग भेयणाणि य ' शूलाग्रभेदनानि च=शूलाग्रेण=शूलाग्रभागेन भेदनानि, शूलारोपणानि वा, ' आएस पवचणाणि ' आदेशप्रवञ्चनानि=आदेशेन=आज्ञया असत्यवस्तु विषयया

उनका वह शरीर अर्पित किया जाता है, (सामलितिक्खग्गा–लोहकंटग अभिसारणा–पसारणाणि) सेमर वृक्ष के लोहकण्टक के समान नुकीले कांटा के ऊपर उनका कर्षणापकर्षण किया जाता है उन्हें आगे पीछे खेंचा जाता है, (फालण विदारणाणि य) फालन–वस्त्र के समान फाड़ना और करोंति आदि के द्वारा काष्ठ को तरह चीरना भी उनका वहा किया जाता है। (अवकोडगबधणाणि) उनको ग्रीवा और दोनों हाथ पीछे के भाग की तरफ करके बाधे जाते हैं। (लट्ठिसयताडणाणि य) सैकडों लाठियों की उन पर वहा मार पडती है। (गलगवलुबणाणि य) जबर्दस्ती उनके गलों को वृक्ष की शाखा पर बाधकर लटकाया जाता हैं। (सूलग्गभेयणाणि य) शूल के अग्रभाग से उनके शरीर का भेदन किया जाता है। अथवा शूली के ऊपर उन्हें लटकाया जाता हैं। (आए

તેમના તે શરીર અર્પણ કરાય છે " सामलितिक्खग्गलोहकटग–अभिसारणा –पसारणाणि य " સેમર વૃક્ષના લોહકંટકના સમાન અણીદાર કાટાઓ ઉપર તેમનુ કર્ષણાપકર્ષણ કરાય છે–તેમને આગળ પાછળ ખેચવામા આવે છે " फालणविदारणाणि य " ત્યા તેમને વસ્ત્રની જેમ ફાડવામા આવે છે અને કરવત આદિ દ્વારા જેમ લાકડાને ચીરવામા આવે છે તેમ તેમને પણ ચીર–વામા આવે છે " अवकोडगबधणाणि " તેમની ડોક અને બને હાથ પાછળના ભાગમા રખાવીને બાધવામા આવે છે ' लट्ठिसयताडणाणि य " ત્યા તેમને સેકડો લાઠીઓનો માર પડે છે " गलगवल्लुबणाणि य " જોર જુલમથી તેમના ગળા બાધીને વૃક્ષોની ડાળિયો પર તેમને લટકાવવામા આવે છે," सूलग्ग भेयणाणि य " શૂળની અણીથી તેમના શરીરનુ ભેદન કરવામા આવે

प्रवञ्चनानि=प्रतारणानि प्रखरोष्णसन्तप्तवालुका निकरानेकक्षणपरिक्रमणोपताप प्रदीपितपानीय पानातितृष्णस्य समुदञ्चज्जलवीचिरुचिमरीचिनिचय जलाशय॰-दिश्य तत्र पानाय प्रेषण, 'गच्छ तत्र ते पिता 'समागतः' इत्याद्यनेकविधः प्रवञ्चना इति भाव., 'खिंसण विमाणणाणि' खिंसनविमाननानि=खिंसनानि= जातिकुलादिनामनिर्देशपूर्वक निन्दनानि, अत एव विमाननानि तिरस्करणानि 'विघुट्ठपणिज्जणाणि' विघुष्ट प्रणयनानि=विघुष्टाना="स्वकृतपापकर्मणा फलानि भुङ्क्ष्व" इत्यादिभिर्निष्ठुरवचोर्निर्भर्त्सिताना प्रणयनानि=वध्यस्थाननयनानि। एतानि किं हेतुकानि ? इत्याह—'वज्जसयमाइयाणि' अवद्यशतमातृकाणि—अवद्यशतमातृकाणि—अवद्यशतानि=मन्दतीव्रादिपरिणामेन कृतानि पापशतानि,

---

सपवंचणाणि य असत्य वस्तुविषयक आदेशरूप आज्ञा से उन्हें प्रतारित (ठगना) किया जाता है—वहा पर नारकीजन पहिले उस नवीन नारकी को प्रखर उष्ण से सन्तप्त वालुका पुंज की ऊपर अनेकवार घूमाते हैं। इससे उसकी गर्मी से उसकी प्यास अधिक से अधिक मात्रा में जब प्रदीपित हो जाती है तब उसे बनावटी जलाशय दिखलाकर वहा वे भेज देते हैं इस तरह उसे वहां वार २ प्रतारित किया जाता है "जाओ वहां तुम्हारा पिता आया है" इत्यादि अनेकविध वचनों द्वारा वे उसकी प्रवञ्चना किया करते हैं। (खिंसणविमाणणाणि य) जाति, कुल आदि के नामनिर्देपपूर्वक उसकी वहा निंदा की जाती है। तिरस्कार किया जाता हैं। (विघुट्ठपणिज्जणाणि य) "अपने किये हुए पापकर्मों का तुम फल भोगो" इत्यादि निष्ठुर वचनों से उसे निर्भर्त्सितकरके वध्य स्थानों पर लाया जाता हैं। (वज्जसयमाइयाणि य) इस तरह नाना प्रकार के इन दुःखों को नरकों में मन्द, तीव्र आदि परिणामो द्वारा किये गये

શૂળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે "आएसपवचणाणि य" અસત્ય વસ્તુ વિશેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે નવીન નારકી જીવોને પ્રચડ ઉષ્ણતાથી સારી રીતે તપેલી રેતી પર અનેકવાર ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃષા જ્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણમા પ્રદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જળાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે-ઠગવામા આવે છે 'જાઓ, ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે" ઈત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચનો દ્વારા તેઓ તેની હાસી કર્યા કરે છે "खिंसणविमाणणाणि य" જાતિ, કુળ આદિના નામનો નિર્દેષ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે "विघुट्ठपणिज्जणाणि य" "તે કરેલા કર્મોનુ ફળ તુ ભોગવ" એવા નિષ્ઠુર વચનોથી તેમને ધમકાવીને વધસ્થાનો પર લઈ જવામા આવે છે "वज्जसयमाइयाणि य" આ રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલ સેકડો પાપોને કારણે

तान्येव मातृकाणि=उत्पत्तिस्थानानि येषां तानि तथा-पापशतहेतुकानीत्यर्थः। दुःखानि वेदयन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः ' वर ' इत्यत्र प्राकृतत्वाद्वकारलोपः ॥२६॥

एते पापकारिणः ' कीदृशीं ' वेदनां कियत्कालमनुभवन्ति ? इत्याह— ' एवं ते ' इत्यादि।

मूलम्—एवं ते पुव्वकम्मकयसंचओवतत्ता निरयग्गिमहग्गि संपलित्ता गाढदुक्खमहब्भयं कक्कसं असायं सारीरं माणसं च दुविहं तिव्वं वेदेंति वेयणं पावकम्मकारी। बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि कलुणं पालेंति ॥ सू० २७ ॥

सैकडों पापों के कारण पापी जीव उत्पन्न होकर भोगा करते हैं "मातृक" पद यहा पर उत्पत्ति स्थान का वाचक है। अर्थात् इन दुःखों के उत्पत्ति-स्थान अवश्यशत सैंकडो घोर पाप करनेवाले पापी हो जाते है।

भावार्थ-पापी जीव नरको मे जन्म लेकर नाना प्रकार की वेदना भोगा करते हैं यही बात सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा प्रदर्शित की है। वहा पर उन्हें पकाया जाता है, उबाला जाता है, गलाया जाता है, तला जाता है, भुजा जाता है उनके शरीर के तिल २ के बराबर खंड २ भी करदिया जाता है। सेमर जातिके वृक्षों के नुकीले कांटोंपर उन्हें घसीटा भी जाता हैं इत्यादि भयकर से भी भयकर कष्ट वहा दिये जाते हैं, तात्पर्य यह है कि वेदना के जितने भी प्रकार हो सकते हैं वे सब प्रकार नरकों मे होते है और उन सब प्रकारों से होने वाले दुःखों को मन्द तीव्र आदि परिणामोंसे किये गये पापोंके कारण पापी जीव भोगा करते हैं ॥

નરકમા ઉત્પન્ન થઇને વિવિધ દુઃખોને ભોગવે છે "માતૃક" પદ અહીં ઉત્પત્તિસ્થાનનુ વાચક છે એટલે કે તે દુઃખોનુ ઉત્પત્તિસ્થાન સેકડો પાપો અવશ્યશત છે

ભાવાર્થ—પાપી જીવો નરકોમા જન્મ લઇને અનેક પ્રકારની વેદના ભોગવ્યા કરે છે એજ વાત સૂત્રકારે સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરી છે ત્યા તેને પકાવવામા આવે છે, ઉકાળવામા આવે છે, ઓગાળવામા આવે છે, તળવામા આવે છે, શેકવામા આવે છે તેમના શરીરના રાઇ રાઇ જેવડા ટૂકડા કરવામા આવે છે સેમર વૃક્ષોના અણીદાર કાટા ઉપર તેમને ઘસડવામા પણ આવે છે, વગેરે ભયકરમા ભયકર કષ્ટો તેમને ત્યા અપિવામા આવે છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે વેદનાના જેટલા પ્રકારો હોઇ શકે તે બધા પ્રકારો નરકોમા હોય છે અને તે બધા પ્રકારોથી થતા દુઃખોને મંદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી કરાયેલ પાપોને કારણે પાપી જીવ ભોગવ્યા કરે છે ॥ સૂ. ૨૬ ॥

टीका—एवम्=उक्तरीत्या ते=पापकारिणः, 'पुव्वकम्मकयसचओवतत्ता' पूर्वकर्मकृतसञ्चयोपतप्ताः=पूर्वकृतानां कर्मणा सञ्चयेन=समुपार्जनेन उपतप्ता= सन्ताप प्राप्ताः 'निरयग्गिमहग्गिसपलित्ता' नरकाग्निमहाग्निसप्रदीप्ताः= नरकग्न्याग्निः सन्तापकारकत्वाद् नरकाग्नि', स महाग्निरिव अत्युत्कटत्वात् तेन सप्रदीप्ताः=सतप्ता 'पावकम्मकारी' पापकर्मकारिणः, 'गाढदुक्खमहब्भय' गाढदुःखमहाभया=गाढेन=निबिडेन दुःखेन महाभया=विशालभययुक्ता 'कक्कस' कर्कशां=कठोराम् 'असाय' असाताम्=असातनामवेदनीयकर्मोद्भवा, 'सारीर' शारीरीं 'मानस' मानसीं च दुविह=द्विविधा 'तिव्व' तीव्राम्=अतिशया 'वेयण' वेदना=पीडा वेदयन्ति=अनुभवन्ति। कियत्कालम्? इत्याह—'बहूणि' बहूनि 'पलिओवमसागरोवमाणि' पल्योपमसागरोपमाणि=पल्योपमाणा काल,

---

अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि पापी जीव नरकों में कैसी २ वेदना को कितने कालतक भोगते हैं—'एव ते' इत्यादि

टीकार्थ-(एव) इस प्रकार (ते पावकम्मकारी) वे पापकारी जीव (पुव्व-कम्मकयसचओवतत्ता) पूर्वकर्म के लिये हुए सचय से अत्यत सतप्त होकर तथा सतापकारी होने से महाग्नि जैसी नरकरूप अग्नि से सप्र-दीप्त होकर (पावयारी) पापकारी जीव (गाढ दुक्खमहब्भय) निविड़-दुःख से अतिश दुःखवाली ऐसी (कक्कस) कठोरातिकठोर (सरीर) शारिरीक, एव (माणस) मानसिक, (दुविह) दोनो प्रकार की (असाय वेयण) असाता वेदनीय कर्म के उदय से जनित (तिव्व वेयण) तीव्र वेदना को (वेदेंति) भोगते हैं ऐसी वेदना को वे कितने काल तक भोगते हैं यह कहते हैं (बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि) इस तरह

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે પાપી જીવ નરકોમા કેવી કેવી વેદનાને કેટલા સમય સુધી ભોગવે છે "एव ते" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"एव" આ પ્રમાણે "ते पावकम्मकारी" તે પાપકારી જીવ "पुव्वकम्मक-यसचओवतत्ता" પૂર્વે કરેલા કર્મોના સચયથી અતિશય સતપ્ત થઈને તથા સતાપકારી હોવાથી મહા અગ્નિથી સપ્રદીપ્ત થઇને, "पावयारी" પાપી જીવ "गाढदुक्खमहब्भय" ભયકર દુખોથી અતિશય દુખવાળી, "कक्कस" અતિશય કઠોર, "सारीर" શારીરિક અને "माणस" માનસિક "दुविहं" બને પ્રકારની "असाय वेयण" અસાતા વેદનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થયેલ "तिव्वं वेयण" તીવ્ર વેદનાને "वेदेंति" ભોગવે છે એવી વેદનાને તેઓ કેટલા સમય સુધી ભોગવે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે "बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि" એ રીતે અનેક પ્રકારની વેદનાને તેઓ ઘણા જ પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ

' कलुण ' करुणं-यथास्यात्तथा दीनदशामाश्रित्येत्यर्थः, ' पालेति ' पालयन्ति= प्रतीक्षन्ते ' कदा ममाय दुःखकालः पूर्णो भविष्यती 'ति प्रतीक्षमाणा नरकजीवाः कालं यापयन्तीत्यर्थः ॥ सू० २७ ॥

ते पुनः किं कुर्वन्ती ? त्याह—

मूलम्—ते अहाउय जमकाइयतासिया य सद्द करेंति भीया, किंते ? अवि-भाय ! सामि ! भाय ! बप्प ! तात ! जितव ! मुय मे मरामि दुब्बलो वाहिपीलिओ ह किं इदाणि असि, एवं दारुणो णिद्दओ य मा देहि मे पहारे, अस्सासेउ मुहुत्त मे देहि, पसायं करेह, मा रुसह वीसमामि गेविज्ज मुयह मे, मरामि, गाढं तण्हाइओ अह, देहि पाणिय ॥ सू० २८ ॥

टीका—ते पूर्वोक्ताः पापकर्माण 'अहाउय' यथायुष्क=यथाबद्धायुष्क= पूर्वभव यावत्कालपरिमितमायुर्बद्धमासीत्तावत्परिमित न तु न्यूनाधिक देवनारका-

---

की वेदना वे बहुत से पल्योपम तथा सागरोपमप्रमाण कालतक (कलुण) करुणदशा से, (पालेंति) भोगते है। उस समय उनकी बडी दीनदशा रहती है। और वे इस बात की प्रतीक्षा में उस असह्य पीडा को भोगते हुए कहा करते है कि " कब यह हमारा दुःखकाल समाप्त हो "। इस तरह विचारे वे पापी जीव वहा से निकलने के समय की प्रतिक्षा करते हुए काल को व्यतीत करते रहते हैं ॥सू २७॥

और वे क्या करते है? सो सूत्रकार कहते हे–' ते अहाउय ' इत्यादि।

टीकार्थ–देव और नारकियों आदिकी आयु निरुपक्रम होती है–बीचमें छिदती भिदती नहीं हैं, तीव्र शस्त्र, तीव्र विष, तीव्र अग्नि आदि जिन

પ્રમાણ કાળ સુધી " कलुण " કરુણાજનક દશામા " पालेंति " ભોગવે છે તે સમયે તેમની ઘણી દીનદશા હોય છે અને " ક્યારે અમારો આ દુખનો સમય પૂરો થાય " એ વાતની રાહ એ અસહ્ય પીડા ભોગવતા ભોગવતા તેઓ જોયા કરે છે આ રીતે બિચારા પાપી જીવો ત્યાથી નીકળવાના સમયની રાહ જોતા જોતા સમય પસાર કરે છે ॥ સૂ ૨૭ ॥

અને તેઓ શું કરે છે? તે સૂત્રકાર બતાવે છે—' ते अहाउय" ઇત્યાદિ

દેવ અને નારકીઓ આદિનુ આયુષ્ય નિરુપક્રમ હોય છે–તે વચ્ચે અકસ્માતોથી છેદાતું ભેદાતુ નથી, તીવ્ર શસ્ત્ર, તીવ્ર વિષ, તીવ્ર અગ્નિ આદિ જે કારણોથી

दीना निरुपक्रमायुष्कत्वात्, उक्तञ्च—

" देवा नेरइया वि य, असखवासाउया तिरियमणुया ।
उत्तमपुरिसा य तहा, चरमसरीरा निरुवक्कमती ॥ १ "

निमित्तोंसे अकालमृत्यु होती है उन निमित्तोंका प्राप्त होना उपक्रम है। यह उपक्रम देव और नारकियों के तथा चरमदेहधारी एव उत्तम देहवालों के प्राप्त नहीं होता है । चरमदेह और उत्तमपुरुषों के यह उपक्रम कदाच प्राप्त हो भी जावे तो वह उन की आयु अनपवर्तनीय ही होती है, इस नियम के अनुसार (ते) वे पापकारी जीव (अहाउय) इतने प्रकार की प्राणान्तक वेदना को भोगने पर बीच मे मरते नही हैं–अर्थात्–उनकी अकाल में मृत्यु नहीं होती है क्यों कि पूर्वभव में जितनी आयु यहां की उन्हें ने बांधली थी उतनी आयुतक वे वहा रहते हें कम या ज्यादा समय तक नहीं रहते । कहा भी है—

" देवा नेरइया वि य, असखवासाउया तिरियमणुया ।
उत्तमपुरिसा य तहा, चरमसरीरा निरुवक्कमती " ॥१॥

इस गाथा के अर्थकी सूचना यद्यपि कुछ रूप मे ऊपर कर दी गई है फिर भी स्पष्टरूप में इस प्रकार है–देव, नारकी, असख्यातवर्ष की आयुवाले, तिर्यंच और मनुष्य–तीस अकर्म भूमियों, छप्पन अन्तद्वीपों और भरतादिक्षेत्र में उत्पन्न युगलिक तथा ढाईद्वीप के बाहर के द्वीप

અકાળ મૃત્યુ થાય છે તે કારણોનુ પ્રાપ્ત થવુ તે ઉપક્રમ કહેવાય છે તે ઉપક્રમ દેવ અને નારકીઓને તથા ચરમ દેહધારી અને ઉત્તમદેહધારીને પ્રાપ્ત થતો નથી ચરમ દેહધારી અને ઉત્તમપુરુષોને કદાચ તે ઉપક્રમ પ્રાપ્ત થાય તો પણ તેનુ આયુષ્ય અનપવર્તનીય–નિશ્ચિત કાળનુ જ હોય છે તે નિયમ પ્રમાણે 'ते" તે પાપકારી જીવો " अहाउय " આટલા, પ્રકારની પ્રાણાતક વેદના ભોગવવા છતા પણ વચ્ચે મૃત્યુ પામતા નથી, એટલે કે તેમનુ અકાળ મૃત્યુ થતુ નથી કારણ કે પૂર્વભવમા તેમણે અહીંનુ જેટલુ આયુષ્ય બાધ્યુ છે તેટલુ આયુષ્ય પૂરૂ થાય ત્યા સુધી તેઓ અહી જ નરકાદિમા–રહે છે, વધારે કે ઓછો સમય રહેતો નથી કહ્યુ પણ છે—

" देवा नेरइया वि य, असखवासाउया तिरियमणुया ।
उत्तमपुरिसा य तहा, चरमसरीरा निरुवक्कमती " ॥ १ ॥

આ ગાથાના અર્થનુ સૂચન થોડા પ્રમાણમા કહેવામા આવ્યુ છે તેનો સ્પષ્ટ અર્થ આ પ્રમાણે છે દેવ, નારકી, અસખ્યાત વર્ષના આયુષ્યવાળા તિર્યંચ અને મનુષ્ય–ત્રીસ અકર્મ ભૂમિઓ, છપ્પન અન્તર્દ્વીપો અને ભરતાદિ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થયેલ યુગલિક તથા અઢી દ્વીપની બહારના દ્વીપ સમૂહોમા રહેતા

'जमकाइय तासिया' यमकायिक त्रासिताः-यमकायिकैः पञ्चदशविधैः परमाधार्मिकैः अम्बाम्बरीपादिभिर्त्रासिता=त्रास मापिताः 'भीया' भीताः= भयव्याकुलाः सन्तः 'सद्द' शब्द=वक्ष्यमाणप्रकारमार्त्तनाद 'करे ति' कुर्वन्ति। 'किं ते' के ते आर्त्तशब्दाः ? इत्याह-'अविभाये'त्यादि 'अवि' अपि-वाक्यालङ्कारे 'भाय' भाग-हे महाभाग=सामर्थ्यवत्त्वात्, 'सामि' हे स्वामिन् ! अधिपतित्वात्, 'भाय' हे भ्रात ! - सहायकत्वात्, 'वप्प' हे पितः ! - पालकत्वात्, 'ताय' हे तात ! - त्रायकत्वात्, 'जितव' हे जितवन् ! =हे विजयिन् ! - विजयशालित्वात्, 'मुय मे' मुञ्च मा 'मरामि' म्रिये, अह 'दुब्बलो' दुर्बलः=बलहीनः 'वाहि पीलिओ' व्याधि पीडितः, 'किं' किमर्थ त्वम् 'इदाणि' इदानीम्=अस्मिन्-समये 'दारुणो' कठोर., 'णिद्दओ'

समुद्रों मे भी पाये जाने वाले तिर्यंच-उत्तमपुरुप-तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, आदि, एव चरमशरीरी-उसी भव से मोक्ष जाने वाले जीव, ये सब निरूपक्रम आयुवाले होते हैं ॥१॥

पापी जीव वहा (जमकाइयतासिया) यमकायिक-पन्द्रह प्रकार के परमाधार्मिक अम्ब और अम्बरीप आदि देवो के द्वारा त्रास को प्राप्त कराये जाते हैं। (भीया) इसलिये भय से सदा व्याकुल बने हुए वे वहा पर (सद्द) आर्त्तनाद (करेति) किया करते हैं (किं ते ?) वे कौन २ शब्द करते है ? वही कहते हैं-(अविभाय) हे महाभाग ! (सामि) हे स्वामिन् ! (भाय) हे भाई ! (वप्प) हे पिता ! (ताय) हे तात ! (जितव) हे विजयन् !-(मुय मे) तू मुझे छोड दे, (मरामि) मैं मर रहा हू, (दुब्बलो) मे बलहीन हू, (वाहिपीलिओह) व्याधि से पीडित हो रहा हू, (किं इयाणि) क्यों इस समय तुम मेरे उपर (एव) इस प्रकार से (दारुणो निद्दओ य असि)

તિર્યંચ, ઉત્તમ પુરૂષ-તીર્થંકર, ચક્રવર્તી, બળદેવ, વાસુદેવ આદિ, અને ચરમ શરીરી-એજ ભવમા મોક્ષે જનારા જીવો, એ સઘળા નિરુપક્રમ આયુષ્યવાળા હોય છે ॥૧॥ ત્યા પાપી જીવો "जमकाइय तासिय" યમકાયિક-પદર પ્રકારના પરમાધાર્મિક અમ્બ અને અમ્બરીપ આદિ જીવો દ્વારા ત્રાસ પામે છે, "भीया" તેથી ભયથી વ્યાકુળ બનેલા તે જીવો ત્યા "सद्द" આર્ત્તનાદ "करेति" કરે છે "किते ?" તેઓ કેવા કેવા શબ્દો બોલે છે ? તે હવે કહેવામા આવે છે "अविभाय" હે મહાભાગ ! "सामि" હે સ્વામિન્ ! "भाय" હે ભાઇ ! "वप्प" હે પિતાજી ! "हे ताय" હે તાત ! "जितव" હે વિજયી ! "मुय मे" તુ મને છોડી દે, "मरामि" હુ મરી રહ્યો છુ, "दुब्बलो" હુ નિર્બળ છુ, "वाहिपीलिओह" વ્યાધિથી પીડાઇ રહ્યો છુ, "किं इयाणि" અત્યારે તમે મારા પ્રત્યે "एव" આ રીતે "दारुणो निद्दओ य असि" કઠોર

निर्दयः-दयारहित, 'असि' भवसि ?, मा देहि 'मे' मह्य 'पहारे' प्रहारान् मा मा ताडयेत्यर्थ'। 'अस्सासेउ' उच्छ्वसितु=श्वासमात्र ग्रहीतु 'मे' मह्य 'मुहुत्त' मुहूर्तं=क्षणमात्र देहि, येन श्वासमात्रमपि सुखमनुभवामीति भावः, 'पसाय' प्रसादम्-अनुग्रह 'करेह' कुरुत 'मा रुसह' मा रूष्यत=क्रोध मा कुरुत। 'वीसमामि' विश्रमामि=किञ्चित्काल विश्राम करोमि अतः 'मे' मम 'गेविज्ज' ग्रैवेयक=ग्रीवाबन्धन 'मुयह' मुञ्चत=त्यजत यतो हि-अह 'मरामि' म्रिये, गाढ=अत्यधिक 'तण्हाइओ' तृष्णार्दितः पिपासाकुलितोऽस्मि मे=मह्य 'पाणिय' पानीय=जल देहि ॥ सू० २८ ॥

एव नारकैः कथिते सति यमपुरुषाः यत् कुर्वन्ति तदाह-'ताहे त' इत्यादि।

मूलम्-ताहे त पिय इम जलं विमल सीयलंति घेत्तूण य नरयपाला तवियं तउयं से दिति कलसेण अंजलीसु दट्ठूण य त पवेवियगोवंगा अंसुपगल तपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा इयम्ह कलुणाणि जपमाणा विप्पेक्खता दिसोदिसि अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बधुविप्पहीणा विपलायंति य मियविववेगेण भउव्विग्गा, घेत्तण बला पलायमाणाणं निरणुकपामुह विहाडेउं लोहदंडेहि कलकलण्ह वयणंसि छुभंति केइ जमकाइया हसंता॥२९

कठोर और निर्दय हो रहे हो, (मा देहि मे पहारे) मुझ पर प्रहार मत करो (अस्सासेउ मुहुत्त मे देहि) मुझे कम से कम मुहूर्त्त-क्षण मात्र श्वास तो लेने दो, (पसाय करेह) मेरे ऊपर दया करो, (मा रुसह) मुझ पर क्रोध मत करो, (वीसमामि) मैं कुछ कालतक विश्राम करना चाहता हू-अत (गेविज्ज मुयह मे) मेरी ग्रीवा के बधन को तुम छोड दो, देखो (गाढ तण्हाइओ अह) गहरी प्यास से व्याकुल होकर मै मर रहा हू अतः मेरे लिये (देहि पाणिय) पीने को जल दो ॥सू २८॥

જેમ બની રહ્યા છો ? 'मा देहि मे पहारे" મારા પર પ્રહાર ન કરો "अस्सासेउ मुहुत्त मे देहि" મને ઓછામા ઓછી એક ક્ષણ માટે તો શ્વાસ લેવા દો "पसाय करेह" મારા ઉપર દયા કરો, "मा रुसह" મારા ઉપર ક્રોધ ન કરો, "वीसमामि" હુ થોડો સમય વિશ્રામ કરવા માગુ છુ તો "गेविज्ज मुयह मे" મારી ડોકમાનુ બધન તમે છોડી દો, જુવો "गाढ तण्हाइओ अह" ભારે તૃષાથી વ્યાકુળ થઈને હુ મરી રહ્યો છુ તો મને "देहि पाणिय" પીવાને માટે જળ આપો" ॥ સૂ. ૨૮ ॥

टीका—यदि त्व पिपासितः ' ताहे ' तदा ' त ' त्व ' इम ' इदं ' विमलं ' निर्मल ' सीयल ' शीतल जल ' पिय ' पिव, इति कथयित्वा ' नरयपाला ' नरकपालाः=परमाधार्मिका 'तविय' तापितम्=उत्कालित 'तउय' त्रपुक='कथीर' इति प्रसिद्ध सीसक वा, ' कलसेण ' कलशेन=घटेन ' से ' तस्मै नारकाय ' अ जलीसु य ' अञ्जलिषु च ' दिंति ' ददति । ' त ' तत्=तापित त्रपु ' दट्ठूण ' दृष्ट्वा=अवलोक्य ' पवेवियगोवगा ' प्रवेपिताङ्गोपाङ्गा =प्रकर्षेण वेपितानि=कम्पितानि अङ्गानि उपाङ्गानि च येषा ते तथा=कम्पितसर्वशरीराः ' असु–पगल–त–पप्पुयच्छा ' प्रगलदश्रुमप्लुताक्षाः=प्रगलद्भिः अश्रुभिः प्लुते=व्याप्ते अक्षिणी= नयने येषा ते तथा, प्रक्षरत्प्रगलाश्रुधाराः सन्त ' अम्ह ' अस्माक ' तण्हा ' तृष्णा ' छिण्णा ' छिन्ना=नष्टा ' इय ' इति=एवमुक्त्वा ' कलुणाणि ' करुणानि

इस प्रकार नारक जीवों के कहने पर परमाधार्मिक जो कुछ उनके साथ करते हैं वह सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—' ताहे ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(ताहे त) यदि तुम पिपासित हो तो (इम) इस (विमल) निर्मल (सीयल) शीतल (जल) जल को (पिय) पिओ ऐसा कह कर (नरयपाला) वे नरकपाल परमाधार्मिक देव (तविय) उबाले हुए कथीर को अथवा सीसे को (कलसेण) कलश मे भरकर (से) उस नारकी के लिये (अजलीसु) अजलि में (दिंति) देते हैं। (त) उस तपे-हुए-त्रपु-सीसे-को (दट्ठूण य) देखकर (पवेवियगोवगा-) उन-नारकियो का समस्त शरीर-अग-उपाग बहुत अधिक रूप मे कपने लगते हैं। और (असुपगलतपप्पुयच्छा) उसी स्थिति मे वे निकलते हुए आसुओं से अपनी आखो को व्याप्त करके उनसे कहते है कि (छिण्णा तण्हा अम्ह) अब हमारी प्यास शात हो गई है (इय)-इस

નારકી જીવોના એ પ્રકારના શબ્દો સાંભળીને પરમાધર્મી તેમની સાથે કેવો વર્તાવ કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે-' ताहे " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" ताहे त " જો તમને તરસ લાગી હોય તો " इम " આ " विमल " નિર્મળ, "सीयल" શીતળ "जल' પાણી "पिय" પીવો એમ કહીને "नर-यपाला" તે નરકપાલ પરમાધાર્મિક દેવો "तविय" ઓગાળેલ ગરમ કથીર અથવા સીસાને "कलसेण" કળશમા ભરીને ' से" તે નારકીને "अजलीसु" અજલિમા "दिंति" આપે છે "त " તે ગરમા ગરમ ત્રપુ-સીસાને दट्ठुण य " જોઇને " पवेवियगोवगा " તે નારકીઓના અગ ઉપાગ અત્યત કપવા લાગે છે "असुपगलत पप्पुयच्छा " તે સ્થિતિમા આસુભરી આખે તેઓ તેમને કહે છે કે "छिण्णा तण्हा अम्ह " હવે હમારી તૃષા શાત થઈ ગઇ છે '

वचनानि ' जपमाणा ' जल्पमानाः=प्रजल्पन्तः ' दिसोदिसिं ' दिशोदिश=एकस्या दिशोऽन्यां दिशमितस्तत इत्यर्थः ' विप्पेक्खत्ता ' विप्रेक्षमाणाः=समन्तात् पश्यन्तः ' अत्ताणा ' अत्राणाः=रक्षाहीना, अतएव ' असरणा ' अशरणाः=शरणरहिताः, अतएव ' अणाहा ' अनाथाः=दीनाः, ' अबधवा ' अबान्धवाः=बान्धवरहिताः, ' बधुविप्पहीणा ' बन्धुविप्रहीणाः=विद्यमानसम्बन्धिविमयुक्ताः, ' मियविव ' मृगा इव ' भउव्विग्गा ' भयोद्विग्नाः=भयव्याकुलाः ' वेगेण ' वेगेन ' विपलायंति ' विपलायन्ते=प्रधावन्ति, ततः प्रधावमानान् तान् नारकान् ' बला ' बलात् ' घेत्तूण ' गृहीत्वा ' निरणुकपा ' निरनुकम्पाः=दयारहिताः ' केइ ' केऽपि ' जमकाइया ' यमकायिकाः=परमाधार्मिकाः, हसता ' हसन्त ' पलायमाणाण ' पलायमानाना च तेषा ' मुह ' मुख ' लोहदंडेहिं ' लोहदण्डैः, ' विहाडेउ ' विघाटय=उद्घाटय ' कलकल ' अतितप्तत्वात् कल-कल शब्दयुक्त पूर्वोक्त त्रपुक

प्रकार करकर वे (कलुणाणि जपमाणा) करुणा वचनोंका उच्चारण करते हुए (दिसोदिसिं विप्पेक्खता) एक दिशा से दूसरी दिशा में इधर उधर देखते हुए (अत्ताणा) रक्षक रहित (असरणा) शरण रहित (अणाहा) विनानाथ के (अबधवा) दीनदशा सपन्न (बधुविप्पहीणा) बांधवों से रहित-रक्षक जनों से रहित, अतः (भउव्विग्गा) भय से व्याकुल बन कर वे (मियविव) मृगों की तरह वहा से (वेगेण) वेगपूर्वक (विप्पलायंति) भागते हैं। इसके बाद भागते हुए उन नारकियों को (बला-घेत्तूण) जबर्दस्ती से पकड़कर (निरणुकपा) दयारहित बने हुए (केइ) कितनेक (जमकाइया) यमकायिक परमाधार्मिक देव (हसता) हँस हँसकर (पलायमाणाण) पलायन करते हुए उनके (मुह) मुख को (लोहदडेहिं) लोहदडों से (विहाडेउ) फाडकर फिर उसमें (कलक-

---

પ્રમાણે કહીને "कलुणाणि जपमाणा" કરુણાજનક વચનો બોલતા, "दिसो दिसि विप्पेक्खता" ત્યાંથી બીજી દિશામાં આમ તેમ જોતા, "अत्ताणा" રક્ષક વિનાના "असरणा", શરણ વિનાના, "अणाहा" અનાથ, "अबधवा" દીનદશામાં મૂકાયેલા, "बधुविप्पहीणा" બાંધવો વિનાના-રક્ષણ કરનાર વિનાના, એવા તે નારકી જીવો "भउव्विग्गा" ભયથી વ્યાકુળ બનીને "मियविव" મૃગોની જેમ ત્યાંથી 'वेगेण" વેગથી "विप्पलायति ' ભાગે છે ત્યારબાદ ભાગતા એવા તે નારકી જીવોને "बलाघेत्तूण" જોર જુલમથી પકડીને "निरणुकपा" દયા રહિત બનેલા "केइ" કેટલાક "जमकाइया" યમકાયિક, પરમાધાર્મિક દેવો "हसता" હસી હસીને "पलायमाणाण" નાસતા એવા તેમના "मुह" મુખને 'लोहदडेहिं" લોઢાના

स कीदृशो निर्घोषः ? इत्याह—' रसिये ' त्यादि ।

मूलम्—रसिय—भणिय—कुविय—उक्कूइय—निरयपालतज्जियं—गेण्ह कम पहर छिंद भिंद उपाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि य भंजहण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकड्ढ विकड्ढ किं ण जपसि? सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ एव वयणमहप्पगब्भो सपडि सुयसद्दसकुलो उत्तासओ सया निरयगोयराण महाणगरडज्झमाणसरिसो निग्घोसो सुव्वए अणिट्ठो तहियं नेरइयाण जाइज्जताणं जायणाहि ॥ सू०३१ ॥

टीका—' रसिय—भणिय — कूइय — उक्कूइयनिरयपालतज्जिय ' रसित-भणित—कुपितोत्कूजित—नरकपाल—तर्जित—तत्र—'रसिय ' रसिता =सूकरवद् घोरशब्दकारकाः, 'भणिय' ' भणिता =उच्चैः शब्दकारकाः, 'कूइय' कूजिता =अव्यक्तध्वनिकारकाः, ' उक्कूइय ' उत्कूजिताः=भयजनकाव्यक्तशब्दकारकाः ये ' निरय

(णीसिट्ठो) प्रबल दुःखजनित महा शब्द वहा ' सुना जाता है ' (यह आगे से सम्बन्ध है) ॥ सू ३० ॥

उस समय परमाधार्मिक परस्पर में किस प्रकार की बातचीत करते है ? यह सूत्रकार कहते हैं–' रसिय–भणिय ' इत्यादि ।

टीकार्थ–नरको में नारकियों को हरएक प्रकारसे व्यथा पहुँचानेवाले वे परमाधार्मिक नारकियों को फिर अधिक कष्ट पहुँचाने के अभिप्रायसे (रसिय भणिय–कूइय उक्कूइय–निरयपालतज्जिय) (रसिय) सूअरके जैसे भयकर घोर शब्दों को (भणिय) उच्चस्वर से करते हैं। उस मे वे (कूइय) अव्यक्त ध्वनि करते है (उकूइय) इस से नारकियों को और

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ' णीसिट्ठो " પ્રબળ દુ ખ-જનિત ચિત્કાર ત્યા સભળાય છે ' (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે સબધ છે) ॥ સૂ ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે' તે સૂત્રકાર બતાવે છે— ' रसिय–भजिय " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--નરકોમા નારકીઓને દરેક રીતે વ્યથા પહોચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો, નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે "रसिय–भणिय-कूइय, उक्कूइय –निरयपालतज्जिय " " रसिय " સૂવરના જેવા ભયકર ઘોર ધ્વનિ " भणिय " ઉચ્ચે સ્વરે કરે છે તેઓ " कूइय " અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે " उक्कूइय " તે

पाल' निरयपालाः=परमाधार्मिकाः, तेषा 'तज्जिय' तर्जित=नारकजीवान् लक्षीकृत्य परस्पर तर्जनाज्ञावाक्य वक्ष्यमाणप्रकारमस्ति, तथाहि-अम्बाभिध परमाधार्मिकोऽम्बरीष कथयति-हे अम्बरीष ! एन पलायमान पापिन नारक 'गेण्ह' गृहाण । एव परस्परमेक परमाधार्मिको द्वितीय कथयति-एन नारक 'कम' क्रम=पादप्रहारैः पीडय 'पहर' प्रहर-एन नारक दण्डादिभिस्ताडय 'छिंद' छिन्धि =खड्गादिभिः खण्डशः कुरु 'भिंद' भिन्धि-भल्लकादिभिर्भेदय 'उप्पाडेह' उत्पाटय=शरीरात्त्वचादिक पृथक्कुरु 'उक्खणाहि' उत्खन=निष्कासय अक्षिगोलादिकम् 'कत्ताहि' कृन्त=छेदय-छुरिकादिभिर्नासिकादिक, तथा-'विकत्ताहि' विकृन्त=कर्णनासिकादिक मूलतश्छेदय, 'भज' भञ्ज=हस्तपादादिक त्रोटय, 'हण' जहि=शतघ्न्यादिभिर्मारय, 'विहण' विजहि-महाशिलादि पातनादिभिरनेकप्रकारैः

अधिक भय उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार रसित, भणित, कूजित एव उत्कूजित शब्द करने वाले उन परमाधार्मिकों की तर्जित-नारकियों को लक्ष्य करके जो परस्पर मे कष्टादि पहुँचानेवाली वातचीत होती है वह इस प्रकार है-(गेण्ह) अम्ब नाम का परमाधार्मिक अम्बरीप से कहता है-हे अम्बरीप ! तू इस भागते हुए पापी नारकी को पकड लो और (कम) इस को लातों से मारों। वाद में (पहर) इसे दडों से खूब पीटो। (छिंद) ज्यादा और क्या कहूं-तलवार आदि से इसके शरीर के खड २ कर डालो। (भिंद) भाला आदि से इसके शरीर को भेद डालो (उप्पाडेह) इसकी खाल उतारलो, (उक्खणाहि) इसकी आंखें निकाल लो, (कत्ताहिय) इसका नाक काट डालो (विकत्ताहि) कर्ण नासिक आदि इन्द्रियों को मूल से बिलकुल साफ कर डालो। (भज) हाथ पैर आदि को मरोड डालो। (हण) शतघ्नी आदि से इसको बुरी तरह से मारो। (विहण) महाशिला आदि के ऊपर इसे पछार डालो। (विच्छुभ) कुए आदि में इसे पटक दो। (उच्छुभ)

કારણે નારકીઓને વળી વધારે ભય લાગે છે એ રીતે રસીત, ભણિત, કૂજિત, અને ઉત્કૂજિત શબ્દ કરનારા તે પરમાધાર્મિકોથી તર્જિત-નારકીઓને ચીધીને, તેમને કષ્ટ દેનારી પરસ્પરમા જે વાતચીત થાય છે તે આ પ્રકારની હોય છે- "गेण्ह" અમ્બ નામનો પરમાધાર્મિક અમ્બરીષને કહે છે-"હે અમ્બરીષ ! તું આ નાસી જતા પાપી નારકીને પકડી લે અને "कम" તેને લાતો માર પછી "पहर" તેને દડા વડે ખૂબ ફટકાર "छिंद" વધારે શુ કહું ! તલવાર આદિથી તેના શરીરના ટૂકડે ટૂકડા કરી નાખ "भिंद" ભાલા આદિ વડે તેના શરીરને વીંધી નાખ "उप्पाडेह" તેની ચામડી ઉતારી નાખ, "विकत्ताहि" કાન, નાક આદિ ઇન્દ્રિયોને મૂળમાંથી કાપી નાખો, "भज" હાથ પગ આદિને મરડી નાખ, "हण" શતઘ્ની આદિ વડે તેને ખરાબમા ખરાબ રીતે મારો, "विहण"

स कीदृशो निर्घोषः ? इत्याह—' रसिये ' त्यादि ।

मूलम्—रसिय—भणिय—कुविय—उक्कूइय—निरयपालतज्जियं—गेण्ह कम पहर छिंद भिंद उपाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि य भंजहण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकड्ढ विकड्ढ किं ण जपसि? सराहि पावकम्माइं कियाइं दुक्कयाइं एव वयणमहप्पगब्भो संपडि सुयसद्दसंकुलो उत्तासओ सया निरयगोयराण महाणगरडज्झमाणसरिसो निग्घोसो सुव्वए अणिट्ठो तहिय नेरइयाण जाइज्जताणं जायणाहिं ॥ सू०३१ ॥

टीका—' रसिय-भणिय – कूइय – उक्कूइयनिरयपालतज्जिय ' रसित-भणित-कुपितोत्कूजित-नरकपाल-तर्जित-तत्र-'रसिय ' रसिता =शूकरवद् घोरशब्दकारकाः, 'भणिय' ' भणिता =उच्चैः शब्दकारकाः, 'कूइय' कूजिता =अव्यक्तध्वनिकारकाः, ' उक्कूइय ' उत्कूजिताः=भयजनकाव्यक्तशब्द कारकाः ये ' निरय

(णीसिट्ठो) प्रबल दुःखजनित महा शब्द वहां ' सुना जाता है ' (यह आगे से सम्बन्ध है) ॥ सू ३० ॥

उस समय परमाधार्मिक परस्पर में किस प्रकार की बातचीत करते है ? यह सूत्रकार कहते हैं-' रसिय-भणिय ' इत्यादि ।

टीकार्थ-नरकों में नारकियों को हरएक प्रकारसे व्यथा पहुँचानेवाले वे परमाधार्मिक नारकियों को फिर अधिक कष्ट पहुँचाने के अभिप्रायसे (रसिय भणिय-कूइय उकूइय-निरयपालतज्जिय) (रसिय) सूअरके जैसे भयकर घोर शब्दों को (भणिय) उचस्वर से करते हैं। उस में वे (कूइय) अव्यक्त ध्वनि करते हैं (उकूइय) इस से नारकियों को और

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ' णीसिट्ठो '' પ્રબળ દુ ખ-જનિત ચિત્કાર ત્યા સભળાય છે ' (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે સબધ છે) ॥ સૂ ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે' તે સૂત્રકાર બતાવે છે— ' रसिय-भजिय '' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--નરકોમા નારકીઓને હરેક રીતે વ્યથા પહોચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો, નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે ''रसिय-भणिय-कूइय, उक्कूइय -निरयपालतज्जिय '' '' रसिय '' સૂવરના જેવા ભયકર ઘોર ધ્વનિ '' भणिय '' ઉચ્ચ સ્વરે કરે છે તેઓ '' कूइय '' અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે ''उक्कूइय '' તે

'जायणाहिं' यातनाभि=कदर्थनाभिः 'जाइज्जताण' यात्यमानाना=दण्डयमानाना 'नेरइयाण' नैरयिकाणा=नारकजीवानां च उभयेपामित्यर्थः, 'अणिट्ठो' अनिष्टः-अप्रीतिकारकः 'णिग्घोसो' निर्घोषः-महानादः 'सुव्वए' श्रूयते॥सू०३१॥

कास्ता यातना ? इति यातना प्रकारमाह—'किं ते' इत्यादि—

मूलम्—किं ते? असिवण–दब्भवण–जतपत्थर–सूइतलक्खारवावि–कलकलतवेयरणि–कलववालुया--जलियगुहनिरुंभणं उसिणोसिण--कटइल्ल--दुग्गमरहजोयण--तत्तलोहमग्गगमण वाहणाणि ॥ सू० ३२॥

टीका—'किं ते' कास्ता यातनाः ? उच्यते—'असिवण' असिवनं=खड्गाकारपत्रवन, 'दब्भवण' दर्भवन=दर्भाः-तीक्ष्णमुखातृणविशेपास्तेपा वन,

यगोयराण) परमाधार्मिकों का तथा (तहिय) वहा (जायणाहिं) यातनाओं द्वारा (जाइज्जताण) दण्डयमान (नेरइयाण) नारकियों का (अणिट्ठो) अनिष्ट (णिग्घोसो) निर्घोप–शब्द उन नरकों में (सुव्वए) सुना जाता है ॥सू ३१॥

अव सूत्रकार पूर्वोक्त यातनाओं के प्रकारों को प्रकट करते है—'किं ते' इत्यादि ।

टीकार्थ—प्रश्न—(किं ते) वे यातनाएँ कौन २ हैं ?

उत्तर—वे यातनाएँ इस प्रकार हैं (असिवण–दब्भवण–जतपत्थर सूइतल–क्खारवावि–कलकलतवेयरणि–कलव वालुया – जलियगुह–निरुंभण) अम्ब और अम्बरीप परमाधार्मिक उन नारकियों को (असिवण) तलवार की धार के आकार वाले पत्रो के वन में (दब्भवण)

એવો, "निरयगोयराण" પરમાધાર્મિકોનો તથા "तहिय" ત્યા "जायणाहिं" યાતનાઓ વડે "जाइज्जताण" શિક્ષા સહન કરતા "नेरइयाण" નારકીઓનો "अणिट्ठो" અનિષ્ટ નિર્ઘોષ–શબ્દ, તે નરકોમા "सुव्वए" સભળાય છે ॥સૂ ૩૧॥

હવે સૂત્રકાર પૂર્વકથિત યાતનાઓના પ્રકાર બતાવે છે–"किं ते ?"ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—પ્રશ્ન "किं ते ?" તે યાતનાઓ કયી કયી છે ?

ઉત્તર—તે યાતનાઓ આ પ્રમાણે હોય છે

"असिवण, दब्भवण, जतपत्थर, सूइतल, क्खारवावि, कलकलतवेयरणि, कलव वालुया, जलियगुह, निरुभण" અમ્બ અને અમ્બરીષ નામના પરમાધાર્મિકો તે નારકી જીવોને "असिवण" તલવારની ધાર જેવા આકારના પત્રોના વનમા, "दब्भवण" તીક્ષ્ણ અણીવાળા દર્ભ વિશેષોના વનમા "जत पत्थर" યત્ર

मारय, 'निच्छुभ' निक्षिप=कूपादौ प्रक्षिप, 'उच्छुभ' उत् क्षिप=उत्क्षिप 'आकड्ढ' आकर्ष=कचादिकं गृहीत्वाकर्षय=कण्टकाकीर्णे भूमौ घर्षयेत्यर्थ, 'विकड्ढ' विकर्ष=अधो मुखं कृत्वा घर्षय । एतादृशीं वेदनां दत्त्वा नारकान् प्रति वदति, 'किं ण जपसि' किं न जल्पसि=कथं न वदसि हे पापिन् 'सराहि' स्मर स्मरणं कुरु 'कियाइ' कृतानि = पूर्वभवसमाचरितानि, 'दुक्कयाइं' दुष्कृतानि= प्राणातिपातादीनि 'पावकम्माइं' पापकर्माणि । एव=अनेन प्रकारेण 'वयणमहप्पगब्भो' वचनमहाप्रगल्भः=वचनैः=नरकपालवाग्भिः महाप्रगल्भः=अतिदुर्धर्षः भयावह–इत्यर्थः 'सपडिसुयसद्दसकुलो' सप्रतिश्रुतशब्दसंकुलः=सप्रतिश्रुतः= प्रतिध्वनितः यः शब्दः, तेन संकुलः=व्याप्तः । 'सया' सदा=सर्वदा 'उत्तासओ' उत्त्रासकः=परमत्रासजनकः 'महाणगरडज्झमाणसरिसो' महानगरदह्यमानसदृशः =दह्यमानस्य=प्रज्वल्यमानस्य महानगरस्य यः शब्दस्तेन तुल्यः, एतादृशः 'तहिय' तत्र नरके–'निरयगोयराण' निरयगोचराणा–निरयगोः=नरकभूमिः, तत्र चरन्ति =नारकत्रासार्थं विचरन्ति ये ते निरयगोचराः=परमाधार्मिकास्तेषाम्, तथा–

ऊपर इसको उछाल दो। (आकड्ढ) बाल आदि पकड़ कर इसे कण्टकाकीर्ण भूमि में खूब खेंचो। (विकड्ढ) इसे औंधा मुख करके जमीन पर खूब रगड़ो। इस प्रकार की वेदना देने की बात कहकर फिर वह उन नारकियों से कहता है-(किं ण जपसि) हे पापी। तू बोलता क्यों नही है (सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ) पूर्वभव मे समाचरित प्राणातिपात आदि अपने पापकर्मो को अब तू याद कर ले। (एव) इस प्रकार का (वयणमहप्पगब्भो नरकपाल की वाणियों द्वारा अतिदुर्धर्ष भयकर बना हुआ, (सपडिसुयसद्दसकुलो) प्रतिध्वनि से व्याप्त हुआ, (सया उत्तासओ) सर्वदा दूसरो को त्रास जनक एव (महाणगरडज्झमाणसरिसो) दह्यमान महानगर के शब्द के जैसा उद्भूत हुआ (निर-

---

મહાશિલા આદિ પર તેને પછાડો "विच्छुभ" કૂવા વગેરેમા તેને ફેંકો, "उच्छुभ" તેને ઉંચે ઉછાળો, "आकड्ढ" તેને વાળ આદિને પકડીને કાંટાળી જમીનમા ઘસડો, "विकड्ढ" તેને ઉંધા મોઢે જમીન પર ખૂબ રગદોળો આ પ્રમાણે વેદના પહોંચાડવાની વાત કરીને તે નારકી જીવોને કહે છે "किं ण जपसि" હે પાપી ! તુ બોલતો કેમ નથી ? "सराहि पावकम्माइ कियाइ दुकयाइ" પૂર્વભવમા આચરેલ પ્રાણાતિપાત આદિ પાપકર્મોને તુ યાદ કરી લે "एव" આ પ્રકારનો "वयणमहप्पगब्भो" નરકપાલની વાણી વડે અતિદુર્ધર્ષ–ભયકર લાગતો, "सपडिसुयसद्दसकुलो" પડઘાથી વ્યાપ્ત થતો, "सया उत्तासओ" સર્વદા બીજાને ત્રાસજનક, અને "महाणगरडज्झमाणसरिसो" બળતા મહાનગરમાથી ઉ-

यातनाविषये आयुधप्रकाराह—' इमेहिं ' इत्यादि—

मूलम्—इमेहिं विविहेहि आउहेहि किं ते ? मुग्गरमुसुंढि-करकय-सत्ति-हल-गय मुसल-चक्क-कोंत तोमर सूल-लउल भिंडि-पाल सव्वल पट्टिस-चम्मेट्ठ-दुहण मुट्ठिय-असि खेटग खग्ग -चाव-नाराय कणक-कप्पिणि वासिपरसु-टंक-तिक्ख-निम्मलेहि अण्णेहि य एवमाइएहि असुहेहिं वेउव्विएहि पहरणसएहि अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयण उईरंति अभिहणंता ॥ सू० ३३ ॥

टीका—' इमेहिं ' एभिः वक्ष्यमाणैः ' विविहेहिं ' विविधैः=अनेकप्रकारैः ' आउहेहिं' आयुधैः=शस्त्रैः परस्पर यातनाम् उदीरयन्तीत्यग्रेण सम्बन्धः । 'किं ते' कानि तानि आयुधानि ? इत्याह—' मुग्गर ' मुद्गरः प्रसिद्धः ' मुसुढि ' शस्त्र

लोहमय मार्ग के ऊपर उन्हें चलाते हैं और फिर (वाहणाणि) उनसे शक्ति से भी अधिक भार को वहन कराते हैं ॥सू. ३२ ॥

अब सूत्रकार यातना के विषय में आयुधों के प्रकारों को कहते हैं—' इमेहिं विविहेहिं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(इमेहिं) इन वक्ष्यमाण (विविहेहिं) अनेक प्रकारके (आउहेहिं) आयुधों-शस्त्रों से वे नारकी परस्पर में यातना (वेदना) को उत्पन्न करते हैं । इस प्रकर से यहां संबध घटित कर लेना चाहिये-(किं ते) वे आयुध कौन २ से हे ? सो उन्हें प्रकट करते हैं- (मुग्गर) मुद्गर (मुसुढि) मुसुढि—शस्त्र विशेष (करकय) क्रकच—करोंत (सत्ति)

તપાવેલા લોઢાના માર્ગ ઉપર તેમને ચલાવે છે અને વળી "वाहणाणि" તેમની શક્તિ કરતા પણ વધારે બોજો તેમની પાસે ઉપડાવે છે ॥ સૂ ૩૨ ॥

હવે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઉપયોગમા લેવાતા આયુધોનુ વર્ણન કરે છે-"इमेहिं विविहेहिं" ઈત્યાદિ

"इमेहिं विविहेहिं" નીચે દર્શાવવામા આવેલા અનેક પ્રકારના "आउहेहिं" આયુધો-શાસ્ત્રો વડે તે નારકીઓ પરસ્પરમા યાતના "वेदना" ઉત્પન્ન કરે છે, એ પ્રકારનો સબધ અહીં સમજી લેવાનો છે

"किं ते ?" તે આયુધો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર તે આયુધો બતાવે છે- "मग्गर" મગદળ, "मुसुढि" મુસઢી નામનુ શસ્ત્ર, "करकय" કક્ચ-કરવત,

'जत पत्थर ' यन्त्र प्रस्तरा =घरट्टादयः ' सूइतल ' सूचीतल=ऊर्ध्वमुखसूचीमय भूमिभागः, ' खारवावि ' क्षारवाप्य =क्षारजलसभृतवापिकाः, ' कलकलतवेयरणि ' कलकलायमानवैतरणी = कलकलशब्दायमानद्रवत्त्रपुसीसकादिपूर्णा वैतरणी नामधेया नदी, ' कलवालुया ' कदम्बवालुका=अतिसन्तप्तत्वात्कदम्बपुष्पवद् रक्तवालुकामयी नदी, ' जलियगुह ' ज्वलितगुहा=प्रज्वलिताग्निमयीकन्दरा, इत्येतेषा द्वन्द्वः, तेषु असिवनादिषु ' निरुभण ' निरोधनम्, तथा— उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि ' उष्णोष्णकण्टकाकीर्णदुर्गमरथयोजन तप्तलोहमार्गगमनवाहनानि=उष्णादप्युष्ण इत्युष्णोष्णाः=अत्युष्ण कण्टकैः=सुतीक्ष्णकीलकैराकीर्णो=व्याप्तो दुर्गमः=दुःखेण गमः=गमन यस्य स तथा, दुर्गमश्च यो रथः तस्मिन् योजन=सयोजन बलीवर्दानामेवेति तत्तथा, तच्च, तप्तलोहमयमार्गे गमन=नयन वाहन=भारोद्वाहन चेति तथा तानि ॥सू० ३२॥

तीक्ष्ण अग्रभागवाले दर्भ विशेषों के वन में (जतपत्थर) यत्र प्रस्तरों में (सूइतल) उर्ध्व मुखवाली सूइयों से युक्त भूमिभाग में, (खारवावि) खारे जल से परिपूर्ण हुई वावडियों में, (कलकलतवेयरणि) कलकल शब्द से युक्त ऐसे द्रवीभूत हुए रांग और सीसे आदि से भरी हुई वैतरणी नाम की नदी मे, (कलवालुया) अत्यततप्त होने के कारण कदम्बपुष्प के समान रक्त वर्णवाली वालुका से युक्त नदी में, (जलियगुह) प्रज्वलित अग्निमयी कन्दराओं में, (निरुभण) रोक देते हैं। (उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि) (उसिणोसिण) अत्यत उष्ण, (कटइल्ल) सुतीक्ष्णकटकों से आकीर्ण, तथा (दुग्गम) दुर्गम–मुश्किल खींचा जा सके ऐसे (रहजोयण) रथ में उन नारकियों को बैलों की तरह जोत देते है। (तत्तलोहमग्गगमण) तप्त

પ્રસ્તરોમા, "सूइतल" અણીવાળો ભાગ ઉર્ધ્વ સ્થિતિમા હોય એવી સોયોથી યુક્ત ભૂમિ પર, "खारवावि" ખારા જળથી ભરેલી વાવોમા, "कलकलतवेयरणि" ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા કથીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ વૈતરણી નામની નદીમા, "कलवालुया" અતિશય તપેલી હોવાથી કદબ પુષ્પના સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, "जलियगुह" પ્રજ્વલિત અગ્નિવાળી કદરાઓમા "निरुभण" રોકી દે છે "उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि" "उसिणोसिण" અતિશય ઉષ્ણ "कटइल्ल" અતિ તીક્ષ્ણ કાટાથી છવાયેલ, તથા "दुग्गम" दुर्गम–મુશ્કેલીથી ખેચી શકાય તેવા "रहजोयण" રથ સાથે તે નારકીઓને બળદોની જેમ જોડે છે "तत्तलोहमग्गगमण"

यातनाविषये आयुधप्रकाराह—'इमेहिं' इत्यादि—

मूलम्—इमेहिं विविहेहिं आउहेहि किं ते? मुग्गरमुसुंढि-करकय-सत्तिं-हल-गय मुसल-चक्क-कोंत तोमर सूल-लउल-भिंडि-पाल सव्वल पट्टिस-चम्मेट्ठ-दुहण मुट्ठिय-असि खेटग खग्ग -चाव-नाराय कणक-कप्पिणि वासिपरसु-टंक तिक्ख-निम्मलेहि अण्णेहि य एवमाइएहि असुहेहि वेउव्विएहिं पहरणसएहिं अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयण उईरांति अभिहणंता ॥ सू० ३३ ॥

टीका—'इमेहिं' एभिः वक्ष्यमाणैः 'विविहेहिं' विविधैः=अनेकप्रकारैः 'आउहेहिं' आयुधैः=शस्त्रैः परस्पर यातनाम् उदीरयन्तीत्यग्रेण सम्बन्धः। 'किं ते' कानि तानि आयुधानि? इत्याह—'मुग्गर' मुद्गरः प्रसिद्धः 'मुसुढि' शस्त्र

लोहमय मार्ग के ऊपर उन्हें चलाते हैं और फिर (वाहणाणि) उनसे शक्ति से भी अधिक भार को वहन कराते हैं ॥सू. ३२॥

अब सूत्रकार यातना के विषय में आयुधों के प्रकारों को कहते हैं—'इमेहिं विविहेहिं' इत्यादि।

टीकार्थ-(इमेहिं) इन वक्ष्यमाण (विविहेहिं) अनेक प्रकारके (आउहेहिं) आयुधों-शस्त्रों से वे नारकी परस्पर में यातना (वेदना) को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकर से यहां संबध घटित कर लेना चाहिये-(किं ते), वे आयुध कौन २ से हैं? सो उन्हें प्रकट करते हैं- (मुग्गर) मुद्गर (मुसुढि) मुसुढि-शस्त्र विशेष (करकय) क्रकच-करोंत (सत्ति)

તપાવેલા લોઢાના માર્ગ ઉપર તેમને ચલાવે છે અને વળી "वाहणाणि" તેમની શક્તિ કરતા પણ વધારે બોજો તેમની પાસે ઉપડાવે છે ॥ સૂ ૩૨ ॥

હવે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઉપયોગમા લેવાતા આયુધોનુ વર્ણન કરે છે-"इमेहिं विविहेहिं" ઈત્યાદિ

"इमेहिं विविहेहिं" નીચે દર્શાવવામા આવેલા અનેક પ્રકારના "आउहेहिं" આયુધો-શાસ્ત્રો વડે તે નારકીઓ પરસ્પરમા યાતના "વેદના" ઉત્પન્ન કરે છે, એ પ્રકારનો સબધ અહી સમજી લેવાનો છે

"किं ते?" તે આયુધો કયા કયા છે? તો સૂત્રકાર તે આયુધો બતાવે છે- "मग्गर" મગદળ, "मुसुढि" મુસઢી નામનુ શસ્ત્ર, "करकय" કકચ-કરવત,

'जत पत्थर' यन्त्र प्रस्तरा =घरट्टादयः 'सूइतल' सूचीतल=ऊर्ध्वमुखसूचीमय भूमिभागः, 'खारवावि' क्षारवाप्य =क्षारजलसभृतवापिकाः, 'कलकलतवेयरणि' कलकलायमानवैतरणी = कलकलशब्दायमानद्रवत्रपुसीसकादिपूर्णा वैतरणी नामधेया नदी, 'कलबवालुया' कदम्बवालुका=अतिसन्तप्तत्वात्कदम्ब पुष्पवद् रक्तवालुकामयी नदी, 'जलियगुह' ज्वलितगुहा=प्रज्वलिताग्निमयी कन्दरा, इत्येतेषा द्वन्द्वः, तेषु असिवनादिषु 'निरुंभण' निरोधनम्, तथा— उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि' उष्णोष्णकण्टकाकीर्णदुर्गमरथयोजन तप्तलोहमार्गगमनवाहनानि=उष्णादप्युष्ण इत्युष्णोष्णाः=अत्युष्ण कण्टकैः=सुतीक्ष्णकीलकैराकीर्णो=व्याप्तो दुर्गमः=दुःखेण गमः=गमन यस्य स तथा, दुर्गमश्च यो रथः तस्मिन् योजनं=सयोजन बलीवर्दानामेवेति तत्तथा, तच्च, तप्तलोहमयमार्गे गमनं=नयन वाहनं=भारोद्वाहन चेति तथा तानि ॥सू० ३२॥

तीक्ष्ण अग्रभागवाले दर्भ विशेषों के वन में (जतपत्थर) यंत्र प्रस्तरों में (सूइतल) उर्ध्व मुखवाली सूइयों से युक्त भूमिभाग में, (खारवावि) खारे जल से परिपूर्ण हुई वावडियों मे, (कलकलतवेयरणि) कलकल शब्द से युक्त ऐसे द्रवीभूत हुए राग और सीसे आदि से भरी हुई वैतरणी नाम की नदी मे, (कलबवालुया) अत्यततप्त होने के कारण कदम्बपुष्प के समान रक्त वर्णवाली वालुका से युक्त नदी में, (जलियगुह) प्रज्वलित अग्निमयी कन्दराओं मे, (निरुभण) रोक देते हैं। (उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि) (उसिणोसिण) अत्यत उष्ण, (कटइल्ल) सुतीक्ष्णकटकों से आकीर्ण, तथा (दुग्गम) दुर्गम—मुश्किल खीचा जा सके ऐसे (रहजोयण) रथ मे उन नारकियो को बैलो की तरह जोत देते है। (तत्तलोहमग्गगमण) तप्त

પ્રસ્તરોમા, "सूइतल" અણીવાળો ભાગ ઉર્ધ્વ સ્થિતિમા હોય એવી સોયોથી યુક્ત ભૂમિ પર, "खारवावि" ખારા જળથી ભરેલી વાવોમા, "कलकलतवेयरणिं" ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા કથીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ વૈતરણી નામની નદીમા, "कलबवालुया" અતિશય તપેલી હોવાથી કદબ પુષ્પના સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, "जलियगुह" પ્રજવલિત અગ્નિવાળી કદરાઓમા "निरुभण" રોકી દે છે "उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गगमणवाहणाणि" "उसिणोसिण" અતિશય ઉષ્ણ, "कटइल्ल" અતિ તીક્ષ્ણ કાટાથી છવાયેલ, તથા "दुग्गम" દુર્ગમ—મુશ્કેલીથી ખેચી શકાય તેવા "रहजोयण" રથ સાથે તે નારકીઓને બળદોની જેમ જોડે છે "तत्तलोहमग्गगमण"

टङ्कतीक्ष्णाः=अग्रतीक्ष्णाः शाणोत्तेजितत्वात्, 'निम्मल' निर्मलाश्च-जाज्वल्यमानाः, इत्येभिः। 'अण्णेहि य' अन्यैश्च 'एवमाइएहिं' एवमादिभिः 'असुहेहिं' असुखैः=परमदुःखोत्पादकैः 'वेउव्विएहिं' वैक्रियकैः=वैक्रियशक्तिसम्पादितैः 'पहरणसएहिं' प्रहरणशतैः=अनेकशस्त्रैः 'परोप्पर' परस्परम्=अन्योन्यम्, 'अभिहणता' अभिघ्नन्तः 'अणुबद्धतिव्ववेरा' अनुबद्धतीव्रवैरा =पूर्वभवे हिंसादिभिरनुबद्धं तीव्रं वैरं यस्ते तथा=बद्धवैरानुबन्धिकर्माण नारकाः, 'वेयण' वेदना =पीडाम् 'उईरंति' उदीरयन्ति=समुत्पादयन्ति ॥ सू० ३३ ॥

परस्परं वेदनामुदीरयन्तो नारकाः कीदृशा भवन्ति? इत्याह—'तत्थय मोग्गर' इत्यादि।

मूलम्—तत्थ य मोग्गर पहार चुण्णिय-मुसढि संभग्गमहित्तदेहा जंतोवपीलणफुरतकप्पिया केइत्थ सचम्मगा विगत्ता णिम्मूलुल्लूणियकण्णोट्ठ णासिया छिण्णहत्थपाया ॥सू०३४॥

टीका—'तत्थ य' तत्र च नरके 'मोग्गरपहारचुण्णिय मुसढि-सभग्ग-महियदेहा' मुद्गरप्रहारचूर्णित-मुसण्ढि सभग्नमथित-देहाः = मुद्गराणां प्रहारैः=

कुठार-कुल्हाडी (टकतिक्ख) ये सब शाण पर उत्तेजित किये हुए होने से बहुत अधिक अग्रभाग में तीक्ष्ण होते हैं, और (निम्मला) चमचमाते हैं सो इन शस्त्रों से, तथा (अण्णेहिं एवमाइएहिं) इनसे भिन्न और भी (असुहेहिं) परम दुःखोत्पादक तथा (वेउव्विएहिं) वैक्रिय शक्ति से सम्पादित (पहरणसएहिं) सैकडों शस्त्रों से (परोप्पर) परस्पर में एक दूसरे को (अभिहणता) मारते हुए वे (अणुबद्धतिव्ववेरा) पूर्वभव में हिंसादि पापो द्वारा अणुबद्ध तीव्र वैर वाले नारकी (वेयण) वेदना-पीडा को (उईरंति) उत्पन्न करते है॥ सू. ३३ ॥

परस्पर में तीव्र वेदना को उत्पन्न करते हुए वे नारकी कैसे हो जाते

"परसु" કુહાડી, "टकतिक्ख" એ બધા શસ્ત્રો સરાણ પર સજાવેલા હોવાને કારણે તેમની ધાર તથા અણી ઘણી તીક્ષ્ણ હોય છે, અને તે "निम्मला" ચળકતા હોય છે એ પ્રકારના શસ્ત્રોથી તથા "अण्णेहिं एव माइएहिं" તે ઉપરાંત બીજા પણ "असुहेहिं" અન્યને દુઃખદાયક તથા "वेउव्विएहिं" વૈક્રિય શક્તિથી યુક્ત "पहरणसएहिं" સેંકડો શસ્ત્રોથી "परोप्पर" એક બીજાને "अभिहणता" મારતા, "अणुबद्धतिव्ववेरा" પૂર્વભવમાં હિંસાદી પાપો દ્વારા તીવ્ર વેરથી યુક્ત, નારકી જીવો "वेयण" પરસ્પરમાં વેદના "उईरंति" ઉત્પન્ન કરે છે
પરસ્પર વેદના તીવ્ર વેદના ઉત્પન્ન કરતા કરતા તે નારકી જીવો કેવા થઈ

विशेषः ' करकय ' क्रकचं=परपत्र ' करवत ' इति भाषा प्रसिद्ध, ' सत्ति ' शक्तिः =त्रिशूलं ' हल ' प्रसिद्ध, ' गय ' गदा=प्रसिद्धा, ' मुसल ' प्रसिद्धमेव ' चक्क ' चक्र=शस्त्रविशेषो रथाङ्गकारः ' कोंत ' कुन्तः ' भाला ' इति भाषाप्रसिद्धः, ' तोमर ' तोमरः ' गुरजर ' इति प्रसिद्धः ' सूल ' शूल सुतीक्ष्णलोहकण्टकमय शस्त्रविशेष प्रसिद्धः, ' लउल ' लकुटः – यष्टिः, ' भिंडिपाल ' भिण्डिपालः ' गोफण ' इति प्रसिद्धः, ' सव्वल ' शर्वलः–' बरछी ' इति प्रसिद्धः, ' पट्टिस ' पट्टिश शस्त्रविशेषः, ' चम्मेट्ठ ' चर्मेष्टः=चर्मवेष्टितपाषाणमयशस्त्रविशेष, ' दुहण ' द्रुघणः = मुद्गरविशेषः ' मुट्ठिय ' मुष्टिकः–' घण ' इति प्रसिद्धः, ' असि ' लघु-खड्गः, ' खेडग ' खेटकः = शस्त्रप्रहाररोधकशस्त्रविशेषः, ' ढाल ' इति भाषा प्रसिद्धः, ' खग्ग ' खड्गः=सुतीक्ष्णदीर्घाकारोऽसिरेव ' चाव ' चापः=धनुः ' नाराय ' नाराचः=लोहमयबाणः, ' कणक ' कणकः=बाणविशेषः ' कप्पिणि ' कल्पनी=कर्तरिका ' कैंची ' इति भाषा प्रसिद्धा, ' वासि ' वासी=तक्षणशस्त्रविशेषः ' वसुला ' इति भाषा प्रसिद्धा, ' परसु ' परशुः=कुठारः, एषां द्वन्द्वः, ते च ते ' टंक तिक्ख '

शक्ति–त्रिशूल, (हल) हल (गय) गदा (मुसल) मुसल, (चक्क) चक्र–रथाङ्ग के आकार शस्त्र विशेष, (कोंत) भाला, (तोमर) तोमर–गुरजर, (सूल) अत्यततीक्ष्ण धारवाले लोहे के कांटो वाला शस्त्रविशेष, (लउल) लकडी–लाठी (भिंडिपाल) गोफण, (सव्वल) बरछी, (पट्टिस) पट्टिश, इस नाम का शस्त्रविशेष, (चम्मेट्ठ) चर्मवेष्टितपाषाणमयशस्त्रविशेष, (दुहण) द्रुघण–एक जाति का मुद्गरविशेष, (मुट्ठिय) मुष्टिक–घण–जिस पर रखकर लोहार लोहे को कूटते हैं, (असि) तलवार (खेटक) ढाल, (खग्ग) सुतीक्ष्ण एव दीर्घ आकार युक्त तलवार बड़ी तलवार, (चाव) धनुष, (नाराय) लोहमय बाण, (कणक) एक प्रकार का बाण, (कप्पिणि) कर्त्तरिका–कैंची, (वासि) बसूला (परसु)

"सत्ति" શક્તિ–ત્રિશૂલ, "हल" હળ, "गय" ગદા, "मुसल" મુસળ–સાબેલુ, "चक्क" ચક્ર,–રથના પૈડાના આકારનુ એક શસ્ત્ર, "कोंत" ભાલો, 'तोमर" તોમર–ગુરજર, "सूल" અત્યત તીક્ષ્ણ ધારવાળા લોઢાના કાટા વાળુ એક શસ્ત્ર "लउल" લાકડી–લાઠી "भिंडिपाल" ગોફણ, "सव्वल" બરછી, "पट्टिस" પટ્ટિશ નામનુ એક શસ્ત્ર, "चम्मेट्ठ" ચામડાથી મઢેલુ પથ્થરનુ એક પ્રકારનુ શસ્ત્ર, "दुहण" દ્રુઘણ–એક જાતનુ મગદળ, "मुट्ठिय" મુષ્ટિક–ઘણ, જેના પર મૂકીને લૂહાર લોઢાને ટીપે છે, "असि" તલવાર,–"खेटक" ઢાલ, "खग्ग' અત્યત તીક્ષ્ણ અને લાબી તલવાર–મોટી તલવાર, "चाव" ધનુષ, 'नाराय" લોઢાનુ બાણ, "कणक" એક વિશિષ્ટ પ્રકારનુ બાણ "कप्पिणि" કાતર, "वासि" વાસલો

उज्झंतगत्तकुंतग्गभिण्ण—जज्जरियसव्वदेहा विलोलंति महीतले विसूणियंगमंगा ॥ सू० ३५ ॥

टीका—' तत्थ य ' तत्र च ' असिकरकयतिक्खकोंतपरसुप्पहारफालिय-वासीतच्छियगमगा ' असिक्रकचतीक्ष्णकुन्त परशुप्रहारपाटित—वासीसन्तक्षिताङ्गो-पाङ्गा=तत्र—असिः=खड्गः, क्रकचः=क्रपत्र ' करवत ' इति प्रसिद्धः, तीक्ष्णकुन्तः= तीक्ष्णभल्ल , परशुश्च – कुठारः, एतेषा प्रहारै पाटितानि = विदारितानि, तथा वासीभि सन्तक्षितानि=तनूकृतान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, ' कलकलमाणखार-परिसित्तगाढडज्झतगत्त—कुतग्गभिण्णजज्जरियसव्वदेहा ' कलकलायमानक्षार-परिषिक्तगाढदह्यमानगात्रकुन्ताग्रभिन्नजर्जरितसर्वदेहाः = अत्युत्कालितत्वात्कल-कलायमानेन=क्षारेण=सर्जिक्षारादिजलेन परिषिक्तम् , अतएव—गाढम्—अत्यन्त दह्यमान गात्र येषां ते, तथा कुन्तानामग्रैः—निशितधाराभिर्भिन्नोऽत एव जर्ज्जरितो

और भी—' तत्थय असि इत्यादि ।

टीकार्थ—(तत्थ य) उन नरकों में (असि—करकय—तिक्खकोंत—परसु-प्पहारफालिय वासीतच्छियगमगा) असि—तलवार, क्रकच-करौंत, तीक्ष्ण कुन्त—तीक्ष्णधार वाले भाले और परशु—कुठार उनके प्रहारों से विदा-रित किये गये तथा बाद में वासी—वसूलों से छोल २ कर पतले किये गये हैं अग उपाग जिन्हों के ऐसे (कलकलमाणखारपरिसित्तगाढ डज्झत गत्त—कुतग्गभिण्णजज्जरियसव्वदेहा) तथा अत्यत उकला हुआ होने से कलकलायमान सर्जिक्षार आदि के जल से सिञ्चित किये गये होने से जिनका शरीर अत्यत दह्यमान हो रहा है ऐसे, भालों के अग्रभाग से भिन्न होने के कारण जिनका सकल शरीर बिलकुल जर्ज-

---

વળી સૂત્રકાર કહે છે કે—" तत्थ य असि " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"तत्थ य" તે નરકોમા " असि, करकय, तिक्खकोंत, परसु, प्पहार फालिय वासी तच्छियगमगा " અસિ—તલવાર, ક્રકચ—કરવત, તીક્ષ્ણકુન્ત—તીક્ષ્ણ અણીવાળા ભાલા અને પરશુ—ફરશીના પ્રહારોથી ચીરવામા આવેલ અને ત્યાર-બાદ વાસલા વડે છોલી છોલીને જેમના અગ ઉપાગો પાતળા કરવામા આવ્યા છે તેવા, તથા " कलकलमाणखारपरिसित्तगाढ डज्झत गत्त—कुतिग्गभिण्णजज्जरिय-सव्वदेहा " અત્યત ઉકળેલ હોવાને કારણે કળકળતા સાજીખાર આદિના પાણીનુ સિચન કરવાના કારણે જેમના શરીર અત્યત બળી રહ્યા છે તેવા, અને ભાલાની અણીથી વીધવાને કારણે જેમના શરીર બિલકુલ જર્જરિત થઇ ગયા છે એવા "विसणियगमगा" તથા વિવિધ પ્રકારના પ્રહારોથી જેના શરીર સૂઝી ગયા

मघातैः चूर्णितः=कुट्टितः, मुसण्ढिभिः=शस्त्रविशेषैः सभग्नः=जर्जरीकृतः, मथितश्च=कुम्भ्यादौ-दधिवद् विलोडितः देहो येषा ते तथा, 'जतोवपीलणफुरंतकप्पिया' यन्त्रोपपीडन स्फुरत्कल्पिताः=यन्त्रेषु उपपीडनेन=सम्मर्दनेन स्फुरन्तः वेपमाना कल्पिताः=कर्त्तिता ये ते तथा 'केइत्थ' केचिदत्र-केचित् नारकाः अत्र=नरकेषु 'सचम्मगा' सचर्मकाः=चर्मसहिताः 'विगत्ता' विकृत्ताः=छेदिताः मृत-पशुवद् उत्पाटितचर्मशरीराः, णिम्मूलुल्लूणियकण्णोट्ठणासिया' निर्मूलोल्लूनकर्णोष्ठनासिकाः=निर्मूल=मूलतः उल्लूनाः=कर्तिताः कर्णौ ओष्ठौ नासिका च येषा ते तथा, 'छिण्णहत्थपाया' छिन्नहस्तपादाः=छिन्ना हस्ताः पादा येषां ते तथा भूता नारका भवन्ति ॥ सू० ३४ ॥

अपि च—'तत्थ य असि' इत्यादि—

मूलम्—तत्थ य असि करकय तिक्खकोंत-परसुप्पहार फालिय-वासीसतच्छियगमगा कलकलमाणखारपरिसित्तगाढ-

---

हैं ? इस बात को सूत्रकार कहते हैं—'तत्थ य मोग्गर इत्यादि ।

टीकार्थ-(मोग्गरपहारचुण्णिय-मुसढि सभग्ग-महिय देहा) उन नरकोंमें मुद्गरों के प्रहारों से चूर्णित, मुसढि जाति के शस्त्रविशेषों से जर्जरीकृत एव कुभी आदि में दही की तरह मथित है देह जिन्हों की ऐसे (केइत्थ) कितनेक नारकी नरको मे (जतोवपीलण फुरतकप्पिया) यत्रों में समर्दन से कपित होते हुए काट दिये जाते हैं। (सचम्मणाविगत्ता) इनके शरीर के उपर की चमडी मृतपशु की चमडी कीतरह उखाड ली जाती है। (णिम्मूलुल्लूणियकण्णोट्ठणासिया) मूलतः इनके ओष्ठ और नाक काट ली जाती हैं। (छिन्न हत्थपाया) हाथ पैर छिन्न भिन्न कर दिये जाते हैं ॥ सू ३४ ॥

જાય છે, તે વાત સૂત્રકાર હવે બતાવે છે—"तत्थ मोग्गर" ઇત્યાદિ "मोग्गर पहार चुण्णिय, मुसढि सभग्ग-महिय देहा" તે નરકોમા મગદળોના પ્રહારોથી ચૂર્ણિત, મુસઢિ નામના શસ્ત્રથી જર્જરિત કરેલ અને કુભી આદિમા દહીંની જેમ જેમના શરીર વલોવાય છે તેવા "केइत्थ" કેટલાક નારકીઓને નરકોમા "जतोवपीलणफुरतकप्पिया" યત્રોમા પીલવાની બીકે કપતા હોય તેવી હાલતમા કાપી નાખવામા આવે છે "सचम्मणा विगत्ता" તેમના શરીર ઉપરની ચામડી મૃતપશુની ચામડીની જેમ ઉતારી લેવામા આવે છે "णिम्मूलुल्लूणिय कण्णोट्ठणासिया" તેમના હોઠ, નાક અને કાન મૂળમાથી કાપી લેવામા આવે છે "छिन्नहत्थपाया" હાથ અને પગ છિન્નભિન્ન કરવામા આવે છે ॥સૂ ૩૪॥

'सुणग' श्वानः 'सियाल' शृगालाः, काकाः=प्रसिद्धा 'मज्जार' मार्जारा = बिडालाः, शरभाः=अष्टापदा 'दीविय' द्वीपिकाः=चित्रकाः 'वियग्घ' व्याघ्राः प्रसिद्धाः, 'सद्दूल' शार्दूलाः=व्याघ्रविशेषाः, 'सीह' सिंहाः=केसरिणः, ते च वृकादयः कीदृशाः? 'दप्पिय' दर्पिता =गर्विताः, तथा 'खुहाभिभूया' क्षुधाभिभूता =क्षुधापिपासाव्याकुलास्तैः 'णिच्चकाल' नित्यकाल=सर्वदा 'अणसिएहिं' अनशितैः=अभुक्तः 'घोरारसमाण भीमरूवेहिं घोराऽऽरसमानभीमरूपैः= घोरा =भयकरकर्माण आरसमानाः=अतीवाक्रोशन्तोभीमरूपाः=भयानकाकृतयश्च ये ते तथा तैः 'अक्कमित्ता' आक्रम्य=आक्रमण कृत्वा 'दढदाढागाढडक्क कड्ढिय-सुतिक्खनहफालिय उद्धदेहा' दृढदंष्ट्रा गाढदष्टकर्षित-सुतीक्ष्णनखपाटितोर्ध्व

सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहिं) (दप्पिय) दर्पित-गर्वित तथा (खुहाभिभूएहिं) भूख प्यास से अत्यत व्याकुल तथा (णिचकालमणसिएहिं) उस समय जिन्हो ने बिल्कुल कुछ भी नहीं खाया होता है ऐसे, और इसी कारण जो (घोरारसमाणभीमरूवेहिं) घोर-क्रूर कर्म करने के लिये तत्पर बन चुके हैं, अतः चीत्कार करने से भीमरुप जिनका रूप भयकर बन रहा है ऐसे (विग) वृक-भेडिया, (सुणग) श्वान-कुत्ते, (सियाल) श्रृगाल-गीदड़ (काक) कौवे, (मज्जार) मार्जार-बिलाव, (सरभ) अष्टापद, (दीविय) द्वीपिक-चिता, (वियग्घ) व्याघ्र, (सद्दल) शार्दूल-व्याघ्र विशेष, और, सिंह इनके द्वारा (अक्कमित्ता) आक्रमण करके (दढदाढा-गाढडक्क-कड्ढिय-सुतिक्ख नहफालिय उद्धदेहा) पहिले दृढदंष्ट्राओं से डसे जाते हैं, पश्चात् पृथ्वी-

वियग्घ-सद्दल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहि" "दप्पिय" દર્પિત-ગર્વિષ્ટ તથા "खुहाभिभूएहिं" ભૂખ પ્યાસથી-અત્યંત વ્યાકુળ તથા "णिच्चकालमणसिएहि" તે કાળે જેમને બિલકુલ ખોરાક મળ્યો હોતો નથી એવા અને એજ કારણે જે "घोरारसमाणभीमरूवेहिं" ઘોર-ક્રૂર કર્મ કરવાને માટે આતુર થયેલ છે, તે કારણે ચિત્કાર કરવાથી જેમનો દેખાવ અતિ ભયંકર બની ગયો છે એવા "विग" વરુ-વરુ, 'सुणग" શ્વાન-કૂતરા, 'सियाल" શિયાળ, "काक" કાગડા, "मज्जार" માર્જાર બિલાડા, સરભ અષ્ટાપદ, "दीविय" દ્વીપિક-ચિત્તા, "वियग्घ" વાઘ, "सद्दूल" શાર્દૂલ-વિશિષ્ટ પ્રકારના વાઘ અને સિંહ વગેરે પ્રાણિઓ "अक्कमित्ता" આક્રમણ કરીને "दढदाढा-गाढडक्क-कड्ढिय-सुतिक्ख-नहफालिय उद्धदेहा" પહેલા મજબૂત દાઢો વડે તેમને બટકા ભરે છે,

सर्वदेहाः=सकलशरीरं येषां ते तथा, 'विसूणियगमगा' विशूनिताङ्गोपाङ्गाः = विशूनितानि=नानाविधप्रहारैः सञ्जातशोथानि, कल्कलायमानजलसेचनेन समुत्पन्नस्फोटकानि वा अङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, एवं परमाधार्मिकैः कदर्थिताः सन्तो नरकजीवा महीतले=कठोरनरकभूमौ 'विलोलंति' विलुलन्ति=विलुठन्ति ॥सू०३५॥

ततः किं भवती ? त्याह—'तत्थ य विग' इत्यादि ।

मूलम्—तत्थ य विग सुणग-सियाल-काक-मज्जार-सरभ-दीविय-वियग्घ सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहिं णिच्चकालमणसिएहिं घोरारसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता दढदाढागाढडक्क-कड्ढिय सुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्प ते समंतओ विमुक्कसंधिबंधणा वियंगमगा कंककुररगिद्धघोरकट्ठवायसगणेहिं य पुणो खरथिरदढणक्ख-लोहतुंडेहिं ओवइत्ता पक्खाहयतिक्खणक्खविकिन्नजिब्भछियनयणनिद्दओलुग्गविगतवयणा उक्कोसंता य उप्पयंता नियडंता भमंता ॥ सू०३६॥

टीका—तत्र च 'विग' वृकाः=ईहामृगा 'भेडिया' इति प्रसिद्धाः

रित हो चुका है ऐसे (विसूणियगमगा) तथा नाना प्रकार के प्रहारों से जिनमें सूजन आगई है, अथवा कलकलायमान क्षार जल के सिंचन से जिन पर फफोले पड गये हैं ऐसे अंग उपांग वाले वे नारकी जीव परमाधार्मिकों द्वारा कदर्थित होकर (महीतले) नरक की कठोर भूमि पर (विलोलंति) लोटते हैं ॥ सू ३५ ॥

इसके बाद क्या होता है ? इस बात को सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—'तत्थ य विग-सुणग' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थ य) उन नरकोंमें (विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार-

છે તેવા, અથવા કળકળતા ક્ષારયુક્ત જળના સિંચનથી જેમના અંગ ઉપાંગો પર ફોલ્લા પડી ગયા છે એવા નારકી જીવો પરમાધામિકો દ્વારા યાતનાઓ પામીને " महीतले " નરકની કઠોર ભૂમિ પર " विलोलंति " પડી જાય છે ॥સૂ ૩૫॥

ત્યારબાદ શું થાય છે તે વાત સૂત્રકાર બતાવે છે—" तत्थ य विग-सुणग " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"तत्थ य" તે નરકોમાં " विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार-सर- "

'सुणग' श्वानः 'सियाल' शृगालाः, काकाः=प्रसिद्धा 'मज्जार' मार्जारा = बिडालाः, शरभाः=अष्टापदा 'दीविय' द्वीपिकाः=चित्रकाः 'वियग्घ' व्याघ्राः प्रसिद्धाः, 'सद्दूल' शार्दूलाः=व्याघ्रविशेषाः, 'सीह' सिंहाः=केसरिणः, ते च वृकादयः कीदृशाः? 'दप्पिय' दर्पिता =गर्विताः, तथा 'खुहाभिभूया' क्षुधा भिभूता =क्षुधापिपासाव्याकुलास्तैः 'णिच्चकाल' नित्यकाल=सर्वदा 'अणसिएहिं' अनशितैः=अभुक्तैः 'घोररसमाण भीमरूवेहिं घोराऽऽरसमानभीमरूपैः= घोरा =भयकरकर्माण आरसमानाः=अतीवाक्रोशन्तोभीमरूपाः=भयानकाकृतयश्च ये ते तथा तैः 'अक्कमित्ता' आक्रम्य=आक्रमण कृत्वा 'दढदाढागाढडक्ककड्डिय-सुतिक्खनहफालिय उद्धदेहा' दृढदंष्ट्रा गाढदंष्ट्रकर्षित-सुतीक्ष्णनखपाटितोर्ध्वे

सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहिं) (दप्पिय) दर्पित-गर्वित तथा (खुहाभिभूएहिं) भूख प्यास से अत्यत व्याकुल तथा (णिचकालमणसिएहिं) उस समय जिन्हों ने बिल्कुल कुछ भी नहीं खाया होता है ऐसे, और इसी कारण जो (घोरारसमाणभीमरूवेहिं) घोर-क्रूर कर्म करने के लिये तत्पर बन चुके हैं, अतः चीत्कार करने से भीमरूप जिनका रूप भयकर बन रहा है ऐसे (विग) वृक-भेडिया, (सुणग) श्वान-कुत्ते, (सियाल) श्रृगाल-गीदड़ (काक) कौवे, (मज्जार) मार्जार-बिलाव, (सरभ) अष्टापद, (दीविय) द्वीपिक-चिता, (वियग्घ) व्याघ्र, (सद्दूल) शार्दूल-व्याघ्र विशेष, और, सिंह इनके द्वारा (अक्कमित्ता) आक्रमण करके (दढदाढा-गाढडक्क-कड्डिय-सुतिक्ख नहफालिय उद्धदेहा) पहिले दृढदंष्ट्राओ से डसे जाते हे, पश्चात् पृथ्वी-

---

वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहि " "दप्पिय" દર્પિત-ગર્વિષ્ટ તથા " खुहाभिभूएहिं " ભૂખ પ્યાસથી-અત્યત વ્યાકુળ તથા "णिच्चकालमणसिएहिं" તે કાળે જેમને બિલકુલ ખોરાક મળ્યો હોતો નથી એવા અને એજ કારણે જે "घोरारसमाणभीमरूवेहिं" ઘોર-ક્રૂર કર્મ કરવાને માટે આતુર થયેલ છે, તે કારણે ચિત્કાર કરવાથી જેમનો દેખાવ અતિ ભયકર બની ગયો છે એવા "विग" વૃક-વરુ, "सुणग" શ્વાન-કૂતરા, 'सियाल" શિયાળ, "काक" કાગડા, "मज्जार" માર્જાર બિલાડા, સરભ અષ્ટાપદ, "दीविय" દ્વીપિક-ચિત્તા, "वियग्घ" વાઘ, "सद्दूल" શાર્દૂલ-વિશિષ્ટ પ્રકારના વાઘ, અને સિંહ વગેરે પ્રાણિઓ "अक्कमित्ता" આક્રમણ કરીને "दढदाढा-गाढडक्क-कड्ढिय-सुतिक्ख-नहफालिय उद्धदेहा" પહેલા મજબૂત ડાઢો વડે તેમને બટકા ભરે છે,

देहाः=दृढाभिर्दंष्ट्राभिः गाढम्=अत्यन्त ' उग्ग ' दष्टाः, कर्षिता =पृथ्वीतले इत स्ततः समाकृष्टाश्च ये ते, तथा सुतीक्ष्णनखैः पाटिताः=द्विधा कृताः ऊर्ध्वदेहाः उर्ध्वशरीराणि येषा ते तथा, अत एव-'विमुक्कसंधिबंधणा' विमुक्तसन्धिबन्धनाः =विमुक्तानि=शिथिलीकृतानि सन्धीना=अङ्गसंधानस्थानानां बन्धनानि येषा ते तथा, ' वियंगमंगा ' व्यङ्गाङ्गाः=व्यङ्गानि=खण्डितानि अङ्गानि=करचरणकर्ण-नासिकादीनि येषा ते तथा, एवभूता नरकजीवाः परमाधार्मिकैः ' समतओ ' समन्ततः=चतुर्दिक्षु गगने ' विच्छिप्पते ' विक्षिप्यन्ते = काकबलिरत्नक्षिप्यन्ते, ' पुणो य ' पुनश्च-प्रक्षेपणानन्तर ते नारकाः ' कंक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्ठवायस गणेहिं ' कङ्ककुररगृध्रघोरकष्टवायसगणैः = कङ्काः-कुरराः पक्षिविशेषाः गृध्राः= प्रसिद्धाः, घोरकष्टवायसा =घोरकष्टा =असह्यक्लेशकारका ये वायसाः=काकास्ते तथा तेषा गणै =समूहैः, कीदृशैस्तैः ? इत्याह—' खरथिरदढणक्खलोहतुंडेहिं ' खरस्थिरदृढनखलोहतुण्डैः=खराः=तीक्ष्णाः स्थिराः-निश्चलाः दृढाः=कठोरवस्तु-

---

तलपर इधर से उधर खेंचे जाते हैं-घसीटे जाते हैं, तथा सुतीक्ष्ण नखों के प्रहारोंसे उनके उर्ध्व शरीर को दो टुकडें कर दिये जाते हैं। इस कारण (विमुक्कसंधिबंधणा) उनके संधियों के बंधन बिलकुल ढीले हो जाते हैं। (वियंगमंगा) वहा नारकियों के कर, चरण, कर्ण, नासिका आदि अंगों को खडित कर दिया जाता है और (समतओ विच्छिप्पते) जिस प्रकार काकबलि दिशाओं मे फेंक दी जाती है वे विचारे नारकी भी इसी तरह से आकाश मे इधर उधर दिशाओं मे फेक दिये जाते है । (पुणोय) फिर पश्चात् (कंककुररगिद्धघोरकट्ठवायसगणेहिं) कंक, कुरर, गृद्ध और असह्य क्लेश कारक वायसों-कौओ का समूह कि (खरथिरदढ णक्खलोहतुडेहिं) जिनके नखतीक्ष्ण, स्थिर कठोर वस्तु के विदारण

પછી જમીન ઉપર તેમને આમ તેમ ખેંચે છે-ઘસડે છે, તથા અતિશય તીક્ષ્ણ નખ ભરાવીને તેમના ઉર્ધ્વ શરીરના બે ટૂકડા કરી નાખે છે તે કારણે " विमुक्कसंधिबंधणा " તેમના સાંધાઓના બંધન તદ્દન ઢીલા થઇ જાય છે " वियंगमंगा " ત્યાં નારકીઓના હાથ, પગ, કાન, નાક આદિ અંગોનું ખંડન કરવામાં આવે છે અને " समतओ विच्छिप्पते " જેમ કાકબલિને ચારે દિશામાં ફેંક-વામાં આવે છે તેમ તે બિચારા નારકીઓને પણ આકાશમાં આમ તેમ ફેંક વામાં આવે છે " पुणो य " ત્યાર બાદ ' कंककुररगिद्धघोरकट्ठवायसगणेहिं " કંક, કુરર ગીધ, અને અસહ્ય યાતનાઓ દેનારા કાગડાઓનો સમૂહ, " खरथिर दढणक्खलोहतुडेहिं " કે જેમના તીક્ષ્ણ નખ કઠણ વસ્તુઓને

च्छेदनेऽपि अभग्नाः नखा येषा ते तथा ते च ते लोहतुण्डाः=लोहवत्कठोरचञ्चु-काश्च, तैः 'ओवइत्ता' अवपत्य=अन्तराल एव आक्रम्य 'पक्खाहयतिक्खणक्खविकिन्न जिब्भच्छियनयणनिद्दओलुग्गविगयवयणा' पक्षाहततीक्ष्णनखविक्षिप्त जिह्वाक्षिप्तनयननिर्दयावरुग्णविकृतवदनाः=' पक्खाहय ' पक्षाहताः-पक्षैराहताः= ताडिताः तीक्ष्णैर्नखैर्विक्षिप्ताः=आकृष्टा मुखाद्बहिर्निष्काशिता जिह्वाः येषा ते तथा, आक्षिप्ते=बहिष्कृते नयने येषा ते तथा, अतएव निर्दय यथास्यात्तथा अवरुग्ण=भग्न विकृत विरूपी कृत च वदन येषा ते तथा, ततः सर्वेषां कर्मधारयः, उक्कोसता ' उत्क्रोशन्तः=हा हा शब्दैराक्रन्द कुर्वन्त 'उप्पयता' उत्पतन्तः=परमवेदनाभिर्वृश्चिकदष्टकपिवद् गगने उच्छलन्तः ' निवडता ' निपतन्तः=पृथिव्या लुठन्तः, ' भमता ' भ्रमन्त =इतस्ततः पलायमानाः दुःखमनुभवन्ति ॥ ३६ ॥

करने पर भी-वैसे ही घने रहते हैं-नहीं टूटते हैं तथा चोंचे जिनकी लोह के जैसी कठोर होती है, वे उन्हें (ओवइत्ता) बीच ही में पकडकर (पक्खाहय – तिक्खणक्खविकिन्नजिब्भछियनयणनिद्दओलुग्गविगत-वयणा) अपनी पाखों से आहत करते हैं, तीक्ष्ण नखों से उनकी जीभ को उनके मुख से बाहिर निकाल लेते हैं और दोनों आखों को भी बाहिर काढ लेते हैं । इस तरह निर्दयतापूर्वक विरूपरूप वाले बनाये गये वे पाप-कारी नारकजीव (उक्कोसता य) हाय हाय शब्द करते हुए (उप्पयतो) विच्छु से काटे गये बदर की तरह अत्यत वेदनाओं से आकाश मे ऊपर को उछलते है और फिर (निवडता) नीचे गिरते है । (भमता) गिर कर फिर इधर उधर भागते हुए दुःखों का अनुभव करते है ॥सू० ३६ ॥

પણ એવાને એવા જ રહે છે-તૂટતા નથી તથા જેમની ચાચ લોઢાના જેવી કઠણ હોય છે, એવા તે પક્ષીઓ તેમને "ओवइत्ता" વચ્ચે જ પકડીને "पक्खाहय-तिक्खणक्खविकिन्नजिब्भछियनयणनिद्दओलुग्गविगतवयणा" પોતાની પાખો વડે મારે છે, તીક્ષ્ણ નખોની મદદથી તેમની જીભને તેમના મુખમાથી બહાર ખેચી કાઢે છે અને બન્ને આખોને પણ બહાર કાઢી નાખે છે આ રીતે નિર્દયતાથી બેડોળ બનાવવામા આવેલા તે પાપકારી નારકી જીવો "उक्को-सता य" હાય ! હાય ! કરતા "उप्पयतो" વીંછીએ ડખ માર્યો હોય ત્યારે કૂદાકૂદ કરતા વાનરાની જેમ, અત્યત વેદનાથી વ્યાકુળ થઈને આકાશમા ઉપરની બાજુ ઉછળે છે, અને "निवडता" વળી પાછા નીચે પડે છે "भमेता" નીચે પડીને વળી આમ તેમ નાસ ભાગ કરતા તેઓ દુ ખો અનુભવે છે ॥સૂ ૩૬॥

'आउक्खएण' 'आयुः क्षयेण=नरकभवायुष्यक्षयेण 'उव्वट्टिया समाणा' उद्वृत्ता निस्सृताः सन्तः 'बहवे' बहवः कतिपया नरकजीवाः 'तिरियवसहिं' तिर्यग्वसतिं=तिर्यग्योनिं गच्छन्ति=प्राप्नुवन्ति, यतो नरकान्निःसृता अल्पा एव मनुष्येषूत्पद्यन्ते। कीदृशीं तिर्यग्योनिम्? इत्याह—'दुक्खुत्तर' दुःखोत्तरां=दुःखप्रकर्षाम् अनन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणी कायस्थितिकत्वात्तस्याः, अत एव 'सुदारुण' सुदारुणां=भीषणां नानादुःखनिधानत्वात्, 'जम्मणमरणजरावाहिपरियट्टणारहट्ट' जन्ममरणजराव्याधिपरिवर्तनारघट्टां=जन्म-मरण जरा व्याधीनां परिवर्तनैः=पुनः प्रापणैः अरघट्ट इव=जलयन्त्र विशेष इव या सा तथा तां 'जलथलखहयरपरोप्परविहिंसणपवंच' जल स्थल खचर परस्पर विहिंसनप्रपञ्चां=जलचर-स्थलचर

अशातावेदनीयरूप दुःखों को (अणुभवित्ता) भोगकर (तओ य) जब उस नरक से (आउक्खएण) नरकभवसंबंधी आयु के क्षय होने पर (उव्वट्टियासमाणा) बाहर निकलते हैं तब (बहवे) उन में से बहुत से नारक जीव (तिरियवसहिं) तिर्यञ्च योनि को (गच्छंति) प्राप्त करते हैं, क्यों कि नरको से निकले हुए बहुत थोडे जीव ही मनुष्यगति में उत्पन्न होते हैं। वह तिर्यञ्च योनि कैसी है इस बात को सूत्रकार कहते हैं कि वह योनि (दुक्खुत्तर) अनन्त उत्सर्पिणी प्रमाण काय-स्थितिवाली होने से दुःखों के प्रकर्ष से युक्त है। (सुदारुण) नाना दुःखों की निधान होने से सुदारुण-भयकर है। (जम्मण-मरण-जरा-वाहि परियट्टणारहट्ट) जन्म, मरण, जरा एव व्याधियों की पुनःपुनः प्राप्ति होने से अरहट जैसी है। तथा (जलथल खहयरपरोप्परविहिंसणपवंच)

"दुक्खाइ" અશાતા વેદનીય રૂપ દુ ખો "अणुभवित्ता" ભોગવીને "तओ य" જ્યારે તે નરકમાથી "आउक्खएण" આયુષ્યનો ક્ષય થાય છે ત્યારે "उव्वट्टियासमाणा" બહાર નીકળે છે ત્યારબાદ "बहवे" તેમનામાથી ઘણા ખરા નારકી જીવ "तिरियवसहिं" તિર્યંચ યોનિમા "गच्छति" જાય છે, કારણ કે નરકોમાથી નીકળેલા બહુ થોડા જીવો જ મનુષ્ય ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે તે તિર્યંચયોનિ કેવી છે તે વાત સૂત્રકાર દર્શાવે છે-તે યોનિ "दुक्खुत्तर" અનન્ત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી પ્રમાણ કાળ સ્થિતિવાળી હોવાને લીધે દુ ખોના પ્રકર્ષવાળી છે "सुदारुणं" વિવિધ દુ ખોનુ ધામ હોવાથી ઘણી જ દારૂણ-ભયકર છે "जम्मण-मरण-जरा-वाहि परियट्टणारहट्ट" જન્મ, મરણ, જરા અને વ્યાધિઓની ફરી ફરીને પ્રાપ્તિ થવાને કારણે રહેંટ જેવી છે તથા "जलथलखहयरपरोप्परविहिंसणपवंच" જેમા પરસ્પર જળચર, સ્થળ

खचराणां परस्परं निहिंसनस्य=अनेकप्रकारवधस्य प्रपञ्चो=विस्तारो यस्या सा ता तथा, सम्भूता तिर्यग्योनिं गन्छन्तीति पूर्वेण सम्बन्ध ॥ सू० ३७ ॥

अथ तिर्यग्गति दुःख वर्णयन्नाह—' इम च ' इत्यादि ।

मूलम्-इम च जगपागड वरागा दुक्ख पावेंति दीहकाल। किं ते ? सीउण्ह-तण्हा खुह-वेयण - अप्पईयार-अडवि-जम्मण-णिच्चभउव्विग्गवास-जग्गण--वह-बंधण--ताडणं-कण निवायण-अट्ठि भजण-नासा-भेय-प्पहार दमण-छविच्छेयण अभिओगपावण-कसकुसारानिवाय-दमणाणि वाहणाणि य॥सू०३८॥

टीका—' इम च ' इद च = अनुपदवक्ष्यमाण ' जगपागड ' जगत्प्रकट = सकललोकप्रत्यक्ष, दुःखम् = अशातवेदनीय – लक्षण ' दीहकाल ' दीर्घकालम् = असख्यातकालपर्यन्त ' पावेंति ' प्राप्नुवन्ति, ' किं ते ' कानि तानि दुःखानि ?, तदाह—' सीउण्ह ' इत्यादि—' सीउण्हतण्हाखुहवेयण ' शीतोष्णतृष्णा क्षुधा वेदना = शीतोष्णतृष्णा क्षुधाजनित दुःख, तथा ' अप्पईयारअडविजम्मण '

जिस में परस्पर जलचर, स्थलचर और खेचरों के विविध प्रकार के वध का प्रपञ्च-विस्तार है, ऐसी तिर्यञ्चयोनि को प्राप्त करते हैं ॥सू० ३७॥
अब सूत्रकार तिर्यचगतिके दुःखोंका वर्णन करते हैं-'इमचजगपागड'इत्या.

टीकार्थ-(इम च जगपागड) (इम) अनुपद वक्ष्यमाण यह (जगपागड) सकल लोकों के प्रत्यक्ष ऐसे (दुक्ख) दुःख को (वरागा) वे तिर्यच-गति के जीव (दीहकाल) अनतकालपर्यन्त (पावेंति) भोगते हैं (किं ते) वे दु'खों के प्रकार कौन २ से हैं ? सो कहते है-उस गति में दुःखों के ये २ प्रकार हे-(सीउण्ह) शीत-जनित दुःख, उष्णजनित दुःख, (तण्हा) पिपासाजनितदुःख और (खुह) क्षुधाजनितदुःख, तथा

ચર, અને નભચરોના વિવિધ પ્રકારના વધના પ્રપંચ-વિસ્તાર છે એવી તિર્યંચ યોનિને તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ-૩૭ ॥
હવે સૂત્રકાર તિર્યંચ ગતિના દુખોનુ વર્ણન કરે છે "इम च जगपागड" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ"-इम च जगपागड " "इम" નીચે પ્રમાણેના "जगपागड " સઘળા લોકોની નજરે પડે તેવા " दुक्ख " દુખો "वरागा" તે બિચારા તિર્યંચ ગતિના જીવો "दीहकाल " અનતકાળ સુધી " पावेंति ' ભોગવે છે " किं ते ?', તે દુખોના પ્રકાર કયા કયા છે ? સૂત્રકાર તેનો જવાબ આપતા કહે છે તે ગતિમા નીચે પ્રમાણે દુખો હોય છે " सीउण्ह " શીત જનિત દુખ, ઉષ્ણ-જનિત દુખ, " तण्हा " પિપાસાજનિત દુખ અને " खुह " ક્ષુધાજનિત

अप्रतीकार=प्रतीकाररहित-नद्घायुष्कत्वात् यद् अटव्या=महारण्ये जन्म तत् तथा, तत्र 'णिच्चभउव्विग्गवास' नित्यभयोद्विग्नवासः = नित्य = प्रतिक्षण भयेन= व्याधादिकर्तृकवधनिग्रहादिरूपेण उद्विग्नः=उद्वेगसहित वासः = निवासः अतएव 'जग्गण' जागरण=निद्राक्षय 'वह' वध =मारण, 'वधण' वन्धन=रज्ज्वादिना नियमन, 'ताडण' ताडन=दण्डादिना हननम्, 'अकण' अङ्कन=प्रतप्तशूलादिना शरीरे चिन्हविशेषकरणं, 'निवायण' निपातनम्=उत्थाप्य गर्त्तादौ प्रक्षेपणम् 'अट्ठिभजण' अस्थिभञ्जनम्=मुद्गरादिनाऽस्थ्ना त्रोटन 'नासाभेय' नासाभेदः = नासिकायां रज्जुयोजनार्थं छिद्रकरण 'प्पहारदमण' प्रहारदमन=प्रहारैः=यष्टया दिताडनैः दमन = स्वायत्तीकरण, 'छविच्छेयण' छविच्छेदन = अवयवकर्तन 'अभिओगपावण' अभियोगप्रापणम् = अनिच्छतोऽपि शकटादौ नियोजन,

(वेयण अप्पडियार) प्रतिकार रहित दुःख, (अडविजम्मण) अटवी मे जन्म होने का दुःख, (णिच्चभउव्विग्गवास) प्रतिक्षण व्याध आदि के वध-निग्रह आदि के भय से उद्विग्न चित्त होकर निवास करने का दुःख, (जग्गण) इच्छानुसार निंद्रा नही ले सकने का दुःख, (वह) वधजन्य दुःख, (वधण) रस्सी आदि द्वारा बाधे जाने का दुःख (ताडण) दण्ड आदि से मर्मस्थानों में ताडित किये जाने का दुःख, (कण) प्रतप्त शूल आदि द्वारा शरीर मे दाग दिये जाने का दुःख, (णिवायण) उठा कर गर्त्त आदि में पटक दिये जाने का दुःख, (अट्ठिभजण) मुद्गर आदि से हड्डियों को तोड दिये जाने का दुःख, (नासाभेय) नासिका के छेदन करने का दुःख, (प्पहारदमण) लकडी चाबुक आदि के प्रहारों से वशीभूत होने का दुःख (छवि-च्छेयण) शारीरिक अवयव काट दिये जानेका दुःख, (अभिओगपावग) नही इच्छा होनेपर भी जब गाडी आदि

દુખ અને "वेयण अप्पडियार" પ્રતિકારરહિત દુખ "अडविजम्मण" વનમા જન્મ થવાનુ દુખ, "णिच्चभउव्विग्गवास" પ્રત્યેક ક્ષણ વ્યાધ આદિ દ્વારા વધ, નિગ્રહ આદિના ભયથી ઉદ્વિગ્ન ચિત્તે રહેવાનુ દુખ "जग्गण" ઇચ્છા પ્રમાણે નિદ્રા ન લઈ શકવાનુ દુખ "वह" વધ જન્ય દુખ, "बधण" દોરડા આદિ વડે બાધવાનુ દુખ, "ताडण" લાકડી આદિથી મર્મસ્થાનો પર માર પડવાનુ દુખ "कण" તપાવેલ શૂળ આદિ દ્વારા શરીરે ડામ દેવાયાનુ દુખ "णिवायण" ઉપાડીને ખાડા આદિમા ફેંકવાનુ દુખ "अट्ठिभजण" મગ દળ આદિથી હાડકા તોડાવાનુ દુખ, "नासाभेय" નાક છેદાવાનુ દુખ "प्पहारदमण" લાકડી ચાબુક આદિના પ્રહારોથી તાબે થવાનુ દુખ, "छविच्छेयण" શરીરના અવયવો કપાવાનુ દુખ "अभिओगपावग" ઇચ્છા ન હો

' कसकुसारनिवाय ' कशाङ्कुशाऽऽरनिपातः = कशा = चर्मयष्टिः ' चाबुक ' इति प्रसिद्धा, अङ्कुशः=प्रसिद्धः, आरा=दण्डान्तर्वर्त्तिनीतीक्ष्णलोहशलाका ' पराणी ' इति प्रसिद्धा, तेषां निपातः=शरीरोपरिप्रहारः ' दमण ' दमन=शिक्षाग्राहणम्, एतेषां द्वन्द्वः, तानि तथा, ' वाहणाणि य ' वाहनानि च=भारोद्वाहनानि, इत्येवं रूपाणि दुःखानि प्राप्नुवन्तीति सम्बन्धः ॥ सू० ३८ ॥

पुनरपि तान्येवाह—' मायापिइ ' इत्यादि ।

मूलम्—माया-पिइ-विप्पओग-सोयपरिपीलणाणि य सत्थ-ग्गि-विसाभिघाय गलगवलावलणमारणाणि य गलजालुच्छि-प्पणाणि य-पउलण विकप्पणाणि य—जायज्जीवगबंधणाणि य पंजरनिरोहणाणि य सजूह निद्धाडणाणि य धमणाणि य दोहणाणि य कुदंडगलबंधणाणि य वाडग परिवारणाणि य पंकजलनिमज्जणाणि य वारिप्पवेसणाणि य ओवाय निभंगविस-माणि य वडण दवग्गिजाल दहणाइयाइ य ॥ ३९ ॥

टीका—' मायापिइ विप्पयोग ' मातापितृविप्रयोग = माता च पिता च

में जोत दिये जानेका दुःख, (कसकुसारनिवा य) कशा–चाबुक अङ्कुश एवं आरा–दंडे के अग्रभागमें लगी हुई लोह की कील–से पीटे जाने का तथा चुभो देने का दुःख, (दमणाणि) दमन–अच्छी चाल आदि को चलाने के लिये शिक्षा का दुःख, तथा (वाहणाणि य) भारो को वहन करने का दुःख, ये सब दुःख है और उन्हें तिर्यंचगति मे रहे हुए जीव प्राप्त करते है ॥ सू ३८ ॥

तिर्यंचगति के और भी ये दुःख है–'माया–पिय–विप्पओग' इत्यादि ।

टीकार्थ–(माया–पिय–विप्पओग सोयपरिपीलणाणि य) माता पिताका

માલિક ચાહે ત્યારે ગાડી આદિએ જોડાવાનુ દુઃખ, " कसकुसारनिवाय " કશા ચાબુક, અંકુશ અને આર–લાકડીને છેડે ચોડેલી અણીદાર ખીલી વડે માર ખાવાનુ દુઃખ, તથા તે ચીજોની અણી શરીરમા ભોંકાવાથી દુઃખ થતુ "दमणाणि" દમન–સારી ચાલ ચાલાવવા કે ગતિ વધારાવવા માટે થતી શિક્ષાનુ દુઃખ તથા "वाहणाणि य" ભાર ઉપાડવાનુ દુઃખ, એ બધા દુઃખના વિવિધ પ્રકાર છે, અને તિર્યંચ ગતિમા જન્મેલા જીવો તે દુઃખો ભોગવે છે ॥ સૂ–૩૮ ॥

તિર્યંચ ગતિના બીજા દુઃખો આ પ્રમાણે છે–"माया–पिय–विप्पओग" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–" माया–पिय–विप्पओगसोयपरिपीलणाणि य " માતા પિતાનો જન્મતા

तयोर्विमयोग = वियोगः, तयोर्जन्मतो मरणे वधे व्याधादिभिर्निग्रहे वा स्वस्य निग्रहे वेति भावः 'सोयपरिपीलणाणि य' शोकपरिपीडनानि=मातापितृवियोगजनितशोकदुःखानि, अथवा–स्रोतः परिपीडनानि=स्रोतसां=नासिकादिछिद्राणा रज्जुबन्धनादिभिः परिपीडनानि=खेदोत्पादनानि। 'सत्थग्गिविसाभिघायगलगवलावलणमारणाणि य' शस्त्राग्निविषाभिघातगलगवलावलनमारणानि च, तत्र–शस्त्र च अग्निश्च विष च तैरभिघातः=नाश, तथा गलस्य = कण्ठस्य गवलस्य= शृङ्गस्य च आवलनेन=मोटनेन मारणानि 'गलजालुच्छिप्पणाणि' गलजालोत्क्षेपणानि=गलेन=बडिशेन जालेन च उत्क्षेपणानि = मत्स्यादीना जलाद्बहिर्निस्सारणानि । पउलण–विकप्पणाणि' पचन विकल्पनानि=' पउलण ' पचन विकल्पन च=अङ्गकर्तन तानि। जावज्जीवगबंधणाणि' यावज्जीवबन्धनानि=आजीवन रज्जुशृङ्खलादि बन्धनानि। 'पजरनिरोहणाणि' पञ्जरनिरोधनानि पञ्जर=लोहशशलाकादिनिर्मित पक्षिनियन्त्रणगृह, तत्र निरोधनानि प्रतिरोधनानि 'सजूहनिद्घाडणाणि' स्वयूथ निस्सारणानि=स्वयूथात्=स्वसार्थात्=निस्साणानि–पुनः पुनः परिवारतः

जन्मते ही वियोग हो जाने से दुःख सहन करना, अथवा–नासिका आदि के छिद्रो का रज्जु आदि के द्वारा बधन होने पर उसका कष्ट सहना, (सत्थग्गिविसाभिघायगलगवलावलण मारणाणि य) शस्त्र से, अग्नि से तथा विष से मरण हो जाना, गला और सीग के मुड़ जाना और उससे मरण हो जाना, (गलजालुच्छिप्पणाणि य) बडिश–मछली मारने का काटा एव जाल से अपने स्थान से अलग किया जाना, (पउलणविकप्पणाणि य) अग्नि मे पकाया जाना अग अग का काटा जाना (जावज्जीवगबधणाणि य) जीवनपर्यन्त रज्जु अथवा साकल आदि से बाधा जाना, (पजरनिरोहणाणि य) पीजरे मे बद किया जाना, (सजूहनिद्घाडणाणि य) बार २ अपने झुड में से बाहर निकाल दिया जाना

જ વિયોગ થવાથી દુખ સહન કરવુ પડે છે નાક આદિના છિદ્રોનું દોરડા આદિ દ્વારા બધન થવાથી તેનુ દુખ સહન કરવુ પડે છે "सत्थग्गिविसाभिघायगलगवलावलणमारणाणि य" શસ્ત્રથી, અગ્નિથી તથા વિષથી મૃત્યુ થઇ જવાનુ, ગળુ અને શીંગડા મરડાઈ જવાને કારણે મરણ થવાનુ, "गलजालुच्छिप्पणाणि य" ગલ (માછલી મારવાનો કાટો) અને જાળથી પોતાના સ્થાનેથી અલગ કરવાનુ, "पउलणविकप्पणाणि य" અગ્નિમા રધાવાનુ, દરેક અગના છેદાવાનુ, "जावज्जीवगबधणाणि य" જીવે ત્યા સુધી દોરડા કે સાકળ વડે બાધાવાનુ, "पजरनिरोहणाणि य" પિંજરામા પૂરાવાનુ, "सजूहनिद्घाडणाणि य" વારવાર પોતાના સમૂહમાથી બહાર [illegible] ાવુ, " "

पृथक्करणानीत्यर्थ , 'नि' पूर्वकस्य 'स्र' धातो 'धाट' आदेशेकृतेऽपि पुनर्निरुपसर्गपूर्वकनिर्देशः पौनः पुन्यार्थसूचकः, 'धमणाणि' अग्नौ प्रक्षिप्य भस्त्रादिभिर्धमनानि । दोहणाणि' दोहनानि ''कुदंडगलबंधणाणि' कुदण्डगलबन्धनानि= कुदण्डस्य=वक्रकाष्ठस्य गले=कण्ठे बन्धनानि 'वाडगपरिवारणाणि य' वाटक परिवारणानि=वाटके निरोधनानि 'पंकजलनिमज्जणाणि' पङ्कजलनिमज्जनानि= पङ्कमयजले निमज्जनानि ब्रोडनानि 'वारिप्पवेसणाणि' वारिप्रवेशनानि=जलप्रक्षेपणानि 'ओवायनिभंगविसमणिवडणदवग्गिजालदहणाइयाइं य' अवपातनिभङ्गविषमनिपतनदवाग्निज्वालादहनादिकानि च-अवपातेन=गर्तादिषु निपातेन यो निभङ्गः=अङ्गोपाङ्गः भञ्जनम् , अपि च-विषमेभ्यः=विषमप्रदेशेभ्यो गिरिवृक्षादिभ्यो निपतनं, तथा दवाग्निज्वालाभिर्दहनं चेति द्वन्द्वः, तानि आदिर्येषां तानि =स्वस्वजातियरोगातङ्कादीनि तान्येवम्प्रकाराणि दुःखानि प्राप्नुवन्ति ॥सू०३९॥

(धमणाणि य) अग्नि में प्रक्षिप्त करके भस्त्रा आदि से धोका जाना, (दोहणाणि य) स्तनों का दोहन होना, (कुदंड गलबंधणाणि य) कोदे वक्र-काष्ठ का गले मे बांधा जाना-लटकाया जाना, (वाडगपरिवारणाणि य) कांटों आदि की बाड लगाकर किसी स्थानपर रोका जाना, (पंकजलनिमज्जणाणि य) पंक युक्त जल मे फँस जाना, (वारिप्पवेसणाणि य) वारिप्रवेशन-बरसते हुए पानी मे खड़े रहना अथवा तलाव वगैरह के पानी में हठात् प्रविष्ट कराया जाना, अथवा पानी में डूब कर मर जाना, (ओवायणिभंगविसमणिवडण-दवग्गिजाल दहणाइयाइं य) किसी गर्त्त खड्डा आदि मे गिर जाने से अंग उपांगों का टूट जाना, पर्वत आदि के ऊँचे स्थानों से गिर जाना, दावाग्नि मे जल जाना, इत्यादि नाना प्रकार के दुःखों को तिर्यञ्च गति के जीव भोगते हैं ॥सू. ३९ ॥

અગ્નિમા નાખીને અણીદાર સળિયા આદિ વડે વીંધાવાનુ, " दोहणाणि य " આચળોમાથી દૂધ દોઈ લેવાનુ, " कुदंडगलबंधणाणि य " ગળામા આડા લટકાવવાનુ, " वाडगपरिवारणाणि य " કાદવવાળા જળમા ખૂચી જવાનુ " वारिप्पवेसणाणि य " વારિ પ્રવેશન-વરસતા વરસાદમા ઉભા રહેવાનુ અથવા તળાવ વગેરેના પાણીમા બળ જબરીથી પ્રવેશ કરવાનુ " ओवायणिभंगविसमणिवडण -दवग्गिजालदहणाइयाइं य " કોઈ ખાડા આદિમા પડી જવાથી અંગ ઉપાંગો તૂટી જવાનુ, પર્વત આદિ ઊંચા સ્થાનો પરથી પડી જવાનુ, દાવાગ્નિમા બળી જવાનુ, ઇત્યાદિ વિવિધ પ્રકારના દુઃખો તિર્યંચ ગતિના જીવો ભોગવે છે ॥સૂ ૩૯॥

उपसंहरन्नाह—'एव ते' इत्यादि ।

मूलम्—एव ते दुक्खसयसंपलित्ता नरगाओ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्खपंचिंदिएसु पावेंति पावकारी कम्माइं, पमायरागदोसवहुसंचियाइ अइव असायकक्कसाइं ॥ सू० ४० ॥

टीका—एवम्=उक्तप्रकारैः ते = जीवा प्राणातिपातकारकाः 'दुक्खसयसपलित्ता' दुःखशतसम्प्रदीप्ताः=दुःखशतैः सम्प्रदीप्ताःसन्तप्ताः 'नरगाओ' नरकात् —इह=तिर्यग्लोके 'आगया' आगताः=उत्पन्नाः 'सावसेसकम्मा' सावशेषकर्माणः=अवशिष्टपापकर्माणः 'पावकारी' पापकारिण 'तिरिक्खपचिंदिएसु' तिर्यक् पञ्चेन्द्रियेषु 'पमाय-रागदोसवहुसचियाइं' प्रमादरागद्वेषबहुसञ्चितानि-प्रमादः=विषयाद्यभिष्वङ्गलक्षणः, रागः=मायालोभलक्षणः, द्वेषःक्रोधमानलक्षणः, तैः बहूनि सञ्चितानि=उपार्जितानि 'अईव' अतीव=अत्यन्तम् 'असायकक्कसाइ' अशातकर्कशानि = अशातेषु=अशातवेदनीयकर्मोदयप्रभवेषु दुःखेषु कर्कशानि=कठोराणि 'कम्माणि,' कर्माणि=कर्मजन्यानि दुःखानि 'पावेंति' प्राप्नुवन्ति,

---

अब उपसहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं-'एव ते' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव) इस प्रकार से (ते) वे प्राणातिपातकारक जीव (दुक्खसयसपलित्ता) सैकडों दुःखों से सन्तप्त होकर (नरगाओ) नरक से (इह) इस तिर्यग्लोक में (आगया) उत्पन्न होते है और (सावसेस-कम्मा) पापकर्म उनका अवशेष रहने के कारण वे (तिरिक्ख पचिंदि-एसु) तिर्यञ्च पचेन्द्रियों मे (पमाय - रागदोसबहुसचियाइ) विषयाद्यभिष्वङ्गरूप प्रमाद से मायालोभरूप राग से और क्रोधमानरूप द्वेष से उपार्जित किये गये (अईव असाय कक्कसाइ कम्माइ) अशात कर्कश कर्मो

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે-"एव ते" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"एव" આ પ્રમાણે "ते" તે પ્રાણુવધ કરનાર જીવ "दुक्खसयसपलित्ता" સેકડો દુખોથી દુખી થઇને "नरगाओ" નરકમાથી "इह" આ તિર્યગ્લોકમા "आगया" ઉત્પન્ન થાય છે અને "सावसेसकम्मा" તેમના પાપકર્મ બાકી રહેલ હોવાથી તેઓ "तिरिक्खपचिदिएसु" તિર્યંચ પચેન્દ્રિયોમા "पमाय रागदोसबहुसचियाइ" વિષયાદિની અભિલાષા રૂપ પ્રમાદથી, માયા લોભ રૂપ રાગથી, અને ક્રોધમાન રૂપ દ્વેષથી ઉપાર્જિત કરેલ "अईव असाय कक्कसाइ कम्माइ" અશાતા કર્કશ કર્મોને અશાતા વેદનીય કર્મોદયને કારણે ઉપાર્જિત

प्राणिवधकारकाः नरकात्मत्यागतास्तिर्यक्पञ्चेन्द्रिययोनिषु समुत्पन्नाः कठोरतराणि दुःखान्यनुभवन्तीति सङ्कलितोऽर्थः ॥ सू० ४० ॥

तिर्यक् पञ्चेन्द्रियदुःखानि वर्णयित्वा साम्प्रत चतुरिन्द्रियदुःखानि वर्णयन्नाह—'भमर' इत्यादि ।

मूलम्—भमर-मसग-मच्छियाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहि चउरिंदियाण तहिं तहि चेव जम्मण मरणाणि अणुहवंता काल संखिज्जं भमंति नेरइयसमाण तिव्वदुक्खाफरिसरसणघाणचक्खुसहिया ॥ सू० ४१ ॥

टीका—'भमर-मसग-मच्छियाइएसु' भ्रमरमशकमक्षिकादिकेषु = प्रसिद्धेषु 'चउरिंदियाण' चतुरिन्द्रियाणा 'नवहिं' नवसु=नवसंख्यकेषु 'जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं' जातिकुलकोटिशतसहस्रेषु = जातौ = चतुरिन्द्रियजातौ यानि कुलानि=भ्रमराद्यनेकाकाराणि, तेषां कोटयः=विभागा =अन्तर्भेदाः तेषा शतसहस्रेषु=लक्षेषु=नवलक्षचतुरिन्द्रियजातिकुलकोटिषु इत्यर्थः, 'तहिं तहिं चेव'

को अशातवेदनीयकर्मोदयसे उद्भूत हुए दुखों में भी कठोतर कर्मजन्य-दुःखों को (पावेंति) भोगते हैं-अर्थात्-वे प्राणिवधकारक जीव नरकसे निकलकर तिर्यञ्चपचेन्द्रियों मे उत्पन्न होते हैं और वहा कठोर .खों को प्राप्त करते हैं ॥सू ४० ॥

वे पापी जीव चतुरिन्द्रिय जीवों मे उत्पन्न होकर किस प्रकार के दुःखों को भोगते हैं जिसका वर्णन करते ह-'भमर-मसग' इत्यादि ।

टीकार्थ-(भमर-मसग-मच्छियाइएसु चउरिंदियाण नवहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं) भ्रमर, मशक, मक्षिका आदि चतुरिन्द्रिय जीवों के नौ लाख जातिकुल कोटियों मे (तहिं तहिं चेव जम्मणमरणाणि) वहीं वहीं

દુખો કરતા પણ વધારે કઠોર કર્મજન્ય દુખોને "पावेंति" ભોગવે છે એટલે કે પ્રાણીવધ કરનાર જીવો નરકમાથી નીકળીને તિર્યંચ પચેન્દ્રિયોમા ઉત્પન્ન થાય છે અને ત્યા વધારેમા વધારે આકરા દુખો પ્રાપ્ત કરે છે ॥સૂ ૪૦॥

તે પાપી જીવો ચતુરિન્દ્રિય જીવોમા ઉત્પન્ન થઈને કેવા પ્રકારના દુખો ભોગવે છે તેનુ વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે-"भमरमसग" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"भमर, मसग, मच्छियाइएसु चउरिंदियाण नवहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं" ભ્રમર, મશક, માખી આદિ ચૌઇન્દ્રિય જીવોની નવલાખ પ્રકારની જાતિઓમા "तहिं तहिं चेव जम्मणमरणाणि" તે તે યોનિયોમા ચતુરિન્દ્રિય જીવોમા

तत्र तत्रैव=चतुरिन्द्रियेष्वेव 'जम्मणमरणाणि' जन्ममरणानि 'अणुहवता' अनुभवन्तः=कुर्वन्तः 'नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा' नैरयिकसमानतीव्रदुःखाः=नारकैः समानानि=नरके नारकाः यादृशानि दुःखानि अनुभवन्ति तत्तुल्यान्येव तीव्राणि=कठोराणि असह्यानीत्यर्थः दुःखानि येषां ते तथा नारकदुःखतुल्या सह्यवेदनावन्तः, 'फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया' स्पर्श-रसन-घ्राण-चक्षुः सहिता=स्पर्शादीन्द्रियचतुष्टययुक्ताः 'सखिज्ज काल' सख्यात काल=सख्यातवर्ष सहस्र काल यावत् 'भमति' भ्रमन्ति=पुनः पुनर्योनितो योनिं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः॥४१॥

अथ त्रीन्द्रियदुःखानि वर्णयति 'तहेवे' त्यादि।

मूलम्—तहेव तेइदिएसु कुथु-पिवीलिया-उद्देहियाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहि अट्ठहि अणूणगेहिं तेइदिदियाण तहि तहि चेव जम्मण मरणाणि अणुहवता कालं संखेज्जगं भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-संपउत्ता ॥ सू० ४२ ॥

टीका—'तहेव' तथैव=चतुरिन्द्रियेषु यथा दुःखान्यनुभवन्ति तथैव 'तेइदिएसु' त्रीन्द्रियेषु 'कुथु-पिवीलिया उद्देहियाइएसु' कुन्थु पिपीलिकोपदेहि

पर-चतुरिन्द्रिय जीवों में ही-जन्म मरणों को (अणुहवता) करते हुए वे पापी जीव (नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा) नरकगति जैसे असह्य दुःखों को भोगते हुए (फरिस-रसण-घणचक्खुसहिया) स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु इन इन्द्रियो से युक्त हुए ये चतुरिन्द्रिय जीव (सखिज्ज काल) सख्याता हजार वर्षतक (भमति) उसी योनि में जन्म मरण करते रहते हैं ॥ सू. ४१ ॥

अब त्रीन्द्रिय जीवों के दुःखों को वे भोगते हैं ऐसा वर्णन सूत्रकार

જ જન્મ મરણ "अणुहवता" અનુભવતા તે પાપી જીવો "नेरइयसमाणतिव्व दुक्खा" નરક ગતિ જેવા અસહ્ય દુખો ભોગવે છે અને "फरिस-रसण-घाण -चक्खुसहिया" સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઈન્દ્રિયોથી યુક્ત તે ચતુરિન્દ્રિય જીવો "सखिज्ज काल" સખ્યાત હજાર વર્ષ સુધી "भमति" તે યોનિમા જન્મ મરણ અનુભવ્યા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય જીવો જે દુખો ભોગવે છે તેનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે

कादिकेषु=कुन्थुः=क्षुद्रजन्तुविशेषः, पिपीलिका=प्रसिद्धा, 'उद्देहिया' उपदेहिका='उदेही' इति भाषा प्रसिद्धा, इत्यादिकेषु 'तेइंदियाण' त्रीन्द्रियाणां, 'अणूणगेहिं' अन्यूनकेषु=पूर्णेषु 'अट्ठहिं' अष्टसु 'जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं' जातिकुलकोटिशतसहस्रेषु—जातौ=त्रीन्द्रियजातौ यानि कुलानि = कुन्थुपिपीलिकाद्याकाराणि, तेषां कोटयः=विभागाः=अन्तर्भेदाः, तेषां शतसहस्रेषु लक्षेषु परिपूर्णाष्टलक्षत्रीन्द्रियजातिकुलकोटिषु—इत्यर्थः, 'तहिं तहिं चेव' तत्र तत्रैव त्रीन्द्रियेषु 'जम्मणमरणाणि' जन्ममरणानि 'अणुहवंता' अनुभवन्तः, 'नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा' नैरयिकसमानतीव्रदुःखा=नरकसदृशदुःखयुक्ताः 'फरिस–रसण–घाण–संपउत्ता' स्पर्शरसनघ्राणसम्प्रयुक्ताः=स्पर्शादिभिस्त्रिभिरिन्द्रियैर्युक्ताः 'संखेज्जगं' संख्यातकं=संख्यातवर्षसहस्रं कालं यावत् 'भमंति' भ्रमन्ति ॥सू०४२॥

करते हैं—'तहेव' इत्यादि।

टीकार्थ—(तहेव) जिस तरह पापी जीव चतुरिन्द्रिय जीवों में जन्म मरण करके दुःखों को भोगते हैं उसी तरह वे (कुंथु पिपीलिया उद्देहियाइएसु) कुंथु, पिपीलिका, उदेही आदिक त्रीन्द्रिय जीवों में कि जिन (तेइंदियाण) तेन्द्रिय जीवों की (अणूणगेहिं अट्ठहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं) उन पूर्ण आठ लाख जातिकुल कोटियों में (तहिं तहिं चेव जम्ममरणाणि अणुहवंता) बार बार वहीं पर जन्म मरणों को करते हुए (नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा) नरकगति जैसे असह्य दुःखों को भोगते हुए इनके (फरिस–रसण–घाण संपउत्ता) स्पर्शन, रसना और घ्राण इन तीन इन्द्रिय युक्त हुए ये तेन्द्रिय जीव (संखेज्ज कालं) संख्यात हजार वर्षों तक (भमंति) उसी पर्याय में परिभ्रमण करते हैं ॥सू०४२॥

છે—"तहेव" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–'तहेव" જેમ પાપી જીવો ચતુરિન્દ્રિ જીવોમાં જન્મ મરણ પામીને દુઃખો ભોગવે છે તેમ તેઓ "कुंथुपिवीलियाउद्देहियाइएसु" કુંથુ, કીડી, ઉધઈ આદિક ત્રિન્દ્રિય જીવોમાં જન્મ લે છે અને 'तेइंदियाण" તેન્દ્રિય જીવોની "अणूणगेहिं अट्ठहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं" આઠલાખ પ્રકારની જાતિયોનિમાં "तहिं तहिं चेव जम्ममरणाणि अणुहवंता" વારવાર જન્મ મરણ અનુભવતા "नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा" નરક ગતિ જેવા અસહ્ય દુઃખો ભોગવે છે જેમને "फरिस–रसण–घाण संपउत्ता" સ્પર્શન, રસના અને ઘ્રાણ એ ત્રણ ઈન્દ્રિયોજ હોય છે એવા તે તેન્દ્રિય જીવો "संखेज्जकालं" સંખ્યાત હજાર વર્ષો સુધી "भमंति" તે જ યોનિમાં પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે॥ સૂ–૪૨ ॥

तत्र तत्रैव=चतुरिन्द्रियेष्वेव 'जम्मणमरणाणि' जन्ममरणानि 'अणुहवता' अनुभवन्तः=कुर्वन्तः 'नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा' नैरयिकसमानतीव्रदुःखाः=नारकैः समानानि=नरके नारकाः यादृशानि दुःखानि अनुभवन्ति तत्तुल्यान्येव तीव्राणि=कठोराणि असह्यानीत्यर्थः दुःखानि येषां ते तथा नारकदुःखतुल्या सह्यवेदनावन्तः, 'फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया' स्पर्श-रसन-घ्राण-चक्षुः सहिता =स्पर्शादीन्द्रियचतुष्टययुक्ताः 'सखिज्ज काल' सख्यात काल=सख्यातवर्ष सहस्र काल यावत् 'भमति' भ्रमन्ति=पुनः पुनर्योनितो योनिं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः॥४१॥

अथ त्रीन्द्रियदुःखानि वर्णयति 'तहेवे' त्यादि।

मूलम्—तहेव तेइदिएसु कुथु-पिवीलिया-उद्देहियाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहि अट्ठहि अणूणगेहि तेइदिदियाण तहि तहि चेव जम्मण मरणाणि अणुहवता कालं सखेज्जगं भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-संपउत्ता ॥ सू० ४२ ॥

टीका—'तहेव' तथैव=चतुरिन्द्रियेषु यथा दुःखान्यनुभवन्ति तथैव 'तेइदिएसु' त्रीन्द्रियेषु 'कुथु-पिवीलिया उद्देहियाइएसु' कुन्थु पिपीलिकोपदेहि

पर-चतुरिन्द्रिय जीवों में ही-जन्म मरणों को (अणुहवता) करते हुए वे पापी जीव (नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा) नरकगति जैसे असह्य दुःखों को भोगते हुए (फरिस-रसण-घणचक्खुसहिया) स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु इन इन्द्रियो से युक्त हुए ये चतुरिन्द्रिय जीव (सखिज्ज काल) सख्याता हजार वर्षतक (भमति) उसी योनि में जन्म मरण करते रहते हैं ॥ सू ४१ ॥

अब त्रीन्द्रिय जीवों के दुःखों को वे भोगते हैं ऐसा वर्णन सूत्रकार

જ જન્મ મરણ "अणुहवता" અનુભવતા તે પાપી જીવો "नेरइयसमाणतिव्व दुक्खा" નરક ગતિ જેવા અસહ્ય દુખો ભોગવે છે અને "फरिस-रसण-घाण -चक्खुसहिया" સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઈન્દ્રિયોથી યુક્ત તે ચતુરિન્દ્રિય જીવો "सखिज्ज काल" સખ્યાત હજાર વર્ષ સુધી "भमति" તે યોનિમા જન્મ મરણ અનુભવ્યા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય જીવો જે દુખો ભોગવે છે તેનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે

एवमेव एकेन्द्रियत्वमपि ते प्राप्ताः यासु यासु योनिषु यथा भ्रमन्ति तदाह —' पत्ता ' इत्यादि ।

मूलम्–पत्ता एगिंदियत्तणंपि य पुढवि जल जलण मारुय वणप्फइसुहुमबायरं च पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेय सरीरणाम साहारणं च पत्तेयसरीरजीवेसु य तत्थ वि कालमसंखेज्जं भमंति अणंतकालं च अणंतकाए, फासिंदियभावसंपउत्ता दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावंति पुणो पुणो तहिं तहिं चेव परभवतरुगणगहणे ॥ सू० ४४ ॥

टीका—' एगिंदियत्तणपि य ' एकेन्द्रियत्वमपि च=' अपि चे ' ति समुच्चयार्थः । एवं च न केवलं पञ्चेन्द्रियचतुरिन्द्रियादित्वमेव प्राप्ता, अपि तु एकेन्द्रियत्वमपि ' पत्ता ' प्राप्ताः सन्तः दुःखसमुदयं प्राप्नुवन्तीत्यग्रेण सम्बन्धः ।

र्शन और रसना इन दो इन्द्रियों से युक्तवाले ये द्वीन्द्रिय जीव (संखेज्जकाल) संख्यात हजार वर्ष प्रमाण कालतक (भमंति) इसी द्विन्द्रिय की पर्याय में भ्रमण करते हैं ॥ सू–४३ ॥

इसी तरह एकेन्द्रिय की पर्याय को भी प्राप्त हुए वे पापी जीव जिन २ योनियों में जिस २ तरह से परिभ्रमण करते हैं अब सूत्रकार इस बात को प्रकट करते है–' पत्ता एगिंदियत्तणपि य ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एगिंदियत्तणपि य पत्ता) वे पापी जीव केवल पचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय आदि पर्यायोंको ही प्राप्त नहीं करते हैं किन्तु एकेन्द्रिय पर्यायको प्राप्त करते हैं और वहां वे (दुक्खसमुदयं पावंति) दुःख समूह को भोगते

थेथी युक्त ते द्वीन्द्रिय જીવો " संखेज्जकाल " સંખ્યાત હજાર વર્ષ સુધી " भमंति " એજ દ્વીન્દ્રિય યોનિમાં ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ–૪૩॥

એજ પ્રમાણે એકેન્દ્રિયની પર્યાયમાં ઉત્પન્ન થઈને તે પાપી જીવો જે જે યોનિમાં જે જે રીતે પરિભ્રમણ કરે છે, તે વાતનું સૂત્રકાર હવે વર્ણન કરે છે–" एगिंदियत्तणपि य " ઇત્યાદિ

" एगिंदियत्तणंपि य पत्ता " તે પાપી જીવો ફક્ત પંચેન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય પર્યાયોને જ પ્રાપ્ત કરતા નથી પણ એકેન્દ્રિય પર્યાયને પણ પ્રાપ્ત કરે છે, અને ત્યાં તેઓ " दुक्खसमुदयं पावंति " દુઃખોના સમૂહને ભોગવ્યા કરે છે, તે

अथ द्वीन्द्रियदुःखानि वर्णयन्नाह—'गडूलय' इत्यादि ।

मूलम्—गडूलय—जलूय—किमिय—चदणग—माइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहि सत्तहिं अणूणगेहिं बेइंदियाण तहि तहि चेव जम्मणमरणाणि अणुहवंता कालं संखिज्जगं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-संपउत्ता॥सू०४३॥

टीका—त्रीन्द्रियात् समागताः द्वीन्द्रियेष्वपि 'गडूलय—जलूय किमिय-चदणगमाइएसु' गण्डोलक—जलूक—कृमि—चन्दन—कादिकेषु—गण्डोलाः=गोमयादिषु समुत्पन्नाः कीटविशेषाः, जलूकाः=जलजन्तुकाः 'जोंक' इति प्रसिद्धाः कृमयः='लट' 'चूरणिया' इति प्रसिद्धाः, चन्दनकाः=शङ्खजातिविशेषाः, ते आदिर्येषां ते तथा तेषु 'बेइंदियाण' द्वीन्द्रियाणां 'सत्तहिं' 'सप्तसु जातिकुलकोटिशतसहस्रेषु अन्यूनेषु जन्ममरणानि अनुभवन्तो नारकसमानतीव्रदुःखाः स्पर्शरसनेतीन्द्रियद्वय सम्प्रयुक्ताः सङ्ख्यातवर्षसहस्रलक्षण काल यावत् भ्रमन्ति ॥४३॥

अब द्वीन्द्रिय जीवों मे उत्पन्न होकर के वे किन किन दुःखों को भोगते है इसका सूत्रकार वर्णन करते हैं-'गडूल य' इत्यादि ।

टीकार्थ–तेन्द्रिय योनिसे निकल कर वे पापी जीव द्वीन्द्रिय जीवों में (गडूलय–जलूय–किमिय–चदणग–माइएसु) गण्डोलक, जलोक, कृमि, और शख आदिकों मे भी कि जिनकी (सत्तहिं जाइकुलकोडि सयसस्सेहिं) सातलाख जातिकुल कोटि हैं (तहिं २) वही वही बार २ (जम्ममरणाणि अणुहवंता) जन्म मरण करते हुए (नेरइय समाणतिव्वदुक्खा) नारकियों जैसा तीव्र दुःख भोगते हुए (फरिस–रसण सपउत्ता) स्प-

હવે દ્વીન્દ્રિય જીવોમા ઉત્પન્ન થઇને તેઓ કયા કયા દુ ખો ભોગવે છે, તેનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે–"गडूलय" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તેન્દ્રિય યોનિમાંની નીકળીને તે પાપી જીવો "गडूलय–जलूय–किमिय–चदणग–माइएसु" ગંડોલક, જલૌક, કૃમિ, શ ખ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોમા જન્મ લે છે તે દ્વીન્દ્રિય જીવોના પણ "सत्तहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं" જાતિ પ્રમાણે સાત લાખ પ્રકારો છે "तहिं तहिं" તે દરેક જાતિમા વાર વાર 'जम्ममरणाणि अणुहवंता" જન્મ મરણ અનુભવતા "नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा" તેઓ નારકીઓ જેવા આકરા દુ ખો ભોગવે છે "फरिसरसणसपउत्ता" સ્પર્શન અને રસના ઇન્દ્રિ-

पृ १ अ २ ते ३ वा ४ व ५
छाया—एकेन्द्रियेषु पञ्चसु, द्वादश-सप्त-त्रिक-सप्त-अष्टविंशतिश्च ।
२६ ३६ ४६
विकलेषु सप्त-अष्ट-नव, जल-ख-चतुष्पद-उरोग-भुजगेषु ॥१॥
अर्द्धत्रयोदश [१२॥] द्वादश, दशदशनवक नरामरयोर्नरके ।
द्वादश षड्विंशतिः पञ्चविंशति,-र्भवन्ति कुलकोटिलक्षाणि ॥२॥" ॥४४॥

अथ दुःखसमुदयमाह—'कोद्दाले' त्यादि ।

मूलम्—कोद्दाल-कुलिय दालण-सलिल-मलण-खुंभण-रुंभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण परोप्पराभिहणण-मारण-विराहणाणि य अकामगाइ परप्पओगोदीरणाहिय कज्जप्पओयणेहि य पेस्स पसु निमित्त ओसहाहारमाइएहि उक्खणण-उक्कत्थण-पयण-कोट्टण पीसण-पिट्टण--भज्जण-गालण-आमोडण- सडण -फुडणा-भजण-छेयण-तच्छण विलुचण -पतज्झोडण-अग्गिदहणाइयाइं,

---

द्वीन्द्रिय जीवों के सात लाख, तेन्द्रिय जीवों के आठ लाख, चौइन्द्रिय जीवों के नौ लाख, जलचरों के साढा बारहलाख, खेचरों के बारह लाख, चतुष्पदों—थलचरों के दश लाख, उरगों के दशलाख, भुजगों के नौ लाख, मनुष्यों के बारह लाख, देवों के छब्बीस लाख और नरकों के पच्चीस लाख कुल कोटि हैं। कुलकोटि की व्युत्पत्ति "कुलाना कोटिः" इस प्रकार है। इसका तात्पर्य अपनी २ जाति में आकार आदि को लेकर विभाग से है, अर्थात्-पृथिवीकाय आदि जीवों के जो आकार हैं उन आकारों के जो और अन्तर्भेद हैं वे कुलकोटि शब्द के वाच्यार्थ हैं ॥सू-४४॥

સાત લાખ, તેન્દ્રિય જીવોના આઠ લાખ, ચતુરિન્દ્રિય જીવોના નવ લાખ, જળચરોના સાડા બાર લાખ, ખેચરોના બાર લાખ,, ચતુષ્પદોસ્થળચરોના દશ લાખ, ઉરગોના દશ લાખ ભુજગોના નવ લાખ, મનુષ્યોના બાર લાખ, દેવોના છવીસ લાખ, અને નારકીઓના પચીસ લાખ કુલકોટિ (પ્રકાર) છે કુલ-કોટિની વ્યુત્પત્તિ "कुलाना कोटि" થાય છે તેનુ તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે-પોત પોતાની જાતિમા આકાર આદિ પ્રમાણે પાડેલા વિભાગોને 'કુલકોટિ' કહે છે એટલે કે પૃથિવીકાય આદિ જીવોના જે આકારો છે તે આકારોના બીજા જે અન્તર્ભેદ છે તે કુલકોટિ શબ્દના વાચ્યાર્થ છે ॥ સૂ-૪૪॥

कीदृशाः सन्तो भ्रमन्ति ? इत्याह—'फासिंदियभावसंपउत्ता' स्पर्शेन्द्रियभावसम्प्रयुक्ताः=स्पर्शमात्रैकेन्द्रियत्वं प्राप्ताः, 'तहिं तहिं चेव' तत्र तत्रैव =वनस्पतिकाय एव, कीदृशे ? इत्याह—'परभवतरुगणगहणे' परभवतरुगणगहने=पराः=प्रकृष्टाः, सर्वोत्कृष्टकायस्थितिमत्त्वात् भवाः=उत्पत्तिस्थानानि येषु ते तादृशा तरुगणाः=वृक्षगुच्छगुल्मादिसमूहास्तैर्गहने=गम्भीरे 'पुणो पुणो' पुनः पुनः=मुहुर्मुहुः 'इमं' वक्ष्यमाणम् 'अणिट्ठं' अनिष्टं=प्रतिकूलं दुःखसमुदयं =दुःखसमूहं=नानाविधमशातवेदनीयरूपं 'पावंति' प्राप्नुवन्ति। सर्वासां जातीनां कुलकोटयो यथा—

"एगिंदिएसु पंचसु, बारस-सत्त-तिग-सत्त-अट्ठवीसा य।
विगलेसु सत्त अड नव, जल-खह-चउप्पय-उरग-भुयगेसु ॥ १ ॥
अद्धत्तेरस बारस, दस दस नवगं नरामरे नरए।
बारस छवीस पणवीस हुंति कुलकोडिलक्खाइं ॥ २ ॥" इति।

(फासिंदिय भावसंपउत्ता) ये सब जीव एक स्पर्शन इन्द्रिय वाले ही होते हैं। और (तहिं तहिं चेव) उसी वनस्पतिकाय में कि जहाँ (परभवतरुगणगहणे) वृक्ष, गुच्छ, गुल्म आदि समूहरूप भव सर्वोत्कृष्ट हैं और उनसे जो गहन बना हुआ है (पुणो पुणो) बार २ (इमं) इन वक्ष्यमाण (अणिट्ठं) अनिष्ट-प्रतिकूल (दुक्खसमुदयं) दुःखों को-नाना विध अशात वेदनीय रूप कष्टों को (पावंति) पाते हैं। समस्त जातियों के कुल कोटियों की संख्या इस प्रकार हैं—

पृथ्वीकाय के बारह लाख, अप्काय के सात लाख, तेउकाय के तीन लाख, वायुकाय के सात लाख, वनस्पतिकाय के अट्ठाईस लाख,

"फासिंदिय भावसंपउत्ता" ते બધા જીવો એકલી સ્પર્શન ઇન્દ્રિયથી જ યુક્ત હોય છે, અને "तहिं तहिं चेव" તે જ વનસ્પતિકાયમાં કે જ્યાં "परभव तरुगण गहणे" વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ આદિ સમૂહરૂપ ભવ સર્વોત્કૃષ્ટ છે અને તેમનાથી જે ગહન બનેલ છે "पुणो पुणो" વારંવાર "इमं" આ પ્રમાણે "अणिट्ठं" અનિષ્ટ-પ્રતિકૂળ "दुक्खसमुदयं" દુઃખોને વિવિધ અશાતા વેદનીય રૂપ કષ્ટોને "पावंति" અનુભવે છે સઘળી જાતિયોની યોનિયોના પ્રકારોની સંખ્યા નીચે પ્રમાણે છે-

પૃથ્વીકાયના બાર લાખ, અપ્કાયના સાત લાખ, તેઉકાયના ત્રણ લાખ, વાયુકાયના સાત લાખ, વનસ્પતિકાયના અઠ્ઠાવીસ લાખ, દ્વિઇન્દ્રિય જીવોના

अनलश्च अनिलश्चेत्यनलानिलौ तयोः=अग्निवाय्वोः विविधैः शस्त्रैः स्वकायपरकायोभयकायलक्षणैः घट्टनम्=उपहननम्, अनेन-अग्निवाय्वोर्वेदना दर्शिता। तत्र-अग्नेः स्वकायशस्त्र करीषाग्नेः काष्ठाग्निः, परकायशस्त्र धूलिजलादिकम्। उभयकायशस्त्रम्=प्रज्वलत्करीषादिकम्। वायोः स्वकायशस्त्र=पूर्वदिग्वायो पश्चिमदिग्वायुः, इत्यादि रूपम्, परकायशस्त्रम् अग्न्यादिकम्, उभयकायशस्त्रम्=अग्निसन्तप्तवायु'-दृतिगतमिश्रवायुश्च, इत्यादिरूपम्। अचित्तमुखवातभृतः सन् दवरकेण गाढबद्धमुखो नद्यादिजले प्लाव्यमानो दृतिर्यावत् क्षेत्रतः प्रथम हस्तशत गच्छति तदवधि तद्गतो वायुरचित्त एव, तत ऊर्ध्वं द्वितीयहस्तशतपर्यन्त मिश्रो भवति,

---

जो क्रिया है इसका नाम चलाना है। पानी को एकत्रित करके कुए, तडाग आदि में रोक देना इसका नाम रोधन है। एसी क्रियाओं से अप्काय को वेदना होती है। (अणलानिल विविह सत्थघट्टण) अग्निकाय और वायुकाय के वेदना के कारण स्वकाय, परकाय और उभयकाय विविधशस्त्र हैं। इनसे इनकी विराधना होती है। अग्नि का-करीप की अग्नि का काष्ठ की अग्नि स्वकायरूप शस्त्र है धूलि एव जल आदि परकायरूप शस्त्र है, एव प्रज्वलित करीष आदिक उभयकायरूप शस्त्र हैं। वायुका-पूर्वदिशा सबधी वायु का पश्चिमदिशा सबधी वायु स्वकाय शस्त्र है, अग्नि आदिक परकायशस्त्र हैं तथा अग्नि सतप्त वायु और मशक के भीतर रही हुई वायु ये उभयकायशस्त्र हैं। अचित्त मुख की वायु से भरा हुआ तथा डोरे से जिसका मुखबद कर दिया गया है ऐसी दृति (मशक) जिस स्थानसे नदी के जल मे छोडी जाती है वहा से लेकर तैरती

છે પાણીને એકત્ર કરીને કૂવા, તળાવ આદિમા રોકી લેવાની ક્રિયાનુ નામ 'रोधन' છે તેવી ક્રિયાઓથી અપ્કાયને વેદના થાય છે “अणलाणिल-विविह सत्थघट्टण” અગ્નિકાય અને વાયુકાયને વેદનાના કારણો સ્વકાય, પરકાય અને ઉભયકાય વિવિધ શસ્ત્રો છે તેમના વડે તેમની વિરાધના થાય છે અગ્નિનુ-કરીષની અગ્નિનુ કાષ્ટની અગ્નિ સ્વકાયરૂપ શસ્ત્ર છે, ધૂળ અને જળ આદિ પરકાયરૂપ શસ્ત્ર છે, અને પ્રજ્વલિત કરીષ આદિ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્ર છે વાયુનુ પૂર્વદિશાના વાયુનુ પશ્ચિમ દિશાનો વાયુ સ્વકાય શસ્ત્ર છે, અગ્નિ આદિ પરકાય શસ્ત્ર છે, તથા અગ્નિથી સતપ્ત વાયુ અને મશકની અદર રહેલ હવા તે ઉભયકાય શસ્ત્ર છે અચિત્ત વાયુથી ભરેલ તથા દોરીથી જેનુ મુખ બધ કરી દેવામા આવ્યુ છે એવી મશક જે જગ્યાએથી નદીના પાણીમા છૂટી મૂકવામા આવે છે ત્યાથી શરૂ કરીને તરતી તરતી જ્યારે સો હાથ આગળ નીકળી

एव ते भवपरंपरादुक्खसमणुबद्धा अडति ससारवीहणकरे जीवा पाणाइवायनिरया अणंतकालं ॥सू० ४५॥

टीका—'कोद्दाल-कुलिय-दालण-सलिल-मलण-खुभण-रुभण अणलाणिल विविह सत्थघट्टण परोप्पराभिहणण मारण विराहणाणि' कुद्दालकुलिकदारण सलिल मलन क्षोभण रोधनानलानिल विविध शस्त्रघट्टनपरस्पराभिहननमारण-विराधनानि, तत्र–' कोद्दाल ' कुद्दाल =भूमिदारक शस्त्रविशेषः ' कुलिय ' कुलिक च हलविशेषस्ताभ्या ' दालण ' दारण–खननम् , एतद् द्वय पृथिवी वनस्पत्योर्वेदना कारणम् सलिलस्य=जलस्य मलन क्षोभणरोधनानि, तत्र-मलन-मर्दन, क्षोभण= सञ्चालन, ' रुभण ' रोधन=निरोधन तडागादौ, अनेनाप्कायवेदना व्यक्तीकृता,

---

पृथिवी आदि जीवों में वेदना के कारण क्या २ हैं ? सूत्रकार अब इस विषय को स्पष्ट करते है—' कोद्दाल-कुलिय ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(कोद्दाल-कुलिय दालण सलिलमलण-खुभण रुभण-अणलाणिल विविह्-सत्थघट्टण परोप्पराभिहणणमारणविराहणाणि य) (कोद्दाल) कुद्दाल–कुदाली और (कुलिय) कुलिक–हल विशेष, (दालण) इनसे भूमिका विदारण करना–खोदना, ये दो पृथिवी और वनस्पति जीवों के वेदना के कारण है (सलिलमलण) पानी का मर्दन करना, (खुभण) चलाना, और (रुभण) तडाग आदि मे रोकना ये बातें अप्काय के जीवों के लिये वेदना के कारण हैं। चुल्ली आदि में पानी डालना आदि रूप जो क्रियाएँ की जाती हैं इसका नाम मर्दन है । क्षोभण शब्द का अर्थ चलाना है । कही पर भरे हुए पानी को बाहिर निकालने आदिरूप

હવે સૂત્રકાર ને વિષયને સ્પષ્ટ કરે છે કે પૃથિવી આદિ જીવોમા વેદ-નાના કારણો કયા કયા છે–" कोद्दाल-कुलिय " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–" कोद्दाल–कुलिय–दालण–सलिल–मलण–खु भण–रुभण–अणलाणिल–त्रिविह्–सत्थ घट्टण-परोप्पराभिहणण मारण विराहणाणि य " "कोद्दाल" કોદાળી અને "कुलिय" કુલિક–હળ વિશેષ વડે, "दालण" ભૂમિને ખોદવી તે પૃથિવી અને વનસ્પતિ જીવોને વેદનાના કારણો છે "सउलि मलण " પાણીનુ મર્દન કરવુ " खु भण " ચલાવવુ અને "रुभण" તળાવ આદિમા રોકવુ તે અપ્કાયના જીવો માટે વેદનાનુ કારણ છે ચૂલ આદિમા પાણી નાખવા વગેરેની જે ક્રિયાઓ થાય છે તેને મર્દન કહે છે क्षोभण નો અર્થ ચલાવવુ થાય છે કોઇ જગ્યાએ ભરાઇ રહેલા પાણીને બહાર કાઢવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને ચલાવવુ કહે

वीजलतेजोवायुकायदुःखानि 'अकामगाइ' अकामकानि=अवाञ्छनीयानि भवन्ति। पुनस्तान्येव विशदयति-' परप्पओगोदीरणाहि य ' परप्रयोगोदीरणाभिश्च=परेषा =स्वभिन्नाना जनाना य प्रयोगः=व्यापारस्तेन उदीरणा =दुःखोत्पादनप्रेरणा स्ताभिः-स्वप्रयोजनविरहेऽपि परकथनैः निष्प्रयोजनैरित्यर्थः, तथा-' कज्जप्प-ओयणेहि य ' कार्यप्रयोजनैश्च=आवश्यकप्रयोजनैश्च। कथम्भूतैरित्याह—' पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहिं ' प्रेष्यपशुनिमित्तौषधाहारादिकैः=प्रेष्या – भृत्या पशवः=गवादयस्तन्निमित्तानि रोगबुभुक्षादि निवृत्ति हेतुकानि यानि औषधाहारादीनि तै पृथिव्यादीना हिंसाप्रकारानाह—उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण–गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण–छेयण–तच्छण विलुंचण पतज्झोडण – अग्गिदहणाइयाइ ' उत्खननोत्कथनपचनकुट्टनपेषणपिट्टनभर्जन गालना मोटनशटनस्फुटनभञ्जनच्छेदनतक्षणविलुञ्चनपत्रझोटनाग्निदहनादीनि-तत्र

जल, तेज, वायुकायों को जो इस प्रकार के दुःख होते हैं वे (अकाम-गाइ) उन्हें अवाञ्छनीय होते हैं। पाप जीव पाप क्यों करते हे-(पर-प्पओगोदीरणाहि य) अपना प्रयोजन हो तो भी दूसरो से कहने से, तथा (कज्जप्पओयणेहि य) अपना आवश्यक कार्य से, वे कार्य कौन हे? सो कहते हैं (पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहिं) प्रेष्य-भृत्य, पशु-गाय भैंस आदि जानवरों के रोग, बुभुक्ष आदि की निवृत्ति के हेतु-भूत औषध, आहार आदि के निमित्त से करते हैं। हिंसा के प्रकारों को कहते हे (उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण=छेयण–तच्छण–विलुंचण–पत ज्झोडण–अग्गिदहणाइयाइ) उत्खनन आदि दुःखो को एकेन्द्रिय की पर्याय में प्राप्त होकर पृथिव्यादि जीव बनकर भोगते हैं। कुदाल आदि

તેજ અને વાયુકાયોને આ પ્રકારે જે દુઃખો ભોગવવા પડે છે તે 'अकामगाइ" તેમને અવાંછનીય–અપ્રિય હોય છે પાપી જીવ પાપ શા માટે કરે છે? "परप्प ओगोदीरणाहि य" પોતાને માટે કોઈ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ બીજાના કહેવાથી, તથા "कज्जप्पओयणेहि य" પોતાના આવશ્યક કાર્યોને કારણે તેઓ પાપ કરે છે તે કાર્યો ક્યા ક્યા છે? તો સૂત્રકાર કહે છે-" पेस्सपसुनिमित्त ओसहाहारमाइएहिं " પ્રેષ્ય–નોકર, પશુ–ગાય, ભેંસ આદિ જાનવરોના રોગ, ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔષધ, આહાર આદિ ને નિમિત્તે તે કાર્ય કરે છે હવે હિંસાના પ્રકારો કહે છે—" उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण–गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण–छेयण–तच्छण–विलुंचण–पतज्झोडण–अग्गिदहणाइयाइ " તે પાપી જીવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમાં પૃથિવ્યાદિ

असौ मिश्रवायुरुभयकायशस्त्र सभवति । अत्र हस्तशतगमनकाल परिभाव्यैकस्मि न्नपि स्थाने जलमध्यगतस्योक्त क्रमेणाचित्तत्वादिक सूक्ष्मेक्षिकया विभावनीयम्। तथा परस्पराभिहननम्=तेजसा जलतापन जलेनाग्निवापनमित्येव रूपः सर्वेषा पृथिव्यादीना परस्परमभिघातः, मारण=विहिंसन, विराधन=पीडन, तानि पृथि

हुई जब वह सौ हाथ आगे निकल जाति है वहातक तद्गत वायु अचित्त ही रहती है, बाद में इसके जब वह दूसरे सौ हाथ क्षेत्र पर्यन्त वहा से आगे को बहती हुई जाती है तब वहां तक वही वायु मिश्रवायु रूप होती है। यही मिश्रवायु उभयकायरूप शस्त्र में परिगणित हुआ है। यहा दतिगति (मशक में रही हुई) वायु को जो अचित्त, मिश्र आदि रूप कहा गया है वह काल की अपेक्षा समझाना चाहिये, प्रथम सौ हाथ चलने में जितना समय लगता है उस समय को लेकर वह वायु जो दति (मशक) मे भरी हुई अचित्त रहती है, बाद में दूसरे सौ हाथ चलने में जितना समय लगता है उसको लेकर वह वायु सचित्ताचित्तरूप मिश्र हो जाती है। इस तरह सूक्ष्मरीति से विचार करने पर वायु मे अचित्तता सचित्ताचित्तता सध जाती है " परोप्पराभिहणण " का तात्पर्य है अग्नि से जल का तपाना, जल से अग्नि का बुझाना, इत्यादि रूप से जो पृथिव्यादिकाय का परस्पर में अभिघात करना होना है वह ' परोप्परा-भिहणण ' है। (मारण) मारण शब्द का अर्थ है इनका विहिंसन करना। (विराहणाणि) विराधना का अर्थ है इन्हें पीडा पहुँचाना। इन पृथिवी

જાય ત્યા સુધી તેની અદર રહેલી હવા અચિત્ત રહે છે, ત્યાર પછી ત્યાથી પણ તરતી તરતી સો હાથ આગળ નીકળી જાય ત્યા સુધીમા તે હવા મિશ્ર વાયુરૂપ થઇ જાય છે એજ મિશ્રવાયુ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્રમા ગણાયેલ છે અહીં મશકમા રહેલ હવાને અચિત્ત મિશ્ર આદિરૂપ બતાવવામા આવેલ છે, તે કાળની અપેક્ષાએ સમજવાનુ છે, પહેલા સો હાથ ચાલવામા જેટલો સમય લાગે છે તે સમય સુધી તે મશકમા ભરેલ હવા અચિત્ત રહે છે ત્યાર બાદ બીજા સો હાથનુ અતર ચાલવામા જેટલો સમય લાગે છે તેટલા સમય સુધીમા તે વાયુ સચિત્તાચિત્ત રૂપ મિશ્ર થઈ જાય છે આ રીત સૂક્ષ્મ રીતે વિચાર કરતા હવામા અચિત્તતા તથા સચિત્તાચિત્તતા ને સમજી શકાય છે " परोप्पराभिहणण " એટલે અગ્નિ વડે જળને ગરમ કરવુ, જળથી અગ્નિને બુઝાવવી, ઈત્યાદિ રીતે પૃથિવ્યાદિ કાયનો પરસ્પરમા ઘાત થવાની જે ક્રિયા થાય છે તે " परोप्पराभिहणण " છે મારણ "मारण" એટલે તેમની હત્યા કરવી "विराहणाणि" વિરાધના કરવી એટલે તેમને પીડા પહોચાડવી તે પૃથિવી જળ,

वीजलतेजोवायुकायदुःखानि 'अकामगाइ' अकामकानि=अवाञ्छनीयानि भवन्ति। पुनस्तान्येव विशदयति–' परप्पओगोदीरणाहि य ' परप्रयोगोदीरणाभिश्च=परेषा =स्वभिन्नाना जनाना य प्रयोगः=व्यापारस्तेन उदीरणा =दुःखोत्पादनप्रेरणा स्ताभिः–स्वप्रयोजनविरहेऽपि परकथनैः निष्प्रयोजनैरित्यर्थः', तथा–' कज्जप्पओयणेहि य ' कार्यप्रयोजनैश्च=आवश्यकप्रयोजनैश्च। कथम्भूतैरित्याह—' पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहिं ' प्रेष्यपशुनिमित्तौषधाहारादिकैः=प्रेष्या – भृत्या पशवः=गवादयस्तन्निमित्तानि रोगबुभुक्षादि निवृत्ति हेतुकानि यानि औषधाहारादीनि तै पृथिव्यादीना हिंसाप्रकारानाह—उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण–गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण–छेयण–तच्छण विलुचण पत्तज्झोडण – अग्गिदहणाइयाइ ' उत्खननोत्कथनपचनकुट्टनपेषणपिट्टनभर्जन गालना मोटनशटनस्फुटनभञ्जनच्छेदनतक्षणविलुञ्चनपत्रझोटनाग्निदहनादीनि–तत्र

जल, तेज, वायुकायों को जो इस प्रकार के दुःख होते हैं वे (अकामगाइ) उन्हें अवाञ्छनीय होते हैं। पाप जीव पाप क्यों करते हैं–(परप्पओगोदीरणाहि य) अपना प्रयोजन हो तो भी दूसरो से कहने से, तथा (कज्जप्पओयणेहि य) अपना आवश्यक कार्य से, वे कार्य कौन है ? सो कहते हैं (पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहिं) प्रेष्य–भृत्य, पशु–गाय भैंस आदि जानवरों के रोग, बुभुक्ष आदि की निवृत्ति के हेतु–भूत औषध, आहार आदि के निमित्त से करते हैं। हिंसा के प्रकारों को कहते हैं (उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण–छेयण–तच्छण–विलुचण–पत्तज्झोटण–अग्गिदहणाइयाइ) उत्खनन आदि दुःखो को एकेन्द्रिय की पर्याय मे प्राप्त होकर पृथिव्यादि जीव बनकर भोगते हैं। कुदाल आदि

તેજ અને વાયુકાયોને આ પ્રકારે જે દુ ખો ભોગવવા પડે છે તે ' अकामगाइ" તેમને અવાંછનીય–અપ્રિય હોય છે પાપી જીવ પાપ શા માટે કરે છે ? "परप्पओगोदीरणाहि य " પોતાને માટે કોઇ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ બીજાના કહેવાથી, તથા " कज्जप्पओयणेहि य " પોતાના આવશ્યક કાર્યોને કારણે તેઓ પાપ કરે છે તે કાર્યો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર કહે છે–" पेस्सपसुनिमित्त ओसहाहारमाइएहिं " પ્રેષ્ય–નોકર, પશુ–ગાય, ભેંસ આદિ જાનવરોના રોગ, ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔષધ, આહાર આદિ ને નિમિત્તે તે કાર્ય કરે છે હવે હિંસાના પ્રકારો કહે છે—" उक्खणण–उक्कत्थण–पयण–कोट्टण–पीसण–पिट्टण–भज्जण–गालण–आमोडण–सडण–फुडण–भजण–छेयण–तच्छण –विलुचण–पत्तज्झोडण–अग्गिदहणाइयाइ " તે પાપી જીવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા પૃથિવ્યાદિ

'उक्खणण' उत्खनन-कुद्दालादिभि पृथिव्यादीना विदारणम्, 'उक्कथण' उत्कथन=वृक्षादीना त्वचापनयन, 'पयण' पचन 'कोट्टण' कुट्टन=प्रसिद्ध, 'पीसण' पेषण=घरट्टादौ चूर्णन, 'पिट्टण' पिट्टन=ताडन, 'भज्जण' भर्जन=भ्राष्ट्रे पचन, 'गालण' गालन=लतागुल्मादि रस निगारणम्, 'आमोडण' आमोटनम्=शाखादीना मोटन, 'सडण' शटन=स्वयमेव विकृतभवन, 'फुडण' स्फुटन=स्वय द्विधा भवन, 'भजण' भञ्जन=त्रुटन-त्रोटन वा, 'छेयण' छेदन=कुठारादिना द्विधाकरण, 'तच्छण' तक्षण=वास्यादिभिश्छोल्लन, 'विलुचण' विलुञ्चन=लोमादेरिव

से पृथिवी आदि का विदारण करना-खोदना, इसका नाम (उक्खणण) उत्खनन है। वृक्षादिकों की छाल निकालना इसका नाम (उक्कथण) उत्कथन है। पकानेका नाम (पयण) पचन है। कूटने का नाम (कोट्टण) कुट्टन है। घरट्ट आदि में गेहूं आदि का पीसना इसका नाम (पीसण) पेषण है। ताडन करना इसका नाम (पिट्टण) पिट्टन है। भाड में भूंजना इसका नाम (भज्जण) भर्जन है। लता गुल्म आदि का रस निकालना इसका नाम (गालण) गालन है। शाखादिक का मरोडना इसका नाम (आमोडण) आमोटन है। अपने आप विकृत हो जाना इसका नाम (सडण) शटन है। स्वतः दो टुकडे हो जाना (फुडण) स्फुटन है। टूटना या किसी से तोड लिया जाना इसका नाम (भजण) भजन है। कुठार आदि से काट दिया जाना, इसका नाम (छेयण) छेदन है। वसूला आदि से छोलना इसका नाम (तच्छण) तक्षण है। रोम आदि की तरह पत्रादिक का दूर करना इसका नाम (विलुचण)

જીવો તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્ખનન આદિ દુઃખો ભોગવે છે કોદાળી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની ક્રિયાને "उक्खणण" ઉત્ખનન કહે છે વૃક્ષાદિની છાલ ઉતારવી તે ક્રિયાને "उक्कथण" ઉત્કથન કહે છે રાંધવાની ક્રિયાને "पयण" પચન કહે છે કૂટવાની-ખાંડવાની ક્રિયાને "कोट्टण" કુટ્ટન કહે છે ઘંટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની ક્રિયાને "पीसण" પેષણ કહે છે માર મારવાની ક્રિયાને "पिट्टण" પિટ્ટન કહે છે ભઠ્ઠીમા શેકવાની ક્રિયાને "भज्जण" ભર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ કાઢવાની ક્રિયાને "गालण" ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની ક્રિયાને "आमोडण" આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની ક્રિયાને "सडण" શટન કહે છે જાતે જ બે ટુકડા થઇ જવાની ક્રિયાને "फुडण" સ્ફુટન કહે છે જાતે તૂટવાની કે બીજા વડે તોડવાની ક્રિયાને "भजण" કહે છે કુહાડી આદિથી કાપવાની ક્રિયાને "छेयण" છેદન કહે છે વાંસલા આદિથી

पत्रादीनामपनयन, 'पतज्झोडण' प्रान्तझोटन=पत्रपुष्पफलादिपातनम्, 'अग्गिदहण' अग्निदहन=अग्नि प्रज्वालन चेतान्यादिर्येषा तानि एवम्प्रकाराणि दुःखानि एकेन्द्रियसम्बन्धीनि एकेन्द्रियत्व प्राप्ताः पृथिव्यादिजीवाः प्राप्नुवन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः । तदेव निगमयति-एवम्=उक्तरीत्या ते=नरकात् प्रत्यागताः जीवाः 'भव परपरादुक्खसमणुबद्धा' भवपरम्परादुःखसमनुबद्धा'=पञ्चेन्द्रियादि योनिषु जन्मपरम्परैव दुःख तेन समनुबद्धा=सयुक्ता 'पाणाइवाय-निरया' प्राणातिपातनिरताः=प्राणिवधपरायणाः जीवाः ससारे=चतुर्गतिरूपे कीदृशे? 'बीहणकरे' भयकरे=भयकारणे 'अणतकाल' अनन्तकालम् 'अडति' अटन्ति=सतत भ्रमन्ति ॥ सू० ४५ ॥

पूर्व नरकात्प्रत्यावृत्तानां तिर्यग्योनिषु जन्मभवतीति वर्णितम् । अथ यदि ते कथ-

---

विलुञ्चन है । पत्र, पुष्प, फल आदि का गिराना इसका नाम (पतज्झोडण) प्रान्तझाटन है । अग्नि का जलाना-इसका नाम अग्निदहन है । इत्यादि दुःखों को एकेन्द्रिय पर्याय को प्राप्त हुए पृथिव्यादि जीव भोगते हैं । अब इसका उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं-(एव ते) इस प्रकार नरक से निकले हुए वे जीव (भवपरपरादुक्खसमणुबद्धा) उक्त रीति से पचेन्द्रिय आदि योनियों में जन्मपरम्परारूप दुःखों से युक्त जीव (पाणाइवायनिरया) प्राणिवध करने मे तत्पर होकर (बीहणकरे) भयकर भय के कारणभूत इस (ससारे) चतुर्गतिरूप ससार में (अणतकाल) अनत कालतक (अडति) भ्रमण करते हैं ॥सू०४५ ॥

इस प्रकार यहांतक यह समझाया गया है कि नरक से निकले हुए वे जीव तिर्यंच योनि में जन्म लेते है। यदि वे कथंचित् मनुष्य पर्याय

"तच्छण" तक्षणु કહે છે રુવાટી આદિ જે રીતે દૂર કરાય છે તે રીતે પત્રાદિકને દૂર કરવાની ક્રિયાને "विलुचण" વિલુચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ આદિને પાડવાની ક્રિયાને 'पतज्झोडण" પ્રાન્તઝાટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે ઇત્યાદિ પ્રકારના દુ ખો એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉત્પન્ન થયેલ પૃથિવ્યાદિ જીવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે

'एव ते' આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા જીવો "भवपर परादुक्खसमणुबद्धा" ઉપરોક્ત પચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપરપરારૂપ દુ ખોથી યુક્ત થાય છે, અને "पाणाइवायनिरया" પ્રાણીવધ કરવાને તત્પર થઇને "बीहणकरे" ભયકર-ભયના કારણભૂત આ "ससारे" ચતુર્ગતિરૂપ સસારમા "अणतकाल" અનતકાળ સુધી "अडति" ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ० ૪૫॥

આ રીતે અહીં સુધીમા સમજાવવામા આવ્યુ છે કે નરકમાથી નીકળેલા તે જીવો તિર્યંચ યોનિમા જન્મ લે છે જો કદાચ તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉત્પન્ન

'उक्खणण' उत्खनन–कुद्दालादिभि पृथिव्यादीनां विदारणम्, 'उक्कथण' उत्कथन=वृक्षादीना त्वचापनयन, 'पयण' पचन 'कोट्टण' कुट्टनं=प्रसिद्ध, 'पीसण' पेपण=घरट्टादौ चूर्णन, 'पिट्टण' पिट्टन=ताडन, 'भज्जण' भर्जन=भ्राष्ट्रे पचन, 'गालण' गालन=लतागुल्मादि रस निगारणम्, 'आमोडण' आमोटनम्=शाखादीना मोटन, 'सडण' शटन=स्वयमेव विकृतभवन, 'फुडण' स्फुटन=स्वय द्विधा भवन, 'भजण' भञ्जन=त्रुटन–त्रोटन वा, 'छेयण' छेदन=कुठारादिना द्विधा करण, 'तच्छण' तक्षण=वास्यादिभिश्छोल्न, 'विलुचण' विलुञ्चन=लोमादेरिव

से पृथिवी आदि का विदारण करना–खोदना, इसका नाम (उक्खणण) उत्खनन है। वृक्षादिकों की छाल निकालना इसका नाम (उक्कथण) उत्कथन है। पकानेका नाम (पयण) पचन है। कूटने का नाम (कोट्टण) कुट्टन है। घरट्ट आदि में गेहूं आदि का पीसना इसका नाम (पीसण) पेपण है। ताडन करना इसका नाम (पिट्टण) पिट्टन है। भाड में भूजना इसका नाम (भज्जण) भर्जन है। लता गुल्म आदि का रस निकालना इसका नाम (गालण) गालन है। शाखादिक का मरोडना इसका नाम (आमोडण) आमोटन है। अपने आप विकृत हो जाना इसका नाम (सडण) शटन है। स्वतः दो टुकडे हो जाना (फुडण) स्फुटन है। तूटना या किसी से तोड लिया जाना इसका नाम (भजण) भजन है। कुठार आदि से काट दिया जाना, इसका नाम (छेयण) छेदन है। वसूला आदि से छोलना इसका नाम (तच्छण) तक्षण है। रोम आदि की तरह पत्रादिक का दूर करना इसका नाम (विलुचण)

જીવો તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્ખનન આદિ દુઃખો ભોગવે છે કોદાળી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની ક્રિયાને " उक्खणण " ઉત્ખનન કહે છે વૃક્ષાદિની છાલ ઉતારવી તે ક્રિયાને "उक्कथण" ઉત્કથન કહે છે રાધવાની ક્રિયાને " पयण " પચન કહે છે કૂટવાની–ખાડવાની ક્રિયાને " कोट्टण " કુટ્ટન કહે છે ઘંટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની ક્રિયાને " पीसण " પેષણ કહે છે માર મારવાની ક્રિયાને " पिट्टण " પિટ્ટન કહે છે ભઠ્ઠીમા શેકવાની ક્રિયાને " भज्जण " ભર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ કાઢવાની ક્રિયાને " गालण " ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની ક્રિયાને " आमोडण " આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની ક્રિયાને " सडण " શટન કહે છે જાતે જ બે ટૂકડા થઈ જવાની ક્રિયાને " फुडण " સ્ફુટન કહે છે જાતે તૂટવાની કે બીજા વડે તોડવાની ક્રિયાને " भजण " કહે છે કુહાડી આદિથી કાપવાની ક્રિયાને " छेयण " છેદન કહે છે વાસલા આદિથી છોલવાની ક્રિયાને

पत्रादीनामपनयन, 'पतज्झोडण' प्रान्तझोटन=पत्रपुष्पफलादिपातनम्, 'अगणिदहण' अग्निदहन=अग्नि प्रज्वाल्य चैतान्यादिर्येपा तानि एवम्प्रकाराणि दुःखानि एकेन्द्रियसम्बन्धीनि एकेन्द्रियत्व प्राप्ताः पृथिव्यादिजीवा' प्राप्नुवन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः । तदेव निगमयति-एवम्=उक्तरीत्या ते=नरकात् प्रत्यागताः जीवाः 'भव परपरादुक्खसमणुबद्धा' भवपरम्परादुःखसमनुबद्धा =पञ्चेन्द्रियादि योनिषु जन्मपरम्परैव दुःख तेन समनुबद्धा =सयुक्ता 'पाणाइवाय-निरया' प्राणातिपातनिरताः=प्राणिवधपरायणाः जीवाः ससारे=चतुर्गतिरूपे कीदृशे ? 'वीहणकरे' भयकरे=भयकारणे 'अणतकाल' अनन्तकालम् 'अडति' अटन्ति=सतत भ्रमन्ति ॥ सू० ४५ ॥

पूर्व नरकात्प्रत्यावृत्ताना तिर्यग्योनिषु जन्मभवतीति वर्णितम् । अथ यदि ते कथ-

---

विलुञ्चन है । पत्र, पुष्प, फल आदि का गिराना इसका नाम (पतज्झोडण) प्रान्तझाटन है । अग्नि का जलाना-इसका नाम अग्निदहन है । इत्यादि दुःखों को एकेन्द्रिय पर्याय को प्राप्त हुए पृथिव्यादि जीव भोगते हैं । अब इसका उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं-(एव ते) इस प्रकार नरक से निकले हुए वे जीव (भवपरपरादुक्खसमणुबद्धा) उक्त रीति से पचेन्द्रिय आदि योनियों में जन्मपरम्परारूप दुःखों से युक्त जीव (पाणाइवायनिरया) प्राणिवध करने में तत्पर होकर (वीहणकरे) भयकर भय के कारणभूत इस (ससारे) चतुर्गतिरूप ससार में (अणतकाल) अनत कालतक (अडति) भ्रमण करते हैं ॥सू०४५ ॥

इस प्रकार यहांतक यह समझाया गया है कि नरक से निकले हुए वे जीव तिर्यंच योनि में जन्म लेते हैं। यदि वे कथंचित् मनुष्य पर्याय

"वच्छण" तक्षणु કહે છે રુવાટી આદિ જે રીતે દૂર કરાય છે તે રીતે પત્રાદિકને દૂર કરવાની ક્રિયાને "विलुचण" વિલુચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ આદિને પાડવાની ક્રિયાને 'पतज्झोडण" પ્રાન્તઝાટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે ઇત્યાદિ પ્રકારના દુ ખો એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉત્પન્ન થયેલ પૃથિવ્યાદિ જીવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે

'एव ते' આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા જીવો "भवपर परादुक्खसमणुबद्धा" ઉપરોક્ત પચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપર પરારૂપ દુ ખોથી યુક્ત થાય છે, અને "पाणाइवायनिरया" પ્રણીવધ કરવાને તત્પર થઇને "वीहणकरे" ભય કર-ભયના કારણભૂત આ "ससारे" ચતુર્ગતિરૂપ સ સારમા "अणतकाल" અન તકાળ સુધી "अडति" ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ૦ ૪૫॥

આ રીતે અહીં સુધીમા સમજાવવામા આવ્યુ છે કે નરકમાથી નીકળેલા તે જીવો તિર્ય ચ યોનિમા જન્મ લે છે જો કદાચ તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉત્પન્ન

श्चिन्मनुष्यत्वमपि चेत्प्राप्नुयुस्तथाप्यधन्या एव जायन्ते इत्येतदाह–'जे वियें'त्यादि।

मूलम्–जे विय इह माणुसत्तणं आगया कह त्रि नरगा उव्वट्टिया अधन्ना ते वि य दीसंति पायसो विकयविगलरूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा पंगुला विगल य मूया य मम्मणा य अंधयगा य चक्खुविणिहया संचिल्लया वाहिरोगपीलिय अप्पाउय-सत्थवज्झबाला कुलक्खणुक्किन्नदेहा दुव्वल कुसंघयण-कुप्पमाण कुसंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चं सोक्खपरिवज्जिया असुहदुक्खभागी णरगाओ इह सावसेसकम्मा उव्वट्टिया समाणा ॥ सू० ४६ ॥

टीका–'जेवि य' येऽपि च–ये केचित् प्राणिनः 'नरगा' नरकात् 'उव्वट्टिया' उद्वर्तिता.=मत्याद्वृत्ताः निस्सृता इत्यर्थः 'कहिं वि' कथमपि=महताकष्टेन अनन्तजन्ममरणानामनन्तदुःखमनुभूयेत्यर्थः, मनुष्यलोके 'माणुसत्तणं' मनुष्यत्वं 'आगया' आगता=प्राप्ता. 'तेवि य' तेऽपि च 'अधन्ना' अधन्याः =निन्दनीयाः 'पायसो' प्रायशो=बाहुल्येन, प्रायशो ग्रहणं तीर्थङ्करादि–व्यावृत्त्य

को भी प्राप्त कर लें तो वहा भी वे खराब अवस्था में ही रहते हैं, इस बात को समझाते है–(जे वि य) इत्यादि ।

टीकार्थ–(जे वि य) जो कितनेक प्राणी (नरगा) नरक से (उव्वट्टिया) निकलकर (कहिं वि) कथमपि–कुछ, पुण्य के उदय से (इह) इस मनुष्यलोक मे (माणुसत्तण) मनुष्य पर्याय को (आगया) प्राप्त कर लेते हैं (ते वि पायसो अधन्ना) प्रायः करके वे यहां (पायसो) शब्द तीर्थंकर आदि की निवृत्ति के लिये आया है । (अधन्ना) निंदनीय होते

થાય તો ત્યાં તે પણ તેઓ ખરાબ હાલતમાં જ રહે છે, તે વાત હવે સૂત્રકાર સમજાવે છે—" जे वि य " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ— ' जे वि य " જે કેટલાક પ્રાણીઓ " नरगा " નરકમાંથી " उव्वट्टिया " નીકળીને " कहिं वि " થોડા પુન્યના ઉદયથી " इह " આ મનુષ્ય લોકમાં " माणुसत्तण " મનુષ્ય પર્યાય " आगया " પ્રાપ્ત કરે છે "ते वि पायसो" પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા " अधन्ना " નિંદનીય હોય છે " पायसो " શબ્દ તીર્થંકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂકયો છે "–विकय

थम्, 'विकयविगलरूवा' विकृत विकलरूपाः = विकृत–बीभत्स विकल=हीन च रूपम्=आकारो येषां ते तथा भूताः 'दीसंति' दृश्यन्ते=दृष्टिगोचरा भवन्ति। तदेव वर्ण्यते–'खुज्जा' कुब्जाः 'कूबडा' इति भाषा प्रसिद्धाः, 'वडभा' एक पार्श्वहीनाः = वक्रोपरिभागाः, यद्वा–विकृतरूपेण बहिर्निस्सृतहृदयोदरभागाः, 'वामणा' वामनाः=ह्रस्वकायाः 'बहिरा' बधिराः=श्रवणशक्तिहीनाः 'काणा' काणा=एकाक्षाः 'कुंटा' कुण्टाः=विकृतहस्ताः 'टूटा' इति प्रसिद्धाः 'पगुला' 'पङ्गवः=जङ्घाहीना 'पागला' इति प्रसिद्धाः', 'विगला' विकला· = हीनाङ्गोपाङ्गाः 'मूया' मूकाः=वचनशक्तिहीनाः, 'मम्मणा' मन्मनाः=स्खलद्वचनाः, 'अधयगा' अन्धकाः=जन्मान्धाः, 'चक्खुविणिहया' चक्षुर्विनिहता =विनिहतचक्षुषः=

हैं (विकय विगलरूवा दीसंति) उनका रूप विकृत और विकल–हीन होता है। इसी बात को विशेषरूप से सूत्रकार समझाते हैं (खुज्जा) उनके शरीर में पीठ पर कुबड निकली रहती है। (वडभा) वे एक पार्श्वसे हीन होते हैं, अथवा उनके हृदय और उदरका भाग विकृतरूप से बाहिर निकला हुआ रहता है। (वामणा) शरीर उनका बोना होता है। (बहिरा) उनकी श्रवणशक्ति नष्ट हो जाती है (काणा) वे आखें से काने होते हे। (कुंटा) हाथ उनका एक ठीक रहता है दूसरा टूट जाता है इससे वे टूटा कहलाते हैं, (पगुला) पागले–जघाहीन (विगला य) अग और उपांगों से वे विहीन होते हैं, (मूया) मूगे होते हैं–वचनशक्ति से वीहीन होते हे, (मम्मणा) मम्मण होते हे–बोलते समय वे अटकते हैं (अधयगा) जन्माध होते हैं–उनकी जन्मतः दोनों आखे फूटी रहती हैं, (चक्खुविणिहया) चक्खुविनिहत होते हैं–उनकी

विगलरूवा दीसंति" તેમનુ રૂપ વિકૃત અને વિકલ–હીન હોય છે એજ વાતને સૂત્રકાર વિસ્તારથી સમજાવે છે—"खुज्जा" તેમના શરીરે પીઠ પર ખૂધ નીકળી હોય છે, "वडभा" તેઓ એક પડખે ખોડવાળા હોય છે, અથવા તેમના હૃદય અને પેટનો ભાગ વિકૃત રીતે બહાર પડતો હોય છે "वामणा" તેઓ વામનરૂપ ઠીંગણા હોય છે, "वहिरा" તેમની શ્રવણ શક્તિ નાશ પામે છે–તેઓ બહેરા થાય છે 'काणा" તેઓ આખે કાણા હોય છે "कुंटा" તેમનો એક હાથ સારો હોય છે પણ બીજો હાથ તૂટી જવાને કારણે તેઓ ટૂટા કહેવાય છે "पगुला" પાંગળા–પગે લૂલા "विगला य" અંગ અને ઉપાંગોની ખોડવાળા હોય છે, "मूया" મૂંગા હોય છે–બોલવાની શક્તિ વિનાના હોય છે "मम्मणा" તોતડા હોય છે–બોલતા જીભ અટકે તેવા હોય છે

श्चिन्मनुष्यत्वमपि चेत्प्राप्नुयुस्तथाप्यधन्या एव जायन्ते इत्येतदाह-'जे वि ये'त्यादि।

मूलम्-जे विय इह माणुसत्तणं आगया कह वि नरगा उव्वट्टिया अधन्ना ते वि य दीसंति पायसो विकयविगलरूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा पंगुला विगल य मूया य मम्मणा य अंधयगा य चक्खुविणिहया संचिल्लया वाहिरोगपीलिय अप्पाउय-सत्थवज्झवाला कुलक्खणुक्किन्नदेहा दुब्बल कुसंघयण-कुप्पमाण कुसंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चं सोक्खपरिवज्जिया असुहदुक्खभागी णरगाओ इह सावसेसकम्मा उव्वट्टिया समाणा ॥ सू० ४६ ॥

टीका—'जेवि य' येऽपि च-ये केचित् प्राणिन 'नरगा' नरकात् 'उव्वट्टिया' उद्वर्तिता.=मत्यावृत्ताः निस्सृता इत्यर्थः 'कहिं वि' कथमपि=महताकष्टेन अनन्तजन्ममरणानामनन्तदुःखमनुभूयेत्यर्थः, मनुष्यलोके 'माणुसत्तण' मनुष्यत्व 'आगया' आगता'=प्राप्ताः 'तेवि य' तेऽपि च 'अधन्ना' अधन्याः =निन्दनीयाः 'पायसो' प्रायशो=बाहुल्येन, प्रायशो ग्रहण तीर्थङ्करादि-व्यावृत्त्य

को भी प्राप्त कर लें तो वहा भी वे खराब अवस्था में ही रहते हैं, इस बात को समझाते हे-(जे वि य) इत्यादि ।

टीकार्थ-(जे वि य) जो कितनेक प्राणी (नरगा) नरक से (उव्वट्टिया) निकलकर (कहिं वि) कथमपि-कुछ, पुण्य के उदय से (इह) इस मनुष्यलोक में (मानुसत्तण) मनुष्य पर्याय को (आगया) प्राप्त कर लेते हैं (ते वि पायसो अधन्ना) प्रायः करके वे यहां (पायसो) शब्द तीर्थंकर आदि की निवृत्ति के लिये आया है । (अधन्ना) निंदनीय होते

થાય તો ત્યા તે પણ તેઓ ખરાબ હાલતમા જ રહે છે, તે વાત હવે સૂત્ર કાર સમજાવે છે—" जे वि य " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ— ' जे वि य " જે કેટલાક પ્રાણીઓ " नरगा " નરકમાથી " उव्वट्टिया " નીકળીને " कहिं वि " થોડા પુન્યના ઉદયથી " इह " આ મનુષ્ય લોકમા " माणुसत्तण " મનુષ્ય પર્યાય " आगया " પ્રાપ્ત કરે છે "ते वि पायसो" પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા " अधन्ना " નિંદનીય હોય છે " पायसो " શબ્દ તીર્થંકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂકયો છે " विकय

वर्जिता वा, 'हीणा' हीनाः=नीचजातिकुला 'हीणसत्ता' हीनसत्त्वाः=उत्साह वर्जिताः, भीरवो वा, 'निच्च सोक्खपरिवज्जिया' नित्यसौख्यपरिवर्जिताः= सततदुःखाकुलाः, 'असुहदुक्खभागी' अशुभदुःखभागिनः=अशुभानुबन्धिदुःख सम्पन्नाः प्रान्ते दृश्यन्त इति योगः, एवम्भूता के ? इत्याह—ये 'नरगाओ' नरकात् 'इह' इह–मर्त्यलोके 'उव्वट्टा समाणा' उद्वृत्ताः=आगताः सन्तः 'सावसेस-कम्मा' सावशेषकर्माण =अवशिष्टाशुभकर्माणस्ते ॥ सू० ४६ ॥

अथोपसंहरन्नाह—'एव' इत्यादि ।

मूलम्—एव णरग तिरक्खजोणि कुमाणुसत्त य हिंडमाणा पावंति अणंताइं दुक्खाइ पावकारी । एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइयो पारलोइयो अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चई णय अवेदइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति एवमाहंसु नायकुल नंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसीय पाणवहस्स

अभाव रहता है । (हीणा) इनका कुल एवं जाति ये दोनों ही हीन होते हैं । (हीणसत्ता) उत्साह शक्ति से ये वर्जित होते हैं अथवा भीरु –डरपोक–प्रकृति के होते हैं । (निच्च सोक्खपरिवज्जिया) सुखों से नित्य वर्जित–निरन्तर दुःखी रहते हैं । (असुहदुक्खभागी) इस प्रकार इन अशुभानुबंधी दुःखों से वे सम्पन्न (दीसंति) देखे जाते हैं । जो पापी जीव (नरगाओ) नरक से (उव्वट्टिया समाणा) निकल कर (इहं) इस मनुष्य लोक मे (सावसेसकम्मा) पाप कर्मों के भोगने पर भी अव शिष्ट अशुभ कर्म वाले हो कर आते हैं ॥ सू० ४६ ॥

હોય છે, અથવા તેમનામા દાન દેવાની શક્તિ હોતી નથી "हीणा" તેમનુ કુળ અને જાતિ બન્ને હીન હોય છે "हीणसत्ता" તેઓ ઉત્સાહ વિનાના હોય છે અથવા ભીરુ ડરપોક સ્વભાવના હોય છે 'निच्च सोक्खपरिवज्जिया" હમેશા સુખથી રહિત દુખી હોય છે "असुहदुक्खभागी" આ રીતે તેઓ અશુભાનુબધી દુખોથી યુક્ત "दीसंति" દેખાય છે પાપી જીવ "नरगाओ" નરકમાથી "उव्वट्टिया समाणा" નીકળીને "इह" આ મનુષ્યલોકમા "साव-सेसकम्मा" પાપ કર્મોના અશુભ ફળો ભોગવવા છતા પણ બાકી રહેલ અશુભ કર્મ સાથે લઈને આવે છે ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

रोगादिभिर्विकृतनेत्राः, 'सचिल्लिया' सचिल्लकाः=चिपटनेत्राः 'वाहिरोगपीलिय' व्याधिरोगपीडिताः=व्याधिभिः=कुष्ठादिभिः, रोगैश्च=कासश्वासादिभिः पीडिताः 'अप्पाउ य' अल्पायुष्काः 'सत्थवज्झ' शस्त्रवध्याः=शस्त्रप्रयोगेण मरणशीलाः, बालाः=बुद्धिरहिताः, 'कुलक्खणुकिन्नदेहा' कुलक्षणोत्कीर्णदेहाः=कुत्सितलक्षणैर्व्याप्तशरीराः-शुभरेखादिवर्जिता इत्यर्थः, 'दुब्बल' दुर्बलाः=बलहीनाः. 'कुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया' कुसंहननकुप्रमाणकुसंस्थिताः - कुसंहननाः = कुत्सितसंहननं=अस्थिरचनाविशेषो येषां ते तथा, कुप्रमाणा=कुत्सितं शरीरस्य प्रमाणम्-अतिलम्बातिह्रस्वादिलक्षणं येषां ते तथा, कुसंस्थिताश्च=कुत्सितसंस्थानाः एतेषां द्वन्द्वः 'कुरूवा' कुरूपाः=रूपवर्जिताः 'किविणा' कृपणाः=दरिद्राः, दानशक्ति-

आखों में कोई न कोई खराबी रहती है, (सचिल्लिया) सचिल्लक होते है उनके नेत्र चपटे होते हैं, (वाहिरोगपीलिय) व्याधि और रोग से पीडित रहते हैं-वे कुष्ठ आदि व्याधियों से, कास श्वास आदि रोगों से सदा पीडित रहते हैं, (अप्पाउय) अल्पायुवाले होते हैं, (सत्थवज्झ) शस्त्र प्रयोग से इनकी मृत्यु होती है, (बाला) बुद्धि रहित होते हैं, (कुलक्खणुकिन्नदेहा) खोटे २ लक्षणों वाले होते हैं, अर्थात्-शुभ रेखाओं से वर्जित होते हैं, (दुब्बल) दुर्बल-बल हीन होते हैं, (कुसंघयण) इनका संहनन-अस्थियों की रचना ठीक ठीक नहीं होता है, (कुप्पमाण) शरीर का प्रमाण भी योग्य नही होता है, या तो वह अत्यंत लंबा होता है या अति ह्रस्व होता है। (कुसंठिया) संस्थान -आकार भी कुत्सित होता है। (कुरूवा) सुन्दर रूप से रहित होते हैं। (किविण्णा) दरिद्र होते हैं, अथवा-दान देने की शक्ति का इनके यहां

"अंधयगा" જન્માંધ હોય છે જન્મથી જ તેમની આંખો ફૂટી ગઈ હોય છે, "चक्खुविणिहया" ચક્ષુ વિનિહત હોય છે, તેમની આંખોમાં કોઈ ને કોઈ ખામી રહે છે, "सचल्लिया" સચિલ્લક હોય છે તેમના નેત્ર ચપટાં હોય છે, "वाहिरोगपीलिय" વ્યાધિ અને રોગથી પીડાયા કરે છે-તેઓ કોઢ આદિ વ્યાધિઓથી, ખાંસી, દમ આદિ રોગોથી પીડાયા કરે છે "अप्पाउय" ટૂંકા આયુષ્યવાળા હોય છે, "सत्थवज्झ" શસ્ત્રપ્રયોગથી તેમનું મૃત્યુ થાય છે "बाला" બુદ્ધિ વિનાના હોય છે, "कुलक्खणुकिन्नदेहा" ખરાબ લક્ષણોવાળા હોય છે, એટલે કે સારી રેખાઓથી રહિત હોય છે, "दुब्बल" દુર્બળ-બળ હીન હોય છે, "कुसंघयण" તેમનું સંહનન-અસ્થિઓની રચના-બરાબર હોતી નથી, "कुप्पमाण" શરીર પ્રમાણસરનું હોતું નથી-કાં તો તે અતિશય લાંબા હોય છે કે અતિ નીચાં હોય છે "कुसंठिया" સંસ્થાન-આકાર દેખાવ પણ બેડોળ હોય છે "कुरूवा" સુંદર રૂપથી રહિત હોય છે '...

स कीदृश ? इत्याह–'इहलोइओ' ऐहलौकिकः=मनुष्यलोकमाश्रित्य, 'पारलोइओ' पारलौकिकः–नरकनिगोदादिकगत्याद्याश्रित्य 'अप्पसुहो' कुत्सितेन्द्रियभोगे सुखजनकत्वाद् अल्पसुखः, वा 'बहुदुक्खो' बहुदुःख'=नरकादिदु खकारणत्वाद् दुःखबहुल', 'महब्भयो' महाभयः=महाभयस्वरूपः, तथा 'बहुरयप्पगाढो' बहु-रजः प्रगाढः=अशुभकर्मबहुलः, दारुणो' दारुणः=भीषणः नरकादिभयजनकत्वात् 'कक्कसो' कर्कशः=कठोरः=दुर्भेद्यत्वात् 'असाओ असातः=असातवेदनीयरूप त्वात्, इत्येवंविधः फलविपाक', 'वाससहस्सेहिं' वर्षसहस्रैः=अनेक सहस्रवर्ष-भोगे =पल्योपमसागरोपमादिलक्षणैः 'मुच्चई' मुच्यते=क्षीयते । तदेतद्व्यतिरेक मुखेनाह–' नये ' ति–' अवेदइत्ता ' अवेदयित्वा=त फलविपाकमनुपभुज्य ' नय '

विपाक–परिणाम (इहलोइओ) ऐहलौकिक–मनुष्यलोककी अपेक्षा से (अप्पसुहो) कुत्सित इन्द्रियों के भोग जनित सुख का उत्पादक होने से अल्पसुख वाला, तथा (पारलोइओ) पारलौकिक–नरकादि गति की अपेक्षासे (बहुदुक्खो) नरकादि गति कारण होनेसे बहुत दुःख वाला, (महब्भओ) महाभयवाला, तथा (बहुरयप्पगाढो) बहुत अशुभकर्मों वाला है। यह (दारुणो) नरकादिगति का भयजनक होने से भयकर (कक्कसो) दुर्भेद्य होने से कर्कश–कठोर है। (असाओ) अशाता वेद-नीय रूप होने से स्वय अशातारूप है। ऐसा यह प्राणवधपरिणाम (वास-सहस्सेहिं मुच्चई) पल्योपम तथा सागरोपमादिरूप वर्षसहस्रों मे भोगते २ यह छूटता है–नष्ट होता है। इसी बात को अब व्यतिरेक से कहते हैं कि–(अवेयइत्ता न य हु मोक्खो अत्थि) (अवेयइत्ता) इसका फल

ફળવિપાક પરિણામ " इहलोइओ " આ લોકની મનુષ્યલોકની અપેક્ષાએ " अप्पसुहो " કુત્સિત ઇન્દ્રિયોના ભોગજનિત સુખનુ ઉત્પાદક હોવાથી અલ્પ સુખવાળુ, તથા " पारलोइओ " પરલોકની–નરકાદિ ગતિની અપેક્ષાએ " बहु-दुक्खो " નરકાદિ ગતિના કારણરૂપ હોવાથી બહુ જ દુ ખદાયી, " महब्भओ " મહા ભયવાળુ તથા "बहुरयप्पगाढो" અત્ય ત અશુભ કર્મોવાળુ છે તે "दारुणो" નરકાદિ ગતિનો ભય પેદા કરનાર હોવાથી ભયકર છે " कक्कसो " દુર્ભેદ્ય હોવાને કારણે કર્કશ કઠોર છે " असाओ " અશાતા–વેદનીય રૂપ હોવાથી પોતે અશાતારૂપ છે એવુ તે પ્રાણવધ પરિણામ " वाससहस्सेहिं मुच्चई " પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ આદિરૂપ હજારો વર્ષ સુધી ભોગવતા ભોગવતા છૂટે છે–નષ્ટ થાય છે એ જ વાતને હવે બીજી રીતે પ્રગટ કરે છે–"अवेयइत्ता न ... નો ફલવિપાક ભોગવ્યા વિના જીવનો

फलविवागं । एसो सो पाणवहो चंडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ अणारिओ, निग्घिणो, निस्ससो महब्भओ, पइभओ अइभओ, वीहणओ, तासणओ, अणज्जओ, उव्वेयणओ य-णिरवयक्खो, णिद्धम्मो, णिप्पिवासो, निक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो मोहमहब्भयपवड्ढओ मरणवेमणस्सो त्तिवेमि ॥ सू० ४७ ॥

॥ पढम अहम्मदारं समत्त ॥ १ ॥

टीका—'एव' उक्तप्रकारेण 'णरग' 'नरक, मनुष्यलोके 'तिरिक्खजोणिं' तिर्यग्योनिं=पञ्चेन्द्रियादिभव 'कुमाणुसत्त' कुमानुषत्व=कुब्जवामनादि विकृताङ्गोपाङ्गरूपा मनुष्ययोनिं च 'हिंडमाणा' हिण्डमाना =भ्रमन्तः 'पावकारी' पापकारिणः=प्राणातिपातकारकाः जीवाः 'अणताइ' अनन्तानि 'दुक्खाइ' दुःखानि 'पावति' प्राप्नुवन्ति । 'एसो सो' एष सः प्रत्यक्ष दृश्यमानः 'पाणवहस्स' प्राणवधस्य=प्राणातिपातस्य 'फलविवागो' फलविपाकः=परिणामः भवति ।

अब उपसहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं—'एव णरग तिरिक्खजोणिं' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एव) इस उक्त प्रकार से जो (णरग) नरक मे, वहा से मनुष्यलोक में आने पर (तिरिक्खजोणिं) तिर्यञ्च योनि मे एवं (कुमाणुसत्त) कुब्ज, वामन आदि रूप से विकृत अगोपांगवाली मनुष्ययोनिमें (हिंडमाणा) भ्रमण करते हुए (पावकारी) प्राणातिपातरूप पाप को करने वाले जीव (अणताइ दुक्खाइ) अनत दुःखों को (पावे ति) पाते हैं । (एसो सो) प्रत्यक्ष में दृष्टिभूत बना हुआ यह (पाणवहस्स) प्राण वधरूप हिसा का (फलविवागो) परिणाम है। प्राणवध का यह (फल-

---

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે-" एव णरग तिरिक्खजोणिं " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" एव " ઉપરોક્ત પ્રકારે " णरग " નરકમા, ત્યાથી મનુષ્યલોકમા આવતા " तिरिक्खजोणिं " તિર્યગ યોનિમા અને " कुमाणुसत्त " કુબ્જ, વામન આદિ રૂપે વિકૃત અગોપાગવાળી મનુષ્ય યોનિમા " हिंडमाणा " ભ્રમણ કરતા " पावकारी " પ્રાણાતિપાતરૂપ પાપ કરનાર જીવો " अणताइ दुक्खाइ " અનત દુખો " पावे ति " ભોગવે છે " एसो सो " પ્રત્યક્ષ દૃષ્ટિગોચર થતુ " पाणवहस्स " પ્રાણવધરૂપ હિંસાનુ " फलविवागो " તે પરિણામ છે પ્રાણવધનો આ

निरूपणेनैव तदन्तर्गतफल विपाकस्यापि तदुक्तत्वसिद्धौ पुनः पृथक् तस्य महा वीरोक्तत्वाभिधान माणिवधस्यैकान्तिका शुभफलदायकत्वात्तस्यात्यन्तहेयत्वद्योत-नार्थम्। 'एसो सो' एप स.=पूर्वोपदर्शित स्वरूपः 'पाणवहो' माणवध. 'चडो' चण्डः=क्रोधजनकत्वात्, 'रुद्दो' रौद्र =रौद्ररसप्रवर्तितत्वात्, 'खुद्द' क्षुद्रः= अधमजनाचरितत्वात् 'साहसिओ' साहसिकः=असमीक्ष्यकारिजनप्रवर्त्तितत्वात्,

अइभओ घीहणओ तासणओ अणज्जओ णिरवयक्खो, निद्धम्मो, निप्पिवासो, निक्कलुणो, निरयवासगमणनिधणो, मोहमहब्भयपयट्टओ मरणवेमणस्सो, त्ति बेमि)

शका—जब सूत्रकार ने ईस अध्ययन में महाविरोक्तना निरूपित की है तब यह बात तो स्वतः सिद्ध हो ही जाती है कि तदन्तर्गत फल विपाक भी उन्हीं द्वारा कहा गया है, फिर क्या बात है जो इसमें पृथक् रूप से महावीरोक्तता प्रतिपादित की जा रही है ?

उत्तर-शंका ठीक है, परतु इसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि पुनः इसमें जो तदुक्तता प्रतिपादित की है उससे उसमें-प्राणिवध में-ऐकान्तिक अशुभफलदायकता होने से अत्यन्त हेयता प्रकट की गई है। यही बात सूत्रकार इन आगे के पदों द्वारा स्पष्ट करते हैं-(एसो सो) पूर्वोपदर्शित स्वरूप वाला यह (पाणवहो) प्राणवध-(चडो) क्रोधजनक होने से चण्ड है, (रुद्दो) रौद्र रस द्वारा प्रवर्तित होने से रौद्र है, (खुद्दो) अधमजनों द्वारा आचरित होने से क्षुद्र है. (साहसिओ)

घीहणओ तासणओ अणज्जओ णिरवयक्खो, निद्धम्मो, निप्पिवासो, निक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो, मोहमहब्भयपयट्टओ मरणवेमणस्सो त्तिबेमि "

શકા—જ્યારે સૂત્રકારે આ અધ્યયનમા મહાવીરોક્તતાનુ નિરૂપણુ કર્યું છે ત્યારે તે વાત તો આપોઆપ સિદ્ધ થઈ જ જાય છે કે તેમા આવતો ફલ-વિપાક પણ તેમના દ્વારા કહેવાયેલ છે, તો શા કારણે તેમા અલગ રીતે મહાવીરોક્તતાનુ પ્રતિપાદન કરવામા આવેલ છે ?

ઉત્તર-શકા બરાબર છે પણ તેનો ઉદ્દેશ કેવળ એટલો જ છે કે ફરીથી તેમા જે તેમના દ્વારા કથિત હોવાનુ પ્રતિપાદન કર્યું છે તેથી તેમા પ્રાણી વધમા એકાન્તિક અશુભ ફલદાયકતા હોવાથી અત્યત હેયતા પ્રગટ કરાઇ છે એ જ વાત સૂત્રકાર આગળ આવતા આ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-"एसो सो" આગળ દર્શાવવામા આવેલ સ્વરૂપવાળો તે "पाणवहो" પ્રાણુવધ "चण्डो" ક્રોધજનક હોવાથી ચડ છે, "रुद्दो" રૌદ્રરસ દ્વારા પ્રવર્તિત હોવાથી રૌદ્ર છે, "खुद्दो' અધમ લોકો દ્વારા આચરિત હોવાને કારણે ક્ષુદ્ર છે, "साहसिओ"

न च–नैव ' हु ' निश्चयेन ' मोक्खो ' मोक्ष 'अत्थि' अस्ति, ' त्ति ' इति समाप्ति सूचकः। तस्य फलविपाकस्योपभोग विना जीवस्य मोक्षो न भवतीत्यर्थः।

अथ न हि येन केनापि प्रतिपादितोऽर्थ श्रद्धेयवचनो भवति प्रामाण्यसन्देहादित्याशङ्कानिवर्तयितुमस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रामाण्य निरूपणाय प्रमाणयन्नाह–' एवमाहसु ' इत्यादि, एवम्=उक्तरीत्या ' आहसु ' ऊचुः–अतीतावतीर्थङ्करगणधरादयः। तथा ' नायकुलनदणो ' ज्ञातकुलनन्दनः= ज्ञातकुल=सिद्धार्थकुल, तस्य नन्दनः=आनन्दकारक ' महप्पा ' महात्मा=परमात्मरूप, ' जिणो ' जिनः=रागाद्यन्तरङ्गशत्रुजेता, वीरवरणामधेज्जो ' वीरवरनामधेय.=प्रशस्तनामा भगवान् महावीरः, ' पाणवहस्स ' प्राणवधस्य ' फलविवाग ' फलविपाक ' कहेसीय ' कथितवान्=यथाऽतीता जिनाः कथितवन्तस्तथैवाय भगवान् महावीरोऽपि प्रतिपादयतिस्मेत्यर्थः। अस्याध्ययनस्य महावीरोक्तत्व

विपाक भोगे विना जीवका (न य हु मोक्खोअत्थि) कभी भी छुटकारा नहीं हो सकता है। इस कथन को प्रमाणभूत सिद्ध करने के लिय सूत्रकार इसमें साक्षात् प्रमाणभूत परमात्मा द्वारा प्रतिपादितता सिद्ध करने के लिये कहते हैं कि ऐसा जो मैंने कहा है वह अपनी ओर से नहीं कहा है, किन्तु (एवमाहसु) अतीत तीर्थंकर एव गणधर आदि देवों ने ऐसा कहा है तथा (नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवर णामधेज्जो पाणवहस्स फलविवाग कहेसीय) ज्ञातकुलनदन–सिद्धार्थ के कुल को आनद देने वाले–परमात्मरूप, जिन–रागादिक अतरग शत्रु के विजेता प्रशस्तनाम वाले श्री भगवान् महावीर ने भी प्राणवध का फल ऐसा ही अतीत तीर्थंकरों के कथनानुसार कहा है। (एसो सो पाणवहो चडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो निस्ससो महब्भओ पइभओ

" न य हु मोक्खो अत्थि " કદી પણ છુટકારો થઈ શકતો નથી, આ કથનને પ્રમાણભૂત સિદ્ધ કરવાને માટે સૂત્રકાર તેના સાક્ષાત્ પ્રમાણરૂપ પરમાત્માદ્વારા તેની પ્રતિપાદિતતા સિદ્ધ કરવાને માટે કહે છે કે—એવુ મે જે કહ્યુ છે તે મારી તરફથી કહ્યુ નથી પણ " एवमोहसु " અતીત તીર્થંકર અને ગણધર આદિ દેવોએ એવુ કહેલ છે, તથા " नायकुलनन्दणो महप्पा जिणो उ वीरवर णामधेज्जो पाणवहस्स फलविवागं कहेसीय " જ્ઞાતકુળનદન–સિદ્ધાર્થના કુળને આનદ દેનાર પરમાત્મારૂપ, જિન–રાગ આદિ આતરિક શત્રુઓ પર વિજય મેળવનાર પ્રશસ્ત નામવાળા શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ પ્રાણવધનુ ફળ એવુ જ અતીત તીર્થંકરોના કથનાનુસાર જ કહેલ છે–" एसो सो पाणवहो चण्डो रुद्दो खुद्दो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो निस्ससो महब्भओ पइभओ

निष्पिपासः=परजीवनस्नेहवर्जितत्वात्, 'निक्कलुणो' निष्करुणः=दयाभाववर्जितत्वात् 'निरयवासगमणनिधणो' निरयवासगमननिधनः-निरयावासः=नरकावासः, तत्र गमनमेव निधनं=पर्यवसानम्-अन्तिमफलं यस्य स तथा, नरकप्रापकत्वात्, 'मोह-महब्भयपयट्टओ' मोहमहाभयप्रवर्त्तकः=मोहः=अज्ञानं स एव महाभयं=महाभय-हेतुत्वात्, तस्य प्रवर्त्तकः, 'मरणवेमणस्सो' मरणवैमनस्यः = मरणेन=मृत्युरूप कारणेन प्राणिनां वैमनस्यं = दैन्यं यस्मात्स तथा दीनमनः कारित्वात्, इत्येवं लक्षणः प्राणवधः=ज्ञपरिज्ञया तत्स्वरूपं विज्ञाय प्रत्याख्यानपरिज्ञया सर्वथा परि-त्याज्य इति भावः। श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिनं कथयति—'त्तिबेमि'

से रहित होने के कारण यह निरपेक्षरूप है। (निद्धम्मो) श्रुताचारित्र रूप धर्म से रहित होने के कारण यह निर्धर्मरूप है। (निप्पिवासो) इस में दूसरों के जीवन के प्रति स्नेहभाव नहीं रहता है इसलिये यह निष्पि-पासरूप है। (निक्कलुणो) दयाभाव का सर्वथा इसमें अभाव रहता है इसलिये यह निष्करूणरूप है। (निरयवासगमणनिधणो) नरक गमन ही इसका अन्तिमफल है, इसलिये यह निरयवासगमननिधनरूप है। (मोह महब्भयपयट्टओ) मोहरूप-महाभय का यह प्रवर्त्तक है इसलिये यह मोह महाभय प्रवर्त्तकरूप है। (मरणवेमणस्सो) मृत्युरूप कारण से प्राणियो को इससे दैन्यभाव होता है इस लिये यह मरणवैमनस्यरूप है। इसलिये इस प्राणवध का ज्ञ परिज्ञा से स्वरूप जानकर प्रत्याख्यानपरिज्ञा से सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये। इस प्रकार कह कर अब सुधर्मा-

---

હોવાને કારણે તે નિરપેક્ષરૂપ છે "निद्धम्मो" શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મથી રહિત હોવાને કારણે નિર્ધર્મરૂપ છે "निप्पिवासो" તેમા અન્યના જીવન પ્રત્યે સ્નેહભાવ રહેતો નથી તેથી તે નિષ્પિપાસરૂપ છે "निक्कलुणो" તેમા દયાભાવનો તદ્દન અભાવ રહે છે તેથી તે નિષ્કરુણરૂપ છે "निरयवासगमणनिधणो" નરક ગમન જ તેનુ અંતિમ ફળ હોય છે, તે કારણે તે નિરયવાસગમનનિધનરૂપ છે "मोहमहब्भयपयट्टओ" મોહરૂપ મહાભયનો તે પ્રવર્તક છે, તે કારણે તે મોહ મહાભય પ્રવર્તક રૂપ છે "मरणवेमणस्सो" મરણરૂપ કારણથી પ્રાણિઓમા તેનાથી દૈન્યભાવ ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તે મરણવૈમનસ્ય રૂપ છે તે કારણે તે પ્રાણવધનુ જ્ઞ પરિજ્ઞાથી સ્વરૂપ જાણીને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાથી તેનો સર્વથા પરિત્યાગ કરવો જોઇએ આ પ્રમાણે કહીને હવે સુધર્માસ્વામી જંબૂસ્વામીને

'अणारिओ' अनार्यः=म्लेच्छजनसमाचरितत्वात्, 'निग्घिणो' निर्घृणः= अविद्यमाना घृणा=पापजुगुप्सा यस्मिन् स तथा निर्घोजनसमाचरितत्वात्प्राणवधोऽपि तथा, 'निस्ससो' नृशंस =क्रूरजनाचरितत्वात् 'महब्भओ' महाभयः= महाभयोत्पादकत्वात्, पइभओ' प्रतिभयः=सर्वप्राणिनां भयहेतुत्वात्, 'अइभओ' अतिभयः-मरणान्तभयजनकत्वात्। 'बीहणओ' भापनकः-भयोत्पादकत्वाद्, 'तासणओ' त्रासनक =अकस्मात्-हृदयोद्वेगजनकत्वात्, 'अणज्जओ' अन्याय्यः= न्यायादनपेतः=युक्तः न्याय्य., न न्याय्यः अन्याय्यः,न्यायवर्जितत्वात्, 'उव्वेयणओ' उद्वेगजनक. मर्मपीडाकारकत्वात् 'णिरवयक्खो' निरपेक्ष =निर्गता अपेक्षा=परप्राणरक्षविषया यत्र स तथा, 'निद्धम्मो' निर्धर्म =श्रुतचारित्र धर्मरहितत्वात्, 'निप्पिवासो'

असमीक्ष्यकारी जनों द्वारा किया गया होने से साहसिक है, (अणारिओ) म्लेच्छजनों द्वारा समाचरित होने के कारण अनार्य है। (निग्घिणो) इसे करने वाले मनुष्य को पाप के प्रति घृणा नहीं रहती है अतः यह प्राणवध भी निर्घणरूप है (निस्ससो) क्रूरजन इसे करते रहते हैं इस लिये यह नृशंसरूप है। (महब्भओ) इसे करते समय करनेवालेको महान् भयका कारण होता है इसलिये यह महाभयरूप है। (पइभओ) समस्त प्राणियों को भय का हेतु होने से यह प्रतिभयरूप है। (अइभओ) मरणान्तभय का जनक होने से यह अतिभयरूप है। (बीहणओ) भयका उत्पादक होने से यह भयानक है। (तासणओ) अकस्मात् हृदय में उद्वेग का जनक होने से त्रासनकरूप है (अणज्जओ) न्यायवर्जित होने से यह अन्यायरूप है। (उव्वेयणओ) जीवों को उद्वेग जनक होने से यह उद्वेजकरूप है (णिरवयक्खो) पर प्राणियों की रक्षा करने की अपेक्षा

અસમીક્ષ્યકારી લોકો દ્વારા કરાતો હોવાથી સાહસિક છે, "अणारिओ" મ્લેચ્છ લોકો દ્વારા આચરિત હોવાથી અનાર્ય છે "निग्घिणो" પ્રાણવધ કરનાર મનુષ્યને પાપ પ્રત્યે ઘૃણા થતી નથી, તેથી તે પ્રાણવધ પણ નિઘૃણરૂપ છે, "निस्ससो" ક્રૂર લોકો તેનુ સેવન કરે છે તેથી તે નૃશંસરૂપ છે, "महब्भओ" તે કરતી વખતે કરનારને મહાન્ ભયનુ કારણ તે બને છે તેથી તે મહા ભયરૂપ છે "पइभओ" સઘળા પ્રાણીઓને તે ભયના કારણરૂપ હોવાથી પ્રતિભયરૂપ છે 'अइभओ" મૃત્યુના ભયનો જનક હોવાથી તે અતિ ભયરૂપ છે "बीहणओ" ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી તે ભયાનક છે "तासणओ" હૃદયમા અકસ્માત ઉદ્વેગનો જનક હોવાથી તે ત્રાસનકરૂપ છે, "अणज्जओ" ન્યાયરહિત હોવાથી તે અન્યાય રૂપ છે, "उव्वेयणओ" જીવોમા ઉદ્વેગ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી તે ઉદ્વેગકરૂપ રૂપ છે "णिरवयक्खो" પર પ્રાણીઓનુ રક્ષણ કરવાની અપેક્ષાથી રહિત

" सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं।
छउमत्थाण दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सूइय इइणा ॥१॥" इति।

जो सुखाभिलापी प्राणी हैं उनका कर्त्तव्य है कि वे श्रुतज्ञान का अविनय छोड़ें। छद्मस्थों की दृष्टि अपूर्ण रहती है यही बात यहां 'इति' इस पद से सूचित की है ॥१॥ ॥सू०४७॥

॥ प्रथम आस्रव—' अधर्म ' द्वार समाप्त ॥

" सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं।
छउमत्थाणं दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सूइय इइणा ॥१॥ इति ॥

સુખાભિલાપી જીવોનુ કર્તવ્ય છે કે તેમણે શ્રુતજ્ઞાનનો અવિનય કરવાનુ છોડી દેવુ જોઇએ છદ્મસ્થોની દૃષ્ટિ અપૂર્ણ રહે છે, એજ વાત 'इति" પદ દ્વારા અહીં સૂચિત કરવામા આવી છે ॥ સૂ ૪૭ ॥

આ રીતે હિંસાદિ પંચાસ્રવ દ્વારમા પ્રાણવધ નામનુ
પ્રથમ દ્વાર સમાપ્ત થયું.

इति ब्रवीमि-हे जम्बूः ! इति=पूर्वोक्तं प्राणिवधस्वरूपनिरूपणं, तत्फलचतुर्गतिभ्रमणलक्षणमर्थं चेति तीर्थङ्करस्य भगवतो महावीरस्य सकाशान्मया साक्षात् श्रुतं ब्रवीमि=कथयामि न तु स्वबुद्धिपरिकल्पितम्। यतः स्वबुद्ध्या कथने श्रुतज्ञानस्याविनयो भवति, किञ्च-छद्मस्थाना दृष्टयोऽप्यपूर्णा भवन्ति तस्माद् यथा भगवत्प्रतिपादितमेव त्वां ब्रवीमि=उपदिशामीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च—

"सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं।
छउमत्थाण दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति मुइय इइणा ॥१॥" इति। सू ४९॥

इतिश्री-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्यायां व्याख्यायां
हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु प्राणवधाख्यं प्रथमम्-
अधर्मद्वारं समाप्तम् ॥ १ ॥

स्वामी श्री जम्बूस्वामी से कहते हैं- (त्तियेमि) हे जम्बू ! प्राणवध का यह पूर्वोक्त स्वरूप निरूपण तथा चतुर्गति भ्रमणरूप उसका फल मैंने साक्षात् तीर्थंकर भगवान् महावीर के पास सुना है सो उसी के अनुसार यह तुमसे कहा है। इसमें मैंने अपनी ओर से कल्पित कर कुछ भी नहीं कहा है, क्यों कि अपनी बुद्धिसे कल्पित कर कथन करने में श्रुतज्ञान का अविनय होता है। तथा जबतक छद्मस्थावस्था रहती है तबतक ज्ञानकी मात्रा भी अपूर्ण रहती है अतः अपनी ओर से प्रतिपादित वस्तु का स्वरूप यथवत् प्रतिपादित नहीं हो सकता है, इसलिये मैंने जो यह प्रवचन स्वरूप कहा है वह भगवान द्वारा प्ररूपित ही कहा है। कहा भी है—

કહે છે—" त्तिबेमि " હે જમ્બૂ ! પ્રાણવધનુ આ પૂર્વકથિત સ્વરૂપ નિરૂપણ તથા ચાર ગતિમા ભ્રમણરૂપ તેનુ ફળ મે સાક્ષાત્ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર પાસે સાભળેલ છે, અને તેમણે કહ્યા પ્રમાણે જ તે તમને કહ્યુ છે તેની અદર મે મારી પોતાની કલ્પનાનુ કાઇ પણ ઉમેર્યું નથી, કારણ કે પોતાની બુદ્ધિથી કલ્પના કરીને કહેવાથી શ્રુતજ્ઞાનનો અવિનય થાય છે તથા જ્યા સુધી છદ્મસ્થ રહે છે ત્યા સુધી જ્ઞાનનુ પ્રમાણ પણ અપૂર્ણ હોય છે, તેથી પોતાનાથી પ્રતિ પાદિત વસ્તુનુ સ્વરૂપ યથાવત્ (જેવુ હોય તેવુ જ) પ્રતિપાદિત થઈ શકતુ નથી, તેથી મે આ જે પ્રવચનસ્વરૂપ કહ્યુ છે તે ભગવાનદ્વારા જે પ્રમાણે પ્રરૂપિત છે તે પ્રમાણે જ કહ્યુ છે કહ્યુ પણ છે—

परपीलाकारगं परमकिण्हलेस्ससहियं दुग्गइ विणिवायविवड्ढणं भवपुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं दुरत किंत्तियं विंत्तियं अधम्मदारं ॥ सू० १ ॥

टीका—हे जम्बू ! इह=अस्मिन् जिनशासने 'खल्विति' निश्चयेन 'बिइय च' द्वितीय च आस्रवद्वारम् 'अलियवयण' अलीकवचनम्=असत्यभाषण नाम। अस्यापि "यादृशो १, यन्नाम २, यथाकृतो ३, यादृश फल ददाति ४, येऽपि च कुर्वन्ति पापाः ५," इति पञ्चभिरन्तर्द्वारैः पूर्ववत् निरूपण क्रियते। तत्र च यथाक्रम 'यादृश' इति द्वारमाश्रित्यालीकवचनस्वरूपमाह-'लहु' इत्यादि-'लहुसग लहुचवल भणिय' लघुस्वकलघुचपलभणित, लघुः=तुच्छो गौरववर्जित स्वः=स्वभावो येषा ते लघुस्वकाः, तेभ्योऽपि लघवश्चपलाश्च=चञ्चलकाया ये तै

टीकार्थ-(जबू) हे जम्बू! (इह) इन जिन शासनमे (खलु) निश्चयसे (बिइय च अलियवयण) द्वितीयआस्रव अलीक(असत्य)वचन असत्यभाषण नामका है। इसका भी यह "अलीकवचनरूप आस्रवद्वार जैसा है १, जितने इसके नामहै २, प्राणियों द्वारा यह जिन मद, तीव्र आदि परिणामों से किया जाता है ३, जिस प्रकार का उन्हे नरकादिरूपफल देता है ४, तथा जो पापी जीव इस असत्यभाषण को करते हैं ५" इन पाच अन्तर्द्वारों द्वारा पूर्व की तरह निरूपण किया जावेगा। अब सूत्रकार क्रमानुसार "यादृशः" इस द्वार को आश्रित करके अलीक(असत्य)वचनके स्वरूप को कहते हैं-(लहुसगलहुचवलभाणिय) जिनका स्वभाव गौरव वर्जित है ऐसे जीवों से भी जो हीन हैं लघु है, वे लघुस्वक लघु हैं तथा

ટીકાર્થ—"जबू" હે જમ્બૂ! "इह" આ જૈનશાસનમા "खलु" ખરેખર, "बिइय च अलियवयण" બીજો આસ્રવ અલીક વચન-અસત્ય ભાષણ નામનો છે તેનુ પણ નીચે પ્રમાણેના પાચ અતર્દ્વારો દ્વારા, આગળના આસ્રવ દ્વારની જેમ જ, નિરૂપણ કરવામા આવશે (૧) આ અસત્ય વચનરૂપ આસ્રવ-દ્વાર કેવુ છે? (૨) તેના કેટલા નામ છે? (૩) પ્રાણીઓ દ્વારા તે કયા કયા મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી સેવાય છે? (૪) કેવા પ્રકારના નરકાદિરૂપ ફળ તેને આપે છે? (૫) તથા કયા કયા પાપી જીવ અસત્ય બોલે છે?

હવે સૂત્રકાર અનુક્રમે "यादृश" આ દ્વારનો આધાર લઈને અસત્ય વચનનુ સ્વરૂપ દર્શાવે છે—"लहुसगलहुचवलभणिय" ગૌરવહીન સ્વભા-વના જીવોથી પણ જે હીન છે-લઘુ છે, તેઓ 'लघुस्वक लघु' હીનમા હીન ગણાય છે એવા લઘુસ્વતક લઘુ દ્વારા તથા ચ ચળ મનવાળા દ્વારા બોલવામા આવતું

अथ द्वितीयमध्ययनम् ।

व्याख्यात प्रथममास्रवद्वार, साम्प्रत द्वितीयमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहा यमभिसम्बन्धः पूर्वं यादृश नाम-कर्तृ-फलादिनिरूपणपूर्वक प्रथमास्रवद्वाररूप प्राणवधस्वरूपमुक्तम् । तस्य हेतुत्वात् 'यथोद्देश निर्देशः' इति न्यायप्राप्तत्वाच्चे-त्यस्मिन् द्वितीयाध्ययनेऽलीकवचन स्वरूपादिनिरूपणपूर्वक प्रदर्श्यते, तस्येदमादि सूत्रम्-'इह खलु' इत्यादि ।

मूलम्—इह खलु जवू विइय च अलियवयणं लहुसग-लहु चवल भणियं, भयकरं, दुहकर, अजसकर, वेरकारगं, रति-अरति -रागदोसमणसंकिलेसवियरणं अलिय नियडिसाति जोगवहुलं नीयजणनिसेवियं निस्संस अप्पच्चयकारग परमसाहुगरहणिज्ज

द्वितीय द्वार प्रारभ

प्रथम आस्रव द्वार का अर्थ कह दिया गया है, अव द्वितीय आस्रव द्वार प्रारभ होता है । अव आस्रवद्वार का पूर्व आस्रवद्वार के साथ इस प्रकार से सवध है-पूर्व आस्रवद्वार मे स्वरूप, नाम कर्त्ता और फल आदि के निरूपण पूर्वक प्रथम आस्रवद्वाररूप प्राणवध का स्वरूप कहा है अव उसका हेतु होने से तथा "यथोद्देश निर्देश :" उद्देश के अनु सार ही निर्देश होता है इस नियम के अनुसार न्यायप्राप्त होने से इस द्वितीय आस्रवद्वार में अलीक वचन का उसके स्वरूप आदि का निरूपण पूर्वक कथन किया जाता है । इस आस्रवद्वार का आदिम सूत्र यह है- 'इह खलु जवू' इत्यादि ।

બીજા દ્વારનો પ્રારભ

પહેલા આસ્રવદ્વારનો અર્થ કહેવાઈ ગયો, હવે બીજા આસ્રવદ્વારનુ વિવેચન શરૂ થાય છે આ આસ્રવદ્વારનો આગળના આસ્રવદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સબધ છે-આગળના આસ્રવદ્વારમા સ્વરૂપ, નામ, કર્ત્તા, ફળ આદિનુ નિરૂપણ કરીને આસ્રવદ્વારરૂપ પ્રાણવધનુ સ્વરૂપ બતાવ્યુ છે હવે તેના હેતુરૂપ હોવાથી, તથા "यथोद्देश निर्देश" ઉદ્દેશાનુસાર જ નિર્દેશ થાય છે તે નિયમાનુસાર ન્યાયયુક્ત હોવાથી આ બીજા આસ્રવદ્વારમા અસત્ય વચનનુ-તેના સ્વરૂપાદિનો નિરૂપણ સહિત વિવેચન કરવામા આવે છે આ આસ્રવદ્વારનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—"इह खलु जवू" ઈત્યાદિ

टीका—'तस्स य' तस्य च मृषावादस्य द्वितीयास्रवद्वारस्य 'गोणाणि' गौणानि=गुणनिष्पन्नानि 'तीस' त्रिंशत् 'णामाणि' नामानि 'हुति' भवन्ति 'त जहा' तद्यथा-(१) 'अलिय' अलीकं=निष्फल शुभफलवर्जितत्वात्, (२) 'सढ' शठं=कपटिजनसमाचरितत्वात्, (३) 'अणज्ज' अनार्यम्=अनार्यजनोक्त-

"जारिसओ" इसे प्रथम द्वार में मृषावाद का स्वरूप कहा गया है, अब सूत्रकार 'ज नामा' इस दूसरे द्वार में इसके कौन २ से नाम हैं वह कहते हैं—'तस्स य णामाणि' इत्यादि।

टीकार्थ-(तस्स) इस द्वितीय आस्रवद्वार रूप मृषावाद के (गोणाणि) गुण निष्पन्न (तीस) तीस (णामाणि) नाम (हुति) हैं (तजहा) वे इस प्रकार हैं-(अलिय १, सढ २, अणज्ज ३, मायामोसो ४, असतकं५, कूडकवडमवत्थुग ६, च निरत्थयमवत्थय ७ च, विद्देसगरहणिज्ज ८, अणज्जुक ९, कक्कणा १० य, वचणा ११ य, मिच्छापच्छाकड १२ च, साइ १३, उस्सुत्त १४, उक्कूल १५ च, अट्ट १६, अब्भक्खाण १७ च, किब्बिस १८, वलय १९, गहण २० च, मम्मण २१ च, नूम २२, नियई, २३, अप्पच्चओ २४, असयमओ २५, असच्चसघत्तण २६, विविक्खो २७, उवहिय २८, उवहि असुद्ध २९, अवलवो ३० त्ति) यह असत्य-भाषण शुभफलों से रहित होने के कारण अलीकफल रहित होता है इसलिये इसका नाम अलीक है १। कपटीजनों के द्वारा यह अपना काम

"जारिसओ" આ પ્રથમ દ્વારમા મૃષાવાદ-અસત્ય વચન-નુ સ્વરૂપ કહે વામા આવ્યુ છે હવે સૂત્રકાર "जनामा" એ પદોથી શરૂ થતા બીજા દ્વારમા તેના કયા કયા નામો છે તે બતાવે છે-"तस्स य णामाणि' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ"-तस्स" આ બીજા આસ્રવદ્વારરૂપ મૃષાવાદના" "गोणाणि" ગુણાનુસાર "तीस" ત્રીસ 'णामाणि" નામ "हुति" છે "त जहा" તે આ પ્રમાણે છે

"अलिय १ सढ २, अणज्ज ३, मायामोसो४, असतक५, कुडकवडम-वत्थुग६, च, निरत्थयमवत्थय७, च विद्देसगरहणिज्ज ८, अणज्जुक ९, कक्कणा १० य, वचणा ११ य, मिच्छापच्छाकड १२ च, साइ १३, उस्सुत्त१४, उक्कूल १५ च, अट्ट १६, अब्भक्खाण १७ च। किब्बिस १८, वलय १९, गहण २० च, मम्मणं २१ च, नूम २२, निरई २३, अप्पच्चओ २४, असयमओ २५, असच्चसघयण २६, विविक्खो २७, उवहिय २८, उवहिअसुद्ध २९, अवलोवो ३० त्ति" (१) તે અસત્ય ભાષણ શુભ ફળોથી રહિત હોવાને કારણે "अलीक" ફળરહિત હોય છે તેથી તેનુ નામ "अलीक" પડયુ છે (૨)

म्पराऽनुगत सम्यग्ज्ञानाभावात्, दुरन्त=विपाकदारुणत्वात् 'विइय' द्वितीयम् 'अधम्मदार' अधर्मद्वार 'कित्तिय' कीर्तित=कथितम् ॥ सू. १ ॥

एतेन यादृश मृषावादस्वरूपमस्ति तत्प्रथमान्तद्वारे प्रोक्तम्। साम्प्रतं 'यन्नामे'ति द्वितीयान्तद्वारे तन्नामान्याह-'तस्स' इत्यादिना—

मूलम्--तस्स य णामाणि गोणाणि हुंति तीसं त जहा-अलियं १, सढं २, अणज्जं ३, मायामोसो ४, असंतकं ५, कूडकवडमवत्थुग च ६, निरत्थयमवत्थयं च७, विद्देसगरहणिज्जं ८, अणुज्जुक ९, कक्कणा य १०, वचणा य११, मिच्छापच्छाकड च १२, साइ १३, उस्सुत्त १४, उक्कूल च १५, अट्ट १६, अब्भक्खाणं च १७, किव्विस १८, वलयं १९, गहण च २० मम्मणं च २१, नूम २२, नियई २३, अप्पच्चओ २४, असमओ २५, असच्चसघत्तण २५, विवक्खो २७, उवहियं २८, उवहि असुद्ध २९, अवलोवोत्ति ३०, विइयस्स इमाणि एवमाइयाणि नामधेज्जाणि होति तीस सावज्जस्स अलियस्स वयजोगस्स अणेगाइ ॥ सू २ ॥

हुए मिथ्यात्व, अविरति के प्रवाह का विच्छेद नहीं होता है। (अणुगय) सम्यग्ज्ञानका अभाव होने से यह जीव के साथ भवपरम्परानुगत होता है। (दुरत) विपाक इसका बहुत ही अधिक दारुण होता है इसलिये यह जीव के लिये दुरन्त कहा गया है। इस तरह से (विइय) इस द्वितीय अधर्म द्वार का (कित्तिय) सूत्रकार ने तीर्थंकर परपरा के वर्णन अनुसार वर्णन किया है ॥सू १॥

હોવાને કારણે અનાદિ કાળથી લાગેલ મિથ્યાત્વ અવિરતિ આદિનો પ્રવાહ તૂટતો નથી "अणुगय" સમ્યગ્ જ્ઞાનનો અભાવ હોવાથી તે જીવની સાથે ભવપરપરાનુગત હોય છે "दुरत" તેનો વિપાક "परिणाम" ઘણો જ દારુણ હોય છે, તેથી તે જીવને માટે દુરન્ત દર્શાવાયુ છે આ રીતે "बिइय" આ બીજા અધર્મદ્વારનુ 'कित्तिय" સૂત્રકારે તીર્થંકર પરપરાએ કરેલ વર્ણન પ્રમાણેનુ વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂ-૧ ॥

विद्वेपगर्हणीय=विद्वेपात्=विद्वेपसभृतत्वाद् इदमलीकवचन गर्हणीय=निन्द्य महापुरुषैः, (९) 'अणुज्जुक' अनृजुकम् = अमरल-सरलभाववर्जितमित्यर्थः, (१०) 'कक्कणा य' कल्कना च=पाप प्राणातिपातादिरूपम्, (११) 'वचणा य' वञ्चना =प्रतारणा, (१२) 'मिच्छापच्छाकड च' मिथ्यापश्चात् कृत=मिथ्येतिबुद्ध्या साधुभिः पश्चात् कृत = पृष्ठे कृत तिरस्कृतमित्यर्थ, (१३) 'साइ' साति = अविश्वास, (१४) 'उस्सुत्त' उत्सूत्रम्-विरुद्धार्थ-निरूपणम्, (१५) 'उक्कूल' उत्कूल=सन्मार्गतटात् परिभ्रष्टकारकम्, (१६) 'अट्ट' आर्त्तम्, आर्त्तध्यानहेतु-

लिये इसका नाम अपार्थ है ७। यह विद्वेप से भरा रहने के कारण गर्हणीय होता है-महापुरुषों द्वारा निंद्य होता है इसलिए इसका नाम विद्वेप गर्हणीय है ८। इसमें भावों की सरलता नहीं होती है, अर्थात्-यह सरल स्वभाव से वर्जित रहता है इसलिये इसका नाम अनृजुक है ९। कल्कना शब्द का अर्थ पाप है, यह मृपावचन प्राणातिपातादिरूप होता है इसलिये इसका नाम कल्कना है १०। इसमें दूसरों की प्रतारणा होती है इसलिये इसका नाम वचना है ११। मिथ्या समझकर साधु पुरुप इसका तिरस्कार करते हैं इसलिये इसका नाम मिथ्यापश्चात्कृत है १२। साति शब्द का अर्थ अविश्वास है, मिथ्याभापण विश्वास रहित होता है। इसलिए इसका नाम साति है १३। विरुद्ध अर्थ का इसमे निरूपण होता है इसलिये इसका नाम उत्सूत्र है १४। जीव को यह सन्मार्ग रूप तट से भ्रष्टकर देता है इसलिये इसका नाम उत्कूल है १५। यह आर्त्तध्यान का हेतु होता है इसलिये इसका नाम आर्त्त है

નામ 'अपार्थ" છે (૮) તે વિદ્વેષથી પૂર્ણ હોવાથી ગર્હણીય-મહાપુરુષો દ્વારા નિંદ્ય-હોય છે, તેથી તેનુ નામ "विद्वेप गर्हणीय" છે (૯) તેમા ભાવોની સરલતા હોતી નથી, એટલે કે તે સરળ સ્વભાવથી રહિત હોય છે, તેથી તેનુ નામ "अनृजुक" છે "कल्कना" શબ્દનો અર્થ પાપ થાય છે (૧૦) તે મૃષાવચન પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ "कल्कना" છે (૧૧) તે અસત્ય વચન વડે અન્યની પ્રતારણા થાય છે, તેથી તેનુ નામ "वचना" છે (૧૨) મિથ્યા સમજીને સાધુ પુરુષ તેનો તિરસ્કાર કરે છે, તેથી તેનુ નામ "मिथ्यापश्चात्कृत" છે (૧૩) "साति" શબ્દનો અર્થ 'અવિશ્વાસ' થાય છે, તેથી તેનુ નામ "साति" છે (૧૪) વિરુદ્ધ અર્થનુ તેમા નિરૂપણ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "उत्सूत्र" છે (૧૫) જીવને તે સન્માર્ગરૂપ કિનારેથી ભ્રષ્ટ કરે છે માટે તેનુ નામ "उत्कूल" છે (૧૬) તે આર્ત્તધ્યાનના હેતુરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ "आर्त्त" છે (૧૭) તેના દ્વારા અસત્-અવિદ્યમાન

स्यात् , (४) 'मायामोसो' मायामृषा=मायापूर्वकत्वादसत्यभाषणस्य मायामृषेति नाम, (५) 'असंतक' असत्क=अविद्यमान-सत् यस्मिंस्तदसत्कम्=असत्यम्, (६) 'कूडकवडमवत्थुगं' कूटकपटावस्तुक=तत्र कूटं=परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकभाषणं कपटं भाषाविपर्ययकरणम् अवस्तु=अविद्यमानवस्तु कथनम्=यथा-'जगतः कर्ता ईश्वरः' इत्यादि कथनम् कूटादीना त्रयाणा समानार्थत्वादेकत्वमत्वे नैव गणनादिदमेक नाम, (७) निरत्थयमवत्थय च ' निरर्थकमपार्थक च = निर्गतोऽर्थोयस्मिंस्तत् = सत्यार्थ हीनम् , अपार्थम्=अपगतार्थमसम्बद्धार्थमित्यर्थः, (८) 'विद्देसगरहणिज्जं'

बनाने के लिये प्रयोग से लाया जाता है इसलिये इसका दूसरा नाम शठ है २। अनार्यजनों द्वारा यह बोला जाता है इसलिये इसका नाम अनार्य है ३। यह असत्यभाषण माया पूर्वक होता है इसलिये इसका नाम मायामृषा है ४। असत्यभाषण में जो विषय कहा जाता है वह उसरूप मे नहीं होता है इसलिये इसका नाम असत्य है ५। परवचन के लिये इसमें न्यूनाधिक बोलना पड़ता है, तथा इसमे बोलने की भाषा की शैली भी भिन्न प्रकार की होती है, और जो वस्तु इसमें कही जाती है वह अविद्यमान होती है, जैसे यों कहना कि जगत का कर्त्ता ईश्वर है सो यह कूटकपटावस्तुक नाम का असत्य है। यहाँ कूट कपट अवस्तुक, इन तीनों की समानार्थकता होने के कारण एक पद रूप से गिनती करली गई है ६। यह भाषण सत्यार्थ से हीन होता है इसलिये इसका नाम निरर्थक है। इसमें वाच्य अर्थ, सबध विहीन रहता है इस-

કપટી લોકો દ્વારા પોતનુ કાર્ય સાધવા માટે તેના પ્રયોગ કરાય છે, તેથી તેનુ બીજુ નામ "शठ" છે, (૩) અનાર્યજન દ્વારા તે બોલાય છે તેથી તેનુ ત્રીજુ નામ "अनार्य" છે (૪) તે અસત્ય ભાષણ માયા પૂર્વક થાય છે તેથી તેનુ ચોથુ નામ "मायामृषा" છે (૫) અસત્ય ભાષણમા જે વિષયનુ કથન કરાય છે તે યથાર્થ-સાચા સ્વરૂપે-કરાતુ નથી તેથી તેનુ પાચમુ નામ 'असत्य" છે (૬) અન્યની વચનાને માટે તેમા ન્યૂનાધિક બોલવુ પડે છે, અને તે બોલ વાની શૈલી પણ જુદા જ પ્રકારની હોય છે, અને જે વસ્તુ તેમા કહેવાય છે તે અવિદ્યમાન હોય છે, જેમ કે "જગતનો કર્તા ઇશ્વર છે" તે પ્રમાણે કહેવુ તે આ પ્રકારના આ પ્રકારના અસત્યને 'कूटकपटावस्तुक असत्य" કહે છે અહીં કૂટ, કપટ અને અવસ્તુક એ ત્રણે પદોથી સમાનાર્થકતા હોવાથી એક જ પદ રૂપે ગણવામા આવેલ છે (૭) તે ભાષણ સત્યાર્થ રહિત હોય છે તેથી તેનુ નામ નિરર્થક છે તેમા વાચ્ય અર્થ, સબધ રહિત હોય છે તેથી તેનુ

मओ ' असम्मतः=न्यायज्ञैरनाचरितः, (२६) ' असच्चसघत्तण ' असत्यसन्धत्वम्=असत्य-सन्दधाति=सम्मिश्रयति सतत य' सोऽसत्यसन्धस्तस्य भावोऽसत्यसन्धत्व =मृषाभाषि धर्मः, (२७, ' विवक्खो ' विपक्ष =सत्य प्रतिकूलत्वात् (२८) उवहि य ' ओपधिक=मायामयम्=कपटगृहमित्यर्थः, (२९) उवहि असुद्ध ' उप यशुद्धम् =उपधिः=सावद्यकर्म तेनाशुद्धम् ,(३०) 'अवलोवोत्ति' अपलोप इति=कुर्वाणोऽपि 'नाह करोमि किञ्चि 'दित्यादिभिर्वस्तु प्रच्छादनम् ' निइयस्स ' द्वितीयस्याधर्म द्वारस्य ' इमाणि ' इमानि=पूर्वोक्तानि ' एवमाइयाणि ' एवमादिकानि-अलीकादीनि ' सावज्जस्स ' सावद्यस्य पापसहितस्य ' अलियस्स ' अलीकस्य=मृषावा-

---

न्यायज्ञ पुरुषों द्वारा यह असमत है-वे पुरुष इसका कभी भी सेवन नहीं करते हैं इसलिये यह असमत है २५। यह मृषाभाषियों का धर्म है इसलिये इसका नाम असत्यसघात है २६। सत्यभाषण का यह विपक्षी है इसलिये इसका नाम विपक्ष है। कपटों का यह घर है इसलिये इसका नाम औपधिक है २८। सावद्यकर्मो से यह सतत अपवित्र घना रहता है इसलिये इसका नाम उपध्यशुद्ध है २९। उपधि शब्द का अर्थ सावद्यकर्म है। कार्य करता हुआ भी व्यक्ति इसके प्रभाव से प्रभावित होकर कहदिया करता है कि मै कुछ भी नहीं कर रहा हूँ। इस तरह इसके द्वारा वस्तु का प्रच्छादन होता है-अतः इसका नाम अलोप है ३०। (बिइयस्स) इस तरह द्वितीय अधर्मद्वार के (इमाणि) ये पूर्वोक्त अलीक आदि (तीस नामधेज्जाणि) गुणनिष्पन्न तीस नाम हैं। तथा (एवमाइयाणि) इनसे अतिरिक्त और भी इसी

તેને માન્ય કરતા નથી-તેઓ તેનુ કદી પણ સેવન કરતા નથી, તેનુ નામ ' असमत " (૨૬) તે અસત્ય વચન મૃષાવાદીઓનો ધર્મ છે, તેથી તેનુ નામ " असत्यसघात " છે (૨૭) સત્ય ભાષણનુ તે વિપક્ષી-વિરૂદ્ધનુ છે, તેથી તેનુ નામ " विपक्ष " છે (૨૮) કપટોનુ તે ધામ છે, તેથી તેનુ નામ " औपधिक " છે (૨૯) સાવદ્ય કર્મોથી તે સતત અપવિત્ર રહે છે, તેથી તેનુ નામ ,' उपध्यशुद्ध " છે 'उपधि' શબ્દનો અર્થ સાવદ્ય કર્મ છે, (૩૦) કાર્ય કરતી વ્યક્તિ પણ તેના પ્રભાવની અસર નીચે આવી જઈને કહી દે છે કે " હુ કઈ કરતો નથી " આ રીતે તેના દ્વારા વસ્તુનુ પ્રચ્છાદન થાય છે, તેથી તેનુ નામ "अपलोप" છે " बिइयस्स " આ રીતે બીજા અધર્મદ્વારના " इमाणि " પૂર્વોક્ત અલીક આદિ " तीस नाम धेज्जाणि " ગુણાનુસાર ત્રીસ નામ છે તથા " एवमाइयाणि " તે ઉપરાન્ત બીજા પણ તે જ પ્રકારના "सावज्जस्स" પાપ

त्वात् (१७) 'अब्भक्खाण' अभ्याख्यानम्=असद्दोषारोपणम्, (१८) 'किब्बिसं' किल्विष=पाप-प्राणातिपातादिहेतुत्वात्, (१९) 'वलय' वलयमिव वक्रत्वाद् कुटिलमित्यर्थः, (२०) 'गहण' गहन=गहनमिव गहन-वनमिव दुरवगाहमित्यर्थः, (२१) 'मम्मण' मन्मनम् = मन्मनमिव मन्मनम् अस्फुटत्वात्। (२२) 'नूम' छादन=परगुणाच्छादने पिधानमिव, (२३) 'नियई' निकृतिः=मायाच्छादनार्थं वचन विप्रलम्भन वा, (२४) 'अप्पच्चओ' अप्रत्ययः=अविश्वासः (२५) 'अस

१६। इसके द्वारा असत्-अविद्यमान दोषों का आरोपण किया जाता है इसलिये इसका नाम अभ्याख्यान है १७। यह प्राणातिपात आदि पापों का हेतु होता है इसलिये इसका नाम किल्विष है १८। वलय के जैसा यह कुटिल रहा करता है इसलिये इसका नाम वलय है १९। वन के समान यह दुरा वगाह होता है इसलिए उसका नाम गहन है २०। जिस प्रकार तोतली बोली में शब्दस्फुट नहीं हो पाते है उसी प्रकार इसमें भी वस्तु का वास्तविक भान अस्फुट रहा करता है इसलिये इसका नाम मम्मण है २१। जिस तरह ढक्कन वस्तु को ढाक देता है उसी प्रकार यह भी पर के गुणों को आच्छादन कर देता है इसलिए इसका नाम नूम है। नूम नाम छादनका है २२, इसमे बोलनेवाला अपनी मायाको ढकने का प्रयास करता है, अथवा दूसरों को ढकने का उपाय रचता है इसलिये इसका नाम निकृति है २३। कोई भी सज्जन पुरुष झूठ वचनका विश्वास नहीं करते है इसलिये इसका नाम अप्रत्यय-अविश्वास है २४।

દોષોનું આરોપણ કરાય છે તેથી તેનું નામ "अभ्याख्यान" છે (૧૮) તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાપોનું કારણ હોય છે, તેથી તેનું નામ "किल्विष" છે (૧૯) વલયના જેવું તે કુટિલ હોય છે, તેથી તેનું નામ "वलय" છે (૨૦) વનના જેવું તે ગહન હોય છે, તેથી તેનું નામ "गहन" છે (૨૧) જેમ તોતડા વચનો બરાબર સમજી શકાતા નથી એજ પ્રમાણે અસત્ય ભાષણમાં પણ વાસ્તવિકભાવ અસ્ફુટ-અસ્પષ્ટ રહ્યા કરે છે, તેથી તેનું નામ "मम्मण" છે (૨૨) જેમ ઢાંકણા વડે વસ્તુને ઢાંકી દેવાય છે, એ જ રીતે અસત્ય વચન પણ ગુણોને ઢાંકી દેનાર હોવાથી તેનું નામ 'नूम' છે 'नूम' એટલે આચ્છાદન-આવરણ (૨૩) અસત્ય ભાષણમાં બોલનાર પોતાની માયાને ઢાંકવાનો પ્રયાસ કરે છે, અથવા બીજાને ઢાંકી દેવાના ઉપાય રચે છે, તેથી તેનું નામ "निकृति" છે (૨૪) કોઈ પણ સજ્જન પુરુષ અસત્ય વચન પર વિશ્વાસ મૂકતો નથી, તેથી તેનું નામ અપ્રત્યય "अविश्वास" છે, (૨૫) ન્યાયજ્ઞ પુરુષો

'खंडरक्खा' खण्डरक्षाः=शुल्कपालाः-राजग्राह्यद्रव्यसंग्राहका इत्यर्थ, 'जियजूयकरा' जितद्यूतकरा =तत्र जिताः=प्रतिस्पर्द्धिद्यूतकरैः पराजयं प्राप्ताः, द्यूतकराः=द्यूतक्रीडकाः 'गहियगहणा' गृहीतग्रहणाः = गृहीतानि=स्थापितानि ग्रहणानि = बन्धक द्रव्याणि यैस्ते 'कक्कगुरुगकारगा' कल्कगुरुककारका = कल्कगुरुक =माया समारसभृत वाक्य तत्कारकाः=कपटिन इत्यर्थः, कुलिंगी' कुलिङ्गिनः= कुत्सिता लिङ्गिनः कुलिङ्गिनः=कुतीर्थिकाः 'उवहिया' औपधिकाः=मायाचारिणः कपटिन इत्यर्थः 'वाणियगा' वाणिजकाः=व्यापारकारिणः, 'कूडतुलकूडमाणी' कूटतुलाकूटमानिनः=कूटा=कपटयुक्ता-न्यूनाधिका तुला येषां ते कूटतुलाः कूटमानिनः=कूट=वैषम्ययुक्त यन्मान=तोलन तदस्ति येषां ते तथा 'कूडकाहावणोव जीवया' कूटकार्षापणोपजीविताः=कूटकार्षापणेन उपजीवन्ति ये ते तथा-कूट मुद्रोपजीविन' इत्यर्थ, 'पडकारगा' पटकारकाः-तन्तुवायाः-वस्त्रनिर्मापका इत्यर्थः,

इसी तरह (चारभडा) जो चार गुप्तचर-सी. आई. डी होते हैं, भट-योधा होते हैं, (खंडरक्खा) खंडरक्ष-राजग्राह्यद्रव्य के संग्राहक होते है, (जियजूयकरा) जितद्यूतकर-प्रतिस्पर्द्धी जुआरियों द्वारा पराजित हुए जुआरी होते हैं, (गहियगहणा) गृहीतग्रहण-गहना रखकर जो दूसरों को व्याज पर रूप्या देने वाले होते हैं (कक्कगुरुगकारगा) कल्क गुरुक कारक-मायाचारी से भरे हुए वचनों को बोलने वाले होते हैं, अर्थात् कपटी होते हैं, (कुलिंगी) कुतीर्थिक होते हैं, (उवहिया) औपधिक-मायाचारी होते हैं, (वाणियगा) वाणिजनक-व्यापारी होते हैं, असत्यभाषण करते है। (कूडतूलतूलमाणी) जो न्यूनाधिक तराजू रखते हैं, नापने तौलने के बाट कमती बढती रहते हैं (कूडकाहावणोवजीविया) बनावटी रूप्या पैसा बनाकर जो अपना निर्वाह करते हैं,

એજ પ્રમાણે "चारभडा" જે ગુપ્તચરો-સી આઇ ડી હોય છે, ભટ-યોદ્ધા હોય છે, જે "खंडरक्खा" ખંડરક્ષક-રાજ્ય ભાગના દ્રવ્યનો સંગ્રહ કરનાર હોય છે, જે "जियजूयकरा" જિતદ્યૂતકર-પ્રતિસ્પર્ધિ જુગારી દ્વારા પરાજિત થયેલ જુગારી હોય છે, "गहियगहणा" ગૃહીત ગ્રહણ-ઘરેણા રાખીને જે બીજા લોકોને વ્યાજે નાણા ધીરનાર હોય છે, "कक्कगुरुगकारगा" કલ્ક ગુરુક કારક જે માયાચારી વચનો બોલનારા હોય છે-કપટી હોય છે, "वाणियगा" જે વ્યાપારી હોય છે, જે "कुलिंगी" કુતીર્થિક હોય છે, "उवहिया" જે ઔપધિક માયાચારી હોય છે, તે અસત્ય બોલે છે "कूडतूलतूलमाणी" જે ખોટા ત્રાજવા રાખે છે, માપવા તથા તોળવાના માપ વધારે કે ઓછા રાખે છે, "कूडकाहावणोवजीविया" નકલી રૂપીઆ, પૈસા આદિ બનાવીને જે લોકો

सग्राह्याः । ' भयाय=अन्येषां भयोत्पादनाय ' व्याघ्रः समागतः ' इतिरीत्या मृषावादः अथवा भयाच्च 'हस्सट्टिया य ' हास्यार्थिकाः, अथवा हास्यार्थाय च= हास्य कर्तुमपि तथा वदन्ति ' सक्खी ' साक्षिणःसाक्षिभूतान्यायाल्यादौ 'चोरा' चौरा-निग्रहादौ ' चारभडा ' चारभटाः=तत्र चाराः गूढपुरुषाः, भटाः=योधाः,

षण करते है । इसी तरह मृगादिक जो जीव होते हैं कि जिन्हें प्राण-वध के प्रकरण में २० वें सूत्र मे कहा गया है वे भी असत्यभाषण करते हैं । कोई धन के लिये, कोई धर्म के लिये, कोई इन्द्रियों के भोगों के निमित्त काम के लिये, और कोई २ अर्थ, धर्म और काम इन तीनों के लिये असत्यभाषण करते हैं । (भयाय) कितनेक कितनेक जीव ऐसे भी होते हैं जो दूसरों को भय उत्पन्न करने के अभिप्राय से असत्यभाषण कर दिया करते हैं । " भयाय " की संस्कृत छाया "भयाच" ऐसी भी होती है-इसका तात्पर्य तब ऐसा होगा कि कितनेक जीव भय से भी असत्यभाषण कर दिया करते हैं । (हस्सट्टियाय) कितनेक जीव ऐसे भी होते हैं जो हँसी मजाक मे असत्यभाषण कर देते है, अथवा दूसरो की हँसी उडाने के अभिप्राय से असत्यभाषण करने लगते हैं । (सक्खी) जो न्यायालय-कचहरी आदि में दूसरों की साक्षी देते हैं वे भी असत्यभाषण करते हैं । (चोरा) चोरी करने वाले जो पुरुष होते हैं वे निग्रह आदि अवस्था के उपस्थित होने पर असत्यभाषण करते हैं।

જે જીવો હોય છે, જેમનું પ્રાણવધના ૨૦મા પ્રકરણમા વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે, તે જીવો પણ અસત્ય બોલે છે એટલે કે કેટલાક મુગ્ધ-મોહાધીન વૃત્તિ વાળા અસત્ય બોલે છે કેટલાક ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ ત્રણેને વશ થઈને અસત્ય બોલે છે કેટલાક લોકો ધનને માટે, કેટલાક ધર્મને માટે, કોઈ ઇન્દ્રિ-યોના ભોગોને નિમિત્તે, અને કોઈ કોઈ લોકો અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણેને નિમિત્તે અસત્ય બોલે છે "भयाय" કેટલાક એવા જીવો પણ હોય છે કે જે બીજાને ભય પમાડવાને માટે અસત્ય બોલે છે " भयाय " ની સંસ્કૃત છાયા " भयाच्च " પણ થાય છે ત્યારે તેનો અર્થ એવો થાય છે કે કેટલાક જીવો ભયને કારણે પણ અસત્ય બોલે છે " हस्सट्टिया य " કેટલાક લોકો એવા પણ હોય છે કે જેઓ મજાક-મશ્કરીમા પણ અસત્ય બોલી નાખે છે, અથવા બીજાની મજાક કરવાને નિમિત્તે અસત્ય બોલવા મડે છે "सक्खी" ન્યાયાલય આદિમા બીજાની સાક્ષી આપનારા લોકો પણ અસત્ય બોલે છે " चोरा " ચોરી કરનારા લોકો, જેલમા જવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થતા અસત્ય બોલે છે

लघुस्वकाः=पुच्छात्मानः, 'असच्चा' असत्याः=सत्यविमुखा 'गारविया' गौरविकाः=ऋद्धयादि गौरवयुक्ताः, 'असच्चट्ठावणाहिचित्ता' असत्यस्थापनाधिचित्ताः= असत्यानाम्=असदर्थाना स्थापनायां प्ररूपणायामधिचित्त येषा ते तथा असत्यार्थ-मण्डनपरा इत्यर्थः, 'उच्चच्छदा' उच्चो=महान् स्वात्मप्रशसापरः छन्दः=अभिप्रायो येषा ते तथा स्वात्मप्रशसापरायण इत्यर्थः, 'अणिग्गहा' अनिग्रहाः= अवशेन्द्रियाः 'अणिरता' अनियताः=अनियमवन्तः छन्देन=स्वाभिप्रायेण 'मुक्कवाया' मुक्तवाचः=यथा तथा भाषिणः अथवा 'वयमेव सिद्धवादिन' इति वदन्ति, के वदन्ति? 'जे' ये 'अलियाहिं' अलीकेभ्योऽसत्येभ्यः 'अविरया' अविरताः=अनिवृत्ताः भवन्ति ॥ सू-३ ॥

तथा—'अवरे नत्थिगवाइणो' इत्यादि—

मूलम्—अवरे नत्थिगवाइणो वामलोगवादी भणंति, नत्थि जीवो, न जाइ इह परे वा लोए, नय किंचि वि फुसइ पुन्नपाव, नत्थिफलं सुकयदुक्कयाण। पंचमहाभूइयं सरीर भासंति

आपको तुच्छ मानने वाले मनुष्य, (असच्चा) सत्य से विमुख रहने वाले मनुष्य, (गारविया) ऋद्धयादि के गौरव से युक्त बने हुए मनुष्य, (असच्चट्ठावणाहिचित्ता) असत्यपदार्थ की प्ररूपणा करने वाले मनुष्य, (उच्चच्छदा) अपने आपकी प्रशसा करने वाले मनुष्य, (अणिग्गहा) जिनकी इन्द्रियां वश में नहीं है ऐसे मनुष्य, (अणिययाछदेण) नियम से रहित मनुष्य, (मुक्कवाया) यथातथा बोलने वाले मनुष्य, और (जे य) जो मनुष्य (अलियाहिं) असत्यभाषण से (अविरया) विरति रहित (भवति) होते हैं वे जो मन मे आता है सो बोल दिया करते हैं। इस प्रकार के बोलने मे अलीक भाषण का दोष लगा करता है ॥सू ३ ॥

મનુષ્યો, "असच्चा" સત્યથી વિમુખ રહેનાર મનુષ્યો, "गारविया" ઋદ્ધિ આદિના અભિમાનથી યુક્ત બનેલ મનુષ્યો, "असच्चट्ठावणा हि चित्ता" અસત્ય પદાર્થની જ પ્રરૂપણા કરનાર મનુષ્યો, "उच्चच्छदा" આપ વડાઈ કરનાર લોકો, "अणिग्गहा" જેમની ઇન્દ્રિયો કાબૂમા નથી તેવા લોકો, "अणियया-छदेण" નિયમ વિનાના મનુષ્યો–અનિયમિત લોકો, "मुक्कवाया" જેમ તેમ બોલનારા લોકો, અને "जे य" જે મનુષ્ય "अलियाहिं" અસત્ય ભાષણથી "अविरया" વિરતિ રહિત "भवति" હોય છે, તે લોકો મનમા આવે તેમ બોલી નાખે છે તે રીતે બોલવાથી અસત્યભાષણનો દોષ લાગ્યા કરે છે॥સૂ ૩॥

'कलाया' कलादाः=सुवर्णकाराः 'कारुइज्जा' कारुकीयाः=शिल्पिनः 'वचणपरा' वञ्चनपराः=प्रतारणापरा 'ठग' इतिप्रसिद्धाः 'चारियचाडुयारनगरगोत्तिय परियारगा, चारिकचाटुकारनगर गुप्तिकपरिचारकाः=तत्र-चारिका=गुप्तचराः, चाटुकाराः=मुखमाङ्गलिकाः, नगरगुप्तिकाः=कोट्टपालाः, 'कोतवाल' इति प्रसिद्धाः, परिचारकाः= सेवकाः, विषयभोगतत्पराश्च, 'दुट्टवाइसूयकअणवलभणिया' दुष्टवादि सूचकऋणबलभणिता, तत्र दुष्टवादिनः=असत्पक्षग्राहिणः सूचकाः-पिशुनाः, ऋणबलभणिताः=ऋणे=ऋणग्रहणे बलाः=रक्षन्तस्ते भणिताः=उक्ताः 'देहि मे ऋण' मित्युत्तमर्णेनोक्ता अधमर्णा इति भावः 'पुव्वकालियवयणदच्छा' पूर्वकालिकवचनदक्षाः=वक्तुकामस्याभिप्रायमालक्ष्य पूर्वमेव ब्रुवन्ति ये ते पूर्वकालिकवचनदक्षाः, 'साहसिका' सहसा-अविचार्य भाषन्ते ये ते साहसिकाः, 'लहुस्सगा'

(पडकारगा) जो तन्तु वाय-जुलाहे होते हैं (कलाया) कलाद-सुवर्ण कार -सुनार होते हैं, (कारुइज्जा) कारुकीय-शिल्पी-कारीगर होते हैं, (वचणपरा) जो ठग होते हैं, (चारिय) गुप्तचर होते हैं, (चाडुयार) चाटुकार-खुशामदी होते हैं, (नगरगोत्तिय) नगरगुप्तिक-कोतवाल होते हैं, (परियारग) परिचारक-सेवक तथा विषयभोगों मे तत्पर होते हैं, (दुट्टवाई) जो असत्पक्ष को ग्रहण करने वाले होते हे, (सूयग) सूचक-चुगल खोरहोते हे, (अणवलभणिया) मेरा ऋण अदा करो इस प्रकार जिस देनदार से साहूकार कहता है वे ऋग बलभणित कर्जदार व्यक्ति कहने वाले के अभिप्राय को लक्षित करके पहिले से ही बोलने वाले (पुव्वकालियवयणदच्छा) पूर्वकालिक वचनदक्ष मनुष्य, (साहसिया) विना विचारे बोलने वाले मनुष्य, (लहुस्सगा) अपने

પોતાનુ ગુજરાન ચલાવે છે, "पडकारगा" જે વણકર હોય છે, "कलाया" સોની હોય છે, "कारुइज्जा" કારીગર હોય છે, "वचणपरा" ઠગ હોય છે, "चारिय" ગુપ્તચર હોય છે "चाडुयार" ચાટુકાર-ખુશામતીયો હોય છે "नगरगोत्तिय" નગરગુપ્તિક-કોટવાળ હોય છે, "परियारग" પરિચારક-સેવક તથા વિષય ભોગોના ગુલામ હોય છે, જે અસત્ય પક્ષને ગ્રહણ કરનાર હોય છે,"दुट्टवाई" જે અસત્યપક્ષને ગ્રહણ કરનાર હોય છે, "सूयग" સૂચક-ચુગલીખોર હોય છે, "अणवलभणिया" 'મારૂ ઋણ ભરપાઇ કરો' તે પ્રમાણે જે દેણદારને શાહુકાર કહે છે તે ઋણબલ ભણિત દેણદાર વ્યક્તિ, કહેનારના અભિપ્રાયને લક્ષિત કરીને પહેલેથીજ બોલી જનાર હોય છે, "पुव्व कालिय वयणदच्छा" પૂર્વે આપેલ વચનથી બંધાયેલો મનુષ્ય, "साहसिया" વિચાર્યા વિના બોલનાર મનુષ્ય, "लहुस्सगा" પોતાની જાતને તુચ્છ માનનાર

प्रत्यक्षाभावे व्याप्तिग्रहस्याप्यभावात् महानसादौ सत्येव पर्वतादौ वह्निरनुमीयते। वह्निधूमयो प्रत्यक्षेण साहचर्यग्रहे प्रत्यक्षप्रमाणवादिभिरनुमानस्यानङ्गीकृतत्वाच्च। नाप्यागमगम्यस्तस्य परस्परविरुद्धत्वेनाऽप्रामाण्यात्। नाप्युपमानमत्रप्रसज्यते, असत्पदार्थे केनोपमीयते। इति। एवं च जीवस्याऽसिद्धत्वात् कोऽपि इह=मनुष्यलोके परे वा 'लोए' लोके=देवादिलोके वा 'न जाइ' न याति=न गच्छति, 'न य' न च 'किंचिवि' किञ्चिदपि 'पुन्नपाव, पुण्यपाप=पुण्यपापरूप कर्म 'फुसइ'

धर्मता आदि का ग्रहण होना आवश्यकीय होता है इसके विना अनुमान नहीं होता है। जब उस विषय मे प्रत्यक्षप्रमाण ही प्रवृत्त नहीं होता है तब साध्य साधन की व्याप्ति का ग्राहक वहा वह कैसे हो सकता है। महानस आदि मे साध्य साधन की व्याप्ति पहिले प्रत्यक्ष से ग्रहण कर लेने पर ही तो अनुमाता पर्वत आदि मे वह्नि का अनुमान करता है। आगम प्रमाण से भी "जीव है" यह बात नहीं कही जाति है, कारण आगमों में एकमतता नहीं है। परस्पर विरुद्धार्थ का–एक दूसरे आगम से विरोधी तत्त्व का–ये प्रणयन करते हैं, इसलिये इनमें प्रमाणता ही नहीं है। उपमान प्रमाण की यहा प्रवृत्ति इसलिये नहीं हो सकती है कि जब 'जीव' पदार्थ ही असत् है तब वह उपमेय कैसे हो सकता है। इस तरह जीव नामक पदार्थ की असिद्धि होने पर (न जाइ इह परे वा लोए) कोई भी इस मनुष्यलोक में अथवा दूसरे देवादिलोक में नहीं जाता है, और (न य किंचि वि फुसइ पुण्णपाव) न वह पुण्य एव पापरूप कर्म को छूता है, अर्थात्–जब जीव नाम का कोई पदार्थ ही

સાધનની વ્યાપ્તિનુ અને પક્ષધર્મતા આદિનુ ગ્રહણ થવું આવશ્યક હોય છે, તેના વગર અનુમાન થતું નથી જો તે વિષયમા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ જ પ્રવૃત્ત હોતું નથી તો સાધ્ય સાધનની વ્યાપ્તિનો ગ્રાહક ત્યા તે કેવી રીતે થઇ શકે। મહાનસ આદિમા સાધ્ય સાધનની વ્યાપ્તિ પહેલા પ્રત્યક્ષ રીતે ગ્રહણ કરી લીધા પછી તો અનુમાન કરનાર પર્વત આદિમા અગ્નિનુ અનુમાન કરે છે આગમોનુ પ્રમાણ આપીને પણ "જીવ છે" તે વાત કહી શકાય તેમ નથી, કારણ કે આગમોમા એક મતતા નથી પરસ્પરથી વિરુદ્ધ અર્થનુ–એક બીજાથી વિરોધી તત્ત્વનુ–તેઓ વર્ણન–પ્રતિપાદન કરે છે, તે કારણે તેમનામા પ્રમાણભૂતતા નથી ઉપમાન પ્રમાણની અહીં પ્રવૃત્તિ તે કારણે થઇ શકતી નથી કે જો "जीव" પદાર્થ જ અસત્ હોય તો તે ઉપમેય કેવી રીતે થઇ શકે। આ રીતે જીવ નામના પદાર્થની અસિદ્ધિ થતા "न जाइ इह परे वा लोए" કોઇ પણ આ મનુષ્ય લોકમા અથવા બીજા દેવાદિ લોકમા જતુ નથી, અને "नय किंचि वि फुसइ पुण्णपाव" તે પુણ્ય અને પાપ રૂપ કર્મોને સ્પર્શતો નથી, એટલે કે–

हे वायजोगजुत्तं, पच य खंधे भणंति केइ, मणं मण जीविका वदंति, वाऊजीवो त्ति एवमाहंसु सरीर साइयं सनिधणं इह भवे एगभवे, तस्स विप्पणासंमि सव्वनासो त्ति एव जपंति मुसावाई ॥ सू० ४ ॥

टीका—'अवरे' अपरे=उक्तेभ्योऽन्ये 'नत्थिगवाइणो' नास्तिकवादिनः= 'नास्ति परलोकः' इति मतिर्येषा ते नास्तिका स्ते च ते वादिनः प्रत्यक्षप्रमाण वादिनश्चार्वाकाः, तथा 'वामलोगवाई' तथा वामलोकवादिनः, वाम=विरुद्ध लोक-वदन्ति ये ते तथा सतामपि लोकवस्तूनामसत्त्व प्रतिपादका शून्य वादिनः इत्यर्थः, ते हि 'भणन्ति=वदन्ति यत् 'नत्थि जीवो' नास्ति जीवः सुखदुःखादि भोक्ता तत्साधक प्रमाणाभावात्, यतो हि न तत्र प्रत्यक्ष प्रमाणमुपक्रमते चक्षुरादी न्द्रियविषयत्वात्, नाप्यनुमान तत्र प्रमाणम्, तस्य व्याप्तिपक्षधर्मताज्ञानाद्यधीनतया

तथा—'अवरे नत्थिगवाइणो' इत्यादि

टीकार्थ-(अवरे) इन पूर्वोक्त व्यक्तियों से भिन्न (नत्थिगवाइणो) जो नास्तिकवादी हैं-'परलोक नही है' इस प्रकार की जिनकी बुद्धि है ऐसे केवल एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानने वाले चार्वाक, तथा (वामलोगवाई) वामलोकवादी-शून्यवादी, ये लोक में रही हुई वस्तुओ को असतरूप से प्रदिपादित करते हैं वे (भणति) कहते है कि (नत्थिजीव) सुख, दु.ख आदि अवस्थाओं का भोक्ता जीव नाम का कोई पदार्थ नही है, कारण कि इसके साधक प्रमाणों का अभाव है प्रत्यक्षप्रमाण इसका साधक इसलिये नही होता है कि चक्षुरादिक जो इन्द्रिया है वे उसे अपना विषयभूत नही बनाती है। अनुमान से भी उसका ग्रहण नहीं होता है, क्यों कि अनुमान से साध्य और साधन की व्याप्ति का एव पक्ष

તથા—"અવરે નત્થિગવાઇણો" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"અવરે' તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોથી જુદાજ પ્રકારના 'નત્થિગવાઇણો" જે નાસ્તિકવાદી છે-"પરલોક નથી" એ પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા, ફક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણુને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા "વામલોગવાઈ" વામલોકવાદી-વામમાર્ગી, તેઓ સૃષ્ટિમા રહેલ વસ્તુઓને અસત્ રૂપે પ્રતિપાદિત કરે છે તેઓ 'ભણતિ" કહે છે કે "નત્થિ જીવો" સુખ દુ ખ આદિ અવસ્થાઓનો ભોકતા જીવ નામનો કોઈ પદાર્થ નથી, કારણ કે તે સિદ્ધ કરવા માટેના પ્રમાણોનો અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનુ સાધક તે કારણે હોતુ નથી કે ચક્ષુ આદિ જે ઈન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી નથી અનુમાનથી તેને ગ્રહણ કરી શકાતુ નથી કારણ કે અનુમાનમા સાધ્ય

प्रत्यक्षाभावे व्याप्तिग्रहस्याप्यभावात् महानसादौ सत्येव पर्वतादौ वह्निरनुमीयते। वह्निधूमयो प्रत्यक्षेण साहचर्यग्रहे प्रत्यक्षप्रमाणवादिभिरनुमानस्यानङ्गीकृतत्वाच्च। नाप्यागमगम्यस्तस्य परस्परविरुद्धत्वेनाऽप्रामाण्यात्। नाप्युपमानमत्रप्रवर्त्यते, असत्पदार्थे केनोपमीयते। इति। एवं च जीवस्याऽसिद्धत्वात् कोऽपि इह=मनुष्यलोके परे वा 'लोए' लोके=देवादिलोके वा 'न जाइ' न याति=न गच्छति, 'न य' न च 'किंचिवि' किञ्चिदपि 'पुन्नपाव', पुण्यपाप=पुण्यपापरूप कर्म 'फुसइ'

धर्मता आदि का ग्रहण होना आवश्यकीय होता है इसके विना अनुमान नहीं होता है। जब उस विषय में प्रत्यक्षप्रमाण ही प्रवृत्त नहीं होता है तब साध्य साधन की व्याप्ति का ग्राहक वहां वह कैसे हो सकता है। महानस आदि मे साध्य साधन की व्याप्ति पहिले प्रत्यक्ष से ग्रहण कर लेने पर ही तो अनुमाता पर्वत आदि मे वह्नि का अनुमान करता है। आगम प्रमाण से भी "जीव है" यह बात नहीं कही जाति है, कारण आगमों मे एकमतता नहीं है। परस्पर विरुद्धार्थ का-एक दूसरे आगम से विरोधी तत्व का-ये प्रणयन करते हैं, इसलिये इनमें प्रमाणता ही नहीं है। उपमान प्रमाण की यहा प्रवृत्ति इसलिये नहीं हो सकती है कि जब 'जीव' पदार्थ ही असत् है तब वह उपमेय कैसे हो सकता है। इस तरह जीव नामक पदार्थ की असिद्धि होने पर (न जाइ इह परे वा लोए) कोई भी इस मनुष्यलोक में अथवा दूसरे देवादिलोक में नहीं जाता है, और (न य किंचि वि फुसइ पुण्णपाव) न वह पुण्य एवं पापरूप कर्म को छूता है, अर्थात्-जब जीव नाम का कोई पदार्थ ही

साधननी व्याप्तिनु अने पक्षधर्मता आदिनु ग्रहणु थवु आवश्यक होय छे, तेना वगर अनुमान थतु नथी जो ते विषयमा प्रत्यक्ष प्रमाणु ज प्रवृत्त होतु नथी तो साध्य साधननी व्याप्तिनो ग्राहक त्या ते केवी रीते थइ शके। महानस आदिमा साध्य साधननी व्याप्ति पहेला प्रत्यक्ष रीते ग्रहणु करी लीधा पछी तो अनुमान करनार पर्वत आदिमा अग्निनु अनुमान करे छे आगमोनु प्रमाणु आपीने पणु "જીવ છે" ते वात कही शकाय तेम नथी, कारणु के आगमोमा એક મતતા નથી પરસ્પરથી વિરુદ્ધ અર્થનુ-એક બીજાથી વિરોધી તત્ત્વનુ-તેઓ વર્ણન-પ્રતિપાદન કરે છે, તે કારણે તેમનામા પ્રમાણભૂતતા નથી ઉપમાન પ્રમાણુની અહી પ્રવૃત્તિ તે કારણે થઇ શકતી નથી કે જો "जीव" પદાર્થ જ અસત્ હોય તો તે ઉપમેય કેવી રીતે થઇ શકે। આ રીતે જીવ નામના પદાર્થની અસિદ્ધિ થતા "न जाइ इह परे वा लोए" કોઈ પણ આ મનુષ્ય લોકમા અથવા બીજા દેવાદિ લોકમા જતુ નથી, અને "नय किंचि वि फुसइ पुण्णपाव" તે પુણ્ય અને પાપ રૂપ કર્મોને સ્પર્શતો નથી, એટલે કે-

हे वायजोगजुत्तं, पंच य खंधे भणंति केइ, मणं मण जीविका वदंति, वाऊजीवो त्ति एवमाहसु सरीर साइयं सनिधणं इह भवे एगभवे, तस्स विप्पणासंमि सव्वनासो त्ति एव जपंति मुसावाई ॥ सू० ४ ॥

टीका—'अवरे' अपरे=उक्तेभ्योऽन्ये 'नत्थिगवाइणो' नास्तिकवादिनः= 'नास्ति परलोकः' इति मतिर्येषा ते नास्तिका स्ते च ते वादिनः प्रत्यक्षप्रमाण वादिनश्चार्वाकाः, तथा 'वामलोगवाई' तथा -वामलोकवादिनः, वाम=विरुद्ध लोक-वदन्ति ये ते तथा सतामपि लोकवस्तूनामसत्त्व प्रतिपादका शून्य वादिनः इत्यर्थः, ते हि 'भणन्ति=वदन्ति यत् 'नत्थि जीवो' नास्ति जीवः सुखदु.खादि भोक्ता तत्साधक प्रमाणाभावात्, यतो हि न तत्र प्रत्यक्ष प्रमाणमुपक्रमते चक्षुरादी न्द्रियविषयत्वात्, नाप्यनुमानं तत्र प्रमाणम् , तस्य व्याप्तिपक्षधर्मताज्ञानाद्यधीनतया

तथा—'अवरे नत्थिगवाइणो' इत्यादि

टीकार्थ-(अवरे)इन पूर्वोक्त व्यक्तियों से भिन्न (नत्थिगवाइणो) जो नास्तिकवादी हैं-'परलोक नही है' इस प्रकार की जिनकी बुद्धि है ऐसे केवल एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानने वाले चार्वाक, तथा (वामलोगवाई) वामलोकवादी-शून्यवादी, ये लोक मे रही हुई वस्तुओं को असतरूप से प्रदिपादित करते हैं वे (भणत्ति) कहते है कि (नत्थिजीव) सुख, दु.ख आदि अवस्थाओं का भोक्ता जीव नाम का कोई पदार्थ नही है, कारण कि इसके साधक प्रमाणों का अभाव है प्रत्यक्षप्रमाण इसका साधक इसलिये नही होता है कि चक्षुरादिक जो इन्द्रिया है वे उसे अपना विषयभूत नही बनाती है। अनुमान से भी उसका ग्रहण नहीं होता है, क्यो कि अनुमान से साध्य और साधन की व्याप्ति का एव पक्ष

તથા—" अवरे नत्थिगवाइणो " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"अवरे' તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોથી જુદાજ પ્રકારના 'नत्थिगवाइणो" જે નાસ્તિકવાદી છે-" પરલોક નથી " એ પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા, ફક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા " वामलोगवाई " વામલોકવાદી-વામમાર્ગી, તેઓ સૃષ્ટિમા રહેલ વસ્તુઓને અસત્ રૂપે પ્રતિપા દિત કરે છે તેઓ ' भणत्ति " કહે છે ક " नत्थि जीवो " સુખ દુ ખ આદિ અવસ્થાઓના ભોકતા જીવ નામનો કોઈ પદાર્થ નથી, કારણ કે તે સિદ્ધ કરવા માટેના પ્રમાણોનો અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનુ સાધક તે કારણે હોતું નથી કે ચક્ષુ આદિ જે ઈન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી નથી અનુમાનથી તેને ગ્રહણ કરી શકાતુ નથી કારણ કે અનુમાનમા સાધ્ય

सुखा १ दुःखा २ अदुःखसुखा ३ चेति त्रिविधवेदनास्वभाव २, विज्ञानस्कन्धः-रूपादिविज्ञानलक्षणः ३, संज्ञास्कन्धः-संज्ञानिमित्तोऽवग्रहणात्मकप्रत्ययः ४, संस्कारस्कन्धः-पुण्यापुण्यादिधर्मसमुदायश्चेति पञ्च स्कन्धाः, एते पञ्चैव स्कन्धाः सन्ति, नान्यः कश्चित्तद्व्यतिरिक्त आत्माऽऽख्य पदार्थोऽस्ति, इति तेषां मतम्। नान्य आत्माभिधानइति बौद्धाः, ' मणच ' मनश्च मन एव जीवो येषां ते तथा मनोजीविकाः= मन आत्मवादिनो वदन्ति-इति मन आत्मवादिनो मतम् । तथा ' वाउजीवोत्ति ' वायुर्जीव इति ' आहंसु ' आहुः=केचित्, उच्छ्वासादिरूप एव जीव इति वदन्ति । प्राणवायुना सर्वक्रियासु प्रवर्तनं जायते, अतएव प्राणवायुरेव जीव इत्यर्थः । अथ तज्जीवतच्छरीरवादिमतमाह, तथाहि-'सरीरं साइयं सनिधणं'

और सस्कार ५, ये पाच स्कंध हैं। पृथिव्यादिक एवं रूपादिक ये रूप स्कंध हैं १। सुख १, दुःख, २ और सुख दुःख ३ इन त्रिविधरूप वेदना स्कंध, हैं २। रूपादिकों का विज्ञान स्वरूप, विज्ञानस्कंध है ३। यह अमुक है-यह देवदत्त है, इत्यादि-रूप से जो संज्ञाओं का ग्रहण होता है वह संज्ञास्कंध है ४। पुण्य अपुण्य आदि रूप जो समुदाय है वह सस्कार स्कंध है। ये पाच स्कंध ही हैं, इनसे भिन्न आत्मा नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं है इस प्रकार का मंतव्य बौद्धों का है। (मण च मणजीविया वयंति) जो मन को ही आत्मा मानते हैं वे मनोजीविक हैं तथा (वाऊ जीवोत्ति एवमाहंसु) कोई २ उच्छ्वास आदि रूप वायु ही जीव है ऐसा मानते हैं, इनका कहना है कि प्राण नामकवायु से ही समस्त क्रियाओं में प्रवर्तन होता है इसके विना नहीं, अतः प्राणवायु ही जीव है (सरीरं साइयं सनिधणं)

અને (૫) સસ્કાર એ પાચ સ્કંધ છે (૧) પૃથિવ્યાદિક અને રૂપાદિક તે રૂપસ્કંધ છે, (૨) સુખ, દુ ખ અને સુખદુ ખ એ ત્રણ પ્રકારનો વેદના સ્કંધ ,છે (૩) રૂપાદિકોના વિજ્ઞાન સ્વરૂપ વિજ્ઞાનસ્કંધ છે (૪) આ અમુક છે-આ દેવદત્ત છે, ઇત્યાદિ રીતે જે સંજ્ઞાઓનુ ગ્રહણ થાય છે તે સંજ્ઞાસ્કંધ છે (૫) પુન્ય અપુન્ય આદિ રૂપ જે ધર્મસમુદાય છે તે સંસ્કારસ્કંધ છે એ પાચ સ્કંધ જ છે, તે ભિન્ન આત્મા નામનો કોઈ સ્વતંત્ર પદાર્થ જ નથી, એ પ્રકારનુ બૌદ્ધોનુ મંતવ્ય છે " मण च मणजीविया वयंति " જે મનને જ આત્મા માને છે તે મનોજીવિક કહેવાય છે તથા " वाऊ जीवोत्ति एवमाहंसु " કોઈ કોઈ ઉચ્છ્વાસ આદિ રૂપ વાયુ જ જીવ છે તેમ માને છે, તેમનુ કહેવુ એવુ છે કે પ્રાણવાયુથી જ સમસ્ત ક્રિયાઓ ચાલ્યા કરે છે, તેના વિના ચલતી નથી, તેથી પ્રાણવાયુ જ જીવ છે "सरीरं साइयं सनिधणं" શરીરને જ જે

स्पृशति। जीवस्याऽसद्भावादेव न शुभाशुभकर्मबन्धनमिति भावः। अत एव 'सुकयदुक्कयाण' सुकृत दुष्कृताना=पुण्यपापानां फलमपि 'नत्थि' नास्ति जीवासत्त्वेन तत्फलस्याऽप्यसत्त्वात्। तथा 'सरीर' 'पचमहाभूइय' पञ्चमहा भौतिक=पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशमय, 'भासति' भाषन्ते। तत् कीदृश भाषन्ते इत्याह–'हेवागजोगजुत्त' हेवाकयोगयुक्तम्, हेवाकः–स्वभावस्तेन योगः–परस्पर सयोगस्तेन युक्तम्, पञ्चभूताना परस्पर सयोगो वियोगश्च स्वभावाद् भवति, न तत्र किंचिदन्यत् कर्मादि आत्मा वा कारणमस्तीति भावः। 'केई' केऽपि बुद्ध मतानुसारिणः 'पचखधे' पञ्चस्कन्धान्=रूपवेदनाविज्ञानसज्ञासस्काररूपान् भणन्ति=कथयन्ति, तत्र–रूपस्कन्ध,–पृथिव्यादयो रूपादयश्च १, वेदनास्कन्धः–

नही है तो मर कर वही पुनः अपने पुण्य पापकर्मो के अनुसार मनुष्य लोक मे अथवा देवादिलोक में जन्मता है, यह कथन असत्य है। तात्पर्य इसका यही है जीव का अस्तित्व न होने से उसके (नत्थिफल सुकयदुक्कयाण) शुभ और अशुभ कर्मो का बध नहीं होता है। जब शुभ अशुभ कर्मो का बध ही नहीं होता है तब उनके फल का भी अभाव ही है। तथा (पचमहाभूइय सरीर भासति) यह जो शरीर है वह पृथिवी, अप्, तेज वायु और आकाश, इन पाचभूत स्वरूप है। (हेवाग जोगजुत्त) पाच भूतों का यह पारस्परिक सयोग अथवा वियोग स्वभाव से ही होता रहता है। इसमे न तो कोई कर्म ही कारण है और न आत्मा ही। (केई पच य खधे भणति) कितनेक वादी बौद्ध–सिद्धान्तमतानुयायी–ऐसा कहते है कि रूप १, वेदना २, विज्ञान ३, सज्ञा ४,

જો જીવ નામનો કોઈ પદાર્થ જ ન હોય તો તે મરીને પોતાના પુન્ય પાપ કર્મો પ્રમાણે મનુષ્ય લોકમા અથવા દેવાદિ લોકમા જન્મે છે તે કથન અસત્ય ઠરે છે કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે જો જીવનુ અસ્તિત્વ ન હોય તો તેના "नत्थि फल सुकयदुक्कयाण" શુભ અને અશુભ કર્મોનો બધ બધાતો નથી જો શુભાશુભ કર્મોનો બધ જ બધાતો ન હોય તો તેના ફળનો પણ અભાવ જ હોય તથા "पचमहाभूइय सरीर भासति" આ જે શરીર છે તે પૃથિવી, અપ્ (જળ), તેજ, વાયુ અને આકાશ, એ પાચ ભૂત સ્વરૂપ છે "हेवागजोगजुत्त" પાચ ભૂતોનો આ પારસ્પરિક સબધ અથવા વિયોગ સ્વભાવથી જ થયા કરે છે તેમા આત્મા કે કર્મ કારણરૂપ નથી

"केई पचेय खधे भणति" કેટલાક વાદમા માનનારા-બૌદ્ધ સિદ્ધાન્ત મતાનુયાયી એવું કહે છે કે (૧) રૂપ, (૨) વેદના, (૩) વિજ્ઞાન, ( ) સજ્ઞા

नत्थि किं च न नेरइयतिरिक्खमणुयजोणी, न देवलोगो वा अत्थि सिद्धिगमणं, अम्मापियरो नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो, पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू य, अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसओ, धम्माधम्मफलं वि न अत्थि किंचि बहुय वा थोवं वा तम्हा एवं जाणिऊणं जहा सुबहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टेह नत्थिकाइ किरिया वा एवं भणंति नत्थिकवाइणो वामलोगवाई ॥ सू० ॥५॥

टीका—यस्मात् आत्माऽपि नास्ति, शुभाशुभकर्माणि तत्फलान्यपि च न सन्ति 'तम्हा' तस्मात् 'दाणवयपोसहण' दानव्रतपोषधानां=तत्र दानम्= अभयदानसुपात्रदानादिकम्, 'वय' व्रतानि = स्थूलप्राणातिपातविरमणादीनि पोषधः=पोष=धर्मस्य पुष्टिं धत्ते=करोतीति पोषधः=अष्टमीचतुर्दशीपूर्णिमाऽमावास्यापर्वदिनाऽनुष्ठेय आहारादिपरित्याग पूर्वकोव्रतविशेषः, उक्त च—

आहार तनुसत्काराऽब्रह्मसावद्यकर्मणाम् ।
त्याग पर्वचतुष्टय्या तद्विदुः पौषधव्रतम् ॥

फिर भी—'तम्हा दाणवयपोसहाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—आत्मा शुभाशुभकर्म और इनके फल ये सब कुछ भी नहीं हैं (तम्हा) इसलिये (दाणवयपोसहाण) दान—अभयदान, सुपात्रदान आदि, व्रत—स्थूलप्राणातिपात विरमण आदि, (पोसह) पोषध—अष्टमी चतुर्दशी, पूर्णिमा एव अमावस्या इन पर्व दिनों में आहार आदि को परित्याग पूर्वक अनुष्ठेयव्रत विशेष, कहा भी है—

વળી—"तम्हा दाणवयपोसहाण' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આત્મા શુભાશુભ કર્મ અને તેમના ફળ તે બધુય નથી "तम्हा" તેથી "दाणवयपोसहाण" દાન—અભયદાન, સુપાત્રદાન આદિ, વ્રત—પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ "पोसह" પૌષધ—આઠમ, ચૌદશ, પૂનમ, અમાસ આદિ આહાર આદિના પરિત્યાગ પૂર્વકનુ એક અનુષ્ઠાન કહ્યુ છે કે—

"आहार, तनुसत्कारा—ऽब्रह्म—सावद्यकर्मणाम् ।
त्यागः पर्वचतुष्टयां, तद्विदु पौषधव्रतम् ॥ १"

शरीर सादिक सनिधनम्, शरीरम् आदिसहितम् उत्पत्तिमत्त्वात्, सनिधन-सविनाशम् अन्तवत्त्वात्, 'इह भवे' अस्मिन् भवे प्रत्यक्ष जन्म, तस्मात् 'एगे भवे' एक एव भवः=जन्म नान्यो लोकः, 'तस्स विप्पणासम्मि' तस्य विप्रणाशे सति= तस्य शरीरस्य विनाशे सति 'सव्वनासोत्ति' सर्वनाशइति नाऽस्माऽवशिष्यते नाऽपि च शुभाशुभरूपंकर्म। एव=उक्तरीत्या 'जपति' जल्पन्ति=कथयन्ति तज्जीवतच्छरीरवादिनः। नास्तिकादारभ्य तज्जीवतच्छरीरवादिपर्यन्ताः सर्वे 'मुसावाई' मृषावादिनः सन्ति॥ सू०४॥

पुनरप्याह-'तम्हा' इत्यादि।

मूलम्—तम्हा दाणवयपोसहाणं तवसंजमबंभचेरकल्लाणमाईयाण नत्थिफल, नवि य पाणवहे अलियवयणं न चेव चोरक्ककरणं परदारसेवण वा सपरिग्गहपावकम्मकरणं पि

शरीर को ही जो जीव मानने वाले हैं उनका ऐसा कहना है कि यह उत्पत्तिमान् होने से सादि है और अन्तवाला होने से विनाशसहित है। (इहभवे एगे भवे) इस भव मे जो इसका जन्म है वही इसका भव है, इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा इसका भव-जन्म नहीं है, क्यों कि (तस्स विप्पणासम्मि सव्वणासोत्ति) जब इस शरीर का विनाश हो जाता है तब इस जीव का सर्वनाश हो जाता है फिर इसका अस्तित्व ही नही रहता है, शुभ और अशुभ कर्म कुछ भी नहीं रहते हैं, (एव) इस तरह नास्तिक वादी से लेकर शरीर को ही जीव मानने वाले ये सब ही (मुसावाई) मृषावादी (जपति) कहते है। अर्थात् ये सब मृषावादी हैं॥ सू-४॥

જીવ માનનારા છે તેમનુ એવુ કહેવુ છે કે તે ઉત્પત્તિવાળુ હોવાથી સાદિ (આદિ સહિતનુ) છે અને અન્તવાળુ હોવાથી વિનાશ યુક્ત (સાન્ત) છે "इह भवे एगे भवे" આ જન્મમા જે તેનો જન્મ છે, તે જ તેનો ભવ છે, તે ઉપરાત બીજો કોઈ પણ તેનો ભવ—જન્મ નથી, કારણ કે "तस्स विप्पणासम्मि सव्वणासोत्ति" જ્યારે આ શરીરનો નાશ થાય છે ત્યારે આ જીવનો પણ સર્વનાશ થઇ જાય છે-પછી તેનુ અસ્તિત્વ જ રહેતુ નથી, શુભ અને અશુભ કર્મ જેવુ કઇ પણ રહેતુ નથી "एव" આ રીતે નાસ્તિક વાદીથી લઈને શરીરને જ જીવમાનનાર તે બધાને "मुसावाई" મૃષાવાદી "जपति" કહે છે એટલે કે તે બધા અસત્ય વદનાર છે ॥ સૂ-૪॥

युक्ता। यतो हि स्वभावत एव कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यते, न तत्र कारणविशेष नियम माहात्म्यमन्यथा कथ चेतनान्मनुष्यादेश्चेतन यूकामत्कुणादिक चेतनादचेतन मूत्र-पुरीषादिकम्, अचेतनात् काष्ठाच्चेतन घुणकीटादिकम्, अचेतनात्काष्ठादचेतन चूर्णादिक च जायते। नहि अचेतनस्य चेतनकारणता चेतनस्य चाचेतन कारणता युक्ता! तस्माज्जन्यजनक भावमात्रमेवोत्पद्यमाना नामर्थानामस्ति नान्यो मातापितृपुत्रादि विशेष इति। मृषावादिता तु जन्यजनकभावस्य सर्वेषु तुल्यत्वेऽपि मातापित्रोरत्य-

स्थान में गमन करना नही है, (अम्मा पियरो नत्थि) माता पिता भी नही है-उत्पत्ति मात्र कारणता को लेकर मातृत्व पितृत्व की कल्पना युक्त नहीं है क्यों कि स्वभाव से ही चाहे जिससे चाहे जो उत्पन्न हो जाता इसमें कारणविशेष के नियम की कोई महत्ता नहीं है। यदि ऐसी बात मानी जावे तो फिर जो चेतन मनुष्यादि से चेतन यूका मत्कुण आदि उत्पन्न होते देखे जाते है चेतन से अचेतन मूत्र पुत्र पुरिप आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन घुण कीट आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन काष्ठ से अचेतन चूर्ण आदि होते देखे जाते हैं सो ये सब कैसे उत्पन्न हो सकेंगे, क्यों कि अचेतन चेतन को चेतन के प्रतिकार णता नहीं होती है और चेतन को अचेतन के प्रतिकाणता नही होती है. इसलिये उत्पन्नमान पदार्थो में केवल जन्य जनक सबध मात्र ही सापेक्ष होता है-मातृत्व पितृत्व आदि सबध विशेष नही। इस प्रकार के कथन मे भी मृपावादिता इस प्रकार से आती है यद्यपि जन्य जनक

સિદ્ધિસ્થાનમા ગમન કરવાનુ નથી, "अम्मापियरो नत्थि" માતા પિતા પણ નથી,-ઉત્પત્તિમાત્ર કારણતાને લઈને માતૃત્વ પિતૃત્વની કલ્પના યોગ્ય નથી કારણ કે સ્વભાવથી જ જે ઇચ્છે છે તે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે-તેમા કોઈ કારણ વિશેષના નિયમનુ મહત્વ નથી જો એવી વાત માની લેવામા આવે તો પછી ચેતન મનુષ્ય આદિથી ચેતન જૂ માકડ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, ચેતનથી અચેતન મૂત્ર, મળ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી ચેતન કીડા આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી અચેતન લાકડાનો વહેર આદિ થતા જોવામા આવે છે તે બધુ કેવી રીતે ઉત્પન્ન થાય? કારણ કે અચેતનને ચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી અને ચેતનને અચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી, તેથી ઉત્પન્ન થતા પદાર્થોમા કેવળ જન્ય જનક સબધ જ સાપેક્ષ થાય છે-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ વિશિષ્ટ સબધ નહીં તે પ્રકારના કથનમા પણ મૃષાવાદિતા એ રીતે આવે છે જો કે જન્ય

रूपत्वे जीवरूपत्वमपि स्पष्टमेव स्यात्, स्वभावत्वेन सर्वेषामेकरूपत्वात् तथा च एकस्मिन् कार्यकारणभावस्य निरूपणाऽसम्भवान्नरकादिविचित्रता निष्कारणा स्यात् न च किमपि निष्कारण भवति, तथा सति घटपटादेरपि निष्कारणता स्यादित्येतेषा मृषावादित्व सुव्यक्तमेव। 'न देवलोगो वा अत्थि' न देवलोको वाऽस्ति। 'नय अत्थि सिद्धिगमण' न चास्ति सिद्धिगमनम्। 'अम्मापियरो नत्थि' अम्मापितरौ न स्तः, उत्पत्तिमात्रकारणत्वेन मातापितृत्व कल्पना न

एक रूप ही हैं, तथा प्राणातिपात आदि से जनित कर्म ये भी सब स्वभावरूप हैं। इस प्रकार सब में एक स्वभावरूपता मानने पर इन प्राणातिपात आदिकों मे जीवरूपता की प्रशक्ति आ जाती है, क्यों कि सब में भी एक स्वभावरूपता का सद्भाव पाया जाता है। इस तरह होने पर किसी एक मे भी कार्यकारण भाव का निरूपण असभव बन जाता है, अतः नरकादिरूप विचित्रता निष्कारणक ठहरती है, परन्तु विचार करने पर यह विचित्रता निष्कारणक तो है नहीं। यदि इसे निष्कारणक माना जावे तो घट पट आदि रूप जो यह पदार्थो मे विचित्रता है उसे भी अथवा घट पट आदि जो पदार्थ है उन्हें भी निष्कारणक ही मानना पड़ेगा परन्तु ये सब निष्कारणक नहीं हैं,-सकारणक हैं, इस तरह सकारणक होने पर भी इन्हें निष्कारणक कहना, असत्यभाषण ही है, और यह इनका इस रूप से स्पष्ट ही है। इसी तरह (न देवलोगो वा अत्थि) देवलोक नहीं है, (न य अत्थि सिद्धिगमण) सिद्धि

રૂપ જ છે, તથા પ્રાણાતિપાત આદિ અને પ્રાણાતિપાત આદિ વડે ઉપાર્જિત કર્મ એ બધુ સ્વભાવરૂપ છે આ રીતે બધામા સ્વભાવરૂપતા માની લેવામા આવે તો તે પ્રાણાતિપાત આદિમા જીવરૂપતાની પ્રસક્તિ આવી જાય છે, કારણ કે સૌમા એક સ્વભાવરૂપતાનો સદ્ભાવ જણાય છે આમ હોય તો કોઇ એકમા પણ કાર્યકારણ ભાવનુ નિરૂપણ અસભવિત બની જાય છે, એ રીતે તો નરકાદિરૂપ વિચિત્રતા નકામી ઠરે છે, પણ વિચાર કરવામા આવે તો તે વિચિત્રતા નકામી તો નથી જો તેને નકામી માનવામા આવે તો પદાર્થોમા ઘટ-ઘડો, પટ આદિરૂપ જે વિચિત્રતા છે તેને પણ અથવા ઘટ પટ આદિ જે પદાર્થો છે તેમને પણ નકામા માનવા પડશે, પણ તે બધા નિષ્કારણ-નકામા-નથી, સકારણક છે આ રીતે સકારણક હોવા છતા પણ તેને નિષ્કારણક કહેવી તે અસત્યભાષણ જ છે અને તે વાત ઉપર સમજાવ્યા પ્રમાણે સ્પષ્ટ જ છે એ જ પ્રમાણે "न देवलोगो वा अत्थि" દેવલોક નથી, "न य अत्थि सिद्धिगमण"

युक्ता। यतो हि स्वभावत एव कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यते, न तत्र कारणविशेष नियम माहात्म्यमन्यथा कथ चेतनान्मनुष्यादेश्चेतन यूकामत्कुणादिक चेतनादचेतन मूत्रपुरीषादिकम्, अचेतनात् काष्ठाच्चेतन घुणकीटादिकम्, अचेतनात्काष्ठादचेतन चूर्णादिक च जायते। नहि अचेतनस्य चेतनकारणता चेतनस्य चाचेतन कारणता युक्ता। तस्माज्जन्यजनक भावमात्रमेवोत्पद्यमाना नामर्थानामस्ति नान्यो मातापितृपुत्रादि विशेष इति। मृषावादिता तु जन्यजनकभावस्य सर्वेषु तुल्यत्वेऽपि मातापित्रोरत्य-

---

स्थान में गमन करना नहीं है, (अम्मा पियरो नत्थि) माता पिता भी नहीं है-उत्पत्ति मात्र कारणता को लेकर मातृत्व पितृत्व की कल्पना युक्त नहीं है क्यों कि स्वभाव से ही चाहे जिमसे चाहे जो उत्पन्न हो जाता इसमें कारणविशेष के नियम की कोई महत्ता नहीं है। यदि ऐसी बात मानी जावे तो फिर जो चेतन मनुष्यादि से चेतन यूका मत्कुण आदि उत्पन्न होते देखे जाते है चेतन से अचेतन मूत्र पुत्र पुरिष आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन घुण कीट आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन काष्ठ से अचेतन चूर्ण आदि होते देखे जाते है सो ये सब कैसे उत्पन्न हो सकेंगे, क्यों कि अचेतन चेतन को चेतन के प्रतिकारणता नहीं होती है और चेतन को अचेतन के प्रतिकाणता नहीं होती है. इसलिये उत्पद्यमान पदार्थों में केवल जन्य जनक सवध मात्र ही सापेक्ष होता है-मातृत्व पितृत्व आदि सबध विशेष नहीं। इस प्रकार के कथन में भी मृषावादिता इस प्रकार से आती है यद्यपि जन्य जनक

સિદ્ધિસ્થાનમા ગમન કરવાનુ નથી, "अम्मापियरो नत्थि" માતા પિતા પણ નથી,-ઉત્પત્તિમાત્ર કારણતાને લઇને માતૃત્વ પિતૃત્વની કલ્પના યોગ્ય નથી કારણ કે સ્વભાવથી જ જે ઇચ્છે છે તે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે-તેમા કોઈ કારણ વિશેષના નિયમનુ મહત્વ નથી જો એવી વાત માની લેવામા આવે તો પછી ચેતન મનુષ્ય આદિથી ચેતન જૂ માકડ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, ચેતનથી અચેતન મૂત્ર, મળ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી ચેતન કીડા આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી અચેતન લાકડાનો વહેર આદિ થતા જોવામા આવે છે તે બધુ કેવી રીતે ઉત્પન્ન થાય? કારણ કે અચેતનને ચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી અને ચેતનને અચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી, તેથી ઉત્પન્ન થતા પદાર્થોમા કેવળ જન્ય જનક સબધ જ સાપેક્ષ થાય છે-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ વિશિષ્ટ સબધ નહીં તે પ્રકારના કથનમા પણ મૃષાવાદિતા એ રીતે આવે છે જો કે જન્ય

न्तहितसाधनत्वेन विशेषत्वात्। स्वभाववाद निरूप्य नियतिवादमाह—नापि 'पुरिसकारो' पुरुषकार उद्योगो नास्ति, भाग्याधीनसकलार्थसिद्धेः', उद्योगस्य सुखादिसाधनत्वे सति कोऽपि जगतीतले दुःखी स्यात्, दृश्यन्ते हि उद्योगिनो दुःखिनो बहव इति न पुरुषकारोऽर्थ साधनमिति भावः।

अस्य मृषात्व तु सिद्धमेव लोके अग्रे समुपस्थितस्यापि भोज्यस्य नहि हस्तोद्योगमन्तरा भोजन सम्पद्यते अतएव कीटेष्वपि भोज्यानयनादौ प्रवृत्तिर्दृश्यते इत्याकीटप्रसिद्धस्य पुरुषकारस्यापलापेन प्रमाणातीत नियतिमतस्वीकारात्। 'पञ्च-

भाव समस्त पदार्थों में तुल्यरूप में है फिर भी मातृत्व पितृत्व सबध माता पिता मे अत्यन्त हित के साधककर्त्ता होने से एक विशेष सबध है।

अब सूत्रकार स्वभाववादका निरूपण कर नियतिवाद का निरूपण करते हैं-(न वि अत्थि पुरिसकारो) सकल कार्यों की सिद्धि एक भाग्य के ही आधीन होती है इसलिये उद्योग नामकी कोई वस्तु नहीं है। यदि उद्योग को सुखादि कार्य साधक माना जावे तो दुनिया मे कोई व्यक्ति दुःखी नहीं होना चाहिये परन्तु ऐसा नही है–अनेक उद्योगी दुःखी देखे जाते है, इसलिये पुरुषार्थ–अर्थ साधक नही होता हैं। भाग्य ही अर्थ साधक है ऐसा नियतिवाद भी मृषावादरूप इसलिये है कि हम लोक में यह प्रत्यक्ष में देखते हे कि आगे रखा हुआ भी भोजन जबतक हस्तोद्योगरूप पुरुषार्थ से सबधित नही किया जाता है तबतक वह मुँह में नहीं आता है। इसलिये कीट आदि में भी अपने भोज्य पदार्थ के पदार्थ को लाने रूप पुरुषार्थ की प्रवृत्ति देखी जाती है। इस

જનક ભાવ જો કે સમસ્ત પદાર્થોમા તુલ્યરૂપે છે છતા પણ માતૃત્વ પિતૃત્વ સબધ માતા પિતામા અત્યત હિતનો સાધક–કર્તા હોવાથી એક વિશિષ્ટ સબધ છે

સ્વભાવવાદનુ નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર નિયતિવાદનુ નિરૂપણ કરે છે—"न वि अत्थि पुरिसकारो' સઘળા કર્મોની સફળતા એક માત્ર ભાગ્યને જ આધીન હોય છે, તેથી ઉદ્યોગ નામની કોઈ વસ્તુ નથી જો ઉદ્યોગને સુખાદિની પ્રાપ્તિનુ સાધન માનવામા આવે તો દુનિયામા કોઈ જીવ દુ ખી હોવો જોઈએ નહી, પણ એવી પરિસ્થિતિ હોતી નથી–અનેક ઉદ્યોગી જીવો પણ દુ ખી દેખાય છે, તેથી પુરૂષાર્થ, અર્થસાધક નથી ભાગ્ય જ અર્થસાધક છે એવો મત ધરાવતો નિયતિવાદ પણ એ કારણે મૃષાવાદ છે કે આપણી નજર સમક્ષ મૂકેલુ ભોજન પણ જ્યા સુધી હાથ વડે ઉદ્યોગ – પુરૂષાર્થ ન કરવામા આવે ત્યા સુધી મોમા જતુ નથી તે કારણે જ તુઓમા પણ પોતાના ભોજન માટેના પદાર્થો લાવવાના પુરૂષાથની પ્રવૃત્તિ જોવા મળે છે આ પ્રમાણે ...મા

क्खाणरवि नत्थि ' प्रत्याख्यान सावद्यकर्मनिवृत्तिलक्षणमपि नास्ति धर्मस्याभावे तत्साधनस्य प्रत्याख्यानस्याप्यभावः । अस्य मृषात्व, सर्वज्ञ वचनविरोधात् । ' न वि अत्थि ' नापि च स्तः ' कालमच्चू ' कालमृत्यू=काल =भूतभविष्यद् वर्तमान लक्षणः कालः मृत्यु =मरण च । अथवा नापि चास्ति कालमृत्युः=काले=आयुष्यकर्मदलिकक्षयाऽवसरे मृत्युर्मरणम्। 'अरिहता' तथा अर्हन्तस्तीर्थकराः 'चक्कवट्टी' चक्रवर्तिनः=बलदेवा वासुदेवा वा न सन्ति प्रमाणाभावात् । नापि सन्ति ' केइ ' केऽपि–गौतमादय , ' रिसओ ' ऋषयः=शमदमसयमाद्यनुष्ठानपरायणाः ऋषयो

तरह कीटतक मे प्रसिद्ध पुरुषार्थ का अपलाप कर केवल प्रमाणातीत नियतिवाद स्वीकारार्ह कैसे हो सकता है। पुरुपार्थ का त्यागकर इसकी स्वीकृति से तो मृपावादिता ही इसमे आती है। (पच्चक्खाणमवि नत्थि) सावद्यकर्मों से निवृत्ति होनी इसका नाम प्रत्याख्यान है। यह कहना कि धर्म के अभाव मे धर्म के साधनभूत प्रत्याख्यान का भी अभाव है। सो यह कथन भी मृपावादरूप इसलिये है कि इसमें सर्वज्ञ के वचन से विरोध आता है। तथा (न वि अत्थि कालमच्चू य) इस प्रकारकी मान्यता कि–भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल नही है, मरण भी नहीं है, अथवा आयुकर्म के दलिकों के क्षय होने के अवसर में भी मरण नहीं होता है, (अरिहता चक्कवट्टी, बलदेवा वासुदेवा नत्थि) अर्हन्त–तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव ये सब प्रमाण के अभाव से कोई भी नही हुए हैं और (नेवत्थि के इरिसओ) न गौतम आदि ऋषि ही हुए है, क्यों कि–शम, दम, सयम आदि अनुष्ठानों में पराय-

---

પણ પ્રસિદ્ધ પુરૂષાર્થનુ આરોપણ કર્યા પછી પ્રમાણાતીત નિયતિવાદ કેવી રીતે સ્વીકાર્ય બની શકે ? પુરૂષાર્થનો ત્યાગ કરીને તેની સ્વીકૃતિ કરવામા તો મૃષા વાદિતા જ રહેલ છે " पच्चक्खाणमवि नत्थि " સાવદ્ય કર્મો–પાપકર્મોથી નિવૃત્ત થવુ તેનુ નામ પ્રત્યાખ્યાન છે એમ કહેવુ કે ધર્મના અભાવે ધમના સાધનરૂપ પ્રત્યાખ્યાનનો પણ અભાવ છે એવુ કથન પણ તે કારણે મૃષાવાદરૂપ છે કે તેમા સર્વજ્ઞના વચનોનો વિરોધ થાય છે તથા " न वि अत्थि कालमच्चू य" આ પ્રકારની માન્યતા કે ભૂત, ભવિષ્ય અને વર્તમાનકાળ નથી, મરણ પણ નથી, અથવા આયુ કર્મના સમૂહનો ક્ષય થવાનો અવસર આવે તો પણ મરણ થતુ નથી, "अरिहता चक्कवट्टी, बलदेवा वासुदेवा नत्थि" પ્રમાણના અભાવે, અર્હન્ત–તીર્થકર, ચક્રવર્તી બળદેવ, વાસુદેવ વગેરે કોઈ પણ થયા નથી અને" नेवत्थि के इरिसओ " ગૌતમ આદિ ઋષિ થયા નથી, કારણ કે–શમ, દમ સયમ આદિ અનુષ્ઠાનોમા પરાયણ હોય તે જ વ્યક્તિને ઋષિ

विवक्षिताः किन्तु शमदमादेर्वस्तुत्वाभावात्त तस्यानुष्ठानरता ऋषित्वसिद्धिः। नेद सत्य, शास्त्राध्ययनशिष्यशिक्षापरम्पराऽनादिमत्वात्तस्यार्हदाद्यभावे उच्छेद प्रसङ्गात्। 'धम्माधम्मफल वि' धर्माधर्मफलमपि = देवलोकनरकादिप्राप्तिलक्षणं किञ्चित् 'बहुय' बहुकम्=अधिक 'थोव वा' स्तोकमल्प नास्ति, धर्माधर्मयो रप्रत्यक्षत्वेन वस्तुत्वाभावात् 'तम्हा' तस्मात् न किमपि सुकृतादिकमिति एव 'जाणिऊण' ज्ञात्वा 'जहा' यथा=येन केनापि प्रकारेण सुबहु=अत्यन्तम् 'इंदियाणुकूलेसु' इन्द्रियानुकूलेषु=श्रोत्रादीन्द्रियप्रियेषु 'सव्वविसएसु' सर्वविषयेषु=

णभूत व्यक्ति ही ऋषि कहलाते हैं, किन्तु शम, दम आदि ही जब वस्तु भूत-वास्तविक-नहीं है तो फिर इनके अनुष्ठान करने वलो में ऋषित्व की सिद्धि कैसे हो सकती है-मृषावादरूप ही है-सत्य नहीं है, कारण-शास्त्राध्ययन, शिष्यशिक्षा आदि का जो यह अनादिकाल से परम्परारूप से प्रवाह चला आ रहा है यह यदि तीर्थंकर आदि न हुए होते तो उच्छेद को प्राप्त हो जाता। इसी तरह से (धम्माधम्म फल वि न अत्थि किंचिबहुय वा थोव वा) जो और यह कि-" धर्मका फल स्वर्गादि की प्राप्ति और अधर्म का फल नरक आदि की प्राप्ति होना यह न थोड़े रूप में है और न बहुत रूप में है, क्यों कि धर्म और अधर्म ये अप्रत्यक्षभूत हैं अतः इनमें वस्तुतः-अर्थ क्रिया कारित्व का अभाव है। (तम्हा) इसलिये जब पुण्यपाप आदि कोई वस्तुभूत पदार्थ हैं ही तब (एव जाणिऊण) ऐसा समझकर (जहा) जिस किसी भी तरह से (सुबहु इंदियाणुकूलेसु) इन्द्रियो को अत्यन्त प्रिय लगने वामे (सव्वविसएसु)

કહેવાય છે, પણ શમ, દમ આદિ જ જો વાસ્તવિક ન હોય તો તેનુ અનુષ્ઠાન કરનારમા ઋષિત્વની સિદ્ધિ કેવી રીતે સભવી શકે છે-એ તો મૃષાવાદ રૂપ જ છે-સત્ય નથી, કારણ કે શાસ્ત્રાધ્યયન, શિષ્યશિક્ષા આદિનો જે પ્રવાહ અનાદિકાળથી પરપરા રૂપે ચાલ્યો આવે છે તે જો તીર્થંકર આદિ થયા ન હોત તો ઉચ્છેદ-નાશ પામ્યો હોત એ જ પ્રમાણે "धम्माधम्मफल वि न अत्थि किंचि-बहुय वा थोव वा" બીજી આ પ્રકારની માન્યતા કે "ધર્મનુ ફળ સ્વર્ગાદિની પ્રાપ્તિ અને અધર્મનુ ફળ નરકાદિથી પ્રાપ્તિ તે થોડા કે વધારે પ્રમાણમા અસ્તિત્વ ધરાવતુ નથી, કારણ કે ધર્મ અને અધર્મ અપ્રત્યક્ષભૂત છે તેથી તેમનામા વસ્તુત્વ-અર્થ ક્રિયા કારિત્વનો અભાવ છે "तम्हा" તેથી જો પુન્યપાપ આદિ કોઇ વસ્તુભૂત પદાર્થ છે જ નહીં "एव जाणिऊण" એવુ સમજીને 'जहा" જે કોઈ પણ પ્રકારે "सुबहु इदियाणुकूलेसु" ઇન્દ્રિયોને અત્યન્ત પ્રિય લાગે તેવા "सव्वविसएसु" શબ્દાદિ સઘળા વિષયોમા

शब्दादिषु 'वट्टेह' वर्तध्व शब्दादीन् सर्वविषयान् यथेच्छमुपभुङ्ध्वम्, 'नत्थि' नास्ति 'काइ' काचिदपि 'किरिया अकिरिया वा' क्रिया = तत्र – सत्क्रिया शास्त्रोक्तानुष्ठानरूपा। अक्रिया=असत्क्रिया सावद्यकर्मानुष्ठानरूपा, आस्तिक कल्पितेनाप्रमाणत्वात्, एवं 'नत्थियवादिणो' नास्तिकवादिनः 'वामलोगवादी' वामलोकवादिनश्च भणन्ति=कथयन्ति ॥ सू० ५ ॥

पुनरपि तानेवाह—'इमपि' इत्यादि—

मूलम्—इमंपि विइय कुदसणं असब्भाववाइणो पण्णवेंति मूढा संभूओ अडकाओ लोगो सयभुणा सय च निम्मिओ एवं एय अलिय पय पति॰॥ सू० ६ ॥

टीका—इदमनुपदवक्ष्यमाणमपि 'विइय' द्वितीय 'कुदसण' कुदर्शन = कुत्सित दर्शन=असत्यसिद्धान्तम् 'असब्भाववाइणो' असद्भाववादिनः = असन्तो भावाः=येषां ते तथा ते च ते वादिनस्तथा मूढा 'पण्णवेंति' प्रज्ञापयन्ति यत्

शब्दादि सब विषयों में (वट्टेह) इच्छानुसार प्रवृत्ति करते रहना चाहिये। (नत्थि काइ किरिया अकिरिया वा) शास्त्रोक्तअनुष्ठान रूप न कोई क्रिया–सत्क्रिया है और न सावद्यकर्मानुष्ठान रूप कोई अक्रिया-असत्क्रिया है तो केवल आस्तिकवादियों की कोरी कल्पनाएँ हैं। इनमें वास्तविकता कुछ भी नहीं है। (नत्थियवाइणो वामलोगवाई) नास्तिकवादी और वामलोकवादी (एव भणति) इस प्रकार कहते हैं वह सब कथन मृषावादरूप है ॥सू ५॥

फिर कहते है—'इम पि विइय' इत्यादि।

टीकार्थ—अनुपद वक्ष्यमाण (इमपि विइय) यह दूसरा कुदर्शन भी कि जिसे (असब्भाववाइणो) असद्भाववादी तथा (मूढा) मूढजन

"वट्टेह" ઇચ્છાનુસાર પ્રવૃત્તિ કર્યા કરવી જોઈએ "नत्थि काइकिरिया अकिरिया वा" શાસ્ત્રોક્ત અનુષ્ઠાનરૂપ કોઈ ક્રિયા સત્ ક્રિયા નથી, કે સાવદ્યકર્માનુષ્ઠાન રૂપ કોઈ અક્રિયા અસત્ક્રિયા નથી, તે તો કેવળ આસ્તિકવાદીઓની ખાલી કલ્પનાઓ જ છે તેમા કોઈ પણ વાસ્તવિકતા નથી" "नत्थियवाइणो वाम लोगवाई" નાસ્તિકવાદી અને વામલોકવાદી "एव भणति" તે આ પ્રમાણે કહે છે, તે તેમનુ કથન મૃષાવાદ છે ॥ સૂ–૫ ॥

વળી કહે છે—"इम पि विइय" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–નીચે પ્રમાણેનુ "इम पि विइय" બીજુ કુદર્શન કે જે "असब्भाववाइणो" અસદ્ભાવવાદી તથા "मूढा" મૂઢ લોકો "पण्णवेति" પ્રરૂપિત કરે

'लोगो' लोकः=पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतितिर्यङ्नरामरनारकरूपः, 'अडकाओ' अण्डकात् 'सभूओ' सभूतः=उत्पन्नः, तत्र अण्डकोद्भूतलोकवादिना मतमित्थं यत् पूर्वं पृथिव्यादिपञ्चभूतरहित जगत् केवल जलमयमासीत् तत्र महदण्ड चिरकालविक्लेदित सत् स्फुटित द्विधाजात पृथिवीरूपम् आकाशरूप च, तत्र सुराऽसुरनारकतिर्यग् रूप जगत् सर्वं समुत्पन्नमित्येवमण्डकात् सृष्टिः। 'सयंभुणा' स्वयम्भुवा च=ब्रह्मणा 'सय' स्वय 'निम्मिओ' निर्मितः=निष्पादितः इति केचित् ब्रुवन्ति। तथाहि दृश्यमान-जगदुत्पत्तेः पूर्वं पृथिव्यादि पञ्चभूतरहित विनष्ट स्थावरजङ्गमामरनरगन्धर्वयक्षराक्षसकिन्नरगरुडमहोरगादि सकलनिविध

(पण्णवेंति) प्ररूपित करते हैं, मृपावारूप यह दर्शन यह है-(लोगो अडकाओ सभूओ) यह पृथिवी अप्, तेज, वायु वनस्पति, तिर्यंच, मनुष्य, देव, नारकरूप लोक अडे से उत्पन्न हुआ है। अडे से लोक को उत्पन्न हुआ मानने वालो का मत इस प्रकार है यह लोक पहले पृथिवी आदि पाँचभूतों से रहित था, और केवल जलमय ही था। इसमें एक चिरकाल से गीला अडा पड़ा हुआ था, जब वह फटा तो इसके दो टुकडे हुए-एक टुकडा पृथिवीरूप हुआ और दूसरा टुकडा आकाशरूप हुआ-पृथिवी रूप टुकडे में मनुष्य, तिर्यंच, नारक आदिरूप तथा आकशरूप टुकडे में सुर असुर आदिरूप समस्त जगत् उत्पन्न हो गया। इस तरह अडे से यह सृष्टि हुई वे कहतेहैं। (सयभूणा सय च निम्मिओ) कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि यह जो दृश्यमान जगत् है वह उत्पत्ति से पहिले पहिले पृथिवी आदि पचभूतों से रहितथा। इसमें स्थावर, जगम, अमर,

છે તે મૃષાવાદરૂપ દર્શન આ પ્રમાણેનુ છે-" लोगो अडकाओ सभूओ " આ પૃથ્વી, અપ્, તેજ વાયુ, વનસ્પતિ, તિર્યંચ, મનુષ્ય, દેવ અને નારકરૂપ લોકો ઇડામાથી ઉત્પન્ન થયા છે ઇડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયેલ માનનારની આ પ્રકારની માન્યતા છે-આ લોકો પહેલા, પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતો અને ફક્ત જળમય જ હતો તેમા એક ચિરકાળથી ભીનુ ઇડુ પડેલુ હતુ જ્યારે તે ફાટયુ ત્યારે તેના બે ટુકડા થયા-એક ટુકડો તે પૃથિવીરૂપ થયો અને બીજો ટુકડો આકાશરૂપ થયો પૃથિવીરૂપ ટુકડામા મનુષ્ય, તિર્યંચ, નારક આદિરૂપ તથા આકાશ રૂપ ટુકડામા સુર અસુર આદિ રૂપ સમસ્ત સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થઈ ગઈ આ રીતે ઇડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયાનુ તેઓ દર્શાવે છે ' सयभुणा सय च निम्मिओ" કોઇ કોઇ એવુ પણ કહે છે કે આ જે જગત નજરે પડે છે તે ઉત્પત્તિ પહેલા પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતુ તેમા ...,

भेद केवलमर्णवस्वरूप तमोभूतमासीत्, तत्र-तपस्तप्यमानस्य शयानस्य विभोर्भगवतो नाभेः कमलमुदपद्यत, तत्र ब्रह्मा समुत्पन्नस्तस्मात् सुरासुरमनुजतिर्यक् स्थावरजङ्गमभूतपभूतभेदविशेषविशिष्टं जगदुत्पन्नम् । इति एवमुक्तरीत्या 'अलिय' अलीकम्=असत्य 'पयपति' प्रजल्पन्ति । एतेषामलीकत्व भ्रान्तज्ञानिभिर्निरूपितत्वात् ॥ सू० ६ ॥

पुनरप्याह—'पयावइणा' इत्यादि ।

मूलम्—पयावइणा इस्सरेण य कयत्तिकेइ । एव विण्हुमयं कसिणमेव य जगति केइ । एवमेके वदति मोस—एगो आया अकारगो वेदगो य सुकयस्स य दुक्कयस्स च करणाणि कारणाणि य सव्वहा सव्वहि च णिच्चो य णिक्किओ निग्गुणो य अणुवलेवओ त्ति ॥ सू० ७ ॥

टीका—'पयावइणा' प्रजापतिना=कृतमिद जगदिति केचित् । एतदलीकता प्रमाणबाधितत्वात् । तथा 'इस्सरेण' इश्वरेण च 'कयति' कृतमिति 'केइ'

नर, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गरुड, महोरग आदि समस्त विविध भेद नष्ट थे-यह तो केवल अधकाराच्छादित अर्णव स्वरूप था। इसमें तपस्या करते हुए विभु भगवान् की नाभि से एक कमल उत्पन्न हुआ। उस कमल में ब्रह्माजीने जन्म लिया। उनसे फिर सुर, असुर, मनुज, तिर्यंच, स्थावर आदि अनेक जीवों के भेद प्रभेद वाला यह जगत् उत्पन्न हुआ। इस प्रकार असद्भाववादियों की ये दोनों प्रकारकी मान्यताएँ भ्रान्त ज्ञानियों द्वारा निरूपित होने के कारण मृषावादरूप ही हें॥सू०५॥

फिरभी इन्ही को कहते हैं—'पयावइणा' इत्यादि।

टीकार्थ—(पयावइणा इस्सरेण य कयत्ति केइ) कितनेक व्यक्ति

જગમ અમર, નર, ગધર્વ, યક્ષ, રાક્ષસ, કિન્નર ગરુડ, મહોરગ, આદિ સમસ્ત વિવિધ ભેદનુ અસ્તિત્વ ન હતુ તે તો કેવળ અધકારથી છવાયેલ સાગર સ્વરૂપ હતું તેમા તપસ્યા કરતા વિષ્ણુ ભગવાનની નાભિમાથી એક કમળ પેદા થયુ તે કમળમા બ્રહ્માજીએ જન્મ લીધો, તેમણે સુર, અસુર, મનુષ્ય, તિર્યંચ, સ્થાવર આદિ અનેક જીવોના ભેદ પ્રભેદથી યુક્ત આ જગત રચ્યુ આ પ્રકારની અસદ્ભાવવાદીઓની તે બને પ્રકારની માન્યતાઓ ભ્રાન્તજ્ઞાનીઓ દ્વારા નિરૂપિત થયેલ હોવાથી મૃષાવાદ રૂપ જ છે ॥ સૂ-૫ ॥

केचित् नैयायिका इत्यर्थः, तद् यथा क्षित्यङ्कुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घटवदिति। जलबुद्बुदादौ हेतोरनैकान्तिकत्वेनास्यालीकता। एव 'कसिणमेव' कृत्स्नमेव=सकलमेव 'जग' जगत् 'विण्हुमय' विष्णुमय = विष्णुस्वरूपमिति 'केइ' केचित् वदन्ति तन्मतानुयायिनः, यथा—

"जले विष्णु स्थले विष्णु,-र्विष्णुः पर्वतमस्तके।
ज्वालामालाकुले विष्णु', सर्वं विष्णुमय जगत्॥१॥" इति।

ऐसा मानते हैं कि यह जगत् प्रजापति-ब्रह्माने बनाया है। कितनेक कहते हैं कि यह जगत् ईश्वरने बनाया है सो इस प्रकार की मान्यता में अलीकता प्रमाणबाधित होने के कारण आती है। तथा जो नैयायिक जन ऐसा कहते हैं कि यह जगत् ईश्वर ने बनाया है, क्यों कि यह घटादिकी तरह कार्य है "क्षित्यङ्कुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घटवत्" सो कार्यत्वरूप हेतु मेंजल बुद्बुद आदि द्वारा अनैकान्तिक दोष आता है, इसलिये यह उनकाकथन असत्यरूप प्रमाणित हो जाता है। (एव विण्हुमय कसिणमेव य जगति केइ) इसी तरह यह सकल जगत् विष्णुमय है ऐसा भी कोई २ कहते हैं, क्यों कि उनकी ऐसी मान्यता है कि—

"जले विष्णुः स्थले विष्णु-र्विष्णुः पर्वतमस्तके।
ज्वालामाला कुले विष्णुः सर्वं विष्णुमय जगत्॥१॥"

जल में विष्णु हैं, थल मे विष्णु हे, पर्वत की चोटी ऊपर विष्णु हैं,

હવે પણ એ વિષે જે કહે છે—'पयावइणा" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"पयावइणा इस्सरेण य कयत्ति केइ" કેટલાક લોકો એવુ માને છે કે આ જગત પ્રજાપતિ-બ્રહ્માએ બનાવ્યુ છે કેટલાક કહે છે કે આ જગત ઇશ્વરે બનાવ્યુ છે, તો તે પ્રકારની માન્યતામા મૃષાવાદ-અસત્ય દોષ પ્રમાણુબાધિત હોવાને કારણે આવે છે તથા જે નૈયાયિકો એવુ કહે છે કે આ જગત ઇશ્વરે બનાવ્યુ છે કારણ કે તે ઘટાદિના જેવુ કાર્ય છે, "क्षित्यङ्कुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घटवत्" તો કાર્યત્વરૂપ હેતુમા બુદબુદ આદિ દ્વારા અનૈકાન્તિક દોષ આવે છે, તેથી તેમનુ તે કથન અસત્ય રૂપ સિદ્ધ થાય છે "एव विण्हुमय कसिणमेव य जगति केइ" એ જ પ્રમાણે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય છે એવુ પણ કેટલાક લોકો કહે છે, કારણ કે તેમની એવી માન્યતા છે કે-

"जले विष्णु स्थले विष्णु· र्विष्णु· पर्वतमस्तके।
ज्वालामालाकुले विष्णु·, सर्वं विष्णुमय जगत्॥१॥

જળમા વિષ્ણુ છે, સ્થળમા વિષ્ણુ છે, પર્વતના શિખરપર વિષ્ણુ છે,

एतदलीकता प्रमाणाभावात् मातापित्रादि सकलव्यवहारविच्छेदकत्वाच्च। अथ वेदान्तिमतमाह—एव=अमुना प्रकारेण ऐके=अद्वैतब्रह्मवादिन वदन्ति यत् 'एगो आया' एक एव आत्मा 'मोस' मृषा=जगत् मिथ्या तदुक्त "ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या" इति, उक्तश्च—

"एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थित ।
एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥" इति ।

तदलीकता च — सकललोकप्रत्यक्षभेदमूलकसुखदुःखधर्माधर्मादिजगद् व्यवहारोच्छेदप्रसङ्गात् । अथात्माऽकर्तृत्वमतमाह—'अकारगो' अकारकः=

अग्नि में विष्णु है, तात्पर्य यह कि यह सब जगत् विष्णुमय है ॥१॥

यह मान्यता भी अलीकस्वरूप ही है, क्यों कि इस मान्यता को सत्यरूप मे प्रमाणित करने वाला कोई भी प्रमाण नहीं हैं। यदि सब जगत् को केवल विष्णुमय ही माना जावे तो फिर यह जो उसमे माता पिता आदि रूप समस्त व्यवहार है उसका उच्छेद प्राप्त होता है। (एवमेगे वदति मोस एगो आया) इसी तरह वेदान्तियों का जो यह कथन है कि एक ही आत्मा है-जगत् मिथ्या है-"ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या।" कहा भी है—

"एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः।
एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥१॥,, इति।

प्रत्येक प्राणी मे एक ही भूतात्मा व्यवस्थित है। वही जलचन्द्र की तरह एकरूप व अनेकरूप दिखलाई देता है ॥१॥

અગ્નિમા વિષ્ણુ છે મતલબ એ કે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય ॥૧॥

આ માન્યતા પણ અસત્ય છે કારણુ કે આ માન્યતાને સત્યરૂપે સિદ્ધ કરવાને માટે કોઈ પણ પ્રમાણુ નથી જો સમસ્ત જગતને કેવળ વિષ્ણુમય જ માની લેવામા આવે તો તેમા માતા પિતા આદિ રૂપ જે વ્યવહાર છે તેનુ ખડન થાય છે "एवमेगे वदति मोस एगो आया" એ જ પ્રમાણે વેદાન્તી-ઓનુ આ પ્રકારનુ જે કથન છે કે "આત્મા એક જ જે-જગત મિથ્યા છે- "ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या" કહ્યુ પણ છે-

"एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः।
एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत्" ॥ १ ॥ इति।

પ્રત્યેક પ્રાણીમા એક જ ભૂતાત્મા રહેલ છે તે જ જલચન્દ્રની જેમ એક રૂપે કે અનેકરૂપે દેખાય છે ॥૧॥

अयमात्मा अकर्ता–पुण्यपापादीनाम् । वेदकः=भोक्ता पुण्यपापकर्मफलस्य प्रति निम्बोदयन्यायादिति भाव, तथा–' सुकयस्स ' सुकृतस्य–पुण्यस्य ' दुक्कयस्स ' दुष्कृतस्य पापस्य च ' सव्वहा ' सर्वथा ' ' सव्वहिं ' सर्वत्र सर्वस्मिन् काले 'कारणाणि' कारणानि=निमित्तभूतानि 'करणाणि' करणानि=चक्षुरादीनीन्द्रियाणि, नायमात्मा । अलीकताचास्य ससार्यात्मनो मूर्तत्वेन परिणामित्वेन कर्तृत्वोपपत्तेः तथा ' णिच्चो ' नित्य इति=केचित्, तदपि न युक्तम्, एकान्तनित्यत्वे सुख

यह कथन भी मिथ्यारूप ही है, क्यों कि इसे सत्य मानने पर जो सकललोक के प्रत्यक्षभूत भेदमूलक धर्म अधर्म आदिका व्यवहार होता है उसके उच्छेद का प्रसग प्राप्त होता है । इसी तरह जो आत्मा को एकान्तरूप से अकर्त्ता मानते हैं ऐसे सांख्यो की यह मान्यता है कि (अकारगो वेदगोय) यह आत्मा पुण्यपाप आदिका अकर्त्ता है, और उनके फल भूत सुख दुःख आदिका (१) 'प्रतिबिम्बोदयन्यायसे भोक्ता है । तथा कोई कहते हैं कि (सुकयस्स दुक्कयस्स य सव्वहा सव्वहिं कारणाणि य करणाणि) पुण्य और पाप के सर्व प्रकार से सर्वकाल में कर्त्ता निमित्तभूतचक्षुरादि इन्द्रिया हैं । आत्मा नहीं है, यह उनकी मान्यता असत्य है, क्यों कि ससारी आत्मा कथचित् मूर्तिक है और परिणामी है इसलिये कर्तृत्व और भोक्तृत्व बन जाता है । सर्वथा अमू

તે કથન પણ મિથ્યારૂપ જ છે, કારણ કે તેને સત્ય માનવામા આવે તો સમસ્ત જગતમા નજરે પડતો મૂળભૂત ભેદવાળો ધર્મ અધર્મ આદિનો જે વ્યવહાર થાય છે તેનુ ખડન થવાનો પ્રસગ ઉપસ્થિત થાય છે એ જ રીતે આત્માને એકાન્તરૂપે અકર્ત્તા માનનાર સાખ્ય મતવાદીઓની એવી માન્યતા છે કે " अकारगो वेदगोय " આ આત્મા પુન્ય પાપ આદિનો કર્ત્તા નથી, અને તેમના ફળરૂપ સુખ દુ ખ આદિનો "[1]प्रतिबिम्बोदय न्यायथी " ભોક્તા છે તથા કોઇ કોઈ લોકો કહે છે કે " सुकयस्स दुक्कयस्स य सव्वहा सव्वहिं कारणाणि य करणाणि " પુન્ય અને પાપના સર્વ પ્રકારનો કર્તા સર્વકાળે આત્મા નહીં પણ ચક્ષુ આદિ ઈન્દ્રિયો છે તેમની તે માન્યતા અસત્ય છે, કારણ કે સસારી આત્મા કેટલાક પ્રમાણમા મૂર્તિક છે અને પરિણામી છે, તેથી તેમા કર્તૃત્વ અને

१ प्रतिबिम्बोदय न्याय का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार स्फटिकमणि के साथ जिस वर्णका सयोग होगा स्फटिक मणि वैसा ही वर्णका दीखने लग जाता है ।

૧પ્રતિબિમ્બોદય ન્યાયનુ તાત્પર્ય એ છે કે જેમ સ્ફટિક મણીની સાથે જે રગનો સયોગ થશે, એવા જ રગનો સ્ફટિક મણી દેખાશે

दुःखबन्धमोक्षाद्यभावप्रसङ्गात्। 'निक्किओ' निष्क्रिय' गमनागमनादिक्रियावर्जितः सर्वव्यापित्वेनावकाशाभावात्, एतदप्यसत्, देहमात्रोपलभ्यमानत्वात्। 'निग्गुणो' निर्गुणः=सत्त्वरजस्तमोगुणरहितः, 'अणुवलेवओ' अनुपलेपकः= निर्लेपः सङ्गवर्जितः आत्मेति कापिलाः, उक्त च–" अकर्त्ता निर्गुणोभोक्ता, आत्मा कपिलदर्शने " इति। सत्त्वरजस्तमोगुणानां साम्यावस्था प्रकृतिः, सैव कर्त्री, पुरुषस्तु पुष्करपलाशवन्निर्लेपश्चेतनोऽकर्ता, इति साङ्ख्याना मतम्। कुदर्शनत्व

तिक आत्मा में ये नही घनते हैं। (णिच्चो) कोई २ आत्मा को सर्वथा नित्य मानते हैं, सो आत्मा की यह नित्य मान्यता सत्य नहीं है, क्यों कि आत्मा को सर्वथा नित्य मानने पर सुख दुःख एव बध, मोक्ष आदि के अभाव का प्रसग प्राप्त होता है। (निक्किओ) आत्मा को निष्क्रिय मानना इस अभिप्राय से, कि आत्मा व्यापक है और जो व्यापक होता है उसमें अवकाश के अभाव से गमनागमन रूप क्रियाएँ वन नहीं सकती है सो ऐसी मान्यता भी मृषावादरूप ही है, कारण कि–आत्मा शरीर में ही उपलब्ध होती है अन्यत्र नहीं। (निग्गुणो) तथा ऐसा कहना कि " यह आत्मा सत्त्व, रज और तमोगुण से रहित है और (अणुवलेवओ) पुष्करपलाशवत् निर्लेप–सगवर्जित है। साख्यों का यही कहना है कि सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है। यह प्रकृति ही करनेवाली होनेसे कर्त्री है, चेतयिता–प्रकृति द्वारा किये गये कार्यों का जानने वाला पुरुषआत्मा तो कमलपत्र के

ભોક્તૃત્વ આવી જાય છે સર્વથા અમૂર્ત્તિક આત્મામા તે બનતુ નથી, "णिच्चो" કોઈ કોઈ મતવાળા આત્માને સર્વથા નિત્ય માને છે આત્માને એ રીતે નિત્ય માનવુ તે સત્ય નથી, કારણ કે આત્માને સર્વથા નિત્ય માનવામા આવે તો સુખ દુ ખ અને બધ મોક્ષ આદિનો અભાવ હોવાનો પ્રસગ ઉપસ્થિત થશે- "निक्किओ" કોઈ કોઈ લોકો આત્માને એ કારણે નિષ્ક્રિય માને છે કે આત્મા વ્યાપક છે અને જે વ્યાપક હોય તેમા અવકાશનો અભાવ હોવાથી ગમનાગમનરૂપ ક્રિયાઓ થઈ શકતી નથી તે માન્યતા પણ મૃષાવાદરૂપ જ છે કારણ કે આત્મા શરીરમા જ હોય છે અન્યત્ર હોતો નથી "निग्गुणो" તથા "આ આત્મા સત્ત્વ, રજ અને તમોગુણથી રહિત છે" એવી માન્યતા "अणुवलेवओ" તથા કમળ પત્ર પર રહેલા પાણીના બિંદુથી કમળ પત્ર જેમ અલિપ્ત રહે છે, તેમ આત્મા પણ તે તત્ત્વોથી નિર્લેપ રહે છે તે માન્યતા પણ મૃષાવાદ છે સાખ્યોની એવી માન્યતા છે કે સત્ત્વ, રજ અને તમોગુણની સામ્યાવસ્થાનુ નામ પ્રકૃતિ છે એ પ્રકૃતિ જ કરનાર હોવાથી કર્ત્રી છે–પ્રકૃતિ દ્વારા કરાયેલ કાર્યોને જાણનાર પુરુષ

अयमात्मा अकर्ता-पुण्यपापादीनाम् । वेदकः=भोक्ता पुण्यपापकर्मफलस्य प्रतिबिम्बोदयन्यायादिति भाव, तथा-'सुकयस्स' सुकृतस्य-पुण्यस्य 'दुकयस्स' दुष्कृतस्य पापस्य च 'सव्वहा' सर्वथा' 'सव्वहिं' सर्वत्र सर्वस्मिन् काले 'कारणाणि' कारणानि=निमित्तभूतानि 'करणाणि' करणानि=चक्षुरादीनीन्द्रियाणि, नायमात्मा । अलीकताचास्य ससार्यात्मनो मूर्तत्वेन परिणामित्वेन कर्तृत्वोपपत्तेः तथा 'णिच्चो' नित्य इति=केचित्, तदपि न युक्तम्, एकान्तनित्यत्वे सुख

यह कथन भी मिथ्यारूप ही है, क्यों कि इसे सत्य मानने पर जो सकललोक के प्रत्यक्षभूत भेदमूलक धर्म अधर्म आदिका व्यवहार होता है उसके उच्छेद का प्रसग प्राप्त होता है । इसी तरह जो आत्मा को एकान्तरूप से अकर्त्ता मानते हैं ऐसे सांख्यो की यह मान्यता है कि (अकारगो वेदगोय) यह आत्मा पुण्यपाप आदिका अकर्त्ता है, और उनके फल भूत सुख दुःख आदिका (१) 'प्रतिबिम्बोदयन्यायसे भोक्ता है । तथा कोई कहते हैं कि (सुकयस्स दुकयस्स य सव्वहा सव्वहिं कारणाणि य करणाणि) पुण्य और पाप के सर्व प्रकार से सर्वकाल में कर्त्ता निमित्तभूतचक्षुरादि इन्द्रिया हैं । आत्मा नहीं है, यह उनकी मान्यता असत्य है, क्यों कि ससारी आत्मा कथचित् मूर्तिक है और परिणामी है इसलिये कर्तृत्व और भोक्तृत्व बन जाता है । सर्वथा अमू

તે કથન પણ મિથ્યારૂપ જ છે, કારણ કે તેને સત્ય માનવામા આવે તો સમસ્ત જગતમા નજરે પડતો મૂળભૂત ભેદવાળો ધર્મ અધર્મ આદિનો જે વ્યવહાર થાય છે તેનુ ખડન થવાનો પ્રસગ ઉપસ્થિત થાય છે એ જ રીતે આત્માને એકાન્તરૂપે અકર્ત્તા માનનાર સાખ્ય મતવાદીઓની એવી માન્યતા છે કે " अकारगो वेदगोय " આ આત્મા પુન્ય પાપ આદિનો કર્તા નથી, અને તેમના ફળરૂપ સુખ દુ ખ આદિનો "[1]प्रतिबिम्बोदय न्यायथी" ભોક્તા છે તથા કેઈ કોઈ લોકો કહે છે કે " सुकयस्स दुक्यस्स य सव्वहा सव्वहिं कारणाणि य करणाणि " પુન્ય અને પાપના સર્વ પ્રકારનો કર્તા સર્વકાળે આત્મા નહી પણ ચક્ષુ આદિ ઈન્દ્રિયો છે તેમની તે માન્યતા અસત્ય છે, કારણ કે સસારી આત્મા કેટલાક પ્રમાણમા મૂર્તિક છે અને પરિણામી છે, તેથી તેમા કર્તૃત્વ અને

१ प्रतिबिम्बोदय न्याय का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार स्फटिकमणि के साथ जिस वर्णका सयोग होगा स्फटिक मणि वैसा ही वर्णका दीखने लग जाता है ।

૧ પ્રતિબિમ્બોદય ન્યાયનુ તાત્પર્ય એ છે કે જેમ સ્ફટિક મણીની સાથે જે રંગનો સયોગ થશે, એવા જ રંગનો સ્ફટિક મણી દેખાશે

इह जीवलोके 'सुकय वा' सुकृत वा=सुकृतफल-सुखमास्तिकमतेन 'दुक्य वा' दुष्कृत=दुष्कर्मफल दुःख वा 'दीसई' दृश्यते 'जइच्छाए' यदृच्छया=अकस्मात् काकतालीयन्यायेन अवितर्कितमेव सर्वं समुत्पद्यते। यथा काकागमनसमये अबुद्धिपूर्वकं काकोपरितालपतनं नहि काकस्यैव बुद्धिरस्तियन्मदुपरिताल निपतिष्यति, तथा तालस्यापि नायमभिप्रायो यदहं काकोपरि पतिष्यामि, एवमेव सर्वं सुख-दुःखादिजातमतर्कितोपस्थितमेव न कर्तृविशेषबुद्धिपूर्वकम्। तदसत् इदमस्य कारणमिदमस्य कार्यमिति सकललोकप्रसिद्ध व्यवस्था विच्छेदापत्तेः अन्यथा कथं

भाव कहा गया है कि (जपि किंचि एहिं जीव लोगे सुकय वा दुक्कय वा दीसई) जो कुछ भी इस जीवलोक में सुकृत अथवा सुकृत का फलरूप सुख-दुष्कृत अथवा दुष्कृत का फलरूप दुःख दिखलाई देता है वह सब (जइच्छाए वा) अकस्मात् काकतालीय न्याय से अवितर्कित ही उत्पन्न हो जाता है. जिस प्रकार उड़ता हुआ कौवा तालवृक्ष के नीचे आया और आते ही उस पर ताड का फल गिर पड़ा तो उसके इस पतन में न तो काकने ही ऐसा विचार किया कि मेरे ऊपर ताड का फल गिर पड़े, और न ताडफल ने ही ऐसा सोचा कि में काक के आते ही उस पर गिर पड़ूं किन्तु यह उसका पतन अवितर्कित ही हुआ इसी तरह सुख दुःख आदि जो कुछ भी होता है वह सब अतर्कित ही उपस्थित होता रहता है इसमें कर्त्ता कि विशेष बुद्धि प्र्वकता नहीं है। सो ऐसी मान्यता भी असत्य ही है कारण कि लोक में जो यह व्यवस्था बन रही है कि "यह इसका कारण है यह इसका कार्य है" वह सब इस प्रकार की मान्यता में विच्छेद को प्राप्त हो जावेगा। देखो जो

છે કે ' जपि किंचि एहिं जीवलोगे सुक्य वा दुक्य वा दीसई " આ જીવલોકમા જે કોઈ પણ સુકૃત અથવા સુકૃતના ફળરૂપ સુખ, દુષ્કૃત અથવા દુષ્કૃતના ફળરૂપ દુખ નજરે પડે છે તે બધા " जइच्छाए वा " અકસ્માત્ કાકતાલીય ન્યાયે અવિતર્કિત જ ઉત્પન્ન થઇ જાય છે જેમ ઉડતો કાગડો તાડના ઝાડની નીચે આવે અને આવતા જ તેના ઉપર તાડનુ ફળ પડયુ, તો તેના તે પતનમા કાગડાએ એવો વિચાર કર્યો ન હતો કે મારા ઉપર તાડનુ ફળ પડે અને તાડના ફળે પણ એવો વિચાર કર્યો ન હતો કે કાગડો આવતા જ હુ તેના ઉપર પડુ પણ તેનુ તે પતન અવિતર્કિત જ થયુ હોય છે, એ જ પ્રકારે સુખ દુખ આદિ જે કઇ થાય છે તે બધુ અવિતર્કિત જ થયા કરે છે તેમા કર્તાની વિશેષબુદ્ધિ કારણરૂપ નથી તો એવી માન્યતા પણ અસત્ય જ છે કારણ કે સૃષ્ટિમા એવી જે વ્યવસ્થા ચાલી રહી છે કે " તે આનુ કારણ છે, તે આનુ કાર્ય છે " એ બધાનુ તે માન્યતાથી ખડન થઈ જશે જુવો જેને તેલ

चास्य तथाहि-न तावन्निर्गुणत्व चेतनास्वरूपताभ्युपगमात् । अनुपलेपकत्वमपि न बद्धमुक्तावस्था व्यवस्थाविच्छेदमसङ्गात् ॥ सू० ७ ॥

पुनरप्याह—' अवि य ' इत्यादि—

मूलम्-अवि य एवमाहंसु असब्भाव जपि एहिं किंचि जीवलोगे दीसई सुकय वा दुक्कयं वा, एव जइच्छाए वा सहावेण वावि दयिवयप्पभावओ वावि भवइ, नत्थि तत्थ किंचिकयक तत्त लक्खणं विहाण नियइ कारिया एव केइ जंपति इड्ढिरससायगारवपरावहत्ते करणालसा परूवेंति धम्मवीमसएणं मोस ॥ सू० ८ ॥

टीका—' अवि य ' अपि च एव=वक्ष्यमाणरीत्या ' असब्भाव ' असद्भाव ' आह सु ' आहुः=कथयन्ति कथमित्याह-' जपि ' यदपि किंचि ' किञ्चित् ' एहिं'

समान निर्लिप्त है । अतः कहा है " अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता " आत्मा कपिल दर्शने " यह भी युक्ति युक्त नही है कारण आत्माको सर्वथा निर्गुण मानने पर उसमें चेतनत्व गुण का भी अभाव होने से अचेतनत्व का प्रसग प्राप्त होगा, परन्तु ऐसी बात तो वहा मानी नही गई है, क्यों कि आत्मा को चेतना गुण स्वरूप स्वीकार किया गया है । तथा पुष्कर पलाशवत् सर्वथा निर्लिप्त मानने पर उसकी जो बद्ध-ससारी- और मुक्त ये जो दो अवस्थाएँ होती हैं उनकी व्यवस्था का विच्छेद प्राप्त होता है ॥ सू-६ ॥

तथा—' अवि य ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(अवि य एव असब्भाव आहसु) इस प्रकार से जो अस

આત્માતો કમળપત્ર સમાન નિર્લિપ્ત છે તેથી જ કહ્યુ છે કે " अकर्त्ता निगुणो भोक्ता आत्मा कपिलदर्शने " તે પણુ યુક્તિયુક્ત નથી, કારણુ કે આત્માને સર્વથા નિર્ગુણ માનવામા આવે તો તેમા ચેતનત્વ ગુણુનો પણુ અભાવ હોવાથી અચેતનત્વનો પ્રસગ ઉપસ્થિત થશે, પણુ એમ તો ત્યા માનેલ નથી, કારણુ કે આત્માને ચેતનગુણુ સ્વરૂપ સ્વીકાર્યો છે તથા કમલપત્ર પર રહેલ જળબિન્દુથી અલિપ્ત કમળ જેવો તેને માનવામા આવે તો તેની બદ્ધ-સસારી અને મુક્ત એ બે અવસ્થાઓ જે હોય છે તેની વ્યાવસ્થાનુ ખડન થશે ॥ સૂ-૬॥

તથા—" अवि य " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"अवि य एव असब्भाव आहसु" આ પ્રમાણે જ જો

तथा दैववादिनः—

" प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः, किं कारणं दैवमलङ्घनीयम्।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे, यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्॥ "

तथा 'नत्थि' नास्ति 'तत्थ' तत्र मर्त्यलोके 'किंचि' किञ्चित् 'कयक' कृतक=कर्मनिष्पन्नं 'तत्त' तत्त्व=वस्तु। तथा 'लक्खणविहाण' लक्षणविधाना =पदार्थस्वरूपप्रकाराणां नियतिः=भाग्यमेव 'कारिया' कारिका=कर्त्री, तथा यत्र

कार्यकारणभाव का विच्छेद प्राप्त होता है।

अब दैववादियों का स्वरूप कहते हैं–'दवियप्पभावओ वावि भवइ' इत्यादि। दैववादियों कि ऐसी मान्यता है—

" प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः, किं कारणं दैवमलङ्घनीयम्।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे, यदस्मदीयं नहि तत् परेषाम्॥१॥"

जो कुछ प्राप्त होने योग्य वस्तु है वह हमे भाग्य की कृपा से ही प्राप्त होती है। यह भाग्य अलघनीय है। अत. ऐसा समझकर कि जो हमारी है वह दूसरों की कभी नहीं हो सकती है कभी भी किसी प्राणी को शोक फिकर और आश्चर्य आदि नहीं करना चाहिये ॥१॥

अतः हे भाइयो! तुम एक मात्र दैव-भाग्य पर ही भरोसा रखो। (नत्थि तस्स किंचि कयक तत्त) लोकमें कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो कृतक हो परुषार्थ रूप कर्म से प्राप्त की जा सके-ऐसी हो। इसी प्रकार (लक्खणविहाण) पदार्थों का जितना भी कुछ अपना रूप है तथा उनके जितने भी प्रकार-भेद हैं इन सबकी (कारिया) कारिका करने

હવે દૈવવાદીઓનુ સ્વરૂપ કહે છે–" दवियप्पभावओवावि भवइ " ઈત્યાદિ દૈવવાદીઓની માન્યતા છે કે–

" प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः, किं कारणं दैवमलङ्घनीयम्।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे, यदस्मदीयं नहि तत् परेषाम् " ॥१॥

પ્રાપ્ત થવા લાયક જે કોઈ વસ્તુ હોય છે તે આપણને ભાગ્યની કૃપાથી જ મળે છે તે ભાગ્ય અલઘનીય-અફર છે જે અમારી ચીજ છે તે બીજાની કદી પણ થઈ શકતી નથી, એવુ સમજીને કદીપણુ કોઈ પ્રાણીએ શોક, ચિન્તા આશ્ચર્ય આદિ કરવા જોઈએ નહીં ॥૧॥

તો હે ભાઈઓ! તમે એક માત્ર ભાગ્ય ઉપર જ વિશ્વાસ રાખો

"नत्थि तस्स किंचि कयक तत्त" જગતમા એવી કોઈ વસ્તુ નથી કે જે કૃતક હોય-પુરુષાર્થથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી હોય એ જ રીતે "लक्खण-विहाण" પદાર્થોનુ જે કોઈ પોતાનુ રૂપ છે તથા તેમના જેટલા પ્રકાર-ભેદ છે, તે બધાની "कारिया" કારીકા-કરનારી "नियई" આ નિયતિ-ભાગ્ય-જ

तैलार्थी तिलमेवोपादद्यात् दध्यर्थी च दुग्ध, दुग्धार्थी च गाम् । अथ स्वभाववादीमाह-

" कः कण्टकाना प्रकरोति तैक्ष्ण्य,
विचित्रभाव मृगपक्षिणा च ।
स्वभावतः सर्वमिद प्रवृत्तं,
न कामचारोऽस्ति कुतः प्रयत्नः ॥ १ ॥ "

तदप्यसत्—अत्रापि कार्यकारणव्यवस्था विच्छेदात् ।

तैलार्थी होता है वह तिलों को ही तो ग्रहण करता है, दध्यर्थी दुग्ध को और दुग्धार्थी गाय को । यह ऐसा क्यों होता है इसलिये कि ये तिलादिक अपने २ कार्य के कारण हैं ।

अथ स्वभाववादी का स्वरूप कहते हैं-' सहावेण चावि ' इत्यादि ।

स्वभाववादी का ऐसा कहना है कि जगत् में जो कुछ होता है वह स्वभाव से ही होता है, कहा भी है—

"क' कण्टकाना प्रकरोति तैक्ष्ण्य, विचित्र भाव मृगपक्षिणा च ।
स्वभावतः सर्वमिद प्रवृत्त, न कामचारोऽस्ति कुतःप्रयत्नः ॥१॥ "

कांटों में तीक्ष्णता कौन करता है ? मृगों में पक्षियों में विचित्रता कौन उत्पन्न करता है ? तो इसका केवल उत्तर यही है कि स्वभाव से ही यह सब कुछ होता है, इसमें कामचार-यदृच्छा-कारण नही है और न कोई प्रयत्न ही कारण है ॥१॥

यह स्वभाववादी का कथन भी ठीक नहीं है । कारण इसमें भी

જોઇતુ હોય તે તલને જ ગ્રહણ કરશે, દહીની ઇચ્છાવાળો દૂધને અને દૂધની ઇચ્છાવાળો ગાયને ગ્રહણ કરશે તે પ્રમાણે થવાનુ કારણ શુ છે ? કારણ એ જ છે કે તલ આદિ પોત પોતાના કાર્યને માટે કારણરૂપ-ઉપયોગી છે

હવે સ્વભાવવાદીનુ સ્વરૂપ કહે છે—" सहावेण चावि " ઇત્યાદિ

સ્વભાવવાદીનુ એવુ કહેવુ છે કે જગતમા જે કઇ થાય છે તે સ્વભાવથી જ થાય છે, કહ્યુ પણ છે-

" क' कण्टकाना प्रकरोति तैक्ष्ण्य, विचित्रभाव मृगपक्षिणा च ।
स्वभावत' सर्वमिदं प्रवृत्त, नकामचारोऽस्ति कुत प्रयत्न' " ॥१॥

કાટામા તીક્ષ્ણતા કોણ કરે છે ? મૃગોમા તથા પક્ષીઓમા વિચિત્રતા કોણ ઉત્પન્ન કરે છે ? તેનો કેવળ એક જ ઉત્તર છે કે સ્વભાવથી જ તે બધુ થાય છે, તેમા કામચાર-તેની ઇચ્છા-કારણરૂપ નથી કે કોઈ પ્રયત્ન કારણરૂપનથી ॥૧॥

સ્વભાવવાદીનુ તે કથન પણ બરાબર નથી કારણ કે તેમા પણ કાર્ય કારણ કે તેમા પણ કાર્ય-કારણભાવનુ ખડન થાય છે

तदसत्-कालस्यैव कर्तृत्वे कालप्राप्तो स्त्रीश्मश्रुवन्ध्या पुत्रहस्ततलकेशादीनामपि सद्भाव स्यात्, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति। तथा 'इड्ढिरससायगारवपरा' ऋद्धिरससातगौरवपरा, 'बहवे' बहवः=अनेके करणालसाः= कर्तव्याचरणालसाः अनुयोगिनः 'धम्मवीमसएण' धर्मविमर्शनेन=धर्मविचारेण 'मोस' मृषा-असत्य वस्तु अधर्ममपि धर्ममेव 'परूवेंति' प्रस्पयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

अन्येऽपि जना यथा मृषा भाषणपरा भवन्ति तत्प्ररूपयति 'अवरे' इत्यादि-

मूलम्-अवरे अहम्माओ रायदुट्ठ अब्भक्खाण भणंति अलियचोरोत्ति अचोरिय करेंत। डामरिओ त्ति वि य एमेव उदासीण। दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलिति सीलकलिय। अयपि गुरुतप्पओ त्ति। अण्णे एमेव भणंति

कालवादियों की यह मान्यता असत्यरुप इसलिये है कि काल को ही कर्त्ता मानने पर स्त्री जब तरुण अवस्था सपन्न हो जाती है तो पुरुष की तरह उसके भी दाढी मूछ का आना, तथा वध्या के पुत्र होना, हथेली में बाल उगना आदि भी होना चाहिये-परन्तु यह सब कुछ नहीं होता है। इसलिये ये पूर्वोक्त सब ही वाद मिथ्या प्ररूपणा करते हैं ऐसा जानना चाहिये। (एव) इस प्रकार (केइ) कितनेक (करणालसा) अपने कर्तव्य करने पर योग्य आचरण मे आलसी बने हुए, और (इड्ढिरससायगारवपरा) ऋद्धि, रस, सातगौरव में तत्पर रहे हुए, (बहवे) अनेक अनुयोगी व्यक्ति (धम्म वीमसएण) धर्म के विचार से (मोस) मृषा-असत्य-अधर्म को भी धर्मरूप से (परूवेंति) प्ररूपित करते हैं॥ सू-७॥

શાશ્વત છે કાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે કારણે છે કે કાળને જ જો કર્ત્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી જ્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોચે ત્યારે તેને પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૂછ આવવી જોઈએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો જોઈએ, હથેલીમા બાલ ઉગવા જોઇએ, પણ તેમાનુ કંઈ પણ બનતુ નથી તેથી પૂર્વોક્ત એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરે છે એમ માનવુ જોઇએ, "एव" એ જ પ્રમાણે "केइ" કેટલાક "करणालसा" પોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આળસુ થઈને અને "इड्ढिरससायगारवपरा" ઋદ્ધિ, રસ અને સાત અભિમાનમા રત થઈને "बहवे" અનેક અનુયોગી લોકો "धम्मवीमसएण" ધર્મના ખ્યાલથી "मोस" મૃષા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે "परूवेंति" પ્રરૂપિત કરે છે ॥સૂ-૭॥

भाव्य तत् कोटि यत्नैरपि न भवति यद् भाव्य तद् विनापि यत्नेन भवति, तदसत् –सकलमत्यक्षोद्यमादीना व्यर्थत्वापत्तेः । वा शब्देन–कालवादादयोऽपि विज्ञेयाः ।

तथाहि–" कालः सृजति भूतानि, कालः सहरते प्रजाः ।
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥ १ ॥ "

वाली (नियई) यह नियति–भाग्य ही है । तथा जो होने योग्य नहीं है वह करोड यत्नों से भी नहीं हो सकता है, और जो होने योग्य है वह विना यत्न के भी हो जाता है । सो इस प्रकार की दैव (भाग्य) वादियों की यह मान्यता केवल कल्पनामात्र है कारण–इसका इस प्रकार की एकान्तत. कल्पना मानने पर सकल प्राणीयों के प्रत्यक्ष भूत उद्यमादिकों में व्यर्थता की आपत्ति आती है।

'वा' शब्द से कालवादियों का स्वरूप कहते हैं–यहां "वा" शब्द से कालवाद आदि भी मृपारूप हैं ऐसा जानना चाहिये । कालवादियों की ऐसी मान्यता है कि–

" काल : सृजति भूतानि, कालः सहरते प्रजा : ।
काल : सुप्तेषु जागर्ति, कालो हि दुरतिक्रम :॥१॥ "

काल ही भूतों को–जीवों को–बनाता है और नष्ट करता है । काल ही सोये हुओं मे जगाता है इसलिये काल दुरतिक्रम–अलघनीय है । अर्थात्–यह अविनश्वर है ।

છે તથા જે થવા લાયક નથી તે કરોડ પ્રયત્નો કરવા છતા પણ થઇ શકતુ નથી, તથા જે થવા લાયક છે તે વિના પ્રયત્ને પણ થાય છે તો આ પ્રકારની દૈવ " भाग्य " વાદીઓની માન્યતા કેવળ કલ્પના જ છે, કારણ કે તેમની તે પ્રકારની એકાન્તત કલ્પનાને માની લેવામા આવે તો સમસ્ત પ્રાણીઓના પ્રત્યક્ષભૂત ઉદ્યમાદિમા વ્યર્થતા હોવાની આપત્તિ ઉપસ્થિત થાય છે

" वा " શબ્દથી કાળવાદીઓનુ સ્વરૂપ કહે છે—અહી " वा " શબ્દથી કાળવાદ આદિ પણ મૃષા–અસત્ય રૂપ છે, એમ સમજી લેવાનુ છે કાળવાદીઓની એવી માન્યતા છે કે–

" काल सृजति भूतानि, काल सहरते प्रजा ।
काल सुप्तेषु जागर्त्ति, कालो हि दुरतिक्रम " ॥ १ ॥

કાળ જ ભૂતોને–જીવોને બનાવે છે અને તેમનો નાશ કરે છે કાળ જ સૂતેલાઓમા જાગૃત હોય છે તેથી કાળ દુરતિક્રમ–અલઘનીય છે એટલે કે

तदसत्-कालस्यैव कर्तृत्वे कालमाप्तौ स्त्रीश्मश्रुवन्ध्या पुत्रहस्ततल्केशादीनामपि सद्भाव स्यात्, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति। तथा 'इड्ढिरससायगारवपरा' ऋद्धिरससातगौरवपरा, 'बहवे' बहवः=अनेके करणालसाः=कर्तव्याचरणालसा. अनुयोगिनः 'धम्मवीमसएण' धर्मविमर्शनेन=धर्मविचारेण 'मोस' मृपा-असत्य वस्तु अधर्ममपि धर्ममेव 'पन्नवेति' प्ररूपयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

अन्येऽपि जना यथा मृपा भाषणपरा भवन्ति तत्प्ररूपयति 'अवरे' इत्यादि-

मूलम्-अवरे अहम्माओ रायदुट्ठ अब्भक्खाण भणंति अलियंचोरोत्ति अचोरिय करेंत। डामरिओ त्ति वि य एमेव उदासीण। दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलिंति सीलकलिय। अयपि गुरुतप्पओ त्ति। अण्णे एमेव भणंति

कालवादियों की यह मान्यता असत्यरूप इसलिये है कि काल को ही कर्त्ता मानने पर स्त्री जब तरुण अवस्था सपन्न हो जाती है तो पुरुप की तरह उसके भी दाढी मूछ का आना, तथा वध्या के पुत्र होना, हथेली में बाल उगना आदि भी होना चाहिये-परन्तु यह सब कुछ नहीं होता है। इसलिये ये पूर्वोक्त सब ही वाद मिथ्या प्ररूपणा करते हैं ऐसा जानना चाहिये। (एव) इस प्रकार (केइ) कितनेक (करणालसा) अपने कर्तव्य करने पर योग्य आचरण में आलसी बने हुए, और (इड्ढिरससायगारवपरा) ऋद्धि, रस, सातगौरव मे तत्पर रहे हुए, (बहवे) अनेक अनुयोगी व्यक्ति (धम्म वीमसएण) धर्म के विचार से (मोस) मृपा-असत्य-अधर्म को भी धर्मरूप से (पन्नवेति) प्ररूपित करते हैं ॥ सू-७ ॥

શાશ્વત છે કાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે કારણે છે કે કાળને જ જો કર્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી જ્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોચે ત્યારે તેને પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૂછ આવવી જોઈએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો જોઈએ, હથેલીમા બાલ ઉગવા જોઈએ, પણ તેમાનુ કઈ પણ બનતુ નથી તેથી પૂર્વોક્ત એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરે છે એમ માનવુ જોઈએ, "एव" એ જ પ્રમાણે "केइ" કેટલાક "करणालसा" પોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આળસુ થઈને અને "इड्ढिरससायगारवपरा" ઋદ્ધિ, રસ અને સાત અભિમાનમા રત થઈને "बहवे" અનેક અનુયોગી લોકો "धम्मवीमसएण" ધર્મના ખ્યાલથી "मोस' મૃષા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે "पन्नवे ति" પ્રરૂપિત કરે છે ॥સૂ-૭॥

उवहणंता-मित्तकलत्ताइ सेवइ । अयपि लुत्तधम्मो । इमो वि वीसंभघायओ, पावकम्मकारी अगम्मगामी । अयं दुरप्पा बहुएसु य पातगेसु जुत्तो त्ति । एव जंपंति मच्छरी भद्दगे वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा। एव एए अलियवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेंति अक्खइय वीएणं अप्पाणं कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सू०॥८॥

टीका-अवरे=अपरे अन्ये केचित् 'अहम्माओ' अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्ममेव स्वीकृत्य ' रायदुट्ठ ' राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, ' अब्भक्खाण ' अभ्याख्यानम्=असत्यदोपारोपण ' अलिय ' अलीक ' भणति '=अकृतमपि कार्यंकल्पयित्वा जनसमक्षे कथयन्ति । कथमित्याह-' चोरोत्ति ' इत्यादिना-' अचोरियं करेंत' अचौर्यं कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति ' चोरोत्ति ' चोर इति कथयन्ति । ' एमेव'

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते है उसीको दिखलाते हैं-' अवरे अहम्माओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(अवरे) कितनेक मनुष्य (अहम्माओ) असत्य वचन-रूप अधर्म को ही स्वीकार करके (रायदुट्ठ) नीति विरुद्ध (अब्भक्खाण) असत्य दोपारोपणरूप (अलिय) अलीक वचन को (भणति) कहते हैं, नहीं किये गये भी कार्य को उसमे कल्पित करं जन समक्ष में कह दिया करते हैं कि (अचोरिय करेंत चोरोत्ति) चोरी नहीं करने वाले को भी ' यह चोर है ' ऐसा कह देते है, अर्थात् जिसने कभी भी चोरी नहीं की है-ऐसे पुरुष को भी चोर देते हैं, कह तथा (एमेव) इसी

બીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય બોલે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે-" अवरे अहम्माओ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"अवरे" કેટલાક માણસો' 'अहम्माओ" અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો જ સ્વીકાર કરીને " रायदुट्ठ" नीतिविरुद्ध " अब्भक्खाण " અસત્ય દોષારોપણરૂપ " अलिय " અલીક વચનો " भणति " કહે છે, ન કરાયેલ કાર્યની પણ કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ કહ્યા કરે છે જેમકે-" अचोरियं करेंत चोरोत्ति" ચોરી ન કરનારને પણ " આ ચોર છે " એવુ કહે છે એટલે કે જેણે કદિ પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે ઓળખાવે છે, તથા " एमेव "

एवमेव 'उदासीण' उदासीन=अविग्रहकारक तटस्थ प्रति 'डामरिउत्ति त्रि य' डामरिकः=विग्रहकारी-इत्यपि च भणन्ति। तथा-'दुस्सीलोत्ति' दुश्शील इति=दुष्टाचरणोऽय जन इति, 'परदार गच्छति' परदारान् गच्छति=परस्त्रीगमन करोति, इति च असत्यदूषणवचनेन 'सीयकलिय' शीलकलित=सदाचारयुक्त जन 'मइलिंति' मलिनयन्ति=लोके कलङ्कयन्ति, 'अयपि' अयमपि अपिना पूर्वोक्तोऽपि 'गुरुतप्पओ' गुरुतल्पगः कलाचार्यस्त्रीगामि इति भणन्ति। 'अण्णे' अन्ये मृषावादिनः 'उवहणता' उपघ्नन्तः=परस्य वृत्ति कीर्त्ति च नाशयन्तः 'एमेव' एवमेव भणन्ति-अय 'मित्तकत्ताइ' मित्रकलत्राणि=सुहृद्दारान् 'सेवइ' सेवते। 'अयपि' अयमपि 'लुत्तधम्मा' लुप्तधर्मा=लुप्तो धर्मो यस्य स तथा=धर्मविहीन' अस्ति। तथा 'इमो वि' अयमपि 'विस्सभवायओ' विस्रम्भघातकः=विश्वास-

---

तरह (उदासीण) उदासीन-तटस्थ होता है उसको (डामरिओत्तिवि य) अर्थात्-झगड़ा नही करने वाला 'यह डामरिक-विग्रहकारी-झगडा करने वाला है' ऐसा कह दिया करते हैं। (दुस्सीलोत्ति) यह दुःशील-दुष्ट आचरण वाला है' और (परदार गच्छइ) यह परस्त्री गामी है' इस तरह के असत्यदोषारोपक वचनो से (सीलकलिय) सदाचारी पुरुष को (मइलिंति) कलङ्कित कर देते है। और (अयपि गुरुतप्पओ) यह और वह भी गुरुपत्नी के साथ सहवास करने वाला है। (अन्ने) कितनेक मृषावादीजन (उवाहणता) परकी आजीविका एव कीर्त्ति का नाश करते हुए (एमेव) इसी तरह बोलते है कि यह (मित्तकलत्ताइ सेवेइ) अपने मित्र की स्त्री को सेवन करने वाला है तथा (अयपि) यह (लुत्तधम्मा) धर्म विहीन है। तथा (इमो वि)

એ જ રીતે "उदासीण" ઉદાસીન-જે તટસ્થ હોય તેને "डामरिओत्तिवि य" એટલે કે ઝગડો ન કરનારને "આ ઝગડો કરનાર છે" એવુ કહે છે તથા "दुस्सिलोत्ति" "આ દુષ્ટ આચરણવાળો છે" અને "परदार गच्छइ" 'આ પરસ્ત્રીગામી છે" આ પ્રકારના અસત્ય દોષારોપણ યુક્ત વચનોથી "सीलकलिय" સદાચારી પુરુષને "मइलिंति" તે કલકિત કરે છે અને अय पि गुरुतप्पओ" "તે પણ ગુરૂપત્ની સાથે સહવાસ કરનારો છે" એવુ ખોટુ દોષારોપણ કરે છે "अन्ने" કેટલાક મૃષાવાદી લોકો "उवाहणता' અન્યની આજીવિકા અને કીર્તિનો નાશ કરવાને માટે "एमेव" આ પ્રમાણે બોલે છે- "मित्तकलत्ताइ सेवइ" "તે પોતાની મિત્રપત્નીનુ સેવન કરનાર છે" તથા "अय पि" તે "लुत्तधम्मा" ધર્મરહિત છે તથા ' इमो

उवहणंता-मित्तकलत्ताइ सेवइ । अयंपि लुत्तधम्मो । इमो वि वीसभघायओ, पापकम्मकारी अगम्मगामी । अय दुरप्पा वहुएसु य पातगेसु जुत्तो त्ति । एव जंपति मच्छरी भद्दगे वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा । एव एए अलियवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेंति अक्खइय वीएणं अप्पाण कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सू०॥८॥

टीका-अवरे=अपरे अन्ये केचित् 'अहम्माओ' अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्ममेव स्वीकृत्य 'रायदुट्ठ' राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, 'अब्भक्खाण' अभ्याख्यानम्=असत्यदोपारोपण 'अलिय' अलीक 'भणति'=अकृतमपि कार्यम्कल्पयित्वा जनसमक्षे कथयन्ति। कथमित्याह-'चोरोत्ति' इत्यादिना-'अचोरिय करेंत' औचार्यं कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति 'चोरोत्ति' चोर इति कथयन्ति। 'एमेव'

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते है उसीको दिखलाते हैं-'अवरे अहम्माओ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(अवरे) कितनेक मनुष्य (अहम्माओ) असत्य वचन-रूप अधर्म को ही स्वीकार करके (रायदुट्ठ) नीति विरुद्ध (अब्भक्खाण) असत्य दोपारोपणरूप (अलिय) अलीक वचन को (भणति) कहते हैं, नही किये गये भी कार्य को उसमें कल्पित करें जन समक्ष में कह दिया करते है कि (अचोरिय करेत चोरोत्ति) चोरी नही करने वाले को भी 'यह चोर है' ऐसा कह देते है, अर्थात् जिसने कभी भी चोरी नही की है-ऐसे पुरुष को भी चोर देते हैं, कह तथा (एमेव) इसी

બીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય બોલે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે- "अवरे अहम्माओ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"अवरे" કેટલાક માણસો 'अहम्माओ" અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો જ સ્વીકાર કરીને "रायदुट्ठ" નીતિવિરુદ્ધ "अब्भक्खाण" અસત્ય દોષારોપણ રૂપ "अलिय" અલીક વચનો "भणति" કહે છે, ન કરાયેલ કાર્યની પણ કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ કહ્યા કરે છે જેમકે-"अचोरिय करेत चोरोत्ति" ચોરી ન કરનારને પણ "આ ચોર છે" એવુ કહે છે એટલે કે જેણે કદિ પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે ઓળખાવે છે, તથા "एमेव"

वइ य बीएण ' अक्षतिकबीजेन=अक्षय दुःखकारणेन ' कम्मबधणेण ' कर्मन ' अप्पाण ' आत्मान ' वेढेंति ' वेष्टयन्ति, नरकनिगोदाद्यनन्तदुःखदायक गे समुपार्जयन्तीत्यर्थः । के ते ? इत्याह-' मुहरी ' मुखारयः=मुखमेव अरि -शत्रुत्वजनकवचनभाषित्वाद् येषा ते तथा । ' असमिक्खियप्पलावी ' क्षितप्रलापिनः=अविचारितानर्थकवक्तार इति ॥ सू० ८ ॥

पुनस्ते किं कुर्वन्ति ? तदाह-निक्खेवे ' इत्यादि ।

मूलम्-निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थम्मि गढिय गिद्धा भिजुंजंति य पर असतएहिं लुद्धा य करेंति कूड सक्खिण, असच्चा अत्थालिय च कन्नालिय च, भोमालियं च हा गवालिय च, गरुय भणति, अहरगइ गमणं अपणं य जाइकुलरूवसीलपच्चयमाया निगुण चवला पिसुणं रमट्ठभेदगमसंतक विद्देसमणत्थकारग पावकम्ममूल दिट्ठ दुस्सुय अमुणिय निल्लज्ज लोगगरहणिज्ज वहवध रिकिलेसवहुल जरामरणदुक्खसोगनेम असुद्ध परिणाम किलिट्ठं भणति ॥ सू० ९ ॥

मे ही लगे हुए मृषावादी पुरुष (अक्खइयबीएण) अक्षतिक बीज य दुःख के कारणभूत (कम्मबधणेण) कर्मबंधन से (अप्पाण) ने आपको (वेढेति) परिवेष्टित करते हैं, अर्थात्-नरकनिगोद दे के अनत) दुःखो को देनेवाले कर्मों को उपार्जित करते हैं। वैसे होते है ?—(मुहरी) जिनका मुख ही शत्रु होता है, (असमि-क्खियप्पलावी) जो विना विचार किये ही अनर्थक प्रलाप करनेवाले हैं। वे ही पूर्वोक्त प्रकार का असत्यभाषण करते हैं ॥ सू-८ ॥

—१ " अक्खइयबीएण " અક્ષતિક બીજ-અક્ષય દુ:ખને માટે કારણ રૂપ ण " કર્મબંધનથી " अप्पाण "પોતાની જાતને " वेढेति " પરિવેષ્ટિત નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુ:ખો દેનાર કર્મોનું ઉપાર્જન ાય છે ?–" मुहरी " જેમનું મુખ જ તેમનો શત્રુ હોય છે, ાવી " જે વિના વિચાર્યે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય નું અસત્ય ભાષણ કરે છે ॥ સૂ-૮॥

घाती ' पावकम्मकारी ' पापकर्मकारी=दुष्कर्माचरणशीलः ' अकम्मकारी ' अकर्मकारी=अनुचितकर्मकारी ' अगम्मगामी ' अगम्यगामी=भगिन्यादिगमनकारी, चास्ति। अय ' दुरप्पा ' दुरात्मा=दुष्टात्मा ' बहुएसु य ' बहुकेः च = अनेके ' पातगेसु ' पातकेषु=पापकर्मसु ' जुत्तो ' युक्तः=संलग्न इति । एव ' भद्दगे ' भद्रके=निर्दोषे ' मच्छरी ' मत्सरिणः = परगुणद्वेषिण. ' जपति ' जल्पन्ति= ब्रुवन्ति । कीदृशास्ते मृषावादिनः ? इत्याह-' गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा ' गुणकीर्तिस्नेहपरलोकनिष्पिपासाः=गुणाः = विनयार्जवादयः, कीर्तिः= यशः स्नेह.=भूतेषु प्रीतिः, परलोक =जन्मान्तर तेषु निष्पिपासा =निराकाङ्क्षाः एवमुक्तप्रकारेण एते ' अलियवयणदक्खा ' अलीकवचनदक्षाः=मृषाभाषणनिपुणाः, ' परदोसुप्पायणसत्ता ' परदोषोत्पादनसक्ताः = परदोषाविष्करणतत्पराः

यह (विस्सभघायओ) विश्वासघाती है (पावकम्मकारी) पापकर्मकारी है, (अकम्मकारी) अनुचित कामों को करता रहता है, तथा (अगम्म-गामी) अगम्यगामी है-भगिनी आदिका सेवन करने वाला है। (अय दुरप्पा) यह दुरात्मा (बहुएसु य पातगेसु जुत्तो) अनेक पापकर्मो मे लगा रहता है। (भद्दगे) निर्दोष पुरुष मे (मच्छरी) दूसरों के गुणों से द्वेष करने वाले, तथा (गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा) विनय आर्जव आदि गुणों मे, कीर्ति मे तथा स्नेह-जीवों के ऊपर प्रीति रखने मे और परलोक में आकांक्षा विहीन पुरुष (एव पजति) इस प्रकार बोलते है। इन्हें अपने परलोकके सुधार की भी कोई चिंता नही होती है। (एव एए) इस प्रकार ये (अलियवयणदक्खा) असत्य बोलने में बडे चतुर, तथा (परदोसुप्पायणसत्ता) दूसरों के दोषो को प्रकट

वि विस्सभघायओ " ते विश्वासघाती छे, " पावकम्मकारी " पापकृत्यो करे छे, " अकम्मकारी " अनुचित कृत्यो करनारो छे," अगम्मगामी " अगम्यगामी छे-भगिनी आदिनु सेवन करनार छे, " अय दुरप्पा " आ दुरात्मा " बहुएसु य पातगेसु जुत्तो " अनेक पापकर्मोमा लीन रहे छे " " भद्दगे " निर्दोषपुरुषोनो ' मच्छरी " तथा अन्यना गुणोनो द्वेष करनार, तथा " गुणकित्ति नेह परलोग निप्पिवासा " विनय आर्जव आदि गुणोथी रहित, कीर्ति तथा स्नेहथी रहित, अने परलोकनी आकांक्षा रहित " एव जपति " उपर प्रमाणे बोले छे तेने पोतानो परलोक सुधारवानी पण चिन्ता होती नथी " एव एए " आ रीते ते " अलियवयणदक्खा " असत्य बोलवामा घणो निपुण, तथा " पर दोसुप्पायणसत्ता " अन्यना दोषोने जाहेर करवामा ज लीन एवो ते मृषा

'अक्खइ य बीएण' अक्षतिकबीजेन=अक्षय दुःखकारणेन 'कम्मबंधणेण' कर्म-बन्धनेन 'अप्पाणं' आत्मानं 'वेढेंति' वेष्टयन्ति, नरकनिगोदाद्यनन्तदुःखदायक कर्माणि समुपार्जयन्तीत्यर्थः । के ते ? इत्याह-'मुहरी' मुखारय=मुखमेव अरि=शत्रु-अरुन्तुदजनकवचनभाषित्वाद् येषां ते तथा । 'असमिक्खियप्पलावी' असमीक्षितप्रलापिनः=अविचारितानर्थकवक्तार इति ॥ सू० ८ ॥

पुनस्ते किं कुर्वन्ति ? तदाह-निक्खेवे' इत्यादि ।

मूलम्-निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थम्मि गढिय गिद्धा अभिजुंजंति य परं असंतएहिं लुद्धा य करेंति कूडसक्खित्तणं, असच्चा अत्थालियं च कन्नालियं च, भोमालियं च तहा गवालियं च, गरुयं भणंति, अहरगइगमणं अण्णं पि य जाइकुलरूवसीलपच्चयमाया निगुणं चवला पिसुणं परमट्ठभेदगमसंतकं विद्देसमणत्थकारगं पावकम्ममूलं दुद्दिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं निल्लज्जं लोगगरहणिज्जं वहबंधपरिकिलेसबहुलं जरामरणदुक्खसोगनेमं असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठं भणंति ॥ सू० ९ ॥

करने में ही लगे हुए मृषावादी पुरुष (अक्खइयबीएण) अक्षतिक बीज अक्षय दुःख के कारणभूत (कम्मबंधणेण) कर्मबंधन से (अप्पाणं) अपने आपको (वेढेंति) परिवेष्टित करते हैं, अर्थात्-नरकनिगोद आदि के अनंत) दुःखों को देनेवाले कर्मों को उपार्जित करते हैं। वैसे कौन होते हैं ?—(मुहरी) जिनका मुख ही शत्रु होता है, (असमिक्खियप्पलावी) जो बिना विचार किये ही अनर्थक प्रलाप करनेवाले होते हैं। वे ही पूर्वोक्त प्रकार का असत्यभाषण करते हैं ॥ सू-८ ॥

वादी पुरुष "अक्खइयवीर्ण्णं" अक्षतिक જીવ-અક્ષય દુઃખને માટે કારણ રૂપ "कम्मबंधणेण" કર્મબંધથી "अप्पाणं" પોતાની જાતને "वेढेंति" પરિવેષ્ટિત કરે છે, એટલે કે નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુઃખો દેનાર કર્મોનું ઉપાર્જન કરે છે એવા કોણ હોય છે ?—"मुहरी" જેમનું મુખ જ તેમનો શત્રુ હોય છે, અને "असमिक्खियप्पलावी" જે વિના વિચાર્યે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય છે તેઓ જ પૂર્વોક્ત પ્રકારનું અસત્ય ભાષણ કરે છે ॥ સૂ-૮॥

टीका-'परस्स' परस्य=अन्य सम्बन्धिनि 'अत्थम्मि' अर्थे=धने 'गढियगिद्धा' ग्रथितगृद्धाः=अत्यन्तलोलुपाः 'निक्खेवे' निक्षेपान्=न्यासान् 'धरोहर' तथा 'थापन' इति भाषाप्रसिद्धम्, 'अवहरति' अपहरन्ति 'न हि त्वया मत्पार्श्वे स्थापित' मित्युक्त्वा सर्वथा अपलपन्ति। 'अभिजुजति य' अभियोजयन्ति च=परम् 'असंतएहिं' असद्भिः=अविद्यमानैर्दोषैः। तथा 'लुद्धा य' लुब्धाश्च=परधनलोलुपा धनलोभेन 'कूडसक्खित्तण' कूटसाक्षित्व 'करेंति' कुर्वन्ति। चकाराद् ग्रन्थिमोचकत्वपश्यतो हरत्वादिकमपि विज्ञेयम्। 'असच्चा' असत्याः = असत्यवादिनः 'अत्थालिय' अर्थालीक=अर्थाय=धनादि प्रयोजनाय अलीक, तथा 'कन्नालिय' कन्यालीक-कुमारी विषयकमलीक, यथा-सुशीला कन्या दुःशीला, दुशीला च सुशीला मित्यादि कथयन्ति। इद लोकेऽतिगर्हितत्वादुपात्त तेन उपलक्षणमेतत्-मनुष्यजातिविषयकमस्तालीकस्य। 'भोमालीय' भूम्यलीक=पृथिवीनिमित्त-मसत्य-' तहा' तथा 'गवालिय' गवालीक=गोसम्बन्धिकमसत्य 'गरुय' गुरुक

फिर वे क्या करते हैं सो कहते हैं-' निक्खेवे ' इत्यादि।

टीकार्थ-(परस्स अत्थम्मि गढियगिद्धा) दूसरों के धन में अत्यत लोलुप बने हुए ये (निक्खेवे अवहरति) धरोहर को-" तुमने मेरे पास नहीं रखी है " ऐसा कहकर दबा लेते हैं। तथा (अभिजुजति य पर असतएहिं) दूसरों को अविद्यमान दोषों से दूषित कर देते हैं। (लुद्धा य कूडसक्खित्तण करेंति) परधन के लोभ से लुब्ध बने हुए ये झूठी गवाही देते हैं तथा (च) शब्द से दूसरों की गाठ कतर लेते हैं तथा देखते देखते धन भी चुरा लेते हैं। (असच्चा) ये असत्यवादी (अत्थालिय) अर्थालीक, (कन्नालीय) कन्यालीक, (भोमालिय) भूम्य

વળી તેઓ શુ કરે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-" निक्खेवे " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"परस्स अत्थम्मि गढियगिद्धा" બીજાના ધનને માટે લોલુપ બનેલા તે "निक्खेवे अवहरति" ધરોહરને-અનામત થાપણને પચાવી પાડવા માટે આ પ્રમાણે કહે છે-" તમે મારે ત્યા તમારી થાપણ મૂકી જ નથી " તથા ' अभिजुजति य पर असतएहिं " બીજા લોકોમા-તેમનામા ન હોય તેવા દોષોનુ આરોપણ કરીને તેમને કલકિત કરે છે

" लुद्धा य कूडसक्खित्तण, करेति " પારકાના ધનને લોભે તેઓ ખોટી સાક્ષી આપે છે તથા "च' શબ્દથી બીજાના ખીસ્સા કાપે છે અને જોત જોતામા ધન પણ ચોરી લે છે " असच्चा ' તે અસત્યવાદી લોકો ' अत्थालिय " અર્થાલીક, " कन्नालिय " કન્યાલીક, " भोमालिय " ભૂમ્યલીક, "

=महदसत्य भणन्ति येन जिह्वाछेदनादिकं भवतीत्यर्थः। 'अहरगइगमन=अधरगतिगमन=अधरगतौ गमनं येन तत् तथा=नरकाद्यधोगतिगमनकारणम्। 'अण्णपि य' अन्यदपि च असत्यं ब्रुवन्ति, तदेवाह–' जाइकुलरूवसीलपच्चयमायानिगुण जातिकुलरूपशीलप्रत्ययमायानिगुण=तत्र जातिः=मातृपक्षः, कुल=पितृपक्ष, रूपम्=

लीक, (तहा) तथा (गवालिय) गवालीक, (गरुय) बहुत अधिकरूप में (भणति) बोलते हैं। धनादि प्रयोजन के लिये जो झूठ वचन बोले जाते हैं। वह अर्थालीक है, धनादि प्रयोजन के लिये जो झूठ कहना होता है वह कन्यालीक है–जैसे-सुशीला कहना, और दुःशीला को सुशीला कहना आदि। पृथिवी निमित्त जो झूठ बोला जाता– वह भूम्यलीक है जैसे–अनुर्वरा भूमिको उर्वरा कहना आदि। गाय के विषय में जो असत्य बोला जाता है उसका नाम गवालीक है, जैसे–नहीं दूध देनेवाली गाय को दूध देनेवाली कहना, कम दूध देनेवाली गाय को बहुत दूध देनेवाली कहना आदि। इस असत्य में जिह्वाछेद आदि दण्ड होता है इसलिये उसको गुरुकबड़ा असत्य कहा है, तथा (अहरगईगमण) नरक आदि अधोगतियों में गमन कराने वाले ऐसे (अण्णपि) और भी विविध प्रकार के (जाइकुलरूवसीलपच्चयमायानिगुण) अपनी जाति, कुल, रूप, स्वभाव ये हैं कारण जिनके ऐसे तथा मायानिगुण अप्रशनीय की प्रशसा–प्रशसनीयजन की निन्दारूपमाया वाला होने से निगुण–

તથા "गवालिय" ગવાલીક "गुरुय" બહુ જ વધારે પ્રમાણમા "भणति" બોલે છે ધન આદિને ખાતર જેજૂઠા વચનો બોલાય છે તે અર્થાલીક કહેવાય છે કન્યાની બાબતમા જે અસત્ય કહેવામા આવે છે તે કન્યાલીક કહેવાય છે, જેમ કે સુશીલ કન્યાને દુ શીલ કહેવી અને દુ શીલને સુશીલ કહેવી જમીન આદિને નિમિત્તે જે જૂઠા વચનો બોલાય છે તે ભૂમ્યલીક છે જેમ કે અનુપજાઉ જમીનને ઉપજાઉ બતાવી આદિ ગાયને વિષે જે અસત્ય બોલાય છે તેને ગવાલીક કહે છે, જેમ કે દૂધ ન દેનારી ગાયને દૂધ દેનારી કહેવી, ઓછુ દૂધ દેનારી ગાયને વધુ દૂધ દેનારી કહેવી આદિ ગવાલિકના દૃષ્ટાતો છે આ અસત્યમા જીહાનુ છેદન આદિ શિક્ષા થાય છે તેથી તેને ગુરુક–મોટુ અસત્ય કહેલ છે તથા "अहरगईगमण" નરક આદિ અધોગતિયોમા ગમન કરાવનાર એવા "अण्णपि" બીજા પણ વિવિધ પ્રકારના "जाइकुलरूवसीलपच्चयमाया निगुण" પોતાની જાતિ, કુળ રૂપ, સ્વભાવ આદિ જેના કારણો છે એવા, તથા માયાનિગુણ–અપ્રશ સનીયની પ્રશ સા અને પ્રશ સનીય જનની નિંદારૂપ–માયાવાળા હોવાથી નિગુણ–સ્વપરહિત, એવા વચનોને બોલ્યા કરે છે માતૃ

आकृतिः, शील च=स्वभाव, एतानि प्रत्यय=कारण यस्य तत् मायानिगुण च= निन्दनीयस्य प्रशसा प्रशसनीयस्य निन्दा माया तत्सत्त्वादेव निगुण=गुणरहिते स्वपरहितादिवर्जित 'चवला' चपलाः=अस्थिरान्तःकरणा' मृषावादिनो भणन्ति। पुनः कथ भूतमलीकमित्याह-' पिसुण ' पिशुन=परदोषाविष्करणरूप ' परमट्ठभेदग' परमार्थभेदक=परमार्थो=मोक्षः, तत्प्रतिघातकम् ' असतक ' असत्कम्=परमार्थ वर्जित ' विदेस ' विद्वेष्यम्=अप्रियम् ' अणत्थकारग ' अनर्थकारक=धर्मादिपुरुषार्थ विघातेन नरकगमनजननमरणाद्यनर्थजनक 'पावकम्ममूल=पापकर्ममूल पाप ज्ञाना वरणादिकर्म तत्कारण 'दुद्दिट्ठ' दुर्दृष्ट=दुष्ट दृष्ट यत्र तत् दुर्दृष्ट=कुत्सितदर्शन 'दुस्सुय' दुःश्रुत=दुष्ट श्रुत यत्र तत्तथा दुश्रुत=दुष्टश्रवणम् ' अमुणिय ' अज्ञान=अज्ञानरूप

स्वपरहितवर्जित ऐसे वचनों को बोला करते है। मातृ पक्ष का नाम जाति, पितृपक्ष का नाम कुल, रूप का नाम आकृति और शील का नाम स्वभाव है। तथा (चवला) जो अस्थिर अन्तः करणवाले मृषावादी जन होते है वे पिशुनादि विशेषणों वाले असत्य वचन बोलते हैं। वे इस प्रकार जो वचन (पिसुण) पर के दोषों के प्रकट करने वाले होते हैं। (परमट्ठभेदग) परमार्थ-मोक्ष के भेदक होते हैं।(असतग) असत्क परमार्थ से रहित होते हैं। (विदेस) विद्वेष्य-अप्रिय होते हैं। (अणत्थकारग) अनर्थकारक-धर्मादिक पुरुषार्थ के विघातक होने से नरक गमन जनन मरणादिरूप अनर्थ के उत्पादक होते है। (पावकम्ममूल) पापकर्म के मूल-ज्ञानावरणादिरूप कर्म के कारण-होते हैं। (दुद्दिट्ठ) दुर्दृष्ट-दुष्ट दर्शनवाले हैं-अर्थात्-इन वचनों द्वारा जो दर्शन प्रतिपादित किया जाता है वह कुत्सित-सदोष होता है। (दुस्सुय) दुःश्रुत होते हैं-

---

પક્ષને જાતિ, પિતૃ પક્ષને કુળ, રૂપને આકૃતિ અને શીલને સ્વભાવ કહે છે તથા " चवला " ચચળ મનવાળા મૃષાવાદી લોકો પિશુનાદિ વિશેષણોવાળા અસત્ય વચનો બોલે છે તે આ પ્રમાણે છે જે વચન " पिसुण " અન્યના દોષોને પ્રગટ કરનારા હોય છે, "परमट्ठभेदग" પરમાર્થ-મોક્ષને ભેદનાર હોયછે " असतग " અસત્ક-પરમાર્થ રહિત હોય છે, " विद्देस " વિદ્વેષ્ય-અપ્રિય હોય છે, " अणत्थकारग " અનર્થકારક-ધર્માદિ પુરુષાર્થના વિઘાતક હોવાથી નરક ગમન જનક મરણાદિરૂપ અનર્થના ઉત્પાદક હોય છે, " पावकम्ममूल " પાપ કર્મનુ મૂળ-જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મનુ-કારણ હોય છે, " दुद्दिट्ठ " દુર્દષ્ટ-દુષ્ટ-દર્શનવાળા છે, એટલે કે ને વચનો દ્વારા જે દર્શનનુ પ્રતિપાદન કરવામા આવે છે તે કુત્મિત-સદોષ હોય છે, " दुस्सुय " દુશ્રુત-જેને સાભળવાનુ પણ કોઈ

'निल्लज्ज' निर्लज्ज=लज्जावर्जित 'लोगगरहणिज्ज' लोकगर्हणीय = सर्वजन निन्दनीय 'वहबधपरिकिलेसबहुल' वधबन्धपरिक्लेशबहुल=तत्र वधः=मारण बन्ध =रज्ज्वादिना बन्धन परिक्लेशः=दुःखसन्तापस्ते बहुला अधिकाः यस्मिन्नलीके तत्तथा मृषाभाषणेन हि एते भवन्त्येव मृषा भाषिणा 'जरामरणदुक्खसोगनेम' जरामरणदुःखशोकाना नेमम्=अवधिभूतम् 'असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठ' अशुद्ध परिणामसंक्लिष्ट = अशुद्धेन=अशुभेन परिणामेन संक्लिष्ट=व्याप्तमलीक भणन्ति चपला इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥ सू० ९ ॥

कीदृशास्ते ? इत्याह—'अलिया हि' इत्यादि ।

मूलम्—अलियाहि सधिसंनिविट्ठा असतगुणुदीरगा य संतगुण नासका य हिसा भूओवघाइय अलियं सपउत्ता वयण

इनका सुनना भी कोई भी सत्यवादी पसद नहीं करता है । (अमुणिय) ये अमनोज्ञ होते है। अथवा अज्ञानरूप होते है-इनसे वास्तविक वस्तु का बोध नहीं होता है । (निल्लज्ज) निर्लज्ज-लज्जावर्जित होते हैं-अर्थात् ऐसे वचन बोलने वालों को किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं आती है । (लोगगरहणिज्ज) जिन वचनों की समस्तजन निन्दा किया करते हैं । (वहबधपरिकिलेसबहुल) जो इन वचनों को बोलते है वे व्यक्ति इन वचनों के कारण बहुत अधिक वध, बधन और परिक्लेश को पाते हैं । (जरामरणदुक्खसोगनेम) ये वचन जरा, मरण, दुःख एव शोक के हेतुभूत होते है। (असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठ) इनके बोलने वालों के परिणाम अशुभहोते हैं । इस प्रकार के असत्य वचनों को चपल पुरुष बोलते हैं ॥सू-९ ॥

સત્યવાદી પસદ કરતો નથી। "अमणुय" તે અમનોજ્ઞ હોય છે-અજ્ઞાનરૂપ હોય છે-તેમનાથી વાસ્તવિક વસ્તુનો બોધ થતો નથી, "निल्लज्ज" નિર્લજ્જ લજ્જારહિત હોય છે, એટલે કે એવા વચનો બોલનારને કોઈ પ્રકારની શરમ આવતી નથી, "लोगगरहणिज्ज" જે વચનોની સઘળા લોકો નિંદા કરે છે, "वहबधपरिकिलेसबहुल" એવા વચનો બોલનાર માણસ તે વચનોને કારણે ઘણો વધારે વધ, બધન અને પરિકલેશ પામે છે "जरामरणदुक्ख सोगनेम" તે વચનો જરા, મરણ, દુ ખ અને શોકના હેતુભૂત હોય છે "असुद्ध परिणामसकिलिट्ठ" તેવા વચનો બોલનારના પરિણામ-મનોભાવ-અશુભ હોય છે આ પ્રકારના અસત્ય વચનો ચચળ વૃત્તિના માણસો બોલે છે ॥ સૂ-૯ ॥

सावज्जमकुसल साहुगरहणिज्जं अधम्मजणणं भणति अणहिगय-
पुण्णपावा पुणो वि अहिकरण किरियपवत्तगा बहुविहं अनत्थं
अवमद्द अप्पणो परस्स करेंति ॥ सू० १० ॥

टीका—'अलियाहि सधि सनिविट्ठा' अग्गीकाभि सन्निसन्निविष्टाः=अलीकवादे योऽभिसन्धिः=अभिप्रायस्तत्र सन्निविष्टाः=सस्थिताः 'असतगुणुदीरगा' असद्गुणोदीरकाः=अविद्यमानगुणकथकाः 'सतगुणनासगा य' सद्गुणनाशकाश्च =विद्यमानगुणापलापकाः 'अलियसपउत्ता' अलीकसम्प्रयुक्ता = असत्यभाषणतत्परा 'हिंसा भूओवघाइय' हिंसाभूतोपघातिक = यस्य कथनेन जायमानया हिंसया भूताना=प्राणिनाम्=उपघातः=विनाशो येन भवति तत्तादृश 'सावज्ज' सावद्य=सपापम् 'अकुसल' अकुशलम्=सर्वप्राणिनामहितकर 'साहुगरहणिज्ज' साधुगर्हणीयम्=महापुरुषैस्तीर्थंकरगणधरैर्निन्दित 'अधम्मजणण' अधर्मजननम्=पापोत्पादकम् एतादृश 'वयण' वचन भणन्ति। पुनः कथ भूतास्ते ? इत्याह—

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—'अलियाहि' इत्यादि।

टीकार्थ—(अलियाहि सधिसनिविट्ठा) अलीकवाद के अभिप्राय में सस्थित मृषावादी (असतगुणुदीरगा) अविद्यमानगुणों के कहने वाले और (सतगुणनासगा य) विद्यमान गुणों के लोप करने वाले होते हैं (अलिय सपउत्ता) इसी तरह असत्यभाषण करने में तत्पर बने हुए वे (हिंसाभुओवघाइय) जिनवचनों के कहने से प्राणियों का हिंसा द्वारा विनाश हो जाता हैं ऐसे (सावज्ज, सावद्य, (अकुसल) सर्व-प्राणियों के अहितकारक, (साहुगरहणिज्ज) साधु पुरुषों द्वारा गर्हणीय, एव (अधम्मजणग) अधर्मजनक (वयण) वचनों के कहने से (भणति)

વળી તે કેવા હોય છે તે સૂત્રકાર કહે છે—"अलियाहि" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"अलियाहि सधिसनिविट्ठा" અલીકવાદના અભિપ્રાયમા રહેલ મૃષાવાદી "असतगुणुदीरगा" અવિદ્યમાન-અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોનુ કથન કરનાર અને "सतगुणनासगा य" વિદ્યમાન ગુણોને છુપાવનાર હોય છે, "अलियसपउत्ता" આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ "हिंसाभूओवघाइय" પ્રાણીઓની હિંસા થાય તેવા "सावज्ज" સાવદ્ય, "अकुसल" સમસ્ત પ્રાણીઓનુ અહિત કરનારા "साहुगरहणिज्ज" સાધુ પુરુષો દ્વારા નિંદ્ય અને "अधम्मजणग" અધર્મજનક "वयण" વચનો "भणति" બોલે છે "अणहिगयपुण्णपावा"

'अणहिगयपुण्णपावाः अनधिगतपुण्यपापाः = पुण्यपापजनितफलज्ञानविकलाः, 'पुणो वि' पुनरपि 'अहिकरणकिरियापवत्तगा' अधिकरणक्रियाप्रवर्त्तकाः–अधिकरण पापारम्भः तस्य क्रिया=व्यापारः तस्य प्रवर्त्तकाः, 'अप्पणो परस्स य' आत्मन परस्य च 'वहुविहं' बहुविधम् 'अणत्थ' अनर्थं 'अवमद्द' अवमर्द = विनाश 'करेति' कुर्वन्ति ॥ सू० १० ॥

पुनः किं कुर्वन्ती ? त्याह—'एवमेवे' त्यादि ।

मूलम्–एवमेव जंपमाणा महिसे सूयकरे य साहेंति घाय गाणं, ससपसयरोहिसे य साहेंति वागुराणं, तित्तिरवट्टकलावे य कविंजल–कवोयगे, य साहेंति सउणीणं, झसमगरकच्छभे य साहेंति मच्छियाणं, संखके खुल्लए य साहेति मगराणं, अयगर–गोणस–मंडलि दव्वीकर मउली य साहेंति वालियाणं, गोहा सेहा य सल्लग सरडए य साहेंति लुद्धगाणं, गयकुल वानरकुले य साहेंति पासियाणं, सुकबरहिणमयणसालकोइल हंसकुले सारसे य साहेंति पोसगाणं, वधवधजायणं च साहेति गोम्मियाणं, धणधन्नगवेलए य साहेति तक्कराणं, गामनगर पट्टणे य साहेंति चारगाणं पारघायग पथघायगे साहेति गंथि भेयाणं, कयं च चोरियं णगरगुत्तियाणं साहेति लंछणनिल्लंछण-

बोलते हैं। (अणहिगयपुण्णपावा) तथा जो पुण्य और पाप के फल ज्ञान से रहित होते हैं। तथा (पुणो वि अहिगरणकिरियापवत्तगा) बार २ पापारंभ की क्रियाओं के प्रवर्त्तक होते हैं वे (अप्पणो परस्स य) अपना और पर का (बहुविहं) अनेकविध (अणत्थ) अनर्थ और (अवमद्द) विनाश (विराधना) (करेंति) करते हैं ॥सू १०॥

તથા જે પુન્ય અને પાપના ફળજ્ઞાનથી રહિત હોય છે, તથા " पुणो वि अहिगरण किरियापवत्तगा " વારવાર પાપારંભની ક્રિયાઓના પ્રવર્તક હોય છે, તે " अप्पणो परस्स य " પોતાનુ અને પારકાનુ " बहुविहं " અનેક પ્રકારે "अणत्थ" અહિત અને "अवमद्द" વિનાશ "विराधना" "करेंति" કરે છે ॥સૂ-૧૦॥

सावज्जमकुसल साहुगरहणिज्ज अधम्मजणण भणंति अणहिगय-पुण्णपावा पुणो वि अहिकरण किरियपवत्तगा बहुविहं अनत्थ अवमद्दं अप्पणो परस्स करेंति ॥ सू० १० ॥

टीका—'अलियाहि सधि सनिविट्ठा' अलीकाभि सन्धिसन्निविष्टाः=अलीकवादे योऽभिसन्धिः=अभिप्रायस्तत्र सन्निविष्टाः=सस्थिताः 'असतगुणुदीरगा' असद्गुणोदीरकाः=अविद्यमानगुणकथकाः 'सतगुणनासगा य' सद्गुणनाशकाश्च =विद्यमानगुणापलापकाः 'अलियसपउत्ता' अलीकसम्प्रयुक्ता = असत्यभाषणतत्परा 'हिंसा भूओवघाइय' हिंसाभूतोपघातिक = यस्य कथनेन जायमानया हिंसया भूताना=प्राणिनाम्=उपघातः=विनाशो येन भवति तत्तादृश 'सावज्ज' सावद्य=सपापम् 'अकुसल' अकुशलम्=सर्वप्राणिनामहितकर 'साहुगरहणिज्ज' साधुगर्हणीयम्=महापुरुषैस्तीर्थंकरगणधरैर्निन्दित 'अधम्मजणण' अधर्मजननम्=पापोत्पादकम् एतादृश 'वयण' वचन भणन्ति। पुनः कथ भूतास्ते ? इत्याह-

---

फिर वे कैसे होते है सो कहते हैं—'अलियाहि' इत्यादि।

टीकार्थ—(अलियाहि सधिसनिविट्ठा) अलीकवाद के अभिप्राय में सस्थित मृषावादी (असतगुणुदीरगा) अविद्यमानगुणों के कहने वाले और (सतगुणनासगा य) विद्यमान गुणों के लोप करने वाले होते हैं (अलिय सपउत्ता) इसी तरह असत्यभाषण करने में तत्पर बने हुए वे (हिंसाभुओवघाइय) जिनवचनों के कहने से प्राणियों का हिंसा द्वारा विनाश हो जाता है ऐसे (सावज्ज, सावद्य, (अकुसल) सर्व-प्राणियों के अहितकारक, (साहुगरहणिज्ज) साधु पुरुषो द्वारा गर्हणीय, एव (अधम्मजणग) अधर्मजनक (वयण) वचनों के कहने से (भणति)

વળી તે કેવા હોય છે તે સૂત્રકાર કહે છે—"अलियाहि" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"अलियाहि सधिसनिविट्ठा" અલીકવાદના અભિપ્રાયમા રહેલ મૃષાવાદી "असतगुणुदीरगा" અવિદ્યમાન–અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોનુ કથન કરનાર અને "सतगुणनासगा य" વિદ્યમાન ગુણોને છુપાવનાર હોય છે, "अलियसपउत्ता" આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ "हिंसाभूओवघाइय" પ્રાણીઓની હિંસા થાય તેવા "सावज्ज" સાવદ્ય, "अकुसल" સમસ્ત પ્રાણીઓનુ અહિત કરનારા "साहुगरहणिज्ज" સાધુ પુરુષો દ્વારા નિંદ્ય અને "अधम्मजणग" અધર્મજનક "वयण" વચનો "भणति" બોલે છે "अणहिगयपुण्णपावा"

कवोयए य साहेंति सउणीण ' तित्तिरवर्तकलावकांश्च कपिञ्जलकपोतकांश्च साधयन्ति शाकुनिकाना, तित्तिराः-प्रसिद्धाः, वर्तका=' बटेर ' इति भाषा प्रसिद्धाः लावकाः=लावा इति भाषा प्रसिद्धाः कपिञ्जला'=तन्नामकपक्षिविशेषाः ' कुरञ्ज ' इति प्रसिद्धा, कापोतकाः=पारापतकाः ' कबूतर ' इति भाषा प्रसिद्धाः एतान् शाकुनिकाना=पक्षिघातकान् प्रति दर्शयन्ति ' झसमगरकच्छभे य साहेंति मच्छियाण ' झषमकरकच्छपांश्च साधयन्ति मात्सिकाना=झषाः मत्स्याः मकरकच्छपाश्च =प्रसिद्धास्तान् हन्तु मात्सिकाना=मत्स्याः पण्य येषा ते मात्सिका धीवरास्तान् प्रति जलाशयादिकं दर्शयन्ति ' सखके खुल्लगे य साहेंति मगराण ' शङ्खाङ्कान् क्षुल्लकांश्च साधयन्ति मकराणा शङ्खाः=प्रसिद्धा अङ्काः=तज्जातीयाः क्षुल्लकाः ' कौडी ' इति भाषा प्रसिद्धा एतान् मकरतुल्यजलविहारि धीवरान् कथयन्ति ' अयगर=गोणसमडलिदव्वीकरमडलीय साहेंति वालियाण ' अजगर गोनसमण्डलि दर्वीकर मुकुलिनश्च साधयन्ति व्यालपाना=तत्र अजगरा =प्रतीताः सर्पविशेषाः, गोनसाः फणरहिताः द्विमुखसर्पाः, मण्डलिन'=सर्पविशेषा , दर्वीकरा'=फणकारकाः सर्पाः, मुकुलिनः=ईषत् फणकारकास्तान् व्यालपाना=व्यालग्राहकान् प्रति सर्पस्थलानि

हैं (तित्तिर वट्टग लावगे य कविंजलकवोयए य साहेंति सउणीण) तथा तीतरों को, बटेरों को लावापक्षियों को, कपिंजलों को और कबूतरों को शाकुनिकों-इनके मारने वालों के लिये बतला देते हैं (झसमगरकच्छभे य साहेंति मच्छियाण) तथा धीवरों-मच्छीमारों के लिये मच्छियों, मगरों एव कच्छपों के जलाशयों को दिखला देते हैं। (सखके खुल्लगे य साहेंति मगराण) तथा (मगराण) जल में फिरने वाले धीवरों के लिये ये शखों के, अकों के-विशेष प्रकार के शखों के, क्षुल्लकों के-कोडियों के स्थानों को बतला देते हैं। (अयगर-गोणस-मडलि-दव्वीकर-मडली य साहेंति वालियाण) तथा जो व्यालिक सपेरे-साप पकडने वाले होते हैं उन्हें अजगर के, गोनस दुमुही के, मडली के, दर्विकर-फणा फैलाने वाले साप के, मुकुली-थोडे रूप में फणा तानने वाले

खवट्टगलावगे य कविंजलकवोयए य साहेंति सउणीण " तथा तेतर, બટેરપક્ષીઓ લાવા પક્ષીઓ, કપિંજલો અને કબૂતર આદિ પક્ષીઓ શાકુનિકો (પારધીઓ) ને બતાવી દે છે " झसमगरकच्छभे य साहेंति मच्छियाण ' તથા માછીમારોને માછલીઓ, મગરો અને કાચબા જે જળાશયોમા હોય તે જળાશયો બતાવી દે છે " सखके खुल्लगे य साहेंति मगराण' તથા " मगराण " જળમા ફરનારા ધીવરોને શખોના, અકોના વિશેષ પ્રકારના શખો અને ક્ષુલ્લકોના-કોડીઓના સ્થાનો બતાવી દે છે "अयगर-गोणस-मडलि-दव्वीकर मडलीय साहेंति वालियाण" તથા વ્યાલિકને સાપ પકડનારને અજગરના, બે મુખવાળા ગોનસના, મડલીના, દર્વીકરના

धमणदुहणपोसणवणणदुवणवाहणादियाइं साहेंति बहूणि गोमियाण, धाउ–मणि–सिल–प्पवाल–रयणागरे य साहेंति आगरीण, पुप्फविहिं च फलविहिं च साहेंति मालियाणं अत्थमहुकोसए य साहेंति वणचराणं ॥ सू० ११ ॥

टीका—'एवमेव जपमाणा' एवमेव जल्पन्तः=पूर्वोक्तरीत्या सावद्यमबुद्धिपूर्वक वक्ष्यमाणं भाषमाणा, 'महिसे सूकरे य साहेंति घायगाण' महिषान् सूकरांश्च साधयन्ति घातकानां='तस्मिन् वने बहवो महिषाः सूकराश्च सन्ति गच्छ तत्रे'त्यादि तेषां घातकान् प्रति कथयन्ति तथा 'ससपसयरोहिसे य साहेंति वागुरीण' शशपसयरोहिषांश्च साधयन्ति वागुरिणां=तत्र शशाः=प्रसिद्धाः पसय=देशी शब्दोऽयं मृगवाचकः, रोहिषाः=मृगविशेषा एव, तान् जालेन मृगघातकान् प्रति 'तत्र मृगाः सन्ती'ति साधयन्ति=कथयन्ति, तित्तिरवट्टगलावगे य कपिञ्जल-

फिर क्या करते हैं सो कहते हैं–'एवमेव' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवमेव) पूर्वोक्त रीति से अबुद्धिपूर्वक (जपमाणा) वक्ष्यमाण आगे कहे जाने वाले सावद्य वचनों को कहते हुए वे महिषादि प्राणियों को शिकारी के लिये बतला देते हैं वे इस प्रकार–(महिसे सूकरे य घायगाण साहेंति) महिषों और सूकरों को मरवाने के अभिप्राय से घातको के प्रति "उस वन मे जाओ वहा अनेक महिष और सूकर है" इस प्रकार कहते हैं। तथा (ससपसयरोहिसे य साहेंति वागुरीण) शश–खरगोश, पसय–मृग एव रोहिष–मृग विशेष, इन्हें वागुरिकों–जाल से पकडने वाले मृग घातकों से अर्थात् अहेरियों से–जाओ उस वन में बहुत से मृग आदि जानवर हैं उन्हे मारो" इस प्रकार कहते

વળી તે મૃષાવાદી શું કરે છે તે કહે છે—"एवमेव" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"एवमेव" પૂર્વોક્ત પ્રકારે અબુદ્ધિપૂર્વક "जपमाणा" આગળ કહેવામા આવનાર સાવદ્ય (પાપયુક્ત) વચનો કહીને તેઓ મહિષાદિ પ્રાણીઓ શિકારીને બતાવી દે છે તે આ પ્રમાણે છે

"महिसे सूकरे य घायगाण साहेंति" પાડા અને સૂવરની હત્યા કરવાને માટે શિકારીઓને તે કહે છે કે "આ વનમા જાઓ ત્યા અનેક પાડા અને સૂવર છે" તથા "ससपसयरोहिसे य साहेंति वागुरीण' તથા સસલા, મૃગ અને રોહિષ–મૃગ વિશેષ–ને જાળથી પકડનાર વાઘરી આદિ મૃગઘાતકોને તે છે કે 'જાઓ, આ વનમા ઘણા મૃગાદિ જાનવરો છે, તેમને મારો'

साधयन्ति गौल्मिकाना–वधबन्धयातनं च–वधः=मारणं बन्धः=बन्धनं रज्ज्वादिना यातनं=दमनं कशादिभिरित्येतानि गौल्मिकानां=कोटपालान् कथयन्ति, अपराधादिकं कथयित्वा कोटपालादिभिः वधादिकं कारयन्तीत्यर्थः, 'धणधन्नगवेलए य साहेंति तक्कराणं' धनधान्यगवेलकांश्च साधयन्ति तस्कराणां=धनधान्यगवेलकांश्च= धनं च धान्यं च गावश्च एलकाः=मेषाश्च तान् चोरयितुं तस्करान् प्रति कथयन्ति, 'गामनगरपट्टणे य साहेंति चारगाणं' ग्रामनगरपत्तनानि साधयन्ति चारकाणां =ग्रामादीनि गुप्तपुरुषान् प्रति भेदार्थं कथयन्ति, 'पारघाइयपथघाइयाओ साहेंति गंथिभेयाणं' पारघातिक पथघातकान् साधयन्ति ग्रन्थिभेदकानां, पारघातिका पारे=ग्रामनगरादि सीमान्ते घातकाः – पारघातिकाः, पथि=मार्गे घातिका = मार्गघातकास्तान् लुण्टितुं ग्रन्थिभेदकान्=चोरविशेषान् प्रति कथयन्ति । 'कयं चोरियं णगरगुत्तियाणं साहेंति' कृतां च चौरिकां चौर्यं नगरगुप्तिकानां=कोटपालान् साधयन्ति । तथा 'लंछण निल्लंछण धमण दुहण पोसणवणणदुवणवाहणादि-

अपराधों को प्रकाशित करके जीवों का कोतवाल से वध बंधन, यातना करवाते हैं। (धन धन्न गवेलए य साहेंति तक्कराणं) जो चोर होते हैं उनसे मिलकर धन, धान्य, गाय और एलक–मेषों की चोरी करने को कहते हैं (गामनगरपट्टणे य साहेंति चारगाणं) जो गुप्तचर होते हैं– उन्हें ग्राम आदि का भेद लाने के लिये प्रेरित करते है, अथवा उन्हें ग्राम आदि का भेद कहते हैं। (पारघाइयपथघाइयाओ साहेंति गंथिभेयाणं) जो ग्रन्थिभेदक चोर विशेष–अर्थात्–चोरी का माल खाने वाले होते हैं उनसे पारघातिकों–गाम की सीमापर घात करने वालो को मार्गघातको मार्गमें लूटने वालोंको लूटनेके लिये कहते हैं (कयं य चोरियं णगरगुत्तियाणं साहेंति) कोटपालो के लिये नगर आदि में हुई चोरी का पता कहते हैं (लछण–निल्लछण–धमण–दुहण–पोसण–वणण–

કરીને કોટવાલ પાસે જીવોનો વધ કરાવે છે, બંધનમા નખાવે છે અને પીડા પહોંચાડે છે "धनधन्नगवेलए य साहेंति तक्कराणं" ચોરોને મળી તેમને ધન, ધાન્ય, ગાય અને ઘેટાઓની ચોરી કરવાનુ કહે છે "गामनगरपट्टणे य साहेंति चारगाणं" ગુપ્તચરોને ગ્રામ આદિનો ભેદ શોધી લાવવા પ્રેરે છે, અથવા તેમને ગ્રામ આદિનો ભેદ બતાવે છે "पारघाइयपथघाइयाओ- साहेंति गंथिभेयाणं" જે ગ્રન્થિભેદક હોય––એટલે કે ચોરીનો માલ ખાનાર હોય છે તેમને, તથા પરઘાતિકો–ગામની સીમા પર ઘાત કરનારાને તથા માર્ગમા લૂંટી લેનારને "कय य चोरियं णगरगुत्तियाणं साहेंति" કોટવાળોને નગર આદિમા થયેલ ચોરી કરનારને બતાવવામા મદદ કરે છે

कथयन्ति, ' गोहासेहायसल्लगसरडगे य साहेंति लुद्धगाण ' गोधाः सेहांश्च शल्यक शरटकांश्च साधयन्ति लुब्धकाना गोधाः=भुजपरिसर्पविशेषाः ' गोहा ' इति भाषा प्रसिद्धाः, सेहाश्च=भुजपरिसर्पविशेषा एव ' सहसहेली ' इति भाषा प्रसिद्धास्तान्, शल्यक शरकटाश्च—शल्यकाः ' सीसोल्यिा ' इति प्रसिद्धाः, शरटकाश्च=कृकलासाश्च ' गिरगिट ' करगेटिया इति भाषा प्रसिद्धास्तान् , लुब्धकाना=पापर्धिकान् ' शिकरी ' इति प्रसिद्धान् प्रति कथयन्ति । ' गयकुलवानरकुले य साहेंति पासियाण' गजकुलवानरकुलानि च साधयन्ति पाशिकाना=गजकुलानि वानरकुलानि च पाशिकाना पाशेन=गजबन्ध विशेषेण चरन्ति ये ते पाशिकाः गजादिबन्धनकारका स्तान् कथयन्ति। 'सुकबरहिणमयणसालकोइलहसकुले सारसे य साहेंति पोसगाण' शुकबर्हिमदनशालकोकिलहसकुलानि सारसाश्च साधयन्ति पोषकाणा=तत्र शुकाः प्रसिद्धा , वर्हिणो मयूराः मदनशाला =सारिका', कोकिला', हसाश्च प्रतीता तेषा यानि कुलानि=वृन्दानि तानि तथा सारसाश्च, पोषकाणा=पक्षिपालकान् प्रति कथयन्ति। ' वधबधजायण च साहेंति गोम्मियाण' वधबन्धयातन च

सर्प के निवासस्थानों को बतला देते हैं। (गोहा सेहा य सल्लग सरडगे य साहेंति लुद्धगाण) गोधा–गोह–सेह–सहेली, शल्यक–सीसोलिया, शरटक–कृकलास गिरगिट–गिरदीला, इन जीवों को जो शिकारी होतेहैं। उन्हें बतला देते (गयकुल वानर कुले य साहेंति पासियाण) तथा पाशिक जो गज आदिकों को पकड़ने वाले होते हैं उन्हें हाथियों को बदरों को दिखला देते हैं, अर्थात् इनके रहने के स्थानों को कह देते हैं। (सुक बरहिण मयणसालकोइलहसकुले सारसे य साहेंति पोसगाण) तथा–जो पक्षिपोषक होते हैं उनसे तोता, मयूर, मैना, कोकिल, हँस इनके विषय में " इनको तुम पालो " ऐसा कहते हैं और " सारसपक्षियों को भी पालो " ऐसी सलाह देते हैं। (वधबधजायणं च साहेंति गोम्मियाण)

ફણા ફેલાવનાર સાપના, મુકુલીના-થોડા પ્રમાણુમા ફણા ફેલાવનારા સાપના નિવાસ સ્થાનો બતાવી દે છે " गोहा सेहा य सल्लग सरडगे य साहेंति लुद्ध गाण ' ગોધા-ઘો, સેહ-સહેલી, શલ્યક-સીસોલીયા,ત શરટક-કૃકલાસ ગિરગિટ-કાચડા વગેરે જીવો શિકારીઓને બતાવી દે છે " गयकुलवानरकुलेय साहेंति पासियाण ' તથા પાશિકોને-ગજ આદિને પકડનારાને હાથીઓ તથા વાનરોના નિવાસસ્થાન બતાવી દે છે " सुकबरहिणमयणसालकोइलहसकुले सारसे य साहेंति पोसगाण" તથા પક્ષીઓને પાળનારને તે પોપટ, મોર, મેના કોયલ, હ સ વગેરે પાળવાનુ કહે છે અને સારસ પક્ષીઓને પણ પાળવાની સલાહ આપે છે " वधबधजायण च साहेंति गोम्मियाण " અપરા...

खनिपतीन् कथयन्ति । तथा 'पुप्फविहिं फलविहिं च साहेति मालियाण' पुष्पविधिं फलविधिं च=पुष्पजातिं फलजातिं च साधयन्ति मालिकाना=वनपालकानाम्, 'अग्घमहुकोसए य साहेति वणचराण' अर्धमधुकोशकाश्च साधयन्ति वनचराणा=अर्घश्च=मूल्यप्रमाण मधुकोशकाश्च=मधुत्पत्तिस्थानानीत्यर्थमधुकोशकास्तान् वनचराणां=भिल्लान् प्रति कथयन्ति ॥ सू० ११ ॥

पुनरप्याह—'जंताइं' इत्यादि ।

मूलम्—जंताइं विसाइं, मूलकम्म आहेवण-आविंधण आभिओग-मंतोसहिप्पओगे चोरिय परदारगमणबहुपावकम्मकरणं अवक्खदे गामघायणं, वणदहणतडागभेयणए बुद्धिविसय वसीकरणमाइयाइं भयमरण किलेसुव्वेगजणयाइं भावबहुसकिलिट्ठ-

के उत्पत्तिस्थानों को कहते हैं । तथा (पुप्फविहिं फलविहिं च साहेंति मालियाण) जो माली होते हैं उन्हें ये पुष्पजाति, फलजाति समजाते हैं- अर्थात्–'बागमें अमुक जातिका फुल लगाओ, अमुक जाति के फल उत्पन्न करो' इस प्रकार से कहा करते हैं । (अग्घमहुकोसए य साहेंति वणचराण) तथा जो वनचरभील हैं उनसे ये इस प्रकार कहते हैं कि तुम शहद या शहद का छाता ही ले आया करो अमुक मूल्य तुम्हें मिल जावेगा–बैठे २ क्या करते रहते हो । मृषावाद पाप करने वाले जीव जीवों को बाधा आदि पहुँचे इसका थोड़ा सा भी ध्यान नहीं रखते हैं, तथा जो जीवों को कष्ट पहुँचाने वाले मनुष्य है उन्हे हर एक प्रकार से जीवों को कष्ट पहुँचाने मे उकसाया करते है ॥ सू ११॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો બતાવે છે તથા "पुप्फविहिं फलविहिं च साहेंति मालियाण" માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ બતાવે છે, એટલે કે "બાગમા અમુક જાતિના ફૂલ ઉગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો" એ પ્રકારની સલાહ આપે છે "अग्घमहुकोसए य साहेंति वणचराण" તથા વનમા ફરનારા ભીલોને તે આ પ્રમાણે કહે છે "તમે મધ અથવા મધપુડો લાવ્યા કરો તમને અમુક કિંમત મળશે–અમસ્તા બેસી રહ્યે શુ વળશે ?" મૃષાવાદ પાપ કરનાર વ્યક્તિ જીવોને કષ્ટ આદિ પહોચશે તેનુ સહેજ પણ ધ્યાન રાખતી નથી, તથા જીવોને કષ્ટ પહોચાડનાર જે માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે જીવોને કષ્ટ પહોચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ–૧૧ ॥

याइ साहति वहूणि गोमियाण ' लाञ्छननिर्लाञ्छनध्मानदोहनपोषणवननदुवनवाहनादिकानि साधयति बहूनि गोमिना, लाञ्छन=गवादीना देहे तप्तगोदादिभिश्चिन्ह विशेषकरण, निर्लाञ्छन=वर्धितकरणं ध्मान=गवादीना शरीरे वायुपूरण दोहन =प्रसिद्धपोषण=यवचणकादिदानेन पुष्टिकरण वनन=अन्यमातरि वत्सादि सयोजन दावनम्=उपतापन=रज्ज्वादिनापादबन्धनम् । वाहन=शकटादिषु योजनमित्यादिकानि ' वहूणि ' बहूनि गोमता=गोपालादीन प्रति कथयन्ति, ' धाउमणिसिलप्पवाल रयणागरे य साहेति आगरीण ' धातुमणिशिलाप्रवालरत्नाकरान् साधयन्ति आकरिणा=धातवः=लौहादयो मणयः=चन्द्रकान्तादयः, शिलाः=पाषाणा , प्रवाला =प्रसिद्धाः, रत्नानि=मरकतादीनि, तेषामाकरा =उत्पत्तिस्थानानि, आकरिणा=

दुवण-वाहणा-दियाइ साहेंति वहूणि गोमियाण) जो गोपालकजन-ग्वाले होते हैं-उनसे ये (लछण) गाय आदि जानवरों के शरीर में डाभ देने के लिये, (निल्लछण) उन्हे निर्लाछण-वधिया करने के लिये, (धमण) उनके शरीर मे वायु भरने के लिये, (दुहण) दोहन के लिये, (पोसण) पोषण करने के लिये, जव चना आदि देकर पुष्ट बनाने के लिये, (वणण) वनन-मृतवत्सा गाय को दोहन करनेके अभिप्राय से उसके साथ दूसरी गायका बच्चा चुखाने के लिये, (दुवण) दावन-दुहते समय दोरी से पैर आदि को बाधने के लिये ओर (वाहण) गाड़ी आदि मे जोतने के लिये बार २ कहा करते हैं (धाउमणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेंति आगरीण) जो खनिपति होते हे उनके लिये लौहादिक धातुओं, चन्द्रकान्त आदि मणियों पत्थरों, प्रवालों एव रत्नादिकों

" लछण-निल्लछण-धम्मण-दुहण-पोसण-वणण-दुवण-वाहणादियाइ साहेंति वहूणि गोमियाण " ગોવાળોને તેઓ ગાય આદિના શરીર પર ડામ દેવાને, "निल्लछण " તેમને નિર્લાછન-વધ્યા કરવાને માટે " धमण " તેમના શરીરમા હવા ભરવાને માટે " दुहण ' દોહવાને માટે "पोसण" પોષણ કરવાને માટે જવ, ચણા આદિ આપીને પુષ્ટ બનાવવાને માટે " वणण " વનન-જે ગાયનુ વાછરડુ મરી ગયુ હોય તે ગાયને દોહવાને નિમિત્તે તેને બીજી ગાયનુ બચ્ચુ ધવરાવવા માટે, " दुवण " દાવણ-દોવાને વખતે દોરડા વડે પગ આદિ બાધવાને માટે અને ' वाहण " ગાડી આદિ વાહને જોડવાને માટે વારવાર કહ્યા કરે છે "धाउ मणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेंति आगरीण " ખાણોના માલિકોને લોખડ આદિ ધાતુઓ, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણીઓ, પથ્થરો, પ્રવાલો અને રત્ન

खनिपतीन् कथयन्ति । तथा 'पुप्फविहिं फलविहिं च साहेति मालियाण' पुष्पविधिं फलविधिं च=पुष्पजातिं फलजातिं च साधयन्ति मालिकाना=वनपालकानाम्, 'अग्घमहुकोसए य साहेति वणचराण' अर्घमधुकोशकांश्च साधयन्ति वनचराणा=अर्घश्च=मूल्यप्रमाणं मधुकोशकाश्च=मधूत्पत्तिस्थानानीत्यर्थमधुकोशकास्तान् वनचराणा=भिल्लान् प्रति कथयन्ति ॥ सू० ११ ॥

पुनरप्याह—'जताइ' इत्यादि ।

मूलम्—जंताइं विसाइं, मूलकम्म आहेवण-आविंधण आभिओग-मंतोसहिप्पओगे चोरिय परदारगमणवहुपावकम्मकरणं अवक्खदेगामघायणं, वणदहणतडागभेयणए बुद्धिविसय वसीकरणमाइयाइं भयमरण किलेसुव्वेगजणयाइं भाववहुसंकिलिट्ठ-

के उत्पत्तिस्थानों को कहते हैं। तथा (पुप्फविहिं फलविहिं च साहेंति मालियाण) जो माली होते हैं उन्हें ये पुष्पजाति, फलजाति समजाते हैं- अर्थात्-'बागमें अमुक जातिका फुल लगाओ, अमुक जाति के फल उत्पन्न करो' इस प्रकार से कहा करते हैं। (अग्घमहुकोसए य साहेंति वणचराण) तथा जो वनचरभील है उनसे ये इस प्रकार कहते हैं कि तुम शहद या शहद का छाता ही ले आया करो अमुक मूल्य तुम्हें मिल जावेगा-बैठे २ क्या करते रहते हो। मृषावाद पाप करने वाले जीव जीवों को बाधा आदि पहुँचे इसका थोड़ा सा भी ध्यान नहीं रखते हैं, तथा जो जीवों को कष्ट पहुँचाने वाले मनुष्य हैं उन्हे हर एक प्रकार से जीवों को कष्ट पहुँचाने में उकसाया करते हे ॥ सू ११॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો બતાવે છે તથા "पुप्फविहिं फलविहिं च साहेंति मालियाण" માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ બતાવે છે, એટલે કે "બાગમાં અમુક જાતિમાં ફૂલ ઉગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો" એ પ્રકારની સલાહ આપે છે "अग्घमहुकोसए य साहेंति वणचराण" તથા વનમાં ફરનારા ભીલોને તે આ પ્રમાણે કહે છે "તમે મધ અથવા મધપુડો લાવ્યા કરો તમને અમુક કિંમત મળશે-અમસ્તા બેસી રહ્યે શું વળશે?" મૃષાવાદ પાપ કરનાર વ્યક્તિ જીવોને કષ્ટ આદિ પહોંચશે તેનું સહેજ પણ ધ્યાન રાખતી નથી, તથા જીવોને કષ્ટ પહોંચાડનાર જે માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે જીવોને કષ્ટ પહોંચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

याइ साहति बहूणि गोमियाण ' लाञ्छननिर्लाञ्छनध्मानदोहनपोषणवननदुवनवाहनादिकानि साधयन्ति बहूनि गोमिना, लाञ्छन=गवादीना देहे तप्तलोहादि भिश्चिन्ह विशेषकरण, निर्लाञ्छन=वर्धितकरणं ध्मान=गवादीना शरीरे वायुपूरणं दोहन =प्रसिद्धपोषण=यवचणकादिदानेन पुष्टिकरण वनन=अन्यमातरि वत्सादि सयोजन दावनम्=उपतापन=रज्ज्वादिनापादबन्धनम् । वाहन=शकटादिषु योजनमित्यादि कानि ' बहूणि ' बहूनि गोमता=गोपालादीन् प्रति कथयन्ति, ' धाउमणिसिलप्पवाल रयणागरे य साहे ति आगरीण ' धातुमणिशिलाप्रवालरत्नाकरान् साधयन्ति आकरिणा=धातवः=लोहादयो मणयः=चन्द्रकान्तादयः, शिलाः=पाषाणा , प्रवाला =प्रसिद्धाः, रत्नानि=मरकतादीनि, तेषामाकरा =उत्पत्तिस्थानानि, आकरिणा=

दुवण–वाहणा–दियाइ साहेंति बहूणि गोमियाण) जो गोपालकजन–ग्वाले होते हैं–उनसे ये (लछण) गाय आदि जानवरों के शरीर में डाभ देने के लिये, (निल्लछण) उन्हे निर्लाञ्छण–वधिया करने के लिये, (धमण) उनके शरीर मे वायु भरने के लिये, (दुहण) दोहन के लिये, (पोसण) पोषण करने के लिये, जव चना आदि देकर पुष्ट बनाने के लिये, (वणण) वनन–मृतवत्सा गाय को दोहन करनेके अभिप्राय से उसके साथ दूसरी गायका बच्चा चुराने के लिये, (दुवण) दावन–दुहते समय दोरी से पैर आदि को बांधने के लिये और (वाहण) गाड़ी आदि मे जोतने के लिये बार २ कहा करते है (धाउमणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेंति आगरीण) जो खनिपति होते है उनके लिये लौहादिक धातुओं, चन्द्रकान्त आदि मणियों पत्थरों, प्रवालों एव रत्नादिकों

" लछण–निल्लछण–धम्मण–दुहण–पोसण–वणण–दुवण–वाहणादियाइ साहेंति बहूणि गोमियाण " ગોવાળોને તેઓ ગાય આદિના શરીર પર ડામ દેવાને, "निल्लछण " તેમને નિર્લાછન–વધ્યા કરવાને માટે " धमण " તેમના શરીરમા હવા ભરવાને માટે " दुहण ' દોહવાને માટે "पोसण" પોષણ કરવાને માટે જવ, ચણા આદિ આપીને પુષ્ટ બનાવવાને માટે " वणण " વનન–જે ગાયનુ વાછરડુ મરી ગયુ હોય તે ગાયને દોહવાને નિમિત્તે તેને બીજી ગાયનુ બચ્ચુ ધવરાવવા માટે, " दुवण " દાવણ–દોવાને વખતે દોરડા વડે પગ આદિ બાધવાને માટે અને ' वाहण " ગાડી આદિ વાહને જોડવાને માટે વારવાર કહ્યા કરે છે "धाउ मणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेंति आगरीण " ખાણોના માલિકોને લોખડ આદિ ધાતુઓ, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણીઓ, પથ્થરો, પ્રવાલો અને રત્ન

पापकर्मसमाचरणम् , तथा 'अवक्खदे' अवस्कन्दान्=सैन्यशिबिरादिभिराक्रमणेन-परबलमर्दनानि धाटीकर्मकरणानि वा 'गामघायण' ग्रामघातन=ग्रामादिनाशन 'वणदहणतडागभेयणए' वनदहन-तडाग-भेदनानि=वनज्वालनानि जलाशय ध्वसनानि च 'बुद्धिविसयवसीकरणाइयाइ' बुद्धिविषयवशीकरणादिकानि परस्य बुद्धेर्विषयस्य च शब्दादेः वशीकरणानि=मन्त्रादिप्रयोगेषु स्वायत्तीकरणानि 'भय मरणकिलेसुव्वेगजणयाइ' भयमरणक्लेशोद्वेगजनकानि भय च मरण च क्लेशश्च शारीरिकउद्वेगश्च=हार्दिक दु'खमित्येतेषा जनकानि तथा 'भावबहुसकिलिट्ठ-भावमलिणाणि' भावबहुसक्लिष्टमलिनानि=भावेन=अध्यवसायेन बहुसक्लिष्टेन=अतिशयपरसन्तापजनकेन मलिनानि=कलुषितानि तथा 'भूयघाओवघाइयाइ' भूतघातोपघातकानि=भूताना प्राणिनां घातः=साक्षात् हनन उपघातश्च=परम्परया-हनन तौ येषु तानि भूतघातोपघातकानि पूर्वोक्तानि 'सच्चाणिवि' सत्या-

करने को, तथा (अवक्खदे) सैन्य शिविर आदिके द्वारा आक्रमण करके पर के बलको मर्दन करने रूप कर्म को अथवा धाडपाड़ने रूप डकैतीकर्म को, (गामघायण) ग्रामघातकरूपकुकृत्य को, (वणदहणत-डागभेयणए) जगलो मे आग लगाने रूप, तथा जलाशयों को ध्वस करने रूप दुष्कृत्यों को, (बुद्धिविसयवसीकरणमाइयाइ) मत्रादिकों के प्रयोग से पर की बुद्धि को, एव शब्दादिक पाँचों इन्द्रियों के विषयोंको स्ववश करने रूप अकृत्यों को कोई पूछे अथवा न पूछे तो भी बताया करते हैं, तथा (भयमरणकिलेसुव्वेगजणयाइ) भय, मरण, क्लेश, उद्वेग, इनके उत्पादक असत्यवचनों को, तथा (भावबहुसकिलिट्ठमलि-णाणि) अत्यत सक्लिष्ट अतिशयरूपमे पर को सतापजनक, ऐसे अध्य-वसाय से मलिन हुए तथा (भूयघाओवघाइयाइ) प्राणियों के साक्षात्

આદિ દ્વારા આક્રમણ કરીને અન્યના બળનુ મર્દન કરવારૂપ કર્મ તથા ધાડ પાડવાના કાર્યને, "गामघायण" ગામ ભાગવારૂપ દુષ્કૃત્યને, "वणदहणतडाग भेयणए" જગલોમા આગ લગાડવાના તથા જળાશયોને તોડી પાડવાના દુષ્કૃત્યોને, "बुद्धिविसयवसीकरणमाइयाइ" મત્રાદિના પ્રયોગથી પારકાની બુદ્ધિને, અને, શબ્દાદિક પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોને પોતાને વશ કરી લેવા રૂપ દુષ્કૃત્યોને કોઇ પૂછે અથવા ન પૂછે તો પણ તે મૃષાવાદી બતાવ્યા કરે છે, તથા "भय मरण किलेसुव्वेगजणयाइ" ભય મરણ, કલેશ, ઉદ્વેગ આદિ ઉત્પન્ન કરનાર અસત્ય વચનો, તથા "भावबहुसकिलिट्ठमलिणाणि" અત્યત સક્લિષ્ટ, અન્યને અતિશય સતાપજનક એવા અધ્યવસાયથી મલિન થયેલ તથા "भूयघाओव

मलिणाइं भूयघाओवघाइयाइ सच्चाणि वि ताइं हिंसगाइं वयणाइ उयाहरंति पुट्ठा वा अपुट्ठा वा ॥ सू० १२ ॥

टीका—'जताइ' यन्त्राणि तिलनिष्पीडनादि यन्त्राणि उदाहरन्तीति वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः। 'विसाइ' विषाणि=क्षणमात्रप्राणहारकतालपुटसर्पादीनि स्थावरजङ्गमभेदानि। 'मूलकम्मआहेवणआविंधणआभिओगमतोसहिप्पओगे' मूलकर्माक्षेपणावर्धनाभियोग्यमन्त्रौषधिप्रयोगान्=मूलकर्म=गर्भपातनादिकम्, अथवा मूलनक्षत्रादि जातस्य तद्दोषशान्त्यर्थं स्नानकर्मादिकम्, आक्षेपणं=नगरादि क्षोभोत्पादनम्, आवर्धनं=धनादीनां मन्त्रप्रयोगेण हरणं आभियोग्यं च=वशीकरणादि तच्च द्रव्यतो द्रव्यसंयोगजनितं भावतो विद्यामन्त्रादिसंजातं बलात्कारजनितं वा, तथा मन्त्रौषधिप्रयोगान् मन्त्रप्रयोगान् औषधिप्रयोगांश्च, तथा 'चोरियपरदारगमणबहुपावकम्मकरणं' चौर्यपरदारगमनबहुपापकर्मकरणं = चौर्यपरस्त्रीगमनादि

फिर भी कहते हैं—'जताइ विसाइ' इत्यादि।

टीकार्थ—(जताइ) यन्त्रो को–तिल आदि के निष्पीडक कोल्हू आदि पदार्थों को (विसाइ) क्षणमात्र में प्राणों को नष्ट करने वाले तालपुट, सर्प आदि स्थावर जंगम विषोंको (मूलकम्म–आहेवण–आविंधण–आभिओग–मतोसहि प्पओगे) गर्भपातन आदि रूप मूलकर्म को, अथवा मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए बालक के दोषशान्ति के लिये स्नान कर्म आदि को, नगरादिक मे क्षोभोत्पादनरूप आक्षेपण को, मंत्र के प्रयोग से धनादिकों के हरणरूप आवर्धन को, वशीकरणादिरूप आभियोग्य कर्म को, तथा मंत्र प्रयोगों को, औषधि के प्रयोगो को तथा (चोरियपरदारगमणबहुपावकम्मकरण) चोरी, परदारगमन आदि रूप पापकर्मों के

હજી પણ સૂત્રકાર કહે છે—"जताइ विसाइ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"जताइ" તેલ આદિ પીલવાના ઘાણી આદિ પદાર્થોને "विसाइ" એક ક્ષણમાત્ર પ્રાણ હરી લેનાર તાલપુટ, સર્પ આદિ સ્થાવરજંગમ વિષોને, "मूलकम्म–आहेवण आविंवण–आभिओग–मतोसहि–प्पओगे" ગર્ભપાતન આદિ રૂપ મૂલકર્મને, અથવા મૂળનક્ષત્રમા જન્મેલા બાળકની દોષશાન્તિ માટે સ્નાન કર્મ આદિને, નગરાદિમા ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરવારૂપ આક્ષેપણને, મંત્રપ્રયોગ વડે ધનાદિના હરણરૂપ આવર્ધનને, વશીકરણાદિરૂપ આભિયોગ્યકર્મને, તથા મંત્ર પ્રયોગોને, ઔષધિ પ્રયોગોને તથા "चोरियपरदारगमणबहुपावकम्मकरण" ચોરી, પરદારગમન, આદિ પાપકર્મો કરવાને, તથા 'अवक्खदे' " શિબિર

पुनरप्याह—' परतत्ति ' इत्यादि ।

मूलम्—परतत्तिवावडाय असमिक्खियभासिणो उवदिसंति सहसाउट्टा–गोणा–गवया दमंतु, परिणयवया अस्सा हत्थीग-वेलगकुक्कडा य किज्जतु किणावेह विक्केहय पचह सयणस्स देह पीयह दासीदास–भयग–भाइल्लगा य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए सयणपरिजणा य कीस अच्छंति भारिया भे करेतु कम्मं, गहणाइ वणाइ खित्तखिलभूमिवल्ल-राइ उत्तणघणसंकडाइ डज्झंतु सूडिज्जंतु य रुक्खा भिज्जंतु जताइ भंडाइयस्स उवहिस्स कारणाए, वहुविहस्स अट्ठाए उच्छू दुज्जंतु पीलिज्जंतु य तिला, पयावेह इट्टयाओ मम घरट्ठ याए खेत्ता य कसह कसावेह वा, लहु गामनगरखेडकव्वडे सनिवेसेह, अडवीदेसेसु विउलसीमे, पुप्फाणि फलानि य कद-मूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह, करेह संचयं परिजणस्स अट्ठाए॥ १३ ॥

भी पूछे तो भी बताया करते हैं। जिन वचनों से भय मरण आदि उपद्रव खडे हो जावें, दूसरोंको सुनकर जिन से चित्त में मलिनता आ जावे, ऐसे वचन भी वे बोल दिया करते हैं। सत्य होने पर भी जो प्राणियों के प्राणों को संकट में डाल देते हों–प्राणियों की साक्षात् अथवा परम्परा से हिंसा के जो कारनभूत बनते हों ऐसे सब ही वचन असत्य ही हैं, और उन्हें ये असत्यवादीजन बोला करते हैं॥ सू० १२ ॥

વિષે મૃષાવાદી માગમને કોઈ પૂછે કે ન પૂછે તો પણ તે બતાવ્યા કરે છે જે વચનોથી ભય, મરણ આદિ ઉપદ્રવ પેદા થાય, જે વચનો સાભળીને અન્યના મનમા મલિનતા ઉત્પન્ન થાય, એવા વચનો પણ તેઓ બોલ્યા કરે છે સત્ય હોવા છતા પણ જે વચનોથી પ્રાણીઓના પ્રાણ ભયમા મૂકાય–પ્રાણીઓની સાક્ષાત હિંસાના અથવા પરંપરાથી હિંસાના જે કારણરૂપ બનતા હોય એવા બધા વચનો અસત્ય જ છે, અને તે અસત્યવાદી માણસ તેવા વચનો બોલ્યા કરે છે ॥સૂ-૧૨॥

न्यपि=स्वरूपतस्तथ्यान्यपि, किन्तु-अपि-निश्चयेन ' हिंसगाइ ' हिंसकानि=परि णामतः प्राणिप्राणोपघातकानि तस्मादसत्यस्वरूपाणि, ' वयणाइ ' वचनानि, 'पुट्ठा वा अपुट्ठा वा ' पृष्टा वा केनापि, अपृष्टा वाऽपि-अलीकवादिनः ' उयाहरति ' उदाहरन्ति=कथयन्ति ॥ सू० १२ ॥

अथवा परम्परा रूप से घात करने वाले ऐसे (सच्चाणि वि) स्वरूप से सत्य भी हो किन्तु निश्चय में (हिंसगाइ) परिणामतः प्राणियों के प्राणों के उपघातक होने के कारण असत्य स्वरूप ही होते हैं। ऐसे (वयणाइ) वचनो को (पुट्ठा वा अपुट्ठा वा) असत्यवादी जन चाहे उनसे कोई पूछे अथवा न पूछे तो भी (उयाहरति) कह दिया करते हैं।

भावार्थ—मृषावादीजन अनेकविध प्राणिपीडक यन्त्रों को बनाने के लिये, विविध प्रकार के विषों का निर्माण करने के लिये दूसरों को उपाय बतलाया करते हैं। गर्भ का पतन कैसे किया जाता है, नगरादिकों में क्षोभ उत्पन्न कैसे हो सकता है, दूसरों को वश में कैसे किया जा सकता है, चोरी करने के क्या २ साधन हैं, परस्त्रीगमन करने का क्या उपाय है, दूसरों की सेना को कैसे परास्त किया जाता है, ग्राम आदि में उपद्रव कैसे उत्पन्न किया जाता है, जगल आदि में आग लगाना, तडाग आदि जलाशयो को शुष्क करना—सुखाना, इत्यादि सब प्रकार के इष्ट प्रयोगो को मृषावादी जन चाहे उनसे कोई पूछे अथवा न

घाइयाइ " પ્રાણીઓનો સાક્ષાત ઘાત કરનાર અથવા પરમ્પરા રૂપે ઘાત કરનાર એવા " सच्चाणि वि " સ્વરૂપ સત્ય હોય તો પણ અવશ્ય " हिंसगाइ " પરિણામ જોતા પ્રાણીઓના પ્રાણોની હત્યા કરનાર હોવાથી અસત્ય સ્વરૂપ જ હોય છે એવા " वयणाइ " વચનો " पुट्ठा वा अपुट्ठा वा " અસત્યવાદી માણુસ તેને કોઇ પૂછે કે ન પૂછે છતા પણ " उयाहरति " બોલ્યા કરે છે

ભાવાર્થ—મૃષાવાદી માણુસ અનેક પ્રકારના પ્રાણીપીડક યત્રો બનાવવાને માટે તથા વિવિધ પ્રકારના વિષ બનાવવાને માટે બીજા લોકોને ઉપાયો બતાવ્યા કરે છે ગર્ભપાત કેવી રીતે કરાવાય છે, નગર આદિમા કેવી રીત ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરી શકાય છે, બીજાને કેવી રીતે વશ કરી શકાય છે, ચોરી કરવાના કયા કયા સાધનો છે, પરસ્ત્રીગમન કરવાના કયા કયા ઉપાય છે અન્યના સૈન્યને કેવી રીતે પરાજ્ય આપી શકાય છે, ગામ આદિમા કેવી રીતે ઉપદ્રવ પેદા કરી શકાય છે, જગલ આદિમા કેવી રીતે આગ લગાડાય છે, તળાવ આદિ જળાશયોને કેવી રીતે સૂકવી નખાય છે, ઇત્યાદિ સર્વ પ્રકારના ગો

'पीयह' पिवत=मदिरादिक 'दासीदासभयगभाइछगा' दासीदासभृतकभागिकाः=दास्यः=सेविकाः दासाः=प्रसिद्धाः, भृतकाः=भृत्या-भक्तदानादिना पोषिता, भागिका=धनादेश्चतुर्थादि भागग्राहकाः 'सिस्सा य' शिष्याश्च=प्रसिद्धाः 'पेसकजणो' प्रेष्यकजन=कार्यप्रयोजनेषु प्रेषणीयो जन 'कम्मकरा' कर्मकरा=नियतकाल कर्मकुर्वन्ति ये ते कर्मकराः, किंकराश्च=प्रश्नपूर्वककार्यकारिणः 'एए' एते 'सयणपरिजणे' स्वजनपरिजनाश्च स्वजना' मातापितृभ्रात्रादयः, परिजनाः =सम्बन्धिनः 'कीस' कस्मात् कारणात् 'अच्छति' आसते=कार्यं परित्यज्योपविष्टाः सन्ति 'भे' भवता 'भारिया' भारिका=भारवाहिन' 'कम्म' कर्म 'करेतु' कुर्वन्तु, तथा 'गहणाइ वणाइ' गहनानि वनानि 'खित्तखिलभूमिवल्लराइ' क्षेत्र

देह) मांसादिको अपने स्वजन सम्बन्धियोंके लिये दिया करो, (पीयह) मदिरादि का पान किया करो, (दासीदास भयगभाइल्ला य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए सयणपरिजणा य कीस अच्छति) ये तुम्हारे दासी, दास, भृत्य भागीदार, शिष्यजन, प्रेष्यकजन, कर्मकर और किंकर तथा स्वजन परिजन किस कारण से अपने २ काम को-छोड़ कर बैठे हुए हैं। इनमें कठिन शब्दोंका अर्थ इस प्रकार है-अपने घर पर ही जो भोजनादि से पुष्ट किये जाते हे वे भृत्य हैं। कोई प्रयोजन वश जो कामके लिये भेजे जाते हे वे प्रेष्यकजन हैं। नियत कालतक जो मजूरी करते हे वे कर्मकर हे। प्रश्नपूर्वक पूछकर काम करनेवाले जन किंकर हे। माता पिता भाई आदि स्वजन सम्बन्धीजन आदि परिजन हैं। (भे भारीया कम्मं करेंतु) तुम भारिक-अपने भारढोनेवाले मनुष्यो से-

ખરીદ કરાવો, તથા "विक्केहृ" વેચો, અને "पचह" ઓદનાદિ (ભાત વિગેરે) રાંધો " सयणस्स देह" માંસ આદિ તમારા સગા સંબંધીને ભોજનમાં પીરસો " पीयह" મદિરા (દારૂ) આદિ પાન કરો, "दासीदासभयगभाइल्ला य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए सयणपरिजणा य कीस अच्छति" એ તમારા દાસી, દાસ, ભૃત્ય, ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર કિંકર અને સ્વજન પરિજન કયા કારણે પોત પોતાના કામો છોડીને બેઠા છે! ઉપરના સૂત્રમાં આવેલ કઠિન શબ્દના અર્થ આ પ્રમાણે છે-પોતાને ઘેર જ ભોજનાદિ આપીને જેમનું પોષણ કરાય છે, તે લોકોને ભૃત્ય કહે છે કોઈ પ્રયોજનથી જેમને કોઈ કામે મોકલાય છે તેમને પ્રેષ્યજન કહે છે નક્કી કરેલા સમય સુધીજે મજૂરી કરે છે તેમને કર્મકર-કારીગર કહે છે પૂછી પૂછીને કામ કરનારા સેવકોને કિંકર કહે છે માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન ગણાય છે, સંબંધીઓને પરિજન કહે છે " भे भारिया कम्म करेंतु" તમે ભારિકો-આપણો ભાર વહન કરનારા પાસે

टीका—'परतत्तिवावडाय' परतृप्तिव्यापृताश्च = परप्रसन्नताकरणतत्पराः अथवा परतप्तिव्यापृताः=परचिन्तापरायणा वा 'असमिक्खियभासिणो' असमीक्षितभाषिणः=अपर्यालोचितवक्तारः 'उवदिसंति' उपदिशन्ति=ज्ञापयन्ति सहसा =अकस्मात् अकारणमेवेत्यर्थः तदेवाह—यत् 'उट्टा' उष्ट्राः=प्रसिद्धाः 'गोणा' गावः बलीवर्दाः, गवयाः=गोसदृशा वन्याः 'रोझ' इति भाषा प्रसिद्धाः पशुविशेषाः 'दमतु' दम्यतां=एते शिक्ष्यन्ताम्। तथा 'परिणयवया' परिणतवयसः=तरुणाः 'अस्सा' अश्वाः 'हत्थी' हस्तिनः=प्रसिद्धाः गवेलकाः=मेषाः 'कुक्कुडा' कुक्कुटाश्च=प्रतीताः 'किज्जतु' क्रीयन्तां=मूल्येन गृह्यन्ताम् 'किणावेह' क्रापयत= पूर्वोक्तानामेव क्रयणं कारयत 'विक्केह' विक्रीणीध्वं=विक्रयं कुरुत 'पयह' पचत=पाकं कुरुत तथा 'सयणस्स' स्वजनाय 'देह' दत्त=मांसादिकं दीयताम्

फिर भी कहते हैं—'परतत्ति' इत्यादि

टीकार्थ—(परतत्तिवावडा य) जो दूसरों को प्रसन्न करने में तत्पर रहते हैं, अथवा पर की चिन्ता में परायण रहा करते हैं वे (असमिक्खियभासिणो) विना विचारे ही बोल दिया करते हैं, इस बात का वे विचार नहीं करते हैं कि हमारे इन वचनों से दूसरे प्राणियों को कष्ट होगा, (सहसा उवदिसंति) विना कारण के ही यों दूसरों से कह देते हैं कि तुम लोग (उट्टागोणागवया दमतु) ऊँटों को, बैलों को तथा रोझों को दमनकरो-अच्छी चाल चलना सिखलाओ (परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलगा कुक्कुडा किज्जतु) तरुण, घोडे, हाथी, मेष, कुक्कुट, इन जानवरों को स्वयं खरीदो और (किणावेह) दूसरों को खरीदवाओ तथा (विक्केह य) बेचो और (पचह) ओदनादि पकाओ (सयणस्स

તે વિષે હજી પણ સૂત્રકાર કહે છે— "परतत्ति" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"परतत्ति वावडाय" જે બીજા લોકોને ખુશ કરવાને આતુર હોય છે, અથવા પારકાની ચિન્તામાં પરાયણ રહે છે, તેઓ 'असमिक्खियभासिणो" વિચાર કર્યા વિના બોલ્યા કરે છે તેઓ એવો વિચાર કરતા નથી કે અમારા આ વચનોથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ પહોંચશે "सहसा उवदिसंति" તેઓ વિના કારણ બીજા લોકોને કહે છે કે તમે "उट्टागोणा गवया दमतु" ઉંટોનું, બળદોનું તથા રોઝોનું દમન કરો-સારી ચાલ ચાલતા શિખવો "परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलका कुक्कुडा किज्जतु" યુવાન, ઘોડા, હાથી ઘેટા કૂકડા, આદિ તમે જાતે ખરીદો અને "किणावेह" બીજા પાસે

'पीयह' पिवत=मदिरादिकं 'दासीदासभयगभाइल्लगा' दासीदासभृतकभागिकाः=दास्य'=सेविका, दासाः=प्रसिद्धाः, भृतकाः=भृत्या-भक्तदानादिना पोषिता, भागिका=धनादेश्चतुर्थादि भागग्राहकाः 'सिस्सा य' शिष्याश्च=प्रसिद्धाः 'पेसकजणो' प्रेष्यकजन =कार्यप्रयोजनेषु प्रेषणीयो जन 'कम्मकरा' कर्मकरा=नियतकाल कर्मकुर्वन्ति ये ते कर्मकराः, किंकराश्च=प्रश्नपूर्वककार्यकारिणः 'एए' एते 'सयणपरिजणे' स्वजनपरिजनाश्च स्वजनाः मातापितृभ्रात्रादयः, परिजनाः =सम्बन्धिनः 'कीस' कस्मात् कारणात् 'अच्छति' आसते=कार्यं परित्यज्योपविष्टाः सन्ति 'भे' भवता 'भारिया' भारिका=भारवाहिन' 'कम्म' कर्म 'करेतु' कुर्वन्तु, तथा 'गहणाइ वणाइ' गहनानि वनानि 'खित्तखिलभूमिवल्लराइ' क्षेत्र

देह) मासादिको अपने स्वजन सम्बन्धियोंके लिये दिया करो, (पीयह) मदिरादि का पान किया करो, (दासीदास भयगभाइल्लगा य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए सयणपरिजणा य कीस अच्छति) ये तुम्हारे दासी, दास, भृत्य भागीदार, शिष्यजन, प्रेष्यकजन, कर्मकर और किंकर तथा स्वजन परिजन किस कारण से अपने २ काम को-छोड़ कर बैठे हुए हैं। इनमें कठिन शब्दोंका अर्थ इस प्रकार है-अपने घर पर ही जो भोजनादि से पुष्ट किये जाते है वे भृत्य हैं। कोई प्रयोजन वश जो कामके लिये भेजे जाते हैं वे प्रेष्यकजन हे। नियत कालतक जो मजूरी करते हे वे कर्मकर हे। प्रश्नपूर्वक पूछकर काम करनेवाले जन किंकर हैं। माता पिता भाई आदि स्वजन सम्बन्धीजन आदि परिजन हैं। (भे भारीया कम्मं करेंतु) तुम भारिक-अपने भारढोनेवाले मनुष्यों से-

ખરીદ કરાવો, તથા "निक्केह्य" વેચો, અને "पयह" ઓદનાદિ (ભાત વિગેરે) રાંધો "सयणस्स देह" માસ આદિ તમારા સગા સબધીને ભોજનમા પીરસો "पीयह" મદિરા (દારૂ) આદિ પાન કરો, "दासीदासभयगभाइल्लगा य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए सयणपरिजणा य कीस अच्छति" એ તમારા દાસી, દાસ, ભૃત્ય, ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર કિકર અને સ્વજન પરિજન કયા કારણે પોત પોતાના કામો છોડીને બેઠા છે! ઉપરના સૂત્રમા આવેલ કઠિન શબ્દના અર્થ આ પ્રમાણે છે-પોતાને ઘેર જ ભોજનાદિ આપીને જેમનુ પોષણ કરાય છે, તે લોકોને ભૃત્ય કહે છે કોઈ પ્રયોજનથી જેમને કોઈ કામે મોકલાય છે તેમને પ્રેષ્યજન કહે છે નક્કી કરેલા સમય સુધી જે મજૂરી કરે છે તેમને કર્મકર-કારીગર કહે છે પૂછી પૂછીને કામ કરનારા સેવકોને કિંકર કહે છે માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન ગણાય છે, સબધીઓને પરિજન કહે છે "भे भारिया कम्म करेतु" તમે ભારિકો-આપણો ભાર વહન કરનારા પાસે

खिलभूमिवल्लराणि=क्षेत्राणि=प्रसिद्धानि खिलभूमयः=हलाऽकृष्टभूमयः वल्लराणि= क्षेत्रविशेषाश्च तानि 'उत्तणघणसंकडाइं' उत्तृणघनसङ्कटानि=तत्रउत्तृणं'=उन्नतैः घासैः घनम्=अतिशयं सङ्कटानि=व्यापनियानि तानि 'डज्झतु' दहन्तां=भस्मीभूतानि क्रियताम्। रुक्खा' वृक्षाः 'मडिज्जतु' भुज्यन्तां = मृज्यन्त उन्मूल्यन्ताम्। 'जंताइं' यन्त्राणि = तिलेक्षुसर्षपादिपीडनयन्त्राणि 'भिज्जतु' भिन्दन्तु। किम र्थमित्याह—'भाडाइयस्स भाण्डादिकस्य=भाण्डपात्रादेः 'उवहिस्स' उपधेः= उपकरणस्य 'कारणाए' कारणाय=प्रयोजनाय। तथा 'बहुविहस्स' बहुविधस्य 'अनेकप्रकारस्य 'अट्ठाए' अर्थाय=वक्ष्यमाणप्रयोजनस्य 'सिद्धय' 'उच्छू' इक्षव 'दुज्जतु' दूयन्तां=छिद्यन्तां 'तिलाय' तिलाश्च 'पीलिज्जतु' पीड्यन्तां=निष्पी ड्यन्तां यन्त्रे। तथा मम 'घरट्ठए' गृहार्थाय=गृहनिर्माणप्रयोजनाय 'इट्टयाओ' इष्टकाः='ईंट' इति प्रसिद्धाः 'पचावेह' पाचयत। 'खेत्ताय कसह कसावेह'

नौकर चाकरों से काम कराओ वे (गहणाइं वणाइं) गहन वनों को, (खित्तखिलभूमिवल्लराइं) खेतों को, हलाकृष्टभूमिको–वल्लरों–खेतविशेषों को (उत्तणघणसंकडाइं) घास आदिसे व्याप्त है, (डज्झतु) उनमें आग लगाकर वहाकी भूमिको साफ करें (रुक्खा सूडिज्जतु) वहा जितने भी वृक्ष खडे हो उन्हें जडमूल से उखाड़ डालें (जंताइं भिज्जतु) तिल इक्षु आदि के पीलनेके यन्त्रोंको ये चीर फाड़ डालें कि जिससे (भांडाइयस्स उवहिस्स कारणाए) भाड पात्र आदि उपकरण बनाये जा सकें। तथा (बहुविहस्स अट्ठाए उच्छू दुज्जतु) अनेक विध प्रयोजनों की सिद्धि निमित्त ये इक्षु–गन्ना को काटें, (तिला य पीलिज्जतु घरट्ठयाए) तिलो को घानी मे पिलें तथा (इट्टयाओ पयावेह) गृह निर्माण के लिये ये ईंटों को पकावें, (खेत्ता य कसह कसावेह) खेतों को जोते व जुतवावें = हाकना और हकवाना चोकना और चोकवाना

નોકર ચાકરો પાસે કામ કરાવો, 'गहणाइ वणाइ" ગહન વનોને, "खित्तखिलभूमि वल्लराइ" ખેતરો, વલ્લરો (એક પ્રકારનુ ખેતર) કે જે "उत्तणघणसकडाइ" ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, "डज्झतु" તેમા આગ લગાડીને તે જમીનને સાફ કરાવો, "रुक्खा सूडिज्जतु" ત્યા જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી ઉખેડી નાખો, "जताइ भिज्जतु" તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યન્ત્રોને તેઓ તોડી ફોડી નાખે કે જેથી "भाडाइयस्स उवहिस्स कारणाए" ભાડ, પાત્ર આદિ સાધનો બનાવી શકાય તથા "बहुविहस्स अट्ठाए उच्छू दुज्जतु" અનેક પ્રકારના પ્રયોજનની સફળતા માટે તેઓ શેરડીને કાપે "तिलाय पीलिज्जतु घरट्ठयाए" તલને ઘાણીમા પીલે, તથા "इट्टयाओ पयावेह" ઘર બધાવવાને માટે ઈંટો પકાવે, "खेत्ता य कसह कसावेह" ખેતરો ખેડે અને ખેડાવે, તથા

क्षेत्राणि च 'कस' कर्षत-कर्षयत वा । तथा 'अडवीदेसेसु' अटवीदेशेषु=वन प्रदेशेषु 'गामनगरखेटकब्बडे' ग्रामनगरखेटकर्बटानि=तत्र ग्रामश्च नगरं च प्रसिद्ध खेटं च=नद्यादिवेष्टितं धूलिप्राकाररहितं कर्बटं च=कुत्सितजननिवासस्थानम्, तानि कीदृशानीत्याह-विउलसीमे' विपुलसीमानि=विस्तीर्णसीमायुक्तानि 'लहु' लघु=सुन्दररीत्या शीघ्रं वा 'सनिवेसेह' सन्निवेशयत=निवासयत तथा 'पुप्फाणि फलाणि य' पुष्पाणि फलानि च 'कंदमूलाइं' कन्दमूलानि तत्र कन्दाः=स्वर्णकन्द-शर्कराकन्दलशुनादयः मूलानि=वृक्षमूलकानि 'कालपत्ताइ' कालप्राप्तानि=उचित-समयलब्धानि 'गिण्ह' गृहीत=ग्रहणं कुरुत, तथा 'परिजणस्स' परिजनस्य=कुटुम्बस्य, 'अट्ठाय' अर्थाय=प्रयोजनाय सञ्चयं 'करेह' कुरुत ॥ सू० १३ ॥

तथा (अडवीदेसेसु गामनगरखेटकब्बडे विउलसीमे लहुं सनिवेसेह) ग्राम, नगर, खेट, कर्बट आदि स्थानोंको विस्तृत सीमायुक्त कर के अटवी देशोंमें सुन्दर रीति से शीघ्र बसावें, (पुप्फाणि फलाणि य कद-मूलाइ कालपत्ताइं गिण्ह) तुम लोग (कालपत्ताइ) कालप्राप्त फूले हुए (पुप्फाइ) फूलों को (फलाणि) पके हुए फलों को तथा (कदमूलाइ) पके हुए स्वर्णकन्द, शर्कराकद, लहसुन आदि कदों को और पिप्पलीमूल आदि मूलों को (गिण्ह) ले आया करो, तथा (करेह सचय परिजणस्स अट्ठाए) कुटुम्ब के लिये धन आदि का सचय कर रख जाओ ।

भावार्थ-ये असत्यवादीजन दूसरे व्यक्ति हमसे प्रसन्न रहें इसलिये सुहाती बाते उनसे कहते रहते ह । इनका परिणाम क्या होगा ? इसका वे जरा सा भी ध्यान नहीं रखते । जो ऊंट पालते हैं अथवा ऊंटसे जो

"अडवीदेसेसु गामनगरखेडकब्बडे विउलसीमे लहु सनिवेसह" ગામ, નગર, ખેટ, કર્બટ, આદિ સ્થાનોને વિસ્તૃત સીમાવાળા કરીને અટવીક પ્રદેશોમા સુદર રીતે ઝડપથી વસાવે, "पुप्फाणि फलाणि य कदमूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह" તમે લોકો "कालपत्ताइ" વિકસવાને સમય આવતા વિકસેલા "पुप्फाइ" ફૂલોને "फलाणि" પાકેલા ફળોને તથા "कदमूलाइ" પાકેલા સ્વર્ણકન્દ-શકરીયા લસણ આદિ કદોને તથા પિપ્પલી મૂળ આદિ મૂળોને "गिण्ह" લઈ આવ્યા કરો, તથા "करेह सचय परिजणस्स अट्ठाए" કુટુંબ આદિને માટે ધન આદિનો સચય કર્યા કરો" એ પ્રકારની સલાહ આપ્યા કરે છે

ભાવાર્થ—તે અસત્યવાદી લોકો બીજા લોકોને ખુશ કરવાને માટે તેમને ગમે તેવી વાતો તેમની સાથે કર્યા કરે છે પણ તેનુ શુ પરિણામ આવશે ? તે બાબતનો તેઓ જરા પણ વિચાર કરતા નથી ઊંટ પાળનારને અથવા ઊંટનો

खिलभूमिवल्लराणि=क्षेत्राणि=प्रसिद्धानि खिलभूमयः=हलाऽकृष्टभूमयः वल्लराणि= क्षेत्रविशेषाश्च तानि 'उत्तणघणसंकडाइं' उत्तृणघनसङ्कटानि=तत्र उत्तृणं'=उन्नतैः घासैः घनम्=अतिशय सङ्कटानि=व्यापनियानि तानि 'डज्झतु' दह्यन्ताम्=भस्मीभूतानि क्रियताम्। 'रुक्खा' वृक्षाः 'मडिज्जतु' मञ्ज्यन्ताम् = मूलत उन्मूल्यन्ताम्। 'जताइं' यन्त्राणि = तिलेक्षुसर्षपादिपीडनयन्त्राणि 'भिज्जतु' भिन्दन्तु। किमर्थमित्याह—'भांडाइयस्स भाण्डादिकस्य=भाण्डपात्रादे 'उवहिस्स' उपधेः= उपकरणस्य 'कारणाए' कारणाय=प्रयोजनाय। तथा 'बहुविहस्स' बहुविधस्य 'अनेकप्रकारस्य 'अट्ठाए' अर्थाय=वक्ष्यमाणप्रयोजनस्य 'सिद्धये' 'उच्छू' इक्षव 'दुज्जतु' दूयन्ताम्=छिद्यन्ताम् 'तिलाय' तिलाश्च 'पीलिज्जतु' पीड्यन्ताम्=निष्पीडयन्ता यन्त्रे। तथा मम 'घरट्ठए' गृहार्थाय=गृहनिर्माणप्रयोजनाय 'इट्टयाओ' इष्टकाः='ईंट' इति प्रसिद्धा 'पयावेह' पाचयत। 'खेत्ताय कसह कसावेह'

नौकर चाकरों से काम कराओ वे (गहणाइं वणाइं) गहन वनों को, (खित्तखिलभूमिवल्लराइं) खेतों को, हलाकृष्टभूमिको–वल्लरों–खेतविशेषों को (उत्तणघणसंकडाइं) घास आदिसे व्याप्त हैं, (डज्झतु) उनमें आग लगाकर वहांकी भूमिको साफ करें (रुक्खा मडिज्जतु) वहां जितने भी वृक्ष खडे हों उन्हें जडमूल से उखाड डालें (जताइं भिज्जतु) तिल इक्षु आदि के पीलनेके यन्त्रोंको ये चीर फाड़ डालें कि जिससे (भांडाइयस्स उवहिस्स कारणाए) भांड पात्र आदि उपकरण बनाये जा सकें। तथा (बहुविहस्स अट्ठाए उच्छू दुज्जतु) अनेक विध प्रयोजनों की सिद्धि निमित्त ये इक्षु–गन्ना को काटें, (तिला य पीलिज्जतु घरट्ठयाए) तिलों को घानी में पिलें तथा (इट्टयाओ पयावेह) गृह निर्माण के लिये ये ईंटों को पकावें, (खेत्ता य कसह कसावेह) खेतों को जोतें व जुतवावें = हाकना और हकवाना चोकना और चोकवाना

નોકર ચાકરો પાસે કામ કરાવો, 'गहणाइं वणाइं" ગહન વનોને, "खित्तखिलभूमिवल्लराइं" ખેતરો, વલ્લરો (એક પ્રકારનુ ખેતર) કે જે "उत्तणघणसकडाइं" ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, "डज्झतु" તેમા આગ લગાડીને તે જમીનને સાફ કરાવો, "रुक्खा सूडिज्जतु" ત્યા જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી ઉખેડી નાખો, "जताइं भिज्जतु" તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યંત્રોને તેઓ તોડી ફોડી નાખે કે જેથી "भांडाइयस्स उवहिस्स कारणाए" ભાડ, પાત્ર આદિ સાધનો બનાવી શકાય તથા "बहुविहस्स अट्ठाए उच्छू दुज्जतु" અનેક પ્રકારના પ્રયોજનની સફળતા માટે તેઓ શેરડીને કાપે "तिलाय पीलिज्जतु घरट्ठयाए" તલને ઘાણીમા પીલે, તથા "इट्टयाओ पयावेह" ઘર બંધાવવાને માટે ઈંટો પકાવે, "खेत्ता य कसह कसावेह" ખેતરો ખેડે અને ખેડાવે, તથા

है ? कम से कम चना ही भूजकर बेचा करो । तुम तो पैसे वाले हो, तुमने इस मनुष्य जन्म को पाकर क्या आनद पाया मदिरा आदिमें जो आनद है वह और कहा हो सकता है, इसलिये इन्हें खूब खाओ पीओ और बचने पर अपने मित्र दोस्तों को भी खिलाया पिलाया करो। देखो-तुम्हारे ये नौकर चाकर दासी दास आदि जन बैठे २ क्या करते है ? कम से कम तुम इनसे गहन जगलों को ही साफ कराकर उन्हें खेत आदि के योग्य बनवालो । वृक्ष आदि कट जाने पर वहा बडी अच्छी तरह से खेती के योग्य भूमि तैयार हो सकती है । तुम्हारे पास जो ये यत्र पड़े हुए हैं वे अब तो कुछ काम में तो नहीं आ रहे है पडे २ और खराब हो जावेंगे, अतः क्यों नही इनके भाजन पात्र आदि बनवा लेते हो, ताकि उनसे तुम्हारा बहुत सा काम सध सकता है । गुड़ का बाजार इस समय बहुत तेज जा रहा है, खांड भी बहुत मँहगी बिक रही है, अतः क्यों नहीं तुम समझ से काम लेते हो ? जहां तक होसके इन इक्षुओं(सेलडी)को जल्दीसे जल्दी पिलवालो, ताकि गुड आदि तयार होकर तुम्हें बाजार से अच्छा लाभ हो सके । सरसों का तेल भी बहुत तेज बिक रहा है सो घानी में पिलवाकर इसका तेल निकलवालो और बेच

વાથી શો લાભ ? બીજુ કઇ ન બની શકે તો ચણા શેકીને વેચ્યા કરો પૈસા દારોને અનત્યવાદી કહે છે કે-'તમે તો પૈસાદાર છો, તમે આ મનુષ્ય અવ તાર પામીને શો આનદ લૂટયો છે ! મદિરા આદિમા જે આનદ મળે છે તે બીજે કયા મળે તેમ છે ? તો ખૂબ ખાઓ, પીઓ, તથા ખાતા પીતા વધે તો તમારા મિત્રોને પણ ખવરાવ્યા કરો પીવરાવ્યા કરો જુઓ ! તમારા આ નોકર ચાકર, દાસ, દાસી આદિ લોકો બેઠા બેઠા શુ કામ કરે છે ? તો તેમની પાસે ગહન જ ગલોને સાફ કરાવીને તે સ્થાનને ખેતી કરવાને લાયક બનાવરાવો વૃક્ષ આદિ કપાવી નાખવામા આવે તો ત્યા સારામા સારી ખેતી થાય એવી જમીન તૈયાર થઈ શકે છે તમારી પાસે જે યન્ત્રો છે તે હાલમા કોઇ ઉપયોગમા આવતા નથી, તો પડયા પડયા તે ખરાબ થઇ જશે, તો તેને તોડાવીને તેમાથી ભાજન પાત્ર આદિ કેમ બનાવરાવતા નથી ? તેમ કરવાથી તમારૂ ઘણુ કામ સરળ થશે હાલમા ગોળના બજાર ઘણા ચડી ગયા છે ખાંડ પણ ઘણી મોઘી વેચાય છે તો તમે બુદ્ધિ પૂર્વક કેમ કામ લેતા નથી ? બની શકે એટલી ઝડપથી આ શેરડીને પીલાવી નાખો જેથી ગોળ આદિ તૈયાર કરીને વેચવાથી તમને વેપારમા સારો લાભ મળે સરસીયુ પણ ઘણુ મોઘુ વેચાય છે, તો સરસવને ઘાણીમા પીલાવીને તેનુ તેલ કઢાવો અને તે તેલ વેચીને સારી એવી

अपना व्यापार आदि करते हैं उनसे ये यों कह दिया करते हैं कि तुम्हारा यह ऊँट देखने में तो बड़ा सुहावना लगता है परन्तु इसकी चाल तो कोई ढग की ही नहीं है, इसे जैसे भी हो सुन्दर चाल चलना सिखलाओ। इसी तरह जो बैलों के मालिक होते हैं उनसे भी ये समय २ पर ही उपदेश भरी बातें सुनाया करते हैं, उनसे कहते हैं-तुम्हारे बैलों की यह जोड़ी देखनेमें तो बड़ी सुन्दर मालूम पड़ती है, परन्तु देखो इसकी चाल कुछ भी नहीं है, अतः यह गाड़ी आदिमें जोतने पर खूब तेज चाल चले इस तरह की चाल सीखाओ, जगलमें एक गाय जैसा जानवर होता है जिसे रोझ कहते हैं, यह चलनेमें बड़ा तेज होता है। सो तुम जैसे भी हो सके इसको पकड़वा कर मगाओ और अपने घर पर रख कर उस रोझको जैसे भी हो सके पहिले वशमें लाओ, बादमें उसको जगल की चाल छुडाकर अच्छी चाल चलने में ढालो, इससे तुम्हें आने जानेमें समयकी बडी बचत होती रहेगी। इसी तरह तुम बैठे२ क्या करते रहते हो ? घोडों के बछेडोंको, हाथियों के बच्चों को, मेषों (मैंढे)को, कुक्कुटों (मुर्गों)को, पैसे देकर खरीदो, और खिला पिलाकर जब वे खूब मस्त हो जावे तब इन्हें बेच दिया करो इसमें तुम्हें बहुत अधिक लाभ होगा। तथा कुछ रुजगार नहीं चलता हो तो इस प्रकार बैठे रहने मे तुम्हें क्या लाभ

વ્યાપારની ચીજો લાવવા લઇ જવામા ઉપયોગ કરનારને તે કહે છે કે તમારો આ ઊંટ દેખાવમા તો ઘણો સુદર લાગે છે પણ તેની ચાલ કઢંગી છે તેને ગમે તે પ્રકારે સારી ચાલ ચાલતા શીખવાડો એ જ રીતે બળદોના માલિકોને પણ તે વારવાર ઉપદેશ સલાહ આપ્યા કરે છે કે તમારા બળદોની આ જોડી દેખાવમા તો ઘણી સુદર છે, પણ તેની ચાલ ઘણી ધીમી છે, તો તેને ગાડી આદિની સાથે જોડવામા આવે તો ઝડપથી ચાલે એવી ચાલ શીખવાડો જગલમા ગાય જેવુ એક પ્રાણી હોય છે, તેને રોઝ કહે છે, તે ચાલવામા ઘણુ ઝડપી હોય છે તમે ગમે તે રીતે તે રોઝને પકડી મગાવો, અને તમારે ઘેર રાખીને તેને ગમે તે રીતે પહેલા વશ કરો પછી તેને જગલી ચાલ છોડાવીને સારી ચાલ ચાલતા શીખવો, તેમ કરવાથી તમને અવર જવરમા સમયનો સારો બચાવ થશે એજ રીતે તે અસત્યવાદી લોકો બીજાને કહે છે કે-તમે બેઠા બેઠા શુ કરો છો ? ઘોડાના વછેરાને, હાથીઓના બચ્ચાને ઘેટાઓને, કૂકડાઓને પૈસા આપીને ખરીદ કરો, અને તેમને ખવરાવી પીવરાવીને જ્યારે તેઓ સારી રીતે હૃષ્ટ પુષ્ટ થાય ત્યારે વેચી દો, તેથી તમને સારો લાભ થશે તથા કોઈ ધધો ન ચાલતો હોય તો આ રીતે બેસી રહે-

मित्याह–मुदित=हर्पसहित 'बहुखज्जपेज्जकलिय' बहुखाद्यपेयकलित=बहु=प्रचुर खाद्य = भोज्य मोदकमासादिक पेय=मदिरादिक तेन कलित=युक्तम् । तथा 'कोउगविण्हावणसतिकम्माणि कुणह ससिरविगहोवरागविसमेसु सजणस्स परिजणस्स य नियस्स य जीवियस्स य परिरक्खणट्ठाए' तत्र कौतुकविस्नापनशान्तिकर्माणि =कौतुक=सौभाग्यवृद्धयर्थं दृष्टिदोपनिवृत्त्यर्थं च रक्षापोट्टलिकादोरकादिबन्धन, विस्नापन=विविधैर्मन्त्रौपधादिभिः समिलितजले', स्नापन शान्तिकर्म च=होमजपादिकमित्येतानि 'सजणस्स' स्वजनस्य=आत्मीयजनस्य पुत्रादेः 'परिजणस्स' परिजनस्य च=दासदास्यादेश्च पुन' 'नियगस्स य' निजकस्य च=स्वस्य 'जीवियस्स' जीवितस्य 'परिरक्खणट्ठयाए' परिरक्षणार्थाय कदा ? इत्याह—'ससिरविगहोवरागविसमेसु' शशिरविग्रहोपरागविपमेपु=शशिरव्योः=तत्र चन्द्रसूर्ययो' ग्रहेण=राहुलक्षणेनोपरागः=उपरञ्जन ग्रहणमित्यर्थस्तेन विपमेपु=कष्टयुक्तेपु दिवसेपु अथवा शशिरवि एव नवग्रहेपु मध्ये ग्रहौ तयोरुपरागः=तनुधनादिकष्टकरस्थानेपु-

हो, अथवा प्रसूतिका का स्नपन हो । (मुदिय बहुखज्जपेजकलिय) उसमे बडा हर्ष मनाया जावे, अनेक प्रकारके खाद्य–मोदक मास आदि भोज्य, एव मदिरा आदि पेय (पीनेयोग्य) पदार्थ रहें । तथा (कोउगविण्हावणसत्तिकम्माणि) सौभाग्यवृद्धिके निमित्त एव दृष्टिदोप की निवृत्ति के अर्थ रक्षापोट्टलिका, दोरक आदिके वधनरूप कौतुकको, अनेक प्रकार के मत्रोंसे औपध आदिकोंसे मिश्रित जलसे स्नान करानेरूप विस्नापनको होमजपादिरूप शाति कर्मको तुम (सजणस्स परिजणस्स य नियगस्सय जीवियस्स परिरक्खणट्ठाए) सब पुत्रादिरूप आत्मीयजन की, दासीदास आदिरूप परिजनों की, तथा अपने जीवनकी रक्षाके अर्थ तथा जब (ससिरविगहोवरागविसमेसु कुणह) चन्द्र और सूर्य जिन दिनों में राहु ग्रसित हो रहे हों उन दिनो मे करो' अथवा इन कौतुक विस्नापन, एव शातिकर्मो

અથવા પ્રસૂતિકાને આજ સ્નાન કરાવવુ જોઈએ "मुदिय बहुखज्जपेज्जकलिय" તે પ્રસગે ખૂબ આનદ મનાવવો જોઈએ–અનેક પ્રકારના ખાદ્ય–લાડુ માસ આદિ ભોજ્ય, અને મદિરા આદિ પેય પદાર્થોની વ્યવસ્થા થવી જોઈએ તથા "कोउगविण्हावणसतिकम्माणि" સૌભાગ્ય વૃદ્ધિને નિમિત્તે અને દૃષ્ટિદોષના નિવારણને માટે રક્ષાપોટ્ટલિકા, દોરી આદિના બધનરૂપ કૌતુક, અનેક પ્રકારના મત્રોથી ઔષધો આદિથી મિશ્રિત જળથી સ્નાન કરવારૂપ વિસ્નાપન, હોમ જપાદિ રૂપ શાતિ કર્મ, તમે "सजणस्स परिजणस्स य नियगस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्ठाए" પુત્રાદિ રૂપ આત્મીય જનની, દાસ દાસી આદિ રૂપ પરિજનોની તથા પોતાના જીવનની રક્ષાને માટે જ્યારે "ससिरविगहोवरागविसमेसु कुणह"

उपद्रवस्थानम् । 'घोरा सगामा वट्टतु' घोरा सग्रामा वर्तन्ताम्=भवन्तु 'जयतु' जयन्तु=विजय प्राप्नुवन्तु च । 'सगडवाहणाइ य पवहतु' शकटवाहनानि च प्रवहन्तु=शकटानि=यन्त्र वाहनानि च=नौकादीनि प्रवहन्तु=प्रचालयन्तु । उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मिहोउ दिवसे सुकरणे सुमुहुत्ते सुनक्खत्ते सुतिहिम्मि य' तत्र 'उवणयण' उपनयन=कलाग्रहण 'चोलग' चोलक बालकाना प्रथम शिरोमुण्डन, विवाह =पाणिग्रहण प्रसिद्ध 'जन्नो' यज्ञः एततसर्वम् 'अमुगम्मि' अमुकस्मिन् दिवसे सुकरणे=करणानि एकादश तत्र-बव-बालव-कोलव-तैतिल-गर-वणिज विष्टयश्चैतानि सप्त करणाणि, शकुनि चतुष्पद नागकिंस्तुघ्नानि चत्वारि स्थिराणि, इत्येपामन्यतमकरणे शुभे 'सुमुहुत्ते' सुमुहूर्ते=शोभने रौद्रादित्रिंशदन्यतमे 'सुन क्खत्ते' सुनक्षत्रे=अश्विन्यादिषु शोभने पुष्यादिके 'सुतिहिम्मि' सुतिथौ नन्दादिषु अन्यतमे 'होउ' भवतु । तथा 'अज्ज' अद्य अस्मिन्नहनि 'होउण्हवण' भवतु स्नपन=सौभाग्यसन्ततिसमृद्ध्यर्थं वध्वादे' स्नान प्रभृतिकास्नान च । किंभूत ?

ही पक्षि समुदाय को नष्ट कर दो । (सेणाणिज्जाउ) सेना यहासे निकले और निकल कर उपद्रवग्रस्त स्थान पर जावे (घोरा सगामा वट्टतु जयंतु) वहा घोर सग्राम वह करें और विजयश्री को पावें (सगडवाहणाइ य पवहतु) शकट-गाडी और वाहन-नौका आदि वे चलावें, (उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसे सुकरणे सुमुहुत्ते सुनक्खत्ते सुतिहिम्मिय) उपनयन(जनोइ)-कलाग्रहण, चोलक-प्रथम शिरोमुडन, विवाह, यज्ञ ये सब अमुक दिवसमें, अमुक बवादि शुभकरण में, रौद्रादि तीस ३० मुहूर्त्तो मे, अमुक अच्छे मुहूर्त में अश्विनी आदि सत्तावीस नक्षत्रों में से किसी अमुक शुभ नक्षत्र मे नदा आदि तिथियों में से किसी अच्छी तिथि में होना चाहिये । तथा (अज्ज होउण्हवण) आज सौभाग्य एव सन्तति समृद्धि के निमित्त वधू (वहू) आदि का स्नान

નીકળે અને તોફાનવાળા વિસ્તારમા જાય "घोरा सगामा वट्टतु जयतु" ત્યા તે ભયકર યુદ્ધ કરે અને વિજય પ્રાપ્ત કરે "सगडवाहणाइ य पवहतु" શકટ-ગાડા અને વાહન-નૌકા આદિ તે ચલાવે, 'उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसे सुकरणे सुमुहुत्त सुनक्खत्त सुतिहिम्मिय" ઉપનયન કલાગ્રહણ, ચોલક-પ્રથમ ભોવાળા ઉતરવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ એ સઘળુ અમુક દિવસે, અમુક બવાદિ શુભ કરણમા, રૌદ્રાદિ ત્રીસ (૩૦) મુહૂર્તોમાના અશ્વિની આદિ સત્તાવીસ નક્ષત્રોમાના કોઈ શુભ નક્ષત્રમા, નદા આદિ તિથિ ચેમાની કોઇ શુભ તિથિએ થવુ જોઇએ તથા "अज्ज होउण्हवण" આજે સૌભાગ્ય અને સતતિ સમૃદ્ધિને માટે વધૂ (વહુ) આદિને સ્નાન કરાવ- 'એ

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार =भङ्गारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णान् शीर्षोपहाराश्च=पश्वादिशिरोबलीन् दत्त देवादिभ्यः । तथा 'पायच्छित्ते करेह पाणाइवायकरणेण बहुविहेण विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत–विपरीतोत्पातदुःस्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरिताऽमङ्गलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका धूमकेत्वादयः दुस्स्वप्नाश्च=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपा पापशकुना'=प्रसिद्धा' असौम्यग्रहचरित–क्रूरग्रहदशा, अमङ्गलनिमित्तानि–अङ्गस्फुरणादीनि तेषा प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्त बहुविधेन=नानाप्रकारेण प्राणातिपातकरणेन=प्राणिहिंसया प्रायश्चित्तानि कुरुत । ' वित्तिच्छेय करेह ' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, इति किमपि निमित्तादिकमुपादाय ब्रुवन्ति 'मादेह किंचिदाण' मादत्त किञ्चिद्दान 'सुट्ठुहओ २' सुष्ठुहतः सुष्ठुहत'–सुष्टु=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एव पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये। तथा (विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसचय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, खोटे २ शकुन, क्रूरग्रहदशारूप असौम्यग्रहचरित, अमगल के निमित्त-भूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाइ-वायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा । (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो । (मा देह किंचिदाण) किसी को भी

અનુલેપનોથી, જલતા તેજસ્વી આરતીના દીપકોથી તથા સુગંધ વાળા ગુગળ આદિ ધૂપથી અને પુષ્પો અને ફળોથી પરિપૂર્ણ તે બલિદાન હોવું જોઈએ તથા "विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्त पडिघायहेउ" અશુભ સૂચક ધૂમકેતુ આદિ વિવિધ વિપરીત ઉત્પાત, અસ્થિ સંચય, ગર્દભારોહણ આદિ દુસ્વપ્ન, અશુભ શકુન ક્રૂરગ્રહદશારૂપ અસૌમ્ય ગ્રહચરિત અમંગ થવાના નિમિત્તરૂપ અંગ ફરકવુ આદિ અમંગળ બના વોના નિવારણને માટે " बहुविहेण पाणाइवायकरणेण,पायच्छित्ते करेह " અનેક પ્રકારે પ્રાણીહિંસા કરો, તેથી તે બધા અમંગળોનુ નિવારણ થશે " वित्ति च्छेय करेह " દરેક વ્યક્તિની આજીવિકાનો વિનાશ કરો " मादेह किंचिदाण "

स्थितिः, तथा विषमाणि च दुःस्वप्नादीनि, तेषु शान्त्यर्थं 'करेह' कुरुत। तथा 'पडिसीसगाइ च देह' प्रीतिशीर्षकाणि च दत्त=पिष्टनिर्मितस्वस्वशिरःप्रति रूपकाणि च महाकाल्यादिभ्यो दीयन्ताम्-पूज्याभिरिति वदन्ति। तथा 'देह य सीसोवहारे विविहोसहिमज्जमसभक्खनपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे' दत्त च शीर्षोपहारान् विविधौषधिमद्यमांसभक्ष्यान्नपानमाल्यानुलेपनप्रदीपज्वलितोज्ज्वलसुगन्धधूपोपचारपुष्पफलसमृद्धान्, तत्र विविधाः औषधयश्च मद्यमांसानि च भक्ष्याणि च अन्नानि पानानि च माल्यान्यनुलेपनानि च तानि, प्रदीपाश्च ज्वलितोज्ज्वलाश्च=आरार्तिक्यादयः, तथा-सुगन्धाः=शोभनगन्ध

को स्वजनादि की रक्षा के लिये उस समय करो जब नवग्रहों में चन्द्र सूर्य ये दो ग्रह तनु धन आदि कष्ट कर स्थानों में स्थित हों, और दुःस्वप्न आदि विषम चीजों का अवलोकन हुआ हो। तथा (पडिसीसगाइ च देह) तुम लोग पिष्ट निर्मित अपने २ प्रतिनिधिरूप शिरोंको महाकाली आदि देवियो के लिये बलि रूप में दो, अर्थात् शांति आदि के निमित्त अपने शिर के जैसा शिर आटे का बनाकर काली आदि देवियो के समक्ष बलिरूप में चढाओ, इस प्रकार मृषावादीजन कहते हैं। तथा (देह य सीसोवहारे) पशु आदि के शिरों को चढाओ, जब तुम लोग पशु आदि के शिरो को काली देवी के लिये भेट में प्रदान करो उस समय (विविहोसहिमज्जमसभक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे) विविध प्रकार की औषधियों से, मद्यमासरूप भक्ष्यान्नपान से, माल्यो से, अनुलेपनों से,

ચન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ રાહુથી ગ્રસિત થાય તે દિવસોએ કરો. અથવા તે કૌતુક, વિસ્નાપન, અને શાન્તિકર્મોને સ્વજનાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરો કે જ્યારે નવગ્રહોમાના ચન્દ્ર અને સૂર્ય એ બે ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કષ્ટકારી સ્થાનોમા રહેલ હોય અને દુઃસ્વપ્ન આદિ વિષમ ચીજો જોવામા આવતી હોય તથા " पडिसीसगाइ च देह " તમે લોકો પિષ્ટ નિર્મિત પોત પોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોનુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તે પોતના મસ્તક જેવુ લોટનુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે મૃષાવાદી લોકો કહે છે " देह य सीसोवहारे " પશુ આદિના મસ્તકો ચડાવો જ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે " विविहोसहिमज्जमसभक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे " વિવિધ પ્રકારની ઔષધિયોથી, મદ્યમાસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણાથી, માળાઓથી

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार=भङ्गारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णान शीर्षोपहाराश्च=पश्वादिशिरोबलीन् दत्त देवादिभ्यः। तथा 'पायच्छित्ते करेह पाणाइवायकरणेण बहुविहेण विवरीउप्पायदुस्सुमिणपावसउण असोम्मग्गहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत–विपरीतोत्पातदु स्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरिताऽमगलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका धूमकेत्वादय' दुस्स्वप्नाश्च=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपा. पापशकुना=प्रसिद्धा असौम्यग्रहचरित–क्रूरग्रहदशा, अमङ्गलनिमित्तानि–अङ्गस्फुरणादीनि तेषा प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्त बहुविधेन=नानाप्रकारेण प्राणातिपातकरणेन=प्राणिहिंसया प्रायश्चित्तानि कुरुत। 'वित्तिच्छेय करेह ' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, इति किमपि निमित्तादिकमुपादाय ब्रुवन्ति 'मादेह किंचिदाण' मादत्त किञ्चिदान 'सुट्ठुहओ २' सुष्ठुहतः सुष्ठुहत'–सुष्ठु=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एव पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये। तथा (विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मग्गहचरियअमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसचय, गर्दभारोहण आदि दुस्वप्न, खोटे २ शकुन, क्रूरग्रहदशारूप असौम्यग्रहचरित, अमगल के निमित्तभूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा। (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो। (मा देह किंचिदाण) किसी को भी

અનુલેપનોથી, જલતા તેજસ્વી આરતીના દીપકોથી તથા સુગંધ વાળા ગુગળ આદિ ધૂપથી અને પુષ્પો અને ફળોથી પરિપૂર્ણ તે બલિદાન હોવું જોઈએ તથા "विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्त पडिघायहेउ" અશુભ સૂચક ધૂમકેતુ આદિ વિવિધ વિપરીત ઉત્પાત, અસ્થિ સચય, ગર્દભારોહણ આદિ દુસ્વપ્ન, અશુભ શકુન ક્રૂરગ્રહદશારૂપ અસૌમ્ય ગ્રહચરિત અમગળ થવાના નિમિત્તરૂપ અગોનું ફરકવું આદિ અમગળ બનાવોના નિવારણને માટે " बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह " અનેક પ્રકારે પ્રાણીહિંસા કરો, તેથી તે બધા અમગળોનું નિવારણ થશે " वित्तिच्छेय करेह " દરેક વ્યક્તિની આજીવિકાનો વિનાશ કરો " मादेह किंचिदाण "

स्थितिः, तथा विषमाणि च दुःस्वप्नादीनि, तेषु शान्त्यर्थं 'करेह' कुरुत। तथा 'पडिसीसगाइ च देह' मीतिशीर्षकाणि च दत्त=पिष्टनिर्मितस्वशिरःप्रतिरूपकाणि च महाकाल्यादिभ्यो दीयन्ताम्-युष्माभिरिति वदन्ति। तथा 'देह य सीसोवहारे विविहोसहिमज्जमसमक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे' दत्त च शीर्षोपहारान् विविधौषधिमद्यमांसभक्ष्यान्नपानमाल्यानुलेपनप्रदीपज्वलितोज्ज्वलसुगन्धधूपोपचारपुष्पफलसमृद्धान्, तत्र विविधाः औषधयश्च मद्यमांसानि च भक्ष्याणि च अन्नानि पानानि च माल्यान्यनुलेपनानि च तानि, प्रदीपाश्च ज्वलितोज्ज्वलाश्च=आरार्तिक्याद्या., तथा-सुगन्धाः=शोभनगन्ध

को स्वजनादि की रक्षा के लिये उस समय करो जब नवग्रहों में चन्द्र सूर्य ये दो ग्रह तनु धन आदि कष्ट कर स्थानों में स्थित हों, और दुःस्वप्न आदि विषम चीजों का अवलोकन हुआ हो। तथा (पडिसीसगाइ च देह) तुम लोग पिष्ट निर्मित अपने २ प्रतिनिधिरूप शिरोंको महाकाली आदि देवियों के लिये बलि रूप में दो, अर्थात् शांति आदि के निमित्त अपने शिर के जैसा शिर आटे का बनाकर काली आदि देवियों के समक्ष बलिरूप में चढाओ, इस प्रकार मृषावादीजन कहते हैं। तथा (देह य सीसोवहारे) पशु आदि के शिरों को चढाओ, जब तुम लोग पशु आदि के शिरों को काली देवी के लिये भेट में प्रदान करो उस समय (विविहोसहिमज्जमसभक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे) विविध प्रकार की औषधियों से, मद्यमांसरूप भक्ष्यान्नपान से, माल्यों से, अनुलेपनों से,

ચન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ રાહુથી ગ્રસિત થાય તે દિવસોએ કરો. અથવા તે કૌતુક, વિસ્નાપન, અને શાન્તિકર્મોને સ્વજનાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરો કે જ્યારે નવગ્રહોમાના ચન્દ્ર અને સૂર્ય એ બે ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કષ્ટકારી સ્થાનોમા રહેલ હોય અને દુઃસ્વપ્ન આદિ વિષમ ચીજો જોવામા આવતી હોય તથા "पडिसीसगाइ च देह" તમે લોકો પિષ્ટ નિર્મિત પોત પોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોનુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તે પોતાના મસ્તક જેવુ લોટનુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે મૃષાવાદી લોકો કહે છે "देह य सीसोवहारे" પશુ આદિના મસ્તકો ચડાવો જ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે "विविहोसहिमज्जमसभक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधधूवोवयारपुप्फफलसमिद्धे" વિવિધ પ્રકારની ઔષધિઓથી, મદ્યમાંસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણાથી, માળાઓથી

'अलियाणा' अलीकाज्ञाः=अलीका आज्ञा=आगमो येषा ते तथा 'अलियधम्मनिरया' अलीकधर्मनिरताः=असद्धर्मपरायणा 'अलियासु कहासु' अलीकासु आत्मगुणहानिकरासु कथासु अभिरमन्तः=प्रसीदन्तः 'बहुप्पगार' बहुप्रकारम् 'अलियं करेउ' अलीक कृत्वा=भाषित्वा 'तुट्ठा' तुष्टा'=प्रसन्ना भवन्ति ॥सू० १४॥

भाषा समिति से रहित प्राणी होते हैं तथा (अलियाणा) जिनका आगम भी असत्य होता है जो (अलियधम्मनिरया) असत्य धर्म में निरत रहते हैं, तथा (अलियासु कहासु अभिरमता) आत्मगुण हानि कराने वाली कथाओं में जिनका मन मोद पाता है ऐसे अनार्यजन (बहुप्पगार अलिय) इन विविध प्रकारके अलीक वचनों को (करेउ तुट्ठा) बोलकर वे भविष्यमें पश्चात्ताप नहीं करते ह प्रत्युत (उलटे)प्रसन्न होते हैं।

भावार्थ—सूत्रकारने इस सूत्रद्वारा यह प्रकट किया है कि जो प्राणी असत्यभाषण करनेम ही आनद मानता है वे किस प्रकारसे बैठे बैठे दूसरे जनोंको प्राणिहिंसा वर्धक कार्यों में उकसाया करते हैं, जब ये किसीकी शालिकी खेतीको पकी हुई देख लेते हें तो उसके मालिकको चाहे वह माने या न माने सलाह देते हैं-तुम्हारी यह खेती पक चुकी है, तुम बैठे २ क्या करते हो ? क्यों नहीं जल्दी से जल्दी इसे काटकर और दाय (गाहटा) करके साफसूफ कर अपने घरमे भरकर रख देते हो ? । इसे तो भडार मे भर कर रखनेमें ही लाभ है । ये वणिक् जन बडे स्वार्थी होते हैं-बाहर परदेशमें नौकाओं से यात्रा कर खूब कमाई

याणा" જેમના આગમ પણ અસત્ય હોય છે જે "अलिय धम्मनिरिया" અસત્ય ધર્મમા લીન રહે છે, તથા "अलियासु कहासु अभिरमता" આત્મગુણ હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમનુ મન આનદ પામે છે એવા અનાર્યજન "बहुप्पगार अलिय" એ વિવિધ પ્રકારના અલીક વચનો "करेउ तुट्ठा" બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ રાજી થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કર્યું છે કે જે જીવો અસત્ય બોલવામા જ આનદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કઈ રીતે અન્ય જીવોને પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે કોઈના ખેતરમા શાલિ ડાંગરનો પાક તૈયાર થયેલો જુવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન માને છતા પણ તે સલાહ આપે છે કે આ ડાંગર પાકી ગઈ છે તમે બેસી કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી કાપીને, ખળુ કરીને, ઉપણીને શા માટે ઘરમા ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા કોઠારમા જ ભરી રાખવી હિતાવહ છે આ વેપારીઓ ભારે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પરદેશની સફર કરીને તેઓ

नतया हतो दुष्टः, अत्र सम्भ्रमे द्वित्वम्' तथा 'सुट्ठु छिन्नो भिन्नो' सुष्ठु छिन्नो भिन्नश्च स दुर्जनेन इति पूर्वोक्तप्रकारैः 'उवदिसंता' उपदिशन्तः=कथयन्तः 'एवं विह' एवंविधं=स्वरूपतः सत्यमपि प्राणिनां हिंसाकारणत्वात् परिणामतोऽलीकं 'मणेण वायाए कम्मुणा य' मनसा-वचसा कर्मणा च त्रिधा 'अलीयं' अलीकम्=असत्यं 'करेंति' कुर्वन्ति भाषन्ते इत्यर्थः, कीदृशास्ते अलीकभाषिण? इत्याह 'अकुसला' अकुशलाः=भाषासमितिविकलाः 'अणज्जा' अनार्याः=म्लेच्छाः

कुछ भी दान मत दो। (सुट्ठुहओ सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति) 'तुमने उस दुष्ट को अच्छा मारा, बहुत अच्छा किया जो उसे छिन्न भिन्न कर डाला। (त्ति) इस पूर्वोक्त प्रकार से (उवदिसंता) दूसरों के प्रति कहते हुए मृषावादी जन (एवं विहं) यद्यपि स्वरूप की अपेक्षा अपने वाच्यार्थ से संबंधित होने के कारण-सत्य होने पर भी प्राणिहिंसा के कारण होने से असत्यवाणी को (मणेण वायाए कम्मुणा) मन से, वचन से और काय से, (अलियं करेंति) अलीक-झूठ बोला करते हैं। तात्पर्य इसका यह है कि अपने अभिधेय(वक्तव्य)से असंबधित वाणी ही मृषा स्वरूप नहीं है किन्तु जिस सत्यवाणीसे पर प्राणियोंको कष्ट हो आपत्तिमें पड जाना पड़े उनके प्राणों की हिंसा आदि हो जावे वह वाणी भी असत्य ही है। ऐसी वाणी केवल वचनयोग की अपेक्षा से ही असत्यरूप नहीं मानी जाती है किन्तु वह मन और काय इन अंगोंकी अपेक्षा भी असत्य मानी जाती हैं। इस तरह की असत्यवाणी का जो (अकुसला)

કોઈને પણ કંઈ પણ દાન ન આપો "सुट्ठुहओ सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति" "તમે તે દુષ્ટને માર્યો તે ઠીક કર્યું, તેને છિન્ન ભિન્ન કરી નાખ્યો તે ઘણું સારૂ કર્યું" "त्ति" આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે "उवदिसंता" બીજાને કહેતા તે અસત્ય બોલનારા લોકો "एवं विहं" જો કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ સાથે સાથે સંબંધિત હોવાને કારણે-સત્ય હોવા છતાં પણ પ્રાણી હિંસાના કારણ રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને "मणेण वायाए कम्मुणा" મનથી, વચનથી અને કાર્યથી "अलियं करेंति" અલીક-અસત્ય બોલ્યા કરે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસંબંધિત વાણી જ મૃષાવાદ રૂપ નથી પણ જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ થાય આપત્તિમાં મૂકાવું પડે, તેમના પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામાં આવતી નથી પણ તે મન યોગ અને કાયયોગની અપેક્ષાએ પણ અસત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય વાણી કે જે "अकुसला" ભાષા સમિતિથી રહિત જીવો હોય છે તથા "अणि

' अलियाणा ' अलीकाज्ञाः=अलीका आज्ञा=आगमो येपा ते तथा ' अलियधम्मनिरया' अलीकधर्मनिरताः=असद्धर्मपरायणा 'अलियासु कहासु' अलीकासु आत्मगुणहानिकरासु कथासु अभिरमन्तः=मसीदन्तः ' बहुप्पगार ' बहुप्रकारम् ' अलियं करेउ ' अलीक कृत्वा=भाषित्वा ' तुट्ठा ' तुष्टा'=प्रसन्ना भवन्ति ॥सू० १४॥

भाषा समिति से रहित प्राणी होते हैं तथा (अलियाणा) जिनका आगम भी असत्य होता है जो (अलियधम्मनिरया) असत्य धर्म में निरत रहते हैं, तथा (अलियासु कहासु अभिरमता) आत्मगुण हानि कराने वाली कथाओं मे जिनका मन मोद पाता है ऐसे अनार्यजन (बहुप्पगार अलिय) इन विविध प्रकारके अलीक वचनों को (करेउ तुट्ठा) बोलकर वे भविष्यमें पश्चात्ताप नहीं करते ह प्रत्युत (उलटे)प्रसन्न होते हैं।

भावार्थ—सूत्रकारने इस सूत्रद्वारा यह प्रकट किया है कि जो प्राणी असत्यभाषण करनेमे ही आनद मानता है वे किस प्रकारसे बैठे बैठे दूसरे जनोंको प्राणिहिंसा वर्धक कार्यों में उकसाया करते है, जब ये किसीकी शालिकी खेतीको पकी हुई देख लेते ह तो उसके मालिकको चाहे वह माने या न माने सलाह देते हैं-तुम्हारी यह खेती पक चुकी है, तुम बैठे २ क्या करते हो ? क्यों नही जल्दी से जल्दी इसे काटकर और दाय (गाहटा) करके साफसूफ कर अपने घरमे भरकर रख देते हो ? । इसे तो भडार मे भर कर रखनेमें ही लाभ है । ये वणिक् जन बडे स्वार्थी होते हैं-बाहर परदेशमें नौकाओं से यात्रा कर खूब कमाई

याणा " જેમના આગમ પણ અસત્ય હોય છે જે " अलिय धम्मनिरिया " અસત્ય ધર્મમા લીન રહે છે, તથા " अलियासु कहासु अभिरमता " આત્મગુણ હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમનુ મન આનદ પામે છે એવા અનાર્યજન " बहुप्पगार अलिय " એ વિવિધ પ્રકારના અલીક વચનો " करेउ तुट्ठा " બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ ગજી થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કર્યું છે કે જે જીવો અસત્ય બોલવામા જ આનદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કઈ રીતે અન્ય જીવોને પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે કોઈના ખેતરમા શાલિ ડાગરનો પાક તૈયાર થયેલો જુવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન માને છતા પણ તે સલાહ આપે છે કે આ ડાગર પાકી ગઈ છે તમે બેસી કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી કાપીને, ખળુ કરીને, ઉપણીને શા માટે ઘરમા ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા કોઠારમા જ ભરી રાખવી હિતાવહ છે આ વેપારીઓ ભારે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પરદેશની સફર કરીને તેઓ

नतया हतो दुष्ट', अत्र सम्भ्रमे द्वित्वम्' तथा 'सुट्ठु छिन्नो भिन्नो' सुष्ठु छिन्नो भिन्नश्च स दुर्जनेन इति पूर्वोक्तप्रकारैः 'उवदिसंता' उपदिशन्तः=कथयन्तः 'एव विह' एवंविधं=स्वरूपतः सत्यमपि प्राणिनां हिंसाकारणत्वात् परिणामतोऽलीकं 'मणेण वायाए कम्मुणा य' मनसा-वचसा कर्मणा च त्रिधा 'अलीयं' अलीकम्=असत्यं 'करेंति' कुर्वन्ति भाषन्ते इत्यर्थः, कीदृशास्ते अलीकभाषिणः? इत्याह 'अकुसला' अकुशलाः=भाषासमितिविकलाः 'अणज्जा' अनार्याः=म्लेच्छाः

कुछ भी दान मत दो। (सुट्ठुहओ सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति) 'तुमने उस दुष्ट को अच्छा मारा, बहुत अच्छा किया जो उसे छिन्न भिन्न कर डाला। (त्ति) इस पूर्वोक्त प्रकार से (उवदिसंता) दूसरों के प्रति कहते हुए मृषावादी जन (एव विह) यद्यपि स्वरूप की अपेक्षा अपने वाच्यार्थ से संबधित होने के कारण-सत्य होने पर भी प्राणिहिंसा के कारण होने से असत्यवाणी को (मणेण वायाए कम्मुणा) मन से, वचन से और काय से, (अलिय करेंति) अलीक-झूठ बोला करते हैं। तात्पर्य इसका यह है कि अपने अभिधेय(वक्तव्य)से असंबधित वाणी ही मृषा स्वरूप नहीं है किन्तु जिस सत्यवाणीसे पर प्राणियोंको कष्ट हो आपत्तिमें पड जाना पडे उनके प्राणों की हिंसा आदि हो जावे वह वाणी भी असत्य ही है। ऐसी वाणी केवल वचनयोग की अपेक्षा से ही असत्यरूप नहीं मानी जाती है किन्तु वह मन और काय इन अंगोंकी अपेक्षा भी असत्य मानी जाती हैं। इस तरह की असत्यवाणी का जो (अकुसला)

કોઈને પણ કંઈ પણ દાન ન આપો "सुट्ठुहओ सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति" "તમે તે દુષ્ટને માર્યો તે ઠીક કર્યું, તેને છિન્ન ભિન્ન કરી નાખ્યો તે ઘણું સારૂં કર્યું" "त्ति" આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે "उवदिसंता" બીજાને કહેતા તે અસત્ય બોલનારા લોકો "एव विह" જો કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ સાથે સાથે સંબંધિત હોવાને કારણે-સત્ય હોવા છતાં પણ પ્રાણી હિંસાના કારણ રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને "मणेण वायाए कम्मुणा" મનથી, વચનથી અને કાર્યથી "अलिय करेंति" અલીક-અસત્ય બોલ્યા કરે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસંબંધિત વાણી જ મૃષાવાદ રૂપ નથી પણ જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ થાય, આપત્તિમાં મૂકાવું પડે, તેમના પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામાં આવતી નથી પણ તે મન યોગ અને કાયયોગની અપેક્ષાએ પણ અસત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય વાણી કે જે "अकुसला" ભાષા સમિતિથી રહિત જીવો હોય છે તથા "अलि

करते हैं और फिर बैठे २ खाते हैं, एक अपनलोग हैं जो रात दिन परिश्रम करके भी उदरपूर्ति के लायक साधन सामग्री नहीं जुटा पाते हैं, अतः अच्छा हो इन सबको जब ये नौकाओं द्वारा बाहर जाने लगे तब इनको नष्ट कर दिया जावे। पक्षि समूह भी खेती आदिका बहुत नुकसान करते है अतः इन्हें भी मार डालो। अमुक जगह पर बड़ा भारी उपद्रव इस समय हो रहा है, सेना वहा जावे और उपद्रवकारियोंको नष्ट कर वहासे विजयश्री प्राप्तकर लौट आवे तो बहुत अच्छी बात है। इस तरह फिर झगड़ा करनेवाले लोग अपना माथा भविष्यमें ऊँचा नहीं उठा सकेंगे। यदि तुम्हारे पास व्यापार आदिसे इस समय कोई आय (आमदानी)का साधन नहीं है तो गाड़ी वाहन आदिको भाडेपर क्यों नही चलाते हो चलाओ, इससे ही तुम्हें लाभ होगा देखो उपनयन(जनोइ), चोलक, विवाह यज्ञ आदि जितने भी ये शुभ कृत्य हैं वे ऐसे ही थोड़े किये जाते हैं, इन्हें तो अमुक शुभ दिवसमें, अमुक तिथिमें, बवादि ग्यारह करणों से अमुक शुभ करण मे एव अमुक शुभमुहूर्त्त आदिमें किया जाता है, इसलिये भाई! तुम्हे ऐसा मौका आवे तब तुम इन कृत्यों को शुभ दिवस आदिमे करना। देखो घरमें यह नवीन वहू

ખૂબ નાણા કમાય છે, અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત દિનપરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ સારૂ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકસાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યા લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊચકશે નહી જો તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનુ કોઇ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે! એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઇએ તો ભાઇ! તમારે ત્યા પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જુવો!

आई है—प्रथम समय जब इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इसका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धिकी वृद्धि होगी। इसी तरह प्रसूतिका का जब स्नान कराना हो तब भी इन सब बातो का ध्यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ ख्याल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाटबाटसे मद्य, मासादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन्न, तथा शांतिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जब २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता सपादन करनेके लिये बडे आनन्दके साथ पिष्ट से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढाया करो। तथा पशुबलि भी चढाओ, बलि चढाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का खूब उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ઘરમા નવવધૂ આવી છે, તેને જ્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનુ આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા કરાવવુ જોઇએ તેમ કરવાથી તેનુ સૌભાગ્ય સતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રસૂતિકને પણ જ્યારે સ્નાન કરાવવાનુ હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનુ ધ્યાન રાખવુ જોઈએ શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઇ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઇને જ સઘળા કામો કર્યા કરો ખૂબ ઠાઠ માઠથી માસ મદિરા આદિનો ઉપયોગ કરો જ્યારે જ્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનુ આક્રમણ થાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ થાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરો કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનદ પૂર્વક લોટથી પોતાના મસ્તક જેવો આકાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરો, તથા પશુ ઓનુ બલિદાન પણ આપો, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવો તેમની આરતી ઉતારો, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોનો, વાજીકરણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાનપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરો માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મલે છે? જ્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખરાબ

करते हैं और फिर बैठे २ खाते हैं, एक अपनलोग हैं जो रात दिन परिश्रम करके भी उदरपूर्ति के लायक साधन सामग्री नहीं जुटा पाते हैं, अतः अच्छा हो इन सबको जब ये नौकाओं द्वारा बाहर जाने लगे तब इनको नष्ट कर दिया जावे। पक्षि समूह भी खेती आदिका बहुत नुकसान करते हैं अतः इन्हें भी मार डालो। अमुक जगह पर बड़ा भारी उपद्रव इस समय हो रहा है, सेना वहां जावे और उपद्रवकारियोंको नष्ट कर वहासे विजयश्री प्राप्तकर लौट आवे तो बहुत अच्छी बात है। इस तरह फिर झगड़ा करनेवाले लोग अपना माथा भविष्यमें ऊँचा नहीं उठा सकेंगे। यदि तुम्हारे पास व्यापार आदिसे इस समय कोई आय (आमदानी)का साधन नहीं है तो गाड़ी वाहन आदिको भाड़ेपर क्यों नहीं चलाते हो चलाओ, इससे ही तुम्हें लाभ होगा देखो उपनयन(जनोइ), चोलक, विवाह यज्ञ आदि जितने भी ये शुभ कृत्य हैं वे ऐसे ही थोड़े किये जाते हैं, इन्हें तो अमुक शुभ दिवसमें, अमुक तिथिमें, ववादि ग्यारह करणों से अमुक शुभ करण मे एव अमुक शुभमुहूर्त्त आदिमे किया जाता है, इसलिये भाई! तुम्हे ऐसा मौका आवे तब तुम इन कृत्यों को शुभ दिवस आदिमे करना। देखो घरमे यह नवीन बहू

ખૂબ નાણા કમાય છે, અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત દિન પરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ સારૂ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યા લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊંચકશે નહીં જો તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનુ કોઇ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે! એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઇએ તો ભાઈ! તમારે ત્યા પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જુવો!

आई है—प्रथम समय जब इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इसका सौभाग्य सन्तति एवं समृद्धिकी वृद्धि होगी। इसी तरह प्रसूतिका का जब स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का ध्यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ ख्याल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाटबाटसे मद्य, मांसादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन, तथा शांतिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जब २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बडे आनन्दके साथ पिष्ट से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढाया करो। तथा पशुबलि भी चढाओ, बलि चढाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का खूब उपयोग करो। मानवजीवनका यह

घरमा नववधू आवी छे, तेने ज्यारे सौथी पहेली वखत स्नान करवानु आवे त्यारे ते शुभ घडि आदिमा कराववु जोईए तेम करवाथी तेनु सौभाग्य संतति अने समृद्धि वधशे-ए ज प्रमाणे प्रसूतिकने पण ज्यारे स्नान करावबानु होय त्यारे पण आ बधी बाबतोनु ध्यान राखवु जोईए शुभकृत्यो करती वखते ते वातनी पण पूरे पूरी काळजी राखवी के त्यारे चित्तमा कोई पण प्रकारनी ग्लानिनो भाव न जागे, हर्षविभोर थईने ज बधा कामो कर्या करो खूब ठाठ माठथी मास मदिरा आदिनो उपयोग करो ज्यारे ज्यारे सूर्य चन्द्र पर राहुनु आक्रमण थाय-चन्द्र के सूर्य ग्रहण थाय त्यारे पोताना जीवन आदिनी रक्षाने माटे कौतुक, विस्नापन, शांतिकर्म आदि सत्कृत्यो अवश्य करो कालीका आदि देवीने प्रसन्न करवा माटे घणा आनंद पूर्वक लोटथी पोताना मस्तक जेवो आकार बनावीने तेमने बलि आप्या करो, तथा पशुओनु बलिदान पण आपो, अने आ बलि अर्पती वखते खूब उत्सव मनावो तेमनी आरती उतारो, ते उत्सवमा इच्छानुसार विविध औषधियोनो, वाजीकरण आदि दवाओनो, भक्ष्यान्नपाननो, फूलनी माळाओनो अने अनुलेपनोनो खूब उपयोग करो मानव जीवननो आवो समय वारवार थोडो ज मळे छे? ज्यारे अशुभसूचक धूमकेतु आदि ग्रहो देखाय खराब स्वप्ना आवे, खराब

करते हैं और फिर बैठे २ खाते हैं, एक अपनलोग हैं जो रात दिन परिश्रम करके भी उदरपूर्ति के लायक साधन सामग्री नहीं जुटा पाते हैं, अतः अच्छा हो इन सबको जब ये नौकाओं द्वारा बाहर जाने लगे तब इनको नष्ट कर दिया जावे। पक्षि समूह भी खेती आदिका बहुत नुकसान करते है अतः इन्हें भी मार डालो। अमुक जगह पर बड़ा भारी उपद्रव इस समय हो रहा है, सेना वहा जावे और उपद्रवकारियोंको नष्ट कर वहांसे विजयश्री प्राप्तकर लौट आवे तो बहुत अच्छी बात है। इस तरह फिर झगड़ा करनेवाले लोग अपना माथा भविष्यमें ऊँचा नहीं उठा सकेंगे। यदि तुम्हारे पास व्यापार आदिसे इस समय कोई आय (आमदानी)का साधन नहीं है तो गाड़ी वाहन आदिको भाड़ेपर क्यों नहीं चलाते हो चलाओ, इससे ही तुम्हें लाभ होगा देखो उपनयन(जनोइ), चोलक, विवाह यज्ञ आदि जितने भी ये शुभ कृत्य हैं वे ऐसे ही थोड़े किये जाते हैं, इन्हें तो अमुक शुभ दिवसमें, अमुक तिथिमें, बवादि ग्यारह करणों से अमुक शुभ करण मे एव अमुक शुभमुहूर्त्त आदिमें किया जाता है, इसलिये भाई! तुम्हे ऐसा मौका आवे तब तुम इन कृत्यों को शुभ दिवस आदिमें करना। देखो घरमे यह नवीन बहू

ખૂબ નાણા કમાય છે અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાતદિન પરિશ્રમ કરવા છતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ સારૂ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યા લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊંચકશે નહી જો તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનુ કોઇ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે! એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઇએ તો ભાઈ! તમારે ત્યા પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જવો!

आई है—प्रथम समय जब इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इनका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धिकी वृद्धि होगी। इसी तरह प्रसूतिका का जब स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का ध्यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ ख्याल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाटबाटसे मद्य, मांसादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन्न, तथा शांतिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जब २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता सपादन करनेके लिये बडे आनन्दके साथ पिष्ट से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढाया करो। तथा पशुबलि भी चढाओ, बलि चढाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का खूब उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ઘરમા નવવધૂ આવી છે, તેને જ્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનુ આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા કરાવવુ જોઇએ તેમ કરવાથી તેનુ સૌભાગ્ય સતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રસૂતિકને પણ જ્યારે સ્નાન કરાવવાનુ હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનુ ધ્યાન રાખવુ જોઈએ શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઇ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઇને જ સઘળા કામો કર્યા કરો ખૂબ ઠાઠ માઠથી મદ્ય માસ મદિરા આદિનો ઉપયોગ કરો જ્યારે જ્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનુ આક્રમણ થાય—ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ થાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરો કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનદ પૂર્વક લોટથી પોતાના મસ્તક જેવો આકાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરો, તથા પશુઓનુ બલિદાન પણ આપો, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવો તેમની આરતી ઉતારો, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોનો, વાજીકરણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરો માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મલે છે? જ્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખરાબ

करते हैं और फिर बैठे २ खाते हैं, एक अपनलोग हैं जो रात दिन परिश्रम करके भी उदरपूर्ति के लायक साधन सामग्री नहीं जुटा पाते हैं, अतः अच्छा हो इन सबको जब ये नौकाओं द्वारा बाहर जाने लगे तब इनको नष्ट कर दिया जावे। पक्षि समूह भी खेती आदिका बहुत नुकसान करते है अतः इन्हें भी मार डालो। अमुक जगह पर बड़ा भारी उपद्रव इस समय हो रहा है, सेना वहां जावे और उपद्रवकारियोंको नष्ट कर वहांसे विजयश्री प्राप्तकर लौट आवे तो बहुत अच्छी बात है। इस तरह फिर झगड़ा करनेवाले लोग अपना माथा भविष्यमें ऊँचा नहीं उठा सकेंगे। यदि तुम्हारे पास व्यापार आदिसे इस समय कोई आय (आमदानी)का साधन नहीं है तो गाड़ी वाहन आदिको भाड़ेपर क्यों नही चलाते हो चलाओ, इससे ही तुम्हें लाभ होगा देखो उपनयन(जनोइ), चोलक, विवाह यज्ञ आदि जितने भी ये शुभ कृत्य हैं वे ऐसे ही थोड़े किये जाते है, इन्हें तो अमुक शुभ दिवसमें, अमुक तिथिमें, बवादि ग्यारह करणों से अमुक शुभ करण मे एव अमुक शुभमुहूर्त्त आदिमें किया जाता है, इसलिये भाई! तुम्हे ऐसा मौका आवे तब तुम इन कृत्यों को शुभ दिवस आदिमे करना। देखो घरमे यह नवीन बहू

ખૂબ નાણા કમાય છે અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત દિન પરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ મારૂ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યા લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાંથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊચકશે નહીં જો તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનુ કોઇ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે! એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઇએ તો ભાઇ! તમારે ત્યા પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જુવો!

आई है—प्रथम समय जब इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इनका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धिकी वृद्धि होगी। इसी तरह प्रसूतिका का जब स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का ध्यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ ख्याल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाटबाटसे मद्य, मांसादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन, तथा शांतिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जब २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बड़े आनन्दके साथ पिष्ट से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढाया करो। तथा पशुबलि भी चढाओ, बलि चढाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का खूब उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ઘરમા નવવધૂ આવી છે, તેને જ્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનુ આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા કરાવવુ જોઇએ તેમ કરવાથી તેનુ સૌભાગ્ય સતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રસૂતિકાને પણ જ્યારે સ્નાન કરાવવાનુ હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનુ ધ્યાન રાખવુ જોઇએ શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી ગણવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઇ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઇને જ સઘળા કામો કર્યા કરો. ખૂબ ઠાઠ માઠથી માસ મદિરા આદિનો ઉપયોગ કરો. જ્યારે જ્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનુ આક્રમણ થાય—ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ થાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરો. કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનદ પૂર્વક લોટથી પોતાના મસ્તક જેવો આકાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરો, તથા પશુઓનુ બલિદાન પણ આપો, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવો. તેમની આરતી ઉતારો, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિઓનો, વાજીકરણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરો. માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મળે છે? જ્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખગળ

=नरकतिर्यग्योनिः सङ्ख्याऽसङ्ख्यकालप्रमाणा, वनस्पत्यपेक्षयाऽनन्तकालप्रमाणा, तत्रोत्पत्तिरूपा 'वड्ढति' वर्धयन्ति, 'तेण य अलिएण' तेन चालीकेन=असत्य भाषणकर्मणा 'समणुबद्धा' समनुबद्धाः=बन्धं प्राप्ता 'आइद्धा' आविद्धाः= आश्लिष्टाः 'पुणब्भवधयारे' पुर्नभवान्धकारे = पुनः पुनर्जन्मैवान्धकारस्तस्मिन् भीमे=भयंकरे 'भमति' भ्रमन्ति-मृषाभाषिणो जीवा जन्मजरामरणघोरनिविड़ दुःखान्धकारकान्तारे निपतिताः सन्तो विविधानि कष्टान्यनुभवन्तीत्यर्थः। तथा कथंचित् इह मनुष्यलोके समुत्पन्ना अपि 'दुग्गइवसहिमुवगया' दुर्गतिवसति मुपगता=क्लेशबहुलस्थितिं प्राप्ता 'दीसंति' दृश्यन्ते। अय भावः-मृषाभाषिणो नरकतिर्यग्योनिषु समुत्पद्यन्ते। अथ कथञ्चिन्नरकादितो निस्सृत्य मनुष्यशरीर

तथा तिर्यंच योनिको (वड्ढति) बढाते हैं। अर्थात् मृषावादी जन मृषा भाषणसे उत्पन्न पापों के उदयसे पल्यप्रमाणवाली तिर्यंच योनिको तथा उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम प्रमाणकालवाली नरकगतिको अपनी उत्पत्ति स्थान बनाते हैं। वहा वे सख्यात काल, असख्यात काल एव वनस्पति अपेक्षा अनतकाल तक रहते हैं। (तेण य अलिएण) उस अलीक भाषणकर्मसे (समणुबद्धा) बध को प्राप्त हुए (आइद्धा) क्षीर नीरकी तरह परस्पर एक क्षेत्रावगाहरूप सबध से विशिष्ट हुए वे जीव (पुणब्भ वधयारे भीमे) पुनः पुनः जन्मरूप भयकर अधकार में (भमति) भ्रमण करते हैं। अर्थात् जो मृषावादी जन होते हैं वे जन्म, जरा, मरण रूप घोर गाढ अधकारमें पतित हो कर विविध कष्टों को भोगा करते हैं। तथा (दुग्गइवसहिमुवगया तेय दीसति) यदि वे कदाच किसी भी तरहसे इस मनुष्यलोकमे उत्पन्न हो जावे तो भी क्लेश बहुल स्थिति

વાળી "निरयतिरियजोणि" નરક તથા તિર્યંચ યોનિને "वडति" વધારે છે એટલે કે મૃષાવાદી લોકો અસત્ય વાણીથી જનિત પાપોના ઉદયથી પલ્ય પ્રમાણવાળી તિર્યંચ યોનિને તથા ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગરોપમ પ્રમાણ વાળી નરકગતિને પોતાની ઉત્પત્તિનુ સ્થાન બનાવે છે ત્યા તેઓ સખ્યાતકાળ, અસખ્યાતકાળ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનતકાળ સુધી રહે છે "तेण य अलिएण" તે અસત્યભાષણ કર્મથી "समणुबद्धा બધાયેલા "आइद्धा" દૂધ અને પાણીની જેમ પરસ્પર એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધી વિશિષ્ટ થયેલ તે જીવો "पुणब्भवधयारे भीमे" ફરી ફરીને જન્મ લેવા રૂપ ભયકર અધકારમા "भमति" ભ્રમણ કરે છે, એટલે કે મૃષાવાદી લોકો જન્મ, જરા, અને મરણરૂપ ગાઢ અધકારમા પડીને વિવિધ કષ્ટોને ભોગ્યા કરે છે તથા "दुग्गइवसहिमुवगया तेय दीसति" જો કદાચ તેઓ કોઇ પણ કારણે મનુષ્ય લોકમા

प्राप्नुवन्त्यपि चेत्‌ तर्हि हीनदीनतुच्छजातिकुलादिभिः अधन्या एव वक्ष्यमाणरूपेण दुःखबहुलशरीरं प्राप्ता दृश्यन्ते। कथंभूताः? इत्याह—'दुग्गया' दुर्गताः= दुरवस्थां प्राप्ताः सर्वथा दरिद्रा-इत्यर्थः, दुरन्ताः=दुःखेन अन्तः=जीवनस्यावसानं येषां ते तथा 'परवसा' परवशाः=पराधीनाः 'अत्थभोगपरिवज्जिया' अर्थभोगपरिवर्जिताः=अर्थाः=धनानि भोगाश्च=शब्दादयो विषयास्तै परिवर्जिता= रहिताः। तथा 'असुहिया' असुखिताः=सुखरहिता – निरन्तरमाधिव्याध्यादि

को प्राप्त हुए दृष्टिगत होते हैं। तात्पर्य इसका यही है कि मृषावादी जन नरक तिर्यंच योनिमें जन्मते हैं। यदि वे किसी तरह नरकादिसे निकल कर मनुष्य भव को प्राप्त कर भी लेवें तो भी वहां वे हीन, दीन, तुच्छ जाति कुल आदि में ही जन्म धारण करते हैं और अधन्य होकर दुःख बहुल शरीर को धारण करते हुए दिखलाई देते हैं। यही बात सूत्रकार (दुग्गया) इत्यादि पदों द्वारा प्रकट कर रहे हैं, वे कहते हैं कि यदि वे किसी प्रकार मनुष्य पर्याय धारण भी कर लेवें तो भी वहां उनकी परिस्थिति ठीक नहीं रहती है-वे सदा (दुग्गया) दारिद्र्यदुःख से सन्तप्त रहते हैं (दुरता) उनके जीवन का अन्त दुःखों से होता है (परवसा) जीवन भर वे पराधीन बने रहते हैं। (अत्थभोगपरिवज्जिया) अर्थ संपत्ति एवं शब्दादिक भोग इनसे, रहित होते हैं। (असुहिया) निरन्तर आधि, व्याधि, उपाधियों से पीडित रहने के कारण उन्हें सुख का अंश भी प्राप्त नहीं होता है। अथवा "असुहिया"

ઉત્પન્ન થાય છે તો પણ અત્યંત દુઃખયુક્ત સ્થિતિમાં નજરે પડે છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે મૃષાવાદી લોકો નરક તિર્યંચ યોનિમાં જન્મ લે છે, પણ તેઓ કોઇ પણ પ્રકારે નરકાદિમાંથી બહાર નીકળીને મનુષ્યભવને પ્રાપ્ત કરે તો પણ ત્યાં તેઓ હીન, દીન, તુચ્છ જાતિ કુળ આદિમાં જ જન્મ પામે છે અને અધન્ય-તિરસ્કૃત થઇને અત્યંત દુઃખયુક્ત દશામાં મનુષ્ય જીવન વ્યતીત કરે છે એ જ વાત સૂત્રકાર "दुग्गया" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ કહે છે કે તેઓ કોઈ પણ પ્રકારે મનુષ્ય યોનિમાં જન્મ લે છે તો ત્યાં તેમની હાલત સારી હોતી નથી—તેઓ સદા "दुग्गया" દારિદ્રયના દુઃખોથી પીડાય છે, "दुरता" તેમના જીવનનો અંત દુઃખોથી જ આવે છે, "परवसा" આખું જીવન તેઓ પરાધીન દશા ભોગવે છે, "अत्थभोगपरिवज्जिया" અર્થ-સંપત્તિ તથા શબ્દાદિ ભોગથી તેઓ રહિત હોય છે "असुहिया" નિરંતર આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિઓથી પીડાયા કરે છે અને તે કારણે તેમને સુખનો અંશ પણ પ્રાપ્ત થતો નથી, અથવા "असुहिया" ની સંસ્કૃત છાયા "असुहृद"

णिसेविणो ' नीचजननिषेविणः=जातिगुणकर्मभिर्नीचा ये जनास्तेषां निषेविणः= उत्थानोपवेशनशयनभोजनपानादिभिः सहनिवासिनः ' लोगगरहणिज्जा ' लोकगर्हणीया=सकलजननिन्दनीयाः ' भिच्चा ' भृत्याः=भरणीया परान्ये तथा ' असरिसजणस्स पेस्सा ' असदृशजनस्य=असमानशीलस्य–म्लेच्छाचारलोकस्य ' पेस्सा ' प्रैष्याः=तदाज्ञाकारकाः ' दुम्मेहा ' दुर्मेधाः=सद्बुद्धिवर्जिताः, ' लोगवेदअज्झप्पसमयसुइवज्जिया ' लोकवेदाध्यात्मसमयश्रुतिवर्जिताः श्रुतिशब्दस्य प्रत्येकसम्बन्धात् लोकश्रुतिः=लोकाभिमत शास्त्रं भारतादि०, वेदश्रुतिः=ऋग्यजु सामाथर्व वेदशास्त्रम् , अध्यात्मश्रुतिः=आत्मस्वरूपनिर्णायक शास्त्र, समयश्रुतिः=अर्हत्प्रवचन ताभिर्वर्जिताः=रहिता ये ते तथा, ' धम्मबुद्धिवियला ' धर्मबुद्धिविकलाः=श्रुत चारित्रधर्मरहिता नराः=मनुष्याः ' दृश्यन्ते ' इति पूर्वेण सम्बन्धः । तथा ' तेण य ' तेन च=पूर्वोक्तप्रकारेण ' अलिएण ' अलीकेन=मृषावादेन ' असतएण '

(णीयजणणिसेविणो) नीच जनों के साथ ही ये उठा बैठा करते हैं और इन्हीं के साथ ये खाते पीते हैं तथा उन्हीं के साथ रहते हैं। (लोगगरहणिज्जा) समस्त जन इनकी निंदा करते रहते हैं। (भिच्चा) दूसरों के दास होकर रहते हैं (असरिसजणस्स पेस्सा) असमानशील वाले-म्लेच्छाचार वाले-लोगों के ये दास होते हैं (दुम्मेहा) सद्बुद्धि से ये वर्जित होते हैं (लोगवेयअज्झप्पसमयसुइवज्जिया) लोकश्रुति वेदश्रुति, अध्यात्मश्रुति और समयश्रुति से ये रहित होते हैं। लोकाभिमत भारत आदि शास्त्रों का नाम लोकश्रुति है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम वेद, अथर्ववेद, इनका नाम वेदश्रुति है। आत्मा के स्वरूप के निर्णायक शास्त्र अध्यात्मशास्त्र हैं। अर्हत्प्रवचन का नाम समयश्रुति है। (धम्मबुद्धिवियला) श्रुतचारित्ररूप धर्म से विमुख रहते हैं। तथा (तेण

અને ગોત્ર અધમ હોય છે, " णीयजणणिसेविणो " નીચ લોકો સાથે જ તે ઉઠે બેસે છે, તેમની સાથે જ તેઓ ખાય પીવે છે તથા તેમની જ સાથે રહે છે, " लोगगहरणिज्जा " સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે " भिच्चा " અન્યના દાસ થઈને રહે છે, " असरिसजणस्स पेस्सा " અસમાન શીલવાળા-મ્લેચ્છા ચાર વાળા લોકોના તેઓ દાસ થાય છે " दुम्मेहा " તેઓ સદ્બુદ્ધિ રહિત હોય છે, " लोगवेयअज्झप्पसमयसुइवज्जिया " લોકશ્રુતિ, વેદશ્રુતિ અધ્યાત્મશ્રુતિ અને સમયશ્રુતિથી તેઓ રહિત હોય છે લોકાભિમત ભારત આદિ શાસ્ત્રોને લોકશ્રુતિ કહે છે, ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વવેદને વેદશ્રુતિ કહે છે આત્માના સ્વરૂપનુ નિર્ણાયક શાસ્ત્ર અધ્યાત્મશાસ્ત્ર છે અહંત પ્રવચનને સમયશ્રુતિ કહે છે " धम्मबुद्धिवियला " તેઓ શ્રુતચારિત્ર - — શ્રી

असत्केन-असद्रूपेण अथवा अशान्तकेन=अनुपशान्तेन 'डज्झमाणा' दह्यमानाः= प्रज्वल्यमाना 'अवमाणणा पिट्ठिमसाहिक्खेवपिसुणभेयणगुरुबंधवसयणमित्तावक्खारणादियाइ' अपमाननपृष्ठिमांसाधिक्षेपपिशुनभेदनगुरुबान्धवस्वजनमित्रापक्षारणादिकानि=तत्र अपमाननम्=मानभङ्गः, पृष्ठिमांस=परोक्षे दोषभाषणं, अधिक्षेप.= धिक्कारपूर्वकनिन्दनं, पिशुनभेदन=पिशुनैः = खलैः भेदन=प्रेमसम्बन्धविच्छेदनं, गुरुबान्धवस्वजनमित्राणामपक्षारण=रूक्षवचनैस्तर्जनं, अथवा-मित्रादिभिर्बहिष्करणं च एतानि आदि येषां तानि तथा भूतानि, 'अब्भक्खाणाइ' अभ्याख्यानानि= असत्यदोषारोपणवचनानि 'बहुविहाइ' बहुविधानि=नानाप्रकाराणि 'अमणोरमाइ' अमनोरमाणि=मनःप्रतिकूलानि 'हियमणदूमगाइ' हृदयमनोदावकानि

य अलिएण असतएण) मृषावादीजन इस असद्रूप अथवा अनुपशान्त मृषावाद से (डज्झमाणा) रातदिन जलते रहते हैं और (अवमाणण पिट्ठिमसाहिक्खेवपिसुणभेयणगुरुबंधवसयणमित्ताऽवक्खारणादियाइ) (अवमाणण) अपमान सहन करते हैं। (पिट्ठिमस) हरएक कोई इनकी पीठ पीछे निंदा करते हैं। (अहिक्खेव) प्रत्येक व्यक्ति इन्हें धिक्कारता रहता है। (पिसुण भेयण) दुष्ट लोग इनके प्रेमसंबध को विच्छेद करा देते हैं (गुरुबंधवसयणमित्ता) गुरुजन, बंधुजन, स्वजन एवं मित्र (अवक्खारणाइयाइ) रूक्ष वचनों द्वारा इनका अनादर करते हैं- डांटते डपते रहते हैं, अथवा ये सब इन्हें अपने में से बाहर निकाल देते हैं (अब्भक्खाणाइ) चाहे जो मनुष्य इन पर असत्य दोषारोपण कर दिया करता है। इस प्रकार ये लोग असत्यदोषारोपण वचनों को कि जो (बहुविहाइ) नाना प्रकार के होते हैं, (अमणोरमाइ) मन को

વિમુખ રહે છે તથા " तेण य अलिएण असतएण " મૃષાવાદીજન આ અસદ્રૂપ અથવા અનુપશાન્ત મૃષાવાદથી " डज्झमाणा " રાતદિન જલતા રહે છે અને " अवमाणणपिट्ठिमसाहिक्खेवपिसुणभेयणगुरुबंधवसयणमित्ताऽवक्खारणादियाइ " ' अवमाणण " અપમાન સહન કરે છે, " पिट्ठिमस " દરેક વ્યક્તિ તેની પીઠ પાછળ નિંદા કરે છે, " अहिक्खेव " દરેક વ્યક્તિ તેને ધિક્કારે છે " पिसुण भेयण " દુષ્ટ લોકો તેમના પ્રેમ સબંધમાં ભંગાણ પડાવે છે, " गुरु बंधवसयणमित्त " ગુરુજન, બંધુજન, સ્વજન અને મિત્ર " अवक्खारणाइ याइ " કઠોર વચનો દ્વારા તેમનો અનાદર કરે છે-ધાક ધમકી આપતા રહે છે અથવા તે બધા તેમને પોતાની વચ્ચેથી બહાર કાઢી મૂકે છે " अब्भक्खाणाइ " તેમના ઉપર લોકો ગમે તે પ્રકારનું દોષારોપણ કર્યા કરે છે આ રીતે તે લોકો અસત્ય દોષારોપણ કારક વચનો, કે જે " बहुविहाइ " વિવિધપ્રકારના હોય છે, " अमणोरमाइ " મનને ન ગમે તેવા હોય છે, તથા " हियमणदूमगाइ "

=हृदयस्य मनसश्च दारकाणि=तापजनकानि 'जावज्जीवं' यावज्जीव=जीवन पर्यन्त 'दुरुद्धराइं' दुरुद्धराणि=दुस्तराणि 'पावंति' प्राप्नुवन्ति। पुनः किमित्याह—'अणिट्ठखरफरुसवयणतज्जणणिब्भच्छणदीणवयणविमणा' अनिष्टखरफरुषवचनतर्जननिर्भत्सनदीनवचनविमनसः=तत्र अनिष्टेन=अप्रियेण खरपरुषेण=अतिकठोरेण वचनेन यानि तर्जनानि='रे नीच! कथमेवं करोषि' इत्यादि लक्षणानि निर्भर्त्सनानि='अरे दुष्टकर्मकारिन्=गृहान्निस्सर दृष्टिपथाद्वा' इत्यादि रूपाणि, तैर्दीनं वदनं=मुखं विकृत–विपाकयुक्तं च मनो येषां ते तथा 'कुभोयणा' कुभोजनाः=कुत्सितम्=अरसविरसं भोजनं येषां ते तथा तुच्छान्नाहारिणः 'कुवाससा' कुवाससः=कुचैलिनः 'कुवसहीसु' कुवसतिषु–कुत्सितस्थानेषु 'किलिस्संता'

नहीं रुचने वाले तथा (हियमणदूमणगाइं) हृदय और चित्त को संतापजनक होते हैं ऐसे वचन (जावज्जीवं) जीवन पर्यंत (दुरुद्धराइं) जो इन्हें आघात पहुँचाने वाले होते हैं उनको (पावंति) प्राप्त करते हैं अर्थात् सुना करते हैं। फिर क्या सो कहते हैं–(अणिट्ठखरफरुस वयण तज्जणणिब्भच्छण दीणवयणविमणा) ऐसे ये लोग अप्रिय, अतिकठोर वचनों से तथा–"रे नीच! ऐसा क्यों करता है" इत्यादिरूप तर्जना से, "ओ दुष्टकर्मकारिन्! तू मेरे घर से बाहिर निकलजा–मेरे साम्हने मत आ–यहां से दूर हटजा" इत्यादि हृदय विदारक निर्भर्त्सना से अनादृत हुए ये दीन वदन और विकृत मन वाले तथा (कुभोयणा) अपनी जिन्दगी भर कभी अच्छा भोजन नहीं पाने वाले तुच्छाहारी तथा (कुवाससा) मैले कुचैले वस्त्र पहनने वाले तथा (कुवसहीसु) गन्दी जगहों में रह कर (किलिस्संता) अनेक कष्टों को

હૃદય અને ચિત્તમાં સંતાપ પેદા કરનાર હોય છે તથા "दुरुद्धराइं" જે તેમને આઘાત લગાડનાર હોય છે એવા વચનો "जावज्जीव" જીવે ત્યાં સુધી તેઓ "पावंति" પ્રાપ્ત કરે છે એટલે સાંભળ્યા કરે છે વળી બીજુ શું બને છે તે કહે છે—"अणिट्ठखरफरुसवयणतज्जणणिब्भच्छणदीणवयणविमणा" તેવા એ લોકો અપ્રિય, અતિ કઠોર વચનોથી તથા "અરે નીચ! આવું કેમ કરે છે?" ઈત્યાદિ પ્રકારની તર્જનાથી, "હે દુષ્ટકર્મકારિન્! તું મારા ઘરમાંથી બહાર નીકળી જા–મારી સામે આવીશ મા–અહીંથી દૂર ચાલ્યો જા" ઈત્યાદિ હૃદય ભેદક નિર્ભર્ત્સનાથી અનાદર પામેલ તે દીન વદનવાળા તથા વિકૃત મન વાળા તથા "कुभोयणा" તથા જીવન પર્યન્ત સારૂં ભોજન પ્રાપ્ત નહીં કરનારા હલકા પ્રકારનું ભોજન પ્રાપ્ત કરનારા તથા "कुवाससा" મેલાં તથા ફાટેલા તૂટેલા વસ્ત્ર પહેરનારા તથા "कुवसहीसु" ગંદી જગ્યાઓમાં ર[illegible]

'विलश्यन्त=सन्तप्यमाना अतएव 'अच्चतविउलदुक्खसयसपलित्ता' अत्यन्त विपुलदुःखशतसमदीप्ताः=अत्यन्त विपुलानि विशालानि यानि दुःखशतानि तैः सम्प्रदीप्ताः-प्रतप्ता'='उवलभंति' उपलभन्ते=प्राप्नुवन्ति 'नेवसुह' नैवसुख 'नेवनिव्वुइ' नैवनिर्वृतिं=मन स्वास्थ्य, किन्तु दुःखमेवानुभवन्तीति भावः। एव मृषावादफलमुक्तम् ॥ सू० १५ ॥

उठाते हुए (अच्चतविउलदुक्खसयसपलित्ता) बहुत अधिक कठिन से कठिन सैकड़ो दुःखो से सन्तप्त बने हुए ये लोग (नेवसुह) न तो कभी सुख पाते है और (नेवनिव्वुइ) न कभी निर्वृति-मनः स्वास्थ्य-शाति को (उवलभंति) पाते ह अर्थात्-रातदिन दुःख भोगा करते हैं। इस प्रकार यह मृषावाद का फल कहा है।

भावार्थ—मृषावाद का फल स्पष्ट करते हुए सूत्रकार कहते हैं कि-मृषवादीजन कभी भी अपने जीवन में सच्ची सुखशांति नही पा सकते हैं। ये मृषावाद से उपार्जित पापकर्म के उदय से मरकर तिर्यच एव नरकगतिके अत्यत कठिन दुःखोको भोगा करते हैं। तिर्यच योनिमे रहने वाले जीवो की आयु उत्कृष्ट तीन पल्य की वनस्पति की अपेक्षा अनतकाल की और नरक में रहने वाले जीवो की उत्कृष्ट तेतीस सागर प्रमाण है। इतने काल तक वहा रहकर कष्ट परम्पराओ का अनुभव वे करते रहते है। फिर भी जो पाप कर्म भोगने से अवशिष्ट रहता है उसे वे वहा से निकलकर किसी तरह भी मिली हुई मनुष्य पर्याय में भोगते है। यहा जो इन्हें मनुष्य पर्याय प्राप्त होती है वह बिलकुल जघ-

સતા " અનેક કષ્ટો સહન કરતા " અચ્ચતવિઉલદુક્ખસયસપલિત્તા " ઘણુજ વધારે આકરામા આકરા સેકડો દુ ખોથી દુ ખી બનેલા તે લોકો "નેવ સુહ " કદી પણ સુખ પ્રાપ્ત કરતા નથી " નેવ નિવ્વુઇ " કે કદી પણ નિવૃત્તિ મનની શાન્તિ " ઉવલભંતિ " અનુભવતા નથી એટલે કે દિનરાત દુ ખ ભોગવ્યા કરે છે, આ પ્રકારનુ મૃષાવાદનુ ફળ કહેલ છે

ભાવાર્થ—મૃષાવાદનુ ફળ બતાવતા સૂત્રકાર કહે છે કે-મૃષાવાદી વ્યક્તિ પોતાના જીવનમા કદી પણ સાચા સુખ શાતિ પામી શકતો નથી તેઓ મૃષા વાદથી ઉપાર્જિત પાપકર્મોના ઉદયથી મરીને તિર્યચ અને નરકગતિના અત્યત કઠિન દુ ખો ભોગવ્યા કરે છે તિર્યચ યોનિમા જન્મ પામતા જીવોનુ આયુષ્ય ઉત્કૃષ્ટ ત્રણ પલ્યનુ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનતકાળનુ અને નરકની અપેક્ષાએ ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણનુ હોય છે એટલો સમય ત્યા રહીને તેઓ કષ્ટ પરપરાઓને સહન કરે છે, ત્યાર પછી પણ જે પાપકર્મો ભોગવવાના

न्यस्थिति की होती है। उस सर्वथा जघन्य स्थिति की मनुष्य पर्याय में उत्पन्न होकर ये कभी भी थोड़ा आनद भी नहीं प्राप्त कर सकते हैं। सदा पराधीनता की जजीरों में जकड़ा जाकर इनका जीवन व्यवहार चलता है। इनकी शारीरिक आकृति दुर्दर्शनीय एव उद्वेगजनक होती है। कोई भी इनसे मोह ममता नहीं रखता है। प्रत्येक व्यक्ति इनका तिरस्कार करता रहता है। चेतनशक्ति इनकी अविकसित रहा करती है। लक्ष्मी नहीं रहने से ये सदा दुःखी बने रहते हैं। मागमूग करके ये जो भी लाते ह वह रस विरस होता है। भरपेट भोजन इन्हें मिलता नहो है। वाणी भी इनकी इतनी अच्छी नहीं होती जो दूसरों के चित्त को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। काक जैसा कठोर इनका स्वर होता है। गर्दभ जैसी इनकी बोली होती है। कोई २ तो जन्मान्ध होते हैं। कोई २ बहिरे और गूगे होते है। दुःख में भी इनका साथ देने वाला कोई नहीं होता है। इनकी मित्रता अपने जैसे नीचों से ही होती हैं। उन्हीं के पास ये उठा बैठा करते है। गन्दे स्थानो में इन्हें रहने को मिलता है। सब कोई इनकी निंदा करते है। दूसरो के हृदय विदारक शब्दो को सुनकर ये मनोमन दुःखित होकर रह जाते हैं। तात्पर्य यह है

બાકી રહ્યા હોય તેમને ત્યાથી નીકળીને કોઈ પણ રીતે પ્રાપ્ત થયેલ મનુષ્ય યોનિમા તેઓ ભોગવે છે તેને જે માનવ પર્યાય પ્રાપ્ત થાય છે તે બિલકુલ જઘન્ય સ્થિતિની હોય છે તે તદ્દન જઘન્ય સ્થિતિની મનુષ્ય પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈને તેઓ કદી પણ થોડો સરખોએ આનદ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી તેમનો જીવન વ્યવહાર સદા પરાધીનતાની બેડીમા જકડાઈને ચાલે છે તેમના શરીરનો દેખાવ બેડોળ અને ઉદ્વેગજનક હોય છે તેમના પ્રત્યે કોઈ પણ મોહ અથવા મમતા રાખતુ નથી, દરેક વ્યક્તિ તેનો તિરસ્કાર કર્યા કરે છે તેમની ચેતના શક્તિ અવિકસિત રહે છે લક્ષ્મી નહીં રહેવાથી તે સદા દુખી રહે છે માગી કરીને તે જે કઇ લાવે છે તે વિરસ હોય છે તેને ધરાઈને ખાવા પણ મળતુ નથી બીજાના ચિત્તને પોતાની તરફ આકર્ષી શકે તેવી મીઠી વાણી પણ તેની હોતી નથી તેનો સ્વર કાગડા જેવો કર્કશ હોય છે ગર્દભ જેવી તેની બોલી હોય છે, કોઈ કોઈ તો જન્માધ હોય છે કોઇ બહેરા અને મૂગા હોય છે દુખમા પણ તેને મદદ કરનાર કોઇ હોતુ નથી તેને પોતાના જેવા અધમ લોકો સાથે જ મિત્રતા થાય છે તેમની પાસે જ તે ઉઠે બેસે છે તેમને ગદા સ્થાનોમા જ રહેવુ પડે છે સૌ તેમની નિંદા કરે છે બીજા લોકો હૃદયવિદારક શબ્દો સાભળીને તેઓ પોતાના મનમા જ દુખ અનુભવીને શાંત રહે છે ન ત્પર્ય

अथ प्रकृतद्वार साकल्येन सकल्य्य निगमयति सूत्रकार 'एसो सो' इत्यादि ।

मूलम्—एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइणय अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति, एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणोउ वीरवर नामधेज्जो कहेसीय अलियवयणस्स फलविवाग, एय त बिइय पि अलियवयण लहुस्सग लहुचवलभणिय भयकर दुहकर अयसकर वेरकर अरतिरतिरागदोसमणसकिलेसवियरण अलिय-नियडिसातियोग बहुल नीयजणनिसेविय निसंस अप्पच्चयकारग परमसाहुगरहणिज्ज परपीडाकारगं परमकिण्हलेससहिय दुग्गइ-विणिवायवड्ढण भवपुणब्भवकर चिरपरिचियमणुगय दुरत त्तिबेमि ॥ सू० १६ ॥

॥ बिइय अहम्मदार समत्त ॥ २ ॥

टीका—'एसो सो' एष स 'अलियवयणस्स' अलीकवचनस्य 'फलविवाओ' फलविपाकः 'इहलोइओ' ऐहलौकिक'=मनुष्यभवापेक्षया 'परलोइओ'

कि दुःखो के जितने प्रकार ह वे सब भयकर से भयकर इन्हें भोगना पड़ता ह । इस स्थिति में इनका कोई साथी नहीं होता है ॥ सू-१५ ॥

अब सूत्रकार इस अलिकवचन द्वार का सपूर्णरूप से सकलन करके फलितार्थ कहते हैं-' एसो सो ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एसो सो अलियवयणस्स फल विवाओ) अलीक वचनका यह जो मनुष्यगति की अपेक्षा इहलोक सबधी तथा नरक निगोदगति की

એ છે કે દુખોના ભયકરમા ભયકર જે પ્રકારો છે, તે તેમને ભોગવવા પડે છે એ સ્થિતિમા તેમનુ કોઈ સાથીદાર હોતુ નથી ॥સૂ-૧૫॥

હવે સૂત્રકાર આ દ્વારનુ સપૂર્ણ રીતે સકલન કરીને ફલિતાર્થ બતાવે છે—"एसो सो" ઈત્યાદિ,

ટીકાર્થ-"एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ" અલીક વચનનો મનુષ્યગતિની અપેક્ષાએ આલોક સબધી તથા નરકગતિની અપેક્ષાએ પરલોક સબધી આ જે ફલ-

पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया 'अप्पसुहो' अल्पसुखः=सुखवर्जितः 'बहुदुक्खो' दुःखबहुलः 'महब्भओ' महाभयः=महाभयजनकः 'बहुरयप्पगाढो' बहुरजः प्रगाढ=प्रचुरकर्मरजोभिः सम्भृत दारुणः=भीषणः 'कक्कसो' कर्कशः=कठोर 'असाओ' अशातः=असुखोऽशातकर्मवेदनीयस्वरूपः इत्येवंविधः फलविपाकः 'वाससहस्सेहिं' वर्षसहस्रैः=पल्योपमसागरोपमप्रमाणकालैः 'मुच्चइ' मुच्यते= क्षीयते। तदेतद्व्यतिरेकमुखेनाह-'णय' न च त फलविपाकम् 'अवेदयित्ता' अवेदयित्वा=अननुभुज्य उपभोग विनेत्यर्थः, 'हु' निश्चयेन 'मोक्खो' मोक्षः 'अत्थि' अस्ति 'त्ति' इति शब्दः समाप्तिसूचकः। एतस्यार्थस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रमाण्यनिरूपणाय प्रमाणयन्नाह-'एवमाइसु' इत्यादि, एवम्=

अपेक्षासे परलोक सबंधी फलरूप विपाक कहा गया है, उससे यह अच्छी तरह ज्ञात हो जाता है कि यह (अप्पसुहो) सुखवर्जित एव (बहुदुक्खो) दुःख बहुल है। (महब्भओ) महा भयजनक, और (बहुरयप्पगाढो) प्रचुर कर्मरूपी रज से भरा हुआ है। (दारुणो) दारुण तथा (कक्कसो) कठोर है। और (असाओ) असाता वेदनीय कर्म स्वरूप है। (वाससहस्सेहिं मुच्चइ) यह फलविपाक जीव पल्योपम एव सागरोपमप्रमाण कालतक भोगा करता है तभी जाकर उससे यह छुटकारा पाता है, अर्थात् वह फलरूप विपाक नष्ट हो पाता है। (णय अवेदयित्ता हु मोक्खो अत्थि त्ति) भोगे विना जीव इससे मुक्त नहीं होता है। यहा (त्ति) यह समाप्ति अर्थ का सूचक है।

अब सूत्रकार इस अर्थ मे साक्षात् प्रमाणभूत परमात्मा द्वारा प्रतिपादित होनेके कारण प्रमाणभूतता प्रकट करने के लिये कहते हैं-(एव-

રૂપ વિપાક બતાવવામા આવ્યો છે તેનાથી તે સારી રીતે જાણવા મળે છે કે તે "अप्पसुहो" સુખવર્જિત અને "बहुदुक्खो" અત્યત દુખમય છે "महब्भओ" મહા ભયજનક, અને "बहुरयप्पगाढो" પ્રચૂર કર્મરૂપી રજથી ભરપૂર છે "दारुणो" દારુણ તથા "कक्कसो" કઠોર છે અને "असाओ" અસાતા વેદનીય કર્મ સ્વરૂપ છે "वाससहस्सेहिं मुच्चइ" તે ફલવિપાક પલ્યોપમ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી જીવ ભોગવ્યા કરે છે, ત્યારે જ તે તેમાથી છૂટી શકે છે, એટલે કે તે ફલરૂપ વિપાક એટલા લાબા સમયે નષ્ટ થાય છે "णय अवेदयित्ता हु मोक्खो अत्थि त्ति" તે ફલવિપાક ભોગવ્યા વિના જીવ તેનાથી મુક્ત થઇ શકતો નથી અહીં "त्ति" તે સમાપ્તિ અર્થનો સૂચક છે

હવે સૂત્રકાર આ અર્થમા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને કારણે, પ્રમાણભૂતતા દર્શાવવાને માટે કહે છે-"एवमाइसु" આ પૂર્વોક્ત રીતે તીર્થંકર ગણધરાદિક દેવોએ તથા "नायकुलनंदणो महप्पा जिणो वीरवर

उक्तरीत्या 'आहमु' ऊचुस्तीर्थङ्करगणधरादयः। तथा तदनुसारेणैव 'नाय कुलनदणो' ज्ञातकुलनन्दन = सिद्धार्थकुलानन्दकरः, 'महप्पा' महात्मा= परमात्मरूप. 'जिणो' जिनः वीरवरनामधेज्जो' वीरवरनामधेय प्रख्यातनामा भयवान् महावीर इमम्' अलियवयणस्स' अलीकवचनस्य 'फल-विवाग' फलविपाक 'कहेसी' कथितवान्। एव 'त' तत् पूर्वोपदर्शितस्वरूपम् 'अलियवयण' अलीकवचन 'लहुसग लहु चवलभणिय' लघुस्वकलघुचपल भणित=लघुस्वकाः= तुच्छात्मानश्च ते लघव अतिनीचाश्चपलाश्च तै भणित= जल्पित 'भयकर' भयङ्कर 'दुहकर' दुःखकर 'अयसकर वेरकर' अयस्कर वैरकरम्, 'अरतिरतिरागदोसमणसकिलेसवियरण' अरतिरतिरागद्वेषमन सक्लेशवितरणम्, 'अलियनियडिसातिजोगबहुल' अलीकनिकृतिसातियोग बहुल 'नीयजणनिसेविय' नीचजननिषेवित 'निसस' नृशसम् 'अपच्चयकारग'

माहसु) इस पूर्वोक्त रीतिसे तिर्थंकर गणधरादिक देवोने तथा (नायकुल नदणो महप्पा जिणो वीरवरनामधेज्जो) उन्ही के अनुसार ज्ञातकुलनदन सिद्धार्थकुलके आनदकारक-परमात्मस्वरूप, जिन महावीरने कि जिनका "वीर" यह उत्तम नाम प्रख्यात है उन्होंने (इस अलियवयणस्स फल-विवाग कहेसी) यह मृषावादका फल बतलाया है। अब उपसहार करते है- (एय त बितिय पि अलियवयणं) इस द्वितीय अलीक वचन को जो (लहु-सगलहुचवलभणिय) लघुस्वक-तुच्छात्मा होते है अतिनीच एव चपल होते है वे ही बोलते है। (भयकर) यह अलीक वचन भयकर, (दुह-कर) दुःखकर, (अजसकर) अयस्कारक, (वेरकर) वैरकारक, (अरतिरतिरागदोसमणसकिलेसवियरणं) अरति, रति, राग, द्वेष और मन सक्लेश प्रदाता है। (अलियनियडिसाइजोगबहुल) अलीक-

नामधेज्जो" તેમના પ્રમાણે જ જ્ઞાતકુલનદન સિદ્ધાર્થના કુળને આનદદાયક પરમાત્મસ્વરૂપ, જિન મહાવીરે કે જેમનુ "વીર" એ ઉત્તમ નામ પ્રખ્યાત છે, તેમણે "इम अलियवयणस्स फलविवाग कहेसी" આ મૃષાવાદનુ સ્વરૂપ બતાવ્યુ છે હવે સૂત્રકાર ઉપસહાર કરે છે—"एय त बिइय पि अलिय वयण" આ દ્વિતીય દ્વાર રૂપ અધર્મ વચનને જે "लहुसगवहुचवलभणिय" લઘુસ્વક-તુચ્છાત્મા હોય છે, જે અતિ નીચ અને ચચળ હોય છે તેઓ જ બોલે છે "भयकर" તે અસત્યવચન ભયકારક, "दुहकर" દુખકર, "अज-सकर" અપકીર્તિકારક, "वेरकर" વૈરકારક, "अरतिरतिरागदोसमणसकिले सवियरण" અરતિ, રતિ, રાગ, દ્વેષ અને મનને ક્લેશ કરનાર છે "अलिय नियडिसाइजोगबहुल" અલીક—નિષ્ફળ છે, નિકૃતિ, સાતિના પ્રયોગથી યુક્ત

अप्रत्ययकारक, 'परमसाहुगरहणिज्ज परमसाधुगर्हणीय परपीडाकारक 'पर मकिण्हलेससहिय' परमकृष्णलेश्यासहितं 'दुग्गइविणिवायवड्ढण' दुर्गतिविनिपातवर्द्धन 'भवपुणभवकर' 'चिरपरिचिय' चिरपरिचितम्, 'अणुगय' अनुगतम्, 'दुरत' दुरन्तम्। एतानि सर्वाणि पदानि पूर्वमस्यैव द्वारस्य प्रथमसूत्रे व्याख्यातानि ततो विज्ञेयम्। 'त्तिबेमि' पूर्ववत् ॥सू० १६॥

इतिश्री-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शिन्याख्यायां व्याख्यायां हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु मृषावादाख्य द्वितीयम्- आस्रव (अधर्म) द्वार समाप्तम् ॥२॥

निष्कृत है निकृति, शाठ्य के प्रयोग से चपल है अर्थात् कपट बहुल है। (णीयजणनिसेविय) जाति, कुल आदि से अधम बने हुए व्यक्तिओ द्वारा निषेवित है। (निसंस) क्रूर-अथवा प्रशंसा से रहित है। अप्रत्यय-अविश्वास का कारक है। (परमसाहुगरहणिज्ज) परम साधु-तीर्थंकरो द्वारा गर्हणीय है। (परपीडाकरण) दूसरों को पीडा पहुचाने वाला है। (परमकिण्हलेससहिय) अत्यन्तमलिन आत्म परिणति से युक्त है (दुग्गइविणिवायवड्ढण) दुर्गति का वर्धक है। (भव पुणब्भवकर) पुनः पुनः जन्म प्रदाता है। (चिरपरिचय) चिरपरिचित यह जीवों के साथ अनेक भवों की परम्परा तक रहनेवाला है। (अणु गय) भव भव में साथ चलने वाला है। (दुरत) इसका फल दुरन्त-कटुफलका देने वाला है "त्ति बेमि" इसकी व्याख्या की जा चुकी है॥सू-१६॥

॥ द्वितीय आस्रव—'अधर्म' द्वार समाप्त ॥

છે એટલે કે કપટ મય છે "णीयजणनिसेविय" જાતિ, કુળ આદિથી અધમ એવી વ્યક્તિઓ દ્વારા સેવાયેલ છે "निसस" ક્રૂર-એટલે કે પ્રશંસાથી રહિત છે અપ્રત્યય-અવિશ્વાસ ઉત્પન્ન કરનાર છે "परमसाहुगरहणिज्ज" પરમસાધુ-તીર્થંકરો દ્વારા નિંદ્ય છે "परपीडाकरण" બીજાને પીડા પહોંચાડનાર છે "परमकिण्हलेससहिय' અત્યંત મલિન આત્મ પરિણતિથી યુક્ત છે "दुग्गइ विणिवायवड्ढण" દુર્ગતીનુ વધારનાર છે "भवपुणब्भवकर" ફરી ફરીને જન્મ લેવડાવનાર છે "चिरपरिचिय" ચિરપરિચિત્ એવુ તે જીવોની સાથે અનેક ભવોની પરંપરા સુધી રહેનાર છે "अणुगय" દરેક ભવમાં સાથે ચાલનારૂ છે "दुरत" તેનુ ફળ દુરન્ત છે-કટુ ફલ દેનાર છે "त्तिबेमि" આ વાકયનો અર્થ આવી ગયો છે (સૂ-૧૬)

આ રીતે હિંસાદિ પંચાસ્રવ દ્વારમાં પ્રાણવધ નામનુ બીજુ આસ્રવ (અધર્મ)દ્વાર સમાપ્ત થયુ

अथ तृतीयमध्ययनम् ।

व्याख्यात द्वितीयमधर्मद्वार साम्प्रत तृतीयमारभ्यते–अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः । द्वितीयाधर्मद्वारे यादृशनामादिनिर्देशपुरस्सरमलीकवचनस्वरूपमुक्तम् । अलीकवचन च अदत्ताऽऽदायिनो गृह्णन्तेनेति हेतो, सूत्रक्रमनिर्देशानुसाराच्च मृषावादानन्तरमुचितमाप्तमदत्तादान स्वरूपनामादिनिर्देशपूर्वक प्रदर्श्यते, तत्र पूर्वयोरधर्मद्वारयोरिवास्यापि ' यादृक् १, यन्नाम २, यथा च कृत ३, यत्फल ददाति ४, ये च कुर्वन्ति ५, इति पञ्चभिरन्तर्द्वारैर्निरूपण चिकीर्षुरादौ क्रमप्राप्त ' यादृश ' इति द्वारमाश्रित्य अदत्तादानस्वरूप निरूप्यते–'जबू तइय च' इत्यादि

तृतीय आस्रव-(अधर्म) द्वार प्रारम्भ–

द्वितीय आस्रव-(अधर्म) द्वार कहा गया, अब तृतीय आस्रव द्वार की व्याख्या प्रारभ होती है । इस अधर्मद्वार का पूर्व अधर्मद्वार के साथ इस प्रकार से सबध है कि–द्वितीय आस्रव-(अधर्म) द्वार में (याद्दशनामादि निर्देश पूर्वक) अलीक (झूठ)वचनका स्वरूप कहा है सो इस अलीक वचन को जो अदत्त को लेने वाले व्यक्ति होते हैं, वे ही बोलते हैं तथा सूत्रक्रम निर्देश भी ऐसा ही है, इसलिये मृषावाद के अनन्तर उचितरूप से प्राप्त अदत्तादान का स्वरूप नामादि निर्देशपूर्वक इस अध्ययन में कहा जावेगा । जिस प्रकार पूर्व दो आस्रव (अधर्म) द्वारों का सूत्रकार ने (याद्दश यन्नाम) इत्यादि पाच अन्तर्द्वारों द्वारा निरूपण किया है उसी तरह से वे इस तृतीय आस्रव (अधर्म) द्वार का भी निरूपण करना चाहते हैं इसलिये वे सर्व प्रथम इसमें क्रम प्राप्त अदत्तादान का (याद्दश) इस द्वार को लेकर स्वरूप कहते हैं—

त्रीजा आस्रव–अधर्म द्वारनो प्रारभ

बीजा आस्रव-(अधर्म) द्वारनु कथन पूरु थयु, हवे त्रीजा आस्रव द्वारनु वर्णन शरु थाय छे आ अधर्मद्वारनो आगळना अधर्मद्वार साथे आ रीते सबध छे—बीजा आस्रव-(अधम) द्वारमा " याद्दशनामादि निर्देशपूर्वक " अलीक वचननु स्वरूप प्रगट करवामा आव्यु छे पण ते अलीक वचनो अदत्त दीधेलु लेनारी व्यक्ति ज बोले छे, तथा सूत्रक्रम निर्देश पण एवो ज छे, ते कारणे मृषावादनु निरूपण कर्या पछी योग्य रीते अदत्तादाननु स्वरूप नामादि निर्देश पूर्वक आ अध्ययनमा बतावबामा आवशे जेम आगळना बे आस्रव-(अधर्म) द्वारोनु सूत्रकारे "याद्दश यन्नाम"इत्यादि पाच अन्तर्द्वारो द्वारा निरूपण कर्यु छे, एज प्रमाणे तेओ आ त्रीजा आस्रव (अधर्म) द्वारनु पण निरूपण करवा मागे छे तेथी तेओ सौथी पहेला क्रम प्रमाणे

मूलम्—जंबू तइयं च अदिण्णादाण हरदहमरणभयकलुस तासणपरसतगगिज्झलोभमूल कालविसमसंसिय अहो अच्छिन्न तण्हपत्थाणपत्थोइमइय अकित्तिकरं अणज्जं छिद्दमंतरविधुरवसणमग्गणउस्सवमत्तप्पमत्तपसुत्तवचणाऽऽखिवणघायणपराऽणिहुयपरिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खिय सयासाहुगरहणिज्जं पियजणमित्तजण-भेदविप्पीहकारग रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूरसमरस-गामडमरकलिकलहवहकरण दुग्गइविणिवायवड्ढणं भवपुणब्भवकर चिरपरिचियं अणुगय दुरत तइय अधम्मदार॥सू०१॥

टीका—हे जम्बू ! 'तइय' तृतीयमास्रवद्वार 'अदिण्णादाण' अदत्तादानम्=अदत्तस्य=देव–गुरु–राज–गाथापति–साधर्मिभिरसमर्पितस्य सचित्ताचित्त-मिश्रवस्तुविशेषस्य आदान=ग्रहणमदत्तादान नाम चौर्यमित्यर्थः। कीदृश तदित्याह 'जबू ! तइय' इत्यादि।

टीकार्थ—जम्बूस्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि–हे भदत ! तृतीय आस्रव द्वार का सिद्धिगति को प्राप्त हुए श्री महावीर प्रभुने क्या स्वरूप कहा है ? इसका उत्तर देते हुए श्री सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि (जबू) हे जबू ! (तइय च अदिण्णादाण) तृतीय अदत्तादान का स्वरूप सिद्धिगति स्थान को प्राप्त हुए श्री महावीर ने इस प्रकार कहा है। अदत्त का–देव, गुरु, राजा, गाथापति और साधर्मी द्वारा नहीं समर्पित की गई वस्तु का–आदान–ग्रहण करना इसका नाम अद-

અદત્તાદાનનુ "यादृश" એ દ્વારને લઈને સ્વરૂપ કહે છે ' जबू ! तइय" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! સિદ્ધિ ગતિ પામેલ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ ત્રીજા આસ્રવદ્વારનુ કેવુ સ્વરૂપ કહેલ છે? તેનો ઉત્તર આપતા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે–હે જમ્બૂ ! 'तइय च अदिण्णादाणं" સિદ્ધિગતિને પામેલ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ અદત્તાદાનનુ આ પ્રકારનુ સ્વરૂપ કહેલ છે–

અદત્તનુ–દેવ, ગુરુ, રાજા, ગાથાપતિ અને સાધર્મી દ્વારા અર્પણ ન કરાયેલ વસ્તુનુ–આ દાન–ગ્રહણ કરવુ તેને અદત્તાદાન કહે છે તે કેવુ હોય છે?

—'हरदहे' त्यादि--

'हरदहमरणभयकलुसतासणपरसतगगिज्झलोभमूल' हरदहमरणभयकलुषत्रासन परसत्कगृद्धिलोभमूल, तत्र हर=हरण कुरु, दह=गृहादिकं भस्मालय, इति वचनद्वय हरणदाहविषये चोराणां प्रतिज्ञावाक्यम्। तथा मरण मृत्युः भय=भीतिः कलुष च=पाप तैस्त्रास-भयजननस्वरूप यस्य तत्तथा, तच्च परसत्कगृद्धिलोभ मूल च=परसत्के=परकीयधने गृद्धिः=आसक्तिः तथा लोभश्च-रौद्रध्यानयुक्ता-मूर्च्छा मूल=कारण यस्य तत्तथा 'कालविसमसंसिय' कालविषमसंश्रित च=कालः अर्धरात्रादिलक्षणः, विषमाणि पर्वतादिदुर्गमस्थानानि तैः संश्रितम् = आश्रित यत्तत्तथा। एतादृशेषु निर्जनस्थानेषु चोराः प्रायो निवसन्ति। तथा 'अहोअच्छि

त्तादान है। यह कैसा होता है? इस पर कहते हैं-यह अदत्तादान (हरदहमरणभयकलुसतासणपरसंगगिज्झलोभमूल) (हर) इसके द्रव्य का हरण करलो, (दह) इसके गृहादिक को जलादो, (मरण) इसे मार डालो, इत्यादि रूपसे (भय) भय दिखाकर दूसरो के द्रव्यादि का हरण करना, (कलुस) एक दूसरों मे कलुषभाव जगाकर उनके द्रव्यादिक को ले लेना, (तासण) इत्यादि अनेक प्रकारसे त्रास पहुँचाना, तथा (परसतग) दूसरो के धन म (गिज्झि) आसक्ति रखना तथा (लोभ) रौद्रध्यानसे युक्त इसमें मूर्च्छाभाव रखना, ये सब (मूल) अदत्तादान के मूल कारण है। (कालविसमसंसिय) अर्धरात्र आदि काल तथा विषम-पर्वतादि दुर्गमस्थान, इनके द्वारा यह अदत्तादान संश्रित-आश्रित होता है-बनता है, तात्पर्य इसका यह है कि जो अदत्तादान-चोरी-क्रिया करते हैं, वे चोर प्राय. अर्धरात्रि के समय में निकलते हैं, एवं पर्वतादि दुर्गम स्थानो पर छिपे रहते हैं, इस अपेक्षा काल और

તો તેના જવાબમા કહે છે—તે અદત્તાદાન "हरदहमरणभयकलुसतासण परसतगगिज्झलोभमूल" "हर" "આ વ્યક્તિનુ દ્રવ્ય પડાવી લો" "दह" તેના ઘર આદિને બાળવી દો, "मरण" તેને મારી નાખો" ઈત્યાદિ રીતે "भय" ભય બતાવીને અન્યનુ દ્રવ્ય વસ્ત્ર આદિ હરી લેવુ, "कलुस" એક બીજા વચ્ચે કલેશ જગાડીને તેમના દ્રવ્ય આદિને લઈ લેવુ, "तासण" ઈત્યાદિ રીતે ત્રાસ પહોચાડવો, તથા "परसतग" બીજાના ધનમા "गिज्झि" આસક્તિ રાખવી તથા "लोभ" રૌદ્રધ્યાનથી યુક્ત મૂર્છાભાવ તેમા રાખવો તે બધા "मूल" અદત્તાદાનના મૂળ કારણો છે "कालविसमसंसिय" અર્ધરાત્રી આદિ કાળ તથા પર્વતાદિ દુર્ગમસ્થાન તે અદત્તાદાનના આશ્રય સ્થાનો છે, એટલે કે જે અદત્તાદાનચોરી કરે છે તે ચોર સામાન્ય રીતે મધ્યરાત્રે ચોરી કરવા નીકળે છે, અને પર્વતાદિ દુર્ગમ સ્થાનોમા છૂપાઇ રહે છે, તે અપેક્ષાએ કાળ

म्नतण्हपत्थाणपत्थोइमइय ' अधोऽच्छिन्नतृष्णप्रस्थान-प्रस्तोतृमतिक = अधोगती अच्छिन्नतृष्णानां=विषयलोलुपानां यत् प्रस्थान=गमन तत्र प्रस्तोत्री=प्रवर्तिका मतिः = बुद्धिरस्ति यस्मिन्नदत्तादाने तत्तथा नरकाद्यधोगतिकारणमित्यर्थः, 'अकित्तिकर' अकीर्तिकरम्=अयशस्करम् ' अणज्ज=अनार्यम् = अनार्याचरितत्वात् अथवा अन्याय=न्यायवर्जितं न्यायरहितमित्यर्थः ' छिद्दमंतरविधुरवसणमग्गण-उस्सवमत्तप्पमत्त-पसुत्तवंचणाक्खिवण -घायणपराणिहुय-परिणामतक्करजणबहुमय' छिद्रान्तरविधुरव्यसनमार्गणोत्सवमत्तप्रमत्तप्रसुप्तवञ्चनाऽऽक्षेपणघातनपरानिभृतपरि-णामतस्करजनबहुमतम्=तत्र छिद्र = ' केन मार्गेण गन्तव्य ' मित्यादिकम्, अन्तरम्=अवसर जनानां निद्रादिलक्षणः, विधुर = अपायः कष्टप्राप्त्यादिलक्षण',

विषमस्थानों को अदत्तादान का कारण कहा गया है। (अहो अच्छिन्नतण्हपत्थाणपत्थोइमइय) जिन व्यक्तियों की विषय तृष्णा छिन्न नहीं होती है ऐसे व्यक्ति ही अधोगति में पहुँचाने वाली अपनी बुद्धि के द्वारा इस अदत्तादान मे प्रवृत्ति करते है, अत. अधोगति में गमन की कारणभूत जो विषय लोलुपों की मति है वह भी इस अदत्तादान की एक कारणभूत है। यह अदत्तादान (अकित्तिकर) अयश कारक है। (अणज्ज) अनार्यो द्वारा ही आचरित किया जाता है इस लिये अनार्यरूप है। अथवा नीतिमार्ग से विरुद्ध होने के कारण अन्याय्य है। (छिद्द) इस अदत्तादानको करने वाले व्यक्ति इस बातकी गवेषणामें रहते हैं कि हमे इस कामको करनेके लिये किस मार्गसे होकर जाना चाहिये तथा (अंतर) अन्तर की-कौनसा अवसर इस कामको सिद्ध करनेवाला होगा इस तरहके मनुष्योंके निद्रादिरूप समयकी (विधुर) विधुरकी-कष्ट

અને દુર્ગમસ્થાનોને અદત્તાદાનના આશ્રયસ્થાનો બતાવ્યા છે ' अहो अच्छिन्न तण्हपत्थाणपत्थोइमइय " જે લોકોની વિષય વાસના નષ્ટ થતી નથી એવા લોકો જ અધોગતિમા લઈ જનાર પોતાની બુદ્ધિ દ્વારા, આ અદત્તાદાનમા પ્રવૃત્ત રહે છે, તેથી અધોગતિમા ગમન કરવાના કારણરૂપ વિષય લોલુપોની જે મતિ છે તે પણ આ અદત્તાદાન માટે કારણરૂપ છે, ને અદત્તાદાન " अकित्तिकर " અપકીર્તિ અપાવનાર છે, " अणज्ज " અનાર્યોદ્વારા સેવાતુ હોવાથી અનાર્યરૂપ છે, અથવા નીતિ માર્ગથી વિરુદ્ધ હોવાથી અન્યાયયુક્ત છે " छिद्द " આ અદત્તાદાન સેવનાર વ્યક્તિ એ વાતની શોધમા રહે છે કે આ કામ કરવા માટે આપણે કયા માર્ગે થઈને જવુ જોઈએ તથા " अतर " અતરની-કયો વખત આ કામને સિદ્ધ કરવા માટે અનુકૂળ થશે તેની શોધમા રહે છે આ રીતે માણસના નિદ્રાદિરૂપ સમયની શોધમા

व्यसन=राजादि कृतोपद्रवः, इत्येतेषां मार्गणम्=गवेषणम् , तथा उत्सवेषु=विवाहादिलक्षणेषु मत्तानां=मद्यपानाद्यासक्तानां अत एव प्रमत्तानाम्=असावधानानां प्रसुप्तानां=निद्रितानां च वञ्चन=धनापहरणं, तथा आक्षेपणं=मन्त्रौषध्यादिभिश्चित्तविक्षेपकरणं, घातनं=प्राणवियोजीकरणं द्रव्यस्यादिभिस्ताडनं वा तेषु परा= तथा अनिभृतः=अशान्तः परिणाम = अन्तःकरणवृत्तिविशेषः येषां ते तथा, ते च ते तस्कराजनाः चारगणास्तैर्बहुमतं=सातिशयमादृतं स्वीकृतं यत्तत्तथाभूतमदत्तादानम् 'अकलुण' अकरुणं=दयारहितं निर्दयजनप्रवर्तितत्वात् 'रायपुरिस

प्राप्ति आदिरूप आपत्ति की, (वसण) व्यसन को–राजा आदि द्वारा कृत उपद्रव की–भी (मग्गण) गवेषणा–ताक में तत्पर रहते हैं। तथा (उस्सव) विवाह आदि उत्सवों में (मत्तप्पमत्त) मद्यपान आदि के कर लेने से असावधानी मे पडे हुए मस्त व्यक्तियों के तथा (पसुत्त) निद्रा में पडे हुए व्यक्तियों के (वचण) धनापहरण करने मे (आखिवण) आक्षेपणमंत्र औषधि आदिद्वारा चित्त के विक्षेप करने में, तथा (घायणपर) प्राणों के अपहरण करने मे अथवा अपने मित्रादिकों द्वारा ताडन करवाने में तत्पर रहा करते हैं। (अउणिहुयपरिणाम) इस अदत्तादानरूप कुकृत्य को करने वाले जीवों के परिणाम–अन्तःकरण की वृत्ति–अशान्त रहती है। (तक्करजणबहुमय) यह अदत्तादान चोर व्यक्तियों द्वारा ही सातिशयरूप में आदृत हुआ है। अतः यह दुष्कर्म (अकलुण) निर्दयजनो द्वारा प्रवर्तित होने के कारण स्वयं दया रहितरूप है इसीलिये (रायपुरिसरक्खिय) राजपुरुषों द्वारा यह निषिद्ध

રહે છે "विहुर" વિધુરની–ઇષ્ટ પ્રાપ્તિ આદિ રૂપ આપત્તિની," वसण " વ્યસનની રાજાદિ દ્વારા કરાયેલ ઉપદ્રવની–પણ ' मग्गण " ગવેષણા–તપાસને માટે તૈયાર રહે છે તથા " उस्सव " વિવાહ આદિ ઉત્સવોમાં, " मत्तप्पमत्त " મદ્યપાન આદિ કરીને અસાવધાનીમાં રહેલ મસ્ત વ્યક્તિઓના તથા " पसुत्त " નિદ્રામાં પડેલ વ્યક્તિઓના ' वचण " ધનને હરી લેવાને " आखिवण " આક્ષેપણ–મંત્ર ઔષધિ આદિ દ્વારા ચિત્તમાં વિક્ષેપન કરવાને તથા " घायण पर " પ્રાણો હરી લેવાને અથવા પોતાના મિત્રાદિ દ્વારા માર મરાવવાને તત્પર રહે છે " अयणिहुयपरिणाम " તે અદત્તાદાનરૂપ દુષ્કૃત્ય કરનાર જીવોની મનોવૃત્તિ અશાન્ત રહે છે " तक्करजणबहुमय " આ અદત્તાદાન ચોર લોકો દ્વારા જ વધારે પ્રમાણમાં સેવવામાં આવે છે તેથી તે દુષ્કર્મ " अकलुण " નિર્દય જનો દ્વારા આચરિત હોવાને કારણે દયારહિત હોય છે તેથી " राय

अथ यन्नामेतिद्वारमाश्रित्यादत्तादानस्य नामान्याह 'तस्स य' इत्यादि—

मूलम्—तस्स य नामाणि गोणाणि हुंति तीस । तं जहा-चोरिक्कं १, परहड २, अदत्त ३, कूरिकडं ४, परलाभो ५, असंजमो ६, परधणम्मि गेही ७, लोलिक्कं ८, तक्करत्तणं तिय ९, अवहारो १०, हत्थलहुत्तणं ११, पावकम्मकरणं १२, तेणिक्कं १३, हरणविप्पणासो १४, आइयणा १५, लुंपणा धणाणं १६, अपच्चओ १७, ओवीलो १८, ओक्खेवो १९, क्खेवो २०, विक्खेवो २१, कूडया २२, कुलमसी य २३, कंखा २४, लालप्पणं पत्थणा य २५, आससणा य वसणं २६, इच्छामुच्छाय २७, तण्हागेही य २८, नियडिकम्म २९, अवरोच्छ त्ति वि य ३० । तस्स एयाणि एवमाईणि नामधेज्जाणि हुंति तीस अदिण्णादाणस्स पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स ॥ सू० २ ॥

टीका—'तस्स य' तस्य च पूर्वोपदर्शितस्वरूपस्यादत्तादानस्य 'गोणाणि' गोणानि=गुणनिष्पन्नानि नामानि वक्ष्यमाणानि 'तीस' त्रिंशत् 'हुंति' भवन्ति

करना सब चोरी है । इस चोरी में जितने भी निमित्त कारण पड़ते हैं वे भी कारण मे कार्य के उपचार से चोरी रूप ही माने जाते हैं । दूसरे की भूली हुई, विसरी हुई, पडी हुई, धरोहररूप में रखी हुई, वस्तु का हरण करना और दबा लेना, ये सब अदत्तादान के ही प्रकार हैं । यह अदत्तादान हिंसादि पापों की तरह चोरो के लिये नरकादि दुर्गतियों में गमन का कारण होता है ॥सू०१॥

अब सूत्रकार "यन्नाम" इस द्वार को लेकर अदत्तादान के नामों

ચોરી કહેવાય છે તે ચોરીના જેટલા નિમિત્તો હોય છે તેમને પણ કારણમા કાર્યના ઉપચારથી ચોરી રૂપ જ માનવામા આવે છે બીજાની ભૂલથી પડી રહેલી, ભૂલાઈ ગયેલી, પડી રહેલી, અને થાપણ રૂપે મૂકેલી વસ્તુનુ હરણ કરવુ કે તેમને પચાવી પાડવી તે બધા અદત્તાદાનના જ પ્રકાર છે તે અદત્તાદાન હિંસાદિ પાપોની જેમ ચોરોને નરકાદિ દુર્ગતિયોમા ગમન કરાવનાર હોય છે ॥સૂ૦૧॥

હવે સૂત્રકાર "યન્નામ" એ દ્વારને લઈને અદત્તાદાનના નામો પ્રગટ

' त जहा ' तानि यथा–' चोरिक्क ' चौरिक्यम्=चोरणं चोरिका सैवेति चौरिक्यं१, ' परहड ' परहृतं=परस्मात्=अन्यस्मात् हृतम्=अनुमतिं विनैव गृहीतम्२, 'अदत्त' केनापि न दत्तमदत्तं ३, ' कूरिकडं ' क्रूरिकृतं- क्रूरैभिः=निर्दयैः कृतं ४, 'परलाभो' परद्रव्यस्य लाभः ५, ' असंजमो' असंयमः=असंयमानुष्ठानं ६, 'परधणम्मि गेही ' परधने गृद्धिः=परद्रव्याऽभिकाङ्क्षा ७, 'लोलिक्क' लौल्यं=लोलुपत्वं ८, 'तक्करत्तण' तस्करत्वमिति च 'अवहारो अपहार =अपहरणं परधनस्य१०,'हत्थलहुत्तण' हस्तलघुत्वं हस्तलाघवं–हस्तचापल्यम् , अथवा हस्तयोः लघुत्वं = परद्रव्यापहरणकुत्सितत्वात् नीचत्वं ११, ' पावकम्मकरण ' पापकर्मकरणं=पापानुष्ठानं १२, ' तेणिक्क ' स्तैन्यं=स्तेनस्य=चोरस्य कर्म चौर्यमित्यर्थः १३, ' हरणविप्पणासो ' हरणविप्रणाशः=हरणेन परद्रव्यहरणेन विप्रणाशः=नाश इत्यर्थः १४, ' आइयणा ' आदानम्=अननुमतपरद्रव्यग्रहणं १५, ' लुपणा धणाणं ' धनानां लोपना=परद्रव्य

को प्रकट करते है—' तस्स य नामाणि ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स य) पूर्व मे उपदर्शित स्वरूपवाले उस अदत्तादान के (गोणाणि) गुणनिष्पन्न (नामाणि) नाम (तीसं हुंति) ३० तीस होते हैं (तजहा) वे इस प्रकार हैं–(चोरिक्क) चोरी १, (परहड) परहृत–विना अनुमति से दूसरे से वस्तु लेना २, (अदत्त) अदत्त ३, (कूरिकड) क्रूरिकृत ४, (परलाभो) परलाभ ५, (असंजमो) असंयम ६, (परधणम्मि गेही) परधनगृद्धि ७ (लोलिक्क) लोलुपता ८, (तक्करत्तण) तस्करता ९ (अवहारो) अपहार १०, (हत्थलहुत्तण) हस्तलाघव ११, (पावकम्मकरण) पापकर्मकरण १२, (तेणिक्क) स्तैन्य१३, (हरणविप्पणासो) हरणविप्रणाश१४, (आइयणा) आदान१५,

---

કરે છે–" तस्स य नामाणि " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–" तस्स य " આગળ બતાવવામાં આવેલ સ્વરૂપ વાળા અદત્તાદાનના ' गोणाणि " ગુણ પ્રમાણે ' नामाणि " નામ " तीस हुंति " ત્રીસ છે " त जहा " તે આ પ્રમાણે છે–(૧) " चोरिक्क " ચોરી (૨) " परहड " પરહૃત–અનુમતિ વિના બીજાની વસ્તુ લેવી, (૩) " अदत्त " અદત્ત, (૪) " कूरिकड " ક્રૂરિકૃત, (૫) " परलाभो " પરલાભ, (૬) " असंजमो " અસંયમ, (૭) " परधणम्मि गेही " પરધનગૃદ્ધિ–પરધનની લાલસા, (૮) " लोलिक्क " લોલુપતા, (૯) " तक्करत्तण " તસ્કરતા, (૧૦) ' अवहारो " અપહાર, (૧૧) " हत्थलहुत्तण " હસ્તલાઘવ, (૧૨) " पावकम्मकरण " પાપકર્મકરણ, (૧૩) " तेणिक्क " સ્તૈન્ય, (૧૪) " हरणविप्पणासो " હરણવિપ્રણાશ, (૧૫) "आइ

विच्छेदः १६, 'अप्पच्चओ' अप्रत्ययः=अविश्वासः-अविश्वासोत्पादकत्वात् १७, 'ओवीलो' अवपीड=पीडाजनक १८, 'ओक्खेवो' अवक्षेपः=परद्रव्यविच्छेदः १९, 'उक्खेवो' उत्क्षेपः=परहस्तात् द्रव्यस्य निर्गमन २०, विक्खेवो' विक्षेपः= परधनस्य प्रक्षेपण २१, 'कूडया' कूटता=द्रव्यस्य कूट तुलादिभिरन्यथाकरण २२, 'कुलमसी' कुलमषी=कुलकलङ्कजनक च २३, 'कंखा' काङ्क्षा=परद्रव्यतृष्णा २४, 'लालप्पणं पत्थणा य' लालपन प्रार्थना च=लालपन=गर्हितजल्पन, प्रार्थना च चौर्यकृते तदपलापकवचनविन्यास, प्रार्थनारूपाणि वचनानि जल्पन्ति चौराः २५, 'आससणा य वसण' आशसनाच व्यसन-आशसना=विनाशः-विनाशहेतुत्वात्, व्यसन=सर्वापत्तिकारणम् २६, 'इच्छामुच्छा य' इच्छामूर्च्छा च=तत्रेच्छा पर धनाभिलाषः, मूर्च्छा च=तत्रैव गाढाभिष्वङ्गरूपा २७, 'तण्हागेही य' तृष्णा गृद्धिश्च, तत्र तृष्णा=अप्राप्तद्रव्यस्य प्राप्तिवाञ्छा, गृद्धिश्च=प्राप्तस्याऽविनाशेच्छा अद त्तादानस्य हेतुत्वात् तृष्णागृद्धित्युच्यते २८ 'नियडिकम्म' निकृतिकर्म= निकृति=कपट तत्कर्म=कपटकार्यमित्यर्थः २९, 'अवरोच्छ त्ति वि य' अपरोक्ष मिति च=न विद्यन्ते परेषाम् अक्षीणि द्रष्टव्यतया यत्र चौरकर्मणि तदपरोक्षम्= अप्रत्यक्षसम्पाद्यमित्यर्थः ३० । तस्य 'पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स' पापकलिकलुष

(धणाण लुपणा) धनकी लोपना १६, (अप्पचओ) अप्रत्यय(अविश्वास)१७, (ओवीलो) अवपीड-दु'खरूप १८, (ओक्खेवो) अवक्षेप १९, (उक्खेवो) उत्क्षेप २०, (विक्खेवो) विक्षेप २१' (कूडया) कूटता २२, (कुलमसी य) कुलमषी २३, (कखा) काक्षा २४, (लालप्पण पत्थणा य) लाल पन प्रार्थना २५, (आससणा य वसण) आशासना व्यसन २६, (इच्छा मुच्छा य) इच्छामूर्च्छा २७, (तण्हागेही य) तृष्णागृद्धी २८, (नियडिकम्म) निकृतिकर्म (कपटकरण) २९, (अवरोच्छत्तिवि य) तथा अपरोक्ष ३०। (तस्स) इस तरह उस कि जिस मे (पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स)

यणा " આદાન, (૧૬) "धणाण लुपणा" ધનની લોપના, (૧૭)"अप्पच्चओ" અપ્રત્યય, (૧૮) "ओवीलो" અવપીડ, (૧૯) "ओक्खेवो" અવક્ષેપ (૨૦) "उक्खेवो" ઉત્ક્ષેપ, (૨૧) "विक्खेवो" વિક્ષેપ, (૨૨) "कूडया" કૂટતા (૨૩) "कुलमसी य" કુલમષી, (૨૪) ' कखा " કાક્ષા (૨૫) "लालप्पण पत्थणा य" લાલપન પ્રાર્થના (૨૬) "आससणा य वसण" આશસના વ્યસન, (૨૭) "इच्छामुच्छाय" ઈચ્છામૂર્છા, (૨૮) "तण्हागेही य" તૃષ્ણાગૃદ્ધિ, (૨૯) "नियडिकम्म" નિકૃતિકર્મ, અને (૩૦) "अवरोच्छत्ति वि य" અપરોક્ષ "तस्स" આ પ્રમાણે કે જેમા "पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स" પ્રાણાતિપાતાદિક પાપ, યુદ્ધ મિત્રદ્રોહ આદિરૂપ મલિન કર્મ વધારે પ્રમાણમા રહે છે

कर्मबहुलस्य=तत्र पाप=प्राणातिपातादिक कलि =युद्ध कलुषाणि=मलिनानि कर्माणि=मित्रद्रोहादिव्यापाररूपाणि बहुलानि=बहूनि यत्र तत्तथा तस्य 'आदिण्णादाणस्स' अदत्तादानस्य 'एयाणि' एतानि पूर्वोक्तप्रकाराणि 'एवमाईणि' एवमादीनि =चौरिक्यादीनि 'तीस' त्रिंशत् 'नामधेज्जाणि हुति' नामधेयानि भवन्ति ॥सू०२

प्राणातिपातादिक पाप, युद्ध, मित्रद्रोह आदिरूप मलिनकर्म अधिकता से रहते हैं (अदिण्णादाणस्स) अदत्तादान के (एयाणि एवमाईणि) ये चोरी आदि (तीस) तीस (नामधेज्जाणि) नाम (हुति) है।

भावार्थ—चोरी चोरों का कर्म है इसलिये अदत्तादान का नाम चौरिक्य है १। चोरी करने वाला विना पूछे ही दूसरों के द्रव्य का हरण करते हैं इसलिये इसका नाम परहृत है २। चोरों को कोई बुलाकर अपना द्रव्य नहीं देता हैं इसलिये इसका नाम अदत्त है ३। निर्दय बनकर ही यह कर्म किया जाता है सदय होकर नहीं, इसलिये इसका नाम क्रूरिकृत है ४। इसमें दूसरे के द्रव्य का लाभ होता है अतः यह पर लाभ कहा जाता है ५। इस कृत्य मे न इन्द्रिय सयम रहता है और न प्राणि सयम ही, अत यह असयम नाम से कहा गया है ६। इसमें परधन मे गृद्धि होती है अतः इसका नाम परधनगृद्धि है ७। इसमें परिणामों में लोलुपता अधिक रहती है इस लिये इसका नाम लौल्य है ८। तस्करो का यह भाव है इसलिये इसका नाम तस्करता है ९। इसमें

दाणस्स" અદત્તાદાનના "एयाणि एवमाईणि" તે ચોરી આદિ "तीस" ત્રીસ "नामधेज्जाणि" નામ "हुति" છે,

ભાવાર્થ—(૧) ચોરી કરવી તે ચોર લોકોનુ કાર્ય છે તેથી અદત્તાદાનનુ "चौरिक्य" નામ છે (૨) ચોરી કરનારા પૂછ્યા વિના જ બીજાના દ્રવ્યનુ હરણ કરે છે, તેથી તેનુ નામ "परहृत" છે (૩) ચોરોને બોલાવીને કોઇ પોતાનુ દ્રવ્ય દેતુ નથી, તેથી તેનુ નામ "अदत्त" છે (૪) નિર્દય બનીને જ ચોરી કરાય છે, સદય થઇને નહીં, માટે જ તેનુ નામ "क्रूरिकृत" (૫) તેમા બીજાના દ્રવ્યનો લાભ (પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેથી તેને "लाभ" કહેવામા આવે છે (૬) આ કૃત્ય કરતી વખતે ઇન્દ્રિયોનો સયમ રહેતો નથી અને પ્રાણી સયમ પણ રહેતો નથી તેથી તેનુ નામ 'असयम" છે (૭) તે કરનારને પરધનમા ગૃદ્ધિ-લાલસા થાય છે, તેથી તેનુ નામ "परधनगृद्धि" છે (૮) તેનાથી પરિણામોમા-વૃત્તિમા લોલુપતા વધારે પ્રમાણમા રહે છે, તેથી તેનુ નામ "लौल्य" છે (૯) તસ્કરોની તે વૃત્તિ ભાવના હોય છે, તેથી તેનુ નામ

परके धनका अपहरण होता है इसलिये इसका नाम अपहरण है १० । पर द्रव्य चुरानेमे हाथकी कुशलता काम देती है, अथवा परद्रव्यके चुरानेसे हाथमें लघुता-नीचता आती है इसलिये इसका नाम हस्तलघुत्व है ११। यह कृत्य पापानुष्ठान स्वरूप है, इसलिये इसका नाम पापकर्मकरण है १२ । यह चोरों का कर्म है इसलिये इसका नाम स्तैन्य है । १३ । पर द्रव्यके हरण से हरने वाले का नाश ही हो जाता है । इसलिये इसका नाम हरण विप्रणाश है १४ । दूसरों की अनुमति विना ही धनादिकका इसमे ग्रहण होता है इसलिये इसका नाम आदान है १५ । दूसरों के द्रव्य का हरण करना ही द्रव्य का विनाश करना है, इसलिए इसका नाम परद्रव्यविच्छेद है १६ । कोई भी पुरुष चोरों का विश्वास नहीं करता है, अत. अविश्वास का उत्पादक होने से इसका नाम अप्रत्यय है १७ । द्रव्य का हरण हो जाने से दूसरों को पीड़ा होती है इसलिये पर को पीड़ा का कारण होने से इसका नाम अवपीड है १८ । परद्रव्य का इस क्रिया से विच्छेद होता है, अर्थात्-चोरे गये द्रव्य को चोर यद्वा तद्वा खर्च कर डालते है, यही परके द्रव्य का विच्छेद है इसलिये इसका नाम परद्रव्यविच्छेद है १९ । स्वामी के हाथ से यह चुराया हुआ द्रव्य निकल जाता है-चोरों के हाथो में आ जाता है, इसलिये इसका

"तस्करत्ता" छे (१०) तेमा धननु अपहरणु थाय छे, तेथी तेनु नाम अपहरण छे (११) परधन चोरवामा हाथनी कुशळता काम आवे छे, अथवा परधननी चोरीथी हाथमा लघुता-नीचता प्रवेशे छे तेथी तेनु नाम हस्तलघुत्व छे (१२) ते कृत्य पापकृत्य होवाथी तेनु नाम पापकर्मकरण छे (१३) पर धननु अपहरणु करवाथी हरनारने। नाश थाय छे, तेथी तेनु नाम हरणविप्रणाश छे (१५) बीजानी अनुमति विना ज तेमा धन आदि ग्रहण कराय छे, तेथी तेनु नाम आदान छे (१६) बीजाना द्रव्यनु हरणु करवु ए ज द्रव्यने। विनाश गणाय छे, तेथी तेनु नाम परद्रव्यविच्छेद छे (१७) कोईपणु माणुस चोरोने। विश्वास करतो नथी ए रीते अविश्वास जनक होवाथी तेनु नाम "अप्रत्यय" छे (१८) द्रव्यनु अपहरणु थवाथी अन्यने पीडा थाय छे, तेथी पीडानु कारणु होवाथी तेनु नाम "अवपीड" छे (१९) परधनने। आ क्रियाथी नाश थाय छे, एटले के चोर लोके। गमे ते प्रकारे तेने वेडफी नाखे छे आ प्रमाणे ते द्रव्यने। विच्छेद करावनार होवाथी तेनु नाम "परद्रव्य विच्छेद" छे(२०) ते चोरायेलु द्रव्य तेना मालिकना हाथमाथी चाल्यु-जईने

नाम उत्क्षेप है २०। चोर इस द्रव्य को ले जाकर असुरक्षित अवस्था में इधर उधर रख देते हैं-डाल देते हैं, इसलिये इसका नाम विक्षेप है २१। चोर चुराकर जब इस द्रव्य का विभाग करते हैं, तब तुलादिक से कमती बढ़ती तौलते हैं-एकसा हिस्सा नहीं करते हैं, इसलिये इसका नाम कूटता है २२। यह कर्म करनेवालों के कुलों को कलंक लगता है इस-लिये इसका नाम कुलमषी है २३। अदत्तादानमें परके द्रव्यको हरण करने में तृष्णा रहती है इसलिये इसका नाम कांक्षा है २४। चोर गर्हित जल्पना करते हैं, अर्थात् चोरी करलेने पर भी "मैंने चोरी की है" इस बात को स्वीकार नहीं करते प्रत्युत उसे छुपाने की ही चेष्टा करते हैं, तथा जिस समय ये चोरी करने के लिये चलते हैं तो किसी अपने इष्ट की प्रार्थना करके ही चलते हैं, इसलिये इसका नाम लालपन और प्रार्थना है २५। यह कृत्य विनाश का हेतु होने से विनाशरूप एवं समस्त आपत्तियों का कारण होने से व्यसनरूप है इसलिये इसका नाम आशा-सना एवं व्यसन है २६। परधन के हरण करने की अभिलाषा इसमें बनी रहती है इसलिये इसका नाम इच्छा, तथा पर के धन को हरण करने के लिये इसमें अत्यंत मूर्च्छाभाव होता है इसलिये इसका नाम मूर्च्छा है २७। अप्राप्त द्रव्य की प्राप्ति की वाञ्छा तथा प्राप्त द्रव्य की अविनाशेच्छा, ये दोनों अदत्तादान का हेतु है-इसलिये इसका नाम

ચોરોના હાથમા જાય છે, તેથી તેનુ નામ उत्क्षेप છે (૨૧) ચોર તે દ્રવ્યને ચોરી જઇને અસુરક્ષિત હાલતમા ગમે ત્યા મૂકી દે છે તેથી તેનુ નામ विक्षेप છે (૨૨) ચોર ચોરી કર્યા પછી જ્યારે તેના ભાગ પાડે છે ત્યારે ત્રાજવા આદિથી વધારે કે ઓછુ તોલે છે-એક સરખા ભાગ પાડતા નથી, તેથી તેનુ નામ कूटता છે (૨૩) આ કૃત્ય કરનારના કુળને કલંક લાગે છે, તેથી તેનુ નામ कुलमषी છે (૨૪) અદત્તાદાન ગ્રહણ કરવામા બીજાનુ દ્રવ્ય હરી લેવાની તૃષ્ણા રહે છે, તેથી તેનુ નામ कांक्षा છે (૨૫) ચોર ગર્હિત જલ્પના કરે છે એટલે કે ચોરી કર્યા પછી પણ પોતે ચોરી કરી છે, તે વાતનો સ્વીકાર કરતો નથી, પણ તેને છૂપાવવાનો પ્રયત્ન કરે છે, તથા જ્યારે તેઓ ચોરી કરવા ઉપડે છે ત્યારે પોતાના કોઈ ઇષ્ટ દેવની પ્રાર્થના કરીને જ જાય છે તેથી તેનુ નામ लालपन અને પ્રાર્થના છે (૨૬) તે કૃત્ય વિનાશનુ કારણ હોવાથી વિનાશરૂપ અને સઘળી આપત્તિઓનુ કારણ હોવાથી વ્યસનરૂપ છે, તેથી તેનુ નામ आशसना અને व्यसन છે (૨૭) તે કૃત્ય કરનારને પરધનનુ હરણ કરવાની અભિલાષા રહે છે, તેથી તેનુ નામ इच्छा તથા પારકાનુ ધન ગ્રહણ કરવાની

'अहिमरा' अभिमराः=धनादिलोभेन मरणाभिमुखा, मरणभयरहिता इत्यर्थ, अथवा चौर्याभिमुखाः सन्त. परान् मारयन्ति ये ते तथा दृष्टान्तर्भावितण्यर्थ, 'अणभजगा' ऋणभञ्जका=ऋणं भञ्जन्ति=न ददति ये ते तथा 'भग्गसन्धिया' भग्गसन्धिकाः=भग्नः सन्धिः=मित्रादिस्नेहो यस्य तथा इष्टजनप्रेमवर्जिता 'रायदुट्ठगारी' राजदुष्टकारिणः=राजनीतिविरुद्धाचरणाः 'विसयनिच्छूढलोगवज्झा' विषयनिक्षिप्तलोकवाह्या =विषयात्=जनपदात् निक्षिप्ता =निष्कासिता अत एव लोकवाह्याः=जनवहिर्भूता 'उद्दहगगामघायगपुरघायगपथघायगआदीवगतित्थभेयगा' उद्दोहक ग्रामघातक-पुरघातक-पथिघातक-ऽऽदीपकतीर्थभेदका =तत्र उद्दोहकाश्च=हिंसका ग्रामघातकाः=ग्रामनाशकाः, पुरघातकाः=नगरनिध्वंसकाः पथि

ये परद्रव्य में विशेष लोलुप होते हैं। (अहिमरा) धनादिक के लोभ में पड़कर ये मरण के भी अभिमुख रहते हैं-इन्हें मरण का भय नहीं होता है। अथवा चौर्य कर्म मे प्रवृत्ति करने पर दूसरों को भी उस समय बाधा डालने पर मार डालते हैं। (अणभजगा) इनके ऊपर किसी का कर्जा हो तो भी ये उसे नही देते हैं। (भग्गसन्धिया) ये अपने इष्ट मित्रादिकों से भी प्रेम नही करते हैं। उन पर स्नेह करने से अथवा उनके स्नेह से ये वर्जित रहते है। (रायदुट्ठगारी) राजनीति के विरुद्ध इनका सदा आचरण रहता है। (विसयनिच्छूढलोगवज्झा) जनपद से ये निकाल दिये जाते है, इसलिये ये लोकवाह्य होते है। (उद्दहगगामघायगपुरघायगपथघायगआदीवगतित्थभेयया) (उद्दहग) ये बडे भारी द्रोही होते हैं जिनपर इनकी वक्रदृष्टि पड़ जाती है उसकी फिर कुशल नहीं। (गामघायग) गावों के गाव नष्ट कर डालते है। (पुरघायग) नगरों

તેઓ પરદ્રવ્યમા અતિશય લોલુપ હોય છે "अहिमरा" ધનાદિના લોભમા પડીને તેઓ મરણની પણ સન્મુખ રહે છે-તેમને મોતની બીક લાગતી નથી અથવા ચોરી કરવા જતા તેમા આડખીલી રૂપ થનારને મારી નાખે છે "अणभजगा" તેમની પાસે કોઈનુ લેણુ હોય તો તેઓ તે ચુકવતા નથી "भग्गसंधिया" તેઓ પોતાના ઇષ્ટ મિત્રાદિ તરફ પણ પ્રેમ રાખતા નથી, તેમના પર સ્નેહ રાખવાથી અથવા તેમનો સ્નેહ પ્રાપ્ત કરવાથી તેઓ રહિત હોય છે "रायदुट्ठगारी" રાજનીતિથી વિરુદ્ધનુ તેનુ આચરણ હમેશા રહેછે "विसयनिच्छूढलोगवज्झा" રાજ્યમાથી તેમને હાંકી કાઢવામા આવે છે તેથી તેઓ લોકબાહ્ય હોય છે "उद्दहगगामघायग पुरघायगपथघायगआदीवगतित्थभेयया" "उद्दहग" તેઓ ભારે દ્રોહી હોય છે, જેમના ઉપર તેમની વક્રદૃષ્ટિ પડે છે તેમની સલામતી રહેતી નથી "गामघायगा" તેઓ ગામોના ગામો નષ્ટ કરી નાખે છે "पुरघायग" નગરોનો નાશ

घातका =पथि=मार्गे जनाना घातकाः=द्रव्यलुण्ठनार्थं प्रहारकाः आदीपकाश्च=गृहादिदाहकाः तीर्थभेदकाश्च=यात्रिकजनधनापहारकाश्च 'लहुहत्थसपउत्ता' लघुहस्तसम्प्रयुक्ता लघु'=परद्रव्यहरणे निपुणो हस्त'=हस्तव्यापारपरायणाः, 'जूयगरा' द्यूतकरा', 'खडरक्खत्थीचोरपुरिसचोरसन्धिच्छेयया य' खण्डरक्षस्त्रीचौर पुरुषचौरसन्धिच्छेदका' = तत्र खण्डरक्षा =शुल्कपालाः उत्कोचग्राहित्वाच्चौराः, स्त्रीचौरा =स्त्रियश्चोरकाः स्त्रीसकाशाच्चोरका'=स्त्रियमेव चोरयतीति स्त्रीचोरकाः, तथा स्त्री वेशेन चोरका वा । तथा पुरुषचौराश्च सन्धिच्छेदकाः=सन्धि=भित्यादौ विवर 'सेंध' 'खात्र' इति भाषा प्रसिद्ध छिन्दन्ति=खनन्ति ये ते सन्धिच्छेदका 'गंठिभेयगा' ग्रन्थिभेदका'=प्रसिद्धाः 'परधणहरणलोमावहारअक्खेवी' पर-

को विध्वंस कर देते हैं। (पथघायग) द्रव्य हरण करने के अभिप्राय से मार्ग में चलने वाले मनुष्यों को ये देखते २ मार डालते हैं। (आदीवग) गृहादिकों में आग लगा देते हैं। (तित्थभेयगा) यात्रिजनों के भी द्रव्य लूट लिया करते हैं। (लहुहत्थसपउत्ता) हाथकी सफाई इनकी इतनी जबर्दस्त होती है कि ये देखते २ ही दूसरों के धन को चुरा लेते हैं। (खडरक्खत्थीचोरपुरिसचोरसंधिच्छेयया य) इसी तरह जो खड रक्ष-शुल्कपाल होते हैं ये जो घूसखोरी करने वाले होते हैं वे चोर माने जाते हैं वे यहा लिये गये है स्त्रीचोर-स्त्रियो के पास से द्रव्यादि चुराने वाले, अथवा स्त्रियों को उठाकर ले जाने वाले, अथवा स्त्री के वेश में रहकर चोरी करने वाले होते है, इसी प्रकार पुरुषचोर भी होते हैं-पुरुषों के पास से द्रव्यादिक चुराने वाले होते हैं, अथवा पुरुषों को धोखा देकर इधर उधर ले जाने वाले होते हैं अथवा पुरुष के वेश में

કરી નાખે છે, "पथघायगा" દ્રવ્ય હરીલેવાને માટે તેઓ પ્રવાસીઓને જોતા જોતામા મારી નાખે છે "आदीवग" ઘર વગેરેમા આગ લગાડે છે "तित्थभेयगा" યાત્રાળુના દ્રવ્યને પણ લૂટી લે છે, "लहुहत्थसपउत्ता" ચોરી કરવામા તેમનો હાથ એટલો કુશળ હોય છે કે તેઓ જોત જોતામા અન્યનુ ધન ચોરી લે છે "खडरक्खत्थीचोरपुरिसचोरसंधिच्छेयया य" એ જ પ્રમાણે જે ખડરક્ષ-શુલ્કપાલ હોય છે-જે ઘૂસખોરી કરનારા (લાચ લેનાર) હોય છે તેમને ચોર ગણવામા આવે છે સ્ત્રીચોર-સ્ત્રીઓની પાસેથી દ્રવ્ય ચોરનારા, અથવા સ્ત્રીઓને ઉપાડી જનાર અથવા સ્ત્રીના વેશમા જઇને ચોરી કરનાર હોય છે, એ જ પ્રમાણે પુરુષચોર પણ હોય છે- પુરુષોની પાસેથી દ્રવ્યાદિકને ચોરનારા, અથવા પુરુષોને દગો દઇને ગમે ત્યા લઇ જનાર, અથવા પુરુષના

धनहरणलोभावहाराऽऽक्षेपिणः=तत्र परधनं हरन्ति ये ते परधनहरणाः, लोभान्य- वहरन्ति ये ते लोभावहाः=वधपूर्वकलुण्ठनकारिणः आक्षेपिणः=वशीकरणादिना चौर्यकारिणः 'हडकारगनिम्मद्दगगूढचोरगोचोरअस्सचोरदासीचोरा य' हठका रकनिर्मर्दकगूढचोरगोचोराश्वचोरदासीचौराश्च तत्र हठ=बलात्कारं कुर्वन्तीति हठकारकाः,निर्मर्दकाश्च=निरतिशयेन मर्दनकारिणः युद्धेन धनापहारिणः ,गूढचौराः= गुप्तचौराः, गौ चौरा अश्वचोरा दासीचौराश्च=प्रख्याताः=त एव 'एगचोरा' एक चौराः=एकाकिन एव चोरयन्ति ये ते 'ओकड्ढगसपदायगा ओछिंपगसत्थघायग, विलकोलीकारगा य' अपकर्षक सम्प्रदायकावच्छिपक सार्थघातकबिलकोलीकार-

रहकर चोरी करते हैं, सधिच्छेदक-भित्यादिक में सेंध करके चोरी करते है, (गंठिभेयगा) ग्रन्थिभेदक - गांठ कतरते है (परधण हरणलोभावहारअक्खेवी) परधनहरणलोभापहाराक्षेपी होते हैं परके धन को हरण करने वाले, वध करके धनको हरण करने वाले वशी करण मत्र से वश करके धन को हरण करने वाले होते हैं (हडकारग- निम्मद्दगगूढचोरगोचोरअस्सचोरदासीचोरा य) (हडकारग) बलात्कार से धन को हरण करने वाले, (निम्मद्दग) निर्मर्दक-युद्ध करके धन को हरण करने वाले, (गूढचोर) गुप्तरूप में रहकर पर के धन को हरण करने वाले, (गोचोर) गाय को हरण करने वाले, (अस्सचोर) अश्व को हरण करने वाले, (दासीचोर) दासी को हरण करने वाले, (एगचोरा य) अकेले रहकर पर के धन को हरण करने वाले, (ओक ड्डगसपदायगा ओछिंपगसत्थघायगविलकोलीकारगा य) (ओकड्ढग)

વેશમા જઈને ચોરી કરનારા હોય છે, સધિચ્છેદક-દિવાલ આદિમા કાણુ પાડીને ચોરી કરનારા હોય છે, "गंठिभेयगा" ગ્રન્થિભેદક-ખિસ્સા કાતરે છે, "पर धणहरणलोभावहारअक्खेवी" પરધનહરણ લોભાપહારાક્ષેપી હોય છે-પરધ નનુ હરણ કરનારા, હત્યાકરીને ધનનુ હરણ કરનારા વશીકરણ મ ત્રથી વશ કરીને ધનનુ અપહરણ કરનારા હોય છે, "हडकारग निम्मद्दग गूढचोरगोचोर अस्सचोरदासीचोरा य" "हडकारग" બળાત્કારથી ધનને હરી લેનારા, 'निम्म द्दग" નિર્મર્દક-યુદ્ધ કરીને ધનને હરી લેનારા "गूढचोर" ગુપ્તરીતે રહીને પરનુ ધન હરી લેનારા, "गोचर" ગાયનુ અપહરણ કરનારા, "अस्सचोर" ઘોડાની ચોરી કરનાર, "दासीचोर" દાસીની ચોરી કરનાર, "एगचोराय" એકલો જઈને પારકાના ધનનુ હરણ કરનારા "ओकड्ढगसपदायगा ओछिंपग सत्थघायगविलकोलीकारगा य" "ओकड्ढग" આકર્ષક-બીજાના ઘરમાથી

काश्च तत्र अपकर्षकाः=अपकर्षयन्ति परगृहेषु चोरयितु चोरानाह्वयन्ति ये तेऽपकर्षका, यद्वा-चोरित धनमपनीयाऽन्यस्थाने नयन्ति ये ते तथा, तथा शरीरादितो भूपणादि निष्कासका वा, सम्प्रदायकाः=चोरान् स्वगृहे संस्थाप्य भोजनादि दायका, अवच्छिपका=चोरविशेषा सार्थघातका=प्रसिद्धाः बिलकोलीकारकाश्च= परव्यामोहार्थं विश्वासवचनवादिन, देशीशब्दोऽयम् । 'निग्गहविप्पलुयगा' निग्रह-विप्रलुम्पका.=तत्र निग्रहेण=वशीकरणेन शस्त्रादिभयप्रदर्शनपूर्वक परं निरुध्येत्यर्थ · विप्रलुम्पकाः-लुण्टनकारिण., 'बहुविहतेणिक्कहरणबुद्धी' बहुविधस्तैन्यहरणबुद्धयः= बहुविधेन स्तैन्येन=चौर्येण हरणे=परद्रव्यापहरणे बुद्धिर्येषा ते तथा परद्रव्यहरणबुद्धिशालिन. एते=पूर्वोक्ताः 'अण्णे य' अन्ये च 'एवमादी जे' एवमादयो ये=एवम्प्रकाराः ये 'परस्स दव्वाहि अविरया' परस्य द्रव्येषु अविरताः, सूत्रे तृतीया सप्तम्यर्थे परस्य धनधान्यादि ग्रहणे अनिवृत्ता' परद्रव्यग्रहणासक्ता इत्यर्थः सन्ति ते चौर्यं कुर्वन्तीति पूर्वेण सम्बन्ध ॥सू०३॥

अपकर्षक-पर के घर से द्रव्यादिकों को चुराने के लिये साथ में दूसरे चोरों को बुलाकर चोरी करने वाले, अथवा चुराये हुए धन को दूसरे स्थान मे ले जाने वाले, अथवा शरीर आदि से भूषण निकालने वाले, (सपदायग) सम्प्रदायक-चोरों को अपने घर मे रखकर उन्हें भोजन आदि देने वाले, अवच्छिपक-ये भी चोर होते हैं सार्थघातक जनसमूहका घात करने वाले, बिलकोलीकारक-पर को व्यामोह करने के लिये विश्वास वचन बोलने वाले (निग्गहविप्पलुपगा) शस्त्रादिक का भय दिखला करके दूसरों को रोक कर लूट करने वाले (बहुविहतेणिक्कहरणबुद्धी) तथा अनेकविधचौर्यकर्म करने मे निपुण बुद्धिवाले होते हैं ऐसे (एते अण्णे य एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया) ये सब व्यक्ति तथा इनसे

દ્રવ્યાદિની ચોરી કરવાને માટે બીજા ચોરોનો સાથ લઈને ચોરી કરનારા, અથવા ચોરેલા ધનને બીજી જગ્યાએ લઈ જનારા અથવા શરીર આદિ પરથી આ ભૂષણો હરી લેનારા, "सपदायग" સંપ્રદાયક-ચોરોને પોતાના ઘરમા આશરો આપીને ભોજન આદિ દેનાર, અવચ્છિપક-તે પણ ચોર જ હોય છે, સાર્થઘાતક-જનસમૂહની હત્યા કરનાર, બિલકોલીકારક-બીજાને ફસાવવાને માટે વિશ્વાસ ઉત્પન્ન કરે તેવા વચનો બોલનાર, "निग्गहविप्पलुपगा" શસ્ત્રાદિનો ભય બતાવી બીજાને અટકાવીને લૂટી લેનારા, "बहुविहतेणिक्कहरणबुद्धी" તથા અનેક પ્રકારની ચોરી કરવામા કુશળ બુદ્ધિવાળા હોય છે એવા "एते अण्णेय एवमादी परस्स दव्वाहिं जे अविरया" એ બધા લોકો તથા તે સિવાયના બીજા

एव 'येऽपि च कुर्वन्त्यदत्तादान' मिति पञ्चमान्तर्द्वार निरूप्य 'यथा च कृतम्' इत्यदत्तादानस्य तृतीयान्तर्द्वारमाह-'विउलबले'त्यादि

मूलम्—विउलबलपरिग्गहा य बहवो रायाणो परधणम्मि गिद्धा सए दव्वे असतुट्ठा परविसए अहिहणति लुद्धा परधणस्स कए, चउरग समत्तबलसमग्गा निच्छिय वरजोहजुद्धसद्धा य अहमहमितिदप्पिएहि सेन्नेहि संपरिवुडा पउमसगडसूइचक्कसागरगरुलवूहादिएहि अणीएहिं उच्छरता अहिभूय हरति परधणाइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'विउलबलपरिग्गहा य' विपुलबलपरिग्रहाश्च=तत्र विपुलम्=विशाल बल=सामर्थ्य सैन्य वा परिग्रहा =परिवारो येषा ते तथा, बहव =अनेके 'रायाणो' राजानः 'परधणम्मि गिद्धा' परधने गृद्धा'=परद्रव्यासक्ता' 'सए दव्वे' स्वके द्रव्ये =निजधने 'असतुट्ठा' असन्तुष्टाः 'लुद्धा' लोभवन्त' सन्तः 'परविसए' परविषयान्

भिन्न इसी तरह से और भी व्यक्ति जो दूसरों के द्रव्यहरण करने रूप कार्य में विरति भाव से रहित होते ह, इन सबको चोरो की श्रेणि मे ही परिगणित जानना चाहिये ॥सू०३॥

इस तरह "जो अदत्तादान को करते हैं" इस रूप यह पचम अन्तर्द्वार कहकर अब सूत्रकार "यथा च कृतम्" इस तृतीय अन्तर्द्वार को कहते है—'विउलबलपरिग्गहा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(विउलबलपरिग्गहा) विपुल सैन्य एव परिवारवाले (बहवो रायाणो) अनेक राजा लोग (परधणम्मि गिद्धा) परधन में आसक्त तथा (सए दव्वे असतुट्ठा) अपने पास के द्रव्य मे असतुष्ट और

લોકો કે જે બીજાના દ્રવ્યનુ અપહરણ કરવાના કાર્યમા વિરતિભાવથી રહિત હોય છે–તે કાર્યમા લીન હોય છે–તે બધાને ચોરોની શ્રેણીમાજ મૂકવા જોઈએ॥ સૂ૦૩॥

આ રીતે "જે અદત્તાદાનનુ સેવન કરે છે" તે પ્રકારના આ પાચમા અન્તર્દ્વારનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર "यथा च कृतम्" તે ત્રીજા અન્તર્દ્વારનુ કથન કરે છે–"विउलबलपरिग्गहा" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"विउलबलपरिग्गहा" વિપુલ સૈન્ય અને પરિવાર વાળા "बहवो रायाणो" અનેક રાજાઓ "परधणम्मि गिद्धा" પરધનમા આસક્ત તથા "सए दव्वे असतुट्ठा" પોતાની પાસેના દ્રવ્યથી અસતુષ્ટ અને "लुद्धा" લોભયુક્ત

=अन्यजनपदान देशानित्यर्थः 'परधणस्स कए' परधनस्य कृते=परद्रव्यग्रहणार्थम् 'अहिहणति' अभिघ्नन्ति=आक्रमन्ति आक्रमण कुर्वन्ति इत्यर्थ। तथा 'चाउरगसमत्तबल समग्गा' चतुरङ्गसमस्तबलसमग्राः=चतुर्भिरङ्गै = गजरथाश्वपदातिरूपैः सेनाऽवयवैः समस्त=सम्पूर्णं बल=सैन्य तेन समग्रा =युक्ताः चतुरङ्गसेनायुक्ताः 'निच्छियवरजोहजुद्धसद्धा य' निश्चितवरयोधयुद्धश्रद्धाश्च=तत्र निश्चितैः=निर्धारितै' स्थायिरूपेण नियुक्तैर्निश्चयवद्भिर्वा वरै=प्रशस्तै योधै'=भटैर्यद् युद्ध तत्र श्रद्धा=प्रेमादरो येषा ते तथा 'अहमह मिति दप्पिएहिं' अहमहमितिदर्पितै'=' अहमेवैकवीरः' इत्येव दर्पितै. = गर्वित 'सेन्नेहिं' सैन्यैः 'सपरिवुडा' सम्परिवृता'=सन्नद्धाः सज्जीभूता 'पउमसगडसूइचक्कसागरगरुलवूहादिएहिं' पद्मशकटसूचीचक्रसागरगरुडव्यूहादिकै = पद्माकारव्यूहशकटव्यूहसूचीव्यूहचक्रव्यूहसागरव्यूहगरुडव्यूहादिका' सैन्यरचनाविशेषास्ते विद्यन्ते येषु तैस्तथाभूतै., 'अणीएहिं' अनीकैः=

(लुद्धा) लुब्ध होकर (परधणस्स कए) दूसरों का धन लेने के लिये (परविसए) दूसरे राजाओं के देशों के ऊपर (अहिहणति) आक्रमण करते हे, तथा (चाउरगसमत्तबलसमग्गा) गज, रथ, अश्व एव पदाति रूप चार अगों वाली सेना से युक्त एव (निच्छियवरजोहजुद्धसद्धा य) स्थायी रूप से नियुक्त किये हुए अथवा अटल निश्चय से युक्त हुए ऐसे प्रशस्त योद्धाओंके साथ युद्ध करने मे आदरभाव वाले और (अहमहमिति दप्पिएहिं) "मै ही एक वीर हू" इस प्रकार के गर्व वाले (सेन्नेहिं) सैन्य से (सपरिवुडा) परिवृत-युक्त होकर (पउमसगडसूइचक्कसागरगरुलवूहादिएहिं) पद्माकार व्यूहवाले, शकटव्यूहवाले, सूचीव्यूहवाले, चक्रव्यूहवाले, सागरव्यूहवाले, एव गरुडव्यूह आदि वाले (अणीएहिं) सैन्य से प्रतिपक्षी के सैन्य को (उच्छरता)

થઈને "परधणस्स कए" બીજાનુ ધન પ્રાપ્ત કરવાને માટે "परविसए" બીજા રાજાના પ્રદેશો ઉપર "अहिहणति" આક્રમણ કરે છે, તથા 'चाउरग समत्त-वलसमग्गा" હાથી, રથ, અશ્વ અને પાયદળ એ ચતુરંગી સેના સહિત અને "निच्छियवरजोहजुद्धसद्धा य' સ્થાયી રીતે કરેલ અથવા દૃઢ નિશ્ચયવાળા અને યુદ્ધ કરવામા આદરભાવ રાખનાર પ્રશસ્ત યોદ્ધાઓની સાથે અને "अहमहमिति दप्पिएहिं" "હુ જ એક વીર છુ" એ પ્રકારના ગર્વવાળા "सेन्नेहिं" સૈન્યથી "सपरिवुडा" પરિવૃત-યુક્ત થઈને "पउमसगडसूइचक्कसागर-गरुलवूहादिएहिं" પદ્માકાર વ્યૂહવાળા, શકટવ્યૂહવાળા, સૂચીવ્યૂહવાળા, ચક્રવ્યૂહ વાળા, સાગર વ્યૂહવાળા અને ગરુડ આદિ વ્યૂહવાળા, "अणीएहिं" સૈન્યથી

सैन्यं. 'उन्छरता' आस्तृणन्त =प्रतिपक्षसेनामाच्छादयन्तः, 'अहिभूय' अभि भूय=आक्रमणेन शत्रुसैन्यं पराजित्य हठात् 'परधणाइ' परधनानि हरन्ति ॥सू०४॥

तथा ये राजादयो यथा परधनादीन्यपहरन्ति तदाह—'अवरे' इत्यादि—

मूलम्—अवरे रणसीसलद्धलक्खा संगामं अइवयंति, सण्णद्धबद्धपरियरउप्पाडियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा माढीवरवम्मगुडिया, आविद्धजालिया कवचकंटगिया, उरसिरमुहबद्धकंठतोणा, पासियवरफलगरइयपहकरसरभसखरचावकरकरंचियसुनिसियसरवरिसचडकरगमुयंतघणचंडवेगधारानिवायमग्गे, अणेगधणुमंडलग्गसंधियउच्छलियसत्ति—कणग—वामकर—गहिय—खेडग—निम्मल—निक्किट्ठ—खग्ग—पहरंत-कुंत—तोमर-चक्क—गया—परसु—मुसल—लंगल—सूल—लउड—भिंडिपाल—सब्बल—पट्टिस—चम्मेट्ठ—घण—मोट्ठिय—मोग्गरवर—फलिह—जंत पत्थर—दुहण—तोण कुवेणी—पीढाकलिए ॥ सू० ५ ॥

टीका—'अवरे' अपरे=केचित् नृपाः 'रणसीसलद्धलक्खा' रणशीर्षलब्धलक्ष्याः= रणशीर्षे=संग्रामशिरसि लब्धलक्ष्याः=वैरीवेधने-सिद्धहस्ताः सन्तः स्वयमेव 'संगामं'

आच्छादित करते हुए (अहिभूय) अपने आक्रमणों से उसे पराजित करके (परधणाइ) परधन को (हरंति) हरण करते है ॥सू०४॥

जो अन्य राजादिक पर के धन आदि हरण करते है उनको कहते हैं—'अवरे' इत्यादि

टीकार्थ—(अवरे) कितनेक राजा (रणसीसलद्धलक्खा) जो रण शीर्षलब्ध लक्ष्यवाले होते हैं–वैरी को मारने में सिद्ध हस्त होते हैं

પ્રતિપક્ષીના સૈન્યને "उन्छरता" ઘેરી લઇને "अहिभूय" પોતાના હુમલાથી તેને હરાવીને "परधणाइ" પરધનનુ "हरति" હરણ કરે છે ॥ સૂ. ૪ ॥

જે બીજા રાજાદિકો પરધન આદિનુ હરણ કરે છે તેમનુ વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે—"अवरे" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"अवरे" બીજા કેટલાક રાજાઓ "रणसीसलद्धलक्खा" જે રણશીર્ષલબ્ધલક્ષ્યવાળા હોય છે દુશ્મનની હત્યા કરવામા નિપુણ હોય છે "संगाम-

संग्रामे 'अइवयंति' अतिपतन्ति=युद्धं कर्तुं प्रवर्तन्ते। कथं भूताः ? इत्याह—'सण्णद्धबद्धपडियर–उप्पाडियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा' सन्नद्धबद्धपरिकरोत्पाटितचिन्हपटगृहीतायुधप्रहरणाः=तत्र सन्नद्धाः=युद्धसामग्रीभिः सज्जीभूतास्तथा, बद्धपरिकर=कवचो यैस्ते बद्धपरिकराः=बद्धकवचाः तथोत्पाटितः=दृढं बद्धो मस्तके चिन्हपटः रक्तपट्टादि स्वचिन्हविशेषो यैस्ते तथा,गृहीतानि=परिधृतानि रिपुहननार्थमायुधानि–बाणादीनि प्रहरणानि=खड्गादीनि यैस्ते च,तथा पदत्रयस्य कर्मधारयः। 'माढीवरवम्मगुडिया' माढीवरवर्मगुण्डिताः=तत्र–माढी=शरीरत्राणविशेषाः देशीशब्दोऽयं वरवर्माणि=प्रधानकवचानि तैर्गुण्डिताः=आच्छादितशरीरा, आविद्धजालिकाः=निबद्धलोहकञ्चुकाः 'कवयकडगिया' कवचकण्टकिताः=सकण्टककवचेन कण्टकिता', 'उरसिरमुहबद्धकठतोणा' उर' शिरोमुखबद्धकण्ठतोणाः=तत्र

(संगाम अइवयंति) वे स्वयमेव संग्राम में उतर आते हैं–युद्ध करने में प्रवृत्ति वाले हो जाते हैं ऐसे ये राजा लोग (सण्णद्धबद्धपडियर उप्पाडियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा) (सण्णद्ध) पहिले तो युद्धसामग्री से सज्जीभूत होते हैं, (बद्धपडियर) कवच से बांधकर अपने शरीर को सुरक्षित रखते हैं, (उप्पाडियचिंधपट्ट) मस्तक पर रक्तपट्टादिरूप चिह्नविशेष को दृढतररूप में बाँधते है, (गहियाउहपहरणा) रिपु को नष्ट करने के लिये बाण आदि आयुधों को और खड्ग आदि प्रहरणों को अपने पासमें रखते हैं (माढीवरवम्मगुडिया) माढी–शरीर त्राणविशेष एवं उत्तम कवच से इनका शरीर आच्छादित रहता है, (आविद्धजालिका) इनके शरीर पर लोहनिर्मित कवच बंधा रहता है (कवयकडगिया) काँण्टे वाले कवच से ये युक्त होते हैं, (उरसिरमुहबद्ध

अइवयंति " तेओ जाते ज रणुसंग्राममां उतरी पडे छे–युद्ध करवाने तैयार थई जाय छे, एवा ते राजाओ " सण्णद्धबद्धपडियरउप्पडिय–चिंधपट्टगहिया उहपहरणा " " सण्णद्धा ' पहेलां तो युद्धनी सामग्री सज्ज करावे छे, " बद्धपडियर " बखतर पहेरीने पोताना शरीरने सुरक्षितबनावे छे " उप्पाडिय चिंधपट्ट " मस्तक पर लाल पट्टि आदि खास चिह्नने मजबूत रीते बांधे " गहियाउहपहरणा " दुश्मननो नाश करवाने माटे बाण आदि आयुधो अने तलवार आदि शस्त्रो पोतानी पासे राखे छे " माढीवरवम्मगुडिया " माढी–शरीरना रक्षण माटेनु एक साधन, अने उत्तम बखतरथी पोताना शरीरने आच्छादित करे छे, " आविद्धजालिका " तेमना शरीर पर लोढानु बखतर बांधेलु होय छे, " कवयकडगिया " तेओ कांटाळा कवचथी युक्त होय छे,

उरसा=वक्षःस्थलेन सह शिरोमुखाः=ऊर्ध्वमुखा बद्धाः कण्ठे=ग्रीवायां तोणाः=तूणीराः 'तरकस' इति 'तीरभाता' इति वा भाषाप्रतीता येस्ते तथा एतादृशा नृपाः गच्छन्ति संग्रामे इत्यादि —' पासियवरफलगरइयपहकरसरभसखरचावकरकरंचियसुनिसियसरवरिसचडकरकमुयंतघणचंडवेगधारानिवायमग्गे ' पाशित वरफलकरचितप्रकरसरभसखरचापकर करञ्चितसुनिशितशरवर्षचटकरकमुच्यमानघन चण्डवेगधारानिपातमार्गे=तत्र ' पासिय ' इति स्पृष्टानि = हस्त धृतानि वरफलकानि=परशस्त्रप्रहारप्रतिरोधकशस्त्राणि ' ढाल ' इतिप्रसिद्धानि यैस्ते, तथा रचितः=कृतो रिपुशस्त्रप्रतिघातार्थं ' पहकर ' इति प्रकरः = रचनाविशेषेण सैन्यसमूहो येस्ते, तथा सरभसाः=सहर्षाः सवेगा वा खरचापकराः=निष्ठुरधनु

कठतोणा) इनके वक्षस्थल पर तूणीर-तरकस-बांधा जाता है, इनमें ऊर्ध्वमुख करके बाणग्रीवा के पास भरे रहते हैं। इस प्रकार से पहिले सज्जित होकर कितनेक राजा संग्रामभूमि मे युद्ध करने के लिये (अइ वयति) उतरते हैं। इस प्रकार से यहां संबंध लगा लेना चाहिये। जिस युद्ध मे राजा उतरते हैं वह युद्ध किस प्रकारका होता है ? सो कहते हैं- जिस संग्रामभूमिमें (पासियवरफलग) निष्ठुर धनुर्धारीजन अपने ऊपरसे परके शस्त्रप्रहारोंको रोकनेके लिये ढालोंको हाथोंमे लिये होतेहैं, (रइयपह कर) शत्रु के शस्त्रों का प्रतिघात करने के लिये वे अपनी २ सेना को एक विशेष प्रकार की रचना में स्थापित किये हुए रहते हैं तथा (सर भस) परस्पर मे युद्ध करने का चाव जहां आपसमे खूब चढ़ा बढा होता है-हर्ष अथवा वेग से जो युक्त होते हैं ऐसे (चावकर) धनुर्धारियों

" उरसिरमुहबद्धकठतोणा " તેમના વક્ષસ્થળ પર તૂણીર—ભાથા બાંધેલા હોય છે તે ભાથામા બાણો ઉર્ધ્વમુખ રહે તેમ, ડોકની પાસે ભરેલા રહે છે આ રીતે પહેલા સજ્જ થઈને કેટલાક રાજાઓ યુદ્ધ કરવાને માટે રણમેદાનમા " अइ वयति " ઉતરી પડે છે, એ પ્રકારનો સબધ અહી સમજી લેવાનો છે જે યુદ્ધમા રાજા ઉતરે છે તે યુદ્ધ કેવુ હોય છે ? તેના જવાબમા કહે છે— જે રણમેદાનમા "पासियवरफलग' નિર્દય ધનુર્ધારીઓ દુશ્મનોના શસ્ત્ર પ્રહારોને રોકવાને માટે પોતાના હાથમા ઢાલ રાખે છે, તથા "रइयपहकर" શત્રુના શસ્ત્રોના મુકાબલો કરવાને માટે તેઓ પોતપોતાની સેનાને એક વિશિષ્ટ પ્રકારની વ્યૂહ રચનામા ગોઠવે છે, તથા "सरभस" અન્યોન્ય લડવાનો શોખ જ્યા ખૂબ રહે છે હર્ષ અથવા વેગથી જે યુક્ત હોય છે એવા "चावकर" ધનુર્ધારીઓ દ્વારા જ્યા "करचि

धारिणः तैः कराञ्चिताः=कराकृष्टा ये सुनिशिता =अतितीक्ष्णा शरा =बाणास्तेषा यो वर्षः=वर्षण स वृद्धकरकमुश्चद् घनचण्डवेगधारानिपात इव यत्र, स तथा, यथा मेघस्य प्रचण्डवेगयुक्तः स्थूलोपलधारानिपातो भवति तद्वत् शरवर्षण यत्रेत्यर्थः तस्य मार्गद्वारभूतस्तस्मिन् सग्रामे पुनः कीदृशे ? इत्याह-'अणेगधणुमडलग्गसधियउच्छलियसत्तिकणगवामकरगहियखेडगनिम्मलनिक्किट्ठखग्गपहरतकुत तोमरचक्कगयापरसुमुसलल्गलसूलळउडभिंडिपालसव्वलपट्टिसचम्मेट्ठघणमोट्ठिमोग्गरवरफलिहजतपत्थरदुहणतोणकुवेणीपीढाकलिए' तत्र 'अणेगधणुमडलग्ग' अनेकधनुर्मण्डलाग्राः = अनेकानि धनूपि मण्डलाग्रानि = खड्गविशेषाश्च तथा 'सधियउच्छलियसत्तिकणग' सन्धितोच्छलितशक्तिकनकाः = सन्धिताः= सन्धानीकृताः=सज्जीकृता इत्यर्थः उच्छलिताः=उर्ध्वंगताश्च शक्तयः=शस्त्रविशेषा कनका =बाणाश्च तथा 'वामकरगहियखेडगनिम्मलनिक्किट्ठखग्ग' वामकरगृहीत खेटकनिर्मलनिकृष्टखड्गा=तत्र वामकरे गृहीतानि खेटकानि = परप्रहारप्रतिरोधक शस्त्राणि 'ढाल' इति प्रसिद्धानि निर्मलाः=उज्ज्वलीकृता तीक्ष्णीकृता खड्गाः

द्वारा जहाँ पर (करचियसुनिसियसरवरिस) अति तीक्ष्ण बाणों की वर्षा मेघों के द्वारा (वड्डकरकमुयतघणचडवेगधारानिवायमग्गे) प्रचण्डवेगवाली स्थूल ओलों की वर्षा जैसी की जाती है। तथा जो सग्राम (अणेगधणुमडलग्ग) अनेक धनुषो से एव मडलाग्रो-तलवार विशेषो से (सधियउच्छलियसत्ति) सज्जीकृत उच्छलित शक्तियो से-इस नाम के शस्त्र विशेषों से, (कणग) कनकों से-बाणो से (वामकर गहिय खेडग) वामकर में गृहीत ढालों से, (निम्मलनिक्किट्ठखग्ग) तीक्ष्णीकृत खड्गों से, (पहरत) प्रहार करनेमे व्याप्रियमाण ऐसे (कुत)

यसुनिसियसरवरिस" અતિશય તીક્ષ્ણ બાણોની વૃષ્ટિ વાદળાઓ દ્વારા "वड्ढकरकमुयतघणचडवेगधारानिवायमग्गे" પ્રચડ વેગવાળા મોટા કરાની વૃષ્ટિની જેમ કરાય છે તથા જે સગ્રામ "अणेगधणुमडलग्ग," અનેક ધનુષોથી અને મડલાગ્રો (તલવારથી-વિશેષો)થી "सधिय-उच्छलिय सत्ति" સજ્જ કરેલ ઉચ્છલિત શક્તિયોથી (એ નામના શસ્ત્ર વિશેષોથી) "कणग" કનકોથી બાણોથી, "वामकरगहिय खेडग" ડાબા હાથમા ગ્રહેલ ઢાલોથી, "निम्मल निक्किट्ठखग्ग" તીક્ષ્ણ બનાવેલ કરવામા વપરાતા "कुत" ભાલાઓથી "तोमर"

तथा 'पहरत' मह्रियमाणाः=प्रहारे व्याप्रियमाणा ये कुन्ताः=भल्ला तोमराश्च= 'सुरज' इति भाषा प्रसिद्धाः 'चक्र' चक्राणि 'गया' गदाः=प्रसिद्धाः 'परसु' परशवः =कुठारा तथा मुसलाः=प्रसिद्धा' 'लगल' लाङ्गलानि=हलानि शूलानि= लोहास्त्रविशेषा 'लउड' लगुडा =यष्टयः 'भिंडिपाल' भिन्दिपालाः=गोफण' इति ख्याताः 'सब्बल' इतिशस्त्रविशेषाः 'पट्टिस' पट्टिशाः=मल्लभेदाः 'चम्मेट्ठ' चर्मेष्टाः=चर्मवद्धपाषाणमयास्त्रविशेषाः 'घण' घनाः=अयोघनाः 'घण' इति भाषा प्रसिद्धा 'मोट्ठिया' मौष्टिका=मुष्टिप्रमाणास्त्रविशेषाः मोग्गर' मुद्गराश्च =प्रतीताः 'वरफलिह' वरपरिघा'=लोहबद्धलगुडाः 'जतपत्थर' यन्त्र प्रस्तरा= गोफणादि यन्त्रपाषाणाः 'दुहण' द्रुघणा मुद्गरविशेषाः, तोणाः=तूणीरा'-

कुन्तों से-भालों से, (तोमर) तोमरों से-मुरजों से (चक्र)चक्रोंसे (गया) गदाओं से, (परसु) परशुओं से-कुठारों से (मुसल) मुसलों से, (हल) हलों से, (सूल) शूलों से, (लउड) लकुटों-(लाठियों) से (भिंडिपाल) भिंदिपालों से-गोफणों से, (सव्वल) सव्वलों से (सब्बल) यह शस्त्र विशेष है जो अग्रभाग में तीक्ष्ण ऐसा लोहे का डंडा होता है, (हिन्दी में भी इसे सव्वल ही कहते हैं) (पट्टिस) पट्टिशों से-भाले के आकार जैसे एक प्रकार के शस्त्रों से, चर्मेष्टों से-चर्मबद्धपाषाणमय अस्त्रविशेषों से (घण) घण-लोहपिंड, इसे भाषा में भी घण कहते हैं घणों से, (मोट्ठिय) मौष्टिकों से-मुष्टिप्रमाण अस्त्रविशेषों से, (मोग्गर) मुद्गरों से, (वरफलिह) वरपरिघों से-लोहबद्ध लाठियों से, (जतपत्थर) यत्र प्रस्तरों से, गोफण आदि यत्रों से, फेके गये पत्थरों से, (दुघण) द्रुघणो से एक प्रकार के मुद्गर विशेषो से, (तोण)

તોમરથી-ગુરજોથી, " चक्क " ચક્રોથી, ' गया " ગદાઓથી, ' परसु " પરશુ ઓથી, " मुसल " મુસળોથી, ' हल " હળોથી, " सूल " ત્રિશૂળોથી, "लउड" લાઠીઓથી, " भिंडिपाल " ભિંદિપાલો (ગોફણ)થી, " सव्बल " સબ્બલોથી, (તે એક શસ્ત્ર છે તે લોઢાના દંડા જેવુ હોય છે અને તીક્ષ્ણ અણીવાળુ હોય છે તેને ગુજરાતીમા કોશ કહે છે) " पट्टिस " પટ્ટિશોથી (પટ્ટિશ ભાલાના આકારનુ શસ્ત્ર હોય છે) ચર્મેષ્ટોથી (ચર્મ બદ્ધ પાષાણ મહા અસ્ત્ર વિશે શોથી) "घण" ઘણથી, " मोट्ठिय " મૌષ્ટિકોથી (મુષ્ટિ પ્રમાણ અસ્ત્ર વિશે " मोग्गर " મગદળોથી, " वरफलिह " વર પરિઘોથી-(લોહબદ્ધ લાઠીઓથી " जतपत्थर " યત્ર પ્રસ્તરોથી (ગોફણ આદિ સાધનોથી ફેંકાયેલા પથ્થરોથી) " दुघण " ઘણોથી (એક પ્રકારના મગદળોથી) " तोण " તૂ૦

' भाता ' इति प्रसिद्धाः कुवेण्य =शस्त्रविशेषा. पीढा ' पोठानि=यन्त्ररूपास्त्रविशेषाश्च, इत्येतैशस्त्रविशेषै 'कलिए' कलिते=युक्ते सग्रामे अतिपतन्ती.यन्नयः।सू० ५।

पुनरपि सङ्ग्राम वर्णयति—' इली ' इत्यादि ।

मूलम्—इलीपहरणमिलिमिलितं खिप्पंतविज्जुजलविरचियसमप्पहनहतलफुडपहरणे, महारणसखभेरी वरतूरपउरपडुपडहाहयनिनायगभीरणंदियपक्खुभिय विउलघोसे, हयगयरहजोहतुरियपसरियरयुद्धयतमधयारबहुले, कायरनरनयणहिययवाउलकरे, विलुलियउक्कडवरमउडकिरीडकुडलोडुदामाडोविए, पडगपडाग उच्छियधयवेजयतीचामरचलंतछत्तंधयारगभीरे, हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयपाइक्कहरहराइयअप्फोडियसीहनाय छिलियविघुट्टुक्किट्ठकठकयसद्दभीमगज्जिए सयराहहसतरुसतकलकलरवे, आसूणिय वयणरुद्दभीमदसणाधरोट्ठगाढदढसप्पहारकरणुज्जयकरे, अमरिसवसतिव्वरत्तनिद्दारितच्छे, वेरदिट्ठिकुद्धचेट्ठियतिवलीकुडिलभिउडीकयललाडे वह परिणयनरसहस्सविक्कमवियभियवले॥ सू०६ ॥

टीका—' इलीपहरणमिलिमिलितखिप्पतविज्जुज्जलविरइयसमप्पहनहतले ' इलीपहरणमिलिमिलिन्तक्षिप्यमाणविद्युदुज्ज्वलविरचितसमप्रभनभस्तले

तूणीरों से–भाताओं से, (कुवेणी) कुवेणियों से–एक प्रकार के शस्त्रों से, (पीठ) पीठों से–यत्ररूप अस्त्रविशेषों से (आकलिए) युक्त रहते हैं। ऐसे उस भयकर सग्राम में कितनेक राजा लोक परधन को हरण करने के लिये ही उतरते है ॥ सू०५ ॥

ઓથી) " कुवेणी " કુવેણીઓથી (એક પ્રકારના શસ્ત્રો) ' पीठ " પીઠોથી (—યત્રરૂપ અસ્ત્ર વિશેષોથી) " आकलिए " યુક્ત રહે છે એવા તે ભયકર સગ્રામમા કેટલાક રાજાઓ પરધનનુ હરણ કરવાને માટેજ ઉતરે છે ।.સૂ૦૫॥

=तत्र इलीभी.=द्विधाराभिः खड्गविशेषैः प्रहरणैः=शस्त्रैश्चानेकविधैः 'मिलिमिलित' इति चाकचिक्ययुक्तैः क्षिप्यमाणैः भटैर्निपात्यमानैः प्रहियमाणैरित्यर्थः, पुनः कीदृशैः खड्गादिशस्त्रैः ? विद्युदुज्ज्वलैः=विद्युद्वद्विद्योतमानैः विरचित=कृत समप्रभ= स्वसदृशप्रकाशयुक्त नभस्तल यत्र स तथा तस्मिन्, तथा 'फुडपहरणे' स्फुटप्रहरणे स्फुटानि=स्पष्टानि प्रहरणानि=शस्त्राणि यस्मिन् स तथा तस्मिन्। 'महारणसख भेरिवरतूरपउरपडुपडहाहयनिनायगमीरणदियपक्खुभियविउलघोसे' महार णशङ्खभेरिवरतूर्यप्रचुरपटुपटहाहतनिनादगम्भीरनन्दितप्रक्षुभितविपुलघोषे = तत्र महारणे=महायुद्धे ये शङ्खाः=प्रतीता भेर्यः=रणभेर्यः वरतूर्याणि=प्रधानवादित्राणि तानि च प्रचुराणि=प्रभूतानि पटूनि=स्पष्टध्वनीनि च पटहाश्च='ढोल' इति प्रसिद्धास्तेषामाहतानां=वादितानां निनादेन=शब्देन गम्भीरेण नन्दिताः=हर्षिताः वीराः

फिर भी सग्राम का वर्णन करते हैं-'हली पहरण' इत्यादि।

टीकार्थ—(हली) दोनों तरफ जिनपर धार निकल रही है ऐसे दुधारे (पहरण) खड्गादि अनेक शस्त्र जो (मिलिमिलित) अत्यन्त चमकीले हैं और (खिप्पत) शत्रुओं पर फेंके जाते समय (विज्जुज्जल) बिजली जैसे चमकते हैं, ऐसे शस्त्रों ने (विरइयसमप्पहनहतले) नभस्तल को अपने सामान प्रकाश वाला बना दिया है अर्थात् जो लपलपाते हुए अति तीक्ष्ण चमकीले शस्त्रों से आकाशमण्डल चमकीला बन रहा है ऐसे सग्राम में (फुडपहरणे) तथा जिसमें शस्त्र दिखलाई दे रहे हैं तथा जो (महारणे) महासग्राम में बजने वाले (सख) शखों से, (भेरी) रणभेरियों से (वरतूरपउरे) स्पष्टध्वनिसपन्न प्रधान २ तूर्य-वादित्रो से, (पडुपडहाहयनिनायगभीर) बजते हुए ढोलो के गभीर शब्दों से (णदिय) हर्षित बने हुए जोशीले

હજી પણ સૂત્રકાર સગ્રામનુ વર્ણન કરે છે-"हली पहरण" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-"हली"બન્ને તરફ જેને ધાર છે તેવા બેધારા 'पहरण' ખડગ વગેરે અનેક શસ્ત્રો જે "मिलिमिलित" અતિશય ચળકતા છે, અને "खिप्पत" શત્રુઓ તરફ ફેંકવામા આવે ત્યારે "विज्जुज्जल" વિજળી જેવા ચમકે છે, એવા શસ્ત્રોએ "विरइयसमप्पहनहतले" આકાશને પોતાના જેવુ પ્રકાશિત બનાવી દીધુ છે, એટલે કે જે ચકચકિત અતિ તીક્ષ્ણ ચળકતા શસ્ત્રોથી આકાશ મડળ ચળકતુ બની રહ્યુ છે એવા સગ્રામમા "फुडपहरणे" તથા જેમા શસ્ત્રો નજરે પડે છે તથા જે "महारण" મહાસગ્રામમા વાગતા "सख" શખોથી, "भेरी" રણભેરીઓથી "वरतूरपउर" સ્પષ્ટ ધ્વનિવાળા મુખ્ય મુખ્ય તૂર્ય - વાજિંત્રોથી, "पडुपडहाहयनिनायगभीरे" વાગતા ઢોલોના ગભીર

प्रक्षुभिताः=क्षोभमापन्नाश्च ये कातरा जनास्तेषां विपुलः=विशाल घोषो=ध्वनिर्यस्मिन् स तथा तस्मिन् 'हयगयरहजोहतुरियपसरियरयुद्धयतमन्धयारबहुले' हयगजरथयोधत्वरितमसृतरजउद्धततमाऽन्धकारबहुले=तत्र हयाः = अश्वाः, गजाः=प्रसिद्धा, रथाः=स्यन्दनाः, योधा=सुभटास्तेषां पादाभिघातेन त्वरितं=शीघ्रं प्रसृत=विस्तारमुपगतं रजः=धूली, तद् उद्धततमम्=अतिशयेनोद्धृतमुड्डीयमानं तेनाऽन्धकारबहुले। तथा "कायरनरनयणहिययवाउलकरे" कातरनयनहृदयव्याकुलकरे, तत्र = कातराः=अधीरा. युद्धे पलायनस्वभावा ये नरास्तेषां नयनहृदययोः व्याकुलकरे=क्षोभजनके तथा 'विलुलियउक्कडवरमउडकिरिडकुंडलोडुदामाडोविए' विलुलितोत्कटवरमुकुटकिरिटकुण्डलोडुदामाटोपिते=तत्र विलुलितानि=इतस्ततश्चलितानि उत्कटवराणि=उत्तमप्रकृष्टानि यानि मुकुटानि=प्रसिद्धानि किरीटानि=त्रिशिखरशिरोभूषणानि कुण्डलानि=कर्णाभरणानि उडुदामानि=नक्षत्रमालाकारभूषणानि च तैराटोपित=विस्तारितो यः स तथा तस्मिन्

वीरों के एव (पक्खुभिय) क्षुभित हुए कायर जनो के (विउलघोसे) विपुल घोषों से व्याप्त हो रहा है, तथा (हयगयरहजोहतुरियपसरियरयुद्धयतमधयारबहुले) (हय) घोडों के, (गय) गजो के, (रह) रथो के, (जोह) योद्धाओं के, (उद्धयतम) पैरों के अत्यन्त आघात से उडकर (तुरियपसरिय) शीघ्र फैली हुई (रय) धूली से जहा पर (अधयारबहुले) अधकार ही अधकार हो रहा है (कायरनरनयणहियय वाउलकरे) कायरजनो के नयन और हृदयको जो व्याकुल बनारहा है। (विलुलिय) इधर उधर लटकते हुए (उक्कडवर) उत्तमोत्तम ऐसे (मउड) मुकुटो से, (किरीड) किरीटो से-तीनशिखर वाले शिरो भूपणो से (कुंडल) कुण्डलों से, (उडुदाम) नक्षत्र मालाकार भूषणो

નાદથી, "णदीय" આનંદિત બનેલા જોશીલા વીરોના અને "पक्खुभिय" ક્ષોભ પામેલ કાયર જનોના "विउलघोसे" વિપુલ આવાજથી વ્યાપ્ત થઇ ગયુ છે તથા 'हयगयरहजोहतुरियपसरियरयुद्धयतमधयारबहुले" "हय" ઘોડાના, "गय" હાથીઓના, "रह" રથોના "जोह" યોદ્ધાઓના "उद्धयतम" પગના અત્યંત આઘાતથી ઉડીને "तुरियपसरिय" ઝડપથી ફેલાયલી "रय" ધૂળથી જ્યાં 'अधयारबहुले" અતિશય અંધકાર થઈ ગયો છે, "कायरनरनयणहिययवाउलकरे" કાયર લોકોના નયન અને હૃદયને જે વ્યાકુળ કરી રહેલ છે, 'विलुलिय" અહીં તહીં લટકતા "उक्कडवर" ઉત્તમોત્તમ 'मउड" મુગટોથી, "किरीड" કિરીટોથી-ત્રણ શિખરવાળા શિરોભૂષણોથી, "कुंडल" કુંડળોથી "उडुदाम" નક્ષત્ર માલાકાર ભૂષણોથી, "आडोविए" જે આડંબર યુક્ત બનેલ છે 'पगइ"

'पगडपडागउच्छियधयवेजयंतीचामरचलंतछत्तंधयारगंभीरे' प्रकटपताकोच्छ्रितध्वजवैजयन्तीचामरचलच्छत्रान्धकारगम्भीरे=तत्र प्रकटाः=दूरस्था अपि दृश्यमाना याः पताकाः=विशालपताकाः उच्छ्रिताः=अत्यूर्ध्वस्थिता ये ध्वजाः=लघुपताकाः वैजयन्त्यश्च=विजयपताका तथा चामराणि चलन्ति छत्राणि च तैः कृतेनान्धकारेण गम्भीरे=गहने तथा 'हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयपाइक्कहरहराइयआफोडियसीहनायछिलिय विघुट्ठुक्किट्ठकंठकयसद्दभीमगज्जिए' तत्र 'हयहेसिय' हयहेषित=हयानाम्=अश्वानां हेषित=शब्दित 'हत्थिगुलगुलाइय' हस्तिगुलगुलायित हस्तिना=गजानां गुलगुलायित=गुलगुलशब्दः 'रहघणघणाइय' रथघनघनायित= धावतां रथानां घनघनेति शब्द तथा 'पाइक्कहरहराइय' पदाति हरहरायित= पदातीनां सैनिकानां हरहरेति शब्दित 'आफोडिय' आस्फोटित=बाहुपरिस्फोटन 'सीहनाय' सिंहनादः=सिंहस्येव शब्दकरण 'छिलिय' सण्टित=सीत्कारकरण

से (आडोविए) जो आडंबर युक्त बना हुआ है। (पगड) दूर रहने पर भी दृश्यमान ऐसी (पडाग) विशाल पताकाओं से, (उच्छिय) ऊँची की हुई ऐसी (धय) लघुपताकाओं से, (वेजयंती) वैजयन्ती-विजय सूचक ऐसी ध्वजाओं से, तथा (चामर) चामरों से एवं (चलंतछत्त) चचलछत्रोंसे किये गये (अंधयार) अंधकारसे जो (गंभीरे) गहन हो रहाहै, तथा जहां (हयहेसिय) घोड़ों की हिनहिनाटके शब्द हो रहे हैं, (हत्थिगुलगुलाइय) हाथियों की गुलगुलाहट हो रही है, (रहघणघणाइय) इधर उधर दौडते हुए रथों का जहा घनघनाट शब्द हो रहा है, (पाइक्कहरहराइय) पदातियों की जहा हर हराट-'हरहर' इस प्रकार की तुमुल ध्वनि हो रही है, (आफोडिय) वीर अपनी २ भुजाओं का जहा आस्फालन-कर रहे हैं-फटकार रहे है, (सीहनाय) सिंह के जैसी जहा

દૂર દૂર હોવા છતા પણ નજરે પડતી એવી "पडाग" વિશાળ પતાકાઓથી, "उच्छिय" ઉંચી રાખેલી એવી "धय" લઘુપતાકાઓથી, "वेजयंती" વિજય સૂચક ધ્વજાઓથી, તથા "चामर" ચામરોથી અને "चलंतछत्त" ચપળ છત્રોથી કરાયેલ "अंधयार" અંધકારથી જે 'गंभीरे' ગહન થઇ ગયુ છે, તથા જ્યા "हयहेसिय" ઘોડાઓની હણુ હણાટીનો આવાજ થઇ રહ્યા છે, "हत्थिगुलगुलाइय" હાથીઓની ગુલગુલાહટ થઇ રહ્યા છે, "रहघणघणाइय" આમ તેમ દોડતા રથોનો ઘણઘણાટ જ્યા ચાલી રહ્યો છે "पाइक्क हरहराइय" પદાતી-પાયદળનો જ્યા હર હરાટ "હર હર" એ પ્રકારનો ભયંકર ધ્વનિ ચાલી રહ્યો છે, "आफोडिय" જ્યા વીરો પોત પોતાની ભુજાઓનુ આસ્ફાલન કરી રહ્યા છે-ફટકારો રહ્યા છે "सीहनाय" સિંહના જેવી ગર્જના જ્યા થઇ રહી છે,

'विघुट्ट' विघुष्ट=विरूपघोषकरणम् 'उक्किट्ठकठकयसद्द' उत्कृष्टकण्ठकृतशब्दः= हर्षात् उत्कृष्ट -अतिशयितः कण्ठेन कृतः शब्द' गलगलाटरूपः स एव 'भीमगज्जिय' भीमगर्जित-मेघगर्जनिभ, इत्येतानि हयहेषितादीनि सन्ति यत्र स तथा तस्मिन्। पुन. कीदृशे? तदाह—'सयराहहसतरुसतकलकलरवे' सयराहहसत् रुष्यत् कलकलरवे='सयराह' इति युगपत् हसता रुष्यता=क्रुध्यता सैनिकाना कलकलरवः=कोलाहलो यत्र स तथा तत्र। तथा-'आसूणियवयणरुद्दभीमदसणाधरोट्ठगाढदट्ठसप्पहारकरणुज्जयकरे' आशूनितवदनरौद्रभीमदशनाधरोष्ठगाढदष्टसत्प्रहारकरणोद्यतकरे=तत्र आशूनितेन=ईषत्स्थूलीकृतेन वदनेन=मुखेन ये रौद्रा =क्रोधचण्डास्ते तथा, तथा-भीम-क्रोधावेशाद् भयङ्कर यथास्यात्तथा दशनै=दन्तैरधरोष्ठ गाढ दष्ट यस्ते तथा परसुभटास्तेषा सत्प्रहारकरणे = शोभनतया शस्त्र

गर्जना हो रही है (छिलिय) 'सी सी' इस प्रकार का जहा सीत्कार शब्द हो रहा है, (विघुट्ट) योद्धाओं द्वारा विरूपघोष जहा किया जा रहा है, (उक्किट्ठकठकयसद्द) हर्ष से फूले हुए जहा अपने २ कठो से उत्कृष्ट गलगलाट रूप शब्द कर रहे हैं (भीमगज्जिए) इस कारण ऐसा वहा ज्ञात होता है कि मानो मेघ ही यहा गर्ज रहा है। (सयराहहसतरुसतकलकलरवे) (हसत) हँसते तथा (रुसत) क्रोध से रूष्ट हुए सैनिक जनों का (सयराह) एक साथ जहा पर (कलकलरवे) कलकल शब्द हो रहा है, तथा जहा सैनिकजन (आसूणियवयण) अपना२ मुँह थोड़े से रूपमें फुलाकर (रुद्द) क्रोध से चण्ड बन रहे है तथा (भीम) क्रोध के आवेश से भयङ्कररूप में जहाँ वे (दसणाधरोट्ठगाढदट्ठ) अपने २ अधरोष्ठोंको दृढ़ता पूर्वक डस रहे हैं, तथा (सप्प

"छिलिय" 'सीसी' એવો જ્યા સિત્કાર શબ્દો થઈ રહ્યા છે તથા "विघुट्ठ" યોદ્ધાઓ દ્વારા વિરૂપ ઘોષ જ્યા કરાઈ રહ્યો છે, "उक्किट्ठकठकयसद्द" આનંદથી ફુલાઈ ગયેલા સૈનિકો જ્યા પોત પોતાના કંઠમાંથી ઉત્કૃષ્ટ ગર્જના જેવા શબ્દો કાઢી રહ્યા છે, "भीमगज्जिए" તે કારણે ત્યા મેઘ જ ગર્જના કરી રહ્યો હોય તેવુ લાગે છે "सयराहहसतरुसतकलकलरवे" "हसत" હસતા તથા "रुसत" કોપાયમાન થયેલ સૈનિકોનો 'सयराह" એક સાથે જ્યા "कलकलरवे" કલ કલ શબ્દ-ધ્વનિ થઈ રહ્યો છે, તથા જ્યા સૈનિકો "आसूणि य वयण" પોત પોતાનુ મુખ થોડા પ્રમાણમા ફુલાવીને 'रुद्द" ક્રોધથી ઉગ્ર બની ગયેલ છે તથા "भीम" ક્રોધના આવેશમા ભયકર રીતે જ્યા તેઓ "दसणाधरोट्ठगाढदट्ठ" પોતપોતાના અધરોષ્ઠોને દઢતાથી કરડી રહેલ

'पगडपडागउच्छियधयवेजयतीचामरचलतछत्तधयारगभीरे' प्रकटपताकोच्छ्रित ध्वजवैजयन्तीचामरचलच्छत्रान्धकारगम्भीरे=तत्र प्रकटाः=दूरस्था अपि दृश्यमाना याः पताकाः=विशालपताकाः उच्छ्रिताः=अत्यूर्ध्वस्थिता' ये ध्वजाः=लघुपताकाः वैजयन्त्यश्च=विजयपताका तथा चामराणि चलन्ति छत्राणि च तैः कृतेनान्धकारेण गम्भीरे=गहने तथा 'हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयपाइक्कहरहराइय आफोडियसीहनायछेलिय विघुट्ठुक्किट्ठकंठकयसद्दभीमगज्जिए' तत्र 'हयहेसिय' हयहेषित=हयानाम्=अश्वाना हेषित=शब्दित 'हत्थिगुलगुलाइय' हस्तिगुलगुलायित हस्तिनां=गजाना गुलगुलायित=गुलगुलशब्दः 'रहघणघणाइय' रथघनघनायित= धावता रथाना घनघनेति शब्दः तथा 'पाइक्कहरहराइय' पदाति हरहरायित= पदातीना सैनिकाना हरहरेति शब्दित 'आफोडिय' आस्फोटित=बाहुपरिस्फोटन 'सीहनाय' सिंहनादः=सिंहस्येव शब्दकरण 'छेलिय' सण्टित=सीत्कारकरण

से (आडोविए) जो आडम्बर युक्त बना हुआ है। (पगड) दूर रहने पर भी दृश्यमान ऐसी (पडाग) विशाल पताकाओं से, (उच्छिय) ऊँची की हुई ऐसी (धय) लघुपताकाओं से, (वेजयती) वैजयन्ती-विजय सूचक ऐसी ध्वजाओं से, तथा (चामर) चामरों से एव (चलतछत्त) चचलछत्रोसे किये गये (अधयार) अधकारसे जो (गभीरे) गहन हो रहाहै, तथा जहां (हयहेसिय) घोड़ो की हिनहिनाटके शब्द हो रहे हैं, (हत्थिगु लगुलाइय) हाथियों की गुरगुलाहट हो रही है, (रहघणघणाइय) इधर उधर दौडते हुए रथों का जहा घनघनाट शब्द हो रहा है, (पाइक्कहर हराइय) पदातियों की जहा हर हराट-'हरहर' इस प्रकार को तुमुल ध्वनि हो रही है, (आफोडिय) वीर अपनी २ भुजाओं का जहा आस्फालन-कर रहे हे-फटकार रहे है, (सीहनाय) सिंह के जैसी जहा

દૂર દૂર હોવા છતા પણ નજરે પડતી એવી "पडाग" વિશાળ પતાકાઓથી, "उच्छिय" ઉંચી રાખેલી એવી "धय" લઘુપતાકાઓથી, "वेजयती" વિજય સૂચક ધ્વજાઓથી, તથા "चामर" ચામરોથી અને "चलतछत्त" ચચળ છત્રોથી કરાયેલ "अधयार" અધકારથી જે 'गभीरे' ગહન થઇ ગયુ છે, તથા જ્યા "हयहेसिय" ઘોડાઓની હણુ હણુાટોનો આવાજ થઇ રહ્યો છે, "हत्थिगुलगुलाइय" હાથીઓની ગુલગુલાહટ થઇ રહી છે, "रहघणघणाइय" આમ તેમ દોડતા રથોનો ઘણઘણાટ જ્યા ચાલી રહ્યો છે "पाइक्क हरहराइय" પત્તાતી-પાયદળનો જ્યા હર હરાટ "હર હર" એ પ્રકારનો ભયકર ધ્વનિ ચાલી રહ્યો છે, "आफोडिय" જ્યા વીરો પોત પોતાની ભુજાઓનુ આસ્ફાલન કરી રહ્યા છે-ફટકારી રહ્યા છે "सीहनाय" સિંહના જેવી ગર્જના જ્યા થઇ રહ્યા છે,

पुनः कीदृशे सग्रामे ? इत्याह ' वग्गंत ' इत्यादि ।

मूलम्—वग्गततुरगरहपहावियसमरभडे आवाडियछेयलाघवपहारसाहिए समूसियवाहुजुयले मुक्कट्टहासपुक्कतवोलवहुले, फुरफलगावरणगहियगयवरपत्थतदरियखलभडपरोप्परपलग्गजुद्धगव्वियविक्कोसियवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरंतछिण्णकरिकरविअगियकरे, अवइद्धनिसुट्टभिन्नफालियपगलियरुहिरकयभूमिकद्दमचिलिचिल्लपहे कुच्छिदालियगलियनिभ्भोलियंतफुरफुरंतविगलमम्महयविगयगाढदिण्णप्पहारमुच्छियरुलंतविब्भलविलावकलुणे, हयजोहभमततुरगउद्दाममत्तकुंजरपरिसंकिय जणणिव्वुक्कछिण्णज्झयभग्गरहवरनट्ठसिरकरिकलेवराकिण्णपडियपहरणविकिण्णाभरणभूमिभागे नच्चतकबंधपउरे, भयकरवायसपरिलितगिद्धमंडलभमंतछायंधयारगंभीरे ॥ सू० ७ ॥

टीका—" वग्गततुरगरहपहावियसमरभडे " वलात्तुरगरथप्रधावितसमरभटे =तत्र वलान्तः=हेषमाणा. ये तुरगाः=अश्वाः रथा' ते प्रधाविता = वेगेन नीता

किया जा रहा है ऐसे सग्राम मे कितनेक राजा उतरते हैं ऐसा सबध यहा लगा लेना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

फिर कैसे सग्राम में उतरते हैं सो कहते है—'वग्गत तुरग' इत्यादि ।

टीकार्थ- (वग्गततुरगरहपहावियसमरभडे) हणहणाट करते हुए घोडो से एव रथो से जहा पर जल्दी २ भट पहुँचाये जा रहे हैं, तथा

હીન કરવામા આવી રહ્યુ છે, એવા સગ્રામમા કેટલાક રાજાઓ ઉતરે છે, એવો સબધ સમજી લેવાનો છે ॥સૂ૦૬॥

તેઓ તેવા સગ્રામમા ઉતરે છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે— " वग्गत तुरग " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" वग्गततुरगरहपहावियसमरभडे " હણહણાટી કરતા ઘોડાઓથી અને રથોની મદદથી જ્યા જલ્દીથી સૈનિકોને મોકલાઈ રહ્યા છે, તથા

सञ्चालने, उद्यताः=प्रवृत्ताः कराः=हस्ताः सैनिकानां यत्र स तथा तत्र, अति क्रोधशोणीकृतानना भयङ्कररूपा योधाः सततमव्यग्रा अश्रान्ता अविच्छेदेन शस्त्रप्रहरणसमाप्ता यस्मिन् सग्रामे सन्तीत्यर्थः । 'अमरिसवसतिव्वरत्तनिद्दारि यच्छे' अमर्षवशतीव्ररक्तनिर्दारिताक्षे=अमर्षवशेन=क्रोधवशेन तीव्ररक्ते=अत्यन्त लोहिते, निर्दारिते=स्फारिते चाक्षिणी योधाना यस्मिन, तत्र । तथा 'वेरदिट्ठि कुद्धचेट्ठियतिवलीकुडिलभिउडिकयलग्गाडे' वैरदृष्टिक्रुद्धचेष्टितत्रिवलीकुटिलभ्रुकुटी कृतललाटे=तत्र वैरदृष्ट्या=वैरभावनया ये क्रुद्धा=कुपिता भटास्तैश्चेष्टिता त्रिवली= ललाटसङ्कोचजनितत्रिरेखारूपा तथा कुटिला भ्रुकुटी कृता ललाटे=भाले यत्र स तथा तत्र 'वहपरिणयनरसहस्सविक्कमवियम्भियवले' वधपरिणतनरसहस्रविक्रम विजृम्भितबले=वधे=प्रतिपक्षिहनने परिणतानां=तत्पराणा नरसहस्राणाम्=अनेक- सहस्रसुभटाना पराक्रमेण विजृम्भित=विक्षोभित बल=शत्रुसैन्य शत्रुसामर्थ्य वा यत्र स तथा तस्मिन्, एतादृशे सग्रामे अतिपतन्तीत्यनेनाऽन्वय ॥ सू० ६ ॥

हारकरणुज्जयकरे) द्विपक्षी सुभटों के ऊपर प्रहार करने के लिये जहां सुभटो के हाथो का सचालन हो रहा है तथा (अमरिसवसतिव्वरत्त निद्दारितच्छे) जहाँ पर (अच्छे) वीरो के दोनो नेत्र (अमरिसवस) क्रोधके वशसे (निद्दारित) अपलक-निर्निमेष होकर (तिव्वरत्ता) अत्यन्त रक्तवर्ण के बन रहे है,तथा (वेरदिट्ठि) वैरकी भावनासे (कुद्ध) कुपित हुए भटो द्वारा (चेट्ठिय) चेष्टित-की गई (तिवली) अपनी २ त्रिवली- तीन रेखाएँ, तथा (कुडिलभिउडिकय) कुटिल- टेढी भ्रकुटी ललाट ऊपर जहा की गई है, तथा (वहपरिणयनसहस्सविक्कमवियभियबले) प्रतिपक्षीभूत सुभटो को मारने में तत्पर बने हुए अनेक सहस्र सुभटों के पराक्रम से जहा पर शत्रु का सैन्य-अथवा बल-सामर्थ्य विक्षोभित

છે, તથા " सप्पहारकरणुज्जयकरे " દુશ્મનદળના સૈનિકો ઉપર પ્રહાર કરવાને માટે જ્યા સુભટોના હાથો ચાલી રહ્યા છે, તથા "अमरिसवसतिव्वरत्तनिद्दारितच्छे" જ્યા "अच्छे' વીરોની બન્ને આંખો "अमरिसवस" ક્રોધાવેશથી ' निद्दारित" અપલક -પલકારા રહિત થઈને "तिव्वरत्ता" અત્યત લાલ બની રહેલ છે, તથા "वेरदिट्ठि" વૈરવૃત્તિથી " कुद्ध" કોપાયમાન થયેલ સુભટો દ્વારા " चेट्ठिय " કરાતી "तिवली" પોત પોતાની ત્રણ રેખાઓ "त्रिवली " (કોપાયમાન થતા કપાળમા પડતી કરચલીઓ) તથા " कुडिलभिउडिकय" જ્યા ભમરો-ભ્રકુટી કપાળે ચડી ગઈ છે, તથા " वहपरिणयनसहस्सविक्कमवियभियबले " દુશ્મનોના મારવાને આતુર બનેલા અનેક હજાર સુભટોના પરાક્રમથી જ્યા દુશ્મનના

'गयवरपत्थत' गजवरप्रार्थयमाना = गजवरान्=शत्रुकुञ्जरान् हन्तुमारोढुं वा प्रार्थयमानाः=अभिलषमाणा ये ते तथा 'दरियखलभड' दृप्तखलभटाः=दृप्ताः स्वबलगर्विताः, खलाः=दुष्टा -भटाः=योधास्ते, तथा 'परोप्परपलग्ग' परस्पर प्रलग्नाः=परस्पर शत्रुमभिहन्तु प्रवृत्ताः 'जुद्धगव्विय' युद्धगर्विताश्च=युद्धकौशलाऽहङ्कारपूर्णाः, 'विकोसियवरासि' विकोशितवरासयः-विकोशिताः=कोशान्निष्कासिताः असयः=खङ्गाः यैस्ते तथा, 'रोस' रोषेण=क्रोधेन 'तुरिय' त्वरित=शीघ्रम्, 'अभिमुह' अभिमुख 'पहरत' प्रहरन्तस्ते छिन्नकरिकराः-छिन्नाः करिकरा=हस्तिशुण्डा यैस्ते तथा, वियंगियकरे' व्यङ्गिताः=निकर्तिता॰ करा' येषा ते तथा, एते विद्यन्ते यस्मिन् स तथा तस्मिन्-परस्पराभिहननभेदनछेदनप्रहरण तत्परैर्योधैश्छिन्नभिन्ने.-' हयगजरथपदातीना परिभ्रष्टशुण्डमुण्डहस्तपादादिभि र्व्याप्त स्थल यत्रैव भूते सग्रामे इत्यर्थः। अत्रइद्धनिसुट्ठभिन्नफालियपगलियरुहिरकय-

---

एक योधा दूसरे योधा के हाथीको मारनेके लिये अथवा उस पर सवार होनेके लिये उत्सुक रहता है, तथा जिसमें (दरियखलभड) दुष्ट योधा गण अपने बल से अधिक गर्वित बने रहते हैं, (परोप्परपलग्ग) एक दूसरे को मारने के लिये जहा वीर प्रयत्नशील रहते है, अथवा प्रवृत्त होते है, (जुद्धगव्विय) युद्ध करने का कौशल योद्धाओं में विशेषरूप से जगकर उन्हें जहा गर्वित बना दिया है, तथा (विकोसियवरासि) जहा पर योद्धा अपनी २ श्रेष्ठ तलवारों को म्यान से बाहिर किये हुए ही रहते हैं, और जहा (रोसतुरियअभिमुहपहरतछिण्णकरिकर) क्रोध से भरकर एक योधा दूसरे योधाके ऊपर प्रहार कर उसके हाथी के शुण्डादण्ड को भग्न कर देता है, तथा (वियगियकरे) परस्परमे जहा योद्धायोद्धा-

---

रपत्थत" જેમા એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના હાથીને મારી નાખવાને માટે, અથવા તેના પર સવાર થવાને માટે આતુર રહે છે, તથા જેમા "दरियखलभड" દુષ્ટ યોદ્ધાઓ પોતાના બળને લીધે વધારે ગર્વિષ્ટ બનેલા રહે છે, "परोप्परपलग्ग" જ્યા એક બીજાને મારવાને માટે વીર પુરુષો પ્રયત્નશીલ રહે છે, અથવા પ્રવૃત્ત હોય છે, "जुद्धगव्विय" જ્યા યોદ્ધાઓનુ યુદ્ધ કૌશલ્ય વધારે પ્રમાણમા જાગૃત થયુ છે, અને તે કારણે તેઓ વધારે ગર્વિષ્ટ બન્યા છે, તથા "विकोसियवरासि" જ્યા યોદ્ધાઓ પોત પોતાથી શ્રેષ્ઠ તલવારોને મ્યાનમાથી બહાર કાઢીને લડવાને તૈયાર હોય છે, અને જ્યા "रोसतुरिय अभिमुहपहरतछिण्णकरिकर" ક્રોધાયમાન થઈને એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના ઉપર પ્રહાર કરીને તેના હાથીની સૂઢને કાપી નાખે છે, તથા "वियगियकरे" જ્યા

समरे भटा यत्र स तथा तत्र "आडवियछेयलाघवपहारसाहिए" आपतितछेक लाघवप्रहारसाधिते=तत्र आपतिताः=योद्धुमुद्यता ये 'छेकाः'=निपुणाः भटाः, तेषां तत्कर्तृका इत्यर्थः, ये लाघवप्रहाराः=चातुर्यपूर्णप्रहारास्तैः साधितो=निर्मितः यः स तथा तस्मिन्। तथा 'समूसियबाहुजुयले' समुच्छ्रितबाहुयुगले=समुच्छ्रितानि =हर्षाधिक्यादूर्ध्वीकृतानि बाहुयुगलानि भटैर्यत्र स तथा तत्र, तथा 'मुक्कट्टहासपुक्कतबोलबहुले' मुक्ताट्टहासपूत्कुर्वद्बोलबहुले = मुक्ताट्टहासः=कृतमहाहासध्वनयः, पूत्कुर्वन्तः=नामनिर्देशपूर्वकं परमाह्वयन्तो ये सुभटास्तेषां बोला =कोलाहलः, स बहुलो यस्मिन् स तथा तस्मिन्। 'फुरफलगावरणगहियगयवरपत्थतदरियभडखलपरोप्परपलग्गजुद्धगव्वियविकोसियवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरतछिण्णकरिकरविअंगियकरे' स्फुरफलकावरणगृहीतगजवरप्रार्थयमानदृप्तभटखल-परस्परमलग्नयुद्धगर्वितविकोशितवरासि-रोषत्वरिताभिमुखप्रहर-च्छिन्न-करिकर-व्यङ्गित-करे तत्र 'फुरफलगावरणगहिय' स्फुरफलकावरणाः'=स्फुराः'=अस्त्रप्रतिघातनिवारकचर्ममयपट्टविशेषाः, फलकानि=' ढाल ' इति भाषा प्रसिद्धानि आवरणानि च= कवचानि, तानि गृहीतानि=धृतानि यैस्ते तथा स्फुरकादि शस्त्रधारिण', तथा

(आडवियछेयलाघवपहारसाहिए) जो युद्ध करने के लिये उद्यत हुए ऐसे निपुण भटों के चातुर्य पूर्ण प्रहारों से निर्मित किया गया है, (समूसियबाहुजुयले) तथा जिसमें हर्षित बने हुए भट हर्ष की अधिकता से अपने २ बाहुयुगलों को ऊपर उठा रहे हैं (मुक्कट्टहासपुक्कतबोलबहुले) तथा जिसमें सुभटजनों की महाहास्यध्वनि द्वारा एवं दूसरों को नाम निर्देशपूर्वक बुलाने के शब्दों द्वारा बहुत कोलाहल मचा रहता है तथा जिसमें योद्धागण (फुरफलगावरणगहिय) अस्त्रप्रतिघातको निवारण करनेवाले चर्ममय पट्टविशेषोंको, फलकोंको ढालोंको लिये रहते हैं, तथा कवच आदि आवरणोंसे सज्जित रहाकरते हैं, तथा (गयवरपत्थत) जिसमें

"आडवियछेयलाघवपहारसाहिए" જે યુદ્ધ કરવાને તૈયાર થયેલા એવા નિપુણ સુભટોના ચાતુર્યપૂર્ણ પ્રહારોથી યુક્ત છે "समूसियबाहुजुयले" તથા જેમા આનંદિત બનેલા સુભટો આનંદની અધિકતાથી પોત પોતાની ભુજાઓ ઉંચી કરી રહેલ છે "मुक्कट्टहासपुक्कतबोलबहुले" તથા જેમા સુભટોના મુક્ત હાસ્યનો ધ્વનિ તથા બીજાને નામ દઈને બોલાવવાના શબ્દો દ્વારા ભારે કોલાહલ મચી રહ્યો છે, તથા જેમા યોદ્ધાઓનો સમૂહ "फुरफलगावरण गहिय" શસ્ત્રોના ઘાને રોકવાને માટે ચમમય પટ્ટ વિશેષોને, ફલકોને-ઢાલોને ધારણ કરે છે તથા બખતર આદિ આવરણોથી સજ્જ રહે છે તથા "गयव

विकृतः=क्रोधावेशेन विचित्ररूपः गाढः=मर्मभेदी दत्तः शत्रुभिः प्रहारो येषां ते तथा, अत एव मूर्च्छिताः=मूर्छां प्राप्ताः, लुठन्तः = भूमौ विलुठन्त, विह्वलाः= व्याकुलाश्च तेषां विलापाः='हा हतावयमि'-त्याद्याक्रन्दशब्दाः, तैः करुणो= दयाजनको यः स तथा तत्र, पुनः कीदृशे ? इत्याह-'हयजोह-भमत तुरग- उद्दाममत्तकुजरपरिसक्कियजण-णिञ्चुव च्छिण्णज्झय-भग्ग-रहवर - नट्ठसिरकरिकले वराकिण्ण-पडियपहरण-विकिन्नाभरणभूमिभागे' हतयोधभ्रमत्तुरङ्गोद्दाममत्तकुञ्जर- परिशङ्कितजननिर्मूलच्छिन्नध्वजभग्नरथवरनष्टशिरः करिकलेवराकीर्णपतितप्रहरणवि- कीर्णाभरणभूमिभागे' तत्र-'हयजोहभमततुरग'-हतयोधभ्राम्यत्तुरगः-हताः=मृता योधाः=अश्वारोहा सवार इति भाषा प्रसिद्धाः येषां, तथाभूता भ्राम्यन्तः=इतस्ततो धावन्तः तुरगाः=अश्वा यस्मिन् स तथा, 'उद्दाममत्तकुजरपरिसक्कियजण'-उद्दाम- मत्तकुञ्जरपरिशङ्कितजन.-उद्दाममत्तकुञ्जरेभ्यो=निरङ्कुशमदोन्मत्तहस्तिभ्यः परिश ङ्किता =त्रस्तशङ्काकुलाः जना यस्मिन् स तथा, 'णिञ्चुवच्छिण्णज्झयभग्गरहवर'- निर्मूलच्छिन्न ध्वजभग्नरथवराः-तत्र निर्मूला =मूलरहिताः= ध्वजदण्डेभ्यो निस्सृताः

से विचित्ररूप गाढ मर्म भेदी प्रहार शत्रुओ द्वारा दिया गया है और इसीसे जो (मुच्छिय) मूर्च्छा को प्राप्त होकर (रुलत) भूमि पर इधर से उधर लोट रहे हैं एव (विब्भल) व्याकुल होकर (विलाव) "हा मैं मारा गया" इत्यादिरूप से विलाप कर रहे हैं ऐसे योद्धाओं के विलापो से जो (कलुणे) दयाजनक बना हुआ है तथा जो (हयजोह- भमततुरग) अपने सवारो के मर जाने से इच्छानुसार इधर उधर घूमते हुए घोड़ों से युक्त हो रहा है, तथा जहां (उद्दाममत्तकुजरपरि- सक्कियजणे) उत्कट मदवाले हाथियों से, वध की शका के भय से मनु- ष्य व्याकुल हो रहे हैं (णिञ्चुक्कछिण्णज्झयभग्गरहवरे) जहा निर्मूल दडा रहित और छिन्न-फटी हुई ध्वजाएँ और भग्न हुए श्रेष्ठ रथ पडे हैं

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે ભયંકર મર્મભેદી પ્રહાર કરાયો છે અને તે કારણે જેઓ "मुच्छिय" મૂર્છાવશ થઈને "रुलत" જમીન ઉપર આમ તેમ આળોટે છે અને ' विब्भल " દયાજનક બનેલ છે, ' विलाव " અરે ! મને મારી નાખ્યો " ઈત્યાદિ પ્રકારે વિલાપ કરે છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી જે "कलुणे" દયાજનક બનેલ છે, તથા જે "हयजोहभमततुरग" પોતાના સવારો મરી જવાથી ઈચ્છાનુસાર આમ તેમ ઘૂમતા ઘોડાઓથી જે યુક્ત છે, તથા જ્યાં "उद्दामम त्तकुजरपरिसक्कियजण " મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા કચરાઈ જવાના ભયથી માણસો વ્યાકુળ બનેલા છે, "णिञ्चुक्कछिण्णज्झयभग्गरहवर" જ્યાં નિર્મૂળ દંડા રહિત

भूमिकद्दमचिक्खिल्लपहे ' अपविद्धनिसुट्टभिन्नफालियपगलितरुहिरकृतभूमिकर्दमचिक्खिल्लपथे तत्र अपविद्धा =बाणादिभिः, निसुट्टा=निपातिताः गलहस्तादिभिः, भिन्नाः त्रिशूलादिभिः फलिताः=स्फाटिता'=विदारिताश्च कुठारादिभिर्य, तेभ्यः प्रगलितेन =क्षरितेन रुधिरेण कृतः=जातो यो भूमौ=पृथिव्या कर्दमस्तेन चिलिचिलाः=आर्द्राः पन्थानः = मार्गाः यत्र स तथा तत्र, ' कुच्छिदालियगलियनिम्मेलियतफुरफुरतविगलमम्महयविगयगाढदिण्णप्पहारमुच्छियरुलतविम्भलविलावकलुणे ' कुक्षिदारितगलितनिर्मोलितान्त्रफुरफुरायमाणविगलमर्महतविकृतगाढदत्तप्रहारमूर्च्छितलुठद्विह्वलविलापकरुणे=दारितात्=विदारितात् कुक्षेः उदरात् गलित रुधिर निर्मेलितानि = उदराद्बहिर्निगलितानि च अन्त्राणि = ' आंतडियाँ ' इति भाषा प्रसिद्धानि येषां ते तथा, अतएव-फुरफुरायमाणाः = कम्पमानाः विकला.=निरुद्धेन्द्रियवृत्तित्वेन व्याकुलाः, मर्महताः=कण्ठादिमर्मस्थाने हतास्तथा

ओंके हाथों को काट दिया करते हैं तथा (अवइद्ध) बाणा से वेधे गये, (निसुट्ट) गले में हाथ डालकर हठात् जमीन पर पटक दिये गये, (भिन्न) त्रिशूल आदि के द्वारा भेदे गये एव (फालिय) कुठार आदि द्वारा फाड दिये गये-विदारित किये गये ऐसे योद्धाओं के शरीर से (पगलिय) झरते हुए (रुहिर) रक्तसे (कयभूमिकद्दमचिखिल्लपहे) जहा की भूमिमें कीचड मच रही है और इसी से जहाके मार्ग चिकने हो रहे हैं तथा (कुच्छिदालिय)विदारित हुए उदरसे जिनके (गलिय) खून बहरहा है और (निम्मेलियत) आतें भी जिनकी पेटसे बाहिर निकलआई हैं, इसी कारण जो (फुरफुरत) कप रहे है और (विगल) विकल हो रहे हैं ऐसे योधा कि जिन पर (मम्महयविगयगाढदिण्णप्पहार) क्रोध के आवेश

યોદ્ધાઓ એક બીજાના હાથ છેદી નાખે છે, તથા "अवइद्ध" બાણોથી વીધાયેલા "निसुट्ट" ગળામા હાથ ભરાવીને બળપૂર્વક જમીન પર પટકાયેલ, "भिन्न" ત્રિશૂળ આદિ દ્વારા ભેદાયેલા, અને "फालिय" ફરસી આદિ દ્વારા ચીરી નાખેલ, યોદ્ધાઓના શરીરમા "पगलिय" વહેતા "रुहिर" લોહીથી 'कयभूमिकद्दमचिखिल्लपहे" જ્યા જમીનમા કીચડ થઈ ગયો છે, અને તે કારણે જ્યા માર્ગ લપસણો થઈ ગયો છે, તથા "कुच्छिदालिय" જેમના વિદારિત થયેલા ઉદરમાથી "गलिय" લોહી વહી રહ્યુ છે અને "निम्मेलियते" જેમના આતરડા પણ પેટમાથી બહાર નીકળી પડયા છે એ જ કારણે જે "फुरफुरत" કપી રહ્યા છે, અને "विगड" વ્યાકુળ થઈ ગયા છે, જેમના પર "मम्महयविगयगाढदिण्णप्पहार" ક્રોધના આવેશમા

विकृतः=क्रोधावेशेन विचित्ररूपः गाढ'=मर्मभेदी दत्तः शत्रुभिः प्रहारो येषा ते तथा, अत एव मूर्च्छिताः=मूर्छा प्राप्ता', लुठन्त' = भूमौ विलुठन्त , विह्वलाः= व्याकुलाश्च तेषा विलापा'='हा हतावयमि'-त्याद्याक्रन्दशब्दाः, तैः करुणो= दयाजनको यः स तथा तत्र, पुनः कीदृशे ? इत्याह-'हयजोह-भमत तुरग- उद्दाममत्तकुजरपरिसंकियजण-णिव्वुकछिण्णज्झय-भग्ग-रहवर - नट्ठसिरकरिकले वरारिण्ण-पडियपहरण-विकिन्नाभरणभूमिभागे' हतयोधभ्रमत्तुरङ्गोद्दाममत्तकुञ्जर- परिशङ्कितजननिर्मूलछिन्नध्वजभग्नरथवरनष्टशिरः करिकलेवराकीर्णपतितप्रहरणवि- कीर्णाभरणभूमिभागे' तत्र-'हयजोहभमततुरग'-हतयोधभ्राम्यत्तुरगः-हताः=मृता योधाः=अश्वारोहा सवार इति भाषा प्रसिद्धा येषा, तथाभूता भ्राम्यन्तः=इतस्ततो धावन्तः तुरगाः=अश्वा यस्मिन् स तथा, 'उद्दाममत्तकुजरपरिसंकियजण'-उद्दाम- मत्तकुञ्जरपरिशङ्कितजन.-उद्दाममत्तकुञ्जरेभ्यो=निरङ्कुशमदोन्मत्तहस्तिभ्यः परिश ङ्किता =वधशङ्काकुला जना यस्मिन् स तथा, 'णिव्वुकछिण्णज्झयभग्गरहवर '- निर्मूलछिन्न ध्वजभग्नरथवरा.-तत्र निर्मूला =मूलरहिताः=ध्वजदण्डेभ्यो निस्सृता

से विचित्ररूप गाढ मर्म भेदी प्रहार शत्रुओं द्वारा दिया गया है और इसीसे जो (मुच्छिय) मूर्च्छा को प्राप्त होकर (रुलत) भूमि पर इधर से उधर लोट रहे हैं एव (विब्भल) व्याकुल होकर (विलाव) "हा मैं मारा गया" इत्यादिरूप से विलाप कर रहे हैं ऐसे योद्धाओं के विलापों से जो (कलुणे) दयाजनक बना हुआ है तथा जो (हयजोह- भमनतुरग) अपने सवारो के मर जाने से इच्छानुसार इधर उधर घूमते हुए घोड़ों से युक्त हो रहा है, तथा जहां (उद्दाममत्तकुजरपरि- सकियजणे) उत्कट मदवाले हाथियों से, वध की शका के भय से मनु ष्य व्याकुल हो रहे हैं (णिव्वुक्कछिण्णज्झयभग्गरहवरे) जहा निर्मूल दडा रहित और छिन्न-फटी हुई ध्वजाएँ और भग्न हुए श्रेष्ठ रथ पडे हैं

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે ભયંકર મર્મભેદી પ્રહાર કરાયો છે અને તે કારણે જેઓ "मुच्छिय" મૂર્છાવશ થઈને "रुलत" જમીન ઉપર આમ તેમ આળોટે છે અને 'विब्भल" દયાજનક બનેલ છે, 'विलाव" અરે! મને મારી નાખ્યો" ઈત્યાદિ પ્રકારે વિલાપ કરે છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી જે "कलुणे" દયાજનક બનેલ છે, તથા જે "हयजोहभमततुरग" પોતાના સવારો મરી જવાથી ઈચ્છાનુસાર આમ તેમ ઘૂમતા ઘોડાઓથી જે યુક્ત છે, તથા જ્યાં "उद्दामम त्तकुजरपरिसंकियजण" મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા કચરાઈ જવાના ભયથી માણસો વ્યાકુળ બનેલા છે, "णिव्वुकछिण्णज्झयभग्गरहवर" જ્યાં નિર્મળ દંડા રહિત

भूमिकर्दमचिखिल्लपहे ' अपविद्धनिसुट्टभिन्नफालितप्रगलितरुधिरकृतभूमिकर्दमचिखिल्लपथे तत्र अपविद्धा =बाणादिभिः, निसुट्टा=निपातिताः गजहस्तादिभिः, भिन्नाः त्रिशूलादिभिः फलिताः=स्फाटिताः=विदारिताश्च कुठारादिभिर्ये, तेभ्यः प्रगलितेन =क्षरितेन रुधिरेण कृतः=जातो यो भूमौ=पृथिव्या कर्दमस्तेन चिलिचिल्लाः=आर्द्राः पन्थानः = मार्गाः यत्र स तथा तत्र, ' कुच्छिदालियगलियनिम्मेलियतफुरफुरतविगलमम्महयविगयगाढदिण्णप्पहारमुच्छियरुलतविम्भलविलावकलुणे ' कुक्षिदारितगलितनिर्मेलितान्त्रफुरफुरायमाणविकलमर्महतविक्रतगाढदत्तप्रहारमूर्च्छितलुठद्विह्वलविलापकरुणे=दारितात्=विदारितात् कुक्षेः उदरात् गलित रुधिर निर्मेलितानि = उदराद्बहिर्निर्गलितानि च अन्त्राणि = ' आंतडियाँ ' इति भाषा प्रसिद्धानि येषां ते तथा, अतएव–फुरफुरायमाणाः = कम्पमानाः विकलाः=निरुद्धेन्द्रियवृत्तित्वेन व्याकुलाः, मर्महताः=कण्ठादिमर्मस्थाने हतास्तथा

ओंके हाथों को काट दिया करते हैं तथा (अवइद्ध) बाणों से वेधे गये, (निसुट्ट) गले में हाथ डालकर हठात् जमीन पर पटक दिये गये, (भिन्न) त्रिशूल आदि के द्वारा भेदे गये एव (फालिय) कुठार आदि द्वारा फाड दिये गये–विदारित किये गये ऐसे योद्धाओं के शरीर से (पगलिय) झरते हुए (रुहिर) रक्तसे (कयभूमिकद्दमचिखिल्लपहे) जहा की भूमिमें कीचड मच रही है और इसी से जहाके मार्ग चिकने हो रहे हैं तथा (कुच्छिदालिय)विदारित हुए उदरसे जिनके (गलिय) खून बहरहा है और (निम्मेलियत) आतें भी जिनकी पेटसे बाहिर निकलआई है, इसी कारण जो (फुरफुरत) कप रहे है और (विगल) विकल हो रहे है ऐसे योधा कि जिन पर (मम्महयविगयगाढदिण्णप्पहार) क्रोध के आवेश

યોદ્ધાઓ એક બાજાના હાથ છેદી નાખે છે, તથા "अवइद्ध" બાણોથી વીધાયેલા "निसुट्ट" ગળામા હાથ ભરાવીને બળપૂર્વક જમીન પર પટકાયેલ, "भिन्न" ત્રિશૂળ આદિ દ્વારા ભેદાયેલા, અને "फालिय" ફરસી આદિ દ્વારા ચીરી નાખેલ, યોદ્ધાઓના શરીરમા "पगलिय" વહેતા "रुहिर" લોહીથી 'कयभूमिकद्दमचिखिल्लपहे" જ્યા જમીનમા કીચડ થઇ ગયો છે, અને તે કારણે જ્યા માર્ગ લપસણો થઇ ગયો છે, તથા "कुच्छिदालिय" જેમના વિદારિત થયેલા ઉદરમાથી "गलिय" લોહી વહી રહ્યુ છે અને "निम्मेलियते" જેમના આતરડા પણ પેટમાથી બહાર નીકળી પડયા છે એ જ કારણે જે "फुरफुरत" કપી રહ્યા છે, અને "विगल" વ્યાકુળ થઇ ગયા છે, જેમના પર "मम्महयविगयगाढदिण्णप्पहार" ક્રોધના આવેશમા

पूर्वोदितमेव संक्षेपेण प्रतिपादयन्नाह—'वसु' इत्यादि ।

मूलम्—वसुवसुहविकंपियव्व-पच्चक्खपिउवणं परमरुद्द-वीहणगं दुप्पवेसतरग-अभिवडंति-संगामसंकडं, परधणं महंता । अवरे पाइक्कचोरसंघा सेणावइचोरवंद-पागड्ढियाय अडविदेसदुग्गवासी काल-हरिय-रत्त पीय सुक्किल्ल-अणेगसयचिंध-पट्टबधा परविसए अभिहणंति लुद्धा धणस्स कज्जे ॥ सू० ८॥

टीका—'वसुवसुहविकंपियव्व' वसुवसुधाविकम्पिता इव=तत्र वसव=देवा वसुधा=पृथ्वी च विकम्पिताः—त्रासिता यैस्ते तथा तथैवापरे राजानः 'परधण' परधनं 'महंता' काङ्क्षन्तः परद्रव्यलुब्धाः सन्तः 'पच्चक्खपिउवण' प्रत्यक्षपितृवन=साक्षात् श्मशानमिव 'परमरुद्दवीहणग' परमरुद्रभयानक=अत्यन्तप्रचण्डभयजनकं 'दुप्पवेसतरग' दुष्प्रवेशतरक=अत्यन्तदुर्गमं वीराणामपि, का कथा कातराणामित्येवंविधमपि 'संगामसंकड' संग्रामसंकटं=गहनयुद्धं 'अभिवडंति' अभिपतन्ति=प्रविशन्ति । तथा 'अवरे' अपरे 'पाइक्कचोरसंघा' पदातिकचोर

फिर इसी बात को संक्षेप से कहते हैं–'वसुवसुह' इत्यादि ।

टीकार्थ–(वसुवसुहविकंपियव्व) जिन्होंने देवोंको एवं पृथ्वीमंडलको भी कंपित जैसा करदिया है ऐसे और भी अनेक राजा (परधणमहंता) दूसरों के धनमें लुब्ध होकर (पच्चक्खपिउवण) साक्षात पितृवन जैसे–प्रत्यक्ष में श्मशान सरीखे प्रतीत होने वाले तथा (परमरुद्दवीहणग) जो अत्यंत प्रचंड एवं भयजनक हो रहा हो, तथा (दुप्पवेसतरग) वीरों के लिये भी जो अत्यन्त दुर्गम बना हुआ हो ऐसे (संगामसंकड) गहनयुद्ध में (अभिवडंति) प्रवेश कर जाते हैं । तथा (अवरे) दूसरे भी (पाइक्क

હવે એ જ વાતને સંક્ષિપ્તમાં કહે છે— "वसुवसुह" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"वसुवसुहविकंपियव्व" જેમણે દેવોને તથા પૃથ્વીમંડળને પણ જાણે કંપાયમાન કરી દીધા છે એવા બીજા પણ અનેક રાજાઓ "परधण महंता" બીજાના ધનમાં લુબ્ધ થઈને "पच्चक्खपिउवण" પ્રત્યક્ષ પિતૃવન જેવા–પ્રત્યક્ષ સ્મશાન જેવા લાગતા, તથા "परमरुद्दवीहणग" જે અત્યંત પ્રચંડ અને ભયંકર ભાસતું હોય, તથા "दुप्पवेसतरग" વીરોને માટે પણ જે અતિશય દુર્ગમ હોય એવા "संगामसंकड" ગહન યુદ્ધમાં "अभिवडंति" પ્રવેશ કરે છે તથા "अवरे" બીજા પણ "पाइक्कचोरसंघा" પદાતિરૂપ

छिन्ना ध्वजाः, भग्नारथवराश्च यस्मिन् स तथा, 'नट्ठसिरकरिकलेवराकिण्ण'-नष्ट शिरः करिकलेवराकीर्णः-नष्टानि शिरांसि येषामेतादृशा ये करिणः=हस्तिनः, तेषां यानि कलेवराणि=शरीराणि तैः आकीर्णः=व्याप्तः, 'पडियपहरण'-पतितप्रहरणः-पतितानि प्रहरणानि=शस्त्रास्त्राणि यस्मिन् स तथा, 'विकिण्णाभरण'-विकीर्णाभरण.-विकीर्णानि=इतस्ततो विक्षिप्तानि आभरणानि=मृतयोधानाम् अलङ्करणानि यस्मिन् स तथा, एतादृशो भूमिभागो यस्मिन् स तथा तस्मिन्, 'नच्चतकबंधपउरे' नृत्यत्कबन्धप्रचुरे=नृत्यन्तः कबन्धाः=मस्तकरहितकलेवराणि, प्रचुरा यत्र स तथा तत्र, 'भयकरवायसपरिलितगिद्धमडलभमतछायधयारगभीरे' भयङ्करवायसपरिलीयमानगृध्रमण्डलभ्रमच्छायान्धकारगम्भीरे=तत्र भ्रमताम्=आकाशे पर्यटतां भयङ्करवायसानां-भयकरकाकानां तथा परलीयमानानां=गतिविशेषैरुड्डीयमानानां गृध्राणां च यन्मण्डलं=समूहः, तस्य छायया योऽन्धकारस्तेन गम्भीरे=घनीभूते घनान्धकारयुक्ते सग्रामे अतिपतन्ति राजानः परधनलुब्धा इति पूर्वेण सम्बन्धः॥७॥

(नट्ठसिरकरिकलेवराकिण्णे) तथा जो छिन्नमस्तकवाले हाथियों के कलेवरों से व्याप्त है, (पडियपहरण) जहां प्रहरण-अस्त्रशस्त्रादिक इधर उधर पड़े हुए हैं, तथा (विकिण्णाभरण) मारेगये दूसरे कितनेक योधाओं के पडे हुए आभरणों से व्याप्त ऐसे (भूमिभागे) भूमिभाग वाले सग्राम में (नच्चतकबधपउरे) तथा जहां पर योद्धाओं के कबध (धड) प्रचुररूप में नृत्य कररहे हैं, (भयकरवायसपरिलित्तगिद्धमडलभमतछायधयारगभीरे) तथा जो आकाश में उडते हुए भयकर कौवों की, एव परिलीयमान-गतिविशेषो से उड्डीयमान-गिद्धों की छायाजन्य अधकार से गभीर बन रहा है ऐसे सग्राम मे परधनलुब्ध बने हुए राजा लोक उतरते हैं ॥ सू०७ ॥

અને ફાટેલી ધજાઓ તથા ભાગેલા શ્રેષ્ઠ રથો પડયા છે "नट्ठसिरकरिकलेवराकिण्ण" તથા જે છેદાયેલા મસ્તકવાળા હાથીઓના કલેવરોથી છવાયેલ છે, "पडियपहरण" જ્યા અસ્ત્ર-શસ્ત્રાદિ અહી તહીં પડેલા છે, તથા "विकिण्णाभरण" મરી ગયેલા કેટલાક યોદ્ધાઓના આભૂષણોથી જે છવાયેલ છે, "भूमिभागे" એવા ભૂમિભાગ વાળા સગ્રામમા "नच्चतकबधपउरे" તથા જ્યા યોદ્ધાઓના ધડ અતિશય નૃત્ય કરી રહેલ છે, "भयकरवायसपरिलित्त गिद्धमडलभमतछायधयारगभीरे" તથા જે આકાશમા ઉડતા ભયકર કાગડાઓની તથા પરિલીયમાન-વિશિષ્ટ ગતિથી ઉડતા ગીધોની છાયાને કારણે ઉત્પન્ન થયેલ અધકારથી ગભીર દેખાય છે, એવા સગ્રામમા પરધન પ્રાપ્ત કરવાની લાલસા વાળા રાજાઓ ઉતરે છે ॥ સૂ૦૭॥

ओखुभियलुलियखोखुम्भमाणपक्खलियचलियविउलजलचक्क-वालमहानइवेगतुरियआपूरमाणगभीरविउलआवत्तचंचलभममा-णगुप्पमाणुच्छलतपच्चोणियतपाणिय – पहावियखरफरुसपयंड वाउलियसलिलफुट्टतवीचिकल्लोल सकुल, महामगरमच्छकच्छभो-हारगाहतिमिसुंसुमारसावयसमाहय समुद्दायमाणयपूघोरपउरं॥९॥

टीका—अपि च परद्रव्यहरानराः ' रयणागरसागर च ' रत्नाकरसागर च= रत्नानामाकरः-निधिभूतो य' मागर ममुद्रस्त मविश्य तन्मध्ये गत्वा पोतान् घ्नन्ति, इत्यग्रेण सम्बन्ध , कीदृश सागरम् ? इत्याह–' उम्मीसहस्समालाकुलविगय-पोयकलकलतकलित ' ऊर्मिसहस्रमालाकुलविगतपोतकलकलकलितम् = ऊर्मीणां= तरङ्गाणा सहस्रमालाभि =सहस्रसख्यकपक्तिभिराकुलत्वात् विगताः – भग्नाः ये पोताः=नौकाः ' जहाज–' स्टीमर ' इति प्रसिद्धा तेषा=तत्र स्थिताना व्यापारि

' अदत्तादान किस प्रकार किया जाता है ? ' अब सूत्रकार इस बात को समझाते हैं—' रयणागर ' इत्यादि ।

टीकार्थ—पर के द्रव्य को हरण करने में तत्पर बने हुए मनुष्य चोर (रयणागरसागर च) रत्नो के निधिभूत समुद्र में घुस कर के– उसके मध्य में जाकर के जहाजो को नष्ट कर देते हैं, इस प्रकार का सबध यहा लगा लेना चाहिये । अब सूत्रकार समुद्र का वर्णन करते हैं– (उम्मीसहस्समालाकुलविगयपोयकलकलतकलित) हजारों लहरों के समूह से आकुल होने के कारण जहा पर व्यापारी आदि जनो के जहाज नष्ट हो जाते हैं, और इसी कारण उन जहाजों पर बैठे हुए व्यक्तियो

' અદત્તાદાન–ચોરી કયી રીતે કરાય છે " એ વાતને સૂત્રકાર હવે સમ જાવે છે–" रयणागर " ઇત્યાદિ

પરધનને હરી લેવાને આતુર બનેલો મનુષ્ય–ચોર " रयणागरसागर च " રત્નોના નિધિ એવા સમુદ્રની વચ્ચે જઈને જહાજોને ડૂબાવી દે છે, એવો સબધ અહીં જોડવાનો છે–હવે સૂત્રકાર સમુદ્રનુ વર્ણન કરે છે–

" उम्मीसहस्समालाकुलविगयपोयकलकलतकलित " હજારો મોજાઓના સમૂહના આક્રમણને કારણે જ્યા વ્યાપારી આદિ લોકોના જહાજો નાશ પામે છે, અને તે કારણે તે જહાજોમા બેઠેલા લોકોના કકળાટથી જે યુક્ત બનેલ છે,

सङ्घाः=पदातिरूपचौरसमूहाः, 'सेणावइचोरवदपागड्डिया य' सेनापतिचौरवृन्द प्रकर्षका=सेनापतिचौरसमूहयुक्ताश्च 'अडविदेसदुग्गवासी' अटवीदेशदुर्गवासिनः=अटवीदेशे=अरण्यदेशे यानि दुर्गाणि=जलस्थलरूपाणि दुर्गमस्थानानि तेषु निवासिनः 'कालहरियरत्तपीयसुक्किलअणेगसयचिंधपट्टबधा' कालहरितरक्तपीत शुक्लानेकशतचिन्हपट्टबन्धाः = कृष्णहरितरक्तपीतशुक्लवर्णा अनेकशतसख्यका ये चिहपट्टास्तेषा बध=मस्तकादौ बन्धन येषा ते तथा 'धणस्स' धनस्य=पर द्रव्यस्य 'कज्जे' कार्ये=अर्थाय 'लुद्धा' लुब्धाः=लोलुपाः सन्तः 'परविसए' परविषयान्=अन्यभूपदेशान् 'अभिहणति' अभिघ्नन्ति=विनाशयन्ति ॥ सू०८॥

पुनरदत्तादान कथ कुर्वन्ति ? तदाह—'रयणागर' इत्यादि—

मूलम्—रयणागरसागर च उम्मीसहस्समालाऽऽकुलविगयपोयकलकलतकलितं, पायालकलससहस्सवायवसवेगसलिलउद्धम्ममाणदगरयरयधयार, वरफेणपउरधवलपुलपुलसमुट्ठियाट्टहास, मारुयविक्खुब्भमाणपाणियजलमालुप्पलहुलिय अवियसमत-

चोरसघा) पदातिरूप चौरसमूह कि जिसमें (सेणावइ चोरवदपागड्डिया य) सेनापति एव चौरों का जत्था एकत्रित रहता है, तथा (अडवीदेसदुग्गवासी) जो जगल के बीचमे जितने भी प्रायः दुर्गमस्थान होते हैं–चाहे वे जलरूप हो या थलरूप हो–उनमे रहते है तथा (कालहरियरत्तपीयसुक्किलअणेगसकचिंधपट्टबधा) कृष्ण, हरित, रक्त, पीत, शुक्ल, वर्णवाले सैकडों चिह्नपट्टों को जो अपने मस्तक ऊपर बाधा करते हैं ऐसे वे पदातिरूप चौर समुदाय (धणस्स कज्जे) पर के द्रव्य में (लुद्धा) लोलुप होकर (परविसए) अन्य राजाओ के देशो को (अभिहणति) विनाश करते है ॥ सू०८॥

ચોર સમૂહ કે જેમા "सेणावइचोरवदपागड्डिया य" સેનાપતિ અને ચોરાનો સમૂહ એકત્ર રહે છે, તથા "अडवीदेसदुग्गवासी" જે જ ગલની વચ્ચે જેટલા દુર્ગમ સ્થાનો હોય છે-પછી તે જળરૂપ હોય કે સ્થળરૂપ-તેમા રહે છે, તથા "कालहरियरत्तपीयसुक्किलअणेगसयचिंधपट्टबधा" કાળા, લીલા, લાલ, પીળા, સફેદ આદિ રગની સેકડો પટ્ટીઓને જે પોતાના મસ્તક ઉપર બાધે છે, એવો પદાતિ-પગપાળો-ચોર સમુદાય "धणस्स कज्जे" પરધનમા 'लुद्धा" લોલુપ થઈ ને "परविसए" અન્ય રાજાઓના દેશોને "अभिहणति" વિનાશ કરે છે ॥ સૂ-૮॥

पक्खलिय – चलिय–विपुलजलचक्कवाल–महानईवेग–तुरिय आपूरमाण–गभीर–विपुल–आवत्त–चचल–भममाण–गुप्पमाणु–च्छलत–पच्चोणियत – पाणिय–पधावियखर–फरुस–पयड–वाउलिय–सलिल–फुट्टत–वीचि–कल्लोल–सकुल ' समन्ततः क्षुभितलुलितचोक्षुभ्यमाणप्रस्खलितचलितविपुलजलचक्रवालमहानदीवेगत्वरितापूर्यमाणगभीरविपुलावर्त्तचञ्चलभ्रमद्गोप्यमानोच्छलत्प्रत्यवनिवृत्तपानीयप्रधावितखरपरुषप्रचण्डव्याकुलितसलिलस्फुटद्वीचिकल्लोलसङ्कुलम् , तत्र ' समतओखुभिय ' समन्ततः क्षुभित=पवनाऽऽघातेन सर्वतो व्याकुलित ' लुलिय ' लुलित च तटप्रदेशप्राप्त तथा ' खोखुब्भमाण ' चोक्षुभ्यमाणम्=अतिशयेन पुन' पुनर्वा महामत्स्यादिभिर्व्याकुलीक्रियमाण ' पक्खलिय ' प्रस्खलित = पर्वतादीना महाशिलादिव्याघातेन स्खलित पश्चात् ' चलिय ' चलित=स्वस्थानाद् गमन प्रवृत्त ' विउल ' विपुल=विस्तीर्ण ' जलचक्कवाल ' जलचक्रवाल=जलसमूहः यत्र ताः — क्षुभितलुलितचोक्षुभ्यमाणप्रस्खलितचलितविपुलजलचक्रवालास्तथाविधाश्च या ' महानईवेग ' महानद्याः=गङ्गायमुनाद्यास्तासा वेगैः ' तुरिय ' त्वरित =शीघ्रम् ' आपूरमाण ' आपूर्यमाणो यः सागरः स तथा । गभीराः=आगाधाः विपुलाः=विशालाः ये ' आवत्त ' आवर्त्ताः=चक्राकारजलभ्रमाः तथा चञ्चल यथास्यात्तथा ' भममाणा ' भ्रमन्ति 'गुप्पमाणा ' गोप्यमानानि=व्याकुली भवन्ति

से चारों तरफ क्षुब्ध हुआ (लुलिय) तट प्रदेश को प्राप्त हुआ–तटतक पहुँचा हुआ (खोक्खुब्भमाण) महामत्स्यादि जलचर जन्तुओं से व्याकुल किया गया (पक्खलिय) पर्वतादि की महाशिलाओं आदि के आघात से स्खलित हुआ फिर (चलिय) चलित–स्वस्थान से चलित हुआ (विउला) विस्तीर्ण (जलचक्कवाल) जलसमूह जहां है ऐसी (महानईवेगो) गगा यमुना आदि महानदी के वेगो से (तुरिय) त्वरित–शीघ्र (आपूरमाण) जो भरा जा रहा है । तथा जो (गभीर) अगाध (विउल) विशाल (आवत्त) आवर्तों – (चक्राकार जलभ्रमणों) से तथा (चचल) चपल (भममाण) घूमते हुए (गुप्पमाण) व्याकुल हुए

ચોમેર ક્ષુબ્ધ થઈને " लुलिय " તટપ્રદેશ સુધી પહોચીને " खोक्खुब्भमाण " મહામત્સ્યાદિ જળચર જીવો દ્વારા વ્યાકુળ કરાયેલ " पक्खलिय " પર્વતાદિની મહાશિલાઓ આદિના આઘાતથી સ્ખલિત થઈને પછી " चलिय " ચલિત–સ્વસ્થાનથી ચલિત થઈને " विउल " વિસ્તીર્ણ " जलचक्कवाल " જળસમૂહ જ્યા છે એવી ' महानईवेगो ' ગ ગા યમુના આદિ મહાનદીઓના વેગથી ' तुरिय ' ઝડપથી ' आपूरमाण ' જે ભરાઈ રહેલ છે તથા જે ' गभीर' અગાધ ' विउल " વિશાળ " आवत्त " વમળોથી તથા " चचल " ચપળ " भममाण " ઘૂમતા

प्रभृतीनां कलकलेन=कोलाहलेन कलित=युक्तम्, 'पायालकलससहस्सवायवसवेगसलिलउद्धम्ममाणदगरयरयधयार' पातालकलशसहस्रवातवशवेगसलिलोद्धम्यमानोदकरजोरयाऽन्धकार = तत्र 'पायालकलससहस्स' पातालकलशाना यानि सहस्राणि तै 'वायवसवेग' वातवशात्=वायुवशाद् वेगयुक्त यत् 'सलिलउद्धमाणदगरयरयधयारे' तत्र सलिल=समुद्रजल तस्मादुद्धम्यमानम्=उच्छलद् यदुदकरज=जलविन्दुस्तस्य रयो वेगस्तेनाऽन्धकारो यत्र स तथा तम्, 'वरफेणपउरधवलपुलपुलसमुट्ठियाट्टहास' वरफेनप्रचुरधवलपुलपुलसमुत्थिताट्टहास = वरफेनः =वरः= अतिस्वच्छः फेनः 'समुद्र झाग' इति प्रसिद्ध स प्रचुरो धवल' = श्वेतवर्णः 'पुलपुल' इति निरन्तर समुत्थित =उद्गत स एव अट्टहासो यत्र स तथा त फेन हासयोः शुक्लत्वेन साम्याद् रूपकालङ्कारेण निरुपितम् । 'मारुयविक्खुभमाण पाणियं' मारुतविक्षोभ्यमाणपानीय मारुतेन=वायुना विक्षोभ्यमाणम्=आलोड्यमान पानीय यत्र स तथा त 'जलमालुप्पलहुलिय' जलमालोत्पलहुलिय=जलमालाना =नीरतरङ्गाणामुत्पलः=समूह 'हुलिय' शीघ्र=पुनः पुनस्तरङ्गान्तरमुत्पद्यमान यत्र स तथा त 'अवि य' अपि च 'समतओक्खुभिय – लुलिय – खोक्खुभमाण-

के कल कल शब्द से जो युक्त हो रहा है, तथा (पायालकलससहस्स) सैकडों पाताल कलशो के (वायुवसवेग) वायु के सयोग से वेगयुक्त बने हुए (सलिल उद्धम्ममाणदगरयरयधयार) जल की उछलती हुई बून्दो के समुदाय से जो अंधकार युक्त जैसा बना हुआ है, (वरफेण-पउर-धवल-पुलपुल-समुट्ठियाट्टहास) जो अपने स्वच्छ प्रचुर धवल वर्ण वाले फेन से मानों निरन्तर हँस ही रहा है, तथा (मारुयविक्खुभमा णपाणिय) वायु से जिसका जल आलोडयमान हो रहा है, तथा (जल मालुप्पलहुलिय) जिसमें पानी का समूह जल्दी से दूसरी तरग उत्पन्न कर रहा है, (अविय) तथा जो (समतओ खुभिय) पवन के आघात

તથા "पायालकलससहस्स" સેકડો પાતાળ કળશોના "वायुवसवेग" વાયુના સયોગથી વેગયુક્ત બનેલ "सलिलउद्धम्ममाणदगरयरयधयार" જળના ઉડતા બિન્દુઓના સમુદાયથી જે અંધકાર યુક્ત બનેલ છે, "वरफेण-पउर-धवल पुल पुल-समुट्ठियाट्टहास" જે પોતાના સ્વચ્છ અને અત્યત સફેદ રગના ફીણ વડે જાણે નિરતર હસી રહ્યો છે, તથા "मारुयविक्खुभमाणपाणिय" વાયુથી જેનુ પાણી કપી રહ્યુ છે– ગતિમાન બન્યુ છે તથા "जलमालुप्पलहुलिय" જેમા પાણીનો સમૂહ જલ્દીથી એક તરગમાથી બીજુ તરગ–(મોજુ) ઉત્પન્ન કરી રહેલ છે, "अविय" તથા જે "समतओखुभिय" પવનના આઘાતથી

गर-मच्छ-कच्छ-मोहारगाह-तिमि-सुसुमार-सावय-समाहय समुद्धायमाणय-पूर-घोरपउर' महामकरमत्स्यकच्छपोहारग्राहतिमिशिशुमारश्वापदसमाहतसमुद्धावत्पूरघोरप्रचुर महान्तो मकराः, तथा मत्स्याः कच्छपाश्च 'उहार' इति जलचरविशेषाः ग्राहास्तिमयः शिशुमाराः श्वापदकाश्च सर्वे जलचरविशेषा ते च ते समाहताः=परस्पर सङ्घर्षं प्राप्ताः समुद्धावतः=अन्यान् स्वस्मान्निर्बलान् जन्तून् हन्तु धावन्तो ये पूराः=समुदाया ते च ते घोराः=भयङ्कराः प्रचुराः यस्मिन् स तथा तमेवविध महासागर धनार्थं गत्वा घ्नन्ति पोतानिति च वक्ष्यमाणेन सम्बन्ध ॥९॥

पुन कीदृश सागरमित्याह—'कायर' इत्यादि ।

मूलम्—कायरजणहिययकंपण घोर मारसंत महब्भयं भयंकरं पडिभय उत्तासणगं अणोरपार आगास चेव निरवलव उप्पा-

---

घूमते रहते हैं जिससे वह व्याकुल जैसा होता रहता है, आकाश में उछलता रहता है, और पुनः ऊपर से नीचे आ जाता है। तथा जो शीघ्र उद्भूत वेगातिशय से अतिकर्कश, प्रचड, व्याकुलित–मथित किया है पानी जिन्हों ने एव परस्पर सघर्ष को प्राप्त होकर विच्छेद को प्राप्त हुई ऐसी लहरों से सकुलित बना रहता है, (महामगरमच्छकच्छभोहारगाहतिमिसुसुमारसावयसमाइयसमुद्घायमाणपूरघोरपउर) तथा बडे २ मकर, मत्स्य, कच्छप, उहार, ग्राह, तिमि, शिंशुमार, श्वापद, आदि जलचर जन्तुविशेष जिसमें परस्पर सघर्ष को प्राप्त होते रहते हैं और अपने से निर्वलों को मारने के लिये सदा जिसमें दौड़ते रहते हैं ऐसे महासागर में धन की लालसा से जाकर चोर लोग जहाजों को नष्ट कर डालते हैं ॥ सू०९ ॥

થઈને વારવાર આમ તેમ ફર્યા કરે છે જેથી તે જાણે વ્યાકુળ રહે છે, આકાશમા ઉછળતુ રહે છે અને ફરી પાછુ નીચે આવીને પડે છે તથા જે શીઘ્ર ઉત્પન્ન થયેલ અતિશય વેગને લીધે અતિ કર્કશ, પ્રચડ, વ્યાકુલિત, પાણીનુ મથન કરનાર, અને એક બીજા સાથે અથડાઈને વિચ્છેદ પામેલ મોજાઓથી વ્યાપ્ત રહે છે "महामगरमच्छकच्छभोहारगाहतिमिसुसुमारसावयसमाइयसमुद्घायमाणपूरघोरपउर" તથા મોટા મગરો, મત્સ્ય, કાચબા, ઉહાર, ગ્રાહ, તિમિ, શિશુમાર, શ્વાપદ, આદિ જળચર પ્રાણીઓ જેમા પરસ્પર અથડામણમા આવ્યા કરે છે, અને પોતાના કરતા નિર્બળને મારવાને માટે સદા દોડતા હોય છે, એવા મહાસાગરમા જઈને ચોરલોકો ધનની લાલચથી જહાજોનો નાશ કરે છે ॥ સૂ૦૯ ॥

' उच्छलत ' उच्छलन्ति आकाशे उत्पतन्ति पुनः ' पचोणियत ' मत्यवनिवृत्तानि= अधोगच्छन्ति च यानि ' पाणिय ' पानीयानि प्राणिनो वा यत्र स तथा 'पधाविय' प्रधाविताः=शीघ्र गताः ' खरफरुस ' खरपरुषाः=वेगातिशयाद् अतिकर्कशाः ' पयड ' प्रचण्डाः=दारुणा ' वाउलियसलिल ' व्याकुलित सलिलाः=व्याकुली- कृतानि उन्मथितानि सलिलानि=जलानि यैस्ते तथा ' फुट्टत ' स्फुटन्त =परस्पर सङ्घर्षे प्राप्य विच्छेद गच्छन्तश्च ये ' वीचिकल्लोलसकुल ' वीचयः=तरङ्गाः कल्लोलाः=महातरङ्गास्तैः सङ्कुलो य स तथेति पूर्वेषा कर्मधारयस्त तथाविध 'महासा

(उच्छलत) आकाश में उछलते हुए (पच्चोणियत) फिर नीचे गिरते हुए (पाणिय) पानी अथवा प्राणी जिन में है ऐसी, तथा (पधाविय) शीघ्रता से उठी हुई (खरफरुस) अतिवेग से अत्यन्त कठोर (पयड) दारुण-भयकर अतएव (वाउलियसलिल) जल को मथित जैसा कर दिया ऐसी, तथा (फुट्टत) परस्पर के सघर्षसे विच्छिन्न-जुदी जुदी हुई ऐसी (वीचिकल्लोल) छोटी बड़ी तरगों से (संकुल) व्याप्त ऐसे , समुद्र को, अर्थात्-जो गंगा यमुना आदि नदियों के वेगों से कि जिनका विपुल जल चक्रवाल-समूह पवन के आघात से सर्वतः व्याकुलित होता रहता है, और तटप्रदेश तक आता रहता है, तथा महामत्स्य आदि जलचर जानवर जिसे अत्यत चचल बनाते रहते हैं, एव जो पर्वत आदिकों की महाशिलाओं पर आघातयुक्त होकर अपने स्थान से आगे को बढ़ता रहता है, तथा जो गंभीर एव विपुल आवर्त्तों से सदा व्याप्त बना रहता है, तथा जिसमें चचल होकर पानी अथवा प्राणी बार २ इधर से उधर

" गुप्पमाण " વ્યાકુળ " उच्छलत " આકાશમા ઉછળતા " पच्चोणियत " અને ફરી પાછા નીચે પડતા " पाणिय " પાણી અથવા જેમા પ્રાણી છે, એવા તથા " पधाविय " ઝડપથી ઉત્પન્ન થતા, " खरफरुस " અતિવેગને કારણે અતિ શય કઠોર અને " पयड " દારુણ હોવાને કારણે " वाउलियसलिल " પાણીનુ મન્થન કરાતુ હોય એવા, તથા "फुट्टत" એક બીજા સાથે અથડાવાથી વિચ્છિન્ન થતા " वीचिकल्लोल " નાના મોટા મોજાઓથી " सकुल " વ્યાપ્ત એવા સમુ દ્રને, એટલે કે જે ગ ગા યમુના આદિ નદીઓના વેગથી કે જેમનુ વિપુલ જળ ચક્રવાતના આઘાતથી સર્વત વ્યાકુલિત થતુ રહે છે, અને તટપ્રદેશ સુધી આવતું રહે છે તથા મહામત્સ્ય આદિ જળચર પશુઓ જેને અતિશય ચના- વતા રહે છે, અને જે પર્વત આદિના જે મહાશિલાઓ સાથે અથડાઈને પોતાના સ્થાનથી આગળ વધતુ રહે છે, જલ્દી ભરાતુ રહે છે, તથા જે ગ ભીર અને વિશાળ વમળોથી હમેશા વ્યાપ્ત રહે છે, તથા જેમા પાણી અને પ્રાણી ચ ચળ

'उत्तासणग' उत्रासनक=चित्तक्षोभकारकम् 'अणोरपार' अनर्वाक्पारम्=अलब्धापारपर्यन्तं 'आगास चेव निरवलंब' आकाशमिव निरवलम्बम् आधार-रहितं तत्र पतद्भिर्न किञ्चिदालम्बनमुपलभ्यते इति भावः, उप्पाइय पवणधणियणोल्लिय उवरुवरितरगदरियअइवेग ' तथा औत्पातिकपवनघनोदितोपर्युपरितरङ्गदृप्तातिवेगम्=औत्पातिकेन = उत्पातजनितेन पवनेन=वायुना='धणिय' इति अत्यन्त नोदिताः=प्रेरिताः उपर्युपरि=उर्ध्वोर्ध्वं ये तरङ्गास्ते च ते दृप्ताः=गर्विता इव अतिवेगा =महावेगाः यत्र स तथा त उत्पातजनितपवनेन अतिवेगतरङ्गयुक्तमतएव 'चक्खुपहमोच्छरत' चक्षुष्पथमवस्तृणन्त चक्षुष्पथ=दृष्टिपथम् अवस्तृणन्तम्=आच्छादयन्त द्रष्टुमप्यशक्य किं पुनस्तर्तुमित्यर्थः, तथा 'कत्थइ' कुत्रचित् क्वचित्प्रदेशे गम्भीर =अलब्ध मध्य पुनः 'विउलगज्जियगुंजियनिग्घायगरुयनिवडियसुदीहनीहारिदूरसुच्चतगभीरधुगधुगतिसद्द' विपुलगर्जितगुञ्जितनिर्घातगुरुकनिपतितसुदीर्घनिर्ह्रादिदूरश्रूयमाणगम्भीरदुगधुगितिशब्द = तत्र विपुल = विशाल गर्जित = मेघवद् ध्वनि तथा गुञ्जित=

भय का प्रतिस्वरुप बना रहता है (उत्तासणग) चित्त में जिसे अवलोकन कर क्षोभ हो जाता है, (अणोरपार) जिसका दूसरा तट अलब्ध होता है (आगास चेव निरविलंब) आकाश की तरह जिसमे प्राणियो को पड़ जाने पर कोई भी आधार प्राप्त नही होता है, (उप्पाइयपवण) उत्पात जनित पवन से (धणिय णोल्लिय) अतिशय वेगशाली होकर (उवरुवरि) एक दूसरे के ऊपर पड़ती हुई (तरगदरिय) गर्वित तरगों से (अइवेगं) अत्यतवेग हो रहा है। (चक्खुपहमोच्छरत) जिसका देखना भी अशक्य है तो फिर वहा तैरने की तो बात ही क्या है (कत्थइगभीर) कीसी २ प्रदेश में जो बहुत ही अधिक गभीर

અને તેથી જ " भयकर " ભયની પ્રતિમૂર્તિ લાગે છે, " उत्तासणग " જેનુ અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, " अणोरपार " જેનો બીજો કિનારો અપ્રાપ્ય હોય છે-જેનો પાર પામવો દુષ્કર છે, " आगासचेव निरवलंब " આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પડી જતા કોઈપણ આધાર મળતો નથી "उप्पाइय पवण " ઉત્પાત જનિત પવનથી " धणिय णोल्लिय " અતિશય વેગમા આવી જઈને " उवरुवरि " એક બીજાના ઉપર પડતા " तरगदरिय " ગર્વિત મોજાઓથી " अइवेग " જે અત્યત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, " चक्खुपहमोच्छरत " જેને જોઈ શકવો પણ અશક્ય છે તો ત્યા તરવાની તો વાત જ ક્યા છે! " कत्थइगभीर " કોઈ કોઇ પ્રદેશમા જે ઘણો વધારે ગભીર હોય છે,

इय पवणधणियणोल्लियउवरुवरितरगदरियअइवेगचक्खुपह- मोच्छरंत करथइगभीरविउलगज्जियगुंजियनिग्घायगरुय- निवडियसुदीह नीहारिदूरसुच्चतगभीरधुगधुगति सद्दंपडिपह- रुभंतजक्खरक्खसकुहडपिसायरुसियतज्जायउवसग्गसहस्ससं कुल वहूप्पाइयभूय 'विरइयवलिहोमधूवउवयारदिण्णरुहिर ऽच्चणाकरणपजयजोगपययचरियं परियतजुगंतकालकप्पोवमं दुरंतमहानईवइमहाभीमदरिसणिज्जं दुरणुचरं विसमप्पवेस दुक्खुत्तारं दुरासय लवणसलिल पुण्णं असियसिय समुच्छियगेहिं हत्थतरगेहिं वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमज्झे हणंति गतूण जणस्स पोरा परदव्वहरा नरा निरणुकपा णिरवेक्खा ॥सू० १०॥

टीका—'कायरजणहियय कपण' कातरजनहृदयकम्पन=कातरजनाना = भीरुपुरु षाणा हृदयस्य कम्पन=कम्पकारक घोर=भयङ्कर यथास्यात्तथा आरसन्त=शब्दाय मान—शब्द कुर्वन्त कोलाहलसङ्कुलमित्यर्थः। 'महब्भय' महाभय=अत्य न्तभयजनकम्, अत एव भयङ्कर 'पडिभय' प्रतिभय=प्रतिप्राणिन भयोत्पादकम्

फिर यह समुद्र कैसा है सो कहते हैं—'कायरजण' इत्यादि।

टीकार्थ—जो समुद्र (कायरजणहिययकपण) कायरजनों के हृदय को कॅपा देता है (घोर) भयकर होकर जो (आरसत) शब्दायमान होता है (महब्भय) देखते ही जिसे लोगों को भय का सचार होने लग जाता है (पड्भिय) हर एक प्राणी का रोम २ जिसकी आकृति के समक्ष भय के मारे खडा हो जाता है, और इस लिये जो (भयकर)

તે સમુદ્ર કેવો હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરે છે—"कायरजण०" ઇત્યાદિ

જે સમુદ્ર "कायरजणहिययकपण" "घोर" કાયર લોકોના હૃદયને કપાવી દે છે, "घोर" ભયકર રીતે જે "आरसत" ઘુઘવાટ કરે છે, "महब्भय" જેને જોતા જ લોકોના દિલમા ભય ઉત્પન્ન થાય છે, "पडिभय" જેનો દેખાવ જોતા જ ભયથી દરેક પ્રાણીઓના રુવાટા ખડા થઇ જાય છે,

'उत्तासणग' उत्रासनक=चित्तक्षोभकारकम् 'अणोरपार' अनर्वाक्पारम्=अलब्धापारपर्यन्तं 'आगास चेव निरवलंब' आकाशमिव निरवलम्बम् आधाररहित तत्र पतद्भिर्न किञ्चिदालम्बनमुपलभ्यते इति भावः, उप्पाइय पवणधणियणोल्लिय उवरुवरितरंगदरियअइवेग' तथा औत्पातिकपवनघनोदितो पर्युपरितरङ्गदृप्तातिवेगम्=औत्पातिकेन = उत्पातजनितेन पवनेन=वायुना= 'धणिय' इति अत्यन्त नोदिताः=प्रेरिताः उपर्युपरि=उर्ध्वोर्ध्वं ये तरङ्गास्ते च ते दृप्ताः=गर्विता इव अतिवेगा =महावेगाः यत्र स तथा त उत्पातजनितपवनेन अतिवेगतरङ्गयुक्तमतएव 'चक्खुपहमोच्छरत' चक्षुष्पथमवस्तृणन्त चक्षुष्पथ= दृष्टिपथम् अवस्तृणन्तम्=आच्छादयन्त द्रष्टुमप्यशक्य किं पुनस्तर्तुमित्यर्थः, तथा 'कत्थइ' कुत्रचित् क्वचित्प्रदेशे गम्भीर = अलब्ध मध्य पुनः 'विउलगज्जियगुंजियनिग्घायगरुयनिवडियसुदीहनीहारिदूरसुच्चतगंमीरधुगधुगतिसद्द' विपुलगर्जितगुञ्जितनिर्घातगुरुकनिपतितसुदीर्घनिर्हादिदूरश्रूयमाणगम्भीरदुगधुगितिशब्द = तत्र विपुल = विशाल गर्जित = मेघवद् ध्वनि तथा गुञ्जित=

भय का प्रतिस्वरूप बना रहता है (उत्तासणगं) चित्त में जिसे अवलोकन कर क्षोभ हो जाता है, (अणोरपार) जिसका दूसरा तट अलब्ध होता है (आगास चेव निरविलंब) आकाश की तरह जिसमे प्राणियो को पड़ जाने पर कोई भी आधार प्राप्त नहीं होता है, (उप्पाइयपवण) उत्पात जनित पवन से (धणिय णोल्लिय) अतिशय वेगशाली होकर (उवरुवरि) एक दूसरे के ऊपर पड़ती हुई (तरगदरिय) गर्वित तरगो से (अइवेगं) अत्यतवेग हो रहा है। (चक्खुपहमोच्छरत) जिसका देखना भी अशक्य है तो फिर वहा तैरने की तो बात ही क्या है (कत्थइगभीर) कीसी २ प्रदेश में जो बहुत ही अधिक गभीर

અને તેથી જ "भयकर" ભયની પ્રતિમૂર્તિ લાગે છે, "उत्तासणग" જેનુ અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, "अणोरपार" જેનો બીજો કિનારો અપ્રાપ્ય હોય છે-જેનો પાર પામવો દુષ્કર છે, "आगासचेव निरवलंब" આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પડી જતા કોઈપણ આધાર મળતો નથી "उप्पाइय पवण" ઉત્પાત જનિત પવનથી "धणिय णोल्लिय" અતિશય વેગમા આવી જઈને "उवरुवरि" એક બીજાના ઉપર પડતા "तरगदरिय" ગર્વિત મોજાઓથી "अइवेग" જે અત્યત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, "चक्खुपहमोच्छरत" જેને જોઈ શકવો પણ અશકય છે તો ત્યા તરવાની તો વાત જ કયા છે!

ભીર હોય છે,

भ्रमरगुञ्जितमिव गुञ्जितं तथा निर्घातं व्यन्तरकृतो महाध्वनिः गुरुकनि पतित=विद्युद्विशेषादि सपातेन च जायमानोध्वनिः सुदीर्घः=अत्यर्थं निर्हादी=प्रतिध्वनियुक्तो निर्घोषः दूरश्रूयमाणः=अतिदूरदेशादपि श्रूयमाणः गम्भीरो धुग् धुगिति शब्दश्च यत्र स तथा त 'पडिपहरुभत-जक्खरक्खस कुहड-पिसाय-रुसिय - तज्जायउवसग्गसहस्ससकुल ' प्रतिपथरुन्धानयक्षराक्षसकूष्माण्ड पिशाचरुष्टतज्जातोपसर्गसहस्रसंकुल = तत्र प्रतिपथ=प्रतिमार्गं रुन्धानाः=पथिकानां मार्गावरोधं कुर्वाणा ये यक्षाः राक्षसाः कूष्माण्डाः पिशाचाश्च सर्वे व्यन्तर-विशेषास्ते च ते रुष्टाः=रोषयुक्ता स्तै जातानि यान्युपसर्गसहस्राणि=उपद्रवसहस्राणि तैः सकुलः=व्याप्तो यः स तथा त 'बहूप्पाइयभूय' व 'त्पातिकभूत= बहून्यौत्पातिकानि=उत्पातभवानि दु खानि भूतानि यत्र स तथा त 'विरइय

होता है। तथा (विउलगज्जिय गुंजिय) जिसका मेघ की तरह विशाल गर्जित एव भ्रमरों के जैसा विशाल गुंजित, (निग्घाय) निर्घात-व्यन्तरों की ध्वनि, तथा (गरुयनिवडिय) बिजली आदि का जो इसमें गिरना होता है उस समय मिला हुआ जो अत्यन्त निर्ह्रादी प्रतिध्वनि युक्त विशेष निर्घोष (दूरसुच्चत) दूर से सुनाई देने वाले (गंभीर) गम्भीर (धुगधुगति) 'धुग धुग' ऐसा शब्द, ये (सद्द) शब्द हैं जिसमें, तथा (पडिपहरुभत-जक्ख-रक्खस-कुहड-पिसाय-रुसिय-तज्जायउवसग्गसहस्ससकुल) जो रुष्ट होकर पथिकों के मार्ग का अवरोध करने वाले यक्ष, राक्षस, कूष्माण्ड (व्यन्तरविशेषदेव) एव पिशाचों के हजारों उपसर्गो से सदा व्याप्त रहता है (बहूप्पाइय भूय) तथा जिसमें जीवो को अनेक उत्पातजन्य दुःखों का सामना

તથા "विउलगज्जियगुंजिय" જે મેઘના જેવી મોટી ગર્જના કરે છે અને ભ્રમરો જેવો વિશાળ ગુંજારવ કરે છે, "निग्घाय" નિર્ઘાત—વ્યન્તરોનો મહાધ્વનિ તથા "गरुयनिवडिय" વીજળી આદિ તેમા પડે ત્યારે તેમાથી નીકળતો નિર્હાદી-પ્રતિધ્વનિ યુક્ત નિર્ઘોષ, "दूरसुच्चत" દૂરથી સભળાતો "गभीर" ગભીર "धुगधुगति" "ધુગ ધુગ" જેવો આવાજ, આદિ "सद्द" શબ્દો જેમા સભળાય છે તથા "पडिपहरुभत-जक्ख-रक्खस-कुहड-पिसाय-रुसिय-तज्जाय उवसग्गसहस्ससकुल" જે રુષ્ટ થઈને મુસાફરોના માર્ગનો અવરોધ કરનારા યક્ષ, રાક્ષસ, કુષ્માડ, (व्यन्तर વિશેષ દેવ) અને પિશાચોના હજારો ઉપસર્ગોથી સદા વ્યાપ્ત રહે છે, "बहूप्पाइयभूय" તથા જેમા જીવોને અનેક ઉત્પાત જન્ય દુખોનો સામનો કરવો પડે છે, "विरइय

वलिहोमधूवउवयारदिण्णरुहिरच्चणाकरणपययजोगपययचरिय ' विरचितवलिहोमधूपोपचारदत्तरुधिरार्चनाकरणप्रयतयोगप्रयतचरित = तत्र विरचितः = कृत वलिना=द्रव्योपहारेण होमेन=अग्नौ हवनेन धूपेन-धूपेनचोपचारो यैस्ते तथा दत्त रुधिर=समर्पित शोणित यत्र तदेवभूत यदर्चनाकरण तत्र प्रयताः=तत्परा ये ते तथा, योगप्रयताश्च=पोतादिभिर्व्यापारे निरता ये ते तथा तैः तत्रस्थितै चरितः सश्रितो यः स तथा तमेतादृश सागरम् । पुनः कीदृश ? मित्याह—' परियतजुगतकालकप्पोवम ' पर्यन्तयुगान्तकालकल्पोपम=पर्यन्तयुगस्य=सकलेषु युगेषु मध्ये चरमयुगस्य योऽन्तकालः=प्रलयकाल स एव कल्पस्तेनोपमा=सादृश्य यस्य स तथा त ' दुरतमहानई-नईवइ-महाभीमदरिसणिज्ज ' दुरतमहानदी नदीपति-महाभीमदर्शनीय-दुरन्ताः=दुष्पारा या महानद्यः=गङ्गाद्यानद्यश्च=अन्याः सामान्या-

---

करना पड़ता है (विरइयवलिहोम-धूव-उवयार-दिण्ण-रुहिर-च्चणा-करण-पयय-जोगपययचरिय) तथा (विरइयवलिहोमधूवउवयार) नौकाओंके अटक जाने पर जहा जहाजों से व्यापार करने में लगे हुए मनुष्यों द्वारा-सार्थवाहो द्वारा-विविध प्रकार की भेटे दी जाती है, अग्निमें धूप जलाया जाता है- तथा (दिण्ण रुहिरच्चणाकरणपयय) रुधिर का समर्पण रूप पूजा में लगे हुए ऐसे (जोगपयय) व्यापारी लोगों से (चरिय) सेवित है । तथा (परियत जुगंतकालकप्पोवम) समस्त युगों के मध्य में चरम युग का प्रलयकालरूप कल्प के जैसा तु (दुरतमहानई नईवइ-महाभीम दरिसणिज्ज) (दुरत) जिनका पार करना कठिन है ऐसी (महानई नईवइ) गगा आदि महानदियों का तथा अन्यसाधारण नदियों का जो पति हैं, इसी कारण यह (महाभीमदरिसणिज्ज) देखने

वलिहोम-धूव-उवयार-दिण्ण-रुहिर-च्चणाकरण-पयय-जोगपययचरिय " तथा " विरइयवलिहोमधूवउवयार " नौकाओ अटकी જતા જ્યા વહાણો દ્વારા વેપાર કરનાર લોકો દ્વારા (સાર્થવાહો દ્વારા) વિવિધ પ્રકારની ભેટો દેવાય છે, અગ્નિમા ધૂપ બાળવામા આવે છે, તથા "दिण्णरुहिरच्चणाकरणपयय " રુધિરના સમર્પણ રૂપ પૂજામા લાગેલા એવા ' जोगपयय " વ્યાપારી લોકોથી " चरिय " જે સેવિત છે, તથા " परियतजुगतकालकप्पोवम " જે સઘળા યુગોની વચ્ચે છેલ્લા યુગના પ્રલયકાળરૂપ કલ્પના જેવો છે, " दुरतमहानईनईवइ-महा भीमदरिसणिज्ज " " दुरत " જેને ઓળગવી મુશ્કેલ છે એવી " महानई-नईवइ " ગગા આદિ મહા નદીઓનો તથા બીજી સામાન્ય નદીઓનો જે, પતિ છે, અને તે કારણે જે " महाभीमदरिसणिज्ज " જે દેખાવમા ભયકર

स्तासा ' रह ' पतिः, स च महाभीमदर्शनीयः स तथा त ' दुरणुचर ' दुःखेनाऽनुचर्यते इति दुरनुचर ' विसमप्पवेस ' विषमप्रवेश=विषमः=दुस्साध्य प्रवेशो यस्मिन् स तथा त ' दुक्खुत्तार ' दुःखोत्तार=दुःखेनोत्तरण यस्य स तथा त ' दुरासय ' दुरासद=दुष्प्राप दुराश्रय=दुःखदस्थानरूप ' लवणसलिलपुण्ण ' लवण सलिलपूर्णं = क्षारजलभृतम्, ' असियसियसमुच्छियगेहिं ' असितसितसमुच्छ्रितकैः=तत्र असिताः-कृष्णाः सिताः=शुक्लाश्च पटाः समुच्छ्रितका =उपरि बद्धा येषु प्रवहणेषु तानि तथा तैः 'हत्थतरगेहिं' दक्षतरकैः =अन्य यानपात्रापेक्षयाऽतिशय वेगशीलैः ' वाहणेहिं ' वाहनैः=स्कन्दवाहैः प्रवहणैः ' अइवइत्ता ' अतिपत्य= आक्रम्य ' परदव्वहरा ' परद्रव्यहरा.=परधनापहरणशीलाः ' निरणुकंपा ' निरनुकम्पाः=कृपारहिताः 'णिरवयक्खा' निरपेक्षाः=अपेक्षारहिता' परलोकभयरहिताः नराः=जना ' समुद्दमज्झे ' समुद्रमध्ये ' गतूण' गत्वा जणस्स ' पोत्ते ' पोतान्= नौकान् ' हणति ' घ्नन्ति=विनाशयन्ति ॥ सू-१०॥

में भयकर है (दुरणुचर) तथा जिसमें अनुचरण करना-फिरना बहुत ही आयास साध्य-कठिन है। इसीलिये (विसमप्पवेस) जिसमें प्रवेश करना बहुत कठिन होता है। (दुक्खोत्तार) जिसका पार करना बड़ा मुश्किल होता है (दुरासय) जो सदा दुःखदस्थानरूप है। (लवणसलिलपुण्ण) क्षार जल से सदा भरा रहता है ऐसे समुद्र को (असिय सिय समुच्छियगेहिं) कृष्ण एव शुभ्रवस्त्र जिनके ऊपर बाधा गया है ऐसी (हत्थतरगेहिं) जो अन्य यान पात्रों की अपेक्षा पानी के ऊपर बहुत जल्दी तैरती है ऐसे (वाहणेहिं) नौकाओं द्वारा (अइवइत्ता) आक्रमित करके (परदव्वहरा) परद्रव्य को हरण करने वाले (निरणुकपा) निर्दयी (णिरवयक्खा) जो अपने परभव को सुधार ने की भावना से रहित होते है ऐसे (नरा) चोर मनुष्य (समुद्दमज्झे गतूण)

છે, " दुरणुचर " તથા જેમા ફરવુ અતિશય કઠિન છે, " विसमप्पवेस " જેમા પ્રવેશ કરવો ઘણો મુશ્કેલ છે, " दुक्खोत्तार " જેને ઓળગવો અતિશય મુશ્કેલ છે, " दुरासय " જે સદા દુખદ સ્થાન રૂપ છે, " लवणसलिल पुण्ण " જે ખારા પાણીથી સદા ભરપૂર રહે છે, એવા સમુદ્રને " असियसिय समुच्छियगेहिं " જેમના ઉપર કાળા અને સફેદ વસ્ત્ર બાંધેલા છે એવી " हत्थ तरगेहिं " જે અન્ય વાહનો કરતા પાણી ઉપર વધારે ઝડપથી તરે છે એવી " वाहणेहिं " નૌકાઓ દ્વારા " अइवइत्ता ' આક્રમણ કરીને " परदव्वहरा " પરધનનુ હરણ કરનારા, " निरणुकपा " નિર્દય અને " णिरवयक्खा ' પોતાના પરભવને સુધારવાની ભાવનાથી રહિત એવા ' नरा " ચાર લોકો " समुद्दमज्झे

पुन किं कुर्वन्तीत्याह—'गामागर०' इत्यादि

मूलम्—गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-पट्टणा-समणिगस—जणवए ते य धणसमिद्धे हणंति, थिर हियय-च्छिन्नलज्जा वंदिग्गह—गोग्गहा य गेण्हंति, दारुणमई निक्किवा णिय हणंति छिंदति गेहसंधि निक्खित्ताणि य हरंति, धणधण्णदव्वजायाणि जणवयकुलाण निग्घिणमई पर-दव्वाहिं जे अविरया, तहेव केइ अदिण्णादाणं गवेसमाणं कालाकालेसु संचरंता चितगपज्जलिय—सरसदर—दड्ढकड्ढिय-कलेवरे रुहिरालित्तवयण — अक्खय — खादिय — पीतडाइणि-भमतभयकरे जवुयखिक्खियते घूयकयघोरसद्दे वेयालुट्ठिय विसुद्धकहकहेंत पहसियवीहणग निरभिरामे अइदुब्भिगंधे, वीभच्छदरिसणिज्जे सुसाणे वणे सुण्णघरलेणअंतरावण गिरिकंदरेसु विसमसावय समाउलासु वसहिसु किलिस्संता सीयायवसोसियसरीरा दड्ढच्छवीनिरय तिरिय भवसंकडदुक्ख संभारवेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणिंता दुल्लभभक्खण पाणभोयणापिवासिया झुंझिया किलंतामसकुणिमकंदमूलजं किंचिकयाहारा उव्विग्गा उप्पुया असरणा अडवीवास उवेंति वालसयसंकणीयं ॥ सू० ११ ॥

समुद्र के बीच में जाकर (जणस्स) मनुष्यों की (पोते) नौकाओं को (हणंति) नष्ट कर डालते हैं ॥सू० १०॥

गतूण " સમુદ્રની વચ્ચે જઈને " जणस्स " માણસોની " पोते " નૌકાઓને " हणंति " નાશ કરી નાખે છે ॥ સૂ-૧૦ ॥

टीका—'ते य' ते च=पूर्वोक्तमपहारकजनाः 'गामागरनगरखेडकव्बड-मडवदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवए' ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमनिगमजनपदान्=तत्र ग्रामः, ग्रसति बुद्धयादिगुणानितिग्रामः, आकरः=सुवर्णरजतादि धातूनां खनिस्थान, नगर=अष्टादशकरवर्जित, खेट=धूलिप्राकारमय, कर्बट=अल्पजननिवासस्थान, मडम्ब सार्धक्रोशद्वयग्रामान्तरशून्यः, द्रोणमुख=जलस्थलमार्गौ यत्र भवेत् तद्द्रोणमुख, पत्तन=सकलवस्तुप्राप्तिस्थानम्, आश्रमः=

परद्रव्य हरण करने वाले तस्करजन फिर क्या करते हैं? सो इस सूत्र द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—'गामागर०' इत्यादि।

टीकार्थ—(धणसमिद्धे गामागरनगर खेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवए) धनधान्यादि से समृद्ध हुए ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्वट, मडब, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, निगम एव जनपद, इन सब को (ते य) परद्रव्य हरण करने वाले चोर आदिक (हणंति) नष्ट कर देते हैं। जहा बुद्धयादिगुणों का ह्रास होता है वह ग्राम है। सुवर्ण रजत आदि धातुओं की उत्पत्ति का जो स्थान होता है उसका नाम आकर है। अठारह प्रकार का राजकर जिसमें नहीं लिया जाता है उसका नाम नगर है। धूलिका प्राकार जिसमें होता है उसका नाम खेट है। जिसमें थोड़ेसे मनुष्य निवास करते है उसका नाम कर्वट है। चारो दिशाओंमें अढाई२ कोसतक जिसके आसपासमें गाव नहीं होते है उसका नाम मडब है। जलमार्ग के एव स्थलमार्ग दोनों प्रकारके मार्गसे होकर जिसमें जाया जाता हो उसका नाम द्रोणमुख है। सकल वस्तुओं की प्राप्ति का जो

પરદ્રવ્યનુ હરણ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા તે પ્રગટ કરે છે—"गामागर" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"धणसमिद्धे गामागारनगरखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमणिगम जणवए" ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ બનેલ ગામ, આકર, નગર, ખેટ, કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાનો "तेय" પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે જ્યા બુદ્ધિ આદિ ગુણોનો હ્રાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, ચાદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને આકાર-ખાણ કહે છે અઢાર પ્રકારનો રાજકર જ્યા લેવાતો નથી તેને નગર કહે છે ધૂળનો કિલ્લો જ્યા હોય છે તે સ્થાનને ખેટ કહે છે જેમા થોડા જ માણસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્બટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા ગામ હોતા નથી તેને મડબ કહે છે જ્યા જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઈ શકાય છે તે સ્થાનને દ્રોણમુખ કહે છે જ્યા બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

तापसनिवासः, निगमः=वणिग्जननिवासः जनपदोदेशस्तान 'धणसमिद्धे' धन-समृद्धान्=धनधान्यसम्पन्नान् 'हणति' घ्नन्ति=विनाशयन्ति तथा 'थिरहियया' स्थिरहृदया=अदत्तादाने निश्चलचित्ताः छिन्नलज्जाः=जातिकुलादिलज्जावर्जिताः 'वंदिग्गहगोग्गहा य' वन्दिग्रहगोग्रहाश्च = वन्दिनः स्तुतिपाठोपजीविनस्तेषां ग्रह =ग्रहण गवा च ग्रहण चोरणमित्यर्थ, 'गेण्हति' गृह्णन्ति=कुर्वन्ति तथा 'दारुणमई' दारुणमतयः=घोरकर्माचरणबुद्धय 'निक्कि वा' निष्कृपाः=निर्दयाश्च 'णिय' निज = स्वजनमपि 'हणति' घ्नन्ति = नाशयन्ति तथा गेहसन्धि= गृहभित्तिं 'छिंदति' छिन्दन्ति। ततश्च 'जणवयकुलाण' जनपदकुलानां 'निक्खि

स्थान होता है उसका नाम पत्तन है। तापस लोगों का जो निवास स्थान होता है उसका नाम आश्रम है। वणिग्‌जन जिसमें रहते हों उसका नाम निगम, एव देश का नाम जनपद है। इन स्थानों को लूटने वाले तथा–नष्ट भ्रष्ट करने वाले ये जन (थिरहियया) अदत्तादान करने में निश्चलचित्त रहते हैं (छिन्नलज्जा) इन्हें जाति, कुल आदि की लज्जा कुछ भी नहीं होती है। (वदिग्गहगोग्गहा य) ये स्तुति पाठकों को लूट लिया करते है और गायों को भी चुरा लिया करते हे। (दारुणमई) इनकी मति वडी दारुण (भयकर) होती है–भयकरसे भयकर कर्म करनेमें भी उन्हे सकोच नहीं होता है। (निक्किवा) ये सदा दया से रहित होते हैं। (णिय हणति) अपने निजजन को भी ये जान से मार डालते हैं (गेहसधिं) घरों की भित्तियों तक को भी ये (छिंदति) तोड़ डालते हैं। (जणवयकुलाण) दूसरों की रक्खी हुई–धरोहररूप मे स्थापित की

સ્થાનને પત્તન કહે છે તાપસ લોકના નિવાસસ્થાનને આશ્રમ કહે છે વણિક લોકો જ્યા રહે છે તે નિગમ અને દેશને જનપદ કહે છે તે સ્થાનોને લૂટ-નારા તથા નષ્ટભ્રષ્ટ કરનારા તે લોકો "थिरहियया" અદત્તાદાન–ચોરી કરવાને માટે દૃઢ નિશ્ચયી હોય છે "छिन्नलज्जा" તેમને જાતિ કુળ આદિની સહેજ પણ લાજ હોતી નથી "वदिग्गहगोग्गहाय" તેઓ સ્તુતિ કરનારાને પણ લૂટી લે છે, અને ગાયોને પણ ચોરી જાય છે "दारुणमई" તેમની જાતિ અતિ દારુણ હોય છે-ભયકરમા ભયકર કૃત્ય કરતા પણ તેમને સકોચ થતો નથી "निक्किया" તેઓ સદા દયાહીન હોય છે, "णिय हणति" પોતાના સ્વજનોને પણ તેઓ મારી નાખે છે, 'गेहसधिं" ઘરની દિવાલોને પણ તેઓ "छिदति" ઘરની દિવાલોને પણ તેઓ "छिंदति" તોડી પાડે છે "जणवयकुलाण" બીજાએ અનામત થાપણ તરીકે મૂકેલ "धणधण्णदव्व

टीका—'ते य' ते च=पूर्वोक्तमपराजनाः 'गामागरनगरखेडकब्बड-मडवदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवए' ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमनिगमजनपदान्=तत्र ग्रामः, ग्रसति बुद्ध्यादिगुणानितिग्रामः, आकरः= सुवर्णरजतादि धातूना खनिस्थान, नगर=अष्टादशकरवर्जित, खेट=धूलिप्राकारमय, कर्वट=अल्पजननिवासस्थान, मडम्ब सार्धक्रोशद्वयग्रामान्तरशून्यः, द्रोणमुख= जलस्थलमार्गौ यत्र भवेत् तद्द्रोणमुख, पत्तन=सकलवस्तुप्राप्तिस्थानम्, आश्रमः=

परद्रव्य हरण करने वाले तस्करजन फिर क्या करते हैं ? सो इस सूत्र द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—'गामागर०' इत्यादि ।

टीकार्थ—(धणसमिद्धे गामागरनगर खेडकब्बडमडवदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवए) धनधान्यादि से समृद्ध हुए ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्वट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, निगम एव जनपद, इन सब को (ते य) परद्रव्य हरण करने वाले चोर आदिक (हणंति) नष्ट कर देते हैं । जहा बुद्ध्यादिगुणों का ह्रास होता है वह ग्राम है । सुवर्ण रजत आदि धातुओं की उत्पत्ति का जो स्थान होता है उसका नाम आकर है । अठारह प्रकार का राजकर जिसमें नहीं लिया जाता है उसका नाम नगर है। धूलिका प्राकार जिसमें होता है उसका नाम खेट है । जिसमें थोड़ेसे मनुष्य निवास करते है उसका नाम कर्वट है । चारो दिशाओंमें अढाई२ कोसतक जिसके आसपासमें गाव नही होते है उसका नाम मडव है । जलमार्ग के एव स्थलमार्ग दोनों प्रकारके मार्गसे होकर जिसमें जाया जाता हो उसका नाम द्रोणमुख है । सकल वस्तुओं की प्राप्ति का जो

પરદ્રવ્યનુ હરણ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે ? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા તે પ્રગટ કરે છે—" गामागर " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" धणसमिद्धे गामागारनगरखेडकब्बडमडवदोणमुहपट्टणासमणिगम जणवए " ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ બનેલ ગામ, આકર, નગર, ખેટ, કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાનો " तेय " પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે જ્યા બુદ્ધિ આદિ ગુણોનો હ્રાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, ચાદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને આકાર–ખાણ કહે છે અઢાર પ્રકારનો રાજકર જ્યા લેવાતો નથી તેને નગર કહે છે ધૂળનો કિલ્લો જ્યા હોય છે તે સ્થાનને ખેટ કહે છે જેમા થોડા જ માણુસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્બટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા ગામ હોતા નથી તેને મડબ કહે છે જ્યા જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઇ શકાય છે તે સ્થાનને દ્રોણમુખ કહે છે જ્યા બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

तेषु=प्रदीप्तेषु यानि सरसानि=रुधिरमांसादिसहितानि अतएव दग्धानि=ईषद्भस्मीभूतानि तानि कृष्टानि=श्वशृगालादिभिश्चितातो निष्काशितानि कलेवराणि=मृतकशरीराणि यत्र तत्तथा तत्र श्मशाने। पुनः कीदृशे-' रुहिरलित्तवयणअक्खय खादियपीयडाइणिभमतभयकरे ' रुधिरलिप्तवदनाऽक्षतखादितपीतडाकिनी भ्रमद् भयङ्करे=तत्र रुधिरेण लिप्तानि वदनानि = मुखानि तथा अक्षतानि=समग्राणि खादितानि मृतकाना शरीराणि तथा पीतानि रुधिराणि याभिस्तास्तथा भ्रमन्त्यश्च या डाकिन्यस्ताभिर्भयङ्करे, 'जबुयखिक्खियते' जम्बुकाना 'खिखि' इति शब्दयुक्ते तथा ' घूयकयघोरसद्दे ' घूककृत घोरशब्दे=घूकैः=उलूकैः कृत घोरः=भयङ्करः शब्दस्तेन युक्ते तथा ' वेयालुट्ठियविसुद्धकहकहतपहसियवीहणगनिरभिरामे ' वेतालोत्थितविशुद्धकहकहायमानप्रहसितभीषणकनिरभिरामे = वेतालेभ्यः = विकृत पिशाचेभ्यः उत्थित=समुत्पन्न निशुद्धम्=अन्यशब्दाऽमिश्रित यत् कहकहायमान=

(सरस) रस-रुधिर आदिसे लिप्त मुर्दे (दरदड्ढ) पूरे नही जल सकनेके कारण (कड्ढियकलेवरे) कुत्ते एव श्रृगाल आदि द्वारा चिताओंसे बाहिर निकाल लिये जाते हैं (रुहिरलित्तवयण) जिनके मुख रुधिरसे लिप्त हो रहे हैं, तथा (अक्खयखादियपीय) जिन्होंने समग्ररूपसे मृतक कलेवरोंको खाया है और उनकाखून पी लिया है ऐसी (डाइणी भमत भयकरे) घूमती हुई डाकिनियोंसे जो भयकर बने हुए हैं (जबुयखिक्खियते) तथा जो गीदड़ों के ' खि-खि ' शब्दोंसे युक्त हो रहे हैं (घूयकयघोरसद्दे) उल्लू जहा घोर शब्द कर रहे हैं, तथा जहा (वेयालुट्ठिय) वेताल विकृत बनकर जोर२ से कह कहाय मार कर हँसा करते हैं। (विसुद्धकह कहेंत पहसिय) उनका यह हँसना जहाँ अन्य और शब्दों से मिश्रित नही हो रहा है-केवल " कह कह " ऐसी ही ध्वनि जहा उनके मुख से निकल रही है, इस-

રસ-રુધિર આદિથી ખરડાયેલા મુડદા, " दरदड्ढ " પૂરા બળી શકેલા ન હોવાથી "कड्ढियकलेवरे" કૂતરા શિયાળ આદિ દ્વારા ચિતાઓમાથી બહાર ખેચી કઢાય છે " रुहिरलित्तवयणअक्खयखादियपीयडाइणीभमतभयकरे " " रुहिरलित्तवयण " જેમના મુખ લોહીથી ખરડાયેલા છે તથા જેમણે સપૂર્ણ રીતે મૃતશરીરેનુ ભક્ષણકર્યુ છે અને તેમનુ લોહી પીધુ છે એવા " डाइणीभमतभयकरे " ત્યા ભમતી ડાકણોથી જે ભયકર લાગે તે, " जबुयखिक्खियते " તથા જે શિયાળોના "ખિ-ખિ" શબ્દોથી યુક્ત છે, "घूयकयघोरसद्दे" ઘુવડો જ્યા ભયકર શબ્દો કરે છે, તથા જ્યા " वेयालुट्ठिय " વેતાળકૃત બનીને જોર શોરથી ખડ ખડાટ હસી રહ્યા છે, " विसुद्धकहकहेंत पहसिय " તેમનુ તે હાસ્ય જ્યા બીજા કોઈ શબ્દ સાથે મિશ્રિત થતુ નથી-કેવળ " કહ કહ " એવો ધ્વનિજ તેમના

त्ताणि ' निक्षिप्तानि=स्थापितानि ' धणधण्णदव्वजायाणि ' धनधान्यद्रव्यजातानि= धनधान्यसुवर्णरजतादीनि हरन्ति ' के इत्याह-ये ' परदव्वाहिं ' परद्रव्यैः 'अविरया ' अविरताः=अनिवृत्ताः=' निग्घिणमई ' निर्घृणमतयः=करुणारहिता' 'तहेव' तथैव-पूर्वोक्तप्रकारेण ' केई ' केऽपि ' अदिण्णादाण ' अदत्तादानं=स्वाम्यादिभिरवितीर्णं धन गवेषमाणा =अन्वेषमाणाः कालाकालेषु=कालेषु=सकललोकव्यवहारोचितकालेषु दिनादिलक्षणेषु तथा अकालेषु=अनुचितकालेषु अर्धरात्रादिलक्षणेषु च सञ्चरन्तः=भ्रमन्तोऽदत्तग्राहिण , ' चितगपज्जलियसरसदरदड्ढकड्डियकलेवरे ' चितकप्रज्वलितसरसदरदग्धकृष्टकलेवरे=चितकेषु=चितासु, कीदृशेषु ? प्रज्वलि

हुई (धणधण्णदव्वजायाणि) धन, धान्य, सुवर्ण रजत आदि सपत्ति को (हरंति) हर लिया करते हैं। (परदव्वाहिं अविरया) क्यों कि ये लोग परके द्रव्य को चुराने रूप कृत्य से विरक्त नहीं होते हैं-" दूसरों का द्रव्य विना पूछे नहीं लूगा " इस प्रकार का नियम इन्हें नहीं होता है। (निग्घिणमई) ये सर्वथा दयाभाव से रहित मति वाले होते हैं। (तहेव केइ) इसी तरह कितनेक व्यक्ति (अदिण्णादाण) स्वामी आदि द्वारा वितीर्ण नही किये हुए धन धन्यादि की (गवेसमाणा) गवेषणा करते हुए (कालाकालेसु) समस्त लोक व्यवहार के उचित दिन आदि रूपकाल में तथा अर्धरात्रि आदि रूप अकाल-अनुचित काल में (सचरता) इधर उधर घूमते हुए श्मशान शून्यगृह आदि में भटकते रहते हैं, यह सम्बन्ध यहा जोड़ लेना चाहिये। वह श्मशान आदि कैसे हैं सो वर्णन करते है-जहा (चितगपज्जलिय) प्रज्वलित चिताओं में

जायाणि" धन, धान्य, सोनु, रुपु, आदि सपत्तिने " हरंति " पण तेओ हरी ले छे " परदव्वाहिं अविरया " कारण के ते लोको परधनने चोरवाना कृत्यथी विरक्त होता नथी, " बीजानु द्रव्य तेने पूछ्या विना नही लउ " एवो तेमने नियम होतो नथी ' निग्घिणमई " तेओ सदा दयाभावथी रहित मतिवाळा होय छे " तहेव केइ " ए ज प्रमाणे केटलाक लोको " अदिण्णादाण " मालिक आदि द्वारा अर्पण न करवामा आवेल धन धान्यादिनी " गवेसमाणा " शोध करता " कालाकालेसु " बधा लोको साथे व्यवहार माटेना दिवस आदि योग्य समय अथवा मध्य रात्रि आदि अकाले-अयोग्य समये " सचरता " आम तेम श्मशान, शून्यगृह-खालीघर-आदिमा भटक्या करे छे ते श्मशान आदि केवा होय छे, तेनु वर्णन करे छे-"चितगपज्जलिय" सळगती चिताओमा "सरस"

दग्धच्छवय =नष्टशान्तय ' निरयतिरियभवसकडदुक्खसभारवेदणिज्जाणि पावकम्माणि सचिणता ' नरकतिर्यग् भवसङ्कटदुःखसम्भारवेदनीयानि पापकर्माणि सचिन्वन्तः=तत्र नरकतिर्यग्भवेषु सङ्कटानि=विषमाणि दुःखानि=परमाधार्मिककृत छेदनभेदनादिरूपाणि-तेषा यः सभारः=बहुलता तेन वेदनीयानि=अनुभवनीयानि ' पावकम्माणि ' पापकर्माणि=परद्रव्यापहरणादीनि सञ्चिन्वन्तः=समुपार्जयन्तः ' दुल्लभभक्खणपाणभोयणा ' दुर्लभभक्षणपानभोजनाः - दुर्लभ=दुष्प्राप्य भक्षण=अन्नादिक पान=दुग्धजलादिक च भोजन=कल्यावर्त भातरशनादिक 'नाशता' ' कले वा ' इति प्रसिद्ध येषा ते तथा अतएव ' पिवासिया ' पिपासिताः = तृषिताः ' झुझिया ' बुभुक्षिताः ' किलता ' क्लान्ताः=ग्लानियुक्ताः ' मसकुणिमकदमूलज किंचिकयाहारा' मांसकुणपकन्दमूलयत्किञ्चित् कृताहाराः=तत्र मास= प्रसिद्ध कुणप'=मृतकदेहः कन्दमूलानि तेषा यत् किञ्चित्=यथावसर यत्किञ्चि-

च्छवी) शरीर की कांति इनकी नष्ट हो जाती है। (निरयतिरियभवसकडदुक्खसभारवेयणिज्जाणि) नरक तिर्यञ्च भवों में परमाधार्मिक कृत छेदन भेदन आदिरूप विषम दुःखो के सभार से वेदनीय ऐसे परद्रव्यापहरण आदिरूप (पावकम्माणि) पापकर्मो को (सचिणता) उपार्जित करते हुए (दुल्लभभक्खणपाणभोयणा) ये जीव दुर्लभ अन्नादि सामग्री वाले, दुर्लभदुग्ध जलादि वाले, तथा दुर्लभ भोजनादिरूप कलेवावाले होते हैं। (पिवासिया) इन्हें पानी तक पीने को नहीं मिलता है (झुझिया) सदा ये बुभुक्षित-भूखे रहा करते हैं। (किलता) क्लान्त-हरएक कोई इनसे ग्लानि किया करता है। (मसकुणिम, कदमूल ज किंचि कयाहारा) असमय मे अथवा यथा अवसर जो कुछ इन्हें खाने को मिल जाता है-चाहे वह मास हो, चाहे कुणप-मृतकदेह-मुर्दा हो,

કાન્તિ નાશ પામે છે " निरयतिरियभवसकडदुक्खसभारवेयणिज्जाणि " નરક તિર્યંચ આદિ ભવોમા પરમાધાર્મિક દેવોદ્વારા કરાતા છેદન ભેદન આદિ રૂપ વિષમ દુ ખેના સમૂહથી વેદનીય (સહન કરવા પડતા) એવા પરધન હરણ આદિરૂપ પાપકર્મોનુ " सचिणता " ઉપાર્જન તેઓ કરે છે ' दुल्लभभक्खणपाणभोयणा " તે જીવોને અન્નાદિ સામગ્રી ઘણી મુશ્કેલીએ પ્રાપ્ત થાય છે, પાણી દૂધ આદિ પીણા પણ તેમને માટે દુર્લભ હોય છે, અને નાસ્તો ભોજનાદિ પણ તેમના માટે દુર્લભ હોય છે "पिवासिया" તેમને પીવા માટે પાણી પણ મળતુ નથી " झुझिया " તેઓ સદા ભૂખ્યા રહે છે, " किलता " ક્લાન્ત-દરેક વ્યક્તિ તેમણે ગ્લાની પમાડયા કરે છે " मसकुणिमकदमूल ज-किंचि कय हारा " કાળે અથવા અકાળે તેમને જે કંઈ ખાવા મળે છે-પછી તે માસ હોય, કુણપમૃતશરીર હોય, કંદમૂળ હોય- તે તેઓ ખાય છે તે ચીજો

शब्दायमान हसित=हसन तेन भीपणक=भयानकमतएव निरभिरामम्=असुन्दर यत्तत्तथा तत्र, तथा 'अइदुब्भिगधे' अतिदुरभिगन्धे-शटितमृतककलेवरदुर्गन्ध युक्ते, 'वीभच्छदरिसणिज्जे' वीभत्सदर्शनीये=वीभत्सं=अस्थिमृतककलेवरादि युक्तत्वाज्जुगुप्सोत्पादक दर्शनीय=दर्शन यस्य तत् तस्मिन् 'सुसाणे' श्मशाने 'वणे' वने=अरण्ये च तथा 'सुण्णघरलेणअतरावणगिरिकदरेसु' शून्यगृहलय नाऽन्तराऽऽपणगिरिकन्दरेषु=शून्यानि गृहाणि अन्तरापणाः=अन्तरा=ग्रामादीना मर्द्धपथे विश्रामार्थं निर्मिता आपणाः=गृहाः=ग्रामादन्तरागाः गिरिकन्दराणि च= गिरिगह्वराणि, तेषु, तथा-'विसमसावयसमाउलासु' विषमैः श्वापदैः हिंस्रप्राणि भि समाकुलाः=व्याप्ताः तास्वेव विधासु 'वसहिसु' वसतिषु=वासस्थानेषु 'किलिस्सता' क्लिश्यन्तः=दुःखानि प्राप्नुवन्तः, 'सीयायवसोसियसरीरा' शीतातप शोषितशरीरा' = शीतैरातपैश्च शोषितानि शरीराणि येषां ते तथा 'दड्ढच्छवी'

लिये इस विशुद्ध कह कह ध्वनि सयुक्त पिशाचों के हास्यसे जो (बीह णग) भयप्रद और (निरभिरामे) असुन्दर बने हुए हैं (अइदुब्भिगधे) अतिदुरभिगध-सड़े हुए मृतकों के कलेवरों की दुर्गन्ध से जो युक्त हो रहा है (वीभच्छदरिसणिज्जे) तथा जो हाड मृतक कलेवर आदि से युक्त होने के कारण घृणोत्पादक दिखलाई पड़ते हैं ऐसे (सुसाणे) उन श्मशानों मे (सुण्णघर) शून्य गृहों में, (लेण) लयनों में-पर्वतो के निकटवर्ती पाषाणगृहो में, (अतरावण) ग्राम आदिकों के आधे मार्ग में विश्राम निमित्त बने हुए घरों में, (गिरिकदरेसु) पर्वत की गुफाओं में, तथा (विसमसावयसमाउलासु) हिंसक प्राणियों से युक्त (वसहिसु) वसतियों में-वासस्थानों मे, (किलिस्सता) नाना प्रकार के दुःखों को सहन किया करते हे। तथा (सीया य वसोसियसरीरा) शीत और आतप से इनके शरीर शोषित-सूके हुए रहते हैं। (दड्ढ-

મુખમાંથી નીકળતો હોય છે, તેથી પિશાચોના તે વિશુદ્ધ કહકહ ધ્વનિ યુક્ત હાસ્યથી જે "बीहणग" ભયકર અને "निरभिरामे" અસુદર બનેલ છે, "अइदुब्भिगधे" સડેલા મૃત કલેવરોની અતિશય દુર્ગન્ધથી જે યુક્ત છે, "बीभच्छदरिसणिज्जे" તથા જે હાડકા, મુડદા આદિથી યુક્ત હોવાને કારણે ઘૃણાજનક દેખાય છે, એવા "सुसाणे" શ્મશાનોમા, "वणे" વનોમા, "सुण्णघर" શૂન્યઘરોમા, "लेण" લયનોમા પહાડની સમીપના પાષાણગૃહોમા "गिरिकदरेसु" પર્વતની ગુફાઓમા, તથા "विसमसावयसमाउलासु" હિસક પ્રાણીઓથી યુક્ત "वसहिसु" નિવાસ સ્થાનોમા, "किलिस्सता" વિવિધ પ્રકારના દુખો સહન કર્યા કરે છે તથા "सीया य वसोसियसरीरा" શીત અને તાપથી તેમના શરીર સૂકા રહે છે "दड्ढच्छवी" તેમના શરીરની

टीका—'अयसकरा' अयशस्कराः=अकीर्तिमन्तः भयङ्कराः 'तक्करा' तस्कराः=अदत्तग्राहिणः चोरा इत्यर्थः, 'अज्ज' अद्य=अस्मिन् दिवसे 'कस्स' कस्य धनिनः इति=एवं विधं यन्मनसि चिन्तितं तत् 'दव्व' द्रव्य=धनं हरामः= चोरयाम इति=एवं प्रकार 'गुज्झ' गुह्य=गुप्त 'समामतण' समामन्त्रण=विचारणा 'करेति' कुर्वन्ति। तथा 'बहुयस्सजणस्स' बहुकस्य जनस्य 'कज्जकरणेसु' कार्यकारणेसु=कर्मानुष्ठानेषु 'विग्घकरा' विघ्नकराः=विघ्नोत्पादकाः 'मत्तप्प-मत्तपसुत्तवीसत्थछिद्दघाई' मत्तप्रमत्तप्रसुप्तविश्वस्तछिद्रघातिनः=तत्र मद्यपानादिना मत्तान् प्रमत्तान् प्रकर्षेण मत्तान् प्रसुप्तान् विश्वस्तांश्च छिद्रेण=छिद्र=प्राप्य घ्नन्ति

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं–'अयसकरा' इत्यादि।

टीकार्थ—(अयस करा) इनकी दुनिया में अकीर्त्ति फैल जाती है ये सब जगह बुराई से विख्यात हो जाते हैं, (भयकरा) इनके नाम श्रवण से भी लोगों के हृदयों मे भय का संचार हो जाता है। इस तरह के ये (तक्करा) अदत्तग्राही–चोर (अज्ज कस्स दव्व हरामो त्ति) "आज किस धनी का मन धारा द्रव्य हरण करना चाहिये" इस प्रकार की (गुज्झ) गुप्त (समामतण) विचारणा (करेंति) किया करते हैं। तथा (बहुयस्स जणस्स) अनेक मनुष्यों के (कज्जकरणेसु) कार्यों में ये (विग्घकरा) विघ्नोत्पादक हुआ करते हैं। (मत्त-प्पमत्त-पसुत्त वीसत्थछिद्दघाई) (मत्तप्पमत्त) मद्यपानादिक से मत्त तथा प्रमत्त बने हुए व्यक्तियों को (पसुत्त) सोये हुए मनुष्यों को, एव (वीसत्थ) अपने ऊपर विश्वास करने वाले प्राणियों को ये (छिद्दघाई)

તેઓ કેવા હોય તે નુ વધુ વર્ણન કરે છે—"अयसकरा" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"अयसकरा" આખી દુનિયામા તેમની અપકીર્તિ ફેલાય છે તેઓ દુષ્કૃત્યોથી દરેક સ્થળે પકાય છે, 'भयकरा" તેમનુ નામ સાભળીને પણ લોકોના દિલમા ભય પેદા થાય છે એવા તે "तक्करा" ચોર "अज्जकस्स दव्व हरामो त्ति" "આજે કયા ધનિકનુ ધન હરી લેવુ જોઈએ" એ પ્રકારની "गुज्झ" ગુપ્ત "समामतण" વિચારણા "करेति" કર્યા કરે છે તથા "बहुयस्स जणस्स" અનેક માણસોના "कज्जकरणेसु" કાર્યોમા તેઓ विग्घकरा" વિઘ્નકર્તા થયા કરે છે "मत्त-प्पमत्त-पसुत्तवीसत्थछिद्दघाई" "मत्तपमत्त" દારૂ

આદિ પીને મત્ત તથા પ્રમત્ત બનેલા લોકોને "पसुत्त" ઊંઘતા લોકોને, અને "वोसत्थ" પોતાના ઉપર વિશ્વાસ મૂકનાર લોકોને તેઓ "छिद्दघाई"

त्माप्त तदपि स्वल्पमात्र कृत आहारो यैस्ते तथा 'उव्विग्गा' उद्विग्नाः=उद्वेगयुक्ता अशान्तचित्ता इत्यर्थः, 'उप्पुया' उत्प्लुताः=चापल्याः 'असरणा' अशरणाः= त्राणरहिताः गृहवर्जिता वा 'अडवीवास' अटवीवास=अरण्यवास 'वालसय सकणीय' व्यालशतशङ्कनीय = व्यालाना=सर्पादिदुष्टश्वापदाना शतैः शङ्कनीय भुजङ्गादिभिर्भयङ्करम् 'उवेति' उपयन्ति=प्राप्नुवन्ति ॥ सू० ११ ॥

पुनस्ते कीदृशा भवन्ति ? इत्याह—'अयसकरा' इत्यादि—

मूलम्—अयसकरातकरा भयकरा कस्सहरामोत्ति अज्जदव्वं इति समामंतणं करेंति गुज्झं, बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरामत्तप्पमत्तपसुत्तवीसत्थछिद्दघाती वसणब्भुदएसु हरणबुद्धी विगव्वरुहिरमहिया परेंति नरवईमज्जायमतिक्कंता सज्जणजणदुगछिया सकम्मेहि पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाउलदुहमनिव्वुइमणा इहलोगे चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयमावण्णा ॥सू०१२॥

चाहे कंदमूल आदि हो सो भी वह भरपेट नहीं मिलता स्वल्पमात्रा में ही मिलता है, उसे ये खालिया करते हैं, (उव्विग्गा) इनका चित्त सदा अशान्त रहता है। (उप्पुया) ये बडे भारी चपल होते है। (असरणा) इनका एक जगह स्थिर वास नहीं होता इसलिये ये त्राण रहित होकर इधर से उधर भागते रहते हैं और (अडवीवास) जगल मे ही बसेरा करते हैं। (वालसयसकणीय) सर्पादि सैकडों दुष्ट जानवरों के भय से शका शील ऐसे स्थानों को ये (उवेंति) प्राप्त करते हैं ॥सू०११॥

પણ તેમણે ધરાઈને ખાવા મળતી નથી, થોડા પ્રમાણમા જ મળે છે "उविग्गा" તેમનુ ચિત્ત સદા અશાન્ત રહે છે "उप्पुया" તેઓ ઘણા જ ચપળ હોય છે "असरणा" તેમનુ રહેઠાણ કાયમ એક જ જગ્યાએ હોતુ નથી, તેથી તેઓ અશરણુની જેમ આમતેમ ભમ્યા કરે છે "अडवीवास" જગલમા જ "वालसयसकणीय" સર્પાદિ સેકડો ભયકર જીવોના ભયથી વ્યાપ્ત સ્થાનોએ "उवेति" તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

नरकनिगोदादिदु खभागिनः, ' निच्चाउलदुहमनिव्वुइमणा ' नित्याकुलदुःखाऽनिर्वृतिकमनस'=नित्यमाकुल=व्याकुलित दुःखयुक्तम् , अनिर्वृतिक=स्वास्थ्यरहित मनो येषा ते तथा निरन्तरमतापसंकुलाः, इहलोके चैव, चात् परलोकेऽपि ' किलिस्सता ' क्लिश्यन्तः—क्लेशमनुभवन्तः ' परदव्वहरा ' परद्रव्यहराः=परधनापहरणशीला' नराः=मनुष्याः ' वसणसय ' व्यसनशत=दुःखप्रचुरम् ' आवण्णा' आपन्नाः=प्राप्ताः परियन्तीत्यनेन सम्बन्धः ॥ सू० १२ ॥

एव ' यथाकृत ' इत्यन्तद्वारमुक्तम् , अथ ' यथाफलदेइ ' इति अदत्तादान फलप्रतिपादक चतुर्थद्वार प्राह—' तहेव केइ इ'त्यादि—

मूलम्—तहेव केइ परस्सदव्वं गवेसमाणा गहिया य हया य बद्धा रुद्धा य तुरियं अइधाडिया पुरवर समप्पिया चोरग्गाह चारभडचाडुकराण, तेहि य कप्पडप्पहारनिद्दयाऽऽरक्खिय खरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्ल उत्थलणाहि विमणाचारगवसहि पवेसिया निरयवसहिसरिस तत्थ वि

से युक्त होते हैं। (दुक्खभागी) शुभपरिणामों से रहित होने के कारण ये परभव मे नरक निगोद आदि के दुःखों को भोगा करते हैं। (णिच्चाउलदुहमणिव्वुइमणा) इनका मन सदा व्याकुल बना रहता है, इसी से ये निरन्तर मानसिक स्वास्थ्य से रहित होकर सताप से सकुल होते रहते हैं। इस तरह (इहलोगे चेव) इस लोक में तथा 'च' शब्द से परलोक मे भी (किलिस्सता) क्लेशों का अनुभव करते हुए ये (पर दव्वहरा) पर द्रव्यापहारी चोर (वसणसय) अनेक दुःखों को (आवण्णा) प्राप्त होकर (परेंति) भ्रमण करते है अर्थात् अपने समय को दुर्गतियों के भ्रमण करने में ही व्यतीत करते रहते है ॥ १२॥

" दुक्खभागी " शुभ परिणामो-भावोथी रहित होवाने कारणे तेओ परभवमा नरक निगोद आदिना दु खो भोगव्या करे छे "णिच्चाउलदुहमणि व्वुइमणा" तेमनु मन सदा व्याकुळ रहे छे, तेथी तेओ निरतर मानसिक स्वास्थ्यथी रहित बनीने सतापथी युक्त रहे छे आ रीते " इहलोगेचेव " आ लोकमा तथा 'च' शब्दथी परलोकमा पण " किलिस्सता " दु खोने अनुभवता ते "परदव्व हरा" परधननु हरण करनारा चोर लोको " वसणसय " अनेक दु खो " आवण्णा " अनुभवता " परेति " भ्रमण करे छे, एटले के दुर्गतीयोमा भ्रमण करवामा ज पोतानो काळ व्यतीत करे छे ॥सू-१२॥

एव शीलाः 'वसणब्भुदएसु' व्यसनाभ्युदयेषु हरणबुद्धय'=व्यसनेषु=रोगाद्यव स्थाया राजादिकृतोपद्रवेषु च अभ्युदयेषु=विवाहादिमहोत्सवेषु 'हरणबुद्धी' हरणबुद्धय 'विगव्व' वृका इव=' भेडिया ' इति प्रसिद्धा नखधारिणः श्वापद जन्तु विशेषा इव 'रुहिरमहिया ' रुधिरमहिताः=रुधिरस्य=रुधिरपानस्य मह= उत्सवः रुधिरमह , स जातो येषा ते तथा-रुधिरचूषणे तत्पराः, 'परेति' परियन्ति=पर्यटन्ति सर्वत्र भ्रमन्ति। कथ भूतास्ते इत्याह-' नरवइमज्जा-य मइक्कता ' नरपति मर्यादामतिक्रान्ता=राजाज्ञाबहिर्वर्तिनः ' सज्जणजणदुगुछिया' सज्जनजनजुगुप्सिताः=सत्पुरुषैर्निन्दिताः 'सकम्मेहिं ' स्वकर्मभिः=अदत्तादान रूपैः ' पावकम्मकारी ' पापकर्मकारिणः=चौर्यादिपापकर्मकारका 'असुभपरि णयाय ' अशुभपरिणताश्च=शुभपरिणामवर्जिता 'दुक्खभागी ' दुःखभागिन'=

छिद्र प्राप्तकर घात की घात में मार डालते है (वसणब्भुदएसु) रोगा दिक अवस्थारूप तथा राजादिकृत उपद्रवकृत व्यसन के समय पर, अथवा विवाह आदि रूप महोत्सव के अवसर पर भी ये (हरणबुद्धी) अपना कार्य कर दिया करते हैं। (विगव्व) भेडिया की रुधिर चूपने में तत्प रता रहती है ईसी प्रकार ये चोर जन भी (रुहिर महिया) पर के खून चूसने में तत्पर रहते हुए (परेंति) सर्वत्र घूमते हैं। (नरवइम इकता) राजा की आज्ञा का सदा ये उल्लघन किया करते हैं। (सज्ज णजणदुगुछिया) सज्जन पुरुषो की निंदा करने में इन्हें आनद मिलता है, अथवा इनके इस कर्म की सज्जन पुरुष निंदा करते हैं। (सक म्मेहिं) अदत्तादानरूप अपने कर्मो से ये (पावकम्मकारी) पापकर्मकारी पापकर्म करने वाले वे चोर (असुभपरिणयाय) अशुभ आत्मा परिणति

ધનનુ રહસ્ય જાણીને જોતજોતામા મારી નાખે છે "वसणब्भुदएसु" રોગાદિક અવસ્થામા, તથા રાજાદિકૃત ઉપદ્રવ રૂપ સકટને સમયે, અથવા વિવાહ આદિ મહોત્સવને પ્રસગે પણ તે "हरणबुद्धी" પોતાનુ પરધન હરણનુ કૃત્ય કર્યા કરે છે "विगव्व" વરુની જેમ-એટલે કે જેમ વરુ લોહી ચૂસવાને તત્પર હોય છે તેમ ચોર પણ "रुहिरमहिया" અન્યનુ લોહી ચૂસવાને તત્પર થઈને "परेति" સર્વત્ર ભ્રમણ કરે છે "नरवइमज्जाय मइक्कता" રાજાની આજ્ઞાનુ સદા ઉલ્લઘન કરે છે, "सज्जणजणे दुगुछिया" સજ્જનોની નિદા કરવામા તેમને મજા આવે છે, અથવા તે દુષ્કૃત્યોની સજ્જનો નિંદા કરે છે "सकम्मेहिं" અદત્તાદાન-ચોરી રૂપ પોતાના કર્મોથી તે "पावकम्मकारी" પાપકૃત્યો કરનારા ચોરો "असुभपरिणयाय" અશુભ આત્મપરિણતિ-ભાવથી યુક્ત બને છે

उपस्थापिताः, केभ्यः ? इत्याह–' चोरग्गहचारभडचाडुकराण ' चौरग्राहचारभटचाटुकरेभ्य =तत्र चौरग्राहिणः चारभटाः=गुप्तचराः, चाटुकरणाः=सुखप्रियामृदुभाषणेन चौरग्राहका इत्यर्थः, तेभ्यः ' तेहिय ' तेश्च चोरग्राहादि पुरुषैः ' कप्पडप्पहारनिद्दया रक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्लउत्थलणाहिं ' कर्पटप्रहार निर्दयाऽऽरक्षिकखरपरुषवचनतर्जनगलस्थल्लउत्थलणाभिः=तत्र कर्पटैः=पट्टाकारवल्तिवस्त्रैः ' कोडा ' इति भाषा प्रसिद्धैः प्रहाराः=ताडनानि तथा निर्दया ये आरक्षिकाः=कोट्टपालपालास्तेषां खरपुरुषैः=अतिनिष्ठुरैर्वचनैस्तर्जनानि–गलत्थल्लोत्थलनाश्च=गलत्थल्लाः = गलहस्तदानानि उत्थल्नाः=परिवर्त्तनाश्चेत्येताभिः ' विमणा ' विमनसः=खिन्नचित्ता सन्तः ' निरयवसहिसरिस ' नरकवसतिसदृशा =नरकवासतुल्या ' चारगवसहिं ' चारकवसतिं=कारागृह ' पवेसिया ' प्रवेशिताः ।

(समप्पिया चोरगाहचारभडचाडुकराण) बाद में वे राजपुरुष उन चोरों को चोरग्राही–चोरों को पकडने वाले गुप्तचरो के (कि जो मधुर बोलकर चोरोको पकड़ने में सिद्धहस्त होते हैं उनके) आधीन कर देते हैं (तेहि य) वे चोरग्राही चारभट आदि उन चोरों को पहिले तो (कप्पडप्पहार) कोड़ो की मार मारते हैं, तथा (निद्दयारक्खिय) निर्दय होकर कोटपाल उन्हें (खरपरुसवयणतज्जिय) अतिनिष्ठुर अत्यन्त कटु वचनो से तर्जित करते हैं, तथा (गलत्थल्ल उत्थलणाहि य) गला पकड़कर दबोच देते हैं। (विमणा) इस तरह की क्रियाओं से अपमान जनक व्यवहारों से– चोरों को ये बहुत अधिक खिन्नचित्त कर डालते हैं। जब ये बहुत बुरी तरह खिन्नचित्त हो जाते हैं तो बाद में वे उन्हें (निरयवसहि सरिस) नरकावास तुल्य (चारगवसहिं) कारागृह मे (पवेसिया) बंद कर देते हैं।

ફેરવાય છે " समप्पिया चोरगाहचारभडचाडुकराण" ત્યાર બાદ તે રાજપુરુષો તે ચોરોને ચોરગ્રાહી–ચોરને પકડનારા ગુપ્તચરોને સોંપી દે છે તે ગુપ્તચરો મીઠા વચનો બોલીને ચોરોને પકડવામા નિપુણ હોય છે " तेहि य " તે ચોરગ્રાહી–ગુપ્તચર આદિ પહેલા તો તે ચોરોને " कप्पडप्पहार " કોરડાઓ વડે ફટકારે છે, તથા " निद्दयारक्खिय " નિર્દય થઈને કોટવાલ તેમને " खरपरुसवयणतज्जिय '' અતિશય નિષ્ઠુર તથા અતિશય કડવા વચનો સભળાવે છે, " गलत्थल्लउत्थलणाहिय " ગળુ પકડીને દબાવે છે," विमणा " આ પ્રકારની અપમાનજનક ક્રિયાઓ તથા વર્તનથી તેઓ તે ચોરના ચિત્તમા અત્યત ખિન્નતા ઉત્પન્ન કરે છે જ્યારે તેઓ અત્યત ખિન્ન થાય છે ત્યારે તેમને તે લોકો ' निरयवसहि सरीर " નરકાગાર સમાન " चारगवसहिं " કારાગૃહમા

गोम्मिक पहारदुम्मणा निब्भच्छणकडुयवयणभेसणागभयाभिभूया अक्खित्तणिवसणा मलिणडंडिखंडवसणा उक्कोडालंचनपासुम्मग्गणपरायणेहिं गोम्मियभडेहिं विविहेहिं वधणेहिं किंते-हडिनियडबालरज्जुयकुडडगवरत्तलोहसंकल हत्थंदुय वज्झपट्टदामकणिक्कोडणेहिं अण्णेहि य एवमाइएहिं गोम्मियभंडोवगरणेहि दुक्खसमुदीरणेहि सकोडणमोडणेहिं वज्झति मदपुण्णा ॥ सू० १३ ॥

टीका—'तहेव' तथैव=पूर्वोक्तप्रकारेण 'केइ' केचित् 'परस्स' परस्य 'दव्व' द्रव्य चोरयितु 'गवेसमाणा' गवेषयन्तः=अन्वेषण कुर्वन्तः 'गहिया' गृहीताः=राजपुरुषैर्निगृहीता हताश्च=ताडिताः दण्डादिभिस्ततोबद्धाः = रज्ज्वादिभिर्बन्धन प्रापिताः तथा-रुद्धाः=कारागारादौ निरुद्धाश्च 'तुरिय' त्वरित=शीघ्रम् 'अइधाडिया' अतिधाटिताः=राजपुरुषैर्भ्रामिता. कुत्र? इत्याह-पुरवर=सकलनगरम्। नागरिकजनान् प्रतिदर्शिता इत्यर्थः पुनश्च 'समप्पिया' समर्पिताः=

अब सूत्रकार "जहा फल देइ" इस चतुर्थ द्वार का प्रतिपादन करते है—'तहेवकेइ' इत्यादि।

टीकार्थ—(तहेव) इसी पूर्वोक्त प्रकार से (केइ) कितनेक व्यक्ति (परस्स दव्व गवेसमाणा) पर के द्रव्य को चुराने की खोजमें रहते हुए (गहिया य) राजपुरुषो द्वारा निगृहीत होकर (हयाय) दण्डादिकों द्वारा ताडित किये जाते है (बद्धा) रज्ज्वादिको द्वारा बाध दिये जाते हैं (रुद्धाय) कारागार आदि में बद कर दिये जाते है। (तुरिय अइधाडिया पुरवर) और नगर निवासियो के समक्ष नगरभर में घुमाये जाते हैं।

હવે સૂત્રકાર " जहा फल देइ " એ ચોથા દ્વારનુ પ્રતિપાદન કરે છે— " तहेव केइ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"तहेव" પૂર્વોક્ત પ્રકારે "केइ" કેટલાક લોકો "परस्स दव्व गवेसमाणा" પારકાના દ્રવ્યને ચોરવાની શોધમા રહે છે "गोहियाय' તેઓ રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈને" हयाय " દડા વગેરે દ્વારા મરાય છે " बद्धा " દોરડા આદિ વડે બધાય છે, "रुद्धाय" અને જેલખાના આદિમા કેદ કરાય છે, " तुरिय अइघाडिया पुरवर " અને શહેરીઓની સમક્ષ આખા શહેરમા

वसन=वस्त्र येषां ते तथा मलिनस्फाटितसीवितवस्त्रखण्डधारिण इत्यर्थः, 'उक्कोडाल चनपासुम्मग्गणपरायणेहिं' उत्कोटालञ्चनपार्श्वोन्मार्गणपरायणैः=उत्कोटालञ्चने= उत्कोटविशेषे 'लाँच-रिश्वत' इति भाषाप्रसिद्धभेदविशिष्टे पार्श्वोन्मार्गणे च= चौरपार्श्वस्थितचोरितद्रव्यान्वेषणे, तेषु परायणाः=तत्परा ये ते तथा तैः 'गोम्मिगभडेहिं' गोल्मिकभटैः कोटपालैः 'विविहेहिं बंधणेहिं' विविधैः बन्धनैः हेतुभूतैस्ते चौरपुरुषाः बध्यन्ते इति वक्ष्यमाणेन सम्बन्ध 'किं ते' आर्षत्वात्तृतीयार्थे प्रथमा तेन किम्भूतैस्तैरित्यर्थः, तथा च किम्भूतैः=कथं भूतैस्तैर्बन्धनैरित्याह—'हडिनियडवालरज्जुयकुडंडगवरत्तलोहसंकलहत्थंदुयवज्झपट्टदामकणिकोडणेहिं' हडिनिगडवालरज्जुककुदण्डकवरत्रालोहशृङ्खलहस्तान्दुकवर्ध्रपट्टदामकनिष्कोटनैः=तत्र 'हडि' इति काष्ठनिर्मित निगडबन्धनानि 'खोडा' इति भाषाप्रसिद्धानि, निगडानि='लोहमयबेडी' इति प्रसिद्धानि वालरज्जुकाः=गवादि-

बीच में सिले हुए पुराने जीर्ण वस्त्र का वाचक है। (उक्कोडालचणपासुम्मग्गणपरायणेहिं) उत्कोट, लाच-रिश्वत-में तथा चोरों के पास में रहे हुए चुराये द्रव्यकी तपास करने में परायण ऐसे (गोम्मियभडेहिं) गौल्मिकभट-कोटपाल (विविहेहिं बंधणेहिं) नाना प्रकार के बंधनों से उन चोरों को बांध देते हैं, (किंते) वे बंधन किस प्रकार के होते सो कहते हैं-(हडिनियडवालरज्जुयकुडंडगवरत्तलोह संकलहत्थंदुयवज्झपट्टदामकणिकोडणेहिं) (हडि) काष्ठ निर्मित बांधने का बंधन विशेष, जिसमें चोर के पैर डाल दिये जाते हैं-सो वह वहीं पर खडा रहता है इधर उधर चल फिर नहीं सकता। भाषामें इसे खोडा कहते हैं। (नियडि) निगड-लोहे की बनी हुई बेडी, वालरज्जुक गाय आदि के बालों से बनी हुई रस्सी, कुदण्डक-जिसके अन्तभाग में काष्ठ लगे हुए

કોઈ કોઈ સ્થળે ફાટેલા હોય છે અહી "डण्ड' શબ્દ વચ્ચે વચ્ચે સીવેલા પુરાણા જીર્ણ વસ્ત્રનો સૂચક છે "उक्कोडालचणपासुम्मग्गणपरायणेहिं" ઉત્કોટ, લાચ-રુશવત, તથા ચોરોની પાસે રહેલ ચોરાયેલ દ્રવ્યની તપાસ કરવામા પ્રવીણ એવા "गोम्मिय भडेहिं" ગૌલ્મિક ભટ-કોટવાળ "विविहेहिं बंधणेहिं" વિવિધ પ્રકારના બંધનોથી તે ચોરોને બાધે છે "किं ते ?" તે બંધનો કયા કયા પ્રકારના હોય છે, તે કહે છે-"हडिनियडवालरज्जुयकुडंडगवरत्तलोहसंकलहत्थंदुयवज्झपट्टदामकणिकोडणेहिं "हडि" હેડ — લાકડાનું એક સાધન, જેમા ચોરના પગ રાખવામા આવે છે તેમા પગનુ હલનચલન થઈ શકતુ નથી 'नियडि" નિગડ લોઢાની બનાવેલી બેડી, "वालरज्जुक" ગાય આદિના વાળમાથી બનાવેલ દોરડુ, "कुदण्डक" જેને છેડે લાકડુ હોય એવો

'तत्थ वि' तत्रापि 'गोम्मिकपहारदूमणनिब्भच्छणकडुयवयणभेसणगभयाभिभूया' गोल्मिकप्रहारदवननिर्भत्सनकटुकवचन भीषणकभयाभिभूताः=तत्र गौल्मिकाना=कोटपालाना ये प्रहाराः=कशाद्याघाताः दवनानि=सूर्यतापादौ उपतापनानि निर्भर्त्सनानि = जातिकुलादिनामोच्चारणपूर्वकगालिदानानि कटुकवचनानि च 'रे नीच ! रे दुष्ट !' इत्यादि रूपाणि भीषणकानि=भयजनकानि 'जीवनपर्यन्त कारागृह एव म्रियस्व' इत्येवमादिरूपाणि तेषां भयेन अभिभूता ये ते तथा 'अक्खित्तणिवसणा' आक्षिप्तनिवसनाः = कर्षणघर्षणादिभिराकृष्टपरिधानवस्त्रा नग्नीकृता इत्यर्थः, 'मलिगडडिखडवसणा' मलिनदण्डिखण्डवसना =तत्र मलिन 'डण्डि' सीवित 'डण्डि' इति सीवितवस्त्रवाचको देशीशब्दः, खण्ड=फाटित च

(तत्थ वि) वहा पर भी वे (गोम्मियप्पहार) कोटपालोंके कशा(कोडा)दि-द्वारा प्रदत्त आघातों को, (दूमण) दवनो को–सूर्यताप आदि मे खडे करने रूप उपतापनो को, (निब्भच्छण) निर्भर्त्सनो को–जातिकुल आदि के नामोच्चारणपूर्वक गालीगलौज आदिको तथा (कडुयवयण) कटुक वचनो को जो कि "अरे नीच ! ओ दुष्ट ! जीवनपर्यन्त तू इस कारागार मे ही सड २ कर मर" इत्यादिरूप से (भेसणग) भयप्रदर्शक होते हैं–सहते रहते हैं (भयाभिभूया) उनके भय से अभिभूत होते हैं, तथा (अक्खित्तणिवसणा) कर्षण घर्षण आदि के करने से इनका परिधान वस्त्र खुल जाता है, अर्थात्–ये नग्न हो जाते हैं–नगे कर दिये जाते हैं। (मलिणडडिखडवसणा) ऐसी स्थिति मे इन्हें जो वहा वस्त्र खड पहिरे को मिलता है वह बिलकुल मलिन होता है। बीच २ में सिला हुया रहता है। तथा कहीं २ फटा भी रहता है। यहा "डण्डि" शब्द

"पवेसिया" पूरी है छे "तत्थ वि" त्या पणु ते लोको "गोम्मियप्पहार" कोटवालो द्वारा करवामा आवता चाबुकना प्रहारो "दूमण" दहन–सूर्यना तापमा उभा राखीने करवामा आवतु दहन, "निब्भच्छण" निर्भर्त्सना— जाति कुळ आदिना उल्लेख सहित अपाती गाळोने, तथा "कडुयवयण" कटु वचनोने, जेम के "हे नीच ! हे दुष्ट ! तु आखु जीवन आ कारागृहमा ज सडीने सडीने मर!" "भेसणग" सहन कर्या करे छे, "भयाभिभूया" ते प्रकारना भयथी भयभीत रहे छे, तथा "अक्खित्तणिवसणा" खेचाखेची कर वाथी तथा घसडवाथी तेमना वस्त्रो खसी जाय छे–तेओ नग्न थई जाय छे तेमने नग्न कराय छे "मलिणडडिखडवसणा" एवी हालतमा तेमने त्या जे वस्त्रखडो पहेरवाने मळ्या होय छे वच्चे वच्चे थिगडा वाळा होय छे, तथा

फुरंतउरकडग-मोडणेहि सवद्धाय नीससंता सीमावेढ उरु-यालचप्पडगसंधिवंधण तत्तसलागसूइ आकोडणाणि तच्छण विमाणणाणि य खारकडुय तित्तनावणजायणकारण-सयाणि वहुयाणि पाविर्यंता, उरघोडीदिण्णगाढपेल्लण-अट्ठिकसंभग्ग-सपंसुलिया-गलकालक-लोहदंड-उर-उदर-वत्थि-पिट्ठि-परिपीलिया मत्थंतहियय-सचुण्णियंगुवंगा आणत्ति किं करेंहि केइअविराहि य वेरिएहि जमपुरिससंनिभेहिं पहया ते तत्थ मंदपुण्णा चडवेलावज्झ पट्टपोराच्छिवा कसलत्तवरत्तवेत्तपहा-रसयतालियंगुवंगा किवणालंबतचम्मवणवेयणाविमुहिय-मणाघणकोट्टणनियलजुयल-संकोडियमोडिया य कीरंति निरुच्चारा असंचरणा एया अण्णाय एवमाईओ वेयणाओ पावा पावंति ॥ सू० १४॥

टीका-पूर्वोक्ता. मन्दपुण्याः 'संपुडकवाड-लोहपंजर-भूमिघरनिरोहकूवचारग कीलगजूयचक्कविततबंधणखंभालणउद्धचलणबंधणविहम्मणाहिय विहेडियंता' तत्र 'संपुडकवाड'-सम्पुटकपाट = पिट्टिकपाट लोहपञ्जर तथा 'भूमिघर' भूमिगृह=भूमेरन्तर्गृह 'भोयरा' इति भाषा प्रसिद्ध च तत्र यो 'निरोह' निरोधः= प्रवेशन, तथा 'कूव' कूप.=अन्धकूप, 'चारग' चारक.=बन्दिगृह 'कीलग'

फिर वे क्या फल पाते हैं? सो कहते हैं-'संपुडकवाड' इत्यादि।

टीकार्थ-वे चोरजन (संपुडकवाड लोहपंजर-भूमिघरनिरोह-कूव चारग कीलग-जूयचक्कविततबंधण-खंभालण-उद्धचलणबंधण-विहम्मणाहिय विहेडियंता) (संपुडकवाड लोहपंजर) बंद हैं कपाट-युगल जिन्हों के ऐसे लोह के पिंजरों में तथा (भूमिघरनिरोह) तलघरों में बंद कर दिये जाते हैं, (कूव) अंधकूप में पटक दिये जाते हैं, (चारगकीलग)

બીજુ શું ફળ મળે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-"संपुडकवाडलोहपंजर"

ટીકાર્થ-તે ચોરોને "संपुडकवाडलोहपंजर" બંધ બારણાવાળા લોઢાના રામા, તથા "भूमिघरनिरोह" ભોંયરામા પૂરી દેવામા આવે છે, "કૂ અંધારીયા કૂવામા પટકવામા આવે છે, "चारगकीलग" બંદીગૃહમા દી

यालमय्योरज्जुका, कुदण्डकानि=काष्ठमयप्रान्तभागारज्जुपाशाः वध्राः=चर्ममय्यो महारज्जवः लोहशृङ्खलाश्च = प्रसिद्धा' हस्तान्दुकाः=हस्तनियन्त्रकबन्धनविशेषाः 'हथकडी' इति भाषाप्रसिद्धा वर्ध्रपट्टा =चर्मपट्टिका' दामकानि=पादबन्धनरज्जु विशेषाः निष्कोटनानि=बन्धनविशेषा एव तैः 'अण्णेहिं य' अन्यैश्चानुक्तैः 'एवमाइएहिं' एवमादिकैः=उक्तप्रकारैः 'गोम्मियभंडोवगरणेहिं' गौल्मिक-भाण्डोपकरणैः=कोट्टपालाना चोरबन्धकोपकरणैः, 'दुक्खसमुदीरणेहिं' दुःखसमु-दीरणैः = दुःखदायकैः 'संकोडणमोडणेहिं' संकोटनमोटनैः=संकोचनानि हस्तपादादीनां मोटनानि गलादीनि तैः 'मंदपुण्णा' मन्दपुण्याः=पापिनोऽदत्त-ग्राहिणः 'वज्झति' बध्यन्ते=बन्धनं प्राप्नुवन्ति ॥ सू० १३ ॥

पुनस्ते किं फलं प्राप्नुवन्ति ? इत्याह— 'संपुड' इत्यादि—

मूलम्—संपुडकवाडलोहपंजर-भूमिघर-निरोहकुवचारग-कीलगजूवचक्क-विततबंधणखंभालण-उद्धचलण बंधण विह-मणाहि य विहेडियंता अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरिय-

हों ऐसी दोरीकी फासी, वरत्रा-चमड़े से बनाई गई रस्सी, (लोहसकल) लोहकी सांकल, (हत्थदुय) हस्तान्दुक-हथकडी, (वज्झपट्ट दामकणिकोडणेहिं) वर्ध्रपट्ट-चमडेकी पट्टिकाएँ और दामनक-पैरों को बांधने के बंधन विशेष हैं, निष्कोटन-बंधनविशेष हैं, इन बंधनों से (अण्णेहिं एवमाइएहिं) तथा इन बंधनोंसे अतिरिक्त जो और भी (गोम्मिय भंडोवगरणेहिं) उनकोतवालो के चोरों को बांधनेके लिये उपकरण विशेष हैं कि जो (दुक्ख-समुदीरणेहिं) बहुत ही अधिक दुःखप्रद होते हैं उनसे, एवं (संकोडणमो-डणेहिं) हस्त पैर आदि संकोचन से तथा गले वगैरह के मोटन से (मंदपु-ण्णा) वे अभागे चोर (वज्झति) बंधनोंको प्राप्त होते हैं ॥ सू-१३ ॥

દોરડાનો ફાંસો વરત્રા-ચામડાની દોરી, "लोहसकल" લોઢાની સાકળ, "हत्थदुय" હાથકડી, "वज्झपट्टदामकणिकोडणेहिं" વર્ધપટ્ટ ચામડાની પટ્ટીઓ, અને દામનક-પગ બાંધવાનુ ખાસ બંધન, નિષ્કોટન-એક પ્રકારનું બંધન-આદિ બંધનોથી "अण्णेहिं एवमाइएहिं" તથા તે સિવાયના બીજા બંધનો કે "गोम्मियभंडोवगरणेहिं" જેમનો ચોરોને બાંધવાને માટે કોટવાળો ઉપયોગ કરે છે અને જે "दुक्खसमुदीरणेहिं" બંધનો અત્યંત દુઃખદાયક હોય છે, અને જેનાથી "संकोडणमोडणेहिं" હાથ પગ આદિનું સંકોચન તથા ગળા વગેરેનું મોટન (મરોડવાની ક્રિયા) તે "मंदपुण्णा" કમનસીબ ચોરો "वज्झति" અનુભવે છે ॥ સૂ-૧૩ ॥

फुरतउरकडग-मोडणेहि सवद्धाय नीससता सीमावेढ ऊरु-यालचप्पडगसधिवधण तत्तसलागसूइ आकोडणाणि तच्छण विमाणणाणि य खारकडुय तित्तनावणजायणकारण-सयाणि वहुयाणि पावियंता, उरघोडीदिण्णगाढपेल्लण-अट्टिकसभग्ग-सपसुलिया गलकालक-लोहदड-उर-उदर-वत्थि-पिट्ठि-परिपी लिया मत्थंतहियय-सचुण्णियगुवंगा आणत्ति कि करेहि केइअविराहि य वेरिएहि जमपुरिससंनिभेहि पहया ते तत्थ मंदपुण्णा चडवेलावद्ध पट्टपोराच्छिवा कसलत्तवरत्तवेत्तपहा-रसयतालियंगुवगा किवणालवतवम्मवणवेयणाविमुहिय-मणाघणकोट्टणनियलजुयल-संकोडियमोडिया य कीरति निरुच्चारा असचरणा एया अण्णाय एवमाईओ वेयणाओ पावा पावति ॥ सू० १४॥

टीका-पूर्वोक्ताः मन्दपुण्याः 'सपुडकवाड-लोहपजर-भूमिघरनिरोहकूवचारग कीलगजूयचक्कविततवधणखभालणउद्धचलगवधणनिहम्मणाहिय विहेडियता' तत्र 'सपुडकवाड'-सम्पुटकपाट = पिहितकपाट लोहपञ्जर तथा 'भूमिघर' भूमिगृह=भूमेरन्तर्गृह 'भोवरा' इति भाषा प्रसिद्ध च तत्र यो 'निरोह' निरोधः= प्रवेशन, तथा 'कूव' कूपः=अन्धकूप., 'चारग' चारकः=वन्दिगृह 'कीलग'

फिर वे क्या फल पाते है? सो कहते हैं-'सपुडकवाड' इत्यादि।

टीकार्थ-ये चोरजन (सपुडकवाड लोहपजर-भूमिघरनिरोह कूव चारग कीलग—जूयचकविततवधण-खभालण-उद्धचलणवधण-विहम्मणाहिय विहेडियता) (सपुडकवाडलोहपजर) वद ह कपाट-युगल जिन्हों के ऐसे लोह के पिंजरों में तथा (भूमिघरनिरोह) तलघरों में वद कर दिये जाते हैं, (कूव) अधकूप मे पटक दिये जाते है, (चारगकीलग) वदिगृह में

---

१ બીજુ કયુ ફળ મળે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-"सपुडकवाडलोहपजर" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-તે ચોરોને "सपुडकवाडलोहपजर" બધ બારણાવાળા લોઢાના પાંજરામા, તથા "भूमिघरनिरोह" ભોંયરામા પૂરી દેવામા આવે છે, "कूव" અધારીયા કવામા પટકવામા આવે છે, "चारगकीलग" કારાગૃહમા હાથકડી

कीलकाः 'खूटा' इति प्रसिद्धाः 'जूव' यूपा:=स्तम्भविशेषाः 'चक्क' चक्राणि रथाङ्गानि 'पहिया' इति भाषा प्रसिद्धानि तेषु 'विततबन्धन=बाहुजङ्घादिविघा-टनेन नियन्त्रण तथा 'खभालण' स्तम्भालगन=स्तम्भैः–सह रज्ज्वादिभिरावेष्टनं गले रज्जु बद्ध्वा स्तम्भेषु समालम्बन वा तथा 'उद्धचलणबधण' ऊर्ध्वचरणबन्धन च=पादयोरुपरिकृत्य बन्धनमित्यादियाः 'विहम्मणाहिं' विगर्पणाः=पीडास्ताभिः 'विहेडियता' विहेड्यमाना =पीड्यमानाः सकोटिता मोटिताः क्रियन्त इत्यग्रेण सम्बन्धः। तथा—'अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहिं' अधः कोटकगाढोरः शिरोबद्धोर्ध्वपूरितस्फुरदुरःकाण्डकमोटनैः, तत्र—अधः कोटकेन=अधो नमयनेन गाढम्=अत्यर्थमुरसि=वक्ष स्थले शिर'=मस्तकं बद्ध येषां ते तथा अतएव ऊर्ध्वपूरिताः=श्वासप्रश्वासैः पूरितशरीरोर्ध्वभागास्तथा स्फुरदुरः कण्डकाश्च=कम्पमानवक्ष स्थलपृष्ठास्थिका ये चौरास्तेषां यानि मोटनानि=पुनः पुन

हथकडी आदि में बाध दिये जाते हैं, खूटों पर लटका दिये जाते हैं, (जूव) स्तभविशेषों से जकड़ कर बाध दिये जाते हैं, (चक्क) पहियों से (वितत बधण) हाथ पैर बाहर निकालकर रस्सियों से बहुत बुरी रतह से जकड़ दिये जाते हैं, (खभालण) बड़े २ खभों के ऊपर गले में रज्जु आदि बाधकर लटका दिये जाते है। तथा (उद्धचलणबधण) पैरों में रस्सी आदि से बाधकर मुँह नीचा करके वृक्षादिकों में लटका दिये जाते हैं। (विहम्मणाहिंय) इस प्रकार की–विविध प्रकार की पीडाओं से वे (विहेडियता) पीडित किये जाते हैं। तथा (अहकोडगाढउरसिरबद्ध उद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहिं) (अहकोडगगाढउरसिरबद्धपूरिय) इनका मस्तक इतने अधिक रूप मे नीचे झुकाया जाता है कि जिससे वह वक्षस्थल पर आकर चिपक जाता है, और इसी कारण श्वास उच्छ्-वासों से इनका शरीर का उर्ध्वभाग पूरित होता रहता है, (फुरतउर

આદિ વડે બાધવામા આવે છે, ખૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, "जूव" સ્થભો સાથે બાધવામા આવે છે, "चक्क" ચક્રોથી જકડવામા આવે છે "विततबधण" હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ ખરાબ રીતે બાધવામા આવે છે "खभालण" મોટા મોટા થાભલાઓ ઉપર ગળે દોરડા બાધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા "उद्धचलणबधण" પગે દોરડા બાધીને વૃક્ષાદિ ઉપર ઊંધે માથે લટકાવવામા આવે છે, "विहम्मणाहिय" આ પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને "विहेडियता" પીડવામા આવે છે તથા "अहकोडगगाढउरसिरबद्धपूरिय" તેમના મસ્તકને એટલુ બધુ નીચે નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી જાય છે, અને તે કારણે શ્વાસોચ્છ્વાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ પૂર્ણ રહે છે, "फुर–"

मर्दनपूर्वकमुध्र्वाध' करणादीनि तैर्विहेड्यमाना इति पूर्वेण सम्बन्ध । तथा 'सवद्धा' सनद्धाः=रज्ज्वादिभिर्दृढनद्धाः सन्तः 'नीससता' निःश्वसन्तः=निश्वास विमुश्चत 'सीसावेढउरुयालवप्पडगसधिवधणतत्तसलागसूइआकोडणाणि' शीर्षावेष्टनोरुदारवप्पडसधिबन्धनतप्तशलाकासूच्याकुट्टनानि=शीर्षावेष्टन=आर्द्रचर्मादिभिः शिरोबन्धनमूरुदारः=जङ्घाविदारण चप्पडगसन्धिबन्धन=' चप्पडग ' इतिकाष्ठयन्त्रविशेषस्तेषां काष्ठयन्त्रविशेषाणा सन्धिस्थानेषु जानुकूर्परादिषु बन्धन, तथा तप्ताना शलाकाना=लोहकीलकानां सूचीनां च=प्रतीतानामाकुट्टनानि=शरीरे प्रवेशनानि यानि तान्येतानि, तथा-'तच्छणविमाणणाणि' तक्षणविमानननानि=वासिभिस्त

कडग) इनके वक्षस्थल की तथा पृष्ठभाग हड्डियां कपित होने लग जाती हैं। (मोडणेहिं) वार २ इन चोरो का वे कोतवाल लोग मर्दन करते हैं वार २ ऊँचे नीचे उठाते बैठाते हैं, इस तरह से बहुत दुःखित करते रहते हैं। (सनद्धा) रज्ज्वादिक से ईन्हें बहुत ही दृढ़ता के साथ हाथ पैर आदि अवयवो में बाध देते हैं (नीससता) इस कारण जोर २ से हांफने लग जाते हैं। (सीसावेढउरुयाल-वप्पडसधिवधणतत्तसलाग सूइ आकोडणाणि) (सीसावेढ) गीले चमडे आदि से इनका शिर बाध दिया जाता है, (उरुयाल) ऊरुदार-जघाएँ इनकी इतनी अधिक चौडी करवाई जाती हैं कि जिससे उनका विदारण (टूट जाना) हो जाता है। (चप्पडगसधिवधणा) जानुकूर्पर (कोणी) आदि सधि स्थानोंम एक प्रकारके काष्ठयत्र वाध दिये जाते हैं तथा (लोहसलाग) शरीरमें तप्तलोहे की शलाईयों से दाग दिये जाते हैं और (सूई आकोडणाणि) गरम लोहेकी सूईया उसमे प्रविष्ट की जाती हैं, तथा (तच्छणविमाणणाणि) वसूला आदिसे

તેમની છાતી તથા પીઠના હાડકા કપવા લાગે છે, "मोडणेहिं" તે ચોરોનુ તે કોટવાળો વારવાર મર્દન કરે છે તેમને વારવાર ઊઠ બેસ કરાવે છે, અને એ રીતે તેને બહુ જ દુખ છે "सनद्धा" તેમના હાથ પગ આદિ અવયવોને દોરડા આદિ વડે મજબૂત રીતે બાધી દેવામા આવે છે, "नीससता" તે કારણે તે બિચારા હાફી જાય છે "सीसावेढ" ભીના ચામડા આદિથી તેમના શિર બાધી દે છે, "उरुयाल" તેમની જાઘ એટલી બધી પહોળી કરવામા આવે છે કે તે કારણે તેમનુ વિદારણ થાય છે, 'चप्पडगसधि वधणा" જાનુ કૂપર (ગુદા) આદિ સાધાવાળી જગ્યાઓમા એક પ્રકારના કાષ્ઠયત્ર બાધી દેવામા આવે છે, તથા "लोहसलाग" તપાવેલા લોઢાના સળિયાઓ વડે શરીર પર ડામ દેવામા આવે છે, અને "सूइआकोडणाणि" ગરમ કરેલી લોઢાની સોયો શરીરમા ભોકવામા આવે છે, તથા "तच्छण विमा

फीलकाः 'खूटा' इति प्रसिद्धाः 'जूव' यूपाः=स्तम्भविशेषाः 'चक्क' चक्राणि रथाङ्गानि 'पहिया' इति भाषा प्रसिद्धानि तेषु विततबन्धन=बाहुजङ्घादिविघाटनेन नियन्त्रण तथा 'खंभालण' स्तम्भालगन=स्तम्भैः-सह रज्ज्वादिभिरावेष्टन गळे रज्जु बद्ध्वा स्तम्भेषु समालम्बन वा तथा 'उद्धचलणबंधण' ऊर्ध्वचरणबन्धन च=पादयोरुपरिकृत्य बन्धनमित्यादिर्या 'विहम्मणाहिं' विगर्पणाः=पीडास्ताभिः 'विहेडियता' विहेड्यमाना =पीड्यमानाः सकोटिता मोटिताः क्रियन्त इत्यग्रेण सम्बन्धः। तथा—' अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहिं ' अधः कोटकगाढोरः शिरोबद्धोर्ध्वपूरितस्फुरदुरःकाण्डकमोटनैः', तत्र--अधः कोटकेन=अधो नमयनेन गाढम्=अत्यर्थमुरसि=वक्ष स्थले शिरः=मस्तकं बद्ध येषा ते तथा अतएव ऊर्ध्वपूरिताः=श्वासप्रश्वासैः पूरितशरीरोर्ध्वभागास्तथा स्फुरदुरः कण्डकाश्च=कम्पमानवक्ष स्थलपृष्ठास्थिका ये चौरास्तेषां यानि मोटनानि=पुनः पुन

हथकडी आदि में बाध दिये जाते हैं, खूटों पर लटका दिये जाते हैं, (जूव) स्तभविशेषों से जकड़ कर बाध दिये जाते हैं, (चक्क) पहियों से (विततबधण) हाथ पैर बाहर निकालकर रस्सियों से बहुत बुरी रतह से जकड़ दिये जाते हैं, (खभालण) बड़े २ खभों के ऊपर गले में रज्जु आदि बाधकर लटका दिये जाते है। तथा (उद्धचलणबधण) पैरों में रस्सी आदि से बाधकर मुँह नीचा करके वृक्षादिको में लटका दिये जाते हैं। (विहम्मणाहिंय) इस प्रकार की-विविध प्रकार की पीडाओं से वे (विहेडियता) पीडित किये जाते हैं। तथा (अहकोडगाढउरसिरबद्ध उद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहिं) (अहकोडगगाढउरसिरबद्धपूरिय) इनका मस्तक इतने अधिक रूप मे नीचे झुकाया जाता है कि जिससे वह वक्षस्थल पर आकर चिपक जाता है, और इसी कारण श्वास उच्छ्वासों से इनका शरीर का उर्ध्वभाग पूरित होता रहता है, (फुरतउर

આદિ વડે બાધવામા આવે છે, ખૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, "जूव" સ્થભો સાથે બાધવામા આવે છે, "चक्क" ચક્રોથી જકડવામા આવે છે "विततबधण" હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ ખરાબ રીતે બાધવામા આવે છે "खभालण" મોટા મોટા થાભલાઓ ઉપર ગળે દોરડા બાધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા "उद्धचलणबधण" પગે દોરડા બાધીને વૃક્ષાદિ ઉપર ઊધે માથે લટકાવવામા આવે છે, "विहम्मणाहिय" આ પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને "विहोडियता" પીડવામા આવે છે તથા "अहकोडगगाढउरसिरबद्धपूरिय" તેમના મસ્તકને એટલુ બધુ નીચે નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી જાય છે, અને તે કારણે શ્વાસોચ્છ્વાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ પૂર્ણ રહે છે, "फुरतउरकडग"

सपशुलिकानि=पार्श्वास्थिसहितान्यस्थीनि येषां ते तथा उरसि महाकाष्ठस्य-चालनेन भग्नपार्श्वास्थिका इत्यर्थः, 'गलकालकलोहदंडउरउदरवत्थिपिट्ठिपरिपीलिया' गलकालकलोहदण्डोरउदरवस्तिपृष्ठपरिपीडिताः=गल इव=मत्स्यभेदककण्टकवत् कालकलोहदण्डः=श्यामलोहदण्डस्तेनोरसि=वक्षःस्थले, उदरे वस्तौ=नाभ्यधोगुह्य-प्रदेशे पृष्ठे च परिपीडिताः=आहता ये ते तथा, 'मत्थतहियंयसचुण्णियगुवंगा' मथ्यमानहृदयसञ्चूर्णिताङ्गोपाङ्गाः=तत्र मथ्यमान=महाकाष्ठादिभिर्विलोड्यमान हृदयं=वक्षःस्थलं येषां ते मथ्यमानहृदयाः, तथा कठोरभूम्यादौ घर्षणादिना सञ्चूर्णितान्यङ्गानि=शिर उर उदर पृष्टबाहुद्वयचरणद्वयलक्षणान्यष्टाङ्गानि उपाङ्गानि च=कर्णनासिका करचरणाङ्गुल्यादीनि येषां ते सञ्चूर्णिताङ्गोपाङ्गाश्च ये ते तथा, एते पापा वेदनाः प्राप्नुवन्तीत्यग्रेण सम्बन्धः। 'केइ' केचित्=केचन 'अविराहिय-वेरिएहिं'

गपसुलिया) उनकी पासली सहित हड्डियाँ पीस जाती हैं तब, तथा (गलकालकलोहदंडउरउदरवत्थिपिट्ठपरीपीलिया) (गल) मत्स्य भेदक कंटक की तरह (कालकलोहदंड) काले लोहे के दण्ड से (उर वक्षस्थल, (उदर) पेट, (वत्थि) वस्ति-नाभि के नीचे का गुह्यप्रदेश, एवं (पिट्ठ) पृष्ठ इन स्थानों पर जब वे (परिपीलिया) आहत होते हैं तब, तथा (मत्थतहियंयसचुण्णियगुवंगा) (मत्थतहियय) जब उनका हृदय महाकाष्ठ आदि से मथित किया जाता है तब, तथा (सचुण्णिगय-गुवंगा) कठोर भूमि के ऊपर घर्षण आदि से जब उनके अंग और उपांग अच्छी तरह चूर्णित हो जाते हैं तब, बहुत ही अधिक दुःखी होते हैं। शिर, उर, उदर, पृष्ठ, बाहुद्वय और चरणद्वय, ये आठ अंग हैं। तथा कर्ण, नासिका, कराङ्गुली एवं चरणांगुली आदि उपांग हैं। इस प्रकार ये (केइ) कितनेक अदत्तग्राही चोर (अविराहियवेरिएहिं)

તેમની છાતી ઉપર ઘણા ભારે વજનવાળી લાકડાની ઘોડી "दिण्णगाढपेल्लण" ખેંચીને આમ તેમ ફેરવવામાં આવે છે, ત્યારે "अट्ठिक समभगपसुलिया" તેમની પાસળીઓના હાડકાં પીસાઇ જાય છે, તથા "गल" માછલીને વીંધનાર કાંટાની જેમ "कालकलोहदण्ड" લોઢાના કાળા દંડા વડે "उर" છાતી "उदर" પેટ, "वत्थि" બસ્તિ-ગુહ્ય પ્રદેશ, અને "पिट्ठ" પીઠ વગેરે સ્થાનો પર જ્યારે "परिपीलिया" તેમને માર પડે છે ત્યારે, તથા "मत्थत हियय सचुण्णियगुवगा" "मत्थत हियय" જ્યારે તેમના હૃદયનું મહાકાષ્ઠ આદિ દ્વારા મંથન કરવામાં આવે છે ત્યારે, તથા "सचुण्णियगुवगा" કઠણ જમીન ઉપર ઘસડવાને લીધે જ્યારે તેમના અંગ ઉપાંગોનો સારી રીતે ચૂરો થાય છે ત્યારે તેઓ ઘણા જ દુ:ખી થાય છે. શિર, ઉર, ઉદર પૃષ્ઠ, બે હાથ અને બે પગ એ આઠ અંગો ગણાય છે તથા કાન, નાક, હાથ પગના આંગળા વગેરે ઉપાંગો કહેવાય છે. એ પ્રમાણે તે "केइ" કેટલાક અદત્તગ્રાહી-ચોર,

क्षणानि=वासीभि काष्ठस्येव गात्रक्षोल्लनानि, विमाननानि=गाल्यादानादिभिर्वि-विधरीत्याऽपमानकरणानि तथा 'खारकडुयतित्तनावणजायणकारणसयाणि' क्षार कटुकतिक्तनावणयातनाकारणशतानि = तत्र क्षाराणि=सर्जीक्षारादीनि कटुकानि= निम्बादीनि तिक्तानि च=मरीचादीनि तेषां 'नावण' इति मुखनासिकादौ प्रक्षेपण, तदादीनि यानि यातनाकारणशतानि=विविधवेदनाकारणशतानि तानि 'बहुयाणि' बहुकानि 'पावियता' प्राप्नुवन्तः, 'उरघोडीदिण्णगाढपेल्लण-अट्ठिकसभग्गसपसुलिया' उरोघोटीदत्तगाढप्रेरणसमग्नास्थिकसपशुलिका' = तत्र उरसि=वक्षःस्थले दत्ताः=स्थापिताः या घोटी 'घोडी' इति प्रसिद्ध महाकाष्ठ तस्या गाढम्=अत्यर्थं यत्प्रेरण=घर्षणपूर्वक सञ्चालन तेन समग्नानि=त्रुटितानि

उनके शरीर को छीलते हैं और विमानन गाली आदि से उनको अप-मानित करते हैं। (खारकडुयतित्तनावणजायणकारणसयाणि) (खार) मुख नासिका आदि में सर्जी क्षार आदि क्षार पदार्थों का (कडुय) आदि कटुक पदार्थों का एव (तित्त) मरीचि आदि तिक्त पदार्थों का चूरण (नावण) प्रक्षिप्त किया जाता है, (जायणकारणसयाणि) इत्यादि रूपसे (कारणसयाणि) वेदना प्रदानके जितने भी सैकड़ों प्रकार हे उन सबका उन द्रव्य हरण करनेवाले चोरोंपर प्रयोग किया जाता है। इस तरह (बहु याणि) बहुत प्रकारकी घोरातिघोर वेदनाको (पावियता) प्राप्त हुए वे जीव (उरघोडीदिण्ण गाढ पेल्लण अट्ठिक सभग्गसपसुलिया) (उरघोडी) जब उनके वक्षःस्थल पर बहुत अधिक बोझवाली काष्ठ की घोडी (दिण्णगा ढपेल्लण) इधर से उधर खेंचकर फिराई जाती है इससे (अट्ठिकसभ

णणाणि" વાસલા આદિથી તેમના શરીરને છોલે છે, અને ગાળો આદિથી તેમને અપમાનિત કરે છે "खारकडुयतित्तनावणजायणकारणसयाणि" "खार" મુખ, નાક આદિમા સાજીખાર આદિ ક્ષાર યુક્ત પદાર્થોની "कडुय" લીંબોળી આદિ કડવા પદાર્થોની, અને "तित्त" મરચા આદિ તીખા પદાર્થોની ભૂકી "नावण" નાખવામા આવે છે, "जायणकारणसयाणि" ઇત્યાદિ પ્રકારની પીડા પહોંચાડવાની જે સેકડો પદ્ધતિયો છે, તે બધીને તે દ્રવ્ય હરણ કરનારા ચોરો ઉપર પ્રયોગ કરવામા આવે છે, આ રીતે "बहुयाणि" અનેક પ્રકારની ભયંકરમા ભયંકર વેદનાઓ "पावियता" તે લોકો અનુભવે છે "उरघोडीदिण्णगाढपेल्लणअट्ठिकसभग्गसपसुलिया" "उरघोडी" જ્યારે

तथा 'लंबतचम्मवणवेयणविमुहियमणा' लम्बमानचर्मव्रणवेदनाविमुखितमनसः= लम्बमानचर्माणि=गलच्चर्माणि यानि व्रणानि=क्षतानि 'घाव' इति प्रसिद्धानि तेषां या वेदनाः=पीडाः ताभिः विमुखितं=चौर्यकरणाद् विरक्तं मनो येषां ते तथा, 'घणकोट्टणनियलजुयलसंकोडियमोडियाय' घनकुट्टननिगडयुगलसंकोटित-मोटिताश्च=तत्र घनकुट्टनेन=लोहमयमुद्गरताडनेन निगडयुगलेन=शृङ्खलाद्वयबन्धने-नेत्यर्थः, संकोटिताः=संकोचिताः मोटिताः=वक्रीकृताश्च ये ते तथा 'कीरंति' क्रियन्ते=राजपुरुषैरिति शेषेण सम्बन्धः। तथा निरुच्चाराः=निरुद्धमूत्रपुरीषोत्सर्गाः, यद्वा—निरुच्चाराः=स्वपीडाप्रतीकारार्थमेकशब्दोच्चारणमात्रमपि कर्तुमशक्ताः, अत एव असञ्चरणाः=गमनागमनवर्जिताः एकस्थानप्रतिरुद्धा एव 'पावा' पापाः=पाप-

---

पन्न बने हुए तथा (लंबतचम्मवणवेयणविमुहियमणा) (लंबतचम्म) कोड़े आदि की मार से शरीर की खाल खिंच जाने के कारण लटकते हुए चमड़े से युक्त (वण) घावों की (वेयण) वेदना से (विमुहिय-मणा) जिनका मन चोरी करने से विरक्त हो चुका है ऐसे, तथा (घणकोट्टणनियलजुयलसंकोडियमोडिया य) (घणकोट्टण) लोहमय मुद्गरों की चोट से, एवं (नियलजुयल) दो सांकलों द्वारा किये गये बंधनों के (संकोडियमोडिया) जिनका शरीर संकुचित होकर वक्रीभूत हो चुका है तथा (निरुच्चारा) अपनी पीडा को प्रकट करने के लिये जो एक शब्द के उच्चारण करने में भी असमर्थ बन चुके हैं, अथवा—बेहद मार के कारण मल मूत्र का उत्सर्ग जिनका बंद हो चुका है और इसी कारण जो (असंचरणा) एक ही स्थान में प्रतिनिरुद्ध रहने के कारण जो चलने फिरने में असमर्थ बन चुके हैं ऐसे ये अदत्तग्राही (पावा) पापी

એવી દીનદશાઓમાં મૂકાયેલા તથા 'लंबतचम्मवणवेयणविमुहियमणा" 'लंबतचम्म" કોરડા આદિના પ્રહારથી શરીરની ચામડી ઉતરી જવાથી લટકતી ચામડી વાળા "वण" ઘાવોની વેદનાથી 'विमुहियमणा" જેમના મન ચોરી કરવાથી વિરક્ત થઈ ગયા છે, તથા "घणकोट्टण नियलजुयल संकोडिय मोडियाय" 'घणकोट्टण" લોહમય મગદળોની ચોટથી અને "नियलजोयल" બે સાંકળો દ્વારા બંધાયેલા બંધનોથી 'संकोडियमोडिया" જેમના શરીર સંકોચાઈને વળી ગયા છે તથા "निरुच्चारा" પોતાની વેદનાને પ્રગટ કરવાને માટે એક શબ્દ પણ બોલવાને જે અસમર્થ છે, અથવા બેહદ મારને લીધે જેમની મળમૂત્ર આદિના ઉત્સર્ગની ક્રિયા બંધ થઈ ગઈ છે અને "असंच-रणा" એક જ સ્થાનમાં પૂરાયેલ રહેવાને કારણે જેવો હલન ચલન કરવાને

अविराधितवैरिकैः=निरपराद्धा एव वैरिणः शत्रवः=निष्कारणवैरिण इत्यर्थः, तैः 'जमपुरिससनिभेहिं' यमपुरुषसन्निभैः=परमाधार्मिकदेवसदृशैः भयोत्पादकत्वात्तै रेवभूतैः 'आणत्तिकिंकरेहिं' आज्ञप्तिकिङ्करैः=राजनिदेशकारिभिः पुरुषैः 'पहया' प्रहतास्ते=अदत्ताऽऽदायिनः 'तत्थ' तत्र=कारागारे 'मदपुण्णा' मन्दपुण्याः=भाग्यहीनाः 'चडवेलावद्धपट्टपोराच्छिवाकसलत्तवरत्तवेत्तपहारसयतालियगुवगा' 'चडवेलावद्धपट्टपोराच्छिवाकशालताचरत्रावेत्रप्रहारशतताडिताङ्गोपाङ्गा, तत्र-चडवेला=चपेटा 'वद्धपट्ट' वध्रपट्ट' वद्धपट्ट=चर्मपट्टः 'पोरा' लोहकीलकाः, देशीशब्दोऽयम् 'छिवा' चिक्कणचर्मकशा 'चाबुक' इति भाषा प्रसिद्धा, देशी शब्दोऽय, कशाः=अश्वादिताडनचर्मयष्टिः, 'लया' लता=कम्बाहरितवृक्षशाखा-यष्टि 'छडी' 'कामडी' इति भाषा प्रसिद्धा 'वरत्त' वरत्रा=चर्ममयीरज्जुः 'वेत्त' वेत्र=वेत्रयष्टिः, एतेषा 'पहारसय' प्रहारशतैः 'तालियगुवगा' ताडि-ताङ्गोपाङ्गा=ताडितान्यङ्गोपाङ्गानि येषा ते तथा, 'किविणा' कृपणा=दीनाः,

---

विना अपराध के ही वैरी बने हुए-निष्कारण शत्रु भाव को प्राप्त हुए ऐसे (आणत्ति किंकरेहिं) राजनिदेशकारी पुरुषों के द्वारा कि जो (जमपुरिससनिभेहिं) यमपुरुष-परमाधार्मिक जैसे होते हैं (तत्थ) उस कारागार मे (पहया) आहत-दुःखि किये जाते हैं। वहां पर वे (मद-पुण्णा) अभागे (चडवेलावद्धपट्टपोराच्छिवाकसलत्तवरत्तवेत्तपहारस यतालियगुवगा) (चडवेला) थप्पड़ों के, (वद्धपट्ट) चर्म पट्टोंके, (पोरा) पोर-लोहे के खीलों के, (छिवा) चिकने चमडा के कोडो के (कस) चाबुक के, (लत्त) लता-हरे वृक्षकी शाखा की छडी के, (वरत्त) वरत्रा-चमड़े की रस्सी के, वेतों के (पहारसय) सैकड़ो प्रहारों से (तालियगु वगा) अग उपागों में ताडित किये जाते हैं। (किविणा) दीनदशास

"अविराहिय वेरीएहिं" વિના વાંકે દુશ્મન બનેલા-વિના કારણ શત્રુ બની બેઠેલા, "जमपुरिससनिभेहिं" યમ દેવ જેવા "आणत्ति किंकरेहिं" રાજ પુરુષો દ્વારા, તે કારાગારમા "पहया" પ્રહારો વડે દુખી કરાય છે ત્યા તે "मदपुण्णा" અભાગી લોકો "चडवेलावद्धपट्टपोराच्छिवाकसलत्तवरत्तवेत्त-पहारसयतालियगुवगा" "चडवेला" થપ્પડોના, "वद्धपट्ट" ચર્મ પટ્ટાઓના "पोरा" લોઢાના ખીલાઓના, "छिवा" ચીકણા ચામડાના કોરડાના, "कस" ચાબુકના, "लत्त" લીલા વૃક્ષની ડાળીઓની સોટીઓના "वरत्त" વરતના ચામડાના દોરડાના અને નેતરની સોટીઓના, "पहारसय" સેકડો પ્રહારો "तालियगुवगा" તેમના અગ ઉપાગો પર મારવામા આવે છે "किविणा"

टीका—' अदतिंदिया ' अदान्तेन्द्रियाः=अवशेन्द्रियाः ' वसट्टा ' वशार्ता शब्दादिविषया सक्तिपीडिताः ' बहुमोहमोहिया ' बहुमोहमोहिता प्रचुरऽज्ञानमूर्छिताः ' परधणम्मि लुद्धा ' परधने लुब्धा =परद्रव्यतृष्णाक्रान्त इत्यर्थः, 'फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा' स्पर्शेन्द्रियविषयतीव्रगृद्धा =स्पर्शेन्द्रियविषये स्त्र्यादौ गाढासक्ताः ' इत्थिगयरूवसद्दरसगन्धइट्ठरतिमहियभोगतण्हाइया य ' स्त्रीगतरूपशब्दरसगन्धेष्टरतिमहितभोगतृष्णार्दिताश्च=तत्र स्त्रीगताः स्त्रीसम्बन्धिनो ये रूपशब्दरसगन्धास्तेषु इष्टा=अभीप्सिता या रतिः=रमण तथा स्त्री गत एव महितः = वाञ्छितो यो भोगः= विलास. तयो र्या तृष्णा तया अर्दिताः=पीडिताः ' धणतोसगा ' धनतो-

हैं ? यह कहते हैं—' अदतिंदिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(अदतिंदिया) ये अदत्तग्राही चोर (अदतिंदिया) ऐसे होते हैं कि इनकी इन्द्रिया इनके वशमें नहीं रहती हैं, (वसट्टा) शब्दादिक विषयों में ये अधिकरूप में आसक्तिवाले होते हैं, (बहुमोहमोहिया) अज्ञानकी सत्ता इनमें अधिकसे अधिक रहती है (परधणम्मिलुद्धा) परके द्रव्यमें इन्हें बहुत भारी तृष्णा रहती है । (फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा) स्पर्शन इन्द्रियके विषयभूत स्त्री आदि पदार्थ में इनकी गाढ आसक्ति होती है । (इत्थिगयरूवसद्दरसगंधइट्ठरइमहियभोगतण्हाइया य) (इत्थिगय) स्त्री सबंधी (रूवसद्दरसगंधइट्ठरइ) रूप शब्द, रस, गधमें इच्छानुसार रमण करनेकी तथा (महिय) स्त्रीके भोगनेकी वाञ्छा इनमें अधिक रहती है । परन्तु (भोगतण्हाइया) उन भोगोंकी पूर्ति नहीं हो सकने के कारण ये उनकी तृष्णासे रातदिन

તે સૂત્રકાર બતાવે છે— ' अदतिंदिया " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—" अदतिंदिया " તે અદત્તાગ્રાહી ચોર એવા હોય છે કે તેમની ઈન્દ્રિયો ઉપર તેમનો કાબૂ હોતો નથી, " वसट्टा " શબ્દાદિક વિષયોમા તે વધારે પ્રમાણમા આસક્ત હોય છે, " बहुमोहमोहिया " તેમના પર અજ્ઞાનની સત્તા વધારેમા વધારે ચાલે છે, " परधणम्मि लुद्धा " પરધનની તૃષ્ણા તેમનામા બહુજ વધારે હોય છે, " फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा " સ્પર્શેન્દ્રિયને વિષયભૂત સ્ત્રી આદિ પદાર્થોમા તેમની તીવ્ર આસક્તિ હોય છે, " इत्थिगयरूवसद्दरसगंधइट्ठरइमहियभोगतण्हाइया य " " इत्थिगय " સ્ત્રી સબધી " रूवसद्दरसगंध इट्ठरइ " રૂપ, શબ્દ, અને ગધમા ઇચ્છાનુસાર રમણ " महिय 'કરવાની તથા સ્ત્રીઓ સાથે રતિરમણ કરવાની વાસના તેમનામા વધારે હોય છે પણ " भोगतण्हाइया" તે ભોગો પૂરા નહી થવાને કારણે, તેમની

कारका अदत्तहारिणो जनाः ' एया अणगा य एवमादीओ वेयणाओ ' एता पूर्वोक्ताः, अन्याश्च अन्यप्रकारा एवमादिका'=एव प्रकारानानाविधा वेदनाः = दु खानि ' पावति ' प्राप्नुवन्ति ॥ सू० १४ ॥

पुनस्ते कीदृशाः कीदृश फल लभन्ते ? तदाह-' अदत्तिंदिया ' इत्यादि ।

मूलम्——अदंतिंदिया वसट्टा वहुमोहमोहिया परधणम्मि लुद्धा फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा इत्थिगयरूवसद्दरसगध-इट्ठरइमहियभोगतण्हाइया य धणतोसगा गहिया य जे नर-गणा पुणरवितेकम्मदुवियड्ढा उवणीया रायकिंकराणं तेसिं वह सत्थग—पाढयाण विल उलीकारगाण लंचसयगेण्हयाणं कूडवडमायाणियडि-आयरण-पणिहिवचण-विसारयाण वहुविह-अलियसयजपगाण परलोगपरम्मुहाण निरयगइ गामियाण तेहि य आणत्तजीवदंडा तुरिय उग्घाडिया पुरवरेहि सिंघाड-गतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु वेत्तदंडलउडकट्ठलेट्ठुपत्थर—प-णालिय पणोलिमुट्ठिलत्तपादपण्हि जाणुकोप्परप्पहारसभग्गमहि-यगत्ता अट्ठारसकम्मकारिणो पाइयगुवगा कलुणा सुक्कोट्ठकठ-गलतालु जिब्भा जायता पाणिय विगयजीवियासा तण्हाइया वरागा तपि य न लहति वज्झपुरिसेहि धाडियता ॥सू०१५॥

जीव (एया) इन पूर्वोक्त वेदनाओं के तथा (अण्णाय एवमाईओ) इनसे अतिरिक्त और भी नाना प्रकार की (वेयणाओ) वेदनाओं के (पावति) प्राप्त होते ह ॥ सू-१४ ॥

अव ये अदत्ताग्राही चोर कैसे होकर किस प्रकारके फलको भोगते

અસમર્થ થઈ ગયા છે, એવા તે અદત્તગ્રાહી " पावा " પાપી જીવો " एया " એ પૂર્વોક્ત વેદનાઓ તથા " अण्णाय एवमाइओ ' તે સિવાયની બીજી પણ અનેક પ્રકારની " वेयणाओ " વેદનાઓ " पावति " પામે છે ॥ સૂ-૧૪ ॥

હવે અદત્તાગ્રાહી-ચોર કેવા હોય છે અને કેવા પ્રકારના ફળ ભોગવે છે

ग्राहकाणां=नानाविधलञ्चग्राहकाणां 'रिश्वत खोर' इति भाषा प्रसिद्धानां तथा 'कूडकवडमायाणियडि—आयरणपणिहिवंचणविसारयाणं' कूटकपटमायानिकृत्याचरणप्रणिधिवञ्चनविशारदानां—तत्र कूटं=भ्रमोत्पादनं, कपटं=वेशभाषानानारूपधारणं माया=चौरादीन् निग्रहीतुं भिक्षाटनादिभिश्छल्करणं, भोजनादिभिरादरसत्कारकरणैर्वञ्चनं निकृतिः तथा प्रणिधिवञ्चनं प्रणिधिना=छलेन एकाग्रचित्तेन वा वञ्चनं, यद्वा—प्रणिधीनां=राजगुप्तपुरुषाणां यद्वञ्चनं तत्र विशारदाः=प्रागल्भा ये ते तथा तेषां 'बहुविहअलियसयजंपगाणं' बहुविधालीकशतजल्पकानां=चौरादीनां

आदि की शिक्षा से वे राजपुरुष शिक्षित होते हैं (विलउलीकारगाणं) दीन-हीन आदि वचनों को बोल कर चोर आदिकों का निर्णय कराने वाले होते हैं, अर्थात्—वे राजपुरुष ऐसे निपुण होते हैं कि चोरों का पता बहु जल्दी लगा लेते हैं, इस प्रकार की उनकी बात चीत का ढंग होता है कि जिससे "यही चोर है" इस बात का उन्हें ज्ञान हो जाता है। (लंचसयगेण्हयाणं) ये रिश्वतखोर—घूस खाने वाले होते हैं। तथा (कूडकवडमायाणियडि आयरणपणिहि-वंचणविसारयाणं)(कूड) कूट में—भ्रमोत्पादन में, (कवड) कपट में—वेश भाषा के नानारूप धारण करने में, (माया) माया में चोरोंको पकडने के लिये भिक्षावृत्ति आदिसे छल करने में, (नियडि आयरण) निकृत्याचरण में—भोजनादि द्वारा आदर सत्कार से प्रतारणा करने में, तथा (पणिहिवंचणा) प्रणिधि—वञ्चनमें कोई बहाने से ठगने में, अथवा राजा के गुप्तचर पुरुषों का ठगने में, (विसारयाणं) बडे विशारद—चतुर होते हैं। (बहुविहअलियसयजंप-

ते જાણકાર હોય છે "विलउलीकारगाणं" दीन-हीन આદિ વચનો બોલી ચોર આદિનો નિર્ણય કરનાર હોય છે, એટલે કે તે રાજપુરુષો ચોરોને જલ્દી શોધી કાઢવામાં નિપુણ હોય છે તેમની વાતચીતની ઢબ એવી હોય છે કે જેથી "આ માણસ જ ચોર છે," એ વાત તેમને સમજાઈ જાય છે "लंचसयगेण्हयाणं" તેવો લાંચીયા હોય છે, તથા "कूडकवडमायाणियडि-आयरणपणिहिवंचणविसारयाणं" "कूड" કૂડ કરવામાં ભ્રમોત્પાદનમાં, "कवड" કપટમાં—વિવિધ વેશ લેવામાં, "माया" માયા ચોરોને પકડવાને માટે ભિક્ષાવૃત્તિ આદિ છળ ખેલવામાં, "नियडिआयरण" નિકૃત્યાચરણમાં ભોજનાદિ દ્વારા આદરસત્કારથી પ્રતારણા કરવામાં તથા "पणिहिवंचणा" પ્રણિધિ વચનમાં, કોઈ પણ બહાને ઠગવામાં અથવા રાજાના ગુપ્તચરને ઠગવામાં, "विसारयाणं" ભારે નિપુણ હોય છે "बहुविहअलियसयजंपगाणं"

पका=परधनचौर्येण तुष्यन्ति ये ते तथा राजपुरुषैः 'गहियाय' गृहीताश्च ये नरगणाः=चौरजनसमूहाः पूर्वं कोट्टपालादिभिः प्राप्तदण्डाः 'पुणरवि ते' पुनरपि ते 'कम्मदुव्वियड्ढा' कर्मदुर्विदग्धा=अदत्तादानादिकर्मजनितकटुकफलज्ञानरहिता. चौर्यकर्माऽपराधेन 'तेसिं रायकिंकराण' तेषां प्रसिद्धाना निर्दयाना राजकिंकराणा=राजपुरुषाणामग्रे 'उवणीया' उपनीताः= समीपं प्रापिताः कथं भूतानां राजकिंकराणामित्याह 'वधसत्थगपाढयाण' वधशास्त्रकपाठकाना=वधवन्धमारणघातनमात्रशिक्षाशिक्षिताना 'विलउलीकारगाण' विलउली=हीनदीनादिवचनैश्चौरादीनां निर्णयः देशी शब्दोऽय, तत् कारकाणा 'लचसयगेण्हयाण' लञ्चशत-

दुःखी होते रहते है। (धणतोसणा) यदि इन्हें संतोष प्राप्त होता है तो वह एक परके धनके अपहरण करनेसे ही होता है। परन्तु यह संतोष इनका स्थायी नहीं रहता है कारण जब (जेनरगणा) ये अदत्त ग्राही चौर लोक (गहिया य) राजपुरुषों द्वारा गृहीत पकड़ लिये जाते है, तब (पुणरवि ते) फिर भी वे विविध प्रकारके दडों से इन्हे विशेष दुःख भोगना पड़ता है। तथा (कम्मदुव्वियड्ढा) अदत्तादानादि कर्मजनित कटुक फलके ज्ञानसे रहित बने हुए चौर्यकर्मरूप अपराधके कारण (तेसिं) उन (रायकिंकराण) निर्दय राजपुरुषों के आगे जब (उवणीया) ले जाये जाते है तब वे इन्हें प्राणदंड की आज्ञा देते है, तथा और भी इनके साथ क्या २ व्यवहार करते है यह बात सूत्रकार स्पष्ट नीचेके अवतरणों द्वारा करते है—राजपुरुष कैसे होते है ? पहले यह बात सूत्रकार कहते है—(वधसत्थगपाढयाण) वध, बध, मारण, घातन,

तृष्णाने કારણે તેવા રાતદિન દુખી થયા કરે છે 'धण तोसणा' તેને પરધનનું અપહરણ કરવા સિવાય બીજા કોઈ કાર્યથી સંતોષ થતો નથી, પણ તેનો તે સંતોષ સ્થાયી હોતો નથી કારણ કે જ્યારે "ते नरगणा" તે અદત્તાગ્રાહી ચોરો "गहियाय" રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈ જાય છે ત્યારે "पुणरवि ते" ફરીથી પણ તેમને અનેક પ્રકારની શિક્ષાઓ દ્વારા વધારે દુખો ભોગવવા પડે છે, તથા "कम्म दुव्वियट्ठा" અદત્તાદાન આદિ કર્મના કટુ પરિણામ જ્ઞાનથી અજ્ઞાનથી એવા તે ચોરોને, ચોરીના ગુનાને કારણે "तेसिं" તે "राय किंकराण" નિર્દય રાજપુરુષો પાસે જ્યારે "उवणीया" લઈ જવામા આવે છે ત્યારે તેમને મૃત્યુદંડની સજા થાય છે, તથા તેમની સાથે બીજા પણ કેવો વર્તાવ રાખવામા આવે છે, તે વાતને સૂત્રકાર નીચેના, વાક્યો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે—પહેલા તે રાજપુરુષો કેવા હોય છે, તે વાત સૂત્રકાર બતાવે છે "वधसत्थगपाढयाण" વધ, બંધ, મારણ, ઘાતન, આદિ વિદ્યાઓના

अनेकमार्गसम्मेलनस्थान महापथः=राजमार्गः पन्थाः=सामान्यमार्गस्तेषु त्वरित= शीघ्रमुद्घाटिताः=जनसमक्षे प्रदर्शिताः 'इमे महाचोरा : शीघ्रमयैवरम्याः' इति जनसमक्षे प्रदर्शिताः, कथ भूता. ? इत्याह—'वेत्त-दड-लउड-कट्ठलेट्ठु-पत्थर-पणालिय-पणोलियमुट्ठि-लत्तपायपण्हि-जाणुकोप्परप्पहारसभग्गमहियगत्ता' वेत्र-दण्ड- लगुट- काष्ठ- प्रस्तर- प्रणाली-प्रणोदी मुष्टिलत्ता-पादपार्ष्णि- जानु-कूर्पर-प्रहारसभग्नमथितगात्रा, तत्र 'वेत्तदड' वेत्रदण्डः 'लउड' लकुटः=यष्टिः 'कट्ठ' काष्ठ च=प्रतीत 'लेट्ठु' लेष्टु =मृत्तिका खण्ड 'पत्थर' प्रस्तरश्च=पाषाणः 'पणालिय' प्रणाली:=प्रकृष्टा, नाली पुरुषप्रमाणदीर्घयष्टिः 'पणोली' प्रणोदी =ताडनदण्डो, 'मुट्ठी' मुष्टि। इति भाषा प्रसिद्ध 'लत्ता' पाद. 'लात' इति भाषा प्रसिद्ध , 'पादपण्हि' पादपार्ष्णिः=चरणपश्चाद्भागः 'एडी' इति भाषा प्रसिद्ध', जानुः='घुटना' इति प्रसिद्ध' 'कोप्पर' कूर्परश्च=भुजमध्यग्रन्थिः 'कुणि' इति भाषा प्रसिद्धः, एतेषा प्रहारै' 'सभग्ग' सभग्नानि=त्रुटितानि, 'महिय' मथितानि च=सम्मर्दितानि 'गत्त' गात्राणि=शरीराणि येषा ते तथा

नाम चतुष्क, जहा अनेक मार्ग आकर मिले हों उसका नाम चत्वर, राजमार्ग का नाम महापथ एव सामान्यमार्ग का नाम पथ है। (वेत्तदड लउड-कट्ठ-लट्ठु-पत्थर-पणालिय-पणोलिय मुट्ठि-लत्त-पायू-पण्हि-जाणू कोप्परप्पहारसभग्गमथितगत्ता) राजपुरुष इन चोरों को (वेत्तदड) वेतों के डडों की मार से, (लउड) लकडियों की मार से, (कट्ठ) काष्ठों की मार से, (लेट्ठु) मृत्तिकाके खडोकी मार से, (पत्थर) पत्थरों की मार से, (पणालिय) पुरुषप्रमाणदीर्घ यष्टियों की मार से, (पणोलिय) प्रणोली-ताडन दडो की मार से, (मुट्ठि) मुट्ठियो-मुक्कों की मार से, (लत्त) लातो की मार से, (पायपण्हि) एडियो की मार से, (जाणु) घुटनो की मार से तथा कोहनियो की मार से हड्डी पसली सब एक कर देते हैं-मतलब ये कि वे इन्हें जो इनके हाथ में आ जाता है उसी से

छे राजभार्गने भहापथ अने सामान्य भार्गने पथ कहे छे "वेत्तदड-लउड -कट्ठ लेट्ठु-पत्थर-पणालिय पणोलिय-मुट्ठि-लत्त-पायू-पण्हि-जाणू-कोप्पर प्पहार-सभग्गमथितगत्ता" राजपुरुषो ने चोरोने नेतरनी सोटीओथी, लाकडीओथी लाकडाथी माटीना ढेकाथी पथ्थरोथी, "पणालिय" पुरुष मापनी लाकडीथी, "पणोलिय" दडाओथी, मुक्काओथी, लातोथी, एडीथी, घुटणथी तथा कोणीथी मारी रीते मारे छे, एटले के तेमना हाथमा जे साधन आवे तेनाथी ते लोको तेमने बहु ज खराब रीते मार मारे छे "अट्ठारसकम्मकारिणो" ते

भेदग्रहणाय नानाविध मिथ्याभाषिण, 'परलोकपरम्मुहाण' परलोकपराङ्मुखानां= परलोकभयरहितानामित्यर्थः, 'निरयगइगामियाण' नरकगतिगामिकानामेवभूताना राजपुरुषाणां पुरत उपनीताः 'तेहि य' तैश्च राजपुरुषैः 'आणत्तजीवदडा' आज्ञप्त जीवदण्डाः=आज्ञप्तः=आज्ञापितः जीवदण्डः=शूलारोपणादिकः येभ्यस्ते तथा आज्ञप्तमृत्युदण्डा इत्यर्थः, तथा 'तुरिय उग्घाडिया पुरवरेहिं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु' शृगाटकत्रिकचतुष्कचत्वरमहापथपथेषु=तत्र-शृङ्गाटकाः=त्रिकोणमार्गः त्रिकः=यत्र मार्गत्रयसम्मेलन भवति, चतुष्कः=चतुर्मार्गस्थान चत्वरः=

गाण) चौरादिकों का भेद लेने के लिये अनेक प्रकार की सैकड़ों झूठी२ बाते बनाने मे बड़े चतुर होते हैं, (परलोकपरम्मुहाण) परलोकका भय इन्हें बिलकुल नहीं होता है। जो मनमें आता है वही अच्छा मानकर करते रहते हैं। (निरयगइगामियाण) इसी कारण मरने पर ये नरक-गति में जाते हैं। अब ये राजपुरुष उन्हें क्या २ दड देते हैं? सो सूत्र-कार प्रदर्शित करते हैं (तेहिं य) ये राजपुरुष (आणत्तजीयदडा) इन चोरों को शूलारोपण आदि मृत्युदड देते हैं। (पुरवरेहिं) नगर के (सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु) शृगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ एव पथ इन सब मार्गों में (तुरिय उग्घाडिया) शीघ्र उन्हें दिखा २ कर यह घोषित करते हैं कि "देखो भाईयों! ये महाचोर हैं और आज ही इनको मृत्युदड दिया जायगा। सिंघाडे जैसा तिकोनों जो मार्ग होता है उसका नाम शृगाटक, जहा तीन मार्गो का समेलन है उसका नाम त्रिक, जिस रास्ते में चार रास्ता आकर मिलते हैं उस का

ચોર આદિનો ભેદ જાણવાને માટે અનેક પ્રકારની સેંકડો જુઠી વાતો બનાવી કાઢવામા તે નિપુણ હોય છે, "परलोकपरम्मुहाण" તેમને પરલોકનો ડર બિલકુલ હોતો નથી, તેમને મનમા આવે તે જ સારુ માનીને કરે છે 'निरयगइगामियाण" તે કારણે મરીને તેઓ નરકગતિમા જાય છે હવે તે રાજપુરુષો તેમને કેવી કેવી સજા કરે છે, તે સૂત્રકાર બતાવે છે—"तेहिं य" તે રાજપુરુષો "आणत्तजीयदडा" તે ચોરોને શૂલારોપણ આદિ મૃત્યુદંડ દે છે "पुरवरेहिं" નગરના "सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु" શૃગાટક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ અને પથ એ બધા માર્ગો પર "तुरिय उग्घाडिया" તેમને ઝડપથી બતાવીને એવુ જાહેર કરે છે કે 'ભાઇઓ! જુવો, આ મહાન ચોર છે, અને આજે જ તેને મૃત્યુદંડ આપવાનો છે" શિંગોડા જેવા ત્રિકોણાકાર માર્ગને શૃગાટક કહે છે, જ્યા ત્રણ રસ્તા મળે તે ત્રિક, જ્યા ચાર રસ્તા મળે તે ચતુષ્ક, જ્યા અનેક માર્ગો મળે તેને ચત્વર કહે

भलन १, कुशल २, तर्जा ३, राजभागो ४, ऽवलोकनम् ५।
अमार्गदर्शन ६, शय्या ७, पदभङ्ग ८, स्तथैव च ॥ १ ॥
विश्रामः ९, पादपतन १० मासन ११, गोपन १२ तथा।
खण्डस्य खादन चैव १३, तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥
पद्या१५, ग्न्यु १६, दक १७ रज्जूना १८, प्रदान ज्ञानपूर्वकम्।
एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥
तत्र भलनं='न भेतव्य भवता तव पक्षेऽहमपि सम्मिलिष्यामी'त्यादि वचनैः

चोरी अठारह प्रकार की इस तरह से है—
"भलन १ कुशल २ तर्जा ३। राजभागो ४ऽवलोकनम् ५।
अमार्गदर्शन ६ शय्या। पदभङ्ग ८ स्तथैव च॥ १ ॥
विश्राम ८ पादपतन १०। मासन ११ गोपन १२ तथा।
खण्डस्य खादन चैव १३। तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥२॥
पद्या १५ ग्न्यु १६ दक १७ रज्जूर्ना १८। प्रदान ज्ञानपूर्वकम्।
एताः प्रसूतयो ज्ञेया। अष्टादश मनीषिभिः॥ ३ ॥
भलन १, कुशल २, तर्जा ३, राजभाग ४, अवलोकन ५, अमार्गदर्शन ६, शय्या ७, पदभग ८॥१॥ विश्राम ९, पादपतन १०, आसन ११, गोपन १२, खडखादन १३, मोहराजिक १४ ॥२॥ पद्यदान १५, अग्निदान १६, उदकदान १७, रज्जुप्रदान १८ ॥ ३ ॥
"तुम डरो मत-में भी तुम्हारे पक्षमे मिल जाऊँगा" इत्यादि

ચોરીના અઢાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—
"भलन १, कुशल २, तर्जा ३ राजभागो ४ ऽवलोकनम् ५।
अमार्गदर्शन ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥
विश्राम ९ पादपतन १० मासन ११ गोपन १२ तथा।
खण्डस्य खादन चैव १३ तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥
पद्या १५ ग्न्यु १६ दक १७ रज्जूना १८ प्रदान ज्ञानपूर्वकम्।
एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥
(૧) ભલન, (૨) કુશલ, (૩) તર્જા (૪) રાજભાગ (૫) અવલોકન, (૬) અમાર્ગદર્શન, (૭) શય્યા, (૮) પદભગ ॥૧॥ (૯) વિશ્રામ, (૧૦) પાદપતન (૧૧) આસન, (૧૨) ગોપન, (૧૩) ખડખાદન, (૧૪) મોહરાજિક ॥૨॥ (૧૫) પદ્યદાન, (૧૬) અગ્નિદાન, (૧૭) ઉદકદાન અને (૧૮) રજ્જુપ્રદાન ॥૩॥
(૧) 'તમે ડરશો મા-હુ પણ તમારા પક્ષમા મળી જઇશ" વગેરે

'अट्ठारसकम्मकारिणो' अष्टादशकर्मकारिणः=अष्टादशचौरप्रकृतिकारकाः अष्टादशप्रकारैश्चौर्यं भवति तत्कारका इत्यर्थः । अथ चौरस्य चौर्यकर्मणश्च लक्षणमुक्तं ग्रन्थान्तरे—

"चौरः १, चौरापकी २, मन्त्री ३, भेदज्ञः ४, काणकक्रयी ५ ।
अन्नदः ६, स्थानदश्चैव ७, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥"

चौरः=चौर्यकारकः १, चौरापकः=चौराय वस्तुसमर्पकः २, मन्त्री=चौराय सम्मतिदायकः ३, भेदज्ञ='कुत्र कस्य गृहे कया रीत्या कस्मिन् समये चौरी कर्तव्ये'-त्यादि भेदज्ञातारः ४, काणकक्रयी=चौरानीत बहुमूल्यवस्तु काणकं हीनं कृत्वा यः क्रीणाति सः ५, अन्नदः=चौराय-चौर्यार्थमन्नदायकः, ६, स्थानदः=चौराय विश्रामार्थं स्वगृहादौ स्थानदायकः ७, इति सप्तविधश्चौरः । अथ चौर्यकर्म यथा—

बुरी तरह मारते हैं। (अट्ठारसकम्मकारिणो) ये चोर अठारह प्रकार से जो चौर्यकर्म किया जाता है उसमें निपुण होते हैं। ग्रन्थान्तर में चोर और चोरी के लक्षण इस प्रकार कहे हुए हैं—

"चौरः १ चौरापकी २ मन्त्री ३, भेदज्ञः ४, काणकक्रयी ५ ।
अन्नदः ६ स्थानदश्चैव, चौरः, सप्तविधः स्मृतः ॥१॥"

जो स्वयं चोरी करता है १, चोरों को वस्तु देता है २, चोरों को संमति देता है ३, किस समय किसके घर में किस रीति से कहां चोरी करनी चाहिये इत्यादि रूप से जो चोरों को चोरी करने का भेद देता है ४, चोरों के द्वारा लाई गई बहु मूल्य वस्तु को जो अल्पमूल्य देकर खरीदता है ५, जो चोरों के लिये खाने पीने की व्यवस्था करता है ६, तथा चोरों के लिये विश्रामनिमित्त जो अपने घर आदि में स्थान देता है ७ ये सब चोर हैं। इस प्रकार ये सात तरह के चोर कहे गये हैं ॥१॥

ચોર જે અઢાર પ્રકારે ચોરી કરવામા આવે છે તેમા નિપુણ હોય છે બીજા ગ્રન્થમા ચોર અને ચોરીના આ પ્રમાણે લક્ષણો બતાવ્યા છે

"चौरः १ चौरापकी २ मन्त्री ३ भेदज्ञः ४ काणकक्रयी ५ ।
अन्नद ६ स्थानदश्चैव, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥"

(૧) જે પોતે જ ચોરી કરે છે, (૨) જે ચોરોને વસ્તુઓ આપે છે, (૩) જે ચોરોને સંમતિ આપે છે, (૪) ક્યારે, કોના ઘરમા, કઈ રીતે ચોરી કરવી જોઈએ ઇત્યાદિ પ્રકારે જે ચોરોને ચોરી કરવાનુ રહસ્ય બતાવે છે, (૫) ચોરો દ્વારા ચોરી લાવવામા આવેલી કીમતિ ચીજોને જે ઓછી કીમતે ખરીદે છે, (૬) જે ચોરોને માટે ખાવા પીવાની વ્યવસ્થા કરે છે તથા (૭) જે ચોરોને પોતાના ઘરમા આશ્રય આપે છે, તે બધા ચોર ગણાય છે, આ રીતે સાત પ્રકારના ચોર બતાવ્યા છે ॥ ૧ ॥

शयनीयमस्तु दानमित्युभयोर्भेदः पादपतन=प्रणामादिना चौराणां सत्कारसम्मानकरणम् १०, आसनम्=आसनदानं ११, गोपनम्=नाऽनेन चौर्यं कृतं स्वगृहे स्थापयित्वा नास्त्यत्रेति वा कथनेन चोरसङ्गोपनं १२, खण्डस्य खादनम्=चौरेभ्यो मिष्टान्नादिदानं १३, तथाऽन्यन्मोहराजिकम्=लोकप्रसिद्ध्या परराष्ट्रे गत्वा वस्तुविक्रयः १४, तथा ज्ञानपूर्वकम्='चोरोऽय' मिति बुद्धिपूर्वकं पाद्याग्न्युदकरज्जूनां प्रदानं=मार्गगमनश्रमापनोदार्थं पाद्य=पादाय हितमुष्णतैलजलादि, तस्य दानं १५, पाकार्थमग्निदानम् १६, उदकदानं=पानार्थं जलदानं १७, तथा चोरीतगोम

ठहराना-विश्राम देना इसका नाम विश्राम है ९। शय्यादान और विश्राम में अन्तर केवल इतना ही है कि शय्यादान तो दूसरी जगह ठहरने पर भी दिया जा सकता है परन्तु विश्राम अपने घर में ही दिया जाता है ९। चौरों के चरणों पर गिरकर उनका आदर सत्कार करना इसका नाम पादपतन है १०। बैठने को आसन देना यह आसनदान है ११। " इसने चोरी नहीं की है, घर में होने पर भी घर में चोर नहीं है " इस प्रकार कह कर चोर की रक्षा करना इसका नाम गोपन है १२। चोरों के लिये खाने को मिष्टान्न आदि देना इसका नाम खण्ड खादन है १३। नाका बंदी होने पर दूसरे स्थान में, अथवा लोक प्रसिद्धि से परराष्ट्र में एकदेशसे ले जाकर दूसरे देशमें बेचना इसका नाम मोहराजिक है १४। " यह चोर है " ऐसा जानकर भी उसे पद्य, अग्नि, उदक, रज्जु देना, पैरों की थकावट मिटाने के लिए गर्म जल तैल आदि का देना पद्य है १५। भोजन बनाने के लिये अग्नि देना १६।

ચોરોને પોતાના ઘરમા આશ્રય આપવો તેને विश्राम કહે છે શય્યાદાન તથા વિશ્રામમા તફાવત એટલો જ છે કે શય્યાદાન તો બીજી જગ્યાએ રહે તો પણ આપી શકાય છે પણ વિશ્રામ પોતાના ઘરમા જ અપાય છે (૧૦) ચોરોને ચરણે નમીને તેનો આદર સત્કાર કરવો, તેણે पादपतन કહે છે, (૧૧) બેસવાને આસન આપવુ, તેને आसनदान કહે છે, (૧૨) " આ માણસે ચોરી કરી નથી, ઘરમા ચોર છુપાવ્યો હોય છતા પણ ચોર ઘરમા નથી " એ પ્રમાણે કહીને ચોરની રક્ષા કરવી, તેને गोपन કહે છે (૧૩) ચોરોને ખાવાને માટે મિષ્ટાન્ન દેવુ, તેને खण्डखादन કહે છે (૧૪) નાકાબંધી હોવા છતા બીજી જગ્યાએ અથવા એક દેશમાથી લઈ જઈને બીજા દેશમા માલ વેચવો, તેને मोहराजिक કહે છે (૧૫) " આ ચોર છે " એવી ખબર હોવા છતા પણ તેને પદ્ય, અગ્નિ, ઉદક (પાણી), રજ્જુ (દોરડુ) દેવુ તે પણ ચોરીના જ પ્રકારો છે, પગને થાક દૂર કરવાને માટે ગરમ પાણી, તેલ આદિ

चौराणामुत्साहदान १, कुशल=सुखदु खादि पृच्छा २, तर्जा=चौरस्य हस्तादिसङ्केत करण ३, राजभागः=राजकरस्याऽप्रदानम् ४, अवलोकन=चार्य कुर्वत-उपेक्षापूर्वक प्रेक्षण ५, चौर्यमवलोक्याऽपि स्वामिन प्रत्यकथनमित्यर्थः, अमार्गदर्शन=चौराणा रक्षार्थमुन्मार्गप्रदर्शन, चोरमार्गमन्वेषकानामन्यमार्गदर्शन वा ६, शय्या=चौराय श य्यादान७, पदभङ्ग=पशूना सञ्चालनेन चोराणा गमनाऽऽगमनमार्गाङ्कितचरणचिह्न लुप्तकरण८, तथैव विश्रामः=स्वगृहे निवासदान९, शय्यादानमन्यत्राप्युपवेशनाद्यर्थं

उत्साह वर्धक वचनोसे चोरोका उत्साह अधिकाढाना इसका नाम भलन है १। चोरों के सुख-दुःख आदि के समाचार पूछना इसका नाम कुशल है २, हाथ आदि के सकेत से चोरो को इशारा करना इसका नाम तर्जा है ३। निर्धारित राजटेक्स का नहीं देना इसका नाम राजभाग है ४। चोरी करते हुए चोर को उपेक्षापूर्वक देखना, इसका नाम अवलोकन है, अर्थात् चोर को चोरी करते हुए देखकर के भी अपने मालिक से नहीं कहना-यह भी चोरी का प्रकार है ५। चोरों की रक्षा के अभिप्राय से अन्वेषण करने वालों को उन्मार्ग प्रदर्शन करना इसका नाम अमार्ग दर्शन है६। चोरों के लिये सोनेको शय्या देना इसका नाम शय्या है ७। चोरों ने जहा चोरी की हो वहा उनके मार्ग मे चरणचिह्न अकित हो गये हो तो उन चिह्नों को नष्ट करने के लिये उन पर से पशुओ को निकालना कि जिससे वे नष्ट हो जावें और पहिचानने में न आने पावे, इसका नाम पदभङ्ग है ८। अपने घर में चोरों को

ઉત્સાહ વર્ધક વચનો દ્વારા ચોરોનો ઉત્સાહ વધારવાની ક્રિયાને भलन કહે છે (૨) ચોરોને સુખ દુ ખ વગેરેના સમાચાર લાવનારને कुशल કહે છે (૩) હાથ આદિના સ કેતથી ચોરોને ઈશારા કરવા તેનુ નામ तर्जा છે (૪) નક્કી થયેલ રાજભાગ-રાજ્યના કર ન દેવા તેનુ નામ राजभाग છે, (૫) ચોરી કરતા ચોરને ઉપેક્ષાપૂર્વક જોવો તેને अवलोकन કહે છે, એટલે કે ચોરને ચોરી કરતો જોવા છતા પણ પોતાના માલિકને નહીં કહેવુ તે પણ ચોરીનો જ પ્રકાર છે (૬) ચોરોની રક્ષા કરવાને માટે તેમની શોધ કરનારને ખોટો માર્ગ બતાવવો તેને अमार्गदर्शन કહે છે (૭) ચોરોને સૂવાને માટે પથારી દેવી તેને शय्या કહે છે (૮) ચોરોએ જ્યા ચોરી કરી હોય ત્યા તેના માર્ગમા તેના પગલા પડ્યા હોય તો તે પગલાનો નાશ કરવાને માટે તેમના પર પશુ-ઓને દોડાવવા કે જેથી તે પગલા ભૂસાઈ જાય અને ઓળખી ન શકાય આ પ્રકારે પગલાના નિશાનનો નાશ કરવાની ક્રિયાને पदभङ्ग કહે છે (૯)

घ्रोटयमाना =रम्ये=रम्यस्थाने=शूलारोपणस्थाने पुरुषैः=तत्र नियुक्तैः राजपुरुषैः ग्राह्यमाणाः=प्रेर्यमाणाः नीयमाना इत्यर्थः, 'त पि य न लहति' तदपि च न लभन्ते=जलमात्रमपि पातुं न प्राप्नुवन्ति, किमन्य? दित्यर्थ ॥ सू० १५ ॥

अपि च—'तत्थ य' इत्यादि।

मूलम्—तत्थ य खरफरुस-पडह-घट्टिया-कूडग्गहगाढरुट्ठनिसिट्ठ परामट्ठा वज्झकरकुडिजुयनिवासिया सुरत्तकणवीरगढियविमुकुल कंठे गुणवज्झ-दूय आविद्धमल्लदाममरण भयुप्पण्ण सेयआयतणे-हुत्तप्पियकिलिण्णगत्ताचुण्णगुडियसरीररयरेणुभरियकेसा कुसंभ-गुक्किण्णमुद्धया छिण्णजीवियासा घुण्णंता वज्झपाणप्पिया तिल-तिल चेव छिज्जमाणासरीरविकत्तलोहिओ-लित्तकागणिमंसा-णिखावियता पावा खरकरसएहि तालिज्जमाणदेहा वातिगनर-नारिसंपरिवुडा पिच्छिज्जंता य नागरजणेण वज्झनेवत्थिया पणिज्जंति णगरमज्झेण किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा विपिक्खंता दिसोदिसिमर-णभयुव्विग्गा अघायणपडिदुवारसंपाविया अधण्णा सूलग्ग-विलग्गभिण्णदेहा, ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियगुवंगा ॥सू०१६॥

टीका—'तत्थ य' तत्र च रम्यस्थाने 'खरफरुसपडहघट्टिया' खरपरुषपटहघट्टिताः—तत्र खरपरुष =शूलारोपणादि सङ्केतसूचकत्वादत्यन्तकठोरो यः पटहः='ढोल'

पुरिसेहिं) वध्यस्थान पर नियुक्त हुए पुरुष जब (घाडियता) वध्यस्थान पर लेकर चलते हैं तो इन्हें वहां (तपि य) एक बिंदु जल भी पीने को (न लहंति) नहीं मिलता है। ऐसी इनकी दशा बन जाती है॥सू०१५॥

फिर भी कहते हैं—'तत्थ य' इत्यादि।

टीकार्थ—(तत्थ य खरफरुस पडहघट्टिया) वहां वध्यस्थान पर एक ढोल

પર નિયુક્ત થયેલ પુરુષો જ્યારે "घाडियता" વધસ્થાન તરફ લઈ જાય છે, ત્યારે તેમને ત્યાં "तपि य" પીવાને પાણીનું એક ટીપું પણ "न लहंति" મળતું નથી તેમની એવી દશા થાય છે ॥ સૂ ૧૫ ॥

વળી સૂત્રકાર આગળ વર્ણન કરે છે—"तत्थ य" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"तत्थयखरफरुसपडहघट्टिया" ત્યાં વધસ્થાને એક ઢોલ રહે છે.

हिष्मादि बन्धनार्थं प्रासादादिप्वारोहु वा रज्जुदानम् १८, इत्येतान्यष्टादशविधानि प्रसूतयः चौर्यकरणानि ।

पुनः कीदृशास्ते परद्रव्यापहारिण ? इत्याह—'पाइयंगुवगा' पतिताङ्गोपाङ्गाः=पातितानि=त्रोटितान्यङ्गानि=हस्तपादादीनि, उपाङ्गानि च=अङ्गुलिकेशश्मश्र्वादीनि येषां ते तथा, कलुणा' करुणाः=दीनाः–पापमलिना इत्यर्थः 'सुक्कोट्ठकठगलतालुजिब्भा' शुष्कोष्ठकण्ठगलतालुजिह्वा =ओष्ठौ कण्ठः=अक्षरोच्चारणस्थान गल'–तदधो भागः तालु =प्रसिद्ध एतेषां समाहारः, जल विना शुष्कमोष्ठकण्ठगलतालु जिह्व येषां ते तथा, 'तण्हा इत्ता' तृष्णार्दिता'=पिपासाऽऽकुलिताः सन्तः 'पाणिय जायता' पानीय याचमानाः 'विगयजीवियासा' विगतजीविताशा =जीवनाशारहिताः 'वराकाः=मन्दपुण्याः 'वज्झपुरिसेहिं घाडियता' वध्यपुरुषे-

पीने के लिये जल देना १७, चुराई गई भैंस आदिको बाधने के लिये तथा मकान आदि की छत पर चढाने के लिये रस्सी देना १८। ये १८ प्रकारकी की चोरिया हैं ॥ ३ ॥

(पाइयगुवगा) ये परद्रव्यापहारी चोर हाथ पैर आदि अगोंमें तथा अगुली, केश, श्मश्रु दाढीमूछ आदि उपागोंमें कभी भी अक्षत नहीं रहते हैं। (कलुणा) ये सदा पाप से मलिन बने रहते हैं। तथा (सुक्कोट्ठ कठगलतालुजिब्भा) पानी के विना ओष्ठ कठ गला ताल तथा जिह्वा ये सब इसके शुष्क होते (सूकते) रहते हैं। (तण्हाइया) पिपासा से आकुलित होकर ये (पाणिय जायता) "पानी लाओ पानी लाओ" इस प्रकार याचना करते हुए (विगयजीवियासा) कभी २ अपने जीवन की आशा से भी रहित हो जाते हैं। (वरागा) इन अभागों को (वज्झ

દેવા તે ક્રિયાને પદ્ય કહે છે, (૧૬) ભોજન બનાવવાને અગ્નિ આપવો, (૧૭) પીવાને માટે પાણી આપવુ અને (૧૮) ચોરેલી ગાય, ભેસ આદિને બાધવા માટે અને મકાન આદિના છાપરા પર ચડવાને માટે દોરડુ દેવુ, એ ૧૮ (અઢાર) પ્રકારની ચોરી હોય છે ॥૩॥

ટીકાર્થ—"पाइयगुवगा" તે પરધનનુ અપહરણ કરનારા ચોર લોકોના હાથ પગ આદિ અગો, તથા આગળીઓ, કેશ, નાક, કાન આદિ ઉપાગો કદી પણ અક્ષત (છેદાયા વિનાના) હોતા નથી "कलुणा" તેઓ પાપથી સદા મલિન રહે છે, તથા "सुकोट्ठकठगलतालुजिब्भा" તેમના હોઠ, કઠ ગળુ, તાળવુ તથા જીભ પાણી વિના શુષ્ક (સૂકાયલા) રહે છે "तण्हाइया" તરસથી વ્યાકુળ થઇને તે લોકો "पाणिय जायता" "પાણી લાવો, પાણી, પાણી લાવો" એવી યાચના કરતા કરતા "विगय जीवियासा" ક્યારેક તો જીવવાની આશા પણ છોડી દે છે "वरागा" તે બિચારાઓને "वज्झपुरिसेहिं" વધસ્થાન

गुणवध्यदूताविद्धमाल्यदामानः, तत्र सुरक्तै कणवीरैः=पुष्पविशेषैः ग्रथित=गुम्फित विमुकुल=विकासित कण्ठे गुण इव=कण्ठसूत्रमिव तथा वध्य सूचकत्वात् वध्यदूतः=वधचिन्हम्,-आविद्ध=परिहित माल्यदाम=पुष्पमाल्य येषा ते तथा, 'मरणभयुप्पण्णसेयआयतणेहुत्तप्पिय किलिण्णगत्ता' मरणभयोत्पन्नस्वेदायतस्नेहोत्तपितक्लिन्नगात्राः, तत्र मरणभयादुत्पन्नेन स्वेदेन=प्रस्वेदेन आयतः=सर्वाङ्गे व्याप्तो यः स्नेह.= आर्द्रता तेनोत्तपितानि=सन्तप्तानि क्लिन्नानि=आर्द्रीकृतानि च गात्राणि=शरीराणि येषा ते तथा, मरणभयोत्पन्नप्रस्वेदार्द्रीभूतशरीरा इत्यर्थः, 'चुण्णगुडियसरीरा' चूर्णगुण्डितशरीरा = 'चूना' इति भाषाप्रसिद्धचूर्णद्रव्यावगुण्ठितसर्वाङ्गाः, 'रयरेणुभरियकेसा' रजो रेणुभरितकेशा =रजोरेणुभिः=धूलिभिर्भरिताः=सभृताः केशा येषा ते तथा, 'कुसभगुक्किण्णमुद्धया' कुसम्भ-

मल्लदामा) (सुरत्तकणवीरगहिय) कनेर के लालफूलों से गूथी हुई (विमुकुल) विकसित कठे गुणकठसूत्र तथा (वज्झदूय) वधसूचक होने से वध्यदूत-वधचिह्न स्वरूप ऐसी (आविद्धमल्लदामा) फूलमाल जिनको पहिनाई जाती है (मरणभयुप्पण्णसेयआयतणेहु त्तप्पिय किलिण्णगत्ता) (मरणभयुप्पण्णसेय) मरण के भय से उत्पन्न हुए स्वेद-पसीने से (आयतणेह) इनके अ ग गीले हो जाते हैं इससे इनका शरीर (उत्तप्पिय) जलने लगता है जिससे (किलिण्णगत्ता) इनका सब शरीर पसीने से झरता रहता है(चुण्णगुडियसरीरा) इनके शरीर पर चूना लपेट दिया जाता है जिससे अधिक जलन होती है। तथा (रयरेणुभरियकेसा) इनके केशों पर बाहर की धूलि उड़कर भर जाती है। कारण उनके पास उस समय ऐसे साधन नहीं होते हैं जिससे

ज्झदूयआविद्धमल्लदामा " " सुरत्तकणवीरगहिय " કરેણુના લાલ ફૂલોમાથી ગૂથેલી " विमुकुल " કંઠમા રહેલા કંઠાભરણ જેવી, " वज्झदूय " વધ સૂચક હોવાથી-વધ્યદૂતવધચિહ્ન જેવી " आविद्ध मल्लदामा " ફૂલમાળા તેમને પહેરાવવામા આવે છે " मरणभयुप्पण्णसेयआयतणेहुत्तप्पियकिलिण्णगत्ता " " मरणभयुप्पण्णसेय " મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પસીનાથી " आयतणेह " તેમના અ ગ ભીના થાય છે, તે ભયથી તેમના શરીર " उत्तप्पिय " બળવા લાગે છે, અને તે કારણે " किलिण्णगत्ता " તેમનુ આખુ શરીર તરબોળ થાય છે " चुण्णगुडिय सरीरा " તેમના શરીર પર ચૂનો ચોપડયો હોય છે, જેથી શરીરમા વધારે બળતરા થાય છે, તથા " रयरेणुभरियकेसा " તેમના વાળમા બહારની ધૂળ ઉડીને ભરાય છે, કારણ કે તે સમયે વાળ ઓળવાના સાધનો તેમની પાસે હોતા નથી -" कुसुमगुक्किण्णमुद्धया " " कुसुमग " કૌસુબી

इति भाषा प्रसिद्धस्तेन वाद्यमानेन सह राजपुरुषै नीयमानाः सन्तो घट्टिताः= वेत्र यष्ट्यादिभिस्ताडिताः मार्यमाणा इत्यर्थः, 'कूडग्गहगाढरुट्ठनिसिट्ठपरामट्ठा' कूटग्रहगाढरुष्टनिसृष्टपरामृष्टा = तत्र कूटग्रहत्वात्=कूटेन=छलप्रपञ्चेन चौरस्य परधनग्राहित्वाद् गाढरुष्टैः= अतिक्रुद्धैः राजपुरुषैः निसृष्टा := अपहृतधना', निर्धना इत्यर्थः, पुनः परामृष्टाश्च=गृहीता ये ते तथा 'वज्झकरकुडिजुय निवसिया' वध्यकरकुटीयुगनिवसिताः = वध्यानां यत् करकुटीयुग = निन्द्यवस्त्रविशेषद्वय तन्निवसित=परिधापित येषा ते तथा वध्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, 'सुरत्तकणवीरगहियविमुकुलकठे गुणवज्झदूय आविद्धमल्लदामा' सुरक्तकणवीरग्रथितविमुकुलकण्ठे

रहता है और जब जिसका शूलारोपण का होता है तब वह बजता है अतः शूलारोपण आदि सकेत का सूचक होने से वह खरपरुष-अत्यत कठोर माना गया है, जैसे ही वह बजाता है कि राजपुरुष उस वध्य व्यक्ति को साथमें लेकर चल देते हैं। और रास्ते में वे उनचोरों को वेत्र-यष्ट्यादि से ताडित भी करते जाते हैं। (कूडग्गहगाढरुट्ठनिसिट्ठ परामट्ठा) ये राजपुरुष उन चोरो पर(कूडग्गह) छलप्रपच से परधन को अपहरण करने के कारण (गाढरुट्ठ) अत्यंत रुष्ट हो जाते है, और इसीसे (निसिट्ठ) अपहृत द्रव्य को छीन भी लेते है, और बाद मे उन्हें (परामट्ठा) पकड लेते हैं (वज्झकर कुडि जुयनिवसिया) जब वे शूली पर उन्हें चढाने के लिये ले जाते हैं तो इसके पहिले उन्हें वे वध्यपुरुषों को (वज्झकरकुडिजुय) पहिराने के योग्य निंद्य दो वस्त्र (निवसिया) पहिरा देते है (सुरत्तकणवीरगहिय विमुकुल कठे गुणवज्झ दूय आविद्ध-

જ્યારે કોઈને શૂળી પર ચડાવવાનો સમય થાય છે ત્યારે તે વગાડવામા આવે છે તેથી શૂલારોપણુ આદિ સ કેત દર્શાવનાર હોવાથી તેને ખરપરુષ અત્યત કઠોર કહેલ છે જેવો તે ઢોલ વાગે છે, કે તે રાજપુરુષો તે વધ્ય વ્યક્તિને લઈને ઉપડે છે, અને રસ્તામા તે લોકો તે ચોરોને સોટી, લાકડી આદિથી ફટકારે છે "कूडग्गहगाढरुट्ठनिसिट्ठपरामट्ठा" તે રાજપુરુષો તે ચોરો પર "कूडग्गह" છળકપટથી પરધનનુ હરણુ કરવાને લીધે "गाढरुट्ठ" અત્યત ક્રોધે ભરાય છે, અને તેમની પાસેથી તે લોકો "निसिट्ठ" ચોરેલા દ્રવ્યને છીનવી પણુ લે છે અને પછી તેમને "परामट्ठा" પકડી લે છે "वज्झकरकुडिजुयनिवसिया" જ્યારે તેઓ તેમને શૂળીએ ચડાવવા લઈ જાય છે ત્યારે વધ્ય પુરુષોને પહેરાવવા "वज्झकरकुडिजुय" લાયક, બે નિંદ્ય વસ્ત્રો "निवसिया" તેમને પહેરાવે છે "सुरत्तकणवीरगहियविमुकुलकठे गुणव

पापिनः ' खरकरसएहिं ताल्जिज्जमाणदेहा ' खरकरशतैस्ताड्यमानदेहा'=अतिचिक्कणपाषाणभृतचर्मकोशशतैः 'करकभरे चाबुक' इति भाषाप्रसिद्धैः ताड्यमानदेहा =ताड्यमानशरीराः तथा ' वातिगनरनारिसपरिवुडा ' वातिक नरनारीसम्परिवृताः तत्र-वातिकैः=उच्छृङ्खलैः नरैर्नारीभिश्च सपरिवृता'=युक्ताः मर्यादावर्जितनरनारीवृन्दवेष्टिता इत्यर्थ , ' पिच्छिज्जता य नागरजणेण ' नागरजनेन दृष्टु समागतेन प्रेक्ष्यमानाः ' वज्झनेवत्थिया ' वध्यनेपथ्यिका=वधयोग्य नेपथ्य येषा ते वध नेपथ्यिकाः=परिधृतघातवस्त्रवेषाः, ' णगरमज्झेण' नगरमध्येन=पुरमध्यभागमार्गेण ' पणिज्जति ' प्रणीयन्ते=नीयन्ते ' किविणकलुणा ' कृपणकरुणा =कृपणेष्वपि करुणा अतिदीना इत्यर्थः, ' अत्ताणा ' अत्राणा=त्राणवर्जिता अनर्थनिवारकाभावात ' असरणा ' अशरणाः=शरणहीना'-योगक्षेमकारिरहितत्वात् अतएव ' अणाहा ' अनाथाः=नाथवर्जिता ' अवधवा ' अबान्धवा =बान्धवरहिता तथा

ये बड़े अधिक पापी होते हैं। (खरकरसएहिं) अतिचिक्कण पाषाण-खडों से भरे हुए ऐसे सैकड़ो कोड़ो की (ताल्जिज्जमाणदेहा) इनके शरीर पर मारपड़ती है। तथा (वातिगनरनारिसपरिवुडा) मर्यादा वर्जित नरनारि गण से ये वेष्टित रहते है। (पिच्छिज्जता य नागरजणेण) इन्हें देखनेके लिये नागरिकजन आते है। (वज्झ नेवत्थिया) इनकी वेशभूषा व धयोग्य होती है। (णगरमज्झेण पणिज्जति) राजपुरुष इन्हें नगर के भीतर से होकर ही निकालते है। (किविणकलुणा) उस समय ये दीनों से भी अतिदीन होते हैं (अत्ताणा) अनर्थ को निवारण करने वाला कोई नहीं होने से इनकी कोई रक्षा करने वाला नहीं होता है, इसलिये ये अत्राण होते ह, (असरणा) योग, क्षेमकारी पुरुष से रहित होनेके कारण ये अशरण-शरण हीन होते है। (अणाहा) अनाथ रक्षकके अभाव से ये अनाथ होते हैं, तथा (अवधवा) बधुओं के अभाव से

ગવે "पावा" તે ઘણા જ પાપી હોય છે "खरकरसएहिं" અતિશય ચિકણા પત્થરના ટુકડાઓથી ભરેલા સેકડો કોરડાઓનો 'ताल्जिज्जमाणदेहा" તેમના શરીર પર માર પડે છે તથા "वातिगनरनारिसपरिवुडा" મર્યાદ રહિત સ્રી પુરુષોના સમૂહથી તેઓ વીટળાયેલા રહે છે "पिच्छिज्जता य नागरजणेण" તેમને જોવાને માટે નાગરિકો આવ્યા કરે છે "वज्झनेवत्थिया" તેનો પોષાક વધ્યને યોગ્ય હોયછે "णगरमज्झेण पणिज्जति" રાજપુરુષો તેમને નગર ી વચ્ચે થઈને લઇ જાય છે 'किविणकलुणा" ત્યારે તે લોકોને અતિશય દીનદશા અનુભવે છે "अत्ताणा" તે યાતનામાથી તેમને બચાવનાર કોઇ ન હોવાથી તે લોકો अत्राणा રક્ષણવગરના હોય છે, "असरणा" તેમને શરણુ આપનાર કોઈ પુરુષ ન હોવાથી તેઓ અશરણ હોય છે "अणाहा" રક્ષકને અભાવે તેઓ અનાથ હોય છે, "अबधवा"

कोत्कीर्णमूर्धजाः=कुसुम्भकेन=रागविशेषेण उत्कीर्णाः=व्याप्ता मूर्धजाः केशा येषां ते तथा रक्तरागरञ्जितकेशधारिण इत्यर्थः, 'छिण्णजीवियासा' छिन्नजीविताशाः =जीवनाशारहिता 'घुण्णता' घूर्णमानाः=मरणभयव्याकुलत्वात् 'वज्झपाणप्पिया' वध्यप्राणप्रियाः=वध्याः=हन्तव्या एव प्राणा' प्रियाः येषां ते तथा, 'तिल तिलं चेव छिज्जमाणा' तिल तिलमिवच्छिद्यमानाः राजपुरुषैः मत्यङ्गोपाङ्ग त्रोटयमाना इत्यर्थः, 'सरीर विकत्तलोहिओलित्तकागणिमसाणि खावियता' शरीरविकृत्तलोहितावलिप्तकाकणी मासानि खाद्यमाना', तत्र-चौरस्येव शरीराद् विकृत्तानि=खण्डितानि लोहितावलिप्तानि यानि काकणी मासानि=मासखण्डानि तानि खाद्यमानाः राजपुरुषै' शस्त्रादिकर्तितस्वमासखण्डानि खाद्यमाना इत्यर्थ , 'पावा' पपा

केश सस्कारित किये जा सकें (कुसुमभुक्किण्णमुद्धया) (कुसुभग) कुसुम्भ रग से (उक्किण्णमुद्धया) इनके केश रजित कर दिये जाते हैं। (छिन्नजीवियासा) ये विचारे अपने आपको मानने लगते हैं कि अब हम थोड़ी देर में ही मरने वाले हैं, अतः इनके जीवन की आशा टूट जाती है। (घुण्णता) मरणभय से व्याकुल होने के कारण इनका दिमाग चिक्कर खाने घूमने लग जाता है। (वज्झपाणप्पिया) इन्हें वध्य-मारे जाने वाले अपने प्राण ही बड़े प्रिय होते हैं। अर्थात् उस समय इन्हे कोई भी वस्तु प्रिय नही होती है, केवल अपने प्राण ही-जो कुछ देर बाद नष्ट हो जानेवाले है-सबसे अधिक प्रिय लगते हैं। (तिल तिल चेव छिज्ज माणा) राजपुरुष इनके अगोंपागों को तिल तिल की तरह काट २ कर अलग २ कर डालते है। (सरीरविकत्तलोहिओलित्तकागणिमसाणि खावियता) वे राजपुरुष (सरीराविकत्त) काटे गये इनके शरीर से निकले हुए (लोहिओवलित्त) लोही से लिप्त ऐसे (कागणिमसाणि) मास के छोटे छोटे टुकड़ों को (खावियता) उन्हे खिलाते हैं (पावा)

२गथी "उक्किण्णमुद्धया" तेमना वाળ २गी नाખवामा आवे छे "छिन्नजीवियासा" ते બિચારા સમજી જાય છે કે હવે અમે થોડા સમયના મહેમાન છીએ, એટલે કે તેમની જીવવાની આશા તૂટી જાય છે घुण्णता" મોતના ભયથી વ્યાકુળ થવાથી તેમના મગજ ચક્કર ચક્કર ઘૂમવા લાગે છે 'वज्झपाणप्पिया" તેને વધ્ય—જેનો વધ થવાનો છે તેને પોતાના પ્રાણ જ સૌથી વહાલા લાગે છે, એટલે કે તે સમયે તેને બીજી કોઇ પણ ચીજ ગમતી નથી, પણ થોડા સમય પછી જેનો નાશ થવાનો છે તે પ્રાણ જ સૌથી વધારે પ્રિય લાગે છે "तिलतिल चेव छिज्जमाणा" રાજ પુરુષો તો તેમના અગ ઉપાગોના તલ તલ જેવડા ટુકડા કરે છે "सरीरविकत्तलोहिओलित्तकागणिमसाणिखावियता" તે રાજપુરુષો લોહીથી ખરડાયેલા માસના નાના ટુકડાઓ તેમને ખવ

पापिनः 'खरकरमएहिं तालिज्जमाणदेहा' खरकरशतैस्ताड्यमानदेहा =अतिचिक्कणपाषाणभृतचर्मकोशशतैः 'करकभरे चाबुक' इति भाषाप्रसिद्धैः ताड्यमानदेहा =ताड्यमानशरीराः तथा 'वातिगनरनारिसपरिवुडा' वातिक नरनारीसम्परिवृताः तत्र-वातिकैः=उच्छृङ्खलैः नरैर्नारीभिश्च सपरिवृताः=युक्ताः मर्यादावर्जितनरनारीवृन्दवेष्टिता इत्यर्थः, 'पिच्छिज्जता य नागरजणेण' नागरजनेन दृष्टु समागतेन प्रेक्ष्यमानाः 'वज्झनेवत्थिया' वध्यनेपथ्यिकाः=वधयोग्य नेपथ्य येषा ते वध नेपथ्यिकाः=परिधृतघातकवस्त्रवेषाः, 'णगरमज्झेण' नगरमध्येन=पुरमध्यभागमार्गेण 'पणिज्जति' प्रणीयन्ते=नीयन्ते 'किविणकलुणा' कृपणकरुणा =कृपणेष्वपि करुणा अतिदीना इत्यर्थः, 'अत्ताणा' अत्राणा=त्राणवर्जिता अनर्थनिवारकाभावात् 'असरणा' अशरणाः=शरणहीनाः-योगक्षेमकारिरहितत्वात् अतएव 'अणाहा' अनाथाः=नाथवर्जिता 'अबंधवा' अबान्धवा =बान्धवरहिता तथा

ये बड़े अधिक पापी होते हैं। (खरकरसएहिं) अतिचिक्कण पाषाणखंडों से भरे हुए ऐसे सैकड़ों कोड़ों की (तालिज्जमाणदेहा) इनके शरीर पर मारपड़ती है। तथा (वातिगनरनारिसपरिवुडा) मर्यादा वर्जित नरनारि गण से ये वेष्टित रहते हैं। (पिच्छिज्जता य नागरजणेण) इन्हें देखने के लिये नागरिकजन आते है। (वज्झ नेवत्थिया) इनकी वेशभूषा वध्ययोग्य होती है। (णगरमज्झेण पणिज्जति) राजपुरुष इन्हें नगर के भीतर से होकर ही निकालते है। (किविणकलुणा) उस समय ये दीनों से भी अतिदीन होते हैं (अत्ताणा) अनर्थ को निवारण करने वाला कोई नहीं होने से इनकी कोई रक्षा करने वाला नही होता है, इसलिये ये अत्राण होते हैं, (असरणा) योग, क्षेमकारी पुरुष से रहित होनेके कारण ये अशरण-शरण हीन होते है। (अणाहा) अनाथ रक्षकके अभाव से ये अनाथ होते हैं, तथा (अबंधवा) बंधुओं के अभाव से

ગવે "પાવા" તે ઘણા જ પાપી હોય છે "खरकरसएहिं" અતિશય ચિકણા પત્થરના ટુકડાઓથી ભરેલા સેકડો કોરડાઓનો 'तालिज्जमाणदेहा" તેમના શરીર પર માર પડે છે તથા "वातिगनरनारिसपरिवुडा" મર્યાદ રહિત સ્ત્રી પુરુષોના સમૂહથી તેઓ વીંટળાયેલા રહે છે "पिच्छिज्जता य नागरजणेण" તેમને જોવાને માટે નાગરિકો આવ્યા કરે છે "वज्झनेवत्थिया" તેનો પોષાક વધ્યને યોગ્ય હોયછે "णगरमज्झेण पणिज्जति" રાજપુરુષો તેમને નગરની વચ્ચે થઈને લઇ જાય છે 'किविणकलुणा" ત્યારે તે લોકોને અતિશય દીનતા અનુભવે છે "अत्ताणा" તે યાતનામાથી તેમને બચાવનાર કોઇ ન હોવાથી તે લોકો अत्राणा રક્ષણવગરના હોય છે, 'असरणा" તેમને શરણુ આપનાર કોઈ પુરુષ ન હોવાથી તેઓ અશરણ [illegible] । તેઓ અનાથ હોય છે, "अबंधवा"

' बंधुविप्पहीणा ' बन्धुविप्रहीणाः=बन्धुवियुक्ताः, 'दिसोदिसिं विपिक्खता ' दिशो दिशं विप्रेक्षमाणाः=एकस्या दिशोऽन्यां दिशं पश्यन्तः ' मरणभयुव्विग्गा ' मरण-भयोद्विग्नाः=मृत्युभयव्याकुलाः='आघायणपडिदुवारसंपाविया ' आघातनप्रतिद्वार संप्रापिता =आघातनप्रतिद्वार=वधभूमिद्वारं तत्र संप्रापिताः=नीता ये ते तथा, ' अधण्णा ' अधन्याः=भाग्यहीनाः अदत्तादायित्वात्, ' सूलग्गविलग्गभिण्णदेहा' शूलाग्रविलग्नभिन्नदेहा , तत्र-शूलाग्रे विलग्न =आरोपणेन संलग्नः भिन्नश्च देहो येषां ते तथा ' ते य ' ते च=अदत्तादायिन ' तत्थ ' तत्र=आघातनद्वारे वधबन्ध मारणनिर्भर्त्सनशूलारोपणादि यातनास्थाने ' परिकप्पियंगुवंगा ' परिकल्पिता ङ्गोपाङ्गा कर्त्रीप्रभृतिशस्त्रै कर्त्तितकर्णनासिकाद्यवयवाः ' कीरंति ' क्रियन्ते, दण्डविधायिराजपुरुषैरिति ॥ सू० १६ ॥

ये विना बंधु के होते हैं । (बंधुविप्पहीणा) बांधवजन होने पर भी वे इन्हें छोड़ देते हे । इसलिये ये बन्धु हीन होते हैं (दिसोदिस विपेक्खता) विचारे ये एक दिशा से दूसरी दिशा का ही अवलोकन करते रहते है और (मरणभयुव्विग्गा) मृत्यु के भय से व्याकुल बने रहते हैं । इस तरह की स्थिति संपन्न बने हुए इन अदत्तादायी जनों को वे राजपुरुष लाकर (आघायणपडिदुवार संपाविया) वध्यभूमि के द्वार पर उपस्थित कर दिये जाते हैं । क्यों कि (अधण्णा) ये अदत्तग्राही जन अभागे होते हैं । (सूलग्गविलग्गभिण्णदेहा) इन चौरों का शरीर शूल के अग्रभाग पर आरोपित कर देने के कारण छिन्न भिन्न हो जाता है । (ते य तत्थ) वहा उस वध, बंध, मालण, निर्भर्त्सन, शूलारोपण आदि यातना के स्थानमें उनके (परिकप्पियंगुवंगा) अंग एवं उपांग अर्थात् नाक कान आदिको कैंची आदि शस्त्रों से काट दिये जाते हैं ॥ सू-१६ ॥

બંધુઓને અભાવે તેઓ અબન્ધુ હોય છે " बंधुविप्पहीणा " બંધુજનો હોય તો પણ તેમના દ્વારા તેમનો ત્યાગ કરાય છે, " दिसोदिस विपेक्खता " એવી પરિસ્થિતિમા તે બિચારા એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જોયા કરે છે અને " मरणभयुव्विग्गा " મરણના ભયથી વ્યાકુળ બને છે આ પ્રકારની સ્થિતિમા મૂકાયેલા તે ચોરોને રાજપુરુષો લાવીને " आघायणपडिदुवारसंपाविया " વધસ્થાનના દરવાજે હાજર કરે છે કારણ કે " अधण्णा " તે અદત્ત-ગ્રાહી-ચોર લોકો કમનસીબ હોય છે " सूलग्गविलग्गभिण्णदेहा " તે ચોરોના શરીર શૂળીના અણીદાર ભાગો પર ચડાવવાને કારણે છિન્ન ભિન્ન થઈ જાય છે અને " ते य तत्थ " ત્યા તે વધ, બંધ, મારણ, નિર્ભર્ત્સન, શૂલારોપણ આદિ યાતના દેવાને સ્થાને તેમના ' परिकप्पियंगुवंगा " અંગોપાંગો, એટલે કે નાક, કાન આદિને કાતર આદિ શસ્ત્રો વડે કાપી નાખવામા આવે છે ॥સૂ ૧૬॥

पुनरप्यदत्तादायिनो यथाफल माप्नुवन्ति तदाह—' केइ ' इत्यादि ।

मूलम्—केइ उल्लं विज्जति रुक्खसालेहिं कलुणाइ विलवमाणा । अवरे चउरंगधणि य वद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते दूरपातवहुविसमपत्थरसहा । अण्णे य गयचलणमिलण निम्मद्दिया कीरंति । पावकारी अट्ठारस खंडिया य कीरंति मुंडपरसुहिं । केइ उक्कित्तकण्णोट्ठनासा उप्पाडियनयण - दसण वसणा जिब्भिंदिय छिया छिण्णकण्णसिरा पणिज्जंति । छिज्जंति य असिणा निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चंति।जाव जीववंधणाय कीरंति । केइ परदव्वहरणलुद्धा कारग्गलनियल—जुयलरुद्धा चारगालये हयसारा सयणाविप्पमुक्का मित्तजण निरक्किया निरासा वहुजण धिक्कारसद्दलज्जाइया अलज्जा अणुवद्ध खुहापरद्धा सीउण्ह तण्हवेयणदुघट्टघट्टिया विवण्णमुहविच्छविया विहलमालिण दुव्वला किलता कासता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढ नहकेसमंसुरोमामलमुत्तम्मि णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया अकामना वाधिऊण पाएसु कड्ढिया खाइयाए छूढा, तत्थ य विग—सुणय—सियाल—कोलमज्जार—वद सडासतुडपक्खिगण—विविहमुहसय—विलुत्तगत्ता कयविहगा । केई किमिजाय कुहिय देहा अणिट्ठ वयणेहिं सप्पमाणा सुट्ठुकयं ज मओ त्ति पावो तुट्ठेण जणेण हयमाणा लज्जावणगा य हुंति सयणस्स वि य दीहकाल ॥ सू० १७ ॥

टीका—केइ ' केचित्=अदत्तादायिनः महाकष्टानुभवनेन ' कलुणाइ विलवमाणा' करुणानि वचनानि विलपन्तः 'रुक्खसालेहिं' वृक्षशाखासु 'उल्ल विज्जति ' उल्लम्ब्यन्ते=रज्ज्वादिभिर्गलेबन्धनेन वृक्षशाखासु आरोप्यन्ते इत्यर्थः । ' अवरे , अपरे केचनाऽदत्तादायिनः ' चउरगधणियवद्धा ' चतुरङ्गधणियवद्धा. = चतुर-

ङ्गानि=हस्तद्वयपादद्वयरूपाणि ' धणिय ' अत्यर्थं बद्धानि येषां ते तथा दृढबद्धहस्तपादाः, ' पव्वयकडगापमुच्चते ' पर्वतकटकात् प्रमुच्यन्ते=गिरिशिखरान्निपात्यन्तेऽत एव ' दूरपातबहुविसमपत्थरसहा ' दूरपातबहुविषमप्रस्तरसहाः = बहुविषमेषु= अत्यन्तविषमेषु निम्नोन्नतेषु प्रस्तरेषु=पाषाणेषु यो दूरात् पातः निपतनं त सहन्ते ये ते तथा भवन्ति । ' अण्णेय ' अन्ये च ' गयचलणमलणनिम्मद्दिया कीरंति ' गजचरणमलननिर्मर्दिताः, तत्र – गजचरणेन=हस्तिपादेन यन्मलनं= मर्दनं तेन निर्मर्दिताः=सम्मर्दितशरीरा क्रियन्ते । तथा ' पावकारी ' पापकारिणः

फिर वे अदत्तग्राही चोर जिस फल को पाते हैं–' केइ ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(केइ) कितनेक अदत्तग्राही मनुष्य (कलुणाइ विलवमाणा) महाकष्टोंको भोगनेके कारण करुणवचनों से विलाप करते हुए (रुक्खसालेहिं) वृक्षोंकी शाखाओं में (उल्ल बिज्झति) रस्सी आदि से बांधकर लटका दिये जाते हैं । तथा (अवरे) कितनेक अदत्तग्राही मनुष्य (चउरंग धणियबद्धा) दोनों हाथ पैर खूब जकड़ कर बांधकर (पव्वयकडगा) पर्वत की चोटी से (पमुच्चते) गिरा दिये जाते हैं, अतः वे (दूरपातविसमपत्थरसहा) वहां से गिर कर नीचे ऊँचे पत्थरों पर बहुत दूरतक गुडकते आने के कारण शरीर मे बहुत बुरी तरह छुल जाते है । इस तरह वे महाभयकर वेदना को सहन करते है । (अण्णे य) कितनेक अदत्तग्राही चोर (गयचलणमलणनिमद्दिया) हाथी के पैरों के तले डाल कर मर्दित (कीरति) करवाये जाते हैं । इस तरह उनके शरीर

તે અદત્તાગ્રાહી ચોર જે ફળ પામે છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—
" केइ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ– "केइ" કેટલાક અદત્તાગ્રાહી માણુસોને " कलुणाइविलवमाणा " મહા કષ્ટો ભોગવવાને કારણે કરુણ વચનોથી વિલાપ કરતા " रुक्खसालेहिं " વૃક્ષની ડાળીઓ પર " उल्लबिज्झति " દોરડા આદિથી બાધીને લટકાવી દેવામા આવે છે તથા " अवरे " કેટલાક અદત્તગ્રાહી માણુસોને " चउरंगधणियबद्धा " બન્ને હાથ પગને મજબૂત બાધીને " पव्वकडगा " પર્વતની ટોચેથી "पमुच्चते" નીચે હડસેલી દેવામા આવે છે, તેથી " दूरपातविसमपत्थरसहा " ત્યાથી ઊચા નીચા પથ્થર ગબડાવાને કારણે તેમના શરીર ખરાબ રીતે છોલાઈ જાય છે અને તે રીતે તે લોકો અતિ ભયકર વેદના સહન કરે છે તથા " अण्णेय " કેટલાક અદત્તગ્રાહી ચોરોને " गयचलणमलणनिमद्दिया " હાથીના પગ નીચે નાખીને " कीरंति " કચડાવવામા આવે છે એ રીતે હાથીના પગ નીચે કચ

'मुडपरसुहिं' मुण्डपरशुभि=भग्नधारकुठारैः 'अट्ठारसखंडिया' अष्टादशस्थानेषु खण्डिता क्रियन्ते कर्ण=नयन–नासिकौ–ष्ठ–कर–चरणाना द्वय द्वयमिति द्वादश, जिह्वा–ग्रीवा–कण्ठ–पृष्ठ–वक्ष स्थल–गुह्येन्द्रियमिति षड्मिलित्वाऽष्टादशस्थानानि भवन्ति। तथा 'केइ' केचित् 'उक्कत्तकण्णोट्ठनासा' उत्कृत्तकर्णौष्ठनासा = उत्कृत्ताः=छिन्ना कर्णः ओष्ठः नासा=नासिका च येषा ते तथा 'उप्पाडिनयणदसणवसणा' उत्पाटितनयनदशनवृषणाः, तत्र–उत्पाटितानि=उन्मूलितानि नयनानि दशनाः=दन्ताः वृषणाः=अण्डकोशा येषा ते तथा 'जिब्भिंदियचिया' जिह्वेन्द्रियाञ्चिताः जिह्वेन्द्रिय=अञ्चित=गमितम्–आकृष्ट येषां ते तथा आकृष्टजिह्वेन्द्रियाः 'छिण्णकण्णसिरा' छिन्नकर्णशिराः=छिन्नकर्णनाड्यः, 'पणिज्जति' प्रणीयन्ते=शूलाद्यारोपणाय वध्यभूमौ नीयन्ते। केचित् 'असिणा छिज्जति'

हाथी के पैरो से मर्दित होने के कारण हड्डिपसलिया चूर–चूर हो जाती है और वे बड़े दुःखी होते हैं। तथा कितनेक (पावकारी) पापकारी अदत्तग्राही जन (मुडपरसुहिं) ,भग्न धार वाले कुठारों से अट्ठारह स्थानो मे–कर्ण २, नासिका २, नयन २, ओष्ठ २, कर२, चरण २, (१२) जिह्वा १३, ग्रीवा १४, कठ १५, पृष्ठ १६, वक्षस्थल १७, एव गुह्येन्द्रिय १८, में–बड़ी बुरी तरह से खडित कर दिये जाते हैं। तथा (केइ) कितनेक चोरों के (उक्कत्तकण्णोट्ठनासा) कान नाक एव ओंठ काट दिये जाते हैं तथा (उप्पाडियनयणदसणवसणा) नेत्र फोड़ दिये जाते है दात और अडकोश उखाड लिये जाते है। (जिब्भिंदियचिया) जीभ खेंच ली जाती है। (छिण्णकण्णसिरा) कान की नसे तोड दी जाती हैं। एव इस तरह की स्थिति मे करके चोरो को वे राजपुरुष (पणिज्जति)

રાવાને કારણે તેમના શરીરના હાડકા અને પાસળીઓના ચૂરે ચૂરા થઇ જવાથી તે લોકો ઘણી પીડા અનુભવે છે તથા કેટલાક "पावकारी" પાપી અદત્તગ્રાહી લોકોને "मुडपरसुहि" ધાર વગરની (બુઠી)કુહાડીઓથી "अट्ठारसखडिया" અઢાર જગ્યાએ ઘણીજ ખરાબ રીતે મારવામા આવે છે તે અઢાર અગો આ પ્રમાણે છે કાન ૨, નાસિકા ૨, નયન ૨, હોઠ ૨, હાથ ૨, પગ ૨, જીભ, ગ્રીવા, કઠ, પૃષ્ઠ, વક્ષસ્થલ, અને ગુહ્યેન્દ્રિય, તથા "केइ" કટલાક ચોરોના "उक्कत्तकण्णोट्ठनासा" કાન, નાક અને હોઠ કાપી નાખવામા આવે છે તથા "उप्पाडियनयणदसणवसणा" આખો ફોડી નાખે છે, દાત અને ગુપ્ત અગ ઉખેડી નાખે છે, 'जिब्भिंदियचिया" જીભ ખેચી કાઢવામા આવે છે, "छिण्णकण्णसिरा" કાનની નસો તોડી નાખવામા આવે છે તેમની એવી હાલત કરીને રાજપુરુષો તે ચોરોને "पणेज्जति" શૂળી પર ચડાવવાને લઇ

असिना=खड्गेन छिद्यन्ते=खण्डशः क्रियन्ते। तथा 'निव्विसिया' निर्विषयाः= विषयात् देशान्निष्कासिताः क्रियन्ते। केचित् 'छिण्णहत्थपाया य' छिन्नहस्त पादाश्च 'पमुच्चंति' प्रमुच्यन्ते, राजकिङ्करैर्हस्तपादं छित्वा त्यज्यन्त इत्यर्थः। केचित् 'जावज्जीवबंधणा य कीरंति' यावज्जीवबन्धनाश्च क्रियन्ते=जीवनपर्यन्त कारागारे बध्यन्ते। 'केइ परदव्वहरणलुद्धा' केचित् परद्रव्यहरणलुब्धाः- पापिनः 'चारगालये' चारकालये=कारागारे 'कारग्गलनियलजुयलरुद्धा' कारार्गलानिगडयुगलरुद्धाः=कारार्गलया=कारागृहार्गलया निगडयुगलेन=लोह शृङ्खलाद्वयेन रुद्धा=नियन्त्रिताः भवन्ति। कथंभूताः? इत्याह— 'हयसारा' हृतसाराः = अपहृतद्रव्याः। पुनः कीदृशाः 'सयणविप्पमुक्का' स्वजनवि प्रमुक्ताः = स्वकीयज्ञातिविरहिताः "मित्तजणनिरक्किया" मित्रजननिराकृताः

शूली पर चढाने के लिये ले जाते हैं। किननेक चोर उन राजपुरुषोंद्वारा (असिणा छिज्जति) तलवारों से काटे जाते हैं (निव्विसया) किननेक देश से बाहर निकाल दिये जाते हैं। और (छिण्णहत्थपाया) कितनेक हाथ पैरों को काट कर यों ही (पमुच्चति) छोड़ दिये जाते हैं। तथा कितनेक (जावज्जीव बंधणा य कीरति) जीवन पर्यंत कारावास में ही रख दिये जाते हैं। (केइ परदव्वहरणलुद्धा) तथा परद्रव्यहरण करने में लुब्धक बने हुए कितनेक चोर (करग्गलनियलजुयल रुद्धा) कारागार की अर्गला के साथ लोह की जजीरों से जकड़कर (चरगालये) कारागार में ही बंद कर दिये जाते हैं। (हयसारा) इनका द्रव्य समस्त रूप से अपहृत कर लिया जाता है। (सयणविप्पमुक्का) इनके किसी भी स्वजन से इन्हें नहीं मिलने दिया जाता है। (मित्तजणनिरक्किया) इनके

જાય છે કેટલાક ચોર તે રાજસેવકો દ્વારા "असिणा छिज्जति" તલવારોથી કપાઈ જાય છે, "निव्विसया" કેટલાક દેશમાંથી હાંકી કાઢવામાં આવે છે, અને "छिण्ण हत्थपाया य" કેટલાકને હાથપગ કાપી નાખીને "पमुचंति" છોડી મૂકવામાં આવે છે તથા "जावज्जीवबंधणाय कीरति" કેટલાક જીવે ત્યાં સુધી કારાગૃહમાં પૂરી રાખે છે "केइ परदव्वहरणलुद्धा" તથા પરધનનું અપહરણ કરવાની લાલસા વાળા કેટલાક ચોરોને "करग्गलनियलजुयलरुद्धा" કારાગૃહના આગળીયા સાથે લોઢાની સાંકળોથી બાંધીને "चरगालये" કારા-ગારમાં જ કેદ રાખવામાં આવે છે "हयसारा" તેમનું સઘળું દ્રવ્ય જપ્ત કરવામાં આવે છે "सयणविप्पमुक्का" તેમના કોઈ પણ સ્વજનની મુલાકાત તેમની સાથે થવા દેતા નથી, "मित्तजणनिरक्किया" તેમના મિત્રો પણ

मित्रैस्त्यक्ताः ' निरासा ' निराशाः = जीवनाशारहिताः ' बहुजण-धिक्कारसद्दलज्जाइया ' बहुजनधिक्कारशब्दलज्जायिता'=बहूनां जनानां धिक्कार-वचनैः लज्जायिताः=लज्जा प्रापिता तथापि अलज्जाः = निर्लज्जाः धृष्ट-त्वात् ' अणुबद्धखुहापरद्धा ' अनुबद्धक्षुधापराद्धाः=अनुबद्धक्षुधया=सततबुभुक्षया अपराद्धाः=पीडिताः ' सीउण्हतण्हवेयणदुघट्टघट्टिया ' शीतोष्णतृष्णावेदनादुर्घट्ट घट्टिताः, तत्र शीतेन उष्णेन तथा तृष्णया=पिपासया क्षुधयाच या दुर्घटाः= असह्याः वेदना =पीडास्ताभिः – दुर्घट्ट=अतिनिकटम्–अतिशयेन घट्टिताः =पी-डिताः ' विवण्णमुहविच्छविया ' विवर्णमुखविच्छविकाः = तत्र विवर्णं मुखं= वि-रूपयुक्तं मुखं येषां ते तथा विच्छविकाः = कान्तिरहिता निस्तेजसः । ' वि-हलमलिणदुब्बला ' विफलमलिनदुर्बलाः=तत्र विफला=कारागारे नियन्त्रितत्वा-दनिष्टफला मलिना=मलिनवदना दुर्बलाश्च=शक्तिरहिता ये ते तथा ' किलंता '

मित्रजन भी इन्हें छोड़ देते हैं। (निरासा) ये चोर वहां जीवन पर्यन्त रहने के कारण अपने जीवन की आशा छोड़ देते है। (बहुजणधिक्कार सद्दलज्जाइया) अनेक जनो द्वारा धिक्कार के शब्दों से ये लज्जित किये जाते हैं। फिर भी इन्हें जैसी लज्जा आनी चाहिये वैसी नही आती है। कारण ये बहुत अधिक धृष्ट बन जाते हैं। (अणुबद्धखुहापरद्धा) रातदिन ये क्षुधा से पीडित बने रहते हैं। (सीउण्हतण्हवेयणदुगट्टघट्टिया) शीत, उष्ण, तृष्णा, क्षुधा जन्य असह्यवेदनाओंसे ये सदा (दुघट्टघट्टिया) अत्यन्त दुःखित बने रहते है। (विवण्णमुहविच्छविया) इनका मुख सदा कुम्हलाया हुआ रहता है और काति भी इनकी मलिन रहती है। (विहलमलिणदुब्बला) कारागार मे बद रहने के कारण ये (विहल) अनिष्ट फलवाले होते हैं–अर्थात् जो ये चाहते है वह इन्हें नहीं मिलता

તેમનો ત્યાગ કરે છે "નિરાસા" તે ચોરો ત્યાં જીવન સુધી રહેવાના કારણે પોતાના જીવવાની આશા છોડી દે છે "बहुजणधिक्कारसद्दलज्जाइया' અનેક લોકો ધિક્કારના શબ્દોથી તેમને શરમિંદા કરે છે, છતાં પણ તેમને એવી શરમ થતી નથી, કારણ કે તેઓ ધૃષ્ટ થઈ ગયા હોય છે, "अणुबद्धखुहापरद्धा" રાત દિવસ તે ભૂખથી પીડાયા કરે છે "सीउण्हतण्हवेयणदुघट्टघट्टिया" ઠંડી, ગરમી, ક્ષુધા તૃષા આદિની અસહ્ય વેદનાથી તેઓ સદા 'दुघट्टघट्टिया" અત્યંત દુઃખી રહે છે 'विवण्णमुहविच्छविया" તેમનું મુખ સદા ગ્લાન–ઉદાસ રહે છે અને તેમની કાંતિ પણ મલિન રહે છે "विहलमलिणदुब्बला" કારાગૃહમાં કેદ રહેવાને કારણે તેઓ 'विहल" અનિષ્ટ ફળવાળા હોય છે, એટલે કે તેઓ

क्लान्ताः ग्लानाः 'कासता' कासमानाः कासरोगेण 'खूँ खूँ' इति शब्दायमानाः 'वाहिया य' व्याधिताश्च=कुष्ठादिविविधरोगपीडिताः, 'आमाभिभूयगत्ता' आमाभिभूतगात्राः=आमैः = भुक्ताऽपरिपाकजनितैरतीसारादी नाना रोगैरभिभूतानी गात्राणि=शरीराणि येषां ते तथा । 'परूढनहकेसमंसुरोमा' प्ररुढनखकेशश्मश्रुरोमाणः, तत्र प्ररूढाः । असंस्कारात् प्रवृद्धाः नखाः केशाः श्मश्रूणि=मुखजातानि 'दाढी' इति भाषा प्रसिद्धानि रोमाणि च येषां ते तथा 'मलमुत्तम्मि णियगम्मि खुत्ता' निजके मलमूत्रे खुत्ता=स्वकीये पुरीषमूत्रे 'खुत्ता' निमग्ना 'खुत्ता' इति देशी शब्दः, कारागारे बद्धाः अन्यत्र गन्तुमशक्यत्वात् स्वकृत मलमूत्रपुरीषपङ्कएव निमग्नास्तिष्ठन्त्यदत्तग्राहिण इत्यर्थः । तथा 'अकामगा' अकामकाः = मरणेच्छारहिताः 'तत्थेव मया' तत्रैव कारागृहे मृताः सन्तः

है । (मलिण) ये मलिन वदन एवं (दुब्बला) शक्तिविहीन बने रहते हैं । (किलता) ग्लान रहते है । तथा (कासता) कासरोग से "खू-खू" इस प्रकार का शब्द इनके मुख से निकलने लगता है । और (वाहिया य) कुष्ठादि विविध रोगो से ये पीडित होते हैं (आमाभिभूयगत्ता) इनका शरीर अतिसार आदि नाना प्रकार के रोगों का घर बन जाता है । (परूढनहकेसमंसुरोमा) नख, केश, तथा श्मश्रु-दाढी के बाल समारे नही जानेके कारण बहुत बढ जाते हैं । और (नियगम्मि मलमुत्तम्मि) इनकी हालत अधिक गंभीर बन जाती है कि जिससे कारागार में बद्ध ये विचारे अन्य जगह जाने मे असमर्थ होने के कारण अपने ही मलमूत्र मे (खुत्ता) भरे हुए पडे रहते हैं । तथा (अकामगा) नही इच्छा होने पर भी (तत्थेव) उसी मे पडे पड़े वही पर (मया)

જે વસ્તુની ઈચ્છા કરે તે વસ્તુ તેમને મળતી નથી " मलिण " તે લોકો મલિન વદન વાળા તથા "दुब्बला" શક્તિ વિનાના થઈ જાય છે, " किलता " ગ્લાનિયુક્ત રહે છે, તથા " कासता " ઉધરસને કારણે "ખૂ-ખૂ" કર્યા કરતા હોય છે અને " वाहिया य " તે લોકો કોઢ આદિ અનેક રોગોથી પીડાતા હોય છે " आमाभिभूयगत्ता " તેમના શરીર અતિસાર આદિ વિવિધ રોગોના ઘર બની જાય છે, " परूढनहकेसमंसुरोमा " નખ, કેશ તથા દાઢીના વાળ નહીં કપાતા હોવાથી ઘણાજ વધી જાય છે અને " नियगम्मि मलमुत्तम्मि " તેમની હાલત એવી ગંભીર થઈ જાય છે કે, કારાગૃહમા પૂરાયેલા તે લોકો બીજી જગ્યાએ જવાને અસમર્થ હોવાથી પોતાના જ મળમૂત્રમા " खुत्ता " ભરાઈ રહે છે તથા " अकामगा " ઇચ્છા ન હોવા છતા પણ " तत्थेव " ત્યાંજ પડ્યા પડ્યા " मया " મરી જાય છે ત્યાર બાદ " बंधि

'वधिऊणपाएसु कड्डिया' पादेषु बद्ध्वा कृष्टाः=रज्ज्वादिभिर्हस्तपादान्धनेन कृष्टाः = बहिर्निष्कासिता 'खाइयाए छूढा' खातायां छूढाः क्षिप्ताः = गर्ते चाण्डालादिभिः प्रक्षिप्ता क्रियन्ते। 'तत्थय' तत्र च विगसुणयसियालकोलमज्जारवंदसंडासतुंडपक्खिगणविविहमुहसयविलुत्तगत्ता' वृक – शुनक – शृगाल– कोल–मार्जार वृन्द–सन्दंसतुण्डपक्षिगणविविधमुखशतविलुप्तगात्राः', तत्र 'विग' वृकाः = 'वरगडा' इति भाषा प्रसिद्धाः, 'सुणय' शुनकाः = कुक्कुराः 'सियाल' शृगालाः कोला शूकराः मार्जाराः, तेषां वृन्दं समूहस्तेन तथा सदंश तुण्डैः = सदंशवत्तीक्ष्णमुखतुण्डैः–पक्षिगणानां=काकादीनां विविधमुखशतैश्च विलु प्तानि=निःशेषेण खादितत्वाद् अलक्षितानि गात्राणि येषां ते तथा वृककुक्कुर– शृगालादिभिः विविधपक्षिगणैश्च भक्षितशरीराः 'कयविहगा' कृतविभङ्गाः= वृकादिभिरेव खण्डशः कृता । तथा 'केइ' केचित् मृतेभ्योऽन्ये 'किमि–

मर जाते हैं। बाद में (वधिऊणपाएसु) रज्जु आदि से पैर बांधकर (इन्हें चांडाल आदि जन (कड्डिया) बाहर निकाल कर (खाइयाए छूढा) किसी खड्डे में ले जाकर पटक देते हैं। (तत्थ य) वहां फिर उनके कलेवरों को (विगसुणयसियालकोलमज्जारवंदसंडासतुंडपक्खिगणविविहमुहसयविलुत्तगत्ता) (विग) वृक–वगैरे, (सुणय) शुनक–कुत्ते, (सियाल) शृगाल, (कोल) सुअर, (मज्जार वंद) मार्जार–वन बिलाव आदि हिंसक जानवरों के (वृन्द–समूह) एवं (संडासतुंडपक्खिगण) संडासी के जैसे तीक्ष्ण तुण्डवाले गृद्ध आदि पक्षियों के समूह (विविहमुहसय) नाना प्रकारके सैकडों मुखों से (विलुत्तगत्ता) तहस नहस कर डालते हैं जिससे 'यह शरीर किस का है' यह नहीं जाना जाता। (कयविहगा) इस प्रकार वृकादिक जानवरों एवं विविधपक्षिगणों से कितनेक इन अभागों के शरीर खाया जाकर खंड २ कर

कृपाणप्रमुख" दोरडां आदिथी पग बांधीने च डाल आदि लोको तेमने "कड्डिया" बहार काढीने "खाइयाए छूढा" कोई खाडामां लई जईने फेंकी दे छे "तत्थ य" त्यां तेमना मृतदेहने विगसुणयसियालकोलमज्जारवंदसंडासतुंड– पक्खिगणविविहमुहसयविलुत्तगत्ता" "विग" वरु, "सुणय" शुनक– कुतरा, "सियाल" शियाळ, "कोल" सुअर, "मज्जारवंद" मार्जार जंगली बिलाडा, आदि हिंसक पशुओनो समूह अने "संडासतुंड पक्खिगण" साणसी जेवां तीक्ष्ण चांचवाळा गीध वगेरे पक्षीओनो समूह "विविहमुह– सय" विविध प्रकारना सेंकडो मुखो द्वारा "विलुत्तगत्ता" फोली खाय छे, तेथी "आ कोनुं शरीर छे" ते जाणी शकातुं नथी 'कयविहगा" आ रीते वरु आदि जानवरो तथा विविध पक्षीगणो द्वारा ते कमभागीओना शरीर

जाय कुहियदेहा ' क्रमिजातकुथितदेहाः क्रमिजातेन = रोगादि कारणात् समुत्पन्नक्रमिसमूहेन कुथितदेहाः=दुर्गन्धयुक्तशरीरा 'अणिट्ठवयणेहिं' अनिष्टवचनैः =अप्रियवचनैः ' सुट्ठुकय ज मओत्ति पावे ' सुष्ठुकृत = शोभन जात यत् =यस्मात् मृतोऽय पाप = पापी इत्येव रूपः ' सप्पमाणा ' शप्यमानाः= आक्रोश्यमानाः 'तुट्ठेण जणेण हम्ममाणा ' तुष्टेन जनेन हन्यमानाः तेषां मारणेन प्रसन्नो यो जनस्तेन ताड्यमाना सन्तः ' सयणस्स वि य ' स्वजनस्यापि च किं पुनरन्येषाम् ' दीहकाल ' दीर्घकाल यावत् 'लज्जावणगाय' लज्जापनका = लज्जालज्जारहिता इत्यर्थ ' हुति ' भवन्ति ॥ सू० १७ ॥

एवमिह लोके दुःखमाप्नुवन्तीत्युक्तम्, अथ परलोके किं भवती ? त्याह— ' मयासता ' इत्यादि

मूलम्—मयासता पुणो परलोगसमावण्णा नरए गच्छंति निरभिरामे अंगारपलित्तगकप्पअच्चत्थसीयवेयणा असायणो

दिये जाते हैं। तथा (केइ) कितनेक अदत्तग्राही चोर जो मरने से बाकी बचे रहते हैं वे (किमिजायकुहियदेहा) रोगादिक कारण के वश से अपने शरीर मे उत्पन्न हुए कीड़ों से दुर्गंधित शरीर वाले होकर (अणिट्ठवयणेहिं) लोगो के इस प्रकार के अप्रियवचनों से कि-(सुट्ठुकय ज मओत्ति पावो) भला हुआ जो यह पापी मर रहा है " अथवा मरे हुए सा हो रहा है " इस प्रकार (सप्पमाणा) गालियो से अपमानित होते हैं। तथा उनकी मृत्यु से प्रसन्न होने वाले मनुष्यों से ताडित होकर (सयणस्स वि य) स्वजनोंसे भी और दूसरोंसे भी (दीहकाल) बहुत समयतक (लज्जावणगाय) लज्जित (हुति) होते हैं ॥ सू-१७॥

ખવાય છે અને તેના ટુકડે ટુકડા કરાય છે તથા ' केइ " કેટલાક અદત્ત-ગ્રાહી ચોરો જો મોતમાથી બચે છે તો " किमिजायकुहियदेहा " રોગાદિક કારણોથી તેમના શરીરમા ઉત્પન્ન થયેલ કીડાઓથી દુર્ગંધ યુક્ત શરીરવાળા થઈને " अणिट्ठवयणेहिं " લોકોના આ પ્રકારના અપ્રિય વચનોથી ' स पमाणा " અપમાનિત થાય છે-' सुट्ठुकय ज मओत्ति पावो " " સારુ થયુ કે આ પાપી આ રીતે મરી રહ્યો છે " અથવા " મરેલાના જેવી સ્થિતિ અનુભવે છે ' તથા તેમના મૃત્યુથી ખુશી થનારા માણસો દ્વારા માર ખાઈને "सयणस्सविय" સ્વજનો તથા બીજા લોકોથી " दीहकाल ' લાંબા સમય સુધી ' लज्जावणाय " લજ્જા ' हुति " પામે છે ॥ સૂ-૧૭॥

दिण्णसयय दुक्खसयसमभिभूए । तओ विउव्वट्टिया समाणा-पुणो वि पव्वज्जनि तिरियजोणिं । तहि पि निरओवम-अणुभवति वेयणं । ते अणतकालेण जइणाम कहि वि मणुयभावं लहिंति णेगेहि णिरयगइगमण तिरियभवसयसहस्सपरियट्टएहि तत्थ वि य भवन णारिया नीयकुलसमुप्पण्णालोयवज्झातिरिक्ख भूया य अकुसला कामभोगतिसिया जहि निवधति निरयवत्तणी भवप्पवचकरणपणोल्लि पुणो वि संसारावत्तणेमिमूले धम्मसुइ विवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुइ पवण्णा य हुति। एगतदंडरुइणो वेढेति कोसिगारकीडेव अप्पग अट्ठकम्मतंतुघणवधणेण ॥ सू० १८ ॥

टीका— ' मयासता ' मृताः सन्तः ' पुणो ' पुनर्मरणानन्तर ' परलोगसमावण्णा ' परलोकसमापन्नाः परलोक प्राप्ताः ' नरगे गच्छति ' नरके गच्छन्ति । कीदृशे नरके ? इत्याह–निरभिरामे=असुन्दरे, तथा ' अगारपलित्तगकप्प, अच्चत्थ सीयवेयणा आसायणो दिण्णसययदुक्खसयसमभिभूए '

अब सूत्रकार यह कहते हैं कि ये अदत्तग्राही चोर इस लोक मे तो इस प्रकार के अनेक दुःखों को भोगते है परन्तु परलोक में भी इनकी कैसी दुर्दशा होती है सो कहते हैं—' मयासता ' इत्यादि ।

टीकार्थ–ये अदत्तग्राही चोर जब (मयासता) मर जाते है तब (पुणो) उसके अनन्तर (परलोगसमावण्णा) परलोकमे जाकर (नरगे गच्छति) नरक मे उत्पन्न होते है। जो नरक (निरभिरामे) सुन्दरता से रहित अर्थात् असुहावने हैं, तथा (अगारपलित्तगकप्प) अतिप्रज्वलित अगार

હવે સૂત્રકાર એ બતાવે છે કે તે ચોરલોકો આ લોકમા તો ઉપરોક્ત પ્રકારના દુ ખો અનુભવે છે પણ પરલોકમા પણ તેમનીકેવી દુર્દશા થાય છે— " मयासता " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–તે અદત્તગ્રાહી ચોર " मयामता " મરીને " पुणो " પછી " परलोग समावण्णा " પરલોકમા જઈને " नरगे गन्छति " નરકગતિમા ઉત્પન્ન થાય છે જે નરકાગર " निराभिरामे " સુન્દરતાથી રહિત છે, તથા " अगारपलित्त

अङ्गारप्रदीप्तककल्पाऽत्यर्थशीतवेदनाऽऽसातोदीर्णसततदुःखशतसमभिभूते, तत्र 'अङ्गारपलित्तगकप्प' प्रदीप्तक = अग्निप्रज्वलितो योऽङ्गारः = धूमरहितवह्निस्तेन कल्प तत्सदृशम्-उष्ण, तथा 'अच्चत्थसीयवेयणा आसायणो' अत्यर्थं शीत=अत्यर्थं हिमकालोद्भवशीत तयोर्वेदना तस्याः आपादन-प्रापण तेन 'उदिण्णसययदुक्खसय' उदीर्णानि समुद्भूतानि यानि सतत दुःख शतानि=अनेकशतसङ्ख्यकनिरन्तरदुःखानि, तैः 'समभिभूए' समभिभूत = युक्तः यः स तथा तस्मिन्, यद्वा-उष्णशीतवेदना, सा कीदृशी? इत्याह आशातनेन=चिरकालानुबन्धिकटुक फलदायकाऽदत्ताऽऽदानजनिताऽसातवेदनीयकर्मणा उदीर्णा प्रकटीभूता तस्याः तज्जनितानि यानि सततदुःखशतानि तैः समभिभूतः =व्याप्तो यः स तथा तस्मिन्नेव भूते नरके अदत्ताऽऽदायिनो मृताः सन्तो गच्छन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः। तत्र नरके गत्वा सन्तप्तलोहवालुका निकरप्रखरकठोरसूची

के जैसी उष्णता, और (अच्चत्थसीय) हिमकाल जैसा अत्यत शीत है। यहा नारकियों को इस उष्णता और शीत की (वेयणा आसायणो दिण्ण) वेदना की प्राप्ति से उदीर्ण-उत्पन्न (सययदुक्खसय) निरन्तर सैकड़ों दुःख प्राप्त होकर (समभिभूए) दु खित करते हैं। "आसादन" यह पद जो सूत्र में आया है उसका अर्थ एक तो प्राप्त होना है-जैसा कि अभी लिख दिया गया है। तथा दूसरा अर्थ इसका इस प्रकार से है-कि वे अदत्तग्राही चोर जो वहा मर कर नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो चुके हे चिरकालानुबधी-भव भव में कटुक फल दायक अदत्तादान के प्रभाव से उत्पन्न हुए अशात वेदनीय कर्म के द्वारा प्रकटीभूत वेदना से व्याप्त उन नरकों में निरन्तर सैकड़ो प्रकार के दुःखों को

गकप्प" અતિ પ્રજ્વલિત અગારા જેવુ ઉષ્ણ અને "अच्चत्थसीय" હિમકાળ જેવુ અત્યત શીતળ છે ત્યા નારકી જીવોને તે ઉષ્ણતા અને શીતની "वेयणा आसायणो दिण्ण" વેદનાની પ્રાપ્તિથી ઉત્પન્ન થયેલ "सययदुक्खसय" સેકડો દુખો નિરતર "समभिभूय" દુખી કરે છે "आसादन" આ પદનો સૂત્રમા ઉપયોગ થયો છે તેનો એક અર્થ તો 'પ્રાપ્ત થવુ" છે, જે સૂત્રમા હમણા જ અપાયો છે તથા તેનો બીજો અર્થ આ પ્રમાણે છે—તે અદત્તગ્રાહી ચોર કે જે મરીને નારકીની પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો છે, ચિરકાલાનુબધી-ભવભવમા કડવા ફળ દેનાર અદત્તાદાનના પ્રભાવે ઉત્પન્ન થયેલ અશાતા વેદનીય કર્મ દ્વારા ઉત્પન્ન થયેલ વેદનાથી વ્યાપ્ત તે નરકોમા નિરતર સેકડો દુખો ભોગવ્યા કરે છે

सुखदुस्तरमार्गसञ्चरणविविधरसामासपूरशोणित पूर्णनदीनिमज्जनपरमाधार्मिकसत-शलाकाशरीरप्रवेशनविविधशस्त्रास्त्रभेदनच्छेदनताडनापक्षारणादिकानि विपुलानि घोराणि दुःखानि शुन्वरा ' तओवि उव्वट्टिया समाणा, ततोऽपि नरकादुद्वृत्ताः सन्तः=निस्सृता. सन्तः 'पुणो वि' पुनरपि 'तिरियजोणिं पवज्जति' तिर्यग्योनिं प्रपद्यन्ते 'तहिंपि' तत्रापि 'निरयोवम अणुभवति वेयण' नरकोपमामनुभवन्ति वेदनां =नरकसदृशमेव दुःख प्राप्नुवन्ति। अथ 'जइनाम' यदिनाम 'अणतकालेन'अनन्त-कालेन=निगोदद्वारापेक्षया 'णेगेहिं' अनेकेषु=बहुषु 'निरयगतिगमणतिरियभवसय-सहस्सपरियट्टएहिं' नरकगतिगमनतिर्यग्भवशतसहस्रपरिवर्तेषु=नरकगतौ यानि पुनः पुनर्गमनानि तेषा तथा तिर्यग्भवाना=तिर्यग्योनीना च ये शतसहस्रपरिवर्ताः=अनेक-शतसहस्रसभ्रमणानि तेषु अतिक्रान्तेषु सत्सु 'कहिं वि मणुयभाव लहिंति ' कथ-

भोगा करते हैं। इस प्रकार इस नरकों में शीतऔर उष्ण जन्य अनेक प्रकार की वेदनाएँ हैं जो नारकियो को व्यथित करती रहती हैं।(तओ-वि उव्वट्टिया समाणा) नरकों में जाकर वहा के विविध प्रकार के दुःखो को भोगते २ जब उन जीवों की एक सागर आदि अनेक सागर प्रमाण-वाली भुज्यमान आयु वहा की जब समाप्त हो जाती है तब वे वहा से निकल कर पुनरपि (तिरियजोणिं पवज्जति) तिर्यंचयोनि में जन्म धारण करते हैं। (तहिंपि) वहां पर भी वे (निरयावम) नरकोपम (वेयण) वेदना को दुःखो को (अणुभवति) भोगते रहते हैं। (जइ-नामणेगेहिं णिरयगतिगमनतिरियभवसयसहस्सपरियट्टएहिं) यदि अनेक नरकगति तिर्यंचगति के लाखों भवोको धारण करते २ व्यतीत हुए (अणतकालेण) निगोद की अपेक्षा अनतकाल के बाद (कहिं वि) किसी तरह (मणुयभाव) मनुष्ययोनि भी उन्हें (लहिंति) प्राप्त हो गई

આ પ્રમાણે તે નરકોમા શીત અને ઉષ્ણુતા જન્ય અનેક પ્રકારની વેદનાઓ નારકી જીવોને પીડા પહોંચાડયા કરે છે " तओ वि उव्वट्टिया समाणा " નરકોમા જઈને ત્યાના વિવિધ પ્રકારના દુખો ભોગવતા ભોગવતા તે જીવોનુ અનેક સાગર પ્રમાણ આયુષ્ય ત્યા પૂરૂ થાય છે ત્યારે તેઓ ત્યાથી નીકળીને વળી પાછા " तिरियजोणिं पवज्जति " તિર્યંચ યોનિમા જન્મ ધારણ કરે છે " तिहिं वि " ત્યા પણ તેઓ " निरयोवम " નરક સમાન" वेयण " વેદનાઓ દુખો " अणुभवति " ભોગવે છે " जइनामणेगेहिं णिरयगतिगमनतिरिय भवसयसहस्सपरियट्टएहिं " જો અનેક નરક ગતિ, તિર્યંચગતિના લાખો ભવો ધારણ કરતા કરતા નિગોદની અપેક્ષાએ પસાર થયેલ " अणतकालेण " અનત કાળ પછી " कहि वि " કોઈ પણ રીતે " मणुयभाव " મનુષ્યગતિમા તેમનો

मपि मनुजभावं=मनुष्ययोनिं लभन्ते=प्राप्नुवन्त्यपि चेत्तर्हि 'तत्थवि य' तत्रापि च भवन्ति=जायन्ते, 'अणारिया' अनार्याः=म्लेच्छाः शकयवनादयः कीदृशा? इत्याह-'नीयकुलसमुप्पण्णा' नीचकुलसमुत्पन्नाः 'आरियजणे वि लोयवज्झा' आर्यजनेऽपि लोकवाह्याः=यदि कदाचिन्मगधाद्यार्यदेशे समुत्पन्ना अपि लोकवर्जनीयाः श्वपाकादिकुलसंभूता भवन्ति जनैस्तिरस्कृता इत्यर्थः, पुनश्च 'तिरिक्खभूया य' तिर्यग्भूताश्च पशु तुल्या विवेकशून्यत्वात् 'अकुसला' अकुशलाः=वस्तुतत्त्वाऽनभिज्ञा 'कामभोगतिसिया' कामभोगतृषिताः=तत्र कामौ=शब्दरूप लक्षणौ भोगाः=गन्धरसस्पर्शलक्षणास्तेषु तृषिताः=आसक्ताः 'जहिं' यत्र मनुष्य भवेऽपि लोकवाह्यकुले 'निरयवत्तणी भवप्पवंचकरणपणोल्लि पुणो वि संसारावं-

तो (तत्थवि य) वहा पर भी वे (अणारिया) अनार्यमनुष्यो-म्लेच्छो शक यवन आदि पर्यायो में ही (भवंति) उत्पन्न होते है। (नीचकुल-समुप्पण्णा) ये अनार्यजन नीचकुल के होते हैं। (आरियजणेवि) यदि कदाचित् मगध आदि आर्यदेश में उत्पन्न हुए तो ये वहा (लोयवज्झा) लोकवाह्यजनो में-चाण्डाल आदि निंदित नीचकुलो में-उत्पन्नहोते हैं। वहां सदा ये तिरस्कृत होते रहते है। (तिरियभूयाय) विवेक शून्य होने के कारण ये तिर्यंच जैसे ही वहा बने रहते हैं (अकुसला) वस्तु तत्त्व से अनभिज्ञ रहते है। (कामभोगतिसया) शब्द, रूप लक्षण काम एव गध रस, स्पर्श लक्षण भोगो मे आसक्त रहते है, (जहिं) लोक बाह्य कुलो मे मनुष्य भव प्राप्त कर लेने पर भी (निरियवत्तणी) नरक-गमन के मार्गभूत, (भवप्पवचकरणपणोल्लि) भव परपरारूप प्रवाह के

"लहिंति" જન્મ થાય તો પણ "तत्थवि य" તે લોકો "अणारिया" અનાર્ય મ્લેચ્છ, શક, યવન આદિ જાતિમા જ "भवंति" ઉત્પન્ન થાય છે "नीचकुल समुप्पण्णा" તે અનાર્ય લોકો નીચા કુળના હોય છે "आरियजणेवि" જો તેઓ કદાચ મગધ આદિ આર્યભૂમિમા જન્મ પામે છે તો તેઓ ત્યા "लोय वज्झा" લોકબાહ્ય જનોમા-ચાડાળ આદિ નિંદિત નીચકુળોમા ઉત્પન્ન થાય છે ત્યા તેઓ સદા તિરસ્કૃત થયા કરે છે "तिरिय भूयाय" વિવેકહીન હોવાને કારણે તેઓ તે મનુષ્ય યોનિમા હોવા છતા પણ તિર્યંચ જેવા જ હોય છે, 'अकुसला" વસ્તુ તત્ત્વથી તેઓ (અનભિજ્ઞ) અજાણ રહે છે, "कामभोगति सया" શબ્દ, કામ, રસ, ગંધ, સ્પર્શ આદિ ભોગોમા આસક્ત રહે છે "जहिं" લોકબાહ્ય કુળોમા મનુષ્ય ભવ પામ્યા છતા પણ ' निरयवत्तणी " નરક ગમનના કારણભૂત "भवप्पवचकरणपणोल्लि" ભવ પરપરારૂપ પ્રવાહના પ્રવર્તક, તથા

त्तणेममूले' नरकवर्तनी:=नरकमार्गभूतानि भवमपञ्चकरणपणोदीनि=भवमपञ्चस्य=जन्मपरम्परापवाहस्य करण=भवन तस्य मणोदीनि = मवर्त्तकानि नरकगमनकारणानीत्यर्थः, तथा पुनरपि=पुनश्च ससारावर्तनेमिमूलानि-तत्र समारवर्त्ते=ससारभ्रमणे नेमिमूलानि=रथचक्रपरिधिरूपाणि कर्माणीति गम्यते 'निवधति' निवध्नन्ति चतुर्गतिससारपरिभ्रमणकारणानि महारम्भमहापरिग्रहरूपाणि कुर्वन्तीत्यर्थः। तथा 'धम्मसुइवज्जिया' धर्मश्रुतिवर्जिताः = धर्मः = श्रुतचारित्रलक्षणस्तस्य श्रुतिः= श्रवण तद् वर्जिताः 'अणज्जा' अन्याय्याः=न्यायवर्जिता 'कूरा' क्राः=जीवोपघातकाः 'मिच्छत्त सुइपवण्णा य' मिथ्यात्व श्रुति मपन्नाश्च=मिथ्यात्वश्रुतिं=मिथ्यात्वमधाना "न माणिवधे दोषा नाप्यदत्तादाने दोषाः" इत्यादिरूप विपरीततत्त्वोपदेशिका या श्रुतिः= सिद्धान्तस्ता मपन्नाः तदङ्गीकारकाः 'हुति' भवन्ति। तथा एगतदडरुइणो' एकान्तदण्डरुचयः = एकान्तम्=अत्यन्त दण्डे=हिंसादिके रुचिः = श्रद्धा येषा ते तथा केवल परसन्तापोत्पादनपरा-

प्रवर्तक, तथा (पुणोवि ससारावत्तणेममूले) वार वार चतुर्गतिरूप ससार में परिभ्रमण के नेमिभूत-रथचक्र के परिधिरूप ऐसे कर्मों का ही (निव धति) वध करते रहते हैं। अर्थात्-नरक, तिर्यंच, मनुष्य गतिरूप ससार में परिभ्रमण के कारणभूत ऐसे महारम्भ, महापरिग्रह रूप कर्मों को करते रहते हैं। तथा (धम्मसुइवज्जिया) धर्मश्रुति से-श्रुतचारित्ररूप धर्म के श्रवण से वर्जित रहते हैं। (अणज्जा) न्यायमार्ग से हीन होते हैं। (कूरा) क्रूर-स्वभाव के-जीवों का उपघात करने वाले होते हैं। (य) और (मिच्छत्त सुइपवण्ण) "न प्राणिवध मे दोप है और न अदत्ता दान में दोप है" इत्यादि प्रकार से विपरीत तत्त्वोपदेशक मिथ्यात्वप्रधान श्रुति को-सिद्धातकों अगीकार करने वाले (हुति) होते हैं। तथा (एगतदड-रुइणो) इनकी श्रद्धा हिंसादिक पापकार्यों मे ही अत्यत रूपमें

"पुणोवि ससारावत्तणेममूले" वारवार चारगतिरूप ससारमा परिभ्रमणना नेमिभूत-रथचक्रना परिधिरूप એવા કર્મોનો જ "निवधति" બધ બાધતા રહે છે, એટલે કે નરક, તિર્યંચ, મનુષ્યગતિરૂપ સસારમા પરિભ્રમણના કારણરૂપ એવા મહારમ્ભ, મહાપરિગ્રહરૂપ કર્મો કર્યા કરે છે તથા "धम्म सुइव ज्जिया" શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના શ્રવણથી રહિત રહે છે, "अणज्जा" ન્યાય માર્ગથી રહિત હોય છે, "कूरा" ક્રૂર સ્વભાવના-જીવોની હિંસા કરતા હોય છે "य" તથા "मिच्छत्त सुइपवण्ण" "પ્રાણિવધમા દોષ નથી અને અદ ત્તાદાનમા દોષ નથી" ઇત્યાદિ પ્રકારના વિપરીત તત્ત્વોપદેશક મિથ્યાત્વ પ્રધાન સિદ્ધાંતોને સ્વીકારનાર "हुति" હોય છે, તથા "एगतदडरुइणो" હિસાદિ

यथा इत्यर्थः 'कोसिगारकीडे' कोशिकारकीट इव 'अट्ठकम्मतंतुघणबंधणेण' अष्टकर्मतन्तुघनबन्धनेन=अष्टकर्मभि'=ज्ञानावरणादिलक्षणैः तन्तुभिः = =सूत्रै रिव यद् घन=दृढ बन्धन तेन 'अप्पग' आत्मान 'वेढेंति' वेष्टयन्ति। यथा कोशीकारकीटाः सूत्राणि सृजन्तस्तैरेव बन्धनभूतैर्वेष्टिता भवन्ति तथैव अदत्तादायिन स्वेनैव क्रियमाणै ज्ञानावरणादि लक्षणैरष्टकर्मभि सूत्रस्थानीयै र्बन्धनैर्वेष्ट्यन्ते इति भावः ॥ सू० १८ ॥

अष्टविधकर्मभिर्निबद्धाः सन्तः संसारसागर वसन्तीति तमेव वर्णयन्नाह— 'एव नरग' इत्यादि।

मूलम्— एव नरगतिरियनरअमरगमण – परंतचक्कवाल जम्मजरामरणकरणगंभीरदुक्खपक्खुभियपउरसलिल संजोग विजोगवीचि- चितापसगपसारिय–वहबधमहल्लविउलकल्लोल-- कलुणविलविय–लोभकलकलतबोलबहुलं अवमाणणफेणं तिव्व-खिसण-पुलपुलप्पभूय-रोगवेयण-पराभवविणिवाय-फरुसधरिसण-

रहती है। अर्थात् ये सदा परजीवोंको संताप पहुंचाने में ही परायण बने रहते हैं तथा (कोसिगारकीडेव) कोशिकार कीडे की तरह वे (अट्ठ-कम्मतंतुघणबंधणेण) आठकर्म रूप तन्तुओ के घनिष्ठ बन्धन से (अप्पाण) अपने आपको (वेढेंति) वेष्टित करते हैं अर्थात् जिस प्रकार कोशिकार कीट सूत्रो का सर्जन करते हुए बंधनभूत उन्हीं सूत्रो से वेष्टित हो जाते है उसी तरह अदत्तग्राहीजन अपने द्वारा किये गये सूत्रस्थानीय ज्ञाना वरण आदि अष्ट कर्मों से जो कि आत्मा को दृढरूप बांधनेवाले हैं बंधदशा को प्राप्त हो जाते है ॥ सू-१८ ॥

પાપકૃત્યમાં જ તેમને વધારે શ્રદ્ધા હોય છે, એટલે કે અન્ય જીવોને કષ્ટ પહોંચાડવાને તેઓ સદા તત્પર રહે છે તથા "कोसिगारकीडेव" કોશેટાની જેમ તેઓ "अट्ठकम्मतंतुघणबंधणेण" આઠ કર્મરૂપી તંતુઓના મજબૂત બંધનથી "अप्पाण" પોતાની જાતને "वेढेंति" લપેટી લે છે એટલે કે જેમ રેશમનો કીડો (કોશેટો) તંતુઓનું સર્જન કરીને તે તંતુઓને પોતાના શરીર ફરતા તેમાં લપેટીને તેમાં બંધાઈ જાય છે, તેમ અદત્તાદાન લેનાર માણસ પોતે કરેલા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મો કે જે આત્માને મજબૂત રીતે બાંધનારા છે, તે કર્મોરૂપ તંતુથી બંધનની સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ ૧૮॥

समावडिय-कठिणकम्मपत्थरतरंग—रिंगतनिच्चमच्चुभयतोयपट्ठं कसायपायालकलससकुल भवसयसहस्सजलसंचय अणंतं उव्वेगजणयं अणोरपार महब्भय भयंकरं पइभय अपरिमियमहिच्छ कलुसमइ वा उव्वेग उद्धम्ममाणाऽऽसापिवासा पायालं कामरइ-रागदोसवधणवहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयारं, मोहमहावत्तभोगभाममाणगुप्पमाणुच्छलंतवहुगब्भवासपच्चोणियत—पाणियं पधावियवसण—समावण्णरुण्णचडमारुय —समाहयामणुण्णवीचिवाकुलियभगफुट्टतनिट्ठकल्लोलसंकुलजल पमाय-वहुचडदुट्टसावयसमाहयउद्धायमाणगपूरघोरविद्धंसणत्थवहुलं अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ अनिहुतिंदिय—महामगरतुरियचरियखोक्खुब्भमाणसतावनिच्चयचलतचवलचंचलअत्ताणा—सरणपुव्वकम्मसचयोदिण्णवज्जवेदिज्जमाणदुहसयविवागघुणंत-जलसमूह, इड्ढिरससायगारवोहारगहिय — कम्मपडिवद्धसत्तकड्ढिज्जमाण—निरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुल, अरइरइभय—विसाय सोगमिच्छत्तसल्लसकड अणाइसताणकम्मवधणकिलेस चिक्खिल्लदुत्तार अमरनरतिरियनिरयगइगमणकुडिलपरिवट्टविउलवेल—हिंसालियअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारभकरणकारावणाणुमोयण—अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिडियगुरुभाराक्कतदुग्गजलोघदूरनिव्वोलिज्जमाणउम्मग्गनिमग्गदुल्लहतल सरीरमणोमयाणिदुक्खाणि उप्पियता सायासायपरितावणमय उव्वुड्डनिव्वुड्डयकरेताचउरतमहतमणवयग्गं रुद्द ससारसायरअट्ठिय अणालवणपइट्ठाणमप्पमेय चुलसीइजोणिसयसहस्सगुविल अणालोगमधयारं अणंतकाल जावणिच्च उत्तत्थसुण्णभयसण्णसपउत्ता वसति उव्विग्गवासवसहिं ॥ सू० १९॥

टीका-'एवम्' अमुना प्रकारेण आत्मनः कर्मभिर्बन्धनेन 'नरगतिरियनरअमरगमण पेरतचक्कवाल' नरकतिर्यङ्नराऽमरगमनपर्यन्तचक्रवाल=तत्र 'नरक', तिर्यङ्, नरः, अमर,' इति चतुर्गतिषु गमन = तदेव पर्यन्तचक्रवाल=बाह्यपरिधिमण्डल यस्य स तथा तमेवम्भूत ससारसागर वसन्तीति वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः । पुनः कथं भूतमित्याह—'जम्मजरामरणकरणगमीरदुक्खपक्खुभियपउरसलिल' जन्मजरामरणकरणगम्भीरदुःखप्रक्षुभितप्रचुरसलिल=तत्र जन्मजरामरणादिभिः करणैः= साधनभूतैर्यद्गम्भीरदु'खम्=अतिमहाक्लेशस्तदेव प्रक्षुभित = अतिवेगव्याकुलित प्रचुर सलिल=जल यत्र स तथा तम् , यथा समुद्रो विपुलजलराशिपूर्णो भवति तथैव समुद्ररूप ससारोऽपि जलस्वरूपविविधदुःखव्याप्त इत्यर्थः, एवमेवाग्रेऽपि समुद्रधर्मान् रूपकाऽलङ्कारेण ससारेऽपि प्रदर्शयति पुनर्यथा—'सजोगविजोग

ये जीव ज्ञानावरण आदि अष्टविध कर्मों से बधदशा को प्राप्त होकर ससार सागर में रहते हैं सूत्रकार अव वर्णन करते हैं—

'एव नरग' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव) इस प्रकार अपनी आत्माको कर्मोंके साथ एक क्षेत्रावगाहरूप बधदशा से बाधनेके कारण ये अदत्तग्राहीजन (नरगतिरियनर अमरगमणपेरतचक्कवाल) नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य एव देवगतियों में परिभ्रमण रूप बाह्य परिधिमडल वाले, तथा (जम्मजरामरणकरणगभीर दुक्खपक्खुभियपउरसलिल) जन्म, जरा, मरणजन्य अति महाक्लेशरूप प्रक्षुभित एव प्रचुर जलवाले ससार सागर में ही चक्कर काटा करते हैं-परिभ्रमण किया करते है । सूत्रकार रूपकालकार से इसी ससार

તે જીવો જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોથી બધનની દશા પ્રાપ્ત કરીને સસાર સાગરમા રહે છે હવે સૂત્રકાર તેનુ વર્ણન કરે છે—

"एव नरग" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"एव" તે રીતે પોતાના આત્માને કર્મોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ બધદશાથી બાધવાને કારણે તે અદત્તગ્રાહી માણસો "नरगतिरियनरअमर-गमणपेरतचक्कवाल" નરક, તિર્યચ, મનુષ્ય અને દેવ ગતિયોમા પરિભ્રમણરૂપ બાહ્ય પરિધિમડળવાળા, તથા "जम्मजरामरणकरणगभीरदुक्खपक्खुभियपउरसलिल" જન્મ, જરા, મરણ જન્ય અતિશય મોટા કલેશરૂપ પ્રક્ષુભિત અને પ્રચુર જળવાળા સસાર સાગરમા જ ચક્કર લગાવ્યા કરે છે-પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે, સૂત્રકાર રૂપક અલકારથી આ સસારસાગરનુ વર્ણન

वीचि-चिंतापसग पसारिय - वहनबमहल्लविउलकल्लोलकलुणविलवियलोभकलकलतबोलबहुल' तत्र='सजोगविजोगवीचि' सयोगवियोगा एव वीचयः=तरङ्गा यत्र स तथा, समुद्रो यथा—जलतरङ्गयुक्त एव ससारोऽप्यनिष्टसयोगेष्टवियोग रूप-तरङ्गयुक्त, तथा 'चिंतापसगपसारिय' चिन्ताप्रसङ्गप्रसारितः=शोकसमूह विस्तृतः 'वहनबमहल्लविउलकल्लोल' वधबन्धमहाविपुलकल्लोलाः, तत्र वधाः = यष्ट्यादि ताडनानि, बन्धा=रज्ज्वादि बन्धनानि तान्येव महान्तः=सुदीर्घाः विपुला=विशालाश्च कल्लोलाः=महातरङ्गा यत्र स त, तथा 'कलुणविलवियलोहकलकलतबोलबहुल' करुणविलपितलोभकलकलायमानबोलबहुल=करुणविलपित=

सागर का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि-जिस प्रकार समुद्र का बाह्य परिधिमडल होता है उसी तरह इस ससार रूप समुद्र का बाह्यमडल चतुर्गतियों में परिभ्रमण करना रूप है। जिस तरह समुद्र अपार जलराशि से सदा परिपूर्ण रहता है, उसी तरह यह ससार भी जन्म जरा एव मरण जन्य गभीर दु खरूप जल से पूर्ण भरा हुआ है। (सजोग विजोग वीचि-चिंता पसग-पसारिय-वह-बध-महल्ल-विउल-कल्लोल कलुण-विलविय-लोभकलकलतबोलबहुल) इस ससार मे (सजोग विजोग वीचि) अनिष्ट सयोग एव इष्टवियोग जीवों को प्रतिक्षण प्राप्त होते रहते हं सो ये अनिष्टसयोग इष्टवियोग ही इसमे वीचि-लहरों जैसे हैं। तथा (चिंतापसगपसारिय) विविध प्रकार के शोक समूह से यह विस्तृत हो रहा है। (वहबध) वध-यष्टयादि द्वारा बाधना ये ही जिसमे (महल्ल) बडी २ (विउल) विशाल (कल्लोल) कल्लोलें हे।

કરતા કહે છે કે-જેમ સમુદ્રનુ બાહ્ય પરિધિમડળ હોય છે, એ જ પ્રમાણે આ સસાર રૂપી સમુદ્રનુ ચતુર્ગતિયોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ બાહ્યપરિધિમડળ છે જેમ સમુદ્ર અપાર જળ રાશિથી સદા પરિપૂર્ણ રહે છે, તે જ પ્રમાણે આ સસાર પણ જન્મ, જરા અને મરણ જન્ય ગભીર દુખરૂપી જળથી પૂરેપૂરો ભરેલો છે "सजोगविजोगवीचि-चिंता पसग पसारिय-वहबधमहल्ल विउलकल्लोलकलुणविलवियलोभकलकलतबोलबहुल" આ સસારમા "सजोगविजोगवीचि' અનિષ્ટનો વિયોગ જીવોને ક્ષણે ક્ષણે પ્રાપ્ત થયા કરે છે તે અનિષ્ટ સયોગ અને ઇષ્ટવિયોગ જ તેમા વીચિ-લહેરો જેવો છે તથા "चिंतापसगपसारिय" વિવિધ પ્રકારના શોકસમૂહથી તે વિસ્તૃત થઈ રહેલ છે "वहबध" વધ-યષ્ટી આદિ દ્વારા બધન જ જેમા "महल्ल" મોટા મોટા "विउल" વિશાળ "कल्लोल" મોજા સમાન છે "कलुणविलविय"

रोगदुःखादिजनितदीनविलापएव लोभमोहन कलकलायमानः=कलकलशब्दयुक्तो यो बोलः=ध्वनि स बहुलो यत्र स तथेति सयोगादीनां पदानां कर्मधारयस्तं तथा 'अवमाणणफेण' अपमाननफेनम्=अपमानफेनयुक्त 'तिव्वखिंसणपुलं पुलप्पभूयरोगवेयणपराभवविणिवायफरुसधरिसणसमावडियकठिणकम्मपत्थरतरंग रिंगतनिच्चमच्चुभयतोयपट्ठ' तत्र 'तिव्वखिंसण' तीव्रखिंसनम्=तीव्रनिन्दा तथा 'पुलपुल' निरन्तर प्रभूता=बहूला जायमाना या 'रोगवेयण' रोगवेदनाः= नानाविधाऽऽधिव्याधि-पीडास्ताः, तथा 'पराभवविणिवाय' पराभवः=अना-दरः, तस्य विनिपातः=विशेषेण प्राप्ति, तथा 'फरुसधरिसण' परुषधर्षणानि= कठोरवचनैः भर्त्सनानि च तानि 'समावडिय' समापतितानि=समापन्नानि येभ्य स्तान्येवम्भूतानि यानि 'कठिणकम्म' कठिनकर्माणि=ज्ञानावरणादीनि क्लिष्ट

(कलुणविलविय) रोग से एव दुःखादि से जन्य करुण विलाप तथा (लोभ) लोभ एव मोह से जन्य जो (कलकलत) कलकल शब्द, इन से युक्त (बोल) ध्वनिया ही जहां (बहुल) बहुलरूप मे वर्तमान हैं (अवमाणणफेण) अपमानरूप फेन से जो युक्त बना हुआ है, (तिव्व खिंसण पुलपुल भूयरोग वेयणपराभव विणिवायफरुसधरिसण समावडि यकठिणकम्म पत्थर तरग रिंगतनिच्चमुच्चुभयतोयपट्ठ) (तिव्वखिंसण) तीव्र निंदाएँ तथा (पभूयरोगवेयण) निरतर जायमान अनेक रोग वेद नाएँ-नाना प्रकार की आधि व्याधि रूप पीडाएँ, (पराभवविणिवाय) अनादर की विशेष रूप से प्राप्ति, तथा (फरुसधरिसणसमावडिय) कठोर वचनों द्वारा निर्भर्त्सन-फटकारना, ये सब जिनके उदय से जीवों को प्राप्त होते रहते हैं, ऐसे (कढिणकम्मपत्थर) ज्ञानावरण आदि क्लिष्ट

રોગ તથા દુઃખાદિથી ઉત્પન્ન થયેલ કરુણ વિલાપ તથા "लोभ" લોભ અને મોહથી જન્ય જે "कलकलत" 'કલકલ' શબ્દથી યુક્ત "बोल" અવાજો જ જ્યાં "बहुल" વધારે પ્રમાણમાં વિદ્યમાન છે, "अवमाणणफेण" અપ માનરૂપ ફીણથી જે યુક્ત છે, "तिव्वखिंसणपुल पुलभूयरोगवेयणपराभव विणिवायफरुसधरिसणसमावडियकठिणकम्मपत्थरतरंगरिंगतनिच्चमच्चुभयतोयपट्ठ" "तिव्वखिंसण" તીવ્ર નિંદાઓ તથા "पभूयरोगवेयण" નિરતર ઉત્પન્ન થતી અનેક રોગ વેદનાઓ-વિવિધ પ્રકારની આધિ વ્યાધિ રૂપ પીડાઓ "पराभवविणिवाय" મોટે ભાગે અનાદરની પ્રાપ્તિ, તથા "फरुस धरिसणसमावडिय" કઠોર વચનો દ્વારા નિર્ભર્ત્સનધિક્કાર, એ બધુ જેમના ઉદયથી જીવોને પ્રાપ્ત થયા કરે છે, એવા "कढिणकम्मपत्थर" જ્ઞાનાવરણ

कर्माणि तान्येव ये प्रस्तराः=सागरपाषाणरूपास्तैः कृत्वा 'तरगरिंगत' तरङ्गरिङ्गत् =तरङ्गैः=कल्लोलैः रिङ्गत्=चन्त् 'निच्चमच्चुभयतोयपट्ठ' नित्यमृत्युभयतोयपृष्ठ= नित्य=ुर मृत्युभय=मरणभयमेव तोयपृष्ठ=जलोपरितनभागो यत्र स तथा त महापाषाणाद्याघातोत्थितमहातरङ्गचञ्चलजलौघमृत्युभयसङ्कुलः सागरो यथा भवति तथा संसारोऽपि भर्त्सनापमाननादि नानादुःखफलप्रदज्ञानावरणादि क्लिष्टकर्म पाषाणसमुत्थित पुनः पुनर्जन्मजरामरणभयतरङ्गव्याप्त इत्यर्थः । 'कसायपायाल- कलससंकुल' कषायपातालकलशसंकुल=कषाया =क्रोधादयश्चत्वारस्ते एव पाता- लकलशास्तैः सङ्कुलो यः स तथा त, 'भवसयसहस्सजलसचय' भवशतसहस्रज- लसञ्चय=भवशतसहस्राण्येव जलसञ्चयः = जलराशिर्यत्र स तथा तम्, 'अणत'

कर्मरूप पाषाणों से उठी हुई, (तरगरिंगत) तरगों से जो चचल बना हुआ है, तथा जो (निच्चमच्चुभय) अवश्यभावी मृत्यु के भयरूप (तोयपट्ठ) जलके उपरितन भाग से युक्त हो रहा है, अर्थात्-जिस प्रकार समुद्र महापाषाणों आदि के आघात से उत्थित महातरगों से चचल तथा जल से भरा हुआ होने के कारण मृत्यु के भय से सकुल होता है उसी तरह ससार भी भर्त्सना अपमान आदि ननादुःखरूप फलको देने वाले क्लिष्टकर्मरूप पाषाणों से समुत्थित वार वार जन्म, जरा, मरण, के भयरूप तरगों से व्याप्त हो रहा है। (कसायपायाल- कलससकुल) तथा यह ससार सागर क्रोधादिक चार कषायरूप पाताल कलशों से युक्त है (भवसयसहस्सजलसचय) लाखों भवरूप जलसचय से यह युक्त है। (अणत) अनन्त ससारी जीवों की अपेक्षा यह अनन्त

આદિ કિલષ્ટ કર્મરૂપ પાષણોથી પેદા થયેલ "तरग रिंगत" તરંગોથી જે ચચળ બનેલ છે, તથા જે "निच्चमच्चुभय" અવશ્ય ભાવી (જરૂર થનારા) મૃત્યુના ભયરૂપી "तोयपट्ठ" જળના ઉપરિતન ભાગથી યુક્ત છે, એવા સસાર સાગરમા તે પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે– એટલે કે જેમ સમુદ્ર મહાપાષાણો આદિના આઘાતથી ઉત્પન્ન થયેલ તરંગોથી ચચળ બનેલ હોય છે તથા પાણીથી ભરપૂર હોવાને કારણે તેમા પડનારને માટે મોતનો ભય રહે છે તેમ સસાર પણ ભર્ત્સના અપમાન આદિ વિવિધ દુખરૂપ ફળ દેનારા કિલષ્ટ કર્મરૂપ પાષાણોથી ઉત્પન્ન થતા, વારવાર અનુભવાતા જન્મ, જરા, મરણ આદિના ભયરૂપ તરંગોથી વ્યાપ્ત છે "कसायपायालकलससकुल" તથા આ સસાર સાગર ક્રોધ આદિ કષાયરૂપ પાતાળ કળશોથી યુક્ત છે "भवसयसहस्सजल सचय" લાખો ભવરૂપ જળસંચયથી તે યુક્ત છે "अणत" અનન્ત સસારી

अनन्तम्=समारि जीवापेक्षया अन्तरहितम् ' उव्वेगजणय ' उद्वेगजनक=आधि-व्याधि प्रभृतिदुःखशतयुक्तत्वात् ' अणोरपार ' अनर्वाक् पारम्=अदृष्टपार ' महब्भय ' महाभय=महाभयजनक दुस्तरत्वात् , भयङ्कर=कर्मप्रकृतिमहामत्स्यमकरादिभिः व्याप्तत्वात् , ' पइभय ' प्रतिभय=प्रतिप्राणिन भयजनक सकलप्राणिभयोत्पादकत्वात् ' अपरिमिय महिच्छकलुसमति वाउवेग उद्धम्ममाणासापिवासापायाल' अपरिमितमहेच्छाकलुषमतिवायुवेगोद्धम्यमानाशापिपासापातालम् , तत्र अपरिमिता=अपरिमाणा महती=विशाला चेच्छा=विषयाभिलाषा, 'कलुस' कलुषा=मलिना या मति =बुद्धिः सा एव 'वाउवेग' वायुवेगस्तेन ' उद्धम्ममाण ' उद्धम्यमाना==प्रवर्द्धमाना या आशाः=अप्राप्तार्थस्य प्राप्ति सम्भावनाः, पिपासाः=प्राप्तार्थस्योपभोगवाञ्छाः, एता एव पाताल यत्र स तथा तम्, अपरिमितमहेच्छामलिनबुद्धि

रहित है। (उव्वेगजणय) आधि व्याधि आदि सैकड़ों दुःखों से युक्त होने के कारण यह उद्वेगजनक है। तथा (अणोरपार) यह अदृष्ट पार-वाला है-इसका पार अदृष्ट है। (महब्भय) दुस्तर होने से यह जीवों को महाभय का जनक है। कर्मों की १४८ उत्तर प्रकृतिरूप महामत्स्य मकर आदि जलचर जीवो से यह व्याप्त है। समस्त प्राणियों के लिये भय का उत्पादक होने के कारण यह (पइभय) हरएक जीव के लिये भय का जनक बना हुआ है। (अपरिमियमहिच्छकलुसमतिवाउवेग उद्धम्ममाणासापिवासापायाल) (अपरिमिय) अपरिमित तथा (महिच्छ) महत्ता विषयाशारूप एव (कलुसमति) मलिनबुद्धिरूप (वाउवेग) वायु के वेग से (उद्धम्ममाण) प्रवर्द्धमान ऐसी (आसा) आशा-अप्राप्त अर्थ के प्राप्त करने की सभावनारूप तथा (पिवासा) पिपासा-अर्थ का उप

જીવોની અપેક્ષાએ તે અન્તરહિત છે " उव्वेगजणय " આધિવ્યાધિ આદિ સેકડો દુ ખોથી યુક્ત હોવાથી તે ઉદ્વેગજનક છે તથા " अणोरपार " તે અસીમ-અપાર છે " महब्भय " દુસ્તર હોવાથી તે જીવોને માટે મહાભય પેદા કરનાર છે કર્મોની ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ મહામત્સ્ય, મગર આદિ જળ ચર જીવોથી તે વ્યાપ્ત છે સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે ભય પેદા કરનાર હોવાથી તે ' पइभय " દરેક જીવને માટે ભયજન છે " अपरिमिय महिच्छकलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाणासापिवासापायाल " " अपरिमिय " અપરિમિત તથા ' मिहिच्छ " મોટી વિષય વાસના રૂપ અને " कलुसमति " મલિન મતિરૂપ, " वाउवेग " વાયુના વેગથી " उद्धम्ममाण " વધતી જતી એવી " आसा " આશા-અપ્રાપ્ત વસ્તુને પ્રાપ્ત કરવાની સભાવના-તથા " पिवासा "

वायुप्रवर्द्धमानाशातृष्णादिरूपाऽस्तात्रपातालयुक्तमित्यर्थः। तथा–' कामरइरागदोस वधणबहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयार ' कामरति–रागद्वेष–बन्धन–बहुविधसङ्कल्पविपुलदकरजोरयान्धकारम्, तत्र – कामरतिः = शब्दादिष्वभिरुचि, रागः = अनुकूलविषयेषु प्रीतिः, द्वेषः = तेष्वेवप्रतिकूलेष्वप्रीतिश्चेत्येतान्येव बन्धनानि= बन्धकारणानि तथा बहुविधाश्च सङ्कल्पाः=मनः संकल्पा इत्येतेषां द्वन्द्वः ते कामरत्यादय एव विपुलदकरजांसि=विस्तीर्णजलकणिकाः तेषां यो रयः=वेगस्तद्रूपोऽन्धकारो यत्र स तथा तम्। कामरत्यादिरूपजलकणिका वेग समुत्पन्नान्धकारयुक्तमित्यर्थः। पुन कीदृश ? मित्याह–' मोहमहावत्तभोगभममाणगुप्पमाणुच्छलतबहुगब्भवासपच्चोणियत्तपाणिय ' मोहमहावर्त्तभोगभ्रमद्गुप्यदुच्छलद्बहुगर्भवासप्रत्यवनिवृत्तपाणिकम्, तत्र–' मोहमहावत्त ' मोहमहावर्त =मोह एव महाना-

भोग करने की वाञ्छारूप (पायाल) पाताल से यह युक्त है, तथा (कामरइरागदोस बधण बहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयार) (कामरइ) शब्दादिक विषयों में अभिरुचिरूप कामरति, (राग) अनुकूल विषयों में प्रीति रूप राग, एव (दोस) प्रतिकूल शब्दादिविषयों मे अप्रीति द्वेष, जो (बधण) बध के कारण हैं, तथा (बहुविह सकप्प) बहुत प्रकार के जो मनः सकल्प हैं ये ही सब इस ससारसमुद्र में (विउल दगरय) वीस्तीर्णदकरज–जलकण हैं। इनका (रयधयार) वेगरूप अधकार इसमें सदा व्याप्त हो रहा है अर्थात्–कामरत्यादिरूप जलकणों के वेगों से समुत्पन्न अधकार से यह युक्त बना हुआ है (मोह महावत्त–भोगभममाणगुप्पमाणुच्छलतबहुगब्भवास पच्चोणियपाणिय) तथा (मोहमहावत्त) मोहरूप महान् आवर्त्त इसमें उठ रहे हैं। और इन आवर्त्तो मे जहा

પિપાસા–પ્રાપ્ત ચીજનો ઉપભોગ કરવાની ઇચ્છા રૂપ " पायाल " પાતાળથી તે યુક્ત છે, તથા " कामरइरागदोसबधणबहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयार " " कमरइ " શબ્દાદિ વિષયોમા અભિરુચિરૂપ કામરતિ, " राग " અનુકૂળ વિષયોમા પ્રીતિરૂપ રાગ, અને " दोस " પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા અપ્રીતિરૂપ દ્વેષ, જે " बधण " બધનના કારણો છે, તથા " बहुविहसकप्प " અનેક પ્રકારના જે મન સકલ્પો છે એ બધા આ સસાર સાગરમા "विउलदगरय" વિસ્તીર્ણ જળ બિન્દુઓ છે "रयधयार" તેમના વેગરૂપ અધકારથી તે વ્યાપ્ત છે એટલે કે કામરતિ આદિ રૂપ જળકણોના વેગથી ઉત્પન્ન થયેલ અધકારથી તે યુક્ત છે " मोहमहावत्तभोगभममाणगुप्पमाणुच्छलतबहुगब्भवासपच्चोणियत्तपाणिय " તથા " मोहमहावत्त " મોહરૂપ મહા વમળો તેમા ઉત્પન્ન થયા કરે છે અને તે આવર્તોમા–વમળમા જ્યા " भोग " વિષય–ભોગ જ " भम-

वर्तः=जलभ्रमस्तत्र भोगाः=विषया एव ' भममाण ' भ्रमन्तः ' गुप्पमाण ' गुप्यन्तः =व्याकुली भवन्तः, उच्छलन्तः=उत्पतन्तः ' बहुगब्भवास ' बहुषु = बहुविधेषु गर्भवासेषु=पशुपक्ष्यादिलक्षणेषु ' पच्चोणियत्त ' प्रत्यवनिवृत्ताः=उत्पत्य निपतिताः ' पाणिय' प्राणिनो=जीवाः समुद्रपक्षे मकरादय', ससारपक्षे ससारिणो यत्र तथा भूत, तथा–पधावियवसणसमावण्णरुण्णचडमारुय समाहयाऽमणुण्णवीचिवाकुलिय भगफुट्टतनिट्ठकल्लोलसकुलजल ' प्रधावितव्यसनसमापन्नरुदितचण्डमारुतसमाहतामनोज्ञवीचिव्याकुलितभङ्गस्फुटदनिष्टकल्लोलसकुलजलम्, तत्र – पधाविय ' प्रधावितानि=प्रकर्षेणेतस्ततोगतानि यानि ' वसण ' व्यसनानि=कष्टानि तानि ' समावण्ण ' समापन्नाः=प्राप्ता ये प्राणिन तेषा 'रुण्ण' रुदितमेव 'चडमारुय' चण्डमारुतः=प्रचण्डवायुस्तेन ' समाहय ' समाहताः=परस्पर सघट्टिता याः 'अमणुण्ण ' अमनोज्ञा=भयकरा' वीचयः दुःखपरम्परारूप तरङ्गास्तै ' वाउलिय ' व्या

(भोग) विषय–भोग ही (भममाण) भ्रमण कर रहे हैं, (गुप्पमाणे) व्याकुल हो रहे हैं तथा (उच्छलत) उछल रहे हैं। एव इस ससार समुद्र में (बहुगब्भवास) मनुष्य, पशु पक्षी आदि योनि रूप नाना प्रकार के गर्भो में ससारी जीव तथा समुद्रपक्ष मे मगरमच्छ आदि जलचर जीव आकर निपतित हो रहे ह। (पधाविय–वसण–समावण्ण रुण्णचडमारुयसमाहयाऽमुणुणवीचि वाकुलियभगफुट्टतनिट्ठकल्लोलस-कुलजल) तथा यह ससार समुद्र (पधाविय) इधर उधर से सप्राप्त (वसणसमावण्ण) अनेक व्यसनो–दुःखोंसे पीडित हुए प्राणियोंके (रुण्ण) रुदनरूप (चड मारुय) प्रचण्ड वायु से (समाहय) परस्पर सघर्ष को प्राप्त हुई (अमणुण्णवीचि) अमनोज्ञ दु खों की परपरारूप तरङ्गों से (वाकुलिय)

माण " भ्रमण કરી રહ્યા છે, " गुप्पमाण " વ્યાકુળ થઈ રહેલ છે, તથા " उच्छलत ' ઉછળી રહ્યા છે અને તે સસાર સાગરમા " बहुगब्भवास " મનુષ્ય, પશુ, પક્ષી આદિ યોનિરૂપ વિવિધ પ્રકારના ગર્ભોમા પ્રાણીઓ–સસારની અપેક્ષાએ જીવો તથા સમુદ્રની અપેક્ષાએ મગર મચ્છ આદિ જળચર જીવો આવી આવીને નિપતિત થઈ રહેલ છે એટલે કે તેમા જન્મ લઈ રહેલ છે " पधाविय–वसण–रुण्ण–चड–मारुय–समाहयाऽमुणुणवीचि–वाकुलिय–भग–फुट्टत–निट्टकल्लोल–सकुलजल " તથા આ સસાર સમુદ્ર " पधाविय " અહીં તહીંથી પ્રાપ્ત " वसणसमावण्ण " અનેક (વ્યસનો) દુખોથી પીડાતા પ્રાણીઓના ' रुण्ण " રુદનરૂપ " चडमारुय " પ્રચડ વાયુથી " समाहय " પરસ્પર અથડાતા " अमणुण्णवीचि " અમનોજ્ઞ દુખોની પરપરા – ગોથી

कुलित=विक्षोभित तथा भङ्गै=तरङ्गैः सह सघट्टनेन 'फुट्टत' स्फुटन्त=पृथग् भवन्तो ये 'निट्ठकल्लोल' अनिष्टकल्लोलाः = दारुण दुःखमहातरङ्गास्तैः सकुल =व्याप्त जल = जन्मजरामरणरूप यत्र स तथा तम्। मोहमहावर्तनिपतितविषयोपभोगभ्रमणनिमग्नप्राणियुक्त पशुपक्षिनरकनराऽमरादिविषमोन्नतावनतयोनि विभ्रमणतरङ्गभङ्गयुक्त विविधदारुणदु:खदुःखित प्राणिरोदनाऽऽक्रन्दनरूपवायु समाघातसमुद्भूतदुःखतरङ्गयुक्त पुन पुनर्जन्ममरणरूपजल यत्र ससारसागर वसन्तीति सम्बन्धः पुन कीदृश ? मित्याह — 'पमादबहुचडदुट्ठसावयसमाहयउद्धायमाणगपूरघोरविद्धसणत्थबहुल' प्रमादबहुचण्डदुष्टश्वापदसमाहतोद्धानपूरघोरविध्वसानर्थबहुल' तत्र-प्रमादबहुचण्डदुष्टश्वापदाः=प्रमदाः = मद्यविषयकषायनिद्रा विकथारूपास्ते एव बहुचण्डा=अतिशयरौद्रा' 'दुट्ठसावय' दुष्टश्वापदाः=हिंसक

क्षुभित हो रहा है। एव (भगफुट्टत) तरङ्गों के साथ सघट्टन से पृथक् हुई ऐसी (निट्ठकल्लोल) अनिष्टकल्लोलों-दारुण दुःखरूप महातरगों से (संकुल) सकुल बना हुआ ऐसा (जल) जन्म, जरा, मरणरूप जल इसमें भरा हुआ है। अर्थात् मोहरूप महा आवर्त्त मे जहां विषयोपभोग की वाञ्छा से इतस्ततः भ्रमण करते हुए जीव निमग्न हो रहे हैं। तथा पशु, पक्षी, नरक, नर, अमर, आदि ऊँची नीची योनियों में परिभ्रमण रूप तरगें इस में उठ रही हैं, और विविध दारुण आदि दुःखों से दुःखित हुए प्राणियो के रोदन-आक्रदन रूप वायु के आघातों से जहा दु:खरूप महा तरगें जन्म जरा मरण रूप जल को आलोडित कर रही हैं। (पमादबहुचडदुट्ठ सावय समाहयउद्धायमाणगपूरघोरविद्धसणत्थबहुल) तथा इस ससाररूप समुद्र मे (पमाद) मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, इन पाच प्रमादरूप (चड) भयकर (दुट्ठसावय) रौद्र

"वाकुलिय" ખળભળી રહ્યો છે અને "भगफुट्टत" તરગોની સાથે અથડાવાથી જુદી પડેલી "निट्ठकल्लोल" અનિષ્ટ કલ્લોલો-દારુણ દુખરૂપ મહાતરંગોથી "सकुल" વ્યાપ્ત એવું "जल" જન્મ, જરા, મરણ રૂપ જળ તેમા ભરેલુ છે એટલે કે મોહરૂપી મહાવમળમા વિષયભોગની ઇચ્છાથી આમ તેમ ભ્રમણ કરતા જીવો ત્યા ડૂબેલા છે તથા પશુ, પક્ષી નારકી, નર, દેવ આદિ ઊંચી નીચી યોનિયોમા પરિભ્રમણરૂપ તરગોમા તેમા ઉછળી રહ્યા છે, અને વિવિધ દારુણ દુખોથી પીડાતા જીવોના આક્રદ રૂપ પવનના આઘાતથી જ્યા દુખરૂપ મહાતરગો જન્મ, જરા મરણ રૂપ જળને ખળભળાવી રહેલ છે "पमाद-बहु-चड-दुट्ठसावयसमाहयउद्धायमाणगपूरघोर विद्धसणत्थबहुल" આ સસાર રૂપી સાગરમા "पमाद" મદ્ય, વિષય કષાય નિદ્રા અને વિકથા, એ પાચ પ્રમાદરૂપી "चड" ભયકર "दुट्ठसावय" રૌદ્ર દેખાવના હિંસક

जन्तवः, तैः 'समाहय' समाहता=आघातं प्राप्ताः ये जीवास्ते 'उद्धायमाणग पूरघोर', उद्धायमानाः=अतिशयेन विविधचेष्टाभिरुच्छलन्तः, समुद्रपक्षे मत्स्यादयः संसारपक्षे पुरुषादयः तेषां पूरः=समूहः तस्य ये 'घोरा'=दारुणाः 'विद्धंसणत्थ' विध्वंसनार्था=विनाशरूपा अनर्थास्ते बहुला यत्र स तथा तम्। 'अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थअनिहुतिंदियमहामगरतुरियचरियखोक्खुब्भमाणसतावनिच्चयचलंतचवलचवलअत्ताणसरणपुव्वकम्मसंचयोदिण्णवज्जवेदिज्जमाणदुहसयविवागघुणंतजलसमूह' अज्ञानभ्रमन्मत्स्यपरिग्रस्तानिभृतेन्द्रियमहामकरत्वरितचरितक्षोभ्यमाणसन्तापनित्यकचलच्चपलचञ्चलात्राणाशरणपूर्वकर्मसञ्चयोदीर्णवज्रवेद्यमानदुःखशतविपाकघूर्णज्जलसमूहम्, तत्र-'अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ' अज्ञानभ्रमन्मत्स्यपरिग्रस्तम् = अज्ञानान्येव भ्रमन्तो मत्स्याः=अज्ञानरूपमहामत्स्यास्तैः परिग्रस्तं=व्याप्तम्, तथा 'अनिहुतिंदियमहामगर' अनिभृतेन्द्रियमहामकराः=अनिभृतानि=अनुपशान्तानि यानि इन्द्रियाणि तान्येव महामकरास्तेषां यानि 'तुरियचरिय' त्वरितचरितानि =शीघ्रसञ्चरणानि तैः 'खोक्खुब्भमाण' चोक्षुभ्यमाणः = अतिशयेन व्याकुली

आकृतिवाले हिंसक जंतुओं द्वारा (समाहय) आघात को प्राप्त करते (उद्धायमाणग) विविधचेष्टाओं में उछलते हुए समुद्रपक्ष में मत्स्यादिक, संसारपक्ष में पुरुषादि के (पूर) समूह से जहां (घोर) भयंकर ऐसे (विद्धंसणत्थबहुल) विनाशरूप अनेक अनर्थ उत्पन्न होते रहते हैं (अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ-अनिहुतिंदियमहामगर-तुरिय-चरिय खोक्खुब्भमाण-संतावनिच्चय चलंत-चवल-चवल-अत्ताणासरणपुव्वकम्म संचयो दिण्णवज्ज वेदिज्जमाण-दुहसयविवाग-धुणंत-जलसमूह) तथा यहां संसार समुद्र (अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ) अज्ञानरूप घूमते हुए महामत्स्यों से व्याप्त हो रहा है और (अनिहुतिंदियमहामगर) अनुपशान्त इन्द्रियरूप महामकरों के (तुरियचरिय) शीघ्र संचरणों से

જંતુઓ દ્વારા "समाहय' આઘાત પામીને "उद्धायमाणग" વિવિધ રીતે ઉછળતા (સમુદ્રપક્ષે) મત્સ્યાદિક (સંસારપક્ષે) પુરુષાદિના 'पूर" સમૂહથી જ્યાં "घोर" ભયંકર એવા "विद्धसणत्थबहुल" વિનાશરૂપ અનેક અનર્થો ઉત્પન્ન કરતા રહે છે "अण्णाण-भमत-मच्छ परिहत्थ-अनिहुतिंदिय-महामगर तुरिय-चरिय-खोक्खुब्भमाण-संताव-निच्चय-चलंत-चवलचवल-अत्ताणासरणपुव्वकम्म-संचयो-दिण्णवज्ज-वेदिज्जमाण-दुहसय-विवाग-धुणतजलसमूह" તથા આ સંસાર સાગર "अण्णाणभमत-मच्छ-परिहत्थ" અજ્ઞાનરૂપ ઘૂમતા મહામત્સ્યોથી વ્યાપ્ત છે, અને "अनिहुतिंदिय महामगर" અનુપશાન્ત (ઉપશાન્ત ન થયેલી) ઈન્દ્રિયો રૂપ મહામગરોના "तुरियचरिय" ઝડપી હલનચલનથી

क्रियमाणो य सः ' तथा ' सतापणिच्चय ' सन्तापनित्यकः=सन्तापः=विविधाधि व्याधिवन्धुवियोगादि जातः सागरस्यवडवाग्निसन्तापरूपो दुःखसन्तापो नित्य यत्र स सन्तापनित्यकः, अतएव-' चलतचवलचचल ' चलच्चपलचञ्चल =अत्यन्तमस्थिरः, सततपरिवर्तनशीलमित्यर्थः तम् , तथा ' अत्ताणासरण ' अत्राणाऽशरणाना, अत्राणानामशरणाना ' पुव्वकम्मसचय ' पूर्वकर्मसञ्चयाना प्राणिना उदीर्णम् =उदयमान यत् ' वज्ज ' अवद्य=पाप तस्य यः ' वेदिज्जमाण ' वेद्यमानः=उपभुज्यमान' ' दुहसयविवाग ' दुःखशतरूपो विपाकः स एव घुर्णन्=भ्रमन् जल समूहो अत्र स तथा तम्, इड्ढिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिवद्धसत्तकड्ढिज्जमाणनिरयतलदुत्तसण्णविसण्णवहुल ' ऋद्धिरससातगौरवोपहारगृहीतकर्मप्रतिवद्धसत्त्वकृष्यमाणनिरयतलदुत्तसन्नविषण्णवहुलम् , तत्र ' इड्ढिरससायगारवोहार ' ऋद्धि रससातगौरवोपहारा =ऋद्धिरससातलक्षणानि गौरवाण्येव उपहारा'=जलचरविशेषास्तैः ' गहिय ' गृहीताः ' कम्मपडिवद्ध ' कर्मप्रतिवद्धा.=ज्ञानावर

(खोक्खुब्भमाण) यह अत्यत क्षुभित बना हुआ है। (सतावणिच्चय) विविध व्याधि, वन्धु वियोग आदि जन्य दु खरूप वडवाग्नि का इसमें नित्य सताप छाया हुआ है। और यह (चलतचवलचचल) निरन्तर परिवर्तन शील है। एव इस समुद्र मे (अत्ताणा सरण) त्राण एव शरण रहित ऐसे प्राणियों के जिनके पास (पुव्वकम्मसचय) पूर्वकृत कर्मो का सचय मौजूद है (उदिण्णवज्ज) उदय में आया हुआ जो पापकर्म का (वेदिज्जमाणदुहसयविवाग) उपभुज्यमान जो दु'खशत (सैकडोदु.ख) रूप फल है वह फल ही वहा (घुणतजलसमूह) चलना हुआ जल भरा हुआ है (इड्ढिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिवद्धसत्तकड्ढिज्जमाणनिरयतलदुत्तसण्णविसण्णवहुल) ऋद्धि रससातरूप गौरव ही इस ससार समुद्र में (उवहार) उपहार जलचर जन्तु विशेष भरे हुए है

"खोक्खुब्भमाण ' અત્યત ખળભળી ઉઠેલ છે, "सतावणिचय" વિવિધ આધિ વ્યાધિ, બધુ વિયોગ આદિ જન્ય દુ ખરૂપ વડવાનલને સતાપ તેમા નિત્ય વ્યાપેલો હોય છે, અને તે "चलतचवलचचल" નિરતર પરિવર્તન શીલ છે, અને આ સસારમા "अत्ताणासरण" ત્રાણુ અને શરણુ રહિત એવા જીવો છે કે જેમની પાસે "पुव्वकम्मसचय" પૂર્વે કરેલા કર્મોના સમૂહ રહેલો છે, "उदिण्णवज्ज" અને જે પાપકર્મોનો ઉદય થયો છે તે પાપકર્મોને "वेदिज्जमाण दुहसयविवाग" ભોગવવા રૂપ સેકડો દુખ "सैकडोदु ख" રૂપ જે ફળ છે, તે ફળ જ ત્યા "घुणतजलसमूह" વહેતા જળ સમાન છે "इड्ढिरससायगारवोहार-गहियकम्म-पडिवद्ध-सत्त कड्ढिज्जमाणनिर-यतलदुत्तसण्ण-विसण्ण ... સાત રૂપ ગૌરવ જ આ સસાર સાગરમા "उवहार"

णादिलक्षणैः कर्मभिर्बद्धाश्च ये 'सत्त' सत्त्वाः=प्राणिनस्तथा 'कड्ढिज्जमाण' कृष्यमाणाः=कृष्यकर्मबन्धनेन रज्जुबद्धकाष्टमिव नरकं प्रत्याकृष्यमानाः 'निरय तल' नरक एव तलं=पातालं 'हुत्त' तदभिमुखं 'सण्ण' सन्नाः=नरकरूपपा तालगमनाभिमुखत्वात् खिन्नाः तथा 'विसण्ण' विषण्णाश्च 'शोकातिशय प्राप्ताः ये प्राणिनस्ते बहुलो य स तथा तम्। तथा 'अरइरइभयविसायसोगमिच्छत्त सेलसकड' अरतिरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वशैलसङ्कट =तत्र-अरतिः = धर्मेऽरुचि रतिः=विषयेषु रुचिः भयं=इहलोकादि सप्तभयानि विषादः=अनिष्टसंयोग जनितदुःख शोकः=इष्टवियोगजनितदैन्य मिथ्यात्वं च कुदेवकुगुरुकुधर्मश्रद्धाल क्षणमित्येतान्येव शैलाः=पर्वतास्तैः सङ्कटः=विषमो यः स तथा तम्, अरत्यादि

और इन उपहारों से इसमें (गहियकम्मपडिबद्धसत्त) ज्ञानावरण आदि कर्मोसे बद्ध प्राणी गृहीत बने हुए हैं। तथा (कड्ढिज्जमाण) पूर्वकृत कर्मबंधन के द्वारा रज्जु बद्ध काष्ठ की तरह यहां वह प्राणिवर्ग नरक की ओर खेंचा जा रहा है और (निरयतलहुत्त) नरकतक की ओर गमन करने में सन्मुख होनेकी वजह से यहा वह प्राणीवर्ग (सण्ण विसण्णबहुल) सन्न-खिन्न, एव विषण्ण शोकातिशय को प्राप्त-हो रहा है। तथा (अरइरइभयविसायसोगमिच्छत्तसेलसकड) (अरइ) अरति धर्ममे अरुचि, (रइ) रति-विषयों मे रुचि, (भय) इहलोकभय, परलोक भय आदि सात भय, (विसाय) विषाद-अनिष्ट सयोग जनित दुःख, (सोग) शोक-इष्ट वियोग जनित दैन्यभाव, (मिच्छत्त) मिथ्यात्व-कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की श्रद्धा, ये ही सब इस ससारसमुद्र में (सेल) पर्वत जैसे है सो इन पर्वतोंसे यह (सकड) विषम बना हुआ है।

ઉપહાર જળચર જન્તુ વિશેષ ભરેલ છે અને તે ઉપહારોથી તેમા " गहियकम्म पडिबद्धसत्त ' જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મોથી બધાયેલ પ્રાણી સપડાયેલ છે તથા " कड्ढिज्जमाण " પૂર્વે કરેલા કર્મો દ્વારા, દોરડાથી બાધેલા કાષ્ઠની જેમ તે પ્રાણીઓ નરકની તરફ ખેચાઈ રહ્યા છે, અને "निरयलहुत्त" નરક તરફ ગમન કરવાને અભિમુખ હોવાને કારણે તે પ્રાણીઓ "सण्णविसण्णबहुल" ખિન્ન અને અતિશય શોક યુક્ત થઈ રહ્યા છે તથા " अरइ-रइभय-विसाय-सोगमिच्छत्त सेलसकड " " अरइ " અરતિ-ધર્મમા અરુચિ, " रइ " રતિ-વિષયોમા રતિ, "भय" આલોકનો ભય, પરલોકનો ભય આદિ સાત ભય, "विसाय" વિષાદ-અનિષ્ટ સયોગ જનિત દુખ " सोग " શોક-ઈષ્ટ વિયોગ જનિત દૈન્યભાવ, " मिच्छत्त " મિથ્યાત્વ કુગુરુ, કુદેવ અને કુધર્મની શ્રદ્ધા, એ બધુ આ સસારસાગરમા " सेल " પર્વત જેવુ છે, એ પર્વતોથી તે " सकड " વિષમ

दुःखैर्व्याप्तमित्यर्थः। तथा 'अणाइसंताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खिल्लदुद्दुत्तार' अनादि सन्तानबन्धनक्लेशचिक्खिल्लदुष्टृत्तारम् , तत्र-अनादिः=आदि रहितः सन्तानः= विस्तारो यस्य तत्तथाभूत यत् कर्मबन्धन तद्रूप एव 'किलेस' क्लेशः=दुःख तद्रूपमेव चिक्खिल्लं=कर्दमस्तेन दुष्टृत्तारः=दुस्तर यः स तथा तम् । तथा-'अमर नरतिरियनिरयगइगमणकुडिल्लपरियट्टविउलवेल' अमरनरतिर्यङ्नरकगतिगमन-कुटिलपरिवर्तविपुलवेल=तत्र- अमरनरतिर्यङ्नरकचतुर्गतिषु-यद् गमन तदेव कुटिला वक्रा परिवर्त्त'=गोलाकारा एव विपुला=विस्तीर्णा वेला=समुद्रजलवृद्धि-रूपा यत्र स तथा त, नरकादि चतुर्गतिचक्रभ्रमणपरम्पराभिः समुद्रजलवृद्धिरूपा-भिर्युक्तमित्याशय । तथा 'हिंसालियअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारंभकरणकरावणा-णुमोयण-अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिंडियगुरुभारक्कंतदुग्गजलोघदूरनिबोलिज्जमाणउम्मग्ग-निम्मग्गदुल्लहतल' हिंसाऽलीकादत्तादानमैथुनपरिग्रहारम्भकरणकारणानुमोदना-ष्टविधानिष्टकर्मपिण्डितगुरुभाराक्रान्तदुर्गजलोघदूरनिबोल्यमानोन्मार्गनिमग्नदुर्लभ-तलम् , तत्र-' हिंसालियअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारंभ ' हिंसाऽलीकाऽदत्तादान-

---

तथा (अणाइसंताणकम्मबंधण किलेसचिक्खिल्लदुद्दुत्तार) जिसका विस्तार आदि से रहित है ऐसे कर्मबंधन जन्य क्लेशरूप (चिक्खिल्ल) कीचड से यह (दुद्दुत्तार) दुस्तर बना हुआ है तथा (अमरनरतिरिय-निरयगइगमणकुडिलपरियट्टविउलवेल) देव, नर, तिर्यंच और नरक, इन चार गतियों मे जो जीवोका गमन है वही इस समुद्र को कुटिल गोलाकार विस्तर्ण वेला है, अर्थात् नरकादि चतुर्गतिरूप यह ससार है। इसमें जीवचक्र की तरह परिभ्रमण करते रहते हैं। यह परिभ्रमण की जो परपरा है वही इस समुद्र की जल वृद्धि रूप वेला है। (हिंसालिय अदत्तादान मेहुणपरिग्गहारंभकरणकरावणाणुमोयण) हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरम्भो का करना

બનેલ છે તથા "अणाइ-सतण-कम्मबंधण-किलेसचिक्खिल्ल-दुद्दुत्तार" અનાદિ કર્મબંધન જન્ય ક્લેશરૂપ "चिक्खिल्ल" કીચડથી તે "दुद्दुत्तार" દુસ્તર બનેલ છે, તથા "अमरनरतिरियगइगमणकुडिलपरियट्टविउलवेल" દેવ, નર, તિર્યંચ અને નરક, એ ચાર ગતિયોમા જીવોનુ જે ગમન થાય છે એ જ આ સસાર સમુદ્રની કુટિલ ગોળાકાર વિસ્તીર્ણ વેલા છે, એટલે કે નરકાદિ ચાર ગતિરૂપ આ સસાર છે તેમા ચક્રની જેમ જીવો પરિભ્રમણ કરે છે આ પરિભ્રમણની જે પરપરા છે તેજ આ સમુદ્રની જળ વૃદ્ધિરૂપ વેલા છે "हिंसालिय-अदत्तादान-मेहुणपरिग्गहारंभकरणकरावणाणुमोयण" હિંસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરંભો કરવા, અને તેની અનુમોદના

मैथुनपरिग्रहरूपा ये आरम्भाः=व्यापारास्तेषां यानि करणकारणानुमोदनानि=करण स्वय, कारण=अन्यैरनुष्ठापनम् , अनुमोदन च=कृतकारितादेः प्रशसन मित्येतैः प्रकारैः 'अट्ठविह' अष्टविध यत् 'अनिट्ठकम्मपिंडिय' अनिष्टकर्मपिण्डित=दुःखदकर्मसञ्चयः तदेवगुरुभारस्तेन 'अक्कत' आक्रान्ता ये जीवास्तेषा दुर्गाण्येव=दुःखान्येव यो 'जलोघ' जलौघ'=जलपूर तत्र दूर=अत्यर्थं 'निबोलिज्जमाण' निमोल्यमानाः=ब्रुड्यमानाः, 'उम्मग्गनिमग्ग' उन्मग्ननिमग्नाश्च=दुःखरूपजले उर्ध्वाऽधो गम्यमाना ये प्राणिनस्तैः 'दुल्लहतल' दुर्लभतल=दुर्लभ=दुष्प्राप्य तल यस्य स तथा त–हिंसाऽलीकादिपञ्चास्रवजनिताऽष्टविधकर्म भाराक्रान्तैः नानाविधदु खरूपागाधजले निमज्जनोन्मज्जन कुर्वद्भिर्जीवैर्दुष्पाराऽ

कराना अनुमोदन करना, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्ठविह अणिट्ठ कम्मपिंडिय) दुःखद आठ प्रकारके कर्मोंका सचय होता है, उस कर्म सचय रूप भार से (अक्कत) आक्रान्त–भारी घने हुए तथा (दुग्गजलोघ) दुःख रूप जलसमूह मे (दूरनिव्वोलिज्जमाण) अत्यन्त डूबते हुए तथा (उमग्गनिम्मग्ग) ऊन डूब करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नहीं कर सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल–थाह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरभो के करना, कराना, एव उनकी अनुमोदना मे लगे हुए हैं, क्यों कि इन पूर्वोक्त प्रकारों से वे जीव दु:खद अष्टविध कर्मो का सचय कर लेते हैं इस कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिंडिय" આઠ પ્રકારના, દુ ખદ કર્મોનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "अक्कत" આક્રાંત–ભારે બનેલ તથા दुग्गजलोघ" દુ ખરૂપ જળસમૂહમા दूरनिव्वोलिज्जमाण" અત્યત ડૂબતા, તથા "उम्मग्गनिमग्ग" પાણીમા ડૂબા ડૂબ કરતા–ઊચે નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "दुल्लहतल" અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના દુ ખદ કર્મોનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ઘણો ભારે બોજો હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ જાય છે, અને વિવિધ પ્રકારના

न्तस्तलमित्यर्थः तमेवभूत संसारसागर 'सरीरमणोमयाणि दुक्खाणि उप्पियता' शरीरमनोमयानि दुःखानि उत्पिबन्तः=कायिकानि मानसिकानि च विविधानि दुःखानि आस्वादयन्तः अनुभवन्त इत्यर्थः, 'सायासायपरितावणमय उब्बुड्डनिब्बुड्डयं करेता' साताऽसातपरितापनमयमुद्बुडननिबुडनक कुर्वन्त'=सुखदुःसतापातमकमुन्मज्जननिमज्जनमनुभवन्त सात=सुख तदात्मकमुन्मज्जनमसातपरितापन दुःखसन्तापस्तदात्मक निमज्जनमनुभवन्त 'चउरतमहत' चतुरन्तमहान्त =चतुरन्त=नरकादि चतुर्विभागयुक्त महान्तम् अनन्त जन्ममरणादिदुःखयुक्तत्वात्। तथा 'अणवयग्ग' अनवदग्र=अनन्तम्-अन्तरहितमित्यर्थ', 'रुद्द' रुद्र=सकल

हैं और नाना प्रकार के दुःखोंको भोगा करते हे. अतः यह दुःख समूह ही इस ससार समुद्र मे अथाह जल भरा हुआ है। उसमें ही ये जीव बहुत अधिक रूप मे डूबकिया लेते रहते हैं, उन्मग्न, निमग्न होते रहते हैं। फिर वे इसके अन्तस्तल को कैसे प्राप्त कर सकते हें? नहीं कर सकते। इसलिये सूत्रकार ने ऐसे जीवों के लिये इसका पार पाना थाह प्राप्त करना-दुःशक्य-असभव कहा है। (सरीरमणोमयाणी) इस ससार सागर में पडे हुए जीव शारीरिक एव मानसिक (दुक्खाणि) दुःखोंका ही (उप्पियता) अनुभव करते है। तथा (सायासायपरितावणमय) सातासात परितापन रूप (उब्बुडनिब्बुडय) उन्मज्जन निमज्जन अर्थात् सातात्मक उन्मज्जन तथा असातात्मक एव परितापात्मक निमज्जन (करेता) करने में तल्लीन हुए ये जीव (चाउरतमहंत) नरकादि गति रूप चार विभागों से युक्त तथा जन्म मरणादि के अनन्त दुःखों से महान्, (अणवयग्ग) अन्तरहित (रुद्द) समस्त प्राणियोको भयजनक,

દુખો ભોગવ્યા કરે છે તેથી આ સસારસાગરમા દુખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલુ છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડુબકીઓ ખાવા કરે છે તો પછી તેઓ તેના કિનારે તો પહોચી કેવી રીતે શકે? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનુ કાર્ય અશક્ય બતાવ્યુ છે "सरीरमणोमयाणि" આ સસાર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક "दुक्खाणि" દુખોનો જ "उप्पियता" અનુભવ કરે છે તથા "सायासायपरितावणमय" સાતાસાત પરિતાપન રૂપ "उब्बुडनिब्बुडय" ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવુ તે) તથા અસાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવુ તે) "करेता" કરવામા લીન થયેલ તે જીવો "चाउरतमहत" નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુખોથી મહાન, "अणवयग्ग" અન્તરહિત, "रुद्द" બધા પ્રાણીઓને

मैथुनपरिग्रहरूपा ये आरम्भाः=व्यापारास्तेषां यानि करणकारणानुमोदनानि=करणं स्वयं, कारणं=अन्यैरनुष्ठापनम् , अनुमोदनं च=कृतकारितादेः प्रशंसनमित्येतैः प्रकारैः ' अट्ठविह ' अष्टविधं यत् ' अनिट्ठकम्मपिंडिय ' अनिष्टकर्मपिण्डितं=दुःखदकर्मसञ्चयः तदेव गुरुभारस्तेन ' अक्कंत ' अक्रान्ता ये जीवास्तेषां दुर्गाण्येव=दुःखान्येव यो ' जलोघ ' जलौघः=जलपूरः तत्र दूरं=अत्यर्थं ' निब्बोलिज्जमाण ' निर्बोल्यमानाः=ब्रुड्यमानाः, ' उम्मग्गनिमग्ग ' उन्मग्ननिमग्नाश्च=दुःखरूपजले उर्ध्वाऽधो गम्यमाना ये प्राणिनस्तैः ' दुल्लहतलं ' दुर्लभतलं=दुर्लभं=दुष्प्राप्यं तलं यस्य स तथा तं–हिंसाऽलीकादिपञ्चास्रवजनिताऽष्टविधकर्मभाराक्रान्तैः नानाविधदुःखरूपागाधजले निमज्जनोन्मज्जनं कुर्वद्भिर्जीवैर्दुष्पाराऽ

कराना अनुमोदन करना, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्ठविह अणिट्ठ कम्मपिंडिय) दुःखद आठ प्रकारके कर्मोंका सचय होता है, उस कर्म सचय रूप भार से (अक्कंत) आक्रान्त–भारी घने हुए तथा (दुग्गजलोघ) दुःख रूप जलसमूह में (दूरनिब्बोलिज्जमाण) अत्यन्त डूबते हुए तथा (उमग्गनिम्मग्ग) ऊपर डूब करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नहीं कर सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल–थाह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरभो के करना, कराना, एव उनकी अनुमोदना मे लगे हुए हैं, क्यों कि इन पूर्वोक्त प्रकारों से वे जीव दुःखद अष्टविध कर्मो का सचय कर लेते हैं इस कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે ' अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिंडिय " આઠ પ્રકારના, દુખદ કર્મોનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી " अक्कंत" આક્રાંત–ભારે બનેલ તથા दुग्गजलोघ " દુખરૂપ જળસમૂહમા दूरनिब्बोलिज्जमाण " અત્યત ડૂબતા, તથા " उम्मग्गनिमग्ग " પાણીમા ડૂબા ડૂબ કરતા–ઊચે નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર " दुल्लहतल " અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોકત પ્રકારના જીવો તરી શકતા નથી એટલે કે હિસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોકત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના દુખદ કર્મોનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ઘણો ભારે બોજો હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ જાય છે, અને વિવિધ પ્રકારના

न्तस्तलमित्यर्थः तमेवभूत ससारसागर 'सरीरमणोमयाणि दुक्खाणि उप्पियता' शरीरमनोमयानि दुःखानि उत्पिबन्तः=कायिकानि मानसिकानि च विविधानि दुःखानि आस्वादयन्तः अनुभवन्त इत्यर्थः, 'सायासायपरितावणमय उब्बुड्डनिब्बुड्डयं करेता' साताऽसातपरितापनमयमुद्बुडननिब्बुडनक कुर्वन्त'=सुखदु'ख तापात्मकमुन्मज्जननिमज्जनमनुभवन्त सात=सुख तदात्मकमुन्मज्जनमसातपरितापन दुःखसन्तापस्तदात्मक निमज्जनमनुभवन्त 'चउरतमहत' चतुरन्तमहान्त =चतुरन्त=नरकादि चतुर्विभागयुक्त महान्तम् अनन्त जन्ममरणादिदुःखयुक्तत्वात्। तथा 'अणवयग्ग' अनवदग्र=अनन्तम्–अन्तरहितमित्यर्थ', 'रुद्द' रुद्र=सकल

हैं और नाना प्रकार के दुःखोंको भोगा करते है. अतः यह दुःख समूह ही इस ससार समुद्र में अथाह जल भरा हुआ है। उसमें ही ये जीव बहुत अधिक रूप में डूबकिया लेते रहते हैं, उन्मग्न, निमग्न होते रहते हैं। फिर वे इसके अन्तस्तल को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? नही कर सकते। इसलिये सूत्रकार ने ऐसे जीवों के लिये इसका पार पाना थाह प्राप्त करना–दु'शक्य–असभव कहा है। (सरीरमणोमयाणी) इस ससार सागर में पडे हुऐ जीव शारीरिक एव मानसिक (दुक्खाणि) दुःखोंका ही (उप्पियता) अनुभव करते है। तथा (सायासायपरितावणमय) सातासात परितापन रूप (उब्बुडनिब्बुडय) उन्मज्जन निमज्जन अर्थात् सातात्मक उन्मज्जन तथा असातात्मक एव परितापात्मक निमज्जन (करेता) करने में तल्लीन हुए ये जीव (चाउरतमहत) नरकादि गति रूप चार विभागों से युक्त तथा जन्म मरणादि के अनन्त दुःखों से महान्, (अणवयग्ग) अन्तरहित (रुद्द) समस्त प्राणियोको भयजनक,

દુખો ભોગવ્યા કરે છે તેથી આ સસારસાગરમા દુખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલુ છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડુબકીઓ ખાધા કરે છે તો પછી તેઓ તેના કિનારે તો પહોચી કેવી રીતે શકે? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનુ કાર્ય અશક્ય બતાવ્યુ છે "सरीरमणोमयाणि" આ સસાર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક "दुक्खाणि" દુખોનો જ "उप्पियता" અનુભવ કરે છે તથા "सायासायपरितावणमय" સાતાસાત પરિતાપન રૂપ "उब्बुडनिब्बुडय" ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવુ તે) તથા અસાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવુ તે) "करेता" કરવામા લીન થયેલ તે જીવો "चाउरतमहत" નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુખોથી મહાન, "अणवयग्ग" અન્તરહિત, "रुद्द" બધા પ્રાણીઓને

मैथुनपरिग्रहरूपा ये आरम्भाः=व्यापारास्तेषां यानि करणकारणानुमोदनानि=करणं स्वयं, कारणं=अन्यैरनुष्ठापनम्, अनुमोदनं च=कृतकारितादेः प्रशंसनमित्येतैः प्रकारैः 'अट्ठविह' अष्टविधं यत् 'अनिट्ठकम्मपिंडिय' अनिष्टकर्मपिण्डित=दुःखदकर्मसञ्चयः तदेवगुरुभारस्तेन 'अक्कंत' अक्रान्ता ये जीवास्तेषां दुःखान्येव=दुःखान्येव यो 'जलोघ' जलौघः=जलपूरः तत्र दूर=अत्यर्थं 'निव्वोलिज्जमाण' निवोल्यमाना=त्रुट्यमानाः, 'उम्मग्गनिमग्ग' उन्मग्ननिमग्नाश्च=दुःखरूपजले उर्ध्वाऽधो गम्यमाना ये प्राणिनस्तैः 'दुल्लहतल' दुर्लभतलं=दुर्लभ=दुष्प्राप्य तल यस्य स तथा त-हिंसाऽलीकादिपञ्चास्रवजनिताऽष्टविधकर्मभाराक्रान्तैः नानाविधदुःखरूपागाधजले निमज्जनोन्मज्जनं कुर्वद्भिर्जीवैर्दुष्पाराऽ

कराना अनुमोदन करना, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्ठविह अणिट्ठकम्मपिंडिय) दुःखद आठ प्रकारके कर्मोका सचय होता है, उस कर्म सचय रूप भार से (अक्कंत) आक्रान्त-भारी बने हुए तथा (दुग्गजलोघ) दुःख रूप जलसमूह मे (दूरनिव्वोलिज्जमाण) अत्यन्त डूबते हुए तथा (उमग्गनिम्मग्ग) ऊन डून करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नही कर सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल-थाह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरभो के करना, कराना, एव उनकी अनुमोदना मे लगे हुए हैं, क्यों कि इन पूर्वोक्त प्रकारों से वे जीव दुःखद अष्टविध कर्मो का सचय कर लेते हैं इस कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिंडिय " આઠ પ્રકારના, દુ ખદ કર્મોનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "अक्कंत" આક્રાંત-ભારે બનેલ તથા दुग्गजलोघ " દુ ખરૂપ જળસમૂહમા दूरनिव्वोलिज्जमाण " અત્યત ડૂબતા, તથા "उम्मग्गनिमग्ग" પાણીમા ડૂબા ડૂબ કરતા-ઊચે નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "दुल्लहतल" અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના દુ ખદ કર્મોનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ઘણો ભારે બોજો હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ જાય છે, અને વિવિધ પ્રકારના

न्तस्तलमित्यर्थ. तमेवंभूत संसारसागर 'सरीरमणोमयाणि दुक्खाणि उप्पियता' शरीरमनोमयानि दुःखानि उत्पिबन्तः=कायिकानि मानसिकानि च विविधानि दुःखानि आस्वादयन्तः अनुभवन्त इत्यर्थः, 'सायासायपरितावणमय उब्बुड्डुनिबुड्डयं करेता' साताऽसातपरितापनमयमुद्बुडननिब्रुडनक कुर्वन्त'=सुखदुःख-तापात्मकमुन्मज्जननिमज्जनमनुभवन्त सात=सुख तदात्मकमुन्मज्जनमसातपरि-तापन दुःखसन्तापस्तदात्मक निमज्जनमनुभवन्त 'चउरतमहत' चतुरन्तमहान्त =चतुरन्त=नरकादि चतुर्विभागयुक्त महान्तम् अनन्त जन्ममरणादिदुःखयुक्तत्वात्। तथा 'अणवयग्ग' अनवदग्र=अनन्तम्-अन्तरहितमित्यर्थ', 'रुद्द' रुद्र=सकल

हैं और नाना प्रकार के दुःखोंको भोगा करते हे. अतः यह दुःख समूह ही इस ससार समुद्र में अथाह जल भरा हुआ है। उसमें ही ये जीव बहुत अधिक रूप में डुबकिया लेते रहते हैं, उन्मग्न, निमग्न होते रहते हैं। फिर वे इसके अन्तस्तल को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? नहीं कर सकते। इसलिये सूत्रकार ने ऐसे जीवों के लिये इसका पार पाना थाह प्राप्त करना-दुःशक्य-असभव कहा है। (सरीरमणोमयाणी) इस ससार सागर में पडे हुऐ जीव शारीरिक एव मानसिक (दुक्खाणि) दुःखोंका ही (उप्पियता) अनुभव करते हैं। तथा (सायासायपरितावण-मय) सातासात परितापन रूप (उब्बुडनिब्बुडय) उन्मज्जन निमज्जन अर्थात् सातात्मक उन्मज्जन तथा असातात्मक एव परितापात्मक निम-ज्जन (करेता) करने में तल्लीन हुए ये जीव (चाउरतमहत) नरकादि गति रूप चार विभागों से युक्त तथा जन्म मरणादि के अनन्त दुःखों से महान्, (अणवयग्ग) अन्तरहित (रुद्द) समस्त प्राणियोको भयजनक,

દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે તેથી આ સંસારસાગરમા દુઃખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલુ છે તેમા જ તે જીવો વારંવાર ડુબકીઓ ખાધા કરે છે તો પછી તેઓ તેના કિનારે તો પહોચી કેવી રીતે શકે? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનુ કાર્ય અશક્ય બતાવ્યુ છે "सरीरमणोमयाणि" આ સંસાર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક "दुक्खाणि" દુઃખોનો જ "उप्पियता" અનુભવ કરે છે તથા "सायासायपरितावणमय" સાતાસાત પરિતાપન રૂપ "उब्बुडनिब्बुडय" ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવુ તે) તથા અસાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવુ તે) "करेता" કરવામા લીન થયેલ તે જીવો "चाउरतमहत" નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુઃખોથી મહાન, "अणवयग्ग" અન્તરહિત, "रुद्द" બધા પ્રાણીઓને

प्राणिभयजनक, 'ससारसागर' ससारसागर, वसन्तीत्यग्रेण सम्बन्धः कीदृशं संसारसागरमित्याह–'अट्ठिय अणालंबणपइट्ठाण' अस्थितानालम्बनप्रतिष्ठानम् =अस्थितानाम्=सयमानुष्ठानरहितानां न विद्यते आलम्बनम्=आश्रयः प्रतिष्ठानं= रक्षाकरणं यत्र स तथा तं असंयमिनामाधारवर्जितं त्राणवर्जितं चेत्यर्थः, तथा 'अप्पमेयं' अप्रमेयम्=असर्वज्ञेनाऽपरिच्छेद्य 'चुलसीयजोणिसयसहस्सगुविलं' चतुरशीतियोनिशतसहस्रगुपिलं=चतुरशीतिलक्षयोनिव्याप्त योनिनाम सख्यातत्वेऽपि समवर्णगन्धरसस्पर्शानामेकत्वविवक्षणादुक्तसंख्यामागमस्य सो'य तत्र गाथा यथा–

ऐसे (ससारसायर) ससार सागर में (वसंति) बसते हैं, ऐसा सम्बन्ध कर लेना चाहिये। किस प्रकार के ससारसागर में बसते हैं सो कहते हैं–(अट्ठि य अणालंबणपइट्ठाण) असंयमी जीवों के आलम्बन एव रक्षा करने के साधनसे रहित (अप्पमेय) कोल्हूका बैल चारों तरफ फिरनेसे पार नहीं पाता वैसे ही चतुर्गतिमें जन्ममरणसे पार नहीं पानेसे अप्रमेय, (चुलसीइजोणिसयसहस्सगुविल) चौरासीलक्ष जीव योनीयों से युक्त, (अणालोग) प्रकाशवर्जित, एव (अधयार) अधकार से युक्त इस ससार मे (अणतकाल जाव) अनतकाल तक (णिच्च) सदा (उत्तत्थ सुण्णभय सण्णसपउत्ता) भयभीत बने हुए तथा किंकर्तव्यता से विमूढ हुए भय से एव सज्ञा–आहार, परिग्रह एव मैथुन सज्ञाओं से सम्बद्ध बने हुए जीव (उव्विग्गवासवसहिं) उद्विग्नों के वासस्वरूप इस ससार में (वसंति) बसते है। जो अदत्तग्राही जीव हैं वे चतुर्गतिरूप तथा अनत दुःखो से युक्त इस ससारसागर में अनत काल तक परिभ्रमण करते रहते हैं। चौरासी लाख योनिया इस प्रकार से है—

માટે ભયજનક, એવા "ससारसायर" સસાર સાગરમા "वसति" વાસ કરે છે તેઓ કેવા પ્રકારના સસાર સાગરમા વસે છે? "अट्ठिय अणालवण–पइट्ठाण" અસયમી જીવોને આધાર આપવાનો તથા તેમનુ રક્ષણ કરવાના સાધનોથી રહિત, "अप्पमेय" અસર્વજ્ઞની અપેક્ષાએ અપ્રમેય, "चुलसीइ–जोणिसयसहस्सगुविल" ચોર્યાશી લાખ જીવ યોનિયોથી યુક્ત, "अणालोग" પ્રકાશ રહિત, અને "अधयार" અધકારથી યુક્ત આ સસારમા "अणतकाल जाव" અનન્ત કાળ સુધી "णिच्च" સદા "उत्तत्थसुण्णभयसण्णसपउत्ता" ભયભીત બનેલ, તથા કિંકર્તવ્યતાથી વિમૂઢ બનેલ, ભય સજ્ઞા, આહાર સજ્ઞા, મૈથુન સજ્ઞા, અને પરિગ્રહ સજ્ઞાઓથી યુક્ત બનેલ જીવો उव्विग्गवासवसहिं" ઉદ્વિગ્નોના–(દુ ખીયારાના) વાસ જેવા આ સસારમા "वसति" વસે છે અદત્તાદાન લેનાર જીવો ચાર ગતિરૂપ તથા અનત દુ ખોથી યુક્ત આ સસાર સાગરમા અનત કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ચોર્યાશી લાખ યોનિયો આ ' ~ છે

" पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७, एक्केक्क सत्तजोणि लक्खाओ।
वणपत्तेय अणते, दसचोदस जोणिलक्खाओ ॥ १ ॥
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु।
तिरिएसु हुंति चउरो, चोद्दसलक्खा य मणुएसु" ॥ २ ॥

तथा ' अणालोग ' अनालोक=प्रकाशवर्जितम् अन्धकारम्=अन्धकारयुक्तमेव-संसारसागरम् ' अणतकाल जाव ' अनन्तकाल यावत् ' णिच्च ' नित्य=सदा ' उत्तत्थसुण्णभयसण्णसपउत्ता ' उत्त्रस्तशून्यभयसंज्ञासप्रयुक्ताः=तत्र उत्त्रस्ताः=भयभीताः शून्याः=किं कर्तव्यविमूढाः, तथा भयसंज्ञासम्प्रयुक्ताः=भयेन संज्ञाभिश्च=आहारमैथुनपरिग्रहादिभिः सम्प्रयुक्ताः=सम्बद्धाः ' उव्विग्गवासवसहिं ' उद्विग्नवासवसतिं=उद्विग्नाना वासो यत्र स तथा त संसार वसन्ति, अदत्तादायिनः चतुर्गतिलक्षणमनन्तदुःख संसारसागरमनन्तकाल भ्रमन्तीत्यर्थः, इह वसेर्निरुपसर्गस्यापि सकर्मकत्वमार्षत्वात् ॥ सू० १९ ॥

"पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७ एक्केक्क सत्तजोणिलक्खाओ।
वणपत्ते य अणते, दस चोद्दस जोणि लक्खाओ ॥१॥
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु।
तिरिएसु हुंति चउरो, चोद्दस लक्खाय मणुएसु ॥२॥" इति।

(१) पृथिवीकाय, (२) अप्काय, (३) तेजःकाय, (४) वायुकाय (५) इनकी सात सात लाख, प्रत्येक वनस्पति दश लाख, अनन्त (साधारण) वनस्पति चौदह लाख, दो इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चौ इन्द्रिय इनकी दो दो २-२ लाख, नारकी तथा देव इनकी चार चार ४-४ लाख तथा तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय की चार ४ लाख और मनुष्य की चौदह १४ लाख। इस प्रकार ये सब मिल कर चोरासी ८४ लाख योनीया होती हैं ॥सू. १९॥

" पुढवि ७ दग ७ अगणि ७ मारुय ७ एक्केक्क सत्तजोणि लक्खाओ।
वणपत्ते य अणते, दस चोद्दस जोणि लक्खाओ ॥ १ ॥
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु।
तिरिएसु हुंति चउरो, चोद्दस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ इति।

(१) પૃથિવીકાય (૨) અપ્કાય (૩) તેજ કાય (૪) વાયુકાય, એ દરેકની સાત સાત લાખ, પ્રત્યેક વનસ્પતિની દસ લાખ અનન્ત (સાધારણ) વનસ્પતિની ચૌદ લાખ બે ઇન્દ્રિની બે લાખ, ત્રીન્દ્રિની બે લાખ, ચતુરિન્દ્રિની બે લાખ, નારકી તથા દેવની ચાર ચાર લાખ તથા તિર્યંચ પંચેન્દ્રિની ચાર લાખ, અને મનુષ્યની ચૌદ લાખ એ પ્રમાણે બધી મળીને ચોર્યાશી લાખ યોનિયો થાય છે ॥સૂ૦ ૧૯॥

पुनरप्यदत्तादायिनः कीदृशाः सन्तः किं फलं प्राप्नुवन्तीत्याह-'जहिं' इत्यादि

मूलम्—जहिं जहिं आउयं निबंधंति पावकम्मकारी बंधवजणसयणमित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंति अणादेज्जा दुव्विणीया कुट्ठाणासण कुसेज्जा कुभोयणा असुइणो कुसंघयणकुप्पमाणा कुसंठिया कुरूवा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा धम्मसण्णसम्मत्तपब्भट्ठा दारिद्दोवद्दवाभिभूया निच्चं परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किविणा परपिंडतक्कगा दुक्खलद्धाहारा अरसविरसतुच्छकयकुच्छिपूरापरस्सपेच्छंता रिद्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहिं निंदता अप्पयंकयं तच्च परिवयता। इह य पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं विमणसो सोएण डज्झमाणा परिभूया हुंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचियत्ता निच्चं नीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोहमणोरहा निरासबहुला आसापासपडिबद्धपाणा अत्थोप्पायण कामसोक्खे य लोयसारे हुंति अफलवतगा य सुट्ठुअवि उज्जमंता तद्दिवसुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसंठवियसित्थपिंडसंचयपराखीणदव्वसारा णिच्चं धणधण्णकोसपरिभोगविवज्जिया रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा परसिरि भोगोवभोगनिस्साणमग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणियंति दुक्खं, णेवसुहं णेवणिव्वुइं उवलभंति अच्चतविउल दुक्खसयसंपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया ॥सू० २०॥

टीका—' पावकम्मकारी ' पापकर्मकारिणस्तेऽदत्तादायिन ' जहिं-जहिं आउय निवधति ' यत्र यत्र आयुर्निबध्नन्ति=यत्र यत्र ग्रामकुलादौ आयुर्निबध्नन्ति तत्र तत्र समुत्पद्यन्ते इत्यर्थः । तत्र कीदृशा भवन्ती ? त्याह-' वधवजणसयणमित्त-परिवज्जिया ' बान्धवस्वजनमित्रपरिवर्जिवा' = तत्र बान्धवजनैः=भ्रात्रादिभिः, स्वजनै =पुत्रादिभिः, स्नेहिजनरूपमित्रैश्च परिवर्जिताः=रहितास्त्यक्ता वा भवन्ति, पुनः ' अणिट्ठा ' अनिष्टाः=सकललोकस्याऽप्रियाः, तथा ' अणादेज्जा ' अनादेयाः =अनादेयवचननामगोत्रादिमन्त । तथा ' दुव्विणीया ' दुर्विनीताः = उद्धताः ' कुट्ठाणासणकुसेज्जा ' कुस्थानासनकुशय्याः=कुत्सित स्थान=कुग्रामवासादिरूप-

ये अदत्तग्राही और भी क्या फल प्राप्त करते है ? इसी विषय को सूत्रकार पुनः स्पष्ट करते हैं—' जहिं जहिं ' इत्यादि० ।

टीकार्थ-(पावकम्मकारी) अदत्तादानरूप पाप कर्मकारी मनुष्य (जहिं२-आउय निबधति) जिस२ पर्याय की आयु बाधते हैं वे उस२ पर्याय में उत्पन्न होते है वहा पर उनकी स्थिति कैसी होती है ? सूत्रकार इसी बातको आगे के पदों द्वारा प्रकट करते है, वे कहते हैं कि (बधवजण-सयणमित्तपरिवज्जिया) वे वहा भ्रातृ आदी बाधवजनों से, पुत्र आदि रूप स्वजनों से एव स्नेहीजन रूप मित्रों से सदा परिवर्जित होते हैं। (अणिट्ठा) कोइ भी लोग इनसे प्रीति नही करते हैं, तथा (अणादेज्जा) ये ऐसे गोत्रादि वाले होते हैं, की जिनका वचन कोइ नहीं मानते हैं यहा तक कि जिनका नाम लेना भी भले मनुष्य अच्छा नही समझते हैं। (दुव्विणीया) दुर्विनीत-उद्धत होते है। (कुट्ठाणासणकुसेज्जा)

તે અદત્તગ્રાહી બીજુ કયુ ફળ પ્રાપ્ત કરે છે, તે વિષયનુ સૂત્રકાર હજી પણ વધારે સ્પષ્ટીકરણ કરે છે–" जहिं जहिं " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"पावकम्मकारी" અદત્તાદાનરૂપ પાપકર્મ કરનાર મનુષ્ય ' जहिं२ आउय-निबधति " જે જે પર્યાયની આયુ બાધે છે તે તે પર્યાયમા ઉત્પન્ન થાય છે ત્યા તેમની કેવી હાલત થાય છે ? સૂત્રકાર એ જ વાતને હવેના પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ કહે છે કે— " बधवजणसयणमित्तपरिवज्जिया " તે લોકો ત્યા ભાઈ આદિ બન્ધુજનોથી, પુત્ર આદિ સ્વજનોથી, અને સ્નેહીજનરૂપ મિત્રોથી સદા ત્યજાયેલા રહે છે, " अणिट्ठा " કોઈ પણ લોકો તેમના પ્રત્યે પ્રીતિ ધરાવતા નથી, તથા " अणादेज्जा " તેઓ એવા ગોત્રાદિ વાળા હોય છે કે તેમની વાત કોઇ માનતું નથી, એટલુ જ નહી પણ તેમનુ નામ લેવુ તે પણ સારા માણસોને યોગ્ય લાગતુ નથી " दुव्विणीया " દુર્વિનીત-ઉદ્ધત હોય છે, " कुट्ठाणासणकुसेज्जा " કુગ્રામોમા તેમનુ રહેઠાણ હોય છે, અને તેમની રહેણી

मासन=नीचावस्थानादिलक्षण तथा कुत्सिता शय्या विपमभूम्यादिरूपा येषां ते तथा, 'कुभोयणा' कुभोजना कोद्रवादिकदन्नाशिनः 'असुइणो' अशुचयः= शुचिवर्जिताः, 'कुसघयणकुप्पमाणा' कुसहनन कुप्रमाणाः=कुसहननाः=सेवार्तादि सहननयुक्ताः कुममाणाः=कुत्सित शरीरस्य ममाण येषा ते तथा अतिदीर्घा अति ह्रस्वावेत्यर्थ, तथा 'कुसठिया' कुसस्थिताः=कुत्सिता हुण्डादि सस्थानयुक्ता 'कुरूवा' 'कुरूपाः 'बहुकोहमाणमायालोभा' बहुक्रोधमानमायालोभाः अति क्रोधादियुक्ता बहुमोहाः=अतिकामाः 'धम्मसण्णासम्मत्तपब्भट्ठा' धर्मसज्ञास म्यक्त्वपरिभ्रष्टाः=धर्मसज्ञायाः=श्रुतचरित्ररूपधर्मबुद्धेः सम्यक्त्वाच्च=जिनवच नरुचेः परिभ्रष्टाः=स्खलिता 'दारिद्दोवद्दवाभिभूया' दारिद्र्योपद्रवाभिभूताः= अत्यन्तदरिद्राः, अतएव 'णिच्च' नित्य=सदा 'परकम्मकारिणे = परगृहे

कुग्रामों में इनका वास होता है, अवस्थान=रहन सहन इनकी नीच होती है, विपमभूमि आदि रूप इनकी शय्या होती है। (कुभोयणा) को द्रव आदि कदन्न (कुत्सितअन्न) इनका भोजन होता है। (असुइणो) शुचिता-शारिरिक एव आत्मिक पवित्रता इनमें होती नहीं हैं ये लोग पवित्रतासे सदा रहित रहते हैं। (कुसघयणकुप्पमाणा) इनका सहनन खराब होता है और शरीर इनका अतिदीर्घ या अति ह्रस्व होता है। (कुसठिया) सस्थान इनका हुण्डादि होता है। (कुरूवा) रूप भी इनका असुहावना होता है। (बहुकोहमाणमायालोभा) बहुत ये क्रोधी होते है। मान, माया एव लोभ की इनमे बहुत अधिकता रहती है। (बहुमोहा) ये बहुत कामी होते है। (धम्मसण्णासम्मत्तपब्भट्ठा) श्रुतचारित्र रूप धर्मबुद्धि से एव जिन वचनों में श्रद्धारूप सम्यत्क्व रुचि से ये सदा रहित होते हैं। (दारिद्दो वद्दवाभिभूया) दादिद्रय इनके घरों में सदा

કરણી નીચ હોય છે, વિષમ ભૂમિ આદિ જગ્યા તેમની શય્યા બને છે "कुभोयणा" કોદરા આદિ કદન્ન (ખરાબ અન્ન) તેમનુ ભોજન બને છે "असुइणो" તેમનામા શારીરિક અને માનસિક પવિત્રતા હોતી નથી, તે લોકો હમેશા તેનાથી રહિત હોય છે "कुसघयण कुप्पमाणा" તેમનુ સહનન ખરાબ હોય છે, એટલે કે તેમના શરીર કાતો અતિશય ઊચા અને કાતો અતિશય નીચા હોય છે "कुसठिया" તેમના અગો અપ્રમાણસરના હોય છે, "कुरूवा" તેમનુ રૂપ પણ સુદર હોતુ નથી "बहुकोहमोणमाया लोभा" તેઓ ઘણા ક્રોધી હોય છે, અને માન, માયા અને લોભનુ પ્રમાણ તેમનામા વધારે હોય છે "बहुमोहा" તે ઘણા કામી હોયછે "धम्मसण्णासम्मत्तपब्भट्ठा" શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મબુદ્ધિથી તથા જિન વચનોમા શ્રદ્ધારૂપ સમ્યકત્વ રુચિથી તે લોકો સદા રહિત હોયછે 'दारिद्दोवद्दवाभिभूया' તેમના ઘરોમા સદા દારિદ્રય રહેછે અને તે દરિદ્રય

नीचकर्मकारकाः ' जीवणत्थरहिया ' जीवनार्थरहिता =जीवनस्य=मनुष्यजन्मन अर्थः = प्रयोजन धर्मध्यानादि समाचरण तद्रहिताः, जीवनयापनहेतुद्रव्यहीना वा, ' किविणा ' कृपणा'=दीनाः ' परपिंडतक्कगा ' परपिण्डतर्कका =परदत्तभोजनगवेषकाः ' दुक्खलद्धारा' दुःखलब्धाहाराः=दुःखादुदरपूरकाः ' अरसविरसतुच्छकयकुक्खिपूरा ' अरसविरसतुच्छकृतकुक्षिपूरा = तत्र अरस=नीरस-हिङ्ग्वादिभिरसस्कृत विरस=पुराण तत्रापि तुच्छ=कुलत्थाद्यन्न येन केनापि प्रकारेण प्राप्त तेन कृतः कुक्षिपूरः=उदरपूरण यैस्ते तथा ' परस्स' परस्य=अन्यस्य ' रिद्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहिं ' ऋद्धिसत्कारभोजनविशेषसमुदयविधि=तत्र ऋद्धिः= सम्पत्तिः सत्कारः=सम्मान तथा भोजन चेत्येतेषा ये विशेषाः प्रकाराः तेषा यः समुदयः उदयवर्तित्व तस्य यो विधिः=विधान स तथा त 'पेच्छता' प्रेक्षमाणाः=

रहता है ओर यह दारिद्र्य इनका सदा तिरस्कार करवाया करता है, इसी लिये ये (णिच्च) सर्वदा (परकम्मकारिणो) पर कर्मकारी होते हैं-दूसरोंके घरोंमें नीच कामों को करने वाले होते हैं, (जीवणत्थरहिया) मनुष्य जन्म के प्रयोजनभूत धर्मध्यानादि सदाचारों से रहित होते हैं, (किविणा) दीन होते है, (परपिंडतक्कगा) परपिंड के ऊपर आश्रित रहा करते हैं परदत्त भोजन की इच्छा में रहते हैं, (दुक्खलद्धाहारा) वडी मुश्किल से अपने उदर की पूर्ति कर पाते है, (अरसविरसतुच्छकयकुक्खिपूरा) अरस-हिंग्वादि के वघार से रहित, विरस-पुराना-अति पुराना, उसमे भी तुच्छ-कुलत्थादि अन्न जो इन्हे वडी कठिनाईसे प्राप्त होता है उससे ही ये अपने उदर की पूर्त्ति करते हैं। (परस्स-रिद्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहिं पेच्छता) दूसरोंकी ऋद्धि-

તેમનો સદા તિરસ્કાર કરાવે છે, તેથી તેઓ "णिच्च" સદા " परकम्मकारिणो " પારકાની નોકરી કરનાર હોય છે, બીજાના ઘરોમા નીચ કામ કરનારા હોય છે, " जीवणत्थरहिया " મનુષ્ય જન્મના પ્રયોજન રૂપ ધર્મધ્યાન આદિ સદાચારોથી રહિત હોય છે, " किविणा " દીન હોય છે, " परपिंडतक्कगा " પરપિંડ ઉપર સદા આધાર રાખનાર હોય છે-પરદત્ત ભોજનની ઇચ્છા રાખનાર હોય છે, ,, दुक्खलद्धाहारा " મહા મુશ્કેલીથી પોતાનુ પેટ ભરી શકે છે " अरसविरसतुच्छकयकुक्खिपूरा " અરસ-હિંગ આદિના વઘાર રહિત, વિરસ-પુરાણુ-અતિપુરાણુ અને વળી તુચ્છ-કળથી આદિ અન્ન, કે જે તેને ઘણી મુશ્કેલીએ મળે છે, તેના વડે જ તેઓ પોતાનુ પેટ ભરે છે " परस्स रिद्धिसक्कार-भोयणविसेससमुदयविहिं पेच्छता " બીજાની ઋદ્ધિ — સંપત્તિ, સત્કાર

ईर्ष्याबुद्ध्यापश्यन्तः, ततश्च 'अप्पय' आत्मान 'कयतं' कृतान्त=कर्तव्य च 'निंदंता' निन्दन्तः=निन्दा कुर्वन्तः, 'इह य पुरे कडाइ कम्माइ पावगाइ' इह=लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिवदन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनसः=दीनाः सन्तः 'सोएण डज्झमाणा' शोकेन दह्यमानाः=अभीष्टवस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःखमाप्ताश्च भवन्ति। तथा 'सत्तपरिवज्जिया य' सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोभा' क्षोभ्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया, 'सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' शिल्पकलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्प

सपत्ति, सत्कार, सन्मान, तथा भोजन, इनके विशेष प्रकारों की समुदय विधिको ईर्ष्याभाव से देखते है और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा अपने पापकारी कर्त्तव्य की निंदा करते है । हमने (इह य) इस ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये है उनका ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से कहते हुए (विमणसो) स्वय दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव दुःखों को भोगते रहते है । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल से रहित बने हुए ये (छोभा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति के द्वारा अनादरणीय होते रहते है । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સદ્‌ભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી જોવે છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે છે ' અમે "इहय" આ સસારમા "पुरे" પૂર્વભવમા "पावगाइ कडाइ" પાપકર્મો કર્યા છે, એનુ જ આ ફળ અમારે ભોગવવુ પડે છે,' એ પ્રમાણે "परिवयता" બીજાને કહેતા "विमणसो" પોતે દીન થઈને "सोएण डज्झमाणा" શોકથી જળતા "परिभूया" દુખી "हुति" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુખથી નિરતર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને દુખો ભોગવ્યા કરે છે તથા "सत्तपरिवज्जिया य" મનોબળથી રહિત એવા તે "छोभा" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત) થયા કરે છે તથા "[illegible] ...ની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, "कला"

चित्रादि विज्ञान कला=धनुर्वेदादिका समयशास्त्र=आर्हतादिकं, तैः परिवर्जिताः= रहिता 'जहाजायपसुभूया' यथाजातपशुभूता =यथा जाता=जन्मकाले यादृश गुणविशिष्टास्तथैव स्थिता नतु शिक्षादिना विशेषता प्राप्ताः एवंभूता ये पशवः= बलीवर्दादयस्तद्वद्भूताः=तत्सदृशाः 'अवियत्ता' अयं देशीशब्दः अप्रीतिकाः= अप्रीतिकारकाः 'निच्च नीयकम्मोवजीविणो' नित्य नीचकर्मोपजीविनः = सदा हिंसादिवृत्त्युपजीविनः 'लोयकुच्छणिज्जा' लोककुत्सनीयाः = सर्वजनैर्निन्दनीयाः 'मोहमणोरहा' मोघमनोरथाः = निष्फलमनोरथाः,

---

उत्कीर्ण करने रूप विज्ञान से, (कला) धनुर्वेद आदि रूप कलाओं से एव (समय सत्थ) अर्हत प्रणीत शास्त्रो के अभ्यास से, (परिवज्जिया) रहित होकर (जहा जायपसुभूया) यथाजात पशु जैसे बने हुए ये (अवियत्ता) किसी के भी साथ प्रीति नहीं करते हैं क्यों कि ये (निच्च नीयकम्मोवजीविणो) नित्य ही नीच कर्मोपजीवी होते हैं। यथा जात पशुभूतका वाच्यार्थ इस प्रकार है-उत्पन्न होते समय पशु जिन गुणों से युक्त रहता है आगे भी वह बडा होने पर भी शिक्षादिक की प्राप्ति से अपनी तरक्की नही कर सकने के कारण वैसा ही बना रहता हैं, इसी तरह ये अदत्तग्राही व्यक्ति भी होते हैं हेय और उपादेय के ज्ञान से विकल जैसे ये जन्मते समय में थे वैसे ही ये बड़े होने पर भी रहते हैं, अतःइन्हे यथा जात पशुभूत कहा गया है। (लोय कुच्छणिज्जा) समस्तजन इनकी निंदा किया करते है। (मोहमणोरहा) इनके जितने भी मनोरथ होते हैं वे सब मोघ-असफल ही रहते है।

धनुर्वेद आदि કલાઓથી, અને "समयसत्थ" અર્હંત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી "परिवज्जिया" રહિત હોવાને કારણે "जहा जाय पसुभूया" યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ "अवियत्ता" કોઈની પણ સાથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ "निच्च नीयकम्मोवजीविणो" હમેશા નીચ કર્મોપજીવી હોય છે 'यथा जात पशुभूत' નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે- ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટુ થતા પણ રહે છે-તે મોટુ થાય તો પણ શિક્ષાદિકની પ્રાપ્તિ વડે પોતાની ઉન્નતિ કરી શકતુ નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને "યથા જાત પશુભૂત" કહેલ છે "लोयकुच्छणिज्जा" સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, "मोहमणोहरा" તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે "निरासबहुला" ઇચ્છિત વસ્તુ ન

ईर्ष्याबुद्ध्यापश्यन्तः, ततश्च 'अप्पयं' आत्मानं 'कयतं' कृतान्त=कर्तव्यं च 'निंदता' निन्दन्तः=निन्दा कुर्वन्तः, 'इह य पुरे कडाइं कम्माइं पावगाइं' इह=लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिवदन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनसः=दीनाः सन्तः 'सोएण डज्झमाणा' शोकेन दह्यमाना.=अभीष्टवस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया हुति' परिभूताः=जनैरनादृताः दुःखमाप्ताश्च भवन्ति। तथा 'सत्तपरिवज्जिया य' सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोभा' क्षोभ्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया, 'सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' शिल्पकलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्पं

संपत्ति, सत्कार, सन्मान, तथा भोजन, इनके विशेष प्रकारों की समुदय विधिको ईर्ष्याभाव से देखते है और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा अपने पापकारी कर्त्तव्य की निंदा करते है । हमने (इह य) इस ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये है उनका ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से कहते हुए (विमणसो) स्वय दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव दुःखों को भोगते रहते है । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल से रहित बने हुए ये (छोभा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति के द्वारा अनादरणीय होते रहते है । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સદ્‌ભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી જોવે છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે છે ' અમે " इहय " આ સસારમા " पुरे " પૂર્વભવમા " पावगाइ कडाइ " પાપકર્મો કર્યા છે, એનુ જ આ ફળ અમારે ભોગવવુ પડે છે,' એ પ્રમાણે " परिवयता " બીજાને કહેતા " विमणसो " પોતે દીન થઈને " सोएण डज्झमाणा " શોકથી જળતા " परिभूया " દુખી " हुति " થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુખથી નિરતર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને દુખો ભોગવ્યા કરે છે તથા " सत्तपरिवज्जिया य " મનોબળથી રહિત એવા તે " छोभा " અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત) થયા કરે છે તથા " सिप्प " ચિત્રાદિની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી " कला "

चित्रादि विज्ञान कला=धनुर्वेदादिका समयशास्त्रं=आर्हतादिक, तैः परिवर्जिताः= रहिता 'जहाजायपसुभूया' यथाजातपशुभूता =यथा जाता=जन्मकाले यादृश गुणविशिष्टास्तथैव स्थिता न तु शिक्षादिना विशेषता प्राप्ताः एवभूता ये पशवः= बलीवर्दादयस्तद्वद्भूताः=तत्सदृशाः 'अवियत्ता' अयं देशीशब्दः अप्रीतिकाः= अप्रीतिकारकाः 'निच्च नीयकम्मोवजीविणो' नित्य नीचकर्मोपजीविनः = सदा हिंसादिवृत्त्युपजीविनः 'लोयकुच्छणिज्जा' लोककुत्सनीयाः = सर्वजनैर्निन्दनीयाः 'मोहमणोरहा' मोघमनोरथाः = निष्फलमनोरथाः,

---

उत्कीर्ण करने रूप विज्ञान से, (कला) धनुर्वेद आदि रूप कलाओं से एव (समय सत्थ) अर्हंत प्रणीत शास्त्रो के अभ्यास से, (परिवज्जिया) रहित होकर (जहा जायपसुभूया) यथाजात पशु जैसे बने हुए ये (अवियत्ता) किसी के भी साथ प्रीति नहीं करते हैं क्यों कि ये (निच्च नीयकम्मोवजीविणो) नित्य ही नीच कर्मोपजीवी होते हैं। यथा जात पशुभूतका वाच्यार्थ इस प्रकार है–उत्पन्न होते समय पशु जिन गुणों से युक्त रहता है आगे भी वह बडा होने पर भी शिक्षादिक की प्राप्ति से अपनी तरक्की नहीं कर सकने के कारण वैसा ही बना रहता है, इसी तरह ये अदत्तग्राही व्यक्ति भी होते है हेय और उपादेय के ज्ञान से विकल जैसे ये जन्मते समय में थे वैसे ही ये बडे होने पर भी रहते हैं, अतःइन्हे यथा जात पशुभूत कहा गया है। (लोय कुच्छणिज्जा) समस्तजन इनकी निंदा किया करते है। (मोहमणोरहा) इनके जितने भी मनोरथ होते हैं वे सब मोघ-असफल ही रहते है।

धनुर्वेद आदि કલાઓથી, અને "समयसत्थ" અર્હંત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી "परिवज्जिया" રહિત હોવાને કારણે "जहा जाय पसुभूया" યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ "अवियत्ता" કોઈની પણ સાથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ "निच्च नीयकम्मोवजीविणो" હમેશા નીચ કર્મોપજીવી હોય છે 'यथा जात पशुभूत' નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે– ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટુ થતા પણ રહે છે–તે મોટુ થાય તો પણ શિક્ષાદિની પ્રાપ્તિ વડે પોતાની ઉન્નતિ કરી શકતુ નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને "યથા જાત પશુભૂત" કહેલ છે "लोयकुच्छणिज्जा" સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, "मोहमणोहरा" તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે "निरासबहुला" ઇચ્છિત વસ્તુ ન

ईर्ष्याबुद्धयापश्यन्त', ततश्च 'अप्पयं' आत्मान 'कयतं' कृतान्त=कर्तव्य च 'निंदता' निन्दन्तः=निन्दा कुर्वन्तः, 'इह य पुरे कडाइ कम्माइ पावगाइं' इह=लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिवदन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनस.=दीनाः सन्तः 'सोएण डज्झमाणा' शोकेन दह्यमानाः=अभीष्टवस्तूनाममाप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःखमाप्ताश्च भवन्ति। तथा 'सत्तपरिवज्जिया य' सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोभ्मा' क्षोभ्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया, 'सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' शिल्पकलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्प

सपत्ति, सत्कार, सन्मान, तथा भोजन, इनके विशेष प्रकारों की समुदय विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा अपने पापकारी कर्त्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये है उनका ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से कहते हुए (विमणसो) स्वय दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव दुःखों को भोगते रहते है । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल से रहित बने हुए ये (छोभ्मा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति के द्वारा अनादरणीय होते रहते है । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સદ્‌ભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી જોવે છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે છે 'અમે "इहय" આ સસારમા "पुरे" પૂર્વભવમા "पावगाइ कडाइ" પાપકર્મો કર્યા છે, એનુ જ આ ફળ અમારે ભોગવવુ પડે છે,' એ પ્રમાણે "परिवयता" બીજાને કહેતા "विमणसो" પોતે દીન થઈને "सोएण डज्झमाणा" શોકથી જળતા "परिभूया" દુ ખી "हुति" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુ ખથી નિરતર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને દુ ખો ભોગવ્યા કરે છે તથા "सत्तपरिवज्जिया य" મનોબળથી રહિત એવા તે "छोभ्मा" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત) થયા કરે છે તથા "सिप्प" ચિત્રાદિની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, "कला"

कठिनपरिश्रमेणापि दिनमात्राहारयोग्यमेवकथञ्चित् अन्नादिक माप्नुवन्तीत्यर्थः, 'खीणदव्वसारा' क्षीणद्रव्यसाराः=दरिद्राः णिच्च धणधण्णकोसपरिभोगविवज्जिया' नित्य धनधान्यकोशपरिभोगविवर्जिता =तत्र नित्य=सदा धन-गणिमादिक धान्य शाल्यादिक कोशाः=भाण्डागारास्तेषा परिभोगेन=उपभोगेन विवर्जिताः, रहिताः, तथा 'रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा' रहित कामभोगपरिभोगसर्वसौख्याः =रहित कामयोः=शब्दरूपयोः भोगानां=गन्धरूपस्पर्शाना परिभोगसौख्य-उपभोग जनित आनन्दः=येषा ते तथा कामभोगसुखवर्जिता इत्यर्थः, 'परसिरिभोगोवभोगनिस्साणमग्गणपरायणा' परश्री भोगोपभोगनिश्राणमार्गणपरायणाः, तत्र-परेषाम्=अन्येषा श्रिया =सम्पत्तेः यौ भोगोपभोगौ=भोगः=सकृत् भुज्यते यः सः =आहार पुष्पादिरूपः, उपभोगश्च=गृहवस्त्रादिलक्षणः तयोर्यन्निश्राण तस्य मार्गण=

कणों के पिण्ड के सचय करने में ही लगे रहते है अर्थात् सम्पूर्ण दिन उद्योग में तत्पर रहने पर भी ये बडे कठिन परिश्रम से केवल उसी दिन के योग्य अन्नादि सामग्री को जिस किसी प्रकार से अर्जित कर पाते है । (खीणदव्वसारा) द्रव्य रूप सार से रहित न होने के कारण ये दरिद्र होते हैं । (णिच्च धणधण्णकोसपरिभोगविवज्जिया) सर्वदा ये गणिमादि रूप धन, शाली आदि धान्य एव भाण्डागार इनके परि-भोग-उपभोगसे रहित होते ह । (रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा) शब्द एव रूप स्वरूप कामके, गन्ध रस और स्पर्श स्वरूप भोगों के परिभोग के सुखों से रहित होते है, (परसिरिभोगोवभोगनिस्साणमग्गणपरायणा) (परसिरि) दूसरे व्यक्तियोंकी लक्ष्मी के (भोगोवभोग) भोग और उपभोग के (निस्साणमग्गणपरायणा) आश्रय की वाछा में ही सदा लगे रहते है । जो एक वार भोगने मे आते हैं ऐसे आहार,

સમૂહનો સંગ્રહ કરવામાં જ લાગ્યા રહે છે એટલે કે આખો દિવસ મહેનત કરવા છતાં પણ તેઓ અતિ ભારે પરિશ્રમથી ફક્ત એ એક દિવસ ચાલે એટલી અન્ન સામગ્રી માંડ માંડ પ્રાપ્ત કરી શકે છે "खीण दव्वसारा" દ્રવ્યરૂપ સારથી રહિત હોવાને કારણે તેઓ દરિદ્ર હોય છે " णिच्च धणधण्णकोसपरिभोगविवज्जिया સર્વદા તેઓ સોનામહોરો આદિ ધન, શાલી આદિ ધાન્ય અને વાસણોના ભંડારની તેમના ઉપભોગથી રહિત રહે છે, " रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा " શબ્દ અને રૂપ સ્વરૂપ કામના ગંધ, રસ, અને સ્પર્શસ્વરૂપ ભોગના સુખોથી તેઓ રહિત હોયછે " परसिरिभोगोवभोगनिस्साणमग्गणपरायणा " " परसिरि " તેઓ અન્ય વ્યક્તિઓની લક્ષ્મીના " भोगवभोग " ભોગ તથા ઉપભોગના " निस्साण-मग्गणपरायणा " આશ્રયની વાસનામાં જ સદા લીન રહે છે, જે

निराशबहुलाः = इष्टवस्तुप्राप्त्यभावादतिनिराशाः, 'आसापासपडिबद्ध-पाणा' आशापाशप्रतिबद्धप्राणाः= आशैव पाशः=बन्धन तेन प्रतिबद्धाः=निरुद्धाः =प्राणा येषांते तथा आशामात्रजीविनः, 'लोयसारे' लोकसारे=लोकसारभूते 'अत्थोप्पायणकामसोक्खे' अर्थोत्पादनकामसौख्ये=तत्र अर्थोत्पादन=द्रव्योपार्जनं कामसौख्य=इन्द्रियजनित सौख्य तत्र 'सुट्ठुअवि उज्जमंता' सुष्ठु अपि उद्यमन्तः =उद्योग कुर्वन्तः 'अफलवंतगा' अफलवन्तश्च=अभिलषितवस्तुप्राप्तिरहिता 'हुति' भवन्ति। पुनः कीदृशा भवन्ति? त्याह 'तद्दिव सुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसंठविय-सित्थपिंडसचयपरा' तद्दिवसोद्युक्तकर्मकृतदुःखसंस्थापितसिक्थपिण्डसञ्चयपराः, तत्र तद्दिवसेषु=तत्तद्दिनेषु उद्युक्तैः=उद्योगवद्भिः सद्भिः कर्मणा=व्यापारेण कृते नापि दुःखेन=अतिक्लेशेन संस्थापित = प्राप्तो यः सिक्थानां=धान्यकणानां पिण्डस्तस्य सञ्चये पराः=तत्परा ये ते तथा-सम्पूर्णदिनमुद्योगपराः सन्तोऽपि-

(निरास बहुला) इष्टवस्तुकी प्राप्ति नहीं होने के कारण ये सदा निराश ही बने रहते है। (आसापासपडिबद्धपाणा) फिर भी ये जो जीते है उसका कारण इनकी आशा है। इसी आशाकी पाश मे ही इनके प्राण ही बंधे हुए रहते है। (लोयसारे) यद्यपि ये लोक में सारभूत माने गये (अत्थोप्पायणकामसोक्खे) अर्थार्जन एवं इन्द्रिय जनित सुख में (सुट्ठु अविउज्जमता) अच्छी तरह से उद्यम शील रहते है, परन्तु फिर भी (अफलवतगा) इन्हे अभिलषित वस्तुकी प्रप्ति नही होती है। उससे ये रहित (हुति) बने रहते है। (तद्दिव सुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसठवियसित्थपिंडसचयपरा) (तद्दिवसुज्जत्त) प्रतिदिन उद्योग करते रहने पर भी (कम्मकय) किये गये काम से (दुक्खसठविय) मुश्किल से प्राप्त हुए (सित्थपिंड सचयपरा) धान्य

મળવાને કારણે તેઓ સદા નિરાશ જ રહે છે "आसपासपडिबद्धपाणो" છતા પણ તેઓ જીવી શકે છે તેનુ કારણ તેમની આશા છે તે આશાના પાશમા જ તેમના પ્રાણ બધાયેલા રહે છે "लोयसारे" જો કે તેઓ લોકોમા સારભૂત મનાતા "अत्थोप्पायणकामसोक्खे" અર્થાર્જન (ધન કમાવામા) તથા ઇન્દ્રિય જનિત સુખમા "सुटठुअविउज्जमता" સારી રીતે પ્રયત્નશીલ રહે છે, પણ "अफलवतगा" તેમને ઇચ્છિત વસ્તુ મળતી નથી તેનાથી તેઓ રહિત "हुति" રહે છે 'तद्दिव सुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसठविय सित्थपिंडसचयपरा" "तद्दिव सुज्जुत्त" દરરોજ ઉદ્યોગ કરવા છતા પણ "कम्मकय" કરેલા કામથી "दुक्खसठविय" મુશ્કેલીથી મળેલ "सित्थपिंडसचयपरा" ધાન્યકણોના

एवमदत्तादानस्य चतुर्थं फलद्वारं निरूपितम् । साम्प्रतमध्ययनार्थमुपसंहरन्नाह –' एसो सो ' इत्यादि ।

मूलम्—एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइयो परलोइओ अप्पसुहो वहुदुक्खो महब्भओ वहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न य अवेयइत्ता अत्थिहुं मोक्खोत्ति, एवमाहसु णायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी अदिण्णादाणस्स फलविवागं एव त तइयपि अदिण्णादाण हर-दर-मरण-कलुस –तासण–परसति भेज्जलोभमूलं एव जाव चिरपरिचियमणुगत दुरत त्तिवेमि ॥ सू० २१ ॥

॥ तइय अहम्मदार सम्मत्त ॥

टीका—' एसो सो ' एषः स=दर्शितस्वरूपः ' अदिण्णादानस्य ' अदत्तादानस्य ' फलविवागो, फलविपाकः ' इहलोइओ ' ऐहलौकिकः=मनुष्यभवापेक्षया ' परलोइओ ' पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया ' अप्पसुहो ' अल्पसुख=आपातमात्र-

इस प्रकार यह अदत्तादान के चौथे फल द्वार का निरूपण किया गया है, अब सूत्रकार इस अध्ययन के अर्थका उपसहार करते हुए कहते है — ' एसो सो ' इत्यादि० ।

टीकार्थ-(एसोसो) जीसका इस प्रकारसे स्वरूप प्रदर्शित कीया जा चुका है ऐसा (अदिण्णादाणस्स फलविवागो) अदत्तादानका यह फलरूप विपाक (इहलोइओ) मनुष्य भवकी अपेक्षा तथा (परलोइओ) नरकादि गतियोंकी अपेक्षासे प्रदर्शित किया गया है । इससे हम यह बात भली भांती जान सकते है कि यह फलरूप विपाक (अप्पसुहो)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનુ નિરૂપણ કરવામા આવ્યુ, હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનના અર્થનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—" एसो सो "ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" एसो सो " જેનુ ઉપરોકત પ્રકારે સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામા આવ્યુ તે " अदिण्णादाणस्स फलविवागो " અદત્તાદાનનો તે ફલરૂપ વિપાક " इह-लोइओ " મનુષ્યભવની અપેક્ષાએ તથા " परलोइओ " નરકાદિ ગતિયોની અપેક્ષાએ બતાવવામા આવ્યો છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે સમજી શકીએ છીએ

गवेषण तत्र परायणा' परसम्पत्तिभोगाभिलाषया इत्यर्थ, 'वरागा' वराका.=दीनाः 'अकामियाए' अकामिकया=अनिच्छयाऽपि 'विणिहुतिदुक्ख' विनयन्ति दुःख=दुख माप्नुवन्ति तथा 'णेव सुह णेव णिव्वुइ उवलभति' नैवसुख नैव निर्वृतिं=मनः शान्तिमुपलभन्ते=प्राप्नुवन्ति, ते के ? इत्याह—'अच्चतविउलदुक्खसयसपलित्ता' अत्यन्तविपुलदुःखशतसम्प्रदीप्ताः =अत्यन्तविपुलम्=अति विस्तीर्ण यद् दुखशत तेन सम्प्रदीप्ता.=सतप्ता. 'परस्स दव्वेहिं-जे अविरया' परस्य द्रव्येषु ये अविरताः=निवृत्तिभावरहितास्तेऽत्र परत्र च नैव सुख नैव शान्ति चोपलभन्ते इति सम्बन्धः सू० २० ॥

पुष्प आदि पदार्थ भोग और जो बार २ भोगने मे आते है ऐसे गृह वस्त्र आदि पदार्थ उपभोग है । (वरागा) ये सदा दीनावस्था सपन्न होते है । (अकामियाए) इनकी यह अभिलाषा नहीं होती है की हम दुःख भोगे परन्तु इन्हे विना इच्छा के भी (विणिहुति दुःक्ख) दु.ख सहना पडता है। इन्हे (णेव सुह णेवणिव्वुइ उवलभति) जीवनभर कभी भी सुख नही मिलता और न कभी निर्वृत्ति मनको शाति ही इन्हे प्राप्त होती है। कारण की ये (अच्चत विउलदुक्खसयसपलित्ता) अत्यत विपुल सैकडो दुःखों से सतप्त होते रहते हैं। इन दुःखो से भी सतप्त होने का कारण यह है कि ये (परस्स दव्वेहिं जे अविरया) परके द्रव्य को अपहरण करने रूप कुकृत्य से विरतिभाव धारण करने से रहित होते है। इसी कारण इन विचारों को न सुख मिलता है और न शाति ही मिलती है ॥ सू० २० ॥

એક વાર ભોગવવામા આવે છે એવા આહાર પુષ્પ આદિ પદાર્થ ભોગ ગણાય છે, અને જે વરવાર ભોગવાય છે એવા ઘર, વસ્ત્ર આદિ પદાર્થોને ઉપભોગ કહે છે 'वरागा" તેઓ હમેશ દીન દશામા રહે છે, "अकामियाए" તેમને દુ ખ ભોગવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, પણ તેમને ઇચ્છયા વિના પણ "विणिहुति दुक्ख" દુ ખો સહન કરવા પડે છે તેમને "णेव सुह णेव णिव्वुइ उवलभति" આખુ જીવન કદી પણ સુખ મળતુ નથી, અને તેમને કદી નિવૃત્તિ-(મનની શાતિ) પણ પ્રાપ્ત થતી નથી, કારણ કે તે લોકો "अच्चतविउलदुक्खसय सपलित्ता" અત્યત વિપુલ, સેકડો દુ ખોથી દુ ખી થયા કરે છે, એ દુ ખોથી પણ દુ ખી થવાનુ કારણ એ છે કે તેઓ "परस्स दव्वेहिं जे अवरिया" પરધનનુ અપહરણ કરવા રૂપ કુકૃત્યથી વિરકત થઈ શકતા નથી, તે કારણે તે બિચારાઓને સુખ મળતુ નથી અને શાતિ પણ મળતી નથી ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

एवमदत्तादानस्य चतुर्थं फलद्वारं निरूपितम् । साम्प्रतमध्ययनार्थमुपसंहरन्नाह –' एसो सो ' इत्यादि ।

मूलम्—एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइयो परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न य अवेयइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति, एवमाहंसु णायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी अदिण्णादाणस्स फलविवागं एवं तं तइयंपि अदिण्णादाणं हर-दर-मरण-कलुस –तासण–परसंति भेज्जलोभमूलं एवं जाव चिरपरिचियमणुगतं दुरंतं त्तिबेमि ॥ सू० २१ ॥

॥ तइयं अहम्मदारं सम्मत्तं ॥

टीका—' एसो सो ' एषः स=दर्शितस्वरूपः ' अदिण्णादानस्य ' अदत्तादानस्य ' फलविवागो, फलविपाकः ' इहलोइओ ' ऐहलौकिकः=मनुष्यभवापेक्षया ' परलोइओ ' पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया ' अप्पसुहो ' अल्पसुखं=आपातमात्र-

---

इस प्रकार यह अदत्तादान के चौथे फल द्वार का निरूपण किया गया है, अब सूत्रकार इस अध्ययन के अर्थका उपसंहार करते हुए कहते है — ' एसो सो ' इत्यादि० ।

टीकार्थ–(एसोसो) जीसका इस प्रकारसे स्वरूप प्रदर्शित कीया जा चुका है ऐसा (अदिण्णादाणस्स फलविवागो) अदत्तादानका यह फलरूप विपाक (इहलोइओ) मनुष्य भवकी अपेक्षा तथा (परलोइओ) नरकादि गतियोंकी अपेक्षासे प्रदर्शित किया गया है । इससे हम यह बात भली भांती जान सकते है कि यह फलरूप विपाक (अप्पसुहो)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનુ નિરૂપણ કરવામા આવ્યુ, હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનના અર્થનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે—" एसो सो "ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" एसो सो " જેનુ ઉપરોકત પ્રકારે સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામા આવ્યુ તે " अदिण्णादाणस्स फलविवागो " અદત્તાદાનનો તે ફલરૂપ વિપાક " इहलोइओ " મનુષ્યભવની અપેક્ષાએ તથા " परलोइओ " નરકાદિ ગતિઓની અપેક્ષાએ બતાવવામા આવ્યો છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે સમજી શકીએ છીએ

सुखजनकः, 'बहुदुक्खो' बहुदुःखः=दुःखबहुलः 'महब्भओ' महाभयः=महा भयजनकः 'बहुरयप्पगाढो' बहुरजः प्रगाढः=प्रचुरकर्मरजोभिः सम्भृतः 'दारुणो' दारुणः=भीषणः 'कक्कसो' कर्कशः=कठोरः 'असाओ' असातः=असुखोऽशात कर्मवेदनीयस्वरूपः इत्येतद्विधफलविपाकः 'वाससहस्सेहिं' वर्षसहस्रैः=पल्यो पमसागरप्रमाणकालैः 'मुच्चइ' मुच्यते=क्षीयते। तदव्यतिरेकमुखेनाह-'नय' न च तं फल-विपाकम्, 'अवेयइत्ता' अवेदयित्वा = अनुपभुज्य उपभोग विनेत्यर्थः 'हु' निश्चयेन 'मोक्खो' मोक्षः 'अत्थि' अस्ति 'त्ति' इति शब्द समाप्ति सूचकः।

एतस्यार्थस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रमाणत्वमाह-- 'एवमाहसु' इत्यादि।

एवम्=उक्तरीत्या 'आहसु' ऊचुः ऋषभादि तीर्थङ्करगणधरादय। तथा

केवल आपातमात्र सुख जनक है। (बहु दुक्खो) जीवों के इससे वास्तविक सुख नहीं मिलता है किंतु भयकर से भयकर दुःखो का ही यह प्रदाता है। (बहुभओ) यह महा भयजनक है (बहुरयप्पगाढो) प्रचुर कर्म रूपी रज से यह भरा हुआ है। (दारुणो) बड़ा भीषण है। (कक्कसो) कठोर है। (असाओ) अशात कर्म वेदनीय स्वरूप है। इस तरह का यह फलविपाक (वाससहस्सेहिं) हजारों वर्षों में अर्थात् पल्योपम तथा सागरोपर प्रमाणकाल में (मुच्चइ) छूटता है॥ (न य अवेयइत्ता हु मोक्खो अत्थि त्ति) विना इसका फल भोगे जीव इससे मुक्त नही होता है। इस अर्थ मे प्रमाणता प्रति पादन करने के लिये सूत्रकारइसमे साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्म के द्वारा प्रतिपादितता प्रकट करते है, वे कहते हैं- (एवमाहसु) ऋषभ आदि

તે ફલરૂપ વિપાક "अप्पसुहो" કેવળ ક્ષણિક સુખજનક છે "बहुदुक्खो" જીવોને તેનાથી વાસ્તવિક સુખ મળતુ નથી, પણ તે ભયકરમા ભયકર દુખો દેનાર છે "बहुब्भओ" તે મહા ભયજનક છે "बहुरयप्पगाढो" વિપુલ કર્મરૂપી રજથી તે પૂર્ણ છે, "दारुणो" ઘણો ભીષણ છે, "कक्कसो" કઠોર છે, "असाओ,, અશાતકર્મવેદનીય સ્વરૂપ છે આ પ્રકારનો આ ફળવિપાક "वाससहस्सेहिं" હજારો વર્ષે એટલે કે પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ કાળે છૂટે છે "नय अवेयइत्ताँ हु मोक्खो अत्थि त्ति" તેનુ ફળ ભોગવ્યા વિના જીવ તેનાથી મુક્ત થતા નથી તે અર્થમા પ્રમાણ ભૂતના પ્રતિપાદિત કરવાને માટે સૂત્રકાર તેમા સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિતતા પ્રગટ કરે છે તેઓ કહે છે-

तदनुसारेणैव 'णायकुलनदणो' ज्ञातकुलनन्दनः=सिद्धार्थकुलानन्दकरः 'महप्पा' महात्मा=परमात्मस्वरूपः 'जिणो' जिनो-रागद्वेषविजेता 'वीरवरनामधेज्जो' वीरवरनामधेयः=प्रख्याततनामा भगवान् महावीरः 'अदिण्णादाणस्स' अदत्तादानस्य फलविवाग' फलविपाक 'कहेसी' कथितवान्। एव 'त' तत् पूर्वोपदर्शित स्वरूपम्, 'तइयपि अदिण्णादाण' तृतीयमप्यदत्तादान-'हर-दह-मरण-कलुस-तासण-परसतिगिज्झलोभमूल' हर-दह-मरण-कलुष-त्रासनपरसत्कग्राह्यलोभ मूलम्, तत्र 'हर' इति हरण=परद्रव्यापहरण, 'दह' दहन=दाह -हृदयसन्तापः, 'मरण' मृत्यु', 'कलुस' कलुष=मनोमालिन्य, 'तासण' त्रासन=त्रासः-अकस्माद्भयम् 'परसतियगिज्झलोभ' परसत्कग्राह्यलोभः=परवस्तुग्राहको लोभ, एतेषा मूल=मूलकारणमिदमदत्तादानम्। एव 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन द्वितीयालीक-

---

तीर्थंकरों ने इस अदत्तादान का ऐसा ही फल कहा है तथा उन्ही तीर्थंकरों के अनुसार (णायकुलनदणो) ज्ञातकुलनदन-सिद्धार्थ के कुलको आनद कारक (महप्पा) परमात्मरूप (जिणो) रागद्वेष विजेता (वीरवरनामधेज्जो) श्री भगवान महावीर ने भी (अदिण्णादाणस्स) इस अदत्तादान का (फलविवाग) ऐसा ही फल (कहेसी) कहा है। (एव) इस प्रकार (त) पूर्वोपदर्शित स्वरूपवाला यह (तइयपि) तीसरा अदत्तादान भी (हर-दह-मरण-कलुस-परसतिगिज्जलोभमूल) (हर) परद्रव्य का हरण करना, (दह) हृदय मे सताप पहुँचाना, (मरण) मृत्यु (कलुस) मनोमालिन्य (तासण) अकस्मात् भय होना, (परसतिगिज्झ लोभमूल) दूसरे की वस्तु का हरण कराने वाला लोभ, इन सबका मूल-कारण यह अदत्तादान है। यहा पर

"एवमाहसु" ઋષભદેવ આદિ તીર્થંકરોએ આ અદત્તાદાનનુ આવુ જ ફળ કહેલ છે તથા તે તીર્થંકરોના પ્રમાણે "णायकुलनदणो" જ્ઞાતકુલ નદન-સિદ્ધાર્થના કુળને આનદ દાયક "महप्पा" પરમાત્મ રૂપ, "जिणो" રાગદ્વેષ વિજેતા, "वीरवरनामधेज्जो" શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ "अदिण्णादाणस्स" આ અદત્તાદાનનુ "फलविवाग" એવુ જ ફળ કહેલ છે "एव" આ પ્રમાણે "त" પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપવાળુ તે "तइयपि" ત્રીજુ અદત્તાદાન પણ "हर-दह-मरण-कलुस-तासण-परसति गिज्झ लोभमूल" "हर" પરદ્રવ્યનુ હરણ કરવુ "दह" હૃદયમા સતાપ પહોચાડવો, "मरण" મૃત્યુ, "कलुस" મનની મલિનતા, "तासण" અકસ્માત ભય થવો, "परसतिगिज्झ लोभमूल"

वचनाध्ययनोक्तविशेषणानि यथायोग्यानि संग्राह्याणि । 'चिरपरिचिय' चिरपरि चितम्=अनादिकालादनुभूयमानम्, 'अणुगय' अनुगतं=प्राणिना पृष्ठतो लग्नम्, 'दुरंत' दुरन्तम्=दुःखावसानम्, 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि = एतद् जम्बूस्वामिनं प्रति सुधर्मस्वामिवाक्यम् ॥ सू० २१ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्यायां व्याख्यायां हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु अदत्तादानाख्य तृतीयधर्मद्वारं समाप्तम् ॥ ३ ॥

'यावत्' शब्द से द्वितीय अलीक वचन संबंधी अध्ययन में जो विशेषण कहे गये हैं उनका यहां यथायोग्यरूप में संग्रह कर लेना चाहिये। यह अदत्तादान (चिरपरिचिय) अनादिकाल से जीवों के अनुभव में आ रहा है (अणुगय (मिथ्यात्व) के कारण यह आत्मा के पीछे लगा हुआ है। (दुरंत) दुःखप्रद ही इसका परिणाम-फल है। (त्तिबेमि) ऐसा मैं कहता हूं। इस प्रकार से यह जम्बू स्वामी के प्रति सुधर्मा स्वामी ने कहा है ॥ सू० २१ ॥

॥ तीसरा आस्रव— 'अधर्म' द्वार समाप्त ॥

બીજાની વસ્તુનું હરણ કરાવનાર લોભ, વગેરે બધી બાબતોનું મૂળ કારણ આ અદત્તાદાન છે, અહીં "यावत्" શબ્દથી અલીક વચન વિષેના બીજા અધ્યયનમાં જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સંગ્રહ અહીં યોગ્ય રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન "चिरपरिचिय" અનાદિ કાળથી જીવોના અનુભવમાં આવી રહ્યું છે, (अणुगय) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ લાગેલું છે, (दुरत) તેનું ફળ-પરિણામ દુઃખદાયી છે, (त्तिबेमि) એવું હું કહું છું, આ પ્રમાણે સુધર્માસ્વામીએ જંબૂસ્વામીને કહ્યું, ॥ સૂ, ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસ્રવ – 'અધર્મ' દ્વાર સમાપ્ત ॥

अथ चतुर्थमध्ययनम् ।

व्याख्यात तृतीयमध्ययन साम्प्रत चतुर्थमारभ्यते अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः । तृतीयाध्ययने यादृश नामादिनिर्देशपुरस्सरमदत्तादानस्वरूपमुक्तम्। अदत्तादान च प्रायोऽब्रह्मासक्तचित्ताः कुर्वन्त्येवेति हेतोः सूत्रक्रमनिर्देशानुसाराच्चाऽदत्तादाननिरूपणानन्तरमुचितमाप्तमब्रह्मस्वरूप नामादिनिर्देशपूर्वक प्रदर्श्यते तस्येदमाद्य सूत्रम्—' जबू अबभ च चउत्थ ' इत्यादि—तत्र पूर्वेषामिवास्यापि 'यादृश १ यन्नाम २ यथा चकृत ३ यत्फल ददाति ४ ये च कुर्वन्ति ५ इतिपञ्चभिरन्तर्द्वारैर्निरूपण चिकीर्षु रादौ क्रमप्राप्त' यादृशद्वारमाश्रित्य अब्रह्मस्वरूप निरूप्यते—' जबू अबभ ' इत्यादि ।

चतुर्थ अधर्मद्वार प्रारभ—

तृतीय अधर्मद्वार समाप्त हो चुका। अब चतुर्थ अधर्मद्वार प्रारभ होता है। इस अदर्मद्वार के साथ इस प्रकार का सबध है-तृतीय-अधर्मद्वारमें यादृशनामादि निर्देशपूर्वक जो अदत्तादानका स्वरूप कहा है सो इस अदत्तादान को जो अब्रह्ममें आसक्त चित्तवाले प्राणी होते हैं प्रायः वे करते ही हैं इस कारण से, तथा सूत्रक्रम के निर्देश के अनुसार से अदत्तादान के निरूपण के बाद अब्रह्मका स्वरूप नामादिनिर्देशक करना यह अवसर प्राप्त है। अतः सूत्रकार उसे अधर्मद्वार में प्रदर्शित करते हैं। जिस तरह पूर्व अ ययनों का निरूपण सूत्रकार ने " यादृश, १ यन्नाम २ यथा च कृत, ३ यत् फल ददाति, ४ ये च कुर्वन्ति ५ " इन पाच अन्तर्द्वारों से किया है उसी तरह वे इसका भी

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજુ અધર્મદ્વાર પૂરૂ થયુ, હવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય છે, આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સબધ છે

ત્રીજા અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અબ્રહ્મમા આસક્ત પ્રાણીઓ હોય તે સામાન્ય રીતે આચરે છે, એ કારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અબ્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવુ તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે રીતે આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે " यादृश "१ (કેવા પ્રકારનુ) "यन्नाम"२ (કયા કયા નામો) "यथा च कृत" ૩ (ક્યારે કરાય છે) " यत् फल ददाति " ૪ (કયુ ફળ આપે છે) " ये च कुर्वन्ति " ૫ (કોણ તે આચરે છે) આ પાચ અતર્દ્વારો દ્વારા કર્યું છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ કરવા

वचनाध्ययनोक्तविशेषणानि यथायोग्यानि संग्राह्याणि । चिरपरिचिय ' चिरपरि चितम्=अनादिकालादनुभूयमानम् , ' अणुगय ' अनुगत=प्राणिना पृष्ठतो लग्नम् , ' दुरत ' दुरन्तम्=दुःखावसानम् , ' त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि = एतद् जम्बूस्वामिन प्रति सुधर्मस्वामिवाक्यम् ॥ सू० २१ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु अदत्तादानाख्य तृतीयधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

' यावत् ' शब्द से द्वितीय अलीक वचन सबधी अध्ययन में जो विशेषण कह गये हैं उनका यहाँ यथायोग्यरूप में सग्रह कर लेना चाहिये। यह अदत्तादान (चिरपरिचिय) अनादिकाल से जीवों के अनुभव में आ रहा है (अणुगय (मिथ्यात्व) के कारण यह आत्मा के पीछे लगा हुआ है । (दुरत) दुःखप्रद ही इसका परिणाम-फल है । (त्तिबेमि) ऐसा मैं कहता हू । इस प्रकार से यह जबू स्वामी के प्रति सुधर्मा स्वामी ने कहा है ॥ सू० २१ ॥

॥ तीसरा आस्रव— ' अधर्म ' द्वार समाप्त ॥

બીજાની વસ્તુનુ હરણ કરાવનાર લોભ, વગેરે બધળી બાબતોનુ મૂળ કારણ આ અદત્તાદાન છે, અહી " यावत् " શબ્દથી અલીક વચન વિષેના બીજા અધ્યયનમા જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સગ્રહ અહી યોગ્ય રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન " चिरपरिचिय " અનાદિ કાળથી જીવોના અનુભવમાઆવી રહ્યુ છે, (अणुगय) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ લાગેલુ છે, (दुरत) તેનુ ફળ-પરિણામ દુ ખદાયી છે, (त्तिवेमि) એવુ હુ કહુ છુ, આ પ્રમાણે સુધર્માસ્વામીએ જબૂસ્વામીને કહ્યુ, ॥ સૂ, ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસ્રવ – ' અધર્મ ' દ્વાર સમાપ્ત ॥

अथ चतुर्थमध्ययनम् ।

व्याख्यात तृतीयमध्ययन साम्प्रत चतुर्थमारभ्यते अस्य च पूर्वेण सहायमभि-सम्बन्धः । तृतीयाध्ययने यादृश नामादिनिर्देशपुरस्सरमदत्तादानस्वरूपमुक्तम् । अदत्तादान च प्रायोऽब्रह्मासक्तचित्ताः कुर्वन्त्येवेति हेतोः सूत्रक्रमनिर्देशानुसारा-च्चाऽदत्तादाननिरूपणानन्तरमुचितमाप्तमब्रह्मस्वरूप नामादिनिर्देशपूर्वक प्रदर्श्यते तस्येदमाद्य सूत्रम्—' जबू अबभ च चउत्थ ' इत्यादि—तत्र पूर्वेषामिवास्यापि 'यादृश १ यन्नाम २ यथा चकृत ३ यत्फल ददाति ४ ये च कुर्वन्ति ५ इति-पञ्चभिरन्तर्द्वारैर्निरूपण चिकीर्षु रादौ क्रमप्राप्त' यादृशद्वारमाश्रित्य अब्रह्म-स्वरूप निरूप्यते—' जबू अबभ ' इत्यादि ।

चतुर्थ अधर्मद्वार प्रारभ—

तृतीय अधर्मद्वार समाप्त हो चुका। अब चतुर्थ अधर्मद्वार प्रारभ होता है । इस अदर्मद्वार के साथ इस प्रकार का सबध है -तृतीय-अधर्मद्वारमें यादृशनामादि निर्देशपूर्वक जो अदत्तादानका स्वरूप कहा है सो इस अदत्तादान को जो अब्रह्ममें आसक्त चित्तवाले प्राणी होते हैं प्रायः वे करते ही हैं इस कारण से, तथा सूत्रक्रम के निर्देश के अनुसार से अदत्तादान के निरूपण के बाद अब्रह्मका स्वरूप नामादिनि-र्देशक कहना यह अवसर प्राप्त हैं । अतः सूत्रकार उसे अधर्मद्वार में प्रदर्शित करते हैं । जिस तरह पूर्व अध्ययनों का निरूपण सूत्रकार ने "यादृश, १ यन्नाम, २ यथा च कृत, ३ यत् फल ददाति, ४ ये च कुर्वन्ति ५" इन पाच अन्तर्द्वारों से किया है उसी तरह वे इसका भी

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજુ અધર્મદ્વાર પૂરૂ થયુ, સવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય છે, આ અધર્મદ્વારને આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સબધ છે

ત્રીજા અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અબ્રહ્મમા આસકત પ્રાણીઓ હોય તે સામાન્ય રીતે આચરે છે, એ કારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અબ્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવુ તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે રીતે આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે " यादृश "૧ (કેવા પ્રકારનુ) "यन्नाम"૨ (ક્યા ક્યા નામો) "यथा च कृत ' ૩ (ક્યારે કરાય છે) " यत् फल ददाति " ૪ (ક્યુ ફળ આપે છે) " ये च कुर्वन्ति " ૫ (કોણ તે આચરે છે) આ પાચ અતર્દ્વારો દ્વારા કર્યું છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ કરવા

मूलम्—जंबू ! अबभं च चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्ज पकपणगपासजालभूय इत्थीपुरिसनपुंसगवेदचिह्न तवसजमबभचेरनिग्घ भेदाययणबहुपमादमूलं कायरकापुरिससेविय सुयणजणवज्जणिज्ज उड्ढ-नरयतिरिय तिलोकपइट्ठाणं जरामरणरोगसोगबहुल वधबंधविघायदुव्विघाय दसणचरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरिचियं मणुगयं दुरंत चउत्थं अहम्मदार ॥ सू० १ ॥

टीका:—हे जम्बू ! 'चउत्थ' चतुर्थ=हिंसामृषाऽदत्तादानापेक्षया चतुर्थ मास्रवद्वारम् 'अबभ च' अब्रह्म=अकुशल कर्म तच्चेह मैथुनम्-अधर्महेतुत्वेन सकलानर्थजनकत्वात्। चकारः पुनरर्थः कीदृश तदित्याह-'सदेवमणुयासुरस्स लोयस्सपत्थणिज्ज' सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य प्रार्थनीय=देवमनुष्यासुरलोकस्य प्रार्थ

निरूपण करना चाहते हैं। अत. सर्व प्रथम वे क्रम प्राप्त "यादृश" इस द्वार को लेकर अब्रह्म के स्वरूप का निरूपण करते हैं— 'जबू-अबभ' इत्यादि।

टीकार्थ-श्रीसुधर्मा स्वामी जबूस्वामी से कहते हैं कि हे जबू ! (चउत्थ) हिंसा, मृषा एव अदत्तादान इन तीन की अपेक्षा यह चतुर्थ आस्रव द्वार (अबभ च) अब्रह्म है। यह अब्रह्म अकुशल कर्म हैं और वह यहा स्वरूप से गृहित हुआ है। क्योंकि यह अधर्म का हेतु होने से सकल अनर्थों का जनक होता है।

अब सूत्रकार इसी अब्रह्मका आगेके विशेषणो द्वारा विशेष स्पष्टीकरण करते है, वे कहते हैं कि-यह अब्रह्म-मैथुनसेवनरूप अकुशल कर्म

માગે છે તેથી સૌથી પહેલા તેઓ અનુક્રમે આવતા "यादृश" એ નામના દ્વારને લઇને અબ્રહ્મના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરે છે "जबू अबभ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-શ્રી સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ! "चउत्थ" હિંસા, મૃષા અને અદત્તાદાન એ ત્રણની અપેક્ષાએ ચોથુ અધર્મદ્વાર "अबभ च" અબ્રહ્મ છે તે અબ્રહ્મ અયોગ્ય કૃત્ય છે અને તે અહી મૈથુનરૂપે જે ગૃહિત થયેલ છે, કારણ કે તે અધર્મનુ કારણ હોવાથી સઘળા અનર્થનુ ઉત્પાદક છે હવે સૂત્રકાર એ જ અબ્રહ્મનુ આગળ આવતા વિશેષણો દ્વારા વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે, તેઓ કહે છે કે-તે અબ્રહ્મ-મૈથુન સેવનરૂપ પાપકર્મ

नीयम्=अभिलषणीयम्। 'पकपणगपासजालभूय' पङ्कपनकपाशजालभूत=तत्र पङ्कः =कर्दम –निमज्जनहेतुत्वात्, पनकः=शैवाल–चरणन्यासमात्रेण स्खलनहेतुत्वात्, पाशः=बन्धनविशेषः, जाल च=प्रतीत तद्भूत=तत्सदृशम्। तथा 'इत्थीपुरिसनपुसग–वेदचिंहण' स्त्री पुरुषनपूसकवेदचिह्न=स्त्रीपुरुषनपुसकवेदलक्षण, तत्र स्त्री–वेदः=पुरुषाभिलापलक्षण' पुरुषवेदः स्त्रियोऽभिलापलक्षणः, नपुसकवेदः= उभयाभिलापलक्षणः। 'तवसजमबभचेरविग्घ ' तप सयमब्रह्मचर्यविघ्नः=तपः सयम ब्रह्मचर्यविघातरूपम्, 'भेदाययणबहुपमादमूल ' भेदायतनबहुप्रमादमूल=भेदः=चारित्रविनाशः तस्य आयतनानि=स्थानानि ये बहवः=अनेकविधा प्रमादाः=मद्यविकथादय, तेषा मूल=कारण यत्तत्तथा। 'कायरकापुरिससेविय' कातरकापुरुषसेवित=कातराः=परीषहभीरव, अतएव कापुरुषाः = धैर्यवर्जितास्तैः सेवित यत्तत्तथा। 'सुयणजणवज्जणिज्ज ' सुजनजनवर्जनीय=सुजनजनाः=साधुजनास्तैः वर्जनीय

(सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्ज) देव, मनुष्य, एव असुर लोक द्वारा अभिलषणीय है–चाहे देव हो चाहे मनुष्य हो या असुर हो कोई भी क्यों न हो सब ही इसे चाहते हैं। यह कर्म (पकपणगपासजालभूय) पककर्दम, पनकशैवाल–काई, पाश और जाल के जैसा है। तथा (इत्थीपुरिसनपुसगवेदचिंध) पुरुष अभिलाष रूप स्त्रीवेद स्त्रीचाहनारूप पुरुषवेदउभयकी चाहनारूप नपुसकवेद, ये जिसके चिह्न हैं। यह (तवसजमबभचेरविग्घ) तप, सयम, और ब्रह्मचर्य का विघातक है। (भेयाययणबहुपमादमूल) चारित्र को विनाश करने वाले जो मद्य विकथादिक अनेक प्रमाद है उनका यह मूल कारण है। (कायरकापुरिससेविय) जो व्यक्ति कातर परीषह सहने मे भीरू होते हैं, और इसीसे जिनका धैर्य नष्ट हो जाता है ऐसे व्यक्ति ही इसका सेवन करते हैं। तथा (सुय-

"सदेवमणुया सुरस्स पत्थणिज्ज" દેવ, મનુષ્ય અને અસુર લોકો દ્વારા અભિલષણીય છે ભલે દેવ હોય, મનુષ્ય હોય કે અસુર હોય-દરેક તેને ચાહેછે તે કર્મ "पकपणगपासलजालभूय " પંક-કાદવ, પનક-શેવાળ, પાશ અનેજાળ જેવુ છે તથા "इत्थीपुरिसनपु सगवेदचिंध" પુરુષ અભિલાષારૂપ સ્ત્રી વેદ સ્ત્રીચાહનારૂપ પુરુષ વેદ, અને બન્નેની ચાહનારૂપ નપુંસક વેદ જેના ચિહ્નો છે, તે " तवसजमबभचेर विग्घ" તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યનુ વિઘાતક છે 'भेयाययण बहुपमादमूल" ચારિત્રનો નાશ કરનાર જે મદ્ય, વિકથા આદિ અનેક પ્રમાદ છે, " कायरकापुरिससेविय " જે વ્યક્તિ કાયર-પરીષહો સહન કરવામા ભીરુ હોય છે, અને તેથી જ જેમનુ ધૈર્ય નષ્ટ થયુ હોય છે એવી વ્યક્તિઓ જ તેનુ સેવન કરે છે તથા

=त्याज्यम् , ' उड्ढनरयतिरियतिलोयपइट्ठाण ' ऊर्ध्वं नरकतिर्यक्त्रिलोकप्रतिष्ठानम्=ऊर्ध्वलोको नरकलोकस्तिर्यग्लोकश्चेत्येतद्रूप यत् त्रैलोक्य तत्र प्रतिष्ठानम् =अवस्थिति र्येन मैथुनेन यत्तथा लोकत्रये चतुर्गतिभ्रामकमित्यर्थ , तथा 'जरामरणरोगसोगबहुल ' जन्मजरामरणरोगशोकाद्यनन्तदुःखबहुलम् , ' वधबंधविघायदुव्विघाय ' वधबन्धविघातदुर्विघातम्=तत्र वध =हनन बन्ध =रज्ज्वादिभिः सयमन, विघातः=मारण चैतैर्वैः दुर्विघातः=दुस्सहो विघातो=दुःखं यस्मिन् तत्तथा वधबन्धादिविविधदुःखजनकमित्यर्थः, ' दसणचरित्तमोहस्स हेउभूय ' दर्शनचारित्रमोहस्य हेतुभूत=दर्शनमोहस्य चारित्रमोहस्य च बन्धकारणम्-इदमब्रह्म जिनवचने शङ्काकाङ्क्षादिदोषोद्भावकत्वाद् दर्शनमोहस्य कारण, चारित्रभेदजनकत्वाच्चारित्रमोहस्येति भाव । तथा ' चिरपचिय ' चिरपरिचित=

णजणवज्जणिज्ज) जो साधुजन हैं वे तो इस कृत्य को सदा त्याज्य ही मानते हैं (उड्ढ नरयतिरियतिलोयपइट्ठाण) इस मैथुन सेवन से जीवका परिभ्रमण उर्ध्वलोक मध्यलोक एव पाताललोक रूप त्रलोक्य में होता है। (जरामरण रोगसोगमूल) यह कर्म जन्म, जरा, मरण, शोक आदि अनत दुःखोसे भरा हुआ है। (वधबधविघायदुव्विघाय) इसमे वध, बधन एव मरण जन्य दुः सह दुःख भरे हुए हैं। (दसणचरित्तमोहस्स हेउभूय) दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीय का यह हेतुभूत है। अर्थात्-यह अब्रह्म जिनवचन मे शका कांक्षा आदि दोषों का जनक होने के कारण दर्शन मोहका और चारित्रका विनाशक होने से चारित्र मोहनीय कर्म के बध को कारण माना गया है। (चिरपरिचिय) जीवों के साथ इसका परिचय चिरकाल से जन्म जन्मान्तरो में आसेवित होते रहने के कारण चला आ रहा है। इसीलिये (अणुगय) यह

" सुयणजणवज्जणिज्ज " પણ સતપુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યજવા યોગ્ય માને છે, ' उड्ढनरयतिरियतिलोकपइट्ठाण " એ મૈથુનના સેવનથી જીવને ઉર્ધ્વલોક અને પાતાળલોક, એ રીતે ત્રણુલોકમા પરિભ્રમણ કરવુ પડે છે, " जरामरणरोगसोगमूल " તે કર્મ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનત દુખોથી ભરેલુ છે, " वधबधविघायदुव्विघाय " તેમા વધ, બધન અને મરણ જન્ય દુસહ દુખો ભરેલા છે, " दसणचरित मोहस्स हेउभूय " તે દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કારણરૂપ છે, એટલે કે તે અબ્રહ્મ જિન-વચનોમા શકા કાક્ષા આદિ દોષોનુ જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રનુ વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનુ કારણ મનાયુ છે ' चिरपरिचिय " તે જન્મ જન્માન્તરોથી સેવાતુ હોવાને કારણે તેનો જીવોની સથે

जन्मजन्मान्तरासेवितम्, 'अणुगय' अनुगतम् = अनादिकालतः समनुगतम्, 'दुरत' दुरन्तम्=दुःखावसानम्, दुष्टफलमित्यर्थः। 'चउत्थ अहम्म दार' चतुर्थमधर्मद्वारम्=आस्रवद्वारमब्रह्मेति नामकम् ॥ १ ॥ सू० ॥

एवमब्रह्मस्वरूपमुक्त साम्प्रत 'यन्नामे' ति द्वितीयान्तर्द्वारमाश्रित्य तस्य नामान्याह 'तस्स य णामाणि' इत्यादि—

मूलम्–तस्स य णामाणि गोणाणि इमाणि हुंति तीसं–अबंभ १ मेहुणं २ चरत ३ ससग्गि ४ सेवणाहिगारो ५ संकप्पो ६ बाहणापदाण ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसखोभो १० अणिग्गहो ११ विग्गहो १२ विघाओ १३ विभंगो १४ विब्भमो १५ अहम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतत्ती १८ रती १९ रागचिंता २० कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्स २३ गुज्झ २४ बहुमाणो २५ बभचेरविग्घो २६ वावत्ती २७ विराहणा २८ पसगो २९ कामगुणोत्ति ३० विय। तस्स एयाणि एवमाइणि नामधेज्जाणि हुंति तीस ॥ सू० २ ॥

टीका—'तस्स य' तस्य च=अब्रह्मणो मैथुनस्येत्यर्थः, 'गोणाणि' गौणानि=गुणनिष्पन्नानि 'णामाणि' नामानि 'इमाणि इमानि=वक्ष्यमाणानि

जीवों के पीछे अनादिकाल से पडा हुआ है। (दुरत्त) इसका अवसान (अत) बहुत ही अधीक कष्टप्रद होता है। (चउत्थ अहम्मदार) इस प्रकार यह चतुर्थ अब्रह्म नामका अधर्मद्वार है ॥ सू० १ ॥

इस तरह सूत्रकार अब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन कर अब "यन्नाम" नामक द्वितीय अन्तर्द्वार से उसका प्रतिपादन करते हैं—'तस्स य' इत्यादि ०।

टीकार्थ—(तस्स य) उस अब्रह्म रूप मैथुन कर्मके (गोणाणि)

ચિરકાળથી પરિચય ચાલ્યો આવે છે તેથી "अणुगय" તે અનાદિકાળથી જીવોની પાછળ પડેલુ છે "दुरत" તેનો નાશ થવો અતિશય દુષ્કર છે "चउत्थ अहम्मदार" આ પ્રકારનુ તે ચોથુ અબ્રહ્મ નામનુ અધર્મદ્વાર છે ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ઉપરાક્ત રીતે અબ્રહ્મના સ્વરૂપનુ પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર "यन्नाम" નામના બીજા અન્તર્દ્વારથી તેનુ પ્રતિપાદન કરે છે "तस्स य" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"तस्स य" તે અબ્રહ્મરૂપ મૈથુન કર્મના "गोणाणि" ગુણાનુસાર "णामाणि"

=त्याज्यम् , ' उड्ढनरयतिरियतिलोयपइट्ठाण ' ऊर्ध्वनरकतिर्यक्त्रिलोकप्रतिष्ठानम्=ऊर्ध्वलोको नरकलोकस्तिर्यग्लोक एतेषांतद्रूप यत् त्रैलोक्य तत्र प्रतिष्ठानम् =अवस्थिति र्येन मैथुनेन यत्तत्तथा लोकत्रये चतुर्गतिभ्रामकमित्यर्थ , तथा 'जरा मरणरोगसोगबहुल ' जन्मजरामरणरोगशोकाद्यनन्तदुःखसम्भृतम् , ' वध बंधविघायदुव्विघाय ' वधबन्धविघातदुर्विघातम्=तत्र वध =हनन बन्ध =रज्ज्वादिभिः संयमन, विघातः=मारण चैतैर्यैः दुर्विघातः=दुस्सहो विघातो=दुःखं यस्मिन् तत्तथा वधबन्धादिविविधदुःखजनकमित्यर्थ', ' दसणचरित्तमोहस्स हेउभूय ' दर्शनचारित्रमोहस्य हेतुभूत=दर्शनमोहस्य चारित्रमोहस्य च बन्धकारणम्-इदमब्रह्मजिनवचने शङ्काकाङ्क्षादिदोषोद्भावकत्वाद् दर्शनमोहस्य कारण, चारित्रभेदजनकत्वाच्चारित्रमोहस्येति भाव' । तथा ' चिरपचिय ' चिरपरिचित=

णजणवज्जणिज्ज) जो साधुजन हैं वे तो इस कृत्य को सदा त्याज्य ही मानते हैं (उड्ढ नरयतिरियतिलोयपइट्ठाण) इस मैथुन सेवन से जीवका परिभ्रमण उर्ध्वलोक मध्यलोक एव पाताललोक रूप त्रलोक्य में होता है। (जरामरण रोगसोगबहुल) यह कर्म जन्म, जरा, मरण, शोक आदि अनत दुःखोंसे भरा हुआ है। (वधबंधविघायदुव्विघाय) इसमे वध, बधन एव मरण जन्य दुः सह दुःख भरे हुए हैं। (दसणचरित्तमोहस्स हेउभूय) दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीय का यह हेतुभूत है। अर्थात्-यह अब्रह्म जिनवचन मे शका कांक्षा आदि दोषों का जनक होने के कारण दर्शन मोहका और चारित्रका विनाशक होने से चारित्र मोहनीय कर्म के बंध का कारण माना गया है। (चिरपरिचिय) जीवों के साथ इसका परिचय चिरकाल से जन्म जन्मान्तरों में आसेवित होते रहने के कारण चला आ रहा है। इसीलिये (अणुगय) यह

" सुयणजणवज्जणिज्ज " પણ સત્પુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યજવા યોગ્ય માને છે, ' उड्ढनरयतिरियतिलोकपइट्ठाण " એ મૈથુનના સેવનથી જીવને ઉર્ધ્વલોક અને પાતાળલોક, એ રીતે ત્રણલોકમા પરિભ્રમણ કરવુ પડે છે, " जरामरणरोगसोगमूल " તે કર્મ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનત દુ ખોથી ભરેલુ છે, " वधवधविघायदुव्विघाय " તેમા વધ, બધન અને મરણ જન્ય દુ સહ દુ ખો ભરેલા છે, " दसणचरित मोहस्स हेउभूय " તે દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કારણરૂપ છે, એટલે કે તે અબ્રહ્મ જિન-વચનોમા શકા કાક્ષા આદિ દોષોનુ જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રનુ વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનુ કારણ મનાયુ છે ' चिरपरिचिय " તે જન્મ જન્માન્તરોથી સેવાતુ હોવાને કારણે તેનો જીવોની સાથે

काम ! जानामि ते रूप, सङ्कल्पात् किल जायसे ।
न त्वा सकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥१ ॥

'बाहणा पदाण' बाधना पदाना=पदाना=सयमस्थानाना बाधना बाधोत्पादकत्वात् ७ । 'दप्पो' दर्पः=दृप्तजनैराचरितत्वात् ८, मोहः=मोहजननात्-वेदमोहनीयकर्मोदयसम्पाद्यत्वाद्वा मोहस्वरूप' ९, 'मणसखोभो' मनः सङ्क्षोभः =चित्तव्याकुलतोत्पादकत्वात् १०, 'अणिग्गहो' अनिग्रह =विषयेषु प्रवर्त्तमानस्य-

नाम सेवनाधिकार है ५ । सकल्प विकल्पों से यह उत्पन्न होता है इसलिये इसका नाम सकल्प है ६ । कहा भी है--

" काम ! जानामि ते रूप, सकल्पात् किल जायसे ।
न त्वा सकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ १ ॥

हे काम ! मैं तेरे स्वरूपको जानता हू, तू निश्चयतःमानसिक सकल्प से उद्भूत होता है । अतः मैं जब तेरा सकल्प ही नहीं करूँगा तो फिर तू कैसे उत्पन्न होगा ? ॥

यह सयम के स्थानों मे बाधा का उत्पादक होता है इसलिये इसका नाम पद बाधना है ७ । जो मनुष्य दृप्त-मदोन्मत्त होते हैं-उन्हीं के द्वारा यह आचरित किया जाता है अतः इसका नाम दर्प है । यह वेदरूप मोहनीय कर्म के उदय से उद्भूत होता है इसलीये इसका नाम मोह है ९ । इसके निमित्त से चित्त में एक प्रकार की व्याकुलता उत्पन्न होती है इसलिये इसका नाम मनःसक्षोभ है १० । जिस समय इसका

લાગે છે, તેથી તેનુ નામ "सेवनाधिकार" છે, '૬' સકલ્પવિકલ્પોથી તે ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેનુ નામ "सकल्प" છે, કહ્યુ પણ છે—

" काम ! जानामि ते रूप, सकल्पात् किल जायसे ।
न त्वा सकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ १ ॥ "

હે કામ ! હુ તારા સ્વરૂપને ઓળખુ છુ, તુ અવશ્ય માનસિક સકલ્પોથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, તો હુ તારો સકલ્પ જ નહી કરૂ તો તુ ક્યાથી ઉત્પન્ન થઇશ ? ॥ २ ॥

'૭' તે સયમના સ્થાનોમા મુશ્કેલીઓ પેદા કરનાર છે, તેથી તેનુ નામ "पद्बाधना" છે, '૮' મદોન્મત્ત મનુષ્ય દ્વારા જ તે સેવાય છે, તેથી તેનુ "दर्प" છે, '૯' તે વેદરૂપ મોહનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેનુ નામ "मोह" છે, ૧૦' તેને કારણે ચિત્તમા એક પ્રકારની વ્યાકુળતા ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તેનુ નામ "मन सक्षोभ" છે '૧૧' જ્યારે શરીરમા તેનો

'तीस हुंति' त्रिंशद् भवन्ति 'तंजहा' तानि यथा 'अबंभ' अब्रह्म=अकुशलानुष्ठानम् १, 'मेहुण' मैथुन=मिथुनस्य=स्त्रीपुरुषयुगलस्य कर्म मैथुनम् २, 'चरंत' चरत्=संसारव्यापकम्३, 'संसग्गि' संसर्गि=स्त्रीपुरुषसम्बन्धसंजातम्४, 'सेवणाहिगारो' सेवनाधिकारः=सेवनायां=चौर्यादिप्रतिसेवनायामधिकारः, मैथुनसेवी प्रायश्चौर्यादिषु प्रवृत्तो भवति५। 'संकप्पो' सङ्कल्प = सङ्कल्पविकल्पजातत्वात् सङ्कल्पः ६, उक्तं च—

गुणनिष्पन्न (णामाणि) नाम (इमाणि) ये (तीस) तीस (हुंति) हैं। (तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(अबंभ १, मेहुण२, चरंत३, संसग्गि ४, सेवणाहिगारो५, संकप्पो६, बाहणापदाण ७, दप्पो८, मोहो९, मणसंखोभो१०, अणिग्गहो ११, विग्गहो १२ विघाओ १३, विभंगो १४, विब्भमो १५, अहम्मो १६, असीलया १७, गामधम्मतत्ती १८, रत्ती १९, रागचिंता २०, कामभोगमारो २१, वेरं २२, रहस्सं २३, गुज्झं २४, बहुमाणो २५, बंभचेरविग्घो २६, वावत्ती २७, विराहणा २८, पसंगो २९, कामगुणो ३० त्ति वि य। तस्स एयाणि एवमाइणि नामधेज्जाणि तीस हुंति) यह कर्म अकुशलानुष्ठानरूप है, इसलिये इसका नाम अब्रह्म है १। स्त्री और पुरुष रूप मिथुन परस्पर मिलकर इसे करते हैं, इस लिये इसका नाम मैथुन है २। यह समस्त संसार में व्यापक है इसलिये इसका नाम चरंत है ३। स्त्री और पुरुषों के पारस्परिक संसर्ग से यह उत्पन्न होता है इसलिये इसका नाम संसर्गी है ४। जो मैथुन सेवी होता है वह प्रायःचौर्यादिकुकर्मों मे प्रवृत्त हो जाता है इसलिये इसका

"इमाणि" આ "तीस" ત્રીસ નામ "हुंति" છે "तंजहा" તે આ પ્રમાણે છે "अबंभ १, मेहुण २, चरंत ३, संसग्गि ४, सेवणाहिगारो ५, संकप्पो ६, बाहणापदाण ७ दप्पो ८, मोहो ९, मणसंखोभो १०, अणिग्गहो ११, विग्गहो १२, विघाओ १३, विभंगो १४, विब्भमो १५, अहम्मो १६, असीलया १७, गामधम्मतत्ती १८, रत्ती १९ रागचिंता २०, कामभोगमारो २१, वेरं २२, रहस्सं २३ गुज्झं २४, बहुमाणो २५, बंभचेरविग्घो २६, वावत्ती २७, विराहणा २८, पसंगो २९, कामगुणो ३० त्ति वि य। तस्स एयाणि एवमाइणि नामधेज्जाणि तीस हुंति" (१) આ કર્મ અકુશલ અનુષ્ઠાન હોવાથી તેનુ નામ "अब्रह्म" છે (૨) સ્ત્રી અને પુરુષનુ "मिथुन" (જોડુ) પરસ્પર મળીને તેનુ સેવન કરે છે, તે કારણે તેનુ નામ "मैथुन" છે (૩) તે સમસ્ત સંસારમા વ્યાપક હોવાથી તેનુ નામ "चरंत" છે (૪) સ્ત્રી અને પુરુષના પરસ્પરના સંસર્ગથી તે ઉત્પન્ન થતુ હોવાથી તેનુ નામ "संसर्गी" છે, (૫) મૈથુન સેવનાર હોય છે તે સામાન્ય રીતે ચોરી આદિ કુકર્મો પણ સેવવા

चिन्ता-चिन्तनम् २०, कामभोगमारः=कामभोगमाररूपम्-कामरूप, भोगरूप, माररूप, चेत्यर्थः २१, 'वेर' वैर=शत्रुत्वोत्पादकत्वात् २२, 'रहस्स' रहस्यम् =एकान्तसम्पादनीयत्वात् २३, 'गुज्झ' गुह्य=गोपनीयत्वात् २४, 'बहुमाणो' बहुमानः=बहु-अतिशयेन मानः=आदरो यस्मिन् प्राणिना स २५,'बंभचेरविग्घो' ब्रह्मचर्यविघ्न=ब्रह्मचर्यस्य=विघातकत्वाद् विघ्न =विघ्नभूतः २६, 'वावत्ती' व्यापत्तिः=विनाशः आत्मगुणविनाशकत्वात् २७, 'विराहणा' विराधना=चारित्र धर्मस्य विराधकत्वात् २८, 'पसगो' प्रसङ्ग =स्त्रीपुंसयोगः २९, कामगुणः = शब्दादिविषयभोगजनकत्वात् ३० 'त्ति विय' इत्यपि च त्रिंशत्तम नाम।

का उनके रूप लावण्य आदि का चिन्तवन होता है इसलिये इसका नाम रागचिन्ता है २०। यह कामरूप, भोगरूप और माररूप होता है इसलिये इसका नाम कामभोगमार है २१। इसके निमित्त से जीवों में परस्पर शत्रुता उत्पन्न हो जाती है इसलिये इसका नाम वैर है २२। यह कर्म एकान्त में किया जाता है इसलिये इसका नाम रहस्य है २३। यह सदा गोपनीय होता है इसलिये इसका नाम गुह्य है २४। इसमें प्राणीयों को अतिशय आदर भाव-सेवन करने मे लालसा-रहता है, इसलिये इसका नाम बहुमान है २५। यह ब्रह्मचर्य व्रतका विघातक होता है इसलिये इसका नाम ब्रह्मचर्य विघ्न है २६। आत्मगुणों का इसमें विनाश हो जाता है इसलिये इसका नाम व्यापत्ति है २७। चारित्र धर्मका यह विराधक होता है इसलिये इसका नाम विराधना- है २८। इसमें स्त्री और पुरुष दोनों के शरीर का संयोग होता है इसलिये इसका नाम प्रसग है २९। शब्दादिक विषयो में यह भोगने की रुचिका जनक होता है इसलिये इसका नाम कामगुण है ३०। इस

તેનુ નામ "रागचिन्ता" છે, '૨૧' તે કામરૂપ, ભોગરૂપ અને મારરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ "कामभोगमार" છે '૨૨' તેને કારણે જીવોમા પરસ્પર દુશ્મનાવટ પેદા થાય છે, તેથી તેનુ નામ "वैर" છે '૨૩' તે કર્મ એકાંતમા કરાતુ હોવાથી તેનુ નામ "रहस्य" છે, '૨૪' તે સદા ગોપનીય હોય છે, તેથી તેનુ નામ "गुह्य" છે, ૨૫' તેના પ્રત્યે પ્રાણીઓને અત્યંત આદરભાવ- લાલસા રહે છે, તેથી તેનુ નામ "बहुमान" છે, '૨૬' તે બ્રહ્મચર્યવ્રતનુ વિઘાતક તોડાવનાર' હોવાથી તેનુ નામ "ब्रह्मचर्यविघ्न" છે '૨૭' તેના સેવનથી આત્મગુણોનો નાશ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "व्यापत्ति" છે (૨૮) તે ચારિત્રધર્મનુ વિરાધક હોવાથી તેનુ નામ "विराधना" છે (૨૯) તેમા સ્ત્રી તથા પુરુષના શરીરનો સયોગ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "प्रसग" છે' ૩૦' શબ્દાદિક વિષયોના ઉપભોગની રુચિનુ જનક હોવાથી તેનુ નામ "कामगुण" છે, આ

मनसोऽनिषेधः ११। 'विग्गहो' विग्रहः=विग्रहकारित्वात् १२, 'विघाओ' विघातः=चारित्रविनाशरूपः १३, 'विभगो' विभङ्गः=सयमादिगुणाना विशेषेण भञ्जकत्वात् १४, 'विब्भमो' विभ्रमः = अनुपादेयेष्वप्युपादेयत्वेन नानाविध भ्रान्तिजनकत्वात् १५, 'अहम्मो' अधर्मः=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मप्रतिकूलत्वात् १६, 'असीलया' अशीलता=चारित्र वर्जितत्वात् १७, 'गामधम्मतत्ती' ग्रामधर्म तृप्तिः=ग्रामधर्मा'=शब्दादयः कामगुणास्तेषा तृप्तिः=आसेवनम् १८, 'रत्ती' रतिः =अशुभरागः१९, रागचिन्ता=रागः=रागकारणत्वात् स्त्रीशृङ्गाररूपलावण्यादिः तस्य

आवेग शरीर में जागृत होता है उस समय इन्द्रिया अथवा मन बेकाबू हो जाता है अतः इसका नाम अनिग्रह है ११। इसके पीछे ही भयकरसे भयकर विग्रह उत्पात खड़े होते हैं इसलिये इसका नाम विग्रह हैं १२। यह चारित्रका विघातक होता है। इसलिये इसका नाम विघात है१३। सयम आदि गुणोका यह विशेषरूपसे भजक होता है इसलिये इसका नाम विभग है १४। जो अनुपादेय पदार्थ होते हैं उनमे भी यह उपादेयरूपसे नानाप्रकार की भ्रान्ति का जनक होता है इसलिये इसका नाम विभ्रम है १५। श्रुतचारित्र रूप धर्म से यह प्रतिकूल है इसलिये इसका नाम अधर्म है १६। इसमें चारित्र नही होता है इसलिये इसका नाम अशीलता है १७। इसमें ग्रामधर्म जो शब्दादिक काम गुण हैं उनका सेवन होता है इसलिये इसका नाम ग्रामधर्म है १८। यह अशुभ रागरूप है इसलिये इसका नाम रति है १९। इसमें स्त्रियों के शृगार

આવેગ જાગૃત થાય છે ત્યારે ઇન્દ્રિયો તથા મન કાબૂમા રહેતા નથી, તેથી તેનુ નામ "अनिग्रह" છે '૧૨' તેને કારણે જ ભયકરમા ભયકર વિગ્રહ-ઉત્પાત ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેનુ નામ "विग्रह" છે, '૧૩' તે ચારિત્રનુ વિઘાતક હોવાથી તેનુ નામ "विघात" છે, '૧૪ સયમ આદિ ગુણોનુ ભજક 'નાશ કરનાર' હોવાથી તેનુ નામ "विभग" છે, '૧૫' જે અનુપાદેય પદાર્થો હોય છે તેમા પણ ઉપાદેયરૂપે વિવિધ પ્રકારની ભ્રાન્તિ 'ભ્રમ' નુ જનક હોવાથી તેને "विभ्रम" કહે છે '૧૬, શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની વિરૂદ્ધ હોવાને કારણે તેને "अधर्म" કહે છે '૧૭' તેનુ સેવન કરનારમા ચારિત્ર હોતુ નથી, તેથી તેનુ નામ "अशीलता" છે, '૧૮' તેમા ગ્રામધર્મ કે જે શબ્દાદિક કામગુણ છે તેમનુ સેવન થાય છે' તેથી તેનુ નામ "ग्रामधर्मतृप्ति" છે, '૧૯' છે અશુભ રાગ રૂપ હોવાથી તેનુ નામ "रति" છે '૨૦' તેમા સ્ત્રીઓના શ્રૃગારનુ તથ તેમના રૂપ લાવણ્ય આદિનુ ચિન્તવન થાય છે, તેથી

के ? इत्याह–'असुर–भुयग गरुल-विज्जु-जलण–दीव–उदहि–दिसि–पवण थणिय अणपन्निय – पणपन्निय-इसिवाइय–भूयवाइय–कंदिय–महाकंदिय–कुहंड– पयग देवा ' तत्र असुराः=असुरकुमाराः, 'भुयग' भुजगाः=नागकुमाराः 'गरुल' गरुडाः=सुवर्णकुमारा. 'विज्जु' विद्युत् कुमाराः 'जलण' ज्वलनाः=अग्निकुमाराः 'दीव' द्वीपाः=द्वीपकुमाराः 'उदधिकुमारा 'दिसि' दिक्कुमारा 'पवण' वायुकुमारा' 'थणिय' स्तनितकुमारा , दशैते भवनपतिदेवा । 'अण पन्निय पणपन्निय' अणपन्निका पणपन्निकाः 'इसिवाइय' ऋषिवादिकाः 'भूयवाइय' भूतवादिकाः 'कंदिय' क्रन्दिताः 'महाकंदिय' महाक्रन्दिताः 'कुहंड' कुष्माण्डा' 'पयग' पतङ्गाश्च ते च ते देवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायोपरिवर्तिनः। व्यन्तरदेवजातिविशेषा' । तथा ' पिसाय–भूय–जक्ख–रक्खस–किण्णर–किंपुरिस महोरग–गधव्व–तिरिय–जोइस–विमाणवासि–मणुयगणा' तत्र 'पिसाय' पिशाचाः १।' भूय ' भूता २ । ' जक्ख ' यक्षा. ३, ' रक्खस ' राक्षसा ४, ' किण्णर ' किन्नरा ५, ' किं पुरिस ' किम्पुरुषा'६, 'महोरग' महोरगाः७, 'गधव्व' गन्धर्वाश्च

अप्सराओ के साथ (निसेविंति) सेवन करते हैं । तथा (असुर भुयग-गरुल– विज्जु – जलण – दीव–उदहि–दिसि–पवण–थणिय–अणपन्निय-पणपन्निय-इसिवाइय–भूयवाइय–कंदिय–महाकंदिय–कुहंड पयग देवा) असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार, ये१० दस भवनपति देव, तथा–अणपन्निक, पणपन्निक, ऋषिवादिक, भूतवादिक, क्रंदित महाक्रन्दित कुष्माड, पतग, ये आठ व्यन्तर जातिके देव विशेष, (पिसाय भूय-जक्ख रक्खस-किन्नर-किंपुरिस– महोरग–गधव्व–तिरिय– जोइस– विमाणवासि–मणुयगणा) तथा पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर,

रा" અપ્સરાઓ સાથે " निसेविंति " સેવન કરે છે તથા " असुर, गरुल, विज्जु, जलण, दीवउदहि, दिसि, पवण, थणिय, अणपन्निय, पणपन्निय, इसिवाइय, भूयवाइय, कंदिय, महाकंदिय, कुहंड पयग-देवा " અસુરકુમાર, નાગકુમાર સુપર્ણકુમાર, વિદ્યુતકુમાર, અગ્નિકુમાર, દ્વીપકુમાર, ઉદધિકુમાર, દિક્કુમાર, વાયુકુમાર, અને સ્તનિતકુમાર, એ દસ ભવનપતિ દેવ, તથા અણુપન્નિક, પણુ પન્નિક ઋષિવાદિક, ભૂતવાદિક, ક્રંદિત, મહાક્રંદિત, અને પતગ, તે આઠ વ્યન્તર જાતિના દેવ, " पिसाय, भूय, जक्ख, रक्खस, किंन्नर, किंपुरिस, महोरग, गधव्व, तिरिय, जोइस, विमाणवासि, मणुयगणा " તથા પિશાચ, ભૂત, યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર, કિંપુરુષ, મહોરગ ગંધર્વ એ આ૦ વ્યન્તર દેવ તથા તિર્યગ્

'एयाणि' एतानि = पूर्वोक्तानि 'अवमाईणि' अब्रह्मादीनि=अब्रह्मेत्यादीनि 'तस्स' तस्य=अब्रह्मणः 'नामधेज्जाणि' नामधेयानि=नामानि 'तीस' त्रिंशद् 'हुति' भवन्ति ॥ सू० २ ॥

एवमब्रह्मणः 'यन्नामे' ति द्वितीयमन्तर्द्वारमुक्तम् । अथ तृतीय चतुर्थेचान्त द्वारमनुक्त्वा साम्प्रत ये च कुर्वन्ती' इत्येतत्पञ्चममन्तर्द्वारमाह–'त च पुण' इत्यादि

मूलम्—त च पुण निसेविंति सुरगणा स अच्छरा मोह-मोहियमई - असुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण--दीव-उदहि-दिसिपवण-थणिय अणपन्निय-पणपन्निय-इसिवाइय-भूय-वाइय-कंदिय महाकंदिय-कूहड-पयंगदेवा, पिसायभूय-जक्ख रक्खस–किंणर–किंपुरिस–महोरग – गंधव्वा, तिरिय-जोइसविमाणवासि – मणुयगणा जल – यर – थलयर खहयरा य मोहपडिवद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसि-या तण्हाए बलवइए महईए समभिभूया गढिया य अति-मुच्छिया य अवंभे ओसण्णा तामसेण भावेण अणुमुक्का दसण चरित्तमोहस्स पजर पिव करेंति अण्णमण्ण सेवमाणा ॥सू०३॥

टीका—'त च पुण' तच्चपुनरब्रह्म 'निसेविंति' निषेवन्ते । के ते? इत्याह–सुरगणाः=देवसमूहाः 'स अच्छरा' साप्सरसः=अप्सरोभिः सहिताः 'मोहमहिय' मोहमोहितमतय =मोहेन–मोहिता मतिः=बुद्धिर्येषा ते तथा । पुन'

प्रकार ये अब्रह्म आदि पूर्वोक्त तीस नाम इस चतुर्थद्वारके हैं ॥ सू०२॥

अब सूत्रकार तृतीय चतुर्थ द्वार को न कह कर पचम अन्तर्द्वारको कहते हैं— 'तच्च पुण' इत्यादि ०।

टीकार्थ –(तच्च पुण) इस चतुर्थ द्वार अब्रह्म का(सुरगणा) सुरगण की जिनकी (मोहमोहियमई) मति मोह से मोहित हो रही है (स अच्छरा)

પ્રમાણે ચોથા અધર્મ દ્વારના અબ્રહ્મ આદિ ત્રીસ પૂર્વોક્તનામ છે ॥ સૂ૦ ૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ત્રીજા તથા ચોથા દ્વારનુ વર્ણન ન કરતા પહેલા પાચમા અન્તર્દ્વારનુ વર્ણન કરે છે— "त च पुण" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–'त च पुण" તે ચોથા દ્વારરૂપ અબ્રહ્મનુ "सुरगणा" સુરગણ કે જેમની "मोहमोहियमई" મતિ મોહથી મોહિત થયેલ હોય છે "सअच्छ

य' ग्रथिताश्च=विषयगुम्फितमानसा', तथा 'अज्झुच्छियाय' अतिमूर्छिताश्च= अतिमोहातिशयमुपगताः 'अबभे ओसण्णा' अब्रह्मणि अवसन्नाः=मैथुने समासक्ताः, 'तामसेण भावेण अणुमुक्का' तामसेन भावेन=अनुमुक्ताः, तामसेन भावेन= अज्ञानप्रवर्तितेन परिणामेन अनुमुक्ताः=आबद्धाः सन्त, अत्र-'अन्नोन्न सेव माणा' इत्यग्रेण सम्बन्ध. अन्योन्य=परस्पर पुरुषैः सह स्त्रियः, स्त्रीभिः सह पुरुषा इत्यर्थः सेवमानाः=अब्रह्मसमाचरन्तः, 'दसणचरित्तमोहस्स' दर्शनचारित्रमोह- स्य=' अत्र कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षाया षष्ठी, दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयरूप द्विविध कर्म 'पजर पिव' पञ्जरमिव 'करे ति' कुर्वन्ति-अब्रह्मसेविनो देवादयः खलु दर्शनमोहनीय-चारित्रमोहनीयरूपपञ्जरे स्वात्मान नयन्तीति भावः ॥सू० ३॥

साम्प्रत चक्रवर्त्यादीन् वर्णयति 'भुज्जो असुरसुर' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो असुर-सुर तिरिय-मणुय-भोगरति-विहार सपउत्ता य चक्कवट्टी-सुर-नरवाइ-सक्कया, सुरवरव्व देवलोए

सेवन करने की आज्ञा से गुफित मन होकर (अज्झुच्छिया य) उन विषयों मे अत्यत मोहको प्राप्त होते रहते है और (अबभे ओसण्णा) अब्रह्म के सेवन करने के लिये अत्यत आसक्त हो जाते हैं। (तामसेण- भावेण अणुमुक्का) तामसभाव से-अज्ञानप्रवर्तित परिणाम से-आबद्ध होकर परस्पर मे-एक दूसरे के साथ पुरुष के साथ स्त्री, और स्त्री के साथ पुरुष रमण करने लग जाते है। इस तरह (अन्नोन्न सेवमाणा) इस अब्रह्मरूप पापकर्मको सेवन करने वाले ये देवादिक अपनी आत्मा को (दसणचरित्तमोहस्स पजर पि व करेति) पजर के जैसे दर्शन मोह- नीय एव चारित्र मोहनीय कर्म मे निक्षिप्त कर देते है। अर्थात् इन कर्मो का बध करते है ॥ सू० ३ ॥

તેઓ વ્યાકુળ થાય છે તેથી "गढियाय" વિષયોનુ સેવન કરવાની આશામા લીન થઈને "अज्झुच्छियाय,, તેમનુ મન તે વિષયો પ્રત્યે અત્યત મોહાસકત થયા કરે છે, અને "अबभेओसण्णा" તેઓ મૈથુનનુ સેવન કરવાને અત્યત આસકત થાય છે भावेण अणुमुक्का" તામસ ભાવથી-અજ્ઞાન પ્રવર્તિત પરિણામથી- જકડાઈને પરસ્પરમા-પુરુષની સાથે સ્ત્રી, અને સ્ત્રીની સાથે પુરુષ-રમણ કરવા લાગી જાય છે આ રીતે "अन्नोन्न सेवमाण" આ અબ્રહ્મચર્યરૂપ પાપકર્મનુ સેવન કરનાર દેવાદિક પોતાના આત્માને "दसणचरित्तमोहस्स पजर पि व करे ति"- પિંજરા જેવા દર્શનમોહનીય અને ચારિત્ર મોહનીય કર્મમા નાખી દે છે એટલે કે તે કર્મોના બધ બાધે છે ॥ સૂ૦ ૩ ॥

८, एतेऽष्टौ व्यन्तरभेदाः । तथा तिरिय-जोइस-विमाण-वासि' तिर्यग्ज्योतिर्विमानवासिनः=तिरश्चि=तिर्यग्लोके यानिज्योतिर्विमानानि तेषु निवासिनोऽसख्याता ज्योतिष्काः ' मणुय ' मनुजा'=मनुष्याश्च तेषां गणाः=समूहाः । तथा ' जलयर थलयर खह-चराय ' जलचर स्थलचर खेचराश्च, तत्र जलचरा' = मत्स्यादयः, स्थलचराः=गोमहिष्यादय' खेचराश्च=पक्षिणस्ते तथा, एते सर्वे मैथुन निषवन्त इति पूर्वेण सम्बन्धः । कीदृशास्ते इत्याह—' मोहपडिबद्धचित्ता ' मोहप्रतिबद्ध चित्ताः=मोहेन=अज्ञानेन प्रतिबद्ध=ग्रसित चित्त येषां ते तथा ' अवितण्हा ' अवितृष्णाः=विषयलोलुपाः–प्राप्तकामोपभोगेनाप्यनुपशान्तचित्ता इत्यर्थ', ' कामभोगतिसिया ' कामभोगतृषिताः–अप्राप्तकामभोगेषु तत्प्राप्तिचिन्तापरायणाः, एतादृशास्ते ' बलवईए ' बलवत्या=प्रगाढया ' महईए ' महत्या विशालया ' तण्हाए ' तृष्णया=विषयवाञ्छया ' अभिभूया ' अभिभूता =आक्रान्ता ' गढिया

किं पुरुष, महोरग, गधर्व, ये आठ व्यन्तर देव, तथा तिर्यग्लोक में जितने ज्योतिषियों के विमान है उन विमानों में रहने वाले असख्यात ज्योतिषी देव, तथा मनुष्यों का समूह, (जलयरथलयरखहचरा य) मत्स्य आदि जलचर जीव, गोमहिषी आदि स्थलचर जीव, एव आकाश में उड़ने वाले पक्षी, सब मैथुन सेवन करते हैं। क्यों कि ये सब (मोहपडिबद्धचित्ता) अज्ञान से ग्रसित हे चित्त जिन्हों का ऐसे होते हैं। एव (अवितण्हा) प्राप्तकामोपभोग मे भी इनका चित्त शात नहीं हो पाता है। कारण (काम भोगतिसिया) जो कामभोग इन्हें प्राप्त नही होते हैं उनमें उनकी प्राप्तिकी आशासे चिन्ता से इनका चित्त चलायमान होता रहता है। ऐसा इसलिये होता है कि ये (बलवईए) प्रगाढ एव (महईए) विशाल (तण्हाए) विषयाभिलाषा से (अभिभूया) आक्रान्त हो जाते हैं। इसीलिये ये (गढियाय) विषयों के

લોકમા જેટલા જ્યોતિષીઓના વિમાન છે તે વિમાનોમા રહેતા અસખ્યાત જ્યોતિષદેવ, તથા મનુષ્યોનો સમૂહ, તથા " जलयर, थलयर, खहचराय " મત્સ્ય આદિ જળચર જીવો, ગાય ભેસ આદિ સ્થળચર જીવ, અને આકાશમા ઉડતા પક્ષીઓ, તે સૌ મૈથુનનુ સેવન કરે છે, કારણ કે તે સૌના ચિત્ત " मोहपडिबद्धचित्ता " અજ્ઞાનથી જકડાયેલા હોય છે, અને ,, अवितण्हा " કામભોગ ભોગવવા મળે તો પણ તેમના ચિત્તને શાતિ મળતી નથી કારણ કે " कामभोग तिसिया " જે કામભોગ તેમને પ્રાપ્ત થતા નથી તેની લાલસાથી તેમના ચિત્ત ચલાયમાન રહે છે એમ થવાનુ કારણ એ છે કે " बलवईए " પ્રગાઢ અને " महईए " વિશાળ " तण्हाए " વિષયાભિલાષાથી " अभिभया "

मनुजाः=मनुष्या-माडलिकादयश्च तेभ्यः-तत्सकाशाद् ये भोगाः=शब्दादय', तेषु या रतिः=अनुरागस्तेन ये विहाराः=विविधप्रकारचेष्ठारूपाः क्रीडाः, तैः सम्प्रयुक्ताः=सहिताः ये ते तथा के ते ? इत्याह—'चक्कवट्टी' चक्रवर्तिनः, कीदृशास्तेचक्रवर्तिन ? इत्याह—'सुरनरवइ सक्कया' सुरनरपतिसत्कृताः= सुरैः=देवैः नरपतिभिः=नृपैश्च, यद्वा 'पति' शब्दस्य प्रत्येक सम्बन्धात् सुरपतिभिर्नरपतिभिश्चेत्यर्थः, सत्कृताः=सम्मानिताः, 'देवलोए' देवलोके 'सुरवरव्व' सुरवरा इव=महर्द्धिक देवा इव। देवलोके यथा देवाः सुखमनुभवन्तः 'भरहनगणगर — निगमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकब्बडमडंबसंवाहपट्टणसहस्समंडिय' तत्र 'भरह' भरतस्य=भारतवर्षस्य सम्बन्धिनो ये नगाः=पर्वताः 'णगर' नगराणि=अष्टादशकरवर्जितानि, 'णिगम' निगमाः=वणिग्जननिवासाः 'जणवय' जनपदाः=देशाः, पुरवराणि=राजधानीरूपाणि, 'दोणमुह' द्रोणमुखानि=जलस्थलमार्गयुक्तानि 'खेड' खेटानि=धूलिप्राकारमयानि 'कब्बड' कर्वटानि=

प्राणियों मनुष्यों-माडलिक राजा आदि जनों के द्वारा सपादित शब्दादिक भोगो में अनुराग जन्य विविध प्रकारकी चेष्टारूप क्रीडाओं से युक्त ऐसे(चक्कवट्टी)चक्रवर्ती भी इन कामभोगो से तृप्त नही होते हैं (सुरनरवइसक्कया) जो चक्रवर्ती सुरों से-देवताओं से, अथवा सुरपतियों-इन्द्रों से एव नरपतियों-राजाओं से विशेषरूप में सदा सन्मानित किये जाते हैं तथा (देवलोए सुरवरव्व) जिस प्रकार देवलोक में महर्द्धिक देव सुखोंको भोगा करते है उसी प्रकार जो सुखोंको भोगते हैं। तथा जो (भरहनग णगर-णिगम-जणवय-पुरवर-दोणमुह- खेडकब्बड--मडंब संवाहपट्टण सहस्स मंडिय) भारतवर्ष सबधी हजारो १८अठारहप्रकार के करों से रहित नगरों से, वणिग्जननिवासभूत हजारो निगमों से, हजारों देशों से, राजधानियारूप श्रेष्ठ पुरो से, जलमार्ग स्थलमार्ग

રાજા આદિ લોકો દ્વારા મપાદિત શબ્દાદિક ભોગોમા અનુરાગ જન્ય વિવિધ પ્રકારની ચેષ્ટારૂપ ક્રીડાઓથી યુક્ત એવા "चक्कवट्टी" ચક્રવતી પણ કામભોગોથી તૃપ્ત થતા નથી "सुरनरवइसक्कया" જે ચક્રવતીઓનુ દેવતાઓ વડે, સુરપતિઓ ઇન્દ્રો વડે અને નૃપતિઓ વડે સદા વિશેષરૂપે સન્માન કરાય છે, તથા "देवलोए सुरवरव्व" દેવલોકમા જેમ મહર્દ્ધિક દેવો સુખો ભોગવ્યા કરે છે, એજ પ્રમાણે જે સુખો ભોગવે છે, એવા ચક્રવતીઓ પણ કામભોગોથી તૃપ્તિ પામતા નથી, તથા જે "भरह-नग-णगर-णिगम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेडकब्बड-मडंब-संवाह-पट्टण-सहस्स-मंडिय" ભારતવર્ષના હજારો પર્વતોથી, અઢાર પ્રકારના કરોથી રહિત નગરોથી, વણિક લોકો રહેતા હોય એવા હજારો નિગમોથી, હજારો દેશોથી, હજારો રાજધાનીરૂપ શ્રેષ્ઠ શહેરોથી, જળમાર્ગ

भरह-नग णगर-निगमजणवय-पुरवणदोणमुह खेड कव्वड-मडवसवाहपट्टणसहस्स-मंडिय-थिमिय-मेयणियं एगच्छत्त ससागर भुजिऊणवसुह नरसीहा-नरवई-नरिंदा-नरवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहिय रायतेयलच्छीए दीप्पमाणा सोम्मा रायवंसतिलगा रवि-ससि-सख-वरचक्क सोत्थिय पडाग-जव-मच्छकुम्मरहवर-भग-भवण-विमाण-तुरग-तोरण-गोपुर मणि रणय-नंदियावत्त-मुसल-लगल-सुरइयवरकप्प रुक्ख मिगवइ-भद्दासण-सुरुइ-थूभ वरमउड-सरिय-कुडल कुंजर-वरवसभ-दीव-मदर-गरुलज्झय-इदकेउ-दप्पण--अट्ठा-वय-चाव-बाण-नक्खत्त-मेह-मेहल-वीणा-जुग-छत्त-दाम-दामिणि-कमडलु-कमल-घटा-वरपोत सूची-सागर कुमुदागर-मगर-हार गागर-नेउर-णग-णगर-वइर-किण्णर-मयूर-वररायहस-सारस-चकोर चक्कवाग मिहुण चामर-खेडग-पव्वीसग-विपचि-वरतालियंट-सिरिया-भिसेय-मेयणि-खग्ग-कुस-विमल-कलस-भिंगार-वद्ध-माणगपसत्थउत्तमविभत्तवरपुरिसलक्खणधरा ॥ सू० ४ ॥

टीका—'भुज्जो' भूय=पुनरपि 'असुर-सुर-तिरिय मणुय भोगरइ-विहारसंपउत्ताय' असुरसुरतिर्यङ्मनुजभोगरतिविहारसंप्रयुक्ताश्च तत्र असुरा:=व्यन्तरा: अत्र-असुरशब्देन व्यन्तरा गृह्यन्ते, सुरा:=यक्षा', तिर्यञ्चः=अश्वरत्नगजरत्नादय:,

---

अब सूत्रकार चक्रवर्त्ती आदि को का वर्णन करते हैं—'भुज्जो असुर०' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(असुर-सुर तिरिय मणुय भोगरइ विहारसपउत्ताय) असुरों - व्यन्तरदेवो, सुरो - यक्षों तिर्यचों-अश्वरत्न गजरत्न आदि

હવે સૂત્રકાર ચક્રવર્તી આદિનું વર્ણન કરે છે—"भुज्जो असुर" ઈત્યાદિ "असुर, सुर, तिरिय मणुय, भोगरइविहारसपउत्ताय" અસુરો—વ્યંતર દેવો, સુરો, યક્ષો, તિર્યંચો-અશ્વરત્ન, ગજરત્ન, આદિ પ્રાણિઓ, મનુષ્યો માંડલિક

माण्डलिकावस्थाऽपेक्षयोक्तम् । अग्रे नु 'हिमवतसागर त धीरा भोत्तूणभरहवास' इत्युक्त तत् चक्रवर्तिपदप्राप्त्यनन्तर समस्तभरतक्षेत्रभोक्तृत्वापेक्षया प्रोक्तमिति बोध्यत् चक्रवर्त्तिन एव विशिनष्टि, 'नरसीहा' नरसिंहाः=नरेषु सिंहा इव शौर्यादिमत्त्वात् 'नरवई' नरपतय =नराणा स्वामिकत्वात् 'नरिंदा' नरेन्द्राः=नरेषु इन्द्रभूतत्वात् 'नरवसहा' नरवृषभा.=राज्यधुराधरणसामर्थ्यात् 'मरुयवसभकप्पा' मरुजवृषभकल्पाः=मरुजा =मरुदेशोत्पन्नाः वृषभाः=बलिवर्दाः, तत्कल्पाः=तत्समानाः ये ते तथा मरुदेशवृषभाहि शरीरसम्पत्त्या बहुभारवहनसमर्था भवन्तीति तैः सहोपमानम् । 'अब्भहि य' अभ्यधिकम्—अत्यधिक यथास्यात्तथा 'रायतेयलच्छीए दीप्पमाणा' राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमानाः=राजप्रतापश्रिया देदीप्यमानाः 'सोम्मा' सौम्याः=शान्तस्वरूपाः 'रायवसतिलगा' राजवशतिलकाः= राजकुम्मण्डनभूताः, तथा 'रविः=सूर्यः १, 'ससि' शशी=चन्द्रः २, 'सख'

विशिष्ट शौर्यादि सपन्न होने के कारण नरो में सिंह की तरह होकर नरसिंह (नरवई) मनुष्यो के स्वामी होने के कारण नरो के पति (नरिंदा) नरो में इन्द्र जैसे होने के कारण नरेन्द्र (नरवसहा) समस्त राज्य धुराके धारण करने में सामर्थ्यशाली होने के कारण मरुज वृषभ जैसे—मारवाड़ के बलीवर्द जैसे—मारवाड़ के बैल अपनी शरीररूपी सपत्ति से बहुत अधिक भार को वहन करने वाले होते हैं—इसलिये उन के साथ यह सादृश्य घटित किया है। तथा (अब्भहिय रायतेयलच्छीए दीप्पमाणा) बहुत अधिकरूप में राजलक्ष्मी से देदीप्यमान, (सोम्मा) शांतस्वरूप और (रायवसतिलगा) राजकुल के मडनभूत होते हैं एव जो (रविससिसखवरचक्क) रवि शशि शख चक्र इत्यादि—लक्षणो के धारण करनेवाले, अर्थात्—रवि—सूर्य शशि—चद्रमा तथा शख, श्रेष्ठचक्र

શૌર્ય આદિથી યુક્ત હોવાને કારણે નરોમા સિહ જેવા હોવાથી નરસિહ, "नरवई" મનુષ્યોના સ્વામી હોવાને કારણે નૃપતિ, "नरिंदा" નરોમા ઈન્દ્ર સમાન હોવાથી નરેન્દ્ર, "नरवसहा" સમસ્ત રાજ્યધુરાનુ વહન કરવાને સમર્થ હોવાને કારણે નરવૃષભ અથવા મરુજવૃષભ જેવા,—મારવાડના બળદ જેવા—"મારવાડના બળદ મજબૂત હોવાને કારણે વધારે ભાર ઉપાડી શકે છે તેથી તેમની સાથે આ સરખામણી કરવામા આવી છે' તથા 'अब्भहिय-रायतेयलच्छीए दीप्पमाणा" રાજલક્ષ્મી વડે બહુ જ વધારે દેદીપ્યમાન, "सोम्मा" શાન્ત સ્વરૂપ સૌમ્ય, અને "रायवसतिलगा" રાજવશોની શરૂઆત કરનારા, અને જે "रविससिसखवरचक्क" "સૂર્ય, ચન્દ્ર, શખ ચક્ર" ઈત્યાદિ લક્ષણોને ધારણ કરનારા, એટલે કે સૂર્ય ચન્દ્ર, શખ, શ્રેષ્ઠ ચક્ર,

अल्पजननिवासस्थानानि ' मडंब ' मडम्बाः=सार्धक्रोशद्वयग्रामान्तरशून्याः, संवाहाः =धान्यादिरक्षणदुर्गविशेषाः ' पट्टण ' पत्तनानि=सकलवस्तुप्राप्तिस्थानानि चैरपां तेषां यानि सहस्राणि तैः ' मंडिय ' मण्डिता या सा तथा तां ' थिमियमेयणिय' स्तिमितमेदनीकां = निश्चलमजां निरस्तसमस्तशत्रुजनादिभयरहितजनयुक्ताम्, ' एगच्छत्त ' एकच्छत्राम्=इतरभूपतीनां तद्वशवर्त्तित्वादेकस्यैव राज्ञः स्वातन्त्र्येण प्राधान्यादेकमेव छत्रं यत्र सा तथा तां, तथा ' ससागर ' ससागरां=समुद्रसहितां ' वसुह ' वसुधां=पृथिवीं-भरतार्द्धादिरूपां ' भुंजिऊण ' भुक्त्वा इह चक्रवर्तिनो

वाले हजारों द्रोणमुखोंसे से, धूलिप्राकारमय हजारों खेटों से, अल्पजननिवासभूत हजारों कर्वटों से, अढाईकोशतक ग्रामान्तरों से शून्य हजारों मडंबों से, हजारों संवाहों से-धान्यादिकोंकी जिनकेद्वारा रक्षा की जाती है ऐसे दुर्गविशेषों से एवं सकल वस्तुओं की प्राप्ति के स्थानभूत हजारों पत्तनों से मंडित (थिमिय मेयणिय) तथा शत्रु आदि के भय से रहित होकर प्रजाजन जिसमें आनंद के साथ निवास कर रहे हैं (एगच्छत्त) और जिस में किसी अन्य राजा कीस्वतंत्र आज्ञा नहीं चलती है-दूसरे राजाओं के होनेपर भी उसी एक के वशवर्ती होने के कारण स्वतंत्ररूप से अपनी आज्ञा नहीं चला सकते है-किन्तु उसी एक की आज्ञा के अनुसार ही अपनी आज्ञा चलाते हैं, ऐसी स्थिति वाला साम्राज्य जहां होता है-उस साम्राज्य संपन्नभूमि को एकच्छत्रवाली भूमि कही जाती है। ऐसी (ससागरा) आसमुद्रान्त-(वसुह) पृथिवी को-भरतार्द्ध रूप भूमि को (भुंजिऊण) भोगकर के (नरसीहा) जो

સ્થળમાર્ગ વાળા હજારો દ્રોણમુખોથી, ધૂળના કિલ્લાવાળા હજારો ખેટોથી, થોડી વસ્તીવાળા હજારો કર્બટોથી, જ્યાથી અઢી ગાઉ સુધી બીજા ગામો ન હોય તેવા હજારો મડંબોથી, હજારો સંવાહોથી-(ધાન્યાદિની જેનાથી રક્ષા કરાય છે એવા દુર્ગ વિશેષો) અને સઘળી વસ્તુના પ્રાપ્તિ સ્થાનરૂપ હજારો પત્તનોથી યુક્ત, તથા " थिमियमेयाणियं " શત્રુ આદિ ભયથી રહિત બનીને પ્રજાજનો જેમા આનંદપૂર્વક રહે છે, " एगच्छत्त " અને જેમા બીજા કોઈ રાજાની સ્વતંત્ર આજ્ઞા ચાલતી નથી-બીજા રાજાઓ હોવાછતા પણ તેઓ તે એકને જ " ચક્રવર્તી રાજાને " વશ હોવાને કારણે સ્વતંત્ર રીતે પોતાની આજ્ઞા ચલાવી શકતા નથી પણ તે એકની આજ્ઞા પ્રમાણે તેમને વર્તવુ પડે છે, એવી સ્થિતિવાળુ સામ્રાજ્ય જ્યા હોય છે, એ પ્રકારના સામ્રાજ્યવાળી ભૂમિને એક છત્ર નીચેની ભૂમિ કહે છે એવી " ससागर " સમુદ્રના અન્ત સુધીની " वसुह " પૃથ્વીને- ભરતાર્દ્ધરૂપ ભૂમિને " भुंजिऊण " ભોગવીને " नरसीहा " જે વિશિષ્ટ

प्रसिद्ध ४५, 'छत्त' छत्र=प्रसिद्ध ४६, दाम=माला ४७, 'दामिणि' दामनी=रज्जुः४८, 'कमडलु' कमण्डलु=जलपात्रविशेषः, प्रतीतः४९, कमल=प्रतीत-५०, घण्टा=प्रतीता ५१, 'वरपोय' वरपोतः=नौका ५२, 'सुई' सूची=वस्त्र-सीवनसाधन ५३, 'सागर' सागरः=समुद्र ५४, 'कुमुदागर' कुमुदाकरः=कुमुदवन ५५, 'मगर' मकरः५६, हार=प्रतीत ५७, 'गागर' इति स्त्रिय आभरणविशेषः, ५८, 'नेउर' नूपुर=पदभूषण ५९, 'णग' नगः=पर्वतः६०, 'णगर' नगर=प्रसिद्ध ६१, 'वइर' वज्र ६२, 'किण्णर' किन्नर=व्यन्तरदेव विशेषः६३, मयूर=प्रसिद्ध ६४, 'वररायहंस' वरराजहंसः=प्रशस्तराजहंसः६५, सारसः=प्रसिद्ध -पक्षिविशेष ६६, 'चकोर' चकोरः६७, 'चक्कागमिहुण' चक्रवाकमिथुन=चक्रवाकयुगल ६८, चामर=प्रतीत ६९, 'खेडग' खेटक='ढाल' इति भाषा प्रसिद्ध ७०, 'पव्वीसग' इति वाद्यविशेषः देशी शब्दोय ७१, 'विपंचि' विपञ्ची=सप्ततन्त्रीवीणा ७२, 'वरतालियंट' वरतालवृन्तं=प्रशस्त-तालव्यजन ७३, 'सिरियाभिसेय' श्रीकाऽभिषेकः=लक्ष्म्या अभिषेकः७४, 'मेयणि' मेदिनी=पृथ्वी ७५, 'खग्ग' खड्गः७६ 'अकुस' अङ्कुशः=प्रसिद्धः७७, 'विमलकलस' विमलकलश-उज्ज्वलकलशः-७८, 'भिंगार' भृङ्गारः-पात्रविशेषः 'झारी' इति भाषा प्रसिद्धः७९, 'वद्धमाणग' वर्धमानकः=शरावः८०, चेत्ये-

कधो पर रक्खा जाता है, छत्त-छत्र, दाममाला, दामनी-रस्सी, कमडलु कमल, घटा, नौका, सुई, समुद्र, कुमुदवन, मकर, हार, गागर,-स्त्रियोका एक प्रकार का आभूषण, नूपुर-पदभूषण, पर्वत, नगर, वज्र, किन्नर जातिके व्यन्तरदेव, मयूर, प्रशस्त राजहंस, सारसपक्षी, चकोर, चक्रवाकका जोड़ा, चामर, खेटक-ढाल, पव्वीसग-इस नामका एक वाद्यविशेष, विपञ्ची-सात तार वाली वीणा, सुन्दरताडवृक्ष का पखा, लक्ष्मी का अभिषेक, पृथिवी, खड्ग-तलवार, अकुश, उज्ज्वलकलश भृगार, वर्द्धमा-नक-शराव, इन सब के चिन्हों को कि जो प्रशस्त चक्रवर्तित्व के सूचक

धूसरी, छत्र, दाममाला, दामनी-रस्सी, कमंडળ, કમળ, ઘટ, નૌકા સોય, સમુદ્ર, કુમુદવન, મગર, હાર, ગાગર-સ્ત્રીઓનુ એક પ્રકારનુ આભૂષણ, નૂપુર-ઝાંઝર, પર્વત, નગર, વજ્ર, કિન્નર જાતીના વ્યંતર દેવ, મયૂર,, પ્રશસ્ત રાજહંસ, સારસપક્ષી, ચકોર, ચક્રવાકનુ જોડુ, ચામર, ઢાલ, પવ્વીસગ-એક વાદ્યવિશેષ, વિપંચી-સાત તાર વાળી વીણા, સુંદર તાડવૃક્ષનો પંખો, લક્ષ્મીનો અભિષેક, પૃથિવી તલવાર, અંકુશ, ઉજ્જવળ કળશ, ભૃંગાર, વર્દ્ધમાનક-શરાબ, એ બધા ચિન્હો કે જે પ્રશસ્ત ચક્રવર્તિત્વના સૂચક અને શ્રેષ્ઠ હોય છે તથા જે

शङ्खः=प्रतीत' ३, 'वरचक' वरचक्र=श्रेष्ठचक्र ४, 'सोत्थिय' स्वस्तिक'=चतुष्कविशेषः ५, 'पडाग' पताका=ध्वजा ६, 'जव' यवः=स्वनामख्यातो धान्यविशेषः ७, 'मच्छ' मत्स्यः=प्रसिद्ध 'कुम्म' कूर्मः=कच्छपः९, 'रहवर' रथवर'=विशिष्ट रथः१०, 'भग' योनिः११ 'भवण' भवन=प्रासाद.१२ 'विमाण'विमान =प्रतीत १३, 'तुरग' तुरङ्गः=अश्वः १४, 'तोरण' तोरण=बहिर्द्वार १५, गोपुर =नगरद्वार १६, मणि =चन्द्रकान्तादिकः १७, 'रयण' रत्न=कर्केतनादिक १८, 'नदियावत्त' नन्द्यावर्त्तः = नवकोणस्वस्तीकविशेष १९, 'मुसल' मुसल=प्रसिद्ध २०, 'लागल' लाङ्गल हल २१, 'सुरइयवरकप्परुक्ख' सुरचितवरकल्पवृक्ष =सुरचित =सुष्ठु कृतो यो वर =श्रेष्ठ कल्पवृक्षः अथवा सुरतिद =सुखप्रदः कल्पवृक्षः २२, 'मिगवइ' मृगपति'=सिंहः २३, 'भद्दासण' भद्रासन=सिंहासन २४, 'सुरुइ' सुरुचि.=आभूषणविशेषः२५, 'थूम' स्तूपः=स्तम्भाविशेषः २६, 'वरमउड' वरमुकुट=श्रेष्ठमुकुट २७, 'सरिय' मुक्तावली देशी शब्दोऽय २८, 'कुडल' कुण्डल=कर्णाभरण २९, 'कुजर' कुञ्जर'=हस्ती ३०, 'वरवसभ' वरवृषभ.३१, 'दीव' द्वीप ३२, 'मंदर' मन्दरः=मन्दराचल.३३, 'गरुल' गरुड =प्रसिद्ध'३४, 'ज्झय' ध्वजः=प्रतीत ३५, 'इंदकेऊ' इन्द्रकेतुः= इन्द्रध्वजः३६, 'दप्पण' दर्पण =प्रसिद्ध' ३७ 'अट्ठावय' अष्टापद=द्युतफलक ३८, 'चाव' चापः=धनुः३९, बाण'=प्रतीत.४०, 'नक्खत्त' नक्षत्र ४१, 'मेह' मेघः=प्रसिद्धः ४२, 'मेहल' मेखला=काञ्ची ४३, वीणा=प्रतीता ४४, 'जुग' युग=वृषभस्कन्धे स्थाप्यमानःशकटाङ्गविशेष', 'जुहाडा' इति भाषा

स्वस्तिक, पताका, यव मत्स्य, कूर्म, विशिष्ट रथ, योनि, भवन, विमान तुरग, तोरण,गोपुर, चन्द्रकान्तादिकमणि,कर्केतनादिरत्न,नवकोणवाले स्वस्तिक, मुसल, लागल, सुरचित-सुन्दर श्रेष्ठकल्पवृक्ष , सिंह, भद्रासन सिंहासन, सुरुचि इसनामको एक आभूषण विशेष, स्तूप,-स्तभविशेष, श्रेष्ठमुकुट, मुक्तावली, कुडल, कुजर हाथी, सुन्दरबैल, द्वीप, मंदराचल, गरुड, ध्वजा, इन्द्रध्वजा, दर्पण, अष्टापद-द्यूतफलक, चाप-धनुष, बाण, नक्षत्र, मेघ, मेखला-काची, वीणा, युग-गाडी का जुआ-जो बैलो के

સ્વસ્તિક, પતાકા, યવ, મત્સ્ય, કૂર્મ, વિશિષ્ટ રથ, યોની, ભવન, વિમાન, તુરગ તોરણ, ગોપુર, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિ કર્કેતનાદિ રત્ન, નવકોણ વાળા સ્વસ્તિક મુસલ, લાગલ, સુરચિત સુદર શ્રેષ્ઠ કલ્પવૃક્ષ, સિંહ, ભદ્રાસન-સિંહાસન, સુરૂચિ એક આભૂષણ, સ્તૂપ-સ્તભ વિશેષ, શ્રેષ્ઠ મુગટ, મુક્તાવલી, કુડલ કુજર-હાથી, સુદર વૃષભ, દ્વીપ, મદરાચલ, ગરૂડ, ધ્વજ, ઇન્દ્રધ્વજા, દર્પણ, અષ્ટાપદ-દ્યૂત ફલક, ધનુષ્ય બાણ, નક્ષત્ર, મેઘ, મેખલા-કંદોરો, વીણા, યુગ-ગાડીની-

उरताचाउराहि सेणाहि समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरंगवई गयवई रहवई नरवई विउलकुला वीसुयजसा सारयससिसकल सोम्मवयणा, सूरा, तिलोक्क निग्गयपभावा लद्धसद्दा समत्त भरहाहिवा नरिंदा ससेलवणकाणणं च हिमवतसागर त धीरा भोत्तूण भरहवास जियसत्तपवररायसीहापुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठसंचियसुहा अणेगवाससयमाउव्वंतो भज्जाहि य जयवयप्पहाणाहि लालियता अतुल सद्दफरिसरसरूवगंधे य अणुभवित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्म अवित्तित्ता कामाणं ॥ सू० ५ ॥

टीका:—'बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा' द्वात्रिंशद् राजवरसहस्रानुयातमार्गाः=द्वात्रिंशद् यानि राजवराणा=राजप्रमुखाना सहस्राणि तैरनुयातः=अनुगतो मार्गो येषा ते तथा अनुगामि द्वात्रिंशत्सहस्रराजप्रमुखानामधिपतय इत्यर्थः, 'चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीणयणकता' चतुः—षष्टिसहस्रप्रवरयुवतिनयनकान्ताः=चतुःषष्ठिसहस्रप्रौढतरुणीना नयनकान्ताः=नयनप्रियाः स्वामीन इत्यर्थः 'रत्ताभा' रक्ताभाः=रक्ता=विमलशोणीतबाहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

फिर वे चक्रवर्ती कैसे होते हैं सो कहते हैं–'बत्तीसरायवर०' इत्यादि०।

टीकार्थः— (बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा) जिनके पीछे २ बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा चला करते है, अर्थात्–जो अपने अनुगामी ३२ हजार नरेशों के अधिपति होते हैं। (चउसट्ठिसहस्सपवर जुवतीनयणकता) तथा ६४ चोसठ हजार सर्वश्रेष्ठ युवती स्त्रियो के नयनों को जो आनदप्रद होते है अर्थात् उनके स्वामी होते है, तथा (रत्ताभा) जिनके

તે ચક્રવર્તિઓ કેવા હોય છે તેનુ સૂત્રકાર વધુ વર્ણન કરે છે–"बत्तीस रायवर" ઇત્યાદી

ટીકાર્થ–"बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा" જેમની પાછળ બત્રીસ હજાર મુગટ–ધારી રાજાઓ ચાલે છે–એટલે કે જેવો તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપ તિયોના અધિપતિ હોય છે "चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनयणकता" ચોસઠ હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનંદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના સ્વામી હોય છે, તથા "रत्ताभा" જેમના શરીરની આભા વિમળ રક્તની

तानि, ' पसत्थ ' प्रशस्तानि=चक्रवर्तित्वसूचकानि उत्तमानि=उत्कृष्टानि 'विभत्त' विभक्तानि=स्पष्टानि यानि ' वरपुरिसलक्खण ' वरपुरुषलक्षणानि-वरपुरुषाणां महापुरुषाणा लक्षणानि=हस्तरेखादिरूपाणि महत्त्वसूचकानि तानि धारयन्ति ये ते तथा सूर्यचन्द्रशङ्खचक्रादिरूपविशिष्टचक्रवर्तिलक्षणवन्तः तेऽपि कामभोगैरवितृप्ता एव मरणधर्मं प्राप्नुवन्तीति सम्बन्धः ॥ सू० ४ ॥

पुनस्ते चक्रवर्तिन' कीदृशाः? इत्याह-' बत्तीस 'इत्यादि—

मूलम्—बत्तीस—रायवर—सहस्साणुजायमग्गा चउसट्ठिसहस्स पवरजुवतीणयणकता रत्ताभा पउमपम्हकोरटगदामचपगसुतवियवरकणक—निघसवण्णा सुजाय सव्वंगसुदरगा महग्घवरपट्टणुग्गयविचित्त-रागएणी-पएणी-निम्मिय-दुगुल्ल-वरचीणपट्टकोसेज्ज-सोणीसुत्तकविभूसियगा-वरसुरभिगध-वरचुण्णवासवरकुसुमभरिय-सिरियाकप्पियछेया-यरियसुकयरइयमालकडगंगयतुडियवर—भूसणपिणद्धदेहा एगावलिकंठसुरइयवच्छा पालव पलवमाणसुकयपडउत्तरिज्जामुद्दिया पिगलंगुलिया उज्जल नेवत्थरइयचिल्लगविरायमाणा तेएण दिवाकरोव्व-दित्ता सारयनवत्थणिय—महुर—गंभीर—निद्धघोसा उप्पण्ण समत्तरयणचक्करयणपहाणा नवनिहिवइणोसमिद्धकोसा चा-

एव उत्कृष्ट होते हैं तथा जो रेखारूप में स्पष्ट झलकते थे—और जो महापुरुषों के हस्त आदिकों मे रेखादि रूप में पाये जाते हैं इन सब को धारण करने वाले होते है। ऐसे महाभाग्य शाली चक्रवर्ती भी कामभोगो से अतृप्त होकर ही मृत्यु को प्राप्त करते है। इस प्रकार का सबध इस सूत्र की व्याख्या करते समय लगा लेना चाहिये ॥ सू०४ ॥

મહાપુરુષોના હાથ આદિમા રેખાઓ રૂપે જોવા મળે છે, તે બધા ચિહ્નોને ધારણ કરનારા હોય છે એવા મહાભાગ્યશાળી ચક્રવર્તી રાજાઓ પણ કામ ભોગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એ પ્રકારનો સબધ આ સૂત્રની વ્યાખ્યા કરતી વખતે સમજી લેવાનો છે ॥ સૂ૦ ૪ ॥

उरताचाउराहि सेणाहि समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरंगवई गयवई रहवई नरवई विउलकुला वीसुयजसा सारयससिसकल सोम्मवयणा, सूरा, तिलोक्क निग्गयपभावा लद्धसद्दा समत्त भरहाहिवा नरिंदा ससेलवणकाणणं च हिमवतसागर त धीरा भोत्तूणं भरहवास जियसत्तपवररायसीहापुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठसंचियसुहा अणेगवाससयमाउव्वतो भज्जाहि य जयवयप्पहाणाहि लालियता अतुल सद्दफरिसरसरूवगंधे य अणुभवित्ता तेवि उवणमति मरणधम्म अवित्तित्ता कामाणं ॥ सू० ५ ॥

टीका:—'बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा' द्वात्रिंशद् राजवरसहस्रानुयातमार्गाः=द्वात्रिंशद् यानि राजवराणा=राजप्रमुखाना सहस्राणि तैरनुयातः=अनुगतो मार्गो येषा ते तथा अनुगामि द्वात्रिंशत्सहस्रराजप्रमुखानामधिपतय इत्यर्थः, 'चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीणयणकता' चतुः—षष्टिसहस्रप्रवरयुवतिनयनकान्ताः=चतु.षष्ठिसहस्रप्रौढतरुणीना नयनकान्ताः=नयनप्रियाः स्वामीन इत्यर्थः 'रत्ताभा' रक्ताभा'=रक्ता=विमलशोणीतनाहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

फिर वे चक्रवर्ती कैसे होते है सो कहते है—'बत्तीसरायवर०' इत्यादि०।

टीकार्थः— (बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा) जिनके पीछे २ बतीस हजार मुकुटबद्ध राजा चला करते है, अर्थात्—जो अपने अनुगामी ३२ हजार नरेशों के अधिपति होते हैं। (चउसट्ठिसहस्सपवर जुवतीनयणकता) तथा ६४ चोसठ हजार सर्वश्रेष्ठ युवती स्त्रियों के नयनों को जो आनदप्रद होते है अर्थात् उनके स्वामी होते है, तथा (रत्ताभा) जिनके

ते चक्रवर्तिओ केवा होय छे तेनु सूत्रकार वधु वर्णन करे छे—"बत्तीस रायवर" ईत्यादी

टीकार्थ—"बत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा" जेमनी पाछळ बत्रीस हजार मुगटधारी राजाओ चाले छे—એટલે કે જેવા તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપતિઓના અધિપતિ હોય છે "चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनयणकता" ચોસઠ હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનંદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના સ્વામી હોય છે, તથા "रत्ताभा" જેમના શરીરની આભા વિમળ રક્તની

शरीरप्रभा येषा ते तथा विशिष्टलावण्यसपन्ना इत्यर्थः, 'पउमपम्हकोरंटगदाम चपगसुतवियवरकणगनिघसवण्णा' पद्मपक्ष्मकोरण्टकदामचम्पकसुतप्त-वरकनक निकषवर्णा, तत्र पद्मपक्ष्म = कमलकेसर, कोरण्टकदाम=कोरण्टकपुष्पमाला चम्पकः = पुष्पविशेषः तथा सुतप्तवरकनकस्य=सुतप्तसुवर्णस्य यो निकषः= रेखा चेत्येतेषा वर्ण इव वर्णो येषा ते तथा पद्मकेसरसुवर्णादिवद् भास्वरकान्तय इत्यर्थ, 'सुजायसव्वगसुदरगा' सुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गाः=सुजातानि= शोभन पुष्टानि सर्वाङ्गेण=सर्वप्रकारेण सुन्दराण्यङ्गानि=अवयवा येषा ते तथा सुपुष्टशोभनाङ्गोपाङ्गसम्पन्नाः तथा 'महग्घवरपट्टणुग्गयविचित्तरागएणीपएणी-निम्मिय दुगुल्लवरचीणपट्टकोसेज्जसोणीसुत्तकविभूसियगा' महार्घवरपत्तनोद्गत-विचित्ररागैणीप्रैणीनिर्मितदुकूलवरचीनपट्टकौशेयश्रोणीसूत्रकविभूषिताङ्गाः = तत्र महार्घाणि = बहुमूल्यानि वरपत्तनोद्गतानि=प्रधाननगरसमुत्पन्नानि तथा विचित्र-रागाणि=अनेकविविधरङ्गरञ्जितानि एणी प्रैणी निर्मितानि=एणी = मृगी प्रैणी

शरीर की आभा विमल शोणित की बहुलता से रक्तवर्ण की सी होती है, अर्थात् जो विशिष्ट लावण्य से युक्त होता है। तथा (पउमपम्हकोरंटगदामचपगसुतवियवरकणकनिघसवण्णा) पद्मपक्ष्म-कमलकेशर, कोरण्टकदाम-कोरटपुष्पों की माला, चम्पक-पुष्पविशेष, एव तापे हुए सुवर्ण की रेखा इनके वर्ण के समान जिनका वर्ण होता है, अर्थात्-पद्मकेशर तप्तसुवर्ण आदि के समान भास्वर कान्ति से जो युक्त होते हैं, तथा (सुजायसव्वग सुदरगा) जिनके शारीरिक अवयव अच्छीतरह से पुष्ट एव सब प्रकार से सुन्दर होते हैं (महग्घवरपट्टगयविचित्तराग एणी पएणी निम्मियदुगुल्ल वरचीणपट्टकोसेज्ज सोणीसुत्तगविभूसियगा) तथा जिनका शरीर बहुमूल्य वस्त्रों से कि जो वस्त्र प्रधान नगरों के जो बने हुए होते हैं, विविध रगों से रगे रहते है, एणी प्रैणी-मृगी और

અધિકતાને લીધે રતાશ પડતી હોય છે, તથા જે વિશિષ્ટ લાવણ્યથી યુક્ત હોય છે, તથા "पउम-पम्हकोरंट-गदाम-चपग-सुतवियवर-कणक-निघसव्वण्णा" પદ્મપક્ષ્મ-કમળ કેશર, કોરટકદામ-કોરટ પુષ્પોની માલા, ચપાના ફૂલ, અને તપાવેલ સુવર્ણની રેખા જેવો જેમનો વર્ણ હોય છે એટલે કે જે પદ્મકેશર તપ્ત સુવર્ણ આદિના જેવી સુદર કાંતિવાળા હોય છે, તથા સુજાયસવ્વગસુદ રગા" જેમના શરીરના અગો સારી રીતે પુષ્ટ અને દરેક રીતે સુદર હોય છે, "महग्घवर-पट्टणुगय-विचित्तराग-एणी-पएणी दुगुल्लवरचीण-पट्टकोसेज्ज सोणीसु-त्तगविभूसियगा" તથા જેમના શરીર બહુ કીમતિ વસ્ત્રોથી સુશોભિત રહે છે જે મુખ્ય શહેરોમા બનેલા હોય છે, વિવિધ રગોથી રગેલા હોય છે,

च= मृगीविशेष एव तद्रोमनिर्मितानि यानि वस्त्राणि तानि, तथा दुकूलानि= दुकूलो वृक्षविशेषः, तन्निर्मितानि वस्त्राणि, वल्कलमुलूखले जलेन सह कुट्टयित्वा चूर्णीकृत्य सूत्राणि निर्माय ऊतानि दुकूलानीत्युच्यन्ते तानि। तथा वरचीनानि= चीनदेशोत्पन्नानि 'पट्ट' पट्टसूत्रमयानि-मलयदेशविशेषासमुत्पन्नानि,कौशेयानि= कृमिकोपसूत्रनीर्मितानि 'रेशमी' इति प्रसिद्धानि वस्त्राणि तथा श्रोणीसूत्रक= कटिसूत्रक 'कणदोरा' इति प्रसिद्ध चेत्यैतैः विभूपितानि=अलङ्कृतानि अङ्गानि येषा ते तथा बहुमूल्यसुकोमलाऽतिसूक्ष्मतमरङ्गविरङ्गविविधवस्त्रकटिसूत्र-सुशोभितशरीरा इत्यर्थः, 'वरसुरभिगधवरचुण्णवासवरकुसुमभरियसिरया' वरसुरभिगन्धवरचूर्णवासवरकुसुमभृतशिरसः=वरसुरभिगन्धः=उत्तम सुगन्धयुक्तग-न्धद्रव्य, तथा वरचूर्णवासा =वराः=श्रेष्ठाः=चूर्णवासाः=चूर्णरूपाणि गन्धद्रव्याणि, वरकुसुमानि च-चम्पक मालती प्रभृतीनि ते भृतानि=व्याप्तानि शिरासि=मस्तकानी

मृगीविशेप के रोमों से निर्मित होते हैं उनसे सुशोभित रहते हैं। ये वस्त्र धोती के स्थानापन्न होते है। तथा जिम दुकूल—दुपट्टे—को ये ओढते है वह रेशमी होता है, एव चीन देशका बना हुआ होता है। दुकूलवृक्ष के वल्कल को ओखली में जल के साथ पहिले मूसल से खूब कूटा जाता है, बाद में जब वह चूर्णरूप में हो जाता है तब उसके सूत्र तैयार किये जाते हैं और फिर उन्हे अच्छी तरह बुनकर यह दुकूल बनाया जाता है। ऐसे दुकूलो से एव कटिसूत्र से जिनका शरीर सदा अलकृत रहा करता है, अर्थात् जो बहुमूल्य, सुकोमल, अतिसूक्ष्मतम-एव रगबिरगे अनेकविधवस्त्रो से, तथा कटिसूत्र से विभूपित शरीर रहते है (वरसुरभिगधवरचुण्णवासवरकुसुमभरियसिरया) तथा उत्तम सुगध युक्त गधद्रव्यों से, श्रेष्ठचूर्ण वासो से चपक, मालती आदि

એણી પ્રેણી-મૃગલી અને વિશિષ્ટ પ્રકારની મૃગલીની રૂવાટીમાથી બનાવેલા હોય છે તે વસ્ત્રો ધોતીની જગ્યાએ પહેરાય છે તથા તેમના દુપટ્ટા રેશમી હોય છે, અને તે ચીનમા બનેલા હોય છે દુકૂલ-વૃક્ષની છાલને પાણી નાખીને પહેલા ખાંડણીયામા સાંબેલાથી ખૂબ ખાંડવામા આવે છે, જ્યારે તેનો ભૂકો થઈ જાય ત્યારે તેમાથી તાર કાઢવામા આવે છે, પછી તેને સારી રીતે વણીને તે દુકૂલ-દુપટ્ટા બનાવવામા આવે છે એવા દુપટ્ટા અને કટિસૂત્રથી જેમના શરીર સદા આભૂષિત રહે છે, એટલે કે જેમના શરીર બહુ મુલ્ય, સુકોમળ, અતિશય બારીક અને રગબેરગી અનેક પ્રકારના વસ્ત્રોથી, તથા કટિસૂત્રથી વિભૂષિત રહે છે, "वरसुरभि-गधवर-चुण्णवासवर-कुसुम-भरियसिरिया" તથા ઉત્તમ સુગધવાળા દ્રવ્યોથી, શ્રેષ્ઠચૂર્ણની સુગધથી, ચપક, માલતિ આદિ

येषा ते तथा परमसुगन्धिद्रव्यचन्दनचूर्णचम्पकादिकुसुमसम्भारसम्भृतमस्तका इत्यर्थः, 'कप्पियछेयायरियसुकयरइयमालकडगंगयतुडियवरभूसणपिणद्धदेहा' —कल्पितछेकाचार्यसुकृतरतिदमालाकटकाङ्गदत्रुटितवरभूषणपिनद्ध देहाः = तत्र कल्पितानि = परिधृतानि छेकाचार्येण = शिल्पिवरेण सुकृतानि = सुष्ठु रचितानि रतिदानि = प्रेमजनकानि यानि मालाकटकाङ्गदत्रुटितवरभूषणानि= मालाः=सुवर्णमालाःकटकाः=कङ्कणानि 'कडा' इति प्रसिद्धानि, अङ्गदानि= केयूराणि त्रुटिताः=बाहुरक्षिकाः, तथा वरभूषणानि=मुकुटकुण्डलादिनि च तैः पिनद्धः=व्याप्तो देहो येषा ते तथा मुकुटकेयूरकङ्कणादिविविधभूषणभूषितदेहा इत्यर्थः, 'एकावलिकंठसुरइयवच्छपालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जमुद्दियापिंगलंगुलिया' तत्र—'एकावलिकंठसुरइयवच्छा' एकावलीकण्ठसुरचितवक्षस्काः= एकावली=विविधमणिग्रथितहार कण्ठे=कण्ठप्रदेशे सुरचिता=परिधृता वक्षसि=वक्षःस्थले येषा ते तथा 'पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जा' प्रालम्बमलम्बमान-

के पुष्पो से जिनका मस्तक सदा शोभित रहता है, अर्थात् परमसुगंधित द्रव्यों से चदन के चूर्ण से चम्पकादि कुसुमों के सभार से जिनका मस्तक निरन्तर भरा रहता है। तथा (कप्पिय छेयायरिय-सुकय-रइय माल कडग गय तुडिय वर भूसणपिणद्ध देहा) जिनकी देह अच्छी तरह से पहिरे गये आभूषणों से, सुवर्ण की मालाओ से, कटकों कड़ो से, अगदो-(भुजबधो) से, त्रुटितों से बाहुरक्षिको से, एव मुकुट कुडल आदि उत्तम अलकारो से, कि जो कारीगरों के द्वारा बहुत ही अच्छी तरह बनाये हुए होते है तथा प्रेमोत्पादक होते है इनसे इनकी देह व्याप्त रहती है (एगावलिकंठ सुरइय वच्छपालबपलबमाणसुकयपड उत्तरिज्ज

પુષ્પોથી જેમના મસ્તક સદા સુશોભિત રહે છે, એટલે કે અતિશય સુગધ-યુક્ત દ્રવ્યોથી, ચન્દનના ચૂર્ણથી, ચપક આદિ પુષ્પોના સભારથી જેમના મસ્તક સદા યુક્ત રહે છે, તથા "कप्पिय छेयायरिय,-सुकय,-रइय,-माल, कडग-गय, तुडिय, वर भूसणपिणद्धदेहा" જેમના શરીર સારી રીતે પહેરેલ આભૂષણોથી, સુવર્ણની માળાઓથી કડાઓથી, "अगदो" 'ભૂજબધો' થી, તૃટિતોથી-બાહુરક્ષિકોથી, અને મુગટ કુડળ આદિ ઉત્તમ અલકારોથી આભૂષિત રહે છે જે અલકારો સારા કારીગરોએ સારી રીતે બનાવેલા હોય છે તથા પ્રેમોત્પાદક હોય છે "एगावलि-कंठ-सुरइयवच्छ-पालंब-पलंबमाण-सुकय पडउत्तरिज्ज-मुद्दिया-पिंगलंगुलिया" તથા વિવિધ મણીઓ જડેલો હાર જેમની

सुकृतपटोत्तरीया =प्रलम्बवत्=आनाभिलम्बितकण्ठिकावत् प्रलम्बमान', तथा सुकृतः=शोभनरचनाविशेषयुक्त पटः=शाटकः उत्तरीयम्=उत्तरीयवस्त्र च येषा ते तथा रचनाविशेषेण परिधृतशाटकोत्तरीया इत्यर्थः, 'मुद्दियापिंगलंगुलिया' मुद्रिकापिङ्गलाङ्गुलिका'=मुद्रिकाभिः=अङ्गुलीयकैः पिङ्गलाः=स्वर्णादिमयत्वात् पीत-कान्तयोऽङ्गुल्यो येषा ते तथा 'उज्जलनेवत्थरइयचिल्लगविरायमाणा' उज्ज्वल-नेपथ्यरतिदचिल्लगविराजमानाः = उज्ज्वल=निर्मल नेपथ्य=वेषः 'पोशाक' इति प्रसिद्धःरतिद=आनन्दजनक 'चिल्लग' इति वस्त्र चाकचिक्य, तेन विराज-मानाः=शोभमानाः, तथा 'तेएण दिवाकरोव्वदित्ता' तेजसा दिवाकरइव दीप्ताः= प्रतापेन सूर्यसदृशाः 'सारयनवत्थणियमहुरगभीरनिद्धघोसा' शारदनवस्तनित-मधुरगम्भीरस्निग्धघोषाः=शारद=शरत्कालिक यन्नवस्तनित=नूतनमेघध्वनिः तद्व-न्मधुरो गम्भीर' स्निग्धश्च=हृदयाह्लादकरो घोषः=शब्दो येषा ते तथा 'उप्पण्ण समत्तरयणचक्करयणपहाणा' उत्पन्नसमस्तरत्नचक्ररत्नप्रधाना'=उत्पन्नानि=प्राप्तानि

मुद्दियापिंगलंगुलिया) तथा कठ में विविधमणियो से ग्रथित पहिरा हुआ हार जिनके वक्षस्थल पर लटकता रहता है, तथा नाभिप्रदेश पर्यंत कठी के समान लटकते हुए उत्तरीयवस्त्रको एव शोभन रचना विशेष से युक्त करके धोती को जो धारण करते है। स्वर्ण आदिकी बनी हुई अगूठियों से युक्त होने के कारण जिनकी हाथो की अगुलिया सदा पीली कातिवाली बनी रहती हैं (उज्जलनेवत्थ रइयचिल्लगविरायमाणा) उज्वल, आनदजनक एव चिलकती हुई पोशाक से जो सदा विराजमान रहते हैं (तेएण–दिवाकरोव्व दित्ता सारय–नवत्थणिय–महुर–गभीर—निद्धघोसा) तथा जो अपने तेज से सूर्य के जैसे प्रतापशाली होते हैं। तथा जिनका शब्द शरत्काल के मेघ की नवीन ध्वनि के जैसा गभीर और हृदयाह्लादक होता है (उप्पण्णसमत्तरयणचक्करयणपहाणा) तथा

ડોકમા પહેરેલી હોય છે અને વક્ષસ્થળ પર લટકતો હોય છે તથા નાભિ-પ્રદેશ સુધી કઠીની જેમ લટકતા ઉત્તરીય વસ્ત્રોને તથા સુદર વિશિષ્ટ રચનાથી યુક્ત ધોતીને જેઓ ધારણ કરે છે, સુવર્ણ આદિમાથી બનાવેલી વીટીઓથી યુક્ત હોવાને લીધે જેમના હાથની આગળીઓ સદા પીળા તેજથી યુક્ત રહે છે, "उज्जलनेवत्थरइयचिल्लगविरायमाणा" ઉજ્જવળ, આનદદાયક અને ચળકતા પોષાકથી જેઓ સદા શોભી રહ્યા હોય છે, "तेएण–दिवाकरोव्वदित्ता सारय–नवत्थणिय–महुर–गभीर–निद्धघोसा" તથા જે પોતાના તેજથી સૂર્ય સમાન પ્રતાપશાળી હોય છે, તથા જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘના નવીન ધ્વનિના જેવા ગભીર અને હૃદયમા આનદ ઉત્પન્ન કરનાર હોય છે, "उप्पण्ण

समस्तरत्नानि चक्ररत्नानि च यस्ते तथा, अत एव प्रधानाः=प्रधानभूताः चतुर्दश रत्नानि यथा "सेणावइ १ गाहावइ २ पुरोहिय ३ तुरग ४ वड्ढई ५ गय ६ इत्थी ७ । चक्क ८ छत्त ९ चम्म १०, मणि ११ कागणि १२ खग्ग १३ दंडो य १४ ॥" छाया–सेनापति १ गृहपति २ पुरोहित ३ तुरग ४ वर्धकि ५ गज ६ स्त्रिय ७।

चक्र ८ छत्र ९ चर्म १० मणि ११ काकिणी १२ खड्गः १३ दण्डश्च १४ ॥" इति चतुर्दशरत्नानि । तथा 'नवनिहिपइणो' नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वामिनः । नवनिधयो यथा—

" नेसप्पे १ पडुय २ पिंगले य ३ सव्वरयणे ४ तहामहापउमे ५ ।
काले य ६ महाकाले ७ माणवगमहानिहि ८ संखे ९ ॥ १ ॥ " इति,

छाया–नैसर्पः १ पण्डुक २ पिङ्गलश्च ३ सर्वरत्न ४ तथा महापद्मम् ५ ।
कालश्च ६ महाकाल ७ माणवकमहानिधि ८ शङ्ख ९ ॥ १ ॥ "

'समिद्धकोसा' समृद्धकोशाः=परिपूर्णभाण्डागाराः, 'चाउरंता' चतुरन्ताः= त्रिष्वन्तेषु समुद्रः, चतुर्थेऽन्ते च हिमवान् पर्वत, एवं चत्वारोऽन्ताः=भूविभागाः

जो प्राप्त समस्त रत्नों से एव चक्ररत्न से पुरुषों में प्रधानभूत माने जाते हैं चक्रवर्ती जिन १४ चौदह रत्नों के अधिपति माने जाते हैं–वे रत्न ये हैं—(१) सेनापति, (२) गाथापति, (३) पुरोहित (४) तुरग (५) वर्धकि, (६) गज, (७) स्त्री, (८) चक्र, (९) छत्र, (१०) चर्म, (११) मणि, (१२) काकिणी, (१३) खड्ग (१४) दड । (नवनिहिपइणो) तथा नवनिधियो के जो भोक्ता होते हैं, नवनिधिया इस प्रकार हैं—(१) नैसर्प, (२) पडुक, (३) पिंगल, (४) सर्वरत्न, (५) महापद्म, (६) काल, (७) महाकाल (८) माणवक और (९) शख । (समिद्ध कोसा) भाण्डागार सदा हरएक वस्तु से भरपुर बना रहता है, तथा (चाउरंता) जो हिमवत् पर्वत

समत्तरयणचक्करयणपहाणा " तथा જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોથી અને ચક્રરત્નથી પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તિ જે ૧૪ 'ચૌદ' રત્નોના અધિપતિ મનાય છે, તે ચૌદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાથાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) ખડ્ગ અને (૧૪) દડ તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ નવનિધિઓને ભોગવે છે તે નવનિધિ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્પ, (૨) પડુક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫ મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) શખ " समिद्ध कोसा " તેમના ભડાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, " चाउरंता "

येषा ते तथा हिमवत्समुद्रपर्यन्तपृथिवीशासकाः 'चाउराहिं सेणाहिं समणुजाइज्जमाणमग्गा' चतुर्भिः सेनाभिः समनुयायमानमार्गाः=हस्त्यश्वरथपदातिरूपचतुरङ्गसेनाभिः समनुयायमानः=अनुगम्यमानो मार्गो येषा ते तथा तदेव दर्शयति 'तुरगवई-गयवई-रहवई-नरवई' तत्र 'तुरगवई' तुरङ्गपतयः 'गयवई' गजपतयः 'रहवई' रथपतयः 'नरवई' नरपतयः=पदाति सेनापतयः 'विउलकुला' विपुलकुला = उच्चकुलाः, विश्रुतयशसः=विख्यातकीर्तयः 'सारयससिसकल-सोम्मवयणा' शारदशशिसकलसौम्यवदनाः =शारदा =शरत्कालिको शशी=चन्द्रः कीदृशः सकलः=सम्पूर्णकलायुक्तः शरत्पूर्णिमाचन्द्र इत्यर्थः, तद्वत् सोम्य=सुन्दर, वदन=मुख येषा ते तथा । 'सूरा' शूराः=शत्रुमर्दकाः 'तिलोकनिग्गयपभावा' त्रैलोक्यनिर्गतप्रभावाः=त्रिलोकव्यापिप्रभावसम्पन्नाः, 'लद्धसद्दा' लब्धशब्दाः=

पर्यंत तक की भूमि के शासक होते हैं, (चाउराहिं सेणाहिं समणुजाइज्जमाणमग्गा) हस्ती, अश्व, रथ एव पैदल सैन्य, इन चार अंगों वाली सेना से जो सदा अनुगम्यमान मार्गवाले होते हैं, अर्थात् वे (तुरंगवई-गयवई रहवई नरवई) अश्वपति, गजपति रथपति, और नरपति होते हैं। (विउलकुला) तथा उनका कुल बहुत ऊचा होता है, (वीसुयजसा) कीर्ति भी उनकी चारों दिशाओं में व्याप्त होती है. तथा (सारयससिसकलसोम्मवयणा) उनकी मुख शरत्काल की पूर्णिमा के चन्द्रमा जैसा सौम्य होता है तथा वे (सूरा) अपने शत्रुओं के मर्दक होने से शूरवीर होते हैं, तथा (तिलोकनिग्गयपभावा) उनका प्रभाव तीनलोक में व्याप्त रहता है, इसलिये वे (लद्धसद्दा) उनकी प्रसिद्धि तीनों लोको

તેઓનુ હિમાલય પર્વત સુધીના પ્રદેશ પર શાસન ચાલે છે "चाउराहिं-सेणाहिं समणुजाइज्जमाणमग्गा" તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ ગજદળ, અશ્વદળ, રથદળ, અને પાયદળ, એ ચતુરંગી સેના સહિત માર્ગપર કૂચ કરનારા હોય છે, એટલે કે "तुरगवई गयवई रहवई नरवई" તેઓ અશ્વપતિ, ગજપતિ, રથપતિ અને નરપતિ હોય છે "विउलकुला" તથા તેઓ ઊંચા કુળના હોય છે "विसुयजसा" તેમની કીર્તિ ચારે દિશાઓમા ફેલાયેલી હોય છે તથા "सारयससिसकलसोम्मवयणा" તેમના મુખ શરદ ઋતુની પૂર્ણિમાના ચન્દ્ર સમાન સૌમ્ય હોય છે, તથા તેઓ "सूरा" પોતાના શત્રુઓનુ મર્દન કરનાર હોવાથી શૂરવીર હોય છે, "तिलोकनिग्गयपभावा" તેમનો પ્રભાવ ત્રણે લોકમા વ્યાપેલો હોય છે તેથી "लद्धसद्दा" તેઓ ત્રણે

समस्तरत्नानि चक्ररत्नानि च यस्ते तथा, अत एव प्रधानाः=प्रधानभूताः चतुर्दश रत्नानि यथा "सेणावइ १ गाहावइ २ पुरोहिय ३ तुरग ४ वड्डइ ५ गय ६ इत्थी ७। चक्क ८ छत्त ९ चम्म १०, मणि ११ कागणि १२ खग्ग १३ दंडो य १४॥" छाया-सेनापति १ गृहपति २ पुरोहित ३ तुरग ४ वर्धकि ५ गज ६ स्त्रिय ७।

चक्र ८ छत्र ९ चर्म १० मणि ११ काकिणी १२ खड्गः १३ दण्डश्च १४॥"

इति चतुर्दशरत्नानि। तथा 'नवनिहिपइणो' नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वामिनः। नवनिधयो यथा—

" नेसप्पे १ पंडुय २ पिंगले य ३ सव्वरयणे ४ तहामहापउमे ५।
काले य ६ महाकाले ७ माणवगमहानिहि ८ संखे ९॥ १॥" इति,

छाया-नैसर्पः१ पण्डुक'२ पिङ्गलश्च ३ सर्वरत्न ४ तथा महापद्मम् ५।
कालश्च ६ महाकाल'७ माणवकमहानिधिः८ शङ्खः९ ॥ १ ॥"

'समिद्धकोसा' समृद्धकोशाः=परिपूर्णभाण्डागाराः, 'चाउरंता' चतुरन्ताः= त्रिष्वन्तेषु समुद्रः, चतुर्थेऽन्ते च हिमवान् पर्वत, एव चत्वारोऽन्ताः=भूविभागाः

जो प्राप्त समस्त रत्नो से एव चक्ररत्न से पुरुषों में प्रधानभूत माने जाते हैं चक्रवर्ती जिन १४ चौदह रत्नों के अधिपति माने जाते हैं-वे रत्न ये हैं—(१) सेनापति, (२) गाथापति, (३) पुरोहित (४) तुरग (५) वर्धकि, (६) गज, (७) स्त्री, (८) चक्र, (९) छत्र, (१०) चर्म, (११) मणि, (१२) काकिणी, (१३) खड्ग (१४) दंड। (नवनिहिपइणो) तथा नवनिधियों के जो भोक्ता होते हैं, नवनिधिया इस प्रकार हैं—(१) नैसर्प, (२) पडुक, (३) पिंगल, (४)सर्वरत्न, (५) महापद्म, (६) काल, (७) महाकाल (८) माणवक और (९) शख। (समिद्ध कोसा) भाण्डागार सदा हरएक वस्तु से भरपुर बना रहता है, तथा (चाउरंता) जो हिमवत् पर्वत

समत्तरयणचक्करयणपहाणा " તથા જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોથી અને ચક્રરત્નથી પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તિ જે ૧૪ 'ચૌદ' રત્નોના અધિપતિ મનાય છે, તે ચૌદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાથાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) ખડ્ગ અને (૧૪) દંડ તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ નવનિધિયોને ભોગવે છે તે નવનિધિ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્પ, (૨) પડુક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫ મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) શખ " समिद्ध कोसा" તેમના ભડાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, " चाउरंता "

'जणवयप्पहाणाहिं' जनपदप्रधानाभिः=जनपदेषु=देशेषु प्रधानाभिः=सर्वोत्कृष्टाभि 'भज्जाहिं' भार्याभि=स्त्रीभि 'लालियता' लाल्यमाना'=क्रीडयमानाः 'अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधेय अणुभवित्ता' अतुलशब्दस्पर्शरसरूपगन्धाश्चाऽनुभवन्तः=अनुपमशब्दादि विषयसुखान्यास्वादयन्तः 'ते वि' तेऽपि=तादृशा अपि चक्रवर्तिनः, 'कामाण अवितित्ता' कामानामवितृप्ता=कामभोगेषु तृप्तिरहिता एव, 'मरणधम्म' मरणधर्म=मृत्यु 'उवणमंति' उपनमन्ति=प्राप्नुवन्ति म्रियन्ते इत्यर्थं ॥ सू० ५ ॥

पुनः के इत्याह— 'भुज्जो' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो वलदेवा वासुदेवा य पवरपुरिसा महावलपरक्कमा महाधणुवियट्टगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुधरानरवसहा रामकेसवा भायरो सपरिसा समुद्दविजयमाइयदसाराणं पज्जुण्ण—पयिवसंवअनिरुद्धा निसढउम्मुय—सारणगय सुमुहदुम्मुहादीणं जायवाण अध्धुट्ठाणविकुमारकोडीण हिययदइया देवीए रोहिणीए देवीए देवईए य आणंदहियभा-

---

संचित सुख की राशिको भोगते हैं, तथा उनकी (अणेगवाससयमाउव्वतो) सैकड़ों वर्षों की आयु होती है (जणवयप्पहाणाहिं भज्जाहिं लालियता) तथा वे समस्त देशो मे सर्वोत्कृष्ट ऐसी ६४ चौसठ हजार स्त्रियों के साथ क्रीडा किया करते हैं (अतुलसद्दफरिस रसरूवगंध य अणुभवित्ता) और उनके साथ जो अनुपम शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध आदि पाचो इन्द्रियों के विषयों से जन्य सुखो का आस्वादन करते रहते हैं ऐसे (ते वि) वे चक्रवर्त्ती आदी भी (कामाण अवितित्ता मरणधम्म उवणमंति) कामसुखों से अतृप्त ही बने रहते है और अन्त में मरण को प्राप्त हो जाते है ॥ सू०५ ॥

વથી પ્રાપ્ત કરેલ સુખની રાશિનો ઉપભોગ કરે છે, તથા "अणेगवाससयमाउव्वतो" તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા "जणवयप्पहाणाहिं-लालियता" સમસ્ત દેશોમા અનુપમ એવી ચોસઠ હજાર સ્ત્રીઓ સાથે ક્રીડા કરે છે, અને "अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधेयअणुभवित्ता" તેમની સાથે અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગંધ આદિ પાચે ઈન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો અનુભવે છે એવા તે "ते वि" ચક્રવર્તિ આદિ પણ "कामाण" अवितित्ता मरण धम्म उवणमंति" કામભોગથી અતૃપ્તજ રહે છે અને અંતે મરણ પામે છે ॥સૂ.૫॥

त्रिजगत्प्रसिद्धाः, ' समत्तभरहाहि वा ' समस्तभरताधिपाः=दक्षिणोत्तरभरताधिपतयः ' नरिंदा ' नरेन्द्राः, धीराः=संग्रामादिष्वप्रतिहतशक्तिसम्पन्नाः 'ससेलवणकाणणं ' सशैलवनकाननं=शैलैः=पर्वतैः वनैः=नगरदूरस्थैः, काननैः=नगरसमीपस्थैः सह=सहितं यत्तत्तथाविधं ' हिमवंतसागरंतं ' हिमवत्सागरान्तं=हिमवान्=क्षुद्रहिमवत्पर्वतः सागरश्च=समुद्रः तदन्तं=तावत्पर्यन्तं 'भरहवासं' भारतवर्षं 'भोत्तूण' भुक्त्वा=उपभुज्य ' जियसत्तू ' जितशत्रवः=पराजितसमस्तशत्रवः ,'पवररायसीहा' प्रवरराजसिंहाः=प्रवरेषु=महापराक्रमेष्वपि राजसु मध्ये सिंहाः=सिंहसदृशाः, प्रवराश्च ते राजसिंहा इति वा विग्रहः = ' पुव्वकडतवप्पभावा ' पूर्वकृततपःप्रभावात्= पूर्वजन्मकृततपो माहात्म्यात् ' निविट्ठसंचियसुहा ' निर्विष्टसञ्चितसुखाः= उपभुक्तसञ्चितसुखराशयः ' अणेगवाससयमाउव्वंतो ' अनेकवर्षशतायुष्मन्तः,

में हो जाती है, और वे (समत्तभरहाहिं वा) समस्त भरतखंड के अधिपति होते हैं, अर्थात्-५ म्लेच्छखण्ड और १ आर्यखंड इस प्रकार संपूर्णभरतक्षेत्र के स्वामी होते हैं, (नरिंदा) तथा वे मनुष्यों के इन्द्र माने जाते हैं (धीरा) तथा वे संग्राम आदि में अप्रतिहत शक्ति से संपन्न होते हैं (ससेलवणकाणणं च हिमवंतसागरंतं भोत्तूण भरहवासं जियसत्तू पवररायसीहा) तथा वे पर्वतों, वनों-नगर से दूर रहे हुए जंगलो, एवं काननों-नगर समीपस्थ जंगलों से युक्त तथा क्षुल्लकहिमवान् पर्वत और समुद्रपर्यंत प्रसृत ऐसे भारतवर्ष का उपभोग करके समस्त शत्रुओं को पराजित करने के कारण महापराक्रम शाली राजाओं के बीच में केशरी के समान चमकते हैं, और (पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ संचियसुहा) पूर्वजन्म में आचरित तप के प्रभाव से वे

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ " समत्तभरहाहिवा " સમસ્ત ભરતખંડના અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાચ મ્લેચ્છ ખંડ અને એક આર્યખંડ, એ રીતે સંપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે " नरिंदा " તથા તેમને મનુષ્યોના ઇન્દ્ર ગણવામા આવે છે, " धीरा " તેઓ સંગ્રામ આદિમા અજીત શક્તિ ધરાવનાર હોય છે, " ससेलवणकाणणं च हिमवंतसागरंतं भोत्तुणभरहवासं जियसत्तू पवररायसीहा " તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જંગલો, કાનનો-નગરની પાસેના જંગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષનો ઉપભોગ કરીને સઘળા શત્રુઓને મ્હાત કરવાને કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેસરી "सिंह" સમાન ચમકે છે, અને " पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ संचियसुहा ' પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના પ્રભા

' जणवयप्पहाणाहिं ' जनपदप्रधानाभिः=जनपदेषु=देशेषु प्रधानाभिः=सर्वोत्कृष्टाभि ' भज्जाहिं ' भार्याभि =स्त्रीभि 'लालियता' लाल्यमानाः=क्रीडयमानाः ' अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधेय अणुभवित्ता ' अतुलशब्दस्पर्शरसरूपगन्धाश्चाऽनुभवन्तः=अनुपमशब्दादि विषयसुखान्यास्वादयन्त' ' ते वि ' तेऽपि=तादृशा अपि चक्रवर्तिनः, ' कामाण अवितित्ता' कामानामवितृप्ता =कामभोगेषु तृप्तिरहिता एव, ' मरणधम्म ' मरणधर्मं=मृत्यु ' उवणमति ' उपनमन्ति=प्राप्नुवन्ति म्रियन्ते इत्यर्थ ॥ सू० ५ ॥

पुनः के इत्याह— ' भुज्जो ' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो वलदेवा वासुदेवा य पवरपुरिसा महावलपरक्कमा महाधणुवियट्टगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुधरानरवसहा रामकेसवा भायरो सपरिसा समुद्दविजयमाइयदसाराणं पज्जुण्ण—पयिवसंवअनिरुद्धा निसढउम्मुय—सारणगय सुमुहदुम्मुहादीणं जायवाणं अध्धुट्ठाणवि कुमारकोडीणं हिययदइया देवीए रोहिणीए देवीए देवईए य आणंदहियभा-

सचित सुख की राशिको भोगते हैं, तथा उनकी (अणेगवाससयमाउव्वतो) सैकड़ों वर्षो की आयु होती है (जणवयप्पहाणाहिं भज्जाहिं लालियत्ता) तथा वे समस्त देशो मे सर्वोत्कृष्ट ऐसी ६४ चौसठ हजार स्त्रियों के साथ क्रीडा किया करते है (अतुलसद्दफरिस रसरूवगध य अणुभवित्ता) और उनके साथ जो अनुपम शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गध आदि पाचो इन्द्रियों के विषयों से जन्य सुखो का आस्वादन करते रहते हैं ऐसे (ते वि) वे चक्रवर्त्ती आदी भी (कामाण अवितित्ता मरणधम्म उवणमति) कामसुखों से अतृप्त ही बने रहते हैं और अन्त में मरण को प्राप्त हो जाते है ॥ सू०५ ॥

વથી પ્રાપ્ત કરેલ સુખની રાશિનો ઉપભોગ કરે છે, તથા " अणेगवाससयमाउव्वतो " તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા " जणवयप्पहाणाहिलालियता " સમસ્ત દેશોમા અનુપમ એવી ચોસઠ હજાર સ્ત્રીઓ સાથે ક્રીડા કરે છે, અને " अतुलसद्दफरिसरसरूवगवेयअणुभविचा " તેમની સાથે અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગ ધ આદિ પાચે ઈન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો અનુભવે છે એવા તે " ते वि " ચક્રવર્તિ આદિ પણ "कामाण" अवितित्ता मरण धम्म उवणमति " કામભોગથી અતૃપ્તજ રહે છે અને અ તે મરણ પામે છે ાસૂ ૫ાા

त्रिजगत्प्रसिद्धाः, ' समत्तभरहाहि वा ' समस्तभरताधिपा =दक्षिणोत्तरभरताधिपतय ' नरिंदा ' नरेन्द्राः, धीराः=संग्रामादिष्वप्रतिहतशक्तिसम्पन्नाः ससेलवणकाणण ' सशैलवनकानन=शैलैः=पर्वतैः वनैः=नगरदूरस्थैः, काननैः=नगरसमीपस्थैः सह=सहित यत्तत्तथाविध ' हिमवंतसागरंत ' हिमवत्सागरान्त=हिमवान्=क्षुल्लहिमवत्पर्वत सागरश्च=समुद्रः तदन्त=तावत्पर्यन्त 'भरहवास' भारतवर्ष 'भोत्तूण' भुक्त्वा=उपभुज्य ' जियसत्तू ' जितशत्रव =पराजितसमस्तशत्रव ,'पवररायसीहा' प्रवरराजसिंहा =प्रवरेषु=महापराक्रमेष्वपि राजसु मध्ये सिंहाः=सिंहसदृशाः, प्रवराश्चते राजसिंहा इति वा विग्रह = ' पुव्वकडतवप्पभावा ' पूर्वकृततप प्रभावाद्= पूर्वजन्मकृततपो माहात्म्यात् ' निविट्ठसचियसुहा ' निर्विष्ट सञ्चितसुखाः= उपभुक्तसञ्चितसुखराशयः ' अणेगवाससयमाउव्वतो ' अनेकवर्षशतायुष्मन्तः,

---

में हो जाती है, और वे (समत्तभरहाहि वा) समस्त भरतखड के अधिपति होते ह, अर्थात्-५ म्लेच्छखड और १ आर्यखड इस प्रकार सपूर्णभरतक्षेत्र के स्वामी होते हैं, (नरिंदा) तथा वे मनुष्यों के इन्द्र माने जाते हैं (धीरा) तथा वे सग्राम आदि में अप्रतिहत शक्ति से सपन्न होते हैं (ससेलवणकाण्णण च हिमवतसागरत भोत्तूण भरहवास जियसत्तू पवररायसीहा) तथा वे पर्वतों, वनों-नगर से दूर रहे हुए जगलों, एव काननों-नगर समीपस्थ जगलों से युक्त तथा क्षुल्लकहिमवान् पर्वत और समुद्रपर्यत प्रसृत ऐसे भारतवर्ष का उपभोग करके समस्त शत्रुओं को पराजित करने के कारण महापराक्रम शाली राजाओं के बीच में केशरी के समान चमकते हैं, और (पुव्वकडतवप्प भावा निविट्ठ सचियसुहा) पूर्वजन्म में आचरित तप के प्रभाव से वे

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ " समत्तभरहाहिवा " સમસ્ત ભરતખડના અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાચ મ્લેચ્છ ખડ અને એક આર્યખડ, એ રીતે સપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે " नरिंदा " તથા તેમને મનુષ્યોના ઇન્દ્ર ગણવામા આવે છે, " धीरा " તેઓ સગ્રામ આદિમા અજીત શક્તિ ધરાવનાર હોય છે, " ससेलवणकाणण च हिमवतसागरत भोत्तुणभरहवास जियसत्तू पवररायसीहा " તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જગલો, કાનનો-નગરની પાસેના જગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષનો ઉપભોગ કરીને બધા શત્રુઓને મહાત કરવાને કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેશરી "सिंह" સમાન ચમકે છે, અને " पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ सचियसुहा ' પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના પ્રભા

वालधणधण्णसचया ' नानामणिकनकरत्नमौक्तिकप्रवालधनधान्यसञ्चयाः, तत्र नानाविधा मणयः=चन्द्रकान्तादय कनकानि=सुवर्णानि रत्नानि=कर्केतनादीनि मौक्तिकानि=मुक्ताफलानि प्रवालानि=' मूगा ' इति प्रसिद्धानि धनानि=गणिमादीनि, तत्र गणिम-गणयित्वा यद्दीयते तद्वस्तु गणिममित्युच्यते नालिकेरपूगीफलादिकम् , तत्र धरिम-यत्तुलाया धृत्वा दीयते तत्, सुवर्णरजतादिकम्, मेयं-कुडवेन-मानविशेषेण ' पायली ' इति प्रसिद्धेन परिमीय यद्दीयते तत्, शालीगोधूमादिकम्, परिच्छेद्य परीक्ष्य यद्दीयते तत् , रत्नवस्त्रादिकम् , धान्यानि शालियवादीनि तेषा सञ्चया =राशयो येषा ते तथा 'रिद्धसमिद्धकोसा' ऋद्धि समृद्धकोशाः= विविधसम्पत्तिपूर्णभाण्डागारा ' हयगयरहसहस्ससामी ' हयगजरथसहस्रस्वामिनः=स्पष्टम् । ' गामागरणगरखेडकब्बडमडवदोणमुहपट्टणाऽऽसमसंवाहसहस्स थिमियनिव्वुयप्पमुइयजणविविह-सस्सनिप्फज्जमाणमेइणि सरसरियतला-

णिकणग-रयण-मोत्तिय पवालधणधण्णसचया) चन्द्रकान्त आदि नाना प्रकारके मणियों की, सुवर्ण की, कर्केतनादि रत्नोंकी, मुक्ताफलों की, मुगाओं की, तथा धन-गणिमादि, तथा गणिम-गिनकर दी जानेवाली नालिकेर पूगीफल आदि वस्तुओंकी, तथा धरिम-तुला से तौल कर दी जानेयोग्य सुवर्ण रजत आदि द्रव्योंकी, तथा मेय-कुडव 'पायली' नापके नामविशेष से नापकर दिये जानेयोग्य शालि गोधूम आदि अनाजोंकी, तथापरिच्छेद्य-परीक्षा करके दी जानेयोग्य रत्न वस्त्र आदि चीजो की तथा धान्य शालि यव आदि धान्यों की इनके यहां राशि रहा करती है । तथा—(रिद्धसमिद्ध कोसा) विविध सपत्तिसे इनका भाण्डागार (भडार) पूर्ण भरा रहता है । तथा (हयगयरहसहस्ससामी) हयों के घोडो के, हाथियोके एव रथों के ये स्वामी होते हैं। (गामागरणगरखेडकब्बडमडबदोणमुहपट्टणासम

कणगरयणमोत्तिय पवालधणधण्णसचया " ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ મણીઓનો, સુવર્ણનો, કર્કેતનાદિ રત્નોનો, સાચા મોતીનો, મુગાઓનો, તથા, ધન-ગણિમાદિનો, (ગણિમ-ગણીને અપાતી નાળિયેર પૂગીફળ આદિ વસ્તુઓનો) ધરિમનો (" धरिम—ત્રાજવાથી જોખીને આપવા યોગ્ય સુવર્ણ ચાંદી આદિ દ્રવ્ય) મેય-કુડવનો (" પાયલી " (માણુ) આદિથી ભરીને આપવા યોગ્ય ચોખા, ઘઉં આદિ અનાજ) પરિચ્છેદ—પરીક્ષા કરીને આપવા યોગ્ય રત્ન-વસ્ત્ર આદિ ચીજોનો, તથા ધાન્યનો (ચોખા જવ આદિ અનાજનો) તેમને ત્યા ભંડાર ભરેલ હોય છે તથા " रिद्धिसमिद्धकोसा " વિવિધ સંપત્તિથી તેમનો ભંડાર સદા ભરપૂર રહે છે તથા " हयगयरहसहस्ससामी " ઘોડા, હાથી અને રથોના તેઓ અધિપતિ હોય છે " गामागरणगरखेडकब्बडमडब

प्रद्युम्न — प्रतिवसाणाऽनिरुद्धनिषधोल्मुक—सारण—गज—सुमुखदुर्मुखादीना 'जायवाण' यादवाना = यदुवंशिना 'अद्धुट्ठाण वि' अर्द्धचतुर्थानामपि= सार्धत्रिसृणामपि 'कुमारकोडीण' कुमारकोटीनां 'हिययदइया' हृदयदयिताः= हृदयप्रियाः 'देवीए रोहिणीए देवीए देवईए य आणदहियभावनंदणकरा' देव्या रोहिण्याः=बलदेवमातुः देव्यादेवक्याः=कृष्णमातुश्च आनन्दरूपो यो हृदयभाव स्तस्य नन्दनकराः=वृद्धिकारकाः 'सोलसरायवरसहस्साणुजायमग्गा' षोडश राजवरसहस्रानुयातमार्गाः = षोडशसहस्रसंख्यका राजवरा अनुगता भवन्ति मार्गे येषा ते तथा। तत्प्रदर्शितनीतिमार्गानुवर्तिन इत्यर्थः तदाज्ञाकारिण इति यावत्। सोलसदेवीसहस्सवरणयणहिययदइया' षोडशदेवीसहस्रवरनयनहृदय-दयिता =षोडशसहस्रदेवीना वरनयनाना=चारु लोचनाना सुन्दरीणा हृदयदयिताः= हृदयवल्लभा, विशेषणमिद वासुदेवापेक्षया। 'णाणामणिकणगरयणमोत्तियप

निषध, उल्मुक, सारण, गज, सुमुख, दुर्मुख आदि साढातीन ३॥ करोड़ यादवकुमारो के लिये ये हृदय से अधिक प्यारे होते है। (देवीए रोहिणीए देवीए देवईए य आणदहिय भावनदणकरा) देवी रोहणी के तथा देवी देवकी के आनदरूप हृदयभाव की ये वृद्धि करनेवाले होते हैं, देवी रोहिणी ये बलदेव की माता तथा देवी देवकी ये कृष्णकी माता हैं। (सोलसरायवरसहस्साणुजायमग्गा) १६ सोल हजार राजा जिनके पीछेर मार्ग में चला करते हैं, अर्थात् जिस प्रकार वे इन्हें नीतिमार्ग का प्रद र्शन करते हैं उसी नीतिमार्गका ये अनुसरण करते ह, अथवा उनकी आज्ञानुसार चलते हैं। (सोलस देवीसहस्सवरणयणहिययदइया) १६ सोल हजार स्त्रियों के नयनो को और हृदयोंको ये अत्यतप्रिय होते हैं, यह विशेषण वासुदेवकी अपेक्षा से कहा गया जानना चाहिये। (णाणाम

પ્રતિવસાળ, અનિરુદ્ધ, નિષધ, ઉલ્મુક સારણ, ગજ, સુમુખ, દુર્મુખ આદિ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોને તે પ્રાણથી પણ અધિક વહાલા હોય છે, "देवीए रोहिणीए देवीए देवईए य आणदहियभावनदणकरा" દેવી રોહિણી તથા દેવી દેવકીના હૃદયના આનદમા તેઓ વૃદ્ધિ કરનારા હોય છે દેવી રોહિણી બળદેવની માતા તથા દેવી દેવકી કૃષ્ણની માતા છે "सोलसरायवर सहस्साणुजायमग्गा" ૧૬ સોળ હજાર રાજાઓ તેમને અનુસરે છે, એટલે કે તેમના દ્વારા જે નીતિમાર્ગ તેઓ બતાવે છે, એ જ નીતિમાર્ગનુ તેઓ અનુસરણ કરે છે અથવા તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે તે બધા ચાલે છે "सोलस देवीसहस्सवर-णयणहिययदेइया" ૧૬ સોળ હજાર સ્ત્રીઓના નયનો તથા હૃદયને તેઓ અત્યત પ્રિય હોય છે આ વિશેષણ વાસુદેવને અનુલક્ષી અપાયેલુ છે "णाणामणि-

पवनानि तानि च 'मणाभिराम' मनोऽभिरामाणि=मनोहराणि तैश्च 'परिमंडियस्स' परिमण्डितस्य=शोभितस्य ' दाहिणड्ढवेयड्ढगिरिविभत्तस्स ' दक्षिणार्ध वैताढ्य गिरिविभक्तस्य=दक्षिणार्धे यो वैताढ्य = तन्नामको गिरिः = पर्वतविशेषस्तेन विभक्तस्य=कृतविभागस्य ' लवणजलपरिगयस्स ' लवणजलपरिगतस्य=लवण-जलेन=लवणसमुद्रेन परिगतस्य=वेष्टितस्य ' छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स ' षड्विध-कालगुणक्रमयुक्तस्य=षड्विधस्य कालस्य=वर्षा शरद्हेमन्तशिशिरवसन्तग्रीष्माभिध-षड्ऋतुसमयस्य ये गुणाः=कार्याणि नवपल्लवकुसुमविविधफलसमुदयादि रूपाणि, तेषां यः क्रमः=यथोचितरूपेण भवन तेन युक्तस्य=समुपेतस्य एवंविधस्य 'अद्धभर-हस्स' अर्धभरतस्य–दक्षिणभरतस्य ' सामिया ' स्वामिकाः=अधिपतयः ' धीरा , धीराः=शत्रुभिरपरिभवनीयाः ' कित्ति पुरिसा ' कीर्त्तिपुरुषाः=कीर्त्तिप्रधानाःपुरुषाः ' ओहबला ' ओघबलाः=ओघेन=प्रवाहेणाच्छिन्न बल येषा ते तथा अनिच्छिन्न बला इत्यर्थः, ' अइबला ' अतिबला.=अन्यबलान्यतिक्रान्ताः। ' अनिहया ' अनिहताः = शत्रुशस्त्राघातवर्जिता एवभूता बलदेववासुदेवा अपि कामभोगतृप्ति रहिता एव मरणधर्ममुपगमन्तीति सम्बन्धः ॥ ६ ॥ सू० ॥

यड्ढगिरिविभत्तस्स) दक्षिणार्ध में वैताढ्य पर्वतसे विभक्त हुए (लवण-जलपरिगयस्स) लवण समुद्र से वेष्टित हुए तथा (छव्विहकालगुणकम्म-जुत्तस्स) वर्षा, शरद् , हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, इन छह ऋतु-ओंरूप समय के नवीन पत्तों, कुसुमों, एव फलो के आगमनरूप कार्यो के क्रम से युक्त बने हुए ऐसे (अद्धभरहस्स) दक्षिण भरतके ये (सामिया) स्वामी होते हैं (धीरा) धीर होते हैं अर्थात्–शत्रुओं द्वारा अपरिभवनीय होते हैं। तथा (कित्तिपुरिसा) कीर्ति ही है प्रधान जिन्होंकी ऐसे ये कीर्त्ति पुरुष होते हे। (ओहबला) इनका बल कभी नष्ट नहीं होता है अतः ये (अइबला) अविच्छिन्न बलवाले होते हैं,

---

" दाहिणड्ढवेयड्ढगिरिविभत्तस्स " दक्षिणार्धमां वैताढय पर्वतथी विभक्त थयेल " लवणजलपरिगयस्स " लवणसमुद्रथी घेरायेला तथा " छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स "वर्षा, शरद, हेमन्त शिशिर, वसंत अने ग्रीष्म ए छए ऋतुओने अनुरूप नवीन पान, फूलो, अने फळोना आगमनरूप कार्योथी युक्त बनेल एवा " अद्धभरहस्स " दक्षिण भारतना तेओ ' सामिया " स्वामी होय छे " धीरा " तेओ धीर होय छे एटले के शत्रुओ द्वारा अपराजित होय छे तथा " कित्तिपुरिसा " कीर्ति ज प्रधान छे जेमनी एवा कीर्तिपुरुष होय छे-कीर्तिशाळी होय छे " ओहबला " तेमनु बळ कदी नाश पामतु नथी तेथी तेओ " अइबला "अविच्छिन्न बळवाळा होय छे, तथा " अनिहया " शत्रुओना शस्त्रोना

गसेलकाणणआरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स ' तत्र ग्रामाऽऽगरनगरखेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाऽऽश्रमसंवाहाः = तत्र ग्रामः = ग्रसते बुद्धयादि गुणानिति ग्रामःपृषोदरादित्वात्सकारस्य मकारः । अन्ये संवाहपर्यन्ता पूर्वस्मिन् चक्रवर्त्तिसूत्रे व्याख्यातपूर्वाः, तेषां यानि सहस्राणि तैः, ' थिमिय ' स्तिमिताः= स्वचक्रपरचक्रभयरहिताः 'निव्वुय' निर्वृताः=सुशान्तचित्ताः तथा 'पमुइय' प्रमुदिताश्च=अतिप्रसन्ना ये जनास्तैः, तथा 'विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणी ' विविधसस्य निष्पद्यमानमेदिनी विविधानि सस्यानि=धान्यानि,तै.निष्पद्यमाना सम्पद्यमाना या ' मेइणी ' मेदिनी=पृथिवी तया तथा ' सर ' सरांसि=जलाशयविशेषाः, 'सरिय' सरितः=नद्यः ' तलाग ' तडागाः=महाजलाशयाः ' सेल ' शैलाः=पर्वताः'काणण' काननानि=सामान्यवृक्षोपेतानि नगरासन्नवर्त्तिवनानि, आरामा =लतामण्डपाद्युपेतानि,राज्ञामन्तः पुरोद्यानानि. उद्यानानि=विविधपादपकुसुमसमुल्लसितसर्वजनविहारो

संवाहसहस्सथिमियनिव्वुयप्पमुइयजण-विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणिसर सरियतलागसेलकाणणं आरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स) ग्राम आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, संवाह इन सबकी हजारोंकी संख्यासे स्वचक्र एवं परचक्रके भयसे रहित ऐसे तथा जिनका चित्त सदा सुशान्त बना हुआ रहता है ऐसे अति प्रमुदित मनुष्यों से तथा विविध प्रकारकी धान्य राशि जिसमें उत्पन्न होती है ऐसी मेदनीसे, तथा मनोहर जलाशय विशेषोंसे, नदियोंसे, तलावों से, पर्वतोंसे, सामान्यवृक्षोंसे युक्त, एवं नगरके पास रहे हुए ऐसे काननों(वनों) से तथा लतामण्डप आदि से युक्त ऐसे राजाओं के अन्तःपुरके उद्यानों से, तथा अनेक प्रकार के वृक्षोंसे एवं कुसुमों से समुल्लसित एवं सर्व जनों के विहार योग्य ऐसे उपवनों से परिमंडित हुए, तथा (दाणिड्ढवे

दोणमुहपट्टणासमसंवाह-सहस्स-थिमिय-निव्वुयप्पमुइयजणविविहसस्स निप्फज्जमाण मेइणिसर—सरिय—तलाग—सेल—काणण-आरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स "
ગામ, આકર નગર, ખેટ, કર્બટ, મડંબ, દ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, સંવાહ, વગેરે હજારોની સંખ્યામા તેઓની સત્તા નીચે હોય છે સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત તથા સદા શાંત અને અતિ આનંદિત ચિત્તવાળા મનુષ્યોથી, તથા વિવિધ પ્રકારના ધાન્ય રાશિ (ઢગલા) જેમા ઉત્પન્ન થાય છે એવી ભૂમિથી, તથા મનોહર જળાશયોથી , નદીઓથી, તળાવોથી, પર્વતોથી સામાન્ય વૃક્ષોથી નગરની પાસે આવેલા કાનનોથી, તથા લતામંડપ આદિથી યુક્ત એવા રાજાઓના અન્તઃપુરના ઉદ્યાનોથી, તથા અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી, અને વિકસિત કુસુમોથી શોભતા અને સર્વે લોકોને ફરવાને યોગ્ય એવા ઉપવનોથી વીંટળાયેલા, તથા

पत्तनानि तानि च 'मणाभिराम' मनोऽभिरामाणि=मनोहराणि तैश्च 'परिमंडियस्स' परिमण्डितस्य=शोभितस्य 'दाहिणड्ढवेयड्ढगिरिविभत्तस्स' दक्षिणार्धवैताढ्य गिरिविभक्तस्य=दक्षिणार्धे यो वैताढ्यः = तन्नामको गिरिः = पर्वतविशेषस्तेन विभक्तस्य=कृतविभागस्य 'लवणजलपरिगयस्स' लवणजलपरिगतस्य=लवण-जलेन=लवणसमुद्रेन परिगतस्य=वेष्टितस्य 'छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स' षडविध-कालगुणक्रमयुक्तस्य=षड्विधस्य कालस्य=वर्षा शरद्हेमन्तशिशिरवसन्तग्रीष्माभिध-षड्ऋतुसमयस्य ये गुणा'=कार्याणि नवपल्लवकुसुमविविधफलसमुदयादि रूपाणि, तेषा यः क्रमः=यथोचितरूपेण भवन तेन युक्तस्य=समुपेतस्य एवविधस्य 'अद्धभर-हस्स' अर्धभरतस्य–दक्षिणभरतस्य 'सामिया' स्वामिकाः=अधिपतय' 'धीरा, धीराः=शत्रुभिरपरिभवनीयाः 'कित्ति पुरिसा' कीर्त्तिपुरुषाःकीर्त्तिप्रधानाःपुरुषाः 'ओहबला' ओघबलाः=ओघेन=प्रवाहेणाच्छिन्न बल येषा ते तथा अविच्छिन्न बला इत्यर्थः, 'अइबला' अतिबलाः=अन्यबलान्यतिक्रान्ताः। 'अनिहया' अनिहताः = शत्रुशस्त्राघातवर्जिता एवभूता'बलदेववासुदेवा अपि कामभोगतृप्ति रहिता एव मरणधर्ममुपगमन्तीति सम्बन्धः ॥ ६ ॥ सू० ॥

यड्ढगिरिविभत्तस्स) दक्षिणार्ध में वैताढ्य पर्वतसे विभक्त हुए (लवण-जलपरिगयस्स) लवण समुद्र से वेष्टित हुए तथा (छव्विहकालगुणकम्म-जुत्तस्स) वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, इन छह ऋतु-ओंरूप समय के नवीन पत्तों, कुसुमों, एव फलो के आगमनरूप कार्यो के क्रम से युक्त बने हुए ऐसे (अद्धभरहस्स) दक्षिण भरतके ये (सामिया) स्वामी होते है (धीरा) धीर होते हैं अर्थात्–शत्रुओं द्वारा अपरिभवनीय होते हैं। तथा (कित्तिपुरिसा) कीर्ति ही है प्रधान जिन्होंकी ऐसे ये कीर्त्ति पुरुष होते हैं। (ओहबला) इनका बल कभी नष्ट नहीं होता है अतः ये (अइबला) अविच्छिन्न बलवाले होते हैं,

---

"दाहिणड्ढवेयड्ढगिरिविभत्तस्स" दक्षिणार्धमा वैताढ्य पर्वतथी विभक्त थयेल "लवणजलपरिगयस्स" लवणसमुद्रथी घेरायेला तथा "छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स-"वर्षा, शरद, हेमन्त शिशिर, वसंत अने ग्रीष्म ए छये ऋतुओने अनुरूप नवीन पान, फूलो, अने फळोना आगमनरूप कार्योथी युक्त बनेल एवा "अद्धभरहस्स" दक्षिण भारतना तेओ 'सामिया" स्वामी होय छे 'धीरा" तेओ धीर होय छे एटले के शत्रुओ द्वारा अपराजित होय छे तथा "कित्तिपुरिसा" कीर्ति ज प्रधान छे जेमनी एवा कीर्तिपुरुष होय छे-कीर्तिशाळी होय छे "ओहबला" तेमनु बळ कदी नाश पामतु नथी तेथी तेओ "अइबला"अविच्छिन्न बळवाळा होय छे, तथा "अनिहया" शत्रुओना शस्त्रोना

गसेलकाणणआरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स ' तत्र ग्रामाऽऽकरनगर खेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाऽऽश्रमसंवाहाः = तत्र ग्रामः = ग्रसते बुद्ध्यादि गुणानिति ग्रामःपृषोदरादित्वात्सकारस्य मकारः । अन्ये संवाहपर्यन्ता पूर्वस्मिन् चक्रवर्तिसूत्रे व्याख्यातपूर्वा', तेषां यानि सहस्राणि तैः, ' थिमिय ' स्तिमिताः= स्वचक्रपरचक्रभयरहिताः 'निव्वुय' निर्वृताः=सुशान्तचित्ताः तथा 'पमुइय' प्रमुदिताश्च=अतिप्रसन्ना ये जनास्तैः, तथा 'विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणी ' त्रिविधसस्य निष्पद्यमानमेदिनी विविधानि सस्यानि=धान्यानि,तैःनिष्पद्यमाना सम्पद्यमाना या ' मेइणी ' मेदिनी=पृथिवी तया तथा ' सर ' सरांसि=जलाशयविशेषाः, 'सरिय' सरितः=नद्यः ' तलाग ' तडागाः=महाजलाशया' ' सेल ' शैलाः=पर्वताः'काणण' काननानि=सामान्यवृक्षोपेतानि नगरासन्नवर्तिवनानि, आरामाः=लतामण्डपाद्युपेतानि,राज्ञामन्तः पुरोद्यानानि, उद्यानानि=विविधपादपकुसुमसमुल्लसितसर्वजनविहारो

सवाहसहस्सथिमियनिव्वुयप्पमुइयजण-विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणि सर सरियतलागसेलकाणण आरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स) ग्राम आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, संवाह इन सबकी हजारोंकी संख्यासे स्वचक्र एवं परचक्रके भयसे रहित ऐसे तथा जिनका चित्त सदा सुशान्त बना हुआ रहता है ऐसे अति प्रमुदित मनुष्यो से तथा विविध प्रकारकी धान्य राशि जिसमें उत्पन्न होती है ऐसी मेदनीसे, तथा मनोहर जलाशय विशेषोंसे, नदियोसे, तलावों से, पर्वतो से, सामान्यवृक्षोसे युक्त, एवं नगरके पास रहे हुए ऐसे काननों(वनों) से तथा लतामण्डप आदि से युक्त ऐसे राजाओं के अन्तःपुरके उद्यानों से, तथा अनेक प्रकार के वृक्षोंसे एवं कुसुमों से समुल्लसित एवं सर्व जनों के विहार योग्य ऐसे उपवनों से परिमंडित हुए, तथा (दाणिड्ढे

दोणमुहपट्टणासमसंवाह-सहस्स-थिमिय-निव्वुयप्पमुइयजणविविहसस्स निप्फज्जमाण मेइणिसर--सरिय--तलाग--सेल--काणण-आरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स" ગામ, આકર નગર, ખેટ, કર્બટ, મડંબ, દ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, સંવાહ, વગેરે હજારોની સંખ્યામાં તેઓની સત્તા નીચે હોય છે સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત તથા સદા શાંત અને અતિ આનંદિત ચિત્તવાળા મનુષ્યોથી, તથા વિવિધ પ્રકારના ધાન્ય રાશિ (ઢગલા) જેમાં ઉત્પન્ન થાય છે એવી ભૂમિથી, તથા મનોહર જળાશયોથી , નદીઓથી, તળાવોથી, પર્વતોથી સામાન્ય વૃક્ષોથી નગરની પાસે આવેલા કાનનોથી, તથા લતામંડપ આદિથી યુક્ત એવા રાજાઓના અન્તઃપુરના ઉદ્યાનોથી, તથા અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી, અને વિકસિત કુસુમોથી શોભતા અને સર્વે લોકોને ફરવાને યોગ્ય એવા ઉપવનોથી વીંટળાયેલા, તથા

'रिउसहस्समाणमद्दणा, रिपुसहस्रमानमथना:=रिपुसहस्राणां मानं=गर्वं मथ्नन्ति ये ते तथा शत्रुदर्पविध्वंसकाः 'साणुक्कोसा' सानुक्रोशाः=आश्रितरक्षकाः 'अमच्छरी' अमत्सरिणः=परशुभस्याऽद्वेषिणः—परसुखेन सुखिन इत्यर्थः, 'अचवला' अच-पलाः-मनोवाक्कायचपलतारहिताः, अचण्डाः=अकारणकोपवर्जिताः 'मियमंजुलप्प-लावा' मितमञ्जुलप्रलापाः=मितः=परिमितः सार्थकः मञ्जुलः=मनोहरः प्रलापः= आलापो येषां ते तथा परिमितसत्यमधुरभाषिणः 'हसियगंभीरमहुरभणिया' हसितगम्भीरमधुरभणिताः=हसितम्=हास्ययुक्तं गम्भीरं=सारगर्भं मधुरं च भणितं= भाषणं येषां ते तथा 'अब्भुवगयवच्छला' अभ्युपगतवत्सलाः=अभ्युपगतेषु-समीपमागतेषु वत्सलाः स्नेहयुक्ताः 'सरण्णा' शरण्याः=शरणे साधवः शरणागत-रक्षकाः 'लक्खणवंजणगुणोववेया' लक्षणव्यञ्जनगुणोपेताः = तत्र लक्षणानि=

अपराजित शत्रुओं के मान को गलित कर देते हैं, अर्थात् प्रबल से भी प्रबल विरोधियों के वे विनाशक होते हैं, तथा (रिउसहस्समाणमद्दणा) हजारों शत्रुओं के मान को जो देखते २ क्षणभर मे नष्ट कर डालते हैं। एव (साणुक्कोसा) अपने आश्रित व्यक्तियो की सदा रक्षण करते रहते हैं (अमच्छरी) दूसरों के शुभ से जिनके चित्त में थोड़ा सा भी द्वेष नहीं जगता है, अर्थात् परके सुखसे सुखी होते है (अचवला) मन, वचन एव कायकी चचलतासे जो रहित होते है (अचडा) विना कारणके जिन्हें क्रोध नहीं आता है (मियमजुलप्पलावा) मित-सार्थक तथा मनोहर जिनका आलाप होता है, अर्थात्-जो परिमित सत्य मधुरभाषी होते हैं। (हसियगभीरमहुरभणिया) जो हास्ययुक्त, सारगर्भित और मधुर भाषण करते है (अब्भुवगयवच्छला) जो अपने निकट आये हुए प्राणियोंके साथ

શત્રુઓનુ માનમર્દન કરી નાખે છે, એટલે કે પ્રબળમા પ્રબળ શત્રુનો પણ તેઓ નાશ કરનાર હોય છે, તથા "रिउसहस्समाणमद्दणा" હજારો શત્રુઓને જે જોત જોતામા-ક્ષણવારમા મહાત કરે છે, અને એ રીતે તેમનુ માનમર્દન કરે છે, "साणुक्कोसा" પોતાના આશ્રિતોનુ સદા રક્ષણ કરે છે, "अमच्छरी" અન્યને લાભ થતો જોઈને જેમના ચિત્તમા સહેજ પણ દ્વેષ થતો નથી, એટલે કે તેઓ પરના સુખે સુખી થનાર હોય છે, "अचवला" મન, વચન કાયાની ચ ચળતાથી જે રહિત હોય છે, "अचडा" વિના કારણ જેમને ક્રોધ થતો નથી, "मियमजुलप्प लावा" મિત-સાર્થક તથા મનોહર જેમના વચન હોય છે, અથવા જે પરિમિત સત્ય મધુર વાણી વાળા હોય છે, "हसियगभीरमहुरभणिया" જે હાસ્યયુક્ત સારગર્ભિત અને મધુર ભાષણ કરે છે "अब्भुवगयवच्छला" જે પોતાની પાસે આવતા પ્રાણીઓ તરફ સ્નેહાળ હોય છે, "सरण्णा" શરણે આવેલની

पुनस्ते कीदृशाः ? इत्याह— ' अपराजिय ' इत्यादि—

मूलम्—अपराजिय सत्तुमद्दणा रिउसहस्समाणमद्दणा साणुक्कोसा अमच्छरी अचवला अचंडा मियमंजुलप्पलावा हसिय गंभीरमहुरभणिया अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खण वजणगुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्ण सुजायसव्वंग सुंदरगा ससिसोमगारा कंता पियदसणा अमरिसणा पयंड दडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा तालज्झया उव्विज्झगरुल केऊवलवगगज्जत दरिय-दप्पियमुट्ठियचाणूरचूरगारिट्ठवसभ घाइणो केसरिमुहविप्फाडगा दरिय नागदप्पमहणाजमलज्जुणभंजगा महासउणिपूयणरिपू कसमउडमोडगा जरासधमाणमहणा तेहिय अविरलसमसंहियचदमडलसमप्पभेहिं सूरमरीइकवयं विणिमुयंतेहि सप्पडिदंडेहि आयवत्तेहि धरिज्जंतेहि विरायंता ॥ सू० ७ ॥

टीका—' अपराजियसत्तुमद्दणा अपराजितशत्रुमर्दना = अपराजितान्= अन्यैरनिर्जितान् शत्रून् मर्दयन्ति ये ते तथा प्रबलशत्रुविनाशका इत्यर्थः, अतएव

दूसरों का बल इनके समक्ष टिक नहीं सकता है, इसलिये ये अतिबल वाले होते हैं, तथा (अनिहया) शत्रुओं के शस्त्रके आघात से ये वर्जित रहते हैं, ऐसे ये बलदेव और वासुदेव भी कामभोगों की तृप्तिसे विहीन बनकर ही मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू० ६ ॥

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—' अपराजिय ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(अपराजिय सत्तुमद्दणा) जो बलभद्र और नारायण

આઘાતથી તેઓ રહિત હોય છે એવા એ બળદેવ અને વાસુદેવ પણ કામભોગોની તૃપ્તિથી રહિત બનીને જ-અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ૦ ૬ ॥

તેઓ કેવા હોય છે તેનુ વધુ વર્ણન કરતા કહે છે– " अपराजिय " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" अपराजिय सत्तुमद्दणा " તે બળભદ્ર અને નારાયણ અપરાજિત

प्रचण्ड = दारुणोदण्डप्रचारः = दुष्टदमनाऽऽज्ञाविशेपस्तत्र गम्भीरदर्शनीया = गम्भीर = दुष्टजनचित्तक्षोभोत्पादक दर्शनीय = स्वरूप येषा ते तथा सत्पुरुषाणा कृते चन्द्रवत् प्रियदर्शना, दुर्जनानां कृतेपु कालसदृशा इति भाव 'तालज्झया' तालध्वजाः=तालः=तालवृक्षाङ्कितो ध्वजो येषा ते तथा ताल-ध्वजा बलदेवाः, 'ताराङ्को मुसलीहली' इत्यमर, तथा 'उव्विज्झगरुलकेऊ' उद्विद्धगरुडकेतवः-उद्विद्धः=अत्युच्छ्रितो गरुडकेतु'=गरुडाङ्कितो ध्वजो येषा ते तथा वासुदेवाः 'बलवगगज्जतदरियदप्पियमुट्ठियचाणूरचूरगा' बलवद् गर्जद् दृप्तदर्पितमौष्टिकचाणूरचूरकाः = तत्र बलवन्त — महाशक्तिसम्पन्न गर्जन्त= 'कोऽन्योऽस्मादृशो मल्लः, इति महाघोप कुर्वन्तः, तथा दृप्तदर्पित=दृप्तेष्वपि दर्पित=अतिगर्वयुक्त मौष्टिक चाणूर च=तत्तन्नामक मल्ल चूरयन्ति ये ते तथा

कर सकते हैं- (पयडदंडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा) दारुण दंड के प्रचार में जिनकी आकृति बहुतभारी गंभीर बन जाती है, अर्थात् दुष्टों को दमन करने रूप आज्ञा में जिनकी आकृति दुष्टजनों के लिये चित्तमें कालकी तरह क्षोभोत्पादक बनती है और सज्जनोंके लिये चन्द्र की तरह प्रियदर्शन वाली होती है। (तालज्झया उव्विज्झगरुलकेऊब-लगगज्जतदरियदप्पिअमुट्ठिचाणूरचूरगा) तथा इनमें बलदेव की ध्वजा तालवृक्ष के चिह्न से अंकित होती है और वासुदेव की ध्वजा गरुड के चिह्न से अंकित रहती है और बहुत ऊँची होती है। बलदेव ने कृष्ण को मारने के लिये कंस द्वारा प्रवर्तित किये हुए मल्लयुद्ध में 'कौन हमारे जैसा पहलवान है' इस अभीमान से जो मदोन्मत्त बनकर घोषणा कर रहे-एवं अत्यंत मद से उन्मत्त बने हुए थे-ऐसे मौष्टिक नामके मल्ल को

નથી "पयड-दंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा" દારૂણ દંડ પ્રદાન કરતી વખતે જેમનો દેખાવ ઘણો ગંભીર થઈ જાય છે એટલે કે દુષ્ટોને શિક્ષા કરવાની આજ્ઞા આપતી વખતે જેમનો દેખાવ દુષ્ટ લોકોને માટે યમદેવના જેવો ક્ષોભ ઉત્પાદક બની જાય છે અને સજ્જનો માટે તેમની મુખાકૃતિ ચન્દ્રની જેમ પ્રિયદર્શનવાળી હોય છે "तालज्झया उव्विज्झ गरुल केऊबलगगज्जतदरियदप्पिय मुट्ठियचाणुरचूरगा' તેઓમાના બળદેવની ધ્વજા તાલવૃક્ષની નિશાની વાળી હોય છે અને વાસુદેવની ધ્વજા ગરુડના નિશાનવાળી હોય છે અને ઘણી ઉંચી, હોય છે કૃષ્ણને મારવા માટે કંસ દ્વારા કરવાયેલ મલ્લયુદ્ધમા બળદેવે "મારા જેવો પહેલવાન કોણ છે" એવા અભિમાનથી જે મદોન્મત્ત બનીને ઘોષણા કરી રહ્યો હતો એવા મૌષ્ટિક નામના મલ્લને મારી નાખ્યો અને વાસુદેવ

हस्तरेखादीनि सामुद्रिकशास्त्रोक्तानि, तथा व्यञ्जनानि=मषतिलकादीनि गुणाः= शौर्यादयस्तैरुपेताः युक्ताः, 'माणुम्माणपमाणपडिपुण्णा सुजायसव्वंगसुंदरंगा' मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गाः = मानोन्मानः प्रमाणैः = तत्र मान-शरीरभार, उन्मान=शरीरोच्छ्रय, प्रमाण=समुचितशरीरावयवत्व, तैः प्रतिपूर्णानि=सुजातानि=सुष्ठुतया समुत्पन्नानि सर्वाण्यङ्गानि=अवयवा यस्मिन् तदेव विध सुन्दरमङ्ग=शरीर येषा ते तथा सकलसुलक्षणलक्षितसुपुष्टसप्रमाणसुन्दरशरीरा इत्यर्थः 'ससिसोमागारा' शशिसौम्याकारा-चन्द्र-वत्सौम्याकृतिसम्पन्नाः, 'कंता' 'कान्ता =कमनीयाः 'पियदसणा' प्रियदर्शना =मनोज्ञरूपा 'अमरिसणा' अमर्षण = अत्याचाराऽसहिष्णवः 'पयडडउप्पयारगभीरदरिसणिज्जा'

स्नेहशील होते हैं (सरण्णा) शरणागतकी रक्षा करते हैं (लक्खणवंजण गुणोववेया) जो सामुद्रिक शास्त्रोक्त रेखा आदि शुभचिन्होंसे, तथा मषा तिलक आदि शुभ व्यजनोंसे एव शौर्यादिक सद्गुणोंसे युक्त होते हैं माणुम्माणपमाणपडिपुण्णा सुजाय सव्वगसुदरगा) शरीर भाररूप मानसे, शरीरकी ऊँचाई रूप उन्मानसे तथा समुचित शरीरावयवरूप प्रमाणसे, प्रतिपूर्ण, एव सुन्दर रूपवाले समस्त अवयव जिसमें हैं ऐसे सुहावने शरीर से जो युक्त होते हैं अर्थात् उनका शरीर समस्त सुलक्षणों से युक्त, सुपुष्ट और प्रमाणोपेत होने से पूर्ण सुन्दर होता है, (ससि-सोमागारा) जिनकी आकृती चद्रमा के जैसी सौम्य होती है, (कंता) जो सबके लिये बडे प्रिय लगते हैं (पियदसणा) उनका दर्शन मन को बहुत अधिक आह्लाद जनक होता है (अमरिसणा) जो अत्याचार को सहना बहुत ही बुरा मानते हैं-अर्थात्-जो अत्याचार को सहन नहीं

જે રક્ષા કરનાર હોય છે, "लक्खणवंजणगुणोववेया" જેવા સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત રેખા આદિ શુભ ચિન્હોથી તથા મષા તિલક આદિ શુભ વ્યંજનોથી અને શૌર્યાદિક સદ્‌ગુણોથી યુક્ત હોય છે, "माणुम्माणपमाण पडिपुन्नासुजायसव्व ग-सु दर गा" શરીરભાર રૂપ માનથી, શરીરની ઉંચાઇરૂપ ઉન્માનથી, તથા સપ્રમાણ શરીરાવયવરૂપ પ્રમાણથી, પ્રતિપૂર્ણ અને સુદર શરીરથી જે યુક્ત છે, એટલે કે તેમનુ શરીર સમસ્ત સુલક્ષણો વાળુ, સુપુષ્ટ અને સપ્રમાણ હોવાથી સ પૂર્ણ રીતે સુદર હોય છે, "ससिसोमागारा" જેમની આકૃતિ ચન્દ્રમાના જેવી સૌમ્ય હોય છે, "कंता" જે સૌને ઘણા જ પ્રિય લાગે છે "पियदसणा" જેમના દર્શન મનને અત્યત આનદદાયક હોય છે "अमरिसणा" જે અત્યાચારોને સહન કરવો તે બહુજ ખરાબ ગણે છે એટલે કે અત્યાચારને સહન ની શકતા

प्रचण्ड = दारुणो दण्डप्रचारः = दुष्टदमनाऽऽज्ञाविशेषस्तत्र गम्भीरदर्शनीया = गम्भीरं = दुष्टजनचित्तक्षोभोत्पादकं दर्शनीयं = स्वरूपं येषां ते तथा सत्पुरुषाणां कृते चन्द्रवत् प्रियदर्शना, दुर्जनानां कृतेषु कालसदृशा इति भाव 'तालज्झया' तालध्वजाः=तालः=तालवृक्षाङ्कितो ध्वजो येषां ते तथा तालध्वजा बलदेवाः, 'तालाङ्को मुसलीहली' इत्यमर, तथा 'उव्विज्झगरुलकेऊ' उद्विद्धगरुडकेतवः-उद्विद्धः=अत्युच्छ्रितो गरुडकेतुः=गरुडाङ्कितो ध्वजो येषां ते तथा वासुदेवाः 'बलवगगज्जतदरियदप्पियमुट्ठियचाणूरचूरगा' बलवद् गर्जद् दृप्तदर्पितमौष्टिकचाणूरचूरकाः = तत्र बलवन्त — महाशक्तिसम्पन्न गर्जन्त= 'कोऽन्योऽस्मादृशो मल्लः, इति महाघोष कुर्वन्तः, तथा दृप्तदर्पित=दृप्तेष्वपि दर्पित=अतिगर्वयुक्त मौष्टिक चाणूर च=तत्तन्नामक मल्ल चुरयन्ति ये ते तथा

कर सकते हैं- (पयडदंडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा) दारुण दंड के प्रचार में जिनकी आकृति बहुत भारी गंभीर बन जाती है, अर्थात् दुष्टों को दमन करने रूप आज्ञा में जिनकी आकृति दुष्टजनों के लिये चित्तमें कालकी तरह क्षोभोत्पादक बनती है और सज्जनोंके लिये चन्द्र की तरह प्रियदर्शन वाली होती है। (तालज्झया उव्विज्झगरुलकेऊबल गलगज्जतदरियदप्पिअमुट्ठिचाणूरचूरगा) तथा इनमें बलदेव की ध्वजा तालवृक्ष के चिह्न से अंकित होती है और वासुदेव की ध्वजा गरुड के चिह्न से अंकित रहती है और बहुत ऊँची होती है। बलदेव ने कृष्ण को मारने के लिये कंस द्वारा प्रवर्तित किये हुए मल्लयुद्ध में 'कौन हमारे जैसा पहलवान है' इस अभीमान से जो मदोन्मत्त बनकर घोषणा कर रहे-एवं अत्यंत मद से उन्मत्त बने हुए थे-ऐसे मौष्टिक नामके मल्ल को

નથી "पयड-दंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा" દારૂણ દંડ પ્રદાન કરતી વખતે જેમનો દેખાવ ઘણો ગંભીર થઈ જાય છે એટલે કે દુષ્ટોને શિક્ષા કરવાની આજ્ઞા આપતી વખતે જેમનો દેખાવ દુષ્ટ લોકોને માટે યમદેવના જેવો ક્ષોભ ઉત્પાદક બની જાય છે અને સજ્જનો માટે તેમની મુખાકૃતિ ચન્દ્રની જેમ પ્રિયદર્શનવાળી હોય છે "तालज्झया उव्विज्झ गरुल केऊबलगगज्जतदरियदप्पिय मुट्ठियचाणुरचूरगा' તેઓમાંના બળદેવની ધ્વજા તાલવૃક્ષની નિશાની વાળી હોય છે અને વાસુદેવની ધ્વજા ગરુડના નિશાનવાળી હોય છે અને ઘણી ઉંચી, હોય છે કૃષ્ણને મારવા માટે કંસ દ્વારા કરવાયેલ મલ્લયુદ્ધમાં બળદેવે "મારા જેવો પહેલવાન કોણ છે" એવા અભિમાનથી જે મદોન્મત્ત બનીને ઘોષણા કરી રહ્યો હતો એવા મૌષ્ટિક નામના મલ્લને મારી નાખ્યો અને વાસુદેવ

महाबलमौष्टिकचाणूरादिमल्लनिष्कमकाः कृष्णवासुदेव कंसेन प्रवर्तिते मल्ल-युद्धे बलरामेण मौष्टिकाभिधानो मल्लो वासुदेवेन च चाणूराभिधानो मल्लो निहतः इति। 'रिट्ठवसभघाइणो' रिष्टवृषभघातिनः= रिष्टाभिधानकंसवृषभघातकाः, 'केसरिमुहविप्फाडगा' केसरिमुखविस्फाटकाः=इदं विशेषण त्रिपृष्ठाभिधप्रथम वासुदेवापेक्षया बोध्यम्। स हि नगरोपद्रवकारि घनकाननिवासि महासिंह मुख विदारितवान्। 'दरियनागदप्पमहणा' दृप्तनागदर्पमथना=यमुना निवासि महाविषकालनागगर्वविनाशकाः, 'जमलज्जुणभंजणा' यमलार्जुनभञ्जकाः= यमलार्जुनवृक्षविनाशकाः तौ हि पितृवैरिणौ विद्याधरौ यमलार्जुननामकौ वृक्षरूप विकुर्व्य पथि स्थितौ चूर्णितवन्तः। 'महासउणिपूयणरिऊ' महाशकुनिपूतना-रिपव=महाशकुनिः पूतना च विद्याधरपत्न्यौ, तयोः रिपवः। बाल्यावस्थायां

मारा, तथा वासुदेव कृष्ण ने चाणूर नामके मल्ल को मारा यही बात "बलवग गज्जत०" इस पद द्वारा प्रदर्शित की गई है। तथा (रिट्ठवसभघाइणो) जो कंस के रिष्ट नाम के मायावी बलीवर्द के घातक थे तथा (केसरिमुहविप्फाडगा) केशरी सिंह के मुख को भी फाड़ देते थे, यह विशेषण त्रिपृष्ठ नारायण की अपेक्षा कहा गया जानना चाहिये, क्यों कि उन्हीं ने नगर में उपद्रव मचाने वाले जंगली सिंह के मुख को विदारित किया है। (दरियनागदप्पमहणा) तथा जिस नारायणने यमुना निवासी महाविषैले काली नामकसर्प का विनाश किया है-तथा (जमलज्जुणभंजणा) नारायण ने पिता के वैरी दो विद्याधरों को की जिनका नाम यमल और अर्जुन था और जो मार्ग में वृक्ष का रूप अपनी विक्रिया से बनाकर खड़े हो गये थे उनको मारा है (महासउणि पूयणरिऊ) तथा जो विद्याधर की महाशकुनि एवं पूतना नामक दो

કૃષ્ણે ચાણૂર નામના મલ્લને માર્યો એ જ વાત "बलवगगज्जत" પદ દ્વારા બતાવવામા આવી છે તથા 'रिट्ठवसभघाइणो" જે કંસના રિષ્ટ નામના માયાવી બલીવર્દના ઘાતક હતા તથા "केसरीमुहविप्फाडगा" સિંહના મુખને પણ ફાડી નાખતા હતા તે વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠ નારાયણને અનુલક્ષીને વપરાયુ છે, કારણ કે તેમણે નગરમા ઉપદ્રવ મચાવનાર જંગલી સિંહના મુખને ચીરી નાખ્યુ હતુ "दरियनागदप्पमहणा" તથા જે નારાયણે યમુનામા રહેતા અતિશય ઝેરી કાળીનાગને વશ કર્યો છે, તથા "जमलज्जुणभजणा" નારાયણે તેમના પિતા યમળ અને અર્જુન નામના બે દુશ્મન વિદ્યાધરો, કે જે માર્ગમા પોતાની વૈક્રિય શક્તિથી વૃક્ષના રૂપ લઈ ઉભા થઈ ગયા હતા તેમને માર્યા હતા. "महासउणिपूयणरिऊ"તથા જે વિદ્યાધરની મહાશકુનિ અને

कृष्णस्ते हतवानित्यर्थः 'कसमउडमोडगा' कंसमुकुटमोटकाः=कंसमुकुटसञ्चूरकाः, कृष्णो हि चाणूरवधानन्तर कुपित कंस युयुत्सुं मुकुटदेशे गृहीत्वा सिंहासनादाकृष्य भुवि निपात्य जघान। तथा 'जरासधमाणमहणा' जरासन्धमानमथनाः=जरासन्धगर्वविनाशकाः, जरासन्धघातका इत्यर्थः, कंसवधकुपितं राजगृहनगरपतिं जरासन्धाभिधानं युद्धायोद्यतं हतवान्। पुनः कीदृशाः? इत्याह—'तेहि य अविरलसमसहिय चंदमंडलसमप्पभेहिं सूरमरीइ कवय विणिम्मुयतेहिं सप्पडि दडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायंता' तत्र 'तेहिं' तैश्चातिशयवद्भिश्छत्रैर्विराजमानाः, इति सम्बन्धः कीदृशैश्छत्रैः? इत्याह-अविरलसमसहितचन्द्रमण्डलसमप्रभैः=अविरलानि =घनानि-घनशलाकावत्त्वात्, समानि = तुल्यानि स्थूलत्वेन दीर्घत्वेन च शलाका-

स्त्रियों के रिपु थे—क्यों कि बाल्यावस्था में कृष्ण ने इन दोनों को मारा था, तथा (कसमउडमोडगा) कृष्ण ने कस के मुकुट को चूर २ कर दिया था-अर्थात्-चाणूर मल्ल के वध करने के अनन्तर जब कस युद्ध करनेकी इच्छावाला हो गया तो उसे मुकुट को पकड़ कर कृष्णने सिंहासन से नीचे खेच लिया और जमीन पर पटक कर मार डाला, इसी तरह (जरासधमाणमहणाा) कृष्णने-राजगृह नगर के अधिपति जरासध नाम के राजाओं को मारा हैं, कस के वध हो जाने के बाद जब जरासध कुपित होकर युद्ध करने के लिये उद्यत हो गया था तो कृष्ण ने उसे बात की-बात में सग्राम भूमि मे नष्ट कर दिया था, तथा (तेहि-य अविरल समसहियचद मडलसमप्पभेहिं सूरमरीइकवय विणिमुयतेहिं सप्पडिदडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता) जो अतिशय शाली छत्रों से विराजमान होते हैं अर्थात्-जिन छत्रों से बलदेव और वासुदेव सुशोभित होते हैं उन छात्रों की शलाईयां बहुत अधिक घनीभूत होती

પૂતના નામની એ સ્ત્રીઓના દુશ્મન હતા અને તે કારણે બાળપણમા તેમણે એ બન્નેને મારી હતી, તથા "कसमउडमोडगा" કૃષ્ણે કંસના મુગટના ચૂરે ચૂરા કરી નાખ્યા હતા ચાણૂર મલ્લનો કૃષ્ણે વધ કર્યા પછી જ્યારે કંસે કૃષ્ણ સાથે લડવાની ઇચ્છા બતાવી ત્યારે કૃષ્ણે તેનો મુગટ પકડીને તેને સિંહાસન ઉપરથી નીચે ખેંચીને જમીન ઉપર પછાડીને મારી નાખ્યો, આ રીતે "जरासधमाण महणा" કૃષ્ણે રાજગૃહ નગરના રાજા જરાસધનો વધ કર્યો હતો કંસનો વધ થયા પછી જ્યારે જરાસંધ ક્રોધે ભરાઇને લડવાને તૈયાર થયો ત્યારે કૃષ્ણે એક ઘડીમા તેનો રણમેદાનમા વધ કર્યો હતો તથા "तेहि य अविरलसमसहियचदमडलसमप्पभेहिं सूरमरीइ कवय विणिमुयतेहिं दडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता" તેઓ ઘણા સળિયા વાળા છત્રોથી શોભતા

ना समत्वात् छयोर्द्वयो शलाकयोरन्तरालस्यापि समत्वात्, महि ।।नि-शलाकानां निम्नोन्नतरहितत्वात् , तानि तथा-चन्द्रमण्डलसमप्रभाणि वृत्तत्वेन चन्द्रमण्डल समा प्रभा येषा तानि तथा ते -तथा 'सूरमरीइकवय विणिम्मुयतेहिं' सूरमरीचि कवच विनिर्मुञ्चद्भिः-सूरमरीचयः=सूर्यकिरणास्त इव मरीचयः देदीप्यमानप्रभूत मणिरत्नैः सर्वतः खचितत्वात्, तेषां कवचमिव कवच=परिकरःमण्डलाकारपरिणतत्वात्, त विनिर्मुञ्चद्भिः=त्यागवद्भिः, तथा 'सप्पडिदंडेहिं' सप्रतिदण्ड =अतिविशालत्वादेकेन दण्डेन धारणा शक्यतया प्रतिदण्डसहितैः 'आयवत्तेहिं' आतपत्रैः=

हैं, स्थूलता एव दीर्घता मे समान होती है तथा दो दो शलाकाओं का अन्तराल भी सम होता है तथा ये सब शलाकाएँ ऊँची नीची नहीं होने के कारण, अर्थात-एक सी होने के कारण परस्पर में सहित-मिली हुई होती है, इसलिये ये छत्र अविरल, सम और सहित होते हैं। तथा इन सब छत्रों की प्रभावृत्त-गोल-होने के कारण पूर्णचंद्र मडल जैसी होती है। तथा-ये समस्त छत्र देदीप्यमान अनेक मणियों एव रत्नों से जड़े हुए होने के कारण जिस किरण जाल को छोड़ते हैं वह ऐसा मालूम पड़ता है कि यह सूर्य की किरणों का ही जाल है, क्यों कि वह आसपास में मडलाकार से परिणत बना रहता है। तथा इन छत्रों में विशाल आकारवाले होने के कारण भिन्न २ दडे लगे रहते हैं एक ही दडे के सहारे ये नही रहते हैं, क्यो कि एक ही दडे से इनका अति विशाल होने के कारण सभालना अशक्य होता है। ऐसे प्रिय

હોય છે એટલે કે જે છત્રો બળદેવ અને વાસુદેવ ઉપર ધરવામા આવે છે તે છત્રોના સળિયાઓ ઘણી જ પાસે પાસે હોય છે, જાડાઈ અને લબાઈમા સરખા હોય છે, તથા બે સળિયાઓ વચ્ચેનુ અતર પણ સરખુ હોય છે તથા તે સળિયા લાબા ટૂકા નહી હોવાને કારણે, એક સરખા હોવાને કારણે પરસ્પર જોડાયેલ હોય છે, તેથી તે છત્ર અવિરલ, સમ અને સહિત હોય છે અને તે સઘળા છત્રોનો પરીઘ ગોળ હોવાને કારણે તે પૂર્ણચન્દ્ર જેવા લાગે છે તથા તે છત્રો પર અનેક તેજસ્વી મણીઓ અને રત્નો જડેલા હોય છે તેથી તેમાથી જે કિરણ જાળ નિકળે છે તે સૂર્યની કિરણજાળ જેવી લાગે છે, કારણ કે તે આસપાસમા મડલાકારે પથરાયા કરે છે તે છત્રો ઘણા વિશાળ હોવાથી તેને આધાર આપવાને અનેક દડા રાખ્યા હોય છે એક જ દડાને આધારે તે રહી શકતા નથી, કારણ કે તે છત્રો એટલા વિશાળ હોય છે કે એક જ દડા વડે તેને સભાળવા અશક્ય [illegible] એવા [illegible] છત્રોથી

महाछत्रैः ' धरिज्जतेहिं ' ध्रियमाणै' ' विरायता ' विराजमानाः। ये एतादृशा-स्तेऽपि काम भोगातृप्ता एव मरणधर्ममुपनमन्तीति योग' ॥ सू० ७॥

पुनः कीदृशास्ते ? इत्याह— ' ताहिय ' इत्यादि—

मूलम्—ताहिय पवरगिरिकुहर-विहरण-समुद्धियाहि निरुवहयचमरिपच्छिमसरीरसजायाहि अमइल-मियकमल-विमुकुलुज्जलियरययगिरि—सिहरविमलससिकिरण-सरिसक-होयनिम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय—सललियनच्चिय-वीइपसरिय-खीरोदगपवर-सागरुप्पूर-चवलाहि माणससर-पसर-परिचियावास-विसय-वसाहि कणगगिरि-सिहर संसि-याहि ओवाउप्पाय-चवल-जविय-सिग्घवेगाहि हसवधूयाहि चेव नानामणिकणग-महरिह-तवणिज्जुज्जल-विचित्तदडाहि सललियाहि नरवइसिरिसमुदयप्पगासणकराहि वरपट्टणु-ग्गयाहि समिद्धरायकुलसेवियाहि कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क धूववासविसिट्ठगंधुद्धयाभिरामाहि चिल्लियाहि उभओ पासपि चामराहि उक्खिप्पमाणाहि सुहसीयलवायवीयियंगा अजिया अजियरहा हलमुसलकणगपाणी सखचक्कगयसत्तिणंदग-धरा पवरुज्जलसुकय-विमलकोथुभ-किरीडधारी कुडल उज्जो-इयाणणा पुडरीयणयणा एगावलिकठ राइयवच्छा सिरिवच्छ सुलछणा वरजसा सव्वोउय सुरभि कुसुमरइयपलव-सोहत

माण छत्रों से ये विराजमान रहते हैं। ऐसे ये बलदेव और वासुदेव भी कामभोगों से अतृप्त बने रहते हैं और इसी स्थिति में मरणधर्म को प्राप्त करते हैं॥ सू०७॥

શોભતા બળદેવ અને વાસુદેવ પણ કામભોગોથી અતૃપ્ત રહે છે એ સ્થિતિમા મરણ પામે છે ॥ સૂ-૭ ॥

वियसत विचित्तवणमाल रइयवच्छा अट्टसयविभत्तलक्खण-पसत्थसुंदर - विराइयंगुवंगा मत्तगयवरिंद-ललिय - विक्कम विलसिय-गईकडिसुत्तकनील पीय–कोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया सारयणवथणिय-महुरगंभीर--णिद्धघोसा नरसीहा सीहविक्कमगई अत्थमिय पवररायसीहा सोम्मा बारवई पुण्ण चंदा पुव्वकयतवप्पभावा निविट्टसंचियसुहा अणेगवास सयमाउव्वतो भज्जाहियजणवयप्पहाणाहिं लालियता अउल-सद्दफरिस-रसरूवगधे य अणुभवित्ता ते वि उवण मंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं ॥ सू० ८ ॥

टीका:— 'ताहिय' ताभिश्च वक्ष्यमाणविशेषणविशिष्टाभिश्चामराभिरुत्क्षिप्यमानाभिः सुख शीतलवातवीजिताङ्गावलदेववासुदेवा, इति सम्बन्धः। कथम्भूताभिश्चामराभिः ? इत्याह—'पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं' प्रवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धृताभि.=प्रवरगिरिणां यानि कुहराणि=गह्वराणि तेषु यद्

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—'ताहि य' इत्यादि०।

टीकार्थः— (ताहि य उक्खिप्पमाणाहिं चामराहिं सुहसीयलवाय वीइयगा) इन वक्ष्यमाण विशेषणों से विशिष्ट ढोले गये चामरों की सुखप्रद शीतल वायु से जिनका अग वीजित होता रहता है ऐसे बलदेव और वासुदेव भी काम से अतृप्त ही मरण को प्राप्त करते हैं-ऐसा सबध यहा भी लगा लेना चाहिये। अब सूत्रकार चामरों के विशेषणो को स्पष्ट करते हैं — (पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं) जब चमरी गाय उत्तम पर्वतों की गुफाओं मे विचरण करती हैं तब वह

હજી તેઓ કેવા હોય છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—"ताहिय" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"ताहि य उक्खिप्प माणाहिं चामराहिं सुहसीयलवायवीइ यगा" આ પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવડે ઢોળવામા આવતા આનદદાયક શીતળવાયુ વડે જેમના અગો વાયુનુ સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવ અને વાસુદેવ પણ કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પથે પળે છે એવો સબધ અહી પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટતા કરે છે "पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं" જ્યારે ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

विहरण चमर्याख्यगवीना विचरण तस्मिन् काले समुद्धृताः कण्टकवृक्ष सलग्नभयाद् ऊर्ध्वीकृता यास्तास्तथा, ताभिः, 'निरुवहयचमरिपच्छिमसरीर-सजायाहिं' निरुपहतचमरीपश्चिमशरीरसञ्जाताभिः = निरुपहताना = नीरोगाणा चमरीणां=गो विशेषाणा पश्चिमशरीरे=पुच्छप्रदेशे सञ्जाताभिः = समुत्पन्नाभिः 'अमइलसियकमलविमुकुलुज्जलियरययगिरिसिहरविमलससिकिरणसरिस कलधोयनिम्मलाहिं' अमलिनसितकमलविमुकुलोज्ज्वलितरजतगिरिशिखर—विमल-शशिकिरणसदृशकलधौतनिर्मलाभिः तत्र 'अमइलसियकमल' अमलिनसित-कमलम्=अमलिन=अम्लान शीतातपादिभिः यत् सितकमल=श्वेतकमल पुण्डरीक तच्च विमुकुल=विकसित तथा 'उज्जलियरययगिरिसिहर' उज्ज्वलितरजतगिरि शिखरम्=उज्ज्वलित=भास्वर यद् रजतगिरिशिखर तथा विमलशशिकिरणाः = विमलाः=निर्मला ये शशिन =चन्द्रस्य किरणाश्च तत्सदृशाः कलधौतवत्=शुद्धरजतव-न्निर्मलाः=धवलायास्तास्तथा ताभि –अम्लानविकसितश्वेतकमलोज्ज्वलरजतपर्वत-शिखरविमलचन्द्रकिरणशुद्धरजतवदुज्ज्वलाभिरित्यर्थः । तथा 'पवणाहयचव

उस समय कण्टकमय वृक्षों मे लग जाने के भय से अपनी पूछ को ऊँचा उठा लेती है—इसलिये यहा प्रकट किया रहा है कि जो चामर चमरी गायकी पूछ में उत्पन्न होने के कारण प्रवरगिरि के कुहरों में भ्रमण काल के समय में ऊचे उठाये गये थे तथा (निरुवहयचमरीपच्छिमसरीर-सजायाहिं) जो निरूपहत–निरोग अवस्थावाली चमरी गायों की पूछ मे उत्पन्न हुए हैं, तथा (अमइलसियकमलविमुकुलुज्जलिय रययगिरि सिहरविमलससिकिरणसरिसकलधोयनिम्मलाहिं) जो शीत आतप आदिसे म्लान नही हुए विकसित श्वेत कमल के समान, भास्वर, रजत गिरि के शिखर के समान, निर्मलचद्र की किरणों के समान, एव शुद्ध चादी के समान निर्मल होते हैं। तथा (पवणा हयचवल चलिय सललि-

ગુફાઓમા ફરતી હોય છે ત્યારે કાટાળા વૃક્ષોમા ભરાઇ જવાની બીકે તે પોતાની પૂછડીને ઊચી રાખે છે તે કારણે અહી એમ બતાવવામા આવ્યુ છે કે જે ચામર ચમરી ગાયની પૂછડીમા ઉત્પન્ન થવાને કારણે ઉત્તમ પર્વતની ગુફા-ઓમા ભ્રમણ કરતી વખતે ઊચા ઉઠાવેલા હતા, તથા "निरवहयचमरी-पच्छिमसरीरसजायाहिं" જે નીરોગી શરીર વાળી ચમરી ગાયની પૂછડીમા ઉત્પન્ન થયેલ છે, તથા "अमइल–सियकमल–विमुकुलुज्जालिय-रययगिरिसिहर–विमलससि–किरणसरिसकलधोयनिम्मलाहि" જે શીત, તાપ આદિના ઝાખા ન પડેલ વિકસિત શ્વેત કમળ સમાન, ભાસ્વર, રજતગિરિના શિખર સમાન, નિર્મળ ચન્દ્રના કિરણો સમાન, અને શુદ્ધ ચાદીના જેવા નિર્મળ હોય છે,

वियसत विचित्तवणमाल रइयवच्छा अट्ठसयविभत्तलक्खण-पसत्थसुंदर - विराइयंगुवंगा मत्तगयवरिंद-ललिय - विक्कम विलसिय-गईकडिसुत्तकनील पीय--कोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया सारयणवथणिय-महुरगंभीर--णिद्धघोसा नरसीहा सीहविक्कमगई अत्थमिय पवररायसीहा सोम्मा वारवई पुण्ण चंदा पुव्वकयतवप्पभावा निविट्ठसंचियसुहा अणेगवास सयमाउव्वतो भज्जाहियजणवयप्पहाणाहिं लालियता अउल-सद्दफरिस-रसरूवगंधे य अणुभवित्ता ते वि उवण मंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं ॥ सू० ८ ॥

टीका:— 'ताहिय' ताभिश्च वक्ष्यमाणविशेपणविशिष्टाभिश्चामराभिरुत्क्षिप्यमानाभिः सुख शीतलवातवीजिताङ्गाबलदेववासुदेवा, इति सम्बन्धः। कथम्भूताभिश्चामराभि· ? इत्याह—' पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं ' प्रवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धृताभिः=प्रवरगिरिणां यानि कुहराणि=गह्वराणि तेषु यद्

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—' ताहि य ' इत्यादि० ।

टीकार्थः— (ताहि य उक्खिप्पमाणाहिं चामराहिं सुहसीयलवाय वीइयगा) इन वक्ष्यमाण विशेषणों से विशिष्ट ढोले गये चामरों की सुखप्रद शीतल वायु से जिनका अग वीजित होता रहता है ऐसे बलदेव और वासुदेव भी काम से अतृप्त ही मरण को प्राप्त करते हैं-ऐसा सबध यहा भी लगा लेना चाहिये। अब सूत्रकार चामरों के विशेषणो को स्पष्ट करते हैं — (पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं) जब चमरी गाय उत्तम पर्वतों की गुफाओं मे विचरण करती है तब वह

હજી તેઓ કેવા હોય છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—" ताहिय " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"ताहि य उक्खिप्प माणाहिं चामराहिं सुहसीयलवायवीइ यगा" આ પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવડે ઢોળવામા આવતા આનદદાયક શીતળવાયુ વડે જેમના અગો વાયુનુ સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવે અને વાસુ દેવ પણ કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પ્રાપ્ત થે પળે છે એવો સબધ અહી પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટતા કરે છે " पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं " જ્યારે ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

पातोत्पात चपल जवित शीघ्रवेगाभिः=अवपातः-ऊर्ध्वीभूया नःपतनम्, उत्पातः= अधोभूत्वोर्ध्वगमन, तयो. चपल =चञ्चलः जवितः=वेगयुक्त अतएव शीघ्र वेगो= गतिर्यासां तास्तथा ताभिः ' हसवधूयाहिं चेव ' हंसवधूभिरि व=हंसीभिरिव- हसीवत्प्रतीयमानाभिरित्यर्थ. । पुन. कथम्भूताभिश्चामराभिः ? इत्याह—' णाणा- मणिकणगमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं ' नानामणि कनक महार्हतपनी- योज्ज्वलविचित्रदण्डाभिः—तत्र नानाविधामणय = चन्द्रकान्तादयः कनक=पीत- वर्ण सुवर्णं तथा महार्हं=बहुमूल्य यत् तपनीय च=रक्तवर्ण सुवर्णं तैरेतैरुज्ज्वला.= भास्वराः विचित्रा = मणिसुवर्णादीना सम्मिश्रितकान्तिभिश्चित्रः विचित्रा दण्डा यासा तास्तथा ताभि. विविधमणिखचितरक्तपीतसुवर्णदण्डयुक्ताभिः, यथा सुवर्ण- गिरिशिखरे स्थिता हस्यः शोभमाना समुल्लसति तथा सुवर्णगिरिस्थानीय सुवर्ण दण्डोपरिस्थिताभि. धवलत्वात् हंसीभिरितिभावः । तथा ' सललियाहिं ' सललि

अवपात-ऊँचे जाने में जिन की गति बहुत अधिक वेग को लिये हो रही है ऐसी (हसवधूयाहिं चेव) हस वधुओ के समान जो चामर अपनी शुभ्रता के कारण ज्ञात हो रहे है । तथा (णाणामणिकणगमह- रिह तवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं) जिन चामरों के दड चंद्रकान्त आदि नाना प्रकार की मणियो की कांति से, पीतसुवर्ण की प्रभा से, एव बहुमूल्य तपे हुए रक्तवर्ण वाले सुवर्णकी आभासे-इन सबकी परस्पर मिश्रित कान्ति छटा से-अधिक उज्जल और रँग विरँगे मालूम दे रहें है, अर्थात् जिस प्रकार सुमेरुपर्वत के तट पर स्थित हँस कामनियाँ सुहावनी लगती है उसी प्रकार ये चामर भी सुवर्णगिरि के शिखर-तट जैसे दडों पर स्थित होने के कारण अपनी धवलता के कारण हसनियों के समान प्रतीत होते हैं (सललियाहिं) ये चामर

वेगाहिं " ઊંચેથી નીચે આવવામાં અને નીચેથી ઊંચે જવામાં જેની ગતિ ઘણી ઝડપી હોય છે એવી " हसवधूयाहिं चेव " હંસવધૂઓ (હંમલીઓ) જેવા જે ચામરો પોતાની શ્વેતતાને કારણે લાગે છે તથા " णाणामणिकणगमहरिह- तवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं ' જે ચામરોના દંડો ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ પ્રકારના મણીઓના કાંતિથી, પીતસુવર્ણની પ્રભાથી, અને તપાવેલા બહુમૂલ્ય વાન રક્તવર્ણના સુવર્ણની આભાથીએ બધાની પરસ્પર મિશ્રિત કાન્તિથી-અધિક ઉજ્જવળ અને રંગ બે રંગી લાગે છે, એટલે કે જેમ સુમેરુ પર્વતના શિખરો પર રહેલી હંમલીઓ સુંદર લાગે છે એ જ પ્રમાણે તે ચામરો પણ સુવર્ણ ગિરિના શિખર જેવા દંડો ઉપર આવેલ હોવાથી પોતાની શ્વેતતાને કારણે હંસલીઓ જેવા લાગે છે " सललियाहिं " તે ચામરો લાલિત્ય વાળા હતા.

लचलियसललियनच्चियवीइपसरियखीरोदगपवरसागरुप्पूरचवलाहिं ' पवनाहत-चपलचलितसललितनर्तितवीचिप्रसृतक्षीरोदकप्रवरसागरोत्पूरचपलाभिः = तत्र पवनेन = वायुना आहत = घट्टितः, अतएव चपल यथास्यात्तथा चलितः सललित=सविलसित च नर्तितः=गतिविशेष प्राप्त, तथा वीचिभिः=तरङ्गैः प्रसृतः क्षीरोदकप्रवरसागरस्य = क्षीर सागरस्य य उत्पूरः=जलप्रवाहस्तद्वत् चपलाभि =चञ्चलाभिः बहुधवलतरङ्गयुक्तक्षीरसागरनीरप्रवाहवत्प्रतीयमानाभिः, अथ हसवधूभिरुपमयन्नाह ' माणससरपसरपरिचियावासविसयवेसाहिं ' मानससरः प्रसरपरिचितावासविशदवेषाभिः=मानससरसः प्रसरे=विस्तृतप्रदेशे परिचितः =अभ्यस्त आवासः=निरन्तरनिवासः, अतएव विशदः=धवलश्च वेषो=वर्णो यासां तास्तथाविधाभिः, ' कणगगिरिसिहरसंसियाहिं कनकगिरिशिखरसंश्रिताभिः = सुमेरुतटविहारिणीभिः, अतएव ' ओवाउप्पायचवलजवियसिग्घवेगाहिं ' अव

यनच्चियवीइपसरीयखीरोदगपवरसागरुप्पूरचवलाहिं) वायु से आहत होने के कारण अत्यत चपल बने हुए और इसी से जो मानो विलास सहित होकर नृत्य कर रहा है, तथा तरङ्गोने जिसे विशेष विस्तृत कर दिया है ऐसे क्षीरसागर के प्रवाह के समान जो चचल हैं अर्थात् अत्यत धवल तरगों से युक्त क्षीरसागर के प्रवाह के जैसे जो दिखाई दे रहे हैं। तथा (माणससरपसरपरिचियावासविसयवेसाहिं) जो हसवधू के समान प्रतीत हो रहे हैं, हसी मानसरोवर में रहती है इसी विषय को लेकर सूत्रकार कहते हैं कि मानसरोवर के विस्तृत प्रदेश में अभ्यस्त निरन्तर निवास के वश से जिन हसवधुओं का वर्ण धवल हो गया है, और (कणगगिरिसिहरससियाहिं) जो सुमेरुपर्वत के तटो पर विहार करती हैं, तथा (ओवाउप्पायचवलजवियसिग्घवेगाहिं)

तथा " पवणाहयचवल-चलिय-सललिय-नच्चियवीइ-पसरिय-खीरोदगपवर-सागरुप्पूरचवलाहि " પવન આવવાને કારણે ચપલ બનેલ અને તે કારણે જાણે વિલાસી બનીને નૃત્ય કરતા હોય તેવા તથા તરગોએ જેને વધારે વિસ્તૃત કરી નાખેલ છે એવા ક્ષિર સાગરના પૂર સમાન જે ચચળ છે—એટલે કે સફેદ તરગોથી યુક્ત ક્ષીરસાગરના પ્રવાહ જેવા જે કોઈ દેખાઈ રહ્યા છે, તથા " माणससर-पसर-परिचियावासविसय-वेसाहि " જે હસલીઓના જેવા લાગે છે, હસલી માનસરોવરમા રહે છે તે વિષયને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર કહે છે કે માનસરોવરના વિસ્તૃત પ્રદેશમા હમેશા રહેવાને કારણે ને હસલીઓના રગ શ્વેત થઈ ગયો હોય છે, અને—" कणगगिरिसिहरससियाहिं " જે સુમેરુ પર્વતના શિખરો પર વિહાર કરે છે, તથા " ओवाउप्पायचवलजवियसिग्घ

' उभओ पासपि ' उभयोरपि पार्श्वयोः, ' उक्खिप्पमाणाहिं' उत्क्षिप्यमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ' चामराहिं ' चामराभि =बालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि 'चामर चमराऽपि च' इति मेदनी कोपात्, 'सुहसीयलवाय' सुख शीतलवाताभिः सूत्रे लुप्तविभक्तिक पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ' वीइयगा ' वीजीताङ्गाः=वीजीतान्यङ्गानि येषा ते तथा 'अजिया' अजिताः=अन्यैरपराजिता ' अजियरहा ' अजितरथाः=अपराजितरथाः ' हलमुसलकणगपाणी ' हलमुसलकनकपाणयः= हल च मुसल च कनक=कनकाभरण वलय इत्यर्थः=हस्ते येषा ते तथा हलमुसल कनक पाणयो बलदेवाः। वासुदेवाश्च ' सख चक्कगयसत्तिणदगधरा ' शङ्ख चक्रगदाशक्ति नन्दनधराः=शङ्ख =पाञ्चजन्या भिध'चक्र=सुदर्शनाख्य, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष , नन्दकश्च=खड्ग , एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिद, ' पवरुज्जलसुकयविमलकोथुभ किरीडधारी ' प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे। ऐसे ये (चामराहिं) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आजू बाजू में-दोनों पार्श्वभागो में-ढोले जा रहे थे। (सुहसीयल वायवीइयगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वींजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे। (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे। (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कडे रहते थे। पाचजन्य नामका शख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नदक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे। अत्यत भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

---

" चिल्लियाहिं " तेओ तेमनी કાन्तिथी घणा ज तेजस्वी लागता हता એવા ते " चामराहिं " ચામરો કૃષ્ણ અને બળદેવની " उभयो पासपि " આજુબાજુએ બન્ને પડખે ઢોળવામા આવતા હતા " सुहसीयल्वायवीईयगा " તેનાથી ઉત્પન્ન થતો શીતળ અને સુખદ વાયુ તેમના શરીરપર વીઝાતો હતો " अजिया " તે બળદેવ અને વાસુદેવ બીજા લોકો દ્વારા અપરાજિત હતા " अजियरहा " તેમના રથોને રોકવાની તાકાત કોઈ પણ વ્યક્તિમા ન હતી તેથી તેઓ અજિતરથ હતા " हलमुसलकणगपाणी " બળદેવના હાથમા હળ, મુસળ અને સોનાના કડા રહેતા હતા પાચજન્ય નામનો શખ, સુદર્શનચક્ર, કૌમોદકી નામની ગદા, શક્તિ નામનુ શસ્ત્ર અને નદક નામની તલવાર એ બધુ કૃષ્ણ વાસુદેવ પાસે રહેતુ હતુ " पवरुज्जलसुकय-विमल-कोथुभ-किरीडधारी "

ताभिः = लालित्ययुक्ताभिः, 'नरवइ सिरिसमुदयप्पगासणकराहिं' नरपति श्री समुदयप्रकाशकराभि = राजलक्ष्मी प्रकर्ष सूचिकाभिः, 'वरपट्टणुग्गयाहिं' वरपत्त नोद्‌गताभिः = शिल्पप्रधाननगरनिर्मिताभि, 'समिद्धरायकुलसेवियाहिं' समृद्धराजकुलसेविताभिः = पितृपितामहादि परम्परया समागताभि, तैः परिधृताभिरित्यर्थः, 'कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूववासविसिट्ठगंधुद्‌धूयाभिरामाहिं' कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपविशिष्टगन्धोद्‌धूताभिरामाभिः = तत्र कालागुरुः=कृष्णागुरुः प्रवर=प्रधान-सर्वोत्तमं, कुन्दुरुष्क=चीडाख्यगन्धद्रव्य, तुरुष्क=तुरुष्कदेशोद्भव-सिल्हकाभिधगन्धद्रव्य 'लोबान' इति भाषा प्रसिद्धम्, इत्येवल्ल क्षणा यो धूपाः=धूपविशेषास्तेषां यो वासः=वासना तेन विशिष्टः=विलक्षणो गन्धः स उद्‌धूतः=परितो विसारी तेन अभिरामाः=मनोज्ञा यास्तास्तथा ताभिः, नाना विधधूपगन्धयुक्ताभिरित्यर्थः 'चिल्लियाहिं' देदीप्यमानाभि' देशीशब्दोऽयम्,

---

लालित्य से युक्त थे। तथा (नरवइसिरिसमुदयप्पगासणकराहिं) जिनके ऊपर ये ढोरे जाते हैं उनकी ये राजलक्ष्मी के प्रकर्ष के सूचक होते हैं। तथा (वरपट्टणुग्गयाहिं) साधारण स्थानों में ये नहीं बनाये जाते हैं किन्तुजो शिल्पप्रधान नगर होते हैं उन्हीं में ये निर्मित होते हैं। तथा (समिद्धरायकुलसेवियाहिं) बलदेव और वासुदेव पर जो चामर ढोरे जा रहे थे-वे उनकी वंशपरंपरा से चले हुए आ रहे थे। (कालागुरुपवरकुंदुरुक्क तुरुक्कधूववासविसिट्ठगंधुद्‌धूयाभिरामाहिं) ये चामर कालागुरु उत्तम चीडा नामकगंधद्रव्य तथा लोबान को जलाकर उनकी गंध से वासित किये हुए थे, अत. इनकी चारों ओर सुगंध निकल कर फैल रही थी उससे ये बड़े मनोहर लगते थे। तथा (चिल्लियाहिं)

તથા "नरवइसिरिसमुदयप्पगासणकराहिं" જેમની ઉપર તે ઢોળાય છે, તેમની રાજલક્ષ્મીની વિપુલતાના તે સૂચક હોય છે તથા "वरपट्टणुग्गयाहिं" સાધારણ સ્થાનોમા તે બનતા નથી પણ જે શિલ્પ પ્રધાન નગરો હોય છે, તેમા જ તે ચામરો બનાવવામા આવે છે તથા "समिद्धरायकुलसेवियाहिं" બળદેવ અને વાસુદેવ પર જે ચામરો ઢોળવામા આવતા તે તેમની વંશપરંપરાથી ચાલ્યા આવતા હતા. "कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूववास-विसिट्ठ-गंधुद्‌धूयाभिरामाहिं" તે ચામરોને કાળા અગરુ, ઉત્તમ ચીડા નામનું સુગંધીદાર દ્રવ્ય, તથા લોબાનનો ધૂપ દઈને તેમના ગંધથી સુગંધ યુક્ત બનાવ્યા હતા, તેથી તેમની સુગંધ ચોમેર ફેલાઈ રહી હતી તેથી તે મનોહર લાગતા હતા તથા

' उभओ पासपि ' उभयोरपि पार्श्वयोः, ' उक्खिप्पमाणाहिं' उत्क्षिप्यमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ' चामराहिं ' चामराभि =वालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि 'चामर चमराऽपि च' इति मेदनी कोपात्, 'सुहसीयलवाय' सुख शीतलवाताभिः सूत्रे लुप्तविभक्तिक पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ' वीइयगा ' वीजीताङ्गाः=वीजीतान्यङ्गानि येषा ते तथा 'अजिया' अजिताः=अन्यैरपराजिता ' अजियरहा ' अजितरथाः=अपराजितरथाः ' हलमुसलकणगपाणी ' हलमुसलकनकपाणयः= हल च मुसल च कनक=कनकाभरण वलय इत्यर्थः=हस्ते येषा ते तथा हलमुसल कनक पाणयो बलदेवाः। वासुदेवाश्च ' सख चक्कगयसत्तिणदगधरा ' शङ्ख चक्रगदाशक्ति नन्दनधराः=शङ्ख =पाञ्चजन्याभिधःचक्र=सुदर्शनाख्य, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष , नन्दकश्च=खड्ग , एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिद, ' पवरुज्जलसुकयविमलकोथुभ किरीडधारी ' प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे। ऐसे ये (चामराहिं) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आजू बाजू में-दोनों पार्श्वभागो में-ढोले जा रहे थे। (सुहसीयल वायवीइयगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वींजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे। (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे। (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कडे रहते थे। पाचजन्य नामका शख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नदक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे। अत्यत भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

---

" चिल्लियाहिं " तेओ तेमनी कान्तिथी घणा ज तेजस्वी लागता हता एवा ते " चामराहिं " चामरो कृष्ण अने बळदेवनी " उभयो पासपि " आजुबाजुए बन्ने पडखे ढोळवामा आवता हता " सुहसीयलवायवीईयगा " तेनाथी उत्पन्न थतो शीतळ अने सुखद वायु तेमना शरीरपर वीझातो हतो " अजिया " ते बळदेव अने वासुदेव बीजा लोको द्वारा अपराजित हता " अजियरहा " तेमना रथोने रोकवानी ताकात कोई पण व्यक्तिमा न हती तेथी तेओ अजितरथ हता " हलमुसलकणगपाणी " बळदेवना हाथमा हळ, मुसळ अने सोनाना कडा रहेता हता पाचजन्य नामनो शख, सुदर्शनचक्र, कौमोदकी नामनी गदा, शक्ति नामनु शस्त्र अने नदक नामनी तलवार ए बधु कृष्ण वासुदेव पासे रहेतु हतु " पवरुज्जलसुकय-विमल-कोथुभ-किरीडधारी "

अतिभास्वरः सुकृतः=सुष्ठु रचितो विमलः=स्वच्छो यः कौस्तुभो मणिविशेषस्त तथा किरीट=मुकुट च धारयन्ति ये ते तथा इदमपि वासुदेव विशेषणम् । 'कुंडल उज्जोवियाणणा' कुण्डलोद्योतिताननाः=कुण्डलं=कर्णभूषणे -उद्योतित=प्रकाशित माननं=मुख येषा ते तथा, 'पुंडरीयणयणा' पुण्डरीकनयना'=कमलाक्षा 'एगावलिकंठरइयवच्छा' एकावलीकण्ठरचितवक्षस =एकावली कण्ठे रचिता =कण्ठावलम्बिनी सतीकृता वक्षसि=वक्षःस्थले येषा ते तथा 'सिरिवच्छसुलंछणा' श्रीवत्ससुलाञ्छनाः=श्रीवत्स =श्रीवत्सःस्वस्तिकविशेषः स एव शोभन लाञ्छन येषा ते तथा 'वरजसा' वरयशस =विश्रुतकीर्तय. 'सव्वोउयसुरभिकुसुमरइय—पलंब सोहंत-वियसंत-विचित्तवणमालरइय-वच्छा' सर्वर्तुकसुरभिकुसुमरचित—प्रलम्ब शोभमानविकसद्विचित्रवनमाला रचितवक्षस'=सर्वर्तुकैः=सर्वर्तुभवै' सुरभिकुसुमैः'=सुगन्धिपुष्पैः रचिताः=निर्मिता प्रालम्बशोभमाना-प्रलम्बमानत्वेन सुशोभना

शुभकिरिडधारी) अत्यन्त भास्वर अच्छी तरह से रचित, तथा स्वच्छ ऐसा कौस्तुभ रत्न तथा किरीट-मुकुट इन्हें कृष्ण वासुदेव धारण करते थे । तथा (कुंडल उज्जोइयाणणा) इन दोनों भाईयों का मुख कर्णाभूषणों से सदा प्रकाशित रहता था। (पुंडरीयणयणा) इनके नयन पुंडरिक- (श्वेतकमल) जैसे शोभायमान थे । (एगावलिकंठरइयवच्छा) कंठ में जो ये एकावली हार पहिने हुए ये वह छाती तक लटकता था। (सिरिवच्छ सुलंछणा) श्रीवत्स नामक स्वस्तिक विशेष चिह्न इनके वक्षस्थल में था (वरजसा) चारों तरफ इनकी कीर्त्ति फैली हुई थी, (सव्वोउयसुरभिकुसुमरइयपलंबसोहंतवियसंतविचित्तवणमालरइयवच्छा) इनके वक्षस्थल पर जो वनमाला लटक रही थी वह समस्त ऋतु संबंधी सुरभितपुष्पों से गुंथी हुई थी, एवं बहुत लंबी थी, इसलीये बड़ी

અત્યંત ભાસ્વર-સુંદર રીતે તૈયાર કરેલ, સ્વચ્છ કૌસ્તુભ રત્ન તથા કિરીટમુગટ કૃષ્ણવાસુદેવ ધારણ કરતા હતા તથા "कुंडलउज्जोइयाणणा" તે બન્ને ભાઈઓના મુખ કર્ણાભૂષણોથી સદા પ્રકાશિત રહેતા હતા, "पुंडरीयणयणा" તેમના નયન પુંડરીક (સફેદ કમળ) જેવા સુંદર હતા 'एगावलीकंठरइयवच्छा" કંઠમાં જે એક સરવાળો હાર પહેર્યો હતા તે છાતી સુધી લટકતા હતા "सिरिवच्छसुलंछणा" તેમના વક્ષસ્થળ ઉપર શ્રી વત્સ નામનું સ્વસ્તિક વિશેષ ચિહ્ન હતુ, "वरजसा" તેમની કીર્તિ ચોમેર વ્યાપી હતી, "सव्वोउय-सुरभिकुसुमरइय-पलंब-सोहंत-वियसंत विचित्तवणमाल-रइयवच्छा" તેમના વક્ષ સ્થળ પર જે પુષ્પમાળા લટકતી હતી તે બધી ઋતુઓના સુગંધિદાર ફૂલો વડે ગુંથેલી હતી, અને બહુ લાંબી હતી, તેથી તે ઘણી સુંદર લાગતી હતી, તથા

विकसन्ती–विकसायमाना विचित्रा=नानारूपकुसुमग्रथितत्वाच्चित्ररूपा या वनमाला सा रचिता वक्षसि=वक्षःस्थले येषां ते तथा, 'अट्ठसयविभत्तलक्खणपसत्थ सुंदरविराइयगुवंगा' अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुन्दरविराजिताङ्गोपाङ्गा = अष्टशतविभक्तलक्षणै:–अष्टोत्तरशतप्रकारलक्षणैः प्रशस्तैः = श्लाघनीयैः सुन्दरैः=नयनाह्लादजनकैः विराजितान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा अष्टशतशुभलक्षणलक्षित शरीरा इत्यर्थः, 'मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई' मत्तगजवरेन्द्रललित विक्रमविलसितगतयः=मत्तगजवरेन्द्रस्य=ऐरावतस्येव ललितं सुविलासः यो विक्रम चङ्क्रमण–गमनं तद्वत्, विलसिता=विलासयुक्ताः गतिर्येषां ते तथा 'कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवासमा' कटिसूत्रकनीलपीतकौशेयवाससः = कटिसूत्रकानि = कटिसूत्रप्रधानानि नीलपीतानि कौशेय वासांसि=कौशेयवस्त्राणि 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानि येषां ते तथा नीलाम्बरा बलदेवाः, पीताम्बरा वासुदेवाः इति बोध्य 'पवरदित्ततेया' प्रवरदीप्ततेजसः = महातेजस्विनः, 'सारयण

सुहावनी लगती थी, तथा विकसायमान थी, तथा विविध प्रकार के पुष्पों से ग्रथित होने के कारण वह रँग विरँगी थी, । (अट्ठसयविभत्तलक्खणपसत्थसुदरविराइयगुव्वगा) प्रशस्त–श्लाघनीय–एव सुन्दर–नेत्रों को आह्लादजनक ऐसे एक सौ आठ (१०८) भिन्नर प्रकार के लक्षणों से जिनके अग और उपाग सुशोभित होते थे, तथा (मत्तगयवरिंद ललियविक्कमविलसियगई) ऐरावत के विलासयुक्त गमन के समान जिनकी गति विलास सहित होती थी, तथा (कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवासमा) जिनके पहिरे हुए नीले पीले रेशमी वस्त्रों (पीत अम्बर धारी वासुदेव एव नील अम्बर धारी बलदेव होते हैं) पर कटिसूत्र बहुत ही अधिक सुहावना प्रतीत होता है–अर्थात जिन के नीले पीले रेशमी वस्त्र और कटिसूत्र प्रधान होते हैं। तथा (पवरदित्ततेया) जो

વિકસિત હતી, તથા વિવિધ જાતના ફૂલોમાંથી ગુંથેલી હોવાથી રંગબેરંગી હતી " अट्ठसयविभत्त–लक्खणपसत्थ–सुंदर–विराइयगुवंगा " પ્રશસ્ત–વખાણવાલાયક અને સુંદર નેત્રોને આનંદદાયક એવા એક સો આઠ (૧૦૮) જુદા જુદા પ્રકારના લક્ષણોથી જેમના અંગ ઉપાંગો શોભતા હતા, તથા " मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई " ઐરાવતના વિલાસયુક્ત ગમન સમાન જેમની ગતિ વિલાસયુક્ત હતી, તથા " कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा " જેમણે પહેરેલા વાદળી અને પીળા વસ્ત્રો " પીતાંબર ધારી વાસુદેવ અને નીલાંબર ધારી બળદેવ " પર કટિસૂત્ર અત્યંત સુંદર લાગતું હતું તથા " पवरदित्ततेया" જે મહાતેજસ્વી હતા તથા " सारयणव–थणिय–महुर–गभीर–णिद्ध घोसा "

वधणियमहुरगंभीरणिद्धघोसा ' शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरस्निग्धघोषाः = शारद=शरत्कालिक नवस्तनित = नूतनो मेघध्वनिः तद्वन्मधुरः-कर्णसुखकरः गम्भीरः स्निग्धः=स्नेहजनकः घोषः=शब्दो येषां ते तथा, 'नरसीहा' नरसिंहाः= नरेषु सिंहाइव, एतत्साधर्म्यमाह—' सीहविक्कमगई ' सिंहविक्रमगतयः= सिंहस्येव विक्रमः=पराक्रमः गतिश्च येषां ते तथा ' अत्थमियपवररायसीहा ' अस्तमित प्रवरराजसिंहाः=अस्तमिताः=अस्तं प्रापिताः पराजिताः प्रवराः-विशिष्टाः राजसिंहाः=शूरराजानो यैस्ते तथा । ' सोम्मा ' सौम्याः=सौम्यरूपाः ' बारवई पुण्णचंदा ' द्वारावती पूर्णचन्द्राः=द्वारकापुर्याः आह्लादकत्वात् पूर्णचन्द्र स्वरूपाः, ' पुव्वकयतवप्पभावा ' पूर्वकृततपःप्रभावात् = पूर्वभवकृततपो माहात्म्यात् ' निविट्ठसचियसुहा ' निविष्ट सञ्चितसुखाः=निविष्टानि=लब्धानि सञ्चितानि=पूर्वभवोपार्जितानि सुखानि यैस्ते तथा ' अणेगवाससयमाउव्वंतो ' अनेक वर्षशता युष्मन्तः वर्षसहस्राद्यायुष्काः, 'भज्जाहिय जाणवयप्पहाणाहिं ' भार्याभिश्च जनपद-

महातेजस्वी होते हैं तथा (सारयणवथणियमहुरगंभीरणिद्धघोसा) जिनका बोलना शरदकालीन नवीनमेघध्वनि के जैसा कर्णसुखकर एव स्निग्ध-स्नेहजनक होता है, तथा (नरसीहा) जो मनुष्यों के बीच में सिंह के जैसे होते हैं तथा (सीहविक्कमगई) जिनका पराक्रम और गमन सिंह के समान होता है,तथा (अत्थमियपवररायसीहा) जो अपने पराक्रम से-प्रवर राजसिंहों को अस्तमित-पराजित-कर देते हैं। तथा जो (सोम्मा) सौम्यरूप होते हैं, एव (बारवईपुण्णचंदा) द्वारकापुरी के आह्लादक होनेके कारण जो पूर्णचन्द्रस्वरूप होते हैं (पुव्वकयतवप्पभावा निविट्ठसचियसुहा) तथा-जो पूर्वकृत तप के प्रभाव से पहिले भवों में उपार्जित सुखों को प्राप्त करते हैं, तथा (अणेगवाससयमाउव्वंता) जो सैकड़ो वर्षों की आयुवाले होते हैं, तथा (भज्जाहिय जणवयप्पहाणा-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્નિગ્ધ-સ્નેહ જનક હતા, તેથી " नरसीहा " જે માણસોની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા " सीहविक्कमगई " જેમની ગતિ અને જેમનું પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા " अत्थमियपवररायसीहा " જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજસિંહોને મહાત કરતા હતા તથા જે " सोम्मा " સૌમ્ય હતા, અને " बारवई पुण्णचंदा " દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચન્દ્ર હતા, " पुव्वकयतवप्पभावा निविट्ठसचियसुहा " તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગળના ભવોમાં ઉપાર્જિત સુખો પ્રાપ્ત કરે છે તથા " अणेगवाससयमाउव्वतो " જે સેંકડો વર્ષના આયુષ્ય વાળા હોય છે, તથા " भज्जाहियजणवयप्पहाणाहिं

प्रधानाभि =देश रत्न रूपाभि. = ' लालियता ' लाल्यमानाः = विलास्यमानाः ' अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधेयअणुभवित्ता ' अतुलशब्दरसरूपगन्धांश्च अनुभूय 'ते वि' तेऽपि=तादृशा अपि 'अवितित्ता कामाणं' अवितृप्ताः कामानां=कामभोगेषु तृप्तिरहिता एव ' उवणमंति मरणधम्मं ' मरणधर्ममुपनमन्ति ॥ सू० ८ ॥

पुनः केऽब्रह्मसेविन ? इत्याह ' भुज्जो मंडलिय ' इत्यादि—

मूलम्–भुज्जो मंडलियणरवरिंदा सबला सअंतेउरा सपरिसा सपुरोहियाऽमच्चदंडणायगसेणावइ – मंतिणीइ – कुसला णाणामणि–रयण-विउलधणधण्णसंचय-निहिसमिद्धकोसा, रज्जसिरिविउलमणुभवित्ता विक्कोसंता बलेणमत्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं ॥ सू० ९ ॥

टीका—' भुज्जो ' भूय =पुनरपि ' मंडलिय णरवरिंदा ' माण्डलिकनरवरेन्द्रा.=मण्डलाधिपतय (सबला) सबलाः=सेना सहिताः ' स अंतेउरा '

हिं लालियता) जो जनपद्प्रधानभूत देशो में रत्नरूप से मानी गई अर्थात्–सर्वोत्कृष्ट स्त्रियों के साथ आनंद करते हैं–वैषयिक सुखों को भोगते है (तेवि) ऐसे वे बलदेव और वासुदेव भी (अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधे य अणुभवित्ता) अतुल शब्द, स्पर्श, रस रूप, एवं गंध रूप विषयोंका अनुभव करके भी (अवितत्तकामाणं) कामभोगों की तृप्तिसे विहीन ही (उवणमंतिमरणधम्मं) मरणधर्मको प्राप्त करते हैं ॥सू०८॥

अब सूत्रकार " और कौन अब्रह्मसेवी होते है " इस बात को कहते हैं—' भुज्जो मंडलियणरवरिंदा ' इत्यादि० ।

टीकार्थः—(भुज्जो मंडलिय णरवरिंदा) फिर जो मंडलाधिपति

लालियता " જે મુખ્ય મુખ્ય દેશોમા રત્નસમાન ગણાતી એટલે કે અનુપમ સ્ત્રીઓ સાથે આનંદ કરે છે વૈષયિક સુખોને ભોગવે છે " ते वि " એવા તે બળદેવ અને વાસુદેવ પણ " अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधे य अणुभवित्ता " અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ રસ, રૂપ અને ગંધ રૂપ વિષયોનો ઉપભોગ કરવા છતા પણ " अवितत्तकामाणं " કામભોગોથી અતૃપ્ત એવી હાલતમા જ "उवणमंति मरणधम्मं " મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર બતાવે છે કે બીજા અબ્રહ્મસેવી કોણ હોય છે? " भुज्जो मंडलियणरवरिंदा " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"भुज्जो मंडलियणरवरिंदा" અને જે માંડલિકો હોય છે, તેઓ કેવાં

वयणियमहुरगंभीरणिद्धघोसा ' शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरस्निग्धघोषाः = शारद=शरत्कालिकं यन्नवस्तनित = नूतनो मेघध्वनिः तद्वन्मधुर'-कर्णसुखकरः गम्भीर' स्निग्धः=स्नेहजनकः घोषः=शब्दो येषा ते तथा, 'नरसीहा' नरसिंहाः= नरेषु सिंहाइव, एतत्साधर्म्यमाह—' सीहविक्कमगई ' सिंहविक्रमगतयः= सिंहस्येव विक्रमः=पराक्रमः गतिश्च येषां ते तथा ' अत्थमियपवररायसीहा ' अस्तमित प्रवरराजसिंहाः=अस्तमिताः=अस्त प्रापिताः पराजिताः प्रवराः-विशिष्टाः राजसिंहाः=शूरराजानो यैस्ते तथा । ' सोम्मा ' सौम्याः=सौम्यरूपाः ' वारवई पुण्णचंदा ' द्वारावती पूर्णचन्द्राः=द्वारकापुर्याः आह्लादकत्वात् पूर्णचन्द्र स्वरूपाः, ' पुव्वकयतवप्पभावा ' पूर्वकृततप प्रभावात् = पूर्वभवकृततपो माहात्म्यात् 'नि विट्ठसचियसुहा ' निविष्ट सञ्चितसुखाः=निविष्टानि=लग्नानि सञ्चितानि=पूर्व-भवोपार्जितानि सुखानि यैस्ते तथा ' अणेगवाससयमाउव्वतो ' अनेक वर्षशता युष्मन्तःवर्षसहस्राद्यायुष्काः, 'भज्जाहिय जाणवयप्पहाणाहिं ' भार्याभिश्च जनपद-

महातेजस्वी होते हैं तथा (सारयणवथणियमहुरगंभीरणिद्धघोसा) जिनका बोलना शरदकालीन नवीनमेघध्वनि के जैसा कर्णसुखकर एव स्निग्ध-स्नेहजनक होता है, तथा (नरसीहा) जो मनुष्यों के बीच में सिंह के जैसे होते हैं तथा (सीहविक्कमगई) जिनका पराक्रम और गमन सिंह के समान होता है,तथा (अत्थमियपवररायसीहा) जो अपने पराक्रम से-प्रवर राजसिंहों को अस्तमित-पराजित-कर देते हैं। तथा जो (सोम्मा) सौम्यरूप होते हैं, एव (वारवईपुण्णचदा) द्वारकापुरी के आह्लादक होनेके कारण जो पूर्णचन्द्रस्वरूप होते हैं (पुव्वकयतवप्पभावा निविट्ठसचियसुहा) तथा-जो पूर्वकृत तप के प्रभाव से पहिले भवों में उपार्जित सुखों को प्राप्त करते हैं, तथा (अणेगवाससयमाउव्वता) जो सैकड़ो वर्षो की आयुवाले होते हैं, तथा (भज्जाहिय जणवयप्पहाणा-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્નિગ્ધ-સ્નેહ જનક હતા, તેથી " नरसीहा " જે માણુસોની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા " सीह विक्कमगई " જેમની ગતિ અને જેમનુ પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા " अत्थमियपवररायसीहा " જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજસિંહોને મહાત કરતા હતા તથા જે " सोम्मा " સૌમ્ય હતા, અને " वारवई पुण्णचदा " દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચન્દ્ર હતા, " पुव्वकय तवप्पभावा निविट्ठसचियसुहा " તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગ ળના ભવોમા ઉપાર્જિત સુખો પ્રાપ્ત કરે છે તથા " अणेगवाससयमाउव्वतो " જે સેંકડો વર્ષના આયુષ્ય વાળા હોય છે, તથા " भज्जाहियजणवयप्पहाणाहि

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—'भुज्जो उत्तरकुरु' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु-देवकुरु-वणविवर-पायचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थ सोमपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा सुजायसव्वगसुंदरंगा रत्तुप्पलपत्तकंतकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्वसुसहयगुलया उण्णय-तणु-तंव-निद्ध-नखा सठियसुसिलिट्ठगूढगोफा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिमग्गगूढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्कम विलासियगई वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुवलेवा पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्टिय कडीगंगावत्तगदाहिणावत्ततरगभगुररविकिरणवोहियविकोसायंत – पम्ह – गभीरवियडनाभी साहयसोणंदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगछरु सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसंहियजच्चतणुकसिणनिद्ध आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकुच्छी झसोदरा पम्ह वियडणाभी संनयपासा संगयपासा सुदरपासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरंडुय कणगरुयग निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसमतलउवइयविरिथण्णपिहुलवच्छा जुयसण्णिभ – पीणरइय

(अवितत्ता कामाणं) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म उवणमंति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू०९ ॥

"ते वि' ते માંડલિક આદિ રાજાઓ પણ "अवितत्ताकामाण" કામભોગોથી અતૃપ્ત રહીને જ "मरण धम्म उवणमंति" મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ. ૯ ॥

सान्तः पुरा =सस्त्रीकाः ' सपरिसा ' सपरिषदः=सपरिवाराः 'सपुरोहिया मच्च डडणायगसेणावइमतिणीइकुसला ' सपुरोहितामात्य-दण्डनायकसेनापति मन्त्रि-नीतिकुशलाः = तत्र पुरोहिताः = शान्तिकर्मकारिणः अमात्याः=मन्त्रिणः दण्ड नायकाः=कोट्टपालादयः सेनापतयः मन्त्रिणश्च कीदृशास्ते ? इत्याह-नीतिकुशलाः नीतौ=सामदामादि रूपाया कुशलाः=निपुणा , तैः सहिताः ' णाणामणिरयण विउलधणधण्णसचयनिहिसमिद्धकोसा ' नानामणिरत्नविपुलधनधान्यसञ्चय-निधि समृद्धकोशाः = चक्रवर्तिवर्णने कृतव्याख्यानमिदम् । ' विउल ' विपुलां = महती ' रज्जसिरिं ' राज्यश्रियं=राज्यलक्ष्मीम् ' अणुभवित्ता ' अनुभूय=उपभुज्य ' विक्कोसंता ' विक्रोशन्तः=अन्यान् पीडयन्त ' बलेण मत्ता' बलेन मत्ताः-बलग र्विताः, ' ते वि' तेऽपि-माडलिकादयः, 'अवितत्ता कामाण' कामानामवितृप्ताः= कामोपभोगेपु तृप्तिरहिता एव, 'उवणमति मरणधम्म'मरणधर्ममुपनमन्ति॥सू०९॥

होते हैं, वे कैसे होते हैं ? सो कहते हैं— (सबला) सेना सहित होते हैं, (सअतेउरा) अतःपुरसे जो युक्त होते हैं, (सपरिसा) परिवार सहित होते हैं, (सपुरोहियामच्चदडणायगसेणावइमतिणीइकुसला) जिनके शातिकर्म कराने वाले पुरोहित अमात्य, दडनायक और सेना-पति साम दान आदि रूप राजनीति में कुशल हुआ करते हैं। तथा— (णाणामणिरयणविउलधणधण्णसचयनिहिसमिद्धकोसा) नानामणि यों से, रत्नों से, विपुल धन धान्य के सचय से और निधियों से जिन का कोश समृद्ध रहता है, तथा जो (विउल) विपुल (रज्जसिरिं) राज्यश्री को (अणुभवित्ता) भोग करके (विक्कोसता) दूसरे व्यक्तियों को रातदिन पीडित किया करनेवाले तथा (बलेण मत्ता) अपने बल से गर्वित बने हुए (ते वि) इस प्रकार के वे भी मांडलिक आदि राजा

હોય છે, તે કહે છે-“ सवला ” તેઓ સેનાયુક્ત હોય છે, “ स अतेउरा ” અ ત પુરથી યુક્ત હોય છે, “ सपरिवारा ” પરિવાર યુક્ત હોય છે, “सपुरोहिया मच्चडणागसेणावइमतिणीइकुसला ” જેમના શાતિ કર્મ કરાવનારા પુરોહિત અમાત્ય દ ડનાયદ અને સેનાપતિ સામ, દામ, આદિ રૂપ રાજનીતિ જાણકાર હોય છે તથા “ णाणामणिरयणविउलधणधण्णसचयनिहिसमिद्धकोसा ” વિવિધ મણિયો, રત્નો, વિપુલ ધન-ધાન્ય આદિના સ ચયથી તથા નિધિયોથી જેમનો ખજાનો સદા સમૃદ્ધ રહે છે તથા જે “ विउल ” વિપુલ “ रज्जसिरिं ” રાજ્ય લક્ષ્મીનો “ अणुभविता ” ઉપભોગ કરે છે, “ विक्कोसत्ता ” બીજા લોકોને રાતદિવસ પીડનારા તથા “बलेण मत्ता ” પોતાના બળથી ગર્વિષ્ટ બનેલા એવા

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—'भुज्जो उत्तरकुरु' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु-देवकुरु—वणविवर—पायचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थ सोमपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा सुजायसव्वगसुदरंगा रत्तुप्पलपत्तकतकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्वसुसहयगुलया उण्णय—तणु—तंव—निद्ध—नखा संठियसुसिलिट्ठगूढगोंफा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिमग्गगूढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्कम विलासियगई वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुवलेवा पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्टिय कडीगगावत्तगदाहिणावत्ततरगभगुररविकिरणवोहियविकोसायंत — पम्ह — गभीरवियडनाभी साहयसोणदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगच्छरु सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसहियजच्चतणुकसिणनिद्ध आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकुच्छी झसोदरा पम्ह वियडणाभी संनयपासा संगयपासा सुदरपासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरडुय कणगरुयग निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसमतलउवइयविरिथण्णपिहुलवच्छा जुयसण्णिभ — पीणरइय

(अवितत्ता कामाणं) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म उवणमति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू०९ ॥

"ते वि' ते भाउलिङ आदि राजाओ पण "अवितत्ताकामाण" कामभोगोथी अतृप्त रहीने ज "मरण धम्म उवणमति" मृत्यु पामे छे ॥ सू. ९ ॥

पीवर पउट्ठसठिय सुसिलिट्ट विसिट्ठलट्टसुणिचिय थणथिरसु विद्धसधीपुरवरफालिहवट्टिय भुजा ॥ सू० १० ॥

टीका:—' भुज्जो ' भूयः=पुनरपि ' उत्तरकुरुदेवकुरुवणविवरपायचारिणो ' उत्तरकुरु-देवकुरु – वनविवरपादचारिणः = उत्तरकुरूणां देवकुरुणा च क्षेत्र विशेषाणां यानि वनविवराणि=वनस्थली कन्दरादिस्थानानि तत्र वाहनाभावात् पादैः=चरणैश्चरन्ति ये ते तथा, नरगणाः=युगलिकाः, 'भोगुत्तमा' भोगोत्तमा = भोगप्रधानाः ' भोगलक्खणधरा ' भोगलक्षणधरा =स्वस्तिकादि भोगसूचकलक्षण वन्त , ' भोगसस्सिरिया ' भोगसश्रीकाः=भोगशोभाशालिनः ' पसत्थसोम्मपडि पुण्णरूवदरिसणिज्जा ' प्रशस्तसौम्यप्रतिपूर्णरूपदर्शनीया =प्रशस्त सौम्यम्=अति-मनोज्ञ प्रतिपूर्ण=सुपूर्ण रूपम् = आकृतिर्येषा ते तथा ' सुजायसव्वंगसुंदरंगा '

अब सूत्रकार " भोगभूमियों के जीवों की भी यही हालत होती हैं " यह कहते हैं-' भुज्जो उत्तरकुरुदेवकुरु '० इत्यादि० ।

टीकार्थः—(उत्तरकुरुदेवकुरुवणविवरपायचारिणो) उत्तरकुरु तथा देवकुरु ये भोगभूमिया हैं । इन भोगभूमियों में वाहन-सवारी-के अभाव से पैरों से ही वहा की वनस्थलियों में-कन्दरा आदि स्थानों में भ्रमण किया करते हैं । (नरगणा) ये युगलिक मनुष्यगण (भोगुत्तमा) उत्तम भोगवाले होते है । (भोगलक्खणधरा) स्वस्तिक आदि जो भोगसूचक चिन्ह हैं उनसे ये विशिष्ट होते हैं । अतः वे (भोगसस्सि रीया) भोगों को भोगना इसी में ये अपनी शोभा मानते हैं । (पस त्थसोम्मपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा) अतिमनोज्ञ पूर्णरूप से ये दर्शनीय

હવે સૂત્રકાર " ભોગ ભૂમિયોના જીવોની પણ એ જ હાલત હોય છે " તે બતાવે છે " भुज्जो उत्तरकुरू देवकुरु " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"उत्तरकुरुदेवकुरुवणविवरपायचारिणो" ઉત્તર કુરુ તથા દેવકુરુ, એ ભોગ ભૂમિયો છે તે ભોગ ભૂમિયોમા વાહનને અભાવે પગપાળા જ મુસાફરી થઈ શકે છે તે પ્રદેશમા રહેતા " नरगणा " યુગલિકો " भोगुत्तमा " ઉત્તમ ભોગ વિલાસ સેવનારા હોય છે " भोगलक्खणधरा " સ્વસ્તિક આદિ જે ભોગ સૂચક ચિહ્નો હોય છે તેમનાથી તેઓ યુક્ત હોય છે તેથી તેઓ " भोगस स्सिरीया " ભોગોનો ઉપભોગ કરવામા જ પોતાની શોભા માને છે " पसत्थ सोम्मपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा " તેઓ અતિશય મનોહર અને સર્વાંગ સુંદર હોય છે. " सुजायसव्वंगसुंदरंगा " તેમના દરેક શારીરિક અંગ સુંદર અને

सुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गाः = सुपुष्टसुन्दराऽवयवाः ' रत्तुप्पलपत्तकतकरचरणकोमलतला ' रक्तोत्पलपत्रकान्तकरचरणकोमलतलाः = रक्तोत्पलस्य पत्रमिव कान्तानि= सुन्दराणि करचरणानां कोमलानि तलानि येषां ते तथा रक्तकमलदलतुल्य सुकोमलसुरक्त हस्तपादतलाः ' सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा ' सुप्रतिष्ठितकूर्मचारुचरणाः = सुप्रतिष्ठितौ = शोभनाकृतिकौ कूर्मवत्=उन्नतत्वेन कच्छपपीठवत् चारू=सुन्दरौ चरणौ येषा ते तथा, तथा ' अणुपुव्वसुसहयगुलिया ' अनुपूर्वसुसंहताङ्गुलिकाः=अनुपूर्वं=अनुक्रमेण=गुरुलघुक्रमेण सुसंहताः=सुमङ्गठिता अङ्गुलयः= हस्तपादाङ्गुलयो येषां ते तथा गुरुलघुन्यूनाधिकदोपरहिताङ्गुलिकाः ' उण्णयतणुतम्बनिद्धनखा ' उन्नततनुताम्रस्निग्धनखाः = तत्र उन्नता = मध्योन्नता तनवः =प्रतला स्ताम्राः=ताम्रवर्णा स्निग्धाः=सुकोमला कान्तियुक्ताश्च नखा येषा ते तथा, ' संठियसुसिलिट्ठगूढगोफा ' संस्थित सुश्लिष्टगूढगुल्फाः = संस्थितौ= सम्यक् संस्थानवन्तौ सुश्लिष्टौ=पुष्टत्वात् सुसंहतौ अतएव गूढौ=अलक्षितौ गुल्फौ= घुटिके येषा ते तथा ' एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा ' एणी कुरुविन्दवत्ता

बड़े सुन्दर होते हैं। (सुजायसव्वंगसुदरंगा) इनके प्रत्येक शारीरिक अवयव सुन्दर एव पुष्ट होते हैं। (रत्तुप्पलपत्तकतकर चरणकोमलतला) इनके हाथ और पैरों के तलिये रक्तकमल के पत्ते के समान लाल और कोमल होते हैं। (सुपइट्ठियकुम्मचारुचरणा) इनके दोनो चरण शोभन आकृतिवाले एव कूर्म की पीठ की तरह उन्नत होने से बड़े सुहावने होते हैं (अणुपुव्वसुसहयगुलिया) हाथ और पैरों की अगुलिया इनकी गुरु लघु के क्रम से सुसगठित रहती हैं, अर्थात् इनके हाथ पैरों की अगुलियां गुरु, लघु–तथा न्यूनाधिक दोष से रहित होती है। (उण्णयतणुतंबनिद्धनखा) नख इन्हों के मध्य में उन्नत, पतले और ताम्रवर्ण के होते है। तथा कोमल और कान्ति सहित होते है। (सठियसुसिलिट्ठगूढगोंफा) इनके दोनो घुटनें सुसस्थान वाले, पुष्ट

પુષ્ટ હોય છે " रत्तुप्पलपत्तकतकरचरणकोमलतला " તેમની હથેળી તથા પગના તળિયા લાલ કમલ પત્ર સમાન લાલ રંગના અને કોમળ હોય છે "सुपइट्ठियकुम्मचारुचरणा " તેમના બન્ને પગ સુંદર ઘાટવાળા, તથા કાચબાની પીઠ જેવા ઉન્નત હોવાથી ઘણા શોભિત હોય છે "अणुपुव्वसुसहयगुलिया" તેમના હાથપગની આંગળીઓ સુસંગઠિત હોય છે એટલે કે ગુરુતા લઘુતા આદિ દોષોથી રહિત હોય છે, સપ્રમાણ હોય છે " उण्णयतणुतंबनिद्धनखा " તેમના નખ મધ્યમાં ઉન્નત, પાતળા, તામ્રવર્ણા, કોમળ અને કાન્તિયુક્ત હોય છે ' सठिय सुसिलिट्ठगूढगोफा " તેમની બન્ને ઘૂંટણો સપ્રમાણ, પુષ્ટ અને સંહત તથા

वृत्तानुपूर्वजङ्घाः=तत्र-एणी=हरिणी, तस्याश्चेह जङ्घा ग्राह्या, ते इव, तथा कुरु विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता'-अय-देशीशब्दः स्त्रीलिङ्गः सूत्रग्रन्थक सूत्रग्रहन-यन्त्रमित्यर्थः 'तास्ला' 'तकली,' इति भाषा प्रसिद्धा, ते इव वृत्ते=वर्तुले अनुपूर्वे=आनुपूर्व्येण-अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूले जङ्घे येषां ते तथा। 'समुग्ग-निसग्गगूढजाणू' समुद्गनिमग्नगूढजानवः=समुद्गः=सपिधानःपिटकस्तद्वत् निमग्ने= पुष्टत्वादन्तः सलीने अत एव गूढे- अलसिते जानुनी येषां ते तथा पुष्टत्वादनु पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयसमण सुजायसंनिभोरू' गजश्वमनसुजातसनिभो रवः-गजश्वमन = हस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसंस्थानयुक्तः तत्सन्निभ= सदृशे ऊरुणी=जानूपरिभागौ येषां ते तथा। 'वरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलासि यगई' वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्र स चासौ मत्त =

होने से सहत तथा अलक्षित होते है। अर्थात् दिखलाई नहीं पड़ते है (एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणु पुव्वजंघा) इनकी दोनों जघाएँ हिरणी की जघाओं के समान तथा कुरुविंद तृणविशेष के समान एव वत्ता-तकली के समान वृत्त-गोलहोती है। और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है। (समुग्गनिसग्गगूढजाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-सहित पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते है अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं। (गय-ससण-सुजाय-सनिभोरू) सुसस्थानयुक्त हस्तिशुण्डादड के समान जिनकी दोनो उरु-साथलें होती हैं, अर्थात्-जानु के उपर का भाग जिनका सुसस्थान युक्त हाथी के शुण्डादड के समान होता है (वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्कम-विलासिय-गई) मदमस्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી "एणीकुरुविंदवत्तावट्ट णुपुव्वजंघा" તેમની બને જઘાઓ હરણીની બને જઘાઓ સમાન તથા કુરુવિંદ (તૃણવિશેષ) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, અને તે ઉપર જતા ધીમે ધીમે વધારે જાડી થતી જાય છે "समुग्गनिसग्गगूढजाणू" તેમના બન્ને જાનુઓ ઢાકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અદરને અદર છુપાયેલા રહે છે-એટલે કે ઊડા હોવાને કારણે ગૂઢ રહે છે "गय-ससण-सुजायसंनिभोरू" જેમના બને સાથળો સુઘટિત હસ્તિશુણ્ડાદડ સમાન હોય છે, એટલે કે જાનુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિસૂઢ જેવો હોય છે "वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्कम-विलासिय-गई" મદોન્મત્ત ગજેન્દ્રના જેવુ જેમનુ પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની નિ ગતિ

मदान्वितस्तेन तुल्यः=सदृशो विक्रमः=पराक्रमः, तद्वदेव विलासिता=विलास-युक्ता गति र्येषा ते तथा अत्र गजस्य पराक्रमेण गत्या च सादृश्य प्रदर्शितम्, तथा ' वरतुरगसुजायगुज्झदेसा ' वरतुरगसुजातगुह्यदेशाः = वरतुरगस्येव = प्रशस्ताऽश्वस्येव सुजातः=सुसस्थितः लघुत्वेन गुप्त इत्यर्थः, गुह्यदेशो येषा ते तथा ' आइण्णहयोव्व निरुवलेवा ' आकीर्णहयइव = जातिमानश्व इव निरुपलेपाः= मललेपविवर्जिता ' पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्टियकडी ' प्रमुदिततुरगसिंहा-तिरेकवर्तितकटयः=प्रमुदिता = प्रहृष्टा वरतुरगा' = जात्यश्वाः सिंहाः = केस रिणस्तेभ्योऽतिरेकेण = आधिक्येन वर्तिता = वर्तुला कटि = कटिप्रदेशो येषां ते तथा ' गगावत्तगदाहिणावत्ततरगभगुररविकिरणवोहियविकोसायतपम्ह-गभीरवियडनाभी ' गङ्गाऽऽवर्तकदक्षिणाऽऽवर्ततरङ्गभङ्गुररविकिरणबोधितविकोशा-यमानपद्मगम्भीरविकटनाभयः, तत्र — गङ्गावर्तक' = गङ्गा नद्या जलभ्रम', स च दक्षिणावर्तः तरङ्गभङ्गुर' तरङ्गै र्भङ्गुर = वक्रश्च तद्वत्, तथा रविकिरणै= सूर्यकिरणै र्बोधित=विकासित विकासावस्था प्राप्नुवत् इत्यर्थ, अत एव-विकोशा-

उसी अनुरूप ही जिनकी विलासयुक्त गति होती है, तथा (वर-तुरग-सुजाय गुज्झदेसा) प्रशस्त घोड़ेके गुह्यभागके समान जिनका गुह्यभाग लघु होनेके कारण गुप्त रहता है। (आइण्णहयोव्वनिरुवलेवा) तथा जातिमान अश्वकी तरह वह गुह्यभाग जिनका मलके लेपसे विवर्जित रहता है। (पमुइयवरतुरयसीयअइरेगवट्टियकडी) अत्यन्त हर्ष सपन्न जात्यश्वकी तथा सिंहकी कटिसे भी अधिक गोल जिनकी कटि होती है, तथा (गगाव-त्तग दाहिणावत्त तरगभगुर रविकिरण बोहियविकोसायतपम्हगभीरविय-डनाभी) दक्षिणावर्त एव तरङ्गोसे भगुर गगा नदी के जलभ्रम-जलावर्त्त के समान, तथा--सूर्यकिरणों से मुकुलित अवस्था को छोडकर विका-सावस्था को प्राप्त हुए पद्म के समान गभीर और विकट सुन्दर जिनका

હોય છે, " वरतुरग--सुजायगुज्झदेसा " તેમનો ગુહ્ય ભાગ પ્રશસ્ત ઘોડાના ગુહ્યભાગ સમાન લઘુ હોવાને કારણે ગુપ્ત રહે છે, " आइण्णहयोव्व निरुव लेवा " જાતવાન ઘોડાના ગુહ્યભાગની જેમ તેમનો ગુહ્ય ભાગ પણ મળના લેપથી રહિત હોય છે " पमुइयवरतुरयसीयअइरेगवट्टियकडी " અતિશય હર્ષસંપન્ન જાતવાન ઘોડા તથા સિંહની કટિ કરતા પણ જેમની કટિ વધારે ગોળ હોય છે, તથા " गगावत्तग-दाहिणावत्त तरग-भगुर-रविकिरण-बोहिय विकोसायतपम्हगभीरवियडनाभी ' દક્ષિણના પવનોથી તથા તરંગોથી ભંગુર ગંગા નદીના જલભ્રમ-જળ વમળ સમાન, તથા બીડાયેલી અવસ્થાનો ત્યાગ કરીને સૂર્યના કિરણોને કારણે વિકાસાવસ્થાને પામેલ કમળ સમાન ગંભીર

वृत्तानुपूर्वजङ्घाः=तत्र–एणी=हरिणी, तस्याश्चेह जङ्घा प्राणा, ते इव, तथा कुरु-विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता '–अप–देशीशब्दः स्त्रीलिङ्गः सूत्रग्लनक सूत्रवेष्टन-यन्त्रमित्यर्थः 'तास्ला' 'तकली' इति भाषा प्रसिद्धा, ते इव वृत्ते=वर्तुले अनुपूर्वे=आनुपूर्व्येण–अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूले जङ्घे येषां ते तथा। 'समुग्ग-निसग्गगूढजाणू' समुद्रनिमग्नगूढजानवः=समुद्गः=सपिधानःपिटरस्तद्वत् निमग्ने=पुष्टत्वादन्तः सलीने अत एव गूढे अलक्षिते जानुनी येषां ते तथा सुपुष्टत्वादनु पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयससण सुजायसनिभोरू' गजश्वसनसुजातसनिभो रवः–गजश्वसन = हस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसम्थानयुक्त. तस्यसनिभे= सदृशे ऊरुणी=जानूपरिभागौ येषां ते तथा। 'वरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलासि यगई' वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्रः स चासौ मत्त =

होने से सहत तथा अलक्षित होते है । अर्थात् दिखलाई नहीं पड़ते है (एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणु पुव्वजंघा) इनकी दोनों जघाएँ हिरणी की जघाओं के समान तथा कुरुविंद तृणविशेष के समान एवं वत्ता-तकली के समान वृत्त-गोलहोती है । और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है । (समुग्गनिसग्गगूढजाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-सहित पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते है अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं। (गय-ससण-सुजाय-सनिभोरू) सुसस्थानयुक्त हस्तिशुण्डादड के समान जिनकी दोनो उरू-साथलें होती हैं, अर्थात्–जानु के उपर का भाग जिनका सुसम्थान युक्त हाथी के शुण्डादड के समान होता है (वर–वारण–मत्त–तुल्ल-विक्कम-विलासिय–गई) मदमत्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી "एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा" તેમની બને જંઘાઓ હરણીની બને જંઘાઓ સમાન તથા કુરુવિંદ (તૃણવિશેષ) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, અને તે ઉપર જતા ધીમે ધીમે વધારે જાડી થતી જાય છે "समुग्गनिसग्गगूढजाणू" તેમના બન્ને જાનુઓ ઢાંકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અંદરને અંદર છુપાયેલા રહે છે–એટલે કે ઊંડા હોવાને કારણે ગૂઢ રહે છે "गय-ससण–सुजायसनिभोरू" જેમના બને સાથળો સુઘટિત હસ્તિશુણ્ડાદંડ સમાન હોય છે, એટલે કે જાનુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિસૂંઢ જેવો હોય છે "वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्कम-विलासिय-गई" મદોન્મત્ત ગજેન્દ્રના જેવું જેમનુ પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની વિલાસયુક્ત ગતિ

सुजातः=सुन्दरः पीनः=पुष्टश्च कुक्षिः=उदरैकदेशो येषा ते तथा। तथा 'झपोयरा' झषोदराः-झषस्योदरमुदरं=येषा ते तथा कृशोदरा इत्यर्थः, 'पम्हवियडणाभी' पद्मविकटनाभयः=पद्मवत्=कमलकोषवत् विकटा=सुन्दरा नाभि येषा ते तथा, 'सनयपासा' सन्नतपार्श्वा =पुष्टत्वादधो नमत्पार्श्वभागाः 'सगयपासा' सङ्गतपार्श्वाः=सुमिलितपार्श्वभागाः, अतएव 'सुदरपासा' सुन्दरपार्श्वाः 'सुजायपासा' सुजातपार्श्वा = सुमस्थितपार्श्वाः 'मियमाइयपीणरइयपासा' मितमात्रिकपीतरतिदपार्श्वाः=मितौ=मानोपेतौ, मात्रिकौ = मात्रायुक्तौ-परिमाणसपन्नौ पीनौ= सुपुष्टौ रतिदौ = रमणीयौ पार्श्वभागौ येषा ते तथा 'अकरडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी' अकरण्डुकनकरुचकनिर्मलसुजातनिरुपहतदेहधारिणः = तत्र अकरण्डुक = पुष्टत्वादनुपलक्ष्यपृष्ठपार्श्वास्थिक तथा कनकरुचकनिर्मल, कनकरुचक=सुवर्णाभरण तद्वत् निर्मल सुजात शोभन निरुपहत च=नीरोग देह=शरीर धारयन्ति ये ते तथा। तथा 'कणगसिलातलपसत्थसम

की कुक्षि के समान सुन्दर और पुष्ट होती है। तथा (झसोयरा) जिनका उदर मत्स्य के उदर के समान कृश होता है। तथा (पम्हवियडणाभी) जिनकी नाभि कमल के कोप की तरह गभीर होती है। तथा (सनयपासा) पुष्ट होने के कारण जिनके दोनो पार्श्वभाग नीचे की ओर झुके रहते हैं इसीलिये (सगयपासा) जो परस्परमें मिले हुए जैसे प्रतीत होते हैं और बडे सुहावने लगते हैं तथा (सुजायपासा) जिनके दोनों पोर्श्व भागोंका आकार भी बडा सुहावना लगता है, तथा (मियमाइय पीणरइय पासा) वे दोनों पार्श्वभाग मान और प्रमाणसे युक्त और पीन पुष्ट होते हैं तथा रमणी होते हैं। तथा(अकरडु-कण-गरुयग निम्मल सुजाय -निरुवहय-देहधारी) पुष्ट होने के कारण जिनकी रीढको और पार्श्वभाग की अस्थियां दिखलाई नहीं देती हैं, तथा जो सुवर्णाभरण के

ભાગ) મત્સ્ય તથા પક્ષીની કુક્ષિ સમાન સુંદર અને પુષ્ટ હોય છે તથા "झसोयरा" જેમનુ ઉદર મત્સ્યના ઉદર સમાન કૃશ હોય છે તથા "पम्ह वियडणाभी" જેમની નાભિ કમળના જેવી ગભીર હોય છે, તથા "सनयपासा" પુષ્ટ હોવાને જેમના બન્ને પાર્શ્વ ભાગો નીચેની બાજુએ ઝુકેલા રહે છે, અને તેથી "सगयपासा" આપસમા મળી ગયા હોય એવા લાગે છે તથા ઘણા સુંદર લાગે છે તથા "सुजायपासा" તેમના બન્ને પાર્શ્વ ભાગો પડખાનો આકાર પણ ઘણો સુંદર લાગે છે, તથા 'मियमाइयपीनरइयपासा" તે બન્ને પાર્શ્વભાગો પ્રમાણ અને માનથી યુક્ત-પ્રમાણસરના, અને પીન-પુષ્ટ અને રમણીય હોય છે "अकरडु-कण गरुयग निम्मल सुजाय निरुवहय देहधारी" શરીરે પુષ્ટ હોવાને કારણે જેમનાં ઝરોડ તથા પાસળીના હાડકા દેખાતા નથી

यमान मुकुलावस्थां विमुञ्चत् यत् पद्म तद्वद् गम्भीरा विकटा = सुन्दरा च नाभि येषां ते तथा, 'साहय सोणंद मुसलदप्पणनिगरियवरकणगच्छरुसरिसवरवइर वलियमज्झा' संहृतसानन्दमुसलदर्पणनिगरितवरकनकत्सरुसदृशवरवज्र वलित मध्याः = तत्र संहृत = सङ्कोचित सौनन्द = त्रिकाष्ठिका 'तिपाई' इतिप्रसिद्ध मुसल=प्रसिद्ध. दर्पण = दर्पणगण्डः-दर्पणदण्डः निगरितवरकनकत्सरुः=निगरित= सर्वथा शोधितम्, अनघ-वरकनक=जात्यसुवर्णं तस्य त्सरुः = खड्गमुष्टिश्चैतैः सदृशो वरवज्रवच्च वलितः = वक्रः कृशश्च मध्यः=तनुमध्यभागो येषा ते तथा प्रतल मध्य इत्यर्थः, 'उज्जगसमसहियजच्चतणुकसिणणिद्धआदिज्जलडह सुकुमालमउयरोमराई' ऋजुकसमसहितजात्यतनुकृष्णस्निग्धाऽऽदेयलडह सुकुमालमृदुरोमराजय = तत्र ऋजुकाः=अकुटिला समा =समुचित-प्रमाणाः सहिता =सघना जात्यतनवः = स्वभावतोऽतिसूक्ष्मा कृष्णाः = कृष्णवर्णाः स्निग्धाः=चिक्कणाः आदेयाः=प्रशस्ताः लडहाः=सुन्दरा' सुकुमाला' समलवत्कोमलाः मृदुकाः= अति कोमला. रोमराजय =रोम्णा श्रेणयो येषा ते तथा,' झसविहग सुजायपीणकुच्छी' झषविहगसुजातपीनकुक्षय' = झषविहगवत्-मत्स्यवत् पक्षिवच्च

नाभिप्रदेश होता है। तथा-(साहय सोणंदमुसलदप्पणनिगरियवरकणग छरु सरिस वरवइर वलियमज्झा) जिनका मध्यभाग संकोचित तिपाई के समान, दर्पणदण्ड के समान, एव शोधित जात्यस्वर्ण की खड्गमुष्टि के समान, तथा उत्तम वज्र के समान वक्र और कृश होता है। तथा (उज्जुग-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आदिज्ज-लडह-सुकु माल-मउय-रोमराई) जिनकी रोमराजि अकुटिल, समुचितप्रमाणोपेत, घनीभूत, स्वभावत'अतिसूक्ष्म, काली, चिकनी, आदेय, सुन्दर, कमल के समान कोमल और अत्यत कोमल होती है। (झसविहगसुजायपी णकुच्छी) तथा-जिनकी कुक्षि-उदर का एक देश मत्स्य की और पक्षी

અને વિકટ-સુદર જેમનો નાભિ પ્રદેશ હોય છે, તથા "साहयसोणंदमुसल दप्पणनिगरियवरकणगछरुसरिसवरवइरवलियमज्झा" જેમનો મધ્ય ભાગ સકોચિત તિપાઈ સમાન, દર્પણ દડ સમાન, તાવેલા સુવર્ણની તલવારની મૂઠ સમાન, તથા ઉત્તમ વજ્ર સમાન વક્ર અને પાતળો હોય છે "उज्जग-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आदिज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय रोमराई" તથા જેમની રોમરાજિ અકુટિલ, સમપ્રમાણ, ઘનીભૂત કુદરતી રીતે જ અતિ સૂક્ષ્મ, કાળી, સુવાળી, આદેય, સુદર, કમળ સમાન કોમળ અને અત્યત કોમળ હોય છે "झसविहगसुजायपीणकुच्छी" તથા જેમની કુક્ષિ (ઉદરનો એક

पुनस्ते कीदृशा ? इत्याह–'भुयगीसर' इत्यादि ।

मूलम्–भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-फलिह-उच्छूढदीहवाहू-रत्ततलोवइय-मउय-मसल-सुजाय लक्खणपसत्थ-अच्छिद्दजालपाणी पीवर सुजाय-कोमल-वरगुली तवतलिणसुइरुइल निद्धणखा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा सखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसा सोवत्थियपाणिलेहा रविससि-सख-वरचक्कदिसा सोवत्थिय-विभत्त-सुरइय--पाणिलेहा वरमहिसवराहसीह-सद्दूलरिसह नागवर-पडिपुण्ण-विउल-खधा चउरगुलप्पमाणकवुवरसरिसगीवा अवट्ठिय–सुविभत्त–चित्त समंसुउवच्चियमंसल -पसत्थ -सद्दूल-विउल -हणुया ओयचिय सिलप्पवालविवफलसनिभाऽधरोट्ठा पंडुर-ससि-सकल-विमल संखगोखीर–फेणकुंददगरयमुणालिया धवल–दतसेढी अखड दंता अफुडियदता अविरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुयवहनिद्धत–धोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरुलायय उज्जुतुगनासा अवदालियपुडरीय णयणा विकोसियधवलपत्तलच्छा आणामिय – चावरुइल किण्हब्भराइ- सठिय-सगयाययं-सुजाय-भूमगा--अल्लीणपमाण-जुत्तसवणा सुस्सवणा पीयमंसलकवोलदेसभागा अविरुग्गय वालचदसठियमहानिलाडा उडुवइ–पडिपुण्ण–सोम्मवयणा छत्तागारुत्तमगदेसा घणनिचिय सुवद्धलक्खणुण्णय-कूडागार निभपिडियग्ग-सिराहुयवहनिद्धत - धोयतत्ततवणिज्जरत्तकेसत-

---

परिघा (ओगल) के समान गोलरहोते हैं। ऐसे ये भोगभूमिके मनुष्य भी कामभोगोंसे अतृप्त होकर ही मरण धर्मको प्राप्त करते हैं ॥सू०१०॥

તે ભોગભૂમિના લોકો પણ કામ ભોગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥સૂ૧૦॥

तच्छउरयइविरिथण्ण विहुलवच्छा 'कनकशिलातल-प्रशस्त समतलोपचित विस्तीर्ण पृथुलवक्षसः=कनकशिलातल = सुवर्णशिलापट्टकमिव प्रशस्त समतलम्=अविषम उपचित=पुष्ट-विस्तीर्ण=विशाल तथा पृथुल=स्थूल वक्ष'=वक्षः स्थलं येषां ते तथा 'जुयसणिभपीणरइय-पीवर-पउट्ठ सठिय-सुसिलिट्ठ विसिट्ठलट्ठ-सुणिचिय-घण थिर सुबध, सधी' तत्र 'जुयसणिभ' युगसन्निभौ=युगकाष्ठतुल्यौ 'पीण' पीनौ=स्थूलौ 'रइय' रतिदौ=रमणीयौ पीवरौ=पुष्टौ 'पउट्ठ' प्रकोष्ठौ=हस्तमणिबन्धप्रदेशौ-तथा 'सठिय' सस्थिताः=सस्थानविशेषयुक्ता 'सुसिलिट्ठ' सुश्लिष्टाः=सुमिलिताः 'विसिट्ठलट्ठ' विशिष्टलष्टाः=सुमनोहराः 'सुणिचिय' सुनिचिताः = सुसगठिताः घना 'थिर' स्थिराः=सुदृढा सुबन्धाः =शोभनावयवसन्निवेशयुक्ताः सन्धयः = अस्थि सन्धानानि येषा ते तथा, 'पुरवरफलिह-वट्टियभुया' पुरवरपरिघवर्तित भुजाः=पुरवरपरिघवत्=नगरद्वारकपाटरोधनकाष्ठवद् वर्तितौ=वर्तुलौ भुजौ=बाहू येषा ते तथा । एतादृशास्तेऽपि कामभोगैरतृप्ता एव मरणधर्ममुपगमन्तीति-सम्बन्धः ॥ सू० १० ॥

समान निर्मल, सुन्दर रोगरहित शरीर के धारी होते हैं (कणगसिलातलपसत्थसमतलउवइयविरिथण्णपिहुलवच्छा) तथा जिनका वक्ष स्थल सुवर्णशिला के पट्टक समान प्रशस्त एव समतल वाला होता है उपचित-पुष्ट होता हे, विस्तीर्ण होता है तथा पृथुल—स्थूल—मोटा—होता है (जुयसणीभपीण-रइयपीवरपउट्ठसठियसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसुणिचियघणथिरसुबधसधी) इनका मणिबध प्रदेश जुआ के समान स्थूल, रमणीय और पुष्ट होता है । तथा इनके हाड़ों की सधिया सस्थान विशेष से युक्त, परस्पर अच्छी तरह मिली हुई, मनोहर, सुसगठित, घनीभूत, सुदृढ एव अच्छी अवयवों की रचना से युक्त होती है। (पुरवरफलिहवट्टियभुया) इनके दोनो बाहु नगर के द्वार के उतम

"જેઓ સૂવર્ણના આભૂષણો જેવું નિર્મળ, સુંદર અને નીરોગી શરીર ધરાવે છે, "कणगसिलातलपसत्थसमतलउवइयविरिथण्णविहुलवच्छा" તથા જેમની છાતીનો ભાગ સુવર્ણશિલા જેવો પ્રશસ્ત સમતલ, ઉપચિત-પુષ્ટ, વિસ્તીર્ણ વિશાળ તથા પૃથુલ-મોટો હોય છે, "जुयसणिभ-पीण-रइय-पीवर-पउट्ठ-सठिय सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सुणिचिय-घणथिर-सुबधसधी" તેમના ખભા ધૂંસરી જેવા સ્થૂળ, રમણીય અને પુષ્ટ હોય છે તથા તેમના અસ્થિયોના સાંધા સુવ્યવસ્થિત અરસપરસ સારી રીતે જોડાયેલ, મનોહર, સુસંગઠિત, ઘનીભૂત, સુદૃઢ, અને અવયવોની સુંદર રચના વાળા હોય છે "पुरवरफलिहवट्टियभुया" તેમની બન્ને ભુજા નગરના દરવાજાના ઉત્તમ ભોગળો જેવી ગોળાકાર હોય છે એવા

भुजाइत्यर्थः, 'रत्ततलोवइयमउयमसल्सुजायलक्खणपसत्थअच्छिद्दजालपाणी' तत्र- 'रत्ततल' रक्ततलौ=लोहितकरतलौ 'उवइय' उपचितौ=पुष्टौ 'मउय' मृदुकौ=कोमलौ 'मसल' मांसलौ=अदृष्ट नाडी जालौ 'सुजाय' सुजातौ= सुनिष्पन्नौ 'लक्खणपसत्थ' लक्षण प्रशस्तौ=अनेक शुभलक्षणैः प्रकृष्टौ 'अच्छिद्दजाला- अच्छिद्रजालौ = परस्पर मिलितत्वात् छिद्ररहिताङ्गुलिसमुदायवन्तौ पाणी = हस्तौ येषा ते तथा 'पीवरसुजायकोमलवरंगुलि' पीवरसुजातकोमलवराङ्गुलयः = सुपुष्टसुन्दरकोमलाङ्गुलिवन्त 'तंतलिणसुइरुइलनिद्धणखा' ताम्रतलिनशुचिरुचिरस्निग्ध नखाः=ताम्राः = रक्ताः तलिनाः=प्रतलाः शुचयः=निर्मलाः रुचिरा =कान्तिमन्तः स्निग्धाश्च=चिक्कणा नखा येषा ते तथा, 'निद्धपाणिलेहा' स्निग्धपाणिरेखाः = चिक्कणहस्तरेखावन्तः 'चंदपाणिलेहा' चन्द्रपाणिरेखा'= चन्द्र =चन्द्राकारा पाणौ रेखा येषा ते तथा 'सूरपाणिलेहा' सूरपाणिरेखाः=

होती हैं तथा—(रत्ततलोव इयमउयमसलसुजायलक्खणपसत्थ अच्छि द्दजालपाणी) जिनके दोनों हाथ लोहित तलियो वाले, पुष्ट भरे हुए- कोमलतासे युक्त, मांसल–पुष्टअदृष्टनाडीजालवाले, अच्छे रूपमे निष्पन्न हुए, अनेक शुभलक्षणों से प्रशस्त एवं छिद्ररहित अंगुलियों वाले होते हैं तथा- (पीवरसुजायकोमलवरंगुली) इनकी जो अंगुलिया होती हैं वे सुपुष्ट, सुन्दर एवं कोमल होती हैं। (तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनक्खा) इन अंगुलियों के जो नख होते हैं वे ताम्र वर्णवाले होते हे तलिन- पतले होते हैं, निर्मल होते हैं, कान्तिमान् होते हैं तथा स्निग्ध–चिकने होते हैं। (णिद्धपाणिलेहा) हाथों में जो रेखाएँ होती हैं वे भी चिकनी होती है। (चंदपाणिलेहा) तथा इनके हाथो की ये रेखाएँ कितनीक तो चन्द्राकार होती हैं (सूरपाणिलेहा) कितनीक सूर्य के आकार की होती

પરિઘા (ભોગળો) સમાન દીર્ઘ–લાંબી હોય છે, તથા "रत्ततलोवइयमउयमसल सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्द-जालपाणी" જેમના બન્ને હાથ લાલ હથેળીવાળા, પુષ્ટ કોમળ માંસલ–નસો તથા ક્રેગવાહિનીઓની જાળ ન દેખી શકાય તેવા સુઘટિત, અનેક શુભ લક્ષણોથી પ્રશસ્ત, અને છિદ્ર રહિત આંગળીયો વાળા હોય છે, તથા "पीवर-सुजाय-कोमल-वरंगुली" તેમના હાથની આંગળિયો સુપુષ્ટ, સુંદર અને કોમળ હોય છે "तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनखा" તે આંગળિયોના નખ તામ્રવર્ણા હોય છે ' तलिन–પાતળા હોય છે નિર્મળ હોય છે સુંવાળા અને કાન્તિ યુક્ત હોય છે "णिद्धपाणिलेहा" તેમના હાથમાં જે રેખાઓ હોય છે તે પણ સ્નિગ્ધ, સુંવાળી હોય છે "चंदपाणिलेहा" તેમના ઉપરની કેટલીક રેખાઓ ચન્દ્રાકાર, "सूरपाणिलेहा" કેટલીક સૂર્યાકાર, કેટલીક

केसभूमी सामलि-पोंडघण निचियच्छोडिय-मिउविसय पसत्थसुहुमलक्खणसुगंधिसुदरभुयमोयगभिंग-नीलकज्जलपहिट्ठ भमरगण-निद्ध निउरंब-निचियकुंचिय — पयाहिणावत्तमुद्धसिरया सुजाय-सुविभत्त-सगयंगा-लक्खणवंजणगुणोववेया पसत्थबत्तीसलक्खणधरा हंसस्सरा कोचस्सरा दुंदुहिस्सरा सीहस्सरा मेहस्सरा ओघस्सरा सुस्सरा सुस्सरनिग्घोसा वज्जरिसह नारायसंघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायउज्जोवियंगमंगा पसत्थच्छवी निरायंका कंकगहणी कवोयपरिणामा सउणिपोसापिट्ठंतरोरुपरिणया पउमुप्पल--सारसगंध—सासंसुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदायनिद्धकाया विग्गहियउण्णाय कुच्छीअमयरसफलाहारी तिगाउय समुच्छियातिपलिओवमट्ठितिया तिण्णिय पलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं ॥ सू० ११ ॥

टीका:-'भुयगी-सर-विउल-भोग-आयाण- फलिह-उच्छूढदीहबाहू' तत्र-'भुयगीसर' भुजगेश्वर=सर्पराजस्तस्य यो विपुलो भोग.=महान् काय. तद्वत् तथा 'आयाण' आन=आदीयत इत्यादानम्=आदेयः=सुन्दरो य. 'फलिह' परिघ.=कपाटरोधनकाष्ठ, स च 'उच्छूढ' उत्क्षिप्त.=स्वस्थानाद् बहिर्निष्कासितः, तद्वत् 'दीह' दीर्घौ बाहू येषां ते तथा भुजगतुल्यपरिघतुल्यलम्बमान

फिर ये भोगभूमि के जीव कैसे होते हैं ? इसी विषयको सूत्रकार पुन.स्पष्ट करते है—' भुयगीसर ० ' इत्यादि ० ।

टीकार्थ.— (भुयगीसर-विउलभोग-आयाण-फलिह-उच्छूढदीह बाहू) सर्पराज के विपुल शरीर के समान तथा अपने स्थान से बहार किये हुए सुन्दर परिघा के समान, जिनकी दोनो भुजाये दीर्घ-लंबी

તે ભોગભૂમિના જીવો કેવા હોય છે, તેનુ સૂત્રકાર હજી વધુ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે " भुयगीसर " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-' भुयगीसर-विउल-भोग-आयाणफलिह-उच्छूढदीह-बाहू" જેમની બન્ને ભુજાઓ સર્પરાજના વિશાળ શરીર જેવી, તથા તેના સ્થાનેથી બહાર કાઢવામા

भुजाइत्यर्थः, 'रत्ततलोवइयमउयमसलसुजायलक्खणपसत्थअच्छिद्दजालपाणी' तत्र- 'रत्ततल' रक्ततलौ=लोहितकरतलौ 'उवइय' उपचितौ=पुष्टौ 'मउय' मृदुकौ=कोमलौ 'मसल' मांसलौ=अदृष्ट नाडी जालौ 'सुजाय' सुजातौ= सुनिष्पन्नौ 'लक्खणपसत्थ' लक्षण प्रशस्तौ=अनेक शुभलक्षणैः प्रकृष्टौ 'अच्छिद्दजाला- अच्छिद्रजालौ = परस्पर मिलितत्वात् छिद्ररहिताङ्गुलिसमुदायवन्तौ पाणी= हस्तौ येषां ते तथा 'पीवरसुजायकोमलवरंगुलि' पीवरसुजातकोमलवराङ्गु- लयः = सुपुष्टसुन्दरकोमलाङ्गुलिमन्त 'तंबतलिणसुइरुइलनिद्धणखा' ताम्रत- लिनशुचिरुचिरस्निग्ध नखाः=ताम्राः = रक्ताः तलिनाः=प्रतला शुचयः=निर्मलाः रुचिरा =कान्तिमन्तः स्निग्धाश्च=चिक्कणा नखा येषां ते तथा, 'निद्धपाणिलेहा' स्निग्धपाणिरेखाः = चिक्कणहस्तरेखावन्तः 'चंदपाणिलेहा' चन्द्रपाणिरेखाः= चन्द्र =चन्द्राकारा पाणौ रेखा येषां ते तथा 'सूरपाणिलेहा' सूरपाणिरेखाः=

होती हैं तथा—(रत्ततलोव इयमउयमसलसुजायलक्खणपसत्थ अच्छि द्दजालपाणी) जिनके दोनों हाथ लोहित तलियों वाले, पुष्ट भरे हुए- कोमलतासे युक्त, मांसल—पुष्टअदृष्टनाडीजालवाले, अच्छे रूपमे निष्पन्न हुए, अनेक शुभलक्षणों से प्रशस्त एवं छिद्ररहित अंगुलियों वाले होते हैं तथा- (पीवरसुजायकोमलवरंगुली) इनकी जो अंगुलियां होती हैं वे सुपुष्ट, सुन्दर एवं कोमल होती हैं। (तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनखा) इन अंगुलियों के जो नख होते हैं वे ताम्र वर्णवाले होते हैं तलिन- पतले होते हैं, निर्मल होते हैं, कान्तिमान् होते हैं तथा स्निग्ध—चिकने होते हैं। (णिद्धपाणिलेहा) हाथों में जो रेखाएँ होती हैं वे भी चिकनी होती है। (चंदपाणिलेहा) तथा इनके हाथो की ये रेखाएँ कितनीक तो चन्द्राकार होती हैं (सूरपाणिलेहा) कितनीक सूर्य के आकार की होती

પરિઘા (ભોગળો) સમાન દીર્ઘ—લાંબી હોય છે, તથા "रत्ततलोवइयमउयमसल सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्द-जालपाणी" જેમના બંને હાથ લાલ હથેળીવાળા, પુષ્ટ કોમળ માંસલ—નસો તથા રંગવાહિનીઓની જાળ ન દેખી શકાય તેવા સુઘટિત, અનેક શુભ લક્ષણોથી પ્રશસ્ત, અને છિદ્ર રહિત આંગળીયો વાળા હોય છે, તથા "पीवर-सुजाय-कोमल-वरंगुली" તેમના હાથની આંગળિયો સુપુષ્ટ, સુંદર અને કોમળ હોય છે 'तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनखो" તે આંગ- ળિયોના નખ તામ્રવર્ણા હોય છે 'तलिन—પાતળા હોય છે નિર્મળ હોય છે સુંવાળા અને કાન્તિ યુક્ત હોય છે "णिद्धपाणिलेहो" તેમના હાથમાં જે રેખાઓ હોય છે તે પણ સ્નિગ્ધ, સુંવાળી હોય છે "चंदपाणिलेहा" તેમના ઉપરની કેટલીક રેખાઓ ચન્દ્રાકાર, "सूरपाणिलेहा" કેટલીક સૂર્યાકાર, કેટલીક

सूर्याकारहस्तरेखावन्तः 'सखपाणिलेहा' शङ्खपाणिरेखाः=शङ्खाकारहस्तरेखावन्त 'चक्कपाणिलेहा' चक्रपाणिरेखा=चक्राकारहस्तरेखावन्त' 'दिसासोवत्थियपाणिलेहा' दिक्स्वस्तिकपाणिरेखाः=दिक्स्वस्तिकः=दक्षिणावर्तस्वस्तिकः=दक्षिणास्वस्तिकः तदाकारा पाणिरेखा येषां ते तथा 'रविससिसंखवरचक्कदिसासोवत्थियविभत्तसुरइयपाणिलेहा' रविशशिशङ्खवरचक्रदिक्स्वस्तिकविभक्तसुरचितपाणिरेखा'=सूर्यचन्द्रशङ्खचक्रदक्षिणावर्तस्वस्तिकलक्षणाः विभक्ता'=स्पष्टाः सुरतिदाः सुखदाः पाणिरेखाः=हस्तरेखा येषां ते तथा 'वरमहिसवराहसीहसद्दूलरिसहनागवरपडिपुण्ण-विउल-खधा' वरमहिषवराहसिंहशार्दूलऋषभनागवरप्रतिपूर्ण पुलस्कन्धाः=तत्र वरमहिषाः=पुष्टशरीरमहिषाः वराहाः शूकराः सिंहा' = प्रसिद्धाः शार्दूलाः=व्याघ्रविशेषाः ऋषभाः=बलीवर्दाः नागवराः=प्रधानहस्तिनः तेषामिव प्रतिपूर्ण = परिणद्धो विपुल=विशालः स्कन्धो येषा ते तथा 'चउरगुलप्पमाणकबुवरसरिसगीवा' चतुरङ्गुलिप्रमाणकम्बुवरसदृशग्रीवा' - चतुरङ्गुलिप्रमाणा कम्बुवरेण=प्रधानशङ्खेन सदृशी=तुल्या च ग्रीवा=येषा ते तथा, 'अवट्ठिय सुविभ

है, तथा (सखपाणिलेहा) कितनिक शख के आकार जैसी होती हैं। (चक्रपाणिलेहा) कितनीक ऐसी होती हैं कि जिनका आकार चक्र के जैसा होतो है। तथा (दिसासोत्थियपाणिलेहा) कितनीक ऐसी होती है जो दक्षिणावत स्वतिक के आकार में रहती हैं। इस तरह इनके हाथों की सूर्य, चद्र, शख, चक्र तथा दक्षिणावर्तस्वतिक के आकार की ये रेखाएँ स्पष्ट होती हैं और सुख देनेवाली होती हैं। तथा-(वरमहिस वराह - सीहसद्दूलरिसहनागवरपडिपुण्णविउलखधा) इनके जो स्कध होते है वे पुष्टशरीरवाले महिष, वराह, सिंह, बैल, प्रधान हाथी इनके स्कधों के समान परिणद्ध-पुष्ट और विशाल होते है। तथा (चउरगुलप्पमाणकबुवरसरिसगीवा) चार अगुल प्रमाणवाले उत्तम शख के समान इनकी ग्रीवा होती है। (अवट्ठियसुविभत्तचित्तसमसू) तथा

"सखपाणिलेहा" શખાકાર, "चक्कपाणिलेहा" કેટલીક ચક્રાકાર અને "दिसासोत्थियपाणिलेहा" કેટલીક દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિકના આકારની હોય છે તેમના હાથની તે ચન્દ્રાકાર આદિ રેખાઓ સ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે તથા "वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूलरिसह-नागवर-पडिपुण्ण-विउलखधा" તેમના ખભા પુષ્ટ શરીર વાળા પાડા, વરાહ, સિંહ, બળદ અને ગજેન્દ્રના સ્કધો જેવા પુષ્ટ અને વિશાળ હોય છે તથા "चउरगुलप्पमाणकबुवरसरिसगीवा" તેમની ગ્રીવા ચાર અગુલ પ્રમાણ વાળા ઉત્તમ શખ જેવી હોય છે "अवट्ठिय

सुविभक्तचित्तसमस्रु' अवस्थितसुविभक्तचित्रश्मश्रूकाः – अवस्थितानि=सम्यक्तया यथास्थानं जातानि सुविभक्तानि=शोभनतया विभागेन स्थितानि चित्राणि=शोभया विस्मयजनकानि श्मश्रूणि येषां ते तथा। 'उवचियमंसलपसत्थ सद्दूलविउलहणुया' उपचितमांसलप्रशस्ताशार्दूलविपुलहनुकाः=उपचित=पुष्टः अतएव मांसल=मांसयुक्तः प्रशस्तः तथा शार्दूलस्येव विपुलश्च हनु'=ओष्ठाऽधोभागो येषां ते तथा 'ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरोट्ठा' ओयवियशिलाप्रवालबिम्बफलसंनिभाधरोष्ठा='ओयविय' इति देशीशब्दः परिकर्मितं समस्कृतं यच्छिलाप्रवाल=विद्रुम', तथा बिम्बफलं च ताभ्यां सन्निभः=सदृशो रक्तोऽधरोष्ठो येषां ते तथा 'पंडुरससिसकल–विमलसंखगोखीर – फेणकुंददगरयमुणालिया – धवलदंतसेढी' पाण्डुरशशिशकलविमलशङ्खगोक्षीरफेनकुन्ददकरजोमृणालिका धवलदन्तश्रेणयः=तत्र–पाण्डुर=श्वेतं यत् शशिशकल=चन्द्रखण्डं तथा विमलशङ्ख' प्रतीत' गोक्षीर=गोदुग्ध फेन'=नदीजलादिफेनं कुन्द=श्वेतपुष्पविशेषः दकरज'=जलबिन्दु' मृणालिका=

इनकी दाढी के जो बाल होते है वे अच्छी तरह से जहां जिन्हें उत्पन्न होना चाहिये वहां उत्पन्न होते है, अच्छी तरह विभागरूप से स्थित रहते है, और अपनी शोभा से विस्मयजनक होते है। तथा (उवचियमसलपसत्थसद्दूलविउलहणुया) इनके होठों के नीचे का जो भाग होता है वह पुष्ट होता है, मांसल होता है, प्रशस्त–सुहावना होता है और सिंह की दाढी के समान विपुल–विस्तृत होता है। (ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरोट्ठा) तथा इनके जो अधरोष्ठ होते है वे अच्छी तरह परिकर्मित किये हुए मूंगे के समान और बिम्बफल–कुंदरू के समान रक्त होते है (पंडुरससिसकलविमलसंखगोखीरफेणकुंददगरयमुणालिया धवलदंतसेढी) तथा–इनका जो दांतों की पंक्ति होती है वह शुभ्रचंद्रमा के खंड जैसी, निर्मल शंख जैसी, गाय के दूध जैसी,

सुविभत्तचित्तसमसू" तथा तेमनी दाढीना वाळ ज्यां जेमने उगवुं जोईए त्यां ज उगेला होय छे, सारी रीते विभाजित होय छे, अने तेमनी शोभा अद्‌भुत होय छे, तथा "उवचियमसल पसत्थसद्दूलविउल हणुया" तेमना होठनी नीचेनो भाग पुष्ट, मांसल, शोभितो, अने सिंहनी दाढीना जेवो विपुलविस्तृत होय छे "ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरोट्ठा" तेमना अधरोष्ठ सारी रीते तैयार करेल परवाळा जेवा तथा बिम्बफळ–कुंदरु जेवा लाल होय छे 'पंडुरससि–सकल–विमल–संख–गोखीर–फेण कुंददगरयमुणालिया धवलदंतसेढी' तेमनी दंत पंक्तिओ शुभ्र चंद्र खंड जेवी, निर्मळ शंख जेवी गायना दूध जेवी, नदी जळ आदिना फीणु जेवी, श्वेत पुष्प जेवी, जळना

कमलनालतन्तुश तद्वद्धवला दन्तश्रेणी=दन्तपङ्क्तिर्येषां ते तथा अखण्डदन्ताः= परिपूर्णदन्ता 'अफुडियदंता' अस्फुटितदन्ता =अनुपहतदन्ताः अविरलदन्ताः= अच्छिद्रदन्ताः सुघनदन्ता इत्यर्थः 'सुणिद्धदंता' सुस्निग्धदन्ता 'अहवदन्तवन्तः सुजायदन्ता' सुजातदन्ताः = सुसंस्थितदन्ता' 'एगदन्तसेढिव्वअणेगदंता' एकदन्तश्रेणिरिव अनेकदन्ता येषां द्वात्रिंशदन्त अपि सुश्लिष्टत्वादेकदन्तवद् दृश्यन्ते इत्यर्थः। 'हुयवहनिद्धतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा' हुतवह निर्ध्मातधाततप्ततपनीयरक्ततलताल्जिह्वा = हुतवहेन = वह्निना निर्ध्मात = तापित धौत=विशोधित तप्त न यत्तपनीय=सुवर्ण तेन तुल्य रक्ततल=रक्तवर्णं तालु-

नदी जल आदि के फेन जैसी, श्वेतपुष्पविशेष जैसी, जल की बिन्दु जैसी, तथा मृणालिका-कमल नाल के तन्तु जैसी धवल होती है (अखंडदंता) तथा इनके दांत परिपूर्ण होते हैं-(अफुडियदंता) तथा ये अस्फुटित दांतोवाले होते हैं-उबड़ खाबड इनके दांत नहीं होते है। और न टूटे फूटे ही होते हैं (अविरलदंता) तथा इनके दांत अच्छिद्र होते है-दूर २ नहीं होते है। अर्थात्-परस्पर में एक दूसरे दांत के साथ मिले हुए रहते है। तथा (सुणिद्धदंता) ये दांत इनके रूक्षता से विहीन होते है अर्थात् चिकने होते है (सुजायदंता) बहुत अच्छी तरहसे ये सुस्थित-मसूडों में गडे हुए रहते हैं (एगदंतसेढिव्वअणेगदंता) यद्यपि ये दांत इनके बत्तीस ही होते हैं फिर भी परस्पर में सुश्लिष्ट होने के कारण एक दांत की तरह ही दिखते है तथा- (हुयवहनिद्धतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा) जिनकी तालु एवं जिह्वा वह्नि से तपाये गये

બિન્દુ જેવી, તથા કમળનાલના તંતૂ જેવી, ધવલ હોય છે "अखंडदंता" તેમના દાંત પરિપૂર્ણ હોય છે ઓછા કે વધારે હોતા નથી 'अफुडियदंता" તેમના દાંત અસ્ફુટિત હોય છે—પોલાણ વાળા હોતા નથી અને તૂટેલા પણ હોતા નથી "अविरलदंता" તથા તે દાંત પાસે પાસે હોય છે દૂર દૂર હોતા નથી એટલે કે પરસ્પર એક બીજા સાથે અડકીને રહેલા હોય છે, તથા "सुणिद्धदंता" તેમના બે દાંત રૂક્ષતાથી રહિત એટલે કે સુંવાળા હોય છે "सुजायदंता" તે ઘણી સારી રીતે પેઢામાં રહેલા હોય છે "एगदंतसेढिव्व अणेगदंता" જો કે તેમને બત્રીસ દાંત હોય છે, છતાં પણ પરસ્પર એવી રીતે અડોઅડ આવેલા હોય છે કે તે એક દાંત હોય તેવા દેખાય છે તથા "हुयवहनिद्धतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा" જેમનું તાળવું અને જીભ આગમાં તપાવેલ શુદ્ધ સુવર્ણના જેવા લાલ રંગવાળાં હોય છે તથા

जिह्वा येषा ते तथा 'गरुलाययउज्जुतुगनासा' गरुडायतऋजुतुङ्गनासाः=गरुडस्येव आयता=दीर्घा ऋज्वी=सरला तुङ्गा=समुन्नता नासा येषा ते तथा अवदालियपुडरीय णयणा ' अवदालितपुण्डरीकनयनाः=विकसितसितकमलतुल्यनेत्राः ' विकोसिय धवलपत्तलच्छा ' विकोशितधवलपत्रलाक्षाः=विकोसिते=विकसिते प्रसन्ने सदा प्रमुदितत्वात्तेषा, धवले=श्वेते पत्रले=पक्ष्मवती च अक्षीणि=नेत्रे येषा ते तथा। ' आणामिय चावरुइलकिण्हब्भराइसठियसगयाययसुजायभूमगा ' आनामित चापरुचिरकृष्णाभ्रराजिसस्थितसङ्गतायतसुजातभ्रुव = आनामितौ = वक्रीकृतौ चापौ = धनुषी तद्वत्रुचिरे कृष्णाभ्रराजिसस्थिते=कृष्णमेघरेखासदृशे सङ्गते= समुचिते आयते=दीर्घ सुजाते=स्वभावतःसुन्दराकारे च भ्रुवौ येषा ते तथा। ' अल्लीणपमाणजुत्तसवणा ' आलीनप्रमाणयुक्तश्रवणाः = आलीनौ=स्तब्धौ प्रमाण-युक्तौ=समुचितप्रमाणौ श्रवणौ=कर्णौ येषा ते तथा एतावदेव न किन्तु ' सुस्सवणा' सुश्रवणाः = शब्दग्रहणशक्तिसम्पन्नकर्णयुक्ताः', ' पीणमसलकवोलदेसभागा ' पीन

शुद्ध तप्त सुवर्ण के समानरक्त तलवाली होती है। तथा (गरुलायय उज्जतुगनासा) जिनकी नासिका गरुड़ की नासिका के समान दीर्घ, सरलऔर समुन्नत होती है। तथा (अवदालियपुडरीयणयणा) जिनके नेत्र विकसित शुभ्र कमल के समान होते है। तथा-(विकोसियधवल-पत्तलच्छा) जिनकी दोनो आखे विकसित धवलवर्णोपेत, एव पक्ष्मवाली होती है। (आणामियचावरुइलकिण्हब्भराइ सठियसगयायसुजायभूमगा) तथा जिनकी भोहें वक्रीकृत धनुष्य के समान रुचिर, कृष्णमेघपक्ति के जैसी अत्यतकाली, सगत-लबी २ एव स्वभावत.आकार में सुन्दर होती है (अल्लीणयमाणजुत्तसवणा) तथा-जिनके दोनो कान स्तब्ध और समुचित प्रमाणवाले होते हे (सुस्सवणा) तथा-शब्दग्रहण करने की शक्तिसे सपन्न होनेके कारण जिनके दोनो कान सच्चे अर्थमें सुश्रवण

" गरुलायगउज्जतुगनासा " જેમની નાસિકા ગરુડની ચાચ જેવી લાબી, સરલ અને ઉન્નત હોય છે તથા " अवदालियपुडरीयणयणा " જેમના નયન વિકસિત શ્વેત કમળ જેવા હોય છે, તથા " विकोसियधवलपत्तलच्छा " જેમની બન્ને આખો વિકસિત, શ્વેતવર્ણની અને પક્ષ્મવાળી હોય છે "आणामिय चावरुइल किण्हब्भराइसठियसगया यय सुजायभूमगा " તથા તેમની ભ્રમરો વક્ર ધનુષ્યના જેવી મનોહર, કાળા વાદળોની પક્તિ સમાન અત્યત કાળી, સગત-લાબી અને સ્વભાવિક રીતેજ દેખાવામા સુદર હોય છે " अल्लीणपमाणजुत्तसवणा " તથા જેમના બન્ને કાન સ્તબ્ધ અને પ્રમાણસરના હોય છે " सुस्सवणा " શબ્દ સાભળવાની શક્તિવાળા હોવાને કારણે જે ખરા અર્થમા સુશ્રવણ છે,

मासलकपोलदेशभागाः=पीनौ = पीवरौ-मांसलौ= पुष्टौ च कपोलदेशभागौ = कपोलौ येषां ते तथा 'अचिरुग्गय-बालचंद-संठियमहानिलाडा' अचिरोद्गत बालचन्द्रसंस्थितमहाललाटाः = अचिरोद्गत =अचिरकालोदितः=अष्टमीतिथिसम्बन्धीत्यर्थः, अतएव बालचन्द्रः अपूर्णचन्द्रः अर्द्धचन्द्र इत्यर्थः, तत्संस्थित = तत्संस्थानयुक्तं तदाकारकं महत् = विशालम् अष्टाङ्गुलप्रमाणं ललाटं येषां ते तथा अर्द्धचन्द्राकारललाटा इत्यर्थः । 'उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा' उडुपतिमतिपूर्णसौम्यवदना'=पूर्णचन्द्रवदाह्लादकमुखाः 'छत्तागारुत्तमंगदेसा' छत्राकारोत्तमाङ्गदेशाः = छत्रवद्वृत्तोन्नतमस्तकाः 'घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा' घननिचितसुबद्धलक्षणोन्नतकूटाकारनिभपिंडिकाग्रशिरस' =घनवत्=लोहमुद्गरवन्निचित=सम्भृतं सुबद्ध=स्नायुभिः लक्षणोन्नत = विशिष्टलक्षणयुक्तं तथाकूटाकारनिभ=प्रासादशिखरसदृशं वर्तुलत्वात् पिण्डिकेव अग्रशिरः = मस्तकाग्रभागो येषां ते तथा सुन्दरलक्षणयुक्तसुनिशालवर्तुलमस्तकाग्रभागा

है ऐसे कानों से जो युक्त होते हैं। तथा-(पीणमसलकवोलदेसभागा) जिनके दोनों कपोल पीवर, और मांसल होते हैं (अचिरुग्गयबालचंदसंठियमहानिला) तथा-जिनका महाललाट अष्टमी के अर्धचन्द्र के समान आकार का होता है अर्थात् आठ अंगुल प्रमाण आकार वाला होता है। (उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा) तथा जिनका मुख, पूर्णचन्द्र के समान आल्हादकारक होता है। (छत्तागारुत्तमगदेसा) तथा-मस्तक छत्र की तरह वृत्त-गोल और उन्नत होता है (घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा) तथा मस्तक का अग्रभाग लोहमुद्गर की तरह निचित-गाढ़-भरा हुआ-तथा स्नायुओं से अच्छी तरह जकड़ा हुआ, तथा अनेक विध विशिष्ट लक्षणों से युक्त तथा प्रासाद के शिखर के समान उन्नत तथा पिण्डिका-पिंडी के जैसा-गोल

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે "पीणमसलकवोलदेसभागा" જેમના બન્ને ગાલ પીવર, અને માંસલ હોય છે "अचिरुग्गयबालचंदसंठियमहानिलाडा" તથા જેમના વિશાળ લલાટ આઠમના ચંદ્રના જેવા આકારના હોય છે એટલે કે આઠ આંગળ પહોળા હોય છે 'उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा" તથા જેમનું મુખ પૂર્ણચન્દ્રના જેવું આહ્લાદ કારક હોય છે "छत्तागारुत्तमगदेसा" તેમનું માથું છત્રના જેવું ગોળ અને ઉન્નત હોય છે "घणनिचयसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागार पिंडियग्गसिरा" તથા તેમના મસ્તકનો અગ્ર ભાગ મગદળના જેવો નિચિત-ગાઢ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બંધાયેલો, તથા અનેક પ્રકારના ખાસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉન્નત તથા પિંડીના

इत्यर्थः', 'हुतवहनिद्धधोयतत्तवणिज्जरत्तकेसतकेसभूमी' हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्तकेशान्तकेशभूमयः=तत्र हुतवहेन=वह्निना नि-र्मात=तापितम् अतएव-धौत=विशोधित तप्त च यत्तपनीय=सुवर्ण तद्वद् रक्ताः=रक्तवर्णाः केशान्ताः=केशसमीपस्था केशभूमीः मस्तकत्वचा येपा ते तथा तप्तसुवर्णसदृशरक्तवर्ण शिरस्त्वक् सम्पन्नाः। 'सामलिपोंडघणनिचियच्छोडियमिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगनीलकज्जलपहिट्ठ भमरगणनिद्धनिउरंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया' शाल्मलीपोडघननिचितछोटितमृदुविशदप्रशस्तसूक्ष्मलक्षणसुगन्धसुन्दरभुजमोचकभृङ्गनीलकज्जलप्रहृष्टभ्रमरगणस्निग्धनिकुरम्बनिचितकुञ्चितप्रदक्षिणावर्त्तमूर्धशिरोजा, तत्र-'सामलि' शाल्मलि=वृक्षविशेषस्तस्य यत् 'पोंड' फल तच्च 'घणनिचिय' घननिचितम् = आभ्यन्तरभागसभृततयाऽतिकठिन तत् 'छोडिय' छोटित=विदारित तद्वत् 'मिउ' मृदवः=कोमलः 'विसय' विशदाः=सुस्पष्टता 'पसत्थ' प्रशस्ताः=श्रेष्ठा 'सुहुम' सूक्ष्माः=प्रतला 'लक्खण' लक्षणा =शुभ लक्षणयुक्ताः सगन्धय =सुरभिगन्धविशिष्टाः=मनोहराः

२ होता है। (हुयवहनिद्धतधोयतत्ततवणिज्जरत्तकेसतकेसभूमी) तथा जिनकी केशान्तभूमि-मस्तक की त्वचा-अग्नि से तपाये हुए शुद्ध तप्त सुवर्ण जैसी रक्तवर्णवाली होती है (सामलिपोंडघणनिचयच्छोडियमिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगनीलकज्जलपहिट्ठभमरगणनिद्धनिउरंब निचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया) तथा जिनके केश, शाल्मलिवृक्ष के-रुआ से भीतर से भरे हुए तथा कठिन बने हुए विदारित फल के समान मृदु होते हैं, शाल्मली वृक्ष का फल जब पक जाता है तो वह कठिन हो जाता है, और उसकी भीतर की भरी हुई रुई बहुत अधिक चिकनी हो जाती है। यह बड़ी नरम और चिकनी रहती है। इसलिये सूत्रकार ने उसके साथ बालों को उपमित किया है।

જેવા ગોળ ગોળ હોય છે "हुयवहनिद्धतधोयनत्ततवणिज्जरत्तकेसतकेसभूमि" તથા જેમની કેશાન્તભૂતિ-માથાની ત્વચા-અગ્નિથી તપાવેલા શુદ્ધ સુવર્ણ જેવા લાલ વર્ણની હોય છે "सामलिपोडघणनिचयच्छोडियमिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुदरभुयमोयगभिंगनीलकज्जलपहिट्ठभमरगणनिद्धनिउरंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया" તથા જેમના કેશ શાલ્મલિ વૃક્ષના, (શીમળો) અંદરથી રૂવાટીથી ભરેલા તથા કઠણ બનેલ કાપેલા ફળ સમાન મૃદુ હોય છે શીમળાના ફળ જ્યારે પાકે છે ત્યારે કઠણ થઈ જાય છે, અને તેની અંદર રહેલ રૂવાટી ઘણી મુલાયમ થઈ જાય છે તે ઘણી નરમ અને સુંવાળી રહે છે તેથી સૂત્રકાર તે રૂવાટી સાથે કેશની સરખામણી કરે છે તેમના કેશ વિશદ-સુસ્પષ્ટ, પ્રશસ્ત-

मांसलकपोलदेशभागा.=पीनौ = पीवरौ-मांसलौ= पुष्टौ च कपोलदेशभागौ=कपोलौ येषां ते तथा 'अचिरुग्गय-बालचंद-संठियमहानिलाडा ' अचिरोद्गतबालचन्द्रसंस्थितमहाललाटा = अचिरोद्गत=अष्टदिवसमासोदितः=अष्टमीतिथिसम्बन्धीत्यर्थः, अतएव बालचन्द्रः अपूर्णचन्द्रः अर्द्धचन्द्र इत्यर्थः, तत्संस्थितं=तत्संस्थानयुक्तं तदाकारकं महत् = विशालम् अष्टाङ्गुलप्रमाणं ललाटं येषां ते तथा अर्द्धचन्द्राकारललाटा इत्यर्थः । 'उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा' उडुपतिमतिपूर्णसौम्यवदनाः=पूर्णचन्द्रवदाह्लादकमुखाः 'छत्तागारुत्तमगदेसा' छत्राकारोत्तमाङ्गदेशाः = छत्रवद्वृत्तोन्नतमस्तकाः 'घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा ' घननिचितसुबद्धलक्षणोन्नतकूटाकारनिभपिण्डिताग्रशिरसः=घनवत्=लोहमुद्गरवन्निचित=सम्भृत सुबद्ध=स्नायुभिः लक्षणोन्नत = विशिष्टलक्षणयुक्त तथाकूटाकारनिभ=प्रासादशिखरसदृश वर्तुलत्वात् पिण्डिकेव अग्रशिरः=मस्तकाग्रभागो येषां ते तथा सुन्दरलक्षणयुक्तसुविशालवर्तुलमस्तकाग्रभागा

है ऐसे कानों से जो युक्त होते हैं । तथा-(पीणमसलकवोलदेसभागा) जिनके दोनों कपोल पीवर, और मांसल होते हैं (अचिरुग्गयबालचंद संठियमहानिला) तथा-जिनका महाललाट अष्टमी के अर्धचन्द्र के समान आकार का होता है अर्थात् आठ अंगुल प्रमाण आकार वाला होता है । (उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा) तथा जिनका मुख, पूर्णचन्द्र के समान आल्हादकारक होता है । (छत्तागारुत्तमगदेसा) तथा-मस्तक छत्र की तरह वृत्त-गोल और उन्नत होता है (घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा) तथा मस्तक का अग्रभाग लोहमुद्गर की तरह निचित-गाढ़-भरा हुआ-तथा स्नायुओं से अच्छी तरह जकड़ा हुआ, तथा अनेक विध विशिष्ट लक्षणों से युक्त तथा प्रासाद के शिखर के समान उन्नत तथा पिण्डिका-पिंडी के जैसा-गोल

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે "पीणमसलकवोलदेसभागा" જેમના બને ગાલ પીવર, અને માંસલ હોય છે "अचिरुग्गयबालचंदसंठियमहानिलाडा" તથા જેમના વિશાળ લલાટ આઠમના ચંદ્રના જેવા આકારના હોય છે એટલે કે આઠ આગળ પહોળા હોય છે "उडुवइपडिपुण्णसोम्मवयणा" તથા જેમનુ મુખ પૂર્ણચન્દ્રના જેવુ આહ્‌લાદ કારક હોય છે "छत्तागारुत्तमगदेसा" તેમનુ માથુ છત્રના જેવુ ગોળ અને ઉન્નત હોય છે "घणनिचयसुबद्धलक्खणुण्णय कूडागार पिंडियग्गसिरा" તથા તેમના મસ્તકનો અગ્ર ભાગ મગદળના જેવો નિચિત-ગાઢ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બંધાયેલો, તથા અનેક પ્રકારના ખાસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉન્નત તથા પિંડીના

"छत्र १ तामरस २ धनू ३ रथवरो४ दम्भोलि ५ कूर्मा ६ ऽ ङ्कुशाः ७।
वापी ८ स्वस्तिक ९ तोरणानि १० य मरः ११ पञ्चाननः १२ पादपः १३ ॥
चक्र१४ शङ्ख१५ गजा१६ समुद्र१७ कलशौ१८ प्रासाद१९ मत्स्यौ२० यवौ२१
यूप२२ स्तूप२३ कमण्डलू२४ न्यवनिभृत् २५ सच्चामरो२६ दर्पणम् २७ ॥१॥
उक्षा२८ पताका२९ कमलाभिषेक३० सुदाम ३१ केकी ३२ घनपुण्यभाजाम् ॥

'हसस्सरा' हंसस्वराः=हंसवत्स्वरा-स्निग्धत्वात् 'कोंचस्सरा' क्रौञ्चस्वराः=कौञ्चपक्षिवत्स्वराः-सूक्ष्ममृदुत्वात्, 'दुदुहिस्सरा' दुन्दुभिवत्स्वराः-गम्भीरत्वात्

धारण करने वाले होते हैं। प्रशस्त बत्तीस लक्षणो के नाम इस प्रकार हैं-(१) छत्र, (२) कमल, (३) धनुष, (४) उत्तमरथ, (५) दम्भोलि-वज्र, (६) कूर्म-कच्छप, (७) कुश, (८) वापी, (९) स्वस्तिक, (१०) तोरण, (११) तालाब, (१२) पचानन-सिंह, (१३) पादप, (१४) चक्र, (१५) शख, (१६) गज, (१७) समुद्र, (१८) प्रासाद, (१९) मत्स्य, (२०) यव, (२१) यूप-स्तम (२२) स्तूप, (२३) कमडलु, (२४) अवनिभृत्-पहाड़-पर्वत, (२५) सुन्दर चामर, (२६) दर्पण, (२७) उक्षा-बैल, (२८) पताका, (२९) अभिषेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-सुन्दरमाला (३१) केकी-मयूर और (३२) पुष्प (हसस्सरा) इनका स्वर स्निग्ध होने से हस के स्वर के समान होता है। (कोंचस्सरा) सूक्ष्म और मृदु होने के कारण क्रौंचपक्षी के

श्रेष्ठ બત્રીસ લક્ષણો ધારણ કરનાર હોય છે શ્રેષ્ઠ બત્રીસ લક્ષણોના નામ આ પ્રમાણે છે—

(૧) છત્ર (૨) કમલ (૩) ધનુષ (૪) ઉત્તમરથ (૫) દમ્ભોલિ-વજ્ર (૬) કૂર્મ કાચબો (૭) અકુશ (૮) વાપી (૯) સ્વસ્તિક (૧૦) તોરણ (૧૧) તળાવ (૧૨) પચાનનસિંહ (૧૩) પાદપ (વૃક્ષ) (૧૪) ચક્ર (૧૫) શખ (૧૬) ગજ (૧૭) સમુદ્ર (૧૮) પ્રાસાદ (૧૯) મત્સ્ય (૨૦) યવ (૨૧) યૂપ-સ્તભ (૨૨) સ્તૂપ (૨૩) કમડલુ (૨૪) અવનિભૃતપહાડ (૨૫) સુદર ચામર (૨૬) દર્પણ (૨૭) ઉક્ષા-બળદ (૨૮) પતાકા (૨૯) અભિષેક યુક્ત લક્ષ્મી (૩૦) સુદામ-સુદર માળા (૩૧) કેકી મયૂર (૩૨) પુષ્પ "हसस्सरा" તેમનો સ્વર મૃદુ હોવાથી હંસના જેવો હોય છે, "कोंचस्सरा" સૂક્ષ્મ અને મૃદુ હોવાથી ક્રૌંચ પક્ષીના સ્વર જેવો હોય છે, "दुदुहिस्सरा" ગભીર હોવાથી દુદુભિના અવાજ

१, तामरस=कमलम्२। २ दम्भोलि=वज्रम्५। ३ पञ्चानन=सिंह१२। ४ यूप=स्तम्भ२२। ५ स्तूप='चोतरा' इति भाषा प्रसिद्धा २३। ६ अवनिभृत=पर्वत २५। ७ उक्षा=बलीवर्द २८। ८ कमलाभिषेक-अभिषेकयुक्ता लक्ष्मी ३०। ९ सुदाम=माला३१। १० केकी=मयूर ३२।

तथा 'भुयमोयग' भुजमोचकः=कृष्णवर्णो रत्नविशेषः भिंग' भृङ्गाः=चूर्णिताङ्गार 'कोलसा' इति भाषा प्रसिद्धः, नील=नीलमणिः, 'नीलम' इति प्रसिद्धः, कज्जलम्=अञ्जन 'पहिट्ठभमरगण' प्रहृष्टभ्रमरगण=प्रमुदित भ्रमरसमूहश्च, इत्येतैः सदृशाः स्निग्धाः=कृष्णकान्तयः 'निउरंब' निकुरम्बाणि=समूहरूपा, निचिता=सनद्धाः 'कुंचिय' कुञ्चिताः=कुटिला 'पयाहिणावत्त' प्रदक्षिणावर्त्ताश्च=दक्षिणावर्त्तयुक्ता 'मुद्धसिरया' मूर्धशिरोजाः=मस्तककेशा येषा ते तथा। 'सुजायसुविभत्तसंगयंगा' सुजातसुविभक्तसंगताङ्गाः=सुनिष्पन्नसुस्पष्टसमुचितशरीरावयवाः, 'लक्खणवंजणगुणोववेया' लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता' = लक्षणानि = स्वस्तिकादीनि व्यञ्जनानि=मषतिलकादीनि गुणानि-सौभाग्यादीनि तैरुपेताः 'पसत्थबत्तीसलक्खणधरा' प्रशस्तद्वात्रिंशल्लक्षणधरा'=प्रशस्तानि यानि द्वात्रिंशल्लक्षणानि छत्र कमलादिरूपाणि येषा ते तथा, द्वात्रिंशल्लक्षणानि यथा—

तथा उनके केश विशद-सुस्पष्ट, प्रशस्त-श्रेष्ठ, सूक्ष्म पतले, शुभलक्षणों से युक्त, अच्छी गंधवाले और मनोहर होते हैं। तथा इनका वर्ण कृष्ण वर्ण नामक रत्नविशेष के जैसा, भृंग-चूर्णित कोलसा के जैसे, नील-नीलमणि जैसे, कज्जल-अंजन के जैसे और प्रमुदित भ्रमरों के समूह जैसे, काले होते हैं। ये केश मस्तक में विरले नहीं होते हैं-किन्तु समुदाय रूप में सघन रहते हैं। एक दूसरे से सबद्ध होते है, कुटिल-घुघराले होते हैं और दक्षिणावर्त्त वाले होते हैं। (सुजायसुविभत्तसंगयंगा) इनके शारीरिक अवयव सुनिष्पन्न, सुस्पष्ट एवं समुचित संनिवेशवाले होते हैं (लक्खणवंजणगुणोववेया) स्वस्तिक आदि लक्षणों से मषा, तिलक आदि व्यंजनों से एव सौभाग्य आदि सद्गुणों से ये युक्त होते हैं। (पसत्थबत्तीसलक्खणधरा) प्रशस्त बत्तीस लक्षणों को ये

શ્રેષ્ઠ, સૂક્ષ્મ-પાતળા, શુભલક્ષણો વાળા, સુંદર ગંધવાળા અને મનોહર હોય છે. તથા તેમનો રંગ કૃષ્ણવર્ણ નામના રત્ન જેવો કોલસાની રજ જેવો, નીલમણી જેવો, કાજળ જેવો, અને પ્રમુદિત ભ્રમરવૃન્દ જેવો કાળો હોય છે તે કેશ મસ્તક ઉપર વિખરાયેલા હોતા નથી પણ સમુદાય રૂપે સઘન હોય છે, એક બીજા સાથે મળેલા હોય છે, ગુંચળા વાળા હોય છે, અને દક્ષિણાવર્ત વાળા (જમણી તરફ વળેલા) હોય છે 'सुजायसुविभत्तसंगयंगा" તેમના શરીરના અંગો સુડોળ, સુસ્પષ્ટ અને પ્રમાણસરના હોય છે "लक्खणवंजण-गुणोववेया" સ્વસ્તિક આદિ લક્ષણોથી, મસ, તિલક આદિ વ્યંજનોથી અને સૌભાગ્ય આદિ સદ્ગુણોથી તેઓ યુક્ત હોય છે, "पसत्थबत्तीसलक्खणधरा"

" छत्र १ तामरस[1] २ धनू ३ रथवरो४ दम्भोलि[2] ५ कूर्मा ६ ऽङ्कुशाः ७।
वापी ८ स्वस्तिक ९ तोरणानि १० च सरः ११ पञ्चाननः[3] १२ पादपः १३ ॥
चक्र१४ शङ्ख१५ गजा१६ समुद्र१७ कलशौ१८ प्रासाद१९ मत्स्यौ२० यवौ२१
यूप[4]२२ स्तूप[5]२३ कमण्डलू२४ न्यवनिभृत्[6] २५ सच्चामरो२६ दर्पणम् २७ ॥१॥
उक्षा[7]२८ पताका२९ कमलाभिषेक[8]३० सुदाम[9] ३१ केकी[10] ३२ घनपुण्यभाजाम् ॥

'हंसस्सरा' हंसस्वराः=हंसवत्स्वरा -स्निग्धत्वात् 'कोंचस्सरा' क्रौञ्चस्वराः= क्रौञ्चपक्षिवत्स्वराः-सूक्ष्ममृदुत्वात्, 'दुंदुहिस्सरा' दुन्दुभिवत्स्वरा'-गम्भीरत्वात्

धारण करने वाले होते हैं। प्रशस्त बत्तीस लक्षणों के नाम इस प्रकार हैं-(१) छत्र, (२) कमल, (३) धनुष, (४) उत्तमरथ, (५) दम्भोलि-वज्र, (६) कूर्म-कच्छप, (७) कुश, (८) वापी, (९) स्वस्तिक, (१०) तोरण, (११) तालाव, (१२) पचानन-सिंह, (१३) पादप, (१४) चक्र, (१५) शख, (१६) गज, (१७) समुद्र, (१८) प्रासाद, (१९) मत्स्य, (२०) यव, (२१) यूप-स्तंभ (२२) स्तूप, (२३) कमडलु, (२४) अवनिभृत्-पहाड-पर्वत, (२५) सुन्दर चामर, (२६) दर्पण, (२७) उक्षा-बैल, (२८) पताका, (२९) अभिषेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-सुन्दरमाला (३१) केकी-मयूर और (३२) पुष्प (हंसस्सरा) इनका स्वर स्निग्ध होने से हंस के स्वर के समान होता है। (कोंचस्सरा) सूक्ष्म और मृदु होने के कारण क्रोचपक्षी के

શ્રેષ્ઠ બત્રીસ લક્ષણો ધારણ કરનાર હોય છે શ્રેષ્ઠ બત્રીસ લક્ષણોના નામ આ પ્રમાણે છે—

(૧) છત્ર (૨) કમલ (૩) ધનુષ (૪) ઉત્તમરથ (૫) દમ્ભોલિ-વજ્ર (૬) કૂર્મ કાચબો (૭) અંકુશ (૮) વાપી (૯) સ્વસ્તિક (૧૦) તોરણ (૧૧) તળાવ (૧૨) પચાનનસિંહ (૧૩) પાદપ (વૃક્ષ) (૧૪) ચક્ર (૧૫) શંખ (૧૬) ગજ (૧૭) સમુદ્ર (૧૮) પ્રાસાદ (૧૯) મત્સ્ય (૨૦) યવ (૨૧) યૂપ-સ્તંભ (૨૨) સ્તૂપ (૨૩) કમંડલુ (૨૪) અવનિભૃતપહાડ (૨૫) સુંદર ચામર (૨૬) દર્પણ (૨૭) ઉક્ષા-બળદ (૨૮) પતાકા (૨૯) અભિષેક યુક્ત લક્ષ્મી (૩૦) સુદામ-સુંદર માળા (૩૧) કેકી મયૂર (૩૨) પુષ્પ 'हंसस्सरा" તેમનો સ્વર મૃદુ હોવાથી હંસના જેવો હોય છે, "कोंचस्सरा" સૂક્ષ્મ અને મૃદુ હોવાથી ક્રૌંચ પક્ષીના સ્વર જેવો હોય છે, "दुंदुहिस्सरा" ગંભીર હોવાથી દુંદુભિના અવાજ

१, तामरस=कमलम्२। २ दम्भोलि=वज्रम्५। ३ पञ्चानन=सिंह१२। ४ यूप=स्तम्भ२२। ५ स्तूप=' चोतरा ' इति भाषा प्रसिद्धा २३। ६ अवनिभृत= पर्वत २५। ७ उक्षा=बलीवर्द २८। ८ कमलाभिषेक-अभिषेकयुक्ता लक्ष्मी ३०। ९ सुदाम=माला३१। १० केकी=मयूर ३२।

'सीहस्सरा, सिंहस्वराः-सिंहस्वराः-अव्याहतप्रवर्धमानत्वात्, न तु सगद्, हीनस्वराः, 'मेघस्सरा' मेघस्वरा=मेघस्वरा-दूरदेशव्यापित्वात् 'ओघस्सरा' ओघस्वराः-, अत्रुटितस्वराः, 'सुस्सरा' सुस्वरा'-कर्णसुखजनकत्वात् 'सुस्सरनिग्घोसा' सुस्वरनिर्घोषा-सुस्वरः=प्रियः निर्घोषः=शब्दो येषां ते तथा मधुरभाषिण इत्यर्थः, 'वज्जरिसहनारायसंघयणा' वज्र-ऋषभ-नाराचसंहनना., तत्र नाराचम्=उभयतो मर्कटबन्धः, ऋषभः=तदुपरि वेष्टनपट्टः, वज्र= कीलिका-उभयस्यापि भेदकमस्थि ॥ उक्तञ्च—

"रिसहो उ होइ पट्टो, वज्जं पुण कीलिया वियाणाहि।
उभओ मक्कडबंधो नाराय तं वियाणाहि ॥ १ ॥" इति,

स्वर के जैसा होता है। (दुंदुहिस्सरा) गंभिर होने से दुंदुभि के स्वर जैसा होता है, (सीहस्सरा) अव्याहतरूप से प्रवर्धमान होने के कारण सिंह के स्वर जैसा, (मेहस्सरा) दूर २ देश तक में भी व्याप्त होने के कारण मेघकी ध्वनि जैसा होता है। (ओघस्सरा) वह स्वर बीच में टूटता नहीं है, (सुस्सरा) तथा कानों को सुखकारी होता है। तथा-(सुस्सरनिग्घोसा) वे जो भी शब्द बोलते हैं वे भी बड़े प्रिय होते हैं, अर्थात वे मधुरभाषी होते हैं (वज्जरिसहनारायसंघयणा) इनका वज्र ऋषभ नाराच संहनन होता है और (समचउरंससंठाणसंठिया) समचतुरस्र संस्थान होता है। जो संहनन उभयतः मर्कटबंधसे, ऋषभ-उसके उपर वेष्टनपट्ट से एवं वज्र-कीलीका से युक्त होता है उसका नाम वज्र ऋषभनाराच संहनन है। यही बात गाथा द्वारा प्रदर्शित की गई है।

જેવો હોય છે, "सीहस्सरा" અવિરત પ્રવર્ધમાન હોવાને કારણે સિંહના સ્વર જેવો, અને "मेहस्सरा" દૂર દૂર સુધી ફેલાતો હોવાથી મેઘના ધ્વનિ જેવો લાગે છે "ओघस्सरा" તે સ્વર વચ્ચે તૂટતો નથી અને "सुस्सरा" કર્ણને સુખદ લાગે છે તથા 'सुस्सरनिग्घोसा" તેઓ જે શબ્દો બોલે છે તે પણ ઘણા મધુર હોય છે એટલે કે મીઠા બોલા હોય છે "वज्जरिसह नारायसंघयणा" તેમનુ વજ્ર ઋષભ નારાચ સંહનન હોય છે અને "समचउरंससंठाण संठिया" સમચોરસ સંસ્થાન હોય છે જે સંહનન બન્ને તરફ મર્કટ બંધથી, ઋષભ-તેના ઉપર લપટાયેલા પટ્ટથી અને વજ્ર-કીલિકાથી યુક્ત હોય છે તેનુ નામ वज्रऋषभनाराचसंहनन છે એ જ વાત ગાથા દ્વારા દર્શાવવામા આવી છે—

एव रूप सहननम्—अस्थिरचनाविशेषो येषा ते तथा । 'समचउरससठाण सठिया' समचतुरस्रसस्थानसस्थिताः = तत्र समा = अन्यूनाधिकाः चतस्रः अस्रयः चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवा यत्र तत्, समचतुरस्रत्व च पर्यङ्कासनोपविष्टस्य दक्षिणस्कन्धाद् वामजानुपर्यन्त, तथा वामस्कन्धाद् दक्षिण जानुपर्यन्त समत्व, तदेव सस्थान = शरीररचनाविशेष, तेन सस्थिताः= युक्ता स्ते तथा 'छायउज्जोवियगमगा' छायोद्योतिताङ्गोपाङ्गाः – छायया = शरीर कान्त्या उद्योतितानि देदीप्यमानानि अङ्गोपाङ्गानि येषा ते तथा देदीप्यमानशरीराः, 'पसत्थच्छवी' प्रशस्तछवय=सुन्दराकृतयः 'निरायका' निरातङ्काः = रोगरहिताः 'ककगहणी' कङ्कग्रहणाः=कङ्कस्य=पक्षिविशेषस्येव ग्रहण–गुदाशयो येषा ते तथा–नीरोगवर्चस्का 'कवोयपरिणामा' कपोतपरिणामाः=कपोततुल्या

जैसे—" रिसहो उ होइ पट्टो, वज्ज पुण कीलिया वियाणाहि ।
उभओ मक्कडवधो, नाराय त वियाणाहि " ॥ १ ॥

जिस सस्थान में चतुर्दिग्विभागोपलक्षित शारीरिक अवयव न्यूनाधिकतारूप दोष से वर्जित होते हैं–अर्थात्–पर्यङ्कासन से उपविष्ट पुरुष के दक्षिणस्कध से लेकर वामजानुपर्यंत और वामस्कध से लेकर दक्षिण जानु पर्यंत जो समानता रूप से शारीरिक अवयवों की रचना है उसका नाम समचतुरस्रसस्थान है। (छायउज्जोवियगमगा) इनके शारीरिक अवयव अपने शरीर की कांतिरूप छाया से सदा देदीप्यमान बने रहते हैं (पसत्थच्छवी) इनकी आकृति बडी मनोज्ञ सुन्दर होती है। (निरायका) इन्हें कोई भी रोग नहीं होता है। (ककगहणी) इनका गुदाशय–गुह्यप्रदेश पक्षी के गुह्यभाग की तरह लेपरहित मलवाला होता है। (कवोयपरिणामा) इनका आहार कबूतर के आहार के परिपाक जैसा

" रिसहो उ होइ पट्टो वज्ज पुण कीलिया वियाणाहि ।
उभओ मक्कडवधो, नाराय त वियाणाहि " ॥ १ ॥

જે વ્યવસ્થામા ચારે દિશાને અનુલક્ષીને શારીરિક અવયવો ન્યૂનતા અથવા અધિકતાના દોષથી રહિત હોય છે, એટલે કે પર્યંકાસને બેઠેલા પુરૂષના જમણા ખભાથી લઈને ડાબા ઢીચણ સુધી અને ડાબા ખભાથી લઈને જમણા ઢીચણ સુધી સમાન રૂપે શારીરિક અવયવોની જે રચના હોય છે તેને સમચતુરસ્રસસ્થાન કહે છે " छायउज्जोवियगमगा " તેમના શરીરના અગો તેમના શરીરની કાતિરૂપ છાયાથી સદા દેદીપ્યમાન બની રહે છે " पसत्थच्छवी " તેમની આકૃતિ ઘણી મનોજ્ઞ–સુદર હોય છે " निरायका " તેમને કોઈ રોગ થતો નથી " ककगहणी " તેમનો ગુદાશય–ગુહ્યભાગ પક્ષીના ગુહ્યભાગની જેમ લેપરહિત મળવાળો હોય છે " कवोयपरिणामा " તેમનો આહાર કબૂતરના

ऽऽहारपरिपाकाः 'सउणिपोसा' शकुनिपोषाः-शकुनेरिव=पक्षिण इव पोषः= अपानस्थानं निरुपलेपतया येषां ते तथा, निरुपलेपगुदाशयाः, 'पिट्ठं तरोरुपरिणया' पृष्ठान्तरोरुपरिणताः = पृष्ठ = पृष्ठदेशः, अन्तरे = पृष्ठोदरयोरन्तराले पार्श्वावित्यर्थः उरू = जङ्घे च, इत्येते परिणताः = सुदृढा येषां ते तथा 'पउमुप्पलसरिसगंधसासमुरभिवयणा' पद्मोत्पलगन्धसमानश्वाससुरभिवदनाः-तत्र - पद्म = कमलम् उत्पलं = नीलकमलं च तत्सदृशो गन्धो यस्य स तथाभूतो यः श्वास तेन सुरभिः=सुगन्धयुक्त वदनं=मुखं येषां ते तथा 'अणुलोमवाउवेगा' अनुलोमवायुवेगाः = अनुकूलशरीरोद्भववायुवेगवन्तः 'अवदायनिद्धकेसा' अवदातस्निग्धकेशाः = अवदाताः कान्तियुक्ताः स्निग्धाः=चिक्कणाः केशाः=रोमाणि येषां ते तथा, 'विग्गहियउण्णयकुच्छी' वैग्रहिकोन्नतकुक्षयः= वैग्रहिकौ=शरीरानुरूपौ उन्नतौ=पुष्टौ कुक्षी=उदरदेशौ येषां ते तथा शरीरानुरूपपुष्टोदराः 'अमयरसफलाहारी' अमृतरसफलाहारिण' = अमृततुल्यरस

होता है। (सउणिपोसा) पक्षी की तरह इनका अपानस्थान मल के उपलेप से रहित होता है। (पिट्ठतरोरुपरिणया) इनके पृष्ठ और उदर के अंतराल-पार्श्वभाग एवं जंघाएँ सुदृढ होती हैं, (पउमुप्पलसरिसगंधसाससुरभिवयणा) पद्म-कमल, उत्पल-नील कमल, इनके जैसे गंधवाला इनका श्वास होता है। उस श्वास से सुगंध युक्त इनका मुख होता है। (अणुलोमवाउवेगा) इनकी शारीरिक वायु का वेग इनके अनुकूल ही रहता है-प्रतिकूल नहीं। (अवदायनिद्धकोसा) इनके केश-रोम अवदात कान्तियुक्त एवं चिकने होते हैं (विग्गहियउण्णयकुच्छी) इनके पेट के दोनों आजु बाजु के भाग शरीर के अनुरूप ही पुष्ट रहते हैं। (अमयरसफलाहारी) ये अमृत के जैसे रस-

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે "सउणिपोसा" પક્ષીની જેમ તેમનો ગુપ્તભાગ મળથી ખરડાયા વિનાનો હોય છે "पिट्ठतरोरुपरिणयो" તેમની પીઠ અને ઉદરની અંદરનો તથા પાસેનો ભાગ અને જંઘાઓ મજબૂત હોય છે "पउमुप्पलसरिसगंधसाससुरभिवयणा" પદ્મ-કમળ, અને ઉત્પલ-નીલકમળ જેવી ગંધવાળો તેમનો શ્વાસ હોય છે તે શ્વાસથી તેમનું મુખ સુગંધયુક્ત થાય છે છે "अणुलोमवाउवेगा" તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અનુકૂળ જ રહે છે-પ્રતિકૂળ રહેતો નથી "अवदायनिद्धकोसा" તેમના રોમ અવદાત-કાન્તિ યુક્ત અને મુલાયમ હોય છે "विग्गहियउण्णय कुच्छी" તેમના પેટની આજુ બાજુના બન્ને ભાગ શરીરને અનુરૂપ જ પુષ્ટ રહે "अमयरसफलाहारी"

युक्तानि यानि फलानि तेषामाहारिणः, 'तिगउय समुच्छिया' त्रि गव्यूत समुच्छ्रिताः=त्रि गव्यूतिपरिमाणोन्नतशरीराः, तिपलिओवमट्ठिइया' त्रिपल्योपम स्थितिकाः=त्रिपल्योपमकालस्थितिमन्तः 'तिन्नि य पलि ओवमाइ परमाउ पालइत्ता' त्रीणि च पल्योपमानि परमायूंषि परमायुष्यकाल पालयित्वा–उपभुज्य 'ते वि' तेऽपि=उत्तरकुरुदेवकुरुनिवासिनो युगलिका मनुष्या अपि, 'कामाण अवितित्ता' कामानामवितृप्ताः – अवितृप्तकामभोगा एव, 'उवणमति मरणधम्म' मरणधर्ममुपनमन्ति–इति पूर्ववत् ॥ सू० ११ ॥

साम्प्रतं तेषा स्त्री विषयेप्याह—'पमया वि' इत्यादि–

मूलम्—पमयाविय तेसि हुति सोम्मा सुजायसव्वग-सुदरीओ पहाणमहिलागुणेहि जुत्ता अइकंत–विसप्पमाण मउयसुकुमाल- कुम्मसठिय सिलिट्ठचलणा उज्जुमउयपीवर सुसहतगुलीओ अब्भुण्णाय । रइयतलिण-तंबसुइ-निद्ध-नखा रोमरहियवट्टसाठिय-अजहण्ण–पसत्थलक्खण–अकोप्प

वाले फलों का आहार करते हे। (तिगाउयसमुच्छिया) तीन कोशका इनका शरीर होता है। (तिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता) तीन पल्य की इनकी उत्कृष्ट आयु होती है। इस प्रकार की स्थिति से युक्त बने हुए ये उत्तरकुरु और देवकुरु के निवासी मनुष्य भी तीन पल्य की उत्कृष्ट अपनी आयु का भोग करके भी (कामाण अवितत्ता) काम–सुखो में अतृप्त बने रहते हैं। अर्थात्–तीन पल्य कालतक कामसुखों को भोगते रहते है फिर भी इनकी कामसुखों को भोगने की लालसा शात नहीं हो पाती हैं। अन्त में (ते वि) वे भी काम से अतृप्त ही मरण धर्मको प्राप्त करते हैं ॥ सू०११ ॥

તેઓ અમૃત જેવા રસવાળા ફળોનો આહાર કરે છે "तिगाउयसमुच्छिया" ત્રણ ગાવનુ તેમનુ શરીર હોય છે "तिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता" ત્રણ પલ્યનુ તેમનુ ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી લોકો પણ ત્રણ પલ્યનુ પોતાનુ આયુષ્ય ભોગવવા છતા પણ "कामाणा अवितत्ता" કામ ભોગોમાં અતૃપ્ત રહે છે એટલે કે ત્રણ પલ્ય કાળ સુધી કામ ભોગો ભોગવ્યા છતા પણ કામભોગો ભોગવવાની તેમની લાલસા શાત થઇ શકતી નથી છેવટે "ते वि" તેઓ પણ કામભો ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

ऽऽहारपरिपाकाः 'सउणिपोसा' शकुनिपोषाः-शकुनिरिव=पक्षिण इव पोसः= अपानस्थान निरुपलेपतया येषां ते तथा, निरुपलेपगुदाशयाः, 'पिट्ठ तरोरुपरिणया' पृष्ठान्तरोरुपरिणताः = पृष्ठ = पृष्ठदेशः, अन्तरे = पृष्ठोदरयोरन्तराले पार्श्वावित्यर्थः उरु = जङ्घे च, इत्येते परिणताः = सुन्दरा येषां ते तथा 'पउमुप्पलसरिसगंधसाससुरभिवयणा' पद्मोत्पलसगन्धश्वाससुरभिवदनाः-तत्र - पद्म = कमलम् उत्पलं = नीलकमलं च तत्सदृशो गन्धो यस्य स तथाभूतो यः श्वास तेन सुरभि=सुगन्धयुक्त वदनं=मुखं येषां ते तथा 'अणुलोमवाउवेगा' अनुलोमवायुवेगा' = अनुकूलशरीरोद्भवायुवेगवन्तः 'अवदायनिद्धकेसा' अवदातस्निग्धकेशाः = अवदाता' कान्तियुक्ता स्निग्धाः=चिक्कणाः केशाः=रोमाणि येषां ते तथा, 'विग्गहियउण्णयकुच्छी' वैग्रहिकोन्नतकुक्षयः= वैग्रहिको=शरीरानुरूपौ उन्नतौ=पुष्टौ कुक्षी=उदरदेशौ येषां ते तथा शरीरानुरूपपुष्टोदराः 'अमयरसफलाहारी' अमृतरसफलाहारिणः = अमृततुल्यरस

होता है। (सउणिपोसा) पक्षी की तरह इनका अपानस्थान मल के उपलेप से रहित होता है। (पिट्ठतरोरुपरिणया) इनके पृष्ठ और उदर के अंतराल-पार्श्वभाग एवं जघाएँ सुदृढ होती हैं, (पउमुप्पलसरिसगंधसाससुरभिवयणा) पद्म-कमल, उत्पल-नील कमल, इनके जैसे गंधवाला इनका श्वास होता है। उस श्वास से सुगंध युक्त इनका मुख होता है। (अणुलोमवाउवेगा) इनकी शारीरिक वायु का वेग इनके अनुकूल ही रहता है-प्रतिकूल नहीं। (अवदायनिद्धकोसा) इनके केश-रोम अवदात कान्तियुक्त एवं चिकने होते हैं (विग्गहियउण्णयकुच्छी) इनके पेट के दोनों आजु बाजु के भाग शरीर के अनुरूप ही पुष्ट रहते हैं। (अमयरसफलाहारी) ये अमृत के जैसे रस-

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે "सउणिपोसा" પક્ષીની જેમ તેમનો ગુપ્તભાગ મળથી ખરડાયા વિનાનો હોય છે "पिट्ठतरोरुपरिणया" તેમની પીઠ અને ઉદરની અંદરનો તથા પાસેનો ભાગ અને જંઘાઓ મજબૂત હોય છે "पउम्मुप्पकसरिस गंधसास सुरभिवयणा" પદ્મ-કમળ, અને ઉત્પલ-નીલકમળ જેવી ગંધવાળો તેમનો શ્વાસ હોય છે તે શ્વાસથી તેમનું મુખ સુગંધયુક્ત થાય છે છે "अणुलोमवाउवेगा" તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અનુકૂળ જ રહે છે-પ્રતિકૂળ રહેતો નથી "अवदायनिद्धकोसा" તેમના રોમ અવદાત-કાન્તિ યુક્ત અને મુલાયમ હોય છે "विग्गहियउण्णय कुच्छी" તેમના પેટની આજુ બાજુના બને ભાગ શરીરને અનુરૂપ જ પુષ્ટ રહે "अमयरसफलाहारी"

युक्तानि यानि फलानि तेषामाहारिणः, 'तिगउय समुच्छिया ' त्रि गव्यूत समुच्छ्रिताः=त्रि गव्यूतिपरिमाणोन्नतशरीराः, तिपलिओवमट्ठिइया ' त्रिपल्योपम स्थितिकाः=त्रिपल्योपमकालस्थितिमन्तः ' तिन्नि य पलि ओवमाइ परमाउ पालइत्ता ' त्रीणि च पल्योपमानि परमायूपि परमायुष्यकाल पालयित्वा–उपभुज्य 'ते वि ' तेऽपि=उत्तरकुरुदेवकुरुनिवासिनो युगलिका मनुष्या अपि, ' कामाण अवितित्ता ' कामानामनितृप्ताः – अवितृप्तकामभोगा एव, ' उवणमति मरणधम्म ' मरणधर्ममुपनमन्ति–इति पूर्ववत् ॥ सू० ११ ॥

साम्प्रत तेषा स्त्री विषयेष्वाह—'पमया वि ' इत्यादि–

मूलम्—पमयाविय तेसि हुति सोम्मा सुजायसव्वग-सुदरीओ पहाणमहिलागुणेहि जुत्ता अइकंत–विसप्पमाण मउयसुकुमाल- कुम्मसठिय-सिलिट्ठचलणा उज्जुमउयपीवर सुसहतगुलीओ अब्भुण्णाय । रइयतलिण-तंबसुइ-निद्ध-नखा रोमरहियवट्टसाठिय-अजहण्ण–पसत्थलक्खण–अकोप्प

वाले फलों का आहार करते है। (तिगाउयसमुच्छिया) तीन कोशका इनका शरीर होता है । (तिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता) तीन पल्य की इनकी उत्कृष्ट आयु होती है । इस प्रकार की स्थिति से युक्त बने हुए ये उत्तरकुरु और देवकुरु के निवासी मनुष्य भी तीन पल्य की उत्कृष्ट अपनी आयु का भोग करके भी (कामाण अवितत्ता) काम–सुखो में अतृप्त बने रहते है । अर्थात्–तीन पल्य कालतक कामसुखों को भोगते रहते है फिर भी इनकी कामसुखों को भोगने की लालसा शात नहीं हो पाती है । अन्त में (ते वि) वे भी काम से अतृप्त ही मरण धर्मको प्राप्त करते है ॥ सू०११ ॥

તેઓ અમૃત જેવા રસવાળા ફળોનો આહાર કરે છે " तिगाउयसमुच्छिया " ત્રણ ગાવનુ તેમનુ શરીર હોય છે "तिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता " ત્રણ પલ્યનુ તેમનુ ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી લોકો પણ ત્રણ પલ્યનુ પોતાનુ આયુષ્ય ભોગવવા છતા પણ " कामाणा अवितत्ता " કામ ભોગોથી અતૃપ્ત રહે છે એટલે કે ત્રણ પલ્ય કાળ સુધી કામ ભોગો ભોગવ્યા છતા પણ કામભોગો ભોગવવાની તેમની લાલસા શાત થઇ શકતી નથી છેવટે " ते वि " તેઓ પણ કામભો-ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ–૧૧ ॥

मनोज्ञाः तलिनाः=पतला, ताम्राः=ताम्रवर्णाः शुचयः=स्वच्छाः स्निग्धाः=चिकना नखा यासां तास्तथा। 'रोमरहियवट्टसंठियअजहण्णपसत्थलक्खणअकोप्पजघजुयला' रोमरहितवृत्तसंस्थितअजघन्यप्रशस्तलक्षणाऽकोप्यजङ्घायुगलाः = रोमरहितं=निर्लोमकं वृत्तसंस्थितं=वर्तुलाकारम् अजघन्यम्=उत्तमं प्रशस्तलक्षणं=सौभाग्यचिह्नयुक्तम्, अकोप्यं=सर्वप्रियं च जङ्घायुगलं यासां तास्तथा, 'सुणिम्मिय-सुणिगूढजाणुमंसलपसत्थसुबद्धसंधी' सुनिर्मितसुनिगूढजानुमांसलप्रशस्तसुबद्धसन्धयः=तत्र सुनिर्मितौ=शोभनसंस्थानविशिष्टौ सुनिगूढौ= दुर्लक्ष्यौ जानुनोः= जानुद्वयस्य मांसलौ=पुष्टौ प्रशस्तौ=सुन्दराकारौ सुबद्धौ=सुदृढौ सन्धी=सन्धानस्थाने यासां तास्तथा 'कयली-खंभाइरेग-संठिय-निव्वण-सुकुमाल-मउय कोमल अविरल–समसहियवट्टपीवरनिरंतरोरू' कदलीस्तम्भातिरेकसंस्थितनिर्व्रणसुकुमारमृदुककोमलाऽविरलसमसंहितवृत्तपीवरनिरन्तरोरवः = तत्र कदलीस्तम्भादतिरेकेण = अतिशयेन शोभनाऽऽरोहाऽवरोहसुपेशलसुकोमलत्वादिगुणप्रकर्षरूपेण संस्थितौ–सुन्दरसंस्थानवन्तौ निर्व्रणौ = निरुपहतौ सुकुमारमृदुककोमलौ–अत्यन्त

मनोज्ञ, तलिन–पतले, ताम्र–लाल, शुचि–स्वच्छ एव स्निग्ध–चिकने होते हैं। (रोमरहियवट्टसंठिय–अजहण्णपसत्थलक्खण–अकोप्पजघजुयला) इनका जघा युगल रोमरहित, वर्त्तुलाकार वाला अजघन्य–उत्तम सौभाग्यचिह्नों से युक्त एव अकोप्पसर्वप्रिय होता है (सुणिम्मियसुणिगूढजाणु मसलपसत्थसुबद्धसंधी) इनकी दोनों जानु की संधियां शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती है। पुष्ट और सुंदराकार से युक्त होती है। मजबूत होती हैं। (कयलीखभाइरेगसंठियनिव्वण सुकुमाल मउय कोमल अविरल समसहियवट्टपीवरनिरंतरोरू) इनकी दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तम्भ से भी अधिक सुन्दर संस्थानवाला होता है। निर्व्रण–घाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે "रोमरहियवट्टसंठिय–अजहण्ण–पसत्थ–लक्खण–अकोप्प–जघजुयला" તેમની બન્ને જંઘાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજઘન્ય-ઉત્તમ, સૌભાગ્ય ચિહ્નોથી યુક્ત અને अकोप्प સર્વપ્રિય હોય છે, "सुणिम्मिय–सुणिगूढ जाणुमसलपसत्थ सुबद्धसंधी" તેમની બન્ને જંઘાઓના સાંધાનો ભાગ સુડોળ, વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જંઘાઓ પુષ્ટ અને સુંદર આકારની હોય છે અને મજબૂત હોય છે "कयली खभाइ रेगसंठिय–निव्वण–सुकुमालमउय–कोमल–अविरल–समसहियवट्टपीवरनिरतरोरू" તેમની બન્ને જંઘાઓની ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુંદર આકારનો હોય છે, "निर्व्रण" ઘાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, अविरल

कोमला अविरलौ=परस्परमिलितौ समसंहितौ=उचितप्रमाणयुक्तौ वृत्तौ=वर्तुलौ पीवरौ=पीनौ निरन्तरौ=परस्परसम्बद्धौ ऊरू=जानूपरितनभागौ यासां तास्तथा 'अट्ठावयवीइ-पट्ट-संठियपसत्थ वित्थिण्णपिहुलसोणी' अष्टापदवीचिपट्टसंस्थितप्रशस्तविस्तीर्णपृथुलश्रोण्यः=अष्टापदस्य=द्यूतविशेषस्य वीचय इव वीचयः=तरङ्गाकृतिरेखा तद्युक्त यत् पट्ट-फलकः, तद्वत् संस्थिता = तत्संस्थानयुक्ता तदाकृतिका प्रशस्ता विस्तीर्णा पृथुला=विशाला श्रोणिः=कटिभागा यासां तास्तथा 'वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ' वदनायामप्रमाणाद्विगुणितविशालमांसलसुबद्धजघनवरधारिण्यः = वदनस्य = मुखस्य यः आयामः विस्तारस्तस्य यत् प्रमाणं तस्माद्विगुणितं चतुर्विंशत्यङ्गुलमित्यर्थः, विशालं=तथा मांसलं=पुष्टं सुबद्धं=शैथिल्यवर्जितं जघनवरं=वरजघनं=कटयाः पुरोभागं धारयन्ति यास्तास्तथा 'वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरीओ' वज्र

होता है। अत्यन्त कोमल होता है। अविरल-परस्पर मिला हुआ होता है। समसंहित-उचितप्रमाण से युक्त होता है। वृत-वर्तुल-गोल होता है। पीवर-पीन-पुष्ट होता है। निरन्तर परस्पर सम्बद्ध होता है। (अट्ठावयवीइपट्टसंठियपसत्थवित्थिण्णपिहुलसोणी) इनका कटिभाग द्यूतविशेष की वीचियों के समान तरङ्गाकृति रेखाओं से युक्त फलक के जैसे आकार वाला होता है, प्रशस्त होता है, विस्तीर्ण होता है तथा पृथुल विशाल होता है। (वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्ध जहणवरधारिणीओ) इनकी कटिका पुरोभाग-जघन प्रदेश-मुख के विस्तार के प्रमाण से द्विगुणित होता है-अर्थात्-चौवीस अंगुलका होता है, विशाल-पृथुल, एव मांसल-पुष्ट होता है। सुबद्ध-शैथिल्य विहीन- होता है। (वज्जविराइयपसत्थलच्छणनिरोदरिओ) इनका

પરસ્પર જોડાયેલ હોય છે, समसंहित-યોગ્ય પ્રમાણવાળો-પ્રમાણસરનો હોય છે, ગોળ હોય છે, पीवर-પુષ્ટ હોય છે, અને નિરન્તર-પરસ્પર સંબદ્ધ હોય છે "अट्ठावयवीइपट्ट-संठिय-पसत्थ-वित्थिण्ण-पिहुलसोणी" તેમનો કટિભાગ દ્યુત વિશેષની વીચિયોના સમાન તરંગાકૃતિ રેખાઓથી યુક્ત ફલકના જેવા આકારવાળો હોય છે, પ્રશસ્ત હોય છે, વિસ્તીર્ણ હોય છે તથા પૃથુલ-વિશાળ હોય છે "वयणायामप्पमाणदुगुणिय विसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ" તેમની કટિનો આગળનો ભાગ જઘન પ્રદેશ-મુખના વિસ્તાર કરતા બે ગણા માપનો હોય છે, એટલે કે ચોવીસ આંગળનો હોય છે, વિશાળ અને માંસલ પુષ્ટ હોય છે, સુબદ્ધ શૈથિલ્ય વિહીન હોય છે, "वज्जविराइय पसत्थ-लक्खणनिरोदरीयो" તેમના ઉદરનો ભાગ વજ્ર જેવો સુંદર, એટલે કે

मनोज्ञाः तलिनाः=प्रतलाः ताम्रा =ताम्रवर्णाः शुचयः=स्वच्छाः स्निग्धाः=चिक्कणाः नखा यासां तास्तथा। 'रोमरहियवट्टसंठियअजहण्णपसत्थलक्खणअकोप्पजघजुयला ' रोमरहितवृत्तसंस्थितअजघन्यप्रशस्तलक्षणाऽकोप्यजङ्घायुगलाः = रोमरहितं=निर्लोमकं वृत्तसंस्थितं=वर्तुलाकारम् अजघन्यम्=उत्तमं प्रशस्तलक्षणं=सौभाग्यचिह्नयुक्तम्, अकोप्यं=सर्वप्रियं च जङ्घायुगलं यासां तास्तथा, 'सुणिम्मिय-सुणिगूढजाणुमंसलपसत्थसुबद्धसंधी ' सुनिर्मितसुनिगूढजानुमांसलप्रशस्तसुबद्धसन्धयः=तत्र सुनिर्मितौ=शोभनसंस्थानविशिष्टौ सुनिगूढौ = दुर्लक्ष्यौ जानुनोः= जानुद्वयस्य मांसलौ=पुष्टौ प्रशस्तौ=सुन्दराकारौ सुबद्धौ=सुदृढौ सन्धी=सन्धान स्थाने यासां तास्तथा 'कयली-खंभाइरेग-संठिय-निव्वण-सुकुमाल-मउय कोमल अविरल - समसंहियवट्टपीवरनिरंतरोरू ' कदलीस्तम्भातिरेकसंस्थितनिर्व्रणसुकुमार मृदुककोमलाऽविरलसमसंहितवृत्तपीवरनिरन्तरोरवः = तत्र कदली स्तम्भाद तिरेकेण = अतिशयेन शोभनाऽऽरोहाऽवरोहसुपेशलसुकोमलत्वादिगुणप्रकर्षरूपेण संस्थितौ-सुन्दरसंस्थानवन्तौ निर्व्रणौ = निरुपद्रवौ सुकुमारमृदुककोमलौ-अत्यन्त

मनोज्ञ, तलिन-पतले, ताम्र-लाल, शुचि-स्वच्छ एव स्निग्ध-चिकने होते हैं। (रोमरहियवट्टसंठिय-अजहण्णपसत्थलक्खण-अकोप्पजघजुयला) इनका जघा युगल रोगरहित, वर्त्तुलाकार वाला अजघन्य-उत्तम सौभाग्यचिह्नों से युक्त एव अकोप्पसर्वप्रिय होता है (सुणिम्मियसु णिगूढजाणु मंसलपसत्थसुबद्धसंधी) इनकी दोनों जानु की संधियां शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती हैं। पुष्ट और सुदराकार से युक्त होती हैं। मजबूत होती हैं। (कयलीखंभाइरेगसंठियनिव्वण सुकुमाल मउय कोमल अविरल समसंहियवट्टपीवरनिरंतरोरू) इनकी दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तंभ से भी अधिक सुन्दर संस्थानवाला होता है। निर्व्रण-घाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે "रोमरहियवट्टसंठिय-अजहण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जघजुयला" તેમની બન્ને જંઘાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજઘન્ય-ઉત્તમ, સૌભાગ્ય ચિહ્નોથી યુક્ત અને અકોપ્ય સર્વપ્રિય હોય છે, "सुणिम्मिय-सुणिगूढ जाणुमंसलपसत्थ सुबद्धसंधी" તેમની બન્ને જંઘાઓના સાંધાનો ભાગ સુડોળ, વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જંઘાઓ પુષ્ટ અને સુંદર આકારની હોય છે અને મજબૂત હોય છે "कयली खंभाइ रेगसंठिय-निव्वण-सुकुमालम उय-कोमल-अविरल-समसंहियवट्टपीवरनिरंतरोरू" તેમની બન્ને જંઘાઓની ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુંદર આકારનો હોય છે, "निर्व्रण" ઘાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, अविरल

अकोसायतपउमगभीरविगडनाभीओ ' गङ्गावर्तकदक्षिणावर्त्ततरङ्गभङ्गुर - रवि - करणतरुणबोधितविकोशायमानपद्मगम्भीरविकटनाभिकाः, तत्र गङ्गावर्त्तकः =गङ्गानद्या जलभ्रमः, स च दक्षिणावर्त्त तरङ्गभङ्गुर'- तरङ्गैः भङ्गुरः वक्रश्च, तद्वत्, तथा रविकिरणैः=सूर्यकिरणै र्बोधित विकासित=विकासावस्थामाप्नुवदि-त्यर्थः, अतएव विकोशायमान मुकुलावस्था विमुञ्चत् यत् पद्म तद्वद् गम्भीरा विकटा-सुन्दरा च नाभिर्यासा तास्तथा। ' अणुब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी ' अनुद्भटप्रशस्तसुजातपीनकुक्षयः=अनुद्भटे=उद्भटरहितौ समौ, प्रशस्तौ सुजातौ सुसंस्थितौ पीनौ सुपुष्टौ कुक्षी=उदरोभयभागौ यासा तास्तथा ' सनयपासा ' सनतपार्श्वाः = पुष्टत्वादधोनमत्पार्श्वभागाः, ' सगयपासा ' सङ्गतपार्श्वाः=सुमि-लितपार्श्वभागाः, अतएव ' सुदरपासा ' सुन्दरपार्श्वाः = मनोहरपार्श्वभागाः, ' सुजायपासा सुजातपार्श्वाः=सुसंस्थितपार्श्वा, 'मियमाइयपीणरइयपासा' मित-

किरण तरुणबोधिय अकोसायनपउमगंभीरविगडनाभीओ) इनकी नाभि तरगों से वक्र बने हुए ऐसे दक्षिणावर्तवाले गगानदी के जलभ्रम-भँवर के समान होती है। तथा सूर्य की किरणों के संपर्क से अपनी मुकुलित अवस्था का परित्याग कर विकसित अवस्था को प्राप्त हुए पद्म के समान गभीर होती है और विकट बडी सुन्दर होती हैं। (अणु-ब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी) इनके उदर के दोनों पार्श्वभाग अनुद्भट-अनुल्वण-बराबर-एक से होते हैं। प्रशस्त-सुहावने होते हैं। सुजात-अच्छे सस्थानवाले होते हैं। पीन-पुष्ट होते हैं। (सनयपासा) तथा पुष्ट होने के कारण इनके दोनों तरफ के वे पार्श्वभाग नीचे की ओर झुके हुए रहते हैं। (सगयपासा) वे दोनों उनके पार्श्वभाग परस्पर में सगत-मिले रहते हैं। अतएव वे (सुदरपासा) बडे सुन्दर होते हैं। तथा (सुजायपासा) अच्छे सस्थान से युक्त कहे जाते हैं। (मियमा

भीरविगडनाभीओ " તેમની નાભિ તરંગોથી વક્ર બનેલ દક્ષિણાવર્ત વાળા ગંગા નદીના જલભ્રમ-વમળ જેવી હોય છે, અને સૂર્યના કિરણોના સંપર્કથી પોતાની બીડાયેલી અવસ્થા છોડીને વિકસિત થયેલા કમળના જેવી ગભીર અને વિકટ અત્યંત સુંદર હોય છે " अणुब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी " તેમના ઉદરની બાજુના બન્ને ભાગો (કુક્ષીઓ) એક સરખા હોય છે, પ્રશસ્ત, પુષ્ટ અને સુડોળ હોય છે " सनयपासा ' તે બન્ને કુક્ષી પુષ્ટ હોવાને કારણે નીચેની બાજુ ઝુકેલા રહે છે ' सगयपासा ' તેમની તે બન્ને કુક્ષીઓ પરસ્પરમાં સંગત- મળેલી હોય છે, તેથી તે " सुदरपासा " ઘણી સુંદર હોય છે તથા "सुजायपासा" સુઘટિત હોય છે "मियमाइयपीण-

विराजितप्रशस्तलक्षण निरोदर्यः=वज्रवद् विराजितं = मध्यमतनु प्रशस्तलक्षणं= शुभलक्षणविशिष्टम् अति प्रतलत्वान्निर्गतमिवोदरं यासां तास्तथा कृशोदर्य इत्यर्थः 'तिवलिवलियतणुनमियमज्झियाओ' त्रिवलिवलिततनुनमितमध्यिकाः = त्रिवलिभीः= उदरस्थरेखात्रयरूपाभिः वलितः= वलनयुक्तः२:= तनुनमित४: = किञ्चिदवनता ४, मध्य = मध्यभागः=कटिप्रदेशो यासां तास्तथा 'उज्जुयसमसहिय जच्चतणुकसिणनिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयसुविभत्तरोमराईओ' तत्र 'उज्जुय' ऋजुकानि 'समसहिय' समानि-तुल्यानि संहितानि = घनानि 'जच्च' जात्यानि-स्वाभाविकानि 'तणु' तनूनि=सूक्ष्माणि 'कसिण' कृष्णानि 'निद्ध' स्निग्धानि=अरूक्षाणि 'आदेज्ज' आदेयानि=श्लाघनीयानि 'लडह' इति सुन्दराणि 'सुकुमालमउय' सुकुमारमृदुकानि=अत्यन्त कोमलानि 'सुविभत्त' सुविभक्तानि=यथास्थानशोभितानि च यानि रोमाणि तेषां राजयः = पङ्क्तयो यासां तास्तथा 'गंगावत्तगदाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोहिय

उदरभाग वज्र के जैसा सुन्दर, अर्थात्-मध्य में पतला होता है। शुभ लक्षणों से विशिष्ट होता है। तथा अतिपतला कृश-होने के कारण अनुदर-निर्गत उदर जैसा होता है — अर्थात् ये कृशोदरी होती हैं। (तिवलिवलियतणुनमियमज्झियाओ) इन का मध्यभाग उदरप्रदेश त्रिवलियों से वलित-युक्त-होता है। और तनुनमित-कुछ झुका हुआ सा रहता है। (उज्जुयसमसहिय जच्चतणु कसिणनिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयसुविभत्तरोमराईओ) इन की रोमराजि ऋजु-सरल, सम एकसी सहित घनीभूत, जात्य स्वाभाविक, तनु-पतली, कृष्ण-काली, निद्ध-स्निग्ध, चिकनी-रूक्षतारहित, आदेय-श्लाघनीय, लडह-सुन्दर सुकुमारमृदुक-अत्यंत कोमल तथा सुविभक्त यथास्थान शोभित होती है। (गंगावत्तग-दाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रवि

મધ્યમા પાતળો હોય છે અને શુભ લક્ષણોવાળો હોય છે, તથા અતિશય પાતળો હોવાથી અનુદર-પેટ જ ન હોય તેવો હોય છે એટલે કે તે સ્ત્રીઓ કૃશોદરી હોય છે "तिवलिवलियतणुनमियमज्झियाओ" તેમનો મધ્યભાગ-ઉદર પ્રદેશ ત્રિવલિયો વાળો હોય છે, અને સહેજ ઝુકેલો રહે છે "उज्जुय समसहिय-जच्च-तणु-कसिण निद्ध-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय-सुविभत्तरोम-राईओ" તેમની રોમરાજિ ઋજુ-સરલ, સમ-એક સરખી, સહિત-ઘનીભૂત, જાત્ય-સ્વાભાવિક, તનુ-પાતળી, કાળી, સુવાળી, આદેય-વખાણવા યોગ્ય, લડહ સુંદર સુકુમાર, મૃદુક-અતિ કોમળ તથા સુવિભક્ત-યથાસ્થાન શોભિત હોય છે, ("गंगावत्तगदाहिणावत्त तरंगभंगुर [illegible]

भकोसायतपउमगंभीरविगडनाभीओ' गङ्गावर्तकदक्षिणावर्ततरङ्गभङ्गुर - रवि - करणतरुणबोधितविकोशायमानपद्मगम्भीरविकटनाभिकाः, तत्र गङ्गावर्तकः =गङ्गानद्याजलभ्रमः, स च दक्षिणावर्त्तः, तरङ्गभङ्गुरः- तरङ्गैः भङ्गुरः वक्रश्च, तद्वत्, तथा रविकिरणैः=सूर्यकिरणैः बोधित विकसित=विकासावस्था माप्नुवदि-त्यर्थः, अतएव विकोशायमान मुकुलावस्था विमुञ्चत् यत् पद्म तद्वद् गम्भीरा विकटा-सुन्दरा च नाभिर्यासां तास्तथा। 'अणुब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी' अनुद्भटप्रशस्तसुजातपीनकुक्षयः =अनुद्भटे=उद्भटरहितौ समौ, प्रशस्तौ सुजातौ सुसस्थिता पीनौ सुपुष्टौ कुक्षी=उदरोभयभागौ यासां तास्तथा 'सनयपासा' सनतपार्श्वाः = पुष्टत्वाद्धोनमत्पार्श्वभागाः, 'सगयपासा' सङ्गतपार्श्वाः=सुमिलितपार्श्वभागाः, अतएव 'सुदरपासा' सुन्दरपार्श्वाः = मनोहरपार्श्वभागाः, 'सुजायपासा' सुजातपार्श्वाः=सुसस्थितपार्श्वाः, 'मियमाइयपीणरइयपासा' मित-

किरण तरुणबोहिय अकोसायतपउमगंभीरविगडनाभीओ) इनकी नाभि तरंगों से वक्र बने हुए ऐसे दक्षिणावर्तवाले गगानदी के जलभ्रम-भँवर के समान होती है। तथा सूर्य की किरणों के सपर्क से अपनी मुकुलित अवस्था का परित्याग कर विकसित अवस्था को प्राप्त हुए पद्म के समान गभीर होती है और विकट बड़ी सुन्दर होती है। (अणु-ब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी) इनके उदर के दोनों पार्श्वभाग अनुद्भट-अनुल्वण-बराबर-एक से होते हैं। प्रशस्त-सुहावने होते हैं। सुजात-अच्छे सस्थानवाले होते हैं। पीन-पुष्ट होते हैं। (सनयपासा) तथा पुष्ट होने के कारण इनके दोनों तरफ के वे पार्श्वभाग नीचे की ओर झुके हुए रहते हैं। (सगयपासा) वे दोनों उनके पार्श्वभाग परस्पर में सगत-मिले रहते हैं। अतएव वे (सुदरपासा) बड़े सुन्दर होते हैं। तथा (सुजायपासा) अच्छे सस्थान से युक्त कहे जाते हैं। (मियमा

भीरविगडनाभीओ" तेमनी नाभि तरगोथी वक्र बनेल दक्षिणावर्त वाळा गगा नदीना जलभ्रम-वमळ जेवी होय छे, अने सूर्यना किरणोना सपर्कथी पोतानी बीडायेली अवस्था छोडीने विकसित थयेला कमळना जेवी गभीर अने विकटा अत्यत सुदर होय छे "अणुब्भडपसत्थसुजायपीणकुच्छी" तेमना उदरनी बाजुना बन्ने भागो (कुक्षीओ) एक सरखा होय छे, प्रशस्त, पुष्ट अने सुडोळ होय छे "सनयपासा' ते बन्ने कुक्षी पुष्ट होवाने कारणे नीचेनी बाजु झुकेला रहे छे 'सगयपासा' तेमनी ते बन्ने कुक्षीओ परस्परमा सगत- मळेली होय छे, तेथी ते "सुदरपासा" घणी सुदर होय छे तथा "सुजायपासा" सुघटित होय छे "मियमाइयपीण-

मात्रिक पीनरतिदपार्श्वाः-मितौ-मानोपेतौ मात्रिकौ परिमाणनम्पन्नौ पीनौ=सुपुष्टौ रतिदौ - रमणीयौ पार्श्वभागा यासां तास्तथा 'अकरण्डुयकणगरुयगनिम्मल सुजायनिरुवहयगायलट्ठी ' अकरण्डुकनककरुचकनिर्मलसुजातनिरुपहतगात्रयष्टयः तत्र अकरण्डुका = पुष्टत्वादनुपलक्ष्यपृष्ठपार्श्वास्थिकाः, तथा कनकरुचकनिर्मला = सुवर्ण समानकान्तिमतीसुजाता निरुपहता = रोगरहिता च गात्रयष्टि र्यासां तास्तथा ' कंचणकलसप्पमाणसमसहियलट्ठचूचुय आमेलग जमल जुयल वट्टियपओहराओ ' काञ्चनकलशप्रमाणसमसहितलष्टचूचुकाऽऽमेलक यमलयुगलवर्तितपयोधराः=ता काञ्चनकलशप्रमाणौ=उन्नतत्वेन वर्तुलत्वेन च सुवर्ण घटाकारौ समौ=तुल्यौ सहितौ=अनिपतितत्वेनाऽशिथिलौ लष्टचूचुकामेलकौ=मनोहरकृष्णस्तनमुखशिखरे यमलौ=सहोत्पन्नौ युगलौ=युग्मौ वर्तितौ=वर्तुलौ,पयोधरौ=स्तनौ यासां तास्तथा ' भुयगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसहियनामिय आदे-

इयपीणरइयपासा) इसीलिये उनके ये दोनों पार्श्वभाग मित-मान से युक्त, मात्रिक-प्रमाणसपन्न, पीन-सुपुष्ट एव रतिद-रमणीय लगते हैं। (अकरडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयगायलट्ठी) पुष्ट होने के कारण उनकी न तो पीठकी हड्डिया दिखती है और न दोनों पार्श्वभागों की। इनका शरीर सुवर्ण के समान कान्तिवाला एव रोगरहित होता है। (कचणकलसप्पमाण समसहितलट्ठचूचुय आमेलग जमलजुयलवट्टिय पयोहराओ) इनके दोनों स्तन उन्नत और गोल होने के कारण सुवर्ण-निर्मित घट के आकार जैसे होते हैं-कमती बढती नही। सहित अशिथिल होते हैं। नीचे की ओर झुके हुए नही रहते सामने उठे हुए रहते हैं। इनके दोनों चूचुक मनोहर एव अत्यत काले मुखवाले होते हैं। ये साथ २ उत्पन्न होते हे। गोल रहते हैं, (भुयग अणुपुव्वतणुय-

रइयपासा " ते કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિતમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ અને રતિદ-રમણીય લાગે છે "अकरडुयकणगरुयगनिम्मल सुजाय निरुवहयगायलट्ठी" તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી કાંતિવાળા અને નીરોગી હોય છે " कचण कलसप्पमाणसमसहितलट्ठचूचुयआमेलगजमलजुयलवट्टिय पयोहराओ ' તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, સોનાના ઘડા જેવા લાગે છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા નથી,, सहित-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને ડીંટીઓ મનોહર અને અત્યંત શ્યામ મુખવાળી હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના ? છે

जलउडवाहा ' भुजङ्गानुपूर्वतनुक गोपुच्छवृत्तसमसहितनमितादेयल्डहबाहवः = भुजङ्गवद् = सर्पवत् आनुपूर्वेण तनुका = क्रमशः कृशो तथा गोपुच्छवद् वृत्तौ = वर्तुलौ समसहिता=समत्वयुक्ता सुगुठिना च नमितौ=सुदीर्घलम्बमानौ आदेयौ= श्लाघनीयौ ' ल्डह ' इति सुन्दरा बाहू=भुजौ यासां तास्तथा ' तवनहा ' ताम्र-नखाः-रक्तवर्णनखसम्पन्नाः ' मसलग्गहत्था ' मासलाग्रहस्ता.-मासलौ-पुष्टौ अग्रहस्तौ-हस्ताग्रभागौ ' पोंचा ' इति प्रसिद्धौ यासां तास्तथा, तथा ' कोमल पीवरवरगुलीया ' कोमल पीवरवराङ्गुलिकाः, तेऽपि मरणधर्ममुपनमन्तीतिव-क्ष्यमाणेन सम्बन्धः ॥ सू-१२ ॥

पुनस्ताः कीदृश्यः ? इत्याह—' निद्धपाणि लेहा ' इत्यादि-

मूलम्—निद्धपाणिलेहा ससि-सूरसंखचक्कवर सोत्थिय विभत्त - सुरइय-पाणिलेहा पीणुण्णय कक्खवत्थिप्पएस

गोपुच्छवट्टसमसहियनामिय आदेज्जलउडवाहा) इनकी दोनो भुजाएँ सर्प की तरह क्रमशः कृशहुई होती है। तथा गाय की पूछ की तरह वर्तुल होती हैं। सम-एकसी तथा सहित-सगठित होती हैं। नमित-घुटनों तक लबी रहती हैं। आदेय-देखने मे प्रशसनीय एव वडी सुहा-वनी लगती हैं। (तवनहा) इनकी अगुलियों के नख लाल वर्ण वाले होते हैं। तथा (मसलग्गहत्था) इनका पोंचा मासल-पुष्ट होता है। तथा (कोमलपीवरवरगुलीया) इनकी हाथों की अगुलिया कोमल पीवर-पुष्ट एव वर-उत्तम होती है। ऐसी ये स्त्रिया भी कामभोग से अतृप्त ही मरणधर्म को प्राप्त करती हैं। ऐसा सबध आगे के वाक्य से जोड लेना चाहिये ॥ सू०१२ ॥

" भुयग-अणुपुव्व-तणुय गोपुच्छवट्ट-समसहिय-नामिय-आदेज्जल-उडवाहा " तेमनी બન્ને ભુજાઓ સર્પની જેમ ક્રમશ કૃશ થતી જાય છે, તે ભુજાઓ ગાયની પૂછડી જેવી વર્તુળ સમ-એક સરખી, તથા સહિત-સુગઠિત, ઘુટણો સુધી લાબી, અને આદેય-પ્રશસ્ત, અને શોભિતી લાગે છે " तवनहा " તેમની આગળીઓના નખ લાલ રગના હોય છે, તથા " मसलग्गहत्था " તેમના પોચા માસલ-પુષ્ટ હોય છે, તથા " कोमलपीवरवरगुलिया " તેમના હાથની આગળિયો પીવર-પુષ્ટ અને ઉત્તમ હોય છે એવી તે યુગલિક સ્ત્રીઓ પણ કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એવો સબધ આગળના વાક્યો સાથે સમજી લેવો ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

मात्रिक पीनरतिदपार्श्वाः-मितौ-मानोपेतौ मात्रिकौ परिमाणसम्पन्नौ पीनौ=सुपुष्टौ रतिदौ - रमणीयौ पार्श्वभागौ यासां तास्तथा 'अकरडुयकणगरुयगनिम्मल सुजायनिरुवहयगायलट्ठी' अकरण्डुकाकनकरुचकनिर्मलसुजातनिरुपहतगात्रयष्टयः तत्र अकरण्डुका = पुष्टत्वादनुपलक्ष्यपृष्ठपार्श्वास्थिका', तथा कनकरुचकनिर्मला = सुवर्ण समानकान्तिमतीसुजाता निरुपहता = रोगरहिता च गात्रयष्टि यासां तास्तथा ' कंचणकलसप्पमाणसमसंहियलट्ठचूचुय आमेलग जमल जुयल वट्टियपओहराओ ' काञ्चनकलशप्रमाणसमसंहितलष्टचूचुकाऽऽमेलक यमलयुगलवर्तितपयोधराः=ता काञ्चनकलशप्रमाणौ=उन्नतत्वेन वर्तुलत्वेन च सुवर्ण घटाकारौ समौ=तुल्यौ संहितौ=अनिपतितत्वेनाऽशिथिलौ लष्टचूचुकामेलकौ=मनोहरकृष्णस्तनमुखशिखरे यमलौ=सहोत्पन्नौ युगलौ=युग्मौ वर्तितौ=वर्तुलौ ,पयोधरौ= स्तनौ यासां तास्तथा ' भुयगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसंहियनामिय आदे-

इयपीणरइयपासा) इसीलिये उनके वे दोनों पार्श्वभाग मित-मान से युक्त, मात्रिक-प्रमाणसपन्न, पीन-सुपुष्ट एव रतिद-रमणीय लगते हैं। (अकरडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयगायलट्ठी) पुष्ट होने के कारण उनकी न तो पीठकी हड्डिया दिखती है और न दोनों पार्श्वभागों की। इनका शरीर सुवर्ण के समान कान्तिवाला एव रोगरहित होता है। (कंचणकलसप्पमाण समसंहितलट्ठचुचुय आमेलग जमलजुयलवट्टिय पयोहराओ) इनके दोनों स्तन उन्नत और गोल होने के कारण सुवर्ण-निर्मित घट के आकार जैसे होते है-कमती बढती नहीं। संहित अशिथिल होते है। नीचे की ओर झुके हुए नही रहते सामने उठे हुए रहते है। इनके दोनों चूचुक मनोहर एव अत्यत काले मुखवाले होतें हैं। ये साथ २ उत्पन्न होते हैं। गोल रहते हैं, (भुयग अणुपुव्वतणुय-

रइयपासा " તે કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિતમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ અને રતિદ-રમણીય લાગે છે "अक डुयकणगरुयगनिम्मल सुजाय निरुवहयगायलट्ठी" તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી કાંતિવાળા અને નીરોગી હોય છે " कंचण कलसप्पमाणसमसंहितलट्ठचूचुयआमेलगजमलजुयलवट्टिय पयोहराओ ' તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, સોનાના ઘડા જેવા લાગે છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા નથી,, સંહિત-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને ડીંટીઓ મનોહર અને અત્યંત શ્યામ મુખવાળી હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના હોય છે

वेया, णंदणवणविवरचारिणीओ ओव्वअच्छराओ उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ आच्छेर गयेच्छणिज्जाओ तिण्णिपलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता ताओ वि उवणमंति मरणधम्मं अतित्ता कामाणं ॥ सू०१३ ॥

टीका—'णिद्धपाणिलेहा' स्निग्धपाणिरेखाः = सुस्पष्टहस्तरेखाः 'ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा' शशि—सूर्य—शङ्ख—चक्रवर स्वस्तिकविभक्तसुरतिदपाणिरेखाः = चन्द्रसूर्यशङ्खचक्रदक्षिणावर्त्तस्वस्तिकलक्षणाः विभक्ताः=सुस्पष्टा. रतिदा.=सुखदाः पाणिरेखाः=हस्तरेखा यासा तास्तथा । 'पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला' पीनोन्नतकक्षवस्तिप्रदेशप्रतिपूर्णगलकपोलाः = पीनावुन्नतौ च कक्षौ = बाहुमूलौ वस्तिः = नाभ्यधोभाग स्तथा प्रतिपूर्णौ गलकपोलौ यासा तास्तथा 'चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा' चतुरङ्गुलसुप्रमाणकम्बुवरसदृशग्रीवा. = चतुरङ्गुलप्रमाणा कम्बुवर–

फिर वे कैसी होती हैं सो कहते हैं—'णिद्धपाणिलेहा' इत्यादि० ।

टीकार्थः—(णिद्धपाणिलेहा) इनके दोनों हाथों की रेखाएं स्निग्धसुस्पष्ट होती हैं। (ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा) उनके हाथों में शशि–चंद्र रवि, शंख, चक्र और दक्षिणावर्त्त स्वस्तिक, इन आकार की रेखाएँ होती हैं । और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं, सुखद होती हैं । (पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला) इनकी दोनों कक्षाएँ–बाहुमूल–पीन–पुष्ट और उन्नत होता है। वस्ती नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है । तथा गला और कपोल ये दोनों इनके प्रतिपूर्ण–भरे हुए रहते हैं । (चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवर–

તે યુગલિક સ્ત્રીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—" णिद्धपाणिलेहा " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ –"णिद्धपाणिलेहा" તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ–સુસ્પષ્ટ હોય છે " ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा " તેમના હાથોમા ચન્દ્ર,સૂર્ય,શખ,ચક્ર,દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોયછે તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે " पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला " તેમની બન્ને કૂખો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ–નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનુ ગળુ અને ગાલ પ્રતિ–પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે " चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा " તેમની ગ્રીવા

पडिपुण्णगल्लकवोल-चउरंगुल सुप्पमाण-कम्बुवरसरिस-गीवा मंसल - संठिय - पसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-पलंबकोंचियवराधरा सुंदरोतरुट्ठा दहिदगरय कुंदचंदवासंति मउल-अच्छिद्द - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल तालुजीहा कणवीरमउलकुडिल अब्भुण्णयउज्जुतुंगनासा सारयनवकमल -कुमुय--कुवलयदल--निगर--सरिस- लक्खण पसत्थ-निम्मल--कतनयणा--आनामिय-चावरुइल किण्हब्भ-राइसठिय--सगयायय---सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धभूमगा अल्लीण- पमाण - जुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठ—गडलेहा चउरगुल - विसाल - समनिडाला कोमुईरयणियर - विमल पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमगा अविकल सुसि णिद्ध दीह-सिरया छत्त २ ज्झय २ जुव३ थूभ४ दामाणि ५ कमडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अक १६ थाल १७ अकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइठ २० अमर २१ सिरिया-भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ बत्तीसलक्खणधराओ हसस-रिच्छगईओ कोइलमहुरागिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ, ववगयवली-पलिय-वगदुव्वण - वाहि दोभग्ग- सोयमुक्काओ-उच्चत्तेणय नरथोवूणमूसियाओ सिंगारागारचारुवेसा सुदर-थणजहणवयणकरचलणणयणा

वेया, णंदणवणविवरचारिणीओ ओव्वअच्छराओ उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ आच्छेरगयेच्छणिज्जाओ तिण्णिपलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता ताओ वि उवणमंति मरणधम्मं अतित्ता कामाणं ॥ सू०१३ ॥

टीका—'निद्धपाणिलेहा' स्निग्धपाणिरेखाः = सुस्पष्टहस्तरेखाः 'ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा' शशि—सूर्य—शङ्ख—चक्रवर स्वस्तिकविभक्तसुरचितपाणिरेखाः = चन्द्रसूर्यशङ्खचक्रदक्षिणावर्तस्वस्तिकलक्षणाः विभक्ताः=सुस्पष्टा रतिदाः=सुखदाः पाणिरेखाः=हस्तरेखा यासा तास्तथा । 'पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला' पीनोन्नतकक्षवस्तिप्रदेशप्रतिपूर्णगलकपोलाः = पीनावुन्नतौ च कक्षौ = बाहुमूलौ वस्तिः = नाभ्यधोभाग स्तथा प्रतिपूर्णा गलकपोलौ यासा तास्तथा 'चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवर सरिसगीवा' चतुरङ्गुलसुप्रमाणकम्बुवरसदृशग्रीवाः = चतुरङ्गुलप्रमाणा कम्बुवर—

फिर वे कैसी होती है सो कहते है—'निद्धपाणिलेहा' इत्यादि० ।

टीकार्थः—(निद्धपाणिलेहा) इनके दोनों हाथों की रेखाएँ स्निग्ध-सुस्पष्ट होती है। (ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा) उनके हाथों में शशि—चंद्र रवि, शख, चक्र और दक्षिणावर्त स्वस्तिक, इन आकार की रेखाएँ होती हैं । और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं, सुखद होती हैं । (पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला) इनकी दोनों कक्षाएँ-बाहुमूल-पीन-पुष्ट और उन्नत होता है। वस्ती नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है । तथा गला और कपोल ये दोनों इनके प्रतिपूर्ण-भरे हुए रहते है । (चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवर-

---

તે યુગલિક સ્ત્રીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—" निद्धपाणिलेहा " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ —"निद्धपाणिलेहा" તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ-સુસ્પષ્ટ હોય છે " ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा " તેમના હાથોમા ચંદ્ર,સૂર્ય,શંખ,ચક્ર,દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોયછે તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે " पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुण्णगलकवोला " તેમની બન્ને કૂખો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ–નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનુ ગળુ અને ગાલ પ્રતિ–પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે " चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा " તેમની ગ્રીવા

पडिपुण्णगल्लकवोल-चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवरसरिस-गीवा मंसल--संठिय -पसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-पलंबकोंचियवराधरा सुंदरोतरुट्ठा दहिदगरय कुंदचंदवासंति मउल-अछिद्द - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल तालुजीहा कणवीर मउलकुडिल अब्भुण्णयउज्जुतुंगनासा सारयनवकमल कुमुय--कुवलयदल--निगर--सरिस- लक्खण पसत्थ-निम्मल--कंतनयणा--आनामिय-चावरुइल किण्हब्भ-राइसंठिय--संगयायय---सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धभूमगा अल्लीण--पमाण- जुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठ-गंडलेहा चउरंगुल - विसाल - समनिडाला कोमुईरयणियर - विमल पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमंगा अविकल सुसि णिद्ध-दीह-सिरया छत्त २ ज्झय २ जुव३ थूभ४ दामाणि ५ कमंडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अंक १६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइट्ठ २० अमर २१ सिरिया-भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण २६ गिरिवर २७ वरायंस २८ सुललियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ बत्तीसलक्खणधराओ हंससरिच्छगईओ कोइलमहुरगिराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ, ववगयवली-पलिय-वंगदुवण्ण - वाहि दोभग्ग सोयमुक्काओ-उच्चत्तेणय नरथोवूणमूसियाओ सिंगारागारचारुवेसा सुंदर-थणजहणवयणकरचलणणयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोव-

=वत् रक्तोत्पलं = रक्त कमल तद्वत् रक्तपद्मपत्रवच्च सुकुमार तालुजिह्व यासा तास्तथा, ' कणवीरमउलकुडिल अब्भुण्णय उज्जुतुगनासा ' करवीरमुकुलाऽकुटिलाऽभ्युन्नतऋजुतुङ्गनासाः = करवीरमुकुल = कर्णिकारकलिका तद्वत् अकुटिला=अवक्रा अभ्युन्नता=अभितः उन्नता ऋज्वी=सरला तुङ्गा-मध्योन्नता च नासा= नासिका यासा तास्तथा ' सारयनवकमलकुमुयकुवलयदलनिगरसरिसलक्खणपसत्थ निम्मलकंतनयणा ' शारदनवकमल कुमुदकुवलयदलनिकरसदृशलक्षणप्रशस्तनिर्मलकान्तनयना = शारद = शरत्कालिक यत् कमल = सूर्यविकासिपद्म, कुमुद=चन्द्रविकासिपद्म कुवलयदल=नीलकमलपत्र च तेषा निकरः=समूहः तेन सदृशे लक्षणप्रशस्ते=प्रशस्तलक्षणोपेते निर्मले=उज्ज्वले कान्ते=मनोहरे च नयने यासा तास्तथा ' आनामिय चावरुइल किण्हब्भराइ सठिय सगया यय सुजाय-तणुकसिणनिद्धभूमगा ' आनामितचापरुचिरकृष्णाभ्रराजिसस्थितसगतसुजाततनुकृष्णस्निग्धभ्रुवः-आनामितौ=वक्रीकृतौ चापौ = धनुषी तद्वत् रुचिरे कृष्णाभ्रराजिसस्थिते=कृष्णोघरेखासदृशे सगते=समुचिते आयते=दीर्घे सुजाते स्वभा-

तालु और जिह्वा जिनका रक्त कमल के समान, तथा रक्तपद्मपत्र के समान सुकुमार होती है। (कणवीरमउलकुडिल अब्भुण्णयउज्जुतुग-नासा नासिका कर्णिकार कनेर-की कलिका-कली-के समान अकुटिल तथा अभ्युन्नत, ऋज्वी-सरल, और तुङ्ग-मध्य मे उन्नत होती है। (सारयनवकमल कुमुयकुवलयदलनिगरसरिसलक्खणपसत्थनिम्मलक-तनयणा । जिनके दोनो नयन शरदकालसबधि सूर्यविकासी कमल के तथा चन्द्र विकासी पद्म के, कुवलय दल के, नील कमल के पत्रके समूह जैसे होते है। प्रशस्त लक्षणो से युक्त, निर्मल-उज्ज्वल, एव कान्त-मनोहर होते हैं। (आनामियचावरुइल किण्हब्भराइसठियसग-यायसुजायतणुकसिणनिद्धभूमगा) जिनकी दोनो भोहे वक्रीकृत धनुष

કમળ જેવી તથા લાલ કમળ પત્ર જેવી સુકુમાર હોય છે, " कणवीरमउल-कुडिलअब्भु ण्णयउज्जुतु गनासा " તેમની નાસિકા કરેણુની કળી જેવી અકુ-ટિલ તથા ઉન્નત, ऋज्वी-સરળ અને तुङ्ग-મધ્યમા ઊંચી હોય છે, " सारय नवकमलकुमुयकुवलय - दलनिगर-सरिस - लक्खणपसत्थ-निम्मल- कतनयणा " જેમના બન્ને નયન શરદઋતુના સૂર્ય વિકસિત કમળ તથા ચન્દ્ર વિકસિત પદ્મની પાખડીઓ જેવા તથા નીલકમલના પત્રસમૂહ જેવા, પ્રશસ્ત લક્ષણો-વાળા, નિર્મળ-ઉજ્જવળ, અને મનોહર હોય છે " आनामियचावरुइल-किण्हब्भराइस ठियस गयाययसुजायतणुकसिण निद्धभूमगा " જેમની બન્ને ભ્રમરો વક્રીકત[illegible] જેવી મનોહર [illegible]

सदृशी=प्रधानशङ्खतुल्या च ग्रीवा यासां तास्तथा 'मसलसठियपसत्थहणुया' मांसलसंस्थितप्रशस्तहनुकाः = मांसलः-पुष्टः संस्थितः = सुसंस्थानयुक्तः आम्रफलाकार प्रशस्तः=सुन्दरो हनुः=ओष्ठाधोभागो यासां तास्तथा। 'दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलम्बकुंचिय वराधरा = दाडिमपुष्पप्रकाशपीनरप्रालम्बवराधराः=तत्र-दाडिमपुष्पप्रकाशः = दाडिमपुष्पसमप्रभो रक्त इत्यर्थः, पीवरः = पुष्ट प्रालम्बः = ईषल्लम्बमानः कुञ्चितः = वलित. वरः = प्रशस्तोऽधरो यासां तास्तथा' सुंदरोत्तरुट्ठा' सुन्दरोत्तरोष्ठा=सुन्दरउत्तरोष्ठउपरितन ओष्ठो यासां तास्तथा 'दधिदगरयकुंदचंदवासतिमउलअच्छिद्दविमलदसणा' दधिदकरजः कुन्दचन्द्र वासन्तीमुकुलाच्छिद्रविमलदशना =तत्र-दधिदकरजः = जलबिन्दुः कुन्दः= पुष्पविशेषः चन्द्र =प्रतीत वासन्तीमुकुलः=वासन्तीनामक पुष्प कुड्मलश्च इत्येतैः सदृशाः शुक्लाः अच्छिद्राः=अविरला सुमिलिता दशना =दन्ताः यासां तास्तथा 'रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमालतालुजीहा' रक्तोत्पलरक्तपद्मपत्रसुकुमारतालुजिह्वाः

सरिसगीवा) इनकी गर्दन चार अंगुल की तथा प्रधान-उत्तम शंख के जैसी होती है। (मसलसठियपसत्थहणुया) इनके ओष्ठ का अधोभाग रूप दाढी मांसल-मजबूत पुष्ट, संस्थित-आम्र फल के जैसी सुन्दर आकार वाली और प्रशस्त-सुहावनी होती है। (दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचियवराधरा) इनका अधरोष्ठ दाडिम-अनार के पुष्प के समान लाल वर्ण वाला होता है। पीवर-मांसादि से भरा हुआ होने के कारण पुष्ट होता है। तथा प्रालम्ब-कुछ २ लम्बासा रहता है। कुञ्चित-वलित एवं प्रशस्त होता है। (सुंदरोत्तरुट्ठा) जिनके ऊपर का ओष्ठ सुन्दर होता है। (दधिदगरयकुंदचंदवासतिमउलअच्छिद्दविमलदसणा) इनके निर्मल दांत-दही, जलबिन्दु, कुंदपुष्प, चन्द्र, वासन्ती पुष्पकी कली, इनके जैसे शुभ्र होते हैं। विरले नहीं होते हैं किन्तु अविरल-परस्पर में मिले हुए रहते हैं। (रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमालतालुजीहा)

ચાર આંગળની તથા ઉત્તમ શંખ જેવી હોય છે "मसलसठियपसत्थहणुया" તેમના હોઠના નીચેના ભાગરૂપ દાઢી માંસલ મજબૂત, સંસ્થિત-આમ્રફળના જેવા સુંદર આકારવાળી અને પ્રશસ્ત સુંદર હોય છે "दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचियवराधरा" જેમનો અધરોષ્ઠ દાડમના ફૂલ જેવો લાલ રંગનો, પુષ્ટ, તથા સહેજ લંબાયેલો રહે છે તે અધરોષ્ઠ કુંચિત-વળેલો અને ઉત્તમ હોય છે "सुंदरोत्तरुट्ठा" તેમનો ઉપરનો હોઠ સુંદર હોય છે "दधिदगरयकुंदचंदवासतिमउलअच्छिद्दविमलदसणा" તેમના નિર્મળ દાંત દહીં, જળબિંદુ, કુંદપુષ્પ, ચન્દ્ર અને વાસન્તી પુષ્પની કળી, જેવા સફેદ હોય છે તે દાંત છૂટા છૂટા હોતાં નથી પણ પરસ્પરમાં મળીને આવેલા હોય છે "रत्तुप्पलरत्तपउमपत्त सुकुमालतालुजीहा" તેમનું તાળવું અને જીભ લાલ

श्याः कृष्णा इत्यर्थः सुस्निग्धाः=सुकोमलाः दीर्घाश्च शिरोजाः=केशा यासां तास्तथा ' छत्त १ ज्झय २ जूव ३ थूभ ४ दामणि ५ कमडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मगर १५ अंक १६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइट्ठ २० अमर २१ सिरियाभिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदहिवर २५ पवरभवण २६ गिरिवर २७ वरायंस २८ सुललियगय २९ उसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ बत्तीसलक्खणधराओ ' छत्र १ ध्वज २ यूप ३ स्तूप ४ दामनी ५ कमण्डलु ६ कलश ७ वापी ८ स्वस्तिक ९ पताका १० यव ११ मत्स्य १२ कूर्म १३ रथवर १४ मकरा १५ ऽङ्क १६ स्थाल १७ ऽङ्कुशा १८ ऽष्टापद १९ सुप्रतिष्ठा २० ऽमर २१ श्रीकाभिषेक २२ तोरण २३ मेदिनी २४ दधिवर २५ प्रवरभवन २६ गिरिवर २७ वरादर्श २८ सुललितगज २९ वृषभ ३० सिंह ३१ चामर ३२ प्रशस्त द्वात्रिंशल्लक्षणधरा', तत्र—' छत्त ' छत्रं १ ' ज्झय ' ध्वजः २ ' जूव ' यूपः=यज्ञस्तम्भविशेषः ३ ' थूभ ' स्तूपः= ' चौतरा ' इति भाषा प्रसिद्धः४, ' दामिणि ' दामनी = रज्जुः—तदाकाररेखेत्यर्थः ५ कमण्डलुः = प्रसिद्धः ६,

दीर्घसिरया) इनके मस्तक के केश बिलकुल काले होते हैं। सुस्निग्ध—सुकोमल एवं दीर्घ—लंबे होते हैं। (छत्त १ ज्झय २ जूव ३ थूभ ४ दामणि ५ कमडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्भ १३ रहवर १४ मगर १५ अंक १६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइट्ठ २० अमर २१ सिरियाभिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदहिवर २५ पवरभवण २६ गिरि वर २७ वरायंस २८ सुललियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चामर पसत्थ बत्तीसलक्खणधराओ) ये इन प्रशस्त बत्तीस ३२ लक्षणो को धारण करती हैं—छत्र १—ध्वजा २, यूप—स्तंभ ३, स्तूप—चोतरा ४, दामनी—रस्सी ५, कमण्डलु

વાળ તદ્દન કાળા, સુકોમળ અને લાંબા હોય છે " छत्त १ ज्झय २ जूव ३ थूभ ४ दामणि ५ कमडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुभ १३ रहवर १४ मगर १५ अक १६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९— सुपइट्ठ २० अमर २१ सिरियाभिसेय२२ तोरण २३ मेइणि २४ उदहिवर २५— पवरभवण २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ पसत्थबत्तीसलक्खणधराओ " તે યુગલિક લલનાઓ આ પ્રમાણે ૩૨ (બત્રીસ) ઉત્તમ લક્ષણો ધારણ કરે છે—

(૧) છત્ર (૨) ધ્વજા (૩) યૂપ-સ્તંભ (૪) સ્તૂપ-ચબૂતરો (૫) દામની દોરડું (૬) કમંડળ (૭) કળશ (૮) વાવી (૯) સ્વસ્તિક (૧૦) પતાકા

यतः सुन्दरे तनू=प्रतले कृष्णे=कृष्णवर्णे स्निग्धे=चिक्कणे भ्रुवौ यासां तास्तथा। 'अल्लीणपमाणजुत्तसवणा' आलीनप्रमाणयुक्तश्रवणाः = आलीनौ=स्तब्धौ प्रमाणयुक्तौ=समुचितप्रमाणौ श्रवणौ=कर्णौ यासां तास्तथा एतावदेव न? किन्तु "सुस्सवणा' सुश्रवणाः = शब्दग्रहणशक्तिसम्पन्नयुक्ताः, 'पीणमट्ठगंडलेहा' पीनमृष्ट गण्डरेखाः=पीना=पुष्टामृष्टा=मसृणा सुकुमारा गण्डरेखा=कपोल पाली यासां तास्तथा 'चउरंगुलविसालसमनिडाला' चतुरङ्गुलविशालसमल्लाटा = चतुरङ्गुल=चतुरङ्गुलप्रमाण विशाल=विस्तीर्णं सम=समतल ललाट यासां तास्तथा 'कोमुई रयनियरविमलपडिपुण्णसोम्मवयणा' कौमुदी रजनीकर विमलप्रतिपूर्ण सौम्यवदनाः=कौमुदी=कार्तिकी पूर्णिमा तस्या यो रजनीकर =चन्द्र तद्वत् विमल=निर्मल प्रतिपूर्णं सौम्य=सुभग वदन यासां तास्तथा कार्तिकीपूर्णचन्द्रवदनाः, 'छत्तुण्णयउत्तमंगा' छत्रोन्नतोत्तमाङ्गा' छत्रवत्समुच्छ्रितमस्तकाः 'अकविलसुसिणिद्धदीहसिरिया' अकपिलसुस्निग्धदीर्घशिरोजाः = अकपिला = अपि

के समान रुचिर, कृष्णमेघराजि के समान, संस्थित, संगत-उचित आकारयुक्त, आयत-दीर्घ, सुजात-स्वभावतः सुन्दर, तनु-पतली, कृष्ण-कृष्णवर्णोपेत, और स्निग्ध-चिकनी होती हैं। (अल्लीणपमाण-जुत्तसवणा) आलीण-स्तब्ध एव समुचित प्रमाण से युक्त इनके दोनों कान होते हैं। (सुस्सवणा) तथा ये दोनों ही कान शब्दग्रहण करने की शक्ति से युक्त होते हैं। (पीणमट्ठगंडलेहा) इनकी कपोल-पाली पीन-पुष्ट और मृष्ट—सुकुमार होती है। (चउरंगुलविसाल सम-निडाला) इनका विस्तीर्ण ललाट चार अंगुल प्रमाणवाला होता है तथा सम-समतल होता है। (कोमुईरयनियर विमल पडिपुण्ण सोम्मवयणा) इनका मुख कार्तिकी पूर्णिमा के चंद्रमंडल के समान निर्मल तथा पूर्ण होता है। सुभग होता है। (छत्तुण्णयउत्तमंगा) समुच्छ्रित विस्तारित छत्र के समान इनका मस्तक उन्नत होता है! (अकविल सुसिणिद्ध-

સંગત-સુડોળ, આયત-લાંબી, સુજાત-કુદરતી રીતે જ સુંદર, તનુ-પાતળી, કાળા રંગની અને સ્નિગ્ધ-મુલાયમ હોય છે "अल्लीणपमाणजुत्तसवणा" તેમના બન્ને કાન સ્તબ્ધ અને સપ્રમાણ હોય છે "सुस्सवणा" તે બન્ને કાનની શ્રવણશક્તિ ઘણી સરસ હોય છે "पीणमट्ठगंडलेहा" તેમના ગાલ પુષ્ટ અને સુકુમાર હોય છે "चउरंगुलविसालसमनिडाला" તેમનું વિશાળ લલાટ ચાર આંગળ પહોળું અને સમતલ હોય છે "कोमुई-रय-नियरविमल पडिपुण्णसोम्मवयणा" તેમનું મુખ કાર્તકી પૂનમના ચન્દ્રમંડળ જેવું નિર્મળ તથા પૂર્ણ હોય છે "छत्तुण्णयउत्तमंगा" વિસ્તીર્ણ છત્ર સમાન ઉન્નત તેમનું મસ્તક હોય છે "अकविलसुसिणिद्धदीहसिरया" તેમના માથા પરના

वगदुव्वणवाहिदोभग्गसोयमुक्काओ ' व्यपगतवलीपलित व्यङ्गदुर्वर्णव्याधि-दौर्भाग्यशोकमुक्ताः=व्यपगता=नष्टा वली = चर्मशिथिलता तथा पलित=केशशुक्लत्व व्यङ्ग=अङ्गविकलता दुर्वर्ण=वैरूप्य व्याधिः शरीरव्यथा, दौर्भाग्य=वैधव्य शोक = खेदश्च एतैर्मुक्ताः = रहिता यास्तास्तथा ' उच्चत्तेण य नरथोवूणमूसियाओ ' उच्चत्वेन च नरस्तोकेनोच्छ्रिताः=उच्चत्वेन शरीरोच्चत्वेन च नरेभ्यः=पुरुषेभ्यः स्तोकेन=किञ्चिन्न्यून यथास्यात्तथा उच्छ्रिताः=उच्चायास्ताः तथा-पुरुषप्रमाणात् किञ्चिदल्पप्रमाणोन्नता', ' सिंगाराऽऽगारचारुवेसा ' शृङ्गाराऽऽगारचारुवेषा , शृङ्गारस्य=शृङ्गाररसस्य आगारमिव=गृहमिव चारु =सुन्दरः वेषः=वस्त्रादि-विभूषा यासा तास्तथा ' सुंदर थणजहणवयणकरचलणणयणा ' सुन्दरस्तन-जघनवदनकरचरणनयनाः = सुन्दराणि स्तन-जघन-वदन-कर-चरण - नयनानि यासां तास्तथा ' लावण्णरूवजोव्वणगुणोववेया ' लावण्यरूपयौवनगुणोपेताः= लावण्य = शरीरसौन्दर्यवैशिष्ट्य निखिलावयवातिरेकिस्वरूपशोभाविशेषः रूप

(ववगयवलीपलियवगदुव्वणवाहिदोभग्ग सोयमुक्काओ) इनकी चमडीमें शिथिलता कहीं नहीआती है । बालों में सफेदी नहीं आती है। इनका कोई भी अग विकल नहीं होता है । विरूपता इनमें बिल्कुल नही होती है । व्याधि का इनमें अभाव होता है । वैधव्य रूप दौर्भाग्य से रहित होती हैं । शोक और खेद से वर्जित होती हैं । (उच्चत्तेण य नरथोवूण-मूसियाओ) ऊँचाई में ये मनुष्यों से कुछ ही कम होती हैं । (सिंगारा गारचारुवेसा) शृंगाररस के घर जैसा इनका सुन्दर वेष-वस्त्रादि वेष-भूषा होता है । (सुन्दर थणजहणवयणकरचलणणयणा) इनके स्तन, जघन, वदन, कर, चरण, और नयन सुन्दर होते हैं । (लावण्णरूवजो-व्वणगुणोववेया) इनमें लावण्य, रूप, यौवन एव गुण असाधारण होते हैं।

दुव्वणवाहिदोभग्गसोयमुक्काओ " तेमनी चामडीमा शिथिलता आवती नथी, वाળ सफेद थता नथी, तेमने कोई पण अगे खोड होती नथी, तेमनामा विरूपता बिलकुल होती नथी, व्याधि तेमने पीडती नथी कारण के तेओ नीरोगी होय छे, तेओ वैधव्य रूप दुर्भाग्यथी रहित होय छे अने शोक अने खेदथी रहित होय छे " उच्चत्तेण य नरथोवूण मूसियाओ " मनुष्यो करता तेमनी ऊंचाई थोडी होय छे " सिंगारागारचारुवेसा " तेमनी वेषभूषा शृगार रसना घर जेवी होय छे " सुदरथणजहणवयणकरचलण-णयणा " तेमना स्तन, जघा, वदन, कर, चरण, अने नयन सुदर होय छे. " लावण्णरूवजोव्वणगुणोववेया " तेमनामा लावण्य, रूप, यौवन अने गुण

' कलस ' कलशः= घटः ७ ' वावि ' वापी ८ ' सोत्थिय ' स्वस्तीकः९ 'पडाग' पताका १० ' जव ' यवः ११ ' मच्छ ' मत्स्यः १२ ' कुम्म ' कूर्मः-कच्छपः १३, रथवरः प्रधानरथ १४ ' मगर ' मकरः १५, अङ्कः=रत्नाकरचिह्नविशेष १६, ' थाल ' स्थालः=पात्रविशेष' १७ अङ्कुशः १८ ' अट्ठावय ' अष्टापद= द्यूतफलक १९ ' सुपइट्ठ ' सुप्रतिष्ठक=स्थापनक पात्रविशेषः २० अमरः=देव-विशेषः २१ ' सिरियाभिसेय ' श्रीकाभिषेकः २२ तोरण २३ ' मेइणि ' मेदिनी=पृथ्वी २४ उदधिवरः २५ ' पवरभवण ' प्रवरभवन २६ गिरिवरः २७ ' वरायस ' वरादर्शः=प्रशस्तदर्पण. २८ सुललियगय ' सुललितगज' २९ 'वसभ' वृषभ ३०, ' सीह ' सिंह ३१ चामर ३२ च इत्येतानि प्रशस्तानि द्वात्रिंशल्ल क्षणानि तेषा धरा यास्तास्तथाः, ' हंससरिच्छगईओ ' हंसमदृशगतयः, ' कोइल-महुरगिराओ ' कोकिलमधुरगिर.=कोकिलमधुरस्वराः, 'कंता' कान्ताः=मनोज्ञाः, ' सव्वस्स अणुमयाओ ' सर्वस्याऽनुमता – सर्वजनप्रियाः ' ववगयवलीपलिय-

६, कलश ७, वापी ८, स्वस्तिक ९, पताका, १०, यव, ११, मत्स्य १२, कूर्म-कच्छप १३, रथवर-प्रधानरथ १४, मकर १५, अक-रत्न के आकार जैसा चिह्न १६, स्थाल-थाल १७, अकुश १८, अष्टापद-धूतफलक १९, सुप्रतिष्ठक-ठोंणा २०, अमरदेवविशेष २१, अभिषेक करती हुई लक्ष्मी २२, तोरण २३, मेदिनी-पृथ्वी २४, उदधिवर-समुद्र २५, उत्तमभवन २६, उत्तमपर्वत २७, सुन्दर दर्पण २८, सुललितगज २९, वृषभ-बैल ३०, सिंह ३१, और चामर ३१। (हंससरिच्छगई) इनकी गति-चाल-हँस की गति जैसी होती है। (कोइलमहुरगिराओ) उनकी वाणी-कोयल की वाणी जैसी मधुर होती है। (कंता) ये अत्यत मनोज्ञ होती हैं। (सव्वस्स अणुमयाओ) समस्त जनों को प्रिय लगती है।

(૧૧) યવ (૧૨) મત્સ્ય, (૧૩) કૂર્મ-કાચબો, (૧૪) ઉત્તમ રથ (૧૫) મગર (૧૬) અંક-રત્નના આકારનું ચિહ્ન (૧૭) થાળ (૧૮) અંકુશ (૧૯) અષ્ટાપદ-દ્યુતફલક, (૨૦) સુપ્રતિષ્ઠ-ઠોણા (૨૧) અમર-દેવવિશેષ (૨૨) અભિષેક કરતી લક્ષ્મી (૨૩) તોરણ (૨૪) મેદિની-પૃથ્વી, (૨૫) ઉદધિવર-સમુદ્ર (૨૬) ઉત્તમ ભવન (૨૭) ઉત્તમ પર્વત (૨૮) સુંદર દર્પણ (૨૯) સુંદર ગજ (૩૦) વૃષભ (૩૧) સિંહ અને (૩૨) ચામર "हंससरिच्छगई" તેમની ચાલ હંસની ચાલ જેવી હોય છે, "कोइलमहुरगिराओ" તેમની વાણી કોયલની વાણી જેવી મીઠી હોય છે, "कंता" તે અત્યંત મનોહર હોય છે, અને "सव्वस्स अणुमयाओ" સઘળા લોકોને પ્રિય લાગે છે "ववगयवलीपलियवग

अपि, 'अवितित्ता कामाण' अतृप्ता कामानाम्=कामोपभोगेष्वतृप्ता एव 'उवणमतिमरणधम्म' उपनमन्ति मरणधर्म–म्रियन्त इत्यर्थः ॥ सू०१३ ॥

एतावताऽब्रह्मारव्यचतुर्थाधर्मद्वारस्य 'ये च कुर्वन्ति' इति पञ्चममन्तद्वारं निरुपितम्। साम्प्रत पूर्वमनुक्त 'यथाकृतम्' इति तृतीयमन्तर्द्वार 'यत्फल ददाति' इति चतुर्थमन्तर्द्वार च वर्णयन्नाह—'मेहुण' इत्यादि—

मूलम्—मेहुणसन्नास पगिद्धाय मोहभरिया सत्थेहि हणंति एक्कमेक्क विसय–विस–उदीरएहि अवरे परदारेहि हम्मति विसुणिया धमनासं सयणविप्पणासं च पाउणति परस्स दाराओ जे अविरया। मेहुणसण्णा सपगिद्धाय मोहभरिया अस्साहत्थी गवाय महिसा मिगाय मारिति एक्कमेक्क। मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्झति मित्ताणि खिप्प भवति सत्तू। समयधम्मे गणे य भिदाति पारदारी धम्मगुणरयाय बभयारी खणेग उल्लोट्टति चरित्ताओ। जसमता सुव्वया य पावति अजसकित्ति। रोगत्ता वाहिया वड्ढति रोयवाही, दुवेय लोए दुराराहगा भवति इहलोए चेव परलोए परस्स दाराओ जे अविरया। तहेव केइ परस्स दार गवेसमाणा गहिया य हयायवद्धारुद्धा य एव जावगच्छति विउल मोहाभिभूयसण्णा। मेहुण मूला य सव्वति तत्थ तत्थ वत्तपुव्वा सगामा जणक्खयकरा

निवासिनी स्त्रियां कामसुखों को भोगती रहती हैं। परन्तु फिर भी उनसे ये तृप्त नहीं होती है। इस तरह कामभोगो में अतृप्त बनकर ही ये अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं ॥ सू०१३ ॥

निवासिनी ललनाओ कामभोगो भोगव्या करे छे, छता पण तेमनाथी तेओ तृप्ति अनुभवति नथी आ प्रमाणे कामभोगथी अतृप्त रहीने ज तेओ मृत्यु पामे छे ॥ सू. १३ ॥

= नासिका नयनाद्याकारः यौवन = तरुणावस्था, गुणाः=औदार्यमाधुर्यसौकुमार्यादयस्तैरुपेताः = युक्ता या स्तास्तथा, 'णंदणवणविवरचारिणीओव्व अच्छराओ' नन्दनवनविवरचारिण्य इवाप्सरसः = नन्दनवनप्रदेशसञ्चरणशीला अप्सरस इव, उत्तरकुरुमाणसच्छराओ 'उत्तरकुरुमानुषाप्सरसः = उत्तरकुरुषु मानुषस्वरूपा अप्सरसः 'अच्छरगपेच्छणिज्जाओ' आश्चर्य प्रेक्षणीयाः=अद्भुतरूपत्वादाश्चर्येण प्रेक्षणीयाः, तिण्णि पलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता ' त्रीणि पल्योपमानि परमायु' पालयित्वा ' ता अपि – उत्तरकुरुदेवकुरुवनविवरनिवासी नरगणप्रमदा

शारीरिक विशिष्ट सौन्दर्य का नाम लावण्य है। यह लावण्य समस्त अवयवों के सौन्दर्य से भी परे स्वरूप की शोभा विशेष रूप होता है। नासिका, नयन, आदि की समुचित जो आकार रचना है वह रूप है। तरुण अवस्था का नाम यौवन है। औदार्य, माधुर्य सौकुमार्य आदि का नाम गुण है। (णदणवणविवरचारिणीओव्व अच्छराओ उत्तरकुरुमाण सच्छराओ) नदनवन में विचरनेवाली अप्सराओं के समान ये उत्तर-कुरु की भूमि में मनुष्य रूपिणी अप्सराएँ हैं। (अच्छरगपेच्छणिज्जाओ) अद्भुतरूप शालिनी होने के कारण ये आश्चर्य से देखने योग्य होती हैं, अर्थात्—इनको देखने से मनुष्य को बहुत अधिक आश्चर्य होता है। कारण इनकी रूप सपत्ति ऐसी अद्भुत होती है जो मनुष्यों मे और जगह नहीं पाइ जाती है। (तिण्णिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता ताओ वि अवितित्ता कामाण उवणमति मरणधम्म) इनकी उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य की होती है। इतने कालतक ये देवकुरु उत्तरकुरु

અસાધારણ હોય છે શારિરિક વિશિષ્ટ સૌંદર્યને લાવણ્ય કહે છે તે લાવણ્ય સમસ્ત અવયવોના સૌંદર્ય ઉપરાંત સ્વરૂપની વિશિષ્ટ શોભારૂપ હોય છે નાસિકા, નયન આદિની સુડોળ આકાર વાળી રચનાને રૂપ કહે છે તરુણ અવસ્થાને યૌવન કહે છે ઉદારતા, માધુર્ય, કોમળતા આદિ ગુણ ગણાય છે " णदणवणविवरचारिणीओव्व अच्छराओ उत्तरकुरुमाणसच्छराओ " નંદન વનમા વિચરતી અપ્સરાઓ જેવી તે ઉત્તરકુરુની ભૂમિમા મનુષ્યરૂપિણી અપ્સરાઓ છે " अच्छरगपेच्छणिज्जाओ " અદ્ભુત સૌંદર્યવાળી હોવાને કારણે તે સ્ત્રીઓ આશ્ચર્યથી જોવા જેવી હોય છે, એટલે કે તેમને જોઈને મનુષ્યોને અત્યંત આશ્ચર્ય થાય છે કારણ કે તેનનુ રૂપ એટલુ બધુ અપૂર્વ હોય છે કે તે રૂપ મનુષ્યોમા કોઇ પણ જગ્યાએ જોવા મળતુ નથી " तिण्णिपलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता ताओ वि अवितित्ता कामाण उवणमति मरणधम्म " તેમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યની હોય છે એટલા સમય સુધી તે દેવકુરુ

शब्दादि विषयविषयस्य प्रवर्तकैः 'सत्थेहिं' शस्त्रैः 'एगमेगक' एकैक = प्रत्येकं 'हणंति' घ्नन्ति। 'अवरे' अपरे=केचित् 'परदारेहिं' परदारै'=परस्त्रीभिः 'हम्मति' हन्यन्ते=मार्यन्ते, 'परदारै'-रित्यत्र कर्त्तरि तृतीया। यद्वा हेतौ तृतीया-परदारा-निमित्तीकृत्य अन्यैर्बलवद्भि पारदारिकैर्हन्यन्ते। 'विसुणिया' विश्रुताः=पार-दारिकत्वेन प्रसिद्धाः सन्तः केचित् 'धणणास' धननाश = 'सयणविप्पणासं' स्वजनविप्रणाश=स्वजनवियोगं 'पाउणंति' प्राप्नुवन्ति, अय भाव -राजपुरुषा स्तत्रागत्य परदारिकाणां धन गृह्णन्ति, परदारिक यद्वा दण्डनार्थं दण्डस्थान नयन्ति च। यद्वा-परदारप्रसादनार्थं स्वकीयं पित्राद्युपार्जित धन परदारेभ्य प्रय-

---

(मोहभरिया) उस मैथुनरूप कर्म के मोहसे भरे हुए होने के कारण, अथवा-विवेक से विकल बने रहने के कारण (विसयविस उदीरएहिं-सत्थेहिं एक्कमेक्क हणंति) शब्दादि विषयरूप विषय के प्रवर्त्तक शस्त्रों से आपस में एक दूसरे को मार डालते हैं। (अवरे) कितनेक प्राणी (परदारेहिं हम्मति) परस्त्रियो द्वारा मार दिये जाते है। अथवा परस्त्री को निमित्त करके अन्य बलशाली पारदारिक पुरुषों द्वारा मैथुनसज्ञा मे आसक्त मतिवाले व्यक्ति मार दिये जाते हैं। (विसुणिया) पारदारिक परस्त्री-लम्पट रूप से प्रसिद्ध हुए कितनेक मनुष्य (धणणास) अपने धनके विनाश को और (सयणविप्पणास) आत्मीयजनो के विनाशको (पाउणंति) प्राप्त करते हैं। तात्पर्य इसका यह हे की परस्त्रीलपट व्यक्ति के पास राजपुरुष आकर उसके धन को छीन लेते है। और बाधकर उसे दड देने के निमित्त कारागार मे ले जाते है। अथवा-परस्त्री को प्रसन्न करने के लिये पारदारिक मनुष्य अपने पिता आदि द्वारा उपार्जित

હોવાને કારણે અથવા વિવેક રહિત બની જવાને કારણે 'विसयविसउदीरएहिं सत्थेहिं एक्कमेक्क हणंति" શબ્દાદિ વિષયરૂપ વિષના પ્રચારક શસ્ત્રો વડે અંદરો અંદર લડીને એક બીજાને મારી નાખે છે "अवरे' કેટલાક લોકો "परदारेहिं हम्मति" પરસ્ત્રીઓ દ્વારા હણાય છે અથવા પરસ્ત્રીને કારણે બીજા બળવાન પરસ્ત્રીગમન કરનારા પુરૂષો દ્વારા મૈથુન સેવનમા આસક્ત પુરુષોને મારી નાખવામા આવે છે "विसुणिया" પરસ્ત્રી લંપટ ગણાતા કેટલાક પુરુષો "धणणास" પોતાના ધનનો નાશ અને "सयण विप्पणास" આત્મીય જનોનો નાશ "पाउणंति" નોતરે છે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે પરસ્ત્રીગામી પુરુષની પાસેથી રાજપુરુષો તેમનુ ધન જપ્ત કરે છે, અને તેને બાંધીને શિક્ષા કરવાને માટે કેદખાનામા લઇ જાય છે અથવા પરસ્ત્રીને રીઝ વવા માટે પરસ્ત્રીગામી પુરુષ પોતાના પિતા આદિ દ્વારા ઉપાર્જિત ધન તે

सीयाए दोवईएयकए, रूप्पिणीए पउमावईए ताराए कंचणाए रत्तसुभद्दाए अहिन्नियाए सुवण्णगुलियाए किन्नरीए य सुरूव विज्जुमईए रोहिणीए य, अण्णे य एवमाइया बहवो महिलाकए सुव्वंति अइक्कंतासंगामा गाम धम्ममूला। अबंभसेविणो इहलोए तावनट्ठा परलोए य नट्ठा महया मोहतिमिरधयारे घोरे तसथावरसुहुम वायरेसु पज्जत्तमपज्जत्तसाहारणसरीरपत्तेय सरीरेसु य अडय पोयय जराउय रसय ससेइम समुच्छिम उब्भिज्ज उववाइएसु, य नरग तिरियदेवमाणुसेसु जरामरणरोगसोगबहुलेसु पलिओवमसागरोवमाइ अणादीय अणवदग्गं दीहमद्ध चाउ-रंतससारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा महामोहवससनिविट्ठा॥१४

टीका—' मेहुणसण्णासपगिद्धाय ' मैथुनसंज्ञासम्प्रगृद्धाश्च=मैथुनाऽऽसक्ताः ' मोहभरिया' मोहभृता.=अज्ञानपूर्णा, 'निसयविसउदीरएहिं वपयनिपोदीरकै =

इस तरह यहा तक सूत्रकार ने अब्रह्म नामके चतुर्थ द्वार का यह पाचवा अन्तर्द्वार कहा, अब वे पूर्व में अनुक्त " यथा कृतम् " इस तृतीय अन्तर्द्वार को और " यत्फल ददाति " इस चतुर्थ अन्तर्द्वार को प्ररूपित करते हैं—' मेहुणे सण्णा सपगिद्धाय ' इत्यादि० ।

टीकार्थः—(मेहुणसण्णा सपगिद्धा य) जो प्राणी मैथुन सज्ञा में आसक्ति से युक्त होते हैं अर्थात् मैथुन में अत्यत आसक्त रहते हैं वे

આ રીતે અહીં સુધી સૂત્રકારે અબ્રહ્મ નામના ચોથા અધર્મદ્વારનુ પાચમુ અન્તર્દ્વાર વર્ણવ્યુ હવે જેનુ વર્ણન કરવાનુ બાકી રાખ્યુ હતુ તે " યથા कृतम् " નામના ત્રીજા અન્તર્દ્વારનુ તથા " यत्फल ददाति " તે ચોથા અન્તર્દ્વારનુ પ્રરૂપણ કરે છે—" मेहुणसन्ना सपगिद्धा य " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—" मेहुणसण्णा सपगिद्धाय " જે જીવો મૈથુનમા અત્યત આસક્ત રહે છે તેઓ " मोहभरिया " તે મૈથુનરૂપ કર્મના મોહથી ભરપૂર

भिन्दन्ति=समयान = सिद्धान्तान धर्मान्=श्रुतचारित्रलक्षणान्-गणान्-सममामाचारिजनसमूहान् विनाशयन्ति 'परदारी' परदारिणः=परस्त्रीसक्ताः। तथा 'धम्मगुणरयाय' धर्मगुणरताश्च = सदाचारपरायणाः 'बभयारी' ब्रह्मचारिण 'खणेण' क्षणेनैव = अल्पकालेनैव – बहुकालरक्षितादपि 'चरित्ताओ' चारित्रात् 'उल्लोट्टति' उल्लोटयन्ति=निपतन्ति। 'जसमन्तो' यशस्विनः 'सुव्वया य सुव्रताश्च = व्रतपरिपालकाः अपि 'अजसकित्ति' अयशःकीर्ति= 'पावेंति' प्राप्नुवन्ति। 'रोगत्ता' रोगार्ता=क्षयादिरोगग्रस्ताः 'वाहिया' व्याधिताः=कुष्ठादिपीडिताः 'रोयवाही' रोगव्याधीन 'वड्ढति' वर्धयन्ति तेन 'दुवेयलोए दुराराहगा भवन्ति' द्वयोश्च लोकयोर्दुराराधका = आत्मविराधका

अपने सिद्धान्तों को, (धम्मे) श्रुतचारित्र रूप धर्मको, एव (गणे य) समान सामाचारी वाले गण को (भिंदति) नष्ट कर डालते हैं। तथा- (धम्मगुणरया य) जो धर्मगुण रत-सदाचारपरायण (बभयारी) ब्रह्मचारी होते है वे भी (खणे ण) क्षण भर में (चरित्ताओ) बहुकाल के सुरक्षित अपने चरित्र से इसी एक दुर्गुण के वश से (उल्लोटति) निपतित हो जाते है। तथा (जसमतो) जो यशस्वी एव (सुव्वया य) व्रतों के आराधक होते है वे भी इसी कारण (अजसकित्ति) अपकीर्त्ति को (पावेति) प्राप्त करते है (परस्स दाराओ जे अविरया) इस परदार सेवन से जो प्राणी अविरत होते है वे (रोगत्ता) क्षयादि रोगों से ग्रस्त हो जाते है और (वाहिया) कुष्ठ आदि व्याधियो से पीड़ित होते रहते हैं, इतना ही नही फिर आगे के लिये वे रोगों को और व्याधियों को बढा भी लेते हैं। इस तरह (दुवे य लोए इहलोए परलोए चेव)

"धम्मे" શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મને અને "गणे य" સમાન સામાચારીવાળા સમૂહોને "भिंदति" નાશ કરી નાખે છે તથા "धम्मगुणरया य" જે લોકો ધર્મગુણ રતસદાચાર પરાયણ, "बभयारी" બ્રહ્મચારી હોય છે તેઓ પણ "खणेण" ક્ષણવારમા "चरित्ताओ" લાબા સમયથી સુરક્ષિત રાખેલા પોતાના ચારિત્રથી એ એક જ દુર્ગુણને અધીન થઈને "उल्लोटति" ભ્રષ્ટ થઈ જાય છે, તથા "जसमतो" જે યશસ્વી અને "सुव्वया य" વ્રતોના આરાધક હોય છે, તેઓ પણ એજ કારણે "अजसकित्ति" અપકીર્તિ "पावेति" પ્રાપ્ત કરે છે "परस्सदाराओ जे अविरया" એ પરસ્રીગમનમા જે જીવો સતત આસક્ત રહે છે તેઓ "रोगत्ता" ક્ષયાદિ રોગોના પંજામા સપડાય છે અને "वाहिया" કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિઓથી પીડાયા કરે છે એટલુ જ નહી પણ ભવિષ્યમા તેમના તે રોગો અને વ્યાધિઓ વધતા જાય છે આ રીતે તેઓ "दुवेय लोए-परलोए चेव" બન્ને લોકમા આલોકમા અને પરલોકમા

च्छन्ति, तत्र प्रतिबन्धकान् स्वजनानपि पारदारिका निघ्नन्तीति । के इत्याह- ' परस्सदाराओ जे अविरया' परस्य दारेभ्यो येऽविरताः=परस्त्री प्रसङ्गान्न विरताः परस्त्रीसङ्गपरायणाइत्यर्थः । तथा ' मेहुणसण्णासंपगिद्धाय ' मैथुनसंज्ञासम्प्रगृद्धाश्च ' मोहभरिया ' मोहभृताः = मोहग्रस्ताः ' अस्साहत्थीगवाय ' अश्वाः हस्तिनो गावश्च ' महिसा ' महिषा ' मिगाय ' मृगाश्च ' एगमेगं ' एकैकं = प्रत्येकं परस्परमित्यर्थः ' मारें ति ' मारयन्ति । ' मणुयगणा ' मनुजगणा ' वानराय ' वानराश्च ' पक्खीय ' पक्षिणश्च ' विरुज्झति ' विरुध्यन्ते=परस्पर विरोधमाप्नुवन्ति । तथा मैथुनसेवनात् ' मित्ताणि ' मित्राणि ' खिप्प ' क्षिप्र=शीघ्र 'सत्तू ' शत्रवो भवन्ति, पुनश्च ' समयधम्मगणेयभिंदंति ' समयधर्मगणांश्च

किये हुए द्रव्य को उसके लिये दे देते हैं, और जो इस विषय में उनके लिये कोई आत्मीय बन्धु प्रतिबंधक होता है उसे वे मार डालते हैं। (परस्सदाराओ जे अविरया) यह सब कुकृत्य वे ही व्यक्ति करते हैं। जो पर की स्त्रीयो के सेवन करने रूप अकृत्य से विरत नहीं होते हैं। तथा-इसी तरह (मेहुणसण्णासंपगिद्धा य) मैथुनसंज्ञा में आसक्त (मोहभरिया) मैथुनसंज्ञा से विमोहित मतिवाले अज्ञानी प्राणी (अस्साहत्थी गवा य महिसा मिगा य) अश्व, हस्ती, गाय, महिष, मृग हैं वे भी (एक्कमेक्कं मारेंति) आपस में एक दूसरे को मार डालते हैं । इसी तरह (मणुयगणा) मनुष्यगण (वानराय) बंदर एवं (पक्खीय) पक्षी भी (विरुज्झंति) एक दूसरे का विरोध करते है तथा (मित्ताणि खिप्प भवंति सत्तू) इसी कर्म के सेवन से मित्रजन भी शीघ्र शत्रु बन जाते हैं । फिर जो पारदारिक परस्त्री में आसक्त-होते है वे (समय)

ओने आपी दे छे, अने तेना ओ परस्त्रीगमनना कृत्यमा जे कोई संबंधीओ आडखीली रूप थाय छे तेमने मारी नाखे छे " परस्सदाराओ जे अविरया " जे लोको परस्त्रीगमन रूप कुकृत्यथी विरक्त थई शकता नथी ते लोको ज आ बधा कुकृत्यो करे छे तथा ओ ज प्रमाणे " मेहुणसण्णा संपगिद्धाय " मैथुन संज्ञामा आसक्त, " मोहभरिया " मैथुन संज्ञामा विमोहित मनवाळा अज्ञानी " अस्साहत्थी गवा य महिसा मिगा य " अश्व, हाथी, गाय, भेंस मृग, आदि प्राणीओ पण " एक्कमेक्कं मारें ति " आपसमा लडीने ओक बीजाने मारी नाखे छे ओ ज रीते " मणुयगणा " मनुष्यो, " वानरा य " वानरो, " पक्खी य " अने पक्षीओ पण ओक बीजानो विरोध करे छे " मित्ताणि खिप्प भवंति सत्तू " ओ कर्मना सेवनथी मित्रो पण जल्दी तेमना शत्रु बनी जाय छे वळी परस्त्रीमा आसक्त लोको " समय " पोताना सिद्धांतोनो,

येपाते वगा। तथा 'मेहुणमूला य' मैथुनमूलाश्च स्त्री हेतव एवेत्यर्थः 'तत्र तत्थ' तत्र तत्र लोके शास्त्रे च 'वत्तपुव्वा' वृत्तपूर्वा=भूतपूर्वा 'जणक्खयकरा' जनक्षयकराः=जनसंहारकारका:-रामरावणादीनां 'संगामा' संग्रामाः 'सुव्वंति' श्रूयन्ते। कस्या. कस्या स्त्रियो-निमित्त संग्रामा जाताः? इत्याह—

'सीयाए दोवईए कए' सीतायाः द्रौपद्याश्च कृते-सीताद्रौपदीनिमित्तमित्यर्थः एव 'रुप्पिणीए पउमावईए-ताराए कंचणाए रत्तसुभद्दाए अहिल्लियाए सुवण्णगुलियाए किन्नरीए य सुरूवविज्जुमईए रोहिणीए य' रुक्मिण्या', पद्मावत्या', तारायाः, काञ्चनायाः, रक्तसुभद्रायाः, अहल्यायाः सुवर्णगुटिकायाः, किन्नर्याश्च

जाता है। तथा (मेहुणमूला य तत्थ तत्थ वत्तपुव्वा जणक्खयकरा संगामा सुव्वंति) लोक और शास्त्र में जितने भी पहिले राम रावण आदि के जनक्षय कारक संग्राम हुए सुने जाते हैं वे सब मैथुनमूलक ही हुए हैं। इन सब लोक और शास्त्र प्रसिद्ध यत्र तत्र हुए संग्रामों का मूल कारण एक स्त्री हुई है॥

अब सूत्रकार इसी बात को विशेष स्फुट करते हैं किस २ स्त्री के निमित्त संग्राम हुए हैं इस विषय को कहते हैं-'सीयाए' इत्यादि।

टीकार्थः-(सीयाए, दोवईए य कए) सीता और द्रौपदी के निमित्त (रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कंचणाए, रत्तसुभद्दाये अहिल्लियाए सुवण्णगुलियाए, किन्नरीए, सुरूव विज्जुमईए, रोहिणीए य) रुक्मिणी के निमित्त, पद्मावती के निमित्त, तारा के निमित्त, कांचना के निमित्त, रक्त सुभद्रा के निमित्त, सुवर्ण गुटिका के निमित्त, किन्नरी के निमित्त,

---

નાશ પામ્યો હોય છે તથા "मेहुणमूला य तत्थ तत्थ वत्तपुव्वा जणक्खयकरा संगामा सुव्वंति" આ સૃષ્ટિમાં રામ રાવણ આદિ વચ્ચેના માણસોનો ક્ષય કરનારા જે સંગ્રામો થયા છે તથા શાસ્ત્રોમાં જે સંગ્રામો વર્ણવવામાં આવે છે તે બધાનું મૂળ કારણ મૈથુન જ છે તે બધા લોકપ્રસિદ્ધ તથા શાસ્ત્રપ્રસિદ્ધ સ્થળે સ્થળે થયેલા સંગ્રામોનું મૂળ કારણ કોઈ ને કોઈ સ્ત્રી જ હતી

હવે સૂત્રકાર એ બાબતનું વધુ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે-કયી કયી સ્ત્રીઓને કારણે સંગ્રામો થયા તે બતાવે છે—"सीयाए" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"सीयाए, दोवईए य कए" સીતા અને દ્રૌપદીને કારણે "रुप्पिणीए, पउमावईए ताराए, कंचणाए, रत्तसुभद्दाए, अहिल्लियाए सुवण्णगुलियाए,-किन्नरीए, सुरूवविज्जुमईए, रोहिणीए य" રુકમણીને નિમિત્તે, પદ્માવતીને નિમિત્તે, તારામતીને નિમિત્તે કાંચનાને નિમિત્તે, રક્તસુભદ્રાને નિમિત્તે, અહલ્યાને નિમિત્તે, સુવર્ણ ગુટીકાને નિમિત્તે, કિન્નરીને નિમિત્તે, સૌંદર્યવતી

भवन्ति। कयोर्द्वयोर्लोकयोः इत्याह इहलोए चेव परलोए' इहलोके चैव=इह-जन्मनि परलोके च परजन्मनि। के ते? इत्याह—'परस्स दाराओ जे अविरया' परस्य दारेभ्यो येऽविरताः=परस्त्रीपरायणाः। 'तहेव' तथैव 'केइ' केचित् 'परस्स दार गवेसमाणा' परस्य दारान गवेषमाणा' = परस्त्रियमन्वेषयन्त, 'गहिया य' गृहीताश्च जनैः 'हयाय' हताश्च=ताडिताः 'बद्धरुद्धा य' बद्ध रुद्धाश्च=रज्ज्वादिभिर्बद्धाः सतः पञ्जरादौ निरुद्धाश्च एव 'जाव गच्छन्ति' यावत्-अधोगतिं प्राप्नुवन्ति 'अत्र यावत्पदग्रहणेन तृतीयाध्ययनस्थित' 'गहियाय बद्धरुद्धा य' इत्यारभ्य 'नरए गच्छति णिरभिरामे' इत्येतदन्त' पाठोत्र बोध्य इति सूचितम्। के ते इत्याह—ये 'मोहाभिभूयसण्णा' मोहाभिभूतसंज्ञाः= मोहेन=अज्ञानेन कामान्धतया वा अभिभूता-परीभूता नष्टा सत्ता-सदसद्विवेकरूपश्च

दोनों लोको में-इस लोक और परलोक (दुराराहगा) आत्म विरोधक (भवति) बनते है। तथा (तहेव) इसी प्रकार (केइ परस्सदार गवे-समाणा) जो परस्त्री की गवेपणा करने में रत रहते हैं वे यदि उस कार्य को करते समय (गहिया य) पकड़ लिये जाते हैं तो (हयाय) बहुत बुरी तरह ताडित किये जाते हैं। और) (बद्ध रुद्धा य) रस्सी आदि से बाधे जाकर पजर आदि में बध कर दिये जाते हैं। (एव) इस तरह (जाव) यावत् यहां यावत् शब्द से तृतीय अध्ययन में कथित "गहिया य बद्धरुद्धाय" इस पाठ से लगाकर "नरए गच्छति णिरभिरामे) यहांतक का पाठ लिया गया है। जिससे यह समझाया गया है कि अन्त में ऐसे जीवोकी बडी दुर्दशा होती है और वे मर कर नरक मे जाते हैं। क्योंकि (विउलमोहाभूयसण्णा) ऐसे मनुष्यों का विपुल अज्ञान से अथवा कामान्धता से सद् सद्विवेक बिलकुल नष्ट होता

'दुराराहगा" આત્મવિરોધક "भवति" બને છે "तहेव" એ જ પ્રમાણે "केइ परस्सादार गवेसमाणा" જે પરસ્ત્રીની શોધમા લીન રહે છે, તેઓ જો તે કાર્ય કરતી વખતે "गहिया य" પકડાઈ જાય તો "हयाय" ઘણી જ ખરાબ રીતે તેમને મારવામા આવે છે, અને "बद्धरुद्धाय" દોરડા આદિથી જકડીને પાજરા આદિમા પૂરી દેવામા આવે છે "एव" આ રીતે "जाव" यावत्-અહી यावत् શબ્દ વડે ત્રીજા અધ્યયનમા કહેલ "गहिया-य बद्धरुद्धाय" થી લઈને "नरए गच्छति णिरभिरामे" સુધીને પાઠ લેવામા આવેલ છે તેમા એ સમજાવવામા આવ્યુ છે કે છેવટે તે જીવોની દશા બૂરી થાય છે અને તેઓ મરીને નરકમા જાય છે, કારણ કે "विउलमोहा भूयसण्णा" એવા મનુષ્યોમો સદસદ્વિવેક, અજ્ઞાનથી અથવા કામાધતા ને લીધે બિલકુલ

साहारणसरीरपत्तेयसरीरेसु ' पर्याप्ताऽपर्याप्तकसाधारणशरीरप्रत्येकशरीरेषु च जन्ममरण कुर्वन्ति । ततोऽपि निःसृत्य ' अंड य पोयय जराउय रस य-ससेइम समुच्छिम उब्भिज्ज उववाइएसु य ' तत्र अण्डजाः=पक्षि मत्स्यादयः ' पोयज ' पोतजा =हस्त्यादय ' जराउय ' जरायुजाः=मनुष्यादयः, ' रस य ' रसजाः=विकृतरसेषु समुत्पन्नाः ' ससेइम ' सस्वेदिमाः=सस्वेदात् जाता यूका मत्कुणादयः ' समुच्छिम ' सम्मूच्छिमाः=सम्मूर्च्छन जाताः दर्दुरादयः ' उब्भिज्ज ' उद्भिज्जाः=पृथिवीमुद्भिद्य जाताः=शलभादयः ' उववाइय ' औपपातिका=देव नारकादयश्च, इत्येतेषु च ' नरगतिरियदेवमाणुसेसु ' नरकतिर्यग्देवमानुषेषु कीदृशेषु ? इत्याह—' जरामरणरोगसोगबहुलेसु ' जरामरणरोगशोकबहुलेषु-

(तसथावरसुहुमबायरेसु) त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, बादर इन कायोंमें, तथा (पज्जत्तगपज्जत्तसाहारणपत्तेय सरीरेसु य) पर्याप्तक अपर्याप्तक, साधारण-शरीर, प्रत्येक शरीर इन पर्यायोंमें जन्म मरण करते है। वहा से भी निकल कर वे (अंड य पोयय जराउय रस य ससेइम समुच्छियउब्भि-ज्जउववाइएसु य) अंडज जीवों में-पक्षी मत्स्य आदिकों मे, पोतजजीवो में हस्ती आदिकों में, जरायुज में-जरा से पैदा होने वाले मनुष्य आदिकों में, रसज जीवों में-विकृत रसोंमे उत्पन्न होने वाले कृमि आदि जीवोंमें, सस्वेदिमोंमे पसीनेसे होनेवाले यूका, मत्कुण आदि जीवोंमें, सम्मूर्च्छिम जन्मवाले दर्दुर (मेंढक) आदि जीवो में, उद्भिज्ज जीवो मे-पृथिवि को भेदकर उत्पन्न होने वाले शलभ आदि जीवो मे औपपातिक जन्म धारी देव और नारकियो मे उत्पन्न होते है । तथा वे (जरामरणरोगसोग बहुलेसु नरगतिरियदेवमाणुसेसु) जरा, मरण, रोग, शोक बहुल, नरक,

" तसथावरसुहुमबायरेसु " त्रसकाय, स्थावरकाय, सूक्ष्मकाय અને બાદરકાયોમા તથા " पज्जत्तगपज्जत्तसाहारणसरीरपत्तेयसरीरेसु य " પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, સાધારણ શરીર, પ્રત્યેક શરીર આદિ પર્યાયોમા જન્મ મરણ અનુભવે છે ત્યાથી પણ નીકળીને તેઓ " अंडय-पोयय-जराउय-रसय ससेइम-समुच्छिय उब्भिज्जउववाइएसु य " અંડજ જીવોમા-પક્ષી મત્સ્ય આદિમા, પોતજ જીવોમા હાથી આદિમા જરાયુજમા મનુષ્ય આદિકોમા રસજ જીવોમા વિકૃત રસોમા ઉત્પન્ન થનાર કૃમિ આદિ જીવોમા, सस्वेदिमो મા પરસેવાથી ઉત્પન્ન થનાર જૂ, માકડ આદિ જીવોમા, સમૂચ્છિમ જન્મવાળા દેડકા આદિ જીવોમા, ઉદ્ભિજ્જજીવોમા-પૃથ્વીને ભેદીને ઉત્પન્ન થનાર તીડ આદિ જીવોમા, ઔપપાતિક દેવ અને નારકીઓમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા તેઓ " जरामरण-रोगसोगबहुलेसु नरगतिरियदेवमाणुसेसु " જરા, મરણ, રોગ અને વિપુલ

सुरूपविद्युन्मत्याः, रोहिण्याश्च, तत्तत्स्थानप्रसिद्धायाः कृते सग्रामा अभूवन्। आसा चरितं तु तत्तद्ग्रन्थेभ्योऽवसेयम्। 'अण्णे य एवमाइया बहवो महिला-कए' अन्ये चैवमादिकाः = एव प्रकाराः=बहवः-अनेके महिलाकृते=स्त्रीनिमित्त 'अतिकंता' अतिक्रान्ताः=भूतपूर्वाः 'गामधम्ममूला' ग्रामधर्ममूलाः= मैथुन मूलकाः 'सगामा' सग्रामा जाता इति, 'सुव्वंति' श्रूयन्ते=लोके शास्त्रे च। ते चाब्रह्मसेविनः 'इहलोए तावनट्ठा' इहलोके तावन्नष्टाः = परस्त्रीगमनेनाऽऽत्मविराधका जाताः, 'परलोए य नट्ठा' परलोके च नष्टाः असद्गतिं प्राप्ताः केन केन प्रकारेण परलोको नष्टो भवन्तीत्याह—इतो मृत्वा 'महयामोहतिमिर-धयारे' महामोहतिमिरान्धकारे-महामोह एव तिमिरान्धकारः=गाढान्धकारो यत्र स तथा तस्मिन् घोरे=भयङ्करे एतादृशे नरके गच्छन्ति। ततो निःसृत्य 'तसथावरसुहुमबायरेसु' त्रसस्थावरसूक्ष्मबादरेषु' तथा 'पज्जत्तमपज्जत्तग

सरूप विद्युन्मती के निमित्त और रोहिणी के निमित्त सग्राम हुए हैं (अण्णे य एवमाइया पहवो) तथा इसी तरह के और भी अनेक (अइकता) भूतपूर्व सग्राम (महिलाकए) इसो मैथुन सेवन निमित्तक हुए (सुव्वंति) लोक और शास्त्र मे सुने गये हैं। (अबभसेविणो इह-लोए तावनट्ठा परलोए य नट्ठा) ये अब्रह्मसेवीजन इसलोक मे तो नष्ट होते ही है, साथ २ में परलोक में भी नष्ट होते है, अर्थात् परस्त्री सेवन से जीव इसलोक में आत्मविराधक होकर परलोक मे भी असद्गति को प्राप्त करते हैं। जब वे यहा से मरते है तब (महया मोह तिमिरधयारे) महामोहरूप गाढ अधकार से आच्छादित हुए (घोरे) भयकर नरक में जाकर उत्पन्न होते है। वहा से जब वे निकलते है तब

વિદ્યુન્મતીને નિમિત્તે, અને રોહિણીને નિમિત્તે સગ્રામો થયા હતા, "अण्णेय एवमाइया बहवो" તથા તે પ્રકારના બીજા પણ અનેક "अइक्कंता" ભૂત કાળના સગ્રામો "महिलाकए" એ જ મૈથુન સેવનને નિમિત્તે થયાનુ "सुव्वंति" લોકોમા તથા શાસ્ત્રોમા સાભળવામા આવે છે

"अबभसेविणो इहलोए तावनट्ठा परलोए य नट्ठा" તે મૈથુન સેવી લોકો આ લોકમા તો નાશ દુર્દશા પામે જ છે પણ પરલોકમા પણ નષ્ટ થાય છે, એટલે કે પરસ્ત્રીસેવનથી લોકો આ લોકમા આત્મવિરાધક થઈને પરલોકમા પણ દુર્ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે, જ્યારે તેઓ અહીથી મરણ પામે છે ત્યારે "महया मोहतिमिरधयारे" મહામોહરૂપ ગાઢ અધકારથી છવાયેલા "घोरे" ભયકર નરકમા જઈને ઉત્પન્ન થાય છે ત્યાથી નીકળીને તેઓ

एय त अबभपि चउत्थ सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्ज एव चिरपरिचियमणुगय दुरतं तिवेमि ॥सू०१५॥

॥ चउत्थ अहम्मदार समत्तं ॥

टीका—' एसो सो ' एप स' पूर्वोक्तः ' अबभस्स फलविवागो ' अब्रह्मणः फलविपाक ' इह लोइओ ' ऐहलौकिक -मनुष्यभवापेक्षया, ' परलोइओ य ' पारलौकिकश्च नरकाद्यपेक्षया ' अप्पसुहो ' अल्पसुखः - क्षणमात्रसुखजनकत्वात् ' बहुदुक्खो ' बहुदुःखः-प्रचुरदुःखहेतुत्वात् ' महब्भयो ' महाभय -वधबन्धन जन्ममरणादिभयोत्पादकत्वात् ' बहुरयप्पगाढो ' बहुरजः प्रगाढः-कर्मदलिकबहुत्वात् ' दारुणो ' दारुणः-चतुर्गतिससारभ्रामकत्वात् ' कक्कसो ' कर्कशः दशविध-

---

अब इस पूर्वोक्त अब्रह्म विषय का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते है—' एसो सो ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एसो सो) यह पूर्वोक्त (अबंभस्स) अब्रह्म-कुशील सेवन का (फलविवागो) फलरूपविपाक (इहलोइयपरलोइओ य) मनुष्य भव की अपेक्षा तथा नरकादि गति की अपेक्षा (अप्पसुहो) क्षणमात्र सुख का जनक होने से अल्पसुखरूप है तथा (बहुदुक्खो) प्रचुर दुःख का हेतु होने से महादुःखप्रद है, (महब्भओ) वध, बधन, जन्म, मरणादि के भय का उत्पादक होने से महाभय स्वरूप है। (बहुरयप्पगाढो) ऐसे कर्म करने वालो को कर्मो की स्थिति और अनु-भाग बहुत अधिक मात्रामें बधाता है इसलिये वह बहुरजःप्रगाढरूप है। (दारुणो) चतुर्गति रूप ससारमे ऐसे जीवोका ही भ्रमण होता है-अतः

હવે આ પૂર્વોક્ત અબ્રહ્મ વિષયનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે— " एसो सो " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ —" एसो सो " આ પૂર્વોક્ત " अबंभस्स " અબ્રહ્મ-કુચારિત્ર સેવનનો " फलविवागो " ફલવિપાક " इहलोइयपरलोइओ य " મનુષ્ય ભવની અપેક્ષાએ " अप्पसुहो " ક્ષણમાત્ર સુખનો જનક હોવાને કારણે અલ્પસુખ રૂપ છે, તથા " बहुदुक्खो " અત્યત દુખનો હેતુ હોવાથી મહાદુખપ્રદ છે " महब्भओ " વધ, બધન, જન્મ, મરણ આદિ ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી મહાભય સ્વરૂપ છે, " बहुरयप्पगाढो " એવા કર્મો કરનારને કર્મોની સ્થિતિ અને અનુભાગ બહુ જ વધારે પ્રમાણમા બધાય છે તેથી તે બહુ રજ પ્રગાઢ-રૂપ છે " दारुणो " એવા જીવોને જ ચાર ગતિ રૂપ સસારમા ભ્રમણ કરવુ

चोत्पद्यन्ते, तत्र 'पलिओवमसागरोवमाइ' पल्योपमसागरोपमानि = पल्योपम सागरोपमकाल यावत् केचित्परिभ्रमन्ति। ये तु 'अणादिय' अनादिक= आदिवर्जित 'अणवदग्ग' अनवदग्रम्=अनन्त 'दीहमद्ध' दीर्घाऽध्वान=दीर्घ मार्ग 'चाउरंतसंसारकंतार' चतुरन्तसंसारकान्तार = देवमनुष्यनारकतिर्य ग्लक्षणचतुर्गतिकसंसारमहारण्य, 'महामोहवससंनिविट्ठा जणा' महामोहवश-संनिविष्टाजनाः=महामोहवशगता अनन्तसेविना जनाः 'अणुपरियट्टंति' अनु-पर्यटन्ति=अनन्तकालपर्यन्तपरिभ्रमन्ति ॥ सू० १४ ॥

पूर्वोक्त निगमयन्नाह—'एसो सो' इत्यादि—

मूलम्—एसो सो अवभस्स फलविवागो इहलोइओ परलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, नय अवेदइत्ता अत्थिहु मोक्खो त्ति। एवमाहसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसि य अवभस्स-फलविवागं।

तिर्यंच देव एवं मनुष्यों में जन्मते हैं। इनमें (पलिओवमसागरोवमाइ) कितनेक जीव पल्योपमप्रमाण कालतक और कितनेक सागरोपम प्रमाण काल तक घूमते रहते है। और कितनेक ऐसे भी होते है जो (महा-मोहवससंनिविट्ठा) महामोह के वशवर्त्ती होकर (अणादिय अणवदग्गं) अनादि अनंत (दीहमद्ध) उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप दीर्घमार्ग युक्त (चाउरंतसंसारकंतार) देव-मनुष्य नरक एवं तिर्यञ्चगतिरूप चारगति-वाले संसार कांतार में अनंतकालतक (अणुपरियट्टंति) परिभ्रमण करते रहते है ॥ सू०१४ ॥

શોકમય નરક, તિર્યંચ, દેવ અને મનુષ્ય યોનિમાં જન્મ પામે છે, તેમાંના "पलिओवमसागरोवमाइ" કેટલાક જીવો પલ્યોપમ પ્રમાણકાલ સુધી અને કેટલાક સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી તે યોનિયોમાં ભ્રમણ કર્યા કરે છે અને કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે "महामोहवससंनिविट्ठा" મહામોહને અધીન થઈને "अणादिय अणवदग्ग" અનાદિ અનંત "दीहमद्ध" ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી રૂપ દીર્ઘમાર્ગ યુક્ત "चाउरंतसंसारकंतार" દેવ મનુષ્ય, નરક અને તિર્યંચ એ ચાર ગતિવાળા સંસાર કાંતારમાં અનંતકાળ સુધી "अणुपरियट्टंति" પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે. ॥ સૂ. ૧૪ ॥

जिनः वीरवरनामधेयः-प्रख्यातनामा भगवान् श्रीमहावीरोऽपि 'अबंभस्स' अब्रह्मणः 'फलविवाग' फलविपाक 'कहेसिय' कथितवांश्च 'एय त' एत तत्=उपदर्शित स्वरूपम् 'अबंभ' अब्रह्म-अब्रह्मनामक 'चउत्थ' चतुर्थमधर्म-द्वार 'सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स' सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य 'पत्थणिज्ज' प्रार्थनीयम्। एव 'चिरपरिचिय' चिरपरिचितम्, अनादि कालादनुभूयमानम् 'अणुगय' अनुगत=प्राणिना पृष्ठतोऽलग्न, दुरन्त-दुःखावसान च । 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, एतद् जम्बूस्वामिन प्रति सुधर्मस्वामि वाक्यम् ॥ सू० १५ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्यायां व्याख्यायां हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु अदत्तादानाख्य चतुर्थमधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

(एव) इस प्रकार का कथन (आहसु) भूतपूर्व तीर्थंकर गणधरादिक देवों का है। और इसी प्रकार से अब्रह्म के फलविपाक उन्ही तीर्थंकरो के कहे अनुसार (नायकुलनदणो) सिद्धार्थकुलको आनद देनेवाले (महप्पा जिणो उ) महात्मा जिनेन्द्र (वीरवरनामधेज्जा) वीरवरने-श्री वर्धमानस्वामी ने भी (अबभस्स) अब्रह्म के (फलविवाग) फलविपाक को (कहेसिय) कहा है (एयतं) यह वह (अबभ) अब्रह्म नाम का (चतुत्थ) चतुर्थ अधर्मद्वार (देवमणुयासुरस्स लोगस्स) देव मनुष्य और असुर लोक इन सब के यह (पत्थणिज्ज) प्रार्थनीय है, अर्थात् इस अब्रह्म का ये देवादि सेवन करते हैं। (एव) इस प्रकार यह (चिर-परिचिय) जीवों के पीछे अनादिकाल से लगा हुआ चला आने के कारण (अणुगय) अनुभूयमान है और (दुरत) इसका अवसान (अन्त)से दुरन्त

આ પ્રકારનુ કથન "आहसु" ભૂતપૂર્વ તીર્થંકર ગણધરાદિક દેવોનુ છે અને તે રીતેજ અબ્રહ્મના ફલવિપાકનુ કથન તે તીર્થંકરોના કહેવા પ્રમાણે "नायकुल नदणो" સિદ્ધાર્થના કુળને આનદ દેનાર "महप्पाजिणो उ" મહાત્મા જિનેન્દ્ર "वीरवरनामधेज्जा" વીરવર શ્રી વર્ધમાન સ્વામીએ પણ "अबभस्स" અબ્રહ્મનો "फलविवाग" ફળવિપાક "कहेसिय" કહેલ છે "एयत" આ તે "अबभ" અબ્રહ્મ નામનુ "चउत्थ" ચોથુ અધર્મદ્વાર "देवमणुयासुरस्स लोगस्स" દેવ મનુષ્ય, અને અસુર તે બધાને તે "पत्थणिज्ज" પ્રાર્થનીય છે, એટલે કે દેવાદિ તે અબ્રહ્મનુ સેવન કરે છે "एव" આ રીતે તે "चिरपरिचिय" જીવોની પાછળ અનાદિ કાળથી ચાલ્યુ આવે છે તેથી "अणुगय" અનુભૂય-

क्षेत्रवेदनाजनकत्वात् 'असाओ' असातः=असातवेदनीयः-कर्मोत्पादकत्वात् 'वाससहस्सेहिं' वर्षसहस्रैः = अनेकपल्योपमसागरोपमादिकालोपभोगेन 'मुच्चइ' मुच्यते। तदेव व्यतिरेकमुखेनाह—नय अवेदइत्ता' न चाऽवेदयित्वा= उपभोग विना न 'मोक्खोत्ति' मोक्षोऽस्ति। 'एवं' उक्तरीत्या 'आहंसु' ऊचुः= कथितवन्त भूतपूर्वास्तीर्थङ्करगणधरादयः। तथा-तदनुसारेणैव 'नायकुलनंदणो' ज्ञातकुलनन्दनः—सिद्धार्थकुलानन्दकर' 'महप्पा' महात्मा=परमात्मरूपः 'जिणो'

चतुर्गतिरूप संसारमें भ्रमण करवानेका कारण होनेसे यह दारुण है। (कक्कसो) दश प्रकार की क्षेत्रवेदना का जनक होने से यह फलविपाक कर्कश है। (असाओ) असातवेदनीयरूप होने से यह असात है-अर्थात् असाता वेदनीय कर्म के उदय से यह उत्पन्न होता है इसलिये असाता-वेदनीयकर्म के द्वारा उत्पाद्य होने के कारण यह स्वयं असातस्वरूप है। अथवा इस प्रकार के कर्म करने वाले जीव जो फलविपाक भोगते हैं। उस समय वे असातावेदनीय कर्म का बंध करते है,-कारण फलविपाक भोगते समय उनकी आत्मा मे दुःख शोक-ताप आदि भाव होते है इन भावों से जीव असातावेदनीय कर्म का आस्रव करता है। इस अपेक्षा से असातावेदनीय कर्म का उत्पादक होने से यह फलविपाक असातरूप माना गया है। (वाससहस्सेहिं) यह फलविपाक जीव पल्योपमकालतक भोगने से (मुचइ) छूटता है। (नयअवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खो त्ति) इस फलविपाक का उपभोग किये विना यह नहीं छूटता है।

પડે છે, તેથી ચાર ગતિવાળા સંસારમા ભ્રમણ કરાવનાર હોવાથી તે દારુણ છે "कक्सो" દસ પ્રકારની ક્ષેત્ર વેદનાનો જનક હોવાથી તે ફલવિપાક કર્કશ-કઠોર છે "असाओ" અસાત વેદનીય રૂપ હોવાથી તે અસાત છે-એટલે કે અસાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી તે ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી અસાતા વેદનીય કર્મદ્વારા ઉત્પાદ્ય હોવાને કારણે તે પોતે અસાતસ્વરૂપ છે અથવા આ પ્રકારના કર્મ કરનારા જીવો જે ફલવિપાક ભોગવે છે, તે ભોગવતી વખતે અસાતા-વેદનીય કર્મનો બંધ બાંધે છે, કારણ કે ફલવિપાક ભોગવતી વખતે તેમના આત્મામા દુઃખ શોક તાપ આદિ ભાવ હોય છે, તે ભાવોથી જીવ અસાતા વેદનીય કર્મનો આસ્રવ કરે છે આ અપેક્ષાએ અસાતાવેદનીય કર્મનો ઉત્પાદક હોવાથી આ ફળવિપાક અસાતરૂપ માન્યો છે "वाससहस्सेहिं" આ ફલવિપાક પલ્યોપમ કાળ સુધી અથવા સાગરોપમ કાળ સુધી ભોગવ્યા પછી જ જીવ "मुच्चइ" તેનાથી મુક્ત થાય છે 'नय अवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खो त्ति" આ ફળવિપાકનો ઉપભોગ કર્યા વિના તે મુક્ત થઇ શકતો નથી "एव"

अथ पञ्चमाध्ययनम् ।

अथ चतुर्थास्रवद्वारसमाप्त्यनन्तरं पञ्चममास्रवद्वारं मारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः । अनन्तराध्ययनेऽब्रह्मस्वरूपं प्रोक्तं, तच्च परिग्रहे सत्येव भवतीति परिग्रहस्वरूपं निरूप्यते—'जम्बू' इत्यादि ।

मूलम्—जंबू ! एत्तो परिग्गहो पंचमो उ नियमा णाणामणिकणगरयण महरिह परिमल-सुपुत्तदार-परिजण- दासीदास-भयग-पेस्स--हय-गय-गो--महिस--उट्ट- खर अय--गवेलग--सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग-सद्ण-सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धन्न-पाणभोयणाच्छायण-गंधमल्ल-भायण-भवणविहिं चेव बहुविहियं भरहं णगणगर-णियम-जणवय-पुरवर—दोणमुह-खेड--कव्वड-मंडव-संवाह-पट्टण-सहस्सपरिमंडियं थिमियमेणीयं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमियमणंततण्हमणुगयमहिच्छ-सारनिरयमूलो, लोभकलिकसायमहक्खंधो, चितासयनिचिय विउलसालो, गारवपविरल्लियग्गविडवो, नियडितया पत्तपल्लवधरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा आयासविसूरणाकलहपकंपियग्ग-सिहरो नरवइसपूजिओ, बहुजणस्स हियदइओ, इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ चरिमं अहम्मदारं ॥सू०१॥

पाचवां आस्रवद्वार प्रारंभ—

चतुर्थ आस्रवद्वार की समाप्ति के बाद अब पाचवा आस्रव द्वार प्रारंभ होता है। इसका पूर्व आस्रव द्वार के साथ इस प्रकार से संबंध है—चतुर्थ द्वार में जो अब्रह्म का स्वरूप कहा है वह अब्रह्म, परिग्रह के होने पर ही होता है इसलिये सूत्रकार इस द्वार मे परिग्रह का स्वरूप

પાચમા આસ્રવ–દ્વારનો પ્રારંભ

ચોથુ આવસ દ્વાર પૂરૂ કર્યાં પછી હવે પાચમા આસવ દ્વારનુ વર્ણુન શરૂ થાય છે તેનો આગળના આસ્રવદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સબંધ છે–

ચોથા દ્વારમા અબ્રહ્મનુ જે સ્વરૂપ કહ્યુ છે તે અબ્રહ્મ, પરિગ્રહ હોય તો જ થાય છે તેથી સૂત્રકાર આ દ્વારમા પરિગ્રહના સ્વરૂપનુ નિરૂપણુ કરે છે–



है नाना प्रकार के दुःखो का दाता है। (त्ति बेमि) ऐसा हे जम्बू! मैं कहता हूं। इस प्रकार सुधर्मास्वामीने जम्बूस्वामी को इसके विषय में समझाया है ॥ सू०१५ ॥

॥ चतुर्थ अधर्मद्वार समाप्त ॥

માન છે, અને "दुरन्त" તેનુ અવસાન દુઃખ છે—નાના પ્રકારના દુખો દેનાર છે "त्तिबेमि" એવું હે જમ્બૂ! હું કહુ છુ આ જમ્બૂસ્વામીને સુધર્મસ્વામીએ અબ્રહ્મના વિષે સમજાવ્યુ છે. ॥ સૂ ૧૫ ॥

ચોથુ આસ્રવ (અધર્મ)દ્વાર સમાપ્ત થયુ.

अय–गवेलग–सीयासगड–रह–जाण–जुग्ग–सदण–सयणा–सण–वाहण–कुविय–धण–धन्न–पाण–भोयण–च्छायण–गध–मल्ल–भायण–भवणविहिं ' नानामणि–कनक–रत्न–महार्ह–परिमल–सपुत्रदार–परिजन–दासी–दास–भृतक–प्रैष्य–हय–गज–गो–महिषो–ष्ट्र–खरा–ऽज–गवेलक – शिविका –शकट–रथ–यान–युग्य–स्यन्दन–शयनाऽऽसन–वाहन–कुप्य–धन–धान्य–पान–भोजना–ऽऽच्छादन–गन्ध–माल्य–भाजन–भवनविधिम्। तत्र– ' णाणामणि ' नानामणयः–नाना=अनेक प्रकारा ये मणय =चन्द्रकान्तादयः, ' कणग ' कनक=सुवर्ण ' रयण ' रत्नानि= कर्केतनादीनि, ' महरिह परिमल ' महार्ह परिमलाः – बहुमूल्यसुगन्धिपदार्थाः, तथा ' सपुत्तदार ' सपुत्रदाराः–पुत्रसहिताः स्त्रियः, तथा ' परिण ' परिजन – परिवारः=पौत्रादिरूप , ' दासीदास ' दासीदास=दास्यो दास्यश्च ' भयग ' भृतकाः=कर्मकराः, ' पेस ' प्रैष्या –प्रयोजनेषु प्रेषणीयाः, ' हय ' हया'–अश्वाः ' गय ' गजाः ' गो ' गावः ' महिस ' महिषाः ' उट्ट ' उष्टाः, ' खर ' खराः गर्दभाः 'अय' अजाः 'गवेलग' गवेलका =मेषा', 'सीया' शिविकाः, 'सगड' शकटानि=गन्त्र्यः, ' रह ' रथाः 'जाण' यानानि यानपात्राणि 'जुग्ग' युग्यानि गोलदेश प्रसिद्ध जम्पानविशेषाः ' सदण ' स्यन्दनाः–रथविशेषा', ' सयणासण ' शयनासनानि=शय्या आसनानि च ' वाहण ' वाहनानि–' तामजाम ' इति देशी

–महिस–उट्ट–खर–अय–गवेलग–सीया–सगड रह–जाण–जुग्ग–सदण–सयणा–ऽऽसण–वाहण–कुविय–धण–धण्ण–पाण–भोयणच्छायण–गध–मल्ल–भायण–भवण–विहिं) चन्द्र कान्त आदि विविध प्रकार के मणि, कनक–सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, बहुमूल्य परिमल–सुगंधित पदार्थ, पुत्रसहित स्त्रीजन, पौत्रादिरूप परिजन, दासी दास, भृतक–कर्मकर, प्रयोजन के अवसर पर भेजने योग्य प्रेष्य, हय–अश्व, गज–हाथी, गाय, महिष, ऊँट, खर–गधा, अज–बकराबकरी, गवेलक–मेष–मेढा, शिविका-पालखी, शकट–गाड़ी, रथ, यानपात्र, युग्य–गोलदेश प्रसिद्ध जम्पाविशेष स्यदन–रथ, शय्या, आसन, वाहन–तामजान, कुप्य–गृह के उपकरण

महिस–उट्ट–खरअय–गवेलग–सीया–सगड–रह–जाण–जुग्ग–सदण–सयणा– ऽऽसण–वाहण–कुविय–धण–धण्ण–पाण–भोयण–च्छायण–गध–मल्ल–भायण–भवण–विहिं " ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ પ્રકારના મણિ, કનક–સુવર્ણ કર્કેતન આદિ રત્ન, બહુમૂલ્ય પરિમલ–સુગ ધિત પદાર્થો, સપુત્ર સ્ત્રીજન, પૌત્રાદિરૂપ પરિજન, દાસ-દાસી, ભૃતક–કારીગર, પ્રયોજનને માટે મોકલવામા આવનાર પ્રેષ્ય (દૂત) હય–અશ્વ, ગજ–હાથી, ગાય, ભેસ ઊંટ, ખર–ગધેડા, અજ–બકરા બકરી, ગવેલક ઘેટા, શિબિકા–પાલખી, શકટ–ગાડુ રથ, યાનપાત્ર, યુગ્ય, સ્યદન–રથ

टीका—' जबू ' इत्यादि—

सुधर्मा स्वामी पञ्चमास्त्रवद्वारस्वरूपं जिज्ञासमानं जम्बूस्वामिनं प्रति प्राह- ' जबू ' हे जम्बूः। ' एत्तो ' इतश्चतुर्थास्रवद्वारादनन्तरं ' परिग्गहो ' परिग्रह - परिग्रहणं परिगृह्यते मूर्च्छारूपेण मुच्छापरिग्गहोवुत्तो इति वचनात् धर्मोपकरण विनेत्यर्थं इति वा परिग्रहः = परिग्रहतरुर्नाम वक्ष्यमाणविशेषणानुरोधात् परिग्रहशब्दोऽत्र परिग्रहतरुपरको द्रष्टव्यः। ' पचमो ' पञ्चमआस्रवो ' णियमा ' नियमात् निश्चयेन भवति, नान्यःकश्चनातः परः आस्रव । अथ परिग्रहःकथम्भूतः? इत्याह—' णाणामणि ' इत्यादि। ' णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग- पेस्स-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-

---

निरूपित करते हैं—' जबू एत्तो ' इत्यादि०।

टीकार्थ—श्री सुधर्मा स्वामी पांचवें आस्रव द्वार के स्वरूप को जानने की इच्छावाले श्री जबूस्वामी से कहते हैं—(जबू) हे जम्बू! (एत्तो) चतुर्थ आस्रव द्वार के बाद (परिग्गहो पचमो आसवो णियमा) परिग्रह पाचवा आस्रव द्वार नियम से है। इसके बाद और कोई- आस्रव द्वार नही है यह बात " नियम " शब्द से सूत्रकार ने प्रदर्शित की है ' ग्रहण करना ' अथवा ' जो मूर्च्छाबुद्धि से ग्रहण किया जावे ' वह परिग्रह है क्यों कि शास्त्र में मूर्च्छाको परिग्रह कहा है ऐसी इस परिग्रह शब्द की व्युत्पत्ति है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह परिग्रह शब्द यहाँ परिग्रह रूप वृक्ष के अर्थ वाला जानना चाहिये क्यों कि इसे स्पष्ट करने के लिये जो सूत्रकार विशेषण इसी सूत्र में कह रहे है वे इसी बात की पुष्टि करते है। (णाणामणि-कणग-रयण-महरिय-परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग-पेस्स-हय गो

" जबू एत्तो " ઇત્યાદિ

પાચમા આસ્રવનુ સ્વરૂપ જાણવાની ઇચ્છાવાળા જબૂસ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે—" जबू " હે જબૂ! " एत्तो " ચોથા આસ્રવ દ્વાર પછી " परिग्गहो पचमो आसवो णियमा " નિયમ પ્રમાણે જ પાચમુ આસ્રવ દ્વાર પરિગ્રહ આવે છે ત્યાર પછી બીજુ કોઈ પણ આસ્રવદ્વાર નથી તે બાબત " नियम " શબ્દથી સૂત્રકારે બતાવેલ છે " ગ્રહણ કરવુ " અથવા ' જે ગ્રહણ કરાય તે પરિગ્રહ છે, એવી આ પરિગ્રહ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે તે વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આ પરિગ્રહ શબ્દ અહી પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના અર્થવાળો સમજવાનો છે કારણ કે તે વાતને સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૂત્રકાર જે વિશેષણો આ સૂત્રમા કહી રહ્યા છે તે જ એ વાતને ટેકો આપે છે " णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग-पेस्स-हय-गो

द्रोणमुखानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार युक्तानि, 'कब्बड' कर्बटानि=कुत्सितनगराणि 'मडंब' मडम्बानि-दूर दूर वसति युक्ता प्रदेशाः, 'संबाह' संबाहाः=यत्र कृषका धान्यादिकमानीय स्थापयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि, एतेषां द्वन्द्वः, एषां यत्सहस्रं तेन मण्डितं-शोभितं यत्तत्तादृशं, तथा 'थिमियमेयणीयं' स्तिमितमेदिनीकं-स्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रभयवर्जिता, मेदिनी-भूमि र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्तं' एकच्छत्रम्-एकराजकमित्यर्थः, चक्रवर्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृशं भरतक्षेत्रं परिभुज्येत्यर्थः, तथा 'ससागरं' सागरसहिताम् 'वसुहं' वसुधां-समग्रां पृथ्वीं च चक्रवर्तिपदप्राप्त्यनन्तरं भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणंततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

श्रेष्ठनगर, जल्पथ, स्थल्पथ इन दोनो से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली प्राकार से युक्त खेड, कुत्सितनगररूप कर्बट, दूर दूर वसति से युक्त प्रदेशरूप मडंब, संवाह-जहां पर कृषकजन धान्यादि लाकर रखते हैं ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों मे किसी एक पथ से युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की संख्या से मंडित, तथा (थिमियमेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा (एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिकपनेमें नगनगरादि सहित (भरहं) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा (ससागरं वसुहं भुंजिऊण) चक्रवर्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्र-सहित समस्त पृथ्वीनो षटखंड मंडित भरतक्षेत्र को भी भोग करके (अपरिमियमणंततण्हमणुगयमहिच्छसारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

આદિ શ્રેષ્ઠ નગર, જળમાર્ગે તથા જમીનમાર્ગે પ્રવેશ કરી શકાય એવું નગર, ધૂળના કિલ્લા વાળું ખેડ, કુત્સિત નગર રૂપ કર્બટ જેની આસપાસ ઘણે દૂર સુધી ગામો ન હોય એવું મડંબ, સંબાહ-જ્યાં ખેડૂતો ધાન્યાદિ લાવીને રાખે એવા પ્રદેશો, જળમાર્ગ તથા સ્થળમાર્ગ એ બન્નેમાંથી એક માર્ગ વાળું પત્તન, એ બધાની હજારોની સંખ્યાથી યુક્ત, તથા "थिमिय मेयणीय" સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત ભૂમિવાળા તથા "एगच्छत्त" એક રાજવાળા, ચક્રવર્તિ પદ પ્રાપ્ત કર્યા પહેલા માંડલિક રાજા તરીકે પર્વતો તથા નગરો સહિત "भरहं" ભરતક્ષેત્ર પર સત્તા ભોગવીને, તથા "ससागरं वसुहं भुंजिऊण" ચક્રવર્તિ પદ પ્રાપ્ત કર્યા પછી સમુદ્ર સહિત આખી પૃથ્વીને-છ ખંડ વાળા ભરત ક્ષેત્રને પણ ભોગવીને "अपरि-मियमणंत-तण्ह-मणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो" અપરિ-

भाषा प्रसिद्धानि, 'कुविय' कुप्यानि-गृहोपकरणानि आसन्दीपल्यङ्कादीनि 'धण' धनानि-गणिमादीनि 'धन्न' धान्यानि-शाल्यादीनि, 'पाण' पानानि=दुग्धादीनि, 'भोयण भोजनानि - अशनादीनि 'आच्छायण' आच्छादनानि-वस्त्रकम्बलादीनि, 'गंध' गन्धा - कोष्ठपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल' माल्यानि = पुष्पदीनि 'गंध' गन्धा -कोष्टपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल' माल्यानि=पुष्पादीनि, 'भायण' भाजनानि-स्थलीकटोरादीनि, 'भवण' भवनानि-प्रासादगृहादीनि, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां यो 'विहि' विधि -विधानम्-उपार्जनादि लक्षण, तं 'चेव' एव=अपि, एव शब्दोऽप्यर्थकः, तमपि 'बहुविहिय' बहुविधिकम्-अनेकप्रकारम् 'भुंजिऊण' भुक्त्वा=उपभुज्य इत्यग्रेण सम्बन्धः, तथा 'भरहं' भरतं = भरतक्षेत्रं च भुक्त्वा = कीदृशं भरतक्षेत्रमित्याह ? — 'नग नगर' इत्यादि। 'नगनगरनिगमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकव्वडमडंबसंवाहपट्टणसहस्सपरिमंडियं' नग-नगर-निगम-जनपद-पुरवर-द्रोणमुखखेट-कर्वट-मडम्ब-संवाह-पत्तनसहस्रपरिमण्डितम्, तत्र-'णग' नगाः-पर्वताः 'णगर' नगराणि करवर्जितपुराणि, 'निगम' निगमाः=वणिग्निवासस्थानानि, 'जणवय' जनपदाः=देशाः 'पुरवर' पुरवराणि=नगरश्रेष्ठानि राजधान्यादीनि, 'दोणमुह'

कुरसी पलंग आदि, गणिमादिक धन, शाल्यादिक धान्य, दुग्धादिरूप पान, भोजन, वस्त्र, कम्बल आदि आच्छादन, कोष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यविशेष, पुष्प, स्थाली कटोरा आदि भाजन, प्रासाद गृह आदि भवन, इन सब पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (बहुविहिय चेव) अनेक प्रकार की विधि को भी (भुंजिऊण) भोग करके, तथा (नगनगर-निगमजणवय पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडंब-संवाह पट्टणसहस्स परिमंडिय) नग-पर्वत, नगर-अष्टादश प्रकार के कर से रहित पुर, वणिग्जनों के निवास स्थानरूप निगम, जनपद-देश, राजधानी आदि

શય્યા, આસન, વાહન, કુપ્ય-ખુરસી પલંગ આદિ ઘરનું રાચ રચીલું, સોના મહોર આદિ ધન, ચોખા આદિ ધાન્ય, દૂધ આદિ પેય દ્રવ્યો, ભોજન, વસ્ત્ર, કામળ આદિ ઓઢવાના સાધનો, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગંધિત દ્રવ્યો, પુષ્પ, થાળી વાટકા આદિવાસણો, પ્રાસાદ ગૃહ અને ભવન, એ સઘળા પદાર્થોનું ઉપાર્જન કરવારૂપ "बहुविहिय चेव" અનેક પ્રકારે તેનો "भुंजिऊण" ઉપભોગ કરીને, તથા "नगनगरनिगमजणवय - पुरवर - दोणमुह - खेड- कव्वडमडंब-संवाह-पट्टण-सहस्स-परिमंडिय" નગ-પર્વત, નગર અઢાર પ્રકારના કરથી રહિત શહેર, વેપારીઓના નિવાસસ્થાનરૂપ નિગમ, જનપદ-દેશ રાજધાની

द्रोणमुखानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार युक्तानि, 'कब्बड' कर्बटानि=कुत्सितनगराणि 'मडंब' मडम्बानि-दूर दूर वसति युक्ता प्रदेशाः, 'संवाह' संवाहाः=यत्र कृषका धान्यादिकमानीय स्थापयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि, एतेषा द्वन्द्वः, एषां यत्सहस्रं तेन मण्डित-शोभित यत्तत्तादृश, तथा 'थिमियमेयणीयं' स्तिमितमेदिनीक-स्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रभयवर्जिता, मेदिनी-भूमि र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्त' एकच्छत्रम्-एकराजकमित्यर्थः, चक्रवर्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृश भरतक्षेत्र परिभुज्येत्यर्थः, तथा 'ससागर' सागरसहिताम् 'वसुह' वसुधा-समग्रा पृथ्वीं च चक्रवर्तिपदप्राप्त्यनन्तर भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

---

श्रेष्ठनगर, जलपथ, स्थलपथ इन दोनो से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली प्राकार से युक्त खेड, कुत्सितनगररूप कर्बट, दूर दूर वसति से युक्त प्रदेशरूप मडंब, संवाह-जहां पर कृषकजन धान्यादि लाकर रखते हैं ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों मे किसी एक पथ से युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की संख्या से मंडित, तथा (थिमियमेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा (एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिकपनेमें नगनगरादि सहित (भरह) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा (ससागर वसुह भुजि ऊण) चक्रवर्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्रसहित समस्त पृथ्वीनो षटखंड मंडित भरतक्षेत्र को भी भोग करके (अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिसारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

આદિ શ્રેષ્ઠ નગર, જળમાર્ગે તથા જમીનમાર્ગે પ્રવેશ કરી શકાય એવું શહેર ધૂળના કિલ્લા વાળું ખેડ, કુત્સિત નગર રૂપ કર્બટ જેની આસપાસ ઘણે દૂર સુધી ગામો ન હોય એવું મડંબ, સંબાહ-જ્યાં ખેડૂતો ધાન્યાદિ લાવીને રાખે એવા પ્રદેશો, જળમાર્ગ તથા સ્થળમાર્ગ એ બન્નેમાંથી એક માર્ગ વાળું પત્તન, એ બધાની હજારોની સંખ્યાથી યુક્ત, તથા " थिमिय मेयणीय " સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત ભૂમિવાળા તથા " एगच्छत्त " એક રાજાવાળા, ચક્રવર્તિ પદ પ્રાપ્ત કર્યા પહેલા માંડલિક રાજા તરીકે પર્વતો તથા નગરો સહિત " भरह " ભરતક્ષેત્ર પર સત્તા ભોગવીને, તથા " ससागर वसुह भुजिऊण " ચક્રવર્તિ પદ પ્રાપ્ત કર્યા પછી સમુદ્ર સહિત આખી પૃથ્વીને-છ ખંડ વાળા ભરત ક્ષેત્રને પણ ભોગવીને " अपरि-मियमणत-तण्ह-मणुगय-महिसार-निरयमूलो " અપરિ-

भाषा प्रसिद्धानि, 'कुविय' कुप्यानि-गृहोपकरणानि आसन्दीपल्यङ्कादीनि 'धण' धनानि-गणिमादीनि 'धन्न' धान्यानि-शाल्यादीनि, 'पाण'पानानि=दुग्धादीनि, 'भोयण भोजनानि - अशनादीनि 'आच्छायण' आच्छादनानि-वस्त्रक म्बलादीनि, 'गध' गन्धा - कोष्ठपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल' माल्यानि = पुष्पादीनि 'गध' गन्धा -कोष्टपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल' माल्यानि=पुष्पादीनि, 'भायण' भाजनानि-स्थलीकटोरादीनि, 'भवण' भवनानि-प्रासादगृहादीनि, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां यो 'विहि' विधि -विधानम्-उपार्जनादि लक्षण, त 'चेव' एव=अपि, एव शब्दोऽप्यर्थकः, तमपि 'वहुविहिय' बहुविधिकम्-अनेकप्रकारम् 'भुजिऊण' भुक्त्वा=उपभुज्य इत्यग्रेण सम्बन्धः, तथा 'भरह' भरत = भरतक्षेत्र च भुक्त्वा = कीदृश भरतक्षेत्रमित्याह ? — 'नग नगर' इत्यादि। 'नगनगरनिगमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकव्वडमडवसवाहण पट्टणसहस्सपरिमडिय' नग-नगर-निगम-जनपद-पुरवर-द्रोणमुखखेट-कर्वट मडम्ब-सवाह-पत्तन सहस्रपरिमण्डितम्, तत्र-'णग' नगाः-पर्वताः 'णगर' नगराणि करवर्जितपुराणि, 'निगम' निगमाः=वणिग्निवासस्थानानि, 'जणवय' जनपदा =देशा 'पुर वर' पुरवराणि=नगरश्रेष्ठानि राजधान्यादीनि, 'दोणमुह'

कुरसी पलग आदि, गणिमादिक धन, शाल्यादिक धान्य, दुग्धादिरूप पान, भोजन, वस्त्र, कम्बल आदि आच्छादन, कोष्ठपुट आदि सुगधित द्रव्यविशेष, पुष्प, स्थाली कटोरा आदि भाजन, प्रासाद गृह आदि भवन, इन सब पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (वहुविहिय चेव) अनेक प्रकार की विधि को भी (भुजिऊण) भोग करके, तथा (नगनगर-निगमजणवय पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडब-सवाह पट्टणसहस्स परिमडिय) नग-पर्वत, नगर-अष्टादश प्रकार के कर से रहित पुर, वणिग्जनों के निवास स्थानरूप निगम, जनपद-देश, राजधानी आदि

શય્યા, આસન, વાહન, કુપ્ય-ખુરસી પલગ આદિ ઘરનુ રાચ રચીલુ, સોના મહોર આદિ ધન, ચોખા આદિ ધાન્ય, દૂધ આદિ પેય દ્રવ્યો, ભોજન, વસ્ત્ર, કામળ આદિ ઓઢવાના સાધનો, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગ ધિત દ્રવ્યો, પુષ્પ, થાળી વાટકા આદિવાસણો, પ્રાસાદ ગૃહ અને ભવન, એ સઘળા પદાર્થોનુ ઉપાર્જન કરવારૂપ "बहुविहिय चेव" અનેક પ્રકારે તેનો "भुजिऊण" ઉપભોગ કરીને, તથા "नगनगरनिगमजणवय - पुरवर - दोणमुह - खेड- कव्वडमडब-सवाह-पट्टण-सहस्स-परिमडिय" નગ-પર્વત, નગર અઢાર પ્રકારના કરથી રહિત શહેર, વેપારીઓના નિવાસસ્થાનરૂપ નિગમ, જનપદ - . ની

त्वक्पत्रपल्लवाः, तेपा धर - धारक । तथा 'जस्स' यस्य परिग्रहतरोः 'कामभोगा' कामाभोगा एव 'पुष्फफल' पुष्पफलानि । तथा-'आयासविसूरणा-कलहपकपियग्गसिहरो' आयासविसूरणाकलहप्रकम्पिताग्रशिखरः-आयासः= शरीरश्रमः, विसूरणा=मानसी पीडा, कलहः=वचनभण्डनम्, एत एव प्रकम्पित-मग्रशिखरम्=अग्रभागो यस्य सः, तथा 'नरवइसपूजिओ' नरपतिसंपूजितः= भूपतिपरिसेवितः, तथा -'बहुजणस्स हियथदइओ' बहुजनस्य हृदयदयितः- अनेकजनवल्लभः इत्यर्थः, तथा-अयं परिग्रह तरुः-'इमस्स' अस्य-प्रत्यक्षस्य 'मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स' मोक्षवर मुक्तिमार्गस्य-मोक्षस्य वरः-श्रेष्ठो यो मुक्तिरूपो निर्लोभतारूपो मार्गः=उपायस्तस्य 'फलिहभूओ' अर्गलाभूतः-मोक्षस्यावरोधक-काष्ठभूतो वर्त्तते, इत्येवं स्वरूपं 'चरमं अहम्मदारं' चरममधर्मद्वारम्=अन्तिम-मधर्मद्वारम् । एतत्कथनेन यादृशेति प्रथममन्तरद्वारमुक्तम् ॥ सू० १ ॥

मायाचारी ही जिसकी छाल है, पत्र हैं और पल्लव हैं । (जस्स पुप्फफल कामभोगा) कामभोग ही जिसके पुष्प और फल हैं । (आयासविसूर-णाकलहपकपियग्गसिहरो) आयास शारीरिकश्रम विसूरणा-मानसिक पीडा, और कलह,ये ही जिस के प्रकपित अग्रभाग हैं (नरवइसंपूजिओ) तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष भूपतियों द्वारा परिसेवित है,-और (बहुजण-स्सहियथदइओ) अनेक जनों को अत्यत प्यारा है, (इमस्स मोक्खवर मुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ) तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष मोक्ष के श्रेष्ठ मुक्तिरूप-निर्लोभतारूप-मार्ग का अर्गला रूप है । (चरिमं अहम्मदारं) ऐसा यह पांचवा अन्तिम अधर्मद्वार है ।

भावार्थ—परिग्रह नाम ममत्वभाव का है । इसकी दूसरी सज्ञा मूर्च्छा भी है । इस मूर्च्छारूप तृष्णा का अन्त नही है । परिग्रह के

માયાચારી જ તેની છાલ પાન અને પલ્લવ છે "जस्स पुप्फफल कामभोगा" કામભોગ જ તેના પુષ્પ અને ફળ છે "आयास विसूरणाकलहपकपियग्ग सिहरो" આયાસ-શારીરિકશ્રમ, વિસૂરણા-માનસિક પીડા અને કલહ, એ જ તેના ડોલાયમાન અગ્રભાગો છે "नरवइ सपूजिओ" તથા આ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષનુ નૃપો સેવન કરે છે અને "बहुजणस्स हियथदइओ" તે અનેક લોકોને અત્યત પ્રિય લાગે છે, "इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ" તથા આ પરિગ્રહ રૂપ વૃક્ષ મોક્ષના શ્રેષ્ઠ મુક્તિરૂપ-નિર્લોભતારૂપ માર્ગના આડે આગ-ળીયા જેવુ છે "चरिमं अहम्मदारं" એવુ આ પાચમુ અધર્મ દ્વાર છે

ભાવાર્થ—મમત્વ ભાવને પરિગ્રહ કહે છે તેનુ નામ મૂર્ચ્છા પણ છે આ મૂર્ચ્છારૂપ તૃષ્ણાનો પાર જ હોતો નથી પરિગ્રહના પજામા ફસાયેલ જીવ

रयमूलो ' अपरिमितानन्ततृष्णानुगतमहेच्छासारनिरयमूलः, अपरिमिता=प्रमाण-रहिता याऽनन्ततृष्णा तयाऽनुगता या महेच्छा = अप्राप्तार्थाभिलाषरूपा तस्याः सार =स्थिरांशरूपो यो निरयो दुर्गतिः स एव मूलं यस्य परिग्रहतरो र्यः सः तथोक्त, पुनः कीदृश परिग्रहतरुरित्याह—' लोभकलिकसायमहक्खधो ' लोभ-कलिकषायमहास्कन्धः=लोभः, कलिः=युद्धम्, कषाय – क्रोधमानमायारूपश्च महान् स्कन्धो यस्य स, यद्यपि कषाय ग्रहणेनैव लोभो गतार्थः, तथापि तस्य प्राधान्य ख्यापनार्थं पृथगुपादानम् । तथा ' चिंतासयनिचिय विउलसालो ' चिन्ताशत निचितविपुलशालः–चिन्ताशतानि निचितानि-एकत्रीकृतान्येव विपुला –विशाला शालाः–शाखा यस्य स ' चिन्ताशतरूपविपुलशाखासमन्वितः । तथा–' गारव पविरल्लियग्ग विडवो ' गौरवपविरल्लिताग्रविटप – ' गारव ' गौरवाणि= ऋद्धिरससातरूपाण्येव ' पविरल्लिय ' विस्तारवन्त, अग्ग देशीशब्दः ' अग्ग-विडव ' अग्र विटपाः=शाखामध्यभागाग्राणि यस्य सः, तथा ' नियडितया पत्त पल्लवधरो ' निकृतित्वक्पत्रपल्लवधरः–निकृति'–माया, सैव ' तयापत्तपल्लव '

रहित–ऐसी अनततृष्णा से अनुगत अप्राप्त अर्थ की अभिलाष रूप महेच्छा का सार–स्थिरांशरूप जो निरय–दुर्गति है वह दुर्गति ही जिस परिग्रहरूप तरु का मूल है (लोभकलिकसायमहक्खधो) तथा जिसके महान् स्कध, लोभ–लालच, कलि–युद्ध एव क्रोध, मान, माया, कषाय ये है। यद्यपि कषाय के ग्रहण से लोभ का ग्रहण हो जाता है फिर भी उसका जो यहा पृथक् रूप से ग्रहण किया गया है उसका तात्पर्य उसकी प्रधानता दिखलाने का है। तथा (चिंतासयनिचियविउल सालो) जिसकी विशाल शाखाएँ एकत्रीभूत सैंकड़ो चिन्ताएँ है। तथा (गारवपविरल्लियग्ग-विडवो) ऋद्धि रससातरूप गौरव ही जिसके विस्तार युक्त अग्रविटप है–शाखा के मध्यभाग एव अग्रभाग हैं। (नियडितयापत्तपल्लवधरो) निकृति–

મિત–પ્રમાણ રહિત તૃષ્ણાથી અપ્રાપ્ત વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા રૂપ મહેચ્છાનો સાર–સ્થિરાંશરૂપ જે દુર્ગતિ છે તે દુર્ગતિ જ તે પરિગ્રહરૂપી વૃક્ષનુ મૂળ છે, " लोभकलिकसायमहक्खधो " લોભ,–લાલચ, કલિ–યુદ્ધ અને ક્રોધ, માન, માયા, કષાય આદિ તે વૃક્ષના મહાન સ્કંધો છે જો કે કષાયમા લોભનો સમાવેશ થઈ જાય છે છતા પણ તેને અહી અલગ રીતે ગ્રહણ કરવામા આવેલ છે તેનો હેતુ તેની પ્રધાનતા બતાવવાનો. તથા " चिंतासय निचिय विउल सालो " સેકડો એકત્રિત ચિંતાઓ તેની શાખાઓ છે તથા " गारव पविरल्लियग्गविडवो " ઋદ્ધિરસ સાતરૂપ ગૌરવ જ તેના વિસ્તાર યુક્ત અગ્રવિટપ છે–શાખાના મધ્ય ભાગ અને અગ્રભાગ છે " नियडितयापत्तपल्लवधरो " નિકૃતિ–

अधुना यन्नामेति द्वितियमन्तरद्वारमाह—

मूलम्—तस्स नामाणि गोणाणि हुंति तीस, त जहा—परिग्गहो १, सचयो २, चयो ३, उवचयो ४, निहाणं ५, संभारो ६, संकरो ७ एवं आयारो ८, पिंडो ९ दव्वसारो १०, तहा महिच्छा ११, पडिबंधो १२, लोहप्पा १३, महद्दी १४, उवगरण १५, सरक्खणा य १६, भारो १७, संपाउप्पायको १८, कलिकरंडो १९, पवित्थरो २०, अणत्थो २१, सथवो २२ अगुत्ती २३, आयासो२४, अविओगो २५, अमुत्ती २६, तण्हा २७, अणत्थगो २८, असत्थी २९ असतोसे ३०, त्तिविय, तस्स एयाणि एवमादी नामधेज्जाणि हुंतितीसं ॥ सू० २॥

टीका—'तस्य य' इत्यादि—

'तस्स' तस्य–परिग्रह नामक पञ्चमाधर्मद्वारस्य च 'नामाणि' नामानि 'इमानि–अनुपद वक्ष्यमाणानि 'गोणाणि' गौणानि–गुणनिष्पन्नानि 'हुति' भवन्ति, कियत्सख्यकानि भवन्ति? इत्याह—'तीस' त्रिंशत्सख्यकानीति, 'तजहा' तद्यथा–'परिग्गहो' परिग्रहः – परिगृह्यते इति परिग्रहः—हिरण्य सुवर्ण धनधान्यादि, १ 'सचयो' सचयः–धनधान्यादि राशीना समूही करणम् २ 'चयो' चय –एकैकमितिकृत्वाऽऽदानम् ३, 'उवचयो' उपचयः–एकैकमिति-कृत्वाऽऽदत्ताना धनधान्यादिना राशिकरणम् ४, 'निहाण' निधान भुम्यादौ

अथ "यन्नाम" इस द्वितीय अन्तर्द्वार को सूत्रकार कहते है—'तस्स नामाणि' इत्यादि०।

टीकार्थ–(तस्स) इस परिग्रह के (गोणाणि नामाणि तीस हुति) गुण निष्पन्न तीस नाम ह। (तजहा) वे इस प्रकार है–(परिग्गहो १, सचयो २, चयो ३, उवचयो ४, निहाण ५, सभारो ६, सकरो ७, एव

હવે "यन्नाम" એ બીજા અન્તર્દ્વારનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે—
"तस्स नामाणि" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"तस्स" આ પરિગ્રહના "गोणाणि नामाणि तीस हुति" ગુણાનુસાર ત્રીસ નામો છે "त जहा" તે ત્રીસ નામો આ પ્રમાણે છે—"परिग्गहो १ सचयो २ चयो ३ उवचयो ४ निहाण ५ सभारो ६ सकरो ७ एवआयारो ८

फंदे मे फँसा हुआ प्राणी अपनी अनन्त तृष्णाओं की पूर्ति करने में ही लगा रहता है। उसकी कोई भी तृष्णा शान्त नहीं होती है। यदि कदाचित् कोई तृष्णा शांत भी हो जावे तो दूसरी तृष्णा उसके समक्ष मुँह फाड़कर आ जाती है, और उसकी पूर्ति करने में वह लग जाते है। इस तरह करते २ वह प्राणी उनकी पूर्ति करने में आसक्ति से बंध होता जाता है और अपना विवेक खो बैठता है। विवेक का खो बैठना परिग्रह है। यहां पर सूत्रकार ने इस परिग्रहरूप पंचम आस्रव द्वार का वर्णन वृक्ष के रूपक से किया है। परिग्रही जीव छोटी, बड़ी, जड, चेतन, बाह्य या आन्तरिक चाहे जो वस्तु हो, और कदाचित् न भी हो तो भी उसमें बंध जाता है। नाना प्रकार के मणि आदि पदार्थों को भरतखंड की पूर्ण विभूति को भोग करके भी परिग्रही जीव की तृष्णा अनवरत अशांत ही रहती है। इस वृक्ष की जड़, स्कंध, विशाल शाखाएँ, अग्रविटप, छाल पत्र, पल्लव, पुष्प, फल, आदि क्या २ हैं यह सब विषय ही इस सूत्र में विवेचित किया गया है। इस तरह के कथन से सूत्रकार ने परिग्रह का यादृश नामका जो प्रथम अन्तर्द्वार है उसका वर्णन किया हैं, क्यो कि इस द्वार में स्वरूपका कथन होता है, वह यहा पर अच्छी तरह से दिखला दिया गया है ॥सू० १॥

પોતાની અનંત તૃષ્ણાઓ પૂરી કરવામાં જ મંડયા રહે છે તેની કોઇ પણ તૃષ્ણા શાંત પડતી નથી જો કોઈ તૃષ્ણા શાંત પડી તો તેની જગ્યાએ બીજી તૃષ્ણા મોઢું ફાડીને તૈયાર થઇ જાય છે, અને તે સંતોષવાને તે જીવ પ્રવૃત્ત થાય છે આમ કરતા કરતા તેની પૂર્તિ કરવામાં આસક્તિથી બંધાઈ જાય છે અને પોતાની વિવેક બુદ્ધિ ગુમાવી દે છે વિવેકને ખોઈ નાખવો તે પરિગ્રહ છે અહીં સૂત્રકારે પરિગ્રહ નામના પાંચમા આસ્રવ દ્વારનું વર્ણન પરિગ્રહને વૃક્ષનું રૂપક દઈને કર્યું છે પરિગ્રહી જીવ, નાની, મોટી, જડ, ચેતન, બાહ્ય કે આંતરિક ગમે તે પ્રકારની ચીજમાં આસક્ત બની જાય છે વિવિધ પ્રકારના મણિ આદિ પદાર્થોનો તથા ભરતખંડની સંપૂર્ણ સમૃદ્ધિનો ઉપભોગ કરીને પણ પરિગ્રહી જીવની તૃષ્ણા સતત અશાંત જ રહે છે આ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના મૂળ, થડ, વિશાળ શાખાઓ, અગ્રવિટપ, છાલ, પાન, પલ્લવ, પુષ્પ, ફળ વગેરે શું શું છે, તે બધાનું વિવેચન આ સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે આ પ્રમાણેના કથન વડે સૂત્રકારે પરિગ્રહના યાદૃશ (કેવા પ્રકારનું) નામના પહેલા અંતર્દ્વારનું વર્ણન કર્યું છે, કારણ કે આ દ્વારમાં સ્વરૂપનું કથન થાય છે તે સ્વરૂપનું વર્ણન અહીં સુંદર રીતે કરવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ-૧ ॥

एवम्-यथा धनप्राप्तिर्भवेदेवम्, आचारः-आचरणम् ८, 'पिंडो' पिण्ड =धन-धान्यादीना समुदायः ९, 'दव्वसरो' द्रव्यसार.-द्रव्याणामेव सर्वोत्कृष्टपदार्थत्वेन परिज्ञानम् १०, 'तहा' तथा 'महिच्छा' महेच्छा-अपरिमितवाञ्छा ११, 'पडिवंधो' प्रतिबन्धः-आसक्तिकारकः १२, 'लोहप्पा' लोभात्मा-लोभ-

अतः इसका नाम सभार है। परिग्रही जीव धान्य आदि पदार्थों को कोष्ठ आदि में भरकर रख देता है-ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे काम में लाये जा सके-इसलिये इसका छठा नाम सभार है ६। परिग्रही जीव सुवर्ण आदि द्रव्यके अधिक हो जाने पर उनका अग्नि में गलवा-कर पाशा करवा लेता है, इसलिये इसका सातवा नाम सकर है ७। धन कमाने की लालसा से परिग्रही जीव ऐसा आचरण करता है कि जिससे धन का लाभ अधिकमात्रा में होता रहे, इसलिये इसका आठवा नाम एवमाचार है ८। पिण्ड इसका नाम इसलिये है कि इस में धन धान्यादि पदार्थों का समुदाय पिण्डरूप से घर मे रहा करता है ९। परिग्रही जीव धनादि पदार्थों को ही सर्वोत्तम मानता है इसलिये इनका नौवा नाम द्रव्यसार है १०। परिग्रही जीव की इच्छाएँ आकाश की तरह अनत हुआ करती हैं इसलिये इस का नाम महेच्छा है ११। मनुष्यों में इस परि-ग्रह से ही पर के द्रव्यों में आसक्ति जगती है इसलिए इसका नाम प्रतिबध है १२। परिग्रही जीव मे लोभ की मात्रा बहुत अधिक होती

ધાન્ય આદિ પદાર્થ ભરીને રાખી મૂકાય છે, તેથી તેનુ નામ 'સભાર' છે પરિગ્રહી જીવ ધાન્યાદિ પદાર્થોને કોઠી આદિમા ભરી રાખે છે કે જેથી જરૂર પડે ત્યારે તેનો ઉપયોગ કરી શકાય, તેથી તેનુ છઠ્ઠુ નામ 'સભાર' છે (૭) પરિગ્રહી જીવ સુવર્ણ આદિ દ્રવ્ય વધી જાય છે ત્યારે તેને અગ્નિમા ગળાવીને તેના પાશા પડાવી લે છે, તેથી તેનુ સાતમુ નામ 'સકર' છે (૮) ધન કમાવાની લાલસાથી પરિગ્રહી જીવ એવુ આચરણ કરે છે કે જે આચરણથી ધન પ્રાપ્તિ વધુ પ્રમાણમા થતી રહે, તેથી તેનુ આઠમુ નામ એ-વમાચાર છે (૯) તેનુ નવમુ નામ 'પિંડ' એ કારણે છે કે પરિગ્રહી જીવ ધન ધાન્યાદિ પદાર્થોનો જથ્થો પિંડરૂપે ઘરમા રાખ્યા કરે છે (૧૦) પરિ-ગ્રહી જીવ ધનાદિ પદાર્થોને જ સર્વોત્તમ માને છે, તેથી તેનુ દસમુ નામ 'દ્રવ્યસાર' છે (૧૧) પરિગ્રહી જીવોની ઇચ્છાઓ આકાશની જેમ અનત હોય છે, તેથી તેનુ નામ "મહેચ્છા" છે (૧૨) આ પરિગ્રહને કારણે જ પર દ્રવ્યમા માણસોને આસક્તિ પેદા થાય છે તેથી તેનુ નામ 'પ્રતિબધ' છે (૧૩) પરિગ્રહી જીવમા લોભની માત્રા ઘણી જ વધારે હોય છે, તેથી તે

निधानरूपेण स्थापनम् ५, 'संभारो' संभारः-सम्भ्रियते सम्भरणं वा संभार,-कोष्ठादौ भरणमित्यर्थः ६, 'संकरो' संकर-सकीर्यते=सपिण्डयते इति, सङ्करः-सुवर्ण रजतादीन् ताभ्रौ परिद्रव्य पाशकादिरूपकरणम् ७, 'एव आयारो' एवमाचारः-

आयारो ८, पिंडो ९, दव्वसारो १०, तहा महिच्छा ११, पडिबंधो १२, लोहप्पा १३, महद्दी १४, उवगरण १५, संरक्खणा य १६, भारो १७, सपायुपायको, १८, कलिकरंडो १९, पवित्थरो २०, अणत्थो २१, संथवो २२, अगुत्ती २३, आयासो २४, अविओगो २५, अमुत्ती २६, तण्हा २७, अणत्थगो २८, आसत्थी २९, असंतोसे ३०, त्ति विय, तस्स एयाणि एवमाई नामधेज्जाणि हुति तीसं) हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य आदि, पदार्थ ग्रहण किये जाते हैं इसलिये ये परिग्रह हैं अतः इसका प्रथम नाम परिग्रह है १। धन धान्य आदिकी राशिया इसमें एकत्रित की जाती है अतः इस अपेक्षा इसका दूसरा नाम सचय है २। परीग्रही जीव एक एक करके वस्तुओं का सग्रह या ग्रहण करता है, इस अपेक्षा इसका तीसरा नाम चय है ३। उपचय शब्द का अर्थ वृद्धि है, क्रम क्रम करके कमाये गये धन धान्य आदि पदार्थों का इस उपचय में वर्धन होता है इसलिये इसका चौथा नाम उपचय है ४। जमीन आदि में धनादिद्रव्य को परिग्रहि जीव गाड़ दिया करते हैं, ताकि चौर आदि से उसकी रक्षा होती रहे, इसलिये इसका पांचवा नाम निधान है ५, कोष्ठ आदि में जो वर्द्धित धान्य आदि पदार्थ भरकर रख दिये जाते हैं,

पिंडो ९ दव्वसारो १० तहा-महिच्छा ११ पडिबंधो १२ लोहप्पा १३ महद्दी १४ उवगरण १५ सरक्खणाय १६ भारो १७ सपायुपायको १८ कलिकरंडो १९ पवित्थरो २० अणत्थो २१ संथवो २२ अगुत्ती २३ आयासो २४ अविओगो २५ अमुत्ती २६ तण्हा २७ अणत्थगो २८ आसत्थी २९ असंतोसे ३० त्ति वि य तस्स एयाणि एवमाई नामधेज्जाणि हुति तीस " (१) હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન, ધાન્ય આદિ પદાર્થો ગ્રહણ કરવામા આવે છે તેથી તે પરિગ્રહ છે તેથી તેનુ નામ 'પરિગ્રહ' છે (૨) ધન ધાન્ય આદિના ઢગલા તેમા એકત્ર કરાતા હોવાથી તેનુ બીજુ નામ 'સચય' છે (૩) પરિગ્રહી જીવ એકે એકે વસ્તુ ઓનો સગ્રહ કરે છે અથવા તેને ગ્રહણ કરે છે તેથી તેનુ ત્રીજુ નામ 'ચય' છે (૪) ઉપચય શબ્દનો અર્થ વૃદ્ધિ થાય છે ક્રમે ક્રમે કમાયેલ ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થનુ આ ઉપચયમા વર્ધન થાય છે, તેથી તેનુ ચોથુ નામ 'ઉપચય' (૫) ચોર આદિથી રક્ષણ કરવા માટે ધન આદિ દ્રવ્યને પરિગ્રહી લોકો દાટી દે છે તેથી તેનુ પાચમુ નામ 'નિધાન' છે (૬) કોઠી આદિમા-વધેલ

सस्तवः=परिचयः-परिचयकारणत्वात् २२, 'अगुत्ती' अगुप्तिः=तृष्णाया अगोपनम् २३, 'आयासो' आयासः=दुःखम्, आयासहेतुत्वात्परिग्रहोऽप्यायासः-उक्तः २४, 'अविओगो' अवियोगः-धनादरपरित्यागः२५ 'अमुत्ती' अमुक्तिः-अनिर्लोभता २६, 'तण्हा' तृष्णा-धनादेराकाङ्क्षा २७, 'अणत्थगो' अनर्थकः-अनर्थकारणत्वात् २८, 'आसत्थी' आसक्तिः-मूर्च्छा, तत्कारणत्वात् २९,

मे लगा रहता है इसलिये इसका नाम प्रविस्तर है २०। परिग्रह अनेक अनर्थो का कारण रहता है इसलिये इसका नाम अनर्थ है २१। परिग्रही जीवको अनेक जीवो के साथ सस्तवपरिचय रहता है। इसलिये परिचय का कारण होने से इसका नाम सस्तव है २२। इसमें तृष्णा का गोपन नही होता है-अत इसका नाम अगुप्ति है २३। परिग्रह की ज्वाला में जलते हुए जीव को बहुत अधिक आयासों दुःखों को भोगना पडता है इसलिये उनका हेतु होने से परिग्रह का नाम भी आयास है २४। परिग्रही जीव मे लोभ की अधिक से अधिक मात्रा होने के कारण वह धनादिक का परित्याग दान आदि सत्कृत्यों मे भी नही कर सकता है इसलिये इसका नाम अवियोग है २५। इस परिग्रही जीव मे निर्लोभता नही होती है इसलिये इसका नाम अमुक्ति है २६। धनादिक के आगमन-आय की आकाक्षा परिग्रही जीव के सदाकाल रहती है इस लिये इसका नाम तृष्णा है २७। परिग्रह अनेक अनर्थो का कारण है इसलिये इसका नाम अनर्थक है २८। मूर्च्छा का कारण होनेसे इसका

વિસ્તાર કરવામા લાગ્યો રહે છે, છેથી તેનુ નામ 'प्रविस्तार' છે (૨૧) પરિગ્રહ અનેક અનર્થોનુ કારણ બને છે, તેથી તેનુ નામ 'अनर्थ' છે (૨૨) પરિગ્રહી જીવનો અનેક જીવની સાથે 'सस्तव' પરિચય થતો રહે છે, તેથી પરિચયનુ કારણ હોવાથી તેનુ નામ 'सस्तव' છે (૨૩) તેમા તૃષ્ણાનુ ગોપન થતુ નથી, તેથી તેનુ નામ 'अगुप्ति' છે (૨૪) પરિગ્રહની જવાળામા જળતા જીવોને ઘણા વધારે આયાસો-દુ ખો ભોગવવા પડે છે તેથી તે આયાસોના કારણરૂપ હોવાથી પરિગ્રહનુ નામ પણ "आयास" છે (૨૫) પરિગ્રહી જીવોમા લોભની માત્રા વધારેમા વધારે હોવાને કારણે તેઓ દાન આદિ સત્કૃત્યોમા ધનનો પરિત્યાગ કરી શકતા નથી તેથી તેનુ નામ 'अवियोग' છે (૨૬) તે પરિગ્રહી જીવમા નિર્લોભતા હોતી નથી, તેથી તેનુ નામ 'अमुक्ति' છે (૨૭) ધનાદિ પદાર્થો મેળવવાની આકાક્ષા પરિગ્રહી જીવને સદાકાળ રહેછે, તેથી તેનુ નામ 'तृष्णा' છે (૨૮) પરિગ્રહ અનેક અનર્થોને માટે કારણરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ 'अनर्थक' છે (૨૯) મૂર્છા 'आसक्ति' નુ કારણ

स्वभावः १३, 'महट्टी' महार्तिः, महार्तिकारणत्वात् १४, 'उवकरण' उपकरणं= सामग्री १५, 'सरक्खणय' सरक्षणा च–शरीरादीना संरक्षणमित्यर्थः १६, 'भारो' भार–अष्ट कर्मभारकारणम् १७, 'संपायुप्पायगो' संपातोपायकः–संपातानां-दुर्गतौ प्रस्थितानाम् उपायको मार्गभूतः१८, 'कलिकरंडो' कलिकरण्ड'–कलीनां= कलहानां करण्ड इवपात्रविशेष इव कलिकरण्ड १९, 'पवित्थरो' प्रविस्तरः– धनधान्यादिविस्तारः २०, 'अणत्थो' अनर्थ'–अनर्थकारणत्वात् २१, 'संथवो'

है, इसलिये यह परिग्रह लोभात्मा लोभ स्वभाव है १३। इस परिग्रह से जीव को बड़ी से बड़ी आर्त्तियों का सामना करना पड़ता है अतः उन आर्त्तियों का करण होने से यह परिग्रह महार्तिरूप है १४। इस परिग्रह के प्रभाव से ही विविध प्रकार की सामग्री जीव एकत्रित करता है अतः इसका नाम उपकरण है १५। परिग्रही जीव अपने शरीर आदि पदार्थों की रक्षा करने में विशेष सावधान रहता है। इसलिये इसका नाम सरक्षण है १६। परिग्रही जीव के परिणामों की सक्लेशता के कारण अष्टविध कर्मो का बंध बहुत तीव्र होता है इसलिये इसका नाम भार है १७। परिग्रही जीव का पतन दुर्गति में होता है अतः दुर्गति में पतन होने का यह मार्गभूत है इसलिये इसका नाम संपातोपायक है १८। परिग्रही जीव के अनेक शत्रु उत्पन्न हो जाते है हर एक के साथ कलह आदि होने लगते हे इसलिये यह परिग्रह कलहों का एक प्रकार का करण्डपिटारा है–इसलिये इसका नाम कलहकरण्ड है १९। परिग्रही जीव अपने धन धान्य आदि पदार्थो का विस्तार करने

પરિગ્રહ લોભાત્મા લોભ સ્વભાવ છે (૧૪) આ પરિગ્રહને લીધે જીવોને મોટામા મોટી આફતોનો સામનો કરવો પડે છે, તેથી એ આર્તિયો (આફતો) નુ કારણુ હોવાથી તેપરિગ્રહ મહાર્તિરૂપ છે (૧૫) તે પરિગ્રહના પ્રભાવથી જ વિવિધ પ્રકારની સામગ્રી જીવ એકત્રિત કરે છે, તેથી તેનુ નામ 'उवकरण' છે (૧૬) પરિગ્રહી જીવ પોતાના શરીર આદિ પદાર્થોના રક્ષણુને માટે વધારે સાવચેત રહે છે, તેથી તેનુ નામ 'सरक्षण' છે (૧૭) પરિગ્રહી જીવની વૃત્તિઓની સકુચિતતાને કારણે અષ્ટવિધ કર્મોનો બધ ઘણો જ તીવ્ર હોય છે, તેથી તેનુ નામ 'भार' છે પરિગ્રહી જીવ દુર્ગતિમા પડે છે દુર્ગતિમા પતન કરાવવાના રાહરૂપ હોવાને કારણે તેનુ નામ 'सपातोपायक' છે (૧૯) પરિગ્રહી જીવના અનેક શત્રુઓ પેદા થાય છે દરેકની સાથે તેને કલહ આદિ થયા કરે છે તે કારણે તે પરિગ્રહ કલહોના એક પ્રકારના કરડિયા જેવો હોવાથી તેનુ નામ 'कलहकरण्ड' છે (૨૦) પરિગ્રહ જીવ પોતાના ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોનો

विहा जोइसिया य देवा बहस्सइ चंदसूर सुक्कसणिच्छरा राहुधूमकेउ बुहा य अंगारका य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा जेयगहा जोइसियम्मि चारं चरंति, केऊयगइरइया अट्ठावीसति विहा य नक्खत्त देवगणा णाणासंठाणसंठियाओ य तारगाओ, ठियलेस्साचारिणो य अविस्साममंडलगई। उवरिचरा उड्ढलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुया कप्पवरविमाणवासिणो सुरगणा, गेवेज्जा, अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महिड्ढिया उत्तमा सुरवरा एव चते चिउव्विहासपरिसा वि देवा ममायंति। भवण वाहणजाणविमाणसयणासणाणि य णाणाविहवत्थभूसणाणि य पवरपहरणाणि य णाणामणि पंचवण्णदिव्वं य, भायणविहिं, नाणाविहकामरूववेउव्विय, अच्छरगणसंघाए, दीवसमुद्दे, दिसाओ, विदिसाओ, चेइयाणि य वणसंडे पव्वए गामनगराणि य आरामुज्जाणकाणणाणि य कूवसरतलागवाविदीहिय देवकुलसभपवावसहिमाइयाइं कित्तणाणि य परिगिण्हित्ता परिग्गह विउलदव्वसार देवा वि सइंदगा न तित्ति न तुट्ठि उवलभंति, अच्चत्त विउललोभाभिभूयसन्ना।

वासहर इक्खुगारवट्टपव्वयकुंडलरुयगवरमाणुसुत्तरकालोदहिलवणसलिलदहपतिरतिकरअंजणकसेलदहिमुह ओवायुप्पायकंचणकाचित्तजमकवरसिहरिकूडवासी॥सू० ३॥

टीका— 'ते च' पुण परिग्गहं' 'ते च' पुन परिग्रह 'पुनः' शब्दोऽत्र

'असंतोसेत्ति विय' असंतोषः ३०, इत्यपि च 'तस्स' तस्य-परिग्रहस्य 'एयाणि' एतानि 'एवमादि' एवमादीनि-उक्तप्रकाराणि 'नामधेज्जाणि' नामधेयानि=नामानि 'हुति, भवन्ति 'तीसं' त्रिंशत्। परिग्रहस्य परिग्रहाद्य-संतोषान्तानि त्रिंशन्नामधेयानि भवन्तीत्यर्थः। अनेन 'यन्नामेति' द्वितीयमन्तर-द्वारमुक्तम् ॥सू०२॥

अथ यथा ये परिग्रहं कुर्वन्ति तानाह—'तं चपुणे' इत्यादि—

मूलम्—तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवणवर विमाणवासिणो परिग्गह रुईयी परिग्गहे विविहकरणबुद्धी देवनिकाया य असुरभुयगसुवन्नविज्जुजलण—दीव—उदहि दिसि—पवण—थणिय-अणपन्नियपणपन्निय इसिवाइय भूयवाइय कंदिय महाकंदियकुहण्ड पतग देवा पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस—किंनर किंपुरिस महोरगगंधव्वा य तिरियवासी। पंच-

---

नाम आसक्ति है २९। परिग्रही जीव को जीवनभर सुखप्रद संतोष नहीं होता है अतः असंतोषका हेतु होने से इसका नाम भी असंतोष है ३०। इस प्रकार इस परिग्रह के ये पूर्वोक्त प्रकार से तीस नाम हैं। इस तरह इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने "यन्नाम" यह द्वितीय अन्तर-द्वार कहा है।

भावार्थ—परिग्रह नामके पंचम आस्रव द्वार के कितने नाम गुण निष्पन्न हो सकते हैं यह बात सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा प्रदर्शित की है। परिग्रह से लेकर असंतोष पर्यन्त जो ये तीस नाम प्रकट किये हैं वे कहीं तो कारण में कार्य के उपचार से और कहीं कार्य में २ कारण के उपचार से बनाये गये हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ सू० २ ॥

હોવાથી તેનુ નામ 'आसक्ति' છે (૩૦) પરીગ્રહી જીવને જીવનભર સુખપ્રદ સંતોષ થતો નથી, તેથી અસંતોષના કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ 'असंतोष' છે આ પ્રમાણે પરિગ્રહના પૂર્વોક્ત ત્રીસ નામ છે આ રીતે આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકારે 'यन्नाम' નામના બીજા અન્તર દ્વારનુ કથન કર્યુ છે

ભાવાર્થ—પરિગ્રહ નામના પાંચમા આસ્રવ દ્વારના ગુણ પ્રમાણે કેટલા નામ હોઇ શકે છે તે બાબત સૂત્રકારે આ સૂત્રમા દર્શાવી છે પરિગ્રહથી લઈને અસંતોષ સુધીના જે ત્રીસ નામો પ્રગટ કર્યા છે તેમાના કેટલાક કારણમા કાર્યના ઉપચારથી અને કેટલાક કાર્યમા કારણના ઉપચારથી બનાવવામા આવેલ છે, એમ સમજવાનુ છે ॥ સૂ-૧॥

परिग्रहरुचयः-परिग्रहे रुचि-आसक्तिर्येषां ते तथोक्ताः, तथा 'परिग्गहो' परिग्रहे-परिग्रहविषये 'विविहकरणबुद्धी' विविधकरणबुद्धयः-विविधानि करणानि क्रिया बुद्धिश्च येषां ते तथोक्ताः, परिग्रहोपार्जनमतय इत्यर्थः, एतादृशा इन्द्रसहिता देवा परिग्रह परिगृह्य न तृप्तिं, न तुष्टिमुपलभन्ते, इत्यग्रेण सम्बन्ध, तत्र 'देवनिकाया य देवनिकायाश्च वक्ष्यमाणा ता नेव भवनपत्यादीन् नामनिर्देशपुरस्सर माह- 'असुर' असुराः=असुरकुमारा, 'भुयग' भुजगाः=नागकुमाराः 'सुवन्न' सुपर्णाः-सुपर्णकुमाराः, 'विज्जु' विद्युतः-विद्युत्कुमाराः 'जलण' ज्वलना - अग्निकुमारा, 'दीव' द्वीपा.-द्वीपकुमाराः 'उदहि' उदधिकुमाराः 'दिसि' दिशाकुमाराः 'पवण' पवनाः=वायुकुमाराः 'थणिय' स्तनितकुमाराः, एते भवनपतयः १, तथा-'अणपन्नि य 'अनपन्नि काः 'अप्रज्ञप्तिकाः' 'पणपन्नि य' पणपन्निकाः (पञ्चप्रज्ञप्तिका) 'इसिवाइ य' ऋषिवादिका 'भूयवाइय' भूत वादिकाः 'कंदि य' क्रन्दिताः 'महाकंदिय' महाक्रन्दिता 'कुहड' कुष्माण्डाः 'पतगदेव' पतङ्गदेवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायदेवा २, असुराद्यारभ्य पतङ्ग-देवपर्यन्तानामितरेतरयोगद्वन्द्वः। तथा 'पिसाय' पिशाचाः 'भूय' भूताः 'जक्ख' यक्षा 'रक्खस' राक्षसाः 'किंनर' किन्नरा 'किंपुरिस' किम्पुरुषाः

निकायों का बोध स्वय हो जाता है। इसलिये यहा चारो प्रकार के देव गृहीत हुए हैं। क्यों कि ये देव (परिग्गहे विविह करणबुद्धी) परिग्रह के विषय में इनकी विविध प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, तथा उसमे इनकी बुद्धि भी सदा सचेष्ट रहती है। अर्थात् परिग्रह के उपार्जन करने में इनकी मति खूब निपुण होती है। इस तरह इन्द्रसहित ये चारो प्रकार के देवनिकाय परिग्रह को प्राप्त करके भी उसमें तृप्ति से विहीने ही बने रहते हैं। (देवनिकाया य-असुर-भुयग-सुवन्न-विज्जु-जलण -दीव उदहि-दिसि-पवण-थणिय-अणपन्निय-पणपन्निय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-महाकंदिय-कुहण्ड-पयग-देवा पिसायभूय-जक्ख-

---

નો બોધ આપો આપ થઇ જાય છે તે કારણે અહી ચારે પ્રકારના દેવો ગ્રહણ કરેલ છે, કારણ કે તે દેવો "परिग्गहरुई" પરિગ્રહમા રુચિ-આસક્તિ વાળા હોય છે, અને "परिग्गहे विविहकरण बुद्धी" પરિગ્રહના વિષયમા તેમની વિવિધ પ્રકારની ક્રિયાઓ થાય છે, અને તેમા તેમની બુદ્ધિ પણ સદા સચેષ્ટ રહે છે એટલે તે પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કરવામા તેમની બુદ્ધિ ઘણી જ નિપુણ હોય છે આ રીતે ઇન્દ્ર સહિત તે ચારે પ્રકારના દેવનિકાય પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કરીને પણ તેનાથી અતૃપ્ત રહે છે "देवनिकाया य-असुर-भुयग-सुवन्न-विज्जु-जलण-दीवउदहि-दिसि-पवण-थणिय-अणपन्निय-पणपन्निय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदिय-

वाक्यालङ्कारे, उपर्युक्त त्रिंशद्विध परिग्रह 'ममायंति' ममायन्ते=परिग्रहममत्वं कुर्वन्ति, ममत्वं कुर्वन्तीत्याह — 'लोभघत्थ' लोभग्रस्ताः, के के च ते? इत्याह—'भवणवरविमाणवासिणो' भवनवरविमानवासिनः=' भवन ' इत्यत्र ' वासिनः ' इत्यस्य सम्बन्धाद् भवनवासिनः=भवनपतयः, अत आरभ्य यावद् वरविमानवासिनः=अनुत्तरविमानवासिनः, भवनपतिवानव्यन्तर – ज्योतिष्क-वैमानिकाश्चतुर्विधा अपि देवा इत्यर्थः, कीदृशास्ते? इत्याह—' परिग्गहरुई '

अब सूत्रकार जिस प्रकार से जो जीव इस परिग्रह को करते हैं उनका कथन करते हैं–' त च पुण ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तच पुण परिग्गह लोभघत्था ममायंति) इस उपर्युक्त तीस प्रकार के नाम वाले परिग्रह में लोभ से ग्रस्त हुए जीव ममत्व करते हैं। वे जीव कौन २ से हैं? सूत्रकार अब इस बात को प्रदर्शित करते हैं–(भवणवरविमाणवासिणो) भवनवासी देव, वानव्यन्तरदेव, ज्योतिष्कदेव और वैमानिक देव ये चारों प्रकार के देव परिग्रह में ममत्व करते हैं–अर्थात्–परिग्रह प्राप्त करके भी इन्हें सतोष नहीं होता है। (भवणवरविमाणवासिणो) यहा पर इस पद से भवनवासी और वरविमानवासी ऐसा शब्दबोध होता है। भवनवासी शब्द से असुरकुमार आदि देव तथा वरविमानवासी शब्द से अनुत्तरविमानवासी देव अभिहित हुए हैं। इस तरह देवों के इन दो निकायों का वर्णन-कथन-आने से इनके बीच के वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन दो

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે કયા જીવ કઇ રીતે પરિગ્રહ કરે છે–" त च पुण " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"त च पुण परिग्गह लोभघत्था ममायंति" ઉપર કહેલ ત્રીસ નામ વાળા પરિગ્રહમા લોભને વશ થયેલ જીવો મમત્વ કરે છે તે જીવો કયા કયા છે? હવે સૂત્રકાર તે દર્શાવે છે " भवणवरविमाणवासिणो " ભવનવાસી દેવ, વાનવ્યન્તર દેવ, જ્યોતિષ્ક દેવ, અને વૈમાનિક દેવ, એ ચારે પ્રકારના દેવ પરિગ્રહમા મમત્વ કરે છે–એટલે કે પરિગ્રહમા પ્રાપ્ત કરવા છતા પણ તેમને સતોષ થતો નથી " भवणवरविमाणवासिणो " અહી આ પદથી ભવનવાસી અને ઉત્તમ વિમાનવાસી એવો અર્થ સમજાય છે ભવનવાસી શબ્દથી અસુરકુમાર દેવ આદિ તથા ' ઉત્તમવિમાનવાસી ' શબ્દથી અનુત્તર વિમાનવાસી દેવ ગ્રહણ થાય છે આ પ્રમાણે દેવોના તે બે નિકાયોનુ (પ્રકારનુ) વર્ણન આવવાથી તેમની વચ્ચેના વાનવ્યન્તર અને જ્યોતિષ્ક એ બે નિકાયો (જાતો)

पनीयकनकवर्णाः—तप्तं यत्तपनीयकनकं—तपनीयसुवर्णं तस्य वर्णः इव वर्णो येषां ते तथोक्ताः—अग्नौ परितापनेन सुवर्णस्य यादृशो वर्णो भवति, तादृश-वर्ण-युक्ता इत्यर्थः। आर्षत्वात्सूत्रे बहुवचनम्। तथा तदन्यतरे 'जे गहा' ये ग्रहाः, सम्प्रतिकाल-प्रसिद्धा नेपच्युनहर्षलादयः, 'जोइसम्मि' ज्योतिषि—ज्योतिश्चक्रे 'चारं चरंति' परिभ्रमन्ति, ते ग्रहाः, तथा 'केउ य' केतवश्च—ज्योतिष्कविशेषाः ये जगतः शुभाशुभनिमित्तमवबोधयन्ति 'पुच्छडियातारा' 'चोटीवालातारा' इत्यादि नाम्ना भाषाप्रसिद्धाः, कीदृशा एते ? इत्याह—'गइरइयाः' गतिरतिकाः—गमनशीलाः एकराशितोऽन्यराशौ गमनस्वभावाः। एते चन्द्रसूर्यग्रहास्त्रिविधा ज्योतिष्कदेवा उक्ताः। तथा 'अट्ठावीसइविहा य' अष्टाविंशतिविधाश्च 'नक्खत्तदेवगणा' नक्षत्रदेवगणाः; कीदृशाः ? इत्याह—तथा 'नाणासंठाणसंठियाओ'

और अंगारक—मंगल ये भेद हैं। ये अंगारक (तत्ततवणिज्जकणगवण्णा) तप्ततपनीय—तपाये हुए सुवर्ण के वर्ण के जैसा वर्ण वाले हैं। अर्थात्—अग्नि में तपाने से सुवर्ण का जैसा रंग होता है वैसा ही इसका रंग है। तथा (जे य गहा जोइसियम्मि चारं चरंति) इनसे अतिरिक्त जो इस समय में प्रसिद्ध नेपच्युन हर्षल आदि ग्रह हैं कि जो ज्योतिश्चक्र में परिभ्रमण करते हैं वे ग्रह तथा—(केऊ य) केतु ग्रह जो जगत के शुभ अशुभ निमित्त को लेकर उदित होता है और जिसे "पूंछडिया-तारा" "चोटीवाला तारा" इत्यादि नाम से लोग कहा करते हैं ये सब ही (गइरइया) गमनशील है—एक राशि से अन्य राशि पर गमन करने के स्वभाववाले हैं। ये उक्त (तिविहा) तीन प्रकार के चंद्र, सूर्य ग्रहरूप ज्योतिषी देव तथा (अट्ठावीसइविहा) अट्ठाईस प्रकार के (नक्खत्तदेवगणा) नक्षत्र (णाणासंठाणसंठियाओ) नाना

रगाथ" राहु, धूमकेतु, બુધ-અને અંગારક-મંગળ એ પ્રકારે છે. તે અંગારક-મંગળ "तत्ततवणिज्जकणगवण्णा" તપાવેલા સુવર્ણના રંગ જેવા વર્ણવાળો છે. તથા "जे य गहा जोइसियम्मि चारं चरंति" તે સિવાયના હાલના સમયમાં પ્રસિદ્ધ નેપચ્યુન, હર્ષલ આદિ ગ્રહો કે જે જ્યોતિશ્ચક્રમાં પરિભ્રમણ કરે છે તે ગ્રહો તથા "केऊय" કેતુગ્રહો જે જગતના શુભ અશુભ નિમિત્ત દર્શાવવાને ઉગે છે અને જેને પૂંછડિયા તારાને નામે ઓળખે છે, એ બધાં જે "गइरइया" ગમનશીલ છે—એક રાશિમાંથી અન્ય રાશિમાં ગમન કરવાના સ્વભાવવાળાં જે તે ઉપરોક્ત "तिविहा" ત્રણ પ્રકારના ચન્દ્ર, સૂર્ય અને ગ્રહરૂપ જ્યોતિષી દેવ, તથા "अट्ठावीसइविहा" અઠયાવીસ પ્રકારના "नक्खत्तदेवगणा" નક્ષત્ર, "णाणासंठाणसंठियाओ" વિવિધ પ્રકારના સંસ્થાનોમાં

'महोरग' महोरगाः, 'गंधव्वा' गन्धर्वाश्च, एतेषां द्वन्द्वः । एतेऽष्टौ व्यन्तरदेवाः, एते हि 'तिरियवासी' तिर्यग्वासिनः-मनुष्यलोकवासिनः, तथा 'पंचविहा' पञ्चविधाः=चन्द्रसूर्य-ग्रह-नक्षत्र-ताराख्पाः, 'जोइसियाय' ज्योतिषिकाश्च देवाः, ते के ?-इत्याह-'वहस्सइचंदसूरसुक्कसणिच्छरा' -बृहस्पतिचन्द्रसूरशुक्रशनैश्चराः, तथा 'राहुधूमकेउबुहा य', राहुधूमकेतुबुधाश्च तथा-'अंगारका य' अङ्गारकश्च-मंगलनामको ग्रहविशेषः; कीदृशः ? इत्याह-'तत्ततवणिज्जकणगवण्णा' तप्त-

रक्खस-किंनर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा य तिरियवासी) अब सूत्रकार उन देवनिकायों को नामनिर्देश पूर्वक प्रकट करते हैं, उनमें वे सब से पहिले भवनपतियों के भेदों के नामों को कहते हैं-असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, ज्वलन-अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशाकुमार, वायुकुमार और स्तनितकुमार ये दश प्रकार के भवनपति हैं। तथा अणपन्नसिक, पणपन्नसिक, ऋषिवादिक, भूतवादिक, क्रंदित, महाक्रंदित, कूष्मांड, पतंगदेव, आठ प्रकार के ये व्यन्तर निकाय के देव हैं। तथा पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व ये आठ व्यन्तर देवों के भेद हैं। ये व्यन्तरदेव तिर्यग्लोक मनुष्यलोक वासी हैं। तथा-(पंचविहा जोइसियाय देवा बहस्सइ चंदसूरसुकसनिच्छरा) चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा, ये पाच प्रकार के ज्योतिषिक देव हैं। इन में जो ग्रह जाती के देव हैं, उनके ये बृहस्पति, चंद्र, सूर्य, शुक्र, शनैश्चर तथा (राहुधूमकेउ-बुहा य अंगारगा य) राहु, धूमकेतु, बुध,

महाकंदिय-कुहण्ड-पयग-देवा, पिसायभूय-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा य तिरियवासी" હવે સૂત્રકાર તે દેવ નિકાયોને નામના નિર્દેશ સહિત પ્રગટ કરે છે તેમનામાથી સૌથી પહેલા ભવનપતિયોના ભેદોના નામો બતાવે છે—અસુરકુમાર, નાગકુમાર, સુપર્ણકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર જ્વલનઅગ્નિકુમાર, દ્વીપકુમાર, ઉદધિકુમાર, દિશાકુમાર, વાયુકુમાર અને સ્તનિતકુમાર, એ દસ પ્રકારના ભવનપતિ છે તથા અણપન્નસિક, પણપન્નસિક, ઋષિવાદિક, ભૂતવાદિક, ક્રંદિત, મહાક્રંદિત, કૂષ્માંડ, અને પતંગદેવ, એ આઠ પ્રકારના વ્યન્તર નિકાય દેવો છે, તથા પિશાચ, ભૂત, યક્ષ, રાક્ષસ, કિન્નર, કિંપુરુષ, મહોરગ, અને ગંધર્વ, એ આઠ વ્યન્તરદેવ તિર્યગ્લોક-મનુષ્યલોક વાસી છે તથા "પંચવિહા-જોઇસિયાય દેવા બહસ્સઇ ચંદ સૂર સુકસનિચ્છરા" ચન્દ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર અને તારા એ પાચ પ્રકારના જ્યોતિષિક દેવો છે, તેમા ગ્રહ જાતિના જે દેવો છે તેમના બૃહસ્પતિ, ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, શનિ તથા

पनीयतवणिज्जकणगवर्ण=तप्तं यत्तपनीयकनकं=तपनीयसुवर्ण तस्य वर्ण इव वर्णो येषां ते तथोक्ताः-अग्नौ परितापनेन सुवर्णस्य यादृशो वर्णो भवति, तादृश-वर्ण-युक्ताः अङ्गारक आर्षत्वात्सूत्रे बहुवचनम्। तथा 'अन्य इतरे' 'जे गहा' ये ग्रहाः, सम्प्रति काल-प्रसिद्धा नेपच्युनहर्षलादयः, 'जोइसम्मि' ज्योतिषि-ज्योतिश्चक्रे 'चारं चरंति' परिभ्रमन्ति, ते ग्रहाः, तथा 'केउय' केतवश्च-ज्योतिष्कविशेषाः ते-जगतः शुभाशुभनिमित्तमवलम्ब्योदयं प्राप्नुवन्ति 'पुंछडियातारा' 'चोटीवालातारा' इत्यादि नाम्ना भाषाप्रसिद्धाः, कीदृशाः एते? इत्याह-'गइरइया' गतिरतिकाः-गमनशीलाः एकराशितोऽन्यराशौ गमनस्वभावाः। एते चन्द्रसूर्यग्रहास्त्रिविधा ज्योतिष्कदेवा उक्ताः। तथा 'अट्ठावीसइविहा य' अष्टाविंशतिविधाश्च 'नक्खत्तदेवगणा' नक्षत्रदेवगणाः, कीदृशाः? इत्याह-तथा 'णाणासंठाणसंठियाओ'

और अंगारक-मंगल ये भेद हैं। ये अंगारक (तत्ततवणिज्जकणगवण्णा) तप्ततपनीय-तपाये हुए सुवर्ण के वर्ण के जैसे वर्ण वाले हैं। अर्थात् अग्नि में तपाने से सुवर्ण का जैसा रंग होता है वैसा ही इसका रंग है तथा (जे य गहा जोइसियम्मि चारं चरंति) इनसे अतिरिक्त जो इस समय में प्रसिद्ध नेपच्युन हर्षल आदि ग्रह हैं कि जो ज्योतिश्चक्र में परिभ्रमण करते हैं वे ग्रह तथा-(केऊ य) केतु ग्रह जो जगत के शुभ अशुभ निमित्त को लेकर उदित होता है और जिसे "पूंछडिया-तारा" चोटीवाला तारा" इत्यादि नाम से लोग कहा करते हैं ये सब ही (गइरइया) गमनशील हैं-एक राशि से अन्यराशि पर गमन करने के स्वभाववाले हैं। ये उक्त (तिविहा) तीन प्रकार के चंद्र, सूर्य ग्रहरूप ज्योतिषी देव तथा (अट्ठावीसइविहा) अट्ठाईस प्रकार के (नक्खत्तदेवगणा) नक्षत्र (णाणासंठाणसंठियाओ) नाना

રગાય" રાહુ, ધૂમકેતુ, બુધ-અને અંગારક-મંગળ એ પ્રકારો છે. તે અંગારક-મંગળ "तत्ततवणिज्जकणगवण्णा" તપાવેલા સુવર્ણના રંગ જેવા વર્ણવાળો છે, તથા "जे य गहा जोइसियम्मि चारं चरंति" તે સિવાયના હાલના સમયમાં પ્રસિદ્ધ નેપચ્યુન, હર્ષલ આદિ ગ્રહો કે જે જ્યોતિશ્ચક્રમાં પરિભ્રમણ કરે છે તે ગ્રહો તથા "केऊय" કેતુગ્રહો જે જગતનાં શુભ અશુભ નિમિત્ત દર્શાવવાને ઉગે છે અને જેને પૂંછડિયા તારાને નામે ઓળખે છે, એ બધાં જ "गइरइया" ગમનશીલ છે-એક રાશિમાંથી અન્ય રાશિમાં ગમન કરવાના સ્વભાવવાળા છે તે ઉપરોક્ત "तिविहा" ત્રણ પ્રકારનાં ચન્દ્ર, સૂર્ય અને ગ્રહરૂપ જ્યોતિષી દેવ, તથા "अट्ठावीसइविहा" અઠ્યાવીસ પ્રકારના "नक्खत्तदेवगणा" નક્ષત્ર, "णाणासंठाणसंठियाओ" વિવિધ પ્રકારના સંસ્થાનોમાં

नानासस्थानसस्थिताश्च ' ताराओ ' तारकाः, कथ भूतास्तारकाः ? इत्याह— ' ठियलेस्सा ' स्थितलेश्याः-स्थिताः स्थिराः लेश्याः-दीप्तय' यासा ताः, नक्षत्रतारकाणामेकस्थानस्थितिमत्त्वात्, यद्वा — मनुष्यक्षेत्राद बहिर्व्यवस्थितत्वात् स्थितलेश्यात्त्व तासाम्, ' चारिणो य ' चारिश्च यः=सचरणशीलाःचन्द्रसूर्यग्रहाश्च, ' अविस्सतमडलगई ' अविश्रान्तमण्डलगतयः-अविश्रान्ता-विश्रामवर्जिता मण्डलेन-चक्रवालेन गति येषां ते तथा=सततपरिभ्रमणशोलाः सन्तीत्यर्थः, एते

प्रकार के सस्थान से सस्थित ऐसे तारागण कि जिनकी (ठियलेस्सा) लेश्या-दीप्ति-स्थिर है। ये नक्षत्र और तारागण एक स्थान में स्थित हैं, अथवा मनुष्यलोक से बाहर ये अवस्थित है-गति रहित हैं-इसलिये यहा इन्हें स्थिर दीप्ति वाला कहा गया है। तथा (चारिणो य अविस्सामम डलगई) सचरणशील चद्र, सूर्य, ग्रह ये सब सतत परिभ्रमण शील है। तात्पर्य इसका यह है कि ये पाच प्रकार के ज्योतिषी देव मानुषोत्तर नामक पर्वत रूप जो मनुष्य लोक है उस मनुष्यलोक मे सदा भ्रमण कीया करते है। उनका भ्रमण मेरुपर्वत के चारो ओर होता है। मेरु के समतलभूभाग से सातसौ नब्बे योजन की ऊँचाई पर ज्योतिश्चक्र क्षेत्र का आरभ होता है। जो वहा से ऊँचाइ में एक सौ दश योजन परिमाण है और तिरछा असख्यात द्वीप समुद्र परिमाण है। उस मे दश योजन की ऊँचाई पर अर्थात् उक्त समतल से आठ सौ योजन की ऊँचाई पर सूर्य के विमान है, वहा से अस्सी योजन की ऊँचाई पर अर्थात् समतल से आठ सो अस्सी योजन की ऊँचाई पर

રહેલા " ઠિયલેસ્સા " સ્થિર તેજવાળા તારાગણો છે, તે નક્ષત્રો અને તારાગણ એક જ સ્થાને રહેલા છે, અથવા તેઓ મનુષ્યલોકની બહાર આવેલા છે—ગતિરહિત છે તે કારણે અહી તેમને સ્થિર દીપ્તિ (તેજ) વાળા બતાવ્યા છે તથા " चारिणो य अविस्साममडलगई " સચરણશીલ ચદ્ર સૂર્ય ગ્રહ એ બધા સતત પરિભ્રમણશીલ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે એ પાચ પ્રકારના જ્યોતિષીદેવ માનુષોત્તર નામના પર્વતરૂપ જે મનુષ્યલોક છે, તે મનુષ્ય લોકમા સદા પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે તેમનુ ભ્રમણ મેરુ પર્વતની ચારે તરફ થાય છે મેરુના સમતલ ભૂભાગથી સાતસો નેવુ જોજનની ઊચાઈ પર જ્યોતિશ્ચક્રના ક્ષેત્રનો આરભ થાય છે જે ત્યાથી ઊચાઇમા એકસો દસ યોજન પરિમાણ છે અને તિરછુ ઊચાઇ અસખ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર પરિમાણ છે તેમા દસ યોજનની ઊચાઇએ એટલે કે ઉપરોક્ત સમતલ ભૂમિથી આઠસો યોજનની ઊચાઇ પર સૂર્યના વિમાન છે, ત્યાથી એસી યોજનની ઊચાઈ પર અથવા સમતલથી આઠસો એસી યોજનની ઊચાઈ પર ચન્દ્રના વિમાન છે ત્યાથી

चंद्र के विमान हैं। वहां से बीस योजन पर की ऊँचाई तक में अर्थात् समतल से नवसौ योजन की ऊँचाई तक में ग्रह, नक्षत्र और तारे हैं। चद्र के उपर बीस योजन की ऊँचाई में पहिले चार योजन की ऊँचाई पर नक्षत्र हैं, इसके बाद चार चार योजन की ऊँचाई पर बुधग्रह, बुधग्रह से तीन योजन की ऊँचाई पर शुक्र, शुक्र से तीन योजन ऊँचे गुरु, गुरु से तीन योजन ऊचे मगल और मगल से तीन योजन ऊँचे शनैश्चर हैं। इस प्रकार यह चन्द्र के ऊपर का बीस योजन का क्षेत्र नक्षत्र आदिकों द्वारा घिरा हुआ रहता है। इस तरह इससे हमें यह बात जानने में देरी नहीं लगती है कि मनुष्य क्षेत्र मे जो काल का-मुहूर्त-अहोरात्र-पक्ष, मास आदि का जितना भी व्यवहार होता है वह सबहस ज्योतिश्चक्र की चाल से ही होता है। यह ज्योतिश्चक्र की चाल उस ढाईद्वीपरूप मनुष्यक्षेत्र में अविश्रान्त रूप से ही होती रहती है। मनुष्य क्षेत्र के बाहर के ज्योतिष्क विमान स्थिर हैं। ये वहां स्वभावतः इधर उधर भ्रमण नहीं करते। इसी कारण से उनकी लेश्या और उनका प्रकाश भी एक रूप-स्थिर है। अर्थात् वहां राहु आदि की ,छाया पड़ने से ज्योतिष्कों का स्वाभाविक पीतवर्ण ज्यों का त्यों बना रहता है। और उदय अस्तन होने के कारण

વીસ યોજનની ઊંચાઈ પર એટલે કે સમતલથી નવસો યોજનની ઊંચાઈ સુધીમા ગ્રહો, નક્ષત્રો અને તારા છે ચન્દ્રથી ઉપરની વીસ યોજનની ઊંચાઈમા પહેલા ચાર યોજનની ઊંચાઈ પર નક્ષત્રો છે, ત્યાર બાદ ચાર યોજનની ઊંચાઈ પર બુધ નામનો ગ્રહ છે બુધ ગ્રહથી ત્રણ યોજનની ઊંચાઈ પર શુક્ર છે શુક્રથી ત્રણ યોજન ઊંચે ગુરુ છે ગુરુથી ત્રણ યોજન ઊંચે મંગળ છે, મંગળથી ત્રણ યોજન ઊંચે શનિ છે આ પ્રમાણે ચન્દ્રની ઉપરનુ વીસ યોજનનુ ક્ષેત્ર નક્ષત્ર આદિ દ્વારા ઘેરાયેલુ રહે છે આ રીતે આપણને એ વાત સમજતા વાર લાગે તેમ નથી કે મનુષ્યક્ષેત્રમા જે કાળનો મુહૂર્ત, દિવસ રાત, પખવાડિયા, માસ આદિનો-જે વ્યવહાર થાય છે તે સઘળો આ જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલથી જ થાય છે તે જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલ આ અઢીદ્વીપરૂપ મનુષ્ય ક્ષેત્રમા અવિરત ચાલ્યા કરે છે મનુષ્ય ક્ષેત્રની બહારના જ્યોતિષ્ક વિમાન સ્થિર છે તેઓ ત્યા સ્વભાવિક રીતે જ આમ તેમ ભ્રમણ કરતા નથી એ જ કારણે તેમની લેશ્યા અને તેમનો પ્રકાશ પણ સ્થિર છે એટલે કે ત્યા રાહુ આદિની છાયા પડવાથી જ્યોતિષ્કોનો સાધારણ પીળો રંગ એવોને એવો રહે છે અને ઉદય અસ્ત ન થવાને કારણે તેમનો પ્રકાશ પણ એક સરખો

पञ्चविधा ज्योतिषिक देवाः। अथ वैमानिकानाह— 'उवरिचरा' उपरिचराः— तिर्यग्लोकस्योपरिवर्तिनः, 'उड्ढलोगवासिणो' ऊर्ध्वलोकवासिनः 'वेमाणिया य देवा' वैमानिकाश्च देवा 'दुविहा' द्विविधाः=द्विप्रकाराः, कल्पोपपन्न कल्पातीत भेदात् तत्र—कल्पोपपन्ना द्वादशधा, तानाह—"सोहम्मी—साण—सणंकुमार—माहिंद- बंभलोग—लंतग—महासुक्क—सहस्सार—आणय—पाणय—आरण—च्चुया" सौधर्मेशान सनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्र—सहस्रारानतप्राणतारणाच्युताः,' एते "कप्पवरविमाणवासिणो" कल्पवरविमानवासिनः—कल्पोपपन्नाः। 'सुरगणा' सुरगणाः। अथ कल्पातीतानाह—'गेवेज्जा' ग्रैवेयकाः 'अणुत्तरा' अनुत्तरा-

[illegible]

उनका प्रकाश भी एकसा स्थिर ही रहता है। इस प्रकार यह पांच प्रकार के ज्योतिषिक देवों के विषय में भावार्थ रूप से यत् किञ्चित् कथन किया है। अब सूत्रकार वैमानिक देवों के विषय में कहते हैं—(उवरि- चिरा उड्ढलोगवासी वेमाणिया देवा दुविहा) तिर्यग्लोक है। ये वैमानिक के ऊपर जो ऊर्ध्वलोक है उसमें ये देव रहते हैं। इनका नाम वैमानिक देव कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं। इनमें कल्पोपपन्न बारह प्रकार के हैं, वे ये हैं—(सोहम्मी—साण—सणक्कुमार— माहिंद—बंभलोग—लंतग—महासुक्क— सहस्सार—आणय—पाणय—आरण—ऽच्चुया) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महा शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत। इन (कप्पवरवि विमाणवासिणो सुरगणा) कल्पवरविमानों में रहनेवाले सुरगण कल्पो- पपन्न कहलाते हैं। (गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाण-

સ્થિર રહે છે આ પ્રમાણે પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષિક દેવોને વિષે ભાવાર્થ રૂપે થોડું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, હવે સૂત્રકાર વૈમાનિક દેવો વિષે કહે છે— " उवरिचरा उड्ढलोगवासी वेमाणियादेवा दुविहा " તિર્યગ્લોકની ઉપર જે ઉર્ધ્વ લોક છે તેમાં તે દેવો રહે છે, અને તેમને વૈમાનિક કહે છે. તે વૈમાનિક દેવોના બે ભેદ છે—કલ્પાતીત અને કલ્પોપપન્ન તેમાંના કલ્પોપપન્ન નીચે પ્રમાણે બાર પ્રકારના છે—" सोहम्मी-साण-सणक्कुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतग-महासुक्क-सहस्सार -आणय-पाणय-आरणऽच्चुया " સૌધર્મ, ઈશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક લાન્તક, મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આરણ અચ્યુત એ " कप्पवर विमाणवासिणो सुरगणा " કલ્પવર વિમાનોમાં રહેનાર સુરગણને કલ્પોપપન્ન કહે છે " गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महिड्ढिया उत्तमा

श्चेति 'दुविहा' द्विविधाः 'कप्पातीया' कल्पातीताः, 'विमाणवासी' विमानवासीनः—अनुत्तरविमानवासिनः 'महड्डिया' महर्द्धिका 'उत्तमा' उत्तमाः श्रेष्ठाः सुरवराः=सर्वदेवेषु प्रधानाः, 'एव च' इत्युक्तप्रकारेण 'चउव्विहा' चतुर्विधाः—भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकरूपाः, 'सपरिसावि' सपरिषदोऽपि—न केवलमेते किन्तु एषां परिषदोऽपीत्यर्थः, देवाः 'ममायंति' ममायन्ते=ममत्वं कुर्वन्ति। कस्मिन् विषये ममत्वं कुर्वन्तीति तानाह—'भवणवाहण-जाणविमाणसयणासणाणि य' भवनवाहनयानविमानशयनासनानि च, तथा 'नाणाविह वत्थभूसणाणि य' नानाविधवस्त्रभूषणानि च 'पवरपहरणाणि य'

वासीमहड्डिया उत्तमा सुरवरा एव चेते चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममायंति) कल्पातीत के दो भेद हैं (१) ग्रैवेयक विमानवासी और (२) अनुत्तर विमानवासी इनमें जो पांच अनुत्तर विमानों में—विजय, वैजयन्त, अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध इनमें—रहनेवाले देव हैं वे महर्द्धिक कहलाते हैं और सब देवों में उत्तम—श्रेष्ठ—एवं प्रधान माने जाते हैं। कल्पोपपन्न देवों में स्वामिसेवक भाव होता है। कल्पातीत में नहीं। ये तो सभी इन्द्रवत् होने से अहमिन्द्र कहलाते हैं। मनुष्यलोक में किसी निमित्त पर कल्पोपपन्न देव ही आते हैं—कल्पातीत नहीं। इस प्रकार भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिकरूप चारों प्रकार के देव अपनी २ परिषदासहित इन भवन आदि पदार्थों में ममत्व करते हैं। सूत्रकार अब इन्हीं ममत्व के विषयभूत पदार्थों को कहते हैं—(भवण—वाहण—जाणविमाण—सयणासणाणि) भवन, वाहन, यान, विमान, शयन, आसन तथा—(नाणाविहवत्थभूसणाणि य)

सुरवरा एव चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममयंति" કલ્પાતીતના બે ભેદ છે (૧) ગ્રૈવેયક વિમાનવાસી અને (૨) અનુત્તર વિમાનવાસી તેમાના વિજય, વૈજયન્ત જયન્ત અપરાજિત અને સર્વાર્થ સિદ્ધ એ પાંચ અનુત્તર વિમાનોમા રહેનાર જે દેવો છે તેમને મહર્દ્ધિક કહે છે, તે દેવો બધા દેવોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે મનુષ્યલોકમા કોઇ પણ નિમિત્તે કલ્પોપપન્ન દેવો જ આવે છે, કલ્પાતીત આવતા નથી આ રીતે ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક, એ ચાર પ્રકારના દેવો પોત પોતાની પરિષદ સાથે તે ભવન આદિ પદાર્થોમા મમત્વ રાખે છે સૂત્રકાર હવે તે મમત્વના વિષય રૂપ પદાર્થો દર્શાવે છે—"भवण-वाहण-जाण-विमाण-सयणा-सणाणि" ભવન વાહન, યાન, વિમાન, શયન, આસન, તથા "नाणाविहवत्थभूसणाणि य" વિવિધ વસ્ત્રો, આભૂષણો

प्र

पञ्चविधा ज्योतिषिक देवाः। अथ वैमानिकानाह— ' उवरिचरा ' उपरिचराः—तिर्यग्लोकस्योपरिवर्तिनः, ' उड्ढलोगवासिणो ' ऊर्ध्वलोकवासिनः ' वेमाणिया य देवा ' वैमानिकाश्च देवा ' दुविहा ' द्विविधाः—द्विप्रकाराः, कल्पोपपन्न कल्पातीत भेदात्। तत्र—कल्पोपपन्ना द्वादशधा, तानाह—' सोहम्मी—साण—सणकुमार—माहिंद बंभलोग—लंतग—महासुक्क—सहस्सार—आणय—पाणय—आरण—च्चुया ' सौधर्मेशान सनत्कुमारमाहेन्द्र ब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्र—सहस्रारानतप्राणतारणाच्युताः, एते ' कप्पवरविमाणवासिणो ' कल्पवरविमानवासिनः—कल्पोपपन्नाः ' सुरगणा ' सुरगणाः। अथ कल्पातीतानाह—' गेवेज्जा ' ग्रैवेयकाः ' अणुत्तरा ' अनुत्तरा—

उनका प्रकाश भी एकसा स्थिर ही रहता है। इस प्रकार यह पांच प्रकार के ज्योतिषिक देवों के विषय में भावार्थ रूप से यत् किंचित् कथन किया है। अब सूत्रकार वैमानिक देवों के विषय में कहते हैं—(उवरिचिरा उड्ढलोगवासी वेमाणिया देवा दुविहा) तिर्यग्लोक है। ये वैमानिक के ऊपर जो ऊर्ध्वलोक है उसमें ये देव रहते हैं। इनका नाम वैमानिक देव कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं। इनमें कल्पोपपन्न बारह प्रकार के हैं, वे ये हैं—(सोहम्मी—साण—सणकुमार—माहिंद—बंभलोग—लंतग—महासुक्क—सहस्सार—आणय—पाणय—आरण—ऽच्चुया) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत। इन (कप्पवरविमाणवासिणो सुरगणा) कल्पवरविमानों में रहनेवाले सुरगण कल्पोपपन्न कहलाते हैं। (गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाण—

જે સ્થિર રહે છે આ પ્રમાણે પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષિક દેવાને વિષે ભાવાર્થ રૂપે થાડું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે, હવે સૂત્રકાર વૈમાનિક દેવા વિષે કહે છે— " उवरिचरा उड्ढलोगवासी वेमाणियादेवा दुविहा " તિર્યગ્લાકની ઉપર જે ઉર્ધ્વ લોક છે તેમા તે દેવા રહે છે, અને તેમને વૈમાનિક કહે છે તે વૈમાનિક દેવાના બે ભેદ છે—કલ્પાતીત અને કલ્પોપપન્ન તેમાના કલ્પોપપન્ન નીચે પ્રમાણે બાર પ્રકારના છે—" सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरणऽच्चुया " સૌધર્મ, ઇશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક લાન્તક, મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આરણ અચ્યુત એ " कप्पवर विमाणवासिणो सुरगणा " કલ્પવર વિમાનોમાં રહેનાર સુરગણને કલ્પોપપન્ન કહે છે " गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महड्ढिया उत्तमा

वसत्यादिकानि, तत्र-कूप -प्रसिद्ध , सरः-प्रसिद्धम् , तडागः-सपद्माऽगाधजलाशयः, वापी – आयतजलाशयविशेष – दीर्घिका-चतुष्कोणजलाशयरूपा- ' देवकुलानि ' देवगृह'-सभाप्रसिद्धा, प्रपाः-पानीयशाला:, वसतय =सामान्य गृहाणि, एतान्यादौ येषा तानि तथोक्तानि, ' बहुकाइ' बहुकानि बहूनि ' कित्तणानि च ' कीर्तनानि च " अय देवो दिव्यदेवऋद्धि सम्पन्नः " इत्येव प्रशसा वाक्यानि च परिग्रहत्वेन ममायन्ते। ततश्च प्रकृत ' परिग्गह ' परिग्रह, कीदृश परिग्रहम् ? ' विउलदव्वसार ' विपुलद्रव्यसार=विपुलानि द्रव्याण्येव सारो यस्मिस्त तथोक्त, ' परिगिण्हित्ता ' परिगृह्य ' सइदगा ' सेन्द्रकाः-इन्द्रसहिताः ' देवा वि ' देवा अपि ' न तित्ति ' न तृप्ति-नैवेच्छाविनिवृत्ति ' न तुट्ठि ' न तुष्टिम्=नापि सन्तोषम् 'उवलभति ' उपलभन्ते=प्राप्नुवन्ति, आकाङ्क्षाया निराबाधत्वात् । अय भाव.-देवा हि महर्द्धयो वाञ्छितार्थलाभे समर्था.दीर्घायुषश्च भवन्ति परन्तु तेऽपि परिग्रहविषये न सतोष माप्नुवन्ति इतरेषा पुन' का कथा ?॥

माइयाइ) कूवा सर, तडाग-पद्मसहित अगाध जलाशय, वापी, दीर्घिका-चतुष्कोणवाली बावडी, देवकुल-देवगृह, सभा, प्रपा-प्याऊ, वसति-सामान्यघर, इत्यादि और भी बहुत सी वस्तुए हैं जिनमें इन देवों का ममत्व होता है। तथा (बहुयाइ कित्तणाणि य) अनेक विध कीर्तनों में "यह देव दिव्य ऋद्धि सपन्न है" इत्यादि रूप प्रशसा वाक्यो में इनका परिग्रहरूप से ममत्व होता है। (विउलदव्वसारपरिग्गह परिगिण्हित्ता सइदगा देवा वि न तित्ति न तुट्ठि अच्चत विउललोभाभिभूयसन्ना उवलभति) इस प्रकार विपुल सार वाले परिग्रह को ग्रहण करके इन्द्र-सहित देव भी इच्छाविनिवृत्तिरूप तृप्ति को तथा सतोष रूप तुष्टि को आकाक्षा की निराबाधता के कारण प्राप्त नही कर पाते हैं। तात्पर्य इसका यह है कि महर्द्धिक देव यद्यपि इच्छित अर्थ के लाभ करने में समर्थ

ચોખૂણુ વાવડી, દેવકુલ-દેવગૃહ, સભા, પ્રપા-હવાડા, વસતિ-સામાન્ય ઘર, વગેરે વસ્તુઓમા તથા એ સિવાયની બીજી પણ અનેક વસ્તુઓમા દેવો મમ ત્વ રાખે છે તથા "बहुयाइ कित्तणाणि य" અનેક પ્રકારની પ્રશસામા "આ દેવ દિવ્ય ઋદ્ધિ વાળા છે" ઇત્યાદિરૂપ પ્રશસાના શબ્દોમા તેમનુ પરિગ્રહરૂપે મમત્વ હોય છે ' विउलदव्वसार परिग्गह परिगिण्हित्ता सइदगा देवा वि न तित्ति न तुट्ठि अच्चतविउललोभाभिभूयसन्ना उवलभति " આ પ્રમાણે વિપુલ સારવાળા પરિગ્રહને ગ્રહણ કરવા છતા પણ ઇન્દ્ર સહિત દેવો પણ ઇચ્છામાથી નિવૃત્તિ રૂપ તૃપ્તિને તથા સતોષ રૂપ તુષ્ટિને આકાક્ષાની અપરિમિતતાને કારણે પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે મહર્દ્ધિક દેવો જો કે ઇચ્છિત વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવાને સમર્થ તથા લાબા આયુષ્ય વાળા હોય છે તો પણ તેઓ

प्रवरप्रहरणानि च=प्रवराणि-श्रेष्ठानि यानि प्रहरणानि-आयुधानि तानि च, तथा-' णाणामणिपचवण्णदिव्व च भायणविहिं ' नानामणिपञ्चवर्णदिव्य च भाजन-विधिम्-नानामणीना-चन्द्रकान्तसूर्यकान्तादिमणीना ये पञ्चवर्णा स्ते दिव्य श्रेष्ठ विविधभाजनसमूहम्, तथा-' णाणाविहकामरूववेउव्विय अच्छरगणसघाए य ' नानाविधकामरूपविकुर्वितात्सरोगणसघातांश्च - नानाविधानि- अनेकप्रकाराणि यानि कामरूपाणि स्वेच्छारूपाणि तानि विकुर्वितानि यैस्ते तथाभूता येऽप्सरो-गणास्तेषा सघातास्तान्=अप्सरः समूहानित्यर्थः, तथा 'दीवसमुद्दे' द्वीपसमुद्रान्, ' दिसाओ विदिसाओ ' दिशाविदिशा ' चेइयाणि ' चैत्यानि=वृक्षान् कल्पतरु रूपान् ' वनसडे ' वनषण्डानि-अनेकविधवृक्षसमूहान् ' पव्वते ' पर्वतान् ' गाम-नगराणि य ' ग्रामनगराणि च, तथा ' आरामुज्जाणकाणणाणि य ' आरामो-द्यानकाननानि च-आरामाः-उपवनानि, उद्यानानि=पुष्पप्रधानवनानि, काननानि अरण्यानि, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्व, तथा — ' कूवसरतलागवावीदीहिय देवकुलसभप्पवावसहिमाइयाइ ' कूपसरस्तडागवापीदीर्घिकादेवकुलसभाप्रपा

नानाविध वस्त्र, आभूषण, (पवरपहरणाणि य) श्रेष्ठ आयुध, (नाना-मणि पचवण्णदिव्व य) चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त आदि नानामणियों के पचवर्णवाले श्रेष्ठ भाजन , तथा (णाणाविहकामरूववेउव्वियअच्छरग णसघाए य) नाना प्रकार के स्वेच्छानुसार जिन्हों ने रूपों को वनाया है ऐसी अप्सराओ का समूह (दीवसमुद्दे) द्वीप, समुद्र (दिसाओ-विदिसाओ) दिशा, विदिशा, (चेइयाणि) कल्पवृक्षरूप चैत्यवृक्ष, (वन सडे) अनेक विध वृक्षसमुह (पव्वए) पर्वत (गामनगराणि य) ग्राम, नगर, (आरामुज्जाणकाणणाणि य) आराम-उपवन, उद्यान-पुष्पप्रधान वन, कानन-अरण्य, (कूवसरतलागवावीदीहियदेवकुलसभप्पवावसहि

" पवरपहरणाणि य " શ્રેષ્ઠ આયુધો, " नानामणि पचवण्णदिव्व य " ચન્દ્રકાન્ત, સૂર્યકાન્ત આદિ વિવિધ મણિયોના પાચ વર્ણવાળા પાત્રો, તથા " नाणाविह कामरूव-वेउव्विय-अच्छरगणसघाए य " જેમને ઇચ્છાનુસાર વિવિધ રૂપો ધારણ કર્યા છે એવી અપ્સરાઓનો સમૂહ, " दीवसमुद्दे " દ્વીપ સમુદ્ર दिसाओ विदिसाओ " દિશાઓ વિદિશાઓ, " चेइयाणि " કલ્પવૃક્ષરૂપ ચૈત્યવૃક્ષ, " वन सडे " અનેક વિધ વૃક્ષ સમૂહ, " पव्वए " પર્વતો, " गामनगराणि य " ગામો નગરો, " आरामुज्जाणकाणणाणि य " આરામ સ્થાનો-ઉપવન, ઉદ્યાન, પુષ્પ, પ્રધાન વન, કાનન-અરણ્ય, " कूवसरतलागवावीदीहियदेवकुलसभप्पवावसहि माइयाइ " કૂવા, સરોવર, તળાવો,-કમળયુક્ત અગાધ જળાશય, વાવ, દીર્ઘિકા

कादशकुण्डलनामकद्वीपान्तर्वर्तिनः कुण्डलाकाराः पर्वताः, रुचकवरा =जम्बूद्वीपात् त्रयोदश रुचक वर नामक द्वीपान्तर्गत मण्डलाकारा पर्वताः, मानुषोत्तराः= मनुष्यक्षेत्रसीमाकारणोमण्डलाकारिपर्वताः, कालोदधिः=द्वितीयः समुद्रः, लवणः- लवणसमुद्रः, सलिला =सलिलानि सन्त्यासु सलिलाः, गङ्गादिमहानद्यः, हृदपतयः- हृदप्रधानाः पद्ममहापद्मादि महाहृदाः, रतिकराः=नन्दीश्वरनामकाष्टमद्वीपचक्रवाल विदिक्चतुष्टयव्यवस्थिताः सहस्रयोजनोच्छ्रिताः दशशतगव्यूतभूमिगतमूलभागाः, सर्वत्र समाश्चत्वारो झल्लरी संस्थानसन्तः पर्वताः, अञ्जनक शैलाः=अञ्जनपर्वताः= नन्दीश्वरचक्रवालमध्यभागवर्तिनो दिक् चतुष्टयसंस्थिता अञ्जनरत्नमयाश्चत्वारः पर्वताः, सर्वे कृष्णवर्णाः सन्ति । तथा-दधिमुखाः=अञ्जनकचतुष्टय पार्श्ववर्ति पुष्करिणीषोडशमध्यभागवर्तिन षोडशश्वेतपर्वताः, तथा-अवपातोत्पाताः=

द्वीप से वे कुडलनामक द्वीप के अन्तर्वर्ती कुण्डलाकारवाले पर्वतों में, रुचकवरपर्वतो में-जबूद्वीप से तेरहवा रुचकवर नामका जो— द्वीप है उसके अन्तर्गत मडलाकार पर्वतो में, मानुषोत्तर पर्वतों में- मनुष्य क्षेत्र की सीमा करने वाले मडलाकार पर्वतो में, कालोदधि नामके द्वीतीयसमुद्र में, लवणसमुद्र, में गगा आदि महानदियों में, नद प्रधानो में पद्म, महापद्म आदि महा हृदों में, रतिकरों में-जो नदीश्वर नाम के आठवें द्वीप की चार विदिशाओ में स्थित है एक हजार योजन ऊँचे है तथा एक हजार कोशतक जिनका मूलभाग पृथ्वी में है-अदृश्य है, और जो सर्वत्र सम हैं ऐसे झल्लरी के आकारवाले चार पर्वतों में, अजनक गिरियों मे नदीश्वर द्वीप के मध्यभाग मे रहे हुए, चार पर्वतों में कि जो अजन रत्नमय होने से काले हैं और चारों दिशाओं मे स्थित हैं दधिमूखों में-चारों अजनगिरियों के पासमें रही हुई सोलह पुष्करि-

કાર પર્વતોમા, રુચકવર પર્વતોમા-જમ્બૂદ્વીપથી તેરમો જે રુચકવર નામનો દ્વીપ છે તેની અદર મડલાકર પર્વતોમા, માનુષોત્તર પર્વતોમા, મનુષ્ય ક્ષેત્રની સીમા કરનારા માડલાકાર પર્વતોમા, કાલોદધિ નામના બીજા સમુદ્રમા, લવણ સમુદ્રમા, ગગા આદિ મહા નદીયોમા, નદ પ્રધાનોમા-પદ્મ, મહાપદ્મ આદિ મહા હ્રદોમા, રતિકરોમા-નદીશ્વર નામના આઠમા દ્વીપની ચાર વિદિશાઓમા રહેલ, એક હજાર યોજન ઊંચા તથા એક હજાર કોસ સુધીનો જેનો મૂળ ભાગ પૃથ્વીમા છે-અદૃશ્ય છે, અને જે સર્વત્ર સમાન છે, એવા ઝાલરના આકારના ચાર પર્વતોમા, અજનગિરિયોમા-નદીશ્વર દ્વીપના મધ્ય ભાગમા આવેલ ચાર પર્વતોમા કે જે અજન રત્નમય હોવાથી કાળા છે અને ચારે દિશાઓમા ઉભેલા છે, દધિમુખોમા-ચારે અજનગિરિયોની પાસે આવેલ

पूर्वोक्ता देवाः कथम्भूता ? इत्याह- 'अच्चतविउललोभाभिभूयमण्णा' अत्यन्तविपुललोभाभिभूतसंज्ञाः - अत्यन्तः-अतिशय विपुलो यो लोभस्तेन अभिभूता संज्ञा=सज्ञान=मनो येषा ते तथोक्ताः=संग्रहैकशीला इत्यर्थ, के ते देवा ? इत्याह-' वासहरइक्खुगार वट्ट पव्वयकुडल-रुचग वरमाणुसोत्तर-कालो दधि लवण-सलिल-दहपति-रतिकर अजणक-सल-दहिमुह-ओवातुप्पाय-कचण क—चित्तविचित्त—जमक—वरसिहरकूडवासी ' वर्षधरेषुकारवृत्तपर्वतकुण्डल रुचक वरमानुषोत्तरकालोदधिलवणसलिलह्रदपतिरतिकराञ्जनकशैलदधिमुखावपा-तोत्पात - काञ्चनक - चित्रविचित्र - यमकवरशिखरकूटवासिनः=तत्र - वर्ष धरा -हिमवदादि पर्वताः, इषुकाराः=धातकीखण्डपुष्करवरद्वीपार्धयोः पूर्वाप रार्द्धयो मर्यादाकारिणो दक्षिणोत्तरायताः पर्वतविशेषाः, वृत्तपर्वताः=शब्दापाति विकटापातिगन्धापातिमाल्यवन्नामका वर्तुलवैढयपर्वताः, कुण्डला'-जम्बूद्वीपादे

एव दीर्घायुष्क होते हैं, परन्तु वे भी परिग्रह के विषय में सतोष से रहित ही रहते हैं। अत.जब इन देवों की यह दशा है तो फिर अन्य देवों की बात ही क्या कही जा सकती है। ये सब देव अत्यत बहुत बडे लोभ से अभिभूत-युक्त सज्ञा-मनोवृत्ति वाले होते ह, अर्थात्-सग्रहशील होते है। (वासहरइक्खुगार वट्ट पव्वयकुडलरुयगवरमाणुसु त्तरकालोदहीलवणसलिलदहपतिरतिकर अजणकसेलदहिमुह-ओवा युप्पायकचणकविचित्तजमकवरसिहरिकूडवासी) तथा हिमवत् आदि वर्षधरों में, इषुकारो में-धातकीखड तथा आधे पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध रूप दो भागों की मर्यादाकारी तथा दक्षिणोत्तर तक लबे ऐसे पर्वतों मे, वृत्तपर्वतो में शब्दापाति, विकटापाति, गन्धापाति तथा माल्यवान इन नामके वर्तुल वैताढ्य पर्वतों मे, कुडलो में ग्यारह जम्बू

પરિગ્રહના વિષયમા સતોષ રહિત જ રહે છે તે જ્યારે એ દેવોની એવી હાલત છે તો બીજા દેવોની તો વાત જ શી કરવી ! એ બધા દેવો અત્યત લોભી વૃત્તિના હોય છે, એટલે કે તેઓ સગ્રહશીલ હોય છે "वासहर-इक्खुगारवट्ट-पव्वय-कुडल-रुचगवर-माणुसुत्तर-कालोदहि- लवणसलिल- दहहपति रतिकर-अजणकसेलदहिमुहओवायुप्पायकचणकविचित्त जमकवरसिहरि कूडवासी" તથા હિમવત્ આદિ વર્ષધરોમા ઇષુકારોમા, ધાતકી ખડ તથા અર્ધા પુષ્કરવર દ્વીપના પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધરૂપ બે ભાગોની મર્યાદા દર્શાવતા તથા દક્ષિણથી ઉત્તર સુધી લાબા એવા પર્વતોમા, વૃતપર્વતોમા-શબ્દાપાતિ, વિકટાપાતિ, ગધાપાતિ, તથા માલ્યવાન એ નામના વર્તુલ વૈતાઢ્ય પર્વતોમા કુડલોમા-અગિયાર જબૂદ્વીપથી કુડલા નામના દ્વીપની અદર આવેલ કુડલા-

तथा चन्दनवनकूट आदिकों में इनके वसने का स्वभाव होता है। ऐसे ये चारों प्रकार के देव परिग्रह मे तृप्ति धारण नही करते हैं।

भावार्थ—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी एव कल्पवासी, इस प्रकार से ये देवों के मूल चार भेद है इनमे भवनपति देवों के असुर-कुमार आदि दश भेद, व्यन्तरनिकाय के-पिशाच, भूत आदि सोलह भेद, ज्योतिष्क निकाय के सूर्य, चन्द्र आदि पाचभेद, तथा कल्पवासियों के कल्पोपपन्न और कल्पातीत ऐसे दो भेद है। सौधर्म ईशान आदि बारह कल्पों में रहने वाले कल्पोपपन्न, और नवग्रैवेयक तथा पच अनुत्तर विमानों में रहने वाले कल्पातीत है। मनुष्यक्षेत्र में रहने वाले ज्योतिषी देव भ्रमणशील है तथा मनुष्यक्षेत्र से बाहिर के ज्योतिषी देव अवस्थित हैं। इन सब देवों के भवन, वाहन आदि विशिष्ट प्रकार का परिग्रह रहता है। उसके रहने पर भी इनकी भावना फिर अधिक परिग्रह की ओर सग्रहशील रहती है। इन सब दवो का हिमवन् आदि पर्वतों में रहने का होता है। सब प्रकार की इन्हें सुख-सामग्री प्राप्त रहती है फिर भी इनकी वाञ्छा परिग्रह की ओर से तृप्त नहीं होती है। सतोपवृत्ति इनके चित्त में नही जगती है॥ सू० ३॥

પર્વતોમા ચન્દનવનકૂટ આદિમા વસવાનો જેમનો સ્વભાવ છે એ ચારે પ્રકારના દેવો પણ પરિગ્રહથી તૃપ્ત થતા નથી

ભાવાર્થ—ભવનવાસી, વ્યન્તર, જ્યોતિષી અને કલ્પવાસી, એ રીતે દેવોના મૂળ ચાર ભેદ છે તેમા ભવનપતિ દેવોના અસુરકુમાર આદિ દશ ભેદ , વ્યન્તર દેવોના પિશાચ, ભૂત આદિ સોળ ભેદ, જ્યોતિષી દેવોના સૂર્ય, ચન્દ્ર આદિ પાચ ભેદ, તથા કલ્પવાસીઓના કલ્પોપપન્ન, અને કલ્પાતીત એવા બે ભેદ, સૌધર્મ, ઈશાન આદિ બાર કલ્પોમા રહેનાર કલ્પોપપન્ન, અને નવગ્રૈવેયક તથા પાચ અનુત્તર વિમાનોમા રહેનાર કલ્પાતીત દેવો છે મનુષ્ય ક્ષેત્રમા રહેનારા જ્યોતિષીદેવો ભ્રમણશીલ છે તથા મનુષ્ય ક્ષેત્રની બહારના જ્યોતિષી દેવો સ્થિર છે એ બધા દેવોનો ભવન, વાહન આદિ વિશિષ્ટ પ્રકારનો પરિગ્રહ રહે છે તે બધી વસ્તુઓ હોવા છતા પણ તેમની વૃત્તિ અધિક પરિગ્રહને માટે સગ્રહશીલ રહ્યા કરે છે, તે બધા દેવોનુ નિવાસસ્થાન હિમવાન આદિ પર્વતો છે તેમને બધા પ્રકારની સુખસામગ્રીઓ મળે છે છતા પણ પરિગ્રહ માટેની તેમની વાસના તૃપ્ત થતી નથી તેમના ચિત્તમા સતોષ વૃત્તિ જાગતી નથી ॥સૂ ૩॥

अवपतन्ति वैमानिका देवा येषु तेऽवपाताः, यत्रावपत्य वैमानिका देवा मनुष्य-क्षेत्रेषु समागच्छन्ति, उत्पतन्ति येभ्यस्ते उत्पाताः, येभ्य उत्पत्य भवनपतयो मनुष्यक्षेत्रे समागच्छन्ति, अवपाताश्चोत्पाताश्चेति द्वन्द्वः, तिगिच्छकूटादय पर्वता इत्यर्थः, तथा-काञ्चनका =उत्तरकुरुषु ये देवकुरुषु ये च प्रत्येक पञ्चाना महाह्रदादीना प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोः दशदश काञ्चनकपर्वता सन्ति, इति सर्व संकलनया द्विशतसख्यकाः काञ्चनकपर्वता भवन्ति। तथा चित्रविचित्रो=निषध नामक वर्षधर समीपवर्त्तिनो शीतोदाभिधानमहानद्युभयतटवर्त्तिनो चित्रविचित्रकूटाभिधानपर्वतो, यमकवरौ=नीलवद् वर्षधर प्रत्यासन्नौ शीताभिधानमहानद्युभयतटवर्तिनो यमकवरनामको पर्वतौ, शिखरिणः=समुद्रमध्यवर्तिनो गोस्तूभादि-पर्वताः,कूटा =चन्दनवनकूटादय , एतेषा द्वन्द्वः, एषु वस्तु शील येषा ते तथोक्ताः, देवाः परिग्रहे तृप्तिं न लभन्ते ॥ सू० ३ ॥

णियो के मध्यभाग मे जो सोलह सोलह श्वेत पर्वत हैं उनमें, अवपात-पर्वतो में-जहाँ उतर कर वैमानिक देव मनुष्य क्षेत्र में आते हे उन स्थानों में (ये स्थान तिगिच्छकूट आदि नाम वाले पर्वत कहलाते हैं) काञ्च-नपर्वतों में-ये पर्वत उत्तरकुरु तथा देवकुरु के बीच में हर एक पांच महाह्रदों के प्रत्येक के दोनों कोनों पर दश दश हैं। इस तरह से ये दोनों दोसौ की सख्या में हैं उन पर्वतों में, चित्रविचित्र कूट नाम के पर्वतों मे-ये दोनो पर्वत निषध नामके वर्षधर के समीप में हैं, तथा शीतोदा नामकी महानदी के दानो तट पर वर्तमान नील वर्षधर के पास रहे हुए तथा शीता महा नदी के दोनों तट परवर्तमान ऐसे यम कवर नाम के पर्वतों मे, शिखरी-समुद्रमध्यवर्ती गोस्तूभ आदि पर्वतों में,

સોળ પુષ્કરણિયોના મધ્ય ભાગમા જે સોળ સોળ શ્વેત પર્વત છે તેમા, અવ પાત પર્વતોમા-જ્યા ઉતરીને વૈમાનિક દેવો મનુષ્ય ક્ષેત્રમા આવે છે એ સ્થાનોમા, ઉત્પાત પર્વતોમા-જ્યા ઉતરીને ભવનપતિ મનુષ્યક્ષેત્રમા આવે છે તે સ્થાનેમા (તે સ્થાનો તિગિચ્છકૂટ આદિ નામના પર્વતો કહેવાય છે) કાચનક પર્વતોમા-તે પર્વતો ઉત્તરકુરુ તથા દેવકુરુની વચમા દરેક પાચ મહાહ્રદોમાના પ્રત્યેકના બન્ને ખૂણા પર દશ દશ છે, અને એ રીતે તે બન્ને બસોની સખ્યામા છે, તે પર્વતોમા, ચિત્રવિચિત્રકૂટ નામના પર્વતોમા-એ બન્ને પર્વતો નિષધ નામના વર્ષધરની પાસે છે, તથા શીતોદા નામની મોટી નદીના બન્ને કિનારા પર આવેલા છે, નીલ વર્ષધરની પાસે આવેલ તથા શીતા મહાનદીના કિનારા પર આવેલ યમકવર નામના પર્વતોમા શિખરી-સમુદ્રની વચ્ચેના ગોસ્તૂભ આદિ

हुति, नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाया य सन्ना य कामगुणअण्हगा य इंदियलेसाओ, सयणसंपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइं दव्वाइं अणंतगाइं इच्छंति परिघेत्तुं सदेवमणुयासुरम्मि लोए । लोभपरिग्गहो जिणवरेहिं भणिओ, नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सव्वे जीवाण सव्वलोए ॥ सू० ४ ॥

टीका—'वक्खार अकम्मभूमीसु' वक्षस्काराकर्मभूमिषु वक्षस्कारा =चित्रकूटादयो विजयविभागकारिणश्च, अकर्मभूमय =हैमवतिका भोगभूमयश्च तासु तथोक्तासु ये वर्तन्ते, तथा 'सुविभत्तभागदेसासु' सुविभक्तभागदेशासु सुविभक्ता भागदेशा जनपदा यासु तास्तथोक्तासु 'कम्मभूमिसु' कर्मभूमीषु—कृष्यादिकर्मस्थानभूतेषु भारतादिषु 'जे वि य' येऽपि च नराः 'चाउरतचक्कवट्टी' चातुरन्तचक्रवर्तिनो वासुदेवा. बलदेवा 'मंडलिया' माण्डलिका 'इस्सरा' ईश्वराः 'तलवरा' तलवराः, 'सेणावई' सेनापतय, 'इब्भा' इभ्याः 'सेट्ठी' श्रेष्ठिनः

अब सूत्रकार मनुष्य के परिग्रह का वर्णन करते हैं–'वक्खार' इत्यादि (वक्खार अकम्मभूमीसु) विजय विभागकारी चित्रकूट आदि वक्षस्कारों में, अकर्मभूमियो मे-हेमवतिक आदि युगलिक धर्मवाले क्षेत्रों में, तथा (सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमीसु) सुविभक्त भाग देशवाली कर्म भूमियों में-कृष्यादि कर्म के स्थानभूत भरत आदि क्षेत्रों में (जे वि य नरा चाउरंत चक्कवट्टी वासुदेवा बलदेवा मंडलिया इस्सरा तलवरा सेणावई इब्भा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा गणणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिगा अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गहं संचिणंति) जो भी मनुष्य हैं, चातुरन्तचक्रवर्ती हैं,

---

હવે સૂત્રકાર મનુષ્યોના પરિગ્રહનું વર્ણન કરે છે—"वक्खार" ઈત્યાદિ

"वक्खार–अकम्म भूमीसु" વિજય વિભાગકારી ચિત્રકૂટ આદિ વક્ષસ્કારોમા, અકર્મભૂમિયોમા–હૈમવતિક આદિ યુગલિક ધર્મવાળા ક્ષેત્રમા, તથા "सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमीसु" સુવિભક્ત ભાગ દેશવાળી કર્મભૂમિયોમા–ખેતી આદિ કર્મના સ્થાનરૂપ ભરત આદિ ક્ષેત્રોમા "जेविय नरा चाउरंतचक्कवट्टी वासुदेवाबलदेवा मंडलिया इस्सरा तलवरा सेणावई इब्भा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा गणणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिया अमच्चा ए ए अण्णे य एवमादी परिग्गहं संचिणंति" જે મનુષ્યો છે, ચાતુરન્ત ચક્રવર્તિ છે

अथ मनुष्यपरिग्रह वर्णयति–' वक्खार ' इत्यादि—

मूलम्–वक्खार अकम्मभूमीसु सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमीसु। जे वि य नरा चाउरंतचक्कवट्टी वासुदेवा वलदेवा मंडलिया इस्सरा तलवरा सेणावई इब्भा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा गणणायगा माडंविया सत्थवाहा कोडुंविया अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गह संचिणंति–अणतमसरणं दुरंतं अधुवमणिच्च असासय पावकम्मनेम अवकिरियव्व विणासमूल वहवध परिकिलेसवहुलमणंतसंकिलेसकरणं। ते त धणकणगरयणनिचियपडिया चेव लोभघत्था ससार अतिवयंति सव्वदुक्खसनिलयण। परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसय सिक्खए वहुजणो कलाओ य वावत्तरिसुनिउणाओ लेहादियाओ सउणरुआवसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महिलागुणे रइजणणे सिप्पसेव असिमसि किसिवाणिज्ज ववहार अत्थसत्थ इसुसत्थ च्छरुप्पगय विविहाओ य जोगजुजणाओ। अन्नेसु य एवमाइएसु वहुकारणसएसु जावजीव नडिज्जए सचिणंति मदवुद्धी परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करेंति पाणाणवहकरण, अलियनियडि साइसपओगे परदव्व अभिज्झ सपरदार-गमणासेवणाए आयासविसूरण कलहभंडणवेराणि य अवमाणविमाणणाओ। इच्छमहिच्छपिवाससतत तिसिया तण्हगेहिलोभघत्था अत्ताण अनिग्गहिया करेंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे। परिग्गहे चेव

पापकर्मणां=विनष्टज्ञानावरणीयादिकर्मणां मूलमित्यर्थः, तथा 'अवकिरियव्व' अवकरितव्यम् ,-त्याज्यम्, 'विणासमूलम्' विनाशमूलम्=ज्ञानादिगुणनाशकारणम्, 'वहबधपरिकिलेसबहुल' वधबन्धपरिक्लेशबहुलम्=वधो-हिंसन, बन्धो-बन्धनम्, तज्जनिता परिक्लेशास्तापा बहुला =प्रचुरा यस्मिंस्त तथोक्तम्, तथा -'अणतसकिलेसकारण' अनन्तसक्लेशकारणम्-अनन्ता ये सक्लेशाः=दुःखानि-तेषा कारणम्। एतादृश परिग्रह चक्रवर्त्यादयस्तद्भिन्नाश्च नराः सचिन्वन्ति। ते-पूर्वोक्ताः 'लोभघत्था' लोभग्रस्ताः 'त धणकणग रयणनिचय' त धनकनक रत्ननिचय 'पडियाचेव' पिण्डयन्तश्चैव ससार=चतुर्गतिलक्षणम्, 'अतिवयति'

भाव वाला होने के कारण यह अशाश्वत है। (पावकम्मनेम) ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का कारण मूल होने से यह पापकर्म का नेमभूत है। (अवकिरियव्व) मुमुक्षुओ को छोडने योग्य होने के कारण यह अवकरितव्य-त्याज्य है। (विणासमूल) ज्ञानादिगुणों के नाश का हेतु होने से यह विनाशमूल है। (वहबधपरिकिलेसबहुल) इसके भीतर वध-हिंसा, बध-बधन, और परिक्लेश-सताप ये सब बहुत अधिकरूप में हुए है। (अणतकिलेसकारण) इसीलिये यह जीवो को अनतसक्लेश कारण होता है। ऐसे इस परिग्रह को चक्रवर्ती जन आदि तथा इनसे भिन्न जो और मनुष्य है वे सचित करते रहते है। क्यों कि ये समस्त ही जन (लोभघत्था) लोभरूप कषाय से ग्रसित होते है। (तं घणकणगरयणनिचय) इसी कारण उस धन, कनक एव रत्न के निचय को (पडियाचेव) सग्रह करने में ही लगा रहा करते है। इसी कारण

"पावकम्मनेम" જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોનું મૂળ કારણ હોવાથી તે પાપકર્મોના નિમિત્ત રૂપ છે, "अवकिरियव्व" મુમુક્ષોને તે છોડવા યોગ્ય હોવાથી તે "अवकरितव्य" ત્યાજ્ય છે, "विणासमूल" જ્ઞાનાદિ ગુણોના નાશ ને માટે કારણ રૂપ હોવાથી તે વિનાશમૂળ છે "वहबधपरिकिलेसकारण" તેની અદર વધ-હિંસા, બધ-બધન, અને પરિક્લેશ-સતાપ એ બધું વધારે પ્રમાણમા રહેલ છે "लोभघत्था" તે કારણે તે જીવોને અનત સક્લેશ—સતાપનું કારણ બને છે એવા તે પરિગ્રહનો ચક્રવર્તિ આદિ તથા તે સિવાયના બીજા જે માણસો હોય છે, તેઓ સચય કરતા રહે છે, કારણ કે તે સઘળા લોકો "त घणकणगरयणनिचय" તે કારણે તેઓ ધન, કનક, અને રત્નના સમૂહના "पडियाचेव" સગ્રહ કરવામા જ લીન રહે છે એ જ

'रट्ठिया ' राष्ट्रियाः ' पुरोहिया ' पुरोहिता ' कुमारा ' कुमाराः दंडणायगा ' दण्डनायकाः ' गणनायगा ' गणनायकाः ' माडंबिया ' माडम्बिकाः 'सत्थवाहा' सार्थवाहाः ' कुडंबिया ' कौटुम्बिकाः, 'अमचा ' अमात्या', ' एए ' एते चातु रन्तचक्रवर्त्याद्यमात्यान्ताः तथा ' अन्ने य एवमाई ' अन्ये च एवमादयः=पूर्वोक्तेभ्यः इतरे च तत्सदृशा ये नराः ' परिग्गहं ' परिग्रहं ' संचिणंति ' संचिन्वन्ति -परिग्रहस्य संचयं कुर्वन्तीत्यर्थः कीदृशं परिग्रहम् ? इत्याह-' अणंतं ' अनन्तम्- अपरिमाणत्वात्, 'असरणं' अशरणं-रक्षणासमर्थत्वात्, ' दुरंतं ' दुरन्तं=पर्यवसानदारुणम् ' अधुवं ' अध्रुवं-विनश्वरम्, 'अणिच्चं ' अनित्यम्,=अस्थिरम्, ' असासयं ' अशाश्वतं=प्रतिक्षणं विशरणशीलम्, ' पावकम्मणेमं ' पापकर्मनेम-

वासुदेव हैं, बलदेव हैं, माण्डलिक हैं, ईश्वर हैं, तलवर हैं, सेनापति हैं, इभ्य हैं, श्रेष्ठी हैं, राष्ट्रिय हैं, पुरोहित हैं, कुमार हैं, दंडनायक हैं, गणनायक हैं, माडम्बिक हैं, सार्थवाह हैं, कौटुम्बिक हैं, अमात्य हैं, तथा इनसे भिन्न जो और भी इन्हीं जैसे मनुष्य हैं वे सब परिग्रह का संचय करते हैं। अब सूत्रकार विशेषणों द्वारा परिग्रह में विशेषता प्रकट करते हैं वे कहते हैं कि यह परिग्रह (अणंत) अपरिमित होने से अनंत है। (असरण) रक्षा करने में असमर्थ होने से अशरणरूप है। (दुरंत) अन्त में इसका विपाक जीवों को बहुत ही भयंकर रूप में भोगना पड़ता है-इसलिये दुरन्तविपाक वाला होने के कारण यह दुरन्त है। (अधुव) विनश्वर स्वभाव वाला होने के कारण यह अध्रुव है। (अणिच्च) अस्थिर होने से यह अनित्य है। (असासय) प्रतिक्षण खिरने का स्व

વાસુદેવ છે, બળદેવ છે, માંડલિક છે, ઇશ્વર છે, તલવર છે, સેનાપતિ છે, ઇભ્ય છે, શ્રેષ્ઠી છે, રાષ્ટ્રિય છે, પુરોહિત છે, કુમાર છે, દંડનાયક છે, ગણનાયક છે, માડમ્બિક છે, સાર્થવાહ છે, કૌટુમ્બિક છે, અમાત્ય છે, તથા તે સિવાયના બીજા પણ તેમના જેવા જે લોકો છે તે બધા પરિગ્રહનો સંચય કરે છે હવે સૂત્રકાર વિશેષણો દ્વારા પરિગ્રહમાં વિશેષતા પ્રગટ કરવાને માટે કહે છે કે-આ પરિગ્રહ " अणंत " બેહદ હોવાથી અનંત છે " असरण " રક્ષા કરવાને અસમર્થ હોવાથી અશરણરૂપ છે, " दुरंत " જીવોને તેનો વિપાક (ફળ) બહુ જ ભયંકર રીતે ભોગવવું પડે છે-તેથી દુરન્ત વિપાક વાળો હોવાને કારણે તે દુરન્ત છે " अधुव " નાશવંત સ્વભાવનો હોવાથી તે અધ્રુવ છે, " अणिच्च " અસ્થિર હોવાથી તે અનિત્ય છે, " असासय " પ્રતિક્ષણ હાથમાંથી ખરી પડવાના સ્વભાવવાળો હોવાથી તે અશાશ્વત છે,

ऽवसरो लभ्यते तत् शिल्प ' शिल्पसेवा ' इत्युच्यते, तथा ' असिमसिकिसिवाणिज्ज ' असिमषीकृषिवाणिज्यम्=असिःखड्गाभ्यासः, मसि:=मषिकृत्यमक्षरलेखनादि, कृषिः=कर्षणम् , 'वाणिज्ज ' वाणिज्यम्=वणिक्कर्म, एतेषां समाहारद्वन्द्वः, तत् ' ववहार ' व्यवहार=व्यवहारशास्त्रम् , तथा ' अत्थसत्थ ' अर्थशास्त्रम् , अर्थोपायप्रतिपादक कौटिल्यबार्हस्पत्याद्यशास्त्रम् , ' इसुसत्थ ' इषुशास्त्रम्-धनुर्वेद ' छरुप्पगय ' त्सरुप्रगत=खड्गमुष्टिग्रहणोपाय, तथा ' विविहाओ ' विविधाः ' जोगजुंजणाओ य ' योगयोजनाश्च=वशीकरणादिप्रयोगाश्च शिक्षते । तथा

हुए है सीखते है। तथा (सिप्पसेव) ऐसी शिल्प विद्या को सीखते है कि जिसके बल पर उन्हें राजा की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। तथा असि, मषी, कृषि एवं वाणिज्यव्यापार, (ववहार) व्यवहार शास्त्र इन कर्मों को सीखते है। तलवार वगैरह अस्त्र शस्त्रादि से आजीविका चलाना इसका नाम असिकर्म है। लेखन आदि करके जीवन निर्वाह करना इसका नाम मषीकर्म है। खेती किसानी करके जीविका चलाना इसका नाम कृषिकर्म है। व्यापार धंदा करना इसका नाम वाणिज्य कर्म है। जिससे लोक व्यवहार चलता है वह व्यवहारशास्त्र है। परिग्रही जीव (अत्थसत्थ) अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करते हैं। इस अर्थ शास्त्र के प्रणेता कौटिल्य, बृहस्पति आदि हुए हैं। इसके अध्ययन से व्यापारिक क्षेत्र में व्यापारियों को पैसेकी आयके साधन कैसे२ क्या२ होते हैं इस सब विषय का बोध हो जाता है। इसी परिग्रह की ममता से जीव (इसुसत्थ) धनर्वेद को (छरुप्पगय) तलवार आदि के चलाने की कला को तथा (विविहाओ जोगजुंजणाओ) वशीकरण आदि

તેમને રાજાની સેવા કરવાની તક મળે તથા અસિ, મષી, કૃષિ અને વાણિજ્ય વ્યાપાર, ' ववहार " વ્યવહાર શાસ્ત્ર વગેરે કાર્યો શીખે છે તલવાર આદિ અસ્ત્ર શસ્ત્રાદિથી નિર્વાહ ચલાવવો તેનું નામ અસિકર્મ છે, લેખન આદિ કરીને જીવન નિર્વાહ ચલાવવો તેનુ નામ મષીકર્મ છે ખેતી કરીને નિર્વાહ ચલાવવો તેનુ નામ કૃષિકર્મ છે વ્યાપાર રોજગાર કરવો તેનુ નામ વાણિજ્ય કર્મ છે જેનાથી લોકવ્યવહાર ચાલે છે તે વ્યહારશાસ્ત્ર છે પરિગ્રહી જીવ " अत्थसत्थ " અર્થશાસ્ત્રનુ પણ અધ્યયન કરે છે તે અર્થશાસ્ત્રના પ્રણેતા કૌટિલ્ય, બૃહસ્પતિ આદિ થયા છે તેનો અભ્યાસ કરવાથી વ્યાપારના ક્ષેત્રમા પૈસા કમાવવાના સાધનો કેવા કેવા હોય છે, અને કયા કયા હોય છે એ બધી બાબત વેપારીઓને જાણવા મળે છે એ જ પરિગ્રહની મમતાથી જીવ " इसुसत्थ " ધનુર્વેદ, " छरुप्पगय " તલવાર આદિ વાપરવાની કળા, તથા

'अतिव्रजन्ति-प्राप्नुवन्तीत्यर्थ ,कीदृश ससारम् ? इत्याह—'सव्वदुक्खसनिलयण' सर्वदुःखसनिलयनम्=सर्वदुःखाना संनिलयनम्=आश्रयभूतम् । तथा-'परिग्गहस्स य अट्ठाए' परिग्रहस्य च अर्थाय=परिग्रहलक्षिकृत्येत्यर्थः,, 'बहुजणो' बहुजनः= जनसमुदायः 'सिप्पसयं' शिल्पशत=आचार्योपदशगम्यमनेकविध शिल्प 'सिक्खते' शिक्षते । तथा 'सुनिउणहओ' सुनिपुणाः=शिक्षार्थिना सुनैपुण्याधायकाः 'लेहाइयाओ' लेखादिकाः=लेख आदौ यासां तास्तथोक्ता, 'सउणरुयावसाणाओ' शकुनरुतावसानाः=शकुनाना=पक्षिणा रुत जल्पितमवसानेऽन्ते यासां तास्तथोक्ताः, 'गणियप्पहाणाओ' गणितप्रधानाः=गणित प्रधान यासु तास्तथोक्ताः 'बावत्तरिं' द्विसप्तति 'कलाओय' कलाश्च शिक्षते। तथा-'रतिजणणे' रतिजननान्=रतिं=राग जनयन्ति ये ते रतिजननास्तास्तथोक्तान 'चउसट्ठिं च महिला गुणे' चतुः षष्ठिं च महिलागुणान्=वात्स्यायनप्रोक्तान् नृत्यगीतादीन्, तथा 'सिप्पसेव' शिल्पसेवा=शिल्पेन सेवा ता तथोक्ताम्, येन शिल्पेन राजसेवा

परिग्रही जीव (सव्वदुक्खसनिलयण) समस्त दुःखो के आश्रयभूत इस (ससार) चतुर्गतिरूप ससार में (अतिवयति) भटकते रहते हैं। तथा (परिग्गहस्सय अट्ठाए बहुजणो सिप्पसय सिक्खए) इस परिग्रह के निमित्त को लेकर ही बहुत से लोग कलाचार्य के उपदेश से प्राप्त होने वाले अनेक शिल्पो को सीखते हैं तथा (सुनिउणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसायाओ गणियप्पहाणाओ बावत्तरिकलाओ) अपने में अच्छी तरह से निपुणता बढाने वाली लेखकला से लेकर शकुनरुत पर्यंत ७२ बहत्तर कलाओ को जिने किमे गणितप्रधान होता है सीखते हैं तथा (रइजणणे चउसट्ठिं च महिलागुणे) रागजनक नृत्य, गीत आदि स्त्रीयों से सबध रखने वाली चौसठ कलाओ को कि जिनके प्रदर्शक वात्स्यायन ऋषि

કારણે પરિગ્રહી જીવ "सव्वदुक्खसनिलयण" સમસ્ત દુઃખોના આશ્રયભૂત આ "ससार" ચાર ગતિવાળા સસારમા "अतिवयति" ભટકયા કરે છે, તથા "परिग्गहस्सय अट्ठाए बहु जणो सिप्पसय सिक्खए" આ પરિગ્રહને નિમિત્તે જ ઘણા લોકો કલાચાર્યના ઉપદેશથી પ્રાપ્ત થતી અનેક કળાઓ શીખે છે, તથા "सुनिउणाओ लेहाइयाओ स ऊणरुयावसायाओ गणियप्पहाणाओ बावत्तरिकलाओ" પોતાની નિપુણતા સારી રીતે વધારનારી લેખન કળાથી લઈને શકુનરુત સુધીની ૭૨ બોતેર કલાઓ કે જેમા ગણિત મુખ્ય હોય છે તે બધી કળાઓ શીખે છે, તથા "रइजणणे चउसट्ठिंय महिलागुणे" રાગ જનક નૃત્ય, ગીત આદિ સ્ત્રીઓ સાથે સબધ રાખનારી ચોસઠ કલાઓ શીખે છે એ કલાઓના પ્રદર્શક વાત્સ્યાયન ઋષિ હતા તથા "सिप्पसेव" એવી શિલ્પ વિદ્યાઓ શીખે છે કે જેને પ્રભાવે

'अभिज्झ' अभिध्या–आसक्तिस्तां तथोक्ताम्, तथा 'सपरदारगमणासेवणाए' स्वदारगमनसेवनायाम् 'आयासविसूरण' आयासखेद, स्वदारगमने आयास– शारीर मानस च श्रमम्, परदारासेवने खेदम्=परदारामाप्तौ मनः खेद च कुर्वन्तीत्यर्थ', तथा 'कलहभडणवेराणि य' कलहभण्डनवैराणि च तत्र–कलहो– वाचिक युद्धम्, भण्डनम्–परदोषोद्घाटन गाळीप्रदान वा, वैर=चित्तेऽमर्षाऽनुबन्धः, तथा 'अवमाणविमाणणाओ' अपमानविमानने, अपमान विनयध्वंसः, विमानना= तिरस्करणम्, एतानि सर्वाणि परिग्रहस्यैवार्थाय कुर्वन्ति। तथा 'इच्छमहिच्छ प्पिवाससययतिसिया' इच्छामहेच्छापिपासासततृषिता., तत्र इच्छा=अभिलाषमात्रम्, महेच्छा=महाभिलाषश्चक्रवर्त्यादिपदाना पिपासा=विषयसुखपानेच्छा, ताभ्यः तृषिता इव तृषिताः तथा 'तण्हागेहिलोभघत्था' तृष्णागृद्धिलोभग्रस्ताः, तृष्णा= अप्राप्तद्रव्यस्य लाभेच्छा' गृद्धिः=प्राप्तद्रव्यासक्ति', लोभः=चित्तविमोहनम्, तैर्ग्र-

करते हैं। (परदव्वअभिज्झ) दूसरों के द्रव्य में आसक्ति भाव करते हैं। (सपरदारगमणा सेवणाए आयास विसूरण) अपनी स्त्री के सेवन में शारीरिक एव मानसिक परिश्रम करते हैं, परस्त्री के अप्राप्ति में मनखेद किया करते हैं। तथा (कलहभडणवेराणिय) कलह–वाचिक युद्ध, भडन –असभ्य शब्दो का प्रयोग–गाली देना आदि, वैर–चित्त में क्रोध करना तथा (अवमाणविमाणणाओ) दूसरों का अपमान करना, तिरस्कार करना ये सब बातें इस एक परिग्रह के निमित्त ही पापियो द्वारा की जाती हैं। तथा (ईच्छमहिच्छप्पिवाससययतिसिया) परिग्रही जीव इच्छाओ से, बड़ी २ अभिलाषाओं से, एव विषय सुखपान की कामनाओंसे सदा तृषित व्यक्ति की तरह तृषित ही बने रहते हैं। तथा (तण्हागेहिं लोभघत्था) तृष्णा–अप्राप्त–द्रव्य को प्राप्त करनेकी भावना, गृद्धि–प्राप्तद्रव्य में

अभिज्झ" બીજાના દ્રવ્યમા આસક્તિ રાખે છે "सपरदारगमणासेवणाए आयासविसूरण" પોતાની સ્ત્રીને સેવવાનો શારીરિક અને માનસિક પરિશ્રમ કરે છે, એને પરસ્ત્રીની અપ્રાપ્તિથી મનમા ખેદ અનુભવે છે તથા "कलह भडणवेराणिय" કલહ–વાગ્યુદ્ધ, ભડન–ગાળો આદિ અસભ્ય શબ્દોનો ઉપયોગ વૈર–મનમા ક્રોધ કરવો તથા "अवमाणविमाणणाओ" બીજાનુ અપમાન, તિરસ્કાર વગેરે બધી બાબતો એક પરિગ્રહને કારણે જ લોકો દ્વારા કરાય છે, તથા "इच्छमहिच्छप्पिवाससयतिसिया" પરિગ્રહી જીવ ઇચ્છાઓથી, મોટી મોટી અભિલાષાઓથી, અને વિષય સુખપાનની કામનાઓથી સદા તૃષિત માણ સની જેમ તૃષિત જ રહ્યા કરે છે તથા "तण्हागेहि लोभघत्था" તૃષ્ણા–અપ્રાપ્ત દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના, ગૃદ્ધિ–પ્રાપ્ત દ્રવ્યમા વધારે પડતી આસક્તિ અને

' अन्नेसु एवमाइएसु ' बहूसुकारणसएसु ' अन्येषु एवमादिकेषु बहुषु कारणश तेषु=शिल्पादिभिन्नेषु परिग्रहोपादानशतेषु ' जावजीव ' यावज्जीवं ' नडिज्जए ' निमज्जते=निमग्नो भवति । तथा ' सचिणति मदबुद्धी ' सचिन्वन्ति मन्दबुद्धय परिग्रहम् । तथा ' परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करेंति ' परिग्रहस्यैव च अर्थाय कुर्वन्ति, 'पाणाणवहकरण ' प्राणाना वधकरम्=परिग्रह कर्तुं प्राणिना वध कुर्वन्तीत्यर्थः, तथा—'अलियनियडिसाइसपओगे ' अलीकनिकृतिसातिसम्प्रयोगान्, अधिकम्—असत्यम् , निकृतिः—मधुरवचनादिभिराश्वास्य वञ्चनम् , सातिसम्प्रयोगः—त्रिगुणद्रव्येषु द्रव्यान्तर सयोज्य प्रशस्तगुणभ्रमोत्पादनम्, एतेषा द्वन्द्व , तास्तथोक्तान्, ' परदव्व अभिज्झ ' परद्रव्याभिध्याम्—परद्रव्येषु=परधनेषु

अनेकविध प्रयोगों को भी (सिक्खए) सीखते हैं। (अन्नेसु य एवमाइएसु) तथा इसी तरह के और भी इन शिल्पादिकों से भिन्न अनेक (बहुकारणसएसु) परिग्रह के सैंकड़ों कारणो में परिग्रह को अर्जन करने की लालसावाला प्राणी (जावजीव) जीवन पर्यंत (नडिज्जए) मग्न होता रहता है। (सचिणति मदबुद्धी) इसलिये इस कथन से यही निष्कर्ष निकलता है कि जो मदबुद्धि होते हैं वे ही उत्कट परिग्रह का सचय करते हैं। तथा (परिग्गहस्सेव य अट्ठाए पाणाणवहकरण करेंति) परिग्रह के निमित्त ही प्राणी प्राणियो के प्राणोंको वध करते हैं तथा (अलियनियडि–साइ सपओगे) इस परिग्रह को लक्ष्य करके ही वे (अलिय) असत्यभाषण करते हैं (नियडि) मधुर २ भाषणों से दूसरो को विश्वास दिलाकर फिर उन्हे ठगते हैं, (साइसपओगे) ओछी कीमत की वस्तु मे बहुमूल्यवाली वस्तु को मिलाकर उसे अधिक मूल्यवाली बनादिया

" विविहाओ जोगजुंजणाओ " वशीકरણ આદિ અનેક વિધ પ્રયોગો પણ શીખે " अन्नेसु य एवमाइएसु " તથા તે કળાઓ સિવાયના એ જ પ્રકારના બીજા અનેક " बहुकारणसएसु " પરિગ્રહોના સેકડો કારણોમા પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કરવાની લાલસા વાળા જીવો " जावजीव " આખુ જીવન " नडिज्जए " લીન રહે છે " सचिणति मदबुद्धी " તેથી આ કથનથી એ જ ફલિત થાય છે તથા કે જે લોકો મંદબુદ્ધિવાળા હોય છે તેઓ જ ઉત્કટ પરિગ્રહનો સ ચય કરે છે તથા " परिग्गहस्सेव य अट्ठाए पाणाणवहकरण करेंति " પરિગ્રહને નિમિત્તે જ પ્રાણી અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ કરે છે, તથા " अलिय–नियडि–साइ सपओगे " આ પરિગ્રહને લક્ષ્ય કરીને જ તેઓ " अलिय " અસત્ય બોલે છે, " नियडि " મીઠા મીઠા વચનોથી બીજામા પોતાના પ્રત્યે વિશ્વાસ જમાવીને પાછળથી તેને ઠગે છે " साइसपओगे " ઓછી કીમતની વસ્તુનુ ભારે કીમતની વસ્તુ સાથે મિશ્રણ કરીને તેનો વધારે ભાવ ઉપજાવે છે, " परदव्व

लेश्याश्च भवन्ति। तथा – 'सयणसपओगा' स्वजनसम्प्रयोगाः=स्वजनैः=पुत्रदारादिभिः सह सम्प्रयोग'=सम्योगाश्च भवन्ति। ते चक्रवर्त्यादयः 'अणतगाइ' अनन्तकानि=पर्यवसानरहितानि 'सचित्ताचित्तमीसगाइ' सचित्ताचित्तमिश्रकाणि =तत्र सचित्तानि सजीवानि=पुत्रादीनि अचित्तानि=अजीवानि=हिरण्यसुवर्णरत्नादीनि, मिश्रकाणि=सचित्ताचित्तरूपाणि हिरण्यसुवर्णाद्याभरणसहितानि पुत्रकलत्रा-

शब्दादि विषयरूप आस्रव, इन्द्रियों की अनर्गल प्रवृत्तियां, कृष्ण, नील आदि अप्रशस्त लेश्याएँ रहती हैं। अर्थात् परिग्रह पाप के सद्भाव में ही नियमतः मायादि शल्यों का सद्भाव जीवों में पाया जाता है। मन वचन आदि योगों की प्रवृत्ति इसी के होने पर अशुभ रूप मे रहती हैं। गौरवों का अस्तित्व तथा कषायों की सत्ता एव आहार आदि चार प्रकार की सज्ञाओं का सद्भाव इस एक परिग्रह की मौजूदगी मे ही जीवो में पाये जाते ह। इन्द्रियों की स्वच्छद प्रवृत्ति एव कृष्ण आदि अशुभ लेश्याओं का सबध इसी परिग्रह से जीवों मे पाया जाता है। तथा स्वजन आदि के साथ का सबध भी इसी परिग्रह के ऊपर निर्भर है। चक्रवर्ती आदि सभी मनुष्य यही चाहते हैं कि हमारे पास अनत सचित्त, अचित्त और मिश्र परिग्रहरूप द्रव्य बना रहे। पुत्र आदि सचित्त परिग्रह, हिरण्य, सुवर्ण, रत्न आदि अचित्त परिग्रह, एव हिरण्य, सुवर्ण, रत्न आदि के आभरण सहित पुत्रादि मिश्र परिग्रह हैं। तात्पर्य इसका यही है कि चक्रवर्ती से लेकर छोटे से छोटा प्राणी यही चाहता रहता है कि

ઈન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓ રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ શલ્યોનો સદ્ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા કષાયોની સત્તા, તથા આહાર આદિ ચાર પ્રકારની સજ્ઞાઓ આદિનો સદ્ભાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય તો જ જીવોમા જોવા મળે છે ઈન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા સ્વજન આદિ સાથેનો સબધ પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્રવર્તિ આદિ બધળા લોકો એ જ ચાહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ છે હિરણ્ય, સુવર્ણ રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્-

स्ताः=व्याप्ताः, तथा 'अत्ताण अणिग्गहिया' आत्मनाऽनिगृहीताः=अवशीकृता-त्मानः 'करेंति' कुर्वन्ति। किं कुर्वन्ति? इत्याह—'कोहमाणमायालोभे' क्रोधमानमायालोभान्, कीदृशान्? 'अकित्तणिज्जे' अकीर्तनियान्-अवाच्यान्। तथा 'परिग्गहे चेव' परिग्रहे एव 'हुति' भवन्ति, 'नियमा' नियमात्-निश्चयतः, कानि कानि भवन्ति? त्याह 'सल्ला' शल्यानि = मायानिदानमिथ्या-दर्शनरूपाणि त्रीणि, 'दण्डा य' दण्डाश्च-दुष्प्रणिहितमनोवाक्कायरूपाः, 'गार-वाय' गौरवाणि च=ऋद्धिरससातरूपाणि च 'कसायसण्णा य' कषायसञ्ज्ञाश्च, कषायाः=प्रतिताः, सञ्ज्ञाः=आहार मैथुनभयपरिग्रहादयः, तथा-'कामगुण-अण्हगा य' कामगुणाश्रवाश्च कामगुणाः=शब्दादयस्त एव आश्रवाः=आश्रवद्वाराणि 'इंदिय' इन्द्रियाणि=अप्रवृत्तानि इन्द्रियाणि, 'लेसाओ' लेश्याः=अप्रशस्ता

अधिक आसक्ति, लोभ-लालच, इन सब से घिरे रहते हैं (अत्ताणा अणिग्गहिया) इन की आत्मा इनके वश में नहीं हो पाती है। और इस तरह ये परिग्रह की ममता में फँसकर (कोहमाणमायालोभे) क्रोध, मान माया और लोभ जैसी कषायों को कि जो (अकित्तणिज्जे) शब्दों से प्रकट नहीं की जा सकती हैं (करेंति) करते रहते हैं। (परिग्गहे चेव हुति नियमा सल्ला, दंडा य गारवा य कसायसण्णा य कामगुणअण्हगा य इंदिय लेसाओ सयणसपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणत गाइ परिघेतु इच्छंति) इस परिग्रह मे ही नियम से माया, मिथ्यादर्शन और निदान, ये तीन शल्य रहते हैं। मन, वचन और काय की दुष्टतारूप व्यापार रहता है। ऋद्धि रस सातरूप गौरव रहता है। अनंतानुबंधी आदि कषायें, आहार, भय, मैथुन, और परिग्रह ये चार सञ्ज्ञायें,

લોભ, એ બધાથી ઘેરાયેલ રહે છે "अत्ताण अणिग्गहिया" તેમનુ મન તેમના કાબૂમા હોતુ નથી, અને આ રીતે પરિગ્રહની મમતામા ફસાઇને "कोहमाण मायालोभे" ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ જેવા કષાયો કે જે "अकित्तणिज्जे" શબ્દો દ્વારા પ્રગટ કરી શકાતા નથી "करेंति" તેમનુ સેવન કરે છે "परिग्गहे चेव हुति नियमा सल्ला, दडाय गारवा य कसाय सण्णाय कामगुणअण्हगाय इंदियलेसाओ सयणसपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणतगाइ परिघेतु इच्छंति" આ પરિગ્રહમા જ નિયમથી જ માયા, મિથ્યાદર્શન અને નિદાન, એ ત્રણ શલ્ય રહે છે મન, વચન અને કાયની દુષ્ટતારૂપ પ્રવૃત્તિ રહે છે ઋદ્ધિ રસ સાતરૂપ ગૌરવ રહે છે અનતાનુબધી આદિ કષાયો, આહાર ભય, મૈથુન અને પરિગ્રહ એ ચાર સજ્ઞાઓ, શબ્દાદિ વિષયરૂપ આસ્રવ,

लेश्याश्च भवन्ति । तथा – ' सयणसपओगा ' स्वजनसम्प्रयोगाः=स्वजनैः=पुत्रदारादिभिः सह सम्प्रयोगः=संयोगाश्च भवन्ति । ते चक्रवर्त्यादय ' अणतगाइ ' अनन्तानि=पर्यन्तमानरहितानि ' सचित्ताचित्तमीसगाइ ' सचित्ताचित्तमिश्रकाणि =तत्र सचित्तानि सजीवानि=पुत्रादीनि अचित्तानि=अजीवानि=हिरण्यसुवर्णरत्नादीनि, मिश्रकाणि=सचित्ताचित्तरूपाणि हिरण्यसुवर्णाद्याभरणसहितानि पुत्रकलत्रा

शब्दादि विषयरूप आस्रव, इन्द्रियों की अनर्गल प्रवृत्तियां, कृष्ण, नील आदि अप्रशस्त लेश्याएँ रहती हैं। अर्थात परिग्रह पाप के सद्भाव में ही नियमतः मायादि शल्यों का सद्भाव जीवों में पाया जाता है। मन वचन आदि योगों की प्रवृत्ति इसी के होने पर अशुभ रूप मे रहती हैं। गौरवों का अस्तित्व तथा कषायों की सत्ता एव आहार आदि चार प्रकार की सज्ञाओं का सद्भाव इस एक परिग्रह की मौजूदगी मे ही जीवो में पाये जाते है। इन्द्रियों की स्वच्छद प्रवृत्ति एव कृष्ण आदि अशुभ लेश्याओं का सबध इसी परिग्रह से जीवों मे पाया जाता है। तथा स्वजन आदि के साथ का सबध भी इसी परिग्रह के ऊपर निर्भर है। चक्रवर्ती आदि सभी मनुष्य यही चाहते हैं कि हमारे पास अनत सचित्त, अचित्त और मिश्र परिग्रहरूप द्रव्य बना रहे। पुत्र आदि सचित्त परिग्रह, हिरण्य, सुवर्ण, रत्न आदि अचित्त परिग्रह, एव हिरण्य, सुवर्ण, रत्न आदि के आभरण सहित पुत्रादि मिश्र परिग्रह है। तात्पर्य इसका यही है कि चक्रवर्ती से लेकर छोटे से छोटा प्राणी यही चाहता रहता है कि

ઈન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓ રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ શલ્યોનો સદ્ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા કષાયોની સત્તા, તથા આહાર આદિ ચાર પ્રકારની સજ્ઞાઓ આદિનો સદ્ભાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય તો જ જીવોમા જોવા મળે છે ઈન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા સ્વજન આદિ સાથેનો સબધ પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્રવર્તિ આદિ બધા લોકો એ જ ચાહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ છે હિરણ્ય, સુવર્ણ રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્ર-

दीनि, ' दव्वाइं ' द्रव्याणि ' परिघेत्तु ' परिग्रहीतुम् इच्छन्ति । ' सदेवमणुयासुरम्मि लोगे ' सदेवमनुजासुरे लोके ' लोभपरिग्गहो ' लोभपरिग्रहः=लोभात्परिग्रहो लोभरूपो वा परिग्रहो भवति, ' जिणवरेहिं ' जिनवरैः 'भणिओ' भणितः=प्रोक्तः ' नत्थि ' नास्ति 'एरिसो ' ईदृशः=परिग्रहसदृशोऽन्यः कश्चिदपि 'पासो' पाशः=बन्धनम् , ' पडिबंधो ' प्रतिबन्धः=प्रतिरोधः । अथ परिग्रहः ' सव्वलोए' सर्वलोके=त्रिषु लोकेषु ' सव्व जीवाण ' सर्वजीवानाम्=सर्वप्राणिनाम् ' अत्थि ' 'अस्ति=विद्यते । सूक्ष्मजीवानामपि परिग्रहसंज्ञा भवतीति सर्वशब्दग्रहणम् ॥सू ४॥

जो भी परिग्रहरूपवस्तु जितनी भी मात्रा में हमारे पास है वह ज्यों कि त्यो बनी रहे—नष्ट न हो, और उतनी मात्रा से भी फिर अधिक मात्रा में वृद्धिंगत होती रहे तो अच्छी बात है (सदेवमनुयासुरम्मि लोगे) देवलोक में, मनुष्यलोक में, तथा असुर लोक में (लोभपरिग्गहो) लोभ परिग्रह—लोभ से परिग्रह अथवा लोभरूप परिग्रह—होता है। (जिणवरेहिं भणिओ) ऐसा जिनेन्द्र देवोंने कहा है । (नत्थि एरिसोपासो—पडिबंधो सव्वलोए सव्वजीवाण अत्थि) इस परिग्रह के जैसा दूसरा और कोई भी पास—बंधन, तथा प्रतिबंध—प्रतिरोध—आत्मकल्याण रोधक पदार्थ नही है। यह परिग्रह तीनों लोकों में समस्त जीवों के है । प्रश्न—सूक्ष्म जीवों के यह परिग्रह किस रूप में है ? उत्तर—यह परिग्रह उनमे परिग्रह संज्ञा रूप मे है । इसी बात को कहने के लिये सूत्र मे 'सर्व' शब्द का ग्रहण किया है।

वर्तिथी लईने नानामा नानो जीव ए ज चाहे छे के जे कोई परिग्रहरूप जेटला प्रमाणमा अमारी पासे छे ते तेमने तेम रहे—नाश न पामे, अने छे ते करता पण तेमा वधारो थतो रहे तो बहु ज सारु " सदेवमनुयासुरम्मिलोगे " देवलोकमा, मनुष्यलोकमा तथा असुरलोकमा " लोभ परिग्गहो " लोभ परिग्रह—लोभथी परिग्रह अथवा लोभरूप परिग्रह होय छे, " जिणवरेहिं भणिओ " एवु जिनेन्द्र देवोए कहेल छे " नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो सव्व लोए सव्वजीवाण अत्थि " आ परिग्रह जेवु बीजु कोई पण बंधन नथी, तथा प्रतिरोधक—आत्मकल्याण रोधक पदार्थ नथी आ परिग्रह त्रणे लोकमा सघळा जीवोने होय छे

प्रश्न—सूक्ष्म जीवोमा आ परिग्रह केवी रीते छे ?

उत्तर—आ परिग्रह तेमनामा परिग्रह संज्ञारूपे छे ए वात दर्शाववाने माटे सूत्रमा ' सर्व ' शब्दनो प्रयोग कर्यो छे

भावार्थ—अढ़ाई द्वीप के भीतर ही मनुष्यो का निवास है, अतः सभी मनुष्य चाहे वे चक्रवर्ती आदी विशिष्ट व्यक्ति भी क्यो न हों इस परिग्रह सचय की तृष्णा से रहित नही है। सभी अपनी २ योग्यता और पद के अनुसार इसके सचय मे लगे रहते हैं। कोई भी जीव इस बात का विचार नही करता कि इस परिग्रह के सचय का अतिम परिणाम कैसा होता है। जीव जीतने भी कष्टों को भोगता है वह इस परिग्रह के सचय निमित्त ही भोगता है, क्यों कि यह परिग्रह स्वय अनंतक्लेशो का घर है। इस परिग्रह को लोभकषाय के आवेश मे ही जीव सचित कीया करते हैं। यह महान् से महान् अनर्थो की जड कही गई है। पुरुष सबधी ७२ बहत्तर कलाएँ तथा स्त्री सबधी ६४ चौसठ कलाओं को प्राणी इसी परिग्रह के निमित्त सीखता है। असि, मषी, कृषि, आदि कर्म इसी के लिये मनुष्यों को करने पडते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को इसी की लालसा से बद्ध होकर हडपना चाहता है। मनुष्यों में दानवता का रूप इसी की कृपा से आता है। आदमीयतको भुलानेवाली यही एक चीज है। माया मिथ्या आदि शल्यो का घर यही एक परिग्रह है। इसकी ज्वाला में झलता हुआ प्राणी सदा हेय और उपादेय के विवेकसे विहीन बना रहता है। मन वचन और काय

ભાવાર્થ—અઢી દ્વીપની અદર જ માણુસોનો વસવાટ છે, સઘળા મનુષ્યો ભલે ચક્રવર્તિ આદિ વિશિષ્ટ વ્યક્તિ હોય તો પણ તેઓ પરિગ્રહ સચયની તૃષ્ણા વિનાના હોતા નથી બધા પોત પોતાની યોગ્યતા અને પદ પ્રમાણે તેના સચમ, પ્રયત્નશીલ રહે છે કોઇ પણ જીવ એ વાતનો વિચાર કરતો નથી કે આ પરિગ્રહના સચયનુ આખરી પરિણામ કેવુ હોય છે જીવ જેટલા કષ્ટો ભોગવે છે તે આ પરિગ્રહના સચયને માટે જ ભોગવે છે, કારણ કે આ પરિગ્રહ પોતે જ અનત કલેશોનુ ધામ છે આ પરિગ્રહનો લોભ (કષાય) ના આવેગમાજ જીવ સચય કર્યા કરે છે તે મોટામા મોટા અનર્થોનુ મૂળ ગણાય છે પુરુષ સબધી ૭૨ બોતેરકલાઓ તથા સ્ત્રી વિષયક ૬૪ચોસઠ કલાઓ માણસો આ પરિગ્રહને નિમિત્તેજ શીખે છે અસી, મષી, કૃષિ આદિ કર્મો પણ તેનેજ માટે લોકોને કરવા પડે છે તેની લાલસાએ જ એક રાષ્ટ્ર બીજા રાષ્ટ્રને ગળી જવા માગે છે મનુષ્યમા દાનવતા તે પરિગ્રહને કારણે જ આવે છે માનવતાને ભુલાવનારી તે એક ચીજ છે તે પરિગ્રહ જ માયા મિથ્યા આદિ શલ્યોનુ ધામ છે તેની જ્વાળામા ફસાયેલ જીવો સદા હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી રહિત બની જાય છે આ પરિગ્રહને કારણે જ મન, વચન અને કાયાની કુટિલ

'ये यथा कुर्वन्तीति द्वार मुक्तम्' अथ परिग्रहो यादश फल ददाति तदुच्यते-
'परलोगम्मि' इत्यादि—

मूलम्—परलोगम्मि य नट्ठा तमपविट्ठा महयामोहमोहिय मई तमोसंधयोर तसथावर सुहुमवायरेसु पज्जत्तमपज्जत्तग एव जाव परियट्टंति जीवा लोभवससनिविट्ठा। एसो सो परिग्गहस्स फलविवागो इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो वहुदुक्खो

की कुटिल प्रवृत्ति इसी परीग्रह के प्रभाव से जीवन को तहस नहस करती रहती है। कपायों की उत्कटता इसीके कारण जीवन में उतरती है। आहार आदि सज्ञाएँ इसी के प्रभाव से जीवन के पीछे पड़ी रहती है। गारव और इन्द्रिकों की स्वच्छद प्रवृति का कारण इसी परिग्रह की कामना है। कर्मो का अधिकरूप में आस्रव और कृष्णादि अशुभलेश्याओं का सवध इसी परिग्रह के वल पर होता है। ससारका कोई भी प्राणी यह नहीं जानता है कि मेरे पास जितना भी परिग्रह है उसका वियोग हो। भले ही मुनिजन इसकी कामना न करें- फिर भी प्रत्येक सचेतन व्यक्ति सचित्त आदि परीग्रह की पोट से बधा ही रहता है। समस्तलोक में इस परिग्रह का अल्पाधिकरूप मे साम्राज्य छाया हुआ है। यही आत्मकल्याण का निरोधक है। इसीलिये श्रावक जन इसका प्रमाण और मुनिजनसकल सयमी जीव-इसका सर्वथा परिहार कर देते है ॥सू० ४॥

પ્રવૃત્તિયો જીવનને બરબાદ કરે છે તેને જ કારણે જીવનમા કષાયોની ઉત્કટતા ઉતરે છે તેના જ પ્રભાવથી આહાર આદિ સજ્ઞાઓ જીવનમા પીછો પકડયા કરે છે ગારવ (અભિમાન) અને ઈન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિયોનુ કારણુ આ પરિગ્રહની કામના જ છે આ પરિગ્રહને કારણેજ કર્મોના અધિક પ્રમાણમા આસ્રવ અને કૃષ્ણાદિ અશુભ લેશ્યાઓનો સબધ થાય છે સસારમા કોઈ પણ જીવ એ નથી ચાહતો કે તેની પાસે જેટલો પરિગ્રહ હોય તેનો વિયોગ થાય કદાચ મુનિજન તેની કામના ન કરે, તો પણ પ્રત્યેક સચેતન વ્યક્તિ સચિત્ત આદિ પરિગ્રહના સચયથી બધાયેલ રહે છે સમગ્ર લોકમા આ પરિ ગ્રહનુ થોડા કે વધુ પ્રમાણમા સામ્રાજ્ય જામેલુ છે તે જ આત્મકલ્યાણનુ નિરોધક છે તેથી શ્રાવકોએ તેની મર્યાદા બાધવી જોઇએ અને મુનિજનોએ- સકલ સયમી જીવે-તેનો તદ્દન ત્યાગ કરવો જોઈએ ॥ સૂ. ૪ ॥

महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो, असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, न य अवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो वीरवरनामधेज्जो कहेसि य परिग्गहस्स फलविवागं। एसो सो परिग्गहो पचमो नियसा नाणामणिकणगरयणमहरिह० जीव इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ ॥ सू० ५ ॥

॥ चरिम अहम्मदार समत्त ॥

'टीका—' परलोगम्मि ' इत्यादि—

जीवाः=प्राणिनः लोभवससनिविट्ठा' लोभवशसनिविष्टाः=लोभवशेन परिग्रहे सनिविष्टा =अभिनिविष्टाः=लोभवशपरिग्रहग्रहिलाः 'परलोगम्मि' परलोके=जन्मान्तरविषये चकारात् इहलोके च ' नट्ठा ' नष्टाः-विनष्टाः सुगतिनाशात् सत्पथभ्रशाच, तथा ' तम ' तम =अज्ञानान्धकार ' पविट्ठा ' प्रविष्टा 'महया मोहमोहि-

---

पूर्व में ' ये यथा कुर्वन्ति ' यह द्वार कहा अब सूत्रकार परिग्रह जिस प्रकार का फल देता है इस विषय को कहते हैं—' परलोगम्मि य ' इत्यादि ०।

टीकार्थ—(लोभवससनिविट्ठा जीवा) लोभ के वश से परिग्रह के वशवर्ती बने हुए जीव (परलोगम्मि य नट्ठा) अपने परभव को भी नष्ट कर डालते हैं। अर्थात् उनका यह लोक तो नष्ट हो ही जाता है, साथ मे परभव भी उनका बीगड़ जाता है। क्यो कि ऐसे जीवों को सुगति की प्राप्ति नहीं होती है, तथा इसभव में वे सत्पथ से विहीन बने रहते है। तथा (तमपविट्ठा) अज्ञानरूप अधकार में प्रविष्ट होकर

આગળ "ये यथा कुर्वन्ति" તે અન્તર્દ્વાર વર્ણવ્યુ હવે સૂત્રકાર પરિગ્રહ કેવુ ફળ આપે છે, તે બતાવે છે-"परलोगम्मिय" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"लोभवससनिविट्ठा जीवा" લોભને અધીન થઇને પરિગ્રહને તાબે થયેલા જીવો "परलोगम्मि य नट्ठा" પોતાના પરભવને પણ નષ્ટ કરી નાખે છે, એટલે કે તેમનો આ લોક બરબાદ થાય છે જ, પણ સાથે સાથે તેમનો પરભવ પણ બગડે છે કારણ કે એવા જીવોને સુગતિ પ્રાપ્ત થતી નથી, અને આ ભવમા તેઓ સન્માર્ગથી દૂર જ રહે તથા "तमपविट्ठा" અજ્ઞાન

यमई' महामोहमोहितमतयः-महामोहेन-प्रकृष्टोदयचारित्रमोहनीयेन मोहिता मतिर्येषा ते तथोक्ता', 'तमोसधयारे' तमिस्रान्धकारे, तमिस्रा=रजनी तद्वद् योऽन्धकारो आज्ञानान्धकारस्तस्मिन् 'तस थावरसुहुमबायरेसु' त्रसस्थावरसूक्ष्म-बादरेषु तथा 'पज्जत्तमपज्जत्तग एव जाव' पर्याप्तापर्याप्तक एव यावत् अत्र-यावच्छब्दादिदं सग्राह्यम्-पर्याप्तापर्याप्तकसाधारणप्रत्येकशरीरेषु तथा अण्डज पोतज -रसज-जरायुज-संस्वेदजोद्भिज्जौपपातिकेषु नारकतिर्यग्देवमनुष्येषु यथासम्भव जरामरणरोगबहुलेषु पल्योपमसागरोपमाणि यावत् आनादिकमनन्तदग्र दीर्घम-ध्वान चातुरन्तससारकान्तार 'परियट्टति' पर्यटन्ति। 'एसो सो' एष सः

(महयामोहमोहियमई) उनकी मति प्रकृष्ट चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से मोहित बनी रहती है। इससे वे न तो एकदेशरूप चारित्र अगीकार कर सकते हैं और न सकलरूप चारित्र ही। अत. ऐसे प्राणी (तमोसधयारे) रात्रि के गाढ अधकार जैसे अज्ञानान्धकार में ही पड़े रहते हे। (तसथावरसुहुमबायरेसु) और त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, बादर इनमें तथा (पज्जत्तमपज्जत्तग) पर्याप्तक अपर्याप्तक (एवजाव) इसी प्रकार यावत् शब्द से साधारण प्रत्येक शरीर इन जीवों में तथा अडज, पोतज, रसज, जरायुज, सस्वेदज, उद्भिज्ज जीवो में एव औप पातिक देव और नारकियों में (परियट्टति) जन्म मरण करते हैं। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाच इन्द्रिया जिन जीवों मे होती है वे त्रस हैं। त्रस नामकर्म के उदय से यह पर्याय जीवो को प्राप्त होती है। सिर्फ एक स्पर्शन इन्द्रिय जिन जीवों मे होती है वे

રૂપી અધકારમા પ્રવેશ કરીને "महया मोहमोहियमई" તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અશત ચારિત્ર અગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સપૂર્ણ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા જીવો "तमोसधयारे" રાત્રિના ગાઢ અધકાર જેવા અજ્ઞાનાન્ધકારમા જ પડયા રહે છે, "तसथावरसुहुमबाय रेसु" અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અને બાદરમા, તથા 'पज्जत्तमपज्जत्तग" પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, "एव जाव' એ જ પ્રમાણે યાવત્ શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર જીવોમા, તથા અડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ભિજ્જ જીવોમા અને ઔપપાતિક દેવ અને નારકીઓમા "परियट्टति" પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે જીવોને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને કર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

स्थावर हैं। स्थावर नाम कर्म के उदय से हि यह पर्याय जीवों को प्राप्त होती है। द्वीन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रियतक के जीव ही त्रस माने गये हैं। सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से जीव सूक्ष्म होता है। सूक्ष्म और बादर ये दो भेद एकेन्द्रिय जीवों के होते हैं। बादर नामकर्म के उदय से जीव बादर पर्यायवाला होता है। बादर नामकर्म के उदय से जीवों को ऐसे शरीर की प्राप्ति होती है कि जो शरीर चर्म चक्षुओं का विषयभूत बनता है। इसके विपरीत सूक्ष्म नाम कर्म होता है। जिन जीवों की अपनी योग्य पर्याप्तियां पूर्ण हो गई होती हैं वे पर्याप्तक जीव हैं। तथा जिनकी ये पर्याप्तियां पूर्ण जब तक नहीं होती हैं वे अपर्याप्तक जीव हैं। जिन अनन्त जीवों का एक ही साधारण शरीर होता है वे साधारण जीव हैं और जिन जीवों का भिन्न २ शरीर होता है वे वे प्रत्येक जीव हैं। साधारण नामकर्मके उदयसे जीव साधारण और प्रत्येक नामकर्मके उदय से जीव प्रत्येक शरीर होता है। अंडेसे जो जीव उत्पन्न होते हैं वे अण्डज कहलाते हैं। जैसे मयूर, कबूतर, आदि जीव। जो किसी प्रकारके आवरण से वेष्टित न होकर ही पैदा होते हैं वे पोतज हैं जैसे हाथी शशक, नेवला, चूहा शेर वगैरह जीव। आसव अरिष्ट तथा बिगडे हुए आचार, मुरब्बा

ઉદયથી જીવોને તે પર્યાય (યોનિ) પ્રાપ્ત થાય છે જે જીવોને ફક્ત એક સ્પર્શન ઈન્દ્રિય જ હોય છે, તેમને સ્થાવર કહે છે સ્થાવર નામ કર્મના ઉદયથી જ તે પર્યાય જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે દ્વીન્દ્રિયથી લઈને પચેન્દ્રિય સુધીના જીવોને જ 'ત્રસ' માનવામા આવે છે સૂક્ષ્મ નામ કર્મના ઉદયથી જીવ સૂક્ષ્મ થાય છે સૂક્ષ્મ અને બાદર એ બે ભેદ એકેન્દ્રિય જીવોના હોય છે બાદર નામકર્મના ઉદયથી જીવ બાદર પર્યાયવાળા થાય છે બાદર નામ કર્મના ઉદયથી જીવોને એવા શરીરની પ્રાપ્તિ થાય છે કે તે શરીરો ચર્મચક્ષુઓ વડે જોઈ શકાય છે તેનાથી ઉલ્ટુ સૂક્ષ્મ નામકર્મ છે જે જીવોની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો પૂરી થઈ ગઈ હોય છે તે જીવો પર્યાપ્તક કહેવાય છે તથા તેમની તે પર્યાપ્તિયો જ્યાસુધી પૂરી થતી નથી ત્યાસુધી તેઓ અપર્યાપ્તક જીવો છે જે અનત જીવોનુ એક જ સાધારણ શરીર હોય છે, તે સાધારણ જીવો છે, અને જે જીવોના ભિન્ન ભિન્ન શરીર હોય છે, તે પ્રત્યેક જીવ કહેવાય છે સાધારણ નામ કર્મના ઉદયથી જીવ સાધારણ શરીર થાય છે અને પ્રત્યેક નામકર્મના ઉદયથી જીવ પ્રત્યેક શરીર થાય છે ઇંડામાથી ઉત્પન્ન થતા જીવોને અડજ કહે છે, જેવા કે મોર કબૂતર આદિ જીવ જે જીવો કોઈ પણ પ્રકારના આવરણથી ઢંકાયા વિના જ જન્મે છે-એટલે કે બચ્ચા રૂપે જન્મે છે તેમને પોતજ કહે છે, જેમકે હાથી, સસલુ, નોળિયો, ઉદર, સિંહ વગેરે જીવો આસવો, અરિષ્ટો, બગડેલા

यमई ' महामोहमोहितमतयः-महामोहेन-प्रकृष्टोदयचारित्रमोहनीयेन मोहिता मतिर्येषां ते तथोक्ताः, 'तमोसधयारे' तमिस्रान्धकारे, तमिस्रा-रजनी तद्वद् योऽन्धकारो अज्ञानान्धकारस्तस्मिन् 'तस थावरसुहुमबायरेसु' त्रसस्थावरसूक्ष्म बादरेषु तथा 'पज्जत्तमपज्जत्तग एव जाव' पर्याप्तापर्याप्तक एव यावत् अत्र-यावच्छब्दादिदं संग्राह्यम्-पर्याप्तापर्याप्तकसाधारणप्रत्येकशरीरेषु तथा अण्डज पोतज-रसज-जरायुज-संस्वेदजोद्भिज्जौपपातिकेषु नारकतिर्यग्देवमनुष्येषु य ासम्भव जरामरणरोगबहुलेषु पल्योपमसागरोपमाणि यावत् अनादिकमनवदग्र दीर्घम ध्वान चातुरन्तससारकान्तार ' परियट्टति ' पर्यटन्ति । ' एसो सो ' एष सः

(महयामोहमोहियमई) उनकी मति प्रकृष्ट चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से मोहित बनी रहती है। इससे वे न तो एकदेशरूप चारित्र अगीकार कर सकते हैं और न सकलरूप चारित्र ही। अत ऐसे प्राणी (तमोसधयारे) रात्रि के गाढ अधकार जैसे अज्ञानान्धकार में ही पड़े रहते हे । (तसथावरसुहुमबायरेसु) और त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, बादर इनमें तथा (पज्जत्तमपज्जत्तग) पर्याप्तक अपर्याप्तक (एवजाव) इसी प्रकार यावत् शब्द से साधारण प्रत्येक शरीर इन जीवों में तथा अडज, पोतज, रसज, जरायुज, सस्वेदज, उद्भिज्ज जीवो में एव औप पातिक देव और नारकियों में (परियट्टति) जन्म मरण करते हैं। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाच इन्द्रिया जिन जीवों मे होती हैं वे त्रस हैं। त्रस नामकर्म के उदय से यह पर्याय जीवो को प्राप्त होती है। सिर्फ एक स्पर्शन इन्द्रिय जिन जीवों मे होती है वे

રૂપી અ ધકારમા પ્રવેશ કરીને " महया मोहमोहियमई " તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અ શત ચારિત્ર અ ગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સ પૂર્ણ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા જીવો " तमोस धयारे " રાત્રિના ગાઢ અ ધકાર જેવા અજ્ઞાનાન્ધકારમા જ પડ્યા રહે છે, " तसथावरसुहुमबाय रेसु " અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અરે બાદરમા, તથા ' पज्जत्तमपज्जत्तग " પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, " एव जाव " એ જ પ્રમાણે यावत् શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર જીવોમ , તથા અ ડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સ સ્વેદજ, ઉદ્ભિજ્જ જીવોમા અને ઔપપતિક દવ અને નારકીઓમા "परियट्टति" પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે જીવોને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને કર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

'परिग्गहस्स' परिग्रहस्य 'फलविवागो' फलविपाक 'इहलोइओ' इहलौकिकः, मनुष्यभवापेक्षया, 'परलोइओ' पारलौकिक', नरकतिर्यग्गत्याद्यपेक्षया 'अप्पसुहो' अल्पसुखः-अल्पसुख यस्मिन् स तथोक्त', 'बहुदुक्खो' बहुदुःखः-बहूनि दुःखानि यस्मिन् स तथोक्त', 'महब्भओ' महाभयः 'बहुरयप्पगाढो' बहुरजः प्रगाढः=बहुरजः-प्रभूतकर्म प्रगाढ=दुर्मोच यस्मिन् स तथोक्त, दारुणो= रौद्रः, 'कक्कसो' कर्कश'=कठिन', 'असाओ' अशात -अशातवेदनीयरूप अस्ति, एष परिग्रह' 'वासमहस्सेहिं' वर्षसहस्रैः = अनेकपल्योपमसागरोपम-कालैरुपभोगेन 'मुच्चइ' मुच्यते । 'न अवेयइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति' न अवेदयित्वा ऽस्ति खलु मोक्षः=परिग्रहफलमनुपभुज्य नास्ति मोक्षः 'त्ति एवमाहसु'

सागरोपम प्रमाणकालतक घूमता रहता है। (एसो सो परिग्गहस्स-फलविवागो) परिग्रह का यह फलविपाक (इहलोइओ) मनुष्यभव की अपेक्षा तथा (परलोइओ) परलोक-नरक-तिर्यंच गति की अपेक्षा (अप्पसुहो) अल्पसुख वाला तथा (बहुदुक्खो) बहु दुःखवाला है। (महब्भओ) महाभयकर है। (बहुरयप्पगाढो) इसमें जो प्रभूत कर्मरूप रज का बध होता है वह प्रगाढ-बड़ी मुश्किल से दूर किया जाय, ऐसे होता है। तथा (दारुणो) यह फलरूप विपाक दारूण भयानक (कक्कसो) कर्कश कठिन एव(असाओ)अशात अशातवेदनीयरूप होता है। (वाससहस्सेहिं)इसी परिग्रह रूप पाप का फल अनेक पल्योपम एव सागरोपम प्रमाण कालतक भोगने से (मुच्चइ) छूटता है। (अवेइत्ता) विना इसका फल भोगे उन जीवों को (न अत्थि मोक्खो) मोक्ष की प्राप्ति नही होती

ભમ્યા કરે છે "एसो सो परिग्गहस्स फलविवागो" પરિગ્રહનો આ ફલવિપાક "इहलोइओ" મનુષ્ય ભવની અપેક્ષાએ તથા "परलोइओ" પરલોક નરગતિ અને તિર્યંચગતિની અપેક્ષાએ "अप्पसुहो" અલ્પસુખ વાળો તથા "बहुदुक्खो" વધારે દુખવાળો છે, "महब्भओ" મહા ભયકર છે, "बहुरयप्पगाढो" તેમા જે વિપુલ કર્મરૂપ રજનો બધ હોય છે તે પ્રગાઢ-મહા મુશ્કેલીએ નિવારી શકાય તેવો-હોય છે, તથા "दारुणो" તે ફલરૂપ વિપાક દારૂણ-ભયકર "कक्कसो" કર્કશ-કઠિન, અને "असाओ" અશાત-અશાત વેદનીયરૂપ હોય છે "वाससहस्सेहिं" તે પરિગ્રહરૂગ પાપનુ ફળ અનેક પલ્યોપમ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી ભોગવવાથી જ "मुच्चइ" જીવો તેમાથી છૂટી શકે છે "अवेयइत्ता" તેનુ ફળ ભોગવ્યા વિના જીવોને "न अत्थी मोक्खो" મોક્ષની પ્રાપ્તિ થતી નથી "त्ति एवमाहसु" તે પ્રકારનુ કથન

आदिमें जो जीव फुल न आदि उत्पन्न होते रहते हैं वे रसज जीव हैं। जो जीव जरायुसे वेष्टित होकर उत्पन्न होते हैं वे जरायुज हैं जैसे मनुष्य बंदर आदि जीव। जरायु एक प्रकारका जाल जैसा आवरण होता है, जो रक्त और मांस से भरा रहता है। इसमें पैदा होने वाला बच्चा लिपटा रहता है। जरायुज, अण्डज और पोतज इन जीवों के गर्भ जन्म होता है। जो जीव पसीनेसे उत्पन्न होते हैं वे संस्वेदज हैं जैसे जू आदि जीव। जो जमीनको फोडकर उत्पन्न होते हैं वे उद्भिज्जजीव हैं। जैसे शलभ (पतगी या तीड) आदि जीव। देव और नारकी ये उपपात जन्मसे उत्पन्न होते हैं। इस कथनसे तिर्यचगति, मनुष्य गति, देवगति और नरक गति इन चारो गतियों के जीवोंका ग्रहण हो जाता है। इन गतियो के जीवों में यथा संभव जरा, मरण और रोग की बहुलता रहती है। इन गतियों में जीव पल्योपमप्रमाण एवं सागरोपम प्रमाण काल तक परिभ्रमण किया करते हैं। परिभ्रमणका नाम ही संसार है। यह संसार कान्तार (अटवी) अनादि अनंतस्वभाववाला है। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूपकाल ही इसमें बड़े लम्बे चौडे मार्ग हैं। तथा यह चतुर्गतिरूप है। ऐसे इस संसाररूप गहन वन में यह जीव परिग्रह के उपार्जन जनित पापसे पल्योपम तथा

અથાણા મુરબ્બા આદિમા જે ફુગ આદિ ઉત્પન્ન થાય છે તે રસજ જીવે કહે વાય છે જે જીવે જરાયુથી વીંટળાઈને પેદા થાય છે તેમને જરાયુજ કહે છે, જેમકે મનુષ્ય વાદર આદિ જીવે જરાયુ એક પ્રકારનુ જાળ જેવુ આવ રણ હોય છે, જે રક્ત અને માસથી ભરેલા રહે છે, તેમા જન્મનાર બાલક વીંટળાઈ રહે છે જરાયુજ, અને પોતજ જીવોનો જન્મ ગર્ભમા થાય છે, જે જીવે પરસેવાથી પેદા થાય છે તેમને સસ્વેદજ કહે છે, જેમકે જૂ આદિ જીવે જે જીવે જમીનને ખોદીને ઉત્પન્ન થાય છે તેમને ઉદ્ભિજ જીવે કહે છે જેમ કે તીડ આદિ જીવે દેવ અને નારકી એ બને ઉપપાત જન્મથી ઉત્પન્ન થાય છે આ કથનથી તિર્યચગતિ, મનુષ્યગતિ દેવગતિ, અને નરકગતિ એ ચારે ગતિયોના જીવે ગ્રહણ થઈ જાય છે, તે ગતિયોના જીવોમા યથા સભવ જરા, રોગ અને મરણની અધિકતા રહે છે, તે ગતિયોમા જીવ પલ્યો-પમ પ્રમાણ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે પરિભ્રમણ એટલે જ સસાર, તે સસારકાન્તાર અનાદિ અનત સ્વભાવવાળો છે ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીરૂપ કાળ જ જેમા ઘણા લાબા પહોળા માર્ગો છે તથા તે ચારગતિરૂપ છે એવા આ સસાર રૂપ ગહન વનમા આ જીવ પરિ ગ્રહને કારણે ઉપાર્જિત પાપથી પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી

उक्तास्रवपञ्चक निगमनाय गाथापञ्चकमाह ' एएहिं ' इत्यादि—

मूलम्—एएहिं पंचहिं आसवेहिं रयमाचिणित्तु अणुसमयं ।
चउविहगइ पेरत, अणुपरियट्टंति ससारं ॥ १ ॥
सव्वगई पक्खदे, काहिंति अणतगे अकयपुण्णा ।
जेय न सुणंति धम्म, सोऊण य जे पमायंति ॥२॥
अणुसिट्ठंपि बहुविह, मिच्छदिट्ठी य जे नरा अबुद्धीया।
बद्धनिकाइयकम्मा, सुणंति धम्म न य करेंति ॥३॥
किं सक्का काउ जे, ज नेच्छइ ओसह मुहा पाउं ।
जिणवयण गुणमहुर, विरेयण सव्वदुक्खाणं ॥ ४ ॥
पंचेव य उज्झिऊणं, पचेव य रक्खिऊण भावेणं।
कम्मरयविप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तर जंति ॥५॥सू०६॥
॥ इय पच आसवदारा समत्ता ॥

छाया—एतैः पञ्चभिरास्रवै रज आचित्यानुसमयम् ।
चतुर्विधगतिपर्यन्तमनुपर्यटन्ति ससारम् ॥ १ ॥
सर्वगतिप्रस्कन्दात् , करिष्यन्ति अनन्तकान् अकृतपुण्याः ।
ये च न श्रृण्वन्ति धर्मं, श्रुत्वा च ये प्रमाद्यन्ति ॥ २ ॥
अनुशिष्टमपि बहुविध, मिथ्यादृष्टिका ये च नरा अबुद्धिकाः।
बद्धनिकाचितकर्माण., श्रृण्वन्ति धर्म न च कुर्वन्ति ॥ ३ ॥
किं शक्ताः कर्तुं ये, यन्नेच्छन्ति औषध मुधा पातुम् ।
जिनवचन गुणमधुर, विरेचन सर्वदुःखानम् मे ४ ॥
पञ्चैव च उज्झित्वा, पञ्चैव च रक्षित्वा भावेन ।
कर्मरजो विप्रमुक्ताः, सिद्धिवरामनुत्तरा यान्ति ॥ ५ ॥

टीका—एतै. = अनन्तरोपवर्णितस्वरूपैः पञ्चभिः = पञ्चसंख्यकैरास्रवैः= प्राणातिपातादिरूपै. ' रय ' रजः=ज्ञानावरणीयादि कर्ममलम् , आत्मनो मलिन-कारकत्वात् ' अणुसमय ' अनुसमय = प्रतिक्षणम् ' आचिणित्तु ' आचित्य–

अब सूत्रकार उक्त इन पाच आस्रवों के विषय में पाच गाथाओं द्वारा सक्षिप्तरूप से उपसहार करते हुए अपने विचार प्रदर्शित करतें

હવે સૂત્રકાર ઉપરોક્ત પાચ આસ્રવો વિષે પાચ ગાથાઓ દ્વારા સંક્ષિપ્ત

त्येवमूचुस्तीर्थङ्करगणधरादयः, तथा ' कहेसिय ' कथितवांश्च ' नायकुलनंदणो' ज्ञातकुलनन्दनः ' महप्पा ' महात्मा ' जिणो ' जिनः ' वीरवरनामधेज्जो ' वीरवरनामधेयः । ' परिग्गहस्स ' परिग्रहस्य ' फलविवाग ' फलविपाकम् । ' एसो सो परिग्गहो पचमो ' एष सः पूर्वोक्तप्रकारः परिग्रहः पञ्चमः 'नियमा' नियमाद् विज्ञेयः, कथभूतो विज्ञेयः ? इत्याह–' नाणामणिकणगरयणमहरिह०' नानामणिकनकरत्नमहार्ह०, ' जाव ' यावत् , अत्र यावच्छब्दादध्ययनप्रारभपाठः, 'हिययदइओ ' इत्यन्त यावत्सग्राह्य', ' इमस्स' अस्य प्रत्यक्षीभूतस्य ' मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स ' मोक्षवरमुक्तिमार्गस्य ' फलिहभूओ ' परिघभूतोऽर्गलासदृशोऽस्ति ॥सू१॥

॥ चरमम् आस्रवद्वार समाप्तम् ॥

है। (त्ति एवमाहसु) ऐसा इस प्रकार का कथन तीर्थंकर एव गणधरादिक देवो का है। तथा उन्हीं के कथनानुसार (नायकुलनदणो) ज्ञातकुलनदन (महप्पा) महापुरुष (जिणो वीर वर नामधेज्जो) प्रभु जिनेन्द्र देवने भी (परिग्गहस्स) परिग्रह का (फलविवाग) ऐसा ही फलरूप विपाक (कहेसिय) कहा है। (एसो सो) इस तरह यह (परिग्गहपचमो) पचम परिग्रह (नियमा) नियम से (नाणामणिकणग रयणमहरिह०जाव) नानामणि कनक रत्न आदिरूप है। यहा पर यावत् शब्द से इस द्वार को प्रारभ करते समय जो पाठ ' हिययदइओ ' तक इस परिग्रहरूप वृक्ष के विषय में कहा है वह सब गृहीत किया गया है। यह परिग्रह (इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स) इस मोक्ष का जो निर्लोभतारूप श्रेष्ठ मार्ग है उसका (फलिहभूओ) अर्गला रूप है ॥ सू०५॥

॥ परिग्रह नामका यह अन्तिमद्वार समाप्त हुआ ॥

તીર્થંકરો અને ગણધર આદિ દેવોનુ છે તથા તેમના કથન પ્રમાણે જ "नायकुलनदणो " જ્ઞાતકુલ નદન "महप्पा " મહાપુરુષ, "जीणो-वीरवरनामघेज्जो" પ્રભુ જિનેન્દ્ર દેવે પણ " परिग्गहस्स " પરિગ્રહનો " फलविवाग " એવો જ ફળવિપાક " केहसिय " કહેલ છે " एसो सो " આ રીતે તે " परिग्गहो पचमो " પાચમો પરિગ્રહ આસ્રવ " नियमा " નિયમથી " नाणामणिकणगरयण महरिह० जाव " વિવિધ મણિ, કનક, રત્ન આદિ રૂપ છે અહી યાવત્ શબ્દથી આ દ્વારના આરભે " हियदइओ " સુધીનો જે પાઠ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના વિષયમા કહેવામા આવેલ છે તે આખો પાઠ ગ્રહણ કરાયેલ છે આ પરિગ્રહ " इमस्स मोम्खवरमुत्तिमग्गस्स " મોક્ષનો જે નિર્લોભતા શ્રેષ્ઠ માર્ગ છે તેના " फलिह भूओ " આગળિયા સમાન છે ॥ સૂ-૫ ॥

॥ પરિગ્રહ નામનુ આ છેવટનુ દ્વાર સપૂર્ણ થયુ ॥

बद्ध=स्वात्मप्रदेशेषु सश्लेषित, निकाचित=दृढतर बद्धम्=उपशमनादिकरणानाम-विषयीकृत कर्म येस्ते तथोक्ताः, नरा. गुरुणा बहुविधम्=अनेकप्रकारम्=विविध-हेतुदृष्टान्तपूर्वकम् अनुशिष्टमपि=उपदिष्टमपि धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण श्रृण्वन्ति किन्तु न च कुर्वन्ति=न च समाचरन्ति ॥ ३ ॥

'जे' ये मनुष्या सर्वदुःखाना=जन्मजरामरणादिरूपाणा 'विरेयण' विरेचन=कोष्ठशुद्धिरूपविरेचनमिवविरेचन निवारक 'गुणमहुर' गुणमधुर गुणैः=आत्मविकासिगुणैर्मधुर=मिष्टम्, एतादृश 'जिणवयण' जिनवचन=वचन=जिन-वचनरूपम् 'ओसह' ओषध 'मुहा' मुधा=उपकारबुद्धया 'ज' यत् 'नेच्छइ' नेच्छन्ति=नपिबन्ति ते 'किं काउ' किं कर्तुं 'सका' शक्ता'=समर्था भवन्ति

च्यमिथ्यादृष्टि होते हैं विवेक बुद्धि से विहीन होते हैं तथा (बद्धनिकाइय कम्मा) निकाचित कर्मो का बध किए हुए होते हैं, ऐसे मनुष्य बहुविह (अणुदिट्ठपि) गुरुओं द्वारा विविधहेतु तथा दृष्टान्त आदिसे बहुत प्रकारसे समझाये गये भी श्रुत चारित्ररूप (धम्म) धर्मको (सुणति) सुन तो लेते है परन्तु (न य करेंति) उसे अपने आचरण मे नही लाते हैं ॥३॥ रोगी होकर भी जो रोग निवारणार्थ औषधि का पान नहीं करते हैं तो जैसे वे अपने रोग को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं इसी तरह (ये) जो ससारी प्राणी (सव्व दुक्खाण विरेयण (जरा, मरण आदि समस्त दुःखो को जडमूल से उखाड देने वाले तथा (गुणमहुर) आत्मविकासी गुणो से मीठे ऐसे (जिणवयण) जिनेन्द्र प्रभु के वचन रूप (ओसह) औषध को (मुहा) उपकार बुद्धि से (पाउ नेच्छइ) नही पाते हैं वे (किं काउ सका) कुछ भी करने के लिये समर्थ नहीं हो सकते हैं।

"जे नरा मिच्छादिट्ठी अबुद्धीया" જે મનુષ્યો મિથ્યાદૃષ્ટિ વાળા હોય છે, વિવેકબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા "बद्धनिकाइयकम्मा" નિકાચિત કર્મોના બધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો "बहुविह अणुदिट्ठपि" ગુરુઓ દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાતો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે છતા પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ "धम्म" ધર્મનુ "सुणति" શ્રવણ તો કરે છે, પણ "न य करेंति" પણ તેને પોતાના આચરણમા ઉતારતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔષધિ ન પીવે તો તેનો રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે "ये" જે સસારી "सव्वदुक्खाणविरेयण" જરા, મરણ આદિ સગળા દુખોને નિર્મૂળ કરનાર તથા "गुणमहुर" આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા "जिणवयण" જિનેન્દ્ર ભગવાનના વચનરૂપ "ओसह" ઔષધને "मुहा" ઉપકાર બુદ્ધિથી "पाउ नेच्छइ" પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ "किं काउसका" કંઇ પણ કરવાને સમર્થ

आत्मप्रदेशैः सहोपचित्य 'चउविहगईपेरंत' चतुर्विधगतिपर्यन्तम्, चतुर्विधा=चतुःप्रकारा गतिः=नरकादिरूपा पर्यन्तो=विभागो यस्य स तं तथोक्तं संसारम् 'अणुपरियट्टति' अनुपर्यटन्ति=परिभ्रमन्ति ॥ १ ॥

ये च प्राणिनोधर्मं न शृण्वन्ति, तथा ये च श्रुत्वापि प्रमाद्यन्ति=प्रमादं कुर्वन्ति ते उभयेऽपि 'अकयपुण्णा' अकृतपुण्याः=प्राणातिपातादिपापपरायणत्वात् हीनपुण्या 'अनतए' अनन्तकान्=अनन्तान् 'सव्वगइपक्खंदे' सर्वगतिप्रस्कन्दान्=नरकनिगोदादि चतुर्गतिभ्रमणानि 'काहिंति' करिष्यन्ति ॥ २ ॥

ये च मिथ्यादृष्टिकाःअबुद्धिकाः=विवेकबुद्धिविकला बद्धनिकाचितकर्माणः

है- 'एएहिं, इत्यादि।

(एएहिं) इन हिंसा आदिरूप (पचहिं) पांच (आसवेहिं) आस्रवों के आचरण करने से जीव (अणुसमय) प्रतिक्षण (रय आचिणित्तु) ज्ञानावरणीय आदि कर्ममल का बंद करके-आत्मप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावगाहरूप संबंध करके (चउविहगइपेरंत) नरकादिरूप चार प्रकारकी गतिवाले (ससार) संसार में (अणुपरियट्टति) परिभ्रमण किया करते है ॥ १ ॥ (जे य न सुणंति धम्मं) जो प्राणी श्रुतचारित्ररूप धर्म का श्रवण नहीं करते है तथा (सोऊण य जे पमायति) जो सुनकर के भी प्रमाद पतित होते रहते हैं, ये दोनों (अकयपुण्णा) प्राणातिपात आदिको मे परायण रहने के कारण हीन पुण्यवाले हैं। (अनतए सव्वगईपक्खदे काहिंति) अतः अनंतरूप में नरकनिगोद आदि चारोगतियों में परिभ्रमण करते रहेंगे ॥ २ ॥ (जे नरा मिच्छादिट्ठी अबुद्धीया मनु-

---

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારો દર્શાવે છે—"एएहिं" ઇત્યાદિ—

"एएहिं" હિંસા આદિ રૂપ "पचहिं" તે પાંચ "आसवेहिं" આસ્રવોને આચરવાથી જીવો "अणुसमय" પ્રત્યેક ક્ષણે "रय आचिणित्तु" જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલનો બંધ બાંધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબંધ કરીને "चउविहगइपेर" નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા "ससार" સંસારમાં "अणुपरियट्टति" પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

"जेय न सुणंति धम्म" જે જીવો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરતા નથી, તથા "सोऊण य जे पमायति" સાંભળીને પણ જે પ્રમાદમાં ડૂબેલા રહે છે, તે બન્ને "अकयपुण्णा" પ્રાણાતિપાત આદિમાં લીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, "अनतए सव्वगई पक्खदेकाहिंति" તેથી અનન્તરૂપે નરકનિગોદ આદિ ચારે ગતિયોમાં પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

बद्ध=स्वात्मप्रदेशेषु संश्लेषितं, निकाचितं=दृढतरं बद्धम्=उपशमनादिकरणानाम-विषयीकृतं कर्म यैस्ते तथोक्ताः, नराः गुरुणा बहुविधम्=अनेकप्रकारम्=विविध-हेतुदृष्टान्तपूर्वकम् अनुशिष्टमपि=उपदिष्टमपि धर्मं=श्रुतचारित्रलक्षणं श्रृण्वन्ति किन्तु न च कुर्वन्ति=न च समाचरन्ति ॥ ३ ॥

'जे' ये मनुष्या सर्वदुःखानां=जन्मजरामरणादिरूपाणां 'विरेयण' विरे-चनं=कोष्ठशुद्धिरूपविरेचनमिव विरेचनं निवारकं 'गुणमहुरं' गुणमधुरं गुणैः= आत्मविकासिगुणैर्मधुरं=मिष्टम्, एतादृशं 'जिणवयण' जिनवचनं=वचनं=जिन-वचनरूपम् 'ओसहं' औषधं 'मुहा' मुधा=उपकारबुद्ध्या 'ज' यत् 'नेच्छइ' नेच्छन्ति=नपिबन्ति ते 'किं काउं' किं कर्तुं 'सक्का' शक्ताः=समर्था भवन्ति

र्यामिथ्यादृष्टि होते हैं विवेक बुद्धिसे विहीन होते हैं तथा (बद्धनिकाइय कम्मा) निकाचित कर्मो का बंध किए हुए होते हैं, ऐसे मनुष्य बहुविह (अणुदिट्ठपि) गुरुओं द्वारा विविधहेतु तथा दृष्टान्त आदिसे बहुत प्रकारसे सामझावे गये भी श्रुत चारित्ररूप (धम्म) धर्मको (सुणति) सुन तो लेते है परन्तु (न य करेंति) उसे अपने आचरण मे नही लाते हैं ॥३॥ रोगी होकर भी जो रोग निवारणार्थ औषधि का पान नही करते है तो जैसे वे अपने रोग को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं इसी तरह (ये) जो संसारी प्राणी (सव्व दुक्खाण विरेयण (जरा, मरण आदि समस्त दुःखो को जड़मूल से उखाड देने वाले तथा (गुणमहुर) आत्मविकासी गुणो से मीठे ऐसे (जिणवयण) जिनेन्द्र प्रभु के वचन रूप (ओसह) औषध को (मुहा) उपकार बुद्धि से (पाउ नेच्छइ) नही पाते हैं वे (किं काउ सक्का) कुछ भी करने के लिये समर्थ नही हो सकते हैं।

"जे नरा मिच्छादिट्ठी अबुद्धीया" જે મનુષ્યો મિથ્યાદૃષ્ટિ વાળા હોય છે, વિવેકબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા "बद्धनिकाइयकम्मा" નિકાચિત કર્મોના બંધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો "बहुविह अणुदिट्ठपि" ગુરુઓ દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાંતો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે છતા પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ "धम्म" ધર્મનુ "सुणति" શ્રવણ તો કરે છે, પણ "न य करेति" પણ તેને પોતાના આચરણમા ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔષધિ ન પીવે તો તેનો રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે "ये" જે સંસારી "सव्वदुक्खाणविरेयण" જરા, મરણ આદિ સઘળા દુખોને નિર્મૂળ કરનાર તથા "गुणमहुर" આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા "जिणवयण" જિનેન્દ્ર ભગવાનના વચનરૂપ "ओसह" ઔષધને "मुहा" ઉપકાર બુદ્ધિથી "पाउ नेच्छइ" પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ "किं काउसक्का" કંઇ પણ કરવાને સમર્થ

आत्मप्रदेशैः सहोपचित्य 'चउनिहगईपेरत' चतुर्विधगतिपर्यन्तम्, चतुर्विधा=चतुःप्रकारा गति=नरकादिरूपा पर्यन्तो=विभागो यस्य स त तथोक्त संसारम् 'अणुपरियट्टति' अनुपर्यटन्ति=परिभ्रमन्ति ॥ १ ॥

ये च प्राणिनोधर्मं न शृण्वन्ति, तथा ये च श्रुत्वापि प्रमाद्यन्ति=प्रमादं कुर्वन्ति ते उभयेऽपि 'अकयपुण्णा' अकृतपुण्याः=प्राणातिपातादिपापपरायणत्वात् हीन-पुण्या 'अनतए' अनन्तकान्=अनन्तान् 'सव्वगइपक्खदे' सर्वगतिप्रस्कन्दान्=नरकनिगोदादि चतुर्गतिभ्रमणानि 'काहिंति' करिष्यन्ति ॥ २ ॥

ये च मिथ्यादृष्टिकाःअबुद्धिकाः=विवेकबुद्धिविकला बद्धनिकाचितकर्माणः

है- 'एएहिं, इत्यादि ।

(एएहिं) इन हिंसा आदिरूप (पचहिं) पाच (आसवेहिं) आस्रवों के आचरण करने से जीव (अणुसमय) प्रतिक्षण (रय आचिणित्तु) ज्ञानावरणीय आदि कर्ममल का बद्ध करके-आतमप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावगाहरूप सबध करके (चउविहगइपेरत) नरकादिरूप चार प्रकारकी गतिवाले (ससार) ससार में (अणुपरियट्टति) परिभ्रमण किया करते हैं ॥ १ ॥ (जे य न सुणति धम्म) जो प्राणी श्रुतचारित्ररूप धर्म का श्रवण नहीं करते है तथा (सोऊण य जे पमायति) जो सुनकर के भी प्रमाद पतित होते रहते हैं, ये दोनों (अकयपुण्णा) प्राणातिपात आदिको में परायण रहने के कारण हीन पुण्यवाले हैं। (अनतए सव्व गईपक्खदे काहिंति) अत. अनतरूप में नरकनिगोद आदि चारोगतियों में परिभ्रमण करते रहेंगे ॥ २ ॥ (जे नरा मिच्छादिट्ठी अबुद्धीया मनु-

---

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારો દર્શાવે છે—"एए हिं" ઈત્યાદિ—

"एएहि" હિંસા આદિ રૂપ "पचहिं" તે પાચ "आसवेहि" આસ્રવોને આચરવાથી જીવો "अणुसमय" પ્રત્યેક ક્ષણે "रय आचिणित्तु" જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલનો બધ બાધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધ કરીને "चउविहगइपेर" નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા "ससार" સસારમા "अणुपरियट्टति" પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

"जेय न सुणति धम्म" જે જીવો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનુ શ્રવણ કરતા નથી, તથા "सोऊण य जे पमायति" સાભળીને પણ જે પ્રમાદમા ડૂબેલા રહે છે, તે બન્ને "अकयपुण्णा" પ્રાણાતિપાત આદિમા લીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, "अनतए सव्वगई पक्खदेकाहिंति" તેથી અનન્તરૂપે નર-કનિગોદ આદિ ચારે ગતિયોમા પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

बद्ध=स्वात्मप्रदेशेषु संश्लेषित, निकाचित=दृढतर बद्धम्=उपशमनादिकरणानाम-विषयीकृत कर्म येस्ते तथोक्ताः, नरा. गुरुणा बहुविधम्=अनेकप्रकारम्=विविध-हेतुदृष्टान्तपूर्वकम् अनुशिष्टमपि=उपदिष्टमपिधर्म=श्रुतचारित्रलक्षण शृण्वन्ति किन्तु न च कुर्वन्ति=न च समाचरन्ति ॥ ३ ॥

'जे' ये मनुष्या सर्वदुःखाना=जन्मजरामरणादिरूपाणा 'विरेयण' विरे-चन=कोष्ठशुद्धिरूपविरेचनमिवविरेचन निवारक 'गुणमहुर' गुणमधुर गुणै.= आत्मविकासिगुणैर्मधुर=मिष्टम्, एतादृश 'जिणवयण' जिनवचन=वचन=जिन-वचनरूपम् 'ओसह' औषध 'मुहा' मुधा=उपकारबुद्ध्या 'ज' यत् 'नेच्छइ' नेच्छन्ति=नपिबन्ति ते 'किं काउ' किं कर्तुं 'सक्का' शक्ताः=समर्था भवन्ति

मिथ्यादृष्टि होते हैं विवेक बुद्धि से विहीन होते हैं तथा (बद्धनिकाइय-कम्मा) निकाचित कर्मों का बन्ध किए हुए होते हैं, ऐसे मनुष्य बहुविह (अणुदिट्ठपि) गुरुओं द्वारा विविधहेतु तथा दृष्टान्त आदिसे बहुत प्रकारसे सामझाये गये भी श्रुत चारित्ररूप (धम्म) धर्मको (सुणन्ति) सुन तो लेते हैं परन्तु (न य करेंति) उसे अपने आचरण मे नहीं लाते हैं ॥३॥ रोगी होकर भी जो रोग निवारणार्थ औषधि का पान नहीं करते हैं तो जैसे वे अपने रोग को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं इसी तरह (ये) जो ससारी प्राणी (सव्व दुक्खाण विरेयण (जरा, मरण आदि समस्त दुःखों को जडमूल से उखाड देने वाले तथा (गुणमहुर) आत्मविकासी गुणो से मीठे ऐसे (जिणवयण) जिनेन्द्र प्रभु के वचन रूप (ओसह) औषध को (मुहा) उपकार बुद्धि से (पाउ नेच्छइ) नहीं पाते हैं वे (किं काउ सक्का) कुछ भी करने के लिये समर्थ नहीं हो सकते हैं।

"जे नरा मिच्छादिट्ठी अबुद्धीया" જે મનુષ્યો મિથ્યાદૃષ્ટિ વાળા હોય છે, વિવેકબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા "बद्धनिकाइयकम्मा" નિકાચિત કર્મોના બંધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો "बहुविह अणुदिट्ठपि" ગુરુઓ દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાંતો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામાં આવે છે છતાં પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ 'धम्म" ધર્મનું "सुणंति" શ્રવણ તો કરે છે, પણ "न य करेंति" પણ તેને પોતાના આચરણમાં ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔષધિ ન પીવે તો તેનો રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે "जे" જે સંસારી "सव्वदुक्खाणविरेयण" જરા, મરણ આદિ સઘળા દુઃખોને નિર્મૂળ કરનાર તથા "गुणमहुर" આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા "जिणवयण" જિનેન્દ્ર ભગવાનના વચનરૂપ "ओसह" ઔષધને "मुहा" ઉપકાર બુદ્ધિથી "पाउ नेच्छइ" પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ "किं काउसक्का" કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

अपि तु नैव किमपि । ये औषध न पिवन्ति ते रोगनिवारणे कथमपि समर्था न भवन्तीति भावः । सूत्रे ' नेच्छइ ' इत्यनेकवचनमार्षत्वात् ॥ ४ ॥

भावेन=अन्तःकरणेन पञ्चैव च प्राणातिपाताद्यास्रवद्वाराणि ' उज्झिऊण ' उज्झित्वा=त्यक्त्वा तथा पञ्चैव च प्राणातिपातादिविरमणलक्षणानि संवरद्वाराणि ' रक्खिऊण ' रक्षित्वा=पालयित्वा=कर्मरजोविप्रमुक्ताः सन्त सिद्धिवरा=सिद्धीनां मध्ये वरा श्रेष्ठा सकलकर्मक्षयलभ्या भावसिद्धिस्ता तथोक्ताम् , अतएव अनुत्तरा सर्वोत्तमा ' जंति ' यान्ति–अपुनरावृत्तिं सिद्धिगतिं गच्छन्तीत्यर्थः ॥ ५ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुर राजप्रदत्त–' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि –जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री–घासीलाल – व्रतिविरचितायां दशमाङ्गस्य श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्यायां व्याख्यायां हिंसादिपञ्चास्रवद्वाररूप प्रथमो विभागः समाप्तः ॥ १ ॥

विरेचन औषधि जिस प्रकार कोष्ठ की शुद्धि कर देती है उसी प्रकार प्रभु के वचनरूप औषध भी कोष्ठरूप आत्मा की शुद्धि विधायक होती हैं, इसलिये इन्हें विरेचक चूर्ण के जैसा कहा है ॥ ४ ॥ जो भव्य जीव (भावेण पचेव उज्झिऊण) भावपूर्वक इन पूर्वोक्त प्राणातिपात आदि पाच आस्रव द्वारों को छोड़ करके और (पचेव रक्खिऊण) प्राणातिपातादिविरमणरूप पाच सवरद्वारों पाल करके (कम्मरयविप्पमुक्का) कर्मरूप रज से सर्वथा रहित हो जाते हैं, वे (अनुत्तर सिद्धवर जंति) अपुनरावृत्तिरूप सर्वोत्तम भावसिद्धि सिद्धिगति-को प्राप्त करते हैं ॥५॥

॥ ये पाच आस्रव– ' अधर्म ' द्वार समाप्त हुए ॥

॥ प्रश्नव्याकरण सूत्र का प्रथम विभाग समाप्त ॥

થઈ શકતા નથી જેમ વિરેચન ઔષધિ કોઠો સાફ કરી નાખે છે તેમ પ્રભુના વચનરૂપી ઔષધ પણ આત્મ રૂપી કોઠાની શુદ્ધિ કરનાર છે, તેથી તેને વિરેચન ચૂર્ણ સમાન કહેલ છે ॥ ૪ ॥

જે ભવ્ય જીવો " भावेण पचेव उज्झिऊण " ભાવ પૂર્વક તે પૂર્વોક્ત પ્રાણાતિપાત આદિ પાચ આસ્રવ દ્વારોને છોડીને, " पचेव रक्खिऊण " પ્રાણાતિપાતાદિ વિરમણરૂપ પાચ સવરદ્વારોનુ પાલન કરીને " कम्मरयविप्पमुक्का " કર્મરૂપ રજથી તદ્દન રહિત થઇ જાય છે તેઓ " अनुत्तर सिद्धिवर जंति " જ્યાથી આ સસારમા પાછા આવવુ પડતુ નથી એવુ સર્વોત્તમ ભાવસિદ્ધિ-સિદ્ધિગતિ-મોક્ષ-પ્રાપ્ત કરે છે, ॥૫॥

॥ પાચ આસ્રવદ્વાર સમાપ્ત ॥

॥ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્રનો પહેલો વિભાગ સમાપ્ત ॥

–द्वितीयो भागः–

अत्र प्रथमभागे पञ्चास्रवा वर्णिताः, द्वितीयभागे तु तत्प्रतिपक्षभूतान् पञ्च संवरानभिधित्सुः। श्रीसुधर्मास्वामी तेषु प्रथममहिंसालक्षणसंवरद्वारं विवृण्वन् शिष्यमामन्त्र्येदमाह–'जम्बू' इत्यादि–

मूलम्–जंबू ! एत्तो संवरदाराइं पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए।
जह भणियाणि भगवया, सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठाए ॥१॥
पढमं होइ अहिंसा १, बितियं सच्चवयणं इति पण्णत्तं।
दत्तमणुन्नाय३ संवरो य बंभचेर४ मपरिग्गहत्तं५ च ॥२॥
तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी।
तीसे सभावणाए किंचिवोच्छं गुणुद्देसं ॥ ३ ॥

ताणि उइमाणि सुव्वय ! महव्वयाइं लोगहियसव्वयाइं सुयसागरदेसियाइं तवसंजममहव्वयाइं सीलगुणवरव्वयाइं सच्चज्जवव्वयाइं नरगतिरियमणुयदेवगइविवज्जगाइं सव्वजणसासणगाइं कम्मरयविदारगाइं भवसयविणासगाइं दुहसयविमोयगाइं सुहसयपवत्तगाइं कापुरिसदुरुत्तराइं सप्पुरिसनिसेवियाइं निव्वाणगमणमग्गसग्गप्पणायगाइं संवरदाराइं पंच कहियाणि भगवया ॥ सू० १ ॥

द्वितीय विभाग प्रारंभ—

प्रथम विभाग में पांच आस्रवों का वर्णन किया गया है। अब इस द्वितीय विभाग में इन पांच आस्रवों के प्रतिपक्षभूत पांच संवरों को कहने की कामनावाले श्री सुधर्मास्वामी सब से पहिले उनमें से अहिंसालक्षण संवरद्वार का विवेचन करने के निमित्त जम्बूस्वामी को

બીજોભાગ—

પહેલા વિભાગમાં પાંચ આસ્રવોનું વર્ણન કરાયું છે હવે આ બીજા વિભાગમાં તે પાંચ આસ્રવોથી વિરૂદ્ધના પાંચ સંવરો વિષે વર્ણન કરવાની ઈચ્છાવાળા શ્રી સુધર્માસ્વામી સૌથી પહેલા તેઓમાંના અહિંસાલક્ષણ સંવરદ્વારનું

टीका—'जम्बू' इत्यादि—

हे जम्बू ! – इतः संवरद्वाराणि पञ्च वक्ष्यामि आनुपूर्व्या यथा भणितानि भगवता सर्वदुःखविमोक्षणार्थाय ॥ १ ॥

प्रथम भवत्यहिंसा, द्वितीय सत्यवचनमिति प्रज्ञप्तम् ।
दत्तानुज्ञातसंवरश्च, ब्रह्मचर्यपरिग्रहत्वं च ॥ २ ॥
तत्र प्रथममहिंसा, त्रसस्थावरसर्वभूतक्षेमकरी ।
तस्या सभावनायाः, किञ्चिद् वक्ष्यामि गुणोद्देशम् ॥ ३ ॥ इति छाया।

तत्र हे जम्बूः । इतः=आस्रवद्वारकथनानन्तरं 'आणुपुव्वीए' आनुपूर्व्या–अनुक्रमेण पञ्च 'संवरदाराइं' संवरद्वाराणि, संव्रियते=निरुध्यते कर्म कारणं प्राणातिपातादिकं येनात्मपरिणामेन स संवरस्तस्य द्वाराणि = उपायभूतानि= अहिंसादीनि 'वोच्छामि' वक्ष्यामि=कथयिष्यामि । नाहं स्वबुद्ध्या वक्ष्यामि, किन्तु भगवता महावीरेण सर्वप्राणिनां 'सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठाए' सर्वदुःख–

संबोधन करके प्रथमसूत्र कहते हैं—'जम्बू' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(जंबू) हे जंबू ! (एत्तो) आस्रवद्वार कहने के बाद मैं अब (आणुपुव्वीए) अनुक्रम से (पंच संवरदाराइं) पांच संवरद्वारों को (वोच्छामि) कहूंगा। जिस आत्मपरिणाम से कर्मों के आस्रव के कारणभूत प्राणातिपातादिक परिणाम रोक दिये जाते हैं उसका नाम संवर है। उसके उपायभूत द्वार अहिंसादिक परिणाम हैं। इन्हीं परिणामों का नाम संवर द्वार है। मैं इन संवरद्वारों का कथन अपनी बुद्धि के अनुसार नहीं करूँगा–किन्तु (भगवया) भगवान् महावीर ने (सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठाए) समस्त प्राणियों के दुःखों को दूर करने के

વિવેચન કરવાને માટે જબૂસ્વામીને સંબોધીને પહેલું સૂત્ર કહે છે—

'जंबू" ઇત્યાદિ

"जंबू" હે જંબૂ! "एत्तो" આસ્રવદ્વાર વિષે વર્ણન કર્યા પછી હવે હું "आणुपुव्वीए" અનુક્રમે 'पंचसंवरदाराइं" પાંચસંવર દ્વારો "वोच्छामि" કહીશ જે આત્મપરિણામથી કર્મોના આસ્રવના કારણભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક પરિણામને રોકવામાં આવે છે તેનું નામ સંવર છે તેના ઉપાયરૂપ દ્વારો અહિંસા વગેરે પરિણામ છે એ જ પરિણામોને સંવરદ્વાર કહે છે હું તે સંવરદ્વારોનું વર્ણન મારી બુદ્ધિ પ્રમાણે કરીશ નહીં–પણ "भगवया" ભગવાન મહાવીરે "सव्व दुक्खविमोक्खणट्ठाए" સમસ્ત પ્રાણીઓના દુઃખો દૂર કરવાને

विमोक्षणार्थाय 'जह' यथा–यद्रूपाणि भणितानि, तथैव वक्ष्यामि ॥ १ ॥ पच सवर द्वाराणि वक्ष्यामीति प्रतिज्ञाय तन्नामान्याह–'पढम होइ अहिंसा' इत्यादि। पञ्चसवर द्वारेषु 'पढम' प्रथममहिंसा सवरद्वार भवति, द्वितीय सत्यवचननामक, तृतीय दत्तानुज्ञातग्रहणलक्षण, चतुर्थं ब्रह्मचर्यं, च=पुनः पञ्चममपरिग्रहत्व सवर–द्वारम् ॥२॥ पञ्च सवरद्वारनामान्युक्तानि, सप्रति प्रथममहिंसासवरद्वार वर्णयितु-माह-'तत्थ पढम अहिंसा' इत्यादि–

'तत्थ' तत्र सवरपञ्चकमध्ये प्रथम सवरद्वारमहिंसा भवति, सा हि 'तसथावरसव्वभूयखेमकरी' त्रसस्थावरसर्वभूतक्षेमकरी=त्रसस्थावरादि सर्व

लिये (जह) जिस रूप से इनका (भाणियाणी) प्ररूपण किया है उसी तरह से मैं इनका प्ररूपण–वर्णन करूंगा ॥ १ ॥

अब वे पाच सवर द्वार कौन २ से हैं ? सूत्रकार उनका क्रमशः नामनिर्देश करने के लिये कहते हैं–'पढम होइ अहिंसा' इत्यादि।

उन पांच सवर द्वारों में से (पढम) सब से पहिला सवर द्वार (अहिंसा होइ) अहिंसा है। (बितिय) दूसरा सवर द्वार (सच्चवयण) सत्यवचन है (दत्तमणुन्नाय) तीसरा सवर द्वार दत्तानु ज्ञातग्रहण है। चौथा सवर द्वार (बभचेर) ब्रह्मचर्य है। और पांचवा सवर द्वार (अपरिग्गहत्त) अपरिग्रहत्व है ॥ २ ॥ इस प्रकार पाच सवर द्वारों के नाम कह कर अब सूत्रकार सर्वप्रथम अहिंसा रूप सवर द्वार को वर्णन करने के लिये तीसरी गाथा कहते हैं–(तत्थ) इन पाच सवर द्वारों के बीच में (पढम) पहिला सवरद्वार (अहिंसा) अहिंसा

માટે "जह" જે રીતે તેનુ "भाणियाणि" પ્રરૂપણ કર્યું છે એજ રીતે હુ તેનુ પ્રરૂપણ–વર્ણન કરીશ ॥ ૧ ॥

હવે તે પાચ સવરદ્વાર કયા કયા છે? તેનો અનુક્રમે નામ નિર્દેશ કરવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—"पढम होइ अहिंसा" ઇત્યાદિ

તે પાચ સવદ્વારોમા " "पढम" સૌથી પહેલુ સવરદ્વાર "अहिंसा होइ અહિંસા છે, "बितिय" બીજુ સવરદ્વાર "सच्चवयण" સત્ય વચન "दत्तमणुन्नाय" ત્રીજુ સવરદ્વાર દત્તાનુગ્રહણ છે, ચોથુ સવરદ્વાર "बभचेर" બ્રહ્મચર્ય છે, અને પાચમુ સવરદ્વાર "अपरिग्गहत्त" અપરિગ્રહત્વ છે ॥૨॥

આ પ્રમાણે પાચ સવરદ્વારોના નામ કહીને હવે સૂત્રકાર સૌથી પહેલા સવરદ્વાર અહિંસાનુ વર્ણન કરવાને માટે ત્રીજી ગાથા કહે છે "तत्थ" એ પાચ સવરદ્વારોમા "पढम" પહેલુ સવરદ્વાર "अहिंसा" અહિંસા છે

व्रतानि तानि तथोक्तानि, तथा- 'सीलगुणवरव्वयाइं' शीलगुणवरव्रतानि= शील=चित्तसमाधिः गुणाः=विनयादयः तैर्वराणि=श्रेष्ठानि यानि व्रतानि तानि तथोक्तानि- 'सच्चज्जवव्वयइं' सत्यार्जवव्रतानि, तत्र-सत्यम्=मृषावादवर्जनम्, आर्जवम्=मायावर्जनम्, तद्रूपाणि यानि व्रतानि तानि तथोक्तानि, तथा- 'नरगतिरियमणुयदेवगतिविवज्जगाइं' नरकतिर्यङ्मनुजदेवगतिविवर्जकानि= नरकतिर्यङ्मनुजदेवाभिराश्वतस्रोगतीर्विनर्जयन्ति मोक्षगतिप्रापकत्वेन यानि तानि तथोक्तानि, तथा- 'सव्वजिणसासणगाइं' सर्वजिनशासनकानि=सर्वजिनैः शिष्यन्ते =उपदिश्यन्ते यानि तानि तथोक्तानि, तथा-' कम्मरयवियारगाइं ' कर्मरजोवि-

नाम संयम है, इसमें प्रवृत्त साधु के नवीन कर्मों का आगमन रुक जाता है अर्थात् नवीन कर्मों के आस्रव का निरोध होना यहि इस संयम का फल है। इसलिये ये संवरद्वार तपसंयम रूप महाव्रत हैं। तथा ये संवरद्वार-(सीलगुणवरव्वयाइं) शील' गुणवर व्रतरूपहैं-चित्त की समाधि का नाम शील है, विनय आदि का नामगुण है। इनसे श्रेष्ठ जोव्रत हैं तद्रूप ये संवर द्वार है। (सच्चज्जवव्वयाइं) सत्य-मृषावादका परित्याग, आर्जव-माया का त्याग, इन रूप जो व्रत है तद्रूप ये संवरद्वार हैं। (नरग- तिरियमणुयदेवाइविवज्जगाइं) इनकी आराधना से आराधक जीव को मोक्षगति कीप्राप्ति होती है इसलिये ये संवर द्वार [नरक, तिर्यञ्च, मनु- ष्य और देव, इन चारो गतियों से अपने आराधक जीव को दूर कर देते हैं इसलिये ये नरक तिर्यञ्च मनुज देवगति विवर्जक हैं। (सव्वजि णसासणगाइं) इन संवरद्वारों का उपदेश अभीतक जितने भी जिन हो

પ્રવૃત્ત થયેલ સાધુને નવા કર્મોનું આગમન અટકી જાય છે એટલે કે નવા કર્મોના આસ્રવનો નિરોધ થવો એ જ આ સંયમનું ફળ છે, તેથી તે સંવર દ્વાર તપ સંયમરૂપ મહાવ્રત છે તથા તે સંવરદ્વાર-" सीलगुणवरव्वयाइं " શીલગુણવરવ્રત રૂપ છે-શીલ એટલે ચિત્તની સમાધિ, વિનય આદિ ગુણો કહે વાય છે, તેમના વડે શ્રેષ્ઠ જે વ્રતો છે તે પ્રકારના તે સંવરદ્વાર છે " सच ज्जवव्वयाइं " સત્ય-મૃષાવાદનો પરિત્યાગ, આર્જવ-માયાનો ત્યાગ, એ પ્રકારના જે વ્રતો છે તે તે પ્રકારના તે સંવરદ્વાર છે " नरगतिरियमणुयदेवाइ- विवज्जगाइं " તેમની આરાધનાથી આરાધક જીવને મોક્ષગતિ પ્રાપ્ત થાય છે તેથી તે તે સંવરદ્વાર પોતાની આરાધના કરનાર જીવોને નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવ એ ચારે ગતિમાં જતા રોકે છે, તેથી તેઓ નરક, તિર્યંચ મનુ ષ્ય અને દેવગતિના વિવર્જક

दारकाणि=कर्म=ज्ञानावरणाद्यष्टप्रकारक, तदेव जीवस्य गुण्ठनेन मालिन्यापाद-कत्वेन रजः=धूलि, तद् विदारयन्ति=निवारयन्ति यानि तानि तथोक्तानि, तथा–भवसयविणासगाइ' भवशतविनाशकानि = भवशतानि = जन्मशतानि विनाशयन्ति यानि तानि तथोक्तानि, भवपरम्पराविच्छेदकानीत्यर्थः, अत एव 'दुहसयविमोयगाइ' दुःखशतविमोचकानि=दुःखशतानि विमोचयन्ति यानि तानि तथोक्तानि, तथा – 'सुहसयपवत्तगाइ' सुखशतप्रवर्तकानि=सुखशतानि प्रवर्तयन्ति यानि ताति तथोक्तानि, तथा–'कापुरिसदुरुत्तराइ' कापुरुष

चुके हैं उन सबने दीया है। (कम्मरयविदारगाइ) ये संवरद्वार कर्मरज के विदारक है–ज्ञानावरण आदि आठ प्रकार की कर्मरूप धूलि को ये उडाने नष्ट करने वाले हैं। ज्ञानावरण आदि कर्मो को धूलि की उपमा इस-लिये दी है कि धूलि जिस प्रकार मलिनता आदि करती है उसी प्रकार ये कर्म भी जीव में व्यवहार नय की अपेक्षा से मलिनता करते है, अर्थात् ज्ञानादिक गुणों का आवरण आदि कर देने से जीव मे अज्ञान आदि विभाव भावों के वर्धक होते हैं। (भवसयविणासगाइ) ये संवरद्वार भवशतविनाशक हें–अर्थात्–इनकी आराधना करने मे आरा धक, जीवों के जो इनकी आराधना के विना सैकडों भव–जन्म–होने वाले थे वे सब नष्ट हो जाते हैं। (दुक्खसयविमोयगाइ) भवपर-परा इनके प्रभाव से विच्छिन्न हो जाती है, इसीलिये इन्हें दुःखशत विमोचक कहा है। (सुह सयपवत्तगाइ) जब सैकडों दुःख इनकी

"सव्व जिणसासणगइ" આજ સુધીમા જેટલા જિનેશ્વરો થઈ ગયા તે બધાએ તે સંવરદ્વારોનો ઉપદેશ આપ્યો છે "कम्मरयविदारगाइ" તે સંવરદ્વાર કર્મરજનો નાશ કરનાર છે–જ્ઞાનાવરણુ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મરૂપી રજનો નાશ કરે છે જ્ઞાનવરણુ આદિ કર્મોને ધૂળ–રજની ઉપમા દેવાનુ કારણુ એ છે કે ધૂળ જેમ મલિનતા આદિ કરે છે તેમ એ કર્મો પણુ જીવમા વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ મલિનતા કરે છે, એટલે કે જ્ઞાનાદિક આદિ ગુણોનુ આવરણુ કરી નાખવાથી જીવમા અજ્ઞાન આદિ ઉલટા ભાવોના વર્ધક થાય છે "भवसयविणासगाइ" તે સંવરદ્વાર ભવશત વિનાશક છે–એટલે કે તેમની આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોના તેમની આરાધના કર્યા વિના જે સેકડો ભવ થવાના હતા તે બધા નષ્ટ થઈ જાય છે "दुक्खसयविमोयगाइ" તેમના પ્રભાવથી ભવોની પરંપરા છેદાઈ જાય છે, તે કારણે તેમને દુઃખ શત વિમો-ચક દર્શાવ્યા છે "सुहसयपवत्तगाइ" જો તેમના આરાધનાથી સેકડો

दुरुत्तराणि= कापुरुषैः= कातरैः दुःखेन उत्तीर्यन्ते यानि तानि तथोक्तानि= कापुरुषैः प्रतिप तुमशक्यानीत्यर्थः, तथा– ' सप्पुरिसनिसेवियाइ ' सत्पुरुषैर्निषेवितानि=आश्रितानि, तथा–' निव्वाणगमणमग्गसग्गप्पणायगाइ ' निर्वाणगमन मार्गस्वर्गप्रणायकानि=निर्वाण=मोक्षस्तस्य गमने मार्ग इव मार्गा यानि तानि निर्वाणगमनमार्गाणि, तथा–स्वर्गे प्रकर्षेण नयन्ति जीवान् यानि तानि स्वर्गप्रणायकानि, उभयोः कर्मधारयस्तानि तथोक्तानि, पञ्चसंवरद्वाराणि ' भगवया ' भगवता महावीरेण ' उ ' तु–निश्चयेन ' कहियाणि ' कथितानि=प्रोक्तानि, अत इमान्यवश्य श्रद्धेयानीति भावः ॥ सू० १ ॥

इति प्रथमसंवरद्वार प्रस्तावना ।

आराधना से विनष्ट हो जाते हैं तो यह बात भी निश्चित हो जाती है कि ये सैकड़ों सुखों के प्रवर्त्तक होते हैं। जब इनका इतना विशिष्ट प्रभाव है तो फिर क्या है हरएक प्राणी इनकी आराधना करने लगेगा इसके लिये सूत्रकार कहते हैं कि ये संवरद्वार (कापुरिसदुरुत्तराइ) का पुरुष दुरुत्तर हैं–जो कायरपुरुष हैं–उनके द्वारा तो धारण करने के लिये अशक्य है। परन्तु (सप्पुरिसनिसेवियाइ) सत्पुरुषों से ये सेवित–आचरित होते हैं, अर्थात् जो सत्पुरुष हैं–अन्त रात्मा जीव है–वे ही उन्हें धारण करते हैं। अधिक क्या कहा जाय ये संवरद्वार (निव्वाणगमणमग्ग–मग्गप्पयाणगाइ) मोक्ष के गमन में मार्गरूप है, अगर जीव मे इतनी योग्यता नहीं हो तो स्वर्ग में प्रयाण कराने वाला जरूर होता है। इस प्रकार के (येपंच संवरदाराइ कहियाणि) पांच संवर द्वार भगवान महावीर ने कहे है। इसलिये प्रत्येक भव्य जीव को इन्हे अपनी श्रद्धा का विषय अवश्य बनाना चाहिये। ॥सू० १॥

દુખ નષ્ટ થઈ જાય છે તો એ વાત પણ નક્કી થઈ જાય છે કે તે સેકડો સુખના પ્રવર્તક થાય છે જ્યારે તેમનો આટલો બધો વધારે પ્રભાવ છે તો દરેક પ્રાણી તેની આરાધના કરવા માંડશે તેથી સૂત્રકાર બતાવે છે કે તે સંવરદ્વાર " का पुरिसदुरुत्तराइ " કાપુરુષદુરુત્તર છે-જે કાયર પુરૂષો છે-બહિ સાત્મા જીવ છે, તેમના દ્વારા તે ધારણ કરવાને માટે અશક્ય છે પણ " सप्पुरिसनिसेवियाइ " પણ સત્પુરૂષો વડે તેનુ સેવન-આચરણ કરાય છે વધુ શું કહું ! તે સંવરદ્વાર " निव्वाणगमणमग्ग सग्गप्पयाणगाइ ' મોક્ષગમનના માર્ગ રૂપ છે, જો જીવમા એટલી યોગ્યતા હોય તો તે તેને માટે અવશ્ય સ્વર્ગ પ્રાપ્તિ કરાવનારા નિવડે છે આ પ્રકારના તે " पचसंवरदाराइ कहियाणि " પાંચ સંવરદ્વાર ભગવાન મહાવીરે કહેલ છે તો દરેક ભવ્યજીવે તેમને અવશ્ય પોતાની શ્રદ્ધાનો વિષય બનાવવો જોઈએ ॥ સૂ ૧ ॥

अथ प्रथमसंवरनिरूपणायाह-'तत्थ पढमं' इत्यादि--

मूलम्--तत्थ पढमं अहिंसा जा सा सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स भवइ दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा, निव्वाणं १, निव्वुई २, समाही३, संती४, कित्ती५, कंती६, रइय७, विरइय८, सुयंग९, तित्ती१०, दया११, विमुत्ती१२, खंती१३, सम्मत्ताराहणा१४, महती१५, वोही१६, बुद्धी १७, धितीय१८, समिद्धी१९, रिद्धी२०, विद्धी२१, ठिई २२, पुट्ठी२३, नदा २४, भद्दा २५, विसुद्धी २६, लद्धी २७, विसिट्ठदिट्ठी२८, कल्लाणं २९, मगल३०, पमाओ ३१, विभूई३२, रक्खा ३३, सिद्धवासो३४, अणासवो ३५, केवलीणठाण ३६, सिव ३७, समिई३८, सील ३९, संजमो४०, त्ति य, सीलघरो ४१, संवरोय४२, गुत्ती४३, ववसाओ ४४, उस्सओ४५, जन्नो४६, आयतण४७, जतण ४८, मप्पमाओ४९, अस्साओ५०, वीसासो५१, अभओ५२ सव्वस्स५३, वि अमघाओ चोक्ख ५४, पवित्तो ५५, सुई ५६ पूया ५७, विमल५८, पभासा ५९, य, निम्मल ६० तरत्ति। एवमादीणि नियगुणनिम्मियाइ पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवईए ॥ सू० २ ॥

टीका-' तत्थ ' इत्यादि-

' तत्थ ' तत्र=तेषु पञ्चसु संवरद्वारेषु मध्ये ' पढम ' प्रथमम्=आद्यम् ' अहिंसा ' अहिंसालक्षण संवरद्वार भवति। अहिंसा कीदृशी ? इत्याह-' जा सा ' या सा सुप्रसिद्धा-अहिंसा ' सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स ' सदेवमनुजासुरस्य

इस प्रकार यह प्रथम संवर द्वार की प्रस्तावना है। अब सूत्रकार

આ પ્રમાણે આ પ્રથમ સવરદ્વારની પ્રસ્તાવના છે હવે સૂત્રકાર પ્રથમ

लोकस्य 'दीवो' द्वीपो भवति, अथ भाव'–सयोगवियोगचिन्तासन्तानवितान तरङ्गायमाणमोहमहावर्त्तपर्त कषायश्वापदकदर्थितमथ्यमानगात्राणामत्राणाना प्राणानामियमहिंसाऽऽश्वासस्थानरूपो द्वीपो भवति, तथा–' ताण ' त्राणम्, आपद्भ्यो रक्षणात्त्राणस्वरूपाऽस्ति। तथा–' सरण ' शरणम्–विविधविपदव्याकुलानामाश्रय

प्रथम सवर द्वार के निरूपण के लिये सूत्र कहते हैं—' तत्थ पढम ' इत्यादि०।

टीकार्थ—(तत्थ) उन पाच सवरद्वारों में से (पढम अहिंसा) पहिला सवरद्वार अहिंसा है। (जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स-दीवो भवइ) यह सुप्रसिद्ध अहिंसा देवलोक, मनुष्यलोक और असुर-लोक के लिये एक द्वीप जेसी है। इसका तात्पर्य यह है कि सयोग और वियोग की सन्तानपरपरारूप तरङ्गो से यह मोहमहावर्तरूप गर्त कि जिसमे समस्त ससारी जीव सर्वथा मग्न हो रहे हैं, व्याप्त हो रहा है उसमे पड़े हुए इन ससारी जीवों को कषायरूप श्वापद–हिंसक जानवर रातदिन दुःखित करते रहते हैं और उनके शरीर को मथते रहते हैं। वहा उनकी रक्षा करने वाला कोई नही है। इस तरह अशरणभूत हुए इन प्राणीयों की रक्षा करने वाली यह एक अहिंसा ही है। अतः यह अहिंसा उनके लिये आश्वासन के स्थानरूप एक द्वीप के जेसी है। तथा (ताण) जीवों की यह आपत्ति विपत्ति से रक्षा करती है इसलिये यह त्राणरूप है। तथा (सरण) अनेक विपदाओ से घिरे हुए जीवों

સવરદ્વારના નિરૂપણને માટે સૂત્ર કહે છે–" तत्थ पढम " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"तत्थ" તે પાચ સવરદ્વારોમાથી पढम अहिंसा " પહેલુ સવરદ્વાર અહિંસા છે "जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स दीवो भवइ " તે સુપ્રસિદ્ધ અહિંસા દેવલોક, મનુષ્યલોક, અને અસુરલોકને માટે એક દ્વીપ જેવી છે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે સયોગ અને વિયોગરૂપ સતાન પરપરા રૂપ મોજાઓ વડે આ મોહ મહાવર્તરૂપ ખાઈ કે જેમા સર્વે સસારી જીવો સપૂર્ણ રીતે મગ્ન થઈ ગયેલા છે, ડૂબી ગયા છે, તે સસારી જીવોને કષાયરૂપ શ્વાપદ હિંસક પશુ નિશદિન દુખી કરે છે અને તેમના શરીરને વલોવ્યા કરે છે ત્યા તેમનુ રક્ષણ કરનાર કોઈ નથી આ રીતે નિરાધાર એવા તે પ્રાણીઓની રક્ષા કરનાર આ એક અહિંસા જ છે તેથી આ અહિંસા તેમને માટે આશ્રય સ્થાનરૂપ એક દ્વીપ સમાન છે તથા " ताण " તે જીવોનુ આપત્તિ–વિપત્તિ સામે રક્ષણ કરે છે તેથી તે ત્રાણરૂપ છે તથા " सरण " અનેક વિપદોથી ઘેરાયેલા જીવોને

स्थानम्, ' गई ' गतिः=गम्यते=मोक्षार्थिभिराश्रीयते इति गतिः= प्राप्यस्थान तथा-' पइट्ठा ' प्रतिष्ठा प्रतिष्ठन्ते-आसते यस्या सर्वे गुणा सा प्रतिष्ठा=सर्वगुणा नामाधारस्वरूपा। साम्प्रतमहिंसायाः गुणनिष्पन्नानि षष्टिनामान्याह ' निव्वाण ' इत्यादि-' निव्वाण ' निर्वाण=मोक्षः, तद्धेतुत्वात् १, ' निव्वुई 'निर्वृति'=स्वास्थ्यम्-कर्मव्याधिवर्जितत्वात् २, ' समाही ' समाधि =समता, समभावहेतुत्वात् ३, ' सती ' शान्तिः=द्रोहवर्जितत्वात् ४, ' कित्ती ' कीर्त्तिः=यशः तद्धेतुत्वात् ५,

को यह एक उत्तम आश्रय स्थान रूप है। तथा (गई) जो मोक्ष के अभिलाषी जीव हैं वे इसका आश्रय करते हैं इसलिये उनकी अपेक्षा यह गतिरूप है। तथा (पइट्ठा) संसार में जितने भी सद्गुण हैं उन सब की प्रतिष्ठा-आधारभूत यही एक अहिंसा है, इसके अभाव में अन्य विद्यमान सद्गुणो की प्रतिष्ठा-कीमत-नहीं होती है। अब सूत्रकार इस अहिंसा भगवती के गुण-निष्पन्न साठ नामो को कहते हैं। उनमें पहिला नाम (निव्वाण) निर्वाण-मोक्ष है। क्यों कि यह उसकी हेतुभूत होती है १। दूसरा नाम इसका (निव्वुई) निवृत्ति है, निवृत्ति शब्द का अर्थ स्वास्थ्य है- कर्मों के आत्यतिक अभाव होने से ही जीवों को प्राप्त होता है २। अहिंसा का तीसरा नाम (समाही) समाधि है, समाधि का अर्थ समता है, यह अहिंसा समभाव की कारण होती है इसलिये कारण में कार्य के उपचार से इसे स्वय समाधिरूप कह दिया है ३। अहिंसा का चौथा नाम (सति) शान्ति है,-क्यो कि जहा द्रोह

માટે તે એક આશ્રયસ્થાનરૂપ છે તથા " गई " મોક્ષના અભિલાષી જે જીવો છે તેઓ તેનો આશ્રય લે છે, તેથી તેમની અપેક્ષાએ તે ગતિરૂપ છે, તથા " पइट्ठा " સંસારમા જેટલા સદ્‌ગુણ છે તે બધાના આધાર રૂપ આ એક અહિંસા જ છે, તેના અભાવે બીજા વિદ્યમાન સદ્‌ગુણોની કોઈ પ્રતિષ્ઠા-કિંમત થતી નથી હવે સૂત્રકાર આ અહિંસા ભગવતીના ગુણ પ્રતિપાદિત સાઠ નામો બતાવે છે તેમા પહેલુ નામ " निव्वाण " નિર્વાણ-મોક્ષ છે કારણ કે તે તેના કારણરૂપ હોય છે (૧) તેનુ બીજુ નામ " निव्वुई " નિર્વૃત્તિ છે, નિર્વૃતિ શબ્દનો અર્થ સ્વાસ્થ્ય થાય છે-કર્મોનો અત્યત અભાવ હોવાથી તે જીવોને થાય છે (૨) અહિંસાનુ ત્રીજુ નામ " समाही " સમાધિ છે, સમાધિનો અર્થ સમતા છે, આ અહિંસા સમભાવનુ કારણ હોય છે તેથી કારણમા કાર્યના ઉપચારથી તેને સ્વય સમાધિરૂપ કહેવામા આવેલ છે (૩) અહિંસાનુ ચોથુ નામ "सती" શાન્તિ છે, કારણ કે જ્યા દ્રોહનો અભાવ હોય છે ત્યાજ શાત હોય છે અહિં

'कंती' कान्तिः=प्रसन्नता तद्धेतुत्वात् ६, 'रई य' रतिः=आनन्दस्तज्जनकत्वात् ७, 'विरई य' विरतिः=विरागः सावद्यकर्मवर्जितत्वात् ,=' सुयग ' श्रुताङ्ग=श्रुत= श्रुतज्ञानाङ्ग कारण यस्याः सा तथोक्ता, उक्तमपि-" पढम नाण तओ दया " इति ९, ' तित्ती ' तृप्तिः=सतोषः सर्वप्राणिसतोषजनकत्वात् १०, दया=प्राणिरक्षा- उपमर्दनवर्जितत्वात् ११, ' विमुत्ती ' विमुक्ति-विरुन्यन्ते प्राणिनः सकलबध-

का अभाव होता है वहीं शाति होती है, अहिंसा में द्रोह का लेश भी नहीं होता है, इसलिये इसे शाति शब्द से व्यवहृत किया गया है ४। (कित्ती) यशकी हेतुभूत होने से इसका पाचवां नाम कीर्ति है। अहिंसक जीव की कीर्ति का सर्वत्र विस्तार होता है यह बात सुप्रसिद्ध ही है ५। (कती) प्रसन्नता की हेतुभूत होने से इसका नाम कान्ति भी है ६। (रई य) आनन्द की उत्पादक होने से इसका नाम रति है ७। (विरई य) सावद्यकर्मो से वर्जित होने के कारण इसका नाम विरति भी है ८। (सुयग) इस अहिंसा का कारण श्रुतज्ञान होता है इसलिये इसका नाम श्रुताङ्ग है। क्योकि ऐसा कहा है कि पहिले ज्ञान होता है बाद में दया ९। (तित्ती) समस्त प्राणियों के लिये यह सतोष जनक होती है इसलिये इसका नाम तृप्ति है १०। इस अहिंसा में प्राणियो की रक्षा होती है इसलिये प्राणियो के प्राणों के उपमर्दन कृत्य से रहित होने के कारण यह (दया) दयारूप है ११। इसके प्रभाव से प्राणी समस्त प्रकार के वध एव बधनो से छूट जाता है

સામા દ્રોહનુ નામ માત્ર પણ હોતુ નથી તેથી તેને શાન્તિ શબ્દથી વર્ણવેલ છે (૪) "कित्ती" યશના કારણ રૂપ હોવાથી તેનુ પાચમુ નામ કીર્તિ છે અહિંસક જીવની કીર્તિ સર્વત્ર ફેલાય છે તે વાત સુપ્રસિદ્ધ છે (૫) " कती " પ્રસન્નતાના કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ કાન્તિ પણ છે (૬) "रईय" આનદ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી તેનુનામ રતિ છે (૭) "विरईय" સાવદ્ય કર્મોથી રહિત હોવાથી તેનુ નામ વિરતિ પણ છે (૮) "सुयग" આ હિંસાને કારણે શ્રતજ્ઞાન થાય છે, તેથી તેનુ નામ શ્રુતાગ છે, કારણ કે પહેલા જ્ઞાન થાય છે, અને ત્યાર પછી દયા એવુ ભાખેલ છે (૯) " तित्ती " સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે સતોષ જનક હોય છે તેથી તેનુ નામ તૃપ્તિ છે (૧૦) આ અહિંસાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થાય છે, તેથી પ્રાણીઓના પ્રાણસહારના કૃત્યથી તે રહિત હોવાથી તે " दया " દયારૂપ છે (૧૧) તેના પ્રભાવથી પ્રાણીઓ સમસ્ત પ્રકારના વધ અને બધનોમાથી મુક્ત થાય છે, તેથી સકળ વધબધનોથી પ્રાણીઓને મુક્ત કરાવનાર હોવાથી

बन्धनेभ्यो यया सा तथोक्ता,-सकलवधबन्धनविमोचकत्वात् १२, 'खत्ती' क्षान्तिः=क्रोधादिनिग्रहकारकत्वात् १३, 'सम्मत्ताराहणा' सम्यक्त्वाराधना= सम्यक्त्व-सम्यग्बोधरूपमाराध्यते यया सा तथोक्ता, जिनशासनाराधनकारणत्वाद् १४, 'महई' महती=सर्वधर्मानुष्ठानश्रेष्ठत्वात् १५, 'बोही' बोधिः-सर्वज्ञोक्तधर्मप्राप्तिरूपत्वात् १६, 'बुद्धी' बुद्धिः, परदुःखावबोधकत्वात् १७, 'धिई' धृतिः, म्रियमाणजीवस्याभयप्रदायकत्वात्, यद्वा-धृतिश्चित्तदार्ढ्यम्, अहिंसया चित्ते दार्ढ्यस्य समुत्पद्यमानत्वात् १८, 'समिद्धी' समृद्धिः, आनन्दजनकत्वात्

इसलिये प्राणीयो की सकल वध बन्धनों से विमोच का होने के कारण इसका नाम (विमुत्ती) विमुक्ती है १२। यह समस्त क्रोधादि कषायों की निग्रह कारिका है इसलिये इसका नाम (खती) क्षान्ति है १३। सम्यक् बोधरूप सम्यत्त्व इसके होने पर ही आराधित होता है, अर्थात् यह जिनशासन की कारण होती है इसलिये इसका नाम (सम्मत्ताराहणा) सम्यत्वाराधना है १४। धर्मके समस्त अनुष्ठानों में यह श्रेष्ठ है इसलिये इसका नाम (महती) महती है १५। सर्वज्ञप्रतिपादित धर्मकी प्राप्तिरूप होने से इसका नाम (बोही) बोधि है १६। परदुःखो की अवबोधिका होने से, अर्थात् परकीय दुःखो को बतलाने वाली होने से इसका नाम (बुद्धी) बुद्धि है १७। मरते हुए जीवों को इसके प्रभाव से अभय की प्राप्ति होती है इसलिये इसका नाम (धिई) धृति है। अथवा-धृति शब्द का अर्थ चित्त की दृढता है, सो अहिंसा से चित्त मे दृढता उत्पन्न होती है यह बात निर्विवाद है १८। आनन्द

તેનુ નામ "विमुत्ती" વિમુક્તિ છે, (૧૨) તે સમસ્ત ક્રોધાદિક કષાયોનો નિગ્રહ કરનારી છે, તથી તેનુ નામ 'खती" ક્ષાન્તિ છે (૧૩) સમ્યગ્બોધ રૂપ સમ્યકત્વ તે વિદ્યમાન હોય તો જ આરાધાય છે, એટલે કે તે જિનશાસનની આરાધનાના કારણરૂપ હોય છે તેથી તેનુ નામ "सम्मत्ताराहणा" સમ્યકત્વારાધના છે (૧૪) ધર્મના સમસ્ત અનુષ્ઠાનોમા તે શ્રેષ્ઠ છે તેથી તેનુ નામ "महती" મહતી છે (૧૫) સર્વજ્ઞ પ્રતિપાદિત ધર્મની પ્રાપ્તિરૂપ હોવાથી તેનુ નામ "बोही" બોધિ છે (૧૬) પરદુ ખોની અવબોધિકા હોવાથી એટલે કે પારકાના દુ ખો બતાવનારી હોવાથી તેનુ નામ "बुद्धी" બુદ્ધિ છે (૧૭) મરતા જીવોને તેના પ્રભાવથી અભયની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "धिई" ધૃતિ છે અથવા ધૃતિ શબ્દનો અર્થ ચિત્તની દઢતા છે તો અહિંસાથી ચિત્તમા દઢતા ઉત્પન્ન થાય છે તે વાત નિર્વિવાદ છે (૧૮) આનંદની જનક હોવાથી

१९, 'रिद्धी' ऋद्धि, लक्ष्मीहेतुत्वात् २०, 'विद्धी' वृद्धि, तीर्थङ्करादिपुण्यप्रकृतिपुञ्जसंपादकत्वात् २१, 'ठिई' स्थिति -साद्यपर्यवसितमोक्षस्थितिसम्पादकत्वात् २२, 'पुट्ठी' पुष्टिः-पुण्यपुष्टिकारकत्वात् २३, 'नंदा' नन्दा=नन्दयति आनन्दयतीति नन्दा, स्वर्गापवर्गसुखप्रापकत्वात् २४, 'भद्दा' भद्रा=भन्दते=कल्याण करोतीति भद्रा २५, 'विसुद्धी' विशुद्धिः-पापमलविशोधकत्वात् २६, 'लद्धी' लब्धि =केवलज्ञानकेवलदर्शनादि लब्धहेतुत्वात् २७, 'विसिट्ठदिट्ठी' विशिष्ट दृष्टिः=प्रधानदर्शनमतमित्यर्थः, उक्तं च—

की जनक होने से इसका नाम (समिद्धी) समृद्धि है १९। लक्ष्मी की हेतुभूत होने से इसका नाम (रिद्धी) ऋद्धि है २०। इसके प्रभाव से तीर्थंकर आदि पुण्य प्रकृतियों का जीवों को बंध होता है इसलिये इसका नाम (विद्धि) वृद्धि है २१। इसके आचरण करने से मोक्ष में प्राप्त हुए जीवों की स्थिति आदि अनन्त होती है इसलिये इसका नाम (ठिई) स्थिति है २२। पुण्य की पुष्टि का कारण होने से इसका नाम (पुट्ठी) पुष्टि है २३। स्वर्ग और मोक्षके सुख जीवों को इसकी कृपा से प्राप्त होते है अतः वे उन सुखो की प्राप्ति से वहा आनन्द करते हैं इसलिये इसका नाम (नंदा) नन्दा है २४। यह जीवों का कल्याण कराती है इसलिये इसका नाम (भद्दा) है २५। पापमल का इससे विशोधन होता है इसलिये इसका नाम (विसुद्धी) विशुद्धी है २६। केवलज्ञान, केवलदर्शन, आदि लब्धिया इसके ही प्रभाव से होती हैं, इसलिये इसका नाम (लद्धी) लब्धि है २७। (विसिट्ठदिट्ठी) अहिंसा

તેનુ નામ "समिद्धी" સમૃદ્ધિ છે (૧૯) લક્ષ્મીના કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ "रिद्धी" ઋદ્ધિ છે (૨૦) તેના પ્રભાવથી તીર્થંકર આદિ પુણ્યપ્રકૃતિયોનો જીવોને બંધ થાય છે તેથી તેનુ નામ "विद्धी" (૨૧) તેના આચરણથી મોક્ષ પ્રાપ્ત કરેલ જીવોની સ્થિતિ આદિ અનંત થાય છે, તેથી તેનુ નામ "ठिई" સ્થિતિ છે (૨૨) પુણ્યની પુષ્ટિનુ તે કારણ હોવાથી તેનુ નામ "पुट्ठी" પુષ્ટિ છે (૨૩) તેની કૃપાથી જીવોને સ્વર્ગ અને મોક્ષના સુખો પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તે સુખોની પ્રાપ્તિથી તેઓ ત્યા આનંદ કરે છે તે કારણે તેનુ નામ "नंदा" છે (૨૪) તે જીવોનુ કલ્યાણ કરાવે છે તેથી તેનુ નામ "भद्दा" ભદ્રા છે (૨૫) પાપમળની તેનાથી વિશુદ્ધિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "विसुद्धी" વિશુદ્ધિ છે (૨૬) કેવળજ્ઞાન, કેવળદર્શન આદિ લબ્ધિઓ તેના પ્રભાવથી જ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તેનુ નામ "लद्धी" લબ્ધિ છે (૨૭) "विसिट्ठ दिट्ठी" અહિંસા જ પ્રધાન દર્શન છે તેથી તેનુ નામ

" किं तया पठितया, पदकोटया पलालभूतया ।
यत्र यत् न ज्ञात, परस्य पीडा न कर्त्तव्या " ॥ १ ॥ इति ॥

पदकोटिमितानेकशास्त्राध्ययनैं किम् ? यत्र दया न वर्तते । दयावर्जितानि सकलान्यपि शास्त्राणि पलालभूतानीत्यर्थः २८, ' कल्लाण ' कल्याणम् , कल्य मोक्षस्तत्प्रापकत्वात् २९, मंगलम् दुरितोपशमनकारकत्वात् ३०, ' पमोओ ' प्रमोदः=हर्षजनकत्वात् ३१, ' विभूई विभूतिः-सकलसंपत्तिहेतुत्वात् ३२, ' रक्खा ' रक्षा जीवरक्षणस्वभावात् ३३, ' सिद्धावासो ' सिद्धावासः=साद्यपर्य

ही प्रधान दर्शन है इसलिये इसका नाम विशिष्ट दृष्टि है २८ ।

कहा भी है—

" किं तया पठितया, पदकोटया पलाल भूतया ।
यत्र यत् न ज्ञात, परस्य पीडा न कर्त्तव्या ॥ १ ॥

" पद कोटि परिमित अनेक शास्त्रों के अध्ययन से क्या लाभ हो सकता है जब कि जीव को इतना ही ज्ञान न हो पावे कि पर प्राणी को पीड़ा नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥

दयोपदेश विहीन शास्त्र पलाल जैसे निःसार है २८ । मोक्ष-प्रदान कराने वाली होने से इसका नाम (कल्लाण) कल्याण है २९ । पापों का-इससे उपशमन होता है इसलिये यह (मंगल) मंगलरूप है ३० । हर्ष की जनक होनेसे यह (पमाओ) प्रमादरूप है ३१ । सकल संपत्तियों की हेतुभूत होने से इसका नाम (विभुई) विभुति है ३२ । (रक्खा) जीवों

વિશિષ્ટ દૃષ્ટિ છે કહ્યુ પણ છે—

" किं तया पठितया, पदकोटया पलालभूतया ।
यत्र यत् न ज्ञात, परस्य पीडा न कर्त्तव्या ॥ १ ॥

' કોટિ પદો વાળા અનેક શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરવા છતા પણ જો જીવને એટલુ પણ જ્ઞાન ન પ્રાપ્ત થાય કે બીજા પ્રાણીઓને પીડવા જોઈએ નહી, તો તેના અધ્યયનથી શો લાભ ? ॥ ૧ ॥

દયાના ઉપદેશ વિનાના શાસ્ત્રો પલાલ જેવા નિ સાર છે (૨૮) મોક્ષ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી તેનુ નામ " कल्लाण" કલ્યાણ છે (૨૯) તેના વડે પાપોનો ક્ષય થાય છે તેથી તે " मगल " મંગળરૂપ છે (૩૦) હર્ષની જનક હોવાથી તે " पमोओ " પ્રમોદરૂપ છે (૩૧) સકળ સંપત્તિઓના કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ " विभूई " વિભૂતિ છે (૩૨) " रक्खा " જીવોની રક્ષા કરવાનો તેનો સ્વભાવ હોવાથી તેનુ નામ રક્ષા છે (૩૩) તેની આરાધના

वसितमोक्षगतिनिवासहेतुत्वात् ३४, 'अणासवो' अनाश्रवः-कर्मागमननिरोधकत्वात् ३५, 'केवलीण ठाण' केवलिना स्थानम्-तेषामाश्रयभूतत्वात्, अहिंसकस्यैवकेवलज्ञान समुत्पद्यते इत्यर्थः ३६, 'सिव' शिवम्-उपद्रववर्जितत्वात् ३७, 'समिई' समितिः-सम्यक्प्रवृत्तिः, तद्रूपत्वात् ३८, 'सील' शील=समाधिः, तद्धेतुत्वात् ३९, 'सजमोत्ति य' सयमइति च-सयम -हिंसा निवृत्तिस्तद्धेतुत्वात् ४०, 'सीलघरो' शीलगृहम्-शील=सदाचारो, यद्वा ब्रह्मचर्यं, तस्य गृह=

की रक्षा करने का ही इसका स्वभाव है इसलिये इसका नाम रक्षा है ३३। इसकी आराधना करते२ ही जीव सिद्धों के आवास में सिद्धिगति नामक स्थान विशेष में निवास करने लग जाता है इसलिये इसका नाम (सिद्धावासो) सिद्धावास है ३४। (अणासवो) कर्मों के आगमन द्वार की यह निरोधिका है इसलिये इसका नाम अनास्रव है ३५। (केवलीण ठाण) केवलज्ञानी-इसका आश्रय करते हैं इसलिये इसका नाम केवलि स्थान है। अर्थात् जो अहिंसक होता है उसे ही केवल ज्ञान उत्पन्न होता है ३६। अहिंसक जीव को कहीं से भी किसी भी प्रकार के उपद्रव प्राप्त नही हो सकते हैं इसलिये उपद्रववर्जित होने से इसका नाम (सीव) शिव है ३७। सम्यक् प्रवृत्ति का नाम समिति है. यह अहिंसा समितिरूप होती हैं इसलिये इसका नाम (समिई) समिति है ३८। शील-समाधि-का यह कारण होती है इसलिये इसका नाम (सील) शील है ३९। (सजमो त्ति य) सयम-हिंसा की निवृत्ति होनारूप सयम की यह साधक है इसलिये इसका नाम सयम है। ४०। शील-सदाचार अथवा ब्रह्मचर्यकी यह स्थान है इसलिये इसका नाम

કરતા કરતા જ જીવ સિદ્ધોના આવાસમા સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનમા નિવાસ કરવા લાગે છે તેથી તેનુ નામ "सिद्धावासो" સિદ્ધાવાસ છે (૩૪) "अणासवो" કર્મોના આગમન દ્વારની તે નિરોધક છે, તેથી તેનુ નામ અનાસ્રવ છે (૩૫) "केवलीण ठाण" કેવળજ્ઞાની તેનો આશ્રય છે તેથી તેનુ નામ કેવળી સ્થાન છે એટલે કે જે અહિંસક હોય છે તેને જ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે (૩૬) અહિંસક જીવને કોઈ પણ સ્થળેથી કોઈ પણ પ્રકારના ઉપદ્રવ થઈ શકતા નથી તેથી ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તેનુ નામ "सिव" શિવ છે (૩૭) સમ્યક્ પ્રવૃત્તિને સમિતિ કહે છે આ અહિંસા સમિતિરૂપ હોય છે તેથી તેને "समिई" સમિતિ કહે છે (૩૮) શીલ-સમાધિના તે કારણરૂપ હોય છે તેથી તેનુ નામ "सील" શીલ છે (૩૯) 'सजमोत्तिय" સયમ-હિંસાથી નિવૃત્ત થવા રૂપ સયમની તે સાધક છે, તેથી તેનુ નામ સયમ છે (૪૦) શીલ સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્યનુ તે સ્થાન છે તેથી તેનુ નામ "सीलघरो"

स्थानम् ४१, 'संवरो य' संवरश्च=कर्मागमकारणसंवरणात् ४२, 'गुत्ती' गुप्तिः =जीवस्याशुभप्रवृत्तिनिरोधकत्वात् ४४, 'ववसाओ' व्यवसायः-वि=विशिष्टो-ऽवसायः=अध्यवसायः-आत्मपरिणामः ४४,'उस्सओय' उच्छ्रयश्च-द्रव्यभावो-न्नतिहेतुत्वात् ४५, 'जण्णो' यज्ञः-स्वर्गादिसद्गतिदायकत्वात् ४६, 'आयतण' आयतनम्-गुणानामाश्रयः ४७, 'जयण' यत्नः-निरवद्यानुष्ठानत्वात् ४८, 'अप्पमाओ' अप्रमादः=प्रमादवर्जनम् ४९, 'अस्साओ' आश्वासः-परतृप्तिहेतु-

(सीलघरो) शीलगृह है ४१। कर्मोंके आगमन भूत कारणों का वह निरोध कर देती है इसलिये इसका काम (संवरो) संवर है ४२। इसके आचरण करने से जीवों की अशुभ प्रवृत्ति रुक जाती है इसलिये इसका नाम (गुत्ति) गुप्ति है ४३। यह आत्मा का विशिष्ट प्रकार का एक परिणाम है इस-लिये इसका नाम (ववसाओ) व्यवसाय वि-अवसाय अध्यवसाय है ४४। यह द्रव्य और भाव इन दोनों की उन्नति कराने वाली होती है इसलिये इसका नाम (उसमओ य) उच्छ्रय है ४५। स्वर्ग आदि सद्गति की प्राप्ति जीवों को इसके सेवन करने से होती है इसलिये इसका नाम (जण्णो) यज्ञ है ४६। सभी सद्गुणों का यही एक आश्रयस्थान-भूत है इसलिये इसका नाम (आयतण) आयतन है ४७। यह निरवद्य अनुष्ठानरूप है इसलिये इसका नाम (जयण) यत्न है ४८। इस प्रमाद असावधानताका परित्याग हो जाताहै इसलिये इसका नाम(अप्पमाओ)अ

શીલગૃહ છે (૪૧) કર્મના આગમન રૂપ કારણોનો તે નિરોધ કરી નાખે છે તેથી તેનુ નામ "संवरो" સંવર છે (૪૨) તેને આચરવાથી જીવોની અશુભ પ્રવૃત્તિ અટકી જાય છે તેથી તેનુ નામ "गुत्ति" ગુપ્તિ છે (૪૩) તે આત્માનુ વિશિષ્ટ પ્રકારનુ એક પરિણામ છે, તેથી તેનુ નામ "ववसाओ" વ્યવસાય-વિ અવસાય-અધ્યવસાય છે (૪૪) તે દ્રવ્ય અને ભાવ, એ બન્નેની ઉન્નતિ કરનારી છે તેથી તેનુ નામ "उस्सओय" उच्छ्रय છે (૪૫) તેના સેવનથી જીવોને સ્વર્ગ આદિ સદ્ગતિની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ "जण्णो" યજ્ઞ છે (૪૬) સઘળા સદ્ગુણોનુ તેજ એક આશ્રયસ્થાન છે, તેથી તેનુ નામ "आयतण" આયતન છે (૪૭) તે નિરવદ્ય અનુષ્ઠાનરૂપ છે તેથી તેનુ નામ "जयण" યત્ન છે (૪૮) તેમા પ્રમાદ-અસાવધાનતાનો પરિત્યાગ થઈ જાય છે, તેથી તેનુ નામ "अप्पमाओ" અપ્રમાદ છે (૪૯) પર પ્રાણીઓને તે તૃપ્તિના કારણરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ "अस्साओ" આશ્વાસ છે (૫૦)

त्वात् ५०, 'वीसाओ' विश्वासःप्राणिनां प्रतीतिजनकत्वात्, यद्वा-प्राणिप्राण स्याविरुद्धसमाचरणलक्षणः ५१, 'अभओ' अभयः-निर्भयहेतुत्वात् ५०, 'मव्वस्सवि-अमाघाओ' सर्वस्यापि सकलप्राणिगणस्य अमाघातः-मा=श्रीः, सा च द्वेधा धनलक्ष्मीः प्राणलक्ष्मीश्च, तस्या घातो हनन माघातो, न माघात अमाघातः-अमारिः स्वपदद्वारा प्राणिनां प्राणत्राणकरणात् ५४, 'चोक्ख' चोक्षा=पवित्रादपि पवित्रा-कर्ममलापहारकत्वात् ५४, 'पवित्ता' पवित्रा=आत्मनेर्मलहेतुत्वात् ५५,

प्रमाद है ४९। पर प्राणियो को यह तृप्ति का कारण होतीहै इसलिये इसकानाम (अस्साओ) आश्वास है ५०। प्राणियों मे यह प्रतीति उत्पन्न करा देती है इसलिये इसका नाम (वीसाओ) विश्वास है। अथवा प्राणियो के प्राणों के विरुद्ध आचरण इसमे नहीं होता है इसलिये भी इसका नाम विश्वास है ५१। प्राणियो को यह भयरहित बना देती है। इसलिये निर्भय की हेतु होने से इसका नाम अभय है ५२। दूसरे जीवो की मा-धन-लक्ष्मी और प्राणरूपलक्ष्मी का इसमें घात नहीं होता है इस लिये इसका नाम (अमाघाय) अमाघात है। मा शब्द का अर्थ लक्ष्मी होना है-धन रूप लक्ष्मी और प्राणरूप लक्ष्मी के भेद से यह लक्ष्मी दो प्रकार की होती है। अहिंसा से इन दोनों का सरक्षण होता है यह बात प्रत्यक्ष है इसलिये इसका नाम अमाघात है ५३। यह अहिंसा पवित्र वस्तुओं से भी है अतिपवित्र है इसलिये इसका नाम (चोक्खा) चोक्षा है ५४। इससे आत्मा के ऊपर जमा हुआ अनादिकाल का मैल-विभाव परिणति दूर हो जाती है। अतःआत्मा निर्मल-अपने स्वरूप में मग्न-हो

પ્રાણીઓમા તે પ્રતીતિ ઉત્પન્ન કરે છે તેથી તેનુ નામ "वीसाओ" વિશ્વાસ છે અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોના વિરૂદ્ધનુ આચરણ તેમા થતુ નથી, તેથી પણ તેનુ નામ વિશ્વાસ છે (૫૧) પ્રાણીઓને તે ભય રહિત કરે તેથી નિર્ભયતાને માટે કારણભૂત હોવાથી તેનુ નામ "अभय" છે (૫૨) બીજા જીવોની મા-ધન-લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મીનો તેમા ઘાત થતો નથી, તેથી તેનુ નામ "अमाघाय" अमाघात છે 'मा' શબ્દનો અર્થ લક્ષ્મી થાય છે-ધનરૂપ લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મી, એ રીતે તેના બે પ્રકાર પડે છે અહિંસાને એ બન્નેનુ સરક્ષણ થાય છે તે વાત પ્રત્યક્ષ છે (૫૩) તે અહિંસા પવિત્ર વસ્તુઓ કરતા પણ વધારે પવિત્ર છે, તેથી તેનુ નામ "चोक्खा" चोक्षा છે (૫૪) તેનાથી આત્મા ઉપર જામેલો અનાદિકાળનો મેલ-વિભાવ પરિણતિ-દૂર થઈ જાય છે, તેથી આત્મા પોતાના નિર્મળ સ્વરૂપમા મગ્ન થઈ જાય છે તે કારણે

'सुई' शुचि=भावशौचहेतुत्वात् ५६, 'पूया' पूजा=भावार्चना-प्राण्युपमर्दनरहितत्वात् ५७ 'विमल' विमला-मिथ्यात्वाविरत्यादिमलवर्जितत्वात्, ५८, 'पभासा य' प्रभासा च-प्रकाशरूपा केवलज्ञानज्योतीरूपत्वात्, सर्वप्राणिनां सुखप्रकाशकत्वाच्च ५९, 'निम्मलतरा' निर्मलतरा-सकलकर्ममलवर्जितत्वात् ६०, 'त्ति एवमादीणि' इत्येवमादीनि 'नियगुणनिम्मियाइं' निजगुणनिर्मितानि=गुणलक्षितानि 'पज्जवनामाणि' पर्यायनामानि=तत्तद्धर्माश्रिताभिधानानि, 'हुंति' भवन्ति 'अहिंसाए भगवईए' अहिंसाया भगवत्याः ॥ सू०२ ॥

जाती है-इसलिये इस आत्मा की निर्मलता का कारण होने से इस अहिंसा का नाम (पवित्ता) पवित्र है ५५। भाव शुचिता का कारण होने से इसका नाम (सुई) शुचि है ५६। इस अहिंसा में प्राणियों के प्राणों का उपमर्दन नहीं होता है अतः यह भावपूजारूप होने से इसका नाम (पूया) पूजा-भावपूजा है ॥ ५७ इसकी जो आराधना करते हैं वे मिथ्यात्व अविरति आदि मलों से वर्जित हो जाते हैं इसलिये इसका नाम (विमल) विमला है ५८। यह अहिंसा केवलज्ञानरूप ज्योति स्वरूप होने से (पभासा य) एक प्रकाशरूपा है। इसलिये इसका नाम प्रभास है ५९। इसकी प्रादुर्भूत होते ही आत्मा से सकल कर्मों का अभाव हो जाता है अतः इसका नाम (निम्मलतरा) निर्मलतरा है ६०। (एवमादीणि नियगुणनिम्मियाइं पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवईए) इस प्रकार इस अहिंसा भगवती के ये साठ नाम गुणानुसार हैं। ये नाम इस अहिंसा भगवती के पर्यायवाची-तत्तद्धर्म की अपेक्षा को लेकर-शब्द हैं ॥ सू० २ ॥

આત્માની નિર્મળતા માટે કારણભૂત હોવાથી તે અહિંસાનુ નામ "पवित्ता" પવિત્રતા છે (૫૫) ભાવ શુચિતાના કારણરૂપ હોવાથી તેનુ "सुई" शुचि છે (૫૬) આ અહિંસામા પ્રાણીઓના પ્રાણોનુ ઉપમર્દન થતુ નથી તેથી તે ભાવપૂજારૂપ હોવાથી તેનુ નામ "पूया" પૂજા ભાવપૂજા છે (૫૭) જે તેની આરાધના કરે છે તેઓ મિથ્યાત્વ, અવિરતિ આદિ મળોથી રહિત થઇ જાય છે, તેથી તેનુ નામ "विमल" विमला છે (૫૮) આ અહિંસા કેવળ જ્ઞાન રૂપ જ્યોતિસ્વરૂપ હોવાથી "प्रभासाय" એક પ્રકાશરૂપ છે, તેથી તેનુ નામ प्रभास છે, (૫૯) તેનો પ્રાદુર્ભાવ થતા જ આત્મામાથી ધીરે ધીરે સઘળા કર્મોનો અભાવ થઇ જાય છે, તેથી તેનુ નામ "निम्मलतरा" निर्मलतरा છે (૬૦) 'एवमादीणि नियगुणनिम्मयाइ पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवईए" આ પ્રમાણે આ અહિંસા ભગવતીના ગુણ પ્રમાણે સાઠ નામ છે તે નામો આ અહિંસા ભગવતીના પર્યાયવાચી-તે તે ધર્મની અપેક્ષાએ શબ્દ છે ॥સૂ.૨॥

समति अहिंसामाहात्म्यमाह—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा, जा सा भीयाण पिव सरणं पक्खीण पिव गयणं, तिसियाण पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं, समुद्दमज्झेव पोयवहणं, चउप्पयाण व आसमपय, दुहट्टियाणं च ओसहिबलं, अडवीमज्झे व सत्थगमण, एत्तो विसिट्ठतरिया अहिंसा जा सा पुढवीजल अगणि मारुयवणस्सइ - वीय — हरिय — जलचर— थलचर—खहयर तस—थावर—सव्वभूयखेमकरी ॥ सू० ३ ॥

टीका—' एसा भगवई ' इत्यादि—

एषा=जिनशासनप्रसिद्धा-अहिंसा भगवती या सा ' भीयाण पिव सरण ' भीतानामिव शरणम्=भय भीताना प्राणिना त्राणाथ गृहमिवास्ति, ' पक्खीण-पिव गयण ' पक्षिणामिव गगनम्=पक्षिणा गगनमिव, यथा पक्षिणा गमने गगन-माधारो भवति, तथैव सर्वधर्माणामियमहिंसाऽऽधार । ' तिसियाण पिव सलिलम्=

अब सूत्रकार इस अहिंसा के माहात्म्य को प्रदर्शित करते है— ' एसा भगवई ' इत्यादि० ।

टीकार्थ-(एसा) जिनशासन मे प्रसिद्ध यह (अहिंसा भगवई) अहिंसा भगवती (जा सा) जो वह अहिंसा (भीयाण पिव सरण) भयभीत हुए प्राणियों की रक्षा करने के लिये घर जैसी है । (पक्खीण पिव गगण) तथा जिस प्रकार पक्षियो को गमन करने मे आधारभूत आकाश होता है उसी तरह समस्त धर्मो की आधारभूत यह अहिंसा ही है । (तिसियाण पिव सलिल) जिस प्रकार तृषित व्यक्तियों की

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનુ મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—" एसा भगवई " ઇત્યાદિ

" एसा " જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે " अहिंसा भगवई " અહિંસા ભગવતી, " जा सा " જે " भियाण पिव सरण " ભયભીત બનેલ પ્રાણીઓની રક્ષા કરવાને માટે ઘર સમાન છે, " पक्खीण पिव गगण " તથા જેમ પક્ષીઓને ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, " तिमियाण पिव सलिल " જેમ તર

तृपितामिव सलिलम्=जलम्, प्राणरक्षकत्वात्, 'खुहियाण पिव असण' क्षुधि
नामिवाशनम्=क्षुधार्तप्राणिना कृतेऽशन भोजनमिव, अन्नप्राणाः इति वचनात्
तथा-' समुद्दमज्झे व पोयवहण ' समुद्रमध्ये इव पोतवहनम्-यथा समुद्रमध्ये न
प्राणिना त्राणाय भवति, तथैव ससारसमुद्रमध्ये इयमहिंसा प्राणिना त्राण
पोतायते इति भावः। तथा-'चउप्पयाण च आसमपय ' चतुष्पदानां च आश्र
पदम्-यथा चतुष्पदप्राणिना कृते गोष्ठ विश्रामस्थान तथैवाहिंसापि सर्वप्राणि

प्राणरक्षा का साधनभूत जल होता है उसी प्रकार यह अहिंसा भ
प्राणियों के प्राणों की रक्षा का एक साधन है। (खुहियाण पिव असण
"अन्न ही प्राण है" इस उक्ति के अनुसार जिस प्रकार भूख
पीडित हुए प्राणियों के लिये भोजन एक मात्र आधारभूत होता
उसी प्रकार यह अहिंसा भी जीवों की रक्षा करने का एक सर्वोत्त
साधन है। (समुद्दमज्झेव पोयवहण) समुद्र के बीज में नौका जि
प्रकार प्राणियों की रक्षा करने वाली होती है उसी प्रकार ससार समु
के बीच में पतित हुए प्राणियों की रक्षा करने के लिये यह अहिंस
ही एक सर्वोत्तम द्रढ नौका जेसी है। (चउप्पयाण च आसमपय
चतुष्पद-जानवरों के लिये जिस प्रकार विश्रामस्थल गोष्ठ होता है उस
प्रकार यह भगवती अहिंसा भी सर्वप्राणियों के लिये सर्वोत्तम विश्रामस्थ
है। (दुहट्टियाण च ओसहिवल) रोगग्रस्त व्यक्तियों को जिस प्रका
ओपधि का सहारा होता है उसी प्रकार कर्मरोगग्रस्त भव्य जीवों

ओनी प्राणरक्षा माटे पाणी साधनरूप बने छे, ए ज प्रमाणे आ अहिंसा
पण प्राणीओना प्राण बचाववानु एक साधन छे "खुहियाण पिव असण"
"अन्न ज प्राण छे" ते कथन प्रमाणे जेम क्षुधाथी पीडाता प्राणीओ माटे
भोजन ज एक मात्र आधार होय छे ए ज प्रमाणे आ अहिंसा पण
जीवोनु रक्षण करवानु एक सर्वोत्तम साधन छे "समुद्दमज्जेव पोय वहण"
समुद्रनी वच्चे जेम नौका प्राणीओनु रक्षण करे छे तेम ससार सागरमा
डूबेला प्राणीओनी रक्षा करवाने माटे आ अहिंसा ज मजबूत नौका जेवी
छे "चउप्पयाण च आसमपय" चतुष्पद-जानवरोने माटे जेम गोष्ठ (वाडो)
विश्रामस्थान होय छे ए ज प्रमाणे आ भगवती अहिंसा पण समस्त
प्राणीओने माटे सर्वोत्तम विश्रामस्थान छे "दुहट्टियाण च ओसहि वल"
रोगीने जेम औषधिनो सहारो होय छे तेम कर्मरोगग्रस्त भव्य जीवोने

संप्रति अहिंसामाहात्म्यमाह—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा, जा सा भीयाणं पिव सरणं पक्खीणं पिव गयण, तिसियाणं पिव सलिल, खुहियाणं पिव असणं, समुद्दमज्झेव पोयवहण, चउप्पयाण च आसमपय, दुहट्टियाण च ओसहिवल, अडवीमज्झे च सत्थगमण, एत्तो विसिट्ठतरिया अहिंसा जा सा पुढवीजल अगणि मारुयवणस्सइ – वीय – हरिय – जलचर– थलचर–खहयर तस–थावर–सव्वभूयखेमकरी ॥ सू० ३ ॥

टीका—'एसा भगवई' इत्यादि—

एषा=जिनशासनप्रसिद्धा–अहिंसा भगवती या सा 'भीयाण पिव सरण' भीतानामिव शरणम्=भय भीताना प्राणिना त्राणाय गृहमिवास्ति, 'पक्खीण–पिव गयण' पक्षिणामिव गगनम्=पक्षिणा गगनमिव, यथा पक्षिणा गमने गगन–माधारो भवति, तथैव सर्वधर्माणामियमहिंसाऽऽधार। 'तिसियाण पिव सलिलम्=

अब सूत्रकार इस अहिंसा के माहात्म्य को प्रदर्शित करते है—'एसा भगवई' इत्यादि०।

टीकार्थ–(एसा) जिनशासन मे प्रसिद्ध यह (अहिंसा भगवई) अहिंसा भगवती (जा सा) जो वह अहिंसा (भीयाण पिव सरण) भयभीत हुए प्राणियों की रक्षा करने के लिये घर जैसी है। (पक्खीण पिव गगण) तथा जिस प्रकार पक्षियो को गमन करने मे आधारभूत आकाश होता है उसी तरह समस्त धर्मो की आधारभूत यह अहिंसा ही है। (तिसियाण पिव सलिल) जिस प्रकार तृषित व्यक्तियों की

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનુ મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—"एसा भगवई" ઇત્યાદિ

"एसा" જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે "अहिंसा भगवई" અહિંસા ભગવતી, "जा सा" જે "भियाण पिव सरण" ભયભીત બનેલ પ્રાણીઓની રક્ષા કર વાને માટે ઘર સમાન છે, "पक्खीण पिव गगण" તથા જેમ પક્ષીઓને ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, "तिसियाण पिव सलिल" જેમ તર

अथ ये महापुरुषैरियमहिंसोपलब्धा सेविता च तानाह—' एसा भगवई ' इत्यादि—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा जा सा अपरिमिय नाण दसणधरेहि सीलगुण–विणय–तव–संजम नायगेहि तित्थकरेहि सव्वजगजीववच्छलेहिं तिलोगमहिएहि जिणचदेहि सुट्ठु दिट्ठा, ओहि जिणेहि विण्णाया, उज्जुमईहि विदिट्ठा विउलमईहि विदिता, पुव्वधरेहि अधीया, वेउव्वीहि पइण्णा, आभिणिबोहियनाणीहि सुयनाणीहि मणपज्जवनाणीहि केवलणाणीहि आमोसहिपत्तेहि खेलोसहिपत्तेहि विप्पोसहिपत्तेहि जल्लोसहिपत्तेहि सव्वोसहिपत्तेहि वीयबुद्धिएहि कोट्ठबुद्धीहि पयाणुसारीहि संभिण्णसोएहि सुयधरेहि मणबलिएहि वयबलिएहि कायबलिएहि नाणबलिएहि दंसणबलिएहि चरित्तबलिएहि खीरासवेहि महुआसवेहि सप्पियासवेहि अखीण महाणसिएहि चारणेहि विज्जाहरेहि चउत्थभत्तिएहि छट्ठभत्तिएहि दसमभत्तिएहि एव दुवालस-चउदससोलस--अद्धमास- मास -दोमास तिमास-चउमास-पचमास छम्मासभत्तिएहि उक्खित्तचरएहि एवं निक्खित्तचरएहि अतचरएहि पतचरएहि लूहचरएहि समुदाणि-

होती है। यदि यथार्थरूप मे जीवो की रक्षा करने वाली–अभयप्रदान करने वाली यदि कोई सर्वोत्तम वस्तु है तो वह एक अहिंसा ही है ॥सू० ३॥

अब सूत्रकार जिन महा पुरुषो ने इस भगवती अहिंसा की प्राप्ति

યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા કરનારી–અભયપ્રદાન કરનારી કોઇ પણ સર્વોત્તમ વસ્તુ હોય તો તે એક માત્ર અહિંસા જ છે ॥ સૂ-૩ ॥

હવે સૂત્રકાર જે મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિંસાની પ્રાપ્તિ તથા સેવા

विश्रामस्थानम्। तथा-' दुहट्ठियाण च ओसहिबलं ' दुःखस्थिताना च औषधिबलम्-रोगग्रस्तानां प्राणिनां कृते यथौषधम्, तथैव धर्मरोगग्रस्तानां कृतेऽहिंसौषधम्, तथा-' अडवीमज्झे च सत्थगमणं' अटवीमध्ये च सार्थगमनम्-यथा-अटवीमध्ये सार्थेन सह गमनं सुखकरं भवति, तथैव मोक्षमार्गमस्थितानामहिंसा। किमधिकम्? 'एत्तो' इतः-एभ्यः पूर्वोक्तेभ्योऽपि अहिंसा ' विसिट्ठतरिया ' विशिष्टतरिका-विशिष्टतरा। 'जा सा' या साऽहिंसा 'पुढवी-जल अगणि-मारुय वणस्सइ-बीय-हरिय-जलचर-थलचर-खहयर-तस-थावर-सव्वभूय-खेमकरी ' पृथिवी-जलाग्नि मारुत-वनस्पति-बीज-हरित-जलचर-स्थलचर खेचर त्रस स्थावरसर्वभूतक्षेमकरी। पृथिव्यादिषट्कायजीवानां कल्याणकारी वरीवर्ति दयाभगवती ॥सू ४॥

अहिंसा ही एक परम औषधीरूप है। (अडवीमज्झे वसत्थगमणं) जंगल के बीच में जिस प्रकार सार्थ-समुदाय-के साथ चलना सुखप्रद होता है उसी प्रकार मोक्षमार्ग में प्रस्थित हुए मनुष्य को यह अहिंसा है अर्थात्-सार्थ का काम देती है। और अधिक क्या कहें- (एत्तो) इस पूर्वोक्त उपमानों से भी (विसिट्ठतरिया) अहिंसा विशिष्टतर है। क्यों की (जा सा अहिंसा) यह जो अहिंसा है वह (पुढवी जल-अगणि-मारुय-वणस्सइ-बीय-हरिय-जलचर थलचर खहयर तस थावर सव्वभूयखेमकरी) पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, बीज, हरित, जलचर, थलचर, खेचर, त्रस और स्थावर इन सब भूतों की-पृथिव्यादि छह् काय के जीवों की-कल्याणकरी-रक्षा करने वाली है।

भावार्थ-इस अहिंसा भगवती के समक्ष संसार के सभी विशिष्ट जड पदार्थ तुच्छ हे। क्यों कि उनसे जीवो की यथार्थरूप में रक्षा नहीं

માટે અહિંસા જ એક મોટા ઔષધરૂપ છે " अडवीमज्झे वसत्थ गमणं " જેમ જંગલની વચ્ચે સાર્થ-સમુદાયની સાથે જવાનું સુખકારી હોય છે તેજ પ્રમાણે મોક્ષ માર્ગે પ્રયાણ કરતા મનુષ્યોને માટે અહિંસા સાર્થની ગરજ સારે છે વધારે શું કહું! ' एत्तो " પૂર્વ કથિત ઉપમાનો કરતા પણ ' विसिट्ठतरिया" અહિંસા અધિકતર છે કારણ કે " जा सा अहिंसा " આ જે અહિંસા છે તે " पुढवीजलअगणि-मारुय-वणस्सइ-बीय -हरिय-जलयर- खहयर - तस - थावर सव्वभूय- खेमकरी ' પૃથિવી, જલ, અગ્નિ વાયુ વનસ્પતિ, બીજ, હરિત, જલચર, થલચર, ખચર, ત્રસ, અને સ્થાવર તે બધા ભૂતોની પૃથિવ્યાદિ છ કાયના જીવોની કલ્યાણકારી-રક્ષા કરનારી છે

ભાવાર્થ—આ ભગવતી અહિંસાની આગળ સંસારના સઘળા વિશિષ્ટ જડ પદાર્થો તુચ્છ છે કારણ કે તેમનાથી યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા થતી નથી જો

अथ ये महापुरुषैरियमहिंसोपलब्धा सेविता च तानाह—' एसा भगवई ' इत्यादि—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा जा सा अपरिमिय नाण दसणधरेहि सीलगुण–विणय–तव–सजम नायगेहिं तित्थकरेहि सव्वजगजीववच्छलेहि तिलोगमहिएहि जिणचदेहि सुट्ठु दिट्ठा, ओहि जिणेहि विण्णाया, उज्जुमईहि विदिट्ठा विउलमईहि विदिता, पुव्वधरेहि अधीया, वेउव्वीहि पइण्णा, आभिणिबोहियनाणीहि सुयनाणीहि मणपज्जवनाणीहि केवलणाणीहि आमोसहिपत्तेहि खेलोसहिपत्तेहि विप्पोसहिपत्तेहि जल्लोसहिपत्तेहि सव्वोसहिपत्तेहि बीयबुद्धिएहि कोट्ठबुद्धीहि पयाणुसारीहि सभिण्णसोएहि सुयधरेहि मणबलिएहि वयबलिएहि कायबलिएहि नाणबलिएहि दंसणबलिएहि चरित्तबलिएहि खीरासवेहि महुआसवेहि सप्पियासवेहि अखीण महाणसिएहि चारणेहि विज्जाहरेहि चउत्थभत्तिएहि छट्ठभत्तिएहि दसमभत्तिएहि एव दुवालस-चउदससोलस--अद्धमास- मास -दोमास तिमास-चउमास-पचमास छम्मासभत्तिएहि उक्खित्तचरएहि एवं निक्खित्तचरएहि अतचरएहि पतचरएहि लूहचरएहि समुदाणि-

होती है। यदि यथार्थरूप मे जीवो की रक्षा करने वाली–अभयप्रदान करने वाली यदि कोई सर्वोत्तम वस्तु है तो वह एक अहिंसा ही है ॥सू०३॥

अब सूत्रकार जिन महा पुरुषो ने इस भगवती अहिंसा की प्राप्ति

યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા કરનારી–અભયપ્રદાન કરનારી કોઇ પણ સર્વોત્તમ વસ્તુ હોય તો તે એક માત્ર અહિંસા જ છે ॥ સૂ–૩ ॥

હવે સૂત્રકાર જે મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિંસાની પ્રાપ્તિ તથા સેવા

चरएहि अण्णगिलाइएहि मोणचरएहि संसट्ठकप्पिएहि तज्जायसंसट्ठकप्पिएहि उवनिहिएहिं सुद्धेसणिएहिं संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहि अदिट्ठलाभिएहिं आयंबिलिएहि पुट्ठलाभिएहि आयंबिलिएहिं पुरिमड्ढिएहि एक्कासणिएहिं निव्विइएहि भिन्नपिंडवाइएहिं परिमियपिंडवाइएहि अंतहारेहि पंताहारेहि अरसाहारेहि विरसाहारेहि लूहाहारेहि तुच्छाहारेहि अंतजीविहि पंतजीविएहि लूहजीविहि उवसंतजीविएहि पसंतजीविहि विवित्तजीविहिं अखीरमहुसप्पिएहिं अमज्जमंसासिएहिं ठाणाइएहिं पडिमट्ठाइएहिं ठाणुक्कडिएहिं वीरासणिएहि णेसज्जिएहिं डंडायइएहिं लगंडसाईहि एगपासिएहिं आयावएहि अवाउडएहि अणिट्ठुयएहि अकंडुयएहि धुयकेसमंसुलोमनहेहि सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहि समणुचिन्ना, सुयधरविदियत्थकायबुद्धिणो धीरमइबुद्धिणो य जे ते आसीविसउग्गतेयकप्पा निच्छयववसाय पज्जत्तकयमइया णिच्च सज्झायज्झाणा अणुबद्धधम्मज्झाणपंचमहव्वयचरित्तजुत्ता, समिया समिईसु, समियपावा, छव्विह जगवच्छला, निच्चमप्पमत्ता, एएहि अन्नेहि य जा सा अणुपालिया भगवई ॥ सू० ४ ॥

टीका—' एसा भगवई ' इत्यादि—

' एसा भगवई अहिंसा ' एषा भगवती अहिंसा=एषा पूर्वोक्ता भगवती=पूजनीया सर्वज्ञप्ररूपिताऽहिंसैव सम्यगहिंसाऽस्ति, न तु सर्वज्ञेतरकल्पिता । 'जा'

की है, तथा सेवा की है उन महापुरुषों को प्रकट करते है—' एसा भगवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एसा भगवई अहिंसा) यह पूर्वोक्त भगवति अहिंसा सर्वज्ञ द्वारा प्ररुपित अहिंसा-ही सच्ची अहिंसाहै, सर्वज्ञ से भिन्न इतर

કરી છે તે મહાપુરુષોના નામ પ્રગટ કરે છે-" एसा भगवई " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-' एसा भगवई अहिंसा" આ પૂર્વોક્ત ભગવતી અહિંસા-સર્વજ્ઞ દ્વારા પ્રરૂપિત અહિંસા જ સાચી અહિંસા છે, સર્વજ્ઞ સિવાયના બીજા છદ્મસ્થ

या=जिनसिद्धान्तोक्ता अहिंसा 'सा' सा ' अपरिमियनाणदसणधरेहिं ' अपरिमितज्ञानदर्शनधारकैः ' सीलगुणविणयतवसजमनायगेहिं ,' शीलगुणविनयतपः सयमनायकैः, शील=चित्तसमाधान तदेवगुणस्त, तथा विनयतप सयमाश्च स्वस्य परेषा च नयन्ति=प्रापयन्ति ये ते तैस्तथोक्तैः ' तित्थकरेहिं ' तीर्थङ्करैः= चतुर्विधसघनायकैः ' सव्वजगजीववच्छलेहिं ' सर्वजगज्जीववत्सलैः–सकलप्राणि कारुण्योपेतैः,=योगक्षेमकारित्वात् , ' तिलोगमहिएहिं ' त्रिलोकमहितैः=त्रिलोकपूजितैः=तीर्थंकरनामकर्मणो जगत्पूजनीयत्वात्, ' जिणचदेहिं ' जिनचन्द्रैः= जिनाना सामान्यजिनाना मध्ये चन्द्रा इव तैः, कारुणिकनिशाकरैरित्यर्थं , 'सुट्ठुदिट्ठा' सुष्ठु दृष्टा=केवलालोकैः कारणतः स्वरूपतः कार्यतश्च सम्यग विनिश्चिता,

---

छद्मस्थ प्राणियों द्वारा कथित अहिंसा सची अहिंसा नहीं है– इस तरह (जा) जिन सिद्धान्तोक्त जो अहिंसा है (सा) वह (अपरिमियनाणदसणधरेहिं) अपरिमित–अनत–ज्ञान और दर्शन के धारण करने वाले (सीलगुणविणयतवसजमनायगेहिं) शील रूपगुण विनय एव तप, इनका स्वय आचरण करने वाले और परको आचरण कराने वाले (तित्थकरेहिं) तीर्थंकर–चतुर्विध सघ का नेतृत्व करनेवाले (सव्वजगजीववच्छलेहिं) समस्त जगत के जीवों के प्रतिवात्सल्यभाव रखने वाले और (तिलोगमहिएहिं) तीर्थंकर नामकर्म जगत्पूज्य होने के कारण तीनों लोको द्वारा पूजे जाने वाले, ऐसे (जिणचदेहिं) जिन चद्रोने सामान्य जिनो की बीच में चद्रमा के तुल्य तीर्थंकर महाप्रभुओ ने यह अहिंसा भगवती को पूर्वोक्त प्रकार से (सुट्ठुदिट्ठा) अपने केवलालोक से कारण स्वरूप को, एव कार्य की अपेक्षा को लेकर अच्छी

જીવો દ્વારા કથિત અહિંસા સાચી અહિંસા નથી આ રીતે " जा " જિન-સિદ્ધાંતોક્ત જે અહિંસા છે " सा " તે " अपरिमियनाणदसणधरेहिं " અપરિમિત–અનંત–જ્ઞાન અને દર્શનના ધારક " सीलगुणविणयतवसजमनायगेहिं " શીલરૂપગુણ, વિનય અને તપનું જાતે આચરણ કરનારા અને બીજાને તેનું આચરણ કરાવનારા " तित्थकरेहिं " તીર્થંકર–ચતુર્વિધ સંઘનું નેતૃત્વ કરનારા " सव्वजगजीववच्छलेहिं " જગતના સમસ્ત જીવો પ્રત્યે વાત્સલ્યભાવ રાખનારા અને " तिलोगमहिएहिं " તીર્થંકર નામકર્મ જગત્પૂજ્ય હોવાને કારણે ત્રણે લોક દ્વારા પૂજનારા, એવા ' जिणचदेहिं " જિનચંદ્રોએ–સામાન્ય જિનોની અંદર ચંદ્રમા સમાન તીર્થંકર મહાપ્રભુઓએ આ ભગવતી અહિંસાને પૂર્વોક્ત રીતે " सुट्ठु दिट्ठा " પોતાના કેવલાલોકથી કારણ સ્વરૂપે, અને કાર્યની અપેક્ષાએ સારી રીતે દેખી છે–નિશ્ચિત કરી છે તેમણે તેના બાહ્ય અને અભ્ય

तत्र गुरूपदेशः, कर्मक्षयोपशमादि बाह्याभ्यन्तर कारणमस्याः प्रमत्तयोगात्प्राणव्यप रोपणलक्षणहिंसाप्रतिपक्षरूप स्वरूपम्, स्वर्गापवर्गप्राप्तिलक्षण च कार्यम्, इति। तथा-'ओहिजिणेहिं' अवधिजिनैः=विशिष्टावधिज्ञानिभिः 'विण्णाया' विज्ञाता= भेदप्रभेदैर्विदिता, तथा 'उज्जुमईहिंवि' ऋजुमतिभिरपि=मनन मतिः-संवेदन मित्यर्थः, ऋज्वीसामान्यग्राहिणी मतिर्बुद्धिर्येषा ते ऋजुमतयः=अर्धतृतीयाङ्गुल न्यूनमनुष्यक्षेत्रवर्ति संज्ञि पञ्चेन्द्रियमनोद्रव्यप्रत्यक्षीकरणहेतुमनःपर्यायज्ञानभेद वन्तस्तैरपि, 'दिट्ठा' दृष्टा, तथा-'विउलमईहिं' विपुलमतिभिः=पर्यायशतोपेता चिन्तनीय घटादिवस्तुविशेषग्राहिणी मति र्बुद्धि र्येषा ते विपुलमतयस्तैः विदिता=

तरह देखी है-निश्चित की है। उन्हों ने इसके बाह्य और आभ्यन्तर कारण गुरुपदेश, कर्मक्षयोपशम आदि कहे हैं। इसका स्वरूप-प्रमत्तयोग से जो प्राणव्यपरोपणरूप हिंसा का स्वरूप है उससे विपरीत स्वरूप प्रकट किया है। तथा स्वर्ग और अपवर्ग की प्राप्ति होना इसका कार्य कहा है। (ओहिजिणेहिं विण्णाया) विशिष्ट अवधि ज्ञानियों द्वारा यह अहिंसा भगवती भेद प्रभेदों सहित विदित हुई है। तथा (उज्जुमईहिं विदिट्ठा) ऋजुमति मन. पर्यय ज्ञानियो द्वारा यह प्रत्यक्ष रूप मे देखी गई है। जो विषय को सामान्यरूप से जानता है वह ऋजुमतिमन. पर्यय है। यहा पर ऐसी आशका नहीं करना चाहिये कि "जब ऋजुमति सामान्यग्राही है तब तो वह दर्शन ही हुआ उसे ज्ञान क्यों कहा क्यो कि यह सामान्यग्राही है" इसका तात्पर्य इतना ही है कि वह विशेषोको जानता है पर विपुलमति जितने विशेषों को नहीं जानता। अर्धतृतीयअङ्गुल न्यून-अर्थात् ढाई अंगुल कम मनुष्य क्षेत्र में रहे

ન્તર કારણ ગુરૂપદેશ, કર્મક્ષયોપશમ આદિ બતાવેલ છે તેનુ સ્વરૂપ-પ્રમત્ત યોગથી જે પ્રાણ હરનાર હિંસાનુ સ્વરૂપ છે તેના કરતા ઉલટુ સ્વરૂપ પ્રગટ કરેલ છે તથા સ્વર્ગ અને અપવર્ગની પ્રાપ્તિ થવી તે તેનુ કાર્ય કહેલ છે "ओहिजिणेहिं विण्णाया" વિશિષ્ટ અવધિજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે ભગવતી અહિંસા ભેદ, પ્રભેદો સહિત સમજવામા આવેલ છે તથા "उज्जुमईहिं विदिट्ठा" ઋજુમતિ મન પર્યયજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે પ્રત્યક્ષ રૂપે જોવામા આવેલ છે જે વિષયને સામાન્ય રીતે જાણે છે તે ઋજુમતિ મન પર્યય છે અહીં એવી શકા ન કરવી જોઈએ કે "જો ઋજુમતિ સામાન્યગ્રાહી છે તો તે "દર્શન" જ ગણાય તેને જ્ઞાન કેમ કહ્યુ? કારણ કે તે સામાન્યગ્રાહી છે" તેનો ભાવાર્થ એટલો જ છે કે તે વિશેષોને જાણે છે પણ વિપુલમતિ જેટલા વિશેષોને જાણતો નથી "अर्धतृतीयअङ्गुलन्यून" એટલે કે અઢી આગળ

विशेषतो दृष्टा, एते उभयेऽपि मन पर्ययज्ञानिन.। तथा—' पुव्वधरेहिं ' पूर्वधरैः=उत्पादाग्रायणीयवीर्यादि चतुर्दश पूर्वधरै (अधीया) अधीता=श्रुतनिबद्धा पठिता, तथा ' वेउव्वीहिं ' वैकुर्विकैः=वैक्रियलब्धिधारिभि , 'पइण्णा' प्रतीर्णा= निस्तीर्णा—आजन्मपरिपालितेत्यर्थः, तथा–' आभिणिबोहियनाणीहिं ' आभि- निबोधिकज्ञानिभि', अभि=अर्थाभिमुख'–अविपर्ययरूपत्वात्, नि=नियतोऽसशय- रूपत्वात्, बोध'=सवेदनम्=अभिनिबोध', स एव आभिनिबोधिकम्, ज्ञायतेऽ- नेनेति ज्ञानम्, आभिनिबोधिक च तज्ज्ञानम्–आभिनिबोधिकज्ञानम्–इन्द्रिय नो- इन्द्रिय निमित्तो बोध इत्यर्थ , सोऽस्ति येषा तेस्तथोक्तैः, मतिज्ञानवद्भिरित्यर्थः,

हुए सज्ञी पचेन्द्रिय जीवों के मनोद्रव्यों को यह ऋजुमति साक्षात् जानता है। यह ज्ञान मनःपर्ययका भेद है। (विउलमईहिं विदिया) मनः पर्यय ज्ञानका दूसरा भेदविपुलमति है। इस विपुलमति मनः पर्य- यज्ञानवाला पदार्थो को ऋजुमति की अपेक्षा विशुद्धतर आदि रूप से जानता है। क्यों कि यह मति पर्यायज्ञानोपेत होती है, तथा चिन्तनीय घटादि वस्तुओं में सूक्ष्मतर आदि रूप से वर्तमानधर्मों को जानती है। उन ऐसे विपुलमति मन पर्यय ज्ञानियों द्वारा यह भगवती अहिंसा ऋजुमति की अपेक्षा अधिक और विशेषरूप से विदित–ज्ञात– दृष्ट हुई है। तथा (पुव्वधरेहिं अधीया) उत्पादपूर्व, अग्रायणीपूर्व, वीर्यप्रवाद आदि चतुर्दशपूर्व के धारी महात्माओं ने-श्रुतज्ञानियों ने– श्रुत में निबद्ध हुई इस अहिंसा भगवती को पढा है। (वेउव्वीहिं– वेइण्णा) वैक्रियलब्धिधारी मुनिजनों ने इसे आजन्म पाला है। (आभिणिबोहियनाणीहिं,सुयनाणीहिं,मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं)

ઓઠા મનુષ્યક્ષેત્રમા રહેલ સની પચેન્દ્રિય જીવોના મનોદ્રવ્યોને તે ઋજુમતિ સાક્ષાત જાણે છે મન પર્યયજ્ઞાનનો આ એક ભેદ છે " विउलमइहिं विदिआ" મન પર્યય જ્ઞાનનો બીજો ભેદ વિપુલમતિ છે આ વિપુલમતિ મન પર્યય જ્ઞાનવાળો પદાર્થોને ઋજુમતિના કરતા વધારે વિશુદ્ધ રૂપે જાણે છે કારણ કે મતિપર્યાય ગ્રાતોપેત હોય છે, તથા કલ્પનીય ઘટાદિ વસ્તુઓમા સૂક્ષ્મતર આદિ રૂપે વર્તમાન ધર્મોને જાણે છે એવા તે વિપુલમતિ મન પર્યયજ્ઞાનીઓ દ્વારા આ ભગવતી અહિંસા ઋજુમતિના કરતા અધિક અને વિશેષ રૂપે વિદિત –જ્ઞાત–દૃષ્ટ થઈ છે તથા " पुव्वधरेहिं अधीया " ઉત્પાદપૂર્વ, અગ્રાયણીપૂર્વ, વીર્યપ્રવાદ આદિ ચૌદ પૂર્વના ધારક મહાત્માઓએ-શ્રુતજ્ઞાનીઓએ–શ્રુતમા ગૂથાયેલ આ ભગવતી અહિંસાનુ અધ્યયન કર્યું છે, " वेउव्वीहिं वेइण्णा " વૈક્રિયલબ્ધિધારી મુનિજનોએ તેનુ આજન્મ પાલન કર્યું છે ' आभिणिबो- हियनाणीहिं सुयनाणीहिं, मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं ' ઇન્દ્રિય અને નોઇ

तथा-' सुयनाणीहिं ' श्रुतज्ञानिभिः=श्रुतम्-आचाराङ्गादिं, तद्वद्भिरित्यर्थः, तथा-' मणपज्जवनाणीहिं ' मनःपर्यवज्ञानिभिः-मनसो मन्यमानमनोद्रव्याणां पर्यवः=परिच्छेदो मनः-पर्यवः, स एव ज्ञानम्, मनःपर्यवज्ञानम्, तदस्ति येषां ते तथोक्तास्तैः, तथा-' केवलनाणीहिं ' केवलज्ञानिभिः=केवलमेकमसहायमनन्तं परिपूर्णं यद् ज्ञानं तत्केवलज्ञानं, तदस्यास्ति येषां ते तथोक्ताः, तथा-' आमोसहिपत्तेहिं ' आमर्शोषधिप्राप्तैः,-आमर्शः=शरीरसंस्पर्शः, स एवौषधिः-सर्वरोगापहारित्वात्-तपश्चरणप्रभावो लब्धिविशेषस्तां प्राप्ता ये ते तथोक्तास्तैः, तथा-' खेलोसहिपत्तेहिं ' श्लेष्मौषधिप्राप्तैः-श्लेष्मा एव औषधिर्भवति यत्र कर्यौ सा

इन्द्रिय और नो इन्द्रिय इनसे उत्पन्न जो ज्ञान होता है उसका नाम आभिनिबोधक ज्ञान है। ' अभि ' और ' नि ' ये दो उपसर्ग यह प्रकट करते हैं कि यह ज्ञान सन्मुख रखे हुए नियमित क्षेत्रवर्ती पदार्थ को ही जान सकता है। इस आभिनिबोधिक ज्ञानियों द्वारा मतिज्ञान-धारियों द्वारा, तथा आचाराग आदि श्रुत के जानने वालों द्वारा, तथा मनःपर्यवज्ञानियों द्वारा,-मनवाले-सज्ञि प्राणी-किसी भी वस्तु का चिन्तवन मनसे करते हैं। चिन्तवन के समय चिन्तनीय वस्तु के भेद के अनुसार चिन्तवनकार्य मे प्रवृत्तमन भिन्न २ आकृतियों को धारण करता रहता है वे आकृतिया ही मन की पर्यायें हैं, और उन मानसिक आकृतियों को साक्षात् जानने वाला ज्ञान मन पर्यव ज्ञान हैं, इस मनः पर्यव ज्ञान को धारण करने वाले मुनिजनों द्वारा, तथा केवल ज्ञानियों द्वारा-असहाय, एक, अनन्त, परिपूर्ण यह केवल शब्द का अर्थ है, ऐसा जो ज्ञान होता हैं वह केवल ज्ञान है, यह ज्ञान जिस आत्मा में होता है उसका नाम केवलज्ञानि है ऐसे केवल ज्ञानि आत्माओं द्वारा

न्द्रिय वडे उत्पन्न थयेल जे ज्ञान छे तेनु नाम आभिनिबोधक ज्ञान छे "अभि" अने "नि" ए बने उपसर्गो ए प्रगट करे छे के ते ज्ञान सन्मुख राखेल नियमित क्षेत्रवर्ती पदार्थने ज जाणी शके छे ते अभिनिबोधिक ज्ञानीओ द्वारा, मतिज्ञानधारीओ द्वारा तथा आचाराग आदि सूत्रोना जाणकार द्वारा तथा मन पर्यय ज्ञानीओ द्वारा-मनवाळा-सञ्ज्ञी प्राणी-कोइ पण वस्तुनु मन वडे चिन्तवन करे छे चिन्तवनने वखते जेनु चिन्तवन करवामा आवे छे ते वस्तुना भेद प्रमाणे चिन्तनकार्यमा प्रवृत्त थयेल मन जुदी जुदी आकृतियोने धारण करतु रहे छे, ते आकृतियो ज मननी पर्यायो छे अने ते मानसिक आकृतियोने प्रत्यक्ष जाणनार ज्ञान मन पर्यय ज्ञान छे, ते मन पर्यय ज्ञानने धारण करनार मुनिओ द्वारा, तथा केवळज्ञानीओ द्वारा-असहाय, एक अनन्त, परिपूर्ण ते "केवल" शब्दना अर्थो छे, एवु जे ज्ञान छे तेने केवळ

श्लेष्मौषधिस्ता प्राप्ता अधिगता ये ते तैस्तथोक्तैः, तथा 'जल्लोसहिपत्तेहिं' जल्लौषधिप्राप्तैः जल्ल'= शरीरसमुद्भवश्रममलः, स एवौषधिस्ता प्राप्ता ये तैस्तथोक्तैः, तथा 'विप्पोसहिपत्तेहिं' विप्रुडौषधिप्राप्तैः, विप्रुषः=मुखनिस्यन्दः, त एव औषधिर्विप्रुडौषधिस्ता प्राप्तास्तैस्तथोक्तैः, तथा-'सव्वोसहिपत्तेहिं' सर्वम्=कर्णवदननासिकानयनजिह्वासमुद्भव मल तदेव औषधिस्ताम्प्राप्तास्तैस्तथोक्तैः, तथा-'बीयबुद्धिएहिं' बीजबुद्धिकैः, बीजमिव विविधार्थाधिगमरूपमहातरुजननाद् बुद्धिर्येषा ते बीजबुद्धयस्तैस्तथोक्तैः, अय भावः-उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सदित्यादिवदर्थप्रधान पदमर्थपद, तेनैकेनापि बीजभूतेनाधिगतेन येऽन्य प्रभूतमप्यर्थमनुसरन्ति ते बीजबुद्धय उच्यन्ते, तथा 'कोट्ठबुद्धिएहिं' कोष्ठबुद्धिकैः-कोष्ठप्रक्षिप्तधान्यमिव येषा सूत्रार्थौ सुचिरमपि तिष्ठतस्ते कोष्ठ बुद्धयस्तैस्तथोक्तैः, 'पयाणुसारीहिं' पदानुसारिभिः=पदेन सूत्रावयवेन एकेनोपलब्धेन तदनुकूलानि पदशतान्यनुसरन्ति ये ते पदानुसारिणस्तैस्तथोक्तैः, तथा 'सभिन्नसोएहिं' सभिन्नश्रोतोभिः-सभिन्नानि समानार्थग्राहीणि श्रोतासि=इन्द्रियाणि येषा ते सभिन्नश्रोतसस्तैस्तथोक्तैः, 'ये एकतरेणापीन्द्रियेण सर्वेन्द्रिय गम्यान् विषयान् अवगच्छन्ति ते सभि

(समणुचिन्ना) सेवित हुई है, ऐसा सबन्ध आगे से जोड लेना चाहिये। तथा (आमोसहिपत्तेहिं, खेलोसहिपत्तेहिं, जल्लोसहिपत्तेहिं, विप्पोसहिपत्तेहिं, सव्वोसहिपत्तेहिं, बीयबुद्धिएहिं, कोट्ठबुद्धिएहिं, पयाणुसारीहिं, सभिन्नसोएहिं) आमर्शौषधिलब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, श्लेष्मौषधि लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, जल्लौषधि लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, विप्रुडौषधि लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, सर्वौषधि लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, तथा बीजबुद्धि लब्धि-बीज समान बुद्धि वाली लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, कोष्ठ बुद्धिलब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, पदानुसारी लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, सभिन्न-श्रोतस लब्धि जिन्हें प्राप्त हो चुकी है, उनके द्वारा सेवित हुई है, तथा

જ્ઞાની કહે છે એવા કેવળજ્ઞાની આત્માઓ દ્વારા "समणुचिन्ना" સેવાયેલી છે એવો સબંધ આગળના વાક્ય સાથે જોડી લેવાનો છે તથા 'आमोसहिपत्तेहिं, खेलोसहिपत्तेहिं, जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं, सव्वोसहिपत्तेहिं, बीयबुद्धिएहिं, कोट्ठबुद्धिएहिं, पयाणुसारीहिं, सभिन्नसोएहिं" આમર્શૌષધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે જલ્લૌષધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, વિપ્રુડૌષધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, તથા બીજબુદ્ધિ લબ્ધિ-બીજના સમાન બુદ્ધિવાળી લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે કોષ્ઠબુદ્ધિ લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે પદાનુસારી લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, સભિન્નશ્રોતસ લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ચુકી છે, તેઓ વડે (અહિંસા સેવાયેલ છે તથા

स्रोतस उच्यन्ते, तथा- 'सुयधरेहिं' श्रुतधरैः=आचाराङ्गादिसूत्रधारकैः, तथा- 'मणबलिएहिं' मनोबलिकैः-दृढमनस्कैः-नानाविधपरीषहोपसर्गनिपातेऽपि येषां मनो धर्मात्किञ्चिन्मात्रमपि न चलति तैरित्यर्थः, 'वयबलिएहिं' वचोबलिकैः= वाग्बलयुक्तैः दुर्वादिमार्थापदार्थनिराकरणसमर्थवाणीयुक्तैरित्यर्थः, 'कायबलि एहिं' कायबलिकैः=परीषहोपसर्गसहनसमर्थकायबलयुक्तैरित्यर्थः 'नाणबलिएहिं' ज्ञानबलिकैः-ज्ञानेन मत्यादिना बलिनस्तैस्तथोक्तैः-दृढज्ञानयुक्तैरित्यर्थः, 'दंसणबलिएहिं' दर्शनबलिकैः-दर्शन-निःशङ्कितादितत्त्वश्रद्धानरूपं, तेन बलवन्तस्तैस्तथोक्तैः, 'चरित्तबलिएहिं' चारित्रबलिकैः, चारित्र=षट्कायसंयम, तद्रूपं यद्बलम्, तद्वद्भिरित्यर्थः, तथा 'खीरासवेहिं' क्षीरास्रवैः=क्षीरास्रवलब्धिधरैः, येषां वचनमाकर्ण्यमानं मनः शरीरसुखोत्पादनाय प्रभवति ते क्षीरास्रवा उच्यन्ते, तथा 'महुआसवेहिं' मध्वास्रवैः=शर्करायपेक्षयापि मधुरं द्रव्यं मधु 'शहद' इति भाषाप्रसिद्धं, तदिव वचनम् आस्रवन्ति=निस्सरयन्ति ये ते मध्वास्रवास्तैस्तथोक्तैः, तथा 'सप्पिआसवेहिं' सर्पिरास्रवैः=सर्पिः=अत्यन्तसुरभियुक्तं स्नेहयुक्तं च घृतमिव वचनमास्रवन्ति=निस्सारयन्ति ये सर्पिरास्रवास्तैस्तथोक्तैः, तथा 'अक्खीणमहाणसिएहिं' अक्षीणमहानसिकैः=महानसम्=अन्नपाकस्थानं, तदाश्रिततया तद्गतमन्नमपि महानसमुच्यते अक्षीणं महानसं येषां ते अक्षीणमहानसिकास्तैस्तथोक्तैः, येषामसाधारणान्तरायक्षयोपशमादल्पमात्रमपि पात्रपतितमन्नं गौतमादीनामिव लक्षसंख्यकेभ्योऽपि दीयमानं

(सुयधरेहिं) जो आचरांग आदि श्रुत के धारक हैं उनके द्वारा सेवित हुई है तथा (मणबलिएहिं, वयबलिएहिं, कायबलिएहिं) जो मनबल से युक्त हैं, वाग्बल से युक्त हैं, कायबल से युक्त हैं उनके द्वारा सेवित हुई है। तथा (नाणबलिएहिं, दसणबलिएहिं चरित्तबलिएहिं) मत्यादिक ज्ञान से जो बलिष्ठ हैं, दर्शनबलिक हैं, चारित्रबलिक हैं उनके द्वारा सेवित हुई है, तथा (खीरासवेहिं, महुआसवेहिं, सप्पियासवेहिं, अखीणमहाणसिएहिं) क्षीरास्रवलब्धिधारी हैं, मध्वास्रवलब्धिधारी हैं अक्षीणमहानस ऋद्धिधारी हैं, उनके द्वारा सेवित हुई हैं, तथा (चार-

---

"सुयधरेहिं" આચારાંગ આદિ સૂત્રના જેઓ ધારક છે તેમના દ્વારા તે સેવાયેલ છે, તથા "मणबलिएहिं, वयबलिएहिं, कायबलिएहिं" જે મનોબળવાળા છે, વાગ્બળ વાળા છે, અને કાયબળવાળા છે તેમના દ્વારા તે સેવાયેલ છે, તથા "नाणबलिएहिं, दसणबलिएहिं, चरितबलिएहिं" મત્યાદિક જ્ઞાન વડે જે બલિષ્ઠ છે, જે દર્શનબળયુક્ત તથા ચારિત્રબળયુક્ત છે તેમના વડે તે સેવાયેલ છે, તથા "खीरासवेहिं, महुआसवेहिं, सप्पियासवेहिं, अखीणमहाणसिएहिं" ક્ષીરાસ્રવ લબ્ધિધારી, મધ્વાસ્રવલબ્ધિધારી, સર્પિરાસ્રવલબ્ધિધારી અક્ષીણમહાનસઋદ્ધિ ધારી દ્વારા જે સેવાયેલ છે, તથા 'चारणेहिं विज्जाहरेहिं" ચરણઋદ્ધિ ધારી

स्वयमेवाभुक्त न क्षीयते ते अक्षीणमहानसा उच्यन्ते । तथा 'चारणेहिं' चारणैः= चरण-गमन तद्विद्यते येषां ते चारणा' चरणमिह विशिष्टमाकाशगमनागमन- गृह्यते, ते द्विविधा. विद्याचारणा जङ्घाचारणाश्च, तत्र-विद्याबलेन समुत्पन्नाकाश गमनागमनलब्धिमन्तो विद्याचारणा । इय लब्धिर्निरन्तरषष्ठषष्ठतपश्चरण कर्तुर्जायते। तथा ये मुनयश्चारित्रतपोविशेषप्रभावेण जङ्घोपरि हस्तस्थापनमात्रेण गगनगम- नागमनलब्धिसपन्ना भवन्ति ते जङ्घाचारणा उच्यन्ते। इय लब्धिर्निरन्तराष्टमाष्ट- मतपश्चरणकर्तुर्जायते। तत्र-विद्याचारणा जम्बूद्वीपापेक्षयाऽष्टम नन्दीश्वरनाम- द्वीप जङ्घाचारणाश्च त्रयोदश रुचकवरद्वीप गन्तु समर्थाः । विद्याचारणा प्रथमो- त्पातेन मानुषोत्तर पर्वत गच्छन्ति, द्वितीयेनोत्पातेन नन्दीश्वरम्, प्रतिनिवर्तमान एकेनैवोत्पातेन स्वस्थानमागच्छन्ति । तथा-मेरु गच्छन्तः प्रथमेनोत्पातेन नन्दन- वन गच्छन्ति, द्वितीयेनोत्पातेन पण्डकवनम्, ततः प्रतिनिवर्तमाना एकेनोत्पातेन स्वस्थानमागच्छन्ति । जङ्घाचारणा हि एकेनोत्पातेन जम्बूद्वीपापेक्षया त्रयोदश- रुचकवरद्वीप गच्छन्ति। प्रतिनिवर्तमाना एकेनोत्पादेन नन्दीश्वरमायान्ति द्विती येन स्वस्थानम्। यदि पुनर्मेरुशिखर जिगमिषवस्तदा प्रथमेनोत्पातेन पण्डकव- नमधिरोहन्ति । प्रतिनिवर्त्तमानाश्च एकेनोत्पातेन नन्दनवनमागच्छन्ति, द्वितीयेन स्वस्थानम्। तथा 'विज्जाहरेहिं' विद्याधरै, रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिविद्याधारकैः= तथा 'चउत्थभत्तिएहिं' चतुर्थभक्तिकैः=एकोपवासकारकै, 'छट्ठभत्तिएहिं' षष्ठभक्तिकैः, उपवासद्वयकारकैः, 'अट्ठमभत्तिएहिं' अष्टमभक्तिकैः=उपवासत्रय- कारकैः, तथा-'दसमभत्तिएहिं' दशमभक्तिकैः=उपवासचतुष्टयकारकैः, 'एवं

णेहिं विज्जाहरेहिं) चारणऋद्धिधारी हैं, रोहिणीप्रज्ञप्त आदि विद्या के धारी हैं उनके द्वारा सेवित हुई है। तथा (चउत्थभत्तिएहिं, छट्ठभत्तिएहिं, अट्ठ- मभत्तिएहिं दसमभत्तिएहिं एव दुवालस चउदस सोलस-अद्धमास मास -दोमास तिमास-चउमास-पचमास-छम्मास भत्तिएहिं) चतुर्थभक्तिक -जो एक उपवास करने वाले हैं, षष्ठिभक्तिक-दो उपवास के करने वाले हैं, अष्टमभक्तिक-तीन उपवास करने वाले हैं, दसभक्तिक-चार उपवास

રોહિણીપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાના ધારક દ્વારા જે સેવાયેલ છે, તથા " चउत्थभत्तिएहिं, छट्ठभत्तएहिं, अट्ठमभत्तिएहिं, दसमभत्तिएहिं एव दुवालस-चउद्दस-सोलस -अद्धमास-मास-दोमास-तिमास-चउमास-पचमास-छम्मास भत्तिएहिं " ચતુર્થ- ભક્તિ-જે એક ઉપવાસ કરનાર છે, ષષ્ઠભક્તિક-જે બે ઉપવાસ કરનાર છે, અષ્ટમભક્તિક-ત્રણ ઉપવાસ કરનારા, દસમભક્તિક-ચાર ઉપવાસ કરનારા, એજ પ્રમાણે દ્વાદશ-પાચ ઉપવાસ, ચતુર્દશ-છ ઉપવાસ, ષોડશ-સાત ઉપવાસ, અને

दुवालस-चउदस-सोलस-अद्धमास-मास-दोमास-तिमास-चउमास - पचमास छम्मासभत्तिएहिं' एव द्वादशचतुर्दश पोडशार्द्धमास मासद्विमासत्रिमासचतुर्मासपञ्च मासपण्मासभक्तिकैः= द्वादशादि पण्मासान्तभक्ततपश्चरणयुक्तैः, तथा-'उक्खित्त चरएहिं' उत्क्षिप्तचरकैः=उत्क्षिप्त=गृहस्थेन स्वप्रयोजनाय पाकपात्रादुद्धृतमन्य पात्रस्थापितमेशनादिकं चरन्ति=अभिग्रहविशेषात्तद्गवेषणाय गच्छन्तीति उत्क्षिप्तचरकास्तैः=दायकेन पूर्वमेवपाकभाजनादुद्धृतस्य गवेपकैरित्यर्थः, तथा 'निक्खित्तचरएहिं' निक्षिप्तचरकैः-निक्षिप्त=गृहस्थेन स्वार्थं पाकपात्रादुद्धृत्यान्यपात्रे स्थापितमन्नादिकं चरन्ति=तथाविधाभिग्रहवशात्तद्गवेषणाय गच्छन्तीति निक्षिप्त चरकास्तै=पाकपात्रोद्धृतान्यपात्रस्थापिताहारग्रहणाभिग्रहवद्भिरित्यर्थः। तथा-'अंतचरएहिं' अन्तचरकै=अन्त=नीरस तक्रमिश्रित पर्युषित च वल्लचणकाद्यन्न चरन्ति=गवेपयन्ति, ये ते तथा तैस्तथोक्तैः अन्ताहारग्रहणाभिग्रहवद्भिरित्यर्थं। तथा-'पंतचरएहिं' प्रान्तचरकैः=प्रान्त=पुराणकुलत्थवल्लचणकाद्यन्न चरन्ति= गवेपयन्ति ये ते तथा तैस्तथोक्तैः=प्रान्ताहारग्रहणाभिग्रहवद्भिरित्यर्थः। तथा- 'लूहचरएहिं' रूक्षचरकैः= रूक्षभोजनग्रहणाभिग्रहवद्भिः, तथा-'समुदाणचरएहिं' समुदानचरकैः=उच्चावचकुलेषु सामान्यरूपेण भिक्षाग्रहणशीलैः, तथा-'अण्णगिलाइएहिं' अन्नग्लायकैः-अन्नेन=अभि यह विशेषात् पर्युषितान्नभोजनेन ग्लायक=ग्लानिमापन्न कृश इत्यर्थस्तैः। तथा-'मोणचरएहिं' मौनचरकैः=मौन- मौनव्रत तेन चरन्ति ये ते मौनव्रतका, तथाविधाभिग्रहवशाद् भिक्षाविशुद्धिप्रश्ना-

के करने वाले हैं, इसी तरह द्वादश-पाच उपवास, चतुर्दश-छह उपवास, षोडश-सात उपवास, एव अर्द्धमास, मास, द्विमास, त्रिमास, चतुर्मास,पञ्चमास, पण्मासभक्तिक-छ महीने के उपवास करनेवाले हैं उनके द्वारा यह सेवित हुई है, तथा (उक्खित्तचरएहिं, एव निक्खित्तचरएहिं, अंतचरएहिं, पंतचरएहिं, लूहचरएहिं, समुदाणिचरएहिं, अण्णगिलाइएहिं, मोणचरएहिं) उत्क्षिप्तचरक है, निक्षिप्तचरक, अतचरक है, प्रान्त चरक हैं, रूक्षचरक हैं, समुदानचरक हैं, अन्नग्लायक है, मौनचरक हैं.

અર્ધમાસ, માસ, બે માસ, ત્રણ માસ, ચાર માસ, પાંચ માસ, અને षण्मासभक्तिक-છ માસના ઉપવાસ કરનારા દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા 'उक्खित्त चरएहिं, एव निक्खित्तचरएहिं, अंतचरएहिं, पंतचरएहिं, लूहचरएहिं, समुदायचरएहिं, अण्णगिलाएहिं, मोणचरएहिं" જે ઉત્ક્ષિપ્તચરક છે, જે નિક્ષિપ્તચરક છે, જે અંતચરક છે, ને પ્રાન્તચરક છે, જે રૂક્ષચરક છે, જે સમુદાનચરક છે, જે અન્નગ્લાયક છે, જે મૌનચરક છે તેઓના દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા "सस-

तिरिक्त मौनमास्थाय सचरणशीला., तथा–' ससट्ठकप्पिएहिं ' संसृष्टकल्पिकैः– ' समृष्टेन हस्तेन भाजनेन च दीयमानमन्नादि ग्राह्य ' मित्येवरूपः कल्प आचारो येपा ते समृष्टकल्पिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा–' तज्जायससट्ठकप्पिएहिं ' तज्जातसंसृष्टकल्पिकैः=यत्प्रकार देयद्रव्य तज्जातेन–तत्प्रकारेण द्रव्येण संसृष्टे हस्तभाजने ताभ्या दीयमान ग्राह्यमित्येवरूपः कल्पः=समाचारो येपा ते तज्जातसंसृष्टकल्पिकास्तैस्तथोक्तै , तथा ' उवनिहियएहिं ' उपनिहितकै =उपनिहित=दायकेन स्वय भोक्तु समीपे स्थापितम् , तेन चरन्ति ये ते उपनिहितकास्तैस्तथोक्तै तथा= ' सुद्धेसणिएहिं ' शुद्धैपणिकैः–शङ्कादिदोपपरिहारतः पिण्डग्रहण शुद्धैपणा तद्वन्तः शुद्धैपणिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा' संखादत्तिएहिं ' संख्यादत्तिकैः=संख्याप्रधानाभिः पञ्चपादिपरिणामवतीभिः दत्तिभिः सकृद्भक्तादिपात्रपातलक्षणाभिश्चरन्ति ये ते संख्यादत्तिकास्तैस्तथोक्तै', तथा=' दिट्ठलाभिएहिं' दृष्टिलाभिकै =दृष्टस्य=दृष्टिगोचरीभूतस्यैवान्नपानादे. लाभो येपा ते दृष्टिलाभिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा– ' अदिट्ठलाभिएहिं ' अदृष्टलाभिकैः=अदृष्टस्यापि पाकगृहम-यान्निर्गतस्य कर्णात् श्रुतस्य भक्तादेरदृष्टाद्वा पूर्वमनुपलब्धाद् दायकाद् लाभो येपामस्ति तेऽदृष्टलाभिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा=' पुट्ठलाभिएहिं' पृष्टलाभिकै'=पृष्टस्य=हे साधो ! किं ते दीयते इत्यादि रूपेण प्रश्नविपयी कृतस्य यो भिक्षाप्राप्तिरूपी लाभस्तदाग्रहग्रहिलै', तथा–'आयंबिलिएहिं' आचामाम्लिकैः=आचामाम्लव्रतयुक्तै., तथा— ' पुरिमड्ढिएहिं ' पूर्वार्द्धिकैः=पारणायामपि पूर्वार्द्धदिनेऽशनपानादि प्रत्याख्यानशीलैः, तथा–' एक्कासणिएहिं ' एकाशनिकैः, पारणायामपि एकाशनव्रतधारिभिः,

---

उनके द्वारा सेवित है । तथा (ससट्ठकप्पिएहिं, तज्जायससट्ठकप्पिएहिं, उवनिहिएहिं, सुद्धेसणणिएहिं, संखादत्तिएहिं, दिट्ठलाभिएहिं, अदिट्ठलाभिएहिं, पुट्ठलाभिएहिं, आयबिलिएहिं, पुरिमड्ढिएहिं) संसृष्टकल्पिक हैं, तज्जातसंसृष्टकल्पिक हैं, उपनिहितक हैं, शुद्धैपणिक हैं, संख्यादत्तिक हैं, दृष्टिलाभिक हैं, अदृष्टिलाभिक हैं, पृष्टलाभिक हैं, आचामाम्लव्रतयुक्त हैं, पूर्वार्द्धिक हैं, उनके द्वारा यह अहिंसा पाली गई है । तथा (एक्कासणिएहिं, निव्विइएहिं, भिन्नपिंडवाइएहिं, परिमियपिंडवाइएहिं–

ट्ठकप्पिएहिं, तज्जायसंसट्ठ कप्पिएहिं, उवनिहिएहिं, सुद्धेसणणिएहिं, संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं, अदिट्ठलाभिएहिं, पुट्ठालाभिएहिं, आयबिलिएहिं पुरिमड्ढिएहिं " ते संसृष्ट કલ્પિક છે તજ્જાત સંસૃષ્ટ કલ્પિક છે, ઉપનિહિતક છે, શુદ્ધેષણિક સંખ્યાદત્તિક છે દૃષ્ટિલાભિક છે, અદૃષ્ટલાભિક છે, પૃષ્ટલા-ભિક છે, આચામામ્લ વ્રત યુક્ત છે પૂર્વાર્દ્ધિક છે, તેમના દ્વારા આ અહિંસા પાળવામાં આવે છે તથા " एक्कासणिएहिं, निव्विइएहिं, भिन्नपिंडवाइएहिं, परिमियपिंडवाइएहिं, अंताहारेहिं,

तथा-' निव्विइएहिं ' निर्विकृतिकैः=विकृतिभ्यो घृतादिपदार्थेभ्यो निर्गता ये ते निर्वृतिकास्तैस्तथोक्तैः-विकृतिप्रत्याख्यानशीलैरित्यर्थः, तथा ' भिण्णपिंडवाइएहिं ' भिन्नपिण्डपातिकैः-भिन्नस्य=त्रुटितस्य पिण्डस्य=सक्तुकादिरूपस्य मोदकस्य स्वतो भिन्नात् पिण्डात् यः पातः-पात्रे पतनं येषां ते भिन्नपिण्डपातिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा' परिमियपिंडवाइएहिं ' परिमितपिंडपातिकैः-परिमितो द्रव्यादिः पिण्डपातो भक्तादिलाभो येषामस्ति, ते परिमितपिंडपातिकास्तैस्तथोक्तैः, तथा-' अंताहारेहिं ' अन्ताहारैः=अन्त=नीरसं तक्रमिश्रितपर्युषितं च वल्लचणकाद्यन्नमाहरन्ति ये ते तैः, तथा-' पंताहारेहिं ' प्रान्ताहारैः=प्रान्त=पुरातनकुल्त्थवल्लचणकाद्यन्नम् आहरन्ति ये ते तैः, तथा-' अरसाहारेहिं ' अरसाहारैः =अरसो रसवर्जित आहारो येषां तेऽरसाहारास्तैस्तथोक्तैः-हिंग्वादि संस्कारवर्जिताहारग्रहणवद्भिः, तथा-' विरसाहारेहिं ' विरसाहारैः-विरस=विगतरसपुराणधान्यौदनादि आहरन्तीति विरसाहारास्तैः, ' लूहाहारेहिं ' रूक्षाहारैः=रूक्षघृतादिवर्जितमाहरन्तीति रूक्षाहारास्तैस्तथोक्तैः, तथा ' तुच्छाहारेहिं ' तुच्छाहारैः=तुच्छ=बदरीचूर्णादिकं कुल्त्थकोद्रवादिकं च आहारन्ति ये ते तुच्छाहारास्तैः, तथा-' अंतजीवीहिं ' अन्तजीविभिः-अन्तेन जीवन्ति ये तेऽन्तजीविनस्तैः, ' पंतजीविहिं ' प्रान्तजीविभिः ' लूहजीविहिं ' रूक्षजीविभीः=' तुच्छजीविहिं ' तुच्छजीविभि, तथा ' उवसंतजीविहिं ' उपशान्तजीविभिः-अशनादीनां प्राप्ताव

अंताहारेहिं, पंताहारेहिं, अरसाहारेहिं, विरसाहारेहिं, लूहाहारेहिं, तुच्छाहारेहिं, अंतजीविहिं, पंतजीविहिं, लूहजीविहिं, तुच्छजीविहिं, उवसंतजीविहिं, पसंतजीविहिं, विवित्तजीविहिं, अखीरमहुसप्पिएहिं, अमज्जमंसासिएहिं) एकाशनिक हैं, विकृतिप्रत्याख्यानशील हैं, भिन्नपिंडपातिक हैं, परिमितपिंडपातिक हैं, अन्ताहार वाले हैं, प्रान्ताहार वाले हैं, अरसाहार वाले हैं, विरसाहार वाले हैं, रूक्ष आहार करने वाले हैं तुच्छाहार वाले हैं, अंतजीवी हैं, प्रान्तजीवी हैं, रूक्षजीवी हैं, तुच्छ जीवी हैं, उपशान्त जीवी हैं प्रशान्त जीवी हैं, विविक्त जीवी हैं, अक्षीर मधुस-

पंताहारेहिं अरसाहारेहिं, विरसाहारेहिं, लूहाहारेहिं, तुच्छाहारेहिं, अंतजीविहिं, पंतजीविहिं, लूहजीविहिं, तुच्छजीविहिं, उवसंतजीविहिं पसंतजीविहिं विवित्तजीविहिं, अखीरमहुसप्पिएहिं, अमज्ज मंसासिएहिं " જે એકાશનિક છે, વિકૃતિ પ્રત્યાખ્યાનશીલ છે, ભિન્નપિંડ પાતિક છે, પરિમિતપિંડ પાતિક છે, અન્તહાર વાળા છે, પ્રાન્તાહાર વાળા છે, અરસાહારવાળા છે વિરસાહાર વાળા છે, રૂક્ષ આહાર કરનારા છે, તુચ્છ આહાર કરવા વાળા છે, અન્તજીવી છે, પ્રાન્તજીવી છે, રૂક્ષજીવી છે, તુચ્છજીવી છે, ઉપશાન્તજીવી છે, પ્રશાન્તજીવી છે

प्राप्तौ च सत्यामुपशान्ततया जीवन्ति ये ते उपशान्तजीविनस्तैस्तथोक्तैः बहिर्वृत्त्यावदनचक्षुरादीनामस्थानत्वमुपशान्तत्वम् । तथा 'पसंतजीविहिं' प्रशान्तजीविभिः–अन्तर्वृत्त्या क्रोधादीनामुपशमनं प्रशान्तत्वम् । तथा–'विवित्तजीविहिं' विविक्तजीविभिः=विविक्ते दोषवर्जितैस्स्थानादिभिर्जीवन्ति ये ते विविक्तजीविनस्तैस्तथोक्तैः, तथा–'अखीरमहुसप्पिएहिं' अक्षीरमधुसर्पिष्कैः–क्षीरं=दुग्धं, मधु–शर्करादिमधुरद्रव्यम्, सर्पिः=घृतम्, एतानि न सन्ति अशनतया येषां तेऽक्षीरमधुसर्पिष्कास्तैस्तथोक्तैः, तथा–'अमज्जमंसासिएहिं' अमद्यमांसाशिकैः–मद्यमांसं च येषामाहारो नास्तीति भावः,मांसाहारवर्जितैस्तथा 'ठाणाइएहिं' स्थानातिगैः=स्थानं=कायोत्सर्गादिकमतिशयेन गच्छन्ति=प्राप्नुवन्ति ये ते स्थानातिगाः कायोत्सर्गकारिणस्तैः 'पडिमट्ठाइएहिं' प्रतिमास्थायिकैः–प्रतिमया = एकरात्रिक्यादिकया कायोत्सर्गविशेषेणैव तिष्ठन्तीत्येवं शीला ये ते प्रतिमास्थायिनस्तैस्तथोक्तैः, तथा 'ठाणुक्कडुएहिं' स्थानउत्कुडुकैः=स्थानमुत्कुटुकं येषां ते स्थानोत्कुटुकास्तैस्तथोक्तैः, तथा–'वीरासणिएहिं' वीरासनिकैः=सिंहासनोपविष्टस्य भुविन्यस्तपादस्य अपनीतसिंहासनस्येव यदवस्थानं तद् वीरासनं, तदस्ति येषां ते वीरासनिकास्तैः, तथा–'णेसज्जिएहिं' नैषधिकैः, निषद्या=समपुततयाऽवस्थानं, तया चरन्ति ये ते नैषधिकास्तैस्तथोक्तैः तथा–डंडाइएहिं' दण्डायतिकैः=दण्डा इव भूयस्ततया आयतं शरीरं दण्डायतं तदस्ति येषां ते दण्डायतिकास्तैस्तथोक्तैः, दण्डासनकारिभिरित्यर्थः, तथा–'लगंडसाइएहिं' लगण्डशायिकैः=लगण्ड=वक्रकाष्ठं, तद्वत् मस्तकस्य पार्ष्णीनां 'एडी' इति लोकप्रसिद्धानां च भुविलगनेन

पिष्क हैं अमद्यमांसाशिक (मद्यमांसादिक का सेवन नहीं करनेवाले) हैं उन्होंने उनका सेवन किया है। तथा जो (ठाणाइएहिं, पडिमट्ठाइएहिं, ठाणुक्कडिएहिं वीरासणिएहिं, णेसज्जिएहिं डंडाईएहिं, लगण्डसाईएहिं, एगपासगेहिं, आयावएहिं, अप्पावडेहिं, अणिट्ठुभएहिं अकुडुयएहिं, धुयकेसमंसलोमनहेहिं, सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिन्ना) स्थानातिग हैं, प्रतिमास्थायिक हैं, स्थानोत्कुटिक हैं, वीरासनिक है, नैषधिक हैं, दण्डायतिक हैं, लगण्डशायिक हैं, एकपार्श्वक हैं, आतापक है, अप्रावृत

જીવી છે, અક્ષીર મધુ સર્પિષ્ક છે અમદ્યમાંસાશિક છે, તેમણે તેનુ સેવન કર્યું છે તથા જે "ठाणाइएहिं, पडिमट्ठाइएहिं ठाणुक्कडिएहिं, वीरासणिएहिं, णेसज्जिएहिं, डंडाइएहिं, लगण्डसाईएहिं एगपासगेहिं आयावएहिं, अप्पावडेहिं अणिट्ठुभएहिं अकडुयएहिं, धुयकेसमंसलोमनहेहिं, सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिन्ना" સ્થાનાતિગ છે, પ્રતિમાસ્થાયિક છે સ્થાનોત્કુટિક છે, વીરાસનિક છે, નૈષધિક છે, છે, દંડાયતિક છે, લગુડશાયિક છે, એક પાર્શ્વક છે, આતાપક છે, અપ્રાવૃત્ત

प्रकार कोष्ठ-कोठी मे प्रक्षिप्त अनाज बहुत समयतक सुरक्षित रहा करता है उसी प्रकार प्राप्त उस लब्धि के प्रभाव से अवगत सूत्र और अर्थ ये दोनों बहुत समय तक मुनिजनों की धारणा मे स्थिर रहते हैं-वे उन्हें विस्मृत नहीं होते। यह बुद्धि जिन मुनिजनों को प्राप्त हो जाती है वे कोष्ठबुद्धि के धारी मुनिजन हैं। सूत्रावयव रूप एक ही पद के उपलब्ध होने पर जो सैकड़ों पदों का अनुसरण कर लेते हैं वे मुनि जन पदानुसारी लब्धि के धारी कहे जाते हैं। जिस लब्धि से एक ही किसी इन्द्रिय से मुनिजन सर्वेन्द्रियगम्य विषयों को जान लेते हैं उस लब्धि का नाम सभिन्नश्रोतस् है। यह लब्धि जिन मुनिजनों को प्राप्त होती है वे मुनिजन सभिन्नश्रोता हैं। आचारांग आदि सूत्रों के पाठी जो मुनिजन होते हैं वे श्रुतधर कहे जाते हैं। अनेक प्रकार के परीषह और उपसर्गों के आने पर भी जिन मुनिजनों का मन धर्म से थोड़ा सा भी विचलित नहीं होता है उनका नाम मनोबलिक है। जो मुनि जन अपनी वाणी के द्वारा दुर्वादियों द्वारा प्ररूपित मिथ्याप्ररूपणाओं को ध्वस्त करने में समर्थ बनते हैं उन मुनियों को वचोबलिक कहा जाता है। जो मुनिजन कठिन से कठिन परीषह और उपसर्गों को सहन करनेमें शक्ति शाली होते हैं वे कायबलिक हैं। मत्यादि ज्ञान से जिनका

સુરક્ષિત રહે છે તેમ પ્રાપ્ત થયેલી આ લબ્ધિના પ્રભાવથી અવગતસૂત્ર અને અર્થ તે બન્ને ઘણા સમય સુધી મુનિજનોને ધારણા રૂપે સ્થિર રહે છે-તેમને તે ભૂલતો નથી આ બુદ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ કોષ્ટબુદ્ધિના ધારક મુનિવરો છે સૂત્રના અવયવરૂપ એક જ પદ ઉપલબ્ધ થતા જેઓ સેકડો પદોનુ અનુસરણ કરી લે છે, તેવા મુનિજનોને પદાનુસારીલબ્ધિના ધારક કહેવાય છે જે લબ્ધિના પ્રભાવથી કોઈ એક જ ઇન્દ્રિય વડે મુનિજન સર્વેન્દ્રિયગમ્ય વિષયોને જાણી લે છે તે લબ્ધિનુ નામ સભિન્નશ્રોતસ છે આ લબ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તે મુનિજન સભિન્નશ્રોતા કહેવાય છે, આચારાગ આદિ સૂત્રોનુ પઠન કરનારા જે મુનિજન હોય છે તેમને શ્રુતધર કહે છે અનેક પ્રકારના પરીષહ અને ઉપસર્ગો નડવા છતા પણ જે મુનિજનોનુ મન ધર્મમાથી તલભાર પણ વિચલિત થતુ નથી તેમને મનોબલિક કહે જે મુનિજનો દુર્વાદીઓ દ્વારા પ્રરૂપિત મિથ્યા પ્રરૂપણાઓનુ ખડન કરવાને સમર્થ થાય છે તે મુનિવરોને વચોબલિક કહે છે જે મુનિજનો આકરામા આકરા પરીષહો ને ઉપસર્ગોને સહન કરવાને શક્તિમાન હોય છે તેઓ

आत्मवल चढानेदा होता है वे ज्ञानवलिक हैं। निःशंकित आदि अपने अंगों से युक्त जिनका तत्त्वश्रद्धानरूप दर्शन होता है और इस दर्शन से जिनकी आत्मा वलिष्ठ वनी रहती है वे दर्शनवलिक हे। षट्काय के जीवों का संरक्षण करना इसका नाम संयम है, इस संयमरूपचारित्र के वल से जिनकी आत्मा वलशाली होती हे वे चारित्रवलिक ह। जिनके मुख से निकला हुआ वचन सुनते ही मन और शरीर को सुखोत्पादक होता है वे क्षीरास्रवलब्धि के धारी मुनिजन हें। मिसरी आदि मिष्ट द्रव्य से भी अधिक मिष्ट–मधु शब्द होता है, शब्द जेसा मीठा जो वचन निकालते हे बोलते हैं वे मध्वास्रव लब्धि के धारी मुनिजन कहलाते हैं। सर्पिरास्रवलब्धि के प्रभाव से मुनिजनों का वचन अत्यंतसुरभि-युक्त एवं स्नेहयुक्त घृत के जैसा वोलने पर सुनने वालों को लगता है। महानस शब्द का अर्थ भोजन वनाने का स्थान है, उसके आश्रित होने से भोजन को भी महानस कहते है। जिनमुनिजनो को यह अक्षीण-महानस नामकी लब्धि उत्पन्न हो जाती है उनके असाधारण, अन्तराय के क्षयोपशम से अल्पमात्र भी पात्रपतित अन्न गौतमादिक ऋषियो की तरह एक लाख व्यक्तियो को दे देने पर भी जब तक वह स्वयं न खालेवे

कायबलिक કહેવાય છે મત્યાદિ જ્ઞાનથી જેનુ આત્મબળ વૃદ્ધિ પામ્યુ હોય છે તેમને જ્ઞાનબલિક કહે છે, નિશંકિત આદિ અંગો વડે યુક્ત જેમનુ તત્ત્વ શ્રદ્ધાનરૂપ દર્શન હોય છે અને એ દર્શનથી જેમનો આત્મા બળવાન બનેલો હોય છે તેવા મુનિવરોને દર્શનબલિક કહે છે છકાયના જીવોનુ રક્ષણ કરવુ તે સયમ કહેવાય છે તે સયમરૂપ ચારિત્રના બળથી જેમનો આત્મા બળવાન હોય છે તેમને ચારિત્રબલિક કહે છે જેમના મુખમાથી નીકળેલ વચન સાભ-ળતા જ મન અને શરીરને સુખ થાય છે તેમને ક્ષીરાસ્રબલબ્ધિ ધારી મુનિ કહેવાય છે સાકર વગેરે મિષ્ટ દ્રવ્યો કરતા પણ વધારે મિષ્ટ મધ હોય છે મધ જેવા મીઠા વચન જે બોલે છે તેવા મુનિજનોને મધ્વાસ્રવલબ્ધિ ધારક કહેવાય છે સર્પિરાસ્રવલબ્ધિના પ્રભાવથી મુનિજનોના વચન અત્યત સુરભિ વાળા તથા સ્નિગ્ધ ઘીના જેવા શ્રોતાજનોને લાગે છે મહાનસ શબ્દનો અર્થ ભોજન બનાવવાનુ સ્થાન છે, તેનુ આશ્રિત હોવાથી ભોજનને પણ મહાનસ કહે છે જે મુનિજનોને આ અક્ષીણમહાનસ નામની લબ્ધિ ઉત્પન્ન થાય છે તેમના અસાધારણ અન્તરાયના ક્ષયોપશમથી સહેજ પણ પાત્રમા પડેલુ અન્ન ગૌતમાદિ ઋષિયોની જેમ એક લાખ વ્યક્તિઓને આપી દેવા છતા પણ જ્યા સુધી તેઓ પોતે ખાઇ લેતા નથી ત્યા સુધી પૂરૂ થતુ નથી તેનો ભાવાર્થ

-तबतक समाप्त नहीं होता है। तात्पर्य इसका यह है कि इस लब्धि धारी मुनिजनों के पात्र में दिया थोड़ा भी अन्न लाखों मुनिजन भी उससे आहार कर ले वें परन्तु वह तबतक समाप्त नहीं होता है कि जबतक वह लब्धि धारी उसे स्वय नहीं खा लेता है। इसी प्रकार इसके दाता के विषय मे भी समझ लेना चाहिये। यह लब्धि गौतमादि ऋषि जनों को थी। चारणलब्धि का यह मतलब है कि जिस लब्धि के प्रभाव से आकाश में मुनिजनों का आना जाना होता है। चरण-गमन-यह गमन जिनके होता है उनका नाम चारण है। इस लब्धि के धारी मुनिजन दो प्रकार के होते हैं-(१) विद्याचारण (२) जघाचरण। जिन्हें विद्या के बल से यह आकाश में गमनागमनरूपलब्धि उत्पन्न होती है वे विद्याचारण मुनिजन है। यह लब्धि उन मुनिराजों को उत्पन्न होती है जो निरन्तर षष्ठ षष्ठ की तपश्चर्या करते रहते हैं। तथा जो मुनि चारित्ररूप तपविशेष के प्रभाव से ऐसी लब्धि सपन्न बन जाते हैं कि वे जघा के ऊपर हाथ रखते ही आकाश में उड़ जाते हैं, इसी लब्धि का नाम जघा चारण है। यह लब्धि उन मुनिराजों को प्राप्त होती हैं जो निरन्तर अष्टम अष्टम की तपस्या करते हैं। इनमें जो विद्याचारण मुनिजन होते हैं वे इसके बल पर जम्बूद्वीप की अपेक्षा से आठवां

એ છે કે આ લબ્ધિધારી મુનિવરોના પાત્રમા પડેલ અન્ન, તેમાથી લાખો મુનિજનો આહાર લે તો પણ જ્યા સુધી તે લબ્ધિધારી મુનિ પોતે જ તે ખાઇ જતા નથી ત્યા સુધી તે સમાપ્ત થતુ નથી આ પ્રમાણે તેના દાતાને વિષે પણ સમજી લેવુ આ લબ્ધિ ગૌતમાદિ ઋષિજનોને પ્રાપ્ત થયેલ હતી "चरणलब्धि" એવા પ્રકારની લબ્ધિ છે કે જેના પ્રભાવથી મુનિજનો આકાશમા અવર જવર કરી શકે છે, चरण-ગમન-તે ગમન- તે જેમનુ હોય છે તેમને चारण કહે છે આ લબ્ધિધારી બે પ્રકારના મુનિજન છે (૧) विद्याचरण (૨) जघाचरण જેમને વિદ્યાના પ્રભાવથી આકાશમા ગમનાગમનરૂપ લબ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ "વિદ્યાચારણ" મુનિજન કહેવાય છે આ લબ્ધિ નિરતર છઠ, છઠની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તથા જે મુનિયો ચારિત્રરૂપ તપ વિશેષના પ્રભાવથી એવી લબ્ધિયુક્ત થઈ જાય છે કે તેઓ જઘા પર હાથ મૂકતા જ આકાશમા ઉડી જાય છે, એ લબ્ધિનુ નામ जघा चारण છે નિરન્તર આઠમ આઠમની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને આ લબ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓમા જેઓ વિદ્યાચારણ મુનિજન છે તેઓ તેના પ્રભાવથી જબૂદ્વીપની અપેક્ષાએ આઠમો જે નદીશ્વર નામનો દ્વીપ છે ત્યા સુધી જઇ

जो नंदीश्वर नाम की द्वीप है वहा तक आ जा सकते हैं। तथा जो-जघाचारण मुनिजन हैं वे तेरहवा द्वीप जो रुचकवर द्वीप है वहा तक आ जा सकते हैं। विद्याचरण प्रथम उडान में मानुषोत्तर पर्वत तक चले जाते हैं, और दूसरी उडान मे नदीश्वर द्वीप तक, फिर वे जब वहा से होते हैं तो एक ही उडान में अपने स्थान पर वापिस आजाते है। तथा मेरु पर जाते हुए वे प्रथम उत्पात से नदनवन तक जाते हैं और द्वितीय उत्पात से पण्डक वनतक जाते हैं, फिर वे जब वहां से वापिस होते हैं तो एक ही उत्पात मे अपने स्थान पर आ जाते हैं। जघाचारण जो मुनिजन होते हैं वें जबूद्वीप की अपेक्षा एक ही उडान में तेरहवें रुचकवर द्वीप में पहुँच जाते हैं, और वहा से वापिस होते समय एक ही उडान में नदीश्वरद्वीप में आ जाते है। और दूसरी उडान में अपने स्थान पर आ पहुँचते हैं। यदि वे सुमेरुपर्वत पर जाने के अभिलाषी होते हैं तब प्रथम उत्पातमे पडकवन में जाते हैं। फिर वापिस होते समय एक ही उत्पात से नदनवन में और द्वितीय उत्पातमें अपने स्थान पर आ जाते हैं। रोहिणी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओं के जो धारण करने वाले होते हैं वे विद्याधारक हैं। एक उपवास का नाम चतुर्थभक्त, दो उपवास का नाम षष्ठभक्त, तीन उपवासका नाम अष्टभक्त, चार उपवास का नाम दश-

---

આવી શકે છે, તથા જે જ ઘાચરણ મુનિજનો છે તેઓ તેરમો રુચકવર નામનો દ્વીપ છે ત્યા સુધી જઇ આવે શકે છે વિદ્યાચારણ પહેલા ઉડ્ડયનમા માનુષોત્તર પર્વત સુધી ચાલ્યા જાય છે, બીજા ઉડ્ડનમા નદીશ્વર દ્વીપ સુધી જાય છે પછી જ્યારે તેઓ ત્યાથી પાછા ફરે છે ત્યારે એક જ ઉડ્ડયનમા પોતાના સ્થાને આવી જાય કરે તથા મેરુ જતા તેઓ પહેલા ઉડ્ડયનમા નદનવન સુધી જાય છે અને બીજા ઉડ્ડયને પડક વન સુધી જાય છે પછી જ્યારે તેઓ ત્યાથી પાછા આવે છે ત્યારે એક જ ઉડ્ડયનમા પોતાના સ્થાને આવી જાય છે જઘા ચરણ મુનિજન જબૂદ્રીપની અપેક્ષાએ એક જ ઉડ્ડયનમા તેરમા રુચકવર દ્વીપમા પહોચી જાય છે, અને ત્યાથી પાછા ફરતા એક જ ઉડ્ડયને તેઓ નદીશ્વર દ્વીપમા આવી જાય છે અને બીજા ઉડ્ડયને પોતાને સ્થાને પહોચી જાય છે જો તેઓ સુમેરુ પર્વત પર જવાની ઇચ્છા કરે તો પહેલા ઉત્પાતથી પડક વનમા જાય છે, પછી પાછા ફરતી વખતે એક જ ઉત્પાતે નદન વનમા અને બીજે ઉત્પાતે પોતાના સ્થાનમા આવી જાય છે રોહિણી પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાઓ ધારણ કરનારને વિદ્યાધારક કહે છે એક ઉપવાસને ચતુર્થભક્ત, બે ઉપવાસને ષષ્ઠભક્ત, ત્રણ ઉપવાસને અષ્ટમભક્ત, ચાર ઉપવાસને દશમભક્ત,

मभक्त, पांच उपवास का नाम द्वादश भक्त, छह उपवास का नाम चतुर्दश भक्त, सात उपवास का नाम षोडश भक्त, है। इन उपवासों को जो मुनिजन करते हैं वे चतुर्थ भक्तिक आदि मुनिजन हैं। इसी तरह जो अर्धमास आदिके उपवासों को करते हैं वे अर्धमास आदि भक्तिक हैं। जो मुनिजन इस प्रकार का अभिग्रह विशेष धारण कर लेते हैं कि हम उसी आहार को लेंगे कि जो आहार गृहस्थने अपने प्रयोजन के लिये पाकपात्र से उठाकर दुसरे पात्र में नहीं रखा होगा। इस प्रकार का अभिग्रह बद्ध होकर जो आहार की गवेषणा करने के लिये अपने स्थान से बाहि गमन करते हैं वे उत्क्षिप्त चरक मुनिराज हैं। तथा जो इस प्रकार का अभिग्रह करके आहार लेने के लिये अपने स्थान से जाते हैं कि मैं वही आहार ग्रहण करूंगा जो गृहस्थ ने अपने लिये पाक पात्र से निकाल कर दूसरे पात्र में रखा होगा। इस प्रकार के अभिग्रह को धारण कर जो आहार की गवेषणा करने के लिये अपने स्थान से बाहर भ्रमण करते हैं वे निक्षिप्तचरक हैं। तथा जो मुनिजन अन्त-नीरस, तक्रछाछमिश्रित और पर्युषित (वासी) वल्ल, चणक-चना आदि

પાચ ઉપવાસને દ્વાદશભક્ત, છ ઉપવાસને ચતુર્દશભક્ત, સાત ઉપવાસને ષોડ શભક્ત, કહે છે એ ઉપવાસો કરનાર જે મુનિજનો છે તે ચતુર્ભક્તિક આદિ મુનિજનો કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે જે અર્ધમાસ આદિ સમયના ઉપવાસો કરે છે તેમને અર્ધમાસભક્તિક આદિ કહે છે જે મુનિજન એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરે છે કે અમે એવો જ આહાર લઈશુ કે જે ગૃહસ્થે પોતાના ઉપયોગને માટે રાધવાના વાસણમાથી લઈ ને બીજા પાત્રમા નહી રાખ્યો હોય આ પ્રમાણે અભિગ્રહ બાધીને જે આહારની શોધમા પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તેમને उत्क्षिप्तचरक મુનિરાજ કહે છે તથા જે મુનિરાજ એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરીને પોતાને સ્થાનેથી આહાર લેવા નીકળે છે કે "હુ એવો જ આહાર વહોરીશ કે જે ગૃહસ્થે રાધવાના પાત્રમાથી પોતાના ઉપયોગ માટે બીજા પાત્રમા કાઢી રાખ્યો હોય આ પ્રકારનો અભિગ્રહ કરીને જે આહારની શોધ કરવાને માટે પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તે મુનિજન निक्षिप्तचरक કહેવાય છે તથા જે મુનિરાજ અત-નીરસ, છાશમિશ્રિત આ[illegible] વાસી વલ, ચણક-ચણા આદિ આહાર

आहार लेने का अभिग्रह धारण कर उनकी गवेषणा करते हैं वे अन्तचरक हैं। तथा प्रान्तचरक वे मुनिराज हैं जो पुराने वल्ल, चणक एवं कुलत्थी आदि अन्न को लेने का अभिग्रह बद्ध होकर गोचरी करते हैं। तथा जो रूक्ष भोजन ही में लूंगा, इस प्रकार की प्रतिज्ञा धारण करते हैं। जो ऊँचे नीचे कुलों मे सामान्य रूप से भिक्षा ग्रहण करने के स्वभाववाले होते हैं वे समुदानचरक हैं अन्नग्लायक-अन्नसे, अर्थात् अभिग्रह विशेष के कारण वासी अन्न खाने से ग्लान अर्थात् कृश-दुबले जो है वे अन्नग्लायक हैं। भिक्षा विशुद्धि के सिवाय जो मौन व्रत को धारण कर आहार के लिये जाते हैं वे मौनचरक साधु हैं। तथा जिनका ऐसा कल्प होता है कि जो आहार हमें संसृष्ट-भरे हुए हाथ और भाजन-पात्र से दिया जावेगा वही मै लूगा वे संसृष्ट कल्पिक हैं। तथा-तज्जातसंसृष्ट कल्पिक वे मुनिजन हैं जो इसप्रकार का नियम लेते हैं कि जिस प्रकार का देयद्रव्य देने योग्य है वह उसी प्रकार के द्रव्य से संसृष्ट हस्त भाजन से दिया जावेगा तो ही लेगे। जो इस प्रकार का नियम धारण करते है कि दाता ने जिस आहार को अपने आप अपने पास खाने के लिये रखा होगा वही हम लेगे। इस प्रकार के अभिग्रह वाले

प्रान्तचरक મુનિરાજ તેમને કહે છે કે જેઓ જૂના વાલ, ચણા, કળથી આદિ અન્ન લેવાનો અભિગ્રહ કરીને ગોચરી કરે છે તથા જે એવી પ્રતિજ્ઞા ધારણ કરે છે કે હું રૂક્ષ (લૂખુ) ભોજન જ લઈશ તેમને रूक्षचरक કહે છે જે એક સરખી રીતે ઊંચા તથા નીચા કુળમા ભિક્ષા ગ્રહણ કરવાના સ્વભાવવાળા છે તેઓ समुदानचरक છે अन्नग्लायक-ખાસ અભિગ્રહને કારણે વાસી અન્ન ખાવાથી ગ્લાન એટલે કે કૃશ-દુબળા પડી ગયેલા હોય તેમને અન્નગ્લાયક કહે છે ભિક્ષા વિશુદ્ધિના સિવાય, જે સાધુ મૌનવ્રત ધારણ કરીને આહારને માટે જાય છે તેમને मौनचरक કહે છે તથા જેમનો એવો નિશ્ચય-ધારણા હોય છે કે "જે આહાર અમને संसृष्ट-ભરેલા હાથ તથા ભાજન પાત્રમાથી વહોરાવાશે તેજ અમે લઈશુ" એવા મુનિઓને संसृष्टकल्पिक કહે છે તથા જે મુનિજનો એવા પ્રકારનો નિયમ કરે છે કે વહોરાવવાનુ જે દ્રવ્ય હોય તે એજ પ્રકારના દ્રવ્યથી ભરેલ પાત્રમાથી વહોરાવવામા આવશે તો જ લઈશ, તે મુનિજનોને तज्जातसंसृष्टकल्पिक કહે છે જે મુનિજનો એવો નિયમ ધારણ કરે છે કે દાતાએ પોતે જ પોતાને ખાવા માટે જે આહાર પોતાની પાસે રાખ્યો હોય તે જ હુ લઈશ આ પ્રકારના અભિગ્રહ ધારી મુનિઓ उपनि-

उपनिहितक हैं। शंका आदि दोषों के परिहार से शुद्ध आहार का ग्रहण करना इसका नाम शुद्धैषणा है। इस शुद्धैषणा से जो संपन्न होते हैं वे शुद्धैषणिक हैं। अर्थात शंका आदि दोषों से रहित शुद्ध आहार को ग्रहण करने का जिनका अभिग्रह होता है वे शुद्धैषणिक हैं। संख्याप्रधानवाली दत्तियों से जो गोचरी के लिये जाते हैं अर्थात् दाता के हाथ से देते समय साधु के पात्र में भक्तपान आदि का जो एक बार अविच्छिन्नरूप से गिरना उसे दत्ति कहते हैं, इस प्रकार की पांच छ आदि दत्तियों के लेने का अभिग्रह जिन्हें होता है वे संख्यादत्तिक हैं। जिन साधुओं को ऐसा नियम होता है कि हम उसी आहार को लेगे जो हमारे दृष्टि गोचर होगा। इस प्रकार के नियमवाले साधु दृष्टिलाभिक कहे जाते हैं। तथा अदृष्टलाभिक वे साधुजन हैं जो पाकगृह के भीतर से निकले हुए ऐसे भोजन को कि जो दृष्टि में तो आया नहीं है केवल कान से ही उसका नाम सुन लिया है उसे लेनेका नियम धारण करते हैं। अथवा—' पूर्व में अनुपलब्ध दाता से ही मैं भिक्षा लूंगा ' इस प्रकार का जो नियमविशेष रखते हैं वे अदृष्टलाभिक मुनि हैं। 'हे-साधो! मैं आप के लिये क्या दूं अर्थात् आपके लिये किस वस्तु की इस समय चाहना है ' इस प्रकार दाता के द्वारा प्रश्नविषयीकृत वस्तु

हितक કહેવાય છે શુદ્ધૈષણા એટલે શકા આદિ દોષો રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો તે આ શુદ્ધૈષણાયુક્ત મુનિજનોને शुद्धैषणिक કહે છે એટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધૈષણિક છે, સખ્યા પ્રધાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે એટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમા ભક્ત પાન આદિનુ ધારાવળી તૂટયા વિના એક વખતમા જેટલું પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાચ, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને सख्यादत्तिक કહે છે જે સાધુઓને એવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડશે તે જ આહાર અમે લઈશુ, એવા નિયમ વાળા સાધુઓને दृष्टिलाभिक કહે છે તથા अदृष्टिलाभिक મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાથી બહારકાઢવામા આવેલ એવુ ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડયુ હોતુ નથી પણ તેનુ નામ જ કર્ણે પડયુ હોય છે અથવા "અગાઉ જેની પાસેથી દાન ગ્રહણ ન કર્યું હોય એવા દાતા પાસેથી જ દાન ગ્રહણ કરીશ" એવા મુનિને अदृष्टलाभिक કહે છે " હે મુનિરાજ ! હુ આપને માટે શુ આપુ " એટલે કે " આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માગો છો " આ

को लेने का जिनके अभिग्रह होता है वे पृष्टलाभिक मुनि हैं जो आचामाम्लव्रत (आयंबिल) से युक्त होते हैं वे आचाम्लिक मुनि हैं। पारणा के दिवस भी जो पूर्वार्द्ध के समय खाने पीने का त्याग कर देते हैं वे पुरिमड्ड–पूर्वार्द्धिक मुनि हैं। तथा जो पारणा के दिन भी एकाशनव्रत के धारी होते हैं वे एकाशनिक हैं। जो घृत आदि पदार्थरूप विकृतियों से विहीन ही भोजन लेते हैं वे निर्विकृतिक मुनि हैं। 'पात्र में गिरने पहिले जो भिक्षा की वस्तु सक्तुकादि रूप मोदक आदि पिण्ड अर्पित करते समय बीच में ही फूटकर पात्र मे पड़ेगी उसे ही मै लूगा' इस प्रकार जो नियम धारण करते है वे भिन्नपिंडपातिक मुनि हैं। 'इतनी ही वस्तु –भक्ष्यपदार्थ–खाने योग्य हम भोजन में खावेंगे' ऐसा नियम जिन साधुओं के होता है वे परिमितपिंडपातिक मुनि है। नीरस,तक्र (छाछ)-मिश्रित और पर्युषित वल्ल चणक आदि अन्न का जो आहार करते हैं वे अन्ताहारी मुनि हैं। पुरानी कुलथी, वल्ल, चना आदि अन्न का जो आहार करते हैं वे प्रान्ताहारी मुनि है। जो रसवर्जित आहार लेते है–अर्थात् जो मुनि हिंग आदि के वघार से वर्जित आहार को लेने के नियमवाले होते हैं वे अरसाहारी हैं। जिनमें रस नहीं होता ऐसे

પ્રમાણે દાતા દ્વારા પ્રશ્નવિષયીકૃત વસ્તુ લેવાનો જેમને અભિગ્રહ હોય છે તેમને पृष्टलाभिक મુનિ કહે છે જે મુનિ આચામામ્લવ્રત યુક્ત હોય છે તેમને आचामाम्लिक મુનિ કહે છે પારણાને દિવસે પણ જે પૂર્વાહ્ન મધ્યાહ્ન પહેલા ખાવાપીવાનો ત્યાગ કરે છે તેમને परिमड्ड–पूर्वार्द्धिक મુનિ કહે છે તથા જે પારણાને દિવસે પણ એકાસન વ્રત ધારી હોય છે તેમને एकाशनिक કહે છે જે ઘી આદિ પદાર્થરૂપ વિકૃતિયોથી રહિત ભોજન લે છે તેમને निर्विकृतिक મુનિ કહે છે "પાત્રમા પડયા પહેલા જે ભિક્ષાની વસ્તુ–સક્તુ કાદિરૂપ મોદક આદિ પિંડ અર્પણ કરતી વખતે વચ્ચેજ ભાગી જઈને પાત્રમા પડશે તેને જ હુ લઈશ" આ પ્રકારનો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિને भिन्नपिंडपातिक મુનિ કહે છે "આટલી જ વસ્તુ ખાદ્ય પદાર્થ–હુ ભોજનમા ખાઈશ" એવો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિજનોને परिमितपिंडपातिक કહે છે નીરસ, છાશ–મિશ્રિત, અને પર્યુષિત વાસી વાલ, ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિજનોને अन्ताहारी કહે છે જૂની કળથી, વાલ ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિઓને प्रान्ताहारी કહે છે જે રસરહિત આહાર લે છે એટલે કે જે મુનિ હિંગ આદિના વઘારથી રહિત આહાર લેવાના નિયમવાળા હોય છે

उपनिहितक हैं। शंका आदि दोषों के परिहार से शुद्ध आहार का ग्रहण करना इसका नाम शुद्धैषणा है। इस शुद्धैषणा से जो संपन्न होते हैं वे शुद्धैषणिक हैं। अर्थात् शंका आदि दोषों से रहित शुद्ध आहार को ग्रहण करने का जिनका अभिग्रह होता है वे शुद्धैषणिक हैं। सख्याप्रधानवाली दत्तियों से जो गोचरी के लिये जाते हैं अर्थात् दाता के हाथ से देते समय साधु के पात्र में भक्तपान आदि का जो एक बार अविच्छिन्नरूप से गिरना उसे दत्ति कहते हैं, इस प्रकार की पांच छ आदि दत्तियों के लेने का अभिग्रह जिन्हें होता है वे सख्यादत्तिक हैं। जिन साधुओं को ऐसा नियम होता है कि हम उसी आहार को लेंगे जो हमारे दृष्टि गोचर होगा। इस प्रकार के नियमवाले साधु दृष्टिलाभिक कहे जाते हैं। तथा अदृष्टलाभिक वे साधुजन हैं जो पाकगृह के भीतर से निकले हुए ऐसे भोजन को कि जो दृष्टि में तो आया नहीं है केवल कान से ही उसका नाम सुन लिया है उसे लेनेका नियम धारण करते हैं। अथवा—'पूर्व में अनुपलब्ध दाता से ही मैं भिक्षा लूंगा' इस प्रकार का जो नियमविशेष रखते हैं वे अदृष्टलाभिक मुनि हैं। 'हे-साधो! मैं आप के लिये क्या दूं अर्थात् आपके लिये किस वस्तु की इस समय चाहना है' इस प्रकार दाता के द्वारा प्रश्नविषयीकृत वस्तु

हितक કહેવાય છે શુદ્ધૈષણા એટલે શકા આદિ દોષો રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો તે આ શુદ્ધૈષણાયુક્ત મુનિજનોને शुद्धैषणिक કહે છે એટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધૈષણિક છે, સખ્યા પ્રધાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે એટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમા ભક્ત પાન આદિનુ ધારાવળી તૂટયા વિના એક વખતમા જેટલુ પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાચ, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને सख्यादत्तिक કહે છે જે સાધુઓને એવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડશે તે જ આહાર અમે લઈશુ, એવા નિયમ વાળા સાધુઓને दृष्टिलाभिक કહે છે તથા अदृष्टलाभिक મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાથી બહારકાઢવામા આવેલ એવુ ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડયુ હોતુ નથી પણ તેનુ નામ જ કર્ણે પડયુ હોય છે અથવા "અગાઉ જેની પાસેથી દાન ગ્રહણ ન કર્યું હોય એવા દાતા પાસેથી જ દાન ગ્રહણ કરીશ" એવા મુનિને अदृष्टलाभिक કહે છે " હે મુનિરાજ! હુ આપને માટે શુ આપુ " એટલે કે " આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માગો છો " આ

में कायोत्सर्ग आदि तपश्चरण करते हैं वे स्थानातिग मुनि है। एक रात्रिकी आदि प्रतिमाधारण कर कार्योत्सर्ग विशेषरूप में ही रहते हैं वे प्रतिमा स्थायी मुनि हैं। जिनका स्थान उत्कुटुक होता है, अर्थात् जो उत्कुट आसन से बैठते हैं वे स्थानोत्कुटुक हैं। सिंहासन पर बैठे हुए व्यक्ति का कि जिसके दोनों पैर नीचे टिके हुए हों जब वे सिंहासन नीचे से हटा लिया जाता है तो वह उस समय उसी स्थिति में-अर्थात्-अपनी पूर्व की स्थिति मे ही रहे तो उस आसन का नाम वीरासन है। इस आसन को जो आचरित करते हैं वे वीरासनिक मुनि हैं। जिस आसन में दोनों पुत समानरूप से जमे रहते हैं उस आसन का नाम निषद्या है। इस निषद्या से जो बैठते है वे नैषद्यिक है। दण्ड की तरह जिनका शरीर भूमिपर आयत-लंबा-जिस आसन मे रहता है-उसका नाम दण्डायत आसन है। इस आसन को जो आचरित करते हैं वे दण्डायतिक है। अर्थात्-जिस में जमीन पर दण्ड की तरह लंबा होकर सोया जाता है उस आसन को जो मुनि करते हैं वे दण्डायतिक मुनि कहलाते हैं। जिस आसन में दोनों पैरो की एडी और मस्तक का पृष्ठभाग जमीन पर लगा रहता है, तथा पीठ का भाग जमीन से उठा

કહે છે જે અતિશય પ્રમાણમા કાયોત્સર્ગ આદિ તપશ્ચરણ કરે છે તેમને स्थानातिग મુનિ કહે છે જે એક રાત્રિની આદિ પ્રતિમા ધારણ કરીને કાયો-ત્સર્ગના વિશેષરૂપમા રહે છે તેમને પ્રતિમાસ્થાયી મુનિ કહે છે જેમનુ સ્થાન ઉત્કુટુક હોય છે, એટલે કે જે ઉત્કુટુક આસને બેસે છે તેમને स्थानोत्कुटुक મુનિ કહે છે સિંહાસન પર બેઠેલ વ્યક્તિ કે જેના બન્ને પગ નીચે ટેકવેલા હોય, તેની નીચેથી સિંહાસન ખસેડી લેવામા આવે છતા પણ તે જો પોતાની એજ સ્થિતિમા-એટલે કે પોતાની અગાઉની સ્થિતિમા રહે તો તે આસનને વીરાસન કહે છે આ આસનનુ સેવન કરનાર મુનિને वीरासनिक કહે છે જે આસનમા બન્ને પુત સમાન રીતે દૃઢ રહે છે તે આસનનુ નામ निषद्या છે આ નિષદ્યાથી જે બેસે છે તેને नैषधिक કહે છે દંડની જેમ જેમનુ શરીર જમીન પર આયત-લબાયેલ સ્થિતિમા જે આસનમા રહે છે તે આસનને दण्डायत આસન કહે છે આ આસન કરનારને दण्डायतिक મુનિ કહે છે એટલે કે જેમા જમીન પર દંડની જેમ લાબા થઈને સૂઈ જવાય છે, તે આસન જે મુનિ કરે છે તેમને दण्डायतिक મુનિ કહે છે જે આસનમા બન્ને પગની એડી તથા મસ્તકનો પાછળનો ભાગ જમીન પર લાગી રહે છે તથા પીઠનો

पुराने धान्य ओदन आदि अन्न से निष्पन्न हुए आहार को लेनेका जिनका नियम होता है वे विरसाहारी मुनि हैं। घृतादि के संबंध से वर्जित हुए रूखे लूखे आहार को लेनेका जिनका नियम होता है वे रूक्षाहारी मुनि हैं। बदरी फल बोर के पिसे हुए चूर्ण आदि का, तथा कुलथी कोद्रव आदि से बने हुए आहार का जो सेवन करते हैं वे तुच्छाहारी मुनि है। इसी तरह अन्त आहार से जो जीते है वे अन्तजीवी, प्रान्त आहार से जो जीते है वे प्रान्तजीवी, रूक्षाहार से जो जीते है वे रूक्षजीवी, तुच्छाहार से जो जीते है वे तुच्छजीवी मुनि हैं। अशन आदि की प्राप्ति होने पर अथवा नहीं होने पर जिनकी बाहिरी चेष्टा में-मुख में चक्षुरादि इन्द्रियों में म्लानता नहीं आती है वे उपशान्तजीवी मुनि है। तथा अन्तरग में जिन साधुओं के आहार आदि की अप्राप्ति में क्रोधादि कषायो का उपशमन रहता है वे प्रशान्तजीवी मुनि है। दोषवर्जित अन्नादि के खाने से ही जो अपना जीवन निर्वाह करते है वे विविक्तजीवी मुनि है। क्षीर-दुग्ध, मधु शर्करा आदि मधुरद्रव्य और सर्पि घृत, इनपदार्थोंका जो आहार नहीं करते है वे अक्षीरमधुसर्पिष्क मुनि हैं। मद्य और मांस का आहार नहीं करने अमद्यमांसाशिक मुनि कहलाते है। जो अतिशयरूप

તેમને अरसाहारी કહે છે જેમા રસ હોતો નથી એવા જૂના ધાન્ય, ચોખા આદિ અન્નમાથી તૈયાર થયેલ આહાર લેવાના નિયમવાળા મુનિઓને विरसाहारी કહે છે ઘી વિનાનો લૂખો આહાર લેવાનો જેમનો નિયમ છે તેમને रूक्षाहारी મુનિ કહેછે બોર આદિ ફળોનુ ચૂર્ણ આદિ તથા કળથી, કોદરા વગેરેમાથી બનેલા આહારનુ જે સેવન કરે છે તેમને तुच्छाहारी કહે છે, એજ પ્રમાણે અન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને अन्तजीवी, પ્રાન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને प्रान्तजीवी, રૂક્ષ આહારથી જે જીવે છે તેમને रूक्षजीवी અને તુચ્છ આહારથી જે જીવ છે તેમને तुच्छजीवी મુનિ કહે છે ભોજન આદિ પ્રાપ્ત થાય કે ન થાય છતા પણ જેમની મુખમુદ્રામા, ચક્ષુરાદિ ઈન્દ્રિયોમા મ્લાનતા દેખાતી નથી તેમને उपशान्तजीवी મુનિ કહે છે તથા અન્તરગમા જે સાધુઓને આહારાદિની અપ્રાપ્તિમા ક્રોધાદિ કષાયોનુ ઉપશમન રહે છે તેઓ प्रशान्तजीवी મુનિ છે, દોષારહિત અન્નાદિ ખાઈને જ જે પોતાનો જીવન નિર્વાહ ચલાવે છે તેમને विविक्तजीवी મુનિ કહે છે ક્ષીર-દૂધ, મધુ-સાકર આદિ મધુર દ્રવ્ય તથા સર્પિ-ઘૃત એ પદાર્થોનો જે આહાર નથી કરતા તેમને अक्षीरमधुसर्पिष्क મુનિ કહે છે મદ્ય અને માસનો જે આહાર કરતા નથી તેમને अमद्यमांसाशिक

य ' धीरमतिवुद्धयश्च=धीरा–स्थिरामतिः अवग्रहादिका, बुद्धिः=औत्पत्तिक्या- येपा ते तथोक्ताः, तथा ' जे ते ' ये ते, ' आसीविसउग्गतेयकप्पा' आशीविपो- ग्रतेजः कल्पा =आशीविपाः=सर्पास्ते च ते उग्रतेजस घोरविषवराश्च आशीवि पोग्रतेजसस्तत्तल्याः ये ते-आशीविपोग्रतेजः कल्पा ' तथा 'निच्छयववसायप ज्ज त्तकयमईया ' निश्चयव्यवसायपर्याप्तकृतमतयः=निश्चयः=वस्तुनिर्णयो, व्यवसायः= उद्यमः पुरुपकारइति यावत् तद्विपये पर्याप्ता=परिपूर्णा कृता=विहिता मतिर्बुद्धिर्यै- स्ते तथोक्ताः=सकलवस्तुनिर्णायका इत्यर्थः तथा–' णिच्च सज्झायज्झाणा ' नित्य स्वाध्यायध्यानाः–नित्य–सर्वदा स्वाध्यायो–वाचनादिकम् , ध्यान=दुर्ध्यानतश्चि- त्तनिरोधरूप येपा तथोक्ताः, अतएव ' अणुवद्धधम्मज्झाणा ' अनुवद्धधर्मध्यानाः= अनुवद्ध–धाराप्रवाहन्यायेन निरन्तर धृत धर्मध्यानम्–आज्ञाविचयापायविचयविपा- कविचयसंस्थानविचयरूप यैस्ते, तथा–'पचमहव्वयचरित्तजुत्ता' पञ्चमहाव्रतचारित्र- युक्ता =पञ्चमहाव्रतानि=प्राणातिपातादिविरमणलक्षणानि तद्रूप यच्चारित्र तेन

एव औत्पत्तिकी आदि वुद्धि जिनकी धीर–स्थिर है, तथा (जे ते आसी विसउग्गतेयकप्पा) जो सर्प के समान उग्रतेज वाले है, (निच्छयवव- सायपज्जत्तकयमइया) निश्चयवस्तुनिर्णय करने मे एव उद्यम–पुरुषार्थ करनेमें जिन्होने अपनी वुद्धि को परिपूर्ण बना लिया है, अर्थात् जो अच्छी तरह से समस्त वस्तुओ का निर्णय करने वाले है तथा (निच्च सज्झा यज्झाणा) जो नित्य ही वाचनादिरूप स्वाध्याय में एव आर्त्तरौद्ररूप दुर्ध्यान से चित्त निरोधरूप ध्यान मे मग्न रहते हैं, इसीलिये (अणुवद्ध- धम्मज्झाणा) धारा प्रवाह न्याय से जिनका निरन्तर आज्ञाविचय, अपायविचय, संस्थानविचय रूप धर्मध्यान होता रहता है, तथा (पच- महव्वय चरित्तजुत्ता) जो प्राणातिपातादि विरमणरूप पचमहाव्रतों से

અવગ્રહાદિરૂપ મતિ અને ઔત્પત્તિકી આદિ બુદ્ધિ ધીર–સ્થિર છે, તથા “ जे ते आसी विसउग्गतेयकप्पा ” જે સર્પના સમાન ઉગ્ર તેજવાળા છે, “ निच्छय ववसाय पज्जत्तकयमइया ” નિશ્ચયવસ્તુ નિર્ણય કરવામા અને ઉદ્યમ–પુરુષાર્થ કરવામા જેમણે પોતાની બુદ્ધિને પરિપૂર્ણ બનાવી લીધી છે, એટલે કે જે સારી રીતે સમસ્ત વસ્તુઓનો નિર્ણય કરનાર છે, તથા “ निच्च सज्झाय- ज्झाणा ” જે નિત્યવાચનાદિરૂપ સ્વાધ્યાયમા અને આર્ત્તરૌદ્રરૂપ દુર્ધ્યાનમાથી ચિત્તનિરોધરૂપ ધ્યાનમા લીન રહે છે, તેથી ‘ अणुवद्धधम्मज्झाणा ” ધારા પ્રવાહ ન્યાયથી જેમનુ નિરન્તર આજ્ઞાવિચય, અપાય વિચય, સંસ્થાન વિચયરૂપ ધર્મ ધ્યાન રહ્યા કરે છે, તથા “ पचमहव्वयचरित्तजुत्ता ” જે પ્રાણાતિપાતાદિ વિર-

तथा-' सुयधरविदितत्थकायबुद्धिणो ' श्रुतधरविदितार्थकायबुद्धय.=श्रुतधराः-श्रुतज्ञानिनस्तैर्विदितो ज्ञातोऽर्थकः यः=तत्त्वज्ञानराशिः श्रुतसमूहो यया सा श्रुतधरविदितार्थकाया, तादृशी बुद्धिर्येषा ते तथोक्ताः', तथा-' धीरमइबुद्धिणो

रहता है-उस आसन को लगडासन कहते है। इस आसन से जो मुनि शयन करते हैं वे लगडशायी मुनि है। सोते समय जो एक ही करवट से सोते है-करवट नहीं बदलते हैं-ऐसे मुनि एक पार्श्विक हैं। जो साधुजन, शीत, उष्ण आदि की आतापना लेते है वे आतापक मुनि हैं। हेमन्त ऋतु में जो प्रावरण से रहित होते है वे अप्रावृत मुनि है। जो मुनि अपने मुख के श्लेष्मा के अपरिष्ठापक होते हैं वे अनिष्ठीवक मुनि हैं। जो मुनि शरीर में खुजली चलने पर भी उसे नहीं खुजाते है वे मुनि अकण्डूयक है। तथा जो अपने केशों का मूछ दाढी आदि के बालों का-तथा नखों का सस्कार नही करते है-जैसे है वैसा ही उन्हें रखे रहते है ऐसे मुनि धृतकेशश्मश्रुलोमनखवाले कहलाते है यह जिन कल्पिक मुनियोंका तथा जो मुनि अपने समस्त शरीर का सस्कार नहीं करते हैं वे मुनि सर्व, गात्रप्रतिकर्मविमुक्त हैं। तथा (सुयधरविदियत्थकायबुद्धिणो) श्रुतज्ञानियों द्वारा तत्त्वज्ञानराशिरूप श्रुतसमूह जिसके प्रभाव से विदित होता है ऐसा जिन्ही की बुद्धि है तथा (धीरमइबुद्धिणो) अवग्रहादिरूपमति

ભાગ જમીનથી અદ્ધર રહે છે, તે આસનને લગુડાસન કહે છે તે આસને જે મુનિ શયન કરે છે તેમને लगडशायी મુનિ કહે કહે છે સૂતી વખતે જે એકજ પડખે શયન કરે છે-પડખુ ફેરવતા નથી-તેવા મુનિઓ एकपार्श्विक કહેવાય છે જે મુનિજનો શીત, ગરમી આદિની આતાપના લે છે તેમને आतापक મુનિ કહે છે, હેમન્ત ઋતુમા જે પ્રાવરણથી રહિત હોય છે તેમને अप्रावृत મુનિ કહે છે જે મુનિ પોતાના મુખના શ્લેષ્માના અપરિષ્ઠાપક હોય છે તેમને अनिष्ठीवक કહે છે જે મુનિ શરીરમા ખુજલી ચળ આવવા છતા પણ તેને ખજવાળતા નથી તેમને अकण्डूयक મુનિ કહે છે જે મુનિ પોતાના કેશના-મૂછ, દાઢી આદિના વાળના તથા નખના સસ્કાર (છેદન) કરતા નથી, જેવા હોય તેવાજ તેને રહેવા દે છે, એવા મુનિઓને धृतकेशश्मश्रुलोमनखा કહે છે તથા જે મુનિ પોતાના સમસ્ત શરીરના સસ્કાર કરતા નથી તે મુનિઓને सर्वगात्रप्रतिकर्मविमुक्त " કહે છે તથા " सुयधर विदियत्थकायबुद्धिणो " શ્રુતજ્ઞાનીઓ દ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનરાશિ શ્રુતસમૂહ જેના પ્રભાવથી વિદિત થાય છે એવી જેમની બુદ્ધિ છે તથા ' धीरमइबु

में नहीं आया। इसका कारण केवल यही हुआ कि उनकी अन्तरग दृष्टि इस महनीय तत्व तक गहराई के साथ नहीं पहुँच पाई। इसके वास्तविक अन्तरग स्वरूप का विवेचन यदि हमे कहीं मिलता है तो वह एक वीतराग परपरा में ही मिलता है। इसका कारण यहाँ यह हुआ कि जिन तीर्थंकर गणधर आदिकों ने इस तत्व का विवेचन किया वे बहुत ही बड़ी सूक्ष्मदृष्टिवाले थे। ज्ञान के पूर्ण विकास से वे इतने अधिक विज्ञानी बन चुके थे कि प्रत्येक पदार्थ अपनी समस्त अवस्थाओं के साथ उनके उस विशिष्ट ज्ञान में दर्पण मे प्रतिबिम्ब की तरह स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित झलकता रहता था। अत इस प्रकार के ज्ञान से उन्होंने अहिंसा भगवती के वास्तविक स्वरूप का दर्शन किया है तभी जाकर उन्होंने अपने सिद्धान्तो में इसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया है। यह विवेचन छद्मस्थों से नहीं हो सका। यही बात सूत्रकारने अपने इस सूत्र द्वारा प्रदर्शित की है वे कहते हैं कि इस अहिंसा भागवती के दर्शन उन महापुरुषोंने किये हैं कि जो अपरिमित केवल ज्ञान और दर्शन के अधिपति थे। शील, विनय, तप और सयम से जिन्होंने अपनी आत्मा को बिलकुल 'सौटची के' सोने जैसा बना लिया था। जिनके पास राग द्वेष जेसे विशाल योधा पछाड़ खाकर सर्वथा विनष्ट हो चुके

શામ કેવળ એ જ આવ્યુ કે તેમની અન્તરગ દૃષ્ટિ આ મહાન તત્ત્વમા ઉડાણથી પ્રવેશી નથી તેના વાસ્તવિક અન્તરગ સ્વરૂપનુ વિવેચન આપણને વીતરાગ પરપરા સિવાય અન્ય સિદ્ધાતોમા મળતુ નથી તેનુ કારણ એ છે કે જે તીર્થંકર, ગણધર આદિએ આ તત્ત્વનુ વિવેચન કર્યું છે તેઓ બહુ જ દીર્ઘદૃષ્ટિવાળા હતા જ્ઞાનના પૂર્ણ વિકાસથી તેઓ એટલા બધા વિજ્ઞાની બની ગયા હતા કે પ્રત્યેક પદાર્થ તેની સમસ્ત અવસ્થાઓ સહિત તેમના એ વિશિષ્ટ જ્ઞાનથી જેમ દર્પણમા પ્રતિબિંબ દેખાય તેમ સ્પષ્ટરૂપે દેખાતા હતા, તેથી એ પ્રકારના જ્ઞાનથી તેમણે ભગવતી અહિંસાના વાસ્તવિક સ્વરૂપનુ દર્શન કર્યું હતુ, તેથી જ તેઓએ પોતાના સિદ્ધાન્તોમા તેનુ સૂક્ષ્મમા સૂક્ષ્મ વિવેચન કર્યું છે, આ વિવેચન છદ્મસ્થો વડે થઈ શક્યુ નહીં એ જ વાત સૂત્રકારે પોતાના આ સૂત્ર દ્વારા પ્રદર્શિત કરી છે તેઓ કહે છે કે આ ભગવતી અહિંસાના દર્શન તે મહાપુરુષોએ કર્યા છે કે જેઓ અનન્ત જ્ઞાન અને દર્શનના અધિપતિ હતા, જેમણે શીલ, વિનય, તપ અને સયમ દ્વારા પોતાના આત્માને "સો ટચના" સોના જેવો વિશુદ્ધ બનાવ્યો હતો જેમની પાસે રાગદ્વેષરૂપી સમર્થ યોદ્ધા ભો ભેગા થઈને તદ્દન નષ્ટ થયા હતા ત્રણેલોક જેમની

युक्ता येते तथा-' समियासमिईसु ' समिताः समितिषु=ईर्यादिपञ्चसमितिभिर्युक्ता इत्यर्थः, तथा-' समियपावा ' शमितपापाः=शमित=शान्तं पापं=प्राणातिपातादिरूपं येषां ते तथोक्ताः, तथा ' छव्विहजगवच्छला ' षड्विधजगद्वत्सलाः=षड् जीवनिकायहिता इत्यर्थः, तथा-येते ' णिच्चमप्पमत्ता ' नित्यमप्रमत्ताः=सर्वदा प्रमादरहिता सन्ति, ' एएहिय ' एतैश्च पूर्वोक्तगुणविशिष्टैः, तथा-' अण्णेहि य' अन्यैश्च-अनुकूललक्षणैर्गुणवद्भिर्या सा=जगत्प्रसिद्धा एषा भगवती अहिंसा ' अणुपालिया ' अनुपालिता- वाङ्मनःकाययोगैराराधितेत्यर्थः ॥ सू-४ ॥

युक्त बने हुए हैं, तथा (समिइसुसमिया (जो ईर्या आदि पांच समितियों से युक्त हैं और इसी कारण से (समिइपावा) जिन्हों के प्राणातिपातादिरूप पाप शांत हो चुके हैं, तथा (छव्विह जगवच्छला) जो सदा छहकाय के जीवों की रक्षा करने में वत्सल भाववाले होते हैं तथा (णिच्चमप्पमत्ता) जो पांच प्रमादों से नित्य रहित होते हैं (एएहिं) ऐसे इन पूर्वोक्त गुणों से विशिष्ट महात्माजनों द्वारा तथा (अण्णेहिय) इस प्रकार के लक्षणों से युक्त अन्य गुणवालों द्वारा (जा सा भगवई) यह जगत्प्रसिद्ध भगवती अहिंसा (अणुपालिया) मन, वचन, और काय, इन तीन योगों की एकाग्रता से अच्छी तरह आराधित की गई है।

भावार्थ—अहिंसा तत्व को यद्यपि प्रत्येक सिद्धान्तकारोंने अपने २ सिद्धान्तानुसार अपनाया है। परन्तु इस तत्व का बाहिरी स्वरूप विवेचन करते ही वे रह गये हे । अन्तरग स्वरूप विवेचन उनकी दृष्टि

અણુરૂપ પાચ મહાવ્રતોથી યુક્ત થયેલ છે, તથા " समिइ सुसमिया " જે ઇર્યા આદિ પાચ સમિતિયોથી યુક્ત છે અને એ જ કારણથી " समिइपावा " જેમના પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ પાપ શાન્ત થઇ ગયા છે, તથા " छव्विहजगवच्छला " જે સદા છકાયના જીવોની રક્ષા કરવામા વત્સલ ભાવ વાળા હોય છે, તથા " णिच्चमप्पमत्ता " જે સદા પાચ પ્રમાદોથી રહિત હોય છે "एएहि" એવા એ પૂર્વોક્ત ગુણોથી યુક્ત મહાત્માજનો દ્વારા તથા " अण्णेहिय " આ પ્રકારના ગુણોથી યુક્ત અન્ય ગુણવાનો દ્વારા " जा सा भगवई " આ જગવિખ્યાત ભગવતી અહિંસા "अनुपालिया" મન, વચન, અને કાય, એ ત્રણે યોગોની એકાગ્રતાથી સારી રીતે આરાધવામા આવી છે

ભાવાર્થ—અહિંસા તત્ત્વને જો કે દરેક સિદ્ધાન્તકારોએ પોત પોતાના સિદ્ધાન્તાનુસાર અપનાવેલ છે, પણ આ તત્ત્વના બાહ્ય સ્વરૂપનુ જ વિવેચન તેમણે કર્યું છે અન્તરગ સ્વરૂપ વિવેચન તેમની નજરે ન પડયુ તેનુ પરિ

न वि गारिहणाए नवि हीलणानिंदणा गारिहणाए भिक्खं गवेसियव्वं, न वि भेसणाए न वि तज्जणाए न वि तालणाए न वि भेसणतज्जणतालणाए भिक्खं गवेसियव्वं, न वि गारवेणं न वि कुहणाए न वि वणीमगयाए न वि गारवकुहणवणीमगयाए भिक्खं गवेसियव्वं, न वि मित्तयाए न वि पत्थणाए न वि सेवणाए न वि मित्तयपत्थणसेवणाए भिक्खं गवेसियव्वं, अण्णाए अगढिए अदुट्टे अदीणे-अविमणे अकलुणे अविसाई अपरितंतजोगी जयणघडण-करणचरियविनयगुणजोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए णिरए। इमं च णं सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चा भावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउसमणं॥५॥

टीका—' इमं च पुढवी ' इत्यादि—

' पुढवीदगअगणिमारुयतरुगणतसथावरसव्वभूयसंजमदयट्ठयाए ' पृथ्वीदकाग्निमारुततरुगणत्रसस्थावरसर्वभूतसंयमदयार्थं, तत्र—पृथिवी—प्रसिद्धा, दक=पानीयम्, अग्निः, मारुतो—वायुः, तरुगणः=वनस्पतिसमूहः, त्रसाः=द्वीन्द्रियादयः, स्थावराः=पृथिव्यादिपञ्चकम्, एतेषां सर्वभूतानां=सर्वप्राणिनां संयमो रक्षणं

जो इस अहिंसारूपप्रथमसंवरद्वार को पालन करने के लिये उद्यत हैं उन्हें क्या करना चाहिये सो कहते हैं—' इमं च ' इत्यादि।

टीकार्थ-(पुढवी-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय संजम दयट्ठाए) पृथिवी, दक-जल, अग्नि, वायु, वनस्पति समूह, द्वीन्द्रियादिक पांच स्थावर, इन सब प्राणियों की रक्षा निमित्त दयारूप

જેઓ આ અહિંસારૂપ પ્રથમ સંવરદ્વારનું પાલન કરવાને માટે તૈયાર થયા છે તેમણે શું કરવું જોઈએ તે કહે છે— " इमं च " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(पुढवी, दग, अगणि, मारुय, तरुगण, तस, थावर, सव्वभूय, संजमदयट्ठाए) પૃથિવી, દક, જલ, અગ્નિ, વાયુ, વનસ્પતિ સમૂહ, દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ, પૃથિવ્યાદિક પાંચ સ્થાવર, એ બધાં પ્રાણીઓની રક્ષા નિમિત્તે દયારૂપ પ્રયોજનને

अथ ये-अहिंसारूपमयमरावगार पालयितुमुद्यतास्तेषा यद्विधेयं तदाह—

मूलम्—इम च पुढवी-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तसथावर-सव्वभूयसंजयदयट्टयाए सुद्ध उञ्छं गवेसियव्व अकयमकारियमणाहुयमणुद्दिट्ठ अकीयकड नवकोडिहिं परिसुद्ध दसहि य दोसेहि विपमुक्क उग्गम उप्पायणेसणासुद्धववगयचुय चइयचत्तदेह च फासुयं च न निसिज्जकहापयोयणक्खासु ओवणियं न तिगिच्छामतमूलभेसज्जकज्जहेउं न लक्खणुप्पाय सुमिणजोइसनिमित्त कहकुहकप्पउत्त न विडभणाए न विरक्खणाए न वि सासणाए न विडभणरक्खणसासणाए भिक्खगवेसियव्वं, न वि वदणाए न विमाणणाए न वि पूयणाए न वि वदणमाणणपूयणाए भिक्ख गवेसियव्व, न वि हीलणाए न वि निंदणाए

थे। तीन लोक जिनकी चरण सेवा कर अपने आपको धन्य मानता था। उन्ही के आदेशानुसार उनकी शिष्यप्रशिष्य परपरा में हुए मनः पर्यय और अवधिज्ञानधारियों ने इस अहिंसा भगवती को भेद प्रभेदो से जाना, और उसे विशेपरूप से देखा। पूर्वधरों ने इसे श्रुत-निबद्ध किया। वैक्रियलब्धिधारियो ने इस भगवती का आजन्म पालन किया। एव आभिनिबोधिक ज्ञानियों से लेकर सर्वगात्रप्रतिकर्म विमुक्तादि अनेक महापुरुषो ने इस अहिंसा भगवती को अपनी २ शक्ति के अनुसार बहुतही अच्छी तरह से पाला है ॥ सू० ४

સેવા કરીને પોતાની જાતને ધન્ય માનતા હતા એમના જ આદેશ પ્રમાણે તેમની શિષ્ય-પ્રશિષ્ય પરપરા થઈ ગયેલ મન પર્યયઅને અવધિજ્ઞાનીઓએ આ ભગવતી અહિંસાને ભેદ-પ્રભેદો સહિત જાણી અને તેનુ વિશેષરૂપે દર્શન કર્યું વૈક્રિય લબ્ધિધારીઓએ આ ભગવતીનુ જીવનપર્યંત પાલન કર્યું અને આભિનિબોધિક જ્ઞાનીઓથી લઈને સર્વગાત્ર પ્રતિકર્મ વિમુક્તા આદિ અનેક મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિંસાનુ પોત પોતાની શક્તિ પ્રમાણે ઘણી જ સારી રીતે પાલન કર્યું છે ॥ સૂ ૪॥

नानुजानाति ३, न पचति ४, न पाचयति ५, पचन्त नानुजानाति ६, न क्रीणाति ७, न क्रापयति ७, क्रीणन्त नानुजानाति ९, इत्येता नवकोटयः. आभिः 'परिसुद्ध' परिशुद्ध, तथा-'दसहिं य दोसेहिं' दशभिश्च दोषैः-शङ्कितादिदश-दोषैः 'विप्पमुक' विमुक्तम्, 'उग्गमउप्पायणेसणासुद्ध' उद्गमोत्पादनै-षणाशुद्ध=आधाकर्मादयः षोडष उद्गमदोषाः, धात्र्यादयश्च षोडश उत्पादना-दोषाः, तद्रूपाया एषणा=गवेषणा, तया शुद्धम्, तथा-'ववगयचुयचइय-चत्तदेह च' व्यपगतच्युतत्याजितत्यक्तदेह च=तत्र व्यपगताः=स्वय पृथग्भूता आगन्तुका पिपीलिकादयः, च्युताः=मृताः स्वत परतोवा दातव्यवस्त्वाश्रिता

उसने साधु के निमित्त दूसरों से हिंसा कराई हो २, और न साधु के निमित्त हिंसा करने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। तथा साधु के निमित्त जो स्वय न पकाया हो १, दूसरों से नही पकवाया गया हो २ और न जिसमें पकाने वाले की अनुमोदना की गई हो ३, तथा साधु के निमित्त जो पैसा देकर न खरीदा गया हो १, न दूसरों से खरीदवाया गया हो २ और न जिसमें खरीदने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। इस प्रकार की इन नव कोटियो से विशुद्ध आहार आदि की गवेषणा साधु को करनी चाहिये। (दसहिय दोसेहिं विप्पमुक्क) जो आहार शंकित आदि दश दोषों से परि वर्जित हो (उग्गम उप्पायणेसणासुद्ध) उद्गम, उत्पादनरूप एषणा-गवेषणा से शुद्ध हो-आधाकर्म आदि सोलह उद्गमदोष हैं, धात्री आदि सोलह उत्पादना दोषो हे। इन बत्तीस दोषों से जो रहित हो तथा (ववगयचुयचइयचत्तदेह) (व्यपगत) जिस

કરાવી ન હોય, કે સાધુને નિમિત્તે હિંસા કરવાની અનુમોદના થઈ ન હોય, તથા સાધુને નિમિત્તે જે તેણે જાતે બનાવ્યુ ન હોય, બીજા પાસે બનાવરાવ્યુ ન હોય, કે જેને પકવવાની અનુમોદના અપાઈ ન હોય તથા સાધુને નિમિત્તે જે પૈસા આપીને ખરીદ કર્યું ન હોય, કે બીજા પાસે ખરીદ કરાવાયુ ન હોય, કે ખરીદનારને ખરીદવાની અનુમોદના કરાઈ ન હોય, એ રીતે નવ પ્રકારે વિશુદ્ધ આહાર આદિની સાધુએ ગવેષણા કરવી જોઈએ (दसहिय दोसेहिं विप्पमुक्क) જે આહાર શકિત આદિ દસ દોષોથી રહિત હોય, (उग्गमउ प्पायणे सणा सुद्ध) ઉદ્ગમ, ઉત્પાદનારૂપ એષણા-ગવેષણાથી શુદ્ધ હોય,-આધાકર્મ આદિ સોળ ઉદ્ગમ દોષ છે, ધાત્રી આદિ સોળ ઉત્પાદના દોષ છે-એ બત્રીસ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા (ववगयचुयचइयचत्तदेह) (વ્યપગત) જે આહારમાથી કીડી આદિ જીવો જાતે જ અલગ થઈ ગયા હોય, તથા (चुय) જીવો સ્વય ચવ ગયા

तन्निमित्ता या दया तस्या अर्थं=प्रयोजन तस्मै, ' इमं च ' इद च-वक्ष्यमाण ' सुद्ध ' शुद्ध=निर्दोष ' उञ्छ ' उञ्छ=स्तोक स्तोक ग्रहणम्पगशनादिक ' गवेसयव्व ' गवेषितव्यम्, यथा-लूनानक्षेत्रात्कणादान तथैव साधुनाऽपि गृहस्थार्थे निष्पादितमन्नादिकस्तोक स्तोक गवेषणीयमिति भाव । कीदृशम्-उञ्छ गवेषितव्यम् ? इत्याह—' अकय ' अकृत=साधु निमित्तमनिष्पादितम्, ' अकारिय ' अकारितम्=अन्यद्वारा न कारितम्, तथा-' अणाहूय ' अनाहूतम्=गृहस्थेन साधो रनिमन्त्रणपूर्वक दीयमानम्, ' अणुद्दिट्ठ ' अनुद्दिष्टम्=औद्देशिकादि दोषवर्जितम्, तथा-' अकीयकड ' अक्रीतकृत=साधूना कृते मूल्येनानिष्पादितम् । एतदेव वर्णयन्नाह—' नवकोडीहिं ' नवकोटिभिः, न हन्ति १, न घातयति २, घ्नन्त

प्रयोजन के लिये (इम च) इस वक्ष्यमाण (सुद्ध उञ्छ गवेसियव्व) शुद्ध-निर्दोष, आहार आदि की उञ्छ थोड़े २ रूप में गवेषणा करना चाहिये, अर्थात् जिस प्रकार काटे गये खेत से कणों का आदान किया जाता है उसी प्रकार साधु को गृहस्थ ने अपने लिये बनाये हुए भोजन आदि में से थोड़ी थोड़ी मात्रा में उसके यहा से आहार आदि लेना चाहिये। आहारादि (अकय) साधु के निमित्त उसने नहीं बनाया हो और (अकारिय) न दूसरों से उसने बनवाया हो (अणाहूय) बुलाकर-अर्थात्-निमत्रण करके जो न दिया जाय, (अणुद्दिट्ठ) औद्देशिक आदि दोषों से जो वर्जित हो, तथा (अकीयकड) साधुओं के निमित्त मूल्य देकर जो नहीं खरीदा गया हो तथा (नव कोडिहिं-परिसुद्ध) नवकोटियों से अर्थात् नौ प्रकार से जो परिशुद्ध हो, अर्थात् जिस आहार में साधु के निमित्त जीवों की हिंसा नहीं हुई हो, न

માટે (इम च) इसवक्ष्यमाण, (सुद्ध उञ्छ गवेसियव्व) શુદ્ધ, નિર્દોષ આહાર આદિની થોડા થોડા પ્રમાણમા ગવેષણા કરવી જોઈએ, એટલે કે જેમ લણાયેલ ખેતરરમાથી કણોનુ આદાન કરાય છે, એ જ પ્રમાણે સાધુએ, ગૃહસ્થ દ્વારા પોતાને માટે બનાવાયેલ ભોજન આદિમાથી થોડા થોડા પ્રમાણમા આહાર આદિ લેવો જોઈએ તેણે તે આહારાદિ (अकय) સાધુને માટે બનાવ્યા હોવા જોઈએ નહી, અને (अकारिय) બીજાની પાસે બનાવરાવ્યા હોવા જોઈએ નહી (अणाहुय) બોલાવીને એટલે તે નિમત્રીને જે ન અપાય, (अणुद्दिट्ठ) ઔદ્દેશિક આદિ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા (अकीयकड) સાધુને માટે મૂલ્ય આપીને તે ખરીદાયેલ ન હોય, તથા (नवकोडिहिं परिसुद्ध) નવ કોટીઓ વડે-નવ પ્રકારે જે પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે તેણે સાધુને નિમિત્તે બીજા પાસે હિંસા

भूतादिनिग्रहलक्षणः, मूलम् वृक्षवल्ल्यादीनां, भैषज्य=द्रव्यसयोगरूपम्, एतच्च-तुष्टयरूप कार्यमेव हेतु यत्र तत्तथो भैक्ष न गवेषितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा-'न लक्खणुप्पायसुमिण जोइस निमित्तकहकुहकप्पउत्त' न लक्षणोत्पात स्वप्न ज्योतिष निमित्तकथाकुहक प्रयक्त=तत्र लक्षण=स्त्रीपुरुषादि लक्षण, उत्पाताः =भूकम्पादिशास्त्राणि, स्वप्नः-स्वप्नशास्त्रम्, ज्योतिष-नक्षत्रादि शुभाशुभसूचक शास्त्रम् निमित्त=भूतभविष्यदादि सूचक शास्त्रम्, कथा=कामकथा सूचक शास्त्रम्, कुहक=परेषा विस्मयोत्पादकप्रयोगः, एभि प्रयोगैर्विस्मितेन दायकेन प्रयुक्त

इलाज, मन्त्र-भूतादि ग्रह के निग्रह निमित्त उपायभूत मन्त्र का प्रयोग, मूल-वनौषधि, एव भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, ऐसी भिक्षा मुनिजनों को कल्प्य नही होती है। तथा न लक्खणुप्पायसुमिणजो-इसनिमित्तकहकुहकप्पउत्त) जिस भिक्षा की प्राप्ति मुनि को लक्षणो के स्त्री पुरुष आदि के चिह्नादिको के-दिखाने का प्रदर्शन करना पडे, भूकप आदि के शास्त्र का कथन करना पड़े, स्वप्नशास्त्र का, जोतिष-शास्त्र का, निमित्त शास्त्र का, काम कथा सूचक शास्त्र का, तथा दूसरों के लिये आश्चर्योत्पादक प्रयोगो का सहारा लेना पडे, ऐसी भिक्षा मुनिजन के लिये कल्प्य नही है। तात्पर्य इसका यह है कि दाता को उनके हस्त आदि की रेखाओ से प्रसन्न करके, भूकप आदि का शुभा-शुभफल कथन करके, काम वर्द्धक कथाओ को कह करके, सप्न शास्त्र का प्ररूपण करके, ज्यौतिषशास्त्र में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके तथा आश्चर्यकारी प्रयोगों को दिखा करके यह कहना कि मैं बहुत

ભૂતાદિગ્રહના નિગ્રહને માટે ઉપાયભૂત મ ત્રનો પ્રયોગ, મૂળ-વનૌષધિ, અને ભેષજ્ય-અનેક ઔષધિ મિશ્રિત દવા, આદિ બતાવવુ પડે એવો આહાર મુનિ-જનોને કલ્પે નહી તથા (नलक्खणुप्पाय सुमिणजोइसनिमित्त कह कुहकप्पउत्त) જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિને માટે મુનિને સ્ત્રી-પુરુષ આદિના ચિહ્નાદિકોને બતાવવાનુ પ્રદર્શન કરવુ પડે ભૂકપ આદિના શાસ્ત્રોનું કથન કરવુ પડે, સ્વપ્ન શાસ્ત્ર, જ્યોતિષશાસ્ત્ર, નિમિત્ત શાસ્ત્ર, કામકથા સૂચક શાસ્ત્ર, તથા બીજાને માટે આશ્ચર્યોત્પાદક પ્રયોગો વગેરેની મદદ લેવી પડે એવી ભિક્ષા મુનિજનોને કલ્પે નહી તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે દાતાને તેમના હસ્ત આદિનિ રેખાઓ વડે ખુશ કરીને, ભૂકપ આદિનુ શુભાશુભ ફળ કહીને, કામવર્ધન કથાઓ કહીને, સ્વપ્ન શાસ્રનુ પ્રરૂપણ કરીને, જ્યોતિષશાસ્ત્રમા પોતાની વિદ્વત્તા બતાવીને, તથા આશ્ચર્યકારક પ્રયોગો બતાવીને પોતે બહુ જ મહાન વિદ્વાન છે એવી છાપ

पृथिवीकायिकादयः 'चइय' त्याजिताः=दातव्यपदार्थात् दायकेन भृत्यादि द्वारा पृथक्कारिता, अथवा 'चत्ता' स्वयमेव दायकेन त्यक्ताः=पृथक्कृता देहाः= जीवशरीराणि यस्मादाहारात्तत् तथोक्तम्, अतएव 'फासुय च' प्रासुकं च= व्यपगतजीवं च, एतादृशम्-आहारमशनादिकं गवेषितव्यम्। तथा कीदृशं नैव न गवेषितव्यम्? इत्याह—'न निसिज्जकहापओयणक्खासु ओवणीय' न निषद्य कथाप्रयोजनाख्याश्रुतोपनीतं, तत्र-निषद्य आसने उपविश्य यत् कथा-प्रयोजनं=धर्मकथानिमित्तम् आख्या=श्रुतम्=आख्यानं प्रति रक्षशाल, तेन तथा-विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्थे दायकेन दातुमानीतमशनादिकं, तन्न गवेषितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा-'न तिगिच्छामंतमूलभेसज्जकज्जहेउ' न चिकित्सामन्त्रमूलभेषज्यकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्रः=

आहार से पिपीलिकादिक जीव स्वयं अलग हो गए हों तथा (चुय) जीव स्वयं चव गये हों अथवा अग्न्यादि के संयोग से चवगये हों, (चइय) दाता ने भृत्यादि द्वारा पृथक् करा दिये हों, (चत्त) स्वयं दाता ने पृथक् कर दिये हो, (फासुय च) प्रासुक ऐसा अशन आदि मुनिजनों को कल्प्य है और ऐसे ही आहार की उन्हें गवेषणा करनी चाहिये। तथा जो ऐसा न हो उसकी उन्हें गवेषणा नहीं करनी चाहिये, इसी विषयको अब सूत्रकार "न निसिज्ज" इत्यादि पदो द्वारा प्रकट करते हैं, वे कहते हैं कि (न निसिज्जकहापओयणक्खासु ओवणीय) आसन पर बैठ कर धर्म कथा सुनाते समय यदि कोई दाता उन मुनिजन के पास देने के लिये अशनादि देय द्रव्य लाया हो तो वह उन मुनिजनों को कल्पता नहीं लेना है। तथा-(न तिगिच्छामंतमूलभेसज्जकज्जहेउ) जिस भैक्ष्य की प्राप्ति में मुनि को चिकित्सा-रोगनिवारण के निमित्त

હોય અથવા અગ્નિ આદિના સંયોગથી નાશ પામ્યા હોય, (चइय) દાતાએ નોકરાદિ દ્વારા અલગ કરાવ્યા હોય, (चत्त) દાતાએ જાતે તેમને અલગ કર્યા હોય, (फासुयच) પ્રાસુક એવો આહાર આદિ મુનિઓને કલ્પે છે અને એવા જ આહારની તેમણે ગવેષણા કરવી જોઈએ, તથા જે આહાર એવો ન હોય તેની ગવેષણા તેમણે કરવી જોઈએ નહીં એ જ વિષયને હવે સૂત્રકાર "न निसिज्ज" ઈત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ બતાવે છે કે (न निसिज्ज कहायओयणक्खासुओवणीय) આસને બેસીને ધર્મકથા સંભળાવતો વખતે જો કોઈ દાતા તે મુનિને આપવાને માટે અશનાદિ દેયદ્રવ્ય લાવ્યો હોય તો તે નિજનોને કલ્પતા નથી, તથા (नतिगिच्छामत मूल भेसज्जकज्जहेउ) જે આહારની પ્રાપ્તિ માટે મુનિને ચિકિત્સા-રોગ નિવારણને માટે ઈલાજ, મંત્ર-

भूतादिनिग्रहलक्षण', मूलम् वृक्षवल्ल्यादीनां, भैपज्य=द्रव्यसयोगरूपम् , एतच्चतुष्टयरूप कार्यमेव हेतु यत्र तत्तथो भैक्ष न गवेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा-'न लक्खणुप्पायसुमिण जोइस्स निमित्तकहकुहकप्पउत्त' न लक्षणोत्पात स्वप्न ज्योतिप निमित्तकथाकुहक प्रयुक्त=तत्र लक्षण=स्त्रीपुरुपादि लक्षण, उत्पाताः =भुकम्पादिशास्त्राणि, स्वप्नः-स्वप्नशास्त्रम् , ज्योतिप-नक्षत्रादि शुभाशुभसूचक शास्त्रम् निमित्त=भूतभविष्यदादि सूचक शास्त्रम् , कथा=कामकथा सूचक शास्त्रम्, कुहक=परेपा विस्मयोत्पादकप्रयोगः, एभि प्रयोगैर्विस्मितेन दायकेन प्रयुक्त

इलाज, मन्त्र-भूतादि ग्रह के निग्रह निमित्त उपायभूत मन्त्र का प्रयोग, मूल-वनौपधि, एव भैपज्य-अनेक औपधि मिश्रित दवा, ऐसी भिक्षा मुनिजनों को कल्प्य नहीं होती है। तथा न लक्खणुप्पायसुमिणजोइसनिनित्तकहकुहकप्पउत्त) जिस भिक्षा की प्राप्ति मुनि को लक्षणो के स्त्री पुरुप आदि के चिह्नादिको के-दिखाने का प्रदर्शन करना पडे, भूकप आदि के शास्त्र का कथन करना पड़े, स्वप्नशास्त्र का, जोतिप-शास्त्र का, निमित्त शास्त्र का, काम कथा सूचक शास्त्र का, तथा दूसरों के लिये आश्चर्योत्पादक प्रयोगो का सहारा लेना पडे, ऐसी भिक्षा मुनिजन के लिये कल्प्य नहीं है। तात्पर्य इसका यह है कि दाता को उनके हस्त आदि की रेखाओ से प्रसन्न करके, भूकप आदि का शुभाशुभफल कथन करके, काम वर्द्धक कथाओं को कह करके, सप्न शास्त्र का प्ररूपण करके, ज्यौतिपशास्त्र में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके तथा आश्चर्यकारी प्रयोगो को दिखा करके यह कहना कि मैं बहुत

ભૂતાદિગ્રહના નિગ્રહને માટે ઉપાયભૂત મન્ત્રનો પ્રયોગ, મૂળ-વનૌષધિ, અને ભૈષજ્ય-અનેક ઔષધિ મિશ્રિત દવા, આદિ બતાવવુ પડે એવો આહાર મુનિજનોને કલ્પે નહીં તથા (नलक्खणुप्पाय सुमिणजोइसनिमित्त कह कुहकप्पउत्त) જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિને માટે મુનિને સ્ત્રી-પુરુષ આદિના ચિહ્નાદિકોને બતાવવાનુ પ્રદર્શન કરવુ પડે ભૂકપ આદિના શાસ્ત્રોનુ કથન કરવુ પડે, સ્વપ્ન શાસ્ત્ર, જ્યોતિષશાસ્ત્ર, નિમિત્ત શાસ્ત્ર, કામકથા સૂચક શાસ્ત્ર, તથા બીજાને માટે આશ્ચર્યોત્પાદક પ્રયોગો વગેરેની મદદ લેવી પડે એવી ભિક્ષા મુનિજનોને કલ્પે નહીં તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે દાતાને તેમના હસ્ત આદિનિ રેખાઓ વડે ખુશ કરીને, ભૂકપ આદિનુ શુભાશુભ ફળ કહીને, કામવર્ધન કથાઓ કહીને, સ્વપ્ન શાસ્ત્રનુ પ્રરૂપણ કરીને, જ્યોતિષશાસ્ત્રમા પોતાની વિદ્વત્તા બતાવીને, તથા આ[illegible] પ્રયોગો બતાવીને પોતે બહુ જ મહાન વિદ્વાન છે એવી છાપ

पृथिवीकायिकादय. 'चइय' त्याजिताः=दातव्यपदार्थात् दायकेन भृत्यादि द्वारा पृथक्कारिता., अथवा 'चत्ता' स्वयमेव दायकेन त्यक्ताः=पृथक्कृता देहाः= जीवशरीराणि यस्मादाहारात् तथोक्तम्, अतएव 'फासुय च' प्रासुक च= व्यपगतजीव च, एतादृशम्-आहारमशनादिकं गवेषितव्यम्। तथा कीदृश भैक्ष न गवेषितव्यम् ? इत्याह—'न निसिज्जकहापओयणक्खासु ओवणीय' न निषद्य कथाप्रयोजनाख्याश्रुतोपनीत, तत्र-निषद्य आसने उपविश्य यत् कथा-प्रयोजन=धर्मकथानिमित्तम् आख्या=श्रुतम्=आख्यान मतिरदृशान्त, तेन तथा-विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्त्रे दायकेन दातुमानीतमशनादिकं, तन्न गवेषितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा-'न तिगिच्छामतमूलभेसज्जकज्जहेउ' न चिकित्सामन्त्रमूलभैषज्यकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्रः=

आहार से पिपीलिकादिक जीव स्वय अलग हो गए हों तथा (चुय) जीव स्वय चव गये हों अथवा अग्न्यादि के सयोग से चवगये हों, (चइय) दाता ने भृत्यादि द्वारा पृथक् करा दिये हों, (चत्त) स्वय दाता ने पृथक् कर दिये हो, (फासुय च) प्रासुक ऐसा अशन आदि मुनिजनों को कल्प्य है और ऐसे ही आहार की उन्हें गवेषणा करनी चाहिये। तथा जो ऐसा न हो उसकी उन्हें गवेषणा नही करनी चाहिये, इसी विषयको अब सूत्रकार "न निसिज्ज" इत्यादि पदो द्वारा प्रकट करते हैं, वे कहते हैं कि (न निसिज्जक कहापओयणक्खासु ओवणीय) आसन पर बैठ कर धर्म कथा सुनाते समय यदि कोई दाता उन मुनिजन के पास देने के लिये अशनादि देय द्रव्य लाया हो तो वह उन मुनिजनों को कल्पता नही लेना है। तथा-(न तिगिच्छामतमूलभेसज्जकज्जहेउ) जिस भैक्ष्य की प्राप्ति में मुनि को चिकित्सा-रोगनिवारण के निमित्त

હોય અથવા અગ્નિ આદિના સયોગથી નાશ પામ્યા હોય, (चइय) દાતાએ નોકરાદિ દ્વારા અલગ કરાવ્યા હોય, (चत्त) દાતાએ જાતે તેમને અલગ કર્યા હોય, (फासुयच) પ્રાસુક એવો આહાર આદિ મુનિઓને કલ્પે છે અને એવા જ આહારની તેમણે ગવેષણા કરવી જોઇએ, તથા જે આહાર એવો ન હોય તેની ગવેષણા તેમણે કરવી જોઇએ નહીં એ જ વિષયને હવે સૂત્રકાર "न निसिज्ज" ઈત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ બતાવે છે કે (न निसिज्ज कहायओयणक्खासुओवणीय) આસને બેસીને ધર્મકથા સભળાવતી વખતે જો કોઇ દાતા તે મુનિને આપવાને માટે અશનાદિ દેયદ્રવ્ય લાવ્યો હોય તો તે મુનિજનોને કલ્પતા નથી, તથા (नतिगिच्छामत मूल भेसज्जकज्जहेउ) જે આહારની પ્રાપ્તિ માટે મુનિને ચિકિત્સા-રોગ નિવારણને માટે ઈલાજ, મંત્ર-

रक्षणशासनेन ' भिक्खं ' भैक्ष ' गवेसियव्व ' गवेपितव्यम्। तथा-' न वि वदणाए ' नापि वन्दनया=नापि प्रशसया " दिग्व्यापिनो भवद्गुणाः पूर्वश्रुताः, परमद्यभवानस्माभि'मत्यक्षीकृतः ' इत्येव रूपया, वन्दनशब्दोऽत्र प्रशसावाचकः, ' न वि माणणया ' नापि माननया आसनादि प्रदानेन ' न विपूयणाए ' नापि पूजनया-दायकाय किंचिद्वस्तुप्रदानरूपया एतदेव समुदायेनाह-' न वि वदणमाणणपूयणाए ' नापिवन्दनमाननपूजनया ' भिक्खं गवेसियव्व ' भैक्ष गवेपित-

आदि को पढ़ा दूंगा तो मुझे इसके यहां से भिक्षा मिलती रहेगी " ऐसे विचार से जो भिक्षा प्राप्त हो तो वह भिक्षा भी मुनि को नहीं लेनी चाहिये। इसी तरह जिस भिक्षा की प्राप्ति मे युगपत् दभन, रक्षण और शासन इनका प्रयोग करना पड़ता हो उस तरह से भी मुनि को भिक्षा की गवेषा नहीं करनी चाहिये। तथा (न वि वदणाए, न विमाणणाए, न वि पूयणाए, न वि वदणमाणणपूयणाए, न वि हीलणाए, न वि निंदणाए, न वि गरिहणाए, नवि हीलणा निंदणा गरिहणाए भिक्खं गवेसियव्व) जिस भिक्षा की गवेषणा करने में साधु को दाता की " आप की गुणराजि दिगन्तनक फैली हुई है- आपकी प्रशंसा मैं ने पहिले से ही सुन रखी है परन्तु साक्षात्कार आप का आज ही हुआ है " इस प्रकार से वदना-प्रशंसा करनी पडे ऐसी भिक्षा साधु को कल्प्य नहीं है। यहा वदन शब्द प्रशसार्थक है। जिस भिक्षा की प्राप्ति में दाता को आसन आदि का प्रदान पूर्वक सन्मान करके अर्थात् आसनादि प्रदान द्वारा दाता को प्रसन्न करके भिक्षा की प्राप्ति करनी पडे-ऐसी भिक्षा भी साधु को लेना उचित नहीं है। इसी तरह दाता

તેને ત્યાથી ભિક્ષા મળ્યા કરશે," એવા વિચારથી જે ભિક્ષા પ્રાપ્ત થાય તે ભિક્ષા પણ સાધુને કલ્પે નહી વળી જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિમા યુગપત ,દભ,રક્ષણ અને શાસનનો પ્રયોગ કરવો પડે એ પ્રકારની ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ મુનિને કલ્પે નહી તથા (न वि वदणाए, न विमाणणाए, न वि पूयणाए, न वदणमाणणपूयणाए, न वि हीलणाए न वि निंदणाए, न वि गरिहणाए न वि हिलणा निंदणा गरिहणाए भिक्खं गवेसियव्व) જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ માટે સાધુને દાતાની ' આપની ગુણરાશિ દિગન્ત સુધી વ્યાપેલ છે, મે આપની પ્રશસા પહેલેથી જ સાભળી હતી પણ આપનો સાક્ષાત્કાર તો આજે જ થયો " એ રીતે વદણા-પ્રશસા કરવી પડે એવી ભિક્ષા સાધુને કલ્પે નહી અહી વદન શબ્દ પ્રશસાના અર્થમા વપરાયો છે આસ-નાદિ આપીને દાતાનુ સન્માન કરવુ પડે અથવા તે રીતે તેમને પ્રસન્ન કરવા પડે તે પ્રકારની ભિક્ષા પણ સાધુને કલ્પે નહી વળી દાતાને પોતાની તરફથી

भैक्ष न गवेषितव्यम् । तथा-' न वि दमणाए ' नापि दम्भनया=मायाप्रयोगेण भैक्ष गवेषितव्यम्, एवं ' नवि रक्खणाए ' नापि रक्षणया=दायकवस्तुरक्षणेन, ' न वि सासणाए ' नापि शासनया=शिक्षणेन=तव पुत्रपौत्रादिकं शिक्षयिष्या-मीति कथनेन समुदायेनाह—' न विडभणरक्खणसासणाए ' नापि दम्भन-

बड़ा भारी विद्वान् हूँ अतः मुझे यह अच्छी तरह अच्छी भिक्षा देगा, इस प्रकार के उपायों का जिस भिक्षा की प्राप्ति में सहारा लेना पड़े वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं कही गई है, अर्थात् इस प्रकार की क्रिया से मुनि को भिक्षा लेने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये । तथा (न विडभणाए) मायाचारी का सहारा लेकर भी भिक्षा वृत्ति मुनि को नही करनी चाहिये, अर्थात् जिस भिक्षा की गवेषणा करने में माया का प्रयोग करना पड़े ऐसी भिक्षा भी मुनिजन को कल्प्य नहीं है । (नवि रक्खणाए, न वि सासणाए, न विडभण रक्खणसासणाए भिक्ख गवेसियव्व) इसी तरह जिस भिक्षा की गवेषणा करने में-प्राप्ति करने में-दायक की वस्तु के संरक्षण का भार अपने ऊपर आया हो, अर्थात्-दाता यह कहे कि " महाराज ! आप इस वस्तु को देखे रहना मैं अभी आकर आपको भिक्षा देता हूं-इस प्रकार दाता अपनी वस्तु के संरक्षण करने का भार मुनि को सोंपता हो और पीछे आकर भिक्षा देता हो तो वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं है । इसी तरह जीस भिक्षा की प्राप्ति में मुनि को यह भाव जगे कि " मैं इस दाता के पुत्र पौत्र

પાડીને દાતા પાસેથી સારા પ્રમાણમા સારી ભિક્ષાની આશા રાખવી, વગેરે ઉપાયોના જે ભિક્ષામા સહારો લેવો પડે તેવી ભિક્ષા સાધુઓને કલ્પે નહીં એટલે કે એ પ્રકારના ઉપાયોથી સાધુઓએ ભિક્ષા લેવાના પ્રયત્ન કરવા જોઈએ નહી તથા (नविडमणाए) માયાચારીની મદદ લઈને પણ મુનિએ ભિક્ષાવૃત્તિ કરવી જોઇએ નહી એટલે કે જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ માટે માયાનો પ્રયોગ કરવો પડે એવી ભિક્ષા મુનિજનોને કલ્પે નહી (न विरक्खणाए, न विसासणाए, न विडभण रक्खण सासणाए भिक्ख गवेसियव्व) એ જ પ્રમાણે જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિમા, દાતાની વસ્તુના સરક્ષણનો ભાર પોતાના પર આવ્યો હોય, એટલે કે દાતા એમ કહે કે " મહારાજ ! આપ આ વસ્તુનુ ધ્યાન રાખજો હુ આપને ભિક્ષા આપુ છુ " આ રીતે દાતા પોતાની વસ્તુના સરક્ષણની જવાબદારી મુનિને સોંપે અને પછી આવીને ભિક્ષા અર્પણ કરે તો તે ભિક્ષા મુનિને કલ્પે નહી એ જ પ્રમાણે જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિમા મુનિના મનમા એવો ભાવ જાગે કે " હુ આ દાતાના પુત્ર, પૌત્ર આદિને ભણે

गवेसियव्व ' भैक्ष गवेषितव्यम्। तथा ' नवि भेसणाए ' नापि भीषणया=दायकभयोत्पादनया, ' न वि तज्जणाए ' नापि तर्जनया-" ज्ञास्यसि रे दुष्ट! इत्यादि तिरस्काररूपया ' न वि तालणाए ' नापि ताडनया=चपेटादिदान-रूपया, समुदायेनोच्यते—' न वि भेसणतज्जणतालणाए ' नापि भीषणतर्जन ताडनया भैक्ष गवेषितव्यम्। तथा ' नवि गारवेण ' नापि गौरवेण ' अहं क्षत्रियोऽस्मीत्याद्यभिमानेन, ' न वि कुहणाए ' नापि कुहनया क्रोधेन, ' न वि व णिमगयाए' नापि वनीपकतया-याचकवृत्त्या, समुदायेनाह—' न वि गारव-कुहणवणिमगयाए ' नापि गौरवक्रोधवनीपकतया भैक्ष गवेषितव्यम्। तथा-' न वि मित्तयाए ' नापि मित्रतया=दायकेन सह मैत्रीभावोत्पादनेन, ' न वि प-त्थणाए ' नापि प्रार्थनया, " यूय दायका, याचकरक्षकाः वय याचका,

---

करना साधु को योग्य नहीं है। इसी तरह (न वि भेसणाए, नवि-तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्ख गवे-सियव्व) दायक (दाता) को भय का उत्पादन करके, " रे दुष्ट मैं तुझे बतलाऊँगा " इस प्रकार दाता का तिरस्कार करके, दायक (दाता) को मारपीट करके, तथा एक ही साथ एक ही दायक (दाता) के साथ भीषणा, तर्जना और ताडना करके भिक्षा की गवेषणा नहीं करनी चाहिये। तथा-(न वि गारवेण न वि कुहणाए, न वि वणीमग-याए नवि गारवकुहणवणीमगयाए भिक्ख गवेसियव्व) ' मैं क्षत्रिय हू " इत्यादि अभिमान रूप गौरव से, क्रोध से, एव याचक वृत्ति से, तथा एक ही साथ गौरव क्रोध एव याचक वृत्ति से भी भिक्षा की गवेषणा नहीं करनी चाहिये। (न वि मित्तयाए न वि पत्थणाए न वि सेवणाए न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्ख गवेसियव्व) तथा

न वि तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्ख गवेसियव्व " દાતાને ભય બતાવીને " રે દુષ્ટ હુ તને બતાવી દઈશ " એ રીતે દાતાનો તિરસ્કાર કરીને, દાતાને માર મારીને તથા એક સાથે દાતા પ્રત્યે ભીષણા તર્જના અને તાડના કરીને ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી જોઈએ નહી તથા " न वि गारवेण, न वि कुहणाए, न वि वणीमगयाए न वि गारवकुहण-वणीमगयाए भिक्ख गवेसियव्व " " હુ ક્ષત્રીય છુ " આદિ અભિમાનરૂપ ગૌરવથી, ક્રોધથી, અને યાચક વૃત્તિથી તથા એક સાથે ગૌરવ, ક્રોધ અને યાચક વૃત્તિથી પણ ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી જોઈએ નહી " न वि मित्तयाए, न वि पत्थणाए, न वि सेवणाए, न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्ख गवे सियव्व " તથા દાતાની સાથે મિત્રતા કરીને, " આપ દાતા છો, યાચકોના

ध्यम् । तथा-' नवि हीलणाए ' नापि हीलनया=" त्वं जात्या नीचोऽसि कथं त्वया भिक्षादीयते" इत्यादि दायक जात्युद्घाटनरूपापमाननया ' नवि निंदणाए ' नापि निन्दनया=" त्वं कृपणोऽसि, वनीपकोऽसि " इति दायकदोषोद्घाटनया, ' न वि गरिहणाए ' नापि गर्हणया= जनसमक्षं दायकनिन्दया, समुदायेनाह- ' न वि हीलणनिंदणगरिहणाए ' नापि हीलननिन्दनगर्हणया ' भिक्खं-

को अपनी ओर से कुछ वस्तु देकर उनसे भिक्षा की चाहना रख भिक्षा की गवेषणा करने का तरीका उचित नहीं है। अर्थात् इस तरीके से भिक्षा की चाहना करना योग्य नहीं है। इसी तरह युगपत्-एक ही दाता के प्रति वन्दन, मानन और पूजन का प्रयोग कर के साधु को भिक्षा की गवेषणा करना योग्य नहीं है। तथा दाता की जातिका उद्घाटनरूप अवमानना करके कि " तुम तो जाति में नीच हो भिक्षा कैसे दोगे " इस प्रकार से कहकर के उसे भिक्षा देने के लिये ऋजु करना और फिर भिक्षा कि गवेषणा निमित्त उसके यहां जाना यह भी साधु का भिक्षा प्राप्ति का तरीका साधु समाचारी के योग्य नहीं है। इसी तरह " तुम कृपण हो वनीपक हो" इस प्रकार से दाता के दोषों को उद्घाटन करना और फिर उसे भिक्षा देने के लिये ऋजु करना यह भी साधु के लिये भिक्षा की गवेषणा करने का तरीका कल्प्य नहीं है। जनता के समक्ष दायककी निन्दा करके, तथा एक ही साथ ,एक ही (दाता) दायक के प्रति हीलना, निन्दना तथा गर्हणा करके भिक्षा की गवेषणा

કોઈ વસ્તુ આપીને તેની પાસેથી ભિક્ષા મેળવવાની આશા રાખીને ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી તે યુક્તિ પણ સાધુને માટે યોગ્ય નથી એટલે કે આ યુક્તિથી ભિક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખવી તે યોગ્ય નથી વળી યુગપત્-એક જ દાતા પ્રતિ વન્દન, માનન, પૂજન, આદિનો પ્રયોગ કરીને ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી તે સાધુને માટે ઉચિત નથી તથા દાતાની જાતિના ઉલ્લેખરૂપ તિરસ્કાર કરીને દા ત "તુ તો નીચ છે, ભિક્ષા કેવી રીતે દઈશ" આ રીતે કહીને તેને ભિક્ષા અર્પણ કરવાને માટે ઋજુ કરવો અને પછી ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ માટે તેને ત્યા જવુ, એ ભિક્ષા પ્રાપ્તિનો ઉપાય સારા આચાર વાળા સાધુને માટે ઉચિત નથી એ જ પ્રમાણે "તમે કંજુસ છો વનીપક છો" એ રીતે દાતાના દોષો જાહેર કરીને પછી તેને ભિક્ષા દેવા માટે ઋજુ કરવો એ ઉપાય પણ સાધુને ભિક્ષાપ્રાપ્તિ માટે કલ્પતો નથી, લોકોની સમક્ષ દાતાની નિન્દા કરીને તથા એક સાથે દાતાની હિલના (તિરસ્કાર) નિન્દા, તથા ગર્હણા કરીને ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી તે સાધુને

'भिक्षालाभो भविष्यति न वे' त्यादि विषादरहितः, तथा—' अपरितत जोगी ' अपरितान्तयोगी=अलाभादिषु तन्तनाटादि शब्दवर्जितः, तथा–' जयण-घडणकरणचरियविणयगुणजोगसपउत्ते ' यतनघटनकरणचरितविनयगुणयोग–समयुक्तः, तत्र–यतन प्राप्तेषु सयमयोगेषु उद्यमः, घटनम्=अप्राप्तसयमयोगप्राप्ति चेष्टनम्, एतद् द्वय कुरुते यः स यतनघटनकरणः, तथा–'चरितविनयः'सेवितो येन स चरितविनयः, तथा–गुणयोगेन=समाधिगुणयोगेन समयुक्तो य. स–गुण योगसमयुक्तः, एतेषा कर्मधारयः, एतादृशो ' भिक्खू ' भिक्षुः=साधु भिक्खे-सणानिरए ' भिक्षैषणानिरतः=भिक्षागवेषणाया निरतो भवेदिति सम्बन्ध, एवम्भूतेन भिक्षुणा भैक्ष गवेषितव्यमिति भाव । अथोपसहरन्नाह—' इम च ' इत्यादि–' इम च ण सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयण ' इद च खलु ' पावयण ' प्रवचन ' सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए ' सर्वे ये जगज्जीवाः=षड्-जीवनिकायाः, तेषा रक्षणरूपा या दया=अनुकम्पा तदर्थ–सर्वजगज्जीवरक्षणदया-र्थम् ' भगवया ' भगवता महावीरेण ' सुकहिय ' सुकथितं न्यायाबाधितत्वात्,

रहित होकर, अकरुण–अपने दुःख को किसी के पास किसी भी रूप में प्रकट नहीं करके, अविषादी–" भिक्षा का लाभ मुझे होगा या नहीं होगा " इस प्रकार के विषाद भाव को छोड करके अपरिततजोगी-भिक्षावृत्ति नहीं मिलने पर तनतनाने की वृत्ति का परित्याग करके, तथा– यतनघटनकरण – प्राप्त सयम मे उद्यमशील तथा अप्राप्त सयम की प्राप्ति करने मे निरन्तर चेष्टाशील, ऐसा साधु कि जो चरित विनय–विनय से युक्त बना हुआ है, तथा गुणयोगसप्रयुक्त–समाधिगुण के योग से जो युक्त हो रहा है ऐसा होकर भिक्षु–मुनि भिक्षैषणा मे–भिक्षा की गवेषणा करने मे निरत होवे । (इम च ण पावयण) यह प्रवचन (सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठाए) षड्‌ निकायरूप जगत के जीवो की रक्षणरूप दया के निमित्त (भगवया सुकहिय) भगवान्

અવિષાદી–" મને ભિક્ષાનો લાભ મળશે કે નહી મળે " એ પ્રકારના વિષાદ ભાવને છોડીને, અપરિતતજોગી–ભિક્ષા નહી મળતા તનતનાવ ની વૃત્તિનો પરિત્યાગ કરીને, તથા યતનઘટનકરણ–પ્રાપ્ત સયમમા ઉદ્યમશીલ તથા અપ્રાપ્ત સયમની પ્રાપ્તિ કરવામા નિરન્તર પ્રયત્નશીલ, એવો સાધુ કે જે ચરિતવિનય વિનયથી યુક્ત થયેલ છે, તથા ગુણયોગસપ્રયુક્ત–સમાધિ ગુણના યોગથી જે યુક્ત થયેલ છે, એવા થઈને ભિક્ષુ-મુનિ ભિક્ષાની ગવેષણા કરવાને પ્રયત્નશીલ થાય " इमच ण पावयण " આ પ્રવચન " सव्वजगज्जीव रक्खणदयट्ठाए " જગતના છકાયના જીવોની રક્ષારૂપ દયાને નિમિત્તે " भगवया सुकहिय "

दीयतामस्मभ्य" मित्यादिरूपया, 'नवि सेवणया' नापि सेवनया=नापि सेवावृत्त्या, समुदायेनाह-'न वि मितपयत्तण सेवणाए' नापि मित्रता प्रार्थना सेवनया भैक्ष गवेषितव्यम्। तर्हि कथ गवेषितव्यम्? इत्याह-'अण्णाए' अज्ञातः=' धनिकोऽय प्रव्रजितः' इति दायकजनैरज्ञातः, 'अगड्ढिए' अगृद्धः= आहारादिषु गृद्धभाववर्जितः, 'अदुट्ठे' अद्विष्टः-आहारेषु दायकेषु वा द्वेषभाववर्जितः, 'अदीणे' अदीन =दीनतावर्जितः, 'अविमणे' 'अविमनाः=अलाभादिप्रयुक्तमानसिकविकाररहितः, 'अकलुणे' अकरुण =स्वदुःखामदर्शक 'अविसाई' अविषादी=

दायक-दाता के साथ मित्रता करके, "आप दाता हैं—याचकों के सरक्षक हैं, हम याचक हैं अत.आप हमें भिक्षा दीजिये ऐसी दाता से प्रार्थना करके, तथा दाता की सेवा वृत्ति करके भिक्षा की गवेषणा नहीं करनी चाहिये। इसी तरह इन तीनों बातों को एक मा.र किसी दाता के साथ प्रयुक्त करके भिक्षा की गवेषणा साधु को नहीं करनी चाहिये। किन्तु (अण्णाए अगड्ढीए अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाई अपरितंतजोगी-जयण घडण करणचरिय विनय गुणजोग सपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए णिरए) अज्ञात-दायिक (दाता) जनों से "यह साधु धनिक थे और धनिक अवस्था से दीक्षित हुए हैं" इस रूप से अज्ञात बनकर अगृद्ध-आहार आदि मे गृद्धभाव से वर्जित होकर, अद्विष्ट-आहार अथवा दाता में द्वेषभाव से विहीन होकर, अदीन-दीनता के भाव से रहित होकर, अविमना-भिक्षा के नहीं मिलने पर मानसिक विकार से

સરક્ષક છો, અમે યાચક છીએ, તો આપ અમને ભિક્ષા આપો" એવી દાતાને પ્રાર્થના કરીને તથા દાતાની સેવાવૃત્તિ કરીને ભિક્ષા પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ નહી એ જ રીતે એ ત્રણે બાબતોનો દાતા પાસે એક સાથે પ્રયોગ કરીને સાધુએ ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી જોઈએ નહી પણ "अण्णाए अगड्ढिए अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाई अपरितकजोगी जयणघडणकरणचरियविनयगुण जोगसपउत्ते भिक्खु-भिक्खेसणाए णिरए" अज्ञात-"આ સાધુ ધનિક હતા એટલે કે ધનિક સ્થિતિમાથી દીક્ષિત થયેલ છે" એ વિષે દાતાઓથી અજ્ઞાત રહીને अगृद्ध-આહાર આદિમા ગૃદ્ધ ભાવથી રહિત બનીને, अद्विष्ट-આહાર અથવા દાતા પ્રત્યે દ્વેષ ભાવ રહિત થઈને, अदीन-દીનતાના ભાવથી રહિત થઈને, अविमना-ભિક્ષા ન મળના છતા પણ માનસિક વિકારથી રહિત થઈને अकरुण-કોઈ પણ પ્રકારે પોતાના દુ ખને કોઈ પણ રીતે પ્રગટ ^-કરીને,

कर्त्तव्य है कि छहकाय के जीवों की रक्षा करे। क्यो कि यह लोक इन्हीं जीवों से भरा हुआ है अतः अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति संयमित रखने से छहकाय के जीवों की रक्षा होती है। मुनिजन इस अहिंसा महाव्रत के पालक होते हैं अतः उनके लिये प्रभु का आदेश है कि वे ऐसे उञ्छ आहार आदि की गवेषणा करने में निरत रहें कि जो शुद्ध हो, अकृत, अकारित, अननुमोदित, अनाहृत, अनुद्दिष्ट, अक्रीतकृत, नवकोटिविशुद्ध, शंकितादिदोषवर्जित, आधाकर्मादि दोषों से विहीन एवं जीवजन्तु रहित हो। ऐसा ही आहारादि उन्हें उनकी सामाचारी के अनुसार कल्पित कहा गया है। इससे विपरीत उनके अहिंसामहाव्रत के प्रतिकूल कहा गया है। इसलिये उन्हे उपाश्रय मे दाता द्वारा देने के लिये लाये गये आहार को कभी नहीं लेना चाहिये। चिकित्सा आदि करके जिसभिक्षा की प्राप्ति हो वह भी उन्हे वर्जनीय कही गई है। कारण मुनिजन सिंहवृत्ति के धारक होते हैं और अयाचक-वृत्ति वाले होते हैं, इस प्रकार के व्यवहार से प्राप्त भिक्षा में सिंहवृत्ति का संरक्षण नहीं होता है। भिक्षा की गवेषणा मे दंभ का आचरण नहीं होना चाहिये, दायक (दाता) की वस्तु के रक्षण का प्रश्न नहीं होना चाहिये और न कोई ऐसी बात ही होना चाहिये कि जिससे मुनि के

જીવોની રક્ષા કરે કારણ કે આ લોક એ જ જીવોથી ભરેલ છે, તેથી પોતાની દરેક પ્રવૃત્તિ સંયમિત રાખવાથી છકાયના જીવોની રક્ષા થાય છે મુનિજન આ અહિંસા મહાવ્રતના પાલક હોય છે, તેથી તેમને માટે ભગવાનનો આદેશ છે કે તેઓ એવા ઉચ્છ આહાર આદિની ગવેષણા કરે કે જે શુદ્ધ હોય, અકૃત, અકારિત, અનનુમોદિત,, અનાહૂત, અનુદ્દિષ્ટ, અક્રીતકૃત, નવકોટિ વિશુદ્ધ શંકિત આદિ દોષ રહિત, આધાકર્માદિ દોષોથી રહિત અને જીવજન્તુ રહિત હોય એવો આહાર જ તેમની સમાચારી અનુસાર તેમને માટે કલ્પે તેવો કહેલ છે તેનાથી ઉલટો આહાર અહિંસા મહાવ્રતને પ્રતિકૂળ ગણાયો છે તેથી તેમણે ઉપાશ્રયમા દાતા દ્વારા અર્પણ કરવા માટે લેવાયેલ આહાર કદી લેવો જોઈએ નહી ચિકિત્સા આદિ કરીને જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ થાય તે પણ તેમને માટે ત્યાજ્ય ગણેલ છે, કારણ કે મુનિજન સિંહવૃત્તિના ધારક હોય છે તથા અયાચક વૃત્તિ વાળા હોય છે આ રીતે મેળવેલ આહારમા સિંહવૃત્તિ તથા અયાચકવૃત્તિનુ સંરક્ષણ થતુ નથી ભિક્ષાની ગવેષણામા દંભનુ આચરણ થવુ જોઈએ નહી, દાતાની વસ્તુના રક્ષણનો પ્રશ્ન ઊભો થવો જોઈએ નહી કે કોઈ વાત ન બનવી જોઇએ કે જેથી મુનિના આચારવિચારમા અન્તર પડે

'अत्तहिय' आत्महितम्=आत्मना जीवाना हित-हितकारणात्, 'पेच्चाभाविय' प्रेत्यभाविक-प्रेत्य = जन्मान्तरे भवति=शुभफलतया परिणमतीत्येव शीलम्, तथा-'आगमेसि भद्द' आगमिष्यद् भद्रम्=भाविकल्याणजनकम् 'सुद्ध' शुद्ध=निर्दोषम् 'नेयाउय' नैयायिक=न्याययुक्तम् 'अकुडिलं' अकुटिलम् ऋजुमोक्षप्रापकत्वात्, 'अणुत्तर' अनुत्तरम्-सर्वप्रधानत्वात्, तथा-'सव्व-दुक्खपावाण' सर्वदुःखपापाना 'विउसमण' व्युपशमनम्=उपशमकारकमिद प्रवचनमिद प्रवचनमिति पूर्वेण सम्बन्ध ॥ सू०५॥

महावीर ने कहा है-इस कथन मे किसी भी तरह से युक्ति और शास्त्र से बाधा नहीं आती है। (अत्तहिय) यह जीवों का हितकारक है और (पेचाभाविय) परभव में शुभ फलरूप से यह परिणमता है। इसीलिये (आगमेसिभद्द) भविष्यकाल में यह कल्याणजनक है। (सुध्ध) भगवान द्वारा प्रतिपादित होने के कारण इसमें किसी भी तरह से कोई पूर्वापरविरोधरूप दोष नहीं आता है-इसलिये शुद्ध-निर्दोष है, तथा (नेयाउय) न्याययुक्त है। (अकुडिल) इसकी आराधना करने से जीव मोक्ष को प्राप्त करलेते हैं इसलिये यह अकुटिल-ऋजु है। (अणुत्तर) समस्त सिद्धान्तों में इसकी प्रधानता होने से यह अनुत्तर है। तथा (सव्वदुक्खपावाणविउसमण) समस्त दुःखों का और पापों का यह उपशमकारक है।

भावार्थ—सूत्रकार इस सूत्र द्वारा यह प्रकट कर रहे हैं कि जो अहिंसारूप संवरद्वार को पालन करने के लिये उद्यत हैं उनका यह

ભગવાન મહાવીરે કહેલ છે-આ કથનમા કોઈ પણ પ્રકારે-યુક્તિ અને શાસ્ત્રથી બાધા આવતો નથી "अत्तहिय" તે જીવોનુ હિતકર્તા છે અને "पेच्चा भाविय" પરભવમા શુભ ફળરૂપે તે પરિણમે છે તેથી "आगमेसिभद्द" ભવિષ્યકાળમા તે કલ્યાણજનક છે "सुद्ध" ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાથી તેમા કોઈ પણ પ્રકારે કોઈ પૂર્વાપર વિરોધરૂપ દોષ આવતો નથી તેથી શુદ્ધ-નિર્દોષ છે, તથા "नेयाउय" ન્યાયયુક્ત છે "अकुडिल" તેની આરાધના કરવાથી જીવ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે તે કારણે તે અકુટિલ-ઋજુ છે, (अणुत्तर) સમસ્ત સિદ્ધાન્તોમા તે મુખ્ય હોવાથી તે अणुत्तर-સર્વોત્તમ છે તથા "सव्वदुक्खपावाण विउसमण" સમસ્ત દુ ખો તથા પાપોનુ તે ઉપશમન કરનાર છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કરે છે કે જેઓ અહિ સા રૂપ સ વરદ્વારનુ પાલન કરવાને તત્પર છે, તેમનુ એ કર્તવ્ય છે કે છકાયના

अहिंसाया पञ्च भावना भवन्तीति ताः प्रतिपादयन् प्रथमामीर्यासमितिरूपां भावनामाह—'तस्स इमा' इत्यादि—

मूलम्—तस्स इमा पंच भावणाओ पढमस्स वयस्स हुंति, पाणाइवायवेरमाणं परिरक्खणट्ठयाए । पढमं-ठाण-गमण गुणजोगजुंजणजुगतर-निवइयाए दिट्ठीए इरियव्व कीड-पयंगतसथावरदयावेरेण निच्चं पुप्फफलतयपवालकदमूल-दगमट्टियवीयहरियं परिवज्जणए सम्मं, एवं खु सव्वे पाणा ण हीलियव्वा न निंदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिंसियव्वा न छिंदियव्वा न भिंदियव्वा न वहेयव्वा न भयं दुक्खं च किंचिलब्भा पावेउं जे एवं इरियासमियजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठानिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥ सू० ६ ॥

पहुँचाकर उससे मुनिजन मात्रा मे भिक्षा लेते हैं। इसी तरह और भी कौन २ सी प्रवृत्तियां भिक्षा की गवेषणा करने मे बाधक होती हैं– वे सब इस सूत्र मे प्रदर्शित की गई है, । मुनि को भिक्षा की गवेषणा करते समय अज्ञात, अगृद्ध, अद्विष्ठ, अदीन, अविमन, अकरुण, अविषादी और अपरितानयोगी आदि स्थिति वाला रहना चाहिये। तभी जाकर पूर्णरूप से अहिंसा महाव्रतरूप सवरद्वारपलता है ॥—॥ सू ० ५ ॥

પાસેથી મુનિજન પરિમિત પ્રમાણમા ભિક્ષા ગ્રહણ કરે છે એ જ પ્રકારે બીજી કઈ કઈ પ્રવૃત્તિયો ભિક્ષાની ગવેષણા કરવામા બાધક થાય છે તે બધુ આ સૂત્રમા બતાવ્યુ છે, ભિક્ષાની ગવેષણા કરતી વખતે મુનિએ અજ્ઞાત, અગૃદ્ધ, અદ્વિષ્ટ, અદીન, અવિમન, અકરુણ, અવિષાદી, અને અપરિતાતયોગી આદિ સ્થિતિ વાળા રહેવુ જોઈએ ત્યારે જ પૂર્ણ રીતે અહિંસા મહાવ્રતરૂપ સવરદ્વારનુ પાલન થાય છે ॥ સૂ-૫ ॥

आचार विचार मे अन्तर पड़ता हो। मैं तुम्हारे पुत्र को पढा दूंगा, आप के गुण दिगन्ततक व्यापक हो रहे हैं आप बड़े दानी हैं, मैं ने आप को आज ही देखा है वैसे तो आपकी कीर्ति कई बार सुन चुका हूँ, ये सब बाते ऐसी हैं जो मुनि की आत्मा को हीन बनाती हैं उसे अपने कर्तव्य से गिराता हैं। इन सब बातों से जो आत्मा का पतन होता है वह सबसे बड़ी हिंसा है। इसीलिये मुनि को इस प्रकार के व्यवहार से प्राप्त होने वाली भिक्षा की गवेषणा करने का निषेध किया गया है। तथा दाता के प्रति मुनि को ऐसा भी व्यवहार नहीं करना चाहिये कि जिससे उसकी आत्मा मे क्लेश भाव जगे, जैसे-'तू कृपण है, वनीपक-याचक है तू क्या भिक्षा देगा, नीच व्यक्ति जो होते हैं वे भिक्षा नहीं देते हैं" इत्यादि अपमान जनक शब्दों में एक तो भाषा समिति नहीं पलती है, तथा ऐसे व्यक्तियो मे जिस किसी प्रकार से भिक्षा देने का जोश जागता है जो उस भिक्षा में शुद्धि का बाधक होता है, भिक्षा देते समय जिस आत्मा मे सक्लेश जगे वह भिक्षा मुनिजनों को अग्राह्य कही गई है। जिस प्रकार फूल को बाधा न पहुँचाकर उससे भ्रमर रस पी लेता है उसी प्रकार दाता को किसी भी प्रकार का सक्लेशन न

"હુ તમારા પુત્રને ભણાવીશ આપના ગુણો દિગન્ત સુધી ફેલાયેલ છે, આપ મોટા દાતા છો, આપની કીર્તિ તો મે ઘણીવાર સાભળી છે પણ આપને જોવાનો લાભ તો આજ જ મળ્યો" આ બધી વાતો એવી છે કે જે મુનિના આત્માને હીન બનાવે છે તેને પોતાની ફરજ ચૂકાવે છે આ બધી વાતોથી આત્માનુ જે પતન થાય છે તે સૌથી મોટી હિંસા છે, તે કારણે એવા પ્રકારના વ્યવહારની પ્રાપ્ત થતી ભિક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મુનિને માટે નિષેધ છે— તથા મુનિએ દાતા પ્રત્યે એવો વ્યવહાર પણ ન કરવો જોઈએ કે જેથી તેના આત્મામા કલેશ થાય, દા ત ' તુ કૃપણ છે, વનીપક યાચક છે, તુ શુ ભિક્ષા આપી શકવાનો છે, જે નીચ વ્યક્તિ હોય છે તે ભિક્ષા દેતી નથી" ઈત્યાદિ અપમાન જનક શબ્દોમા એક તો ભાષા સમિતિનુ પાલન થતુ નથી, તથા એવી વ્યક્તિઓમા ગમે તે રીતે ભિક્ષા આપવાનો જુસ્સો પેદા થાય છે, જે તે ભિક્ષાની શુદ્ધિમા બાધક થાય છે ભિક્ષા દેતી વખતે દાતાના આત્માને કલેશ થતો હોય તો એવી ભિક્ષા મુનિજનોને માટે અગ્રાહ્ય-(ન સ્વિકારવાને યોગ્ય) દર્શાવેલ છે જેમ ફૂલને નુકસાન પહોચાડયા વિના ભમરા તેમાથી રસપાન કરે છે તેમ દાતાને કોઇ પણ પ્રકારનો કલેશ પહોચાડયા વિના તેમની

'पढम' प्रथमम्=ईर्यासमिति भावनामाह—'ठाणगमणगुणजोगजुंजणजुगतरनिवइयाए' स्थानगमनगुणयोगयोजनयुगान्तर–निपातिकया–'ठाण' स्थानम् = उपवेशनमित्यर्थः, 'गमण' गमन=चलनम्, तत्र गुणः=त्रसस्थावरोपघातवर्जनरूपः, तस्य योगः=सम्बन्धस्तं योजयति=करोति या सा स्थानगमनगुणयोगयोजना, तथा–युगान्तरे=युगप्रमाणभूभागे निपतति या सा युगान्तरनिपातिका,

अनुकूल पड़नेवाली थोडी बहुत प्रवृत्तियां स्थूल दृष्टि से विशेष रूप में गिनाई गई हैं। जो भावना के नाम से प्रसिद्ध हैं। यदि इन भावनाओं के अनुसार बराबर वर्ताव किया जाय तो गृहीत व्रत उत्तम औषधि के समान प्रयत्नशील के लिये सुंदर परिणाम कारक सिद्ध होते हैं। यही बात "परिरक्खणट्ठाए" इस पद द्वारा यहां ध्वनित की गई है। इन पांच भावनाओं में जो (पढम) पहिली ईर्यासमिति नामकी जो भावना है वह इस प्रकार है (ठाणगमणगुणजोगजुंजण–जुगतर निवइयाए) स्व पर को क्लेश न हो इस प्रकार यत्न पूर्वक गमन करना इसका नाम ईर्यासमिति है। इसी का विशेष खुलाशा सूत्रकार इसपद द्वारा कर रहे ह–स्थान–बैठना और गमन–चलना इनमें जिसके द्वारा इस प्रकार की प्रवृत्ति होनी चाहिये कि जिससे त्रस और स्थावर जीवोंका उपघातक न हो, इस गुणरूप संबंध को जो जोड़ने वाली हो तथा जिससे युगप्रमाण भूमिभाग का अवलोकन हो रहा हो, अर्थात् चलते २ साधु अपने आगे की युगप्रमाण भूमि का

આવનારી થોડી ઘણી પ્રવૃત્તિયો સ્થૂલ દૃષ્ટિથી વિશેષ રૂપે ગણાવવામા આવેલ છે, જે ભાવનાને નામે પ્રસિદ્ધ છે જો તે ભાવનાઓ પ્રમાણે બરાબર વર્તન કરાય તો ગ્રહણ કરાયેલ વ્રત પ્રયત્નશીલ વ્યક્તિને માટે ઉત્તમ ઔષધિ સમાન કાર્ય સાધક સિદ્ધ થાય છે એ જ વાત "परिरक्खणट्ठाए" પદ દ્વારા અહી દર્શાવવામા આવી છે એ પાચ ભાવનાઓમા જે "पढम" પહેલી ईर्यासमिति નામની જે ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે "ठाणगमणजोगजुंजणजुगतरनिवइयाए" પોતાને કે પરને કલેશ ન થાય તે પ્રમાણે જતન પૂર્વક ગમન કરવું તેનુ નામ ઇર્યાસમિતિ છે તેનુ વધારે સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર આ પદ દ્વારા કરે છે-સ્થાન–બેસવુ અને ગમન–ચાલવાની ક્રિયામા તેમના દ્વારા એ રીતની પ્રવૃત્તિ થવી જોઈએ કે જેથી ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની હત્યા ન થાય, આ ગુણ રૂપ સબંધને જે જોડનારી હોય તથા જેવી યુગ પ્રમાણ ભૂમિભાગનુ અવલોકન થતુ હોય એટલે કે ચાલતી વખતે પોતાની આગળથી યુગ પ્રમાણ ભૂમિનુ

टीका--' तस्स ' इत्यादि ।

' तस्स ' तस्य प्रसिद्धस्य ' पढमस्स वयस्स ' प्रथमस्य व्रतस्य = अहिंसाव्रतस्य ' इमा पंच ' इमाः पञ्च ' भावणाओ ' भावनाः=भाव्यते वास्यते आत्मा याभिस्ताः ईर्यासमित्यादय' ' हुंति ' भवन्ति । किमर्थं पञ्च भावना भवन्ती ? -त्याह - ' पाणाइवायवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ' प्राणातिपात-विरमणपरिरक्षणार्थाय = प्राणातिपातविरमणलक्षणस्य प्रथममहाव्रतस्य परिरक्षणार्थाय । तत्र

इन व्रतों को स्थिर रखने के लिये प्रत्येक व्रत की पांच २ भावनाएँ हैं सो अब सूत्रकार अहिंसाव्रत की जो पांच भावनाएँ होती हैं उनमें सब से पहिली ईर्या समितिरूप पहिली भावना को प्रकट करते हैं— ' तस्स इमा ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तस्स) उस प्रसिद्ध (पढमस्स वयस्स) प्रथमव्रत की (इमा पंच भावणाओ हुंति) ये ईर्यासमिति आदि पांच भावनाएँ होती है। क्यों कि इन भावनाओं से (पाणाइवायवेरमणपरिरक्खणट्ठाए) प्राणातिपातविरमण रूप जो अहिंसा व्रत है उसकी अच्छी तरह रक्षा होती है। तात्पर्य कहने का यह है कि अत्यन्त सावधानी के साथ विशेष २ प्रकार की अनुकूल प्रवृत्तियो का सेवन न किया जाय तो स्वीकार करने मात्र से ही व्रत आत्माको अपने रूप नहीं बना सकते हैं, अर्थात् वे आत्मा मे चिरस्थायी नही रह सकते हैं, निर्दोषरूप से सावधानी के साथ उनका पालन नहीं हो सकता है-वे यथार्थरूप मे आत्मा में नहीं उतर सकते । ग्रहण किये हुए व्रत जीवन को यथार्थरूप से अपने रूप मे रंग सके-अपनी अटल छाप आत्मा पर जमा सके इसलिये प्रत्येक व्रत के

એ પાંચ વ્રતોને સ્થિર રાખવા માટે પ્રત્યેક વ્રતની પાંચ પાંચ ભાવના છે હવે સૂત્રકાર અહિંસાવ્રતની જે પાંચ ભાવના છે તેમાંની સૌથી પહેલી ઈર્યા સમિતિ આદિ આ પાંચ ભાવના પ્રગટ કરે છે—" तस्स इमा " ઇત્યાદિ

" तस्स " તે પ્રસિદ્ધ "पढमस्स वयस्स" પ્રથમ વ્રતની "इमा पंच भावणा हुंति " ઈર્યાસમિતિ આદિ આ પાંચ ભાવનાઓ હોય છે કારણ કે તે ભાવનાઓથી " पाणाइवायवेरमणपरिरक्खणट्ठाए " પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ જે અહિંસાવ્રત છે તેની સારી રીતે રક્ષા થાય છે કહેવાનો ભાવ એ છે કે અત્યંત સાવધાનીથી ખાસ ખાસ પ્રકારની અનુકૂળ પ્રવૃત્તિઓનું સેવન ન કરાય તો સ્વીકાર કરવા માત્રથી જ વ્રત આત્મામાં ચિરસ્થાયી રહી શકતું નથી- નિર્દોષ રીતે સાવધાનીથી તેનું પાલન થઈ શકતું નથી તે યથાર્થ રૂપે આત્મામાં ઉતરી શકતા નથી ગ્રહણ કરાયેલ વ્રતો જીવનને યથાર્થ રીતે પોતાના રંગે રંગી શકે-પોતાની અટલ છાપ આત્મા પર જમાવી શકે-આત્મામાં ઊંડાણથી પ્રવેશી શકે, તે માટે પ્રત્યેક વ્ર

=नावज्ञातव्या भवन्ति, मुनिः प्राणि प्राणसंरक्षणपरत्वात्तान्नावज्ञा विषयीकरोतीति भावः, एवमग्रेऽपि सर्वत्र वाक्यरचना कार्या। 'न निंदियव्वा' न निन्दितव्या भवन्ति–परपीडावर्जनपरत्वात्, 'न गरहियव्वा' न गर्हितव्याः भवन्ति–लोकसमक्ष दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाविषयभूता न भवन्तीत्यर्थ', तथा–'न हिंसियव्वा' न हिंसितव्या'–पादाक्रमणादिना न हन्तव्या', भवन्ति, एव 'न छिंदियव्वा' न छेत्तव्याः खड्गादिना, 'न भिंदियव्वा' न भेत्तव्याः – कुन्तादिना, 'न वहेयव्वा' न व्यथनीया पीडोत्पादनादिना भवन्ति। तथा – 'न भय दुक्ख च लब्भा पावेउ' न भय दुःख च लभ्या प्रापयितुम्, दु'ख भय च प्रापयितु योग्या न भवन्तीति भाव'। एवम्=अनेन प्रकारेण 'इरिया समिइजोगेण' ईर्यासमितियोगेन 'भाविओ' भावितो=वासितो भवति 'अतरप्पा' अन्तरात्मा =जीव', स भावितात्मा–भवतीत्यर्थ, कीदृशो भवति? इत्याह–'असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए' अशवलासंक्लिष्ट निर्व्रणचारित्रभावनया:, अशवला=

यव्वा) निंदा के विषयभूत नहीं बनते हैं। (न गरहियव्वा) लोगों के समक्ष दोषोद्घाटन पूर्वक गर्हा के विषयभूत नहीं बनते हैं। (न हिंसियव्वा) पादादि द्वारा आक्रमिक होकर हिंसा के विषयभूत नहीं बनते हैं, (न छिंदियव्वा) छेदन करने के विषयभूत नहीं बनते है, (न भिंदियव्वा) भेदन करने के विषयभूय नहीं बनते हैं। (न–वहेयव्वा) पीडोत्पादनादि द्वारा व्यथा कष्ट पहुँचाने के योग्य नहीं बनते हैं। (न भय दुक्ख च किंचि लब्भा पावेउ) और न किसी भी तरह से भय ओर दुःख को प्राप्त कराने के योग्य बनते हे। (एव) इस प्रकार (ईरियासमियजोगेण) ईर्या समिति के योग से (भाविओ अतरप्पा) वासित हुआ अन्तरात्मा–जीव–भावितात्मा कहलाता है और यह— (असवलमसकिलिट्ठनिव्वण चरित्त भावणाए) अशवल–मलिनता रहित

સમસ્ત પ્રાણી "ण हीलयव्वा' અવજ્ઞાના વિષયભૂત બનતા નથી 'न निंदियव्वा' નિંદાના વિષયભૂત બનતા નથી, "न गरहियव्वा" લોકોની સમક્ષ દોષોદ્ઘાટનપૂર્વક ગર્હાના વિષયભૂત બનતા નથી "न हिंसियव्वा" પાદાદિ વડે આક્રમિત થઈને હિંસાના વિષયભૂત બનતા નથી, "न छिंदियव्वा" છેદન કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, "न भिंदियव्वा" ભેદન કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, "न वहेयव्वा" પીડા ઉત્પાદન આદિ દ્વારા વ્યથા પહોંચાડવાને યોગ્ય બનતા નથી "न भय दुक्ख च किंचिलब्भा पावेउ" અને કોઈ પણ પ્રકારે ભય અને દુઃખ પ્રાપ્ત કરવાને યોગ્ય બનતા નથી 'एव" આ પ્રકારે "ईरियासमियजोगेण" ઈર્યાસમિતિના યોગથી "भाविओ अतरप्पा" યુક્ત આત્મા–જીવ–ભાવિતાત્મા કહેવાય છે અને તે "असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्त

अनयो धर्मध्यानम्', तया, 'दिट्ठीए' दृष्ट्या, 'कीडपयगतसथावरदयावरेण' कीटपतगत्रसस्थावरदयापरेण, तत्र-कीटाः=क्षुद्रजन्तवो नीलक्षु 'लट' शङ्खादयः, पतङ्गाः=प्रसिद्धाः, इत्यादयः, त्रसस्थावराश्चैकेन्द्रियाः, तेषु दयापरस्तेन, तथा-'पुप्फफलतयपवालकंदमूलदगमट्टियबीयहरियपरिवज्जिएण' पुष्पफलत्वक्-प्रवाल कन्दमूलदकमृत्तिकाबीजहरितपरिवर्जितेन-तत्र-पुष्प फलं च प्रसिद्धम्, त्वक्= पुष्पफलादीनां त्वचा, प्रवालः=पत्राङ्कुरः, कन्दः, सूरणादिकः, मूलम् = मूलक 'दग' दकः=जलम्, मृत्तिका, बीजम्, हरितः=हरितकायः, एते परिवर्जिता येन स तेन, मुनिना 'निच्च' नित्यं 'सम्म' सम्यक्=यतनापूर्वकम्, 'ईरियव्व' ईरितव्य-मार्गे गन्तव्यम्। 'एव-खु' एवं=अमुना प्रकारेण प्रवर्त्तनेन खलु तस्य मुनेः 'सव्वे' सर्वे 'पाणा' प्राणाः=प्राणिनः, 'न हीलियव्वा न हीलयितव्याः

जिससे अच्छी तरह अवलोकन कर चल रहा हो ऐसी (दिट्ठीए) दृष्टि से (कीडपयगतसथावरदयावरेण पुप्फफलतयपवालकंदमूलदगमट्टियबीयहरियपरिवज्जणए णिच्च सम्म ईरियव्व) लट शंख आदि क्षुद्र जन्तुरूप कीटों के ऊपर तथा पतगों आदि जानवरो के ऊपर, एव एकेन्द्रिय स्थावर जीवों के ऊपर दया रखने में तत्पर बने हुए, तथा पुष्प, फल' त्वक्-छाल, प्रवाल,-कोंपल-पत्राङ्कुर, सूरण आदि कद मूल दक-सचित्त जल, मृत्तिका-सचित्तमिट्टी, बीज और हरितकाय, इन सब सचित्तपदार्थो को अपने और पर के उपयोग में लाने का जीवनपर्यंत परित्याग कर चुकने वाले ऐसे मुनिजनों को देख २ कर सदा यतना पूर्वक मार्ग मे गमन करना चाहिये। (एव खु) इस तरह यतनापूर्वक दृष्टि से देख देख कर चलने वाले मुनिजन के (सव्वेपाणा) समस्त प्राणी (ण हीलियव्वा) अवज्ञा के विषयभूत नहीं बनते है। (न निंदि-

---

જેથી સારી રીતે અવલોકન કરીને સાધુ ચાલતા હોય એવી " दिट्ठए " દૃષ્ટિથી "कीडपयगतसथावरदयावरेण पुप्फफलतयपवालकदमूलदगमट्टियबीयहरियपरिवज्जणए णिच सम्म ईरियव्व" લટ શંખ આદિ ક્ષુદ્ર જન્તુરૂપ કીડાઓ ઉપર તથા પતંગિયા આદિ જન્તુઓ ઉપર, અને એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની ઉપર દયા રાખવાને તત્પર બનેલ, તથા પુષ્પ, ફળ, ત્વક્-છાલ, પ્રવાલ-કોંપળ-પત્રાંકુર, સૂરણ આદિ કંદમૂળ, આ બધા સચેત પદાર્થોને પોતાના કે બીજાના ઉપયોગમા લેવાનો આજીવન પરિત્યાગ કરી નાખ્યો હોય એવા મુનિજનોને હંમેશા જોઈ જોઈને યતના પૂર્વક રસ્તા પર ચાલવુ જોઇએ " एव खु " આ રીતે યતનાપૂર્વક નજર વડે જોઇ જોઇને ચાલનાર મુનિજનને " "

=नावज्ञातव्या भवन्ति, मुनिः प्राणि प्राणसरक्षणपरत्वात्तान्नावज्ञा विषयीकरोतीति भावः, एवमग्रेऽपि सर्वत्र वाक्यरचना कार्या । ' न निंदियव्वा ' न निन्दितव्या भवन्ति-परपीडानर्जनपरत्वात्, ' न गरहियव्वा ' न गर्हितव्याः भवन्ति-लोकसमक्ष दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाविषयभूता न भवन्तीत्यर्थः, तथा-' न हिंसियव्वा ' न हिंसितव्याः-पादाक्रमणादिना न हन्तव्याः, भवन्ति, एव ' न छिंदियव्वा ' न छेत्तव्याः खड्गादिना, ' न भिंदियव्वा ' न भेत्तव्याः - कुन्तादिना, ' न वहेयव्वा ' न व्यथनीयाः पीडोत्पादनादिना भवन्ति । तथा - ' न भय दुक्ख च लब्भा पावेउ ' न भय दुख च लभ्याः प्रापयितुम्, दुःख भय च प्रापयितु योग्या न भवन्तीति भावः । एवम्=अनेन प्रकारेण ' इरिया समिइजोगेण ' ईर्यासमितियोगेन ' भाविओ ' भावितो=वासितो भवति ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा =जीव', स भावितात्मा-भवतीत्यर्थ, कीदृशो भवति ? इत्याह-'असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए ' अशबलासक्लिष्ट निर्व्रणचारित्रभावनयाः, अशबला=

व्वा) निंदा के विषयभूतनहीं बनते हैं। (न गरहियव्वा) लोगों के समक्ष दोषोद्घाटन पूर्वक गर्हा के विषयभूत नहीं बनते है। (न हिंसियव्वा) पादादि द्वारा आक्रमिक होकर हिंसा के विषयभूत नहीं बनते है, (न छिंदियव्वा) छेदन करने के विषयभूत नहीं बनते है, (न भिंदियव्वा) भेदन करने के विषयभूय नहीं बनते ह। (न-वहेयव्वा) पीडोत्पादनादि द्वारा व्यथा कष्ट पहुँचाने के योग्य नहीं बनते है। (न भय दुक्ख च किंचि लब्भा पावेउ) और न किसी भी तरह से भय और दु ख को प्राप्त कराने के योग्य बनते है। (एव) इस प्रकार (ईरियासमियजोगेण) ईर्या समिति के योग से (भाविओ अतरप्पा) वासित हुआ अन्तरात्मा-जीव-भावितात्मा कहलाता है और यह— (असबलमसकिलिट्ठनिव्वण चरित्त भावणाए) अशबल-मलिनता रहित

સમસ્ત પ્રાણી " ण हीलयव्वा ' અવજ્ઞાના વિષભૂત બનતા નથી ' न निंदियव्वा ' નિંદાના વિષયભૂત બનતા નથી, " न गरहियव्वा " લોકોની સમક્ષ દોષોદ્ઘાટનપૂર્વક ગર્હાના વિષભૂત બનતા નથી " न हिंसियव्वा " પાદાદિ વડે આક્રમિત થઈને હિંસાના વિષયભૂત બનતા નથી, " न छिंदियव्वा " છેદન કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, " न भिंदियव्वा " ભેદન કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, " न वहेयव्वा " પીડા ઉત્પાદન આદિ દ્વારા વ્યથા પહોંચાડવાને યોગ્ય બનતા નથી " न भय दुक्ख च किंचिलब्भा पावेउ " અને કોઈ પણ પ્રકારે ભય અને દુ ખ પ્રાપ્ત કરવાને યોગ્ય બનતા નથી ' एव " આ પ્રકારે " ईरियासमियजोगेण " ઈર્યાસમિતિના યોગથી " भाविओ अतरप्पा " યુક્ત આત્મા-જીવ-ભાવિતાત્મા કહેવાય છે અને તે "असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित

मालिन्यरहिता, असंक्लिष्टा=विशुद्धयमानमनःपरिणामयुक्ता, निर्व्रणा=अक्षता या चारित्रभावना तया हेतुभूतया 'अहिंसए' अहिंसकः — सभावनाया अहिंसायाः परिपालकत्वात्, 'सजए' संयतः=सम्यग्जीवरक्षायतनोद्यतत्वात्, 'सुसाहू' सुसाधु=मोक्षसाधको मुनिर्भवति ॥ सू० ६ ॥

तथा विशुद्ध्यमान मनःपरिणाम से युक्त ऐसी हेतुभूत अखंड चारित्र भावना के प्रभाव से (अहिंसए) अहिंसक होता है, अर्थात् भावना-सहित अहिंसा का परिपालक होने के कारण वह हिंसावृत्ति से रहित होता है। तथा (सजए) अच्छी तरह से जीव रक्षा की यतना में उद्यत होने के कारण संजत होता है। और (सुसाहू) ऐसा होने के कारण ही वह साधु-सच्चा साधु-मोक्ष साधक मुनि-होता है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने अहिंसाव्रत की रक्षा और स्थिरता के निमित्त पांच भावनाओं में से ईर्या समिति नामकी प्रथम भावना कही है,। इस भावना में उन्हों ने यह प्रकट किया है कि अहिंसाव्रत का आराधक प्राणी यदि भावना का निमित्त नहीं मिलता है तो उस व्रत का गहराई के साथ परिपालन नहीं हो सकता है। अहिंसा आदि व्रतों के रग में आत्मा को रग देनेवाली ये भावनाए ही है। इसलिये सच्चे अर्थ मे अहिंसक बनने के लिये मुनि को सबसे पहिले, ईर्या समिति का पालन करना चाहिये। इस समिति के पालन करने से

भावणाए" अशबल-मलिनता रहित तथा विशुद्ध मन परिणामथी युक्त એવી હેતુભૂત અક્ષત-ચારિત્રભાવનાના પ્રભાવથી 'अहिसए" અહિંસક થાય છે, એટલે કે ભાવનાપૂર્વક અહિંસાના પરિપાલક હોવાથી તે હિંસાવૃત્તિથી રહિત બને છે તથા "सजए" સારી રીતે જીવ રક્ષાની યતનામા તત્પર હોવાને કારણે સયત થાય છે અને "सुसाहू" એવા થવાને કારણે તે સુસાધુ-સાચા સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ-થાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે અહિંસા વ્રતની રક્ષા અને સ્થિરતાને માટે જે પાચ ભાવના છે તેમાની ઇર્યાસમિતિ નામની પહેલી ભાવના બતાવી છે આ ભાવનામા તેમણે એ પ્રગટ કર્યુ છે કે અહિંસા વ્રતના આરાધક પ્રાણીને જો ભાવનાનુ નિમિત્ત ન મળે તો તે વ્રતનુ સૂક્ષ્મ રીતે પાલન થઈ શકતુ નથી અહિંસા આદિ વ્રતોના રગમા આત્માને રગી દેનારી આ ભાવનાઓ જ છે તેથી સાચા અર્થમા અહિંસક બનવાને માટે મુનિએ સૌથી પહેલા ઇર્યાસમિતિનુ પાલન કરવું જોઈએ. આ સમિતિનુ પાલન કરવાથી ત્રસ

द्वितीयां मनोभावनामाह—

मूलम्—बीयं च मणेण पावएण पावगं आहम्मियं दारुणं निसंस वहवधपरिकिलेसबहुल जरामरणपरिकिलेससंकिलिट्ठ, न कयावि मणेण पावएणं पावगं किंचि विझायव्व एव मणसमिइजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्त भावणाए अहिंसएसंजए सुसाहू॥सू०७॥

टीका—' बीय च ' इत्यादि ।

' बीय च ' द्वितीया च पुनर्भावना मनः समितिरूपामाह—' पावएण '

त्रस और स्थावर जीवों की रक्षा होती रहती है। उठने बैठने में गमन करने में साधु ' जीवों की विराधना न हो ' इस बात की विशेष साव धानी रखता है। युगप्रमाण भूमिका अवलोकन करता हुआ आगे २ के मार्ग में बढ़ता रहता है। इस तरह उसके द्वारा न कोई प्राणी हीलयितव्य होता है न निन्दितव्य होता है न गर्हितव्य होता है, और न हिंसितव्य होता है। न छेत्तव्य होता है, न व्यथितव्य होता है और न दुःख को प्राप्त कराने के योग्य ही होता है। इस प्रकार ईर्यासमिति के योग से भावितात्मा बना हुआ मुनिजन अपने अहिंसाव्रत को निर्दोष रीति से पालन करता हुआ सच्चा अहिंसक बन जाता है। तथा इस प्रकार की प्रवृत्तिशाली होने के कारण वह सुसाधु–मोक्ष को साधन करने वाला मुनि इस अर्थ को चरितार्थ करता है ॥ सू०६ ॥

अब सूत्रकार इसव्रत की दूसरी भावना जो मनोगुप्ति है उसे प्रकट

અને સ્થાવર જીવોનુ રક્ષણ થાય છે ઉઠવા બેસવામા તથા ગમન કરવામા ' વધારે જીવોની વિરાધના ન થાય ' તેનુ મુનિ વધારે ધ્યાન રાખે છે યુગ પ્રમાણ ભૂમિનુ અવલોકન કરતા કરતા સાધુ માર્ગે આગળ વધે છે આમ થવાથી તેના દ્વારા કોઈ પ્રાણી હીલયિતવ્ય, નિન્દિતવ્ય, ગર્હિતવ્ય, અને હિંસિતવ્ય થતુ નથી તેનુ છેદન થતુ નથી કે તેને વ્યથા પહોંચતી નથી, તથા દુ ખને પામતુ નથી આ રીતે ઇર્યાસમિતિના યોગથી ભાવિતાત્મા બનેલ મુનિ જન પોતાના અહિંસાવ્રતનુ નિર્દોષ રીતે પાલન કરતા કરતા સાચા અહિંસક થઇ જાય છે તથા આ રીતે પ્રયત્નશીલ હોવાને કારણે તે સુસાધુ–મોક્ષને સાધનારા મુનિ, એ અર્થને ચરિતાર્થ કરે છે ॥ સૂ–૬ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતના મનોગુપ્તિ નામની બીજી ભાવના છે તેનુ સ્પ

पापकेन=अशुभेन ' मणसा ' मनसा ' पावग ' पापकम्=अशुभं भवति, ' अह म्मिय ' अधार्मिकं दुर्गतिजनकत्वात्, दारुणः=विषमः, तीव्रदुःखजनकत्वात्, ' निसस ' नृशंसम् आत्महितघातकत्वात्, तथा-' वहबंधपरिकिलेसबहुल ' वध बन्धपरिक्लेशबहुलम्, तत्र-वधो-मारणम्, बन्धः=निगडादिबन्धः, तज्जनित परिक्लेशः=परितापस्तेन बहुलं=व्याप्तं-सभृतम्, प्रतिसमयमसह्यसंतापजनक त्वात्, तथा-' मरणभयपरिकिलेससंकिलिट्ठ ' मरणभयपरिक्लेशसंक्लि-ष्टम्-मरणं=प्राणवियोगस्तस्य यद् भयं तज्जनितो यः परिक्लेशः=परमसन्तापस्तेन संक्लिष्टं=सव्याप्तम्, नरकनिगोदाद्यनन्तदुःखजनकत्वात्, एतादृश-विशेषणविशिष्ट

करते हैं—' बीयं च ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(बीयं) दूसरी मनोगुप्ति नामकी भावना इस प्रकार से है (पावएण मणेण) अशुभ मन से अशुभ होता है-अर्थात्-अशुभ मन से जीव पाप का उपार्जन करता है। यह पाप (अहम्मियं) दुर्गति का जनक होने से अधर्म रूप है। (दारुणं) तीव्र दुःखों का उत्पादक होने से दारुण-विषम अर्थात्-कष्टकारक-होता है। तथा (निसंसं) इसमें आत्मा के हितका घात होता है इसलिये नृशंस है। (वहबंध-परिकिलेसबहुलं) वध, बंधन और इनसे उत्पन्न परिक्लेश-परिताप-से यह सदा भरा रहता है। अर्थात् प्रति समय यह असह्य संताप का जनक होता है। (मरणभयपरिकिलेससंकिलिट्ठं) मरण के भय से जनित परम संताप से यह व्याप्त रहा करता है। अर्थात्-पाप से जीव नरक निगोद आदि के अनंत दुःखो को भोगा करता है। इसलिये यह

ટીકરણ કરે છે—" बीयं च " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"बीयं" બીજી મનોગુપ્તિ નામની ભાવના આ પ્રકારની છે-"पावएण मणेण " અશુભ મનથી અશુભ થાય છે-એટલે કે અશુભ મનથી જીવ પાપનું ઉપાર્જન કરે છે આ પાપ " अहम्मियं " દુર્ગતિનું જનક હોવાથી અધર્મરૂપ છે " दारुणं " તીવ્ર દુઃખોનું ઉત્પાદક હોવાથી દારુણ-વિષમ એટલે કે કષ્ટકારક હોય છે તથા ' निसंसं " તેમાં આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશંસ છે " वहबंधपरिकिलेसबहुलं " વધ, બંધન અને તેમના કારણે ઉદ્‌ભવેલ પરિક્લેશ-પરિતાપથી તે સદા ભરેલ રહે છે, એટલે કે પ્રતિસમય તે અસહ્ય સંતાપ પેદા કરનાર હોય છે " मरणभयपरिकिलेससंकिलिट्ठं " મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પરમ સંતાપથી તે વ્યાપ્ત રહ્યા કરે છે એટલે કે પાપથી જીવ નરક નિગોદ આદિનાં અનંત દુઃખને ભોગવ્યા કરે છે તે

पाप-पापेन मनसा भवति, अतएव-तत् ' कयावि ' कदापि=कस्मिन्नपि काले ' किंचि वि ' किंचिदपि=स्वल्पमपि ' पावग ' पापकम्=अशुभ न ' झायव्वं ' ध्यातव्य=न चिन्तनीयमित्यर्थः । एवम्=अमुना प्रकारेण ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा जीवः ' मणसमिइजोगेण ' मनः समितियोगेन भावितो भवति । भावितात्मा कीदृशो भवति ? इत्याह — अशबलसक्लिष्टनिर्व्रणचारित्रभावनया हेतुभूतया अहिंसकःसयत' सुसाधुर्भवति। एषामर्थो द्वितीयभावना व्याख्याया द्रष्टव्यः ॥सू ७॥

पाप नरक निगोद आदि दुर्गतियों के अनत दु'खों का जनक होने से उनसे सदा भरा रहता है ऐसा कहा गया है। इस प्रकार के विशेषणों से विशिष्ट पाप यह जीव पापयुक्त मन से करता है। ऐसा समझ कर (कयावि किंचि वि) किसी भी काल मे कुछ भी थोड़ा सा भी (पावएण मणेण) पापकारी मन से (पावग) पाप-अशुभ (न झायव्व) नहीं विचरना चाहिये। (एव मणसमिइजोगेण अतरप्पा भाविओ भवइ) इस प्रकार से अतरात्मा-जीव मन.समिति के योग से भावित होता है। (असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए-सुसाहू) यह भावित आत्मा मलिनता से रहित तथा विशुद्ध्यमान मन'परिणाम से युक्त ऐसी हेतुभूत चारित्र भावना के प्रभाव से अहिंसक होता है। और सयत होता है। और ऐसा होने के कारण ही वह सच्चा साधु-मोक्ष साधक मुनि-कहलाता है ॥—

भावार्थ—मन को अशुभ ध्यान से बचाकर शुभ ध्यान मे लगाना

કારણ તે પાપ નરક નિગોદ આદિ દુર્ગતિયોના અનત દુ ખોનુ જનક હોવાથી તેનાથી સદા ભરેલ રહે છે એમ કહેવામા આવ્યુ છે આ પ્રકારના વિશેષ-ણોથી યુક્ત પાપ આ જીવ પાપયુક્ત મનથી કરે છે એવુ સમજીને " कयावि किंचि वि " કોઈ પણ કાળે અહેજ પણ " पावएण मणेण " પાપકારી મનથી " पावग " પાપ-અશુભ " न झायव्व " વિચારવુ જોઈએ નહી " एव मण समिइजोगेण अतरप्पा भाविओ भवइ " આ પ્રકારે અ તરાત્મા-જીવ મન સમિ તિના યોગથી ભાવિત થાય છે " असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरितभावणाए अहिसए सजए सुसाहू " તે ભાવિત આત્મા મલિનતાથી રહિત તથા વિશુદ્ધ મન પરિણામથી યુક્ત એવી હેતુભૂત ચારિત્ર ભાવનાના પ્રભાવથી અહિ સક થાય છે અને સયત બને છે અને એવુ થવાથી જ તે સાચો સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ કહેવાય છે

ભાવાર્થ-મનને અશુભ ધ્યાનથી બચાવીને શુભ ધ્યાનમા લગાડવુ તેને

तृतीयां वचनसमितिरूपां भावनामाह—'तइयं च' इत्यादि।

मूलम्—तइयं च—वईए पावियाए पावगं अहम्मियं दारुणं निसंसं वहवधपरिकिलेसबहुल जरामरणपरिकिलेससंकिलिट्ठं न कयावि वईए पावियाए पावगं किंचि वि भासियव्वं, एवं वइसमिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा असबलमसं किलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू॥८॥

मनोगुप्ति है। शुभ ध्यान मे लगाने का उपदेश इस लिये दिया जाता है अथवा मन को शुभ ध्यान में इसलिये लगाया जाता है कि मन स्वयं अशुभ बनने न पावे। अशुभ ध्यान के सपर्क संबंध से मन अशुभ बन जाता है। और अशुभ मन से पाप का ही उपार्जन होता है। पाप से जीवों को नाना प्रकार के कष्टों को भोगना पड़ता है। क्यों कि पाप स्वय एक अधर्म है। अधर्म होने से ही वह आत्मा के हित का घातक बनता है। और इसी कारण से जीवों को नाना प्रकार के दुःखों को देता है। इस प्रकार विचार कर जो मुनिजन अपने मन को अशुभ ध्यान में किसी भी समय नहीं लगता है उससे बचता रहता है ऐसा वह मुनि उस मन' समिति से भावित बनकर अपने अहिंसा व्रत को निर्दोष रूप से पालन करता हुआ आदर्श अहिंसक बन जाता है। और इस प्रकार की प्रवृत्ति करने के रग में रगा हुआ वह-सच्चे अर्थ मे साधुपद को सार्थक करता है ॥ सू० ७ ॥

મનોગુપ્તિ કહે છે શુભ ધ્યાનમા લગાડવાનો ઉપદેશ એ માટે અપાય છે અથવા મનને શુભ ધ્યાનમા તે કારણે લગાડાય છે કે મન પોતે જ અશુભ બનવા પામે નહી અશુભ ધ્યાનના સપર્કથી મન અશુભ બની જાય છે, અને અશુભ મનથી પાપનુ જ ઉપાર્જન થાય છે પાપથી જીવોને વિવિધ પ્રકારના કષ્ટો ભોગવવા પડે છે કારણ કે પાપ પોતે જ એક અધર્મ છે અધર્મ હોવાથી જ તે આત્માના હિતનુ ઘાતક બને છે, અને એજ કારણથી જીવોને વિવિધ પ્રકારના દુ ખો દે છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જે મુનિજન પોતાના મનને કદી પણ અશુભ ધ્યાનમા લગાડતા નથી, તેનાથી બચતા રહે છે, એવા તે મુનિ તે મન સમિતિથી ભાવિત બનીને પોતામા અહિંસાવ્રતનુ નિર્દોષ પાલન કરીને અહિંસક બની જાય છે, અને તે રીતની પ્રવૃત્તિ કરવાના રંગે રંગાયેલ તે મુનિ સાચા અર્થમા સાધુના પદને સાર્થક કરે છે ॥ સૂ ૭ ॥

टीका—' तइय च ' इत्यादि ।

' तइय च ' तृतीया च भावना वचनसमितिरूपामाह—' वईए पावियाए ' वाचा पापिक्या=पापभाषणरूपयेत्यर्थः पापकमाधार्मिक दारुण नृशस वध

अब सूत्रकार इस अहिंसाव्रत की तीसरी वचन समितिरूप भावना का प्रतिपादन करने के लिये सूत्र कहते हैं—' तइय च ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तइय) वचनसमिति रूप तृतीय भावना इस प्रकार से है—(पावियाए वईए) सावद्यभाषणरूप वाणी से (पावग) जीव पाप का वध करता है । यह पाप (अहम्मिय दारुण निससवह वधपरिकिलेसबहुल जरामरणपरिकिलेससकिलिट्ठ भवइ) अधर्मरूप है क्यों कि इससे जीवों को दुर्गति की प्राप्ति होती है तथा इससे तीव्रदुःखो को जीव भोगते है इसलिये यह दारुण-विषम है । आत्माके हितका इससे घात होता है इसलिये यह नृशस है। वध, वधन और इनसे जन्य परिक्लेश-परिताप से यह पाप सदा भरा रहता है । जरा और मरण के भय से जनित सताप से यह सदा व्याप्त रहता है। ऐसा विचार कर जो मुनि (न कयावि वईए पावियाए किंचिवि पावगभासियव्व) इस पाप वाणी को सावद्य-भाषणरूप वचन को-किसी भी समय थोडा सा भी नही बोलते है वे इस वचनसमिति के योग से भावितात्मा बन जाते हैं। (एव वय-

---

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાવ્રતની વચન સમિતિ નામની ત્રીજી ભાવનાનું પ્રતિપાદન કરવાને માટે સૂત્ર કહે છે-" तइय च " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" तइय " વચનસમિતિરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે—" पाविया़ए वईए " સાવદ્ય ભાષણરૂપ વાણીથી " पावग " જીવ પાપનો બંધ બાંધે છે તે પાપ " अहम्मिय दारुण निसस वहबधपरिकिलेसबहुल जरामरण परिकिलेससकिलिट्ठ भवइ " અધર્મ રૂપ છે તેનાથી જીવોને દુર્ગતિની પ્રાપ્તિ થાય છે તથા તેનાથી જીવ તીવ્ર દુઃખો ભોગવે છે તેથી તે દારુણ-વિષમ છે તેનાથી આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશસ છે વધ, બધન અને તેના વડે ઉત્પન્ન થયેલ પરિક્લેશ-પરિતાપથી તે પાપ સદા ભરેલ રહે છે જરા અને મરણના ભયથી જનિત સતાપ વડે તે સદા વ્યાપ્ત રહે છે એવો વિચાર કરીને જે મુનિ " न कयावि वईए पावियाए किंचिवि पावग भासियव्व " આ પાપવાણીને સાવદ્ય ભાષણરૂપ વચનને-કોઇ પણ કાળે થોડુ પણ બોલતા નથી, તેઓ આ વચનસમિતિના યોગથી ભાવિતાત્મા બની જાય છે. " एव

बन्धपरिक्लेशबहुल जरामरणपरिक्लेश सक्लिष्ट भवति, अतएव न कदापि वाचा पापिकया पापक किंचिदपि भाषितव्यम् । एव वाक्समितियोगेन भावितो भवति अन्तरात्मा । भावितात्मा कीदृशो भवति ? इत्याह—अशबलासक्लिष्ट निर्व्रणचरित्रभावनया हेतुभूतया—अहिंसकः संयत' सुसाधुर्भवति । एषामर्थो द्वितीयभावनाव्याख्याया द्रष्टव्य' ॥ सू० ८ ॥

समिइजोगेण भाविओअतरप्पा असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्त-भावणाए अहिंसओ सजओ सुसाहू भवइ) इस प्रकार वचन समिति के योग से भावितात्मा बना हुआ अतरात्मा–जीव–अशबल, असक्लिष्ट एव निर्व्रण निरतिचार चारित्र की भावना से अहिंसक और सयतबन जाता है । और सच्चे रूप में साधु–मोक्ष को साधन करने वाले–इस नाम को चरितार्थ कर लेना है ।

भावार्थ—सावद्य भाषण नहीं करना इसका नाम वचन समिति है। सावद्य भाषण करने से पाप का बध होता है । पाप अधर्म होने से विविध प्रकार के दुःखों का दाता होता है । बध बधन आदि विविधकष्ट जीव को इसी के उदय से भोगने पडते ह । इसलिए साधु का कर्तव्य है कि वह कभी भी कही पर भी किञ्चित् रूप में भी असत्यभाषण नहीं करे । ऐसा विचार कर जो मुनि इस पापवाणी से निवृत्त हो जाते हैं वे ही अपने अहिंसाव्रत को निर्दोष रूप में पालते हैं । इस प्रकार अपने अहिंसाव्रत को पालन करने वाले साधु ही सच्चे साधु–मोक्षको साधन करने वाले कहलाते है ॥ सू० ८ ॥

वयसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा असबलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसओ सजओ सुसाहू भवई ” આ પ્રકારે વચન સમિતિના યોગથી ભવિતાત્મા બનેલ અતરાત્મા–જીવ–અશબલ, અસક્લિષ્ટ અને નિર્વ્રણચારિત્રની ભાવનાથી અહિંસક અને સયત બની જાય છે અને સાચા અર્થમા સાધુ–મોક્ષને સાધનારા–એ નામને ચરિતાર્થ કરી લે છે

ભાવાર્થ—સાવદ્યભાષણ ન કરવુ તેનુ નામ વચન સમિતિ છે સાવદ્ય ભાષણ કરવાથી પાપનો બધ બધાય છે પાપ અધર્મ હોવાથી વિવિધ પ્રકારના દુ ખનુ જનક છે તેના ઉદયથી વધ બધન આદિ વિવિધ કષ્ટ જીવને ભોગવવા પડે છે તેથી સાધુનુ કર્તવ્ય છે કે તે કદી પણ, ક્યાય પણ, થોડા પ્રમાણમા પણ અસત્ય ભાષણ ન કરે એવો વિચાર કરીને જે મુનિ આ પાપવાણીથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તેઓ જ પોતાના અહિંસાવ્રતનુ નિર્દોષ રીતે પાલન કરે છે આ પ્રમાણે પોતાના અહિંસાવ્રતનુ પાલન કરનાર સાધુ જ સાચા સાધુ–મોક્ષને સાધન કરનાર સાધુ–કહેવાય છે ॥ સૂ. ૮ ॥

चतुर्थीमेषणा भावनामाह—' चउत्थ ' इत्यादि ।

मूलम्—चउत्थ आहारएसणाए सुद्ध उछ गवेसियव्व अण्णाए अकहिए असिट्ठे अदीणे अकलुणे अविसाई अपरितंतजोगी जयणघडणकरणचरियविनयगुणजोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खायरिय उछ घेत्तूण आगए गुरुजणस्स पास गमणागमणाइ यारपडिक्कमणपडिक्कते आलोयण दायण च दाऊण गुरुजणस्स गुरुसंदिट्ठस्स वा जहोवएस निरइयार च अप्पमत्ते पुणरवि अणेसणाए पयते पडिक्कमित्ता पसते । आसीणसुह निसण्णे मुहुत्तमेत्त च झाणसुहजोगनाणसज्झायगोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहियमणे सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण य पहट्ठे तुट्ठे जहराइणियं निमतइत्ता य साहवे भावओ य विइण्णे गुरुजणेण उवविट्ठे संपमज्जिऊण ससीस काय तहा करयल अमुच्छिए अगिद्धे अगरहिए अणज्झोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्ठिए असुरसुर अचवचव अदुयमविलवियमपरिसाडिय आलोयभायणे जयमप्पमत्तेण ववगयसंजोगमणिगाल विगयधूम अक्खोवंजणवणाणुलेवणभूयसंजमजायामायानिमित्त संजमभारवहणट्ठयाए भुजेज्जा पाणधारणट्ठयाए सजएणं समिय । एवमाहारसमिइ जोगेण भाविओ अतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥ सू०९ ॥

टीका—'चउत्थ' चतुर्थी भावनामेषणारूपामाह—'आहारएसणाए' आहारैषणया 'सुद्ध' शुद्ध=निर्दोष 'उछ' उञ्छ=भैक्ष 'गवेसियव्व' गवेषितव्यम्। यथा-लूनान्नक्षेत्रात्कणादान, तथैव साधुनापि गृहस्थार्थं निष्पादितमन्न स्तोक स्तोक एवैषणीयमिति भाव.। कीदृशः सन् गवेषयेत्? इत्याह-'अण्णाए' अज्ञातः-'धनिकोऽय प्रव्रजित' इत्यादिरूपेण दातृभिरज्ञातः, 'अकहिए' अकथितः='धनिकोऽह प्रव्रजित' इत्याद्यप्रकटितः, 'असिट्ठ' अशिष्टः='उग्रवशीयोऽय भोगवशीयोऽय' इति दायकाग्रेऽविशेषित', तथा-'अदीणे' अदीनः

अब सूत्रकार चौथी एषणा समितिरूप भावना को कहते हैं-'चउत्थ' इत्यादि०।

टीकार्थ—(आहारएसणाए सुद्ध उछ गवेसियव्व) साधु आहारएषणा से शुद्ध-निर्दोष उञ्छ-थोडा थोडा लेने रूप भिक्षा की गवेषणा करे। तात्पर्य इसका यह है कि जैसे-लूने गये क्षेत्र से कणो का आदान होता है उसी तरह साधु को भी गृहस्थ के लिये निष्पादित अन्न की स्तोक २ अल्प २ रूप में गवेषणा करनी चाहिये। जबवह भिक्षा की गवेषणा करे तब उसे (अण्णाए) अज्ञात होना चाहिये-दाता उसे यों न समझे कि यह धनिक होकर प्रव्रजित हुआ है, इत्यादिरूप से दाता से उन्हें अपरिचित रहना चाहिये। (अकहिए) अकथित होना चाहिये-मैं धनिक था गरीब नहीं था फिर भी दीक्षित हुआ हूं इस प्रकार का अपना परिचय उसे दाता को नहीं देना चाहिये। (असिट्ठे) अशिष्ट रहना चाहिये-यह साधु उग्रवशीय है, भोगवशीय है, इस रूप से दाता के

હવે સૂત્રકાર એષણા સમિતિ નામની ચોથી ભાવના બતાવે છે "चउत्थ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"आहारएसणाए सुद्ध उछ गवेसियव्व" સાધુ આહારૈષણાથી શુદ્ધ-નિર્દોષ उञ्छ થોડી થોડી માત્રામા ભિક્ષાની ગવેષણા કરે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે જેમ લણાયેલ ખેતરમાથી કણોનુ આદાન થાય છે, એ જ રીતે સાધુએ પણ ગૃહસ્થને માટે તૈયાર કરેલ અન્ન થોડી થોડી માત્રામા ગવેષણા કરવી જોઈએ જ્યારે તે ભિક્ષાની ગવેષણા કરે ત્યારે તેણે "अण्णाए" અજ્ઞાત રહેવુ જોઈએ દાતાને તે વાતની ખબર ન પડવી જોઈએ કે તે ધનિક સ્થિતિમાથી દીક્ષિત થયેલ છે આ પ્રકારે તેણે દાતાથી અપરિચિત રહેવુ જોઈએ "अकहिए" અકથિત રહેવુ જોઇએ-"હુ ધનિક હતો ગરીબ ન હતો છતા પણ મે દીક્ષા લીધેલ છે" એ પ્રકારનો પોતાનો પરિચય તેણે દાતાને દેવો જોઇએ નહી "असट्ठे" અશિષ્ટ રહેવુ જોઇએ "આ સાધુ ઉગ્રવશીય છે, ભોગવશીય છે," તે પ્રકારે દાતા આગળ તેણે પ્રગટ થવુ

=दीनतावर्जितः ' अक्लुणे ' अकरुण =न्यग्वृत्तिरहितः, 'अविसाई ' अविषादी= ' भिक्षालाभो भविष्यति न वे 'त्यादि विषादवर्जित , तथा–' अपरितंतजोगी ' अपरितान्तयोगी–अलाभादिषु तन्तनादि शब्दवर्जित', तथा–'जयणघडण करण चरिय विनयगुणजोगसपउत्ते ' यतन घटनकरणचरितविनयगुणयोगसंप्रयुक्तः, तत्र यतन–प्राप्तेषु संयमयोगेषु उद्यमः, घटन अप्राप्ति संजम–योगप्राप्तिचेष्टनम्, एतद्द्वय कुरुते य' स यतनघटनकरणः, तथा–चरित =सेवितो विनयो येन स चरितविनयः, तथा गुणयोगेन=समाधिगुणयोगेन सप्रयुक्तो य सः–गुणयोग सप्रयुक्तः, एतेषा कर्मधारय', एतादृशो ' भिक्खू ' भिक्षु =साधु ' भिक्खेसणाए '

प्रति उसे प्रकटित नही होना चाहिये । (अदीणे) अदीन होना चाहिये दीनता के भाव से रहित रहना चाहिये अपने व्यवहार से दाता के प्रति उसे दीनता का भाव प्रकट नहीं करना चाहिये । (अकलुणे) अकरुण–ओछीवृत्ति से रहित होना चाहिये। उसकी वृत्ति ऐसी न हो कि जिस से वह दाता के दृष्टि मे ओछी प्रतीत हो। (अविसाई) विषाद से उसे रहित होना चाहिये–भिक्षा का लाभ होगा या नही होगा इस प्रकार का विषाद उसे नही करना चाहिये । (अप रितंतजोगी) अपरितान्तयोगी–अलाभ आदि की अवस्था मे उसे तन-तनाट नही करना चाहिये। (जयण–घडण–करण–चरिय विनयगुण–जोगसपउत्ते) प्राप्त संयमयोग में उद्यम करना इसका नाम यतन है इस यतन को तथा अप्राप्त संयमयोग की प्राप्ति मे चेष्टा करना इसका नाम घटन है, इस घटन को जो करने वाला है वह यतन घटन करण है तथा विनयगुण को पहिले से जिसने आचरित किया है एव समाधि

જોઇએ નહી “ अदीणे ” અદીન રહેવુ જોઇએ–દીનતાના ભાવથી રહિત રહેવુ જોઇએ–પોતાના વ્યવહારથી દાતા આગળ તેણે દીનતાનો ભાવ પ્રગટ કરવો જોઇએ નહી “ अकलुणे ” અકરુણ–ઓછી વૃત્તિથી રહિત થવુ જોઈએ , તેની વૃત્તિ એવી ન હોવી જોઇએ કે તે દાતાની દૃષ્ટિએ ઓછી જણાય, 'अविसाई' તેણે વિષાદ રહિત રહેવુ જોઇએ ભિક્ષાલાભ મળશે કે નહી એવો વિષાદ તેણે કરવો જોઇએ નહી “ अपरितंतजोगी ” અપરિતંતયોગી–અલાભ આદિ અવસ્થામા પણ તેણે તનતનાટ ન કરવો જોઈએ “ जयण, घडण–करण–चरिय –विनयजोगसपउत्ते ” પ્રાપ્ત સયમ યોગમા ઉદ્યમ કરવો તેને ' यतन ' કહે છે આ યતનને તથા અપ્રાપ્ત સયમ યોગની પ્રાપ્તિની ચેષ્ટા કરવી તેને घटन કહે છે આ ઘટનને જે કરનાર છે તે यतनघटनकरण છે તથા વિનયગુણને પહેલેથી જ જેમણે આચર્યો છે તથા સમાધિગુણના યોગથી જે યુક્ત બનેલ

भिक्षेषणायां 'जुत्ते' युक्त=संलग्नः 'समुदाणेऊण' समुदानीय=भिक्षार्थमनेक गृहेषु भ्रमित्वा 'भिक्खाचरियं उंछं' भिक्षाचर्यामुञ्छाम्=अल्पाल्पग्रहणरूपां भिक्षां 'घेत्तूण' गृहीत्वा गुरुजनस्य 'पासं' पार्श्व-समीपं 'आगए' समागतः 'गमणागमणाइयारपडिक्कमणपडिक्कंते' गमनागमनातिचारप्रतिक्रमणप्रतिक्रान्तः= गमनागमनातिचाराणां प्रतिक्रमणेन=ईर्यापथिकीप्रायश्चित्तेन प्रतिक्रान्तः=निवर्तितपापः, 'गुरुजणस्स' गुरुजनस्य ' 'गुरुसंदिट्ठस्स' गुरुसन्दिष्टस्य=गुरुणा निर्दिष्टस्य रत्नाधिकस्यान्यमुनेरन्तिके वा 'जहोवएसं' यथोपदेशम्=उपदेशानतिक्रमेण 'निरइयारं' निरतिचारं च 'आलोयणा दायणं च दाऊण' आलोचना दानं च दत्त्वा=यथा यथा भिक्षा गृहीता तथा तथा सर्वं समालोच्य 'अप्पमत्ते' अप्रमत्तः-प्रमादवर्जितः 'पुणरवि' पुनरपि चागामिकाले 'अणेसणाए' अनेष

गुण के योग से जो युक्त बना हुआ है वह विनयगुण सम्प्रयुक्त कहलाता है ऐसा (भिक्खू) साधु (भिक्खेसणाए जुत्ते) भिक्षणा में सलग्न होकर वह (समुदाणेऊण) भिक्षार्थ अनेक घरों में घूमें, और वहा से (भिक्खायरियं उंछं) अल्प अल्प रूप मे भिक्षा (घेत्तूण) ग्रहण करके फिर वह (गुरुजणस्स पास आगए) अपने गुरुजन के पास में आवे। (गमणागमणाइयारपडिक्कमणपडिक्कंते आलोयण दायण च दाऊण) और वह गमनागमन के अतिचारों के प्रतिक्रमण से ईर्यापथिकी प्रायश्चित्त से प्रतिक्रान्त बने इस तरह निवर्तितपाप होकर वह (गुरुजणस्स) गुरुजन के (वा) अथवा (गुरुसंदिट्ठस्स) गुरु से संदिष्ट अन्य रत्न त्रयाधिक मुनि के (जहोवएस) उपदेश के अनुसार जहा २ से भिक्षा उसने ली है उस उस प्रकार से सबकी (निरइयार) निरतिचार आलोचना करे आलोचना करके (अप्पमत्ते) प्रमाद वर्जित, बना हुआ तथा

છે તે 'વિનયગુણ સંપ્રયુક્ત' કહેવાય છે એવા "भिक्खु" સાધુ "भिक्खेसणाए जुत्ते" ભિક્ષાની એષણામાં "समुदाणेऊण" ભિક્ષાને માટે અનેક ઘરે ફરે, અને ત્યાંથી "भिक्खायरियं उंछं" અલ્પ અલ્પ માત્રામાં ભિક્ષા 'घेत्तूण' ગ્રહણ કરીને તે "गुरुजणस्स पास आगए" પોતાના ગુરુજનની પાસે આવે, "गमणागमणाइयारपडिक्कमणपडिक्कंतआलोयणदायणं य दाऊण" અને તે ગમનાગમનના અતિચારોના પ્રતિક્રમણ વડે ઈર્યાપથિકી પ્રાયશ્ચિત્તથી પ્રતિક્રાન્ત થાય અને એ રીતે પાપની નિવૃત્તિ થઈને તે "गुरुजणस्स" ગુરુજનને "वा" અથવા "गुरुसंदिट्ठस्स" ગુરુથી નિર્દિષ્ટ અન્ય રત્નત્રયધારી મુનિની "जहोवएस" ઉપદેશ પ્રમાણે જ્યાં જ્યાંથી તેણે ભિક્ષા મેળવી હોય તે તે પ્રકારે તે સૌની "निरइयार" નિરતિચાર આલોચના કરે આલોચના કરીને " "

णायाम्=उद्गमादिदोषरूपायाम्, 'पयए' प्रयत'=प्रयत्नवान्-तद्गतदोषपरिहारे उद्यमवानित्यर्थ, पडिक्कमित्ता' प्रतिक्रम्य=कायोत्सर्गं कृत्वा 'पसते' प्रशान्तः= आहारेऽनातुरः तथा-'आसीणसुहनिसण्णे' आसीनसुखनिषण्णः, तत्र-आसीन = उपविष्टः, सुखनिषण्णः=गमनागमनजनितपरिश्रममवेदयन् सुखपूर्वकं स्थितः, पुनः कीदृशः? 'मुहुत्तमेत्त च' मुहूर्तमात्र च, 'झाणसुभजोगनाणसज्झायगोवियमणे' ध्यानशुभयोग ज्ञानस्वाध्यायगोपितमनाः, तत्र ध्यान=धर्मध्यानादिलक्षणम्, शुभ-योगः=संयमव्यापार, ज्ञानम्=भगवदुपदिष्टमोक्षहेतुनिरवद्यसाधुवृत्तिपरिचिन्तनम्, तथा-स्वाध्यायः=मूलसूत्रपरिगुणनम्, एतैर्गोपित = विषयान्तरगमनेन निरुद्ध मनो येन सः, अतएव 'धम्ममणे' धर्ममना'=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मयुक्ताः, तथा-'अविमणे' अविमना =अरसविरसाद्विलाभेऽपि विषादवर्जितचित्त, तथा 'सुह

(पुणरवि अणेसणाए पयए) आगामी काल मे उद्गमादि दोष रूप अने-षणा मे प्रयत्नशील बना हुआ-अर्थात्-एषणागत दोषों के परिहार में सदा सावधान बना हुआ वह मुनि (पडिक्कमित्ता) कायोत्सर्ग करके (पसते) प्रशान्त बने-आहार में आतुर न बने (आसीणसुहनिसण्णे) बैठ जावे और भिक्षा के निमित्त गमनागमन में होने वाले परिश्रम का कुछ भी ख्याल न करे प्रत्युत सुखपूर्वक-अच्छी तरह से बैठे। (मुहुत्तमेत्त च झाणसुभजोगनाणसज्झाय गोवियमणे) उस समय वह एक मुहूर्ततक धर्म ध्यानादिरूप ध्यान से, शुभयोग से, भगवान के द्वारा कथित मोक्ष की हेतुभूत निरवद्य साधुवृत्ति के विचार से, तथा मूल-सूत्र के परिगुणन से विषयान्तर में जाते हुए अपने मन को रोके और श्रुतचारित्ररूप धर्म से युक्त अपने मन को रखे। इस तरह (धम्ममणे) धर्म मार्ग वाला तथा (अविमणे) अविमन-अरस विरस आदि आहार

પ્રમાદ રહિત બનેલ તથા "पुणरवि अणेसणाए पयए" ભવિષ્યકાળમા ઉદ્ગમાદિ દોષરૂપ અનેષણામા પ્રયત્નશીલ બનીને-એટલે કે એષણાગત દોષોના ત્યાગમા સાવધાન બનીને તે મુનિ "पडिक्कमित्ता" કાયોત્સર્ગ કરીને 'पसत" પ્રશાન્ત બને-આહારને માટે આતુર ન બને "आसीणसुहनिसण्णे" બેસી જાય અને ભિક્ષાને નિમિત્તે ગમનાગમનમા થતા પરિશ્રમનો જરાએ પણ વિચાર ન કરે પ્રત્યુત સુખ પૂર્વક-બરાબર રીતે બેસે 'मुहुत्तमेत्त च झाण सुभजोगनाणसज्झाय गोवियमणे" તે સમયે તે એક મુહૂર્ત સુધી ધર્મધ્યાનાદિરૂપ ધ્યાનથી, શુભ યોગથી ભગવાન દ્વારા કથિત મોક્ષની હેતુભૂત નિરવદ્ય સાધુ વૃત્તિના વિચારથી, તથા મૂળસૂત્રના પરિગુણનની બહારના વિષયમા પોતાના મનને જતા રોકે અને પોતાના મનને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મમા પરોવે આ રીતે 'धम्ममग्गे" ધર્મમનવાળા તથા "अविमणे" અવિમન-અરસ, નીરસ આદિ આહાર પ્રાપ્તિમા

मणे ' सुखमनाः=सयमानुरक्तचित्तः, तथा-' अविग्गहमणे ' अविग्रहमनाः-संक्लि-ष्टमनोभावरजितचित्त , तथा-' समाहियमणे' समाहितमनाः=समाहित=रागद्वेष राहित्येन आत्मनि सम्यगुपनीत मनो येन सः, उपशान्तचित्त इत्यर्थ , तथा- ' सद्धासवेगनिज्जरमणे ' श्रद्धासंवेगनिर्जरामना, तत्र-श्रद्धा=जिनमताभिरुचिः, सवेग =मोक्षाभिलापः, निर्जरा=कर्मक्षपण च मनसि यस्य स , तत्त्वार्थश्रद्धानान्मो-क्षरुचिस्ततो निर्जरा, तद्वानित्यर्थः, तथा-' पवयणवच्छलभावियमणे ' प्रवचनवा त्सल्यभावितमनाः=प्रवचनानुरागरञ्जितचित्तः, 'उट्ठेऊण य ' उत्था य च 'पहट्ठे' प्रहृष्टः-अतिशयप्रमुदितः, अतएव-' तुट्ठे ' तुष्टः ' जहाराइणिय' यथारात्निक= यथापर्याय लघु पर्यायानुसारेण ' साहवे ' साधून्=समानसमाचारिकान् मुनीन् ' भावओ ' भावतः-अन्त करणेन ननुपर्युपरितया ' निमतइत्ता य ' निमन्त्र्य= आहारग्रहणार्थं समाभ्यर्थ्य अनन्तर ' गुरुजणेण ' गुरुजनेन 'विइण्णे य ' वितीर्णेच=

के लाभ में भी विपाद से विहीन चित्त वाला, (सुहमणे) सुखमन-सयम में अनुरक्त चित्त वाला, तथा (अविग्गहमणे) सक्लिष्ट मनोभाव से वर्जित हृदयवाला, और (समाहियमणे) रागद्वेप से रहित होने के कारण उपशान्त मनवाला तथा (सद्धा सवेगनिज्जरमणे) श्रद्धा-तत्त्वार्थ-श्रद्धान, सवेग-मोक्ष मे रुचि और निर्जराकर्मक्षपण इनमें मन रखनेवाला, (पवयणवच्छल्लभाविप्रमणे) प्रवचनानुराग से जिसका चित्त अनुरजित बना हुआ है ऐसा वह साधू (उट्ठेऊण य) अपने स्थान से उठकर (पहट्ठे) अतिशय प्रमुदित एव (तुट्ठि) सतुष्ट होता हुआ (जहाराइणिय साहवे) यथापर्याय-बडे छोटे के क्रमानुसार साधुओं से भावपूर्वक (निमतइत्ता य) आहार ग्रहण करने के लिये प्रार्थना करे। इसके बाद (गुरुजणेण विइण्णे य) गुरुजनो बडो का

પણ વિષાદ રહિત ચિત્તવાળા, " सुहमणे " સુખમન-સયમમા અનુરક્ત ચિત્ત વાળા, તથા " अविग्गहमाणे " સકિલષ્ટ મનોભાવ રહિત હૃદયવાળા, અને " समाहियमणे " રાગદ્વેષ રહિત હોવાને લીધે ઉપશાન્ત મનવાળા, તથા "सद्धा सवेगनिज्जरमणे " શ્રદ્ધા-તત્ત્વાર્થમા શ્રદ્ધા, સવેગ-મોક્ષની રુચિ અને નિર્જરા કર્મક્ષપણમા મન રાખનાર "पवयणवच्छल्लभावियमणे " પ્રવચનાનુરાગથી જેનુ ચિત્ત અનુરજિત બન્યુ છે એવા તે સાધુ ' ऊट्ठेऊणय ' પોતાના સ્થાનેથી ઊઠીને " पहट्ठे " અતિશય આનદિત અને " तुट्ठिं " સતુષ્ટ થઈને " जहाराइणिय साहवे " યથા પર્યાય-નાના મોટાના ક્રમ પ્રમાણે સાધુઓને ભાવપૂર્વક " निम तइत्ताय " આહાર ગ્રહણ કરવાને માટે વિનતિ કરે ત્યાર બાદ " गुरुजणेण विइण्णेय " ગુરુજનો વડે અપાયેલ આહાર " તમે ભોજન કરો "

दत्ते सति 'भुङ्क्ष्व त्वमशनादिक' मित्यनुज्ञाते वा सति, 'उवविट्ठे' उचितासने उपविष्टः सन् 'ससीसं कायं' सशीर्षं कायं=सपूर्णं शरीरं, तथा='करयलं' करतलं च 'सपमज्जिऊण' सम्प्रमार्ज्य 'अमुच्छिए' अमूर्च्छितः=आहारविषये मूर्च्छारहितः 'अगिद्धे' अगृद्धः-अप्राप्तरसेऽप्याकाङ्क्षारहितः, 'अगढिए' अग्रथितः=रसानुगताकाङ्क्षारूपतन्तुजालैरनाबद्धः, तथा-'अगरहिए' अगर्हितः=आहारविषये अकृताहारगर्हः, अकृतदातृगर्हश्चेत्यर्थः, तथा-'अणज्झोववण्णे' अनध्युपपन्नः=रसविषये लोलुपतावर्जितः, तथा-'अणाइले' अनाविल'=अकलुषः 'अलुद्धे' अलुब्धो-लोभरहितः, तथा 'अणत्तट्ठिए' अनात्मार्थिकः=नकेवलमात्मस्वार्थी-परमार्थकारीत्यर्थः, असुरसुर' सुरसुरशब्दरहितम्, 'अचवचवम्' चपड चपड

दिया हुआ आहार "तुम भोजन करो" इस प्रकार आज्ञा मिलने पर वह साधु (उवविट्ठे) उचित आसन पर बैठ कर (ससीस काय करयल सपमज्जिऊण) मस्तक से लेकर अपने समस्त शरीर को और करतल को अच्छी तरह प्रमार्जित करे। प्रमार्जित करके (अमुच्छिए) आहार के विषय में अमूर्च्छित बना हुआ वह साधु (अगिद्धे) अप्राप्त रस में आकांक्षा से रहित, तथा (अगढिए) रसानुगत आकांक्षा रूप तन्तुजाल से, अनाबद्ध तथा (अगरहिए)-आहार के विषय में अथवा दाता के विषय में गर्हा करने से रहित और (अणज्झोववण्णे) रस के विषय में लोलुपता से विहीन बन कर आहार करे। उस समय वह (अणाइले) अनाविल-अकलुष और (अलुद्धे) अलुब्ध-लोभरहित होकर (अणतट्ठिए) अनात्मार्थिक-केवल आत्म-स्वार्थी न बनता हुआ आहार करते समय वह (असुरसुर) सुर सुर

મળતા તે સાધુ "उवविट्ठे" યોગ્ય આસન પર બેસીને "ससीस कायकरयल सपमज्जिऊण" શિરથી લઈને પોતાના આખા શરીરને તથા હથેળીને સારી રીતે પ્રમાર્જિત કરીને "अमुच्छिए" આહારના વિષયમા અમૂર્ચ્છિત બનીને તે સાધુ "अगिद्धे" અપ્રાપ્ત રસની આકાંક્ષાથી રહિત તથા "अगढिए" રસાનુગત આકાંક્ષારૂપી તન્તુજાળથી અનાબદ્ધ-મુક્ત તથા "अगरहिए" આહારના વિષયમા કે દાતાના વિષયમા ગર્હા કરવાની ક્રિયાથી રહિત તથા "अणज्झोववण्णे" રસની બાબતમા લોલુપતા રહિત બનીને આહાર કરવો જોઈએ તે સમયે તે "अणाइले" અનાવિલ-કલેશ રહિત અને "अलुद्धे" અલુબ્ધ-લોભરહિત થઈને "अणतट्ठिए" અનાત્માર્થિક-કેવળ આત્મસ્વાર્થી ન બને આહાર કરતી વખતે તે "असुरसुर" "સુર સુર" શબ્દ ન કરે "अचवचव"

शब्दरहितम्, 'अदुय' अद्रुतम्-नातिशीघ्रम् 'अविलंबिय' अविलम्बितम्=नातिमन्दम् 'अपरिसाडिय' अपरिशाटितम्-परिशाटवर्जितम्, निष्पातरहितमित्यर्थ, तथा-'आलोयभायणे' आलोकभाजने=प्रकाशयुक्तपात्रे 'जय' यत=यतनापूर्वकम् 'अप्पमत्तेण' अप्रमत्तेन-सावधानेन 'ववगयसजोग' व्यपगतसंयोगम्=सयोजनादोषरहितम् अधिकलवणादियुक्तवस्तुनोऽल्पलवणादियुक्तवस्तुनि सम्मेलन सयोगस्तद्रहितमित्यर्थः, 'अणिगालम्' अनङ्गारम्=अङ्गारदोषवर्जितं रागरहितमित्यर्थ., तथा-'विगयधूम' विगतधूम-धूमदोषवर्जित द्वेषरहितमित्यर्थः, तदुक्तम् 'रागेण सइगाल दोसेण सधूमग वियाणाहि' इति, तथा-'अक्खोवजणवणाणुलेवण भूय' अक्षोपाञ्जनव्रणानुलेपनभूतम्=तत्र अक्षस्य=शकटधुरः,उपाञ्जनम्=तैलाभ्यञ्जनम् तथा-'वणाणुलेवण' व्रणानुलेपन=व्रणस्य=स्फोटकस्य अनुलेपनम्=औषधलेपनम्, तयोर्भूत=सदृश यत्तत्, तथा-सजमजायामायानिमित्त=संयमयात्रा मात्रा निमित्त

शब्द न करे (अचवचल) चपड चपड शब्द न करे। (अदुय) न बहुत जल्दी जल्दी (अविलंबिय) न बहुत धीरा तथा (अपरिसाडिय) खाते समय आहार के सीथ को जमीन पर नहीं गिराता हुआ (आलोयभायणे) प्रकाशयुक्त पात्र में (जय) यतना पूर्वक (अप्पमत्तेण) बडी सावधानी के साथ (ववगय सजोग) सयोजनादि दोषरहित-अर्थात्-अधिक लवण आदि से युक्त वस्तु को अल्प लवण आदि से युक्त वस्तु के साथ न मिलाकर (अणिगाल च) अगार दोष रहित आहारसामग्री में राग रहित तथा (विगयधूम) धूमदोषरहित-द्वेषरहित (अक्खोवजणवणाणु लेवणभूय) जिस प्रकार शकट की धुरा में तैल का लगाना भारवहन के निमित्त ही किया जाता है और दूसरे किसी प्रयोजन के लिये नहीं किया जाता है तथा व्रण-घाव-पर मरहमपट्टी आदि का

"ચપડ ચપડ" શબ્દ ન કરે "अदुय" વધારે ઝડપથી ખાય નહીં, 'अविलबिय" વધારે ધીમેથી ખાય નહી તથા "अपरिसाडिय" ખાતી વખતે આહારના પદાર્થને જમીન પર પડવા દીધા વિના "आलोयभायणे" પ્રકાશ વાળા પાત્રમા "जय" યતના પૂર્વક "अप्पमत्तेण" ઘણી સાવધાનીથી "ववगयसजोग" સયોજનાદિ દોષ રહિત-એટલે કે વધારે મીઠા આદિ વાળી વસ્તુને થોડા મીઠા આદિ વાળી વસ્તુ સાથે એકત્ર કર્યા વિના "अणिगाल च" અગાર દોષ રહિત આહાર સામગ્રીમા રાગ રહિત તથા "विगयधूम" ધૂમ દોષ રહિત દ્વેષ રહિત "अक्खोवजणवणाणुलेवणभूय" જેમ ગાડાની ધરીમા તેલનુ સિંચન ભારવહનને માટે જ કરાય છે પણ બીજા કોઈ કારણે કરાતુ

संयमयात्रा-संयमपरिपालनं सैव मात्रा-आलम्बनं तन्निमित्तं=तद्धेतोः संयमयात्रानिर्वाहार्थमेवेत्यर्थः, तथा-'संजमभारवहणट्ठयाए' संयमभारवहनार्थतया=संयमभारवहनार्थम्, तथा-'पाणधारणट्ठयाए' प्राणधारणार्थतया=प्राणधारणार्थं च 'संजए ण' संयतः खलु 'समिय' सम्यक्-यतनापूर्वक-समिकं वा=समभावेन, 'भुंजेज्जा' भुञ्जीत। यथा अक्षस्योपाञ्जनं भारवहनार्थमेव विधीयते, नान्यप्रयोजनार्थम्, यथा च व्रणानुलेपनं तन्निवृत्त्यर्थमेव विधीयते, तथैव-संयमयात्रानिर्वाहार्थं-संयमभारवहनार्थं प्राणधारणार्थं च साधुर्भुञ्जीत, न तु शरीरबलवृद्धयर्थं रूपलावण्यवृद्धयर्थं चेत्याशयः। एवम्=अमुना प्रकारेण आहारसमितियोगेन भावितो भवति अन्तरात्मा। भावितात्मा कीदृशो भवति? इत्याह-अशबलासंक्लिष्टनिर्व्रणचरित्रभावनया हेतुभूतया अहिंसकःसंयतःसुसाधुर्भवति। एषा पदानामर्थो द्वितीयभावनाया व्याख्यातस्ततोऽवगन्तव्यः ॥ सू० ९ ॥

प्रयोग उसकी निवृत्ति के लिये किया जाता है उसी तरह (संजमजायामाया निमित्त) संयमयात्रा के निर्वाह के लिये (संजमभार वहणट्ठाए) संयम रूप भार को ढोने के लिये और (पाणधारणट्ठयाए) प्राण धारण के लिये (संजएण) संयत-मुनि (समिय) यतना पूर्वक सम-भाव से (भुंजेज्जा) आहार करे। किन्तु शारीरिक बलवृद्धि के लिये तथा रूपलावण्य की वृद्धि के लिये नहीं करे। (एवमाहारसमिइजोगेण भाविओअंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठ निव्वणचरित्त भावणाए अहिंसए संजए सुसाहू) इस प्रकार का आहार समिति के योग से अंतरात्मा भावित हो जाता है। भावित हुआ वह अन्तरात्मा अशबल, असंक्लिष्ट एवं निर्व्रण (निरतिचार) चरित्र की भावना के कारण अहिंसक और संयत बन जाता है, और सच्चे रूप में साधु-मोक्ष को साधन करने वाले-इस नाम को चरितार्थ कर लेता है।

તથા એજ પ્રમાણે "संजमजायामायानिमित्त" સંયમયાત્રાના નિર્વાહને માટે "संजमभारवहणट्ठाए" સંયમરૂપી ભારનું વહન કરવાને માટે અને "प्राणधारणट्ठाए" પ્રાણધારણને માટે "संजएण" સંયત-મુનિ "समिय" યતના પૂર્વક સમભાવથી "भुंजेज्जा" આહાર કરે પણ શારીરિક બળ વધારવાને માટે તથા રૂપલાવણ્યની વૃદ્ધિને માટે ન કરે "एवमाहारसमइजोगेण भाविओ अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वाणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू" આ રીતે આહાર સમિતિના યોગથી અંતરાત્મા ભાવિત થઈ જાય છે ભાવિત થયેલ તે અન્તરાત્મા અશબલ અસંક્લિષ્ટ અને નિર્વ્રણ ચારિત્રની ભાવનાને કારણે અહિંસક તથા સંયત બની જાય છે, અને સાચા અર્થમાં સાધુ મોક્ષને સાધન કરનાર-તે નામને ચરિતાર્થ કરે છે.

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने एषणा समिति नाम की चतुर्थ भावना का स्पष्टीकरण किया है। इसमें वस्तु का गवेषण, उसका ग्रहण तथा उपयोग, इन तीन बातों का विचार किया जाता है। उञ्छ आहार की गवेषणा करते समय साधु को अज्ञात, अकथित आदि रूप में रह कर ही विचरना चाहिये। 'आहार प्राप्त होगा या नहीं होगा' इस प्रकार के संदेहयुक्त विचार से उसे विषाद सामपन्न नहीं होना चाहिये। अपने द्वारा गृहीत संयम की जिस प्रकार रक्षा हो ऐसा ही प्रयत्न उसको करते रहना चाहिये तथा जो संयम भाव प्राप्त नहीं हुआ है उसकी प्राप्ति में उसका सतत उद्योगी रहना चाहिये। भिक्षा का लाभ न होने पर उसके चित्त में ग्लानि का भाव नहीं जगना चाहिये। और न क्रोधादि के आवेश में आकर तनतनाट करना चाहिये। भिक्षा प्राप्ति के निमित्त उसे अनेक गृहस्थों के घर पर जाना अनिवार्य है। वहा से वह अल्परूप में प्रत्येक घर से भिक्षा ले। जब देखे की भिक्षा की पूर्ति हो गई है तो वह वापिस उपाश्रय में आवे और गुरु के समक्ष प्राप्त भिक्षा को रखकर गमनागमनजन्य अतिचारों की प्रतिक्रमण करके शुद्धि करे। फिर गुरु के पास अथवा गुरुनिर्दिष्ट अन्य और रत्नाधिक मुनि के समीप जिस २ प्रकार से उसने गोचरी-

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે एषणासमिति નામની સાથે ચોથી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમા વસ્તુના ગવેષણ, તેનુ ગ્રહણ, તથા ઉપ-યોગ, એ ત્રણ વાતનો વિચાર કરાયો છે ઉછ આહારની ગવેષણા કરતી વખતે સાધુએ અજ્ઞાત, અકથિત, આદિ રૂપમા રહીને જ વિચરવુ જોઇએ "આહાર પ્રાપ્ત થશે કે નહી થાય" એવા સદિગ્ધ વિચારથી તેણે વિષાદ કરવો જોઇએ નહી પોતે ગ્રહણ કરેલ સયમની જે પ્રકારે રક્ષા થાય એવો જ પ્રયત્ન તેણે કરતા રહેવુ જોઈએ તથા જે સયમ ભાવ પ્રાપ્ત થયો નથી તેની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયત્નશીલ રહેવુ જોઈએ, ભિક્ષા પ્રાપ્ત ન થતા તેના મનમા ગ્લાનિનો ભાવ ઉત્પન્ન થવો જોઇએ નહીં અને ક્રોધાદિના આવેશમા આવીને તનતનાટ કરવો જોઈએ નહીં ભિક્ષા પ્રાપ્તિને માટે અનેક ગૃહસ્થોને ઘેર જવુ તે તેને માટે અનિવાર્ય ગણાય છે ત્યાથી-પ્રત્યેક ઘરેથી તે થોડી થોડી ભિક્ષા ગ્રહણ કરે જ્યારે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ પૂર્ણ થઇ ગયેલી લાગે ત્યારે તે ઉપાશ્રયમા આવીને ગુરુની સમક્ષ પ્રાપ્ત થયેલ ભિક્ષાને મૂકીને ગમનાગમન જન્ય અતિ ચારોની પ્રતિક્રમણ કરીને શુદ્ધિ કરે પછી ગુરુની પાસે અથવા ગુરુનિર્દિષ્ટ બીજા કોઇ ત્રિરત્નધારી સાધુની પાસે તેણે જે જે પ્રકારે ગોચરી પ્રાપ્ત કરી

भिक्षा प्राप्त की है उसकी आलोचना करें। इस तरह प्रमाद वर्जित बनकर वह आगामी काल में इस बातकी विशेष सावधानी रखे की जिससे उद्गमादि दोषों का आहार में परिहार(निवारण) होता रहे। कायोत्सर्गकरके वह आहार में अनातुर बनकर शांति-सुखपूर्वक बैठ जावे। और जबतक आहार करने का समय न आवे इसके पहिले अपने मन को ध्यान, शुभयोग, ज्ञान, और स्वाध्याय में लगावे। किसी भी प्रकार का सक्लिष्ट भाव अपने मन में न आने देवे। बाद मे-जब आहार का समय आ जावे तब उठकर यथापर्याय अर्थात् बडे छोटो के क्रम से समस्त साधुजनों को योग की अवक्रतापूर्वक आहार के लिये आमन्त्रित करे। गुरुजन जब भोजन करने की आज्ञा प्रदान करे तब अपने सशीर्ष शरीर आदिका प्रमार्जन कर, अमूर्च्छित आदि भाव सपन्न बनकर यतनापूर्वक आगमोक्त विधि के अनुसार आहार करे। आहार करते समय इस बात का वह ध्यान रखे कि यह आहार में शरीर में बलवृद्धि के निमित्त अथवा काति आदि बढाने के निमित्त नही कर रहा हू किन्तु सयमयात्रा के निर्वाह के निमित्त सयमभार वहन करने के निमित्त, और प्राणधारण के निमित्त ही कर रहा हू। इस प्रकार आहारसमिति के योग से यह जीव वासित हो जाता है-तो वह अपने गृहीत व्रत के अहिंसा अतिचार आदि दोषों से रक्षित करता हुआ सच्चा अहिंसक सयत

હોય તેની આલોચના કરે આ રીતે પ્રમાદ રહિત બનીને તે ભવિષ્યમા તે વાતની વધારે કાળજી રાખે કે જેથી ઉદ્ગમાદિ દોષોનો આહારમા ત્યાગ થતો રહે કાયોત્સર્ગ કરીને આહાર માટે આતુર બન્યા વિના તે શાતિથી બેસી જાય અને આહાર કરવાનો સમય ન થાય ત્યા સુધી પોતાના મનને ધ્યાન, શુભયોગ, જ્ઞાન અને સ્વાધ્યાયમા લીન કરે, કોઇ પણ પ્રકારનો સક્લિષ્ટભાવ પોતાના મનમા થવા દે નહી પછી જ્યારે આહાર કરવાનો સમય થાય ત્યારે ઉઠીને પર્યાય પ્રમાણે એટલે કે મોટા-નાનાના ક્રમમા સમસ્ત સાધુઓને વિનય પૂર્વક આહારને માટે આમત્રે, ગુરુજન જ્યારે ભોજન લેવાની આજ્ઞા આપે ત્યારે પોતાના શિર શરીર આદિનુ પ્રમાર્જન કરીને, અમૂર્ચ્છિત આદિ ભાવયુક્ત બનીને યતના પૂર્વક આગમોક્ત વિધિ પ્રમાણે આહાર કરે આહાર કરતી વખતે તેણે તે વાતનુ ધ્યાન રાખવુ કે હુ આ આહાર શરીરમા બળ વધારવા માટે કે રૂપ વધારવા માટે કરતો નથી પણ સયમયાત્રાના નિર્વાહને માટે સયમભાર વહેવાને માટે, અને પ્રાણધારણને માટે જ કરૂ છુ આ પ્રમાણે આહાર સમિતિના યોગથી તે જીવ વાસિત થઈ જાય છે તો તે પોતે

अथ पञ्चमीं निक्षेपभावनामाह-' पंचम ' इत्यादि-

मूलम्-पंचम पीढफलग सेज्जा संथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरय-हरण चोलपट्टगमुहपत्तिगपायपुंछणाई, एयंपि संजमस्स उववूहणट्ठयाए वायातवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए उव-गरण रागदोसरहियं परिहरियव्वं, संजएणं निच्चं पडिलेहण पप्फोडणापमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सययं निक्खियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण भंडोवहि उवगरणं। एवं आयणभंडणिक्खेवणासमिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्त भावणाए अहिं-सए संजए सुसाहू ॥ सू० १० ॥

टीका—' पंचम ' इत्यादि—

' पंचम ' पञ्चमीमादाननिक्षेपसमितिरूपां भावनामाह-' पीढफलगसेज्जा संथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरणचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाई ' पीठफलक शय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलदण्डकरजोहरणचोलपट्टकमुखपोतिकापादप्रोञ्छनादि, तत्र-पीठ=काष्ठमय ' पाट ' इति प्रसिद्धमासनम्- ' फलक = ' बाजोट '

बन जाता है। और सुसाधु नामको सफल करता है। ॥ सू० ९ ॥

अब सूत्रकार पांचवी जो निक्षेपभावना है उसे प्रकट करने के लिये सूत्र कहते हैं—' पंचम ' इत्यादि।

टीकार्थ—(पंचम) पांचवी भावना आदान निक्षेपसमितिरूप है वह इस प्रकार है (पीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरणचोल-

---

ग्रहण કરેલ અહિંસાવ્રતનુ અતિચાર આદિ દોષોથી રક્ષણ કરતો થકો સાચો અહિંસક સંત બની જાય છે અને સુસાધુ નામને સફળ કરે છે ॥સૂ.૯॥

હવે સૂત્રકાર પાંચમી જે નિક્ષેપ ભાવના છે તેનુ વર્ણન કરવાને માટે કહે છે-" પંચમ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—' પંચમ " પાંચમી ભાવના આદાનનિક્ષેપસમિતિ નામની છે તે આ પ્રમાણે છે-पीढ फलग सेज्जासंथारगवत्थपत्तकंबल दंडगरयहरणचोलपट्टगमुहपत्तिग

इति प्रसिद्ध', शय्या=शरीरप्रमाणलक्षणा, संस्तारकः=सार्द्धहस्तद्वयप्रमाणआसन-विशेषः, वस्त्र, पात्र, कम्बलश्च प्रसिद्धाः, दण्डकः=रोगिभिर्वृद्धैश्च गमनागमनार्थं रक्षिता यष्टि', रजोहरण, चोलपट्टकः, तथा-मुखपोतिका=सदोरमुखवस्त्रिका, पादप्रोञ्छन=प्रमार्जिका, एतान्यादौ यस्य तत्, इत्यादिकम्, 'उवगरण' उपकरण साधोरस्ति। 'एयपि' आहारवदेतदपि पीठफलकादिकं 'संजमस्स' संयम-स्य-सप्तदशविधस्य 'उववूहणट्ठयाए' उपबृंहणार्थम्-पोषणार्थम्-भवति। अतः 'वायातवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए' वातातपदंशमशकशीतपरिरक्षणार्थं 'संजएण' संयतेन=मुनिना 'रागदोसरहिय' रागद्वेषरहित यथा स्यात्तथेदम् उपकरण 'परिहरियव्व' परिधर्तव्यम् धारणीयमित्यर्थः। तथा 'निच्च' नित्य तेषां यथायोग्य 'पडिलेहणा पप्फोडणापमज्जणाए' प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जनासु-तत्र-प्रतिलेखना-उभयकाल प्रत्युपेक्षणा, प्रस्फोटना=यतनया विधूननम्, प्रमार्जना

पट्टगमुहपत्तिगपायपुंछणाइ) पीठ पाट, फलक-बाजोट शय्या शरीरप्रमाण-बिछौना, संस्तारक-अढाईहाथप्रमाणआसनविशेष, वस्त्र, पात्र, कम्बल, दण्ड-रोगी अथवा वृद्ध साधुओं द्वारा अपने पास गमनागमनार्थं रक्खी हुई लकड़ी, रजो हरण, चोलपट्टक, मुखपोतिका-सदोरकमुखवस्त्रिका और पादप्रोञ्छन-प्रमार्जिका इत्यादि उपकरण साधु के हैं। (एयपि-संजमस्स उववूहणट्ठयाए) आहार की तरह ये भी सतरह प्रकार के संयम का पोषण के लिये हैं। इसलिये इनका (वायातवदंसमसग सीय-परिरक्खणट्ठयाए संजएण रागदोसरहिय परिहरियव्व) वात-(पवन) आतप-धूप, दंश, मशक एवं शीत से रक्षित होने के लिये मुनि को रागद्वेषरहित होकर धारण करना चाहिये। तथा (निच्च) नित्य ही (पडिलेहणा पप्फोडणा पमज्जणाए) इन उपकरणों में से भाजन भाण्ड

पायपुछणाइ" पीठ-પાટ, फलक-બાજોઠ, शय्या-શરીરના પ્રમાણનું પાથરણું संस्तारक-અઢી હાથના માપનું આસનવિશેષ, वस्त्र, પાત્ર, કંબલ, दण्ड-રોગી અથવા વૃદ્ધ સાધુઓ દ્વારા પોતાની પાસે આવવા જવા (ટેકા માટે) રાખેલી લાકડી, રજોહરણ, ચોલપટ્ટક, मुखपोत्तिका દોરા સહિત મુહપત્તિ, અને પાદપ્રોંછન પ્રમાર્જિકા ઈત્યાદિ સાધુના ઉપકરણો છે "एयपि संजमस्स उववूहणट्ठयाए" આહારની જેમ એ પણ સત્તર પ્રકારના સંયમના પોષણ માટે છે તેથી તેમને "वायातवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठाए संजएणं रागदोसरहिय परिहरियव्व" વાત-પવન, આતપ, તડકો, દંશ, મશક અને શીતથી રક્ષણ પામવાને માટે મુનિએ રાગદ્વેષ રહિત થઈને તેમને ધારણ કરવા જોઈએ તથા "निच्च" હમેશા "पडिलेहणापमज्जणाए" એ ઉપકરણોમાંથી ભાજન ભાંડ અને ઉપધિની પ્રતિ

=रजोहरणादिभिः समार्जना, तासु =तासु-प्रतिलेखनादिकरणानन्तरमित्यर्थः 'अहो य राओ य' अहश्च रात्रौ च 'भायणभंडोवहिउवगरण' भाजनभाण्डो पध्युपकरणं-तत्र-भाजन=पात्रम्, भाण्डम्=उन्दकम्, उपधिः=वस्त्रम्, एतत्त्रित यरूप यदुपकरण तत्, 'अप्पमत्तेण' अप्रमत्तेन सता 'सयय' सतत=निरन्तर 'निक्खियव्व' निक्षेप्तव्य-स्थापनीय 'गिण्हियव्व' गृहीतव्य च 'होइ' भवति एवमादानभाण्डनिक्षेपणासमितियोगेन भावितो भवति अन्तरात्मा=जीवः। भावितान्तरात्मा कीदृशो भवति? इत्याह-अशबलासंक्लिष्टनिर्व्रणचारित्र भावनया हेतुभूतया अहिंसकः संयतः सुसाधुर्भवति. एतेषामर्थः पूर्वमुक्तः, तत एवावगन्तव्यः॥सू१•

और उपधि की प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जना कर लेने पर-प्रतिलेखना दोनों समय प्रत्युपेक्षणा प्रस्फोटना, प्रमार्जना-रजोहरणादि से पुजना करके (अहोय राओ य) दिन में और रात्रि में (भायण भंडोवही-ऊवगरण) भाजन-पात्र, भाण्ड उन्दक, और उपधि-वस्त्र। इन उपकरणों को जमीन पर रखना पडता है, उठाना पडता है। सो ऐसी स्थिति में साधु का यह कर्तव्य है कि वह इन सबको धरते उठाते (सयय) निरन्तर (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त रहे। (निक्खियव्व गिण्हियव्व होइ) इन उपकरणों को जब भूमि पर धरे तब उसकी प्रमार्जना करे फिर धरे, उठावे तब उन उपकरणों की प्रमार्जना करके उठावे। इस तरह करने से जीवों की विराधना नहीं हो सकती है। यही साधु की अप्रमत्त अवस्था है। (एव) इस तरह (आयाण भंडनिक्खवणासमिइ-जोगेण) आदान भाण्डनिक्षेपणासमिति के योग से (अतरप्पा) जीव

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-બન્ને સમય પ્રત્યુપેક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-યતના ખાંચેરવુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણ આદિથી પૂજવુ વગેરે કર્યા પછી "अहोय राओय" દિવસે તથા રાત્રે "भायण भंडोवहिउवगरण" ભાજન-પાત્ર, भाण्ड-ઉન્દક અને ઉપધિ-વસ્ત્ર, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર રાખવા પડે છે, તથા ઉપાડવા પડે છે તો એવી પરિસ્થિતિમા સાધુનુ એ કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા "सयय" નિરંતર "अप्पम ण" અપ્રમાદી રહે "निक्खियव्व गिण्हियव्व होइ" એ ઉપકરણોને જ્યારે જમીન પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપકરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે "एव" આ રીતે "आयाण भड निक्खेवणासमिइजोगेण" આદાન ભાંડ નિક્ષેપણા સમિતિના યોગથી "अ

सम्प्रति सूत्रकारः प्रथमसंवरद्वारमुपसंहरन्नाह–' एवं ' इत्यादि—

मूलम्–एवमिणं संवरदारं सम्मं संवरियं होइ, सुप्पणिहियं, इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं, णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्साइ असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिण-मणुण्णाओ। एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ। एवं णायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्ध-वरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं पढमं संवरदारं समत्तं त्ति बेमि॥ सू–११॥

टीका—' एवमिणं ' इत्यादि—

' एवमिणं ' एवम्—उक्तक्रमेण इदम्–अहिंसालक्षणं 'संवरदारं' संवरद्वारम्=संवरस्य=अनास्रवस्य द्वारम्=उपायः ' सम्मं ' सम्यक् ' संवरियं ' संवृतम्–संसे-

---

(भाविओ भवइ) वासित बना हुआ वह जीव हेतुभूत अशबल, असंक्लिष्ट, निर्व्रण (निरतिचार) चारित्र की भावना से अहिंसक संयत बन जाता है। और सच्चेरूप में अपने साधुपद को सार्थक कर लेता है। निर्जन्तु भूमि पर उपकरणों का धरना और उठाना इसका नाम आदानभाण्ड–निक्षेपणा समिति है। इस समिति के योग से आत्मा–मुनि अपने अहिंसा महाव्रत की रक्षा और स्थिरता करता रहता है ॥॥ सू० १० ॥

अब सूत्रकार प्रथम संवर द्वार का उपसंहार करते हुए कहते हैं—

तस्मा " જીવ " भाविओ भवइ " ભાવિત બની જાય છે ભાવિત બનેલ તે જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસંકિલષ્ટ, નિર્વ્રણ ચારિત્રની ભાવનાથી અહિંસક સંયત બની જાય છે અને સાચા અર્થમા પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનુ નામ આદાન ભાંડ નિક્ષેપણા સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ–પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ–૧૦ ॥

હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે–"एवमिणं" ઇત્યાદિ

=रजोहरणादिभिः समार्जना, तासु कृतासु-प्रतिलेखनादिकरणानन्तरमित्यर्थः 'अहो य राओ य' अहश्च रात्रौ च 'भायणभंडोवहिउवगरणं' भाजनभाण्डोपध्युपकरण-तत्र-भाजन=पात्रम्, भाण्डम्=उन्दकम्, उपधिः=वस्त्रम्, एतस्त्रितयरूप यदुपकरण तत्, 'अप्पमत्तेण' अप्रमत्तेन सता 'सयय' सततं=निरन्तर 'निक्खियव्व' निक्षेप्तव्य-स्थापनीय 'गिण्हियव्व' गृहीतव्य च 'होइ' भवति एवमादानभाण्डनिक्षेपणासमितियोगेन भावितो भवति अन्तरात्मा=जीवः। भावितोऽन्तरात्मा कीदृशो भवति? इत्याह-अशबलासंक्लिष्टनिर्व्रणचारित्र भावनया हेतुभूतया अहिंसकः सयत सुसाधुर्भवति, एतेषामर्थः पूर्वमुक्तः, तत एतावद्गन्तव्यः॥सू१॥

और उपधि की प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जना कर लेने पर-प्रतिलेखना दोनों समय प्रत्युपेक्षणा प्रस्फोटना, प्रमार्जना-रजोहरणादि से पुजना करके (अहोय राओय) दिन में और रात्रि में (भायण भंडोवही-उवगरण) भाजन-पात्र, भाण्ड उन्दक, और उपधि-वस्त्र। इन उपकरणों को जमीन पर रखना पडता है, उठाना पडता है। सो ऐसी स्थिति में साधु का यह कर्तव्य है कि वह इन सबको धरते उठाते (सयय) निरन्तर (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त रहे। (निक्खियव्व गिण्हियव्व होइ) इन उपकरणों को जब भूमि पर धरे तब उसकी प्रमार्जना करे फिर धरे, उठावे तब उन उपकरणों की प्रमार्जना करके उठावे। इस तरह करने से जीवों की विराधना नहीं हो सकती है। यही साधु की अप्रमत्त अवस्था है। (एव) इस तरह (आयाण भंडनिक्खवणासमिइ-जोगेण) आदान भाण्डनिक्षेपणासमिति के योग से (अतरप्पा) जीव

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-બન્ને સમય પ્રત્યુપેક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-યતના ખાંખેરવુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણ આદિથી પૂજવુ વગેરે કર્યા પછી "अहोय राओय" દિવસે તથા રાત્રે "भायण भंडोवहिउवगरण" ભાજન-પાત્ર, भाण्ड-ઉન્દક અને ઉપધિ-વસ્ત્ર, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર રાખવા પડે છે, તથા ઉપાડવા પડે છે તો એવી પરિસ્થિતિમા સાધુનુ એ કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા "सयय" નિરતર "अप्पम ण" અપ્રમાદી રહે "निक्खियव्व गिण्हियव्व होइ" એ ઉપકરણોને જ્યારે જમીન પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપકરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે "एव" આ રીતે "आयाण भड निक्खेवणासमिइजोगेण" આદાન ભાડ નિક્ષેપણા સમિતિના યોગથી "अ

सम्प्रति सूत्रकार. प्रथमसंवरद्वारमुपसंहरन्नाह–' एवं ' इत्यादि—

मूलम्–एवमिणं संवरदारं सम्मं संवरियं होइ, सुप्पणिहियं, इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं, णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिसाइ असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिण-मणुण्णाओ। एवं पढमं सव्वरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ। एवं णायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्ध-वरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं पढमं संवरदारं समत्तं त्ति बेमि॥ सू–११॥

टीका—' एवमिणं ' इत्यादि—

' एवमिणं ' एवम्–-उक्तक्रमेण इदम्–अहिंसालक्षणं 'संवरदारं' संवरद्वारम्= संवरस्य=अनाश्रवस्य द्वारम्=उपायः ' सम्मं ' सम्यक् ' संवरियं ' संवृतम्–संसे-

---

(भाविओ भवइ) भावित बना हुआ वह जीव हेतुभूत अशबल, असंक्लिष्ट, निर्व्रण (निरतिचार) चारीत्र की भावना से अहिंसक संयत बन जाता है। और सच्चेरूप में अपने साधुपद को सार्थक कर लेता है। निर्जन्तु भूमि पर उपकरणों का धरना और उठाना इसका नाम आदानभाण्ड–निक्षेपणा समिति है। इस समिति के योग से आत्मा–मुनि अपने अहिंसा महाव्रत की रक्षा और स्थिरता करता रहता है॥॥ सू० १०॥

अब सूत्रकार प्रथम संवर द्वार का उपसंहार करते हुए कहते हैं—

तरप्पा " જીવ "भाविओ भवइ" ભાવિત બની જાય છે ભાવિત બનેલ તે જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસંકિલષ્ટ, નિર્વ્રણ ચારિત્રની ભાવનાથી અહિંસક સંયત બની જાય છે અને સાચા અર્થમા પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનુ નામ આદાન ભાંડ નિક્ષેપણા સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ–પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ–૧૦॥

હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે–"एवमिणं" ઇત્યાદિ

रित सत् 'सुपणिहिय' सुपणिहित=सुरक्षित 'होइ' भवति। 'मणवयणकायप रिरक्खिएहिं' मनोवचनकायपरिरक्षितैः-योगत्रयपरिरक्षितैः 'इमेहिं पचहिं वि कार णेहिं' एभिः पञ्चभिरपि कारणैः=पूर्वोक्ताभिः पञ्चभिर्भावनाभिः 'णिच्च' नित्यम् 'आमरणंत' आमरणान्तं=मरणपर्यन्त च 'एसजोगो' एष योगः=अहिंसालक्ष णसवररूपव्यापारः 'धिइमया' धृतिमता=स्वस्थचित्तेन 'मइमया' मतिमता= हेयोपादेयमेधायुक्तेन 'नेयव्वो' नेतव्यः=रोढव्यः परिपालनीय इत्यर्थः। कीद शोऽय योगः ? इत्याह-अथ योग.-'अणासवो' अनाश्रवः-नूतनकर्मागमनरहित- त्वात् 'अकलुसो' अकलुषः=अशुभाध्यवसायरहितत्वात्, 'अच्छिद्दो' अच्छिद्रः- छिन्नपापस्रोतस्त्वात्, अपरिस्साई' अपरिस्रावी=बिन्दुरूपेणापि कर्मजलप्रवेशरहि-

'एवमिण' इत्यादि

टीकार्थ | (एवमिण सवरदार सम्म सवरिय सुपणिहिय होइ) उक्त क्रमसे यह अहिंसारूप प्रथम सवरद्वार सेवित किये जाने पर सुरक्षित हो जाता है। (मणवयणकायपरिरक्खिएहिं) इसलिये मन वचन और काय इन तीनो योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये (इमेहिं पचहिं वि कारणेहिं) इन पूर्वोक्त पाच भावनारूप कारणों से (निच्च) नित्य (आमरणंत) मरणपर्यंत-जीवन भर तक (एस जोगो) इस अहिंसारूप सवरद्वार का (धिइमया) स्वस्थचित्त से युक्त एव (मइमया) हेयोपादेय की बुद्धि से सपन्न होकर मुनि को (नेयव्वो) परिपालन करना चाहिये। क्यों कि यह अहिंसारूप सवर योग (अणा सवो) नूतन कर्मागमन को रोकने का कारण होने से अनाश्रवरूप है। (अकलुसो) अशुभ अध्यवसाय से रहित होने के कारण अकलुष रूप है। (अच्छिद्दो) इससे पापका स्रोत नष्ट हो जाता है इस कारण से यह

ટીકાર્થ-"एवमिण सवरदार सम्म सवरिय सुपणिहिय होइ" કહ્યા પ્રમાણેના ક્રમથી આ અહિંસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વારનુ સેવન કરવાથી તે સુરક્ષિત થઈ જાય છે "मणवयणकायपरिरक्खिएहिं" તેથી મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ "इमेहि पचहि विकारणेहि" એ પૂર્વોક્ત પાચ ભાવનારૂપ કારણોથી "निच्च" હમેશા "आमरणत" મરણપર્યંત-આજીવન, "एसजोगो" આ અહિંસારૂપ સવરદ્વારનુ "धिइमया" સ્વસ્થ ચિત્તથી અને "मइमया" હેયોપાદેયની બુદ્ધિથી યુક્ત થઈને મુનિએ "नेयव्वो" પરિપા લન કરવુ જોઈએ કારણ કે આ અહિંસારૂપ સવરયોગ "अणासवो" નવા કર્માગમનને રોકવાને કારણભૂત હોવાથી તે અનાશ્રવ રૂપ છે "अकलुसो" અશુભ અધ્યવસાયથી રહિત હોવાને કારણે અકલુષરૂપ છે "अच्छिद्दो" તેનાથી પાપનો પ્રવાહ નાશ પામે છે તે કારણે તે અચ્છિદ્રરૂપ છે "अ[illegible]"

त्वात्, 'असंकिलिट्ठो' असंक्लिष्ट–असमाधिभाववर्जितत्वात् 'सुद्धो' शुद्धः= कर्ममलवर्जितत्वात् 'सव्वजिणमणुण्णाओ' सर्वजिनानुज्ञात –सकलप्राणिहितकारकत्वात् सर्वेषामर्हतामनुमतश्चास्ति। एवम्–उक्तप्रकारेण 'पढमं संवरदारं' प्रथमं संवरद्वार,, फासियं' स्पृष्टं कायेन, 'पालियं' पालितं सततमुपयोगेन सेवितम्, 'सोहियं' शोधितम्–अतिचारवर्जनेन, 'तीरियं' तीरितं=तीरं प्रापितं पूर्णरूपेण सेवितम्, 'किट्टियं' कीर्त्तितम्=अन्येषामुपदिष्टम्, तथा 'आराहियं' आराधितं–त्रिकरणत्रियोगैः सम्यगाचरितम्, 'आणाए' आज्ञया=सर्वज्ञवचनेन, 'अणुपालियं' अनुपालितं च भवति। एवम्=उक्तरूपं संवरद्वारं केन कथितम्?

अच्छिद्ररूप है। (अपरिस्साई) एक बिन्दु मात्र भी कर्मरूप जल का इस में प्रवेश नहीं हो सकता है अतः उससे रहित होने के कारण यह अपरिस्रावी है। (असंकिलिट्ठो) असमाधिरूप भाव से यह वर्जित होता है इसलिये असंक्लिष्ट है। तथा (सुद्धो) कर्ममल से सर्वथा विहीन होने के कारण यह शुद्ध है। इसीलिये यह (सव्वजिणमणुण्णाओ) समस्त अर्हंत भगवंतों को अनुमत–मान्य हुआ है क्यों कि इसीसे सकल प्राणियों का हित हुआ है। (एवं पढमं संवरदारं) उक्त प्रकार से प्रथम संवरद्वार को (फासियं) जो अपने काय से स्पर्श करते हैं (पालियं) निरन्तर ध्यान पूर्वक इसका सेवन करते हैं (सोहियं) अतिचारों से इसे रहित बनाते हैं (तीरियं) पूर्णरूप से इसे अपने जीवन में उतारते हैं (किट्टियं) दूसरों को इसे धारण करने का उपदेश देते हैं तथा (आराहियं) तीन करण तीन योगों से जो इसे अच्छी तरह आचरित करते हैं (आणाएअणुपालियं भवइ) सर्वज्ञ के वचन

એક બિન્દુ જેટલા પણ કર્મરૂપી જળનો તેમાં પ્રવેશ થઈ શકતો નથી, તેથી તેનાથી રહિત હોવાને કારણે તે અપરિસ્રાવી છે, "असंकिलिट्ठो" અસમાધિરૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસંક્લિષ્ટ છે તથા "सुद्धो" કર્મમળથી સર્વથા રહિત હોવાને કારણે તે શુદ્ધ છે તેથી તે "सव्वजिणमणुण्णाओ" સમસ્ત અર્હંત ભગવાનોને માન્ય થયેલ છે, કારણ કે તેનાથી સઘળા પ્રાણીઓનું હિત થયું છે "एवं पढमं संवरदारं" ઉક્ત પ્રકારે પ્રથમ સંવરદ્વારનો "फासियं" જે પોતાના શરીરથી સ્પર્શ કરે છે 'पालियं' નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનું પાલન કરે છે "सोहियं" અતિચારોથી તેને રહિત બનાવે છે "तीरियं" પૂર્ણ રીતે તેને પોતાના જીવનમાં ઉતારે છે, 'किट्टियं" બીજાને તે પાળવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા 'आराहियं" ત્રણ કારણ ત્રણ યોગોથી જે તેને સારી રીતે આચરે છે "आणाए अणुपालियं भवइ" સર્વજ્ઞના

इत्याह—'णायमुणिणा' ज्ञातमुनिना–प्रसिद्धक्षत्रियवंशोद्भवेन मुनिना भगवता महावीरेण 'पण्णविय' प्रज्ञापितम्=शिष्येभ्य' सामान्यतया कथितम्, 'परूविय' प्ररूपितं=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वकं कथितम्, 'पसिद्ध' प्रसिद्धम्–प्रख्यातम्, सिद्धं–प्रमाणप्रतिष्ठितम्, 'सिद्धवरसासण' सिद्धवरशासनम्–सिद्धाना–निष्ठितार्थानां वरशासनं=प्रधानाज्ञानारूपम्, 'इण' इदम् 'आघविय' आख्यात=सर्वतो भावेन कथितम्, 'सुदेसिय' सुदेशितम्=सदेवमनुजासुराया परिषदि सुष्ठूपदिष्ट 'पसत्थं

के अनुसार ही पालते है। (एवं) इस प्रकार उक्त रूप यह संवर द्वार (णायमुणिणा) प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुए मुनि (भगवया भगवान् महावीर ने (पण्णविय) प्रज्ञापित किया है–शिष्यों के लिये सामान्यरूप से कहा है। (परूविय) प्ररूपित किया है–भेदानुभेद प्रदर्शन पूर्वक कथित किया है। इसलिये यह (पसिद्ध) प्रसिद्ध है–आचार्यादिकी परंपरा से इसका पालन करना इसीरूप में चला आ रहा है। तथा (सिद्ध) सिद्ध है–इसमें किसी भी प्रमाण से बाधा नही आती है अत' प्रमाणप्रतिष्ठित है। तथा (सिद्धवरसासणमिण) जो सिद्ध हो चुके हैं–कृतकृत्य बन चुके हैं–उनका यह वर शासन रूप है सो इसी को (आघविय) प्रभु महावीर ने कहा है। और (सुदेसिय) इसका उपदेश उन्हों ने देव, मनुज एवं असुरों सहित परिषदा में अच्छी तरह दिया है। (पसत्थ) यह प्रथम संवर द्वार समस्त प्राणियों का हितकारक होने से मंगलमय है। (पढम संवरदार समत्त) इस तरह का

વચન પ્રમાણે જ પાળે છે, "एव" આ પ્રમાણે કહ્યા પ્રમાણેના સ્વરૂપનું તે સંવરદ્વાર "णायमुणिणा" પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વંશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ "भगवया" ભગવાન મહાવીરે "पण्णविय" પ્રજ્ઞાપિત કરેલ છે-શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે કહ્યું છે "परूविय" પ્રરૂપિત કરેલ છે-ભેદાનુભેદ બતાવીને કહેલ છે તેથી તે "पसिद्ध" પ્રસિદ્ધ છે–આચાર્યાદિની પરંપરા દ્વારા આ જ રીતે તેનું પાલન કરવાનું ચાલ્યું આવે છે એવું 'सिद्ध" સિદ્ધ થયેલ છે–તેમાં કોઈ પણ પ્રમાણથી બાધા (મુશ્કેલી) આવતી નથી તેથી તે પ્રમાણપ્રતિષ્ઠિત છે તથા "सिद्धवरसासणमिण" જે સિદ્ધ થઇ ગયા છે, કૃતકૃત્ય બની ગયા છે-તેમનું તે શ્રેષ્ઠ શાસન રૂપ છે કારણ કે તે "आघविय" મહાવીર પ્રભુએ કહેલ છે "सुदेसिय" તેનો ઉપદેશ તેમણે દેવ, માનવ અને અસુરો સહિતની પરિષદોમાં સારી રીતે આપેલ છે "पसत्थ" આ પ્રથમ સંવરદ્વાર સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે હિતસાધક હોવાથી મંગળમય છે "पढम संवरदार " આ

'पसत्त' प्रशस्त–सर्वप्राणिहितकृत्त्वान्मङ्गुल्मयम्, पढम संवरदार' प्रथमसंवरद्वार ' समत्त 'समाप्तम्, ' त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि–अस्यार्थःपूर्वमुक्तः ॥ सू० ११ ॥

॥ इति पथम संवरद्वार समाप्तम् ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ – प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनेकग्रन्थनिर्मापक– वादिमानमर्दक–श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचिता श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रसुदर्शन्या ख्याया व्याख्याया संवरात्माके द्वीतीये–भागेऽहिंसानामक प्रथम संवरद्वार समाप्तम् ॥ १ ॥

यह प्रथम सवर द्वार समाप्त हुआ। (त्ति बेमि) हे जम्बू। जैसा मैं ने भगवान् महावीर के मुख से इसे सुना है वैसा ही यह मैंने तुम से कहा है–अपनी कल्पना से इसमें कुछ भी नहीं कहा है ॥

भावार्थ—प्रथम सवरद्वार का उपसंहार करते हूए सूत्रकार कहते है कि इस सवरद्वार को प्रत्येक मुनिजन के लिये अच्छी तरह उपयोग पूर्वक पाचभावनाओं सहित यावज्जीव पालन करना चाहिये। इसके पालन करने मे यदि कोई परीषह और उपसर्ग आवे तो उन्हे धैर्यपूर्वक सहलेना चाहिये, क्यों कि यह सवर द्वार नवीन कर्मो के आस्रव को रोकता हैं। इसके पालन करने से अशुभ अध्यवसाय उत्पन्न नहीं होने पाते हैं। पापों का स्रोत इसके प्रभाव से बंध हो जाता है। यह

પ્રકારનુ આ પ્રથમ સવરદ્વાર સપૂર્ણ થયુ " त्तिबेमि " હે જબૂ! જેવુ મે ભગવાન મહાવીરના મુખેથી સાભળ્યુ છે એવુ જ તે મે તમને કહ્યુ છે— મારી કલ્પનાથી તેમા મે કઈ પણ કહ્યુ નથી

ભાવાર્થ—પ્રથમ સવરદ્વારનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે આ સવરદ્વારનુ પ્રત્યેક મુનિએ સારી રીતે ઉપયોગ પૂર્વક પાચ ભાવનાઓ સહિત જીવનપર્યંત પાલન કરવુ જોઈએ તેનુ પાલન કરતા જો કોઈ પરીષહ તથા ઉપસર્ગ નડે તો ધૈર્યથી તેને સહન કરી લેવા જોઇએ, કારણ કે આ સવરદ્વાર નવીન કર્મોનો આસ્રવ થતો રોકે છે તેનુ પાલન કરવાથી અશુભ અધ્યવસાય ઉત્પન્ન થવા પામતો નથી તેના પ્રભાવથી પાપોના પ્રવાહથી બધ થઈ જાય છે

अपरिस्रावी आदि विशेषणों वाला है। अर्हन्त भगवन्तो ने इसे अपने जीवन में उतार कर ही समस्त जीवों को इसे धारण-सेवन करने का आदेश दिया है। भगवान् महावीर ने भी ऐसी ही इस प्रथम सवर-द्वार की प्रशसा की है। और तीर्थंकर परपरा के अनुसार ही उन्हों ने इसे पालन करने आदि का आदेश दिया है। तथा इसका देवमनुष्यादि सहित परिषदा मे उपदेश दिया है, अतः यह प्रमाणप्रतिष्ठित है। और मगलमय है ॥ सू० ११ ॥

॥ इस प्रकार यह प्रथम सवरद्वार समाप्त हुआ ॥

તે અપરિસ્રાવી આદિ વિશેષણો વાળું છે અર્હંત ભગવાને તેને પોતાના જીવનમા ઉતારીને જ સમસ્ત જીવોને તેને ધારણ કરવાનો-તેનું સેવન કરવાનો આદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ આ પ્રથમ સવરદ્વારની એવી જ પ્રશસા કરી છે અને તીર્થંકર પરપરા અનુસાર જ તેમણે તેનું પાલન કરવા આદિનો આદેશ દીધો છે તથા તેનો દેવ, મનુષ્યાદિ સહિતની પરિષદોમા ઉપદેશ આપ્યો છે, તેથી તે પ્રમાણભૂત છે અને મગળમય છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

આ રીતે આ પ્રથમ સવરદ્વાર સમાપ્ત થાય છે

॥ सत्यवचन नाम द्वितीय सवरद्वारम् ॥

गत प्राणातिपातविरमण, सम्प्रति सत्यवचन प्रारभ्यते। अस्य पूर्वाध्ययनेन सहाय सम्बन्ध'–पूर्व प्राणातिपातविरतिरभिहिता, सा तु अलीकवचनविरत्यैव सभवति, इत्येनेन सम्बन्धेनायात सत्यवचनाख्य द्वितीयमध्ययन प्रारभ्यते, तस्येदमादिम सूत्रम्–' जवू एत्तो विइय च ' इत्यादि—

मूलम्–जवू ! एत्तो विइय च सच्चवयणं सुद्ध सुइयं सिवं सुजाय सुभासिय सुकहिय सुव्वयं सुदिट्ठ सुपइट्ठियं सुपइट्ठियजस सुसजमियवयणवुइय सुरवरनरवसभपवर—वलवग सुविहिय-जण वहुमय परमसाहुधम्मचरणतवनियम–परिग्गहिय सुगइ–पहदेसग च लोगुत्तम च वयमिण विज्जाहरगगणगमणविज्जाणसाहग सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग अवितहं तं सच्च उज्जुय अकुडिल भूयत्थ अत्थओ विसुद्ध उज्जोयग पभासग भवइ, सव्वभावाण–जीवलोगे अविसंवाइजहत्थमहुर पच्चक्खं

सत्यवचन नामक द्वितीय सवरद्वार प्रारभ—

प्राणातिपातविरमण नाम का सवरद्वार कहा जो चुका है। अब सत्यवचन नामका द्वितीय सवरद्वार प्रारंभ होता है। इसका पूर्व अध्ययन के साथ सबध इस प्रकार से है—जबतक अलीकवचनों से जीव की विरति नहीं होगी–तबतक प्राणातिपात का विरमण सभव नहीं हो सकता। इसी सबध को लेकर सूत्रकार ने इस द्वितीय सत्य–वचन नामक अध्ययन को प्रारभ करते हैं। इसका यह प्रथमसूत्र है—

સત્ય વચન નામનુ બીજા સવરદ્વારનો પ્રારભ

પ્રાણાતિપાત વિરમણ નામનુ પહેલા સવરદ્વારનુ વર્ણન પૂર્ણ થયુ હવે સત્યવચન નામના બીજા સવરદ્વારના વર્ણનની શરૂઆત થાય છે તેનો આ પ્રકારે આગળના અધ્યયન સાથે સબધ છે જ્યા સુધી અસત્ય વચનોથી જીવની વિરતિ થતી નથી ત્યા સુધી પ્રાણાતિપાતનુ વિરમણ સભવી શકતુ નથી એ સબધને દર્શાવીને સૂત્રકારે આ દ્વિતીય સત્યવચન નામના અધ્યયનનો પ્રારભ કરે છે તેનુ પહેલુ સૂત્ર આ પ્રમાણે છે–"जवू! एत्तो विइय च" ધ૦

देवय च जंत अच्छेरकारगं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं सच्चेणं महासमुद्दमज्झे वि चिट्ठति, न निमज्जति मूढाणिया वि पोया सच्चेण य उदगसंभममि वि न वुड्ढंति, न य मरति याहं च ते लभति, सच्चेण य अगणि सभममि वि न डज्झंति उज्जुगा मणुस्सा । सच्चेण य तत्ततेल्लतउलोहसीसकाइ छिव्वति, धरेंति न डज्झंति मणुस्सा । पव्वयकडगाहिं मुच्चंते न य मरति सच्चेण य परिग्गहिया असिपजरगया समराओ वि णिइति अणहाय सच्चवाई, वहबधाभिओगवेरघोरेहिं पमुच्चति य, अमित्तमज्झाहिं निइति अणहाय सच्चवाई । सा देव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रयाणं ॥सू०१॥

टीका—' जबू ' इत्यादि—

सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामिन प्रत्याह—हे जम्बू ! ' एत्तो ' इत'—प्रथमसवर-द्वारानन्तरम् ' विइय च ' द्वितीय खलु सवरद्वार ' सच्चवयण ' सत्यवचनम्= सद्भ्यो—मुनिभ्यो गुणेभ्य' पदार्थेभ्यो वा हितम्=उपकारक सत्यम्, उक्तच—

' जबू ! एत्तो विइय च ' इत्यादि ।

टीकार्थ—श्री सुधर्मा स्वामी जबूस्वामी से कहते हैं (जबू !) हे जबू ! (एत्तो) इस प्रथमसवरद्वार के बाद यह (विइय च) दूसरा सवर द्वार सत्य नामका है सो मैं इसे कहता हू, तुम सुनो—(सच्च वयण) " सद्भ्यो हित " सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणो का या पदार्थो का जो वचन हित—उपकारक होता है वह सत्य वचन है। कहा भी है—

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્માસ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે ' जबू !" હે જબૂ ! "एत्तो" આ પહેલા સવરદ્વાર પછી ' विइय च " બીજુ સત્ય નામનુ જે સવરદ્વાર છે તેનુ હુ વર્ણન કરૂ છુ તે તમે સાભળો "सच्चवयण" "सद्भ्यो हित," સત્ય એટલે કે સતનુ મુનિજનનુ અથવા ગુણોનુ અથવા પદાર્થોનુ જે વચન હિત—ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યુ પણ છે—

" सच्च हियं सयामिह सतो मुणउ गुणा पयत्था वा " छाया—सत्य हित सतामिह, सन्तो मुनयो गुणाः पदार्था वा " इति, सत्सु तिष्ठतीति वा, सत्यम्, सत्य च तद्वचन च सत्यवचनम्, परमाणत्राणपरायण हितकर सुखावहमनुद्वेगजनक सुधावत्स्वादीय वचन सत्यवचनमित्यर्थः। कीदृश सत्यवचनम्? तदाह– ' सुद्ध ' शुद्ध–निर्दोषत्वात्, ' सुचिय ' शुचिक पवित्रत्वात्, ' सिव ' शिव=मोक्षजनकत्वाम्, ' सुजाय ' सुजात–शुभविवक्षया समुत्पन्नत्वात्, 'सुभासिय' सुभाषितम्–

"सच्च हियं सयामिह, सतो मुणउ गुणा पयत्था वा"।

सतों का हित जिससे होता है वह सत्य मुनि होते हैं या गुण अथवा पदार्थ होते हैं। सत्य की दूसरी व्युत्पत्ति इस प्रकार से भी है " सत्सु तिष्ठतीति सत्य, सत्य च तद्वचन च सत्यवचन " जो वचन सज्जन पुरुषों में रहता है वह सत्यवचन है। यह सत्यवचन पर के प्राणो के त्राण करने में परायण होता है, सब के हितकारी होता है, सुखदायक होता है, उद्वेगजनक नहीं होता है, और सुधा के जैसे स्वादीय–अत्यत मधुर होता है। (सुद्ध) सत्यवचन मे किसी भी प्रकार का दोष नहीं होता है–अत' निर्दोष होने से यह शुद्ध है (सुइय) इसमें किसी भी प्रकार की अपवित्रता नहीं होती है अतः यह पवित्र होने से शुचिक है। (सिव) इस वचन से जीवों को मोक्ष की प्राप्ति होती है–इसलिये मोक्षजनक होने से यह शिवरूप है। (सुजाय) हार्दिक शुभ भावना से प्रेरित होकर ही ऐसा वचन बोला जाता है

"सच्च हियं सयामिह, सतो मुणउ गुणा पयत्था वा"

सतोनु हित जेनाथी थाय छे ते सत्य छे, मुनि अथवा गुण अथवा पदार्थ ए प्रकारना सत्य छे सत्यनी बीजी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे पण छे–" सत्सु तिष्ठतीति सत्य, सत्य च तद्वच च सत्यवचन " सज्जन पुरुषोमा जे वचन रहे छे ते सत्यवचन छे ते सत्यवचन अन्यना प्राणोनु रक्षण करवाने समर्थ होय छे, बधाने माटे हितकारी होय छे, सुखदायक होय छे, उद्वेगजनक होतु नथी, अमृत जेवु अतिशय मीठु होय छे " सुद्ध " सत्यवचनमा कोई पण प्रकारनो दोष होतो नथी, तेथी निर्दोष होवाथी ते शुद्ध छे " सुइय " तेमा कोईपण प्रकारनी अपवित्रता होती नथी तेथी ते पवित्र होवाथी शुचिक छे " सिव " ते वचनथी जीवोने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, तेथी मोक्षजनक होवाथी ते शिवरूप छे " सुजाय " हार्दिक शुभ भावनाथी प्रेराईने ज एवु वचन बोलाय छे तेथी शुभ भावनामाथी उद्भवेल होवाथी ते सुजात छे.

देवय च जंतं अच्छेरकारगं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं सच्चेणं महासमुद्दमज्झे वि चिट्ठंति, न निमज्जंति मूढाणिया वि पोया सच्चेण य उदगसंभमंमि वि न वुज्झंति, न य मरंति थाहं च ते लभंति, सच्चेण य अगणि संभमंमि वि न डज्झंति उज्जुगा मणुस्सा । सच्चेण य तत्ततेल्लतउलोहसीसकाइ छिव्वंति, धरेंति न डज्झंति मणुस्सा । पव्वयकडगाहिं मुच्चंते न य मरंति सच्चेण य परिग्गहिया असिपंजरगया समराओ वि णिइंति अणहाय सच्चवाई, वहवधाभिओगवेरघोरेहिं पमुच्चंति य, अमित्तमज्झाहिं निइंति अणहाय सच्चवाई । सा देव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रयाणं ॥सू०१॥

टीका—' जंबू ' इत्यादि—

सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामिनं प्रत्याह—हे जम्बू ! ' एत्तो ' इतः-प्रथमसंवरद्वारानन्तरम् ' विइयं च ' द्वितीयं खलु संवरद्वारं ' सच्चवयण ' सत्यवचनम्= सद्भ्यो-मुनिभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो वा हितम्=उपकारकं सत्यम्, उक्तंच—

' जंबू ! एत्तो विइयं च ' इत्यादि ।

टीकार्थ—श्री सुधर्मा स्वामी जंबूस्वामी से कहते हैं (जंबू !) हे जंबू ! (एत्तो) इस प्रथमसंवरद्वार के बाद यह (विइयं च) दूसरा संवर द्वार सत्य नामका है सो मैं इसे कहता हूं, तुम सुनो-(सच्च वयण) " सद्भ्यो हितं " सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणों का या पदार्थों का जो वचन हित-उपकारक होता है वह सत्य वचन है। कहा भी है—

ટીકાર્થ-શ્રી સુધર્માસ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે ' जंबू !" હે જંબૂ ! "एत्तो" આ પહેલા સંવરદ્વાર પછી ' विइयं च " બીજું સત્ય નામનું જે સંવરદ્વાર છે તેનું હું વર્ણન કરૂં છું તે તમે સાંભળો. " सच्चवयण " " सद्भ्यो हितं," સત્ય એટલે કે સતનું મુનિજનનું અથવા ગુણોનું અથવા પદાર્થોનું જે વચન હિત-ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યું પણ છે-

दीना, प्रवरबलवताम्–वासुदेवप्रतिवासुदेवादि योद्धृपुरुषाणां, तथा–'सुविहितज-नाना=महापुरुषाणां च बहुमतं संमतं यत्तत्, तथा–' परमसाहुधम्मचरणं ' परम-साधुधर्मचरणम्=परमसाधूनां = उत्कृष्टक्रियावतां मुनीनां धर्मचरण=धर्मानुष्ठानं यत्तत्, तथा–'तवनियमपरिग्गहियं ' तपो नियमपरिगृहीतम्=तपो नियमाभ्यां परिगृहीतम्=अङ्गीकृतं यत्तत्तथा, तपोनियमौ हि सत्यवादिनामेव भवतो नेतरेषाम्, तथा–' सुगइपहदेसगं ' सुगतिपथदेशकं=सुगतेः पन्थाः सुगतिपथ, तस्य देश-कम्, प्रज्ञापकम्, च=पुनः ' इणं ' इद ' लोगुत्तमं ' लोकोत्तमं=लोकेषु=लोक-त्रयेषु उत्तमं=श्रेष्ठम् ' वयं ' व्रतम् अस्ति। तथा–इदं सत्यवचनं ' विज्जाहरगग-णगमणविज्जाण ' विद्याधरगगनगमनविद्यानां=विद्याधराणां या गगनगमनविद्या-स्तासां ' साहगं ' साधकं–सत्यवादिनामेव विद्याः सिध्यन्तीत्याशयः, तथा— ' सग्गमग्गसिद्धिपहदेसगं ' स्वर्गमार्गसिद्धिपथदेशकं=स्वर्गमार्गसिद्धिपथयोर्देशकं= निर्देशकं यत्तत्तथा, तथा–' अवितहं ' अवितथं=मिथ्याभावरहितं यत् ' तं ' तत्

चक्रवर्ती आदि श्रेष्ठ पुरुषों को, बलदेव, प्रतिवासुदेव आदि सुभट-योद्धाओ को और महापुरुषरूप सुविहितजनों को बहुमान्य हुआ है। (परसाहुधम्मचरणतवनियमपरिग्गहियसुगइपहदेसगं च इणं लोगु-त्तमं च वयं) उत्कृष्ट क्रिया शाली मुनिजनो का यह धर्माचरण–धर्मा-नुष्ठान है। तथा–तप और नियमों से ये परिगृहीत होता है–अर्थात्–तप और नियम सत्यवादी के ही होते है। इतर जीवों के नहीं। सुगति के पथ का यह प्रज्ञापक–निर्देशक होता है। और तीनों लोको में यह सत्यवचन श्रेष्ठ व्रत है। तथा–यह सत्यवचन (विज्जाहरगगण–गमण-विज्जाणसाहगं) विद्याधरों की गगन में गमन करने वाली जो विद्याएँ है उनका साधक है। (सग्गमग्गसिद्धिपहदेसगं) स्वर्ग के मार्ग का और सिद्धि के पथ का प्रदर्शक है। (अवितहं) अवितथ–मिथ्याभाव

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુભટોને અને મહા-પુરુષ સુવિહિત જનોને બહુ જ માન્ય છે "परसाहुधम्मचरणतवनियमपरि-गाहियसुगइपहदेसगं च इणं लोगुत्तमं च वयं" શ્રેષ્ઠ ક્રિયાશાળી મુનિજનોનુ તે ધર્માચરણ–ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગૃહીત થાય છે–એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને માટે નહીં સુગતિના માર્ગનુ તે પ્રજ્ઞાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકમા આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન "विज्जाहारगगणगमण विज्जाण साहगं" વિદ્યાધરોની આકાશમા ગમન કરવાની જે વિદ્યાઓ છે, તેમનુ સાધક છે "सग्गमग्गसिद्धिपहदेसगं" સ્વર્ગના માર્ગનુ પ્રદર્શક છે,

प्रमोदजनकत्वात्, तथा ' सुकहिय ' सुकथितम्-वीतरागप्रतिपादितत्वात्, 'सुव्वय' सुव्रत-सर्वव्रतप्रधानत्वात्, तथा-' सुदिट्ठ ' सुदृष्टम्—अतीन्द्रियार्थदर्शिभिरपवर्गादिहेतुतया दृष्टत्वात्, ' सुपइट्ठिय ' सुप्रतिष्ठितम्-समस्तप्रमाणैरुपपादितत्वात्, 'सुपइट्ठियजस' सुप्रतिष्ठितयशः-सुप्रतिष्ठित यशो यस्य तत्, लोकत्रयप्रसिद्धत्वात्, तथा- ' सुसंजमियवयणबुइय ' सुसंयमितवचनोदित-सुसंयमित=सम्यग्नियन्त्रित यद्वचन तेनोदित=कथितम्, निर्दोषवचनैः कथितमित्यर्थ, तथा ' सुरवर नरवसभपवरबलवगसुविहिय जणबहुमय ' ' सुरवरनरवृषभप्रवरबलवत्सुविहितजनबहुमतम् -- सुरवराणाम् -- इन्द्रादीनां, नरवृषभाणां = चक्रवर्त्या

अत शुभ विवक्षा से समुत्पन्न होने के कारण यह सुजात है। (सुभासिय) यह प्रमोद का जनक होता है इसलिये यह सुभाषित है (सुकहिय) इसका प्रतिपादन वीतराग आत्माओं ने किया है इसलिये यह सुकथित है (सुव्वय) सर्वव्रतों में इसकी प्रधानता मानी गई है इसलिये यह सुव्रतरूप है। (सुदिट्ठ) अतीन्द्रिय अर्थो को जानने वाले सर्वज्ञ प्रभुओं ने इसे अपवर्ग (मोक्ष) आदि के हेतु रूप से देखा है इसलिये यह सुदृष्ट है। (सुपइट्ठिय) समस्त प्रमाणो द्वारा उपपादित होने से यह सुप्रतिष्ठित है। (सुपइट्ठियजस) तीनों लोकों में इस वचन का यश सुप्रसिद्ध है इसलिये यह सुप्रतिष्ठित यशवाला है। (सुसजमियवयणबुइय) इसे सत्य वचन को वे ही मनुष्य बोल सकते हैं कि जिनका वचन सुसयमित होता है अच्छी तरह से नियन्त्रित होता है। (सुरवरनरवसभपवर बलवगसुविहियजणबहुमयं) यह वचन इन्द्रादिक उत्तम देवों को,

" सुभासिय " ते प्रमोद उत्पन्न करनारू होवाथी सुभाषित छे " सुकहिय " वीतराग आत्माओए तेनु प्रतिपादन कर्यु छे, तेथी ते सुकथित छे " सुव्वय " सर्वे व्रतोमा ते मुख्य मनायु छे तेथी ते सुव्रत छे ' सुदिट्ठ " अतीन्द्रिय अर्थोने जाणनारा सर्वज्ञ प्रभुओए ते अपवर्ग आदिना हेतुरूपथी जोयु छे, तेथी ते सुदृष्ट छे " सुपइट्ठिय " समस्त प्रमाणो द्वारा तेनु प्रतिपादन थयेलु होवाथी ते प्रमाणभूत-सुप्रतिष्ठित छे " सुपइट्ठियजस " त्रणे लोकमा आ वचननो यश सुप्रसिद्ध छे तेथी ते सुप्रतिष्ठित यशवाळु छे " सुसजमियवयणबुइय " आ सत्य वचन ए ज माणसो बोली शके छे के जेमना वचन सुसयमित होय छे-सारी रीते नियत्रित होय छे " सुरवर नरवसभपवरबलवगसुविहियजणबहुमय " आ वचन इन्द्र आदि उत्तम देवोने

दोना, प्रवरबलवताम्-वासुदेवप्रतिवासुदेवादि योद्धृपुरुषाणा, तथा-सुविहितजनाना=महापुरुषाणा च बहुमत ममत यत्तत्, तथा-' परमसाहुधम्मचरण ' परमसाधुधर्मचरणम्=परमसाधूना = उत्कृष्टक्रियावर्ता मुनीना धर्मचरण=धर्मानुष्ठान यत्तत्, तथा-'तवनियमपरिग्गहिय ' तपो नियमपरिगृहीतम्=तपो नियमाभ्या परिगृहीतम्=अङ्गीकृत यत्तत्तथा, तपोनियमौ हि सत्यवादिनामेव भवतो नेतरेषाम्, तथा-' सुगइपथदेसग ' सुगतिपथदेशक=सुगते. पन्थाः सुगतिपथ, तस्य देशकम्, प्रज्ञापकम्, च=पुनः ' इण ' इद ' लोगुत्तम ' लोकोत्तम=लोकेषु=लोकत्रयेषु उत्तम=श्रेष्ठम् ' वय ' व्रतम् अस्ति । तथा-इद सत्यवचन ' विज्जाहरगगणगमणविज्जाण ' विद्याधरगगनगमनविधाना=विद्याधराणा या गगनगमनविद्यास्तासा ' साहग ' साधक-सत्यवादिनामेव विद्या' सिध्यन्तीत्याशयः, तथा-' सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग ' स्वर्गमार्गसिद्धिपथदेशक=स्वर्गमार्गसिद्धिपथयोर्देशक=निर्देशक यत्तत्तथा, तथा-' अवितह ' अवितथ=मिथ्याभावरहित यत् ' त ' तत्

चक्रवर्ती आदि श्रेष्ट पुरुषों को, बलदेव, प्रतिवासुदेव आदि सुभट-योद्धाओ को और महापुरुषरूप सुविहितजनों को बहुमान्य हुआ है। (परसाहुधम्मचरणतवनियमपरिग्गहियसुगइपहदेसग च इण लोगुत्तम च वय) उत्कृष्ट क्रिया शाली मुनिजनो का यह धर्माचरण-धर्मानुष्ठान है। तथा-तप और नियमों से ये परिगृहीत होता है-अर्थात् तप और नियम सत्यवादी के ही होते है । इतर जीवों के नहीं। सुगति के पथ का यह प्रज्ञापक-निर्देशक होता है। और तीनो लोको मे यह सत्यवचन श्रेष्ठ व्रत है। तथा-यह सत्यवचन (विज्जाहरगगण-गमण विज्जाणसाहग) विद्याधरों की गगन में गमन करने वाली जो विद्याएँ है उनका साधक है। (सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग) स्वर्ग के मार्ग का और सिद्धि के पथ का प्रदर्शक है। (अवितह) अवितथ-मिथ्याभाव

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુભટોને અને મહા-પુરુષ સુવિહિત જનોને બહુ જ માન્ય છે "परसाहुधम्मचरणतवनियमपरिग्गहियसुगइपहदेसग च इण लोगुत्तम च वय" શ્રેષ્ઠ ક્રિયાશાળી મુનિજનોનુ તે ધર્માચરણ-ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગૃહીત થાય છે-એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને માટે નહીં સુગતિના માર્ગનુ તે પ્રજ્ઞાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકમા આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન "विज्जाहारगगणगमण विज्जाण साहग" વિદ્યાધરોની આકાશમા ગમન કરવાની જે વિદ્યાઓ છે, તેમનુ સાધક છે "सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग" સ્વર્ગના માર્ગનું પ્રદર્શક છે.

'सच्च' सत्यम्=सत्यवचननामक द्वितीय संवरद्वारम्। पुनः कीदृशम्? इत्याह- 'उज्जुय' ऋजुकम्-सरलभावप्रवर्तकत्वात्, तथा 'अकुडिल' अकुटिल=कुटिलभाववर्जितत्वात्, तथा-'भूयत्थ' भूतार्थम्=वास्तविकम्, तथा 'अत्थओ' अर्थतः-परमार्थतः विशुद्धम्, तथा-जीवलोके 'सव्वभावाण' सर्वभावानां-जीवादिसकलपदार्थानाम् 'उज्जोयग' उद्योतक=प्रकाशकम्, अतएव 'पभासग' प्रभावक=प्रतिपादक भवति, पुनः 'अविसवाइ' अविसवादि=अविरुद्धवादि, तथा 'जहत्थमहुर' यथार्थमधुरम्, यथार्थमिति कृत्वा मधुर यथार्थमधुर वास्तविकमधुरमित्यर्थः, तथा-'पच्चक्ख देवय च' प्रत्यक्ष देवत च, सत्य प्रत्यक्षो देव इत्यर्थः। एतादृश 'ज' यत् सत्यम्, 'त' तत् 'अच्छेरकारग' आश्चर्यकारक भवति,

से रहित है। (त सच्च) ऐसा सत्यवचन नामका द्वितीय संवरद्वार (उज्जुय) सरल भाव का प्रवर्त्तक होने से ऋजुक है। तथा (अकुडिल) इसमें भावों की कुटिलता नहीं होती है इसलिये कुटिलभावों से वर्जित होने के कारण यह अकुटिल है (भूयत्थ) यथार्थ अर्थ का इसके द्वारा प्रतिपादन होता है इसलिये यह भूतार्थ है। (अत्थओ विसुद्ध) परमार्थ दृष्टि से यह विशुद्ध है इसलिये यह अर्थतो विशुद्ध है। तथा-(सव्वभावाण उज्जोयग) जीवलोकमें यह समस्त जीवादिपदार्थो का प्रकाशक है इसलिये यह (पभासग भवइ) उनका प्रतिपादक (प्रभावक) भी है। यह सत्यवचन (अविसवाइ) अविरुद्ध रूपसे,अपने स्वरूपको कहने वाला है इसलिये (जहत्थमहुर) वास्तवीकरूप में मधुर है। और (पच्चक्ख देवय च) प्रत्यक्षदेव है-साक्षात् देव जैसा है (ज त) जो यह सत्यवचन

"अवितह" અવિતથ-મિથ્યાભાવથી રહિત છે "त सच्च" આવુ સત્ય નામનુ બીજુ સંવરદ્વાર "उज्जुय" સરલ ભાવનુ પ્રવર્તક હોવાથી ઋજુક છે તથા "अकुडिल" તેમા ભાવોની કુટિલતા હોતી નથી તેથી કુટિલ ભાવોથી રહિત હોવાને કારણે તે અકુટિલ છે "भूयत्थ" યથાર્થ અર્થનુ તેના દ્વારા પ્રતિપાદન થાય છે તેથી તે ભૂતાર્થ છે "अत्थओ विसुद्ध" પરમાર્થ દૃષ્ટિથી તે વિશુદ્ધ છે તેથી તે "अर्थतोविशुद्ध" છે તથા "सव्वभावाण उज्जोयग" જીવલોકમા તે સમસ્ત જીવાદિ પદાર્થોનુ તે પ્રકાશક છે તેથી તે "पभासग भवइ" તેમનુ પ્રતિપાદક પણ છે આ સત્યવચન "अविसवाइ" અવિરૂદ્ધરૂપે પોતાના સ્વરૂપને કહેનાર છે તેથી "जहत्थमहुर" વાસ્તવિક રીતે મધુર છે, અને "पच्चक्खदेवय च" પ્રત્યક્ષ દેવ છે-સાક્ષાત દેવ જેવુ છે "ज त" આ જે સત્યવચન છે તે "अच्छेरकारग अवत्थ

'माणुस्साण' मनुष्याणा कुत्र ? 'बहुएसु' बहुकेषु-अनेकेषु 'अवत्थंतरेसु' अवस्थान्तरेषु = अवस्थाविशेषेषु । तदेवाश्चर्यकारित्वमाह—'सच्चेण' सत्येन 'महासमुद्दमज्झे वि' महासमुद्रमध्येऽपि 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति, न निमज्जन्ति=न ब्रुडन्ति, 'मूढाणिया वि' मूढानीका अपि=मूढा'=नियतदिग्गमन प्रति मूढता प्राप्ता-अनीकाः=नाविकाः येषां ते तथोक्ताः अपि 'पोया' पोता = नावः 'सच्चेण य' सत्येन च 'उदगसंभमम्मि वि' उदकसम्भ्रमेऽपि=आवर्तेऽपि 'न वुड्ड ति' न ब्रुडन्ति, तथा-तत्रस्था जना अपि 'नय मरति' न च म्रियन्ते, 'थाह' स्ताघ=तल च ते 'लम्भति' लभन्ते । तथा—'सच्चेण य सत्येन च 'अगणिसंभमम्मि वि अग्निसम्भ्रमेऽपि=ज्वालामालासङ्कुलेऽप्यनले 'उज्जुगा' ऋजुकाः=सत्यवादिनो 'मणुस्सा' मनुष्या 'न डज्झति' न दह्यन्ते= न दग्धा भवन्ति। तथा-'मणुस्सा' सत्यवादिनो मनुष्याः 'सच्चेण य'

है वह (अच्छेरकारग अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाण) अनेक अवस्थाओं में मनुष्यों के लिये आश्चर्य पैदा करने वाला है, जैसे-(सच्चेण महासमुद्दमज्झे वि चिट्ठति न निमज्जति मूढा णियाविपोया) जिननौकाओं के नाविक जन जब नियत दिशाओं में जाने के ज्ञान से विकल हो जाते हैं तब उनकी वे नौकाएँ महासमुद्र के बीच मे भी इस सत्य के बल पर ही तैर जाती है डूबती नहीं है। (सच्चेण य उदगसंभममि वि न वुडति न य मरति, थाह च ते लम्भति) सत्य के प्रभाव से, जल की भमर में फँसे हुए भी मनुष्य न डूबते हैं और न मरते हैं प्रत्युत उन्हें वहा भी थाह मिल जाती है। (सच्चेण य अगणि संभममि वि न डज्झति उज्जुगा मणुस्सा) सत्य का ही ऐसा प्रभाव है कि जिससे ज्वालाओं से धधकती हुई अग्नि में भी ऋजुक सत्यवादी-मनुष्य जलता

तरेसु बहुएसु माणुसाण" અનેક અવસ્થામા મનુષ્યોને માટે આશ્ચર્ય પેદા કરનાર છે, જેમકે "सच्चेण महासमुद्दमज्झे वि चिट्ठति न निमज्जति मूढा णियावि पोया" જે નૌકાઓના નાવિકો જ્યારે નિયત દિશામા જવાના જ્ઞાનથી રહિત થાય છે ત્યારે તેમની તે નૌકાઓ મહાસમુદ્રની વચ્ચે પણ આ સત્યના પ્રભાવથી ડૂબતી જ અટકે છે "सच्चेण य उदगसभम मि वि न वुडति न य मरति, थाह च ते लम्भति" સત્યના પ્રભાવથી પાણીના વમળમા ફસાયેલ મનુષ્ય પણ ડૂબતા નથી કે મરતા નથી એટલે કે ત્યા પણ તેને રક્ષણ મળી જાય છે "सच्चेण य अगणिसभममि वि न डज्झति उज्जुगा मणुस्सा" સત્યનો જ એવો પ્રભાવ છે કે જ્વાળાઓ વડે પ્રજ્વલિત અગ્નિમા ઋજુક-સત્યવાદી

सत्येन च 'तत्ततेल्लतउलोहसीसगाइ' तप्ततैलत्रपुलोहशीशकानि, तत्र प्रसिद्धम् त्रपु=रङ्गम्, लोहम्=अय, शीशक प्रसिद्धम्, तप्तानि=उत्कलितानि यानि तैल-त्रपुलोहशीशकानि तानि तथोक्तानि 'छिवति' स्पृशन्ति, 'धरेति' धारयन्ति हस्त किन्तु तेन 'न डज्झति' न दह्यन्ते। तथा- 'सच्चेण परिग्गहिया' सत्यन परि-गृहिता मनुष्याः, 'पव्वयकडगाहिं' पर्वतकटकेभ्य =पर्वतप्रदेशेभ्य' 'मुच्चत' मुच्यन्ते=पात्यन्ते, तथापि 'न य मरति' न च म्रियन्ते। तथा-'सच्चवाई' सत्यवादिन 'असिपजरगया वि' असिपञ्जरगता अपि=चतुर्दिक्षु खड्गहस्तशत्रु-पुरुषपरिवेष्टिता अपि सर्वतः खड्गेषु पतत्स्वपीत्यर्थः, 'अणहाय य' अनघा एव= अक्षतशरीराएव 'समराओ' समरात्, 'णियति' निर्यान्ति=निर्गच्छन्ति। तथा 'सच्चवाई' सत्यवादिनः पुरुषाः 'वहबंधाभिओगवेरघोरेहिं' वधबन्धाभियोग

नहीं है। (सच्चेण य मणुस्सा तत्ततेल्लतउलोहसीसगाइ) सत्य से मनुष्य तप्त उबलते हुए तैल को, पिघले हुए रांगे को, लाल हुए लोहे को गले हुए शीशे को (छिवति) छू लेते हैं, अर्थात्-शीतल करता है(धरेंति) उन्हें हाथमें ले लेता हैं, परन्तु (न डज्झति) ये उनसे जलते नहीं है। (पव्वयकड गाहिं मुच्चते न य मरति सच्चेण परिग्गहिया) सत्यवादी मनुष्य को यदि पर्वत के ऊपर से भी नीचे धकेल दिया जावे तो भी वह सत्य के प्रभाव से मरता नहीं है-सर्वथा बच जाता है। इसी तरह जो (सच्चवाई) सत्यवादी मनुष्य होते हैं वे (असिपजरगया) चारो ओर से युद्ध में तलवारों को लिये हुए अपने शत्रुओं द्वारा घेर भी लिये जावें तो भी वे (अणहाय) अक्षत शरीर ही (णिइति) चाहे कितनी ही तलवारों के वार उन पर पड रहे हों, और वे उस युद्धभूमि मे सुर क्षित निकल आते हैं। और (वहबंधाभिओगवेरघोरेहिं पमुच्चति य)

માણુસ બળતો નથી "सच्चेण य मणुस्सा तत्ततेलतउलोहसीसगाइ" સત્યથી માણુસ ઉકળતા તેલને, લાલચોળ લોઢાને અને ઓગાળેલ સીસાને પણ સ્પર્શ કરી શકે છે "धरेति" તેમને હાથમા લઈ લે છે પણ "न डज्झति" તેઓ તેનાથી દાઝતા નથી "पव्वयकडगाहिं मुच्चवे न य मरति सच्चेण परिग्गहिया" સત્યવાદી મનુષ્યને જો પર્વતના ઉપરથી નીચે ધકેલી દેવામા આવે તો પણ સત્યના પ્રભાવથી મરતો નથી-તેનો વાળ પણ વાકો થઈ શકતો નથી આ રીતે જે "सच्चवाई" સત્યવાદી મનુષ્યો હોય છે "असिपजरगया" યુદ્ધમા ચોમેરથી હાથમા તલવાર ધારણ કરેલ શત્રુઓ વડે ઘેરાઈ જાય તો પણ 'अणहाय' અક્ષત શરીરે જ 'णिइति' ગમે તેટલી તલવારોના ઘા તેના પર પડવા છતા પણ તે રણમેદાનમાથી સુરક્ષિત બહાર આવે છે અને તે

वैरघोरें – वधो=घात बन्धः=निगडादि बन्धः, 'अभिओगो' अभियोगः–अपराधारोपः, वैरघोरः=घोरशत्रुता, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, एभ्यः 'पमुच्चति' प्रमुच्यन्ते, च= पुनः 'अमित्तमज्झाहिं' अमित्रमध्यात्=शत्रुमध्यात्='अणहा य' अनघाश्च=अक्षतशरीराश्च, 'निइंति' निर्यान्ति=निर्गच्छन्ति। उक्तमपि—

" सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम्।
नासिश्छिनत्ति सत्येन सत्यान्न दशते फणी ॥ इति।

तथा 'देवयाओ य' देवताश्च 'सच्चवयणे रयाण' सत्यवचने रतानां=सत्यवादिना मणुष्याणा 'सादेव्वाणि' साद्विव्यानि=सानिध्यानि 'करेंति' कुर्वन्ति।

वध घात, वध निगड़ (वेडी)आदि बंधन अभियोग अपराधारोप, एव घोर शत्रुता इनसे भी बच जाते है। (अमित्तमज्झाहिंणिइति अणहा य सच्चवाई) यदि कदाचित् ये शत्रुओ के बीच में आ भी जावें तो भी शत्रु उनका कुछ भी बिगाड नहीं कर पाते हैं–उनके बीच से वे अनअक्षत शरीर ही निकल आते हैं। कहा भी है—

" सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम्।
नासिश्छिनत्ति सत्येन, सत्यान्न दशते फणी॥"

सत्यवादी पुरुषो के समक्ष अग्नि शीतल हो जाती है, अगाध–समुद्र भी स्थल जैसा हो जाता है, तलवार की धार भोथरी हो जाती है और फणी–सर्प उसे डस नहीं पाता है।

अधिक क्या कहा जाय (सच्चवयणे रयाण) जो सत्यवचन में रत होते हैं उन सत्यवादी मनुष्यों का (देवयाओ य) देवता (सादि–

'वह वधाभिओगवेरघोरेहिं पमुचंति य" वध–घात, બંધ–નિગડ આદિ બંધન, અભિયોગ–અપરાધારોપ, અને ઘોર શત્રુતા એ બધાથી પણ બચી જાય છે "अभित्तमज्झाहिंणिइ ति अणहाय सचवाई" જો કદાચ તે શત્રુઓની વચ્ચે આવી જાય તો પણ શત્રુ તેને કાંઈ ઈજા કરી શકતા નથી–તેમની વચ્ચેથી તે અક્ષત શરીરે જ બહાર નીકળી જાય છે કહ્યુ પણ છે—

" सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम्।
नासिच्छिनत्ति सत्येन सत्यान्न दशते फणी ॥ "

સત્યવાદી પુરુષો પાસે અગ્નિ શીતળ થઈ જાય છે, અગાધ સમુદ્ર પણ સ્થળ સમાન થઈ જાય છે, તલવારની ધાર બૂઠી થઈ જાય છે અને સર્પ તેને ડસ દઈ શકતો નથી

વધુ શુ કહુ "सच्चवयणे रयाण" સત્ય વચનમા જે લીન રહે છે તે સત્યવાદી મનુષ્યોનુ "देवयाओय" દેવતા "साद्विव्वाणि करेंति" સાનિધ્ય

सत्यवादिना वचनमनन्यथाकर्तुं देवास्तत्सान्निध्यं विदधतीति भावः । उक्तमपि—

प्रियं सत्यं वाक्यं हरति हृदयं कस्य न जने ।
गिरं सत्यां लोकः प्रतिपदमिमामर्थयति च ॥
सुराः सत्याद् वाक्याद् ददति मुदिताः कामितफलम् ।
अतः सत्याद् वाक्याद् व्रतमभिमतं नास्ति भुवने ॥ १ ॥" इति ॥ सू० १ ॥

ध्याणि करेंति) सान्निध्य करते हैं, अर्थात् सत्यवादी के वचनों को अनन्यथा सत्य करने के लिये देव उनके निकट रहते हैं। कहा भी है—

"प्रियं सत्यं वाक्यं हरति हृदयं कस्य न जने,
गिरं सत्यां लोकः प्रतिपदमिमामर्थयति च ।
सुराःसत्याद् वाक्याद् ददति मुदिताःकामितफलम्,
अतःसत्याद् वाक्याद् व्रतमभिमतं नास्ति भुवने ॥ १ ॥

प्रिय सत्य वचन किस सहृदय व्यक्ति के हृदय को हरण नहीं कर लेता है। अर्थात् सबके हृदय को हरण कर लेता है। लोक हर एक समय हर एक बात में इस सत्य वचन के ही अभिलाषी होते हैं। सत्यवचन से देवता भी प्रसन्न रहते हैं, और वे सत्यवादी के इच्छित मनोरथ की पूर्ति करते रहते हैं। इसलिये सत्यवचन के समान अभिमतव्रत लोक मे और कोई नहीं है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस द्वितीय संवर द्वार में सत्यवचन रूप महाव्रत के स्वरूप का कथन किया है। क्यों कि प्रथम संवरद्वार के साथ

સેવે છે, એટલે કે સત્યવાદીના વચનોને અનન્યથા–સાચા પાડવાને માટે દેવો તેમની પાસે રહે છે કહ્યું પણ છે—

" प्रियं सत्यं वाक्यं हरति हृदयं कस्य न जने,
गिरं सत्यालोकः प्रतिपदमिमामर्थयति च ।
सुराः सत्याद् वाक्याद् ददति मुदिताः कामितफलम् ,
अतः सत्याद् वाक्याद् व्रतमभिमतं नास्ति भुवने ॥ १ ॥"

પ્રિય સત્યવચન કઇ સહૃદયી વ્યક્તિનું મન હરતું નથી ! એટલે કે સૌના મનને હરી લે છે લોકો દરેક વખતે દરેક વાતમાં આ સત્ય વચનના જ અભિલાષી હોય છે સત્ય વચનથી દેવતા પણ પ્રસન્ન રહે છે અને તેઓ સત્યવાદીના ઇચ્છિત મનોરથો પૂરા કરે છે તે કારણે સત્ય વચન જેવું શ્રેષ્ઠ વચન જગતમાં બીજું કોઈ પણ નથી

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ બીજા સંવરદ્વારમાં સત્ય વચન નામના મહાવ્રતનું સ્વરૂપનું વર્ણન કર્યું છે કારણ કે પ્રથમ સંવરદ્વાર સાથે તેનો ગાઢ

इसका घनिष्ट सबंध है और वह इस प्रकार से है कि जब तक जीव अलीक (असत्य) वचनों से निवृत्त नहीं होता तबतक वह प्राणातिपात विरमण रूप प्रथमसंवरद्वार का आराधक नहीं बन सकता है। यह सत्यवचन शुद्ध, शुचिक, शिव, सुजात आदि अनेक विशेषणों से संपन्न होता है। सत्यवादी की सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। इन्द्रादिक देवों को, तथा चक्रवर्ती आदि श्रेष्ठ पुरुषों को सत्यवचन बहुमान्य होते हैं। समस्त विद्याओं की सिद्धि इन्हीं सत्यवचनों से होती है। स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि के यह पथ प्रदर्शक होता है। सत्य होकर भी जो अप्रिय होते हैं वे वचन सत्यवादि को बोलने योग्य नहीं होते हैं। किन्तु प्रिय सत्यवचन ही सत्यवादी बोला करते हैं। सत्यवादियों के समक्ष संसार की समस्त शक्तिया नतमस्तक हो जाया करती हैं अर्थात्-शिर झुकाता है। मनसा वाचा कर्मणा जो इस सत्य की आराधना में लीन होते हैं वे इस भव में तो सुखी होते ही हैं परन्तु परभव में भी उन्हें सुखों की प्राप्ति होती हैं। तप नियम से सब सत्यवचन से ही शोभित और फलप्रद होते हैं। परिणामों मे जिनके जितनी अधिक सरलता होगी उनके वचनों में उतनी अधिक सत्यता होगी। सत्यवादियों के देवता तक सेवक होते हैं। सत्य में सावद्यभाषण का सर्वथा परित्याग हो जाता है। इन वचनों

સંબંધ છે તે આ પ્રકારે છે જ્યા સુધી જીવ અસત્ય વચનોથી મુક્ત થતો નથી ત્યા સુધી તે પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ પ્રથમ સંવરદ્વારનો આરાધક બની શકતો નથી આ સત્ય વચન શુદ્ધ, શુચિક, શિવ, સુજાત આદિ અનેક વિશેષણોથી યુક્ત હોય છે સત્યવાદીની હમેશા પ્રતિષ્ઠા થાય છે ઈન્દ્રાદિક દેવોને તથા ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને સત્યવચન બહુ માનને યોગ્ય લાગે છે એ સત્ય વચનથી જ સઘળી વિદ્યાઓ સિદ્ધ થાય છે સ્વર્ગ, મોક્ષની પ્રાપ્તિમા તે માર્ગદર્શક હોય છે સત્ય હોવા છતા પણ અપ્રિય લાગે તેવા વચનો સત્યવાદીઓએ બોલવા જોઇએ નહીં, પણ સત્યવાદી પ્રિય સત્ય વચન જ બોલે છે સત્યવાદીઓ આગળ સંસારની સમસ્ત શક્તિઓ માથુ નમાવે છે મન, વચન અને કાયાથી જે આ સત્યની આરાધનામા લીન રહે છે તેઓ આ ભવમા તો સુખી થાય છે પણ પરભવમા પણ તેમને સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે તપ નિયમ એ સૌ સત્ય વચનથી જ શોભે છે અને ફળદાયી નિવડે છે પરિણામોમા જેમની જેટલી વધારે સરળતા હશે તેટલી તેમના વચનોમા વધારે સત્યતા હશે દેવતા પણ સત્યવાદીઓની સેવા કરે છે સત્યમા સાવદ્ય ભાષણનો સર્વથા પરિત્યાગ થઈ જાય છે આ વચનોથી જીવને સૌથી મોટો આધ્યાત્મિક

शतम्, विन्दुत्रयस्थापनेन सहस्र भवति ॥ ३ ॥ इति स्थापनासत्यम्॥ नामसत्यम् यथा-कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इत्यादि ॥ ४ ॥ रूपसत्यम्-यथा-साधुरूप-धारणेन साधुरिति ॥ ५ ॥ प्रतीत्यसत्यम्-यथा मध्यमा प्रतीत्य=आश्रित्य अनामिका ह्रस्वा, कनिष्ठिकामाश्रित्य तु दीर्घा । इति प्रतीत्यसत्यम् ॥ ६ ॥ व्यवहार

सत्य है २। भिन्न वस्तुमें भिन्न वस्तुके आरोप करनेवाले वचनको स्थापना सत्य कहते हैं, जैसे एक के आगे दो विन्दुओ की स्थापना करके उसे १०० कहना, तथा विन्दुत्रय की स्थापना करके उसे एक हजार कहना३। दूसरी कोई अपेक्षा न रखकर केवल व्यवहार के लिये किसी का सज्ञाकर्म करना इसका नाम नामसत्य है-जैसे किसी लडके को कुलवर्धन रखलेना। कुल वर्धन का तात्पर्य होता है-कुल को बढाने वाला, परन्तु व्यवहार चलाने के लिये जो सज्ञाकर्म किया जाता है-नाम रखा जाता है-उसमें इसकी अपेक्षा सापेक्ष नहीं हुआ करती है, इसी का नाम नामसत्य है ४। पुद्गल के रूपादिक अनेक गुणों मे से रूप की प्रधानता को लेकर जो वचन कहा जाता है उसे रूप सत्य कहते हैं-जैसे केशोंको काला कहना, अथवा रूप स्वरूप धारण की मुख्यता को लेकर जो वचन कहा जाता है वह भी रूपसत्य है- जैसे-साधु के स्वरूप को धारण करने वाले व्यक्ति को साधु कहना ५। किसी विवक्षित पदार्थ की अपेक्षा से दूसरे पदार्थ के स्वरूप का कथन करना इसे प्रतीत्यसत्य या आपेक्षिकसत्य

પકજ માનવુ તે સમત સત્ય છે (૩) ભિન્ન વસ્તુમા ભિન્ન વસ્તુનો આરોપ કરનાર વચનને સ્થાપના સત્ય કહે છે જેમકે એકની સામે બે બિન્દુઓની સ્થાપના કરીને તેને સો (૧૦૦) કહેવા તથા ત્રણ બિન્દુઓની સ્થાપના કરીને હજાર (૧૦૦૦) કહેવા (૪) બીજી કોઇ પણ અપેક્ષા રાખ્યા વિના ફક્ત વ્યવહારને માટે જ કોઇને કોઇ સજ્ઞા આપવી તેને નામ સત્ય કહે છે જેમકે કુળને વધારે નહીં છતા પણ કોઇનુ નામ કુળવર્ધન રાખવુ કુળવર્ધનનો અર્થ થાય છે કુળને વધારનાર, પણ વ્યવહાર ચલાવવાને માટે જે નામ રાખવામા આવે છે તેમા કોઇ અપેક્ષા સાપેક્ષ થતી નથી, તેનુજ નામ નામસત્ય છે (૫) પુદ્ગલના રૂપાદિક અનેક ગુણોમાથી રૂપની પ્રધાનતાને લીધે જે વચન કહેવાય તેને રૂપસત્ય કહે છે જેમકે વાળને કાળા કહેવા, અથવા રૂપ-સ્વરૂપ ધારણની મુખ્યતાને લઈને જે વચન કહેવામા આવે છે તે પણ રૂપસત્ય છે જેમ કે સાધુના સ્વરૂપને ધારણ કરનાર વ્યક્તિને સાધુ કહેવા તે રૂપસત્ય છે (૬) કોઈ વિવક્ષિત પદાર્થની અપેક્ષાએ બીજા પદાર્થના સ્વરૂપનુ કથન કરવુ તેને પ્રતીત્ય સત્ય અથવા આપેક્ષિક સત્ય કહે છે જેમ કે વચલી ૧ કરતા

सत्यम् – यथा गिरिगततृणादेर्दहनेऽपि घटगत – जलस्य गलनेऽपि गिरिर्दह्यते घटो गलतीति व्यवहारो भवति ॥ ७ ॥ भावसत्यम्–यस्मिन् वस्तुनि यस्य धर्मस्याधिक्यम्, तदपेक्षया सत्यम्=भावसत्यम्, यथा व्यवहार–पञ्चवर्णसंभवेऽपि बकः शुक्लः शुको हरित इत्यादि॥८॥ योगसत्यम्=योगेन=वस्तुसंयोगेन सत्य–योगसत्यम् यथा–छत्रयोगाच्छत्री दण्डयोगाद् दण्डीति ॥ ९॥ औपम्यसत्यम्=उपमासत्यम्–यथा–चन्द्रवन्मुखम्, समुद्रवत्तडाग इत्यादि ॥ १० ॥ इति । तथा 'चोद-

---

कहते हैं जैसे मध्यमा की अपेक्षा अनामिका अगुली को ह्रस्वकहना और कनिष्ठिका अगुली की अपेक्षा दीर्घ कहना ६ । नैगम आदि नयो की प्रधानता से जो वचन बोला जाता है उसे व्यवहार सत्य कहते हैं, जैसे पर्वत के ऊपर की घास आदि के जलने पर ऐसा कहना कि पर्वतजल रहा है, घटसे जल के निकलने पर ऐसा कहना कि घडा गल रहा है, यह सब व्यवहार सत्य है, क्यों कि व्यवहार मे ऐसे वचनों को सत्य माना गया, है ७। जिस वस्तु में जिस धर्म की अधिकता हो उसको लेकर जो वचन कहा जाय वह भावसत्य है, जैसे पाचो वर्णो की संभवता होने पर भी बगले को शुक्ल कहना, तोते को हरा कहना। वस्तु के सयोग से जो वचन बोला जाता है वह योगसत्य है, जैसे छत्ता के सबध से पुरुष को छत्री कहना, दण्ड के सबध से दण्डी कहना ९। दूसरे प्रसिद्ध सदृश पदार्थ को उपमा कहते हैं, इसके आश्रय से जो वचन बोला जाता है वह उपमासत्य है, जैसे चन्द्र के समान मुख, समुद्र के समान तडाग होता है, ऐसा वचन कहना। (चोद्दस पुव्वीहिं

અનામિકા આગળીને નાની કહેવી અને ટચલી આગળીની અપેક્ષાએ તેને મોટી કહેવી (૭) નૈગમ આદિ નયોની પ્રધાનતાથી જે વચન બોલવામા આવે છે તે વચનને વ્યવહાર સત્ય કહે છે જેમ કે પર્વત ઉપરના ઘાસ આદિને આગ લાગે તો પર્વત સળગી રહ્યો છે તેમ કહેવુ, ઘડામાથી પાણી ટપકતુ હોય તો ઘડો ટપકે છે તેમ કહેવુ, એ બધા વ્યવહાર સત્ય ઉદાહરણ છે, કારણ કે વ્યવહારમા એવા વચનોને સત્ય માનવામા આવે છે (૮) જે વસ્તુમા જે ધર્મની વિશેષતા હોય તેને લઈને જે વચન કહેવાય તે ભાવ સત્ય છે જેમ કે પાચે વર્ણોની સભવિતતા હોવા છતા પણ બગલાને સફેદ કહેવા, પોપટને લીલા કહેવા તે ભાવસત્ય છે (૯) વસ્તુના સયોગથી જે વચન બોલાય છે તે યોગસત્ય છે જેમકે છત્રીના સબધથી પુરુષને છત્રી કહેવુ, દડના સબધથી દડી કહેવુ (૧૦) બીજા પ્રસિદ્ધ સદૃશ પદાર્થને ઉપમા કહે છે, તેનો આશ્રય લઈને જે વચન બોલાય છે તે ઉપમા સત્ય છે જેમ કે ચન્દ્રમાના સમાન મુખ, સમુદ્રના જેવુ તળાવ હોય છે, એવા વચન કહેવા તે ઉપમા સત્ય છે " ચોદ્દસ

सपुव्वीहिं' चतुर्दशपूर्विभिः ' पाहुडत्थविइय ' प्राभृतार्थविदितम्-पूर्वगतांशवि-शेषाभिधेयतया सत्यवादपूर्वनाम्ना ज्ञातम्, तथा-'महरिसीण य' महर्षीणां च 'समयपइण्ण' समयदत्त समयेन-सिद्धान्तेन प्रदत्त=वितीर्णं, महर्षिभि सिद्धान्तरूपतया गृहीतमित्यर्थ, तथा 'देविंदनरिंदभासियत्थ' देवनरेन्द्रभाषितार्थम् देवानाम्=इन्द्रादीना नरेन्द्राणा=चक्रवर्तिप्रभृतीना भाषितः=प्रतिभाषितोऽर्थः=प्रयोजनं यस्य तत्, तथा-'वेमाणियसाहिय' वैमानिकसाधित वैमानिकै=वैमानिकदेवैः साधित=साधनाविषयीकृत, सेवितमित्यर्थः, तथा-' महत्थ ' महार्थम्=महान् अर्थः =प्रयोजन यस्य तत्, तथा 'मतोसहिविज्जासाहणत्थ ' मन्त्रौषधिविद्यासाधनार्थम्= मन्त्रौषधिविद्याना साधनमर्थ =प्रयोजन यस्य तत्, तेन विना तत्सिद्ध्यभावात्, तथा-' चारणगणसमणसिद्धविज्ज ' चारणगणश्रमणसिद्धविद्यम्=चारणगणाना=

पाहुडत्थविइय) इस सत्य को चतुर्दश पूर्वधारियो ने प्राभृतार्थ रूप से विदित किया है अर्थात् पूर्वगत अशविशेष की अभिधेयता से सत्य-वादपूर्व इस नाम से जाना है, (महरिसीण य समयपइण्ण) महर्षियों ने इसे सिद्धान्तरूप से स्वीकार किया है, (देवनरिंद भासियत्थ) इन्द्रादिको के लिये तथा चक्रवर्ती आदि (राजाओं) के लिये इसका प्रयोजन उपादेयरूप से कहा गया है, (वेमाणियसाहिय) वैमानिक देवों ने इस सत्य को अपनी साधना का विषयभूत बनाया है अर्थात् इसका सेवन किया है (महत्थ) यह महान् अर्थ-प्रयोजन वाला है (मतोसहिविज्जासाहणत्थ) मन्त्रऔषधि एव विद्याओं का साधन इसका प्रयोजन है क्योंकि सत्य के विनामत्रादि सिद्ध नही होतेहैं, (चारणगण-समणसिद्धविज्ज) इसी के प्रभाव से इसी चारणगणो को आकाशगा-

पुव्वीहिं पाहुडत्थविइय " આ સત્યને ચૌદ પૂર્વધારીઓએ પ્રાભૃતાર્થરૂપે વિદિત કર્યું છે એટલે કે પૂર્વગત અ શવિશેષની અભિધેયતાથી સત્યવાદ પૂર્વ એ નામથી જાણ્યુ છે " महरिसीण य समयपइण्ण " મહર્ષિઓએ તેને સિદ્ધાંત રૂપે સ્વીકાર્યું છે " देवनरिंद भासियत्थ " ઇન્દ્રાદિકોને તથા ચક્રવર્તી આદિ નરેન્દ્રોને માટે તેનુ પ્રયોજન ઉપાદેયરૂપે કહેવાયુ છે, " वेमाणियसाहिय " વૈમાનિક દેવોએ આ સત્યને પોતાની સાધનાનો વિષય બનાવ્યો છે એટલે કે તેનુ સેવન કર્યું છે, " महत्थ " તે મહાન અર્થ-પ્રયોજનવાળુ છે " मतोसहिविज्जासाहणत्थ " તે મ ત્ર-ઔષધિ અને વિદ્યાઓનુ સાધન તેનુ પ્રયોજન છે કારણ કે સત્ય વિના મ ત્રાદિ સિદ્ધ થતા નથી, " चारणगणसमणसिद्ध विज्ज " તેના પ્રભાવથી ચારણ ગણોને આકાશગામિની વિદ્યાની ... શ્રમણોને

विद्याचारणादीना श्रमणाना च सिद्धविद्या=आकाशगामिनी वैक्रियादि रूपा च यस्मात्तत्तथोक्तम्, तथा-'मणुयगणाण' मनुजगणाना 'वदणिज्ज' वन्दनीय=स्तवनीयम्, तथा-'अमरगणाण' अमरगणाना=देवानाम् 'अच्चणिज्ज' अर्चनीयम्=सत्कारयोग्यम्, तथा-'असुरगणाण च' असुरगणाना च 'पूयणीय' पूजनीय=प्रशसनीयम्, तथा 'अणेगपाखडिपरिग्गहिय' अनेकपाखण्डि-परिगृहीतम्=अनेकधर्मानुयायीभिरपि स्वीकृत 'ज' यत्सत्य 'त' तत् 'लोकम्मि' लोके 'सारभूय' सारभूत= सारभूत=सर्वप्रधानत्वात् पुनस्तत्सत्य कीदृशम्? इत्याह-'गभीरयर महासमुद्दाओ' गभीरतर महासमुद्रात्, अक्षोभ्यत्वात्, तथा-'थिरयरग मेरुपव्वयाओ' स्थिरतरक मेरुपर्वतात्=निश्चलत्वात्, तथा-'सोम्मयरग चदमडलाओ' सौम्यतरक चन्द्रमण्डलात्-सतापशमनहेतुत्वात्, तथा-'दित्तयर सूरमडलाओ' दीप्ततर सूरमण्डलात्=यथावद्वस्तुप्रकाशकत्वात्,

मिनी विद्या की तथा श्रमणों को वैक्रियादिरूप विद्याओ-लब्धियो की सिद्धि होती है। (मणुयगणाण वदणिज्ज) मनुष्यों के लिये यह सत्य वदनीय है, (अमरगणाण अच्चणिज्ज) अमरगणों के लिये यह अर्चनीय है, तथा (असुरगणाण पूयणिज्ज) असुरगणों के लिये यह पूजनीय प्रशसनीय है (अणेगपाखडिपरिग्गहिय) अनेक धर्मानुयायियों ने भी इसको स्वीकार किया है। (ज त लोगम्मि सारभूय) ऐसा यह सत्यव्रत लोकमें सर्वप्रधान होने से सारभूत है। (गभीरयर महासमुद्दाओ) यह सत्य अक्षोभ्य होने से महासमुद्र की अपेक्षा अत्यत गभीर है। (थिरयर मेरुपव्वयाओ) निश्चल होनेसे मेरुपर्वत की अपेक्षा अत्यत स्थिर है (सोम्मयरग चदमडलाओ) सताप के शमन का हेतु होने से चद्रमडल की अपेक्षा अत्यत सौम्य है। (दित्तयर सूरमडलाओ) यथावत् वस्तु का प्रकाशक होने से यह सत्य सूर्य मडल की अपेक्षा अधिक

वैक्रियादिरूप विद्याओ-लब्धिओनी प्राप्ति थाय छे "मणुयगणाण वदणिज्ज" मनुष्योने माटे आ सत्य वदनीय छे तथा "असुरगणाण पूयणिज्ज" असुर गणोने माटे ते पूजनीय-प्रशसनीय छे "अणेगपाखडि परिग्गहिय" अनेक धर्मोना अनुयायीओए पण तेनो स्वीकार कर्यो छे, 'ज त लोगम्मि सारभूय" एवु आ सत्यव्रत लोकमा सर्व प्रधान होवाथी सारभूत छे "गभीरयर महासमुद्दाओ" आ सत्य अक्षोभ्य होवाथी समुद्र करता पण वधारे गभीर छे "थिरयर मेरूपव्वयाओ" निश्चल होवाथी ते मेरुपर्वत करता पण वधारे स्थिर छे "सोम्मयरग चदमडलाओ" सतापनु शमन करनार होवाथी चन्द्र मडळ करता पण वधारे सौम्य छे "दित्तयर सूरमडलाओ" वस्तुना साचा स्वरूपनु प्रकाशक होवाथी आ सत्य सूर्यमडळ करता पण वधारे स्थिर छे

तथा-'विमलयरं सरयनहयलाओ' विमलतरं शरन्नभस्तलात्=शरत्कालिक गगनतलादप्यधिक निर्मलं, मालिन्यरहितत्वात्, तथा-'सुरभियर गधमायणाओ' सुरभितर गन्धमादनात्=गन्धमादनपर्वतात् अत्र हि-नीलवद् वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणदिशि, मेरोर्वायव्यकोणे, शीतोदानद्युत्तरकूलवर्तिनो गन्धिलावतीनाम्नोऽष्टमविजयस्य पूर्वदिशि, तथा-उत्तरकुरूणां सर्वोत्कृष्टभोगभूमिकक्षेत्रात् पश्चिमदिशि महाविदेहक्षेत्रस्थो गजदन्तसंस्थानसंस्थितो गन्धमादननामा वक्षस्कारपर्वतोऽस्ति। गन्धेन स्वयं माद्यति मदयति वा स्वनिवासिदेवदेवीनां मनांसीति गन्धमादनः। यथा पिष्यमाणानां सञ्चूर्ण्यमानानाम्-उत्कीर्यमाणानां विकीर्यमा-

---

दीप्त है। (विमलयर सरयनहयलाओ) मलिनता से विहीन होने के कारण शरत्कालिक आकाशतल की अपेक्षा अधिक निर्मल है। तथा (सुरभियर गंधमायणाओ) जनों के हृदयों को आकर्षण करने वाला होनेके कारण यह सत्य गंधमादन नामक पर्वत की अपेक्षा अत्यन्त सुगन्धित है। यह गंधमादन नाम का वक्षस्कार पर्वत नीलवर्षधर पर्वत की दक्षिणदिशा में, मेरु के वायव्यकोण में, शीतोदानदी के उत्तर तट पर रहे हुए गन्धिलावती नामक अष्टमविजय की पूर्वदिशा में, तथा उत्तर कुरु के सर्वोत्कृष्ट भोगभूमिकक्षेत्र से पश्चिमदिशा में महाविदेहक्षेत्र में है। उसका संस्थान आकार-गजदंत जैसा है अर्थात्—गजदंत के आकार में यह स्थित है। अपनी गंध से स्वयं को सुगंधित करता है तथा अपने ऊपर रहने वाले देवदेवियों के मन को मदोन्मत्त बना देता है उसका नाम गंधमादक है ऐसा यह पर्वत है। जैसे पिसते हुए, फैले हुए, अथवा एक बर्तन से दूसरे बर्तन

"विमलयर सरयनहयलाओ" मलिनताथी रहित होवाथी ते शरदऋतुना आकाशतळ करता पण वधारे निर्मळ छे "सुरभियर गंधमायणाओ" माणसोना चित्तनु आकर्षण करनार होवाथी आ सत्य गंधमादन नामना पर्वत करता पण अधिक सुगन्धित छे ते गन्धमादन नामनो वक्षस्कार पर्वत नील वर्षधर पर्वतनी दक्षिण दिशामा, मेरु, वायव्य कोणमा, शीतोदा नदीना उत्तर किनारे रहेल गन्धिलावती नामना अष्टमविजयनी पूर्व दिशामा, तथा उत्तर कुरुना सर्वोत्कृष्ट भोगभूमिक क्षेत्रनी पश्चिम दिशामा महाविदेह क्षेत्रमा छे तेनो आकार गजदंत जेवो छे एटले के ते गजदंतना आकारे उभो छे पोतानी गंधवडे जे पोते वासयुक्त बने छे अने पोतानी उपर वास करता देवदेवीओना मनने जे मदोन्मत्त करी नाखे छे, तेनु नाम गंधमादन छे

णाना भाण्डाद् भाण्डान्तरं वा संह्रियमाणानां कोष्टपुटानां यावत्तगरपुटादीनां मनोज्ञा उदारा गन्धा अभिनिःसरन्ति, तदपेक्षयाऽप्युदारगन्धयुक्तोऽयं पर्वतः। ततोऽप्यधिकतरसुरभिमत्सत्यमिति भावः, जनानां हृदयावर्जकत्वात्। तथा- 'जे वि य' येऽपि च 'लोगम्मि' लोके 'अपरिसेसा' अपरिशेषाः=सकलाः 'मंतजोगा,' मन्त्रयोगा'-मन्त्राः-हरिणैगमेषिदेवादि मन्त्राः-योगा वशीकरणादि-प्रयोजना द्रव्यसयोगा, 'जवा य' जपाश्च-मन्त्रविद्याजपनानि 'विज्जा य' विद्याश्च=रोहिणीप्रज्ञप्त्यादयः, 'जंभका य' जृम्भकाश्च=तिर्यग्लोकवासिनोऽन्न जृम्भकादि भेदेन दशविधा देवविशेषाः 'अत्थाणिय' अस्त्राणि च-बाणादीनि 'सत्थाणिय' शस्त्राणि च खड्गानि 'सिक्खाओ य' शिक्षाश्च-कलाग्रहणादीनि 'आगमा य' आगमाश्च सन्ति। 'सव्वाइं वि ताइं' सर्वाण्यपि तानि 'सच्चे' सत्ये 'पइट्ठियाइं' प्रतिष्ठितानि, सत्यमाश्रित्यैव सर्वाणि तिष्ठन्तीति भावः ॥२॥

में रखे जाते हुए सुगंधित तगर आदि द्रव्यों की मनोज्ञ उदार गंध चारों ओर फैलाति है उससे भी अधिक उदार गंध से युक्त यह पर्वत है। इस पर्वत से भी अधिकतर सुगंधि संपन्न यह सत्य है। (जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मंतजोगा जवा य विज्जा य जंभगा य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ आगमा य सव्वाइं वि ताइं सच्चे पइट्ठियाइं) तथा लोक में जो भी समस्त मन्त्र-हरिणैगमेषिदेवादिमंत्र, और योग वशीकरण आदि प्रयोजनवाले द्रव्यसंयोग हैं, मन्त्रविद्या के जाप हैं, रोहिणीप्रज्ञप्ति आदि विद्याएँ हैं, तिर्यग्लोकवासी अन्नजृंभक पानजृंभक आदि दशप्रकार के देवविशेष हैं, बाणादिक अस्त्र, खड्ग आदि शस्त्र, कलाग्रहण आदि शिक्षाएँ और आगम हैं वे सब इस सत्य के ही आश्रय से हैं।

એવો તે પર્વત છે જેમ ધમાતા ફેલાતા અથવા એક પાત્રમાંથી બીજા પાત્રમાં રેડાતા સુગંધિત તગર આદિ દ્રવ્યોની મનોજ્ઞ ઉદાર ગન્ધ ચારે તરફ ફેલાય છે, તે કરતા પણ વધારે ઉદાર ગંધવાળો આ પર્વત છે તે પર્વત કરતા પણ ઘણુ જ વધારે સુગંધિયુક્ત આ સત્ય છે "जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मंत-जोगा जवाय विज्जा य जंगमाय अत्थाणिय सत्थाणिय सिक्खाओ आगमा य सव्वाइं विताइं सच्चे पइट्ठियाइं" તથા લોકમાં જે કોઇ મંત્ર-હરિણૈગમેષિ-દેવાદિ મંત્ર, અને યોગ-વશીકરણ આદિ પ્રયોજનવાળા દ્રવ્યસંયોગ છે, મંત્ર વિદ્યાના જાપ છે, રોહિણીપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાએ છે, તિર્યગ્લોકવાસી અન્નજૃંભક, પાનજૃંભક, આદિ દશ પ્રકારના દેવવિશેષ છે, બાણાદિ અસ્ત્ર, તલવાર આદિ શસ્ત્ર, કલાગ્રહણ આદિ શિક્ષાએ અને આગમ છે, તે બધુ આ સત્યને જ આશ્રયે છે

सत्यमपि कीदृश न वक्तव्य, कीदृश वक्तव्य ? मित्याह—' सच्चपि य ' इत्यादि—

मूलम्—सच्च पि य सजमस्स उवरोहकारग किंचि न वत्तव्व, हिसासावज्जसपउत्त, भेयविकहकारगं, अणत्थवाय कलहकारग, अणज्जं, अववायविवायसंपउत्तं वेलव, ओजधेज्जवहुलं निल्लज्ज, लोयगरहणिज्जं, दुद्दिट्ठ, दुस्सुय,

भावार्थ—यह सत्य तीर्थंकरो का सुभाषित है। इसे व्यवहार दृष्टि से जनपद सत्य आदि के भेद से यह दश प्रकार का कहा है। पूर्वधरों ने इस सत्य को सत्यप्रवादपूर्व के नाम से अभिहित किया है। ऋषियो ने इसे सिद्धान्त का रूप दिया है। देवेन्द्र नरेन्द्र आदि कों के भाषण का महत्त्व इसी सत्य के सहारे माना गया है। मत्र औषधि आदि विद्याओं की साधना सत्य के प्रभाव से सफलित होती है। आकाशगामिनी विद्या चारणऋद्धि-एव वैक्रियलब्धि ये, सब इसी सत्य के प्रभाव से जीवों को प्राप्त होती हैं। मनुष्य, देव एव असुर, सब के लिये यह वदनीय है। अनेकधर्मानुयायियों ने भी इसे मान्य किया है। समस्त वस्तुओं मे यह एक सारभूत-श्रेष्ठ-वस्तु है। इसका प्रभाव अनिर्वचनीय है। महासमुद्र आदि की अपेक्षा भी यह गभीरतर आदि धर्मो वाला है। लोक में जितने भी मत्र योग आदि हैं वे सब इसी सत्य के सहारे टिके हुए हैं ॥ सू० २ ॥

ભાવાર્થ—આ સત્ય તીર્થંકરોનુ સુભાષિત છે વ્યવહાર દૃષ્ટિએ જન પદ સત્ય આદિના ભેદથી તે દશ પ્રકારનુ બતાવ્યુ છે, પૂર્વધરોએ આ સત્યને સત્યપ્રવાદ પૂર્વના નામથી ઓળખાવ્યુ છે ઋષિઓએ તેને સિદ્ધાન્તનુ રૂપ આપ્યુ છે દેવેન્દ્ર નરેન્દ્ર વગેરેના ભાષણની મહત્તા આ સત્યની મદદથી જ મનાયેલ છે મત્ર ઔષધિ આદિ વિદ્યાઓની સાધના આ સત્યના પ્રભાવથીજ સફળ થાય છે આકાશગામિની વિદ્યા-ચારણઋદ્ધિ અને વૈક્રિયલબ્ધિ એ બધુ આ સત્યના પ્રભાવથી જ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે માનવ, દેવ અને અસુર સૌને માટે તે વદનીય છે અનેક ધર્મના અનુયાયીઓએ પણ તેને માન્ય કર્યું છે સમસ્ત વસ્તુઓમા તે એક સારભૂત-શ્રેષ્ઠ વસ્તુ છે તેનો પ્રભાવ અવર્ણનીય છે મહાસાગર આદિના કરતા પણ તે વધારે ગભીરતા આદિ ગુણોવાળુ છે જગતમા જેટલા મત્ર યોગ આદિ છે તે બધા આ સત્યને આધારે જ ટકેલા છે ॥૨॥

असुणिय । अप्पणो थवणा परेसि निदा–न तंसि मेहावी, ण तमि धण्णो न तसि पियधम्मो, न तंसि कुलीणो, न तसि दाणवई, न तंसि सूरो, न तसि पडिरूवो, न तसि लट्ठो, न पडिओ, न वहुस्सुओ, न वि य तसि तवस्सी, ण यावि परलोगणिच्छियमईऽसि, सव्वकाल जाइकुलरूव-वाहिरोगेण वावि ज होइ वज्जणिज्ज दुहओ उवयारमइक्कत एवविह सच्चपि न वत्तव्वं । अह केरिसय पुणाइ सच्चं तु भासियव्व ? ज त दव्वेहि पज्जवेहि य गुणेहि कम्मेहि वहुविहेहि सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय निवाय उवसग्ग-तद्धियसमाससधिपयहेउ–जोगिय–उणाइ–किरिया–विहाण धाउसरविभत्तिवन्नजुत्त तिकल्ल दसविहपि सच्चं जह भणिय तह य कम्मुणा होइ । दुवालसविहा होइ, भासा वयणं पि य होइ सोलसविह । एव अरहतमणुन्नायं समिक्खिय सजएण य कालम्मि वत्तव्वं । इमं च अलिय–पिसुण–फरुस-कडुय-चवल-वयणपरिरक्खणट्ठयाए पावयण भगवय सुकहिय, अत्तहिय, पेच्च भाविय, आगमेसिभद्द, सुद्ध नेयाउय, अकुडिल, अणुत्तर, सव्वदुक्खपावाणविउ समणं ॥सू० ३॥

टीका—'सच्च पि य ' सत्यमपि च तत् 'सजमस्स ' सयमस्य 'उवरोह-कारग ' उपरोधकारक-बाधक भवेत्, तत् 'किं वि ' किमपि 'न वत्तव ' न वक्तव्यम् । किं भूत तत्–सत्य यन्न वक्तव्यम् ? इत्याह–' हिंसा सावज्जसपउत्त '

किस प्रकार का सत्य नहीं बोलना चाहिये और किस प्रकार का

કેવા પ્રકારનુ સત્ય બોલવુ ન જોઈએ અને કેવા પ્રકારનુ બોલવુ જોઈએ ?

बोलना चाहिये? इस बात को सूत्रकार कहते हैं—'सच्चंपि य' इत्यादि ०।

टीकार्थ—(सच्चं पि य संजमस्स उवरोहकारगं किंचि न वत्तव्वं) सत्य होने पर भी जो वचन संयम का बाधक हो वह मुनिजन को थोडा सा भी नहीं बोलना चाहिये। सत्य होने पर भी जो वचन संयम के बाधक होते हैं वे इस प्रकार से हैं-(हिंसासावज्जसंपउत्तं) हिंसा और सावद्य जो वचन हैं वे सत्य होनेपर भी संयम के बाधक होने के कारण नहीं बोलना चाहिये। हिंसा का तात्पर्य यहां प्राणिवध से और सावद्य का तात्पर्य पापयुक्त संलाप से है। इन सहित जो वचन होते हैं वे हिंसासावद्य संप्रयुक्त वचन हैं। जिन सत्यवचनों से प्राणियों के प्राणों का वध होता हो, तथा जिनसे पाप में जीवों की प्रवृत्ति होती हो ऐसे वचन सत्यमहाव्रती के लिये कभी भी भाषण करने योग्य नहीं है। (भेयविकहकारगं) इसी तरह जो सत्यवचन चारित्र के ध्वंसक हों, राजकथा आदि से संबंध रखते हों, तथा (अणत्थवायकलहकारगं) जिन सत्य वचनों का कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता हो अर्थात् जो निरर्थक हों, जिन सत्य वचनों से परस्पर में वाद विवाद और कलह बढता हो, तथा

તે વાત સૂત્રકાર બતાવે છે—" सच्चं पि य " ઈત્યાદિ

" सच्चं पि य संजमस्स उवरोहकारगं किंचि न वत्तव्वं ' સત્ય હોવા છતાં પણ જે વચન સંયમમાં બાધક હોય તે મુનિજને જરા પણ બોલવું જોઈએ નહીં સત્ય હોવા છતાં પણ જે વચન સંયમમાં બાધક હોય છે તે આ પ્રમાણે છે-" हिंसा सावज्जसंपउत्तं " હિંસા અને સાવદ્ય જે વચન છે તે સત્ય હોવા છતાં પણ સંયમના બાધક હોવાથી બોલવા જોઈએ નહીં હિંસા એટલે આ જગ્યાએ પ્રાણિવધ સમજવો અને સાવદ્યનો અર્થ પાપયુક્ત સંલાપ છે હિંસા અને સાવદ્યયુક્ત જે વચનો છે તે હિંસાસાવદ્ય સંપ્રયુક્ત વચન કહેવાય છે જે સત્ય વચનોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ થતો હોય તથા જે વચનોથી પાપમાં જીવોની પ્રવૃત્તિ થતી હોય એવાં વચન સત્યમહાવ્રતીને માટે કદી પણ બોલવાને યોગ્ય હોતાં નથી, " भेयविकहकारगं " એ જ પ્રમાણે જે સત્ય વચન ચારિત્રના ઘાતક હોય, રાજકથા આદિ સાથે સંબંધ રાખતા હોય, તથા " अणत्थवायकलहकारगं ' જે સત્ય વચનોનું કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ થતું ન હોય એટલે કે જે નિરર્થક હોય, જે સત્ય વચનોથી પરસ્પરમાં વાદવિવાદ અને કલહ વધતો હોય તથા " अणज्जं " જે

हिंसासावद्य समयुक्त, तत्र-हिंसा=प्राणिवध , सावद्यम्=पापयुक्तसलापादि, ताभ्या सपयुक्त=सहित यत्तत् , पुनः किंभूतम् ? ' भेयविकहकारक ' भेदविकथाकारकम् , भेदः = चारित्रभेद', विकथा = राजकथादि', तत्कारक यत् तत् , तथा– ' अणत्थवायकलहकारक ' अनर्थवादकलहकारकम् = तत्र – अनर्थो = निरर्थको यो वादः सोऽनर्थवादः=निष्प्रयोजनो जल्प , कलहो=विग्रहः, तत्कारक यत्तत् , तथा–' अणज्ज ' अन्याय्यम्=न्यायवर्जितम् , तथा ' अववायविवायसपउत्त ' अपवाद विवादसप्रयुक्तम् , अपवाद =परदूषणकथन, विवाद'=वाक्कलह', ताभ्या सप्रयुक्त यत्तत् , तथा ' वेलव ' विडम्बक=परविडम्बनाकारकम् , तथा–'ओजधेज्ज बहुल' ओजो धैर्यबहुलम्–ओजः=अहकार',आवेशो वा, धैर्य=धृष्टता, ताभ्यां बहुल=व्याप्तम् , अत एव' निल्लज्ज ' निर्लज्ज=लज्जा रहितम् , पुन' ' लोगगरहणिज्ज ' लोकगर्हणीयम्=साधुजननिन्दितम् , येन सत्येन परस्य हिंसा मर्मोद्घाटनादिक वा भवेत्तत् ' दुद्दिट्ठ ' दुर्दृष्टम्=असम्यग्दृष्टम् , ' दुस्सुय ' दु श्रुतम्=

(अणज्ज) जो न्यायानुकूल न हो, (अववायविवाय सपउत्त) अपवाद, विवाद से युक्त हो वे भी नहीं बोलना चाहिये। पर के दूषणो का कहना यह अपवाद है, वाक्कलह का नाम विवाद है । इसी तरह (वेलव) जो पर की विडम्बना के कारक हों तथा (ओजधेज्जबहुल) जिन सत्य वचनों के बोलने मे बोलने वाले का अहंकार भाव ज्ञात होता हो अथवा आवेश प्रकट होता हों, धृष्टता ज्ञात होती हो ऐसे वचन भी नहीं बोलना चाहिये। तथा (निल्लज्ज) जिन सत्यवचनों के बोलने में लज्जा जाती हो और (लोकगरहणिज्ज) साधुजन जिन वचनों की निंदा करते हो ऐसे वचन सत्य होने पर भी नही बोलना चाहिये। तथा (दुद्दिट्ठ) जिन सत्य वचनों से परप्राणी की हिंसा अथवा मर्मका उद्घा

न्यायानुकूळ न होय, " अवायविवायसपउत्त " अपवाद, विवादथी युक्त होय ते पण बोलवा जोईए नहि पारका दूषणोने कहेवा ते अपवाद छे अने वाणीना कलहने विवाद कहे छे, ए ज प्रमाणे " वेलव " जे परनी विडंबना करनार होय तथा " ओजधेज्जबहुल " जे सत्य वचनो बोलवाथी बोलनारनो अहंकार भाव जणातो होय अथवा आवेश प्रगटथतो होय, धृष्टता जणाती होय, एवा वचन पण न बोलवा जोईए तथा " निल्लज्ज " जे सत्य वचन बोलवामा लज्जा जती होय अने " लोयगरहणिज्ज " साधुजन जे वचनोनी निंदा करता होय एवा वचन सत्य होय तो पण बोलवा जोईए नहीं, तथा " दुद्दिट्ठ " जे सत्य वचनथी पर प्राणीनी हिंसा थती होय, अथवा

असम्यक् श्रुतम्, तथा-' अमुणिय ' अज्ञातम्=असम्यग्ज्ञातम्, एतादृशं सत्यमपि न वक्तव्यमिति भावः। पुनः कीदृशं सत्यं न वक्तव्यम्? इत्याह—' अप्पणो थवणा ' आत्मनः स्तवना=प्रशंसा यत्र भवेत्तत्, स्वस्तुतिरूपं यत्सत्यं तत्र वक्तव्यमित्यर्थः। तथा-' परेसिं निंदा ' परेषां निन्दा- अन्येषां विषये सत्याऽपि निन्दा यस्मिन् भवेत्तन्न वक्तव्यमिति भावः, कथम्? इत्याह-' न तसि मेहावि ' न त्वमसि मेधावी=अपूर्वश्रुतदृष्टग्रहणशक्तियुक्तः प्राज्ञो मेधावीत्युच्यते, एतादृशस्त्वं नासि तथा-' ण तसि धण्णो ' न त्वमसि धन्यः=धनवान्, धन्यवादपात्रं वा, ' ण तसि पियधम्मो ' न त्वमसि प्रियधर्मा=धर्मपरायणः, तथा-' न तसि कुलीनो ' न त्वमसि कुलीनः=उच्चकुलीनः=उच्चकुलजातः, ' न तसि दाणवई '

टन होता हो वे दुर्दृष्ट वचन हैं और (दुस्सुय) जो अच्छी तरह से सुने गये हो वे दुःश्रुत वचन हैं, तथा (अमुणियं) जो अच्छी तरह से जानने में नहीं आये हो वे असम्यक्र ज्ञात वचन हैं, इन दुर्दृष्टादि वचनों को चाहे ये वचन सत्य भी हों तो भी नहीं बोलना चाहिये। (अप्पणो थवणा परेसिं निंदा) इसी तरह जिन सत्यवचनों में आत्मप्रशंसा-आत्मश्लाघा भरी होवे, और जिन सत्यवचनों में पर की निंदा होती हो वे सत्यवचन भी नहीं बोलना चाहिये, किस प्रकार नही बोलना चाहिये सो कहते हैं-(न तसी मेहावी) तुम मेधावी नहीं हो, अर्थात् जो व्यक्ति अपूर्व, अश्रुत एव अदृष्ट पदार्थ को ग्रहण करने की शक्ति से युक्त होता है उसका नाम मेधावी है ऐसे मेधावी तुम नहीं हो, तथा (ण तसि धण्णो) तुम धनवान् या धन्यवाद के पात्र नहीं हो, (न तसि पियधम्मो) तुम प्रियदर्माधर्मपरायण-नहीं हो, (न तसि-

મર્મ ખૂલ્લો પડતો હોય તેવા વચનો દુર્દષ્ટ વચન છે અને " दुस्सुय " જે બરાબર સંભળાયું ન હોય તે દુશ્રુતવચન કહેવાય છે, તથા " अमुणिय " જે બરાબર જાણવામાં આવ્યું ન હોય તેના વિષે વચન બોલવા તે અસમ્યક્ જ્ઞાત વચન છે, એ દુર્દષ્ટ આદિ વચનો સત્ય હોય તો પણ બોલવા જોઇએ નહીં " अप्पणो थवणा परसेनिंदा " એ જ પ્રમાણે સત્ય વચનોમાં આત્મપ્રશંસા આત્મશ્લાઘા-ભરી હોય તથા જે સત્ય વચનોમાં બીજાની નિંદા થતી હોય તે સત્ય વચન પણ બોલવા જોઈએ નહીં કઈ રીતે બોલવા ન જોઇએ તે હવે કહે છે-" न तसि मेहावी " તમે મેધાવી નથી જે વ્યક્તિ અપૂર્વ, અશ્રુત અને અદૃષ્ટ પદાર્થને ગ્રહણ કરવાની શક્તિવાળી હોય છે તેને મેધાવી કહે છે તથા " ण त सि धण्णो " તમે ધનવાન યા ધન્યવાદને પાત્ર નથી " न त सि वियधम्मो " તમે ધર્મપરાયણ નથી, " न त सि कुलीणो " [illegible] નથી

न त्वमसि दानपति =दाता, ' न तसि सरो ' न त्वमसि शूर'=पराक्रमशाली, ' न तसि पडिरूवो ' न त्वमसि प्रतिरूप =सुन्दरः, ' न तसि लट्ठो' न त्वमसि लष्टः=सौभाग्यवान, ' न पडिओ ' न पण्डितः=विद्वान् त्वमसि, न च त्वं ' बहुस्सुओ' बहुश्रुतः=बहुविद्योऽसि, ' न विय तसि तवस्सी ' नापी च त्वमसि तपस्वी ' ण यावि परलोगणिच्छियमईऽसि ' परलोके निश्चिता संशयरहिता मतिर्यस्य सः= परलोकनिश्चितमतिश्चापि त्व नासि । मेधादिवर्जितान् प्रत्यपि एवरूपा निन्दा न कर्तव्येति भावः । किं बहुना, 'जाइकुलरूववाहिरोगेण वा वि' जातिकुलरूप व्याधिरोगेण वाऽपि-वा=अथवा जातिः=मातृवंशः, कुल=पितृवंशः, रूप=सौन्दर्य, व्याधि =चिरस्थायि कुष्ठादि., रोग'=शीघ्रघाती ज्वरादि , एतेपामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेन कारणेनापि जात्यापि कारणमवलम्ब्यापि ' ज ' तत् ' सव्वकाल '

कुलीणो) तुम कुलिन नहीं हो, (न तसि दाणवई) तुम दानपति-दाता नही हो, (न तसि सूरो) तुम पराक्रमशाली नहीं हो, (न तसि-पडिरूवो) तुमप्रतिरूप-सुन्दर-नही हो, (न तसि लट्ठो) तुम लष्ट-सौभाग्यसपन्न नही हो, (न पडिओ) तुम पडित नही हो (न बहुस्सुओ) तुम बहुश्रुत-अनेक विद्याओं के वेत्ता नहीं हो, और (न वि य तसि तवस्सी) न तुम तपस्वी हो । और (न यावि परलोगणिच्छियमई सि) न तुम परलोक में संशय रहित मतिवाले ही हो, " इस प्रकार के वचन अविवेकी व्यक्तियों से नहीं कहना चाहिये, क्यो कि इस प्रकार के वचनों से उनकी निंदा होती है । (सव्व काल जाइकुलरूववाहिरोगेण ज होइ वज्जणिज्ज) इसी तरह जाति-मातृवश, कुल-पितृवश, रूप-सौदर्य, व्याधि-चिरस्थायी कुष्ठादि, तथा शीघ्रघातक ज्वरादि रोग, इन

' न तसि दाणवई " તમે દાતા નથી, ' न तसि सूरो" તમે પરાક્રમી નથી " न तसि पडिरूवो ' તમે સુંદર નથી " न तसि लट्ठो " તમે લષ્ટ સૌભાગ્યશાળી નથી, "न पडिओ" તમે પંડિત નથી, " न बहुस्सुओ " તમે બહુશ્રુત-અનેક વિદ્યાઓના જાણકાર નથી, અને " न वि य त सि तवस्सी " તમે તપસ્વી નથી, અને " न यावि परलोगणिच्छियमईसि " તમે પરલોકને વિષે સંશયરહિત મતિવાળા નથી " એ પ્રકારના વચનો માણસોએ બોલવા જોઈએ નહીં કારણ કે તે પ્રકારના વચનોમાં તેમની " શ્રોતાની નિંદા થાય થાય છે " सव्व काल जाइकुल रूववाहिरोगेण ज होइ वज्जणिज्ज " એ જ પ્રકારે જાતિ માતૃવંશ, કુળ-પિતૃવંશ રૂપ-સૌંદર્ય, વ્યાધિ-કાયમી કોઢ વગેરે તથા શીઘ્રઘાતક જ્વરાદિ રોગ એ બધા કારણોને લઈને પણ કદી એવા

सर्वकाल=सर्वदा 'वज्जणिज्ज' वर्जनीय=त्याज्य लोके 'होइ' भवति, 'एवं विह' एवंविध 'दुहओ' उभयतः= लोकतः आगमतश्च, 'उवयारमइक्कत' उपचार मतिकान्त=व्यवहारविरुद्ध 'सच्चपि' सत्यमपि 'न वत्तव्व' न वक्तव्यम्।

'अह' अथ 'केरिसय' कीदृश तु 'पुणाइ' पुनः 'सच्च भासियव्व' सत्य भाषितव्यम् ? आह–'ज त' यत्तत् 'दव्वेहिं' द्रव्यैः=त्रिकालवर्तिभिः पुद्गलादिभिः 'पज्जवेहिं' पर्यैः नवपुराणादिभिः क्रमवर्तिभिर्धर्मैः, च=पुनः 'गुणेहिं' गुणैः=सहभूतवर्णादिभि, 'कम्मेहिं' कर्मभि=कृष्यादि व्यापारै,

सब कारणों को लेकर भी कभी ऐसे वचन नहीं कहना चाहिये कि तुम्हारा मातृवश अच्छा नहीं है, पितृवश तुम्हारा शुद्ध नहीं है, तुममे सौदर्य नही है, तुम व्याधि सपन्न हो-कुष्ठी आदि हो। तात्पर्य-इसका यही हैं कि मातृवशादि से विहीन तथा कुष्ठादि सपन्न व्यक्तियों से ऐसे वचन नहीं कहना चाहिये। क्यों कि इस प्रकार के वचनों से उन्हें दुःख होता है। (दुहओ उवयारमइक्कत) इसी तरह जो वचन लोक तथा आगम, ऐसे दोनों की अपेक्षा व्यवहार विरुद्ध हो (एवविह सच्च पि-न वत्तव्व) ऐसे वचन सत्य होने पर भी नहीं बोलना चाहिये। (अह-केरिसय पुणाइ सच्च तु भासियव्व) अब सूत्रकार यह कहते हैं कि साधुजनों को-महाव्रताराधक सयमी जनों को-किस प्रकार के सत्य-वचन बोलना चाहिये-(ज त) जो वचन (दव्वेहिं) त्रिकालवर्ती पुद्गलादि द्रव्यों से (पज्जवेहिं) नवीन पुरानी आदि क्रमवर्ती पर्यायो से (गुणेहिं) द्रव्य के साथ अविनाभाव रूप सबध रखने वाले वर्णादि गुणों

વચન ન કહેવા જોઈએ કે " તમારો માતૃવંશ સારો નથી, તમારો પિતૃવંશ શુદ્ધ નથી, તમારામા સૌદર્ય નથી, તમે વ્યાધિયુક્ત કોઢ વગેરે રોગયુક્ત-છો " તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે જેનો માતૃવંશ આદિ હીન હોય, કોઢ આદિ રોગોથી જે યુક્ત હોય તેને તેવા વચનો કહેવા જોઈએ નહી, કારણ કે તેવા વચનોથી તેને દુઃખ થાય છે-" दुहओ अवयारमइक्कत " એ જ પ્રમાણે જે વચન લોક તથા આગમ, બનેની અપેક્ષાએ વ્યવહાર વિરુદ્ધ હોય " एव विह सच्चपि न वत्तव्व " એવા વચન સત્ય હોય તો પણ બોલવા જોઈએ નહી " अहकेरिसय पुणाइ सच्चतु भासियव्व " હવે સૂત્રકાર એ બતાવે છે કે સાધુજનોએ-મહાવ્રતારાધક સયમીજનોએ કેવા પ્રકારના સત્યવચન બોલવા જોઈએ " ज त " જે વચન "दव्वेहिं" ત્રિકાલવર્તી પુદ્ગલાદિ દ્રવ્યોથી "पज्ज वेहिं" નવી જુની આદિ ક્રમવર્તી પર્યાયોથી " गुणेहिं " દ્રવ્યની સાથે અવિનાભાવરૂપ-સબધ રાખનાર વર્ણાદિ ગુણોથી "कम्मेहिं" કૃષ્યાદિ વ્યાપાર રૂપ

तथा-' बहुविहेहिं सिप्पेहिं ' बहुविधैः शिल्पैः= आचार्याधिगतैः चित्रकर्मादिभिः क्रियाविशेषैः, 'आगमेहि' आगमैः=सिद्धान्तैश्च युक्तं सत्यं वक्तव्यम्। पुनः कीदृशं सत्यं वक्तव्यम्? इत्याह—' नामक्खाय निवाय उवसग्गतद्धियसमाससंधि पयहेउजोगियउणाइकिरियाविहाणधाउसरविभत्तजुत्तं ' नामाख्यातनिपातो - पसर्गतद्धितसमाससन्धिपदहेतुयौगिकौणादिक्रियाविधानधातुस्वरविभक्तियुक्तं -- तत्र-नाम-व्युत्पन्नमव्युत्पन्नं च द्विविधं, तत्र-व्युत्पन्नं-जिनदत्तजिनदासादि, अव्युत्पन्नं-डित्थडवित्थादि, आख्यातम्=क्रियापदं भूतभविष्यद्वर्तमानरूपम्,

---

से (कम्मेहिं) कृष्यादि व्यापाररूप कर्मों से (बहुविहेहिं सिप्पेहिं) आचार्याधिगत चित्रकर्मादिरूप क्रिया विशेषों से, तथा (आगमेहिय) आगम-सिद्धान्तों-से युक्त हो ऐसे सत्यवचन बोलना चाहिये। (नामक्खायनिवायउवसग्गतद्धियसमासस्रंधियहेउजोगियउणाइकिरिया विहाणधाउसरविभत्तिवन्नजुत्त) इसी तरह, नाम, आख्यात, निपात, उपसर्ग, तद्धित, समास, सन्धि, पद, हेतु, योग, उणादिप्रत्यय, क्रिया-विधान, धातु, स्वर, विभक्ति और वर्ण इनसे युक्त हो (तिकाल दसविह पिसच्च) त्रिकाल विषयवाला जनपद सत्य आदि दस प्रकार का भी सत्यवचन बोलना चाहिये। व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न के भेद से नाम दो प्रकार का होता है। जिनदत्त, जिनदास आदि नाम व्युत्पन्न नाम हैं, और डित्थ, डवित्थ आदि नाम अव्युत्पन्न नाम हैं। आख्यात नाम क्रियापद का है। यह भूत भविष्यत् और वर्तमान के भेद से तीन प्रकार का होता है, जैसे-अभवत्, भविष्यति और भवति। अर्थ में

કર્મોથી, 'बहुविहेहिं सिप्पेहिं" આચાર્યાધિગત ચિત્રકર્માદિરૂપ ક્રિયાવિશેષોથી, તથા "आगमेहिय' આગમ-સિદ્ધાંતોથી યુક્ત હોય એવા સત્યવચન બોલવા જોઈએ "नामक्खायनिवाय—उवसग्गतद्धिय—समाससधिपयहेउजोगिय--उणाइ किरियाविहाणधाउसरविभत्तिवन्नजुत्त" એ જ પ્રમાણે નામ, આખ્યાત, નિપાત, ઉપસર્ગ, તદ્ધિત, સમાસ, સન્ધિ, પદ, હેતુ, યોગ, ઉણાદિ, પ્રત્યય, ક્રિયાવિધાન, ધાતુ, સ્વર, વિભક્તિ, અને વર્ણ એ બધાથી યુક્ત હોય "तिकल्ल दस विह पि सच्च" ત્રિકાળ વિષયવાળા જનપદ સત્ય આદિ દશ પ્રકારના પણ સત્યવચન બોલવા જોઈએ વ્યુત્પન્ન અને અવ્યુત્પન્ન ભેદથી નામ બે પ્રકારના હોય છે જિનદત્ત, જિનદાસ આદિ વ્યુત્પન્ન નામ છે, અને डित्थ, डवित्थ આદિ અવ્યુત્પન્ન નામ છે આખ્યાત નામ ક્રિયાપદનુ છે તે ભૂત ભવિષ્ય અને વર્તમાનના ભેદથી ત્રણ પ્રકારના છે, જેમકે अभवत् (થયો) भविष्यति (થશે)

निपाताः=अर्थद्योतकाः खल्विवादयः, उपसर्गाः=प्रपरादयः, तद्धिताः=अपत्याद्यर्थाभिधायकप्रत्ययान्ताः शब्दाः, यथा–नाभेरपत्यं नाभेयः ऋषभः, सिद्धार्थस्यापत्यं सैद्धार्थो महावीरः ' इति। समासः=अनेकपदानामेकीकरणम्, स चाव्ययीभावादिभेदादनेकविधः, सन्धिः=वर्णान्त सन्धानं नाम्, यथा 'शाकोऽत्रे'–त्यादि,

विशेषता के द्योतक जो होते हैं वे निपात हैं जैसे खलु इव आदि शब्द, प्र, परा आदि उपसर्ग कहलाते हैं। इनके सबंध से एक ही धातुके अर्थ में भिन्नता आ जाती है, जैसे 'हृ' धातु के साथ जब 'प्र' उपसर्ग का सबध होता है–तब उसका अर्थ प्रहार हो जाता है, और जब 'आ' का सबध होता है तब आहार हो जाता है, इत्यादि। अपत्य आदि अर्थ के अभिधायक जो प्रत्यय है वे प्रत्यय वाले शब्द यहां तद्धित शब्द से गृहीत हुए हैं जैसे–"नाभे अपत्य पुमान् नाभेयः" यहा नाभि शब्द से तद्धित प्रत्यय होने पर नाभेय बनता है तथा सिद्धार्थ शब्दसे अण् प्रत्यय होने पर 'सैद्धार्थ' बनता है, ये तद्धित शब्द हैं। इसी प्रकार और भी तद्धित शब्द जान लेना चाहिये। परस्पर सबध रखने वाले दो वा दो से अधिक पदोंकी बीच की विभक्ति का लोप करके मिले हुए अनेक पदों का नाम समास है। समास अव्ययी भाव आदि के भेद से अनेक प्रकार का होता है। सधि शब्द का अर्थ मेल होता है–अर्थात्–वर्णों की

અને भवति (છે) જે શબ્દો અર્થમા વિશેષતાને દર્શાવે છે તેમને निपात કહે છે જેમ કે "खलु" "इव" આદિ શબ્દ "प्र" "परा" આદિ ઉપસર્ગો છે. તેમના ઉપયોગથી એક જ ધાતુના અર્થમા ફેર પડી જાય છે, જેમકે "हृ" ધાતુ સાથે જ્યારે "प्र" ઉપસર્ગ મૂકવામા આવે છે ત્યારે તેનો અર્થ "પ્રહાર" થઈ જાય છે, અને જ્યારે તેની આગળ "आ" ઉપસર્ગ મૂકવામા આવે ત્યારે તેનો અર્થ "આહાર થઈ જાય છે, અપત્ય આદિ અર્થને દર્શાવનાર જે પ્રત્યયો છે તે પ્રત્યયવાળા શબ્દોને અહી "तद्धित" શબ્દથી કહેલ છે, જેમ કે–" नाभे अपत्य पुमान् नाभेय" "नाभि" શબ્દને તદ્ધિત પ્રત્યય લાગવાથી "नाभेय" શબ્દ બન્યો છે, તથા 'सिद्धार्थ' શબ્દને 'अण्' પ્રત્યય લાગતા "सैद्धार्थ" બને છે, તે તદ્ધિત શબ્દો છે આ પ્રકારે જ બીજા તદ્ધિત શબ્દો પણ સમજી લેવા પરસ્પર સબધ રાખનાર બે કે બેથી વધારે પદોની વચ્ચેની વિભક્તિનો લોપ કરીને જોડાયેલા અનેક પદોને સમાસ કહે છે અવ્યયી ભાવ આદિ ભેદથી સમાસ અનેક પ્રકારના છે 'સધિ' શબ્દનો અર્થ 'જોડાણ' થાય છે–એટલે કે વર્ણોની અતિ

पदं=सुबन्त तिङन्त च-यथा-' जिनः भवति ' इत्यादि, हेतुः=साध्याऽविनाभूतत्वलक्षण , यथा-' पर्वतोऽय वह्निमान् धूमा ' दित्यादि, यौगिक=योगनिष्पन्न पद ' पद्मनाभो नीलकान्तः ' इत्यादि-उणादिः उणादिप्रत्ययनिष्पन्न पदम् , ' करोति चित्रकार्यमिति कारुः' साध्नो तिस्वपर-कार्यमिति साधु' ' इत्यादि. क्रियाविधान = कृदन्तप्रत्ययनिष्पन्न ' पाठकः, पाचकः, पाकः ' इत्यादि-रूप पदम् , धातवः=क्रियावाचिनो भ्वादयः, स्वराः= अकारादयः षड्जादयः,

अति समीपता होने पर उनके मेल से जो ध्वनि में विकार होता है उसका नाम सधि है-जैसे 'श्रावकः अत्र ' ऐसी स्थिति में ' श्रावकोऽत्र ' ऐसी सधि होती है, इस सधि का नाम पूर्वरूप सधि है। सुबन्त और तिङन्त को पद कहते हैं, जैसे-' जिनः ' यह सुबन्त पद है ओर ' भवति ' यह तिङन्त पद है। जो साध्य के साथ अविनाभाव सबध से बधा होता है उसका नाम हेतु है, जैसे धूमवाला होने से यह पर्वत अग्नि-वाला है, यहा पर साध्य-अग्नि है और उसके विना नही होने वाला धूम है। योग से जो शब्द निष्पन्न होते हैं वे यौगिक शब्द है, जैसे पद्मनाभ, नीलकान्त आदि शब्द। उणादि प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं वे उणादि हैं, जैसे-कारु (शिल्पी) साधु आदि शब्द। धातु के अन्त में प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनते हैं वे कृदन्त हैं, जैसे-पाठक, पाचक, पाक आदि शब्द । क्रिया के वाचक जो भू आदि शब्द है वे धातु कहलाते हैं। दूसरे वर्णो की सहायता के विना जिनका उच्चारण होता है ऐसे

समीपता હોય ત્યારે તેમના જોડાણથી ધ્વનિમા જે વિકાર ઉત્પન્ન થાય છે તેને સન્ધિ કહે છે. જેમ કે " श्रावक अत्र " ની " श्रावकोऽत्र " એ પ્રકારની સન્ધિ થાય છે, આ સન્ધિને પૂર્વરૂપ સન્ધિ કહે છે सुबन्त અને तिङन्त ને પદ કહે છે, જેમ કે-' जिन " તે સુબન્ત પદ છે અને " भवति " તે તિઙન્ત પદ છે, જે સાધ્યની સાથે અવિનાભાવ સબધથી બધાયેલ હોય છે તેને હેતુ કહે છે જેમ કે ધૂમવાળો હોવાથી આ પર્વત અગ્નિવાળો છે, અહી સાધ્ય અગ્નિ છે, અને તેના વિના ન પેદા થનાર ધુમાડો છે યોગથી જે શબ્દો બને છે તેમને યૌગિક શબ્દ કહે છે જેમ કે પદ્મનાભ, નીલકાન્ત, આદિ યૌગિક શબ્દો છે " उणादि " પ્રત્યયથી જે શબ્દો બને છે તે " उणादि " કહેવાય છે, જેમ કે કારુ (શિલ્પી) સાધુ આદિ શબ્દ ધાતુને અન્તે પ્રત્યય લગાડીને જે શબ્દ બને છે તેને કૃદન્ત કહે છે, જેમકે પાઠક, પાચક પાક આદિ શબ્દ ક્રિયાના વાચક " भू " આદિ જે શબ્દો છે તેમને ધાતુ કહે છે બીજા વર્ણોની મદદ વિના જેનું ઉચ્ચારણ થાય છે એવા 'अ'

वा, विभक्तयः=स्यादयस्तिवादयश्च, वर्णाः = कवर्गादयः, परिगुक्त 'तिकल' त्रैकाल्य=त्रिकालविषय 'दसविह पि' दशविधमपि जनपदादिरूप 'सच्चं' सत्य=वक्तव्यम्। तथा यत्सत्य 'जह' यथा=येन प्रकारेण 'भणिय' भणितम् उच्चारित 'तह य' तथा च=तेनैव प्रकारेण 'कम्मुणा' कर्मणापि–कार्येणापि परिणत 'होइ' भवति, तत्सत्य वक्तव्यमिति भावः, तथा–'दुवालसविहा' द्वादशविधा=प्राकृत सस्कृतमागधपिशाचसौरसेनीअपभ्रंशभेदात् षड्विधा, सा पुनः गद्यपद्यभेदाद् द्विविधेति द्वादशविधा 'भासा' भाषा 'होइ' भवति, तथा—'वयण पि य' वचनमपि च 'होइ' भवति 'सोलसविह' षोडशविधत्वमेव विशेषम्–

अकार आदि शब्द, अथवा षडज आदि स्वर स्वर कहलाते हैं। 'सु, औ, जस्, आदि विभक्तियां तथा 'तिप्, तस्, झी' आदि प्रत्यय ये सब विभक्तियां कहलाती हैं, और कवर्ग आदि वर्ग कहलाते हैं। (जह भणिय तह य कम्मुणा होइ) तथा जो सत्य जिस प्रकार से कहा गया है वह सत्य उसी प्रकार से कार्य से भी परिणत हो जाता है ऐसा सत्य बोलना चाहिये। तात्पर्य इसका यह है कि जिस सत्य को, बोलने वाला व्यक्ति कार्य रूप मे परिणत कर सके ऐसा सत्य बोलना चाहिये। (दुवालसविहा होइ भासा) भाषा बारह प्रकार की होता है–वह इस प्रकार से–प्राकृत, सस्कृत, मागधी, पैशाची, सौरसेनी और अपभ्रंश। यह छहों प्रकार की भाषा गद्य और पद्य के भेद से बारह प्रकार की हो जाती है। (वयण पिय होइ सोलसविह) वचन के सोलह प्रकार होते हैं, वे इस प्रकार से है—

કાર આદિ શબ્દ અથવા षड्ज આદિ સ્વરને સ્વર કહે છે, "सु, औ, जस्" આદિ વિભક્તિયો તથા "तिप् तस् झी" આદિ પ્રત્યય એ સૌને વિભક્તિયો કહે છે, (ગુજરાતીમા એ, ને, થી, નો, ની, નુ, ના, મા આદિ વિભક્તિના પ્રત્યયો છે) અને 'क ख' આદિ વર્ણો કહેવાય છે "जहभणिय तहय कम्मुणा होइ" તથા જે સત્ય જે પ્રકારે કહેવાયુ હોય તે સત્ય તે જ પ્રકારે કાર્યમા પણ પરિણમતુ હોય તેવુ સત્ય બોલવુ જોઈએ, તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે જે સત્યને બોલનાર વ્યક્તિ કાર્ય રૂપે અમલમા મૂકી શકે તેવુ સત્ય બોલવુ જોઈએ, "दुवालसुविहा होइ भासा" ભાષા બાર પ્રકારની હોય છે તે આ પ્રમાણે છે-પ્રાકૃત, સસ્કૃત, માગધી, પૈશાચી, સૌરસેની, અને અપભ્રશ આ છ પ્રકારની ભાષા ગદ્ય અને પદ્યના ભેદથી બાર પ્રકારની થઇ જાય છે, "वयण पिय होइ सोलसविह" વચનના સોળ પ્રકાર હોય છે. તે નીચે પ્રમાણે છે

"वयणतिय लिंगतिय कालतिय तह परोक्खपच्चक्खं। उवणीयाइ-चउक्कं अज्झत्थं चेव सोलसमं"

छाया—वचनत्रिकं लिङ्गत्रिकं कालत्रिकं तथा परोक्ष-प्रत्यक्षम्। उपनीतादि चतुष्कमध्यात्मं चैव षोडशम् ॥ इति, तत्र-वचनम् = एकवचनं द्विवचनं बहुवचनं च, यथा—'घटः घटौ घटाः' 'भवति, भवतः भवन्ती' त्यादि। त्रिलिङ्गम्= स्त्रीपुनपुंसकरूपम्, यथा—'प्रकृतिः आत्मा मनः' इत्यादि। कालत्रिकं भूतभविष्यद् वर्तमानरूपम्, यथा 'अभूद्, भविष्यति, भवति इति। तथा-परोक्षम्=भूता-नद्यतनकालिकमिन्द्रियागोचरम्-यथा-ऋषभो बभूवे' त्यादि। प्रत्यक्षम्-वर्तमा-

"वयणतिय३ लिंगतिय६ कालतिय९ तहपरोक्ख१० पच्चक्ख ११। उवणीयाइ चउक्क १५, अज्झत्थ चेव सोलसमम् ॥१॥"

एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ३। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ६। भूतकाल, भविष्यत्काल और वर्तमानकाल ९ इस प्रकार ये सब वचन के वचन लिङ्ग और काल तीन तीन होते हैं, इस तरह वचन के ये नौ भेद हो जाते हैं ९। 'घटः, घटौ, घटाः' ये घट शब्द के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन है ३। इसी तरह "भवति भवतः भवन्ति" इनमें भी जानना चाहिये ३। 'प्रकृतिः, आत्मा, मन', ये शब्द के तीन लिङ्ग हैं, प्रकृतिः स्त्रीलिङ्ग, और मन', यह नपुंसकलिङ्ग है ६। अभूत्, भविष्यति भवति ये तीन काल हैं 'अभूत्' यह भूत काल है, 'भविष्यति' यह भविष्यत् काल है और 'भवति' यह वर्तमान काल है ९। भूतकालीन एवं अनद्यतनकालीन वचन इन्द्रिय के अगोचर होता

"वयणतिय ३ लिंगतिय ६ कालतिय ९ तह परोक्ख १० पच्चक्ख ११। उवाणीयाइचउक्क १५ अज्झत्थ चेव सोलसम ॥ १ ॥"

એકવચન, દ્વિવચન અને બહુવચન ૩, પુલ્લિંગ, સ્ત્રીલિંગ અને નપુંસકલિંગ ૬, ભૂતકાળ, ભવિષ્યકાળ અને વર્તમાનકાળ ૯, આ રીતે તે બધા વચનના પ્રકારો, લિંગ (જાતિ) અને કાળ ત્રણ ત્રણ હોય છે આ રીતે વચનના તે નવ ભેદ થાય છે, "घट, घटौ, घटा તે 'घट' શબ્દના એક વચન, દ્વિવચન અને બહુવચન છે ૩ એજ પ્રમાણે "भवति भवत भवन्ति" એ રૂપોમા પણ સમજવાનુ છે ૩, "प्रकृति आत्मा मन" તે ત્રણે જુદી જુદી જાતિ(લિંગ)ના શબ્દો છે પ્રકૃતિ સ્ત્રીલિંગ છે આત્મા પુલ્લિંગ છે અને મન નપુંસકલિંગ છે ૬, વર્તમાન, ભૂત અને ભવિષ્ય એ ત્રણ કાળ છે 'અભૂત્" તે ભૂતકાળ છે, "भविष्यति" તે ભવિષ્યકાળ છે અને "भवति" તે વર્તમાનકાળ છે ૯, ભૂતકાલીક અને ભવિષ્યકાલીન વચનો ઇન્દ્રિયને અગોચર

नकालिकमिन्द्रियगोचरम्–यथा–'मुनिरय शास्त्र पठतीत्यादि । तथा–उपनीतादि चतुष्क वचनम् , तत्र–उपनीतवचनम्=गुणारोपणवचनम् , यथा–' रूपवानय मन स्वी ' इत्यादि । अपनीतवचन=गुणापनयनवचनम् , यथा–' दु शीलोऽय दुर्वचनो ऽय ' मित्यादि । उपनीतापनीतवचनम्=क्वचिद् गुणमारोप्य कोऽपि गुणोऽपनीयते येन वचनेन तदुपनीतापनीतवचनम् , यथा–' रूपवानय किन्तु दुःशीलः ' इत्यादि । एतद्विपर्ययेण अपनीतोपनीतवचनमपि भवति । येन वचनेन पूर्व कमपि गुणमपनीय पश्चादपर कोऽपि गुण उपनीयते तदपनीतोपनीतवचनम् , यथा–' दुःशीलोऽय किन्तुरूपवा' नित्यादि । तथा–षोडश वचनम्–' अज्झत्थ' अध्या

है, जैसे " ऋषभो बभूव" यह वाक्य परोक्ष अर्थ को विषय करनेवाला होने से परोक्ष माना जाता है १० । जो वाक्य वर्तमान काल को विषय करता है वह प्रत्यक्ष वाक्य माना जाता है जैसे "मुनिरय शास्त्र पठति" यह प्रत्यक्ष वाक्य है ११। उपनीतवचन १२, अपनीतअवचन १३, उपनीतापनीतवचन १४ और अपनीतोपनीतवचन १५, इस प्रकार ये उपनीतादि चार हैं । इनमें जो वचन गुणों का आरोपण करता है वह उपनीत वचन है–जैसे " यह मनस्वी अच्छे रूप वाला है १ । जो वचन गुणों का अपनयन करता है वह अपनीत वचन है–जैसे यह दुःशील है २ । जो वचन किसीगुणको आरोपित करके किसी गुण का अपनयन करता है वह उपनीतापनीतवचन है, जैसे यह रूपवाला तो है परन्तु दुःशील है ३ । इसी तरह जो किसी गुण का अपनयन करके गुण का आरोपक होता है वह वह अपनीतोपनीतवचन है, जैसे यह दुःशील

હોય છે, જેમકે ",ऋषभो बभूव" "ઋષભ થઈ ગયો" આ વાકય પરોક્ષ અર્થને વિષય કરનારૂ હોવાથી પરોક્ષ મનાય છે ૧૦ જે વાકય વર્તમાન કાળને વિષય કરે છે તે પ્રત્યક્ષ મનાય છે " મુનિ આ શાસ્ત્ર વાચે છે ૧૧ (૧૨) ઉપનીતવચન, (૧૩) અપનીતવચન, (૧૪) ઉપનીતાપનીતવચન અને (૧૫) અપનીતોપનીતવચન એ રીતે ઉપનીતાદિ ચાર વચન છે (૧) તેમા ગુણોનુ આરોપણ કરનાર વચનને ઉપનીત વચન કહે છે જેમ કે " આ મનસ્વી સારા રૂપવાળો છે " (૨) જે વચન ગુણોનુ અપનયન કરે છે તે અપનીત વચન છે, જેમ કે " આ દુ શીલ છે" (૩) જે વચન કોઈ ગુણનુ આરોપણ કરીને કોઈ ગુણનુ અપનયન કરે છે તે ઉપનીતાપનીત વચન છે, જેમકે " તે રૂપાળો છે પણ દુ શીલ છે " એ જ રીતે જે વાકય કોઈ ગુણનુ અપનયન કરીને કોઈ ગુણનુ આરોપણ કરતુ હોય તે અપનીતોપનીત વચન છે

त्मम्=आत्मानमधिकृत्य यद्वचनं तदध्यात्मवचनम् यथा – ज्ञानस्वरूपोऽयमात्मेत्यादि । इति पोडशविध वचनम् । एवम्=उक्तरूप सत्यम् 'अरहन्तमणुण्णाय' अर्हन्नुज्ञातम्=तीर्थङ्करोपदिष्ट 'समिक्खिय' समीक्षितं=पर्यालोचित सदेव 'सजएण' सयतेन=साधुना 'काले य, काले च अवसरे समागते एव 'वत्तव्व' वक्तव्यम् । भगवदाज्ञाबहिर्भूत स्वयमपर्यालोचित वचन साधुनाऽवसर विना न वक्तव्यमिति भावः । अथोपसहारमाह=' इमं च' इत्यादि—

'इम च' इद च=पूर्वैरनन्ततीर्थकरगणधरैः प्रोक्तमिद=प्रत्यक्ष 'पावयण' प्रवचनम्, 'अलिय-पिसुणफरुस-कडुय-चवलवयणपरिरक्खणट्ठयाए' अलीकपिशुन-परुष-कटुक-चपलवचनपरिरक्षणार्थं-तत्र अलीकम् असद्भूतार्थं पिशुन=पर-

तो है परन्तु अच्छे रूप वाला है ४। वचन का सोलहवां भेद यह है, जो अध्यात्म होता है, जो आत्मा को अधिकृत करके बोला जाता है जैसे "यह आत्मा ज्ञान स्वरूप है" इत्यादि १६ । (एव अरहत मणुण्णाय) इस प्रकार इन सोलह तरह के वचनों को बोलने में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा है । और जो वचन (समिक्खिय) पर्यालोचित है अर्थात् अच्छी तरह से विचार करके निकाले गये हो ऐसे वचन (सजएण) साधु को (कालम्मि) अवसर आने पर (वत्तव्व) बोलने चाहिये, परन्तु जिन वचनों को बोलने की प्रभु की आज्ञा नहीं है और जो अपर्यालोचित हो ऐसे वचन साधु को नहीं बोलना चाहिये। अब इसका उपसहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं-(इम च पावयण) पूर्वकालिक अनत तीर्थकरों के द्वारा कहा हुआ यह प्रत्यक्षीभूत प्रवचन (अलिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवलवयणपरिरक्खणट्ठयाए) अलीक, पिशुन, परुष,

જેમ કે 'આ કુશીલ તો છે પણ સુંદર રૂપવાળો છે' (૧૬) વચનનો સોળમો ભેદ તે છે કે જે અધ્યાત્મ હોય છે, જે આત્માને ઉદ્દેશીને બોલાય છે જેમ કે "આ આત્મા જ્ઞાનસ્વરૂપ છે" ઇત્યાદિ, "एव अरहत मणुण्णाय" આ રીતે તે સોળ પ્રકારના વચનો બોલવાની તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞા છે અને જે વચન 'समिक्खिय" પર્યાલોચિત છે-સારી રીતે વિચાર કરીને ઉચ્ચારાયા હોય, એવા વચન "सजएण" સાધુએ "कालम्मि" અવસર આવતા "वत्तव्व" બોલવા જોઈએ, પણ જે વચનો બોલવાની ભગવાનની આજ્ઞા નથી અને જે અપર્યાલોચિત હોય તેવા વચનો સાધુએ બોલવા જોઈએ નહીં હવે તેનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે – 'इमच पावयण" પૂર્વકાલીન અનત તીર્થંકરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન, "अलिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए" અલીક-અસત્ય, પિશુન, પરુષ-

दोपसूचक,परुष=परमर्मोद्घाटक,कटुकम्=उद्वेगजनकम् ,चपलम्=असमीक्ष्य भोक्त यद् वचन तस्मात्–मुनीना परिरक्षणा म् , अर्थात्–मुनिभिरीदृश वचन न वाच्य मिति हेतोः ' भगवया ' भगवता ' सुकहियं ' सुकथितम् । कथम्भूत प्रवचनं सुकथितम् ? इत्याह–' अत्तहिय ' आत्महितम्-आत्मनो हितकारकम् , 'पेच्चाभाविय ' प्रेत्य भाविक=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम् , अतएव 'आगमेसिभद्द' आगमिष्यद् भद्रम्=भविष्यत्कल्याणकारकम् , तथा–' सुद्ध ' शुद्ध=निर्दोषत्वात् , पुनः ' नेयाउय ' नैयायिक=न्याययुक्तम् , वीतरागभाषितत्वात् , तथा–' अकुडिल ' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात् , ' अणुत्तर ' अनुत्तरम्=सर्वश्रेष्ठत्वात् , तथा–सव्वदुक्खपावाण ' सर्वदुःखपापानां=सकलदुःखजनकज्ञानावरणीयाद्यष्टविध कर्मणा 'विउसमण' व्युपशमनम्=सर्वथाप्रशमनकारकम् । एतादृश प्रवचन भगवता कथितमित्यर्थः ॥ सू–३ ॥

कटुक, चपल, वचनों से मुनिजनों की रक्षा होती रहे इस अभिप्राय से (भगवया) भगवान् ने (सुकहिय) अच्छी तरह से प्रतिपादित किया है। असद्भूत अर्थ को कहने वाला वचन अलीक, पर दोप सूचकवचन–पिशुन. पर के मर्मका उद्घाटक वचन परुष, उद्वेग को पैदा करने वाला वचन कटुक, और विना विचारे बोला गया वचन चपल कहलाता है। यह प्रवचन (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है तथा (पेच्चा भाविय) जन्मान्तर मे भी शुभफल का देनेवाला है। (आगमेसिभद्द) इसीलिये इसे भविष्यत् में कल्याणकारक कहा गया है। (सुद्ध) इस प्रवचन में किसी भी प्रकार का पूर्वापरविरोधरूप दोप नहीं होने से ये शुद्ध हैं। (नेयाउय) यह वीतराग द्वारा भाषित होने के कारण न्याययुक्त है। तथा (अकुडिल) इससे ऋजुभाव उत्पन्न हो जाता है इसलिये यह अकुटिल है। (अणुत्तर) इस के जैसा उत्तम और कोई

કઠોર, કડવા, ચપલ વચનોથી મુનિજનોનિ રક્ષા થયા કરે તે ઉદ્દેશથી ' भगवया " ભગવાને " सुकहिय " સારી રીતે પ્રતિપાદન કર્યું છે અસદ્ભૂત અર્થને કહેનારૂ વચન અલીક, પરદોષ સૂચક વચન પિશુન, બીજાના મર્મને ખુલ્લો પાડતુ વચન પરુષ, ઉદ્વેગ પેદા કરનાર વચન कटुक અને વિચાર્યા વિના બોલાયેલ વચન ચપલ કહેવાય છે આ પ્રવચન " अत्तहिय " આત્માને માટે હિતકારક છે તથા " पेच्चाभाविय " જન્માતરમા પણ શુભ ફળ દેનારૂ છે " आगमेसिभद्द " તે કારણે તેને ભવિષ્યમા કલ્યાણકારક દર્શાવ્યુ છે " सुद्ध " આ પ્રવચનમા કોઈ પણ પ્રકારે પૂર્વાપરવિરોધરૂપ દોષ નહી હોવાથી તે શુદ્ધ જે " नेयाउय " તે વીતરાગ દ્વારા કહેવાયેલ હોવાથી ન્યાયયુક્ત છે તથા " अकुडिल " તેનાથી ઋજુભાવ સરળતા ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તે અકુટિલ છે, " अणुत्तर " તેનાજેવુ શ્રેષ્ઠ બીજુ કઈ પણ નથી તેથી તે અનુત્તર છે

नहीं है इसलिये यह अनुत्तर है। और यह (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) अनेक विध दुःखों के देने वाले ज्ञानावरणीयादि अष्टप्रकार के कर्मों का सर्वथा उपशम करने वाला है। ऐसे विशेषणों से विशिष्ट इस प्रवचन को भगवान ने कहा है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा यह प्रकट किया है कि सत्य होने पर भी किस प्रकार के वचन नहीं बोलना चाहिये और किस प्रकार के वचन बोलना चाहिये। उन्हों ने कहाहै कि जिन सत्यवचनों से सयम में बाधा आवें वे वचन कभी नहीं कहना चाहिये, क्यो कि ऐसे वचन सत्य होने पर भी असत्य के जैसे होने से हेय त्याज्य है। जिन सत्य वचनों से हिंसा हो जावे, पाप में जीवों की प्रवृत्ति हो जावे, चारित्र से भ्रष्ट हो जावे, अथवा अपने चारित्र में किसीप्रकार की बाधा उपस्थित हो जावे, राजकथा आदि का प्रसग जिनमें होवे, जो प्रयोजन शून्य हो, जिनसे कलह उत्पन्न हो जावे, न्यायानुकूल जो न हो, अपवाद विवाद से जो युक्त हो, पर की विडम्बनाकारक हो, जिनके बोलने में अपनी आत्मप्रशसा भरी हो, अथवा किसी प्रकार का आवेश भाव झलकता हो, सुनने वालो को जिनमे अपनी धृष्टता प्रकाशित

અને તે "सव्वदुक्खपावाण विउसमण" અનેક પ્રકારના દુખો દેનાર જ્ઞાનાવરણી આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનો સર્વથા ઉપશમ કરનાર છે, એવા વિશેષણોથી યુક્ત આ પ્રવચન ભગવાન મહાવીર દ્વારા કથિત છે

ભાવાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કર્યું છે કે સત્ય હોય તો પણ કેવા પ્રકારના વચન બોલવા જોઈએ, તેમણે એ બતાવ્યુ છે કે જે સત્ય-વચનોથી સયમમા બાધા નડે, તેવા વચનો કદી પણ ન બોલવા જોઈએ, કારણ કે તેવા વચનો સત્ય હોય તો પણ અસત્ય જેવા હોવાથી હેય છે જે સત્યવચનોથી હિંસા થઈ જાય , જીવોની પાપમા પ્રવૃત્તિ થાય, ચારિત્રમા ભ્રષ્ટતા આવે, અથવા પોતાના ચારિત્રમા કોઈ પ્રકારની બાધા ઉપસ્થિત થાય, જેમા રાજકથા આદિનુ વર્ણન આવે, જે પ્રયોજન વિનાનુ હોય, જેનાથી કલહ પેદા થાય, જે ન્યાયાનુકૂળ ન હોય, જે અપવાદ વિવાદથી યુક્ત, પારકાની વિડબના કરનાર હોય, જે બોલવામા આત્મશ્લાઘા થતી હોય, અથવા કોઇ પ્રકારનો આવેશ ભાવ જણાતો હોય, જેમા સાભળનાર આગળ પોતાની

होती हो, जिनके बोलने मे लज्जा की भी लाज जाती हो, लोक में जो निन्दित माने जाते हों, पर के मर्म को जो छेदते हों, दुर्दृष्ट, दुःश्रुत एव जो अज्ञात हो ऐसे सत्यवचन भी नहीं बोलना चाहिये। तथा भाषासमिति के विरोधी होने से ऐसे वचन भी नहीं कहना चाहिये कि जो दूसरों की निंदा कारक हों, कर्णकटु तथा दुःखप्रद हों, जैसे- तू महामूर्ख है, मेधावी नहीं है, धर्मप्रिय नहीं है इत्यादि। तथा जो द्रव्य जैसा है, जैसे आकार का है, जिस क्षेत्र काल आदि से सबध रखता है, ऐसा ही उसका प्रतिपादन करनेवाला अविसंवादी वचन जो होता है वह वचन द्रव्य से युक्त कहलाता है, इसी प्रकार उस द्रव्य में जो पर्यायें हो रही हो, अथवा- जिस पर्याय से वह युक्त हो-उस पर्याय का प्रदर्शक वचन पर्याय से युक्त वचन कहलाता है। गुणों की अपेक्षा को लेकर जो वचन बोला जाता है वह गुण से युक्त वचन कहलाता है। कृष्यादि व्यापारों को लेकर जो वचन कहे जाते हैं वे कर्मयुक्त वचन कहलाते हैं। " ये शिल्पी है ये चित्रकार हैं " इत्यादि जो क्रियाविशेषों को लेकर जो वचन कहे जाते हैं वे बहुविधशिल्पयुक्त वचन कहलाते है। तथा सिद्धान्त के अनुसार जो वचन कहे जाते हैं वे सिद्धान्तयुक्त वचन कहलाते हैं। इसी तरह नाम आदि से युक्त जो

ધૃષ્ટતાનુ પ્રદર્શન થતુ હોય, જે બોલવામા લાજ લોપાતી હોય, જગતમા જે નિન્દાપાત્ર મનાતા હોય, બીજાના મર્મને જે છેદતા હોય, દુદષ્ટ, દુશ્રુત, અને જે અજ્ઞાત હોય એવા સત્યવચન પણ બોલવા જોઇએ નહી તથા ભાષાસમિતિના વિરોધી હોવાથી એવા વચનો પણ ન બોલવા જોઈએ કે જે બીજાની નિન્દાકારક હોય, કર્ણકટુ તથા દુખપ્રદ હોય જેમ કે " તુ મહામૂર્ખ છે, મેધાવી નથી, ધર્મપ્રિય નથી " ઇત્યાદિ, તથા જે દ્રવ્ય જેવુ છે જેવા આકારનુ છે, ક્ષેત્ર કાળ આદિ સાથે સબધ રાખે છે, એવુ જ તેનુ પ્રતિપાદન કરનારા અવિસવાદી જે વચનો હોય છે તે વચનો દ્રવ્યયુક્ત કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે તે દ્રવ્યમા જે પર્યાયો થઇ રહી છે, અથવા જે પર્યાયથી તે યુક્ત હોય, તે પર્યાયને દર્શાવનારૂ વચન પર્યાયયુક્ત વચન કહેવાય છે ગુણોની અપેક્ષાએ જે વચન બોલાય છે તે ગુણયુક્ત વચન કહેવાય છે કૃષ્યાદિ વ્યાપારોની અપેક્ષાએ જે વચન બોલાય છે તે કર્મયુક્ત વચન કહેવાય છે " તેઓ શિલ્પી છે, તેઓ ચિત્રકાર છે " ઇત્યાદિ ક્રિયાવિશેષોની અપેક્ષાએ જે વચન કહેવાય છે તે બહુવિધ શિલ્પયુક્ત વચન કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે નામ આદિથી યુક્ત જે વચન કહેવાય છે તે

समति सत्यवचनस्य पञ्च भावना प्रतिपादयन् पूर्व समितियोगलक्षणां प्रथमा भावनामाह–' तस्स इमा ' इत्यादि—

मूलम्—तस्स इमा पच भावणाओ वीयस्स वयस्स अलियवयण–वेरमण–परिरक्खणट्टयाए । पढम सोऊण संवरट्ठ परमट्ठ सुट्ठु जाणिऊण न वेगिय, न तुरिय, न चवलं न कडुयं, न फरुस, न साहस, न य परस्स पीलाकर सावज्ज सच्च च मिय च गाहग च सुद्ध सगयमकाहलं च समीक्खिय सजएण कालम्मिय वत्तव्व । एव अणुवीइ-समिइजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा सजयकरचरणनयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ॥ सू०४ ॥

टीका— तस्स ' तस्य प्रसिद्धस्य ' वीयस्स वयस्स ' द्वितीयस्य व्रतस्य इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्च ' भावणाओ ' भावनाः ' अलियवयणवेरमणपरिरक्खण-

---

वचन कहेजाते हैं वे नामादियुक्त वचन कहलाते हैं। इस प्रकार के ये सत्यवचन सयम आदि के बाधक नहीं होते हैं। ऐसे वचन सत्यव्रती बोल सकता है। तथा वह प्राकृत आदि भेद से बारह प्रकार की भाषा और एकवचन आदि के भेद से सोलह प्रकार का वचन भी बोल सकता है। इस प्रकार के वचन बोलने में प्रभु की आज्ञा है। ऐसे वचन बोलने में किसी भी जीव को बाधा नहीं पहुँचती है ॥ सू०३ ॥

अब सूत्रकार सत्यवचन की पाच भावनाओ को कहने के अभिप्राय से सर्वप्रथम वे अनुविचिन्त्य समिति नाम की प्रथम भावना

નામાદિયુક્ત વચન કહેવાય છે, આ પ્રકારના તે સત્યવચનો સયમ આદિમા બાધક થતા નથી એવા વચન સત્યવ્રતી બોલી શકે છે તથા તે પ્રાકૃત આદિ ભેદથી બાર પ્રકારની ભાષા અને એક વચન આદિ ભેદથી સોળ પ્રકારના વચન પણ બોલી શકે છે, આ પ્રકારના વચન બોલવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે એવા વચનો બોલવાથી કોઇપણ જીવને બાધા પહોંચતી નથી ॥ સૂ ૩ ॥

હવે સૂત્રકાર સત્યવચનની પાચ ભાવનાઓ દર્શાવવાને માટે સૌથી પહેલા તેઓ अनुविचिन्त्य समिति નામની પહેલી ભાવનાનુ વર્ણન કરે છે–

द्वयाए' अलीकवचनविरमणपरिरक्षणार्थम्-मृषावादविरमणव्रतपरिरक्षणार्थं सन्ति। तासु 'पढमं' प्रथमा समितियोगलक्षणां भावनामाह-'सोऊण' श्रुत्वा=सुगुरुसमीपे समाकर्ण्य, तथा-'परमट्ठ' परमार्थ-परमतत्त्व प्रथमभावनारहस्य 'संवरट्ठ' संवरार्थ-संवरस्य-मृषावादविरतिलक्षणस्य अर्थ=प्रयोजन-मोक्षलक्षणम्, अथवा संवरः=कर्मनिरोधएव अर्थः प्रयोजन यस्य स त तथोक्तम्, यद्वा-संवरस्य=प्रस्तुतसंवराध्ययनस्य अर्थ=वाच्य 'सुट्ठु' सुष्ठु-सम्यक् 'जाणिऊण' ज्ञात्वा न=नैव 'वेगिय' वेगित=नदीप्रवाह वद्वेगयुक्त वचन वक्तव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः, तथा-न नैव 'तुरिय' त्वरित-वात्यावत् त्वरायुक्त वचनचाञ्चल्याद्, न=नैव

करते हैं-'तस्स इमा' इत्यादि०।

टीकार्थ—(तस्स बीयस्स वयस्स इमा पंच भावणाओ) उस प्रसिद्ध द्वितीय महाव्रत की ये वक्ष्यमाण पांच भावनाएँ (अलियवयणवेरमण परिरक्खणट्ठयाए) उस अलीकवचन विरमणरूप सत्यव्रत की रक्षा के लिये है। उनमें (पढम) प्रथम भावना इस प्रकार है-(परमट्ठ सवरट्ठ सोऊण) सुगुरु के समीप प्रथम भावना के रहस्य को कि जो रहस्य मृषावाद विरतिरूप प्रयोजन वाला है, अथवा कर्मनिरोधरूप संवर ही जिसका प्रयोजन है, अथवा इस प्रस्तुत संवराध्ययन के वाच्यार्थ को सुनकरके (सुट्ठु जाणिऊण) अच्छी तरह जान करके (न वेगिय) नदी के प्रवाह की तरह वेगयुक्त वचन साधु को नही बोलना चाहिये इस प्रकार "वक्तव्य" शब्द का संबंध सब के साथ लगा लेना चाहिये। (न तुरिय) वात्या-वधूरे-की तरह त्वरायुक्त वचन चंचलता से युक्त

"तस्स इमा" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—"तस्स बीयस्स वयस्स इमा पंच भावणाओ" તે પ્રસિદ્ધ બીજા મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાંચ ભાવનાઓ "अलियवयणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए" તે અલીક-અસત્ય-વિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમાં "पढम" પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે-"परमट्ठ संवरट्ठ सोऊण" સદ્‌ગુરુ પાસે પહેલી ભાવનાનું રહસ્ય કે જે મૃષાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળું છે, અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સંવર જ જેનું પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત સંવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સાંભળીને 'सुट्ठुजाणिऊण" સારી રીતે જાણીને "न वेगिय" નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા જોઈએ નહીં આ રીતે "વક્તવ્ય" શબ્દનો સંબંધ બધા સાથે જોડી લેવો "न तुरिय" વાત્યા-વધુરા-ની જેવું ત્વરાયુક્ત "न चवल" ઘોડાની ગતિ

'चवल' चपल=हयगमनवच्चपलभावसमन्वितम्, न=नैव 'कडुय' निम्बवत् कटुकम् अर्थतः, न=नैव 'फरुस' परुष–कठोर–पाषाणवत्कठोरभावयुक्त, तथा न=नैव 'साहसम्'– उन्मत्तवत् अविचारित, तथा–' न य ' न च ' परस्स ' परस्य पीडाकर=दुःखजनक 'सावज्ज' सावद्य=सपाप वचन वक्तव्यम्। उक्त-दोषदुष्ट वचन न वक्तव्यमित्यर्थः। तर्हि कीदृश वचन वक्तव्यम्? इत्याह–'सच्च च=सद्भूतार्थत्वात् 'हिय च–परिणामसुखजनकत्वात्, 'मिय' मित च, परि-मिताक्षरत्वात्, तथा–' गाहग ' ग्राहक=श्रोतुरर्थप्रतीतिजनकत्वात्, प्रीतिजनक-त्वाच्च, 'सुद्ध' शुद्ध–वेगितत्वादिदोषरहितत्वात्, तथा–' सगय ' सगतम्= युक्तियुक्तत्वात्, 'अकाहल' अकाहल=मन्मनाक्षररहितत्वात्, च=पुनः ' समि-क्खिय ' समीक्षित=पूर्व बुद्ध्या पर्यालोचितत्वात्, एतादृश वचन 'सजएण'

(न चवले) घोडे के गमन की तरह चपलभाव से युक्त (न कडुय) नीम की तरह अर्थतः कटुक, इसी तरह (फरुस) पाषाण की तरह कठोर (न साहस) उन्मत्त के वचन की तरह अविचारित, और (न य परस्स पीलाकर) पर को पीडाजनक (सावज्जा) सावद्य–पापयुक्त ऐसे वचन नहीं बोलना चाहिये। किन्तु जो वचन (सच्च च) सद्भूत अर्थ को विषय करने वाले होने से सत्य हो, (हिय च) परिणाम में सुखजनक होने से हितकारक हों, (मिय च) परिमित अक्षरों से युक्त होने से जो मित हों, (गाहग च) श्रोता को अर्थ की प्रतीति एव प्रीति के कराने वाले होने से ग्राहक हों, (सुद्ध) वेगित्वादि दोषों से रहित होने से शुद्ध हों, तथा (सगय) सगतयुक्ति युक्त हों, (अकाहल) अकाहल हो मन्मन अक्षर से रहित हों, (समिक्खिय) समीक्षित हों–बुद्धि से पहिले जिनका विचार अच्छी तरह कर लिया

જેવુ ચપળભાવ યુક્ત વચન, "न कडुय" નીમના જેવુ એટલે કે કટુક, એ જ રીતે "फरुस" પથ્થર જેવુ કઠોર "न साहस," ઉન્મત્તના વચન જેવુ અવિચારી, અને "न य परस्स पीलाकर" બીજાને પીડાજનક "सावज्जा" સાવદ્ય-પાપયુક્ત વચન બોલવા જોઈએ નહીં પણ જે વચન "सच्च च" યથાર્થ અર્થને વિષય કરનાર હોવાથી સત્ય હોય, "हिय च" પરિણામે સુખજનક હોવાથી હિતકારક હોય "मिय च" પરિમિત અક્ષરોવાળુ હોવાથી જે મિત હોય, "गाहग च" શ્રોતાને અર્થની પ્રતીતિ અને પ્રીતિ કરાવનાર હોવાથી ગ્રાહ્ય હોય, "सुद्ध" વેગિત્વ આદિ દોષરહિત હોવાથી શુદ્ધ હોય, તથા "सगय" સગત-યુક્તિયુક્ત હોય, "अकाहल" અકાહલ હોય-મન્મન અક્ષરો વિનાનુ હોય, "समिक्खिय" સમીક્ષિત હોય-બુદ્ધિથી જેનો પહેલા

ट्ठयाए ' अलीकवचनविरमणपरिरक्षणार्थम्-मृषावादविरमणव्रतपरिरक्षणार्थं सन्ति। तासु ' पढमं ' प्रथमा समितियोगलक्षणा भावनामाह-' सोऊण ' श्रुत्वा=सुगुरु समीपे समाकर्ण्य, तथा-' परमट्ठ ' परमार्थ-परमतत्त्व प्रथमभावनारहस्य ' सवरट्ठ ' सवरार्थ-सवरस्य-मृषावादविरतिलक्षणस्य अर्थ=प्रयोजन-मोक्षलक्षणम्, अथवा सवरः=कर्मनिरोधएव अर्थः प्रयोजन यस्य स त तयोक्तम्, यद्वा-सवरस्य= प्रस्तुतसवराध्ययनस्य अर्थ=वाच्य ' सुट्ठु ' सुष्ठु-सम्यक् ' जाणिऊण ' ज्ञात्वा न=नैव 'वेगिय' वेगित=नदीप्रवाह वद्वेगयुक्त वचन वक्तव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः, तथा-न नैव ' तुरिय ' त्वरित-वात्यावत् त्वरायुक्त वचनचाश्चल्यात्, न=नैव

कहते है-' तस्स इमा ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तस्स बीयस्स वयस्स इमा पच भावणाओ) उस प्रसिद्ध द्वितीय महाव्रत की ये वक्ष्यमाण पाच भावनाएँ (अलियवयणवेरमण परिरक्खणट्ठयाए) उस अलीकवचन विरमणरूप सत्यव्रत की रक्षा के लिये हैं। उनमें (पढम) प्रथम भावना इस प्रकार है-(परमट्ठ सवरट्ठ सोऊण) सुगुरु के समीप प्रथम भावना के रहस्य को कि जो रहस्य मृषावाद विरतिरूप प्रयोजन वाला है, अथवा कर्मनिरोधरूप सवर ही जिसका प्रयोजन है, अथवा इस प्रस्तुत सवराध्ययन के वाच्यार्थ को सुनकरके (सुट्ठु जाणिऊण) अच्छी तरह जान करके (न वेगिय) नदी के प्रवाह की तरह वेगयुक्त वचन साधु को नहीं बोलना चाहिये इस प्रकार "वक्तव्य" शब्द का सबध सब के साथ लगा लेना चाहिये। (न तुरिय) वात्या-वघूरे-की तरह त्वरायुक्त वचन चचलता से युक्त

" तस्स इमा " ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—" तस्स बीयस्स वयस्स इमा पच भावणाओ " તે પ્રસિદ્ધ બીજા મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઓ " अलियवयणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए " તે અલીક-અસત્ય-વિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમા " पढम " પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે-" परमट्ठ सवरट्ठ सोऊण " સદ્‌ગુરુ પાસે પહેલી ભાવનાનુ રહસ્ય કે જે મૃષાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળુ છે, અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સવર જ જેનુ પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સાભળીને ' सुट्ठुजाणिऊण " સારી રીતે જાણીને " न वेगिय " નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા જોઈએ નહીં આ રીતે " वक्तव्य " શબ્દનો સબધ બધા સાથે જોડી લેવો " न तुरिय " વાત્યા-વધુરા-ની જેવુ ત્વરાયુક્ત " न चवल " ઘોડાની ગતિ

अथ क्रोधनिग्रहरूपा द्वितीया भावनामाह-' वीय कोहो ' इत्यादि

मूलम्—वीय कोहो ण सेवियव्वो, कुद्धो चंडिक्किओ माणुसो अलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलिय पिसुणं फरुसं भणेज्ज, कलहं करेज्ज, वेरं करेज्ज, विगहं करेज्ज, कलह वेर विगहं करेज्ज, सच्चं हणेज्ज, सीलं हणेज्ज, विणयं हणेज्ज सच्च सील विणय हणेज्ज, वेसो भवेज्ज, वत्थुं भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज, एवं अन्नं च एवमाइयं

पूर्वक बोलना इसका नाम अणुविचिन्त्य भाषण है। यह भाषा समिति-रूप है। सत्य मे और भाषा समिति में कुछ भेद कहा गया है वह यह है कि हरएक के साथ संभाषण व्यवहार में विवेक रखना तो भाषा समिति है। और अपने समशील साधु पुरुषों के साथ संभाषण व्यवहार में हित मित और यथार्थवचन का उपयोग करना सत्यव्रतरूप यतिधर्म है। इस भावना से इस सत्यव्रत की स्थिरता होती है। बोलते समय साधु को वेग से, त्वरा से और चपलता से नही बोलना चाहिये। और न विना विचारे ही बोलना चाहिये। बोलने का जब समय आवे तब ही सत्य, हित, मित वचन बोलना चाहिये। अविचारित और अस्पष्ट वचन नहीं बोलना चाहिये। इस तरह की वचन प्रवृत्ति में सावधान बना हुआ साधु सत्यव्रत को सुशोभित करता हुआ प्रत्येक अपनी कर चरण आदि की प्रवृत्ति को यतनापूर्वक करता रहता है॥सू०४॥

विचिन्त्य भाषणु કહે છે તે ભાષાસમિતિરૂપ છે સત્યમા અને ભાષાસમિતિમા કેટલાક ભેદ બતાવવામા આવ્યા છે તે એવા પ્રકારના છે કે દરેકની સાથે વાતચીતમા વિવેક રાખવો એ તો ભાષાસમિતિ છે અને પોતાના સમશીલ સાધુજનો સાથે વાતચીતમા હિત, મિત અને યથાર્થ વચનનો ઉપયોગ કરવો તે સત્યવ્રતરૂપ યતિધર્મ છે આ ભાવનાથી તે સત્યવ્રત દૃઢ થાય છે બોલતી વખતે સાધુએ વેગથી ત્વરાથી અને ચપલતાથી બોલવુ જોઈએ નહી વિના વિચાર્યે પણ બોલવુ જોઈએ નહીં જ્યારે બોલવાનો અવસર આવે ત્યારે જ સત્ય, હિત, મિત વચન બોલવા જોઈએ અવિચારિત અને અસ્પષ્ટ વચન બોલવા જોઈએ નહીં આ પ્રકારની વચન પ્રવૃત્તિમા સાવધાન બનેલ સાધુ સત્ય વ્રતને સુશોભિત કરતા, પોતાની કરણુ ચરણુ આદિની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિને યતનાપૂર્વક કરતા રહે છે । સૂ૦ ૪ ॥

सयतेन=साधुना 'कालम्मि य' काले च=अवसरे 'वत्तव्व' वक्तव्यम् । एवम्=अनेन प्रकारेण ' अणुवीइ समिइजोगेण' अनुविचित्यसमितियोगेन अनुविचिन्त्य=पर्यालोच्य या समितियोगेन=भाषासमितिः, तस्या योगेन 'भाविओ' भावितःअन्तरप्पा ' अन्तरात्मा=जीवः–' सजयकरचरणनयणवयणो ' सयतकरचरणनयनवदन सयत = सम्यग्यतनायुक्त करचरणनयनवदन यस्य स तथोक्तःसन् समाहितेन्द्रियः सन्नित्यर्थः, ' सूरो ' शूरः=पराक्रमशाली, ' सच्चज्जवसपन्नो ' सत्यार्जवसपन्न'-सत्यम्=भमृषा आर्जवम्=ऋजुता, ताभ्या सपन्नो-युक्तो भवति। इत्येपाप्रथमा भावना ॥ सू–४ ॥

गया हो ऐसे हों, ऐसे ही वचन साधु को अवसर आने पर–जब तब नही किन्तु बोलने का जब समय उपस्थित हो तब बोलना चाहिये। (एव) इस प्रकार (अणुवीइसमिइ जोगेण)अनुविचिन्त्य भाषासमिति के योग से–विचार कर बोलने रूप भाषासमिति के सबध से (भाविओ अतरप्पा) भावित हुआ जीव (सजयकरचरणनयणवयणो) अच्छी तरह यतना से युक्त कर–हाथ, चरण–पैर, नयन–नेत्र एव वदन–मुख वाला बनकर, अर्थात् समाहित इन्द्रियों वाला होकर (सूरो) पराक्रमशाली बन जाता है, अर्थात् सत्यमहाव्रत की आराधना मे आये हुए उपसर्गो और परीपहों को जीतने में शक्तिशाली हो जाता है। तथा (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और ऋजुता से सपन्न बन जाता है।

भावार्थ—अहिंसा व्रत की तरह सत्यव्रत की भी पाँच भावनाएँ हैं। उनमे पहिली भावना अनुविचिन्त्य भाषा समिति है। विचार–

સારી રીતે વિચાર કરી લીધો હોય, એવા વચનો જ સાધુએ અવસરે-ગમે ત્યારે નહીં, પણ બોલવાનો સમય ઉપસ્થિત થાય ત્યારે બોલવા જોઈએ " एव " આ પ્રકારે " अणुवीइ समिइ जोगेण " અનુવિચિન્ત્ય ભાષા સમિતિના યોગથી –વિચાર કરીને બોલવારૂપ ભાષા સમિતિના સબધથી " भाविओ अतरप्पा " ભાવિત બનેલ જીવ " सजयकरचरणनयणवयणो " સારી રીતે યતનાયુક્ત હાથ, પગ, નેત્ર અને મુખવાળા થઈને, અથવા સમાહિત ઈન્દ્રિયોવાળા થઈ ને " सूरो " પરાક્રમશાળી બની જાય છે એટલે કે સત્ય મહાવ્રતની આરાધનામા નડેલ ઉપસર્ગો અને પરીષહોને જીતવાને સમર્થ બની જાય છે, તથા " सच्चज्जवसपन्नो भवइ " સત્ય અને ઋજુતાથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—અહિંસાવ્રતની જેમ સત્યવ્રતની પણ પાચ ભાવનાએ છે તેમા પહેલી ભાવના અનુવિચિન્ત્ય ભાષાસમિતિ છે વિચારપૂર્વક ~ તેને અનુ

शास्त्रविरुद्धा कथा=वार्त्ता कुर्यात्, 'कल्ह वेर विगह' कल्ह वैर विकथा च कुर्यात्, तथा-'सच्च' सत्य=सद्भूतार्थ 'हणेज्ज' हन्यात्=नाशयेत्, 'सील' शील=सदाचार हन्यात्, 'विणय' विनय-विनीतभाव हन्यात्। तथा-क्रोध-युक्तो मानवः 'वेसो' द्वेष्यः-सर्वेषामप्रियो 'भवेज्ज' भवेत्, तथा- 'वत्थु' वास्तु=गृह, दोषगृह=दोषपात्र 'भवेज्ज' भवेत्, तथा-'गम्मो' गम्यः=अना-दरस्थान भवेत्, तथा-'वेसो वत्थु गम्मो द्वेष्यो वास्तुगम्य एतत्त्रितयोऽपि भवेत्। 'एय' एतत्=पूर्वोक्तम्, 'अन्न' अन्यच्च 'एवमाइय' एवमादिकम्=

भी ठान देता है, (वेर करेज्जा) दूसरो से शत्रुता भी कर लेता है, तथा (विगह करेज्जा) जो कथा शास्त्र से विरुद्ध होती है उसे भी कह देता है। तथा (कलह वेर विगह करेज्ज) कलह वैर और विकथा, इन तीनों को भी करता है। तथा (सच्च हणेज्ज) सत्य-सद्भूत अर्थ का अपलाप कर देता है। तथा (सील हणेज्ज) शील-सदाचार को नष्टकर देता है, (विणय हणेज्ज) विनीत भाव को धिक्कार देता है। तथा (सच्च सील विणय हणेज्ज) सत्य शील और विनय, इन तीनों को नष्ट कर देता है। तथा (वेसो भवेज्ज) जो मानव क्रोध से युक्त होता है वह दूसरो को अप्रिय बन जाता है, (वत्थु भणेज्ज) द्वेष पात्र बन जाता है और (गम्मो भवेज्ज) सब के अनादरणीय होता है। (वेसो वत्थु गम्मो भवेज्ज) वह दूसरो को अप्रिय द्वेषपात्र और अनादर इन तीनों का स्थान बन जाता है। इन पूर्वोक्त वचनो को तथा (एव अन्न च एवमाइय) इसी प्रकार के और भी दूसरी तरह के असत्य-

करेज्ज" પરમ્પરમા વાગ્યુદ્ધ પણ વહોરે છે 'वेर करेज्जा" બીજા લોકો સાથે શત્રુતા પણ કરે છે, તથા "विगह करेज्जा" તથા જે કથા શાસ્ત્રની વિરુદ્ધ હોય છે તે પણ કરે છે તથા "कलह, वेर विगह करेज्ज" કલહ, વૈર અને વિકથા એ ત્રણે કરે છે તથા "सच्च हणेज्ज" સત્ય-યથાર્થ અર્થનો અપલાપ કરી નાખે છે, "सील हणेज्ज" શીલ-સદાચારનો નાશ કરી નાખે છે, "विणय हणेज्ज" વિનીત ભાવને ધિક્કારે છે, તથા "सच्च सील विणय हणेज्ज" સત્ય, શીલ અને વિનય એ ત્રણેને નષ્ટ કરી નાખે છે તથા "वेसो भवेज्ज" જે માનવ ક્રોધયુક્ત બને છે તે બીજાને અપ્રિય થાય છે, "वत्थु भवेज्ज" દ્વેષપાત્ર બને છે અને "गम्मो भवेज्ज" બધાને માટે અનાદરપાત્ર બને છે "वेसो वत्थ गम्मो भवेज्ज" તે બીજાને અપ્રિય દ્વેષપાત્ર અને અના દરપાત્ર એ ત્રણેનુ સ્થાન બને છે એ પૂર્વોક્ત વચનો તથા "एव अन्न च

भणेज्ज, कोहग्गिसपलित्तो, तम्हा कोहो न सेवियव्वो। एव खंतीइ भाविओ भवइ अंतरप्पा सजयकरचरणनयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ॥ सू० ५ ॥

टीका—'बीय' द्वितीयभावनामाह—'कोहो' क्रोध'=क्षमादिअशान्ति=अशान्तिपरिणतिरूपो 'न सेवियव्वो' न सेवितव्य । कथ न सेवितव्यः? इत्याह—'कुद्धो' क्रुद्धः=क्रोधयुक्तः, 'चडिक्किओ' चाण्डिक्यित'=चाण्डिक्य=रौद्ररूपत्वं सजातमस्य चाण्डिक्यित.=रौद्ररूपयुक्त 'माणुसो' मानुष 'अलिय' अलीकम्=असत्य 'भणेज्ज' भणेत्=भाषेत, तथा—'पिसुण' पिशुन=परदोषसूचक वचन भणेत्, 'फरुस' परुष=परमर्मोद्घाटक भणेत्, तथा—'अलिय पिसुण फरुस' अलीक पिशुन परुषमेतत्त्रितयमपि भणेत्। तथा—'कलह'=वाग्युद्ध 'करेज्ज' कुर्यात्, 'वेर' वैर=शत्रुता 'करेज्ज' कुर्यात्, 'विगह' विकथा=विगतार्था

अब सूत्रकार क्रोधनिग्रहरूप द्वितीयभावना को प्रकट करते हैं—'बीय कोहो' इत्यादि,

टीकार्थ—क्रोध निग्रहरूप जो द्वितीय भावना है उसमें (कोहो न सेवियव्वो) क्रोध का सेवन नहीं किया जाता है। क्यों कि जो (कुद्धो मणुसो) क्रोधयुक्त पुरुष होता है वह (चडक्किओ) रौद्ररूप से युक्त बन जाता है। ऐसा मनुष्य (अलिय भणेज्ज) झूठ बोल देता है (पिसुण भणेज्ज) पर के दोषों के सूचक वचन बोल देता है (फरुस भणेज्ज) दूसरों के मर्मको छेदने वाले वचनों को कह देता है, तथा (अलिय पिसुण फरुस भणेज्ज) अलीक, पिशुन और परुष, इन तीनों तरह के वचनों का भी प्रयोग कर देता है। (कलह करेज्ज) परस्पर मे वाग्युद्ध

હવે સૂત્રકાર ક્રોધનિગ્રહરૂપ બીજી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે "बीय कोहो" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ક્રોધનિગ્રહરૂપ જે બીજી ભાવના છે તેમા "कोहो न सेवियव्वो" ક્રોધનુ સેવન ન કરવુ જોઇએ કારણ કે જે "कुद्धो मणुसो" ક્રોધી પુરુષો હોય છે તેઓ "चडक्किओ" રૌદ્રરૂપવાળા બની જાય છે એવો મનુષ્ય "अलिय भणेज्ज" જૂઠુ બોલી નાખે છે "पिसुण भणेज्ज" બીજાના દોષ દર્શક વચનો બોલી નાખે છે "फरुस भणेज्ज" બીજા લોકોના મર્મને છેદ નારા વચનો બોલી જાય છે, તથા "अलिय पिसुण फरुस भणेज्ज" અસત્ય પિશુન અને પરુષ, એ ત્રણે પ્રકારના વચનોનો પ્રયોગ કરી નાખે છે "कलह

अथ तृतीया लोभनिग्रहरूपा भावनामाह—'तइय लोहो' इत्यादि।

मूलम्—तइयं लोहो न सेवियव्वो, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं। खेत्तस्स वेत्थुस्स वा कएण लुद्धो लोलो भणेज्ज

भान नहीं रहता है कि इन हमारे वचनों से दूसरे प्राणियों के प्राणों पर क्या बीतेगी। झूठ बोलने में उसे थोडा सा भी सङ्कोच नहीं होता। दूसरे की चुगली करने से वह नहीं चुकता-पर के ऊपर असत्यदोषारोप करने से वह पीछे नहीं हठता। हर किसी के साथ कलह करता रहता है। शत्रुता करने में वह बडा निपुण होता है। शास्त्र विरुद्ध बोलने की इसे थोडी सी भी चिन्ता नहीं होती। जो पदार्थ जिस रूप में होता है उसे उस रूप में कहने मे इसे शर्म आती है। विनीतभाव की इसकी दृष्टि में कोई कीमत नहीं होती है। जब यह क्रोधरूपी अग्नि से सतप्त हो उठता है-तब इसकी परीस्थिति पूर्वोक्त प्रकार से तो होती है परन्तु इससे अधिक भी कभी २ बन जाती है। ऐसी स्थिति में इसका कोई हितैषी नहीं रहता है। सब ही इसका अनादर करने लगते हैं। इसलिये इस क्रोध का परिहार करना चाहिये। इस प्रकार विचार कर जो मुनिजन क्षान्ति परिणति से इस क्रोध को जीतते हैं अर्थात् क्रोध नहीं करते हैं वे ही इस द्वितीयभावना से अपने अन्तःकरण को वासित कर सत्यव्रत को स्थिर बना लेते हैं॥ सू० ५॥

બોલવા લાગે છે તેને તે વાતનુ પણ ભાન રહેતુ નથી કે મારા વચનોથી બીજા પ્રાણીઓના જીવને કેટલુ દુખ થાય છે અસત્ય બોલવામા તેને જરા પણ સકોચ થતો નથી બીજાની નિંદા કરતા પણ તે અટકતો નથી-અન્યની ઉપર અસત્ય દોષારોપ કરતા તે પાછો હઠતો નથી હરકોઈ સાથે તે કલહ કરતો રહે છે દુશ્મનાવટ કરવામા તે નિપુણ હોય છે શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ બોલવામા તેને જરા પણ દુ:ખ થતુ નથી જે પદાર્થ જે રૂપે હોય છે તે રૂપે તેને કહેવામા તેને શરમ લાગે છે તેની દૃષ્ટિએ વિનીત ભાવની કોઇ કીમત હોતી નથી જ્યારે ક્રોધરૂપી અગ્નિથી સતપ્ત થઇ જાય છે ત્યારે તેની હાલત પૂર્વોક્ત પ્રકારની તો થાય જ છે પણ તેનાથી અધિક પણ કોઇ કોઇ વાર બને છે એવી સ્થિતિમા તેનો કોઇ હિતૈષી રહેતો નથી સૌ તેનો અનાદર કરવા માડે છે તેથી તે ક્રોધનો ત્યાગ કરવો જોઇએ આ રીતે વિચારીને જે મુનિજન ક્ષાન્તિ પરિણતિથી એ ક્રોધને જીતે છે, એટલે કે ક્રોધ કરતા નથી, તેઓ જ આ બીજી ભાવનાથી પોતાના અ ત કરણને ભાવિત કરીને સત્યવ્રતને સ્થિર કરી લે છે ॥સૂ૦૫॥

एव जातीय वचन ' कोहग्गिसपलित्तो ' क्रोधाग्निसप्रदीप्तो नरो ' भणेज्ज ' भणेत्=कथयेत्, ' तम्हा ' तस्मात् कारणात् ' कोहो न सेवियव्वो ' क्रोधो न सेवितव्यः। एवम्=अनेन प्रकारेण' खतीइ ' क्षान्त्या=उपशमेन ' भाविओ ' भावितः ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा=जीव सयतकरचरणनयनवदन. शूरः सत्या र्जवसंपन्नो भवति ॥ ५ ॥ इति द्वितीया भावना ॥ २ ॥

वचनों को (कोहग्गिसपलित्तो भवेज्ज) क्रोधाग्नि से सतप्त हुआ मनुष्य कह दिया करता है। (तम्हा कोहो न सेवियव्वो) इसलिये क्रोध का कभी भी सयमीजन को सेवन नही करना चाहिये। (एव-खतीइ भाविओ अतरप्पा) इस प्रकार क्षान्तिपरिणति से वासित हुआ जीव (सजयकरचरणनयणवयणो) सयत कर, चरण, नयन वदन वाला हो जाता हें और (सूरो) अपने सत्यव्रत की आराधना में परा-क्रमशाली होता हुआ (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और आर्जव इन दोनों से सपन्न वन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की दूसरी भावना का वर्णन किया है। वह भावना क्रोध निग्रह रूप है। क्षान्तिपरिणति क्रोध की होती है। मनुष्य पर जव इसका आवेश आ जाता है तो उसकी आकृति वदलजाती है उसका रूप रौद्र हो जाता है। इस स्थिति में उस का वचन व्यवहार सत्यधर्म से प्रतिकूल हो जाता है ! वह इसके आवेश मे यद्वा तद्वा वोलने लग जाता है। उसको इस बात का

एवमाइय " એ જ પ્રકારના બીજા પણ અસત્ય વચનો " कोहग्गिसपलित्तो भवेज्ज " ક્રોધાગ્નિયુક્ત મનુષ્ય બોલી જાય છે " तम्हा कोहो न सेवियव्वो " તે કારણે સયમી લોકોએ કદી પણ ક્રોધ કરવો જોઈએ નહીં " एव खतीइ भाविओ अतरप्पा " આ રીતે ક્ષાન્તિપરિણતિથી ભાવિત થયેલ જીવ " सजय करचरणनयणवयणो " સયત, હાથ, પગ, નયન, વદનવાળો થઇ જાય છે અને "सूरो" પોતાના સત્યવ્રતની આરાધનામા પ્રરાક્રમ " सचज्जवसपन्नो भवइ " સત્ય અને આર્જવ, એ બન્નેથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા સત્યવ્રતની બીજી ભાવનાનુ વર્ણન કર્યું છે તે ભાવના ક્રોધનિગ્રહરૂપ છે ક્ષાન્તિપરિણતિથી ઉલટી પરિણતિ ક્રોધની હોય છે, મનુષ્ય પર જ્યારે તેનો આવેશ આવે છે ત્યારે તેની આકૃતિ બદલાઇ જાય છે, તે રૌદ્રરૂપ ધારણ કરે છે, આ પરિસ્થિતિમા તેના વચનો તથા વ્યવહાર સત્ય ધર્મથી પ્રતિકૂળ થઇ જાય છે તે તેના આવેશમા ગમે તેવું

'वत्थुस्स' वास्तुनः=वासभूमे र्वा 'कएण' कृतेन-कृते इत्यर्थः, अत्र हेत्वर्थे तृतीया, एव सर्वत्र ज्ञेयम् । लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ १॥ तथा-'कित्तीए' कीर्त्तेः 'लाभस्स' लाभस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ २ ॥ 'इड्ढीए' ऋद्धेः सपत्तेः 'सोक्खस्स' सौख्यस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ ३ ॥ भक्तस्य पानस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ ४ ॥ 'पीढस्स' पीठस्य 'फलगस्स' फलकस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥५॥ तथा—'सेज्जाए' शय्यायाः 'सथारगस्स' सस्तारकस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् । ६ ।' 'वत्थस्स' वस्त्रस्य=चोलपट्टादे' 'पत्तस्य' पात्रस्य वा कृते लुब्धो

कूट वचन बोल सकता है (खेत्तस्स वत्थुस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) कूटवचन-झूठवचन बोलने के निमित्त ये उसे होते हैं-वह लोभी मनुष्य चञ्चलचित होता हुआ खेत अथवा निवासभूमि-गृह के निमित्त झूठवचन कह सकता है (कित्तीए लाभस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) अपनी कीर्ति अथवा लाभ के निमित्त असत्य-भाषण कर सकता है (इड्ढीए सोक्खस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) ऋद्धि-सपत्ति अथवा सौख्यके निमित्त असत्यवचन बोल सकता है। (भत्तस्स पाणस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) आहार अथवा पानी के निमित्त असत्यवचन कह सकता है (पीढस्स फलगस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) पाट अथवा बाजोठ के निमित्त असत्यवचन कह सकता है, (सज्जाए सथारगस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) शय्या अथवा सस्तारक के लिये वह लोभ चचलचित्त होकर असत्य बोल सकता है (वत्थस्स पत्तस्स वा कएण

वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" तेने कूट वचन-असत्य वचन બોલવાના નિમિત્ત આવા હોય છે-તે લોભી મનુષ્ય ચચલ ચિત્ત થતા ખેતર અથવા નિવાસભૂમિ-ઘરને નિમિત્તે અસત્ય વચન કહી શકે છે "कित्तीए लाभस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" તે પોતાની કીર્તિ અથવા લાભને માટે અસત્ય બોલી શકે છે "इड्ढिए सोक्खस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" ઋદ્ધિ સપત્તિ અથવા સુખને માટે તે અસત્ય વચન બોલી શકે છે "भत्तस्स पाणस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" આહાર અથવા પાણીને માટે તે અસત્ય વચન કહી શકે છે 'पीढस्स फलगस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" પાટ અથવા ફલકને નિમિત્તે તે અસત્ય વચન બોલી શકે છે "सज्जाए सथारगस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" શય્યા અથવા સસ્તાર માટે તે લોભી ચચલ ચિત્ત થતા અસત્ય બોલી શકે છે "वत्थस्स

अलिय १, कित्तीए लाभस्स वा कएण लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय २, इड्डीए सोक्खस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ३, भत्तस्स पाणस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ४, पीढस्स फलगस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय ५, सेज्जाए सथारगस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ६, वत्थस्स पत्तस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ७, कबलस्स पायपुंछणस्स वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय ८, सीसस्स सीसणीए वा कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ९, अन्नेसु एवमाइसु बहुसु कारणसएसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं १० तम्हा लोहो न सेवियव्वो, एव मुत्तीए भाविओ भवइ अतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो॥६॥

टीका—'तइय' तृतीया भावनामाह—'लोहो न सेवियव्वो' लोभो न सेवितव्य । लोभसेवनेन किं भवेत् ? इत्याह—'लुद्धो' लुब्धो=लोभयुक्तो नरो 'लोलो' लोल'=चञ्चलः=सन् 'अलिय' अलीकं=कूटवचन 'भणेज्ज' भणेत्= कथयेत् । केन निमित्तेन लुब्धोऽलीकं भणेत् ? इत्याह—'खेत्तस्स' क्षेत्रस्य

अब सूत्रकार तृतीय भावना जो लोभनिग्रह रूप है उसे प्रकट करते हैं—'तइय लोहो' इत्यादि ० ।

टीकार्थ-(तइय) लोभ निग्रहरूप तृतीय भावना इस प्रकार से है- (लोहो न सेवियव्वो) लोभ सेवन करने योग्य नहीं है। क्यों कि (लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) लोभ के सेवन करने से प्राणी लुब्ध कहलाता है, और वह लोभ युक्त बना हुआ मनुष्य चञ्चल चित्त होकर

હવે સૂત્રકાર લોભનિગ્રહ નામની ત્રીજી ભાવનાનુ વર્ણન કરે છે "तइय लोहो" ઇ

ટીકાર્થ—"तइय" લોભનિગ્રહરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે-"लोहो न सेवियव्वो" લોભ સેવન કરવાને યોગ્ય નથી કારણ કે "लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" લોભનું સેવન કરવાથી પ્રાણી લુબ્ધ કહેવાય છે, અને તે લોભયુક્ત મનુષ્ય ચચળ ચિત્તવાળો થઈને કૂટ વચન બોલી શકે છે, "खेत्तस्स वत्थुस्स

अथ चतुर्थी धैर्यभावनामाह–' चउत्थ ' इत्यादि––

मूलम्–चउत्थ न भीइयव्व, भीय खु भया अइति लहुअ, भीओ अवितिज्जओ मणूसो, भीओ भूएहि घिप्पइ, भीओ अन्न पि हु भेसेज्जा, भीओ तवसजम पि हु मुएज्जा, भीओ य

कर लेता है और (सूरो) अपने सत्यव्रत के पालन में पराक्रमशाली बन कर (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और आर्जव धर्म से सपन्न हो जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की तृतीय भावना को कहा है। इस तृतीय भावना का नाम लोभनिग्रह है। लोभ के निग्रह करने के लिये विचारधारा इसमे प्रकट की है। 'लोभ ही पाप का बाप है' ऐसा ख्याल कर लोभ के फदे में नहीं फँसना चाहिये। जो लोभी होता है वह लुब्धक कहलाता है। लोभी का चित्त हरएक वस्तु की प्राप्ति के निमित्त चचल हो उठता है। लोभी व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धि के निमित्त झूठ बोल सकता है। खेत, मकान, ऋद्धि, सुख, भक्त, पान आदि को निमित्त लेकर असत्य भाषण करता है। अत लोभ का निग्रह करना ही उचित है इस प्रकार भावना भा कर जो इस लोभ को परित्याग से अपनी आत्मा को वासित बनाता है वह अपने सत्यमहाव्रत को स्थिर कर लेता है। उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति सयमित होती है॥ सू० ६॥

પરાક્રમશાળી બનીને ' सच्चज्जवसपन्नो भवइ " સત્ય અને આર્જવ ધર્મથી યુક્ત થઇ જાય છે

ભાવાર્થ––સૂત્રકારે આ સૂત્રમા સત્યવ્રતની ત્રીજી ભાવનાનુ વર્ણન કર્યું છે આ ત્રીજી ભાવનાનુ નામ લોભનિગ્રહ છે લોભને નિગ્રહ કરવાને માટે વિચારધારા આમા પ્રગટ કરી છે "લોભ જ પાપને બાપ છે" આવો વિચાર કરીને લોભની જાળમા ફસાવુ જોઈએ નહીં, જે લોભી હોય છે તે લુબ્ધક કહેવાય છે લોભીનુ ચિત્ત દરેક વસ્તુની પ્રાપ્તિ માટે ચચલ થઈ જાય છે લોભી વ્યક્તિ પોતાના સ્વાર્થ સાધવાને માટે અસત્ય બોલી શકે છે ખેતર, મકાન, સપત્તિ સુખ આહાર પાણી આદિને નિમિત્તે પણ તે અસત્યવચનો બોલે છે તેથી લોભનો નિગ્રહ કરવો તે જ યોગ્ય છે એવા પ્રકારની ભાવના સેવીને જે આ લોભના પરિત્યાગથી પોતાના આત્માને વાસિત બનાવે છે, તેઓ પોતાના સત્ય મહાવ્રતને સ્થિર કરી લે છે તેમની દરેક પ્રવૃત્તિ સયમિત હોય છે॥ સૂ૦ ૬॥

लोलोऽलीक भणेत् ॥७॥ 'कवलस्स' कम्बलस्य 'पायपुञ्छणस्स' पादप्रोञ्छनस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥८॥ तथा 'सीसस्स' शिष्यस्य 'सीसणीए' शिष्याया वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥९॥ 'अन्नेसु' अन्येषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एव प्रकारेषु बहुषु कारणशतेषु प्राप्तेषु लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ १० ॥ 'तम्हा' तस्मात् कारणात् लोभो न सेवितव्यः। एवम्-अमुना प्रकारेण 'मुत्तीए' मुक्त्या=निर्लोभतारूपया भावित 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवः सयतकरचरणनयनवदनः शूरः सत्यार्जवसपन्नो भवति ॥ सू०६ ॥

॥ इति तृतीया भावना ॥

लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) इसी तरह वस्त्र अथवा पात्र के लिये चचल चित्त बना हुआ वह लोभी झूठ वचन बोल सकता है (कवलस्स पायपुछणस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) कम्बल अथवा पादप्रोंछन के निमित्त को लेकर वह चचल चित्त बना हुआ लोभी मृषावादि कह सकता है (सीसस्स सीसणीए वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) शिष्य अथवा शिष्या के निमित्त लुब्ध वह चचलचित्त होकर मृषाभाषण करता है (अन्नेसु एवमाइएसु बहूसु कारणसएसु लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज) इसी तरह और भी इनसे सैकडों कारणों को निमित्त करके वह लोभी चचल चित्त होकर झूठ बोल सकता है (तम्हा लोहो न सेवियव्वो) इसलिये लोभ सेवन करने योग्य नहीं है। (एव मुत्तीए भाविओ अतरप्पा) इस प्रकार निर्लोभतारूप तृतीय भावना से वासित हुआ अतरात्मा-जीव (सजयकरचरणनयनवयणो) अपने कर, चरण, नयन और मुखकी प्रवृत्ति को यत्नाचार से सयमित

पत्तस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज " એજ પ્રમાણે વસ્ત્ર કે પાત્રને માટે ચચલ ચિત્ત થયેલ તે લોભી અસત્ય વચન બોલી શકે છે "कवलस्स पायपुछणस्स वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज " કમ્બલ કે પગલૂછણીયા માટે તે ચચલ ચિત્ત બનેલ લોભી મૃષાવાદ કહી શકે છે "सीसस्स सीसणीए वा कएण लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज" શિષ્ય અથવા શિષ્યાને નિમિત્તે લુબ્ધ તે ચચલ ચિત્ત મૃષાભાષણ કરી શકે તે "अन्नेसु एवमाइएसु बहुसु कारण सएसु लुद्धो लोलो अलिय भणेज्ज " આ રીતે આ સિવાયના સેકડો કારણોને નિમિત્તે તે લોભી ચચલચિત્ત થઈને અસત્ય બોલી શકે છે "तम्हा लोहो न सेवियव्वो " તેથી લોભ સેવન કરવાયોગ્ય નથી "एव मुत्तीए भाविओ अत रप्पा " આ રીતે નિર્લોભતારૂપ ત્રીજી ભાવનાથી ભાવિત બનેલ અતરાત્મા-જીવ "सजयकरचरणनयणवयणो " પોતાના હાથ, પગ, નયન અને મુખની પ્રવૃત્તિને યતનાપૂર્વક સયમિત કરી લે છે અને "सूरो " પોતાના સત્યવ્રતના પાલનમા

तपः सयम चापि ' मुएज्जा ' मुञ्चति=परित्यजति। तथा-भीतः ' भर ' भारम् =कार्यभार ' न नित्थरेज्जा ' न निस्वारयति=न निर्वाहयति । तथा-'सप्पुरिस-निसेविय ' सत्पुरूपनिपेवित च ' मग्ग ' मार्ग भीतो न ' समत्थो ' समर्थः= पर्याप्तः ' अणुचरिउ ' अनुचरितुम्, सत्पुरुपासेवित मार्ग भयत्रस्तो न गन्तु शक्नोतीति भाव । ' तम्हा ' तस्माद् हेतोः ' भयस्स वा ' भयस्य=भीते र्वा ' वाहिस्स ' व्याधेः=क्रमेण प्राणापहारिणः कुष्ठादे र्वा, ' रोगस्स ' रोगस्य= शीघ्रतया प्राणापहारिणो ज्वरादे र्वा ' जराए ' जरायाः वा मच्चुस्स ' मृत्यो र्वा ' अन्नस्स ' अन्यस्य=एभ्य इतरस्य वा ' एवमाइयस्स ' एवमादिकस्य-एव

वना देता है, तथा (भीओ तवसजम पिहुमुएज्जा) वह तप सयम का भी परित्याग कर देता हैं। (भीओ य भर न तित्थरेज्जा) भीत मनुष्य शक्ति से इतना अधिक विहीन वन जाता है, अर्थात् उसमें इतनी अधिक मानसिक दुर्वलता आ जाती है कि जिसकी वजह से वह किसी भी कार्यभार को वहन नहीं कर सकता, अर्थात् किसी भी काम को वह पूरा नही कर सकता। (सप्पुरिसनिसेविय च मग्ग भीओ न समत्थो अणुचरिउ) सत्पुरूप जिस मार्ग का सेवन करते आये हैं उस मार्ग पर चलने के लिये भी वह विचारा समर्थ नही हो सकता हैं। (तम्हा न भीइयव्व भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अन्नस्स वा एवमाइयस्स) इसलिये कीसी भी प्रकार के भय के, क्रम २ से प्राणों को अपहरण करनेवाली व्याधि के, अथवा कुष्टादिके, शीघ्रता से प्राणो का अपहरण करनेवाले ज्वर आदि रोग के, वृद्धावस्था के, तथा मृत्यु के अथवा इन्ही जैसी अन्य और कोई

तवसजम पिहुमुएज्जा" ते तप सयमने। पणु परित्याग करी दे छे "भीओ य भर न तित्थरेज्जा" भयभीत माणुसे। એटला બधा शक्तिहीन थई जाय छे, એटले के तेनामा એटली બधी मानसिक दुर्બળता आवी जाय छे के જेना कारणे ते कोई पणु कार्यने। બोજो उठावी शकतो नथी એटले के कोई पणु कामने ते पूरु करी शकतो नथी "सप्पुरिसनिसेविय च मग्ग भीओ न समत्थो अणुचरिउ" सत्पुरुषो જे मार्गनु सेवन करता आव्या छे, ते मार्गे चालवाने पणु ते समर्थ બनी शकतो नथी "तम्हा न भीइयव्व भयस्स वा वाहिस्सवा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अन्नस्स वा एवमाइयस्स" तेथी कोई पणु प्रकारना भयथी, क्रमे क्रमे प्राणोने हरी लेनार व्याधिना, अथवा कुष्ठादिना, शीघ्रताथी प्राणु हरी लेनार જ्वर आदि रोगना, वृद्धावस्थाना तथा मृत्युना अथवा तेमना જेवी कोई पणु प्रका

भरं न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेवियं च मग्गं भीओ न समत्थो अणुचरिउं। तम्हा न भीइयव्वं भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अन्नस्स वा एवमाइयस्स। एवं धिज्जेण भाविओ अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ॥ सू० ७ ॥

टीका—'चउत्थ' चतुर्थी भावनामाह—'न भीइयव्वं' न भेतव्यं=भयं न कर्तव्यम्। कथं भयं न कर्तव्यम्? इत्याह—'भीयं' भीतं भययुक्तं प्राणिनं खलु 'भया' भयानि 'लहुयं' लघुकं=शीघ्रम् 'अइंति' आयन्ति=प्राप्नुवन्ति, तथा 'भीओ' भीतः 'मणुसो' मनुष्यः 'अबितिज्जओ' अद्वितीयः=असहायो भवति, अयं भावः—भीतो मनुष्यो न कस्यापि सहायको भवति, न कोऽपि तस्य सहायको वा भवति। तथा—'भीओ' भीतो मनुष्यः 'भूएहिं' भूतैः= प्रेतैः 'घिप्पइ' गृह्यते, भूताविष्टो भवतीत्यर्थः। तथा—भीतः 'अन्नं पि' अन्यमपि 'भेसेज्जा' भीषयते। तथा—भीतः 'तवसंजमं पि' तपः संयममपि=

अब सूत्रकार चौथी भावना जो धैर्य भावना है उसे कहते हैं— 'चउत्थ' इत्यादि०।

टीकार्थ—(चउत्थं) यह चौथी धैर्य भावना इस प्रकार से है (न भीइयव्वं) भय नहीं करना चाहिये। क्यों कि (भीयं खु भया अइंति लहुअं) जो भययुक्त होता है उस प्राणी के पास निश्चय से भय शीघ्र आते हैं। (भीओ अबितिज्जओ मणूसो) तथा जो भय से डरता है ऐसा मनुष्य अद्वितीय होता है—वह न किसी की सहायता कर सकता है और न कोई दूसरा मनुष्य उसका ही सहायक होता है। (भीओ भुएहिं घिप्पइ) भीत मनुष्य को भूत पकड लेते है। (भीओ अन्नं पि हु भेसेज्जा) भय से भीत हुआ मनुष्य दूसरों को भी भययुक्त

હવે સૂત્રકાર ચોથી ધૈર્યભાવના નામની ભાવના વિષે કહે છે-" चउत्थ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'चउत्थ" તે ચોથી ધૈર્યભાવના આ પ્રમાણે છે-"न भीइयव्वं' ભય પામવો જોઇએ નહીં કારણ કે "भीयं खु भया अइंति लहुअं" જે બીકણ હોય છે તે વ્યક્તિ પાસે ચોક્કસ ભય શીઘ્ર આવે છે "भीओ अबितिज्जओ मणूसो" તથા જે ભયથી ડરે છે એવો મનુષ્ય અદ્વિતીય હોય છે-તે કોઇને મદદ કરી શકતો નથી અને કોઇ બીજો મનુષ્ય તેનો સહાયક થતો નથી "भीओ भूएहिं घिप्पइ" ભયભીત મનુષ્યને ભૂત પકડી લે છે "भीओ अन्नं पि हु भेसेज्जा" ભયભીત મનુષ્ય બીજા લોકોને પણ ભયભીત કરે છે, તથા "भीओ

हासं, अण्णाण्णजणियं च होज्ज हासं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज मम्म, अण्णोण्णगमणं च होज्ज कम्म कदप्पाभिओग-गमण च होज्ज हासं, आसुरियं किव्विसत्तणं च जणेज्ज हास, तम्हा हास न सेवियव्व । एवं मोणेण य भाविओ भवइ अतरप्पा सजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसपन्नो ॥ सू० ८ ॥

टीका—' पचम ' पञ्चमीं भावनामाह—' हास ' हास्य नोकषायमोहोदया-त्सनिमित्तमनिमित्त वा विवृतवर्णपुरस्सर मुखव्यादान हास्यम् , न 'सेवियव्व' सेवि-तव्यम्। किमर्थं न सेवितव्यम् ? इत्याह—'हासइत्ता' हासयितार.—परिहासकारिण ' अलियाइ ' अलिकानि=सद्भूतार्थगोपनरूपाणि ' असतगाइ ' असत्कानि=

अब सूत्रकार पचमी मौन भावना को कहते है—' पचम , इत्यादि ० ।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी मौन भावना इस प्रकार है। (हास न सेवियव्व) इस भावना में हास्य के सेवन का परित्याग कर दिया जाता है। जब जीव को हास्यनो कषाक मोह का उदय होता है तब वह हास्य का निमित्त मिले अथवा न भी मिले तो भी वह ही-ही करता हुआ हँसने लग जाता है। हँसते समय उसका मुख खुल जाता हैं दात स्पष्ट दिखलाइ देने लगते है। सयमी जन को इस हास्य का सेवन नही करना चाहिये। क्यो कि (हासइत्ता) जो परिहास करने वाले व्यक्ति होते है वे (अलिअइ असतगाइ जपति) सद्भूत

હવે સૂત્રકાર પાચમી મૌનભાવના બતાવે છે—" पचम " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—" पचम " પાચમી મૌનભાવના આ પ્રમાણે છે—" हास न सेवियव्व " આ ભાવનામા હાસ્યનો પરિત્યાગ કરાય છે જ્યારે જીવને ' हास्य नोकषाय ' મોહનો ઉદય થાય છે ત્યારે તે હાસ્યનુ નિમિત્ત મળે કે ન મળે છતા પણ તે ' હી-હી ' કરતો હસવા મડી જાય છે હસતી વખતે તેનુ મુખ ઉઘડી જાય છે અને દાત સ્પષ્ટ રીતે દેખાય છે સયમી જને આ હાસ્યનુ સેવન કરવુ જોઇએ નહીં કારણ કે " हासइत्ता " જે પરિહાસ કરનાર વ્યક્તિ હોય છે તે " अलिआइ असतगाइ जपति " યથાર્થ અર્થને છુપાવનાર અને

विधस्य भयजनकस्य वस्तुनो वशात न ' भीइयव्व ' भेतव्यम् एवम्=अनेन प्रकारेण ' धिज्जेण ' धैर्येण ' भाविओ ' भावितः ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा=जीवः सयतकरचरणनयवदनः शूरः सत्यार्जवसपन्नो भवति ॥ ७ ॥

॥ इति चतुर्थी भावना ॥

अथ पञ्चमीं मौनभावनामाह–' पचम ' इत्यादि—

मूलम्–पचमं हासं न सेवियव्व । अलियाइ असंतगाइं जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हास, परपरिवायप्पियं च हासं, परपीलाकारगं च हासं, भेयविमुत्तिकारगं

भयजनक वस्तु के वश से नही डरना चाहिये। (एव धेज्जेण भाविओ अतरप्पा सजय करचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसपन्नो भवइ) इस प्रकार धैर्य से भावित हुआ जीव अपने कर, चरण, नयन एव वदन की प्रवृत्ति को सयमित रखता हुआ सत्यव्रत के पालनमें पराक्रमशाली बन जाता है और सत्य एव आर्जव भाव से सपन्न हो जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की चौथी भावना कहा है। इस भावना का नाम धैर्यभावना है। इस भावना में धैर्य के अभाव में क्या २ हानि होती है और धैर्य रखने से क्या २ लाभ होते हैं, इन सब बातोंका विचार किया जाता है। इन विचारों से आत्मा जब धैर्य शाली बन जाती है तो वह अपने द्वारा गृहीत सत्यव्रत को पूर्णरूप से सुरक्षित रखति हुइ स्थिर बना लेती है ॥ सू०७ ॥

રની ભયજનક વસ્તુના ભયથી ડરવુ જોઈએ નહી, " एव धेज्जेण भाविओ अतरप्पा सजयकरजरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसपन्नो भवइ" આ પ્રકારે ધૈર્યથી ભાવિત થયેલ જીવ પોતાના કર, ચરણ, નયન, અને વદનની પ્રવૃત્તિને સયમિત રાખીને સત્યવ્રતના પાલનમા પરાક્રમશાળી બની જાય છે અને સત્ય તથા આર્જવના ભાવયુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા સત્યવ્રતની ચોથી ભાવના બતાવી છે તે ભાવનાનુ નામ ધૈર્યભાવના છે આ ભાવનાનુ વર્ણન કરતા ધૈર્યના અભાવે કયી કયી હાનિ થાય છે અને ધૈર્ય રાખવાથી કયા કયા લાભ થાય છે તે બધાનો વિચાર કરાયો છે આ વિચારોથી આત્મા જ્યારે ધૈર્યવાન બને છે ત્યારે તે પોતે ગ્રહણ કરેલ સત્યવ્રતને સપૂર્ણ રીતે સુરક્ષિત અને સ્થિર બનાવી લે છે ॥ સૂ૦ ૭ ॥

जनित=परस्परकृत च भवति हास्यम्, तथा हास्ये 'अण्णोण्णगमण' अन्योन्य-गमन=परस्पराधिगमनीय च 'मम्म' मर्म=प्रच्छन्नपारदार्यादिदुश्चेष्टित् भवति। तथा-'अण्णोण्णगमण' अन्योन्यगमन=परस्परनिज्ञेय च 'कम्म' कर्म=लोक-निन्दादिरूप 'होज्ज' भवति। हास्येन मच्छन्नमपि कर्म प्रकाशित भवतीति भावः। तथा-'कदप्पाभिओगगमण' कन्दर्पाभियोगगमनम्=कन्दर्पाः=कान्दर्पिका देव-विशेषा हास्यकारिणो भण्डप्राया, अभियोगाः=आज्ञाकारिणो देवाः, तेषु गमन=गमनकारणम्=तत्तद्देवविशेषेपूत्पत्तिकारण च भवति हास्यम्। हास्यकारी साधुश्चा-रित्रलेशाद्देवत्व प्राप्तोऽपि तत्र कान्दर्पिकेषु आभियोगिकेषु देवेपूत्पद्यते न तु महर्द्धिकेषु इत्यर्थः। तथा-'आसुरिय' असुरत्व 'किव्विसत्तण' किल्बिपत्व=चाण्डालप्रायदेवविशेषत्व च 'जणेज्ज' जनयेत् 'हास' हास्यम्। यतो हास्या दीदृशी गतिर्भवति जीवस्य, 'तम्हा' तस्मात् 'हास' हास्य न सेवितव्यम्।

आपस में दो आदि जन मिलने से होता है। (अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म) इस हसी मे परदाररमण आदि दुश्चेष्टाये प्रच्छन्न रहा करती हैं। तथा (अण्णोण्ण गमण च होज्ज कम्म) इसी हसी मे परस्पर में होनेवाले दुष्कृत्यो से उनकी लोक मे निंदा होती है उसे बाहर वे अपने मुख यद्यपि नहीं कहा करते है फिर भी आपस की हँसी से ही उनका दुष्कृत्य लोकों के समक्ष प्रकाशित हो जाता है। (कदप्पाभिओग-गमणं) तथा हास्यकारी साधू चारित्र के लेश से यदि देवगति में उत्पन्न होवे तो भी वह भांट जैसे कान्दर्पिक तथा आज्ञाकारी आभियोगिक देवों में उत्पन्न होता है महर्द्धिक देवो में नहीं। (आसुरिय किव्विसत्तणं चजणेज्ज हास) यह हास्य चाडालप्राय असुरदेवो में किल्विषजाति के देवों में उत्पत्ति का कारण होता है। (तम्हा हास न सेवियव्व) इस-

વાથી થાય છે "अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म" એ હાસ્યમા પરદારરમણ આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા "अण्णोण्णगमण च होज्ज कम्म" આ હાસ્યમા અન્યોન્ય થતા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની લોકમા નિંદા થાય છે, તેને તેઓ પોતાના મુખથી બહાર કહ્યા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની હસી-મજાકથી જ તેમનુ દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ જાહેર થઈ જાય છે "कदप्पाभि ओगगमण" તથા હાસ્યકારી સાધુ જો દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય તો પણ ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ જેવા કાદર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિયોગિક દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દ્ધિક દેવોમા નહીં "आसुरिय किव्वि सत्तण च जणेज्ज हास" તે હાસ્ય ચાડાલ આદિ જાતિમા અસુરદેવોમા કિલ્વિષજાતિના દેવોમા ઉત્પત્તિનુ કારણ બને છે "तम्हा हास न सेवियव्व" તે

असद्भूतार्थानि वचनानि 'जपंति' जल्पन्ति=ब्रुवते। हास्यकारिणो द्वितीयमहाव्रतनाशका भवन्तीत्यर्थः। कीदृश हास्यम्? इत्याह-'परपरिभवकारणं=परापमानहेतुक च हास्य भवति। तथा-'परपरिवायप्पिय' परपरिवादप्रिय=परपरिवादः =अन्यदूषणाभिधान प्रिय इष्टो यस्मिस्तत्तादृश च हास्य भवति। तथा-'परपीलाकारग' परपीडाकारक च हास्य भवति। तथा-'भेयविमुत्तिकारग' भेद-विमूर्तिकारक=भेदः=चारित्रभङ्गः: विमूर्ति=विकृतनयनवदनादित्वेन विकृतशरीराकृतिस्तयोः कारक च हास्यम्। 'अण्णोण्णजणिय च होज्ज हास' अन्योन्य

अर्थको गोपन करने वाले एव असद्भूत अर्थ को प्रकट करने वाले वचनों को बोला करते हैं। सत्यमहाव्रत में सद्भूत अर्थका प्रकाशन और असद्भुत अर्थ का प्रकट करना हेय कहा है, अतःहास्य मे जब इस प्रकार की परिस्थिति रहती हैं कि उसमें असद्भूत अर्थ का प्रकटन और सद्भूत अर्थ का गोपन होता है, तो द्वितीय महाव्रत का सरक्षण इस अवस्था में केसे हो सकता है नहीं हो सकता, इसलिये हास्य का त्याग कहा गया है। (परपरिभवकारण च हास) हास्य पर के अपमान का कारण होता है। (परपरिवायप्पियच हास) हास्य में पर के दूषण का कथन करना प्रीय लगता है। (परपीलाकारग च हास) हास्य मे इस बातका भी ध्यान नही रहता है कि इस हास्य से अन्य को कष्ट हो रहा है। (भेयविमुत्तिकारग च हास) हास्य चारित्र के भग का हेतु हो जाता है। इसमें नयन वदन आदि शारीरिक अवयव विकृत बन जाते हैं। (अण्णोण्णजणिय च होज्ज हास) हास्य

અસદ્ભૂત અર્થને પ્રગટ કરનારા વચનો બોલ્યા કરે છે સત્યમહાવ્રતમા સદ્ભૂત અર્થનુ ગોપન તથા અસદ્ભૂત અર્થનુ પ્રકાશન હેય ગણાવેલ છે તો હાસ્યમા જ્યારે એવા પ્રકારની પરિસ્થિતિ રહે છે કે તેમા અસદ્ભૂત અર્થ પ્રગટ કરાય છે અને સદ્ભૂત અર્થનુ ગોપન કરાય છે, તો એ પરિસ્થિતિમા દ્વિતીય મહાવ્રતનુ રક્ષણ કેવી રીતે થઈ શકે? થઈ શકે જ નહી માટે હાસ્યનો પરિત્યાગ કરવો જોઈએ એમ સૂત્રકારે બતાવ્યુ છે "परपरिभवकारण च हास" હાસ્ય અન્યના અપમાનનુ કારણ બને છે "परपरिवायप्पिय च हास" હાસ્યમા અન્યના દૂષણોનુ કથન કરવુ પ્રિય લાગે છે "परपीलाकारग च हास" હાસ્યમા તે વાતનુ પણ ભાન રહેતુ નથી કે તે હાસ્યથી કોઈ બીજાને કષ્ટ થઈ રહ્યુ છે "भेयविमुत्तिकारग च हास" હાસ્યને લીધે ચારિત્રનો લોપ થાય છે તેમા નયન, વદન આદિ શરીરના અવયવો વિકૃત થઈ જાય છે "अण्णोण्णजणिय च होज्ज हास" હાસ્ય એ કે વધારે માણસ અન્યોન્ય મળ

जनित=परस्परकृत च भवति हास्यम्, तथा हास्ये 'अण्णोण्णगमण' अन्योन्य-गमन=परस्पराभिगमनीय च 'मम्म' मर्म=प्रच्छन्नपारदार्यादिदुश्चेष्टित भवति। तथा-'अण्णोण्णगमण' अन्योन्यगमन=परस्परनिज्ञेय च 'कम्म' कर्म=लोकनिन्दादिरूप 'होज्ज' भवति। हास्येन प्रच्छन्नमपि कर्म प्रकाशित भवतीति भावः। तथा-'कदप्पाभिओगगमण' कन्दर्पाभियोगगमनम्=कन्दर्पाः=कान्दर्पिका देवविशेषा हास्यकारिणो भण्डप्राया, अभियोगाः=आज्ञाकारिणो देवाः, तेषु गमन=गमनकारणम्=तत्तद्देवविशेषेषूत्पत्तिकारण च भवति हास्यम्। हास्यकारी साधुश्चारित्रलेशाद्देवत्व प्राप्तोऽपि तत्र कान्दर्पिकेषु आभियोगिकेषु देवेषूत्पद्यते न तु महर्द्धिकेषु इत्यर्थः। तथा-'आसुरिय' असुरत्व 'किव्विसत्तण' किल्बिषत्व=चाण्डालप्रायदेवविशेषत्व च 'जणेज्ज' जनयेत् 'हास' हास्यम्। यतो हास्या दीदृशी गतिर्भवति जीवस्य, 'तम्हा' तस्मात् 'हास' हास्य न सेवितव्यम्।

आपस में दो आदि जन मिलने से होता है। (अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म) इस हसी मे परदाररमण आदि दुश्चेष्टाये प्रच्छन्न रहा करती हैं। तथा (अण्णोण्ण गमण च होज्ज कम्मं) इसी हसी मे परस्पर में होनेवाले दुष्कृत्यो से उनकी लोक मे निंदा होती है उसे बाहर वे अपने मुख यद्यपि नहीं कहा करते है फिर भी आपस की हँसी से ही उनका दुष्कृत्य लोकों के समक्ष प्रकाशित हो जाता है। (कदप्पाभिओग-गमण) तथा हास्यकारी साधू चारित्र के लेश से यदि देवगति में उत्पन्न होवे तो भी वह भांड जैसे कान्दर्पिक तथा आज्ञाकारी आभियोगिक देवों में उत्पन्न होता है महर्द्धिक देवो मे नही। (आसुरिय किव्विसत्तण चजणेज्ज हास) यह हास्य चाडालप्राय असुरदेवो में किल्बिपजाति के देवों में उत्पत्ति का कारण होता है। (तम्हा हास न सेवियव्व) इस-

વાથી થાય છે "अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म" એ હાસ્યમા પરદારરમણ આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા "अण्णोण्णगमण च होज्ज कम्म" આ હાસ્યમા અન્યોન્ય થતા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની લોકમા નિંદા થાય છે, તેને તેઓ પોતાના મુખથી બહાર કહ્યા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની હસી-મજાકથી જ તેમનુ દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ જાહેર થઈ જાય છે "कदप्पाभि ओगगमण" તથા હાસ્યકારી સાધુ જો દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય તો પણ ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ જેવા કાદર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિયોગિક દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દ્ધિક દેવોમા નહીં "असुरिय किव्वि सत्तण च जणेज्ज हास" તે હાસ્ય ચાડાલ આદિ જાતિમા અસુરદેવોમા કિલ્વિષજાતિના દેવોમા ઉત્પત્તિનુ કારણ બને છે "तम्हा हास न सेवियव्व" તે

एवम्=अनेन प्रकारेण हास्यवर्जनरूपेण, 'मोणेण' मौनेन=वचनसंयमेन 'भाविओ' भावितः 'अंतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवः संयतकरचरणनयनवदनः शूरः सत्यार्जवसंपन्नो भवति ॥ सू० ८ ॥

लिये जब हास्य से जीव की ऐसी गती होती है कि वह इस हास्य का सेवन नहीं करे। (एव) इस प्रकार (मोणेण य भाविओ अंतरप्पा संजय करचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो भवइ) हास्यवर्जनरूप मौन से-वचन संयम से-भावित हुआ जीव अपने कर, चरण, नयन और वदन-मुख की प्रवृत्ति को संयमित बनाता हुआ सत्यव्रत के पालन में पराक्रमशाली बन जाता है और सत्य एवं आर्जवभाव से संपन्न हो जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा पांचवी मौन भावना का स्वरूप कहा है। मौन भावना का तात्पर्य हास्य का परित्याग करना है। हांसी करने वाला प्राणी झूठ वचन का प्रयोग भी प्रसंगवश करता है। तथा इस कृत्य से दूसरों का अपमान भी होता है। हास्य मनोविनोद का कारण होता है सही परन्तु संयमी के लिये हास्य से मनोविनोद करने की क्या आवश्यकता है। हास्य से दूसरों के मनों में चोट पहुँचे इससे और अधिक अशोभनीय बात क्या हो सकती है। अध्यात्म के मार्ग में हँसी मजा करने का सर्वथा परित्याग कहा है। हास्य में पर के दूषणों का कथन प्रिय लगता है। यह हास्य नो

કારણે-હાસ્યથી જીવની એવી ગતિ થાય છે તેથી જીવનું તે કર્તવ્ય છે કે તે હાસ્યનું સેવન ન કરે "एव" આ પ્રકારે "मोणेण य भाविओ अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो भवइ" હાસ્ય ત્યાગરૂપ મૌનથી વચન સંયમથી ભાવિત થયેલ જીવ પોતાના કર, ચરણ, નયન અને વદનની પ્રવૃત્તિને સંયમિત કરીને સત્યવ્રતના પાલનમાં પરાક્રમશાળી બની જાય છે અને સત્ય તથા આર્જવ ભાવથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પાંચમી મૌન ભાવનાનું સ્વરૂપ બતાવ્યું છે મૌન ભાવનાનું તાત્પર્ય હાસ્યનો પરિત્યાગ છે હાસી કરનાર માણસ પ્રસંગ વશાત્ અસત્ય વચનનો પ્રયોગ પણ કરે છે, તથા તે કૃત્યથી બીજાનું અપમાન પણ થાય છે હાસ્ય-મનોવિનોદને માટે કારણ જરૂર હોય છે પણ સંયમીને હાસ્યની મદદથી મનોવિનોદ કરવાની શી આવશ્યકતા છે? હાસ્યને કારણે અન્યના દિલમાં ચોટ લાગે તેનાથી વધારે ખરાબ વાત બીજી કઈ હોઈ શકે? અધ્યાત્મ માર્ગમાં હસી મજાકનો સર્વથા ત્યાગ બતાવ્યો છે હાસ્યમાં બીજાના

द्वितीय संवरद्वारमुपसहरन्नाह–' एवमिण ' इत्यादि—

मूलम्–एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संचरियं होइ सुप्प- णिहियं इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खि- एहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सव्व- जिणमणुन्नाओ । एवं बीयं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवइ, एवं

कषाय के उदय से होता है ! जिससे चारित्र का भंग होता है । दूसरे व्यक्तियों की गुप्त चेष्टाएँ भी इस हास्य के द्वारा प्रकट हो जाया करती हैं । यद्यपि चारित्र का उससे पूर्णरूप से भंग नहीं भी होता है–तो भी साधु इसके प्रभाव से महर्द्धिक देवों में उत्पन्न नहीं होता है । कान्दर्पिक आभियोगिक आदि देवों में ही उत्पन्न होता है, अतः हास्य का सेवन करना सत्यव्रती के लिये सर्वथा त्याज्य है, ऐसा समझ कर जो इसका परित्याग कर देता है वह सत्यव्रती अपने व्रत को पूर्णरूप से स्थिर कर पालन करता है । इस प्रकार हास्य जन्य दोषों का विचार कर हास्यव- र्जनरूप वचनसंयम से अपनी आत्मा को भावित करके साधु अपने व्रताराधन में पराक्रमशाली बन जाता है और गृहीत सत्यव्रत को पूर्ण- रूप से सुरक्षित कर स्थिर बना लेता है ॥ सू० ८ ॥

दूषणो जाहेर करवा ते प्रिय लागे छे ते हास्य नोकषायना उदयथी थाय छे, जेना कारणे चारित्रनो भंग थाय छे, बीजी व्यकितओनी गुप्त चेष्टाओ पण ते हास्य द्वारा प्रगट थया करे छे भले तेनाथी चारित्रनो पूर्णत भंग थतो न होय, ते छता पण साधु तेना कारणे महर्द्धिक देवोमां उत्पन्न थतो नथी कान्दर्पिक, अभियोगिक आदि देवोमा ज उत्पन्न थाय छे तेथी हास्यनु सेवन करवु ते सत्यव्रतीने माटे सर्वथा त्याज्य छे, एवु समजीने जे तेनो परि- त्याग करे छे, ते सत्यव्रती पोताना व्रतने संपूर्ण रीते स्थिर करे छे अने तेनु पालन करे छे आ रीते हास्यमांथी उद्भवता दोषोनो विचार करी हास्य वर्जनरूप वचनसंयमथी पोताना आत्माने भावित करीने साधु पोताना व्रतनी आराधनामा समर्थ बनी जाय छे अने ग्रहण करेल सत्यव्रतनु संपूर्ण रीते सुरक्षित करीने स्थिर बनावी ले छे ॥ सू० ८ ॥

नायमुणिणा भगवया पन्नविय परूविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिणं आघविय सुदेसिय पसत्थ। बीयं संवरदारं समत्तंत्ति बेमि॥सू० ९॥

॥ इय पण्हावागरणे बीयं संवरदारं समत्तं ॥

टीका—' एवं ' पूर्वोक्तप्रकारेण ' इणं ' इदं ' संवरस्स ' संवरस्य ' दारं ' द्वार=सत्यवचन नाम द्वितीय द्वारमित्यर्थः, ' सम्म ' सम्यक् ' संचरियं ' संचरितं सत् 'होइ' भवति, ' सुप्पणिहियं ' 'सुप्रणिहितं=समाराधितम्। तथा-'इमेहिं' एभिः ' पंचहिं वि ' पञ्चभिरपि ' कारणेहिं ' कारणैः=भावनाभिः, कीदृशैः कारणैः ? इत्याह-' मणवयणकायपरिरक्खिएहिं ' मनोवचनकायपरिरक्षितैः=मनोवाक्कायपरिरक्षितपञ्चभावनाभिरित्यर्थः, ' निच्चं ' नित्यम् ' आमरणंतं च ' आमरणान्तं=मरणपर्यन्तं च ' एस जोगो ' एष योगः=सत्यवचनरूपो योगः 'णेयव्वो'

इस प्रकार सत्यव्रत की स्थिरता के निमित्त पांच भावनाओं को कहकर अब सूत्रकार इस द्वितीय संवरद्वार का उपसंहार करते हुए कहते हैं-' एवमिणं, इत्यादि।

टीकार्थ—(एवं) पूर्वोक्त प्रकार से (इणं) यह (संवरदारं) सत्यवचन नामक द्वितीय संवरद्वार (सम्मं-संचरियं) अच्छी तरह से पाले जाने पर (सुप्पणिहियं) सुरक्षित (होइ) हो जाता है। (इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं) इसलिये मन वचन और काय इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये इन पांचभावनारूप कारणों से (निच्चं) सदा (आमरणंतं च) जीवनभरतक (एसजोगो) यह सत्यवचनरूप योग (धिइमया मइमया) स्वस्थचित्त से एवं हेयो

આ રીતે સત્યવ્રતની સ્થિરતાને માટેની પાંચ ભાવનાઓ વર્ણવીને હવે સૂત્રકાર આ બીજા સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે-" एवमिणं " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—" एवं " પૂર્વોકત પ્રકારે " " इणं " આ " संवरसदारं " સત્ય વચન નામનું બીજું સંવરદ્વાર " सम्म-संचरियं " સારી રીતે પળાય તો " सुप्पणिहियं " સુરક્ષિત " होइ " થઈ જાય છે " इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं " તે કારણે મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ આ પાંચ ભાવનારૂપ કારણોથી " निच्चं " સદા " आमरणं तं च " જીવન પર્યન્ત " एसजोगो ' આ સત્યવચનરૂપ યોગ " धिइमया मइमया " સ્વસ્થ ચિત્તે અને હેયોપાદેયના વિવેકથી યુક્ત થયેલ મુનિજનોએ " णेयव्वो " પાલન કરવા યોગ્ય છે કારણ કે આ સત્યમહાવ્રત

नेतव्यः=पालनीयः ' धिइमया ' धृतिमता ' मइमया' मतिमता–मेधाविना कथ भूतोऽय योग ? इत्याह–' अणासवो ' अनाश्रवः ' अकलुसो ' अकलुप ' अच्छिद्दो ' अच्छिद्रः ' अपरिस्सावी ' अपरिस्रावी ' असकिलिट्ठो ' असक्लिष्टः 'सव्वजिणमणुण्णाओ ' सर्वजिनानुज्ञातश्च । एवम्=एतादृशमिद ' वीय ' द्वितीय ' सवरदार ' सवरद्वार ' फासिय ' स्पृष्ट' पालिय ' पालित ' 'सोहिय' शोधित 'तीरिय ' तीरित ' किट्टिय ' कीर्त्तितम् ' आराहिय ' आराधितम् 'आणाए' आज्ञया यथावत् ' अणुपालिय ' अनुपालित ' भवति । एवम्=अमुना प्रकारेण 'णा-

पादेय के विवेक से युक्त हुए मुनिजन को (णेयव्वो) पालन करने योग्य है, क्यों कि यह सत्य महाव्रतरूप योग (अणासवो) नूतनकर्मो के आस्रव को रोकने वाला होने से अनास्रव रूप है, (अकलुसो) अशुभ अध्यवसाय से रहित होने के कारण अकलुषरूप है (अच्छिद्दो) पाप का स्रोत इससे बद हो जाता है इसलिये अच्छिद्ररूप है, (अपरिस्सावी) एक बिन्दुमात्र भी कर्मरूप जल इसमे प्रविष्ट नहीं हो सकता है इसलिये यह अपरिस्रावी है, (असकिलिट्ठो) असमाधिरूप भावसे यह वर्जित होता है इसलिये असक्लिष्ट है । (सव्वजिणमणुण्णाओ) इसीलिये यह समस्त भूत, भविष्यत्, और वर्तमान काल के तीर्थंकरों को मान्य हुआ है । (एव) इस उक्त प्रकार से (वीय) द्वितीय सवर द्वार को जो मुनिजन (फासिय) अपने शरीर से स्पर्श करते है, (पालिय) निरन्तर ध्यानपूर्वक इसका सेवन करते हैं, (सोहिय) अतिचारों से इसे रहित बनाते हैं, (तीरिय) पूर्णरूप से इसे अपने जीवन में उतारते है, (किट्टिय) दूसरों को इसे धारण करने का उपदेश देते

३૫ યોગ " अणासवो " નવા કર્મોના આસ્રવને રોકનાર હોવાથી અનાસ્રવરૂપ " अकलुसो " અશુભ અધ્યવસાયરહિત હોવાથી અકલુષરૂપ " अच्छिद्दो " પાપનો સ્રોત તેનાથી બધ થઈ જાય છે તેથી અચ્છિદ્રરૂપ છે, " अपरिस्सावी " એક બિન્દુ પણ કર્મરૂપી જળ તેમા પ્રવેશી શકતુ નથી, તેથી તે અપરિસ્રાવી છે, " असकिलिट्ठो " અસમાધિરૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસક્લિષ્ટ છે " सव्वजिणमणुण्णाओ " તેથી તે સમસ્ત ભૂત, ભવિષ્ય અને વર્તમાન-કાળના તીર્થંકરોએ માન્ય કરેલ છે " एव " આ કહ્યુ તે પ્રકારે " वीय " બીજા સવરદ્વારને જે મુનિજન " फासिय " પોતાના શરીરથી સ્પર્શે છે, " पालिय " નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, " सोहिय " અતિચારોથી રહિત બનાવે છે, " तीरिय " પૂર્ણ રીતે તેને પોતાના જીવનમા ઉતારે છે " किट्टिय " અન્યને તેનુ સેવન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા " अणुपा

यमुणिणा ' ज्ञातमुनिना भगवता महावीरेण ' पण्णविय ' प्रज्ञापित ' परूविय ' प्ररूपित ' पसिद्ध ' प्रसिद्धम् ' सिद्धवरसासणमिणं ' सिद्धवरशासनमिदम् 'आघ विय ' आख्यात ' सुदेसिय ' सुदेशित ' पसत्थ ' प्रशस्त ' बीयं संवरदारं ' द्वितीय संवरद्वार ' समत्त ' समाप्तम् । एषा सर्वेषां पदानां व्याख्या प्रथमसंवर द्वारोपसंहारे द्रष्टव्या । ' त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि-अस्यार्थः पूर्वमुक्तः ॥सू-९॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ - प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक- वादिमानमर्दक-श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्यायां व्याख्यायां संवरात्मके द्वितीये-भागे सत्यवचननामकं द्वितीयं संवरद्वारं समाप्तम् ॥ २ ॥

हैं तथा (अणुपालिय) त्रिकरण त्रियोगों से जो इसका अच्छी तरह से आचरण करते हैं वे (अणाए आराहिय भवइ) इसकी आराधना सर्वज्ञ भगवान् के वचनों से ही करते हैं ऐसा जानना चाहिये । (एवं) इस प्रकार से यह उक्तरूप संवरद्वार (णायमुणिणा) प्रसिद्धक्षत्रियवंश में उत्पन्न हुए मुनि भगवान् महावीर ने (पण्णविय) प्रज्ञापित किया है शिष्यों के लिये सामान्य रूप से कहा है । (परूविय) प्ररूपित किया है-भेदानुभेदप्रदर्शन पूर्वक कथित किया है । इसलिये यह (पसिद्ध) प्रसिद्ध है-आचार्यादिपरंपरा से इसका पालन इसी रूप से चला आ रहा है अतः निर्दोष है । तथा (सिद्धवरसासणमिणं) भूतकाल में जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह उत्कृष्ट शासनरूप है सो (आघविय)

लिय " त्रिકरण યોગોથી જેઓ તેમનું સારી રીતે આચરણ કરે છે તેઓ " अणाए आराहिय भवइ " તેની આરાધના સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચનોથી જ કરે છે એમ સમજવું, " एवं " આ પ્રકારે આ (વર્ણવ્યા પ્રમાણેનું) સંવર દ્વાર " णायमुणिणा " પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વંશમાં જન્મેલા મહાવીર ભગવાને " पण्णविय " પ્રજ્ઞાપિત કર્યું છે શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે કહ્યું છે ' परू पविय " પ્રરૂપિત કર્યું છે ભેદાનુભેદ દર્શાવીને વર્ણવ્યું છે તેથી તે " सिद्ध " પ્રસિદ્ધ છે આચાર્યાદિ પરંપરાથી તેનું આ રૂપેજ પાલન થતું આવ્યું છે, તેથી તે નિર્દોષ છે તથા " सिद्धवरसासणमिय " ભૂતકાળમાં જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમના ઉત્કૃષ્ટ શાસનરૂપ વળી " आघविय " તેનું -

इसी का कथन भगवान् महावीर प्रभुने किया है और (सुदेसिय) ऐसा ही उपदेश इसका उन्होंने देव, मनुज एव असुरों सहित परिषदा में दिया है। (पसत्थ) यह द्वितीय सवरद्वार समस्त प्राणियों का हितकारक होने से प्रशस्त-मगलमय है। (बीय सवरदार समत्त) इस तरह का यह द्वितीय सवरद्वार समाप्त हुआ। (त्तिबेमि) हे जबू मैंने जैसा यह श्री महावीर प्रभु के मुख से सुना है उसी तरह का यह तुमसे कहा है। अपनी तरफ से इसमें कुछ भी कल्पित करके नही कहा है॥

भावार्थ—दूसरे सवर द्वार का उपसहार करते हुए सूत्रकार कह रहे हैं कि इस द्वितीय सवरद्वार को कि जिसका नाम सत्यमहाव्रत है जो मुनिजन इन कथित पच भावनाओं की दृढ़ता पूर्वक पालते हैं-जीवन भरतक-इसके अनुसार अपनी कर, चरण आदि की प्रवृत्ति को करते रहते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं, नवीन कर्मों का वध होता नही है। पापों का स्रोत इसके प्रभाव से, उनका रुक जाता है यह अपरिस्रावी आदि विशेषणों वाला है। त्रिकालवर्ती समस्त अरिहत भगवतों ने इसका स्वय पालन किया है, और जीवो को इसके पालने का उपदेश आदेश उन्हों ने परिषदा में दिया है। भगवान् महावीर ने

મહાવીરે કરેલ છે અને "सुदेसिय" તેમણે તેનો આ પ્રમાણે જ ઉપદેશ દેવ, મનુષ્ય અને અસુરો સહિતની પરિષદોમા આપ્યો છે "पसत्थ" આ દ્વિતીય સવરદ્વાર સઘળા પ્રાણીઓનુ હિત કરનાર હોવાથી પ્રશસ્ત-મગળમય છે "बीय सवरदार समत्त" આ બીજુ સવરદ્વાર સમાપ્ત થયુ "त्तिबेमि" હે જબૂ! મે જેવુ મહાવીર પ્રભુના મુખથી સાભળ્યુ છે, મારી તરફથી તેમા કલ્પિત કાઈ પણ ઉમેરીને તે કહેવાયુ નથી

ભાવાર્થ--બીજા સવરદ્વારનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે-સત્ય મહાવ્રત નામના બીજા સવરદ્વારનુ જે મુનિજન ઉપરોક્ત પાચ ભાવનાઓનુ જીવન પર્યંત દૃઢતાપૂર્વક પાલન કરે છે, તેના પ્રમાણે પોતાની કર ચરણ આદિની પ્રવૃત્તિ કર્યા કરે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોનો બધ બધાતો નથી, તેના પ્રભાવથી તેમનો પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે, તેથી તે અપરિસ્રાવી આદિ વિશેષણોવાળુ છે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેનુ પોતે પાલન કર્યું છે, અને તેના પાલનનો પરિષદોમા જીવોને ઉપદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ તેમના પ્રમાણે જ

भी उन्हीं के अनुसार इस द्वितीय संवरद्वार की प्रशंसा की है स्वयं भी इसका पालन किया है। अतः यह मंगलमय है। निर्दोष है। बाधा वर्जित है। इसे धारण कर प्रत्येक संज्ञी पर्याप्त पंचेन्द्रिय मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाना चाहिये। इस प्रकार जम्बू स्वामी से श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा ॥ सू-९ ।

॥ द्वितीय संवरद्वार समाप्त ॥

આ બીજા સંવરદ્વારની પ્રશંસા કરી છે અને જાતે પણ તેનું પાલન કર્યું છે તેથી તે મંગળમય છે, નિર્દોષ છે, બાધારહિત છે, તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક સંજ્ઞી પર્યાપ્ત પંચેન્દ્રિય મનુષ્યે પોતાનું જીવન સફળ બનાવવું જોઈએ આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્માસ્વામીએ જંબૂસ્વામીને કહ્યું ॥ સૂ૦ ૯ ॥

॥ બીજું સંવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

अथ तृतीय संवरद्वारं प्रारभ्यते

पूर्वस्मिन्नध्ययरे मृषावादविरमण नामक द्वितीय संवरद्वार प्रोक्तम्, तच्चाद-त्तादानविरमणं विना न सभवतीत्यतः क्रमप्राप्ते तृतीयेऽध्ययनेऽदत्तादानविरम-णनामक तृतीय सवरद्वारमभिधीयते—'जवू' इत्यादि——

मूलम्–जवू ! दत्तमणुन्नायसंवरो नाम होइ तइयं सुव्वय ! महव्वय गुणव्वय परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमिय-मणंततण्हाणुगय–महिच्छमणवयणकलुस–आयाणसुनिग्गहिय, सुसंजमियमणहत्थपायनिहुयं निहुयं निग्गथ, णोट्ठियं, निरुत्तं, निरासव, निब्भयं, विमुत्त उत्तमनरवसभ–पवर–वलवग–सुविहियजणसंमयं–परमसाहुधम्मचरणं, जत्थ य गामागर–नगर–निगम—खेड–कव्वड–मडव–दोणमुह–सवाह–पट्टणा समगय च किंचि दव्व मणि–मुत्त- सिलप्पवाल कस दूस-रयय वरकणग-रयणमाइं पडियं पम्हट्ठ विप्पणट्ठं न कप्पइ कस्सइ कहेउ वा गेण्हेउ वा अहिरन्न सुवण्णएणं समलेट्ठु कचणेणं अपरिग्गहसवुडेणं लोगम्मि विहरियव्व ॥ सू० १ ॥

टीका—'सुव्वय' सु=शोभन व्रत=चारित्रपालनरूप यस्य तत्सबुद्धौ हे सुव्रत !=शोभनव्रतशालिन् ! 'जवू' हे जम्बूः ! इद प्रारभ्यमाण 'तइय' तृती-

---

तृतीय सवरद्वार प्रारभ

पूर्व अध्ययनमें मृषावाद विरमण नाम का जो दूसरा सवरद्वार कहा गया है, अदत्तादानविरमण के विना नहीं हो सकता है, इसलिये सूत्रकार क्रमप्राप्त इस तृतीय अध्यय में अदत्तादानविरमण नाम का

ત્રીજા સ વરદ્વારનો પ્રારભ

આગળના અધ્યયનમા મૃષાવાદ વિરમણુ નામના બીજા સ વરદ્વાર વિષે જે કહેવામા આવ્યુ તેનુ પાલન અદત્તાદાન વિરમણુ વિના થઇ શકતુ નથી તેથી સૂત્રકાર અનુક્રમે આવતા આ તૃતીય અધ્યયનમા અદત્તાદાન વિરમણુ



यमध्ययनं 'दत्तमणुन्नायसंवरो' दत्तानुज्ञातसंवरः=दत्त=दायकैर्वितीर्णम् अन्नपानादिकम्, अनुज्ञात=प्रातिहारकपीठफलकादिकं च ग्राह्यमित्येवंरूपः संवरो-दत्तानुज्ञातसंवरो नाम 'होइ भवति।' महव्वय' महाव्रतमिदम्, तथा-'गुणव्वयं' गुणव्रतं=गुणानाम् ऐहिकपारलौकिकोपकाराणां कारणभूत व्रत-गुणव्रतम्। कीदृशमिदम्? इत्याह-'परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्त' परद्रव्यहरणप्रतिविरतिकरणयुक्त=परेषां यद् द्रव्य=धन तस्य यद् हरणम्=आदान, तत्प्रति या विरति'=विरमण तस्या करणम्=आचरण, तेन युक्त=सहितम्, परद्रव्यादानविमुखकारकमित्यर्थः, तथा—'अपरिमियमणततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुसआयाणसुनिग्गहिय' अपरिमितानन्ततृष्णानुगतमहेच्छमनोवचनकलुषादानसुनिगृहीतम्=अपरि

तीसरा संवरद्वार कहते हैं-'जंबू' इत्यादि।

टीकार्थ—(सुव्वय) हे शोभन व्रत शालिन जंबू! (तइय) यह प्रारभ्यमाण तृतीय अध्ययन (दत्तमणुन्नायसंवरो) दत्तानुज्ञात संवर नामका है। इस दत्तानुज्ञात (दिया हुआ) में दाता के द्वारा वितीर्ण अन्नपान का तथा अनुज्ञात पीठफलक आदि के लेने का विधान किया गया है। यह (महव्वय) दत्तानुज्ञानसंवर महाव्रत है। (गुणव्वय) तथा गुणव्रतहै-इह लोक संबंधी तथा परलोकसंबंधी गुणो का यह कारणभूत व्रत है। अथवा समस्तव्रतों का यह उपकारक है इसलिये गुणव्रत है (परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्त) इस व्रत के आराधन से जीव का आचरण दूसरों के द्रव्य को ग्रहण करने की प्रवृत्ति से सर्वथा विरक्त होता है (अपरिमियमणंततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहिय) तथा इस महाव्रत की आराधना से, विद्यमान-

નામના ત્રીજા સંવરદ્વારનું વર્ણન કરે છે—"जंबू" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"सुव्वय" હે શોભનવ્રતશાળી જંબૂ! "तइय" આ શરૂ કરેલ ત્રીજું અધ્યયન "दत्तमणुन्नायसंवरो" દત્તાનુજ્ઞાન સંવર નામનું છે દત્તાનુજ્ઞાત (દીધેલું) માં દાતાદ્વારા વિતીર્ણ અન્નપાન તથા અનુજ્ઞાત પીઠફલક આદિ લેવાનું વિધાન કરેલ છે તે "महव्वय" દત્તાનુજ્ઞાન સંવર મહાવ્રત કહેવાય છે "गुणव्वय" તથા ગુણવ્રત છે-આલોક અને પરલોક સંબંધી ગુણોનું કારણભૂત આ વ્રત છે, અથવા સમસ્ત વ્રતોને માટે તે ઉપકારક હોવાથી તેને ગુણવ્રત કહ્યું છે "परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्त" આ વ્રતની આરાધના કરવાથી અન્યનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવાની પ્રવૃત્તિથી જીવો સર્વથા વિરક્ત રહે છે "अपरिमियमणत तण्हाणुगयमहिच्छ मणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहिय" નજરે ચડતા દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની જે અસીમ તથા અક્ષય સ્પૃહા-લાલસા થાય છે

मिता=परिमाणरहिता, अनन्ता=अक्षया या तृष्णा=स्पृहा=विद्यमानद्रव्याव्ययेच्छा, तयाऽनुगते ये महेच्छे=अविद्यमानद्रव्यलाभविषये महेच्छायुक्ते मनोवचने=मनोवाणी च, ताभ्यां यत् कलुषं=परधनविषयत्वेन पापरूपम् आदानं=ग्रहणं तत्सुनिगृहीत=सुनियन्त्रितं यत्र तत्, तथा-' सुसंजमियमणहत्थपायनिहुय ' सुसंयमितमनोहस्तपादनिभृत-सुसंयमितेन सम्यग्नियन्त्रितेन मनसा हस्तौ पादौ च परद्रव्यादानव्यापारात् निवृत्तौ=उपरतौ यत्र तत्। उक्तविशेषणद्वयेन परद्रव्यादाने मनोवाक्कायनिरोधः प्रदर्शितः। पुनः कथंभूतमिदम्? इत्याह-' निग्गंथ ' निर्ग्रन्थ=निर्गतो बाह्याभ्यन्तरो ग्रन्थो यस्मात्तत्, बाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितमित्यर्थः, तथा-'णेट्ठिगं'

द्रव्य के अव्यय होने की जो अपरिमित एवं अक्षय स्पृहालालसा होती है वह, तथा इस स्पृहा-लालसा-से जो बडी २ और अविद्यमान द्रव्य के लाभ विषयक इच्छाओं की परंपरा चलती है कि जिससे मनवचन की पर धन को लेने-ग्रहण करने की जो कलुषित प्रवृत्ति होती रहती है वह सुनियन्त्रित हो जाती है। तथा जब मन की परधन को हरण करने की कलुषित विचारधारा सुनियन्त्रित हो जाती है फिर (सुसंजमियमणहत्थपायनिहुय) उस मन के नियन्त्रित होते ही परद्रव्य के ग्रहण करने के निमित्त जो हाथ पैरों का व्यापार होता है वह भी उपरत-बंद हो जाता है। इस तरह इन दोनों विशेषणों से यह कहा है कि इस महाव्रत के सेवन करने से, परद्रव्यहरण करने के लिये जो मनवचन और काय का व्यापार पहिले होता था वह सर्वथा बंद हो जाता है। (अदत्तादानविरमणसंवर) यह दत्तानुज्ञात संवर कैसा है सो कहते हैं-(निग्गंथ) इस महाव्रत की आराधना से बाह्य और

तथा ते લાલસાથી બીજા અવિદ્યમાન દ્રવ્યની પ્રાપ્તિ માટેની મોટી મોટી ઇચ્છાઓની જે પરંપરા ચાલે છે કે જેથી મન વચનની પારકાનું ધન લેવાની જે દોષપૂર્ણ પ્રવૃત્તિ ચાલુ રહે છે તેનું આ મહાવ્રતની આરાધનાથી નિયન્ત્રણ થાય છે, તથા જ્યારે પારકાનું ધન હરી લેવાની મનની કલુષિત વિચારધારા સુનિયંત્રિત થઈ જાય છે ત્યારે " सुसंजमियमणहत्थपायनिहुय " તે મનનું નિયમન થતા જ પારકાનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવા માટે હાથ-પગની જે પ્રવૃત્તિ ચાલે છે તે પણ બંધ પડી જાય છે આ રીતે એ બન્ને વિશેષણોથી એ દર્શાવવામાં આવ્યું છે કે આ મહાવ્રતનું સેવન કરવાથી પરદ્રવ્ય લેવાને માટે મન, વચન અને કાયાની જે પ્રવૃત્તિ પહેલા ચાલતી હતી તે તદ્દન બંધ પડી જાય છે "अदत्तादानविरमणसंवर" આ દત્તાનુજ્ઞાત સંવર કેવું છે તે હવે કહે છે— "निग्गंथ" આ મહાવ્રતની આરાધનાથી બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિગ્રહ દૂર

नैष्ठिक=सर्वधर्मप्रकर्षपर्यन्तवर्ति, 'निरुत्त' निरुक्त-सर्वज्ञैरुपादेयत्वेन निरुक्तम्, अव्यभिचरित वा तथा-'निरासव' निराश्रव=कर्मादानरहितम्, 'निब्भय' निर्भय=नृपादिभयरहित 'विमुत्त' विमुक्त=लोभदोषादिरहितम्, तथा-'उत्तमनरवसभ-पवरबलवग-सुविहियजणसमय' उत्तमनरवृषभ-प्रवरबलवत्सुविहितजनसम्मतम्-उत्तमा=उत्कृष्टा ये नरवृषभाः-नरश्रेष्ठाः=जिनाः तथा-प्रवरबलवन्तः=चक्रवर्तिवासुदेवादयः, सुविहितजनाः=साधुलोकास्तेषां सम्मतम्=अभिमतं यत्तत्तथा तथा-'परमसाहुधम्मचरण' परमसाधुधर्मचरणं=परमसाधूनाम्=उत्कृष्टतपस्विनां धर्मचरणं=धर्मपालनम् यत्तत्तथा, एतादृशमिदं दत्तानुज्ञातसंवरद्वारम्। अत्र तृतीये

आभ्यन्तर परिग्रह दूर हो जाता है, अर्थात् यह व्रत बाह्य और आभ्यन्तर की ग्रन्थि से रहित होता है तथा (णेट्ठिय) समस्तधर्मों के प्रकर्ष पर्यन्त यह रहता है, एव (निरुत्त) सर्वज्ञ प्रभुने इसे उपादेयरूप से कहा है, अथवा यह अव्यभिचरित है, अर्थात् जितना भी सकल संयमी का धर्म है उसके साथ यह अविनाभावी है। (नीरासव) इसमें नवीन कर्मों का आदान नहीं होता है। (निब्भय) नृपादि का भय इसके आचरण में साधु को नहीं रहता है इसलिये यह निर्भय है। (विमुत्त) लोभ दोष आदि से यह रहित होता है। (उत्तमनरवसभ, पवरबलवग-सुविहियजणसमय) उत्कृष्ट जो नरवृषभ-जिनदेव हैं तथा बलदेव वासुदेव आदि जो प्रवरबलवत व्यक्ति है, तथा सुविहित-जन जो साधु लोक हैं, इन सब के लिये यह मान्य है। तथा (परमसाहुधम्मचरण) परमसाधुजनों-उत्कृष्टतपस्विजनों का यह धर्माचरणरूप हैं। (अदत्तादानविरमण) ऐसा यह दत्तानुज्ञातसंवरद्वार है। इस

થઇ જાય છે એટલે કે આ વ્રત બાહ્ય અને આભ્યન્તરની ગ્રન્થિથી રહિત હોય છે, તથા "णेट्ठिय" તે સમસ્ત ધર્મોનુ પ્રકર્ષપર્યન્ત છે, અને "निरुत्त" સર્વજ્ઞ પ્રભુએ તેને ઉપાદેયરૂપે બતાવ્યુ છે, અથવા તે અવ્યભિચરિત છે, એટલે કે સંયમીના જેટલા કર્તવ્યો છે તેની સાથે તે સુસંગત છે "निरासव" તેનાથી નવીન કર્મો બંધાતા નથી "निब्भय" તેને આચરવામા સાધુને નૃપાદિનો ભય રહેતો નથી તેથી તે નિર્ભય છે "विमुत्त" લોભ, દોષ આદિથી તે રહિત હોય છે "उत्तमनरवसभ, पवरबलवग-सुविहिय जणसमय" જે શ્રેષ્ઠ નરવૃષભ-જિનદેવ છે, તથા બળદેવ વાસુદેવ આદિ જે પ્રબળ બળવાન પુરુષો છે, તથા સુવિહિત જન જે સાધુલોક છે, તે સૌને માટે તે માન્ય છે તથા "परमसाहुधम्मचरण" જે પરમ સાધુજનો ઉત્કૃષ્ટ તપસ્વીજનોને માટે તે ધર્માચરણરૂપ છે, એવુ આ અદત્તાદાન વિરમણ-દત્તાનુજ્ઞાત સંવરદ્વાર છે આ

सवरे साधुभि किं कर्तव्यम् ? इत्याह–' जत्थ य ' यत्र च–तृतीयसवरद्वारे ' गामागर–नगर–निगम–खेड–कव्वड–मडव–दोणमुह–सवाह–पट्टणासमगय च =ग्रामाकर–नगरनिगम–खेट–कर्वट–मडम्ब–द्रोणमुख–सवाह–पत्तनाश्रमगत च–ग्रामाकरनगरनिगमखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखसवाहपट्टनाश्रमाणा व्याख्या पूर्वमुक्ताः, तद् गत च ' किंचिदव्व ' किंचिद्द्रव्य - किमपिद्रव्यम् , तदेवाह–'मणिमुत्त-सिलप्पवालकस – दूस–रयय – वरकणग – रयणमाइ ' मणिमुक्ताशिला–प्रवाल कास्य–दूष्य–रजत–वरकनक– रत्नादि– मणिः–पद्मरागादिः, मुक्ता=मुक्ताफल, ' शिला ' बहुमूल्यपाषाणखण्डम् , प्रवाल=विद्रुमः ' मूगा ' इति भाषाप्रसिद्ध , ' कस ' कास्य–' कासा ' इति प्रसिद्धम् ' ' दूष्य ' वस्त्रविशेषः, रजत='चान्दी' इतिभाषाप्रसिद्धावरकनक = धात्वन्तरापेक्षया श्रेष्ठ सुवर्ण, रत्न=कर्केतनादिकम् आदि यस्य तत्तथाभूत द्रव्य 'पडिय' पतित–वस्त्राञ्चलादेः, 'पम्हट्ठ' प्रस्मृत=कुत्रापि विस्मृत ' विप्पणट्ठ' विप्रणष्ट=गवेषकद्भिरपि न प्राप्तम् , तथाभूत मणिमुक्तादिक

तृतीय सवरद्वार में साधुजनो को क्या करना चाहिये इसके लिये सूत्र कार कहते हैं–(जत्थ य) इस तृतीय सवरद्वार में (गामागरनगर-निगमखेडकव्वड मडप दोणमुहसवाहपट्टणासमगय च) साधुजनों को ग्राम, आकर, नगर, निगम, खेट, कर्वट, मडम्ब, द्रोणमुख, सवाह, पट्टन, आश्रम, इन स्थानों में, रही हुई (किंचि दव्व) कुछ भी वस्तु (मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवरकणगरयणमाइ) मणि, मुक्ता, शिला, प्रवाल, कास्य, दूष्य–वस्त्रविशेष, रजत–चादी, सुवर्ण, रत्न आदि वस्तु (पडिय) किसी की गिर गई हो, (पम्हट्ठ) भूली हुई हो, (विप्पणट्ठ) ढूढने पर भी नहीं मिली हो, (न कप्पइ कस्सइ कहेउ वा गे-

તૃતીય સવરદ્વારમા સાધુજનોએ શુ કરવુ જોઈએ તે બતાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે–" जत्थ य " આ ત્રીજા સવરદ્વારમા ' गामागारनगरनिगम खेडकव्वड मडबदोणमुहसबाहपट्टणसमगय च " સાધુજનોએ ગ્રામ, નગર, આકર નિગમ, ખેટ, કર્બટ, મડમ્બ, દ્રોણમુખ, સવાહ, પટ્ટન, આશ્રમ, એ સ્થાનોમા રહેલી ' किंचि दव्व " કોઈ પણ વસ્તુ " मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवर कणगरयणमाइ " મણિ, મુક્તા, શિલા, પ્રવાળ, કાસ્ય, દૂષ્ય એક પ્રકારનુ વસ્ત્ર, રજત–આદિ, સુવર્ણ રત્ન આદિ વસ્તુઓ " पडिय " કોઇની પડી ગઈ હોય, " पम्हट्ठ " કોઇ ભૂલી ગયુ હોય, " विप्पणट्ठ " શોધવા છતા પણ જડી ન હોય, " न कप्पइ कस्सइ कहेउवा गेण्हेउवा " તેને લેવાનુ સયત કે અસ-

द्रव्य न 'फुसइ' स्पृशति मनागपि सयतोऽसयतस्य वा 'कहेउ' कथयितु वा, 'गे ण्हेउ' स्वय ग्रहीतु परेण ग्राहयितु वा 'न कप्पइ' न कल्पते, मार्गोनिवृत्तित्वात्। परद्रव्य दृष्ट्वा साधुना किं कर्तव्यम्, ? इत्याह-'अहिरण्णसुवण्णेण' अहिरण्य सुवर्णकेन=हिरण्यसुवर्णवर्जकेन 'समलेट्ठुकचणेण' समलेष्टुकाञ्चनेन=सम.= तुल्यः लेष्टु=मृत्खण्डं काञ्चन=सुवर्ण च उपेक्षणीयतया यस्य तेन तथोक्तेन= मृत्खण्डे सुवर्णे च समभाववतेत्यर्थः, 'अपरिग्गहसवुडेण' अपरिग्रहसवृतेन= नास्ति परिग्रहो यस्य सोऽपरिग्रहः, अत एव सवृत =ममत्वभावर्जितस्तेन तथो- क्तेन साधुना 'लोगम्मि' लोके मर्त्यलोके 'विहरियव्व' विहर्तव्यम्, साधु- भिरुक्तरीत्या विहरणीयमिति भावः ॥ सू० १ ॥

ण्हेउ वा) और न स्वय लेना चाहिये उसको सयत अथवा असयत से लेने के लिये नहीं कहना चाहिये। क्यों कि इस प्रकार की प्रवृत्ति मुनिमार्ग में कल्पित नहीं कही है। कारण कि साधु (अहिरण्णसुव्वण्णेण) हिरण्य और सुवर्ण इन सब से निवृत्तिवाला होता है साधु को न हिरण्य की चाहना होती है और न सुवर्ण की। (समलेट्ठुकचणेण) उसकी दृष्टि में तो उपेक्षणीय होने के कारण मृत्खड मिट्टी का ढेला और काचन दोनों बराबर होते ह। अर्थात् वह इन दोनो मे समभाव वाला होता है। (अपरिग्रहसवुडेण) इस तरह ममत्वभाव से वर्जित होने के कारण अपरिग्रह से युक्त होते हैं साधु को इस प्रकार का होकर इस लोक में विचरना चाहिये।

भावार्थ—ससार में निर्भय होकर विचरण करने के लिये सब से उत्कृष्ट साधन यदि कोई है कि जिससे लोगों की दृष्टि का आकर्षण हो

યતને કહેવુ ન જોઈએ, અને પોતે લેવી જોઇએ નહીં કારણ કે એવા પ્રકારની પ્રવૃત્તિ મુનીમાર્ગમા ઉચિત ગણાવી નથી કારણ કે સાધુ "अहिरण्ण सुव्वण्णेण" હિરણ્ય અને સુવર્ણ એ બધાની નિવૃત્તિ હોય છે સાધુને હિર ણ્યની ઇચ્છા હોતી નથી કે સુવર્ણની ઇચ્છા હોતી નથી "समलेट्ठुकचणेण" તેની દૃષ્ટિએ ઉપેક્ષા પાત્ર હોવાથી માટીનુ ઢેફુ અને કાચન બને સમાન છે એટલે કે બન્નેમા તે સમભાવવાળો હોય છે "अपरिग्गहसवुडेण" આ રીતે મમત્વભાવથી રહિત હોવાથી તે અપરિગ્રહી હોય છે સાધુએ એ પ્રકારે અપરિગ્રહવ્રત યુકત બનીને આ લોકમા વિચરવુ જોઈએ

ભાવાર્થ—સસારમા નિર્ભય થઈને ફરવાને માટે જો કોઇ સર્વશ્રેષ્ઠ સાધન હોય કે જેનાથી લોકોની દૃષ્ટિ આકર્ષાય અને સાધુત્વ પર વિશ્વાસ જામે તો

और साधुत्व पर वि वास–श्रद्धा जमे–तो वह एक अपरिग्रहत्व का ही सिद्धान्त है। इसमें अन्तरग और वहिरग, इन दोनो प्रकार के परिग्रह का सैधान्तिक दृष्टि से परित्याग होता है। साधु के पास निर्ग्रन्थ मुनि के पास इन दोनो प्रकार के परिग्रह का अभाव होता है। वाहिरी दृष्टि में जो कुछ उसके पास में है वह सब सयमधर्मोपकरण है, परिग्रह नहीं है। सूत्रकार ने यही वात साधु के लिये इस तृतीय सवरद्वार में समझाई है। पूर्व अध्ययन में–द्वितीय अध्ययन में मृषावाद का नौ कोटियों से साधु को जो त्याग करना कहा है वह तबतक पूर्णरूप से पालित नहीं हो सकता कि जवतक अन्तरग और वहिरग का त्याग नहीं हो जाता। अपरिमित अनत तृष्णाओं पर अङ्कुश करने वाली यही एक अपरिग्रहता है। मन, वचन और काय की परके द्रव्य को आदान (ग्रहण) करने की प्रवृत्ति पर रोक लगा देने वाली यही अपरिग्रहता है। इस अपरिग्रहता की छत्रच्छाया मे पलने वाला साधु नवीन कर्मों के वध से रहित हो जाता है, तथा सबका विश्वासपात्र बन जाता है। उसे किसी भी प्रकार का किसी का भय नहीं रहता है। ग्राम आकर आदि किसी भी स्थान मे भूली हुई, पडी हुई, रखी हुई, किसी भी तरह की वस्तु वह न स्वय लेता है और न दूसरो से उसे लेने को कहता है।

તે એક માત્ર અપરિગ્રહત્વનો સિદ્ધાત જ છે તેમા આતરિક તથા બાહ્ય એ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો સૈદ્ધાન્તિક દૃષ્ટિએ પરિત્યાગ થાય છે સાધુની પાસે નિર્ગ્રન્થ મુનિની પાસે આ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો અભાવ હોય છે બાહ્ય રીતે જોતા તેમની પાસે જે કઇ હોય છે તે બધુ સયમ ધર્મોપકરણ છે, પરિગ્રહ નથી, સૂત્રકારે એ જ વાત સાધુને માટે આ ત્રીજા સવરદ્વારમા સમજાવી છે આગળના અધ્યયનમા બીજા અધ્યયનમા મૃષાવાદનો નવ પ્રકારે ત્યાગ કરવાનુ સાધુઓને જે કહેવામા આવ્યુ છે તેનુ અતરગ તથા બહિરગ પરિગ્રહનો ત્યાગ ન થાય ત્યા સુધી પાલન થઇ શકતુ નથી અપરિમિત–અનત તૃષ્ણાઓ પર અકુશ રાખનાર આ એક અપરિગ્રહતા જ છે આ અપરિગ્રહતા જ, મન, વચન અને કાયાથી અન્યનુ દ્રવ્ય પડાવી લેવાની પ્રવૃત્તિ પર બ્રેક (અકુશ) નુ કામ કરે છે આ અપરિગ્રહતાની છત્રછાયામા રહેતો સાધુ નવા કર્મોના બધથી રહિત બની જાય છે તથા સૌને માટે વિશ્વાસપાત્ર બની જાય છે તેને કોઇનો પણ કોઇ પણ પ્રકારનો ભય રહેતો નથી ગ્રામ, આકર આદિ કોઇ પણ સ્થાનમા ભૂલથી રહેલી, પડી રહેલી, મૂકી રાખેલી કોઇ પણ પ્રકારની વસ્તુ તે પોતે લેતો નથી કે લેવાનુ બીજાને કહેતો નથી. આ વ્રતને લીધે

पुनर्मुनिकर्त्तव्यमाह—'जंपिय' इत्यादि—

मूलम्—जं पि य होज्जा हि दव्वजायं खलगयं खेत्तगयं रन्नमतरगयं वा किंचि पुप्फफलतयप्पवालकंदमूलतणकट्ठसक्कराइ अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा न कप्पइ उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हेउ। जे हणि हणि उग्गहं अणुण्णाविय गेण्हियव्वं वज्जेयव्वो य सव्वकालं अचियत्तघरप्पवेसो अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबल दंडग-रयहरण--निसेज्ज चोलपट्टग मुहपोत्तियपायपुंछणाइभायणभंडोवहिउवगरणं। परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेण जं च गेण्हेति, परस्स नासेइ जं च सुकयं दाणस्स य अंतराइयं, दाणविप्पणासो पेसुण्णं चेव मच्छरियं च ॥२॥

टीका—'जं पि य' यदपि च 'होज्जा' भवेत्, हि=निश्चितं 'दव्वजायं' द्रव्यजातं, तदेवाह= 'खलगयं' खलगतं=खलं धान्यराशीकरणभूमिस्तत्र गतं= स्थितं, तथा—'खेत्तगयं' क्षेत्रगतम्=क्षेत्रस्थितं 'रन्नमतरगयं' अरण्यान्तर्गतं= वनान्तः स्थितं वा 'किंचि' किञ्चित्=किमपि 'पुप्फफलतयप्पवालकंदमूल-

---

इस व्रत से साधु की आत्मा समस्त वस्तुओं में असारता के दर्शन कर लेने से ढेला और काचन में समान बुद्धि वाला बन जाता है ॥ सू-१ ॥

सूत्रकार पुनः मुनिजन के ही कर्तव्य को कहते हैं-'जंपि य' इ०

टीकार्थ—(जंपि य होज्जा हि दव्वजायं) जो कुछ भी द्रव्य हो चाहे व (खलगयं) खलिहान मे पड़ा हो चाहे (खेत्तगयं) खेत में पड़ा हो, या (रन्नमतरगयं वा) जंगल में पड़ा हो (किंचि)

સાધુનો આત્મા સમસ્ત વસ્તુઓમાં અસારતાનું દર્શન કરી લેવાથી સોનું અને માટીના ઢેફાને સમાન ભાવે જોનાર બની જાય છે ॥ સૂ૦ ૧ ॥

સૂત્રકાર ફરીથી મુનિજનનાં કર્તવ્યો જ દર્શાવે છે-"जंपि य" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"जंपि य होज्जा हि दव्वजायं" જે કોઈ પણ દ્રવ્ય હોય, ભલે તે "खलगयं" ખળામાં પડયું હોય ભલે "खेत्तगयं" તે ખેતરમાં પડયું હોય, "रन्नमतरगयं वा" જંગલની અંદર પડયું હોય "किंचि" ગમે તે

तणकट्ठसकराइ ' पुष्पफलत्वक् प्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्करादि, तत्र-पुष्प-फले प्रतीते, त्वक्=त्वचा, प्रवालोऽङ्कुरः, कन्दः=सूरणादिः, मूलम्=मूलकादि, तृण काष्ठं च प्रतीतम्, शर्कराः=' कंकर ' इति भाषा प्रसिद्धाः, एतान्यादौ यस्य तत्तथोक्त द्रव्यम् अप्प ' अल्प=स्तोक वा ' बहु ' बहु=प्रचुर वा ' अणु ' अणु= आकारेण सूक्ष्म वा ' थूल ' स्थूलम्-आकारेण बृहद् वा, तत् ' न कप्पइ ' न कल्पते ' उग्गहे ' अवग्रहे ' अदिण्णे ' अदत्ते तत्तद्वस्तुस्वामिनिदेशमप्राप्येत्यर्थः, ' गेण्हेउ ' ग्रहीतुम्, किन्तु ' जे ' यद् ग्राह्य भवेत्, तत् ' हणि हणि ' अहन्य-हनि=प्रतिदिनम् ' उग्गह ' अवग्रह-तत्स्वामिनिदेशम्, ' अणुण्णवि य ' अनु-ज्ञाप्य=प्राप्य ' गेण्हियव्व ' ग्रहीतव्यम्। तथा ' सव्वकाल ' सर्वकाल=सर्वदा ' अचियत्तघरप्पवेसो ' अप्रीतिकारकगृहप्रवेश " वज्जेयव्वो ' वर्जितव्य' तथा-

---

कुछ भी हो जैसे (पुप्फफलतयप्पवालकदमूलतणकट्ठसक्कराइ) चाहे वह वस्तु पुष्परूप में हो, फलरूप में हो, छालरूप में हो, प्रवाल-कोंपल रूप में हो, सूरण आदि कद रूप में हो, मूलक आदि रूप मे हो, तृण काष्ठ आदि के रूप हो चाहे ककर आदि के रूप में भी क्यों न हो । ये सब वस्तुएँ वहा (अप्प वा) थोड़ी हो या (बहु वा) बहुत हो (अणु वा) आकार से छोटी हो या (थूल वा) बडी हो, किसी भी तरह से वह इन वस्तुओ को (न कप्पइ उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हेउ) विना उनके मालिक की आज्ञाप्राप्त किये किसी भी रूप में लेना नही कल्पता है । तथा (जे) जो वस्तुएँ साधु के लिये ग्राह्य है वे भी (हणि हणि) प्रतिदिन (उग्गहे अणुणावि य) उनके स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर ही (गेण्हियव्व) ग्रहण करने योग्य हैं । तथा (वज्जेयव्वो य सव्वकाल

દ્રવ્ય હોય, " पुप्फफलतयप्पवालकदमूलतणकट्ठसक्कराइ " ભલે તે વસ્તુ પુષ્પરૂપે હોય, ફલરૂપે હોય, છાલરૂપે હોય, પ્રવાલ-કુપળના રૂપમા હોય, સૂરણ આદિ કદરૂપે હોય, મૂળ આદિ રૂપમા હોય, તૃણ કાષ્ઠ આદિરૂપે હોય, ભલે કાકરા આદિરૂપે હોય, તે બધી વસ્તુઓ ત્યા " अप्प वा" થોડી હોય કે "बहु वा " વધારે હોય, " अणु वा " કદમા નાની હોય કે " थूलग वा ' મોટી હોય, કોઈ પણ રીતે એ વસ્તુઓને " न कप्पइ उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हे उ " તેના માલિકની આજ્ઞા લીધા વિના કોઇ પણ રીતે તેને ગ્રહણ કરવાનુ મુનિને કલ્પતુ નથી તથા ' जे " વસ્તુઓ સાધુઓને ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તે પણ " हणिहणि " પ્રતિદિન " उग्गहे अणुणा वि य " તેમના માલિકની આજ્ઞા લઈને જ " गेण्हियव्व " ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તથા „ वज्जेयव्वो य सव्व

'अचियत्तभत्तपाण' अप्रतीतिकारकभक्तपान वर्जितव्यम्, अविश्वासभाजनस्य भक्तपान न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा-'अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबलदंडगरओहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइभायणभंडोवहिउवगरण' अप्रतीतिकारकपीठफलकशय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलदण्डकरजोहरणनिषद्याचोलपट्टकसदोरकमुखवस्त्रिका पादप्रोञ्छनादिभाजनभाण्डोपध्युपकरण वर्जितव्यम्, अविश्वासभाजनस्य पीढफलकादिकं न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा 'परपरिवाओ' परपरिवादः-काकवा परदोषप्रकटनम्, वर्जितव्य, 'परस्स' परस्य 'दोसो' दोषश्च वर्जनीय, परोक्षे निन्दा, प्रत्यक्षे दोषकथनम्, इत्युभय च

अचियत्तघरप्पवेसो) जो अपनी प्रतीति-विश्वास-नहीं करता हो उसके घर पर साधु को सर्वदा नहीं जाना चाहिये, तथा (अचियत्तभत्तपाण) जो अपनी प्रतीति नहीं करता हो उसके यहां से साधु को भक्तपान नहीं लेना चाहिये। इसी तरह (अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबल दंडगरओहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइ) जो व्यक्ति अपने ऊपर विश्वास नहीं रखता हो उसके द्वारा प्रदत्त-(दिया हुआ) पीठ, फलक, शय्या, सस्तारक, वस्त्र, पात्र, कम्बल, दण्डक,, रजोहरण, निपद्या, चोलपट्टक, सदोरकमुखवस्त्रिका, पादप्रोञ्छन आदि, तथा (भायणभंडोवहिउवगरण) भाजन, भाड, उपधि, ये सब उपकरण नहीं लेना चाहिये। (परपरिवाओ) तथा काकुरूप से साधु को पर के दोषों को प्रकट नहीं करना चाहिये। तथा (परस्सदोसो) परोक्ष में निंदा करना और साम्हने दोषों को कहना ये दोनों

काल अचियत्तघरप्पवेसो " જે પોતાનો વિશ્વાસ ન કરતો હોય, તેના ઘરે સાધુએ કદી જવું જોઈએ નહી, તથા "अचियत्तभत्तपाण" જે પોતાના પર વિશ્વાસ ન મૂકતો હોય તેને ત્યાંથી સાધુએ આહાર પાણી સ્વીકારવા જોઈએ નહીં એ જ રીતે "अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबलदंडगरओहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइ" જે વ્યક્તિ પોતાના પર વિશ્વાસ ન રાખતી હોય તેના દ્વારા અપાયેલ પીઠ, ફલક, શય્યા, સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાત્ર કબળ, દડક, રજોહરણ નિષદ્યા, ચોલપટ્ટક, દોરાસહિત મુહપત્તિ, પાદ પ્રોંછન આદિ તથા "भायणभंडोवहिउवगरण" ભાજન, (પાત્રા ભાડ, ઉપાધિ, એ બધા સાધનો લેવા જોઈએ નહી "परपरिवाओ" તથા કાગડાની જેમ સાધુઓએ બીજાના દોષો પ્રગટ કરવા જોઈએ નહીં તથા "परस्सदोसो" પરોક્ષ રીતે નિંદા કરવાની તથા સામે જ દોષો કહેવાની પ્રવૃત્તિ સાધુએ છોડવી

वर्जनीयम्। तथा-' परववएसेण ' परव्यपदेशेन बालग्लानादीनां निमित्तेन 'ज च' यच्च=अशनादिकं, 'गेण्हेइ' गृह्णाति=वैयावृत्त्यकारकः, तदन्यैर्नोपभोक्तव्यम्। बालग्लानादिनिमित्तमानीतं वस्तु यद्यवशिष्टं भवेत्, तथा तद् वस्तु स्वामिनिदेशेन सभोक्तव्यमित्यर्थः, ' परस्स ' परस्य तथा ' ज च ' यच्च ' सुकय' सुकृत= पुण्यादिकं ' नासेइ ' नाशयति, अपह्नुते, येन वचनादिना परकृतपुण्यादेरपह्नुतिर्भवति, तद् वर्जितव्यमित्यर्थः, तथा-' दाणस्स य ' दानस्य च ' अतराइय ' अन्तरायिकम्=येन वचनादिना दानान्तरायो भवेत्तद् वर्जनियम्, तथा-' दाणविप्पणासो ' दानविप्रणाशः-येन वचनादिना दानस्य विनाशो भवति, तद् वर्जनीयम्, तथा-' पेसुन्न चेव ' पैशुन्य=परोक्षे परदोषाविष्करणं 'चुगली' इति भाषा प्रसिद्धं चैव ' मच्छरित्त च ' मात्सर्यम्=ईर्ष्या च वर्जनीयम् ॥ सू०२ ॥

बातें भी साधु को छोड देनी चाहिये। तथा-(परववएसेण ज च गेण्हति) बाल ग्लान आदि के निमित्त से जो अशन आदि वैयावृत्यकारक साधु लाया होवे वह दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में नही लेना चाहिये। तात्पर्य इसका यह है कि बाल ग्लान आदि अवस्थापन्न साधुजन के लिये जो वस्तु लाई गई हो वह उनके उपयोग से यदि बच जाय तो वह उस वस्तु के स्वामी की आज्ञा लेकर ही दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में लानी चाहिये। तथा (परस्स ज च सुकय) जिस वचन से दूसरे के सुकृत आदि पुण्यकर्मो का अपह्नुव होता हो ऐसा वचन साधु को त्याग कर देना चाहिये। तथा (दाणस्स अतराइय) जिस वचन से दान में अतराय हो जावे तो ऐसा वचन भी नहीं कहना चाहिये। तथा (दाणविप्पणासो) जिस वचन से दान का विनाश होता हो ऐसा वचन भी नहीं बोलना चाहिये। तथा (पेसुण्ण) साधु को

જોઇએ તથા " परववएसेण ज च गेण्हति " બાલગ્લાન આદિને નિમિત્તે જે આહાર આદિ વૈયાવૃત્યકારક સાધુ લાવ્યા હોય તે બીજા સાધુઓએ પોતાના ઉપયોગમા લેવો જોઈએ નહી તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે બાલ ગ્લાન આદિ અવસ્થાપન્ન સાધુજનને માટે જે વસ્તુ લાવવામા આવી હોય તે તેઓએ વાપર્યા પછી વધે તો તે વસ્તુના માલિકની આજ્ઞા લઇને જ બીજા સાધુઓએ તેને પોતાના ઉપયોગમા લેવી જોઈએ તથા " परस्स ज च सुकय" જે વચનોથી બીજાના સુકૃત આદિ પુન્યકર્મોનો નાશ થતો હોય તેવા વચનો સાધુએ બોલવા જોઈએ નહી, એટલે કે તેવા વચનો બોલવાનુ સાધુએ બધ કરવુ જોઈએ તથા " दाणस्स अतराइय " જે વચનથી દાનમા અતરાય નડે એવા વચનો પણ કહેવા જોઈએ નહી તથા " दाणविप्पणासो " જે વચનોથી દાનનો વિનાશ થતો હોય તે વચનો પણ બોલવા જોઈએ નહી તથા "પેસુ

कीदृशो मुनिरिदं व्रत नाराधयती ? त्याह—' जे वि य ' इत्यादि—

मूलम्–जे वि य पीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबल दंडगरयहरणनिसेज्ज चोलपट्टगमुहपोत्तियपाय पुंछणाइ भायण भंडोवहिउवगरणं असंविभागी असंगहरुई, तवतेणे य वइतेणे य रूवतेणे य आयारतेणे य भावतेणे य सद्दकरे झंझकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकरे सया अप्पमाणभोई सययं अणुबद्धवेरे य निच्चरोसी से तारिसए नाराहए वयमिणं ॥ सू० ३ ॥

टीका—' जे वि य ' योऽपि च मुनिः ' पीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपाय-कंबलचोलपट्टगरयहरणमुहपोत्तियपायपुंछणाइभायणभंडोवहिउवगरणं ' पीठ-फलकशय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलचोलपट्टकरजोहरणमुखवस्त्रिकापादप्रोञ्छनादि-भाजनभाण्डोपध्युपकरणम्=एषणागुणविशुद्धिलब्धं पीठफलकादिकं लब्ध्वेति गम्यते, तस्य असंविभागी=अविभागकारी–आचार्यग्लानादिभ्यः पीठफलकादीन् अविभज्यैव स्वार्थबुद्धया स्वयमुपभोक्ता भवति स इदं व्रतं नाराधयतीत्यग्रेण

किसीकी चुगली नहीं करना चाहिये। तथा (मच्छरिय) साधु को इर्ष्या-भाव का भी परित्याग कर देना चाहिये ॥ सू–२ ॥

किस प्रकार का मुनि इस व्रत की आराधना नहीं कर सकता है इस बात को कहते हैं—' जे वि य ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(जे वि य) जो मुनि एषणागुण की विशुद्धि से प्राप्त पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक, वस्त्र, पात्र, कंबल, दंड, रजोहरण, निषद्या, चोलपट्टक, सदोरकमुखवस्त्रिका, पादप्रोञ्छन आदि, तथा भाजन, भांड, उपधि, इन सब उपकरणों को प्राप्त करके उनका विभाग

ण्ण" साधुએ કોઇની ચાડી કરવી જોઈએ નહી તથા "मच्छरिय" साधुએ ઈર્ષ્યાભાવનો પણ પરિત્યાગ કરવો જોઈએ ॥ સૂ–૨ ॥

કેવા મુનિ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતા નથી તે વાત હવે સૂત્ર કાર કહે છે—" जे वि य" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"जे वि य" જે મુનિ એષણા ગુણની વિશુદ્ધિથી પ્રાપ્ત થયેલ પીઠ ફલક, શય્યા સંસ્તારક, વસ્ત્ર, પાત્ર, કંબલ, દંડ રજોહરણ, નિષદ્યા, ચોલપટ્ટ, દોરા સહિતની મુહપત્તિ, પાદપ્રોંછન આદિ તથા ભાજન, ભાંડ, ઉપધિ એ બધા

सम्बन्धः। तथा-'असंगहरुई' असंग्रहरुचिः-न संग्रहे रुचिर्यस्य स तथोक्तः-गच्छोपग्रहकरस्य एषणादोषरहितस्य लभ्यमानस्य वस्त्रपात्रादिकस्य स्वार्थ-परायणत्वेन-'मम प्रचुरं वस्त्रपात्रादिकं विद्यते किमन्येषां चिन्तया' इति वि-चिन्त्य संग्रहबुद्धिवर्जित इत्यर्थः। अत्र मूर्छया संग्रहकरणं निषिद्धम्। तथा 'तव-तेणे' तपः स्तेनः=तपश्चौरः-यथा स्वभावतः कृशशरीरं कञ्चिदनगारं दृष्ट्वा कश्चित्पृच्छति-'भो मुने! यो मासक्षपणको मुनिः श्रूयते स भवानेव' तदा स स्वमानाद्यर्थमाह—'साधवः क्षपका एव भवन्ति' अथवा तूष्णीमास्ते, स तपः-

नहीं करता है-अर्थात् आचार्य, ग्लान आदि मुनिजनों को इन पीठ, फलक आदि का विभाग न करके स्वार्थबुद्धि से जो स्वयं इनका उप-भोक्ता होता है, वह साधु इस व्रत की आराधना नहीं कर सकता है। तथा (असंगहरुई) जिसकी संग्रह में रुचि नहीं होती है, अर्थात् जो साधु स्वार्थ में परायण होने के कारण इन पीठ फलक, वस्त्र, पात्र आदि उपकरणों को कि जो अपने गच्छ के उपकारक और एषणादोष से विशुद्ध हैं मिलते हुए भी इस भावना से कि मेरे पास तो ये वस्त्र पात्रादि उपकरण हैं मुझे दूसरों की चिन्ता से क्या काम है" इस विचार से संग्रह करने की बुद्धि से वर्जित होता है वह साधु इस व्रत का आराधक नहीं हो सकता है। मूर्च्छा भाव से ही संग्रह करने का निषेध है। तथा जो साधु (तवतेणे य) इसी तरह जो तपः स्तेन है, अर्थात् जैसे कोई साधू स्वभावतः कृश शरीर हो और कोई दूसरा इस प्रकार पूछे कि हे मुने! जो मास क्षपण आदि करने वाले तपस्वी मुनि-

ઉપકરણોને પ્રાપ્ત કરીને તેના વિભાગ કરતા નથી એટલે કે આચાર્ય, ગ્લાન આદિ મુનિજનોને માટે એ પીઠ, ફલક આદિના વિભાગ કર્યા વિના સ્વાર્થ બુદ્ધિથી પોતે જ તેનો ઉપભોગ કર્યા કરે છે, તે સાધુ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી તથા 'असंगहरुई" જેની સંગ્રહમાં રુચિ હોતી નથી, એટલે કે જે સાધુ સ્વાર્થ પરાયણ હોવાથી એ વસ્ત્ર, ફલક, પાત્ર, વસ્ત્ર, આદિ ઉપકરણો, કે જે પોતાના ગચ્છના ઉપકારક અને એષણાદોષથી રહિત છે તેની પ્રાપ્તિ થવા છતાં પણ "મારી પાસે તો આ વસ્ત્ર પાત્રાદિ ઉપકરણ છે મારે બીજાની ચિન્તા શા માટે કરવી જોઈએ?" એવી ભાવનાથી સંગ્રહ કરવાની બુદ્ધિથી રહિત થઈ જાય છે, તેવો સાધુ પણ આ વ્રતનો આરાધક થઈ શકતો નથી મૂર્છાભાવથી જ સંગ્રહ કરવાનો નિષેધ છે તથા જે સાધુ "तवतेणेय" એ જ રીતે તપચોર છે, દાખલા તરીકે કોઈ સાધુ સ્વાભાવિક રીતે જ દુબળા શરીર વાળો હોય અને તેને જોઈને બીજુ કોઈ એમ પૂછે કે-"હે મુનિ! માસખમણ આદિ કરનાર મુનિજન વિષે સાંભળવામાં આવ્યું

स्तेनः प्रोच्यते, 'वइतेणे' यत्र स्तेनः=वाक्चौरः-यथा-कश्चित् व्याख्यातार साधुमवलोक्य कश्चित् पृच्छति—'व्याख्यानवाचस्पति र्यः श्रुतः स भवानेव' इति पृष्टः स ब्रूते-'मुनयस्तादृशा भवन्त्येव' यद्वा मौनमास्ते, इत्येवं यः परस्य ख्याति स्वात्मनि स्थापयति स वाक्स्तेनः, 'रूवतेणे य' रूपस्तेनश्च=एतद्विषयेऽपि पूर्ववद्योजना कर्तव्या। तथा 'आयारे चेर' आचारे=साधुसमाचार्यादि

राज सुने जाते हैं वे आप ही हैं क्या? इस प्रकार सुनकर वह अपने मान के निमित्त ऐसा कहे कि साधु तो तपस्वी ही होते हैं, अथवा सुनकर चुप रहे, इस प्रकार से वर्तन करने वाला वह मुनि तपश्चोर-(तप का चोर) कहा जाता है। (तप का चोर) तपश्चोर-मुनि इस व्रत की आराधना करनेवाला नहीं होता है। इसी तरह (वइतेणे) व्याख्यान करते हुए किसी मुनिराज को देखकर कोई उससे इस प्रकार पूछे कि जो व्याख्यानवाचस्पति मुनिराज सुने जाते हैं वे आप ही हैं क्या? इस प्रकार सुनकर वह मुनिराज उसके समाधान निमित्त यह कह दे कि महानुभाव! मुनिजन तो व्याख्यानवाचस्पति ही होते हैं, अथवा कुछ न कह कर चुप रहे इस प्रकार का व्यवहार करनेसे वह मुनि वचन का चोर वचस्तेन माना जाता है, क्यों कि उसने पर की ख्यातिको अपनेमें स्थापित किया है, इस तरहसे पर कि ख्यातिको अपनेमें स्थापित करने वाला साधु वाक् चौर कहा जाता है। इसी तरह (रूवतेणे) रूपस्तेन की भी व्याख्या जान लेनी चाहिये, अर्थात्-विशिष्ट रूप

છે તે શુ આપ જ છો?" આ પ્રકારનો પ્રશ્ન સાભળીને તે પોતાના માનને માટે એવુ કહે કે "સાધુ તો તપસ્વી હોય જ છે" અથવા તે વાત સાભળીને મૌન રહે, એ પ્રકારનુ વર્તન કરનાર મુનિને તપચોર કહે છે તપચોર મુનિ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ રીતે "वइतेणे" વ્યાખ્યાન કરતા કોઈ મુનિરાજને જોઈને કોઇ તેમને આ પ્રમાણે પૂછે કે વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જે મુનિરાજ ગણાય છે તે શુ આપ જ છો? આ પ્રમાણે સાભળતા તેના સમાધાનને માટે એમ કહે છે કે "હે મહાનુભાવ! મુનિજન તો વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જ હોય છે" અથવા તેને કઈ પણ જવાબ ન આપતા ચૂપ રહે, એવા પ્રકારના મુનિને વચસ્તેન-વચનચોર કહેવાય છે, કારણ કે તેણે બીજાની ખ્યાતિનુ પોતાનામા આરોપણ કર્યું છે-આ રીતે પારકાની ખ્યાતિનુ પોતાનામા આરોપણ કરનાર સાધુને વચનચોર કહેવાય છે, એ જ પ્રમાણે "रूवतेणे" રૂપસ્તેન-રૂપચોરની વ્યાખ્યા પણ સમજવી એટલે કે વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત કોઇ સાધુની ખ્યાતિ સાભળીને કોઇ

विषये स्तेनः=चौरः,यथा=स यः 'उत्कृष्टाचारवान् साधुः श्रूयते, स भवानेव ?' तदा वक्ति 'साधुस्तु–उत्कृष्टाचारवान् भवन्त्येव' मौन वा समालम्बते इत्येवं स्वात्मनि अविद्यमानामुत्कृष्टाचारवत्ता स्थापयन्साधुराचारस्तेनो भवति, तथा– 'भावतेणे य' भावस्तेनश्च=भावस्य=श्रुतज्ञानादि विशेषस्य स्तेनः=चौरो भाव–

सपन्न किसी साधु की ख्याति सुनकर कोई रूपवान् मुनि से ऐसा पूछे कि महाराज ! जिनकी रूप में ख्याति हम सुन रहे हैं वे आप ही है क्या ? तो इस प्रकार की बात सुनकर वह ऐसा कहे कि साधुजन तो विशिष्टरूप शाली होते ही हैं, अथवा कुछ न कहे–चुपचाप रह जावे, तो "मौन सम्मतिलक्षण" के हिसाब से पर के विशिष्ट रूपशालित्व का अपने में आरोप करने की भावना से वह रूपस्तेन कहलावेगा। इस तरह जो साधु रूपस्तेन होता है वह इस व्रत को नहीं पाल सकता है। इसी तरह (आयारतेणे) जो साधु समाचारी आदिके विषयमें स्तेन होता है वह आचारस्तेन कहा जाता है. जैसे किसी साधुकी आचार विषय में उत्कृष्ट ख्याति सुनकर दूसरा कोई ऐसा पूछे कि भो मुने ! जिन साधु-राजकी आचार में विशेष ख्याति सुनी जाती हैं क्या वे आपही हैं ?, इस प्रकार सुनकर वह साधु प्रत्युत्तर रूप में ऐसा कहे कि महानुभाव! साधु तो उत्कृष्ट आचार वाले होते ही हैं, इस प्रकार कहने वाला साधु आचारस्तेन कहलाता है, क्यों कि इस तरह की स्थिति से उसने

માણસ કોઈ રૂપવાન મુનિને એવુ પૂછે કે "મહારાજ ! અમે રૂપને વિષે જેની ખ્યાતિ સાભળી છે તે મુનિ શુ આપ જ છો ?" આ પ્રકારની વાત સાભળીને તે એવુ કહે છે કે સાધુજન તો વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત હોય જ છે" અથવા કઈ પણ જવાબ ન આપે તો "મૌનને સમતિનુ લક્ષણ' માનીને બીજાના વિશિષ્ટ રૂપનુ પોતાની અદર આરોપણ કરવાની ભાવનાથી તે રૂપચોર કહેવાય છે આ રીતે જે સાધુ રૂપચોર હોય છે તે આ વ્રતને પાળી શકતો નથી આ રીતે "आयारतेणे" જે સાધુ સમાચારી આદિ બાબતમા ચોર હોય છે તે આચાર ચોર કહેવાય છે જેમ કે કોઈ સાધુની આચારની બાબતમા ઉત્કૃષ્ટ ખ્યાતિ સાભળીને બીજી કોઈ વ્યક્તિ તેને એવુ પૂછે કે "હે મુનિ ! જે મુનિરાજની આચારમા ખાસ ખ્યાતિ સભળાય છે, તે શુ આપ પોતે જ છો ?" આ પ્રમાણે સાભળીને જે મુનિ એવો પ્રત્યુત્તર વાળે કે મહાનુભાવ ! સાધુઓ તો ઉત્કૃષ્ટ આચારવાળા જ હોય છે" આમ કહેનાર સાધુને આચારચોર કહેવાય છે કારણ કે આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમા તેણે પોતાનામા જે

स्तेनः, कस्यापि श्रुतविशेषस्यापूर्वं व्याख्यानं कस्यापि मुखादुपश्रुत्य जनसमक्षे स्वकीयत्वेन तद्व्यापयन् साधुर्भावस्तेन उच्यते। तथा यः साधु 'सद्दकरे' शब्दकरः=प्रहररात्रिगमनानन्तरं यो महता महता शब्देन भाषते स शब्दकर उच्यते। 'झंझकरे' झञ्झाकरः=येन कार्येण गणस्य भेदो भवति तत्कार्यकारी 'कलहकरे' कलहकरः=वाचिकभण्डनकारी 'वेरकरे' वैरकर=परस्परशत्रुभावोत्पादक, तथा-'विकहकरे' विकथाकरः=स्त्र्यादिकथाकारी, 'असमाहिकारगे' असमाधिकारकः=स्वपरचित्तोद्वेगकारकः, तथा-'सया' सदा 'अप्पमाणभोई'

अपने में अविद्यमान उत्कृष्ट आचारवत्ता स्थापित की है अतः जो ऐसे आचारस्तेन होते है उनसे इस महाव्रत की आराधना नहीं हो सकती है, (भावतेणे) जो श्रुतज्ञान आदि भाव की चोरी करता है वह भावस्तेन कहलाता है, जैसे किसी के मुख से किसी साधु का श्रुत विशेषसंबंधी अपूर्व व्याख्यान सुनकर कहता है कि यह व्याख्यान तो मेरा ही दिया हुआ है, इस प्रकार का भावस्तेन साधु भी इस महाव्रतकी आराधना नहीं कर सकता है। इसी तरह (सद्दकरे) जो साधु एक प्रहर रात्रि के चले जाने के बाद बड़े जोर २ से बोलता है उसका नाम शब्दकर है। (झंझकरे) जिस कार्य से गण में भेद हो जाय उस काम को करने वाला साधु झञ्झाकर है। (कलहकरे) आपस में जो वाक्कलह कर बैठता हे उसका नाम कलहकर है, (वेरकरे) परस्पर में जो शत्रुता का उत्पादक होता है वह वैरकर है, (विकहकरे) स्त्री आदि विकथाओं को करनेवाला साधु विकथाकर है, (असमाहिकरे)

અવિદ્યમાન છે તે ઉત્કૃષ્ટ આચારવત્તાનુ આરોપણ કર્યું છે તેથી જે સાધુઓ એવા આચાર ચોર હોય છે તેમનાથી આ મહાવ્રતની આરાધના થઇ શકતી નથી "भावतेणे" જે શ્રુતજ્ઞાન આદિ ભાવની ચોરી કરે છે તે ભાવચોર કહેવાય છે જેમ કે કોઇના મોઢે કોઇ સાધુનુ કોઈ શાસ્ત્ર સ બ ધી અપૂર્વ વ્યાખ્યાન સાભળીને જે સાધુ એમકહે કે આ વ્યાખ્યાન તો મે જ આપેલુ છે" આ પ્રકારનો ભાવચોર સાધુ પણ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ પ્રમાણે "सद्दकरे" શબ્દકર-જે સાધુ એક પ્રહર રાત્રિ પસાર થયા પછી ઘણા જોરથી બોલે છે તેને શબ્દકર કહે છે, "झझकरे" જે કાર્યથી સમૂહમા ભેદભાવ થાય તે કાર્ય કરનાર સાધુ ઝઝાકર કહેવાય છે, "कलहकरे' આપસમા જે વાક્કલહ કરી બેસે છે તેને કલહકર કહે છે, "वेरकरे' આપસમા જે વેર પેદા કરાવનાર હોય તે વેર કર કહે છે, "विकहकरे" સ્ત્રી આદિ વિકથાઓ કરનાર સાધુને વિકથાકર કહે

अप्रमाणभोजी=द्वात्रिंशत्कवलाधिकाहारी, 'सयय' सतत=निरन्तरम् 'अणुबद्ध-वेरे' अनुबद्धवैरः=अव्याच्छिन्नवैरभाव, च=पुनः 'निच्चरोसी' नीत्यरोषी=सदाकोपशीलः, 'से तारिसए' स तादृशः साधुः 'नाराहए' नाराधयति 'इण' इदम्=पूर्वोक्त, व्रतम्= दत्तादानविरतिस्वरूपम् ॥ सू० ३ ॥

क पुनरिद व्रतमाराधयितु समर्थः? इत्याह—'अह केरिसए' इत्यादि–

मूलम्–अह केरिसए पुणाई आराहए वयमिणं? जे से उवहि भत्तपाणसगहणदाणकुसले अच्चंत बाल दुब्बल गिलाण वुड्ढखवगपवत्तयआयरिय उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सिकुलगणसघे य चेइयट्ठे निज्जरट्ठी वेयावच्च अणिस्सिय दसविह बहुविहं करेइ, नय अवियत्तस्स घरं पविसइ, न य अवियत्तस्स भत्तपाण गिण्हइ, न य अवियत्तस्स सेवइ पढिफलग--सेज्जा- सथारग- वत्थपाय-कबल--दडगर-ओहरण-निसज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुछणाइ -- भायण

अपने और पर के चित्त में उद्वेगभाव पैदा कर देने वाला साधु असमाधिकारक है, (सया अप्पमाणभोई) सदा बत्तीसग्रास से अधिक भोजन करने वाला साधु अप्रमाणभोजी कहलाता है (सयय अणुबद्ध-वेरे य) जिसका वैर भाव कभी भी शान्त न हो वह साधु सततानुबद्ध वैर कहलाता है, (निच्चरोसी) जो नित्य ही कुपित स्थिति में रहता है वह नित्यरोषी कहलाता है। (से तारिसए) इस प्रकार तपस्तेन आदि विशेषणवाला साधु (इण वयनाराहए) इस महाव्रत की आराधना नहीं कर सकता है ॥ ३ ॥

છે, "असमाहिकरे" પોતાના તથા અન્યના ચિત્તમા ઉદ્વેગ પેદા કરનાર સાધુને અસમાધિકારક-કહે છે, "सया अप्पमाणभोई" સદા બત્રીશ કોળિયા કરતા વધારે આહાર લેનાર સાધુને અપ્રમાણ ભોજી કહે છે, "सयय अणुबद्धवेरेय" જેની વેર ભાવના કદી પણ શાન્ત ન થાય તે સાધુને સતતાનુબદ્ધ વૈર કહેવાય છે, "निच्चरोसी" જે હમેશા ક્રોધમા જ રહે છે તેને નિત્યરોષી કહે છે, "से तारिसए" આ રીતે તપચોર આદિ વિશેષણો વાળો સાધુ "इणवय नाराहए" આ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી ॥ ૩ ॥

अंडोवहिउवगरण, नय परिवाय परस्स जंपइ, न यावि दोसे परस्स गेण्हइ, पर ववएसेण वि न किंचि गेण्हइ, ण य वि परिणामइ कंचिजणं, ण यावि णासेइ दिण्णसुकयं, दाऊण य काऊण य ण होइ, पच्छातावेए, संविभाग-सीले, संगहो वग्गहकुसले, से तारिसए आराहेइ वयमिणं ॥ सू०४ ॥

टीका—'अह' अथेति प्रश्ने, 'केरिसए' कीदृशः साधुः 'पुणाइ' 'वयमिण' व्रतमिदम्=अदत्तादानविरमणरूपमिदं व्रतम्, 'आराहए' आराधयति ? इति प्रश्ने सति साह—'जे से' यः सः 'उवहिभत्तपाणसंगहणदाणकुसले' उपधिभक्तपानसंग्रहणदानकुशलः=तत्र उपधि.=वस्त्रपात्रादिः, भक्तपाने प्रसिद्धे तेषा संग्रहणे=आदाने साधर्मिकेभ्यो दाने च कुशलो विधिज्ञो मुनिः। 'अच्चंतबाल दुब्बलगिलाणवुड्ढ खवगपवत्तय आयरिय उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सि कुल गण संघे य' अत्यन्त बालदुर्बलग्लानवृद्धमासक्षपकप्रवर्त्तकाचार्योपाध्याये शैक्षे-

अथ सूत्रकार इस महाव्रत की आराधना करने के लिये कैसा साधु समर्थ हो सकता है ? यह कहते हैं-'अह केरिसए' इत्यादि०।

टीकार्थ (अह केरिसए पुणाई वयमिण आराहए ?) कैसा साधु इस अदत्तादानविरमणरूप महाव्रत की आराधना कर सकता है ? इसके उत्तर में कहते हैं (जे से) जो साधु (उवहिभत्तपाण संगहणदाण कुसले) उपधि वस्त्र पात्र आदि, एव भक्तपान, इनको अपने साधर्मिक साधुओं के लिये लेने में और उन्हें इन वस्तुओं के देने में कुशल-विधिज्ञ-होता है, तथा (अच्चतबालदुब्बलगिलाणवुड्ढखवगपवत्तय आयरियउवज्झाए) जो संघ में अत्यंत बाल हैं--आठ वर्ष के

હવે આ મહાવ્રતની આરાધના કરવાને માટે કેવો સાધુ સમર્થ હોઇ શકે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે "अह केरिसए" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-"अह केरिसए पुणाईवयमिण आराहए?" કેવો સાધુ આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકે છે? તેના જવાબમાં સૂત્રકાર કહે છે-"जे से" જે સાધુ "उवहिभत्तपाणसगहणदाणकुसले" ઉપધિ, વસ્ત્ર, પાત્ર આદિ અને આહાર પાણી, પોતાના સાધર્મિક સાધુઓને માટે લેવામાં અને તેમને તે વસ્તુઓ દેવામાં કુશળ-વિધિજ્ઞ-હોય છે, તથા "अच्चतबाल दुब्बलगिलाणवुड्ढखवगपवत्तयआयरियउवज्झाए" જે જે સંઘમાં અત્યંત બાળ છે-આઠ વર્ષના બાળ સાધુ છે, તથા જે દુર્બલ છે-કમજોર હોવાથી

साधर्मिके तपस्विकुलगणसङ्घे, तत्र अत्यन्तबालः=चतुरष्टवर्षीयो बालः, अत्यन्त दुर्बलः=कृशाङ्गत्वेन स्वकार्यकरणाक्षमः, 'गिलाण' ग्लान=व्याध्यादिना भिक्षाटनादावसमर्थ, 'वुड्ढ' वृद्धः=स्थविर ज्ञानवृद्धः, पर्यायवृद्ध, वयोवृद्धश्च, 'खवग' क्षपकः=मासक्षपणाद्युग्रतपःकारित्वेन प्रवचनप्रभावकः, 'पवत्तय' प्रवर्त्तकः-प्रशस्तयोगेषु यथायोग्यतया साधून् प्रवर्त्तयतीति प्रवर्त्तक, आचार्यः=गणनेता-यो हि शास्त्रानुसारेण स्वयमाचरति, अन्यांश्चाचारयति स आचार्य, तदुक्तम्-

"आचिनोति च शास्त्राणि, आचारं ग्राहयत्यपि।

स्वयमाचरते यस्मात्तस्मादाचार्य उच्यते" इति।

उपाध्याय'-उप-समीपे आगतान्=शिष्यान् सूत्रार्थमध्यापयति यः स उपाध्याय', एतेषां समाहारद्वन्द्वः, तस्मिन्, तथोक्ते, तथा 'सेहे' शैक्षे=नव-दीक्षिते साधौ, तथा-'साहम्मिए' साधर्मिके=श्रुतलिङ्गप्रवचनैः समानश्रद्धावान्

बालक साधु हैं तथा जो दुर्बल हैं—कम जोर होने से जो अपने कार्य करने में अक्षम है, जो ग्लान हैं-व्याधि आदि के निमित्त को लेकर जो भिक्षावृत्ति आदि करने में असमर्थ हैं, जो वृद्ध है-स्थविर-जरा से जर्जरित शरीर वाले ह ज्ञान की अपेक्षा दीक्षापर्याय की अपेक्षा और आयु की अपेक्षा जो वृद्ध-बडे हैं, जो क्षपक हैं मासक्षपक आदि उग्र तपस्या करनेवाले हैं, जो प्रवर्तक हैं-प्रशस्त-योगोंमें साधुजनो को उनकी योग्यता के अनुसार प्रवृत्ति कराने वाले हैं,-जो आचार्य हैं-गण के नेता हैं-अर्थात्-साधु संबधी आचार को जो स्वयं पालते हैं, और दूसरे साधुओं से पलाते हैं, जो उपाध्याय हैं-अपने पासमें आये हुए साधुओं को-शिष्यजनों को जो सूत्र पढाते हैं, जो (सेहे) शिष्य हैं-नव दीक्षित साधुजन हैं, जो (साहम्मि) साधर्मिक हैं-श्रुत लिङ्ग और प्रवचन-प्ररूपणा इनको लेकर जिनकीश्रद्धा समान है जो

જે પોતાના કામ કરવાને અસમર્થ છે, જે ગ્લાન છે વ્યાધિ આદિ ને કારણે જે ભિક્ષાવૃત્તિ આદિ કરવાને અસમર્થ છે, જે વૃદ્ધ છે-સ્થવિર-જરાને કારણે જર્જરિત શરીરવાળા છે, જ્ઞાનની અપેક્ષાએ, દીક્ષા પર્યાયની અપેક્ષાએ અને આયુની અપેક્ષાએ જે વૃદ્ધ મોટા છે, જે ક્ષપક છે માસખમણ આદિ ઉગ્ર તપસ્યા કરનાર છે, જે પ્રવર્તક છે-પ્રશસ્ત યોગોમાં સાધુજનોને તેમની યોગ્યતા અનુસાર પ્રવૃત્તિ કરાવનાર છે, જે આચાર્ય છે—ગણના નેતા છે એટલે કે સાધુના આચારોને જે જાતે પાળે છે અને બીજા સાધુઓ પાસે પળાવે છે, જે ઉપાધ્યાય છે—પોતાની પાસે આવેલા સાધુઓને-શિષ્યજનોને જેઓ સૂત્રો ભણાવે છે, જે "સેહે" શિષ્યો છે—નવદીક્ષિત સાધુઓ છે, જે "સા-

साधर्मिक उच्यते, तस्मिन्, तथा–'तवस्सि कुलगणसंघे य' तपस्विकुलगणसंघे च, तत्र–तपस्वी=विकृति वर्जक, चतुर्थभक्तादिकारी वा, कुलम् = एकगुरुकशिष्य-समुदायरूपम्, गण'=कुलसमुदाय',संघः=गणसमुदायरूपः, एतेषां समाहारद्वन्द्वः, तस्मिंस्तथोक्ते च, अत्र सर्वत्र विषयार्थे सप्तमी, तेन तद्विषयक मित्यर्थः, 'चेइयट्ठे' चैत्यार्थ –चेत्य=ज्ञान 'चिती संज्ञाने' इत्यस्मात् सम्पदादित्वाद् भावे क्विपि 'चित्' सज्ञान सम्यग्ज्ञान, चिदेव चैत्य, स्वार्थे ष्यञ्, तदेव अर्थः–प्रयोजन यस्य स तथोक्त. सम्यग् ज्ञानाभि लाषीत्यर्थः तथा–'निज्जरट्ठी' निर्जरार्थी–

(तवस्सिकुलगणसंघे य) तपस्वी हैं–विकृति (विगय) के त्यागी हैं अथवा चतुर्थ भक्त आदि तपस्याओं के करने वाले हैं, तथा जो एक ही गुरु के शिष्यों का समुदाय है वह कुल है, कुल के समुदाय का नाम गण है, गणसमुदाय को सघ कहते हैं सो इन सबकी (चेइयट्ठे) सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति का अभिलाषी तथा (निज्जरट्ठी) कर्मो की निर्जरा का इच्छुक मुनि (अणिस्सिय) इहलोक और परलोक सबंधी आकांक्षा रहित होकर (दसविह) दश प्रकार की (बहुविह) भक्त-पान आदि विविध प्रकार से (वेयावच्च करेइ) वैयावृत्त्य करता है– उनकी सहायता करता है वह इस महाव्रतको पाल सकता है।

यहां जो 'चेइयट्ठे' पद आया है उसकी छाया 'चैत्यार्थ' ऐसी है। सज्ञानार्थक चित् धातु से "सपदादित्वात्" इस सूत्र द्वारा भाव में क्विप्' प्रत्यय होने पर चित् ऐसा शब्द बन जाता है, इस का अर्थ सज्ञान–सम्यग्ज्ञान–होता है। फिर स्वार्थ में 'ष्यञ्' प्रत्यय होने पर

ध्म्मि" સાધર્મિક છે, જે "तवस्सि कुलगणसंघे य" તપસ્વી છે, વિકૃતિ–"विगय" ના ત્યાગી છે, અથવા ચતુર્થભક્ત આદિ તપસ્યા કરનાર છે, તથા જે એક જ ગુરુનો શિષ્ય સમુદાય "कुल" છે, કુલના સમુદાયને ગણ કહે છે, ગણના સમુદાયને સંઘ કહે છે તો એ સૌની "चेइयट्ठे" સમ્યકજ્ઞાનની પ્રાપ્તિના અભિલાષી તથા "निज्जरट्ठी" કર્મોની નિર્જરા માટે ઉત્સુક મુનિ 'अणिस्सिय" આલોક અને પરલોક સબંધી આકાંક્ષા રહિત થઈને "दसविह" દસ પ્રકારની "बहुविय" આહાર પાણી આદિ વિવિધ પ્રકારે "वेयावच्च करेइ" વૈયાવૃત્ય કરે છે–તેમની જે સાધુ સહાયતા કરે છે તે આ મહાવ્રત પાળી શકે છે

અહીં જે "चेइयट्ठे" પદ આવ્યું છે તેની છાયા "चैत्यार्थ" છે સંજ્ઞાનાર્થક 'चित्' ધાતુથી "क्विप्" પ્રત્યય લાગતા 'चित्' એવો શબ્દ બની જાય છે, તેનો અર્થ સજ્ઞાન–સમ્યગ્ જ્ઞાન–થાય છે છતા સ્વાર્થમાં 'ष्यञ्' પ્રત્યય લાગતા ચૈત્ય શબ્દ સિદ્ધ થઈ જાય છે તો ચિત્ જ ચૈત્ય છે એવો

कर्मनिर्जराभिलाषी, 'अणिस्सिय' अनिश्रितं=कीर्त्यादिनिरपेक्षम् इहलोकपरलोकाद्याशंसारहितमित्यर्थः, 'बहुविह' बहुविधम् = भक्तपानादिभिर्बहुप्रकारक, 'दसविह' दशविध आचार्यादिदशविधस्थानक, 'वेयावच्च' वैयावृत्य=भक्तपानादिभिः साहाय्य 'करेइ' करोति ।

ननु अत्यन्तबालदुर्बलादि सङ्क्रान्ताना चतुर्दशाना वेयावृत्त्यस्थानतया प्रथम-

---

चैत्य शब्द सिद्ध हो जाता है-तब चित् ही चैत्य है ऐसा अर्थबोध होता है। यह चैत्य-सम्यग्ज्ञान-ही जिसका प्रयोजन है वह चैत्यार्थ है, इस प्रकार का अर्थ होने से इसका तात्पर्य यह होता है कि जो साधु सम्यग्ज्ञ,न की अभिलाषा वाला है। "अणिस्सिय" यह पद क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। जिसका साराश,है कि वह साधु इन बाल आदि मुनिजनों का वैयावृत्त्य करते समय यह भावना न रखे कि मुझे कीर्ति आदि की प्राप्ति अथवा इहलोक सबधी सुखों आदि की प्राप्ति इनकी सेवा करने से होगी। "बहुविध" यह वैयावृत्य का विशेषण है जो यह कहता है कि वैयावृत्य तप भक्तपान आदि से अनेक प्रकार का है। शास्त्रों मे वैयावृत्य के भेद दस कहे हैं। कारण आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, साधर्मिक, कुल,गण और सघ ये दस स्थान सेवाके हैं। इसलिये इनकी सेवा रूप यह वैयावृत्य भी दश प्रकार का कहा गया है।

शका—इस "अच्चतबाल" आदि पद में तो अत्यतबाल से

અર્થબોધ થાય છે તે ચૈત્ય-સમ્યગ્ જ્ઞાન જ જેનુ પ્રયોજન છે તે ચૈત્યાર્થ છે, તે પ્રકારનો અર્થ થવાથી તેનુ તાત્પર્ય તે થાય છે કે જે સાધુ સમ્યગ્ જ્ઞાનની અભિલાષા વાળા છે "अणिस्सिय" આ પદ ક્રિયાવિશેષણના રૂપમા વપરાયુ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે તે સાધુ તે બાલ આદિ મુનિઓનુ વૈયાવૃત્ય કરતી વખતે એવી ભાવના ન રાખે કે મને કીર્તિ આદિની પ્રાપ્તિ અથવા આલોક તથા પરલોક સબધી સુખોની પ્રાપ્તિ તેમની સેવાથી થશે "बहुविध" તે વૈયાવૃત્યનુ વિશેષણ છે જે એ બતાવે છે કે વૈયાવૃત્ય તપ આહાર પાણી આદિ અનેક પ્રકારના છે શાસ્ત્રોમા વૈયાવૃત્યના દસ ભેદ બતાવ્યા છે કારણ કે આચાર્ય, ઉપાધ્યાય, સ્થવિર, તપસ્વી, શૈક્ષ, ગ્લાન સાધર્મિક, કુલ, ગણ અને સઘ એ દશ સેવાના સ્થાન છે તેથી તેમની સેવારૂપ આ વૈયાવૃત્ય પણ દશ પ્રકારનુ કહેલ છે

શકા—આ "अच्चतबाल" આદિ પદમા અત્યત બાળથી લઈને સઘ

युक्तत्वात् दशविधं वैयावृत्यमिति कथनं कथं न विरुध्यते? अत्रोच्यते वैयावृत्यस्य स्थानं दशविधं व्याख्याप्रज्ञप्ति (श. २५ उ. ७) व्यवहारसूत्र, उ. १०) आगमेषु सर्वत्र प्रसिद्धं, तत्रैव तद्बहिर्भूतानामन्तर्भावः, तथाहि—अत्यन्तबाल दुर्बलयोर्ग्लानेसमावेशः, तयोस्तत्संनिहितत्वेनोक्तत्वात् भक्तपानानयनाद्यक्षमत्वेन तत्साद्दश्याच्च। क्षपक-प्रवर्त्तकयोराचार्ये सन्निवेशः, तयोस्तत्संनिहितत्वेनोक्तत्वात्

लेकर संघ तक चौदह वैयावृत्य के स्थान होते हैं अतः वैयावृत्य के स्थान होने से वैयावृत्य भी चौदह प्रकार का ही होना चाहिये फिर यहां जो उसमें दश विधता प्रकट की है सो यह कथन परस्पर में क्या विरुद्ध नहीं है? अवश्य विरुद्ध है।

उत्तर—शंका ठीक है, परन्तु विचार करने पर इसका समाधान अच्छी तरह से हो जाता है-वैयावृत्य के ये दशप्रकार के ही स्थान व्याख्याप्रज्ञप्ति (श. २५ उ. ७) व्यवहारसूत्र (उ १०) आदि आगमों में सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। इनमें ही इनसे बहिर्भूत भेदों का अन्तर्भाव हो जाता है। जैसे जो साधु अत्यन्तबाल एवं दुर्बल हैं इन दोनों का समावेश ग्लान साधुओं में हो जाता है क्यों कि ये उन्हीं जैसे होते हैं इसीलिये उनका पाठ उनके साथ रक्खा है। जिस प्रकार ग्लान साधु भक्तपान आदि के लाने में असमर्थ होता है उसी प्रकार से ये भी हैं। इस तरह इनमें परस्पर मे सदृशता आने से इन दोनों का समावेश ग्लान में हो जाता है। इसी तरह से जो क्षपक और प्रवर्त्तक हैं उनका

સુધી વૈયાવૃત્યના ચૌદ સ્થાનો થાય છે, તો તે બધા વૈયાવૃત્યના સ્થાન હોવાથી વૈયાવૃત્ય પણ ચૌદ પ્રકારના થવા જોઈએ છતા અહીં તેના દસ પ્રકાર બતાવ્યા છે તો તે કથન શું પરસ્પરમા વિરોધાભાસ દર્શાવતુ નથી? અવશ્ય વિરોધાભાસ દર્શાવે છે

ઉત્તર--શંકા બરાબર છે પણ વિચાર કરતા તેનુ સારી રીતે સમાધાન થઈ જાય છે વૈયાવૃત્યના એ દશ પ્રકારના જ સ્થાન વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ (શ ૨૫ ઉ-૭) વ્યવહારસૂત્ર (ઉ-૧૦) આદિ આગમોમા સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે તેમનામાજ તેમનાથી બાહ્ય ભેદોનો સમાવેશ થઈ જાય છે જેમ કે જે સાધુ અત્યત બાલ અને દુર્બળ છે તે બન્નેનો સમાવેશ ગ્લાન સાધુઓમા થઇ જાય છે, કારણ કે તેઓ તેમના જેવા જ હોય છે તેથી તેમનો પાઠ તેમની સાથે રાખ્યો છે જેમ ગ્લાન સાધુ આહાર પાણી આદિ લાવવાને અસમર્થ હોય છે તેમ તેઓ પણ અસમર્થ છે એજ રીતે તેઓની વચ્ચે પરસ્પરમા સમાનતા આવવાથી તે બન્નેનો સમાવેશ 'ગ્લાન' મા થઈ જાય છે, એ જ રીતે જે

प्रवचनप्रभावकत्वेन तत्सादृश्याच्च। एवं च वैयावृत्त्यस्य-आचार्यादि स्थानभेदेन दशविधत्वकथनमविरुद्धम्।

यत्तु-'चेइयट्ठे' इत्यस्य व्याख्यानम्-" चैत्यानि=जिनप्रतिमा, एतासां योऽर्थः=प्रयोजनं यस्य स तथा, तत्र " इति टीकान्तरे लभ्यते तद्भ्रान्तिमूलकम्, वैयावृत्त्यस्य जिन प्रतिमा प्रति विधानाभावात्। जिनप्रतिमाया अपि वैयावृत्त्य स्वीकारे व्याख्याप्रज्ञप्त्याद्यागमेषु वैयावृत्त्यस्य दशविधत्वप्ररूपणं विरुध्यते-तद्ग्रहणेन वैयावृत्त्यस्यैकादशसंख्याऽति प्रसङ्गात्।

अन्तर्भाव आचार्य में कर दिया जाता है। जिस प्रकार आचार्य प्रवचन के प्रभावक होते हैं उसी प्रकार से ये दोनो भी होते हैं, अतः उनके जैसे इन्हें प्रभावक होने से परस्पर में इनमे सदृशता आ जाती है यही बात प्रकट करने के लिये सूत्रकार ने इन दोनों का पाठ आचार्य के पास रखा है। इस तरह से विचार करने से वैयावृत्य के स्थान दस ही प्रकार के सिद्ध होते हैं, इसलिये इनके भेद से वैयावृत्य में दश-विधत्व कथन विरुद्ध नहीं है ऐसा जानना चाहिये।

तथा-जो "चेइयट्ठे" इस पदका व्याख्यान-" चैत्याना अर्थः प्रयोजनम् यस्य सः चैत्यार्थः" चैत्य जिन प्रतिमा है प्रयोजन जिसको ऐसा साधु" ऐसा कहते हैं-उनका यह व्याख्यान भ्रान्ति मूलक है। कारण जिन प्रतिमा के प्रति वैयावृत्य करने का विधान नहीं है। यदि यह विधान माना जावे तो फिर व्याख्याप्रज्ञप्ति आदि आगमो में जो वैया-वृत्य के ये पूर्वोक्त दश भेद माने गये हैं उनमें विरोध आता है, क्यों

ક્ષપક અને પ્રવર્તક છે તેમનો સમાવેશ આચાર્યમા કરી દેવાય છે જેમ આચાર્ય પ્રવચનના પ્રભાવક હોય છે તેમ તેઓ બન્ને પણ હોય છે, તથા તેમના જેવા તેઓ પ્રભાવક હોવાથી પરસ્પરમા તે બાબતની સમાનતા આવી જાય છે એ જ વાત પ્રગટ કરવાને માટે સૂત્રકારે તે બન્નેનો પાઠ આચાર્ય સાથે કર્યો છે આ રીતે વિચાર કરતા વૈયાવૃત્યના દસ પ્રકારના જ સ્થાન સિદ્ધ થાય છે, તેથી તેમના ભેદને કારણે વૈયાવૃત્યમા દશ વિધતાનુ કથન વિરૂદ્ધ પડતુ નથી એમ સમજવુ જોઇએ

તથા- જે "चेइयट्ठे" આ પદનુ વ્યાખ્યાન "चैत्याना अर्थ प्रयोजनम् यस्य स चैत्यार्थ" ચૈત્ય જિન પ્રતિમા છે તેનુ પ્રયોજન જેને છે એવો સાધુ" એવુ જે કહે છે તેમનુ તે કથન ભ્રાન્તિમૂલક છે કારણ કે જિન પ્રતિમાનુ વૈયાવૃત્ય કરવાનુ વિધાન નથી જો આ વિધાન માની લેવામા આવે તો વ્યા-ખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ આગમોમા વૈયાવૃત્યના જે પૂર્વોક્ત દસ ભેદ બતાવ્યા છે

किञ्च—ज्ञानादिगुणरहिताया जडात्मिकाया जिनप्रतिमायाभक्तपानादि साहाय्यानपेक्षणान्नास्ति वैयावृत्यस्थानप्राप्तियोग्यता, अत एव-वैयावृत्यदशविधत्वप्रतिपादकागमविरोधवारणार्थमाचार्ये जिनप्रतिमाया समावेशनमपि भ्रान्तिमूलकमेव।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थकत्वमागमानुकूलम्, वैयावृत्येन श्रुतादिज्ञान जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थकरनामगोत्रकर्मोपार्जित भवति। तीर्थकरत्वं च केवलज्ञानानान्तरीयकम्, अतः ज्ञानार्थी वैयावृत्य करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

कि जिन प्रतिमा वैयावृत्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है। दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयावृत्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्यों कि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई है ही नहीं यह तो जड़ पत्थरकी बनी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयावृत्य की क्या आवश्यकता है?। तथा जो वैयावृत्य में दशविधत्व का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य मे जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है। चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्यों कि वैयावृत्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है। तीर्थंकर नामगोत्र कर्मका उपार्जन होता है तीर्थंकर प्रकृति का बध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा। क्यो कि यह प्रकृति केवल

તેમા વિરોધ આવી જાય છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાવૃત્ય નામનો એક અગ્યારમો ભેદ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાવૃત્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ ગુણ તો છે જ નહી-તેતો જડ પથ્થરની બનેલી છે, તો આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાવૃત્યમા દશવિધતાનુ પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિરોધાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરાઈને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિમાનો સમાવેશ કરે છે, તેમનુ તે પ્રમાણે કરવુ તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે ચૈત્ય શબ્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમાનુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાવૃત્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થંકર નામગોત્ર કર્મનુ ઉપાર્જન થાય છે તીર્થંકર પ્રકૃતિનો બધ જે જીવને બધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનનો અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞા

श्रोत्तराध्ययनसूत्रे-" वेयावच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेण तित्थयर नामगोय कम्म निबंधइ ॥ " (उत्त०अध्य, २९)

टीकार्थ-' न य ' न च ' अचियत्तस्य ' अप्रीतिकस्य=प्रीतिरहितस्य प्रतीति रहितस्य वा साध्वागमनमनिच्छत इत्यर्थः, ' घर ' गृह ' पविसइ ' प्रविशति, न च अप्रतीतिकस्य ' भत्तपाण ' भक्तपान ' गेण्हइ ' गृह्णाति, न च अप्रीतिकस्य अप्रतीतिकस्य वा पीठफलकशय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलदण्डकम्बलरजोहरण-निषद्याचोलपट्टकमुखपोरकमुखवस्त्रिका पादप्रोञ्छनादि भाजनभाण्डोपध्युपकरण,

---

ज्ञान की अविनाभाविनी है। तीर्थंकर प्रकृति नियमतः केवलज्ञान को उत्पन्न करनेवाली होती है, इसलिये ज्ञानार्थी होकर वैयावृत्य करता है ऐसा अर्थ हमारा निर्दोष ही है। उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है —" वेयावच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेण तित्थयर नामगोय कम्म निबंधइ " (उत्तराध्य अ २९ बोल ४३)

तथा जो साधु (न य अचियत्तस्स घर पविसइ) साधु के अपने घर पर आने से अप्रीति अथवा अप्रतीति-अविश्वास वाला होता है वह अचियत्त कहलाता है-ऐसे व्यक्ति के घर में साधु प्रवेश नहीं करता है, तथा (न य अचियत्तस्स भत्तपाण गिण्हइ) उस अप्रीति और अप्रतीति-अविश्वास वाले के घर से भक्त पान नही लेता है, और (न य अचियत्तस्स पीढ फलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबल दंडग रओ-हरण निसेज्ज चोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइ भायणभंडोवहि उवग-रण सेवइ) न उस अप्रीति और अप्रतीति वाले के पीठ,फलक,शय्या,

---

નની અવિનાભાવિની પ્રકૃતિ છે તીર્થંકર પ્રકૃતિ સ્વાભાવિક રીતે જ કેવળજ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનારી હોય છે, તેથી જ્ઞાનાર્થી થઈને વૈયાવૃત્ય કરે છે એવો અમે દર્શાવેલો અર્થ નિર્દોષ જ છે ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત કરી છે-' वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेण तित्थयरनामगोय कम्म निबंधइ " (ઉત્તરાધ્ય અ ૨૯ બોલ ૪૩) તથા જે સાધુ "न य अचियत्तस्स घर पविसइ" સાધુ પોતાને ઘેર આવવાથી જે વ્યક્તિ અપ્રીતિ અથવા અવિશ્વાસ વાળો થાય છે તે અચિયત્ત કહેવાય છે-એવી વ્યક્તિના ઘરમા સાધુ પ્રવેશ કરતા નથી, તથા " न य अचियत्तस्स भत्तपाण गिण्हइ " તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસવાળાના ઘરેથી આહારપાણી લેતા નથી, અને " न य अचियत्तस्स पीढफलग सेज्जासंथारगवत्थपायकंबलदंडगरजोहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तिय पायपुंछणाइभायणभंडोवहिउवगरण सेवइ " તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસ-વાળાના

किञ्च—ज्ञानादिगुणरहिताया जडात्मिकाया जिनप्रतिमाया भक्तपानादि साहाय्यानपेक्षणान्नास्ति वैयावृत्यस्थानप्राप्तियोग्यता, अत एव–वैयावृत्यदशविधत्वप्रतिपादकागमविरोधवारणार्थमाचार्ये जिनप्रतिमाया समावेशनमपि भ्रान्ति-मूलकमेव।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थकत्वमागमानुकूलम्, वैयावृत्त्येन श्रुतादिज्ञान जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थकरनामगोत्रकर्मोपार्जित भवति। तीर्थकरत्वं च केवलज्ञानानान्तरीयकम्, अतः ज्ञानार्थी वैयावृत्य करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

कि जिन प्रतिमा वैयावृत्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है। दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयावृत्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्यों कि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई है ही नहीं वह तो जड़ पत्थरकी बनी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयावृत्य की क्या आवश्यकता है?। तथा जो वैयावृत्य में दशविधत्व का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य मे जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है। चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्यों कि वैयावृत्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है। तीर्थंकर नामगोत्र कर्मका उपार्जन होता है तीर्थंकर प्रकृति का बध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा। क्यो कि यह प्रकृति केवल

તેમા વિરોધ આવી જાય છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાવૃત્ય નામનો એક અગ્યારમો ભેદ ઉત્પન્ન થઇ જાય છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાવૃત્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ ગુણ તો છે જ નહી–તેતો જડ પથ્થરની બનેલી છે, તો આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાવૃત્યમા દશવિધાતાનુ પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિરોધાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરાઈને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિમાનો સમાવેશ કરે છે, તેમનુ તે પ્રમાણે કરવુ તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે ચૈત્ય શબ્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમાનુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાવૃત્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થંકર નામગોત્ર કર્મનુ ઉપાર્જન થાય છે તીર્થંકર પ્રકૃતિનો બધ જે જીવને બધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનનો અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞા

वैयावृत्त्यादिकार्यं, ' ण होइ ' न भवति ' पच्छानाविग ' पश्चात्तापिकः=पश्चात्तापकारी । तथा-' सविभागसीले ' सविभागशील -लब्धभक्तादे. सविभागकारी ' सगहोवग्गहकुसले ' सग्रहोपग्रहकुशल', तत्र-सग्रहः=शिष्यादिपरिवर्द्धनम्, उपग्रहः=तेपामेव भक्तश्रुतादिदानपूर्वकमुपष्टम्भनम्, तत्र कुशलो दक्षो भवति, ' से तारिसे ' स तादृश साधु. ' इण ' इदम् = अदत्तादानविरमणरूप ' वय ' व्रतम् ' आराहेइ ' आराधयति. नान्यः ॥ सू० ४ ॥

विग होइ) देयवस्तु को देकर एव वैयावृत्य आदि कार्य को करके जो पश्चात्ताप नहीं करता है, (सविभागसीले) लब्ध भक्तादिक का जो सविभागकारी होता है, और (सगहोवग्गहकुसले) शिष्यादि के परिवर्द्धन में और उनके भक्त श्रुत आदि दानपूर्वक उपष्टभन मे दक्ष होता है, (से तारिसे) ऐसा वह साधु (इण वय आराहेइ) इस अदत्तादानविरमणरूप व्रत का आराधित करता है, दूसरा नहीं ॥

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा यह समझाया है कि किस प्रकार का कार्य करने वाला साधु इस महाव्रत का आराधक होता है। उनका कहना है कि जो साधु पीछे के दूसरे सूत्र में कही गई बातों के अनुसार आचरण करता है वही साधु इस महाव्रत का आराधक बनता है, वे बाते इस प्रकार से है—जो साधु उपधि और भक्तपान के सग्रहण एव दान करने में दक्ष होता है, अत्यत बाल, दुर्बल, ग्लान, वृद्ध, क्षपक, प्रवर्त्तक, आचार्य, उपाध्याय आदि का वैयावृत्य करता है।

વયાવૃત્ય આદિ કાર્ય કરીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, "सविभागसीले" પ્રાપ્ત આહારાદિના જે સવિભાગકારી હોય છે, અને "सगहोवग्गहकुसले' શિષ્યાદિના પરિવર્ધનમા અને તેમના ભક્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપષ્ટભનમા દક્ષ હોય છે "से तारिसे" એવો તે સાધુ "इण वय आराहेइ ' આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ વ્રતનુ આરાધન કરી શકે છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ--સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સમજાવ્યુ છે કે કેવુ કાર્ય કરનાર સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનુ એવુ કથન છે કે જે સાધુ આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક બને છે તે વાતો આ પ્રમાણે છે–જે સાધુ ઉપધિ અને ભક્તપાન (આહારપાણી) નો સગ્રહ અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે, અત્યત બાળ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ ક્ષપક, પ્રવર્ત્તક, આચાર્ય ઉપાધ્યાય આદિની વૈયાવચ્ચ-વૈયાવૃત્ય કરે છે,અપ્રીતિકજનને ત્યા ગોચરીને માટે જતો નથી, તેના દ્વારા

'सेवइ' सेवते, न च 'परस्स' परस्य 'परिवाय' परिवाद=निन्दा 'जपइ' जल्पति, 'न यावि' न चापि परस्य 'दोसे' दोषान् 'गेण्हइ' गृह्णाति, परदोषदर्शी न भवतीत्यर्थः, तथा-' परववएसेण वि ' परव्यपदेशेनापि=बालग्लानादिनिमित्तं नापि स्वार्थमन्यार्थं वा 'न किंचि' न किञ्चिद् औषधभैषज्याद्यपि, 'गेण्हइ' गृह्णाति, तथा 'ण य' न च 'विपरिणामेइ' विपरिणमयति=धर्माद् गुर्वादिभ्यश्च विमुखी करोति 'कंचि जणं' कञ्चिदपि जनं शिष्यादिकम्। 'न यावि' न चापि 'णासेइ नाशयति 'दिण्णसुकयं' दत्तसुकृतम्, दत्तम्=अभयदानादिकं, सुकृतं=व्रतप्रत्याख्यानादिकं अपि तु तदनुमोदयतीत्यर्थः, परकृतं शुभकृत्यं न प्रच्छादयन्ति, तथा-' दाऊण य ' दत्त्वा च देयं वस्तु, ' काऊण य ' कृत्वा च

संस्तारक, वस्त्र, पादकंबल, दण्डक, रजोहरण, निपद्या, चोलपट्टक, सदोरकमुखवस्त्रिका, पादप्रोञ्छन आदि तथा भाजन, भाण्ड, उपधि, उपकरण, इनका सेवन करता है, (न य परिवायपरस्स जपइ) दूसरों की निंदा नहीं करता है, (न यावि परस्स दोसे गेण्हइ) दूसरों के दोषों को नहीं देखता है, (पर ववएसेणवि न किंचि गेण्हइ) बाल, ग्लान आदि के निमित्त से लाये हुए औषध, भैषज्य आदि कुछ भी वस्तु अपने अथवा दूसरे के काम में नहीं लेता है, (ण य विपरिणामेइ कंचि जणं) धर्म से तथा अपने गुरुजनों से जो शिष्यादिकों को विमुख नहीं करता है, (ण यावि णासेइ दिण्ण सुकयं) दत्त-अभयदानादिक का, सुकृत-व्रत प्रत्याख्यान आदि का जो नाश नहीं करता है किन्तु उनकी अनुमोदना ही करता है, अर्थात् परकृत शुभकृत्यों को जो आच्छादित नहीं करता है (दाऊण य काऊण य ण य पच्छात्ता

પીઠ, ફલક, શય્યા સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાદકંબલ, દંડક, રજોહરણ, ચોલપટ્ટક, દોરા સાથેની મુહપત્તિ, પાદપ્રોંછન આદિ તથા ભાજન, ભાંડ, ઉપધિ આદિ ઉપકરણનું સેવન કરતો નથી, "न य वि परिवायपरस्स जपइ" બીજાની નિંદા કરતો નથી, "न या वि परस्स दोसे गेण्हइ" બીજાના દોષોને જોતો નથી, "परववएसेण वि न किंचि गेण्हइ" બાળ, ગ્લાન આદિને નિમિત્તે લાવેલા ઔષધ, ભૈષજ્ય, આદિ કોઈ પણ વસ્તુ પોતાના અથવા બીજાના ઉપયોગમાં લેતો નથી "ण य विपरिणामेइ किंचि जण" જે શિષ્યાદિને ધર્મથી કે ગુરૂજનોથી વિમુખ કરતો નથી, 'ण यावि णासेइ दिण्ण सुकय" દત્ત-અભયદાનાદિકનું સુકૃત-વ્રત પ્રત્યાખ્યાન આદિનો જે નાશ કરતો નથી-પણ તેની અનુમોદના જ કરે છે, એટલે કે અન્ય વડે કરાયેલ શુભકૃત્યોને જે ઢાંકતો નથી "दाऊणय काऊणय ण य पच्छात्ताविए होइ' દેય વસ્તુને દ

वैयावृत्यादिकार्यं, 'ण होइ' न भवति 'पच्छाताविए' पश्चात्तापिकः=पश्चात्तापकारी। तथा-'संविभागसीले' संविभागशील'-लब्धभक्तादेः संविभागकारी 'संगहोवग्गहकुसले' संग्रहोपग्रहकुशल', तत्र-संग्रहः=शिष्यादिपरिवर्द्धनम्, उपग्रहः=तेषामेव भक्तश्रुतादिदानपूर्वकमुपष्टम्भनम्, तत्र कुशलो दक्षो भवति, 'से तारिसे' स तादृशः साधुः 'इण' इदम् = अदत्तादानविरमणरूप 'वय' व्रतम् 'आराहेइ' आराधयति, नान्यः ॥ सू० ४ ॥

विए होइ) देयवस्तु को देकर पश्च वैयावृत्य आदि कार्य को करके जो पश्चात्ताप नहीं करता है, (संविभागसीले) लब्ध भक्तादिक का जो संविभागकारी होता है, और (संगहोवग्गहकुसले) शिष्यादि के परिवर्द्धन में और उनके भक्त श्रुत आदि दानपूर्वक उपष्टम्भन में दक्ष होता है, (से तारिसे) ऐसा वह साधु (इण वय आराहेइ) इस अदत्तादानविरमणरूप व्रत को आराधित करता है, दूसरा नहीं ॥

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा यह समझाया है कि किस प्रकार का कार्य करने वाला साधु इस महाव्रत का आराधक होता है। उनका कहना है कि जो साधु पीछे के दूसरे सूत्र में कही गई बातों के अनुसार आचरण करता है वही साधु इस महाव्रत का आराधक बनता है, वे बाते इस प्रकार से हें-जो साधु उपधि और भक्तपान के संग्रहण एवं दान करने में दक्ष होता है, अत्यंत बाल, दुर्बल, ग्लान, वृद्ध, क्षपक, प्रवर्त्तक, आचार्य, उपाध्याय आदि का वैयावृत्य करता है।

વયાવૃત્ય આદિ કાર્ય કરીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, "संविभागसीले" પ્રાપ્ત આહારાદિના જે સંવિભાગકારી હોય છે, અને "संगहोवग्गहकुसले" શિષ્યાદિના પરિવર્ધનમા અને તેમના ભક્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપષ્ટભનમા દક્ષ હોય છે "से तारिसे" એવો તે સાધુ "इण वय आराहेइ" આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ વ્રતનુ આરાધન કરી શકે છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ--સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સમજાવ્યુ છે કે કેવું કાર્ય કરનાર સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનુ એવુ કથન છે કે જે સાધુ આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક બને છે તે વાતો આ પ્રમાણે છે-જે સાધુ ઉપધિ અને ભક્તપાન (આહારપાણી) નો સંગ્રહ અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે, અત્યંત બાળ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ ક્ષપક, પ્રવર્ત્તક, આચાર્ય ઉપાધ્યાય આદિની વૈયાવચ્ચ-વૈયાવૃત્ય કરે છે,અપ્રીતિકજનને ત્યા ગોચરીને માટે જતો નથી, તેના દ્વારા

अप्रीतीकजन के घर पर गोचरी के लिये नही जाता है, उनके द्वारा प्रदत्त पीठ फलक आदि का उपयोग नहीं करता है' दूसरों कि निंदा नहीं करता ह, पर के दोषों की तरफ दृष्टिपात नहीं करता हैं, पर के व्यपदेश से अपने लिये तथा दूसरों के लिये कुछ भी वस्तु नहीं लेता है, गुर्वादिक से उनके शिष्यादिकों का भेद नहीं कराता है, अभयदानादिक को दे करके, वैयावृत्य को करके जो पीछे से पछताता नहीं है, सग्रहशील होना है-सविभागकारी होता है, शिष्यादि सपत्ति बढाने में कुशल होता है ऐसा साधु ही महाव्रत का आराधक होता है। वैयावृत्य जो आचार्य आदि की करता हैं-उसमें उसका अभिप्राय अपने में ज्ञानवृद्धि और कर्मो की निर्जरा होनेका होता है। वैयावृत्य आचार्य आदि दस प्रकार के स्थान सेव्य होने के कारण दस प्रकार का है। सूत्र में यद्यपि चौदह प्रकार के वैयावृत्य के स्थान प्रकट किये हैं पर अत्यत बाल और दुर्बल इन साधुओ का अन्तर्भाव ग्लान में एव क्षपक और प्रभावक साधुओं का अन्तर्भाव आचार्य में कर दिया जाता है, इसलिये इस प्रकार से ये दस ही होते है। मुख्य रूप से जिसका कार्य आचार और व्रत ग्रहण कराने का होता है वह आचार्य है, मुख्यरूप से जिसका कार्य मूल सूत्र का अभ्यास कराने का होता

અપાયેલ પીઠ, ફલક આદિનો ઉપયોગ કરતો નથી અન્યની નિંદા કરતો નથી અન્યના દોષો તરફ નજર નાખતો નથી બીજાનુ નિમિત્ત બતાવીને પોતાને માટે તથા અન્યને માટે કોઈ પણુ વસ્તુ લેતો નથી, ગુર્વાદિક સાથે તેમના શિષ્યાદિકોમા ભેદભાવ પડાવતો નથી, અભયદાન આદિ દઈને, વૈયાવૃત્ય કરીને જે પાછળથી પસ્તાતો નથી, સગ્રહશીલ હોય છે-સવિભાગકારી હોય છે, શિષ્યાદિરૂપ સપત્તિ વધારવામા કુશળ હોય છે, એવો સાધુ જ આ મહાવ્રતોનો આરાધક થઇ શકે છે તે આચાર્ય આદિની જે વૈયાવચ્ચ કરે છે તેમા તેનો હેતુ પોતાના જ્ઞાનની વૃદ્ધિ તથા કર્મોની નિર્જરા કરવાનો જ હોય છે વૈયાવૃત્ય આચાર્ય આદિ દસ પ્રકારના સેવાને પાત્ર સ્થાન હોવાથી દસ પ્રકારનુ છે સૂત્રમા જો કે ચૌદ પ્રકારના વૈયાવૃત્યના સ્થાન બતાવ્યા છે પણુ અત્યત બાળ અને દુર્બળ સાધુઓનો સમાવેશ ગ્લાનમા અને ક્ષપક અને પ્રભાવક સાધુઓનો સમાવેશ આચાર્યમા કરી દેવામા આવેલ છે, તેથી આ રીતે તેના દસ પ્રકાર જ થાય છે મુખ્યત્વે જેનુ કાય આચાર અને વ્રત ગ્રહણુ કરાવવાનુ હોય છે તે આચાર્ય કહેવાય છે મુખ્યત્વે જેનુ કાર્ય મૂળ સૂત્રનો અભ્યાસ

अथोपसंहारमाह—' इमं च ' इत्यादि ।

मूलम्—इमं च परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउसमणं॥सू०५॥

टीका—' इमं च ' इदं च-पूर्वैरनन्ततीर्थंकरगणधरैः प्रोक्तमिदं प्रत्यक्षं ' पावयणं ' प्रवचनं ' परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ' परद्रव्यहरणविरमणपरिरक्षणार्थं=परद्रव्यहरणविरमणस्य=अदत्तादानविरमणव्रतस्य परिरक्षणार्थं =

है वह उपाध्याय है, जो विगय आदि के त्यागरूप तपों को तपता है वह तपस्वी है, जो नवदीक्षित होकर शिक्षण प्राप्त करने का उम्मीदवार होता है वह शैक्ष है, रोग आदि से जिसका शरीर क्षीण हो गया हो वह ग्लान है, एक ही दीक्षाचार्य का शिष्यपरिवार कुल है, जुदे २ आचार्यों के शिष्यरूप साधु यदि परस्पर सहाध्यायी होने से समान-वाचना वाले हों तो उनका समुदाय गण हैं, गण का समुदाय संघ कहलाता है। जो प्रव्रज्याधारी होता है वह साधु है। श्रुतलिंग और प्रवचन में जो समान हों वे साधर्मिक हैं ॥ सू० ४ ॥

अब सूत्रकार इस प्रकरण का उपसंहार करते हुए कहते हैं— ' इमं च ' इत्यादि

टीकार्थ—(इमं च परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं) पूर्व में अनंत तीर्थंकरों एवं गणधर देवों द्वारा कहा

કરાવવાનું હોય છે તે ઉપાધ્યાય કહેવાય છે જે વિગય આદિના ત્યાગરૂપ તપો કરે છે તે તપસ્વી કહેવાય છે, જે નવદીક્ષિત થઈને શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરવાને માટે ઉમેદવાર હોય છે તેને શૈક્ષ કહે છે રોગ આદિથી જેનું શરીર ક્ષીણ થઈ ગયું હોય તેને ગ્લાન કહે છે એક જ દીક્ષાચાર્યના શિષ્ય પરિવારને કુલ કહે છે, જુદા જુદા આચાર્યોના શિષ્યરૂપ સાધુ જો પરસ્પર સહાધ્યાયી હોવાથી સમાન વાચનાવાળા હોય તો તેમના સમુદાયને ગણ કહે છે ગણના સમુદાયને સંઘ કહે છે જે પ્રવ્રજ્યા (દીક્ષા) ધારી હોય તે સાધુ કહેવાય છે શ્રુતલિંગ અને પ્રવચનમાં જે સમાન હોય તે સાધર્મિક કહેવાય છે ॥ સૂ૦ ૪ ॥

હવે સૂત્રકાર આ પ્રકરણનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે—" इमं च " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—" इमं च परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं " પૂર્વે અનંત તીર્થંકરો અને ગણધરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષી

रक्षणनिमित्त 'भगवया' भगवता 'सुकहिय' सुकथित=सविस्तार प्ररूपितम्। कथ भूतं प्रवचन भगवता सुकथितम्? इत्याह—'अत्तहिय' आत्महितम्=आत्मनो हितकारकम्, तथा-'पेच्चाभाविय' प्रेत्यभाविकः=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्, अत एव-'आगमेसिभद्द' आगमिष्यद् भद्र=भविष्यत्काले-कल्याणकारकम्, तथा 'सुद्ध' शुद्ध=निर्दोषत्वात्, पुनः-'नेयाउय' नैयायिकम्, वीतरागभाषितत्वात्-तथा-'अकुडिल' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात् 'अणुत्तर' अनुत्तरम्-सर्वश्रेष्ठत्वात्, तथा 'सव्वदुक्खपावाण' सर्वदुःखपापाना=सकलदुःखजनकज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्मणा 'विउसमण' व्युपशमन=सर्वथा प्रशमनकारकम्। एतादृशं प्रवचन भगवता सुकथितमित्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

अस्य तृतीयव्रतस्य पञ्चभावनाः प्रतिपादयन् सम्प्रति विविक्तवसतिवासाभिधां प्रथमा भावनामाह—'तस्स इमा' इत्यादि।

मूलम्—तस्स इमा पचभावणाओ तइयस्स वयस्स हुंति, परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए। पढम देवकुलसभा-प्पवा-

गया यह प्रत्यक्षीभूत प्रवचन, परद्रव्यविरमणरूप महाव्रत की परिरक्षा के निमित्त भगवान् ने विस्तारपूर्वक प्ररूपित किया है। यह प्रवचन (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है, (पेच्चाभाविय) जन्मान्तर में भी शुभफल का प्रदाता है, इसीलिये यह (आगमेसिभद्द) भविष्यत् काल में कल्याण कारक कहा गया है। (सुद्ध) यह निर्दोष होने से शुद्ध है, (नेयाउय) वीतराग प्रभु द्वारा भाषित होने से न्यायसपन्न है, (अकुडिल) ऋजुभावका जनक होनेसे अकुटिल है, (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ठ होनेसे अणुत्तर है तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) सकल दुःखजनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मोका सर्वथा प्रशमनकारक है॥ सू०५ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે ભગવાને વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કરેલ છે આ પ્રવચન "अत्तहिय" આત્માનુ હિતકારક છે, "पेच्चाभाविय" જન્માન્તરમા પણ શુભ ફળનુ દેનારૂ છે, તેથી તે "आगमेसिभद्द" ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણકારક બતાવવામા આવ્યુ છે "सुद्ध", તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, "नेयाउय" વીતરાગ પ્રભુદ્વારા કથિત હોવાથી ન્યાયયુકત છે, "अकुडिल" ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી અકુટિલ છે, "अणुत्तर" સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અનુત્તર છે તથા "सव्वदुक्खपावाण विसमणं" સકળ દુખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનુ સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ ५

वसहरुक्खमूल-आराम-कंदराऽऽगर-गिरिगुहा-कम्मतुज्जाण जाण-साला-कुवियसाला-मडव-सुन्नघर-सुसाणलेण आवणे अन्नम्मि य एवमाइयम्मि दग-मट्टिय--बीय-हरिय -तसपाण असंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्व। आहाकम्मबहुले य जेसे आसि य संमज्जिओसित्तसोहिय छाण दुमणलिपण अणुलिपण जलणभडचालणं अंतोबाहिं मज्झे य असजमो जत्थ वट्टइ, सजयाणं अट्ठा वज्जेयव्वे हु उवस्सए से तारिसे सुत्तपरिकुट्ठे। एव विवित्त वासवसहि समिइ जोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा, निच्च अहिगरणकरणकारावण पाव-कम्म विरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई ॥ सू० ६ ॥

टीका-' तस्स ' तस्य=प्रसिद्धस्य ' तइयस्स वयस्स ' तृतीयस्य व्रतस्य= अदत्तादानविरमणनामकतृतीयव्रतस्य ' इमा ' इमाः-वक्ष्यमाणाः ' पच भावणाओ ' पञ्चभावनाः ' परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ' परद्रव्यहरणविरमण-परिरक्षणार्थाय अदत्तादानविरमणव्रतस्य रक्षानिमित्त ' हुंति ' भवन्ति। तासु ' पढम ' प्रथमा=विविक्तवसतिवासलक्षणा भावनामाह-साधुभिः क्वविहर्तव्यमिति,

---

अब सूत्रकार इस तृतीय व्रत की पाच भावनाओं को समझाने की इच्छासे सब से प्रथम विविक्तवसतिवास नाम की पहिली भावना को प्रकट करते हैं--' तस्स इमा ' इत्यादि ०।

टीकार्थ—(तस्स) उस प्रसिद्ध (तइयस्स वयस्स) तृतीय अदत्ता-दान विरमण व्रत की (इमा) ये वक्ष्यमाण (पच भावणाओ हुंति) पांच भावनाएँ हैं। ये भावनाएँ (परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए) इस

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી પ્રથમ વિવક્તવસિતવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—"तस्स इमा" ઈ

ટીકાર્થ—" तस्स " તે પ્રસિદ્ધ " तइयस्स वयस्स " ત્રીજા અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની " इमा " આ પ્રમાણે " " पच भावणाओ ति " પાચ ભાવ નાઓ છે એ ભાવનાઓ " परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए " આ અદત્તા

रक्षणनिमित्तं 'भगवया' भगवता 'सुकहियं' सुकथितं=सविस्तरं प्ररूपितम्। कथं भूतं प्रवचनं? इत्याह—'अत्तहियं' आत्महितम्=आत्मनो हितकारकम्, तथा—'पेच्चाभाविय' प्रेत्यभाविकं=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्, अत एव—'आगमेसिभद्दं' आगमिष्यद्भद्रं=भविष्यत्काले-कल्याणकारकम्, तथा 'सुद्धं' शुद्धं=निर्दोषत्वात्, पुनः—'नेयाउयं' नैयायिकम्, वीतरागभाषितत्वात्-तथा-'अकुडिलं' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात् 'अणुत्तरं' अनुत्तरम्-सर्वश्रेष्ठत्वात्, तथा 'सव्वदुक्खपावाणं' सर्वदुःखपापानां=सकलदुःखजनकज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्मणां 'विउसमणं' व्युपशमनं=सर्वथा प्रशमनकारकम्। एतादृशं प्रवचनं भगवता सुकथितमित्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

अस्य तृतीयव्रतस्य पञ्चभावनाः प्रतिपादयन् सम्प्रति विविक्तवसतिवासाभिधां प्रथमां भावनामाह—'तस्स इमा' इत्यादि।

मूलम्—तस्स इमा पंचभावणाओ तइयस्स वयस्स हुंति, परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए। पढमं देवकुलसभा प्पवा

गया यह प्रत्यक्षीभूत प्रवचन, परद्रव्यविरमणरूप महाव्रत की परिरक्षा के निमित्त भगवान् ने विस्तारपूर्वक प्ररूपित किया है। यह प्रवचन (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है, (पेच्चाभाविय) जन्मान्तर में भी शुभफल का प्रदाता है, इसीलिये यह (आगमेसिभद्द) भविष्यत् काल में कल्याण कारक कहा गया है। (सुद्ध) यह निर्दोष होने से शुद्ध है, (नेयाउय) वीतराग प्रभु द्वारा भाषित होने से न्यायसपन्न है, (अकुडिल) ऋजुभावका जनक होनेसे अकुटिल है, (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ठ होनेसे अणुत्तर है तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) सकल दुःखजनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मोका सर्वथा प्रशमनकारक है॥ सू०५ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે ભગવાને વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કરેલ છે આ પ્રવચન " अत्तहियं " આત્માનુ હિતકારક છે, " पेच्चाभाविय " જન્માન્તરમા પણ શુભ ફળનુ દેનાર છે તેથી તે " आगमेसिभद्द " ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણકારક બતાવવામા આવ્યુ છે " सुद्ध ", તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, " नेयाउय " વીતરાગ પ્રભુદ્વારા કથિત હોવાથી ન્યાયયુકત છે, " अकुडिल " ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી અકુટિલ છે, " अणुत्तर " સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અનુત્તર છે તથા " सव्वदुक्खपावाण विसमणं " સકળ દુ ખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનુ સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ ૫

वसहरुक्खमूल-आराम-कंदराऽऽगर-गिरिगुहा-कम्मतुज्जाण जाण-साला-कुवियसाला-मडव-सुन्नघर-सुसाणलेण आवणे अन्नम्मि य एवमाइयम्मि दग-मट्टिय--बीय-हरिय--तसपाण असंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं। आहाकम्मबहुले य जेसे आसि य समज्जिओसित्तसोहिय छाण दुमणलिंपण अणुलिपण जलणभडचालणं अतोबाहि मज्झे य असजमो जत्थ वट्टइ, संजयाण अट्ठा वज्जेयव्वे हु उवस्सए से तारिसे सुत्तपरिकुट्ठे। एव विवित्त वासवसहि समिइ जोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा, निच्च अहिगरणकरणकारावण पाव-कम्म विरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई ॥ सू० ६ ॥

टीका-'तस्स' तस्य=प्रसिद्धस्य 'तइयस्स वयस्स' तृतीयस्य व्रतस्य= अदत्तादानविरमणनामकतृतीयव्रतस्य 'इमा' इमाः-वक्ष्यमाणा' 'पच भाव-णाओ' पञ्चभावनाः 'परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए' परद्रव्यहरणविरमण-परिरक्षणार्थाय अदत्तादानविरमणव्रतस्य रक्षानिमित्त 'हुंति' भवन्ति। तासु 'पढम' प्रथमा=विविक्तवसतिवासलक्षणा भावनामाह-साधुभि॰ क्वविहर्तव्यमिति,

---

अब सूत्रकार उस तृतीय व्रत की पांच भावनाओं को समझाने की इच्छासे सब से प्रथम विविक्तवसतिवास नाम की पहिली भावना को प्रकट करते हे--'तस्स इमा' इत्यादि ०।

टीकार्थ—(तस्स) उस प्रसिद्ध (तइयस्स वयस्स) तृतीय अदत्ता-दान विरमण व्रत की (इमा) ये वक्ष्यमाण (पच भावणाओ हुति) पांच भावनाएँ हैं। ये भावनाएँ (परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए) इस

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી પ્રથમ વિવક્તવસિતવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે-"तस्स इमा" ઇ

ટીકાર્થ—"तस्स" તે પ્રસિદ્ધ "तइयस्स वयस्स" ત્રીજા અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની "इमा" આ પ્રમાણે ""पच भावणाओ ति" પાચ ભાવ નાઓ છે એ ભાવનાઓ "परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए" આ અદત્તા

तदेव स्पष्टयति-' देवकुल-सभा-प्पवा-वसह-रुक्खमूल-आरामकंदराऽऽगार-गिरिगुहा-कम्मतु-ज्जाण-जाणसाला-कुवियसाला-मडव-सुन्नघर--सुसाण-लेण आवणे ' देवकुलसभामपाऽऽवमथवृक्षमूलारामकन्दराऽऽकरगिरिगुहाकर्मान्तोद्यानयानशाला कुप्यशालामण्डपशून्यगृहश्मशानलयनापणे-तत्र-देवकुलम्=व्यन्तरादि देवगृहम्, सभा=सभागृह यत्र समये समये मन्त्रणार्थं जना आगत्य समिलन्ति तत्, प्रपा=पानीयशाला, आवसथः=परिव्राजकगृहम्, वृक्षमूल-प्रसिद्धम्, आरामः माधवीलतादिपरिमण्डितोरमणीयो वनविशेषः, कन्दरा=दरी, आकरो=लोहाद्युत्पत्तिस्थानम्, गिरिगुहा-प्रतीता, कर्मान्तः=लोहाकारादिशाला ' कारखाना ' ' मील ' ' जीण ' इत्यादि नाम्ना प्रसिद्ध स्थानम्। उद्यानम्=उपवनम्, यान

अदत्तादान विरमण व्रत की परिरक्षा के निमित्त कही गई हैं (पढमं) उनमें प्रथम भावना इस प्रकार है-इस प्रथम भावना का नाम विविक्त-वसतिवास है। इसमें साधुओं को कहा निवास करना चाहिये यह प्रकट किया गया है, (देवकुलसभा-प्पवा-वसह-रुक्खमूल-आराम-कंदरागार-गिरिगुहा-कम्मतु-ज्जाण-जाणसाला-कुवियसाला-मडव-सुन्नघर-सुसाण-लेण-आवणे) देवकुल मे-व्यन्तर आदि देवों के स्थान में, सभा में-जहा पर मत्रणा के लिये आकर समय २ पर मनुष्य एकत्रित होते हैं ऐसे स्थान मे, प्रपा मे-पानीयशाला में, आवसथ में-परिव्राजकों के घरो में, वृक्षमूल मे-तरु के नीचे में, आराम में-माधवीलता आदि से परिमडित रम्यवन में, कन्दरा में-गुफा में, आकर में-लोहादिक धातुओं के उत्पत्ति स्थान में, गिरिगुहा में-पर्वत की गुफा में, कर्मान्त में-लोहकार आदि की शाला में, कारखाना-मील-इत्यादि नाम से प्रसिद्ध

દાન વિરમણ વ્રતની પરિરક્ષાને માટે બતાવવામા આપી છે “ पढमं ” તેમાની પહેલી ભાવનાનુ નામ ‘ વિવિક્તવસતિવાસ ’ તેમા સાધુઓએ ક્યા વાસ કરવો તે બતાવ્યુ છે “ देवकुल सभा-प्पवा-वसह-रुक्खमूल-आराम-कदरागार-गिरिगुहा-कम्म तु-ज्जाण-जाणसाला-कुवियसाला-मडव-सुन्नघर-सुसाण-लेण-आवणे” દેવકુલમા-વ્યન્તર આદિ દેવોના સ્થાનમા, સભામા જ્યા મ ત્રણાને માટે આવીને વખતોવખત માણસો એકઠા થાય છે એવા સ્થાનમા, પ્રપામા-પાનીયશાળમા આવસથમા-પરિવ્રાજકોના ઘરોમા, વૃક્ષમૂળમા-ઝાડની નીચે, આરામમા-માધવી લતા આદિથી આચ્છાદિત રમ્યવનમા, કન્દરામા-ગુફામા, આકરમા-લોઢુ આદિ ધાતુઓની ખાણુમા, ગિરિગુહામા-પર્વતની ગુફામા કર્માન્તમા-લુહાર આદિની શાલામા, કારખાના-મીલ આદિ નામે પ્રસિદ્ધ સ્થાનોમા, ઉદ્યાનમા-બાગમા,

शाला=रथादिगृहम् , कुप्यशाला=गृहोपकरणशाला, मण्डपः=विश्रामस्थानम् , शून्यगृह=प्रसिद्ध, श्मशानम्=प्रसिद्धम् , लयन=गृहम् , आपणः=पण्यस्थानम् , 'हाट' इति भाषा प्रसिद्धम् , एषा समाहार द्वन्द्वस्तस्मिन्तथोक्ते, अर्थात्–देवकुलादिरूपेऽष्टादशविधे, तथा–' अन्नमिय ' अन्यस्मिंश्च ' एवमाइयमि ' एवमादिके=एव विधे कथ भूते ? इत्याह–' दगमट्टिय–बीय–हरिय–तस पाण असंसत्ते ' दकमृत्तिका बीजहरितत्रसप्राणसमक्ते–दकम्=जलम् , मृत्तिका=प्रतीता, बीजानि=शाल्यादीनि, हरितानि=दूर्वादीनि त्रसप्राणाः=द्वीन्द्रियादयः, तैरससक्ते=रहिते, पुनः कीदृशे ? 'आहाकडे' यथाकृते=गृहस्थेन स्वार्थं निर्मिते ' फासुए ' प्रासुके =निर्दोषे ' विविक्ते=स्त्रीपशुपण्डकरहिते, अत एव–' पसत्थे ' प्रशस्ते=श्रेष्ठे साधुनिवासयोग्ये ' उवस्सए ' उपाश्रये–साधुभिः ' विहरियव्व ' विहर्त्तव्य=आश्रयितव्य ' होइ ' भवति । एतादृशे उपाश्रये साधुभिर्निवासः कर्तव्य इत्यर्थः ।

स्थान में, उद्यान में–उपवन में, यानशाला में–रथादि गृह में, कुप्यशाला में–गृहोपकरण रखने के स्थान में, मडप में–विश्राम स्थान में–शून्य गृह में–सूने घर में, श्मशान में–मरघट में, लयन में–पर्वत की तलहटी में निर्मित पाषण घर में, आपण में–हाट में (अन्नमि य एवमाइयम्मि) तथा इसी तरह के दूसरे स्थान में कि जो (दगमट्टिय–बीय–हरिय–तसपाण असंसत्ते) जल, मृत्तिका, बीज, दूर्वा, द्वीन्द्रियादिक त्रस, इन से रहित हो, तथा (अहाकडे) जिस गृहस्थ ने अपने निमित्त बनवाया हो, एव जो (फासुए) निर्दोष हो, तथा (विवित्त) स्त्री, पशु, पंडक से रहित हो और (पसत्थे) प्रशस्त–साधुजनों के निवास योग्य हो (उवस्सए) ऐसे उपाश्रय मे (होइविहरियव्व) साधुओं को रहना चाहिये। (अहा

યાનશાલામા-રથાદિ ગૃહમા, કુપ્યશાલામા-ગૃહોપકરણ રાખવાની જગ્યામા, મડપમા-વિશ્રામ સ્થાનમા, શૂન્યગૃહમા-સૂના ઘરમા, સ્મશાનમા (મરઘરમા), લયનમા-પર્વતની તળેટીમા રચેલ પાષાણઘરમા, આપણમા-હાટમા, " अन्नम्मि य एवमाइयम्मि " તથા એજ પ્રકારના અન્ય સ્થાનોમા કે જે " दगमट्टिय–बीय–हरिय–तसपाणअसंसत्ते " જળ, માટી, બીજ દુર્વા, દ્વિન્દ્રીયાદિક ત્રસ એ બધાથી રહિત હોય, તથા " अहाकड " જે ગૃહસ્થે પોતાને માટે બનાવ રાવ્યુ હોય, અને જે " फासुए " નિર્દોષ હોય, તથા " विवित्त " સ્ત્રી, પશુ, પડકથી રહિત હોય, અને " पसत्थे " પ્રશસ્ત-સાધુજનોના નિવાસને માટે યોગ્ય હોય " उवस्सए " એવા ઉપાશ્રયમા " होइ विहरियव्व " સાધુઓએ રહેવું જોઈએ "अहाकम्मबहुले य जेसे" અને જે ઉપાશ્રય આધાકર્મ બહુલ હોય

अथ कथम्भूते उपाश्रये साधुभिर्न वस्तव्यम् ? इत्याह–' आहाकम्मबहुले ' आधाकर्मबहुलः=आधानम्–आधातया, अर्थात् साध्वर्थं यत्षट्कायोपमर्दनरूप कर्म,तेन बहुलो व्याप्तो ' जे ' यः एव विध उपाश्रयो ' से ' स वर्जयितव्य । अनेन अदत्तादानविरमणलक्षणमूलगुणाशुद्धेः परिहारः उक्तः । स दोषवसत्युपभोगेन मूलगुणहानिर्भवतीति भावः । तथा ' जत्थ ' यत्र–' अतो ' अन्तर्भागे ' बाहिं ' बहिर्भागे, ' मज्झे य ' मध्ये च ' आसियसम्मज्जि ओसित्त सोहियछाणदुमण लिंपण अणुलिंपण जलणभंडचालण ' आसक्ति समार्जितोत्सिक्तशोधितछाण-धवलनलेपनानुलेपनज्वलनभाण्डचालनम्–तत्र–आसिक्तम्=आसेचनम्=उदकादि-च्छोटनमित्यर्थः, सम्मार्जितम्=शलाका हस्तेन–मार्जन्येत्यर्थः, कचवरसशोधनम्, शोधितं=भित्त्यादि सलग्नजालाद्यपनयनेन शुद्धीकृत ' छाण ' छाण=छगणन-गोमयेन ,सस्करणम् , दुमण ' धवलन–सेटिकादिना भित्त्यादेरुज्ज्वलीकरणम्,

---

कम्मबहुले य जे से) और जो उपाश्रय आधाकर्म बहुल हो–साधु के निमित्त षट्कायमर्दनरूप कर्म से व्याप्त हो–उसमें साधु को नहीं वसना चाहिये । क्यों कि ऐसे उपाश्रय में रहेने से साधु के इस अदत्तादान-विरमणरूपमूलगुण की शुद्धि नहीं रहती है। और नही रहने से इस मूलगुण की शुद्धि रहती हैं। तात्पर्य इसका यह है कि सदोषवसति के उपभोग से साधु के मूलगुणों की हानि होती है यही बात "अहाकम्म-बहुलेय जे से" इस सूत्रांश द्वारा प्रदर्शित की गई है । तथा (जत्थ अतो बहिं मज्झे य) जो उपाश्रय भीतर में बाहिर मे और मध्यभाग में (आसियसमज्जि ओसित्तसोहिय-छाण–दुमणलिंपण अणुलिंपण–जलणभडचालण) पानी से छिड़का हुआ हो, बुहारु समार्जनी से जहा का कूडा कचरा साफ कर दिया गया हो, भीत आदि पर लगे हुए –जाले– जहाँ उतार दिये गये हो, जो गाय के गोवर से लीपा गया हो, चुने आदि से

સાધુને નિમિત્તે છકાય મર્દનરૂપ કર્મથી વ્યાપ્ત હોય, તેમા સાધુએ રહેવુ જોઇએ નહીં કારણ કે એવા ઉપાશ્રયમા રહેવાથી સાધુના આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ મૂળ ગુણોને હાનિ થાય છે, એ જ વાત " अहाकम्म–बहुले य जेसे " આ સૂત્રાંશ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે તથા " जत्थ अतो बहिं मज्झे य " જે ઉપાશ્રય અંદર, બહાર અને મધ્ય ભાગમા " आसियसमज्जिओसित्तसोहियछाण दुमणलिंपणअणुलिंपणजलणभडचालण " પાણી છાંટેલ હોય, સાવરણીથી જ્યાંનો કચરો સાફ કર્યો હોય, દીવાલ આદિ પર લાગેલા જાળા જ્યાથી ઉતારી લીધા હોય, જે ગાયના છાણથી લીંપેલ હોય, ચુના વગેરેથી જેની દીવાલો

'लिंपण' लेपनम्=मृत्तिकामिश्रितगोमयादिना रन्ध्रादिपूरणेन सकृल्लेपनम्, 'अणुलिंपण' अनुलेपनम्=शोभार्थं पुनः पुनर्लेपनम्, ज्वलन=शीतापनोदनाय वह्नेः प्रज्वलीकरणम्, भाण्डचालनम्=गृहस्थितभाण्डानामपरत्र स्थापनम्, उपलक्षणमेतदन्यवस्तूनामपि, एतेषां समाहारद्वन्द्वः, एतद्रूप'-'असजमो' असंयम=जीवविराधनारूप साधुनिमित्त 'वट्टइ' वर्तते 'से तारिसे' स तादृशः 'सुत्तपरिकुट्ठे' सूत्रपरिकुष्टः-आगमनिषिद्ध, 'हु' निश्चयेन 'उवस्सए' उपाश्रयः 'संजयाण संयतानाम् 'अट्ठा' अर्थाय 'वज्जेयव्वो' वर्जितव्यः। संयमिभिरेतादृशे जीवविराधनायुक्ते उपाश्रये न कदापि वस्तव्यमिति भावः। प्रथमभावनामुपसंहरन्नाह—'एव' एवम्-उक्तरूपेण 'विवित्तवासवसहिसमिइजोगेण' विविक्तवासवसतिसमितियोगेन-विविक्ता=स्त्रीपशुपण्डकरहिता जनरहिता वा या

जिसकी भींते पोतकर उज्ज्वल कर दी गई हों, जिसमें छेद वगैरह गोवरमिश्रित मिट्टी से पूर दिये गये हों, तथा जो बार २ सुन्दर दिखाने के निमित्त गोमयादि मिश्रित मृत्तिका से लीपा गया हो, जहां शीत को दूर करने के लिये अग्नि जल रही हो और जहां से रक्खे हुए गृहस्थजनों के वर्तन उठा २ कर दूसरी जगह रखे जा रहे हों इस प्रकार का (असजमो वट्टइ) जीवविराधना रूप असंयम जहां साधु के निमित्त हो रहा हो (से तारिसे) इस प्रकार का जो (सुत्तपरिकुट्ठे) आगम से निषिद्ध है (उवस्सए) वह उपाश्रय (संजयाण अट्ठा) साधुओं के लिये (वज्जेयव्वो) वर्जनीय है, अर्थात् इस प्रकार के उपाश्रय में साधु को नहीं वसना चाहिये। अब सूत्रकार प्रथम भावना का उपसंहार करते हुए कहते हैं—(एव) उक्तरूप से इस (विवित्तवासवसहिसमिइजोगेण) विविक्तवासवसतिसमिति के योग से - स्त्री पशु पंडक से

ઉજ્વળ બનાવવામા આવી હોય, જેમાના છિદ્રો આદિ છાણમિશ્રિત માટીથી પૂરી દીધા હોય, તથા જે સુંદર દેખાય તે માટે વારવાર છાણ આદિ મિશ્રિત માટીથી લીપવામા આવેલ હોય, જ્યા શીત દૂર કરવાને માટે અગ્નિ બળતો હોય, અને જ્યાથી ગૃહસ્થોના વાસણ ઉપાડી ઉપાડીને બીજી જગ્યાએ મૂકવામા આવતા હોય, આ પ્રકારનો "असजमोवट्टइ" જીવ વિરાધનારૂપ અસયમ જ્યા સાધુને નિમિત્તે થઇ રહ્યો હોય, 'से तारिसे" આ પ્રકારનુ જે "सुत्त परिकुट्ठे" આગમદ્વારા નિષિદ્ધ છે, 'उवस्सए" તે ઉપાશ્રય "संजयाण अट्ठा" સાધુઓને માટે 'वज्जेयव्वो" વર્જનીય છે એટલે કે તે પ્રકારના ઉપાશ્રયમા સાધુએ રહેવુ જોઇએ નહી હવે સૂત્રકાર પહેલી ભાવનાનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે-"एव" ઉપર કહ્યા પ્રમાણે આ "विवित्तवासवसहिसमिइजोगेण"

वासरसति =निवासस्थान तद्विषया या समितिः=सम्यक् प्रवृत्तिस्तया यो योगः= सम्बन्धस्तेन 'भाविओ' भावितः-वासितः 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवः 'निच्चं' नित्य=सदा 'अहिगरणकरणकारावणपावकम्मविरए' अधिकरणकरण कारणपापकर्मविरतः-अधिक्रियते=अधिकारी क्रियते दुर्गतावात्मा येन तदधिकरणम्=आसिञ्चनादिरूप सावद्यानुष्ठानम्, तस्य यत्करणकरणमन्यतो वा कारणम् -उपलक्षणादनुमोदन च तदेव पापकर्म=तस्माद् विरतो=निवृत्तो यः सः तथोक्तः, तथा-'दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई' दत्तानुज्ञातोद्ग्रहरुचिः 'तत्र-दत्तस्य = दात्रा वितीर्णस्य एषणीयस्य अनुज्ञातस्य=तीर्थकरगणधरैर्दत्ताज्ञस्य देवकुलादेः उद्ग्रहे= ग्रहणे रुचिः=प्रीतिर्यस्य स तथोक्त अदत्ताननुज्ञातवसतेरपरिभोक्तेत्यर्थ, 'भवइ' भवति ॥ सू०६ ॥

रहित ऐसे एकान्त निवास स्थान में वसने रूप समिति के सबध से (भाविओ अतरप्पा) भवित जीव (निच्च) सदा (अहिगरणकरण कारावणपावकम्मविरए) आसिंचनादि सावद्यानुष्टान के करने, कराने और उसकी अनुमोदनारूप पापकर्म से निवृत्त बना रहता है। तथा (दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई) दाता से वितीर्ण, एव तीर्थंकर गण धर आदि देवों द्वारा वसने के लिये अनुज्ञात हुए ऐसे देवकुल आदि स्थान के ग्रहण में प्रीतिवाला होने से वह दत्तानुज्ञात वसति के ग्रहण की रुचि वाला अर्थात् अदत्त अननुज्ञात वसति का अपरिभोक्ता होता है।

भावार्थ—अदत्तादानविरमणव्रत की रक्षा और सुस्थिरता के निमित्त सूत्रकार इस सूत्र द्वारा इसकी पाच भावनाओं में से विविक्तवास-वसति नाम की प्रथम भावना का स्वरूप प्रकट करते हुए कहते हैं

વિવિક્તવાસવસતિ સમિતિના યોગથી સ્ત્રી, પશુ, પડકથી રહિત એવા એકાન્ત નિવાસ સ્થાનમા વસવારૂપ સમિતિના સબધથી "भाविओ अतरप्पा" ભાવિત જીવ "निच्च" સદા "अहिगरणकरणकारावणपावकम्मविरए" આસિંચનાદિ સાવદ્ય અનુષ્ઠાન કરવાથી, કરાવવાથી અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઇ જાય છે તથા "दत्तमणुण्णायउग्गहरुई" દાતાની વિતીર્ણ, અને તીર્થંકર ગણધર આદિ દેવોદ્વારા વસવાને માટે અનુજ્ઞા મળેલ એવા દેવકુલ આદિ સ્થાન ગ્રહણ કરવામા પ્રીતિયુકત હોવાથી તે દત્તાનુજ્ઞાત વસતિને ગ્રહણ કરવાની રુચિવાળો એટલે અદત્ત અનનુજ્ઞાત વસતિનો ઉપભોગ કરનાર બને છે

ભાવાર્થ—અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની રક્ષા અને સુસ્થિરતાને નિમિત્તે સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા તેની પાચ ભાવનાઓમાથી "વિવિકતવાસવસતિ" નામની પહેલી ભાવનાનુ સ્વરૂપ પ્રગટ કરતા બતાવે છે સાધુઓએ દેવકુલ આદિ

कि साधु को देवकुल आदि स्थानों में जो कि उसके निमित्त को लेकर नहीं बने हुए होते हैं ठहरना चाहिये या किसी उपाश्रय में। यह उपाश्रय साधु के निमित्त बना नहीं होना चाहिये, गृहस्थ ने इसे अपने निमित्त बनाया हो ऐसा होना चाहिये। साधु के निमित्त बनाने में साधु को सावद्यानुष्ठान कराने रूप असयम का दोष लगता है। स्त्री पशु पण्डक से इस स्थान को वर्जित होना चाहिये। तथा 'साधु महाराज आ रहे हैं' इस ख्याल से साधु का निमित्त लेकर वह पानी से छिड़का हुआ नहीं होना चाहिये, वहा के जाले वगैरह उतारे हुए नहीं होना चाहिये। गोबर आदि से लीप पोत कर उसे साफ सुथरा किया गया नहीं होना चाहिये। उसमें की शीत को दूर करने के लिये वहा अग्नि वगैरह जलाकर उसे गरम किया हुआ नहीं होना चाहिये, इत्यादि जिस रूप से आगम में साधु के लिये निवास योग्य वसति रहने के लायक कही गई है वह उस रूप का होना चाहिये। तभी जाकर यह प्रथम भावना फल सकती है। और इस तरह की प्रवृत्ति करने वाला साधु अपने अदत्तादानविरमणव्रत की रक्षा और सुस्थिरता कर सकता है। सूत्र में जो अधिकरण शब्द आया है उसका व्युत्पत्ति-लभ्य अर्थ "दुर्गति में जाने योग्य आत्मा जिसके बल पर बनता है"

સ્થાનો, કે જે તેમને નિમિત્તે બનાવ્યા હોતા નથી, તેમા વસવુ જોઇએ અથવા તો કોઇ ઉપાશ્રયમા વસવુ જોઇએ તે ઉપાશ્રય સાધુને નિમિત્તે બનાવેલ હોવા જોઇએ નહીં, પણ ગૃહસ્થે પોતાને નિમિત્તે જ તે બધાવેલા હોવા જોઇએ સાધુને નિમિત્તે બનાવવામા સાધુને સાવદ્ય અનુષ્ઠાન કરાવવા રૂપ અસયમનો દોષ લાગે છે સ્ત્રી, પશુ પડકથી તે સ્થાન રહિત હોવુ જોઇએ તથા "સાધુ મહારાજ પધારવાના છે" એવા ખ્યાલથી સાધુને નિમિત્તે તેના પર પાણી છટાવ્યુ હોવુ જોઇએ નહી, ત્યાના જાળા વગેરે ઉતારેલ હોવા જોઈએ નહીં છાણ આદિથી લીપીને તેને સ્વચ્છ અને સુઘડ બનાવ્યો હોવો જોઇએ નહી ત્યાની ટાઢને દૂર કરવા માટે ત્યા અગ્નિ વગેરે સળગાવીને તેને ગરમ કરેલ હોવો જોઇએ નહી, ઇત્યાદિ પ્રકારે જે રીતે આગમમા સાધુને માટે યોગ્ય નિવાસ બતાવવામા આવેલ છે તે પ્રકારનુ તે નિવાસસ્થાન હોવુ જોઇએ ત્યારે આ પહેલી ભાવના સફળ થાય છે અને તે પ્રકારની આ પ્રવૃત્તિ કરનાર સાધુ પોતાના અદત્તાદાન વિરમણવ્રતની રક્ષા અને સુસ્થિરતા રાખી શકે છે સૂત્રમા જે અધિકરણ શબ્દ આવ્યો છે તેનો વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે મળતો અર્થ "જેના પ્રભાવથી આત્મા દુર્ગતિમા જવાને યોગ્ય બને છે" તે પ્રમાણે થાય છે આ

द्वितीयां भावनामाह—' वीय ' इत्यादि '

मूलम्—वीयं आरामुज्जाणकाणणवणप्पदेसभागे जं किंचि इक्कड वा कढिणग वा जतुग वा परमेरकुच्चकुसडब्भप्पलाल-भूयगवल्लयपुप्फफलतयप्पवालकंदमूलतणकट्ठसक्कराइ गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्ठा, न कप्पइ उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हिउं, जे हणि हणि उग्गहं अणुण्णाविय गेण्हियव्वं । एवं उग्गहस-मिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा णिच्चं अहिकरणकरण-कारावणपावकम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई ॥ सू० ७ ॥

टीका—वीय द्वितीयाम् अनुज्ञातसंस्तारकग्रहणरूपा भावनामाह तत्र-'आरा-मुज्जाणकाणणवणप्पदेसभागे ' आरामोद्यानकाननवनप्रदेशभागे-तत्र-आरामः =

इस प्रकार है। आसिञ्चनादिकर्म ऐसे ही हैं, क्यों की ये सावद्यानुष्ठान हैं। करना, कराना और अनुमोदना करना इनका व्रतादि के विचार में समानकोटि का स्थान कहा गया है, अतः साधु के लिये आसिञ्च-नादि कर्म यदि साधु के निमित्त को लेकर किये जा रहे हैं तो वह भी सावद्यानुष्ठानरूप असंयम का भागी बनता है। अतः साधु को ऐसे सावद्यानुष्ठानरूप असंयमभावसे दूर रहनेका प्रभुका आदेश है ॥सू० ६॥

अब सूत्रकार द्वितीयभावना को प्रकट करते हैं—' वीय आरामु-ज्जाण०' इत्यादि०।

टीकार्थ—(वीय) इस व्रत की दूसरी भावना अनुज्ञातसंस्तारक-ग्रहण रूप है। वह इस प्रकार है-(आरामुज्जाणकाणणवणप्पदेसभागे)

સિંચનાદિ કર્મ એવા જ છે કારણ કે તે સાવદ્ય અનુષ્ઠાન છે કરવુ, કરાવવુ અને અનુમોદના આપવી એ ત્રણેનુ વ્રતાદિકના વિચારમા સમાન કોટિનુ સ્થાન આપ્યુ છે, આસિંચનાદિ કર્મ જો સાધુને નિમિત્તે કરવામા આવતા હોય તો તે સાધુને માટે પણ સાવદ્યાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમના ભાગીદાર બને છે તેથી પ્રભુનો એવો આદેશ છે કે સાધુઓએ તેવા સાવદ્યાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમ ભાવથી દૂર રહેવુ જોઈએ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર બીજી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે-"वीय आरामुज्जाण" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" वीय " આ વ્રતની બીજી ભાવના "અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ રૂપ છે, તે આ પ્રમાણે છે-' आरामुज्जाणकाणणवणप्पदेसभागे " આરામ-

माधवीलतादिपरिमण्डितवनविशेषः, उद्यानम्=उपवनम् , कानन=सामान्यवृक्षोपेत वनम् , वनम्=नगरदूर वर्त्तिवनम् , एतेषा य' प्रदेशः=स्थान तस्य यो भागः=एक देशस्तत्र स्थित ' इक्कड ' ' ढाढूण ' इति भाषा प्रसिद्ध तृणविशेष वा=अथवा ' कढिणग ' कठिनक=' रोइस ' इति भाषा प्रसिद्ध तृणविशेषः वा, यद्वा-' जतुग ' जन्तुक=जलाशयोत्पन्नतृणविशेषम् , वा=अथवा ' परमेरकुच्चकुसडब्भप्पलालमूयग वव्वयपुप्फफलतयप्पवालकदमूलतणकट्ठसक्कराइ ' परमेरकूर्चकुशदर्भपलालमूयकवल्वजपुष्पफलत्वक्प्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्करादि, तत्र-पराः=तृणविशेष', मेराः= मुञ्जसरिका. कूर्चानि यैस्तृणविशेषैः भित्तौ सेटिकावलेपनार्थ कूर्चा (कूँची) निर्मीयन्ते ते तृणविशेषाः कुशाः= ह्रस्वाकारास्तृणविशेषा., दर्भाः=दीर्घाकाराः कुशाएव दर्भा उच्यन्ते, पलालः=' पुआल ' इति भाषाप्रसिद्धः, मूयकः=' मोतिगा ' इति भाषा प्रसिद्धस्तृणविशेषः, वल्वजः=दर्भजातीयतृणविशेषः, पुष्पफल त्वक्प्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्कराः प्रतीताः, एता आदौ यस्य तत्तथोक्त ' ज

आराम-माधवीलता आदि से परिमडित वनविशेष में, उद्यान-उपवन में, कानन-सामान्य वृक्षों से युक्त वन मे, वन-नगर से दूरवर्ती जगल में, अर्थात् इन स्थानों के प्रदेशों के एकदेश में, स्थित (ज किंचि) जो कुछ (इक्कड़ वा) ढाढूण-तृणविशेष, अथवा (कढिणग वा) कठिनक-रोइस नामक तृणविशेष, अथवा (जतुग वा) जतुक-जलाशय में-उत्पन्न हुए जतुक नाम के तृणविशेष, (पर-मेर-कुच-कुस-डब्भ-प्पलाल-मूयग-वल्लय-पुप्फ-फल-तय-प्पवाल-कद-मूल--तण-कट्ठ--सक्कराइ) पर नाम के तृणविशेष, कुश नामक तृणविशेष, दर्भनामक तृणविशेष, पलाल नामक तृणविशेष, मोतिग नामक तृणविशेष, वल्वज-दर्भ-जाति का तृणविशेष, पुप्प, फल, त्वक्-छाल, प्रवाल-

માધવીલતા આદિથી આચ્છાદિત વનમા, ઉદ્યાન-બાગમા, કાનન-સામાન્ય વૃક્ષોથી યુક્ત વનમા, વન-નગરથી દૂર આવેલા જગલમા, એટલે કે તે સ્થાનોના પ્રદેશોમાના એક દેશમા, સ્થિત " ज किंचि " જે કોઇ " इक्कड वा " ઢાઢૂણ-એક પ્રકારનુ ઘાસ, અથવા " कढिणग वा " કઠિનક-રોઇસ નામનુ એક પ્રકારનુ ઘાસ અથવા " जतुग वा " જતુક-જળાશયમા પેદા થયેલ જતુક નામનુ ઘાસ "पर, मेर, कुच, कुस, डब्भ, प्पलाल, मूयग, वल्लय, पुप्फ, फल, तय, प्पवाल, कद, मूल, तण, कट्ठ सक्कराइ" પર નામનુ ઘાસ, મેર-મુજ નામનુ ઘાસ, કુશ નામનુ ઘાસ, દર્ભ નામનુ ઘાસ પલાલ નામનુ ઘાસ, મોતિગ નામનુ ઘાસ, વલ્વજ-દર્ભની જાતનુ ઘાસ, પુષ્પ, ફળ, ત્વક્-છાલ, પ્રવાલ-કુપળ,

किंचि ' यत्किंचित् ' सेज्जोवहिस्स ' शय्योपधेः=शय्योपकरणस्य ' अट्ठा ' अर्था य=हेतवे ' गेण्हइ ' गृह्णाति, तत् ' उग्गहे ' अवग्रहे=आज्ञायाम् ' अदिण्णे ' अदत्ते=अदत्तायाम्, अर्थात् तत्तद्वस्तु स्वामिन आज्ञायामप्राप्तया सत्या ' गेण्हिउ ' ग्रहीतु साधूना ' न कप्पइ ' न कल्पते, ' जे ' यत्=यस्मात् कारणात् ' हणिहणि ' अहन्यहनि प्रतिदिनम् ' उग्गहं ' अवग्रहम् 'अणुण्णविय' अनुज्ञाप्य=प्राप्य तत्तद्वस्तु साधुभिः ' गेण्हियव्व ' ग्रहीतव्य भवति । उपसहरन्नाह–एवम्=अनेन प्रकारेण ' उग्गहसमिइजोगेण ' अवग्रहसमितियोगेन–अवग्रहः=शय्योपध्यर्थ तृणाद्यादानस्य तत्तत्स्वामिन आज्ञा तत्र या समितिः=सम्यक्प्रवृत्तिस्तया यो योग =सबन्धस्तेन भावितो=वासितः ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा=जीवो नित्यम्, ' अहिगर

कोंपल, कन्द, मूल, तृण–सामान्य तृणविशेष, काष्ठ–लकड़ी, शर्करा–ककड, इनमें से जिस किसी पदार्थ को जो (सेज्जोवहिस्स अट्ठाए गेण्हइ) शय्योपकरण के निमित्त लेता है, परन्तु (उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हिउ न कप्पइ) इन २ वस्तुओं के स्वामी यदि उन २ वस्तुओंको लेने की आज्ञा नहीं देते हैं तो साधुको इन वस्तुओंका लेना नहीं कल्पता है (जे) इसलिये जो (हणि हणि उग्गह अणुण्ण वि य गेण्हियव्व) प्रतिदिन उन २ वस्तुओं को लेनेके लिये उन२ वस्तुओंके स्वामी की आज्ञा साधु को लेनी चाहिये, और आज्ञा प्राप्त हो जाने पर ही उन२ वस्तुओं को लेना चाहिये। (एव उग्गहसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा निच्च अहिकरण, करण कारावणपावकम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ) इस प्रकार से अवग्रहसमितिके योग से–शय्योपधिके निमित्त तत्तद्वस्तुओं के स्वामी की आज्ञा प्राप्तकर तृणादि को के लेने मे सम्यक् प्रवृत्ति के साथ सबध

કંદ, મૂળ, તૃણ–સામાન્ય ઘાસ, કાષ્ઠ–લાકડા, શર્કરા–કંકર, તે બધામાંથી કોઈ પણ પદાર્થને જે "सेज्जोवहिस्स अट्ठाए गेण्हइ" શય્યા બનાવવાના સાધન તરીકે લે છે, પણ " उग्गहे अदिण्णम्मि गेण्हिउ न कप्पइ " તે તે વસ્તુઓના માલિક જો તે તે વસ્તુઓ લેવાની રજા ન આપે તો સાધુઓને તે વસ્તુઓ લેવી કલ્પતી નથી "जे' તેથી જે "हणि हणि उग्गह अणुण्णविय गेण्हियव्व" પ્રતિદિન તે તે વસ્તુઓ લેવાને માટે તે તે વસ્તુઓના માલિકની મંજૂરી સાધુએ લેવી જોઈએ, અને મંજૂરી મળ્યા પછી જ તે તે વસ્તુઓ લેવી જોઈએ " एव उग्गह समिइजोगेण भाविओ अतरप्पा निच्च अहिकरण, करणकारावरणपावकम्म विरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ " આ પ્રમાણે અવગ્રહ સમિતિના યોગથી–શય્યોપધિને નિમિત્તે તે તે વસ્તુઓના માલિકની આજ્ઞા મેળવીને તૃણાદિકોને

णकरणकारावणपावकम्मविरए ' अधिकरणकरणकारणपापकर्मविरतः=तत्र अधिकरणम्=अननुज्ञातेक्कडादीनामादानरूप सावद्यकर्म तस्य यत्स्वय करणम् अन्यतश्च कारणम् उपलक्षणादनुमोदन च, एतद्रूप यत्पापकर्मतस्माद् विरतो=निवृत्तो यः स तथोक्तः, तथा–' दत्तमणुण्णायउग्गहरुइ ' दत्तानुज्ञातावग्रहरुचिः=दत्तस्य=वस्तु स्वामिना वितीर्णस्य, अनुज्ञातस्य=ग्रहणार्थं कथितस्य तीर्थकरगणधरैराज्ञप्तस्य वा तृणादिवस्तुनः उद्ग्रहः=ग्रहण, तस्मिन् रुचिः अभिप्रायो, यस्य स तथोक्तः, ' भवइ ' भवति ॥ सू० ७ ॥

से, भावित हुआ जीव सदा सावद्यानुष्ठान के करने, कराने और उसकी अनुमोदनाजन्य पापकर्म से निवृत्त बना रहता है। तथा दाता से वितीर्ण एव तीर्थंकर गणधर आदि देवों द्वारा ग्रहण करने के लिये कथित इक्कड आदि वस्तु के ग्रहण करने के अभिप्राय वाला होता है। इस तरह उसकी अनुज्ञात सस्तारक ग्रहणरूप द्वितीय भावना सध जाती है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इससूत्र द्वारा इस व्रत की अनुज्ञात सस्तारक ग्रहण नामक दूसरी भावना का उल्लेख किया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि साधु का कर्त्तव्य है कि वह शय्योपकरण के निमित्त आराम आदि स्थानों के किसी भी भाग से जो इक्कड आदि वस्तुए लेवे वह उनके स्वामियों की आज्ञा प्राप्त कर ही लेवे। अन्यथा उसे अदत्तादान ग्रहण करने का दोष लगेगा जो इस मूलगुण की अशुद्धि का कारण बनेगा। अतः जो शय्या सस्तारक के निमित्त इक्कड आदि तृणविशेषो

લેવાની સમ્યક્ પ્રવૃત્તિના યોગથી, ભાવિત થયેલ જીવ સદા સાવદ્યાનુષ્ઠાન કરાવવાના અને તેની અનુમોદના કરવાના પાપકર્મથી નિવૃત્ત રહ્યા કરે છે તથા દાતા વડે વિતીર્ણ અને તીર્થંકર ગણધર આદિ દેવો દ્વારા ગ્રહણ કરવાને યોગ્ય કહેલ ઇક્કડ આદિ વસ્તુ ગ્રહણ કરવાના અભિપ્રાયવાળા થાય છે. આ રીતે તેની અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણરૂપ બીજી ભાવના સાધ્ય બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા આ વ્રતની ' અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ' નામની બીજી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યુ છે તેમા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે સાધુનુ તે કર્તવ્ય છે કે તે શય્યાના સાધન નિમિત્તે આરામ આદિ સ્થાનોના કોઈ પણ ભાગમાથી ઇક્કડ આદિ જે વસ્તુઓ લે તે તેના માલિકની રજા મેળવીને જ લે નહી તો તેમને અદત્તાદાન ગ્રહણ કરવાનો દોષ લાગે છે, જે આ મૂલગુણની અશુદ્ધિનુ કારણ બનશે તેથી શય્યા સસ્તારકને નિમિત્તે ઇક્કડ આદિ પ્રકારના તૃણ વિશેષને પ્રાપ્ત કરવાને માટે જે સાધુઓ તેના માલિકની

अथ तृतीया भावनामाह—' तइय ' इत्यादि—

मूलम्—तइय पीढफलगसेज्जासथारगट्टयाए रुक्खा न छिंदियव्वा, न य छेयण भेयणेण य सेज्जा कारियव्वा जस्सेव उवस्सए वसेज्जा, सेज्ज तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसम सम करेज्जा, न य निवायपवायउस्सुगत्त, न डसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गीधूमो य न कायव्वो। एवं सजमवहुले सवरवहुले संवुडवहुले समाहिवहुले धीरे काएण फासयते सययं अज्झाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्म, एव समिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा निच्च अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरए दत्तमणुन्नाय उग्गहरुई ॥ सू० ८ ॥

टीका—'तइय' तृतीया शय्यापरिकर्मवर्जनरूपा भावनामाह—तत्र—' पीढफलग सेज्जासथारगट्टयाए ' पीठफलकशय्यासस्तारकार्थतायै—तत्र—पीठ=' बाजोट '

को प्राप्त करने के लिये उनके स्वामीयो की आज्ञा प्राप्तकर उन २ वस्तुओं को लेता है वह इस द्वितीय भावना का पालक होता है। इस तरह के विचार से जो साधु अपनी प्रवृत्ति करता है वह अधिकरण करण कारण पापकर्म से निवृत्त बनकर इस व्रत को इस भावना द्वारा स्थिर करने वाला हो जाता है ॥ सू० ७ ॥

अथ सूत्रकार इस व्रत की तृतीय भावना को कहते हैं—' तइय पीढफलग०' इत्यादि०।

टीकार्थ—(तइय) इस व्रत की तीसरी भावना शय्यापरिकर्मवर्जनरूप है। वह इस प्रकार से है—(पीढफलगसेज्जा सथारगट्टयाए)

આજ્ઞા લઈને તે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરે છે તેઓ આ બીજી ભાવનાના પાલક હોય છે આ પ્રકારના વિચારથી જે સાધુ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરે છે તે અધિકરણ કરણકારણ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈને આ વ્રતને આ ભાવના દ્વારા સ્થિર કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ૦ ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે–"तइय पीढफलग" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" तइय " આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના "શય્યાપરિકર્મવર્જન" નામની છે તે આ પ્રમાણે છે–" पीढफलगसेज्जासथारगट्टयाए " પીઠ–બાજોઠ,

इति भाषा प्रसिद्ध, फलक=' पाट ' इति भाषा प्रसिद्ध , शय्या=शरीरप्रमाणा, सस्तारकाः=सार्द्धहस्तद्वयप्रमाण आसनविशेषः, तदर्थं ' रुक्खा ' वृक्षाः ' छिंदियव्वा ' छेत्तव्य। ' न य ' न च ' छेयणभेयणेण ' छेदनभेदनेन=छेदन=तद्भूम्याश्रितरक्षाणा कर्त्तनम् , भेदन=पाषाणादीना द्विधाकरणम् , अनयो समाहारः तेन तयोस्तेन च ' सेज्जा ' शय्या ' न कारियव्वा ' न कारयितव्या परः। तथा ' जस्सेव ' यस्यैव गृहपतेः ' उवस्सए ' उपाश्रये=वसतौ 'वसेज्जा' वसेत् , ' तत्थेव ' तत्रैव ' सेज्ज ' शय्यां—शयनीय ' गवेसेज्जा ' गवेषयेत्= कुर्यादित्यर्थः। च=पुनः 'नय वि समसम करेज्जा' विषमा भूमिं समां कुर्यात्। ' न य ' न च ' निवायपवायउस्सुगत्त ' निवातप्रवातोत्सुकत्वम्-निवात=निर्वातस्थानम्, प्रवात=प्रकृष्टवायुस्थानम् , तत्र-उत्सुकत्वम्=उत्सुकता ' न करेज्जा'

पीठ-बाजोट, फलक-पाट, शय्या-शरीरप्रमाण, सस्तारक-ढाई हाथ-प्रमाण आसनविशेष, साधु सबधी इन वस्तुओं को बनवाने के निमित्त (रुक्खा न छिंदियव्वा) वृक्षों को नहीं काटना चाहिये। और (न य छेयण-भेयणेण सेज्जा कारियव्वा) न इनके छेदन, भेदन से शय्या करवानी चाहिये। वृक्षों का कटवाना इसका नाम छेदन है और उनका फडवाना इसका ना भेदन है। तथा (जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज-तत्थेव गवेसेज्जा) जिस गृहपति के (उवस्सए) उपाश्रय में-वसति-स्थान में साधु (वसेज्जा) वसे-रहे, (तत्थेव) वहीं पर अर्थात्-उसी मकान मालिक से अथवा उसी वस्ती से (सेज्ज गवेसेज्जा) शय्या की गवेषणा करे न य विसम सम करेज्जा) वहां की भूमि को यदि वह विषम-ऊंची नीची होवे तो उसे सम-एकसी न करे, और (न य निवाय पवाय उस्सुगत्त) न वह निर्वात स्थान की तथा प्रवात स्थान की

ફલક-પાટ, શય્યા-શરીરપ્રમાણ, સસ્તારક-અઢી હાથના માપનુ એક આસન, આદિ સાધુને ઉપયોગી ચીજો બનાવવાને માટે " रुक्खा न छिंदियव्वा " વૃક્ષોને કાપવા જોઇએ નહી, અને " न य छेयण भेयणेण सेज्जा कारियव्वा " તેમને છેદાવી ભેદાવીને શય્યા કરાવવી જોઇએ નહી વૃક્ષોને કપાવવા એટલે તેમનુ છેદન અને તેમને વેરાવવા તેનુ નામ ભેદન છે, તથા " जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज तत्थेव गवेसेज्जा " જે ગૃહપતિના " उवस्सए " ઉપાશ્રયમા વસતિસ્થાનમા સાધુ ' वसेज्जा " વસે રહે, " तत्थेव " ત્યા જ એટલે કે તે જ મકાનમાલિક પાસેથી અથવા તે જ વસ્તીમાથી " सेज्ज गवेसेज्जा " શય્યાની ગવેષણા કરે ' न य विसम सम करेज्जा " જો ત્યાની જમીન વિષમ-ઊચી નીચી હોય તો તેને એકસરખી ન કરે અને " न य निवाय पवाय उस्सुगत्त "

न कुर्यात्। अय भाव-शीतर्त्तौ निर्वातस्थानस्य ग्रीष्मर्त्तौ प्रवातस्थानस्य वाञ्छां न कुर्यात्। इति। 'न य' न च 'डसमसगेसु' दशमशकेषु सत्सु 'खुभियव्व' क्षोभितव्यम्, दशमशकादीनामुपद्रवे सत्यपि क्षोभो न कर्तव्य इति भावः। तथा- 'अग्गीधूमो य' अग्निर्धूमश्च=दशमशकादीना निवारणार्थमग्निर्धूमो वा 'न कायव्वो' न कर्तव्यः। एवम्=उक्तरूपेण 'सजमबहुले' सयमबहुलः=सयमः=षट्कायरक्षणलक्षण, स बहुल=प्रचुरो यस्य सतथोक्तः, तथा-'सवरबहुले' सवरबहुल=सवरः=प्राणातिपाताद्यास्रवद्वारनिरोधः, स बहुलः=प्रचुरो यस्य सतथोक्तः, तथा-'संवुडबहुले' सवृतबहुल=सवृत=कषायेन्द्रियजयः, तद् बहुल प्रचुर यस्य स तथोक्तः, तथा-'समाहिबहुले' समाधिबहुलः=समाधिः=चित्तस्वास्थ्य, स बहुल' प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, एतादृशो 'धीरे' धीरः=अक्षोभ्य' 'काएण' कायेन 'फासयते' स्पृशन्=परीषहान् सहमानइत्यर्थः, तथा-'सयय'

उत्सुकता-भावना रखे अर्थात् शीतऋतु में निर्वातस्थान की और ग्रीष्म ऋतुमें हवादार स्थान की इच्छा न करे। तथा-(न डसमसगेसु-खुभियव्व) ठहरे हुए स्थान में दशमशक आदि का उपद्रव होवे तो उससे उसको क्षुभित नहीं होना चाहिये। और (अग्गी धूमो न कायव्वो) न उस स्थान पर उन दशमशक आदि को भगाने के निमित्त अग्नि वा धूओं करवाना चाहिये। (एव) इस प्रकार की प्रवृत्ति रखने से (सजमबहुले) षट्काय रक्षणरूप सयम की प्रचुर मात्रा से युक्त सयम बहुल, तथा (सवरबहुले) प्राणातिपात आदि आस्रव द्वार के निरोध रूप सवर की प्रचुर मात्रा से सहित होने के कारण सवर बहुल, तथा (सवुडबहुले) कषाय और इन्द्रियों के जीतने रूप सवृत की प्रचुर मात्रा से सहित होने के कारण सवृतबहुले, तथा

તે નિર્વાત સ્થાનની કે પ્રવાતસ્થાનની ઉત્સુકતા રાખે નહી, એટલે કે શિયાળામા પવન વિનાના સ્થાનની અને ઉનાળામા હવા આવે તેવા સ્થાનની તેણે ઇચ્છા કરવી નહી તથા "न डसमसगेसु खुभियव्व" તેમને રોકાવાના સ્થાનમા ડાસ, મચ્છર આદિનો ઉપદ્રવ હોય તો તેથી તેણે ક્ષોભ પામવો નહી અને "अग्गी धूमो न कायव्वो" તેમણે તે ડાસ, મચ્છર આદિને નસાડવા માટે તે સ્થાનમા અગ્નિ કે ધુમાડો કરાવવો જોઈએ નહી "एव" આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ રાખવાથી "सजम बहुले" છકાય રક્ષણરૂપ સયમની અત્યત માત્રાથી યુક્ત સયમબહુલ તથા "सवरबहुले" પ્રાણાતિપાત આદિ આસ્રવદ્વારના નિરોધરૂપ સવરની ઘણી માત્રાથી યુક્ત હોવાને કારણે સવરબહુલ, તથા "सवुडबहुले" કષાય અને ઇન્દ્રિયોને જીતનાર સવૃતની અતિ અધિક માત્રાથી યુક્ત હોવાને

सततम्=निरन्तरम्, 'अज्झप्पज्झाणजुत्ते' अध्यात्मध्यानयुक्तः=आत्मानमधिकृत्य अध्यात्मम्=आत्मालम्बनरूप यद्ध्यान तेन युक्त =समन्वितः, तथा–'समिए' समितः=समितिभिर्युक्त 'एगे' एकः= एकाकी रागद्वेपरहित, 'धम्म' धर्म= श्रुतचारित्रलक्षण 'चरेज्ज' चरेत्=आचरेत्। उपसहरन्नाह–'एवम्' प्रकारेण 'सिज्जासमिइजोगेण' शय्यासमितियोगेन भावितोऽन्तरात्मानित्यम्, 'अहिक रण करणकारावणपावकम्मविरए' अधिकरणकरणकारणपापकर्मविरत –अधिकरण= शय्यापरिकल्पनार्थं वृक्षादीना छेदनभेदनरूप यत्सावद्य कर्म, तस्य यत्स्वय कर- णम्, अन्यतश्च कारण उपलक्षणत्वादनुमोदन च तद्रूप यत्पापकर्म ततो विरतो= निवृत्तो यः स तथोक्त, तथा–दत्तानुज्ञातावग्रहरुचिः=दत्तानुज्ञातैपणीयपीठफल- कादेरुपभोगकारी भवति ॥ सू–८ ॥

(समाहिवहुले) चित्त की स्वस्थतारूप समाधि की प्रचुर मात्रा से सहित होने के कारण समाधि बहुल, बना हुआ वह साधु (फासयते- काएणधीरे) परीपहों को सहते हुए शरीर से धीर–अक्षोभ्य बना रहता है। तथा (सयय अज्झप्पज्झाणजुत्ते) निरन्तर आत्मावलम्बन रूप ध्यान से युक्त बना हुआ वह साधु (समिए) पाच समिति के पालन से (एगे) अकेला रागद्वेप रहित होकर (धम्म चरेज्ज) श्रुत- चारित्ररूप धर्म का आचरण करता रहता है (एव) इस प्रकार से (सेज्जासमिइजोगेण) शय्यासमिति के योग से (भाविओ अतरप्पा) भावित हुआ जीव (निच्च) नित्य (अहिकरणकरणकारणपावकम्म- विरए) शय्यापरिकल्पनार्थ वृक्षादिकों के छेदन भेदन रूप सावद्य अनु- ष्ठान के करने दूसरों द्वारा कराने तथा अनुमोदना रुप पापकर्म से निवृत्त

કારણે સવૃતબહુલ, તથા "समाहिवहुले" ચિત્તની સ્વસ્થતારૂપ સમાધિથી અત્યત પ્રમાણમા યુક્ત હોવાને કારણે સમાધિબહુલ, બનેલ તે સાધુ "फासयते काएणधीरे" પરીષહોને સહન કરતા કરતા શરીરથી ધીર–ક્ષોભરહિત રહે છે તથા "सयय अज्झप्पज्झाणजुत्ते" નિરતર આત્માવલબનરૂપ ધ્યાનથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ "समिए" પાચ સમિતિના પાલનથી "एगे" એકલો રાગદ્વેષ રહિત થઈને "धम्म चरेज्ज" શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનુ આચરણ કર્યા કરે છે "एव" આ રીતે "सेज्जा समिइ जोगेण" શય્યાસમિતિના યોગથી "भाविओ अ तरप्पा" ભાવિત થયેલ જીવ "निच्च" નિત્ય "अहिकरणकरणकारणपावकम्मविरए" શય્યા પરિકલ્પનાર્થે વૃક્ષાદિના છેદન ભેદનરૂપ સાવદ્ય અનુષ્ઠાન કરતા, બીજા પાસે કરાવતા તથા અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત થઈ જાય છે તથા "दत्तम-"

न कुर्यात्। अय भावः-शीतर्त्तौ निर्वातस्थानस्य ग्रीष्मर्त्तौ प्रवातस्थानस्य वाञ्छां न कुर्यात्। इति। 'न य' न च 'डसमगेसु' दशमशकेषु सत्सु 'खुभियव्व' क्षोभितव्यम्, दंशमशकादीनामुपद्रवे सत्यपि क्षोभो न कर्तव्य इति भावः। तथा- 'अग्गीधूमो य' अग्निर्धूमश्च=दंशमशकादीनां निवारणार्थमग्निर्धूमो वा 'न कायव्वो' न कर्तव्यः। एवम्=उक्तरूपेण 'संजमबहुले' संयमबहुलः=संयमः=षट्कायरक्षणलक्षणः, स बहुलः=प्रचुरो यस्य सतथोक्तः, तथा-'संवरबहुले' संवरबहुलः=संवरः=प्राणातिपाताद्यास्रवद्वारनिरोधः, स बहुलः=प्रचुरो यस्य सतथोक्तः, तथा-'संवुडबहुले' संवृतबहुलः=संवृत=कषायेन्द्रियजयः, तद् बहुलं प्रचुरं यस्य स तथोक्तः, तथा-'समाहिबहुले' समाधिबहुलः=समाधिः=चित्तस्वास्थ्यं, स बहुलः प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, एतादृशो 'धीरे' धीरः=अक्षोभ्यः 'काएण' कायेन 'फासयते' स्पृशन्=परीषहान् सहमानइत्यर्थः, तथा-'संयय'

उत्सुकता-भावना रखे अर्थात् शीतऋतु में निर्वातस्थान की और ग्रीष्म ऋतुमें हवादार स्थान की इच्छा न करे। तथा-(न डसममसगेसु-खुभियव्व) ठहरे हुए स्थान में दंशमशक आदि का उपद्रव होवे तो उससे उसको क्षुभित नहीं होना चाहिये। और (अग्गी धूमो न कायव्वो) न उस स्थान पर उन दंशमशक आदि को भगाने के निमित्त अग्नि वा धूआँ करवाना चाहिये। (एव) इस प्रकार की प्रवृत्ति रखने से (संजमबहुले) षट्काय रक्षणरूप संयम की प्रचुर मात्रा से युक्त संयम बहुल, तथा (संवरबहुले) प्राणातिपात आदि आस्रव द्वार के निरोध रूप संवर की प्रचुर मात्रा से सहित होने के कारण संवर बहुल, तथा (संवुडबहुले) कषाय और इन्द्रियों के जीतने रूप संवृत की प्रचुर मात्रा से रहित होने के कारण संवृतबहुले, तथा

તે નિર્વાત સ્થાનની કે પ્રવાતસ્થાનની ઉત્સુકતા રાખે નહીં, એટલે કે શિયાળામા પવન વિનાના સ્થાનની અને ઉનાળામા હવા આવે તેવા સ્થાનની તેણે ઇચ્છા કરવી નહીં તથા "न डसमसगेसु खुभियव्व" તેમને થોભવાના સ્થાનમા ડાસ, મચ્છર આદિનો ઉપદ્રવ હોય તો તેથી તેણે ક્ષોભ પામવો નહીં અને "अग्गी धूमो न कायव्वो" તેમણે તે ડાસ, મચ્છર આદિને નસાડવા માટે તે સ્થાનમા અગ્નિ કે ધુમાડો કરાવવો જોઈએ નહીં "एव" આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ રાખવાથી "संजम बहुले" છકાય રક્ષણરૂપ સયમની અત્યત માત્રાથી યુક્ત સયમબહુલ તથા "संवरबहुले" પ્રાણાતિપાત આદિ આસ્રવદ્વારના નિરોધરૂપ સવરની ઘણી માત્રાથી યુક્ત હોવાને કારણે સવરબહુલ, તથા "संवुडबहुले" કષાય અને ઇન્દ્રિયોને જીતનાર સવૃતની અતિ અધિક માત્રાથી યુક્ત હોવાને

चतुर्थी भावनामाह—' चउत्थ ' इत्यादि ।

मूलम्–चउत्थ साहारणपिंडवायलाभे सइ भोत्तव्वं, संजएण समियं, न सागसूवाहियं, न खद्धं, न वेगियं, न तुरियं, न चवलं, न साहसं, न य परस्स पीलाकरं सावज्जं । तह भोत्तव्वं जइसे तइयं वयं न सीयइ साहारणपिंडवायलाभे सुहुमं अदिण्णादाणविरमणवयनियमणं, एवं साहारणपिंडवायलाभे समिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा णिच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरए दत्तमणुन्नाय उग्गहरुई ॥सू०९॥

टीका—' चउत्थं ' चतुर्थीम् अनुज्ञातभक्तादिभोजनलक्षणा भावनामाह— तत्र–' साहारणपिंडवायलाभे ' साधारणपिण्डपातलाभे साधारणः=कल्पनीय उ-

---

साधु संयम बहुल आदि होकर परीषह और उपसर्गो से अडोल बनता हुआ श्रुत चारित्र रूप धर्म की आराधना में सावधान बन जाता है। इस तरह शय्यापरिकर्मवर्जन रूप शय्यासमिति के योग से भावित आत्मा शय्यापरिकल्पनार्थ वृक्षादिकों के छेदन भेदन आदि रूप सावद्य कर्म के करने कराने और अनुमोदनाजन्य पापकर्म से बच जाता है। और इस तृतीयभावना का पालक हो जाता है ॥ सू० ८ ॥

अब सूत्रकार चौथी भावना को प्रदर्शित करते हैं—' चउत्थ साहारण०' इत्यादि ० ।

टीकार्थ—(चउत्थ) चौथी भावना अनुज्ञातभक्तादि भोजनरूप है जो इस प्रकार है–(साहारणपिंडवायलाभे सइ) उच्च नीच कुल से

નહી આ રીતે તે સાધુ સંયમબહુલ, સંવરબહુલ આદિ થઈને પરીષહો તથા ઉપસર્ગો સામે અચળ બનીને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની આરાધનામાં સાવધાન બની જાય છે આ રીતે શય્યાપરિકર્મવર્જનરૂપ શય્યાસમિતિના યોગથી ભાવિત આત્મા શય્યા પરિકલ્પનાર્થે વૃક્ષાદિના છેદન ભેદન આદિરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરા વવાથી અને અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મથી બચી જાય છે અને આ ભાવનાનો પાલક થઇ જાય છે ॥ સૂ૦ ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર ચોથી ભાવના બતાવે છે–" चउत्थ साहारण " ઇત્યાદિ "चउत्थ" ચોથી ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન રૂપ છે તે આ પ્રમાણે છે " साहारणपिंडवायलाभे सइ " ઉચ્ચ નીચ કુળમાથી કલ્પે તેવી ભિક્ષા તથા

हो जाता है। तथा (दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ) दत्तानुज्ञातावग्रह रुचिवाला-दत्तानुज्ञातैषणीय पीठ फलक आदिका उपभोगकारी होता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा शय्यापरिकर्मवर्जन नामक तीसरी भावना का स्पष्टी करण किया है। उन्हों ने इस में यह समझाया है कि जो साधु इस भावना को भाता है-सेवन करता है-उसका कर्त्तव्य है कि वह अपने निमित्त काटे गये वृक्ष से बने हुए पीठ फलक आदि के उपभोग करने का परित्याग कर देवे। तथा जिस गृहपति के यहा वह ठहरे वहीं पर अर्थात् उसी मकान मालिक से अथवा वस्ती से वह अपनी शय्या की गवेषणा करें। यदि वहा की भूमि नीची ऊँची होवे तो वह उसे सम न करे। यदि गर्मी के समय में किसी गृहपति की वसती में ठहरने का अवसर प्राप्त हुआ हो और वहा हवा आने का साधन न हो तो वह सवात स्थान की चाहना न करे तथा यदि शीतऋतु में किसी गृहपति के यहा या किसी उपाश्रय आदि में ठहरने का मौका आ गया होवे और वह स्थान सवात हो तो उसे निर्वात-स्थान की कामना नहीं करनी चाहिये। दशमशक पीडित करे भी-तो भी उसे क्षुभितचित्त नहीं होना चाहिये-और न उन्हें भगाने का उसे कोई उपाय ही विचारना या करना चाहिये। इस तरह से वह

णुण्णायउग्गहरुई भवइ" दत्तानुज्ञातावग्रह रुचिवाळो-दत्तानुज्ञातैषणीय पीठ, फलक आदिनो उपभोगकर्ता बने छे

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા શય્યાપરિકર્મવર્જન નામની ત્રીજી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમણે તેમા એ સમજાવ્યુ છે કે જે સાધુ આ ભાવનાનુ સેવન કરે છે, તેનુ કર્તવ્ય એ છે કે તે પોતાને નિમિત્તે કપાયેલ વૃક્ષમાથી બનાવેલ પીઠ, ફલક આદિનો ઉપભોગ કરવાનો પરિત્યાગ કરે તથા જે ગૃહપતિને ત્યા તે ઉતરે ત્યા જ એટલે કે એ જ મકાનમાલિક પાસેથી અથવા વસ્તીમાથી તે પોતાની શય્યાની ગવેષણા કરે જો ત્યાની જમીન ઊંચી નીચી હોય તો તેને સમતલ ન કરે જો ઉનાળાની ઋતુમા કોઇ ગૃહપતિના આવાસમા થોભવાની જરૂર પડી હોય અને ત્યા હવા આવવાની વ્યવસ્થા ન હોય તો તે હવા આવે તેવા સ્થાનની ઇચ્છા ન કરે તથા જો શિયાળામા કોઇ ગૃહપતિને ત્યા અથવા કોઈ ઉપાશ્રય આદિમા ઉતરવાનો અવસર આવે અને તે સ્થાનમા પવન આવતો હોય તો તેણે પવન ન આવે એવા સ્થળની ઇચ્છા જોઈએ નહી ડાસ, મચ્છર આદિ સતાવે તો પણ તેણે ચિત્તમા ક્ષોભ પામવો જોઈએ નહી અને તેને નસાડવાનો તેણે વિચાર કે ઉપાય કરવો જોઇએ

चालनरूपचापलययुक्त भोक्तव्यम् । न साहसम्–अप्रतिलेखित भोक्तव्यम् , तथा– ' न य ' न च 'परस्स ' परस्य एकेन्द्रियादेः ' पीलाकर ' पीडाकर ' सावज्ज ' सावद्य=सचित्त भोक्तव्यम्, एवमुपलक्षणादुवस्त्रपात्रादिपरिभोगोऽपि ग्राह्यः। तर्हि-कथ भोक्तव्यम् ? इत्याह | ' तह भोक्तव्व ' तथा भोक्तव्य 'जह ' यथा ' से ' तस्य=सयतस्य ' तइय ' तृतीय ' वय ' व्रत अदत्तादानविरमणरूप ' नसीयइ ' न सीदति=न नश्यति यथा–अदत्तादानविरमणरूप व्रत न विनश्येत्तथा भोक्तव्य-मित्यर्थः, 'साहारणपिंडवायलाभे' साधारणपिण्डपातलाभे सति ' सुहुम ' सूक्ष्म= दुर्निरीक्षम् ,–पूर्णरूपेणेत्यर्थ , ' अदिण्णादाणविरमणवयनियमण ' अदत्तादानविर

शीघ्रता करके भोजन नहीं करना चाहिये। तथा (न चवल) हाथ, गर्दन आदि अवयवों को चलाते हुए भोजन नहीं करना चाहिये। तथा (न साहस) अप्रतिलेखित भोजन नहीं करना चाहिये। और (न य परस्स पीलाकर सावज्ज एकेन्द्रियादिक जीवों को पीडा कारक सावद्य–सचित्त–भोजन न करना चाहिये। इसी तरह से वस्त्र पात्रादिकके परिभोग में भी यही वात समझ लेनी चाहिये। तो फिर कैसे भोजन करना चाहिये ? इस बात को अब सूत्रकार प्रकट करते हैं, वे कहते हैं कि (से) उस सयत को (तह भोत्तव्व) इस प्रकार से भोजन करना चाहिये कि (जह) जिससे (तइय वय) अदत्तादानविरमणरूप तीसरा व्रत (न सीयइ) नष्ट न होवे (साहारणपिंडवायलाभे) इस तरह पूर्वोक्त साधारण कल्पनीय–पिंडपात–भिक्षा की प्राप्ति होने पर (सुहुम) सूक्ष्म रूप से अर्थात्–पूर्णरूप से (अदिण्णादाणविरमणवयनियमण) इस

જોઈએ તથા "नचवल" હાથ, ડોક આદિ અવયવોને ડોલાવતા ડોલાવતા પણ ભોજન કરવુ જોઈએ નહી તથા "न साहस" અપ્રતિ લેખિત ભોજન ન કરવુ જોઈએ નહી અને "न य परस्स पीलाकर सावज्ज" એકેન્દ્રિય આદિ જીવોને પીડા કારક સાવદ્ય–સચિત્ત–ભોજન ન કરવુ જોઈએ એ જ રીતે વસ્ત્ર, પાત્ર આદિના પરિભોગમા પણ એ જ વાત સમજી લેવી તો પછી કેવુ ભોજન કરવુ જોઈએ ? તે વાતને પ્રગટ કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે ' से " તે સયતે "तह भोत्तव्व " આ પ્રમાણે ભોજન કરવુ જોઈએ " जह " જેથી " तइय वय " અદત્તાદાન વિરમણ રૂપ ત્રીજુ વ્રત " न सीयइ " નષ્ટ ન થાય " साहारणपिंडवायलाभे " આ રીતે પૂર્વોક્ત સાધારણ કલ્પનીય પિડપાત–ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ થતા " सुहुम " સૂક્ષ્મરૂપે એટલે કે પૂર્ણરૂપે " अदि-ण्णादाणविरमणवयनियमण " અદત્તદાન વિરમણ વ્રત પર નિયત્રણ–અધિકાર

च्चावचकुलग्राह्यो य पिण्डपातः भिक्षा, उपलक्षणाद् वस्त्रपात्राद्यन्यापधिरपिगृह्यते, तस्य लाभः = दायकात्प्राप्तिस्तस्मिन् ' सइ ' सति ' सजण्ण ' सयतेन= साधुना ' भोत्तव्व भोक्तव्यम् = परिभोक्तव्य । ' भोक्तव्यम् ' इत्यग्रेऽपि सर्वत्र योज्यम् , कथ भोक्तव्यम् ? इत्याह-' समिय ' सम्यक् = अदत्तादान यथा न भवति तथेत्यर्थः । सम्यक्त्वमेवाह-' न 'सागसूवहिय ' न शाकसूपाधिक=भोक्त व्यम् । शाकसूपाधिके भोजने कृते सति प्रमाणादधिकाहारो भवति, तेनादत्तादा नदोषापत्तिर्भवति, तथा ' खद्ध ' प्रचुर भोक्तव्यम् । ' न वेगिय ' न वेगित= वेगयुक्त वेगेन ग्रास मुखे प्रक्षिप्य भोक्तव्यम्, 'न तुरिय' त्वरित=त्वरायुक्त ग्रासस्य गिलने शीघ्रता कृत्वा भोक्तव्यम् । तथा-न ' चवल ' चपल=हस्तग्रीवादिकाय,

कल्पनीय भिक्षा तथा वस्त्रपात्र आदि उपधि का लाभ होने पर (सज-एण भोत्तव्व) मुनि को उसे अपने खाने आदि के उपयोग में लेना चाहिये। साधु को आहार किस प्रकार से कैसा लेना चाहिये सूत्रकार अब इस बात को कहते हैं-(समिय) अदत्तादान का दोप न लगे इस प्रकार से यतना रखते हुए न साग सूवाहिय) शाक और दाल की अधिकता के साथ भोजन नही करना चाहिये-अर्थात्-शाक और दाल की अधिकता वाला भोजन प्रमाण से अधिक खा लिया जाता है, इसलिये बत्तीस ग्रास लेने की अपेक्षा भोजन में अधिकता आने से साधु को अदत्तादान दोप की आपत्ति आती है। (न खद्ध) उचित मात्रा में भी दाल शाक के साथ प्रचुर मात्रा में आहार नही करना चाहिये। तथा (न वेगिय) जल्दीर उतावली के साथ भी भोजन नहीं करना चाहिये। तथा (न तुरिय) त्वरायुक्त होकर ग्रास के गिलने में

વસ્ત્ર પાત્ર આદિ ઉપધિનો લાભ થતા "सजएण भोत्तव्व" મુનિએ તે પોતાને માટે ખાવા આદિના ઉપયોગમા લેવુ જોઈએ હવે સૂત્રકાર એ વાત બતાવે છે કે મુનિએ ભોજન કેવી રીતે ખાવુ જોઈએ અને કેવુ ન ખાવુ જોઈએ "समिय" અદત્તાદાનનો દોષ ન લાગે તે પ્રમાણે યતના પૂર્વક "न सागसूवहिय" શાક અને દાળની અધિકતા વાળુ ભોજન કરવુ નહી, એટલે કે શાક અને દાળની અધિકતા વાળુ ભોજન પ્રમાણુમા વધારે ખવાય છે, તે કારણે બત્રીશ ગ્રાસ કરતા ભોજન વધારે લેવાથી સાધુને અદત્તાદાન દોષ નડે છે "न खद्ध" પ્રમાણુમા દાળ શાકની સાથે વધારે પ્રમાણુમા પણ આહાર લેવો જોઈએ નહી, તથા "न वेगियव्व" જલ્દી જલ્દી ઝડપથી પણ ભોજન કરવુ જોઈએ નહી, તથા "न तु रिय" ત્વરા સહિત કોળિયો ગળે ઉતારવામા ઝડપ કરીને પણ ભોજન નહી કરવુ

पञ्चमी भावनामाह—'पंचम' इत्यादि

मूलम्—पंचम साहम्मिएसु विणओ पउंजियव्वो। उवगरण पारणासु विणओ पउंजियव्वो, वायणपरियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो। दाणग्गहणपुच्छणासु विणओ पउंजियव्वो। निक्खमणपवेसणासु विणओ पउंजियव्वो। अण्णेसु य एवमाइएसु बहुसु कारणसएसु विणओ पउंजियव्वो। विणओ वि तवो, तवो वि धम्मो, तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरुसु साहुसु तवस्सिसु य। एवं विणएण भाविओ भवइ अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरए दत्तमणुण्णा य उग्गहरुई॥ सू० १०॥

है, क्यों कि ऐसा आहार प्रमाण से अधिक कर लिया जाता है, जिससे अदत्तादान का दोष आता है। आहार करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना योग्य है कि हाथ, पैर, गर्दन आदि अवयव अनावश्यक रूप से न चले। आहार करते समय आहार जल्दी २ से न किया जावे। ग्रास जल्दी २ से न गिला जावे। एकेन्द्रियादिक जीवों को बाधाकारी आहार—सचित्त आहार न लिया जावे। तात्पर्य कहने का यह है कि अदत्तादानविरमणव्रत नष्ट न हो इस प्रकार से साधु को आहार करना चाहिये। इस तरह की प्रवृत्ति से इस व्रत पर पूर्ण रूप से नियंत्रण—काबू हो जाता है। वह साधु अननुज्ञात भक्तादि भोजन रूप सावद्यकर्म के करने, कराने और अनुमोदनारूप पापकर्म से विरत बन जाता है ॥सू०९॥

ત્યાગ કરવુ જોઈએ એવુ તેમા દર્શાવ્યુ છે, કારણ કે તેવો આહાર વધારે પ્રમાણમા લેવાય છે તેથી સાધુને અદત્તાદાનનો દોષ લાગે છે આહાર કરતી વખતે એ વાતનુ ખાસ ધ્યાન રાખવુ જોઈએ કે હાથ, પગ ડોક આદિ અવયવો બીનજરૂરી રીતે હાલે ચાલે નહી આહાર કરતી વખતે ઝડપથી આહાર લેવો જોઈએ નહી, કોળિયો જલ્દી ગળાની નીચે ઉતરવો નહી એકેન્દ્રિયાદિજીવોને પીડાકારી આહાર—અચિત્ત આહાર લેવો જોઈએ નહી એ કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે અદત્તાદાન વિરમણ રૂપ નષ્ટ ન થાય તે પ્રકારે સાધુએ આહાર કરવો જોઈએ આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિથી આ વ્રત પર સપૂર્ણ રીતે અકુશ આવી જાય છે તે સાધુ અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજનરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતા, કરાવતા અને અનુમોદના થતા પાપકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે ॥ સૂ ૯ ॥

मणव्रतनियमनम्=अदत्तादानविरमणव्रतस्य यद्नियमन=नियन्त्रण तद् भवति। एवम्=अनेन प्रकारेण 'साहारणपिंडवायलाभमसमिइजोगेण' साधारणपिण्डपात लाभसमितियोगेन=साधारणपिण्डपातलाभे या समिति=सम्यक्प्रवृत्तिः तस्या योगेन=सम्बन्धेन भावितोऽन्तरात्मानित्य=सदा अधिकरणकरण कारणपापकर्मविरतः =अधिकरणस्य=अननुज्ञातभक्तादिभोजनलक्षणमावद्यकर्मणोयत्करण कारणमुपलक्ष णत्वादनुमोदन च तदेव यत्पापकर्म ततो विरतो=निवृत्तः, दत्तानुज्ञातावग्रहरुचि र्भवति। एतद् व्याख्या पूर्ववद्विज्ञेया ॥ सू ९ ॥

अदत्तादानविरमण व्रत पर नियत्रण-अधिकार हो जाता है। (एव) इस प्रकार से (साहारणपिंडवायलाभे) साधारणपिंडपातलाभ में (समिइजोगेण) सम्यक् प्रवृत्ति के सबध से (भाविओ अतरप्पा) भावित अन्तरात्मा (निच्च) नित्य-सदा (अहिकरण करणकारावण-पावकम्मविरए) अननुज्ञात भक्तादि भोजनरूप सावद्यकर्मके करने, कराने और उसकी अनुमोदनारूप पापकर्मसे विरत हो जाता है। और (दत्तम णुण्णाय उग्गहरुई भवइ) दत्तानुज्ञात अवग्रह में रुचिशाली हो जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा अदत्तादानविरमण व्रत की चौथी भावना को कहते है। इस का नाम अनुज्ञातभक्तादि भोजन है। साधु के लिये दाता द्वारा कल्पनीय भिक्षा अथवा उपधि की प्राप्ति हो जाने पर उसे किस तरह से अपने उपयोग में लाना चाहिये इसका इसमें विचार किया गया है। आहार के विचार में साधु को दाल शाक की अधिकता के साथ में आहार करने का त्याग कहा गया

થઈ જાય છે "एव" આ પ્રકારે "साहारण पिंडवायलाभे" સાધારણ ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ થતા "समिइजोगेण" સમ્યક્ પ્રવૃત્તિના યોગથી, "भाविओ अ तरप्पा" ભાવિત અતરાત્મા "निच्च" નિત્ય "अहिकरणकरणकारावणपाव कम्मविरए" અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન રૂપ સાવદ્યકર્મ કરવાથી, કરાવવાથી, અને તેની અનુમોદના રૂપ પાપકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે અને "दत्तमणुण्णाय उग्गहरुइ भवइ" દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમા રુચિવાળો થઇ જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની ચોથી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યુ છે તે ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન નામની છે દાતા દ્વારા સાધુને કલ્પે તેવી ભિક્ષા અથવા ઉપધિની પ્રાપ્તિ થઇ જાય ત્યારે તેણે કેવી રીતે તે પોતાના ઉપયોગમા લેવી જોઇએ તે બાબતનો આ ભાવનામા વિચાર કરવામા આવ્યો છે વધારે દાળ શાક સાથેનો આહાર લેવાનો સાધુએ

क्षण प्रयोक्तव्य.। तथा-' दाणग्गहणपुच्छणासु' दानग्रहणप्रच्छनासु=दान=लब्ध-स्याम्नादे ग्लानादिभ्यो वितरणत्, ग्रहणम्-परेण दीयमानस्यैवान्नादेर्ग्रहणम्, प्रच्छना=विस्मृतसूत्रार्थविषये प्रश्नः, एतासु 'विणओ' विनय =दान ग्रहणयोगुर्वा ज्ञालक्षण, प्रच्चनाया वन्दनादिरूप प्रयोक्तव्य ।

तथा-' निक्खमणपवेसणासु ' निष्क्रमणप्रवेशनयोः = गमनागमनयोः विनयः = गमने आवश्यिकीरूपः, आगमने नैषेधिकीरूपः प्रयोक्तव्यः, किं वहुना 'अण्णेसु य ' अन्येषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु=एवंविधेषु वहुषु ' कारणसएसु ' कारणशतेषु विनयः प्रयोक्तव्यः । कस्मात्कारणाद् विनय प्रयोक्तव्यः ? इत्याह-' विणओवि ' विनयोऽपि तपः=न केवलमनशनादिकमेव

करने में साधु को (विणओ पउजियव्वो) वन्दनादिरूप विनय करना चाहिये। तथा (दाणग्गहणपुच्छणासु विणओ पउजियव्वो) दान मे-दाता द्वारा दिये हुए अन्नादि को का ग्लान आदि साधुओ के लिये वितरण करने में-दाता द्वारा दिये गये अन्नादिक के लेने में गुरु की आज्ञा प्राप्त करना रुप विनय, प्रच्छना मे-विस्मृत हुए सूत्रार्थ को गुर्वादिकों से पूछने मे-वदनादि रूप विनय भाव रखना चाहिये। तथा (निक्खमणपवेसणासु) निष्क्रमण और प्रवेशन में-गमन और आगमन में-(विणओ पउजियव्वो) आवश्यिकी रूप और नैषेधिकी रूप विनय करना चाहिये अर्थात्-गमन में आवश्यिकिरूप और आगमन मे नैषेधिकीरूप विनय भाव साधु को रखना चाहिये। (अण्णेसु एवमाइएसु सुवहुसु कारणेसु इसी तरह के और भी वहुत से सैकडों कारणो में (विणओ पउजियव्वो) विनय भाव का आचरण करते

આદિ કરીને વિનય દર્શાવવો જોઈએ તથા " दाणग्गहणपुच्छणासु विणओ पउजियव्वो" દાનમા-દાતા દ્વારા અપાયેલ અન્નાદિનુ ગ્લાન આદિ સાધુઓમા વિતરણ કરવામા વિનય રાખવો જોઇએ ગ્રહણ કરવામા-દાતા દ્વારા અપાયેલ અન્ન આદિ લેવા માટે ગુરુની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરવા રૂપ વિનય પાળવો જોઇએ પ્રચ્છનામા-ભૂલાઈ ગયેલ સૂત્રાર્થ ગુરુ આદિને પૂછતી વખતે વદણા આદિ રૂપ વિનય ભાવ રાખવો જોઈએ તથા " निक्खमणपवेसणासु " નિષ્ક્રમણ અને પ્રવેશના-ગમન અને આગમનમા " विणओ पउजियव्वो " આવશ્યિકી રૂપ નૈષેધિકી રૂપ વિનય ભાવ સાધુએ રાખવો જોઇએ, એટલે કે ગમનમા આવશ્યિકી રૂપ અને આગમનમા નૈષેધિકી રૂપ વિનય ભાવ સાધુએ રાખવો જોઈએ " अण्णेसुएवमाइएसु वहुसु कारणेसु " આ પ્રકાની અન્ય સેકડો બાબતોમા પણ " विणओ पउजियव्वो " વિનય ભાવ આચરવો જોઇએ કારણ કે " विणओ

टीका—'पचम' पञ्चमीं विनयभावनामाह—'साहम्मिएसु' साधर्मिकेषु पर्यायज्येष्ठ 'विणओ' विनयः 'पउजियव्वो' प्रयोक्तव्यः=करणीयः। तथा-'उवगारणपारणासु' उपकारणपारणयोः तत्र-उपकारण=स्वपरयोरुपकारकरण, तत्र-स्वस्य सयमपालनेन, परस्य ग्लानाद्यवस्थाया वैयावृत्त्यादि करणेन, पारणा=तपसः पारणा श्रुतस्य पारगमन वा पारणा, तयोः विनयः प्रयोक्तव्यः=द्वयोरपि मृदुस्वभावतया स्थातव्यमित्यर्थ', तथा-'वायणपरियट्टणासु' वाचनापरिवर्तनयोः=वाचना सूत्रग्रहणम्, परिवर्तना=तस्यैवगुणनम्, तयो विनय'=वन्दनादिक-

अथ सूत्रकार पाचवी भावना को कहते हैं—'पचम साहम्मिएसु' इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) इस व्रत की पाचवीं भावना विनय है-जिसका स्वरूप इस प्रकार से है-(साहम्मिएसु विणओ पउजियव्वो) अपने समान धर्मवालो मे जो दीक्षा पर्याय की अपेक्षा ज्येष्ठ हैं उनमें विनय वृत्ति रखनी चाहिये। तथा (उवगारणपारणासु विणओ पउजियव्वो) स्व और पर के उपकार करने में और पारणा करने में विनय रखना चाहिये, सयम की आराधना करना यह निज का उपकार करना है और ग्लान आदि अवस्था में अन्य साधु का वैयावृत्य आदि करना यह पर का उपकार करना है, तपस्या का पारणा करना अथवा श्रुत के पार पहुँचना यह पारणा है इन दोनों स्थितियों में मृदु स्वभाव से रहना यही उपकारण पारणा का विनय करना है। इसी तरह (वायणपरियट्टणासु) सूत्र की वाचना में और उसके परिवर्तन करने में-स्वाध्याय

હવે સૂત્રકાર પાચમી ભાવના બતાવે છે-" पचम साहम्मिएसु " ઇત્યાદિ-

ટીકા-" पचम " આ વ્રતની પાચમી ભાવના વિનય છે, જેનુ સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે—" साहम्मिएसु विणओ पउजियव्वो " પોતાના સાધર્મીઓમા જે દીક્ષા પર્યાયની અપેક્ષા એ મોટા હોય તેમના પર વિનયવૃત્તિ રાખવી જોઈએ તથા " उवगारणपारणासु विणओ उउप जियव्वो " સ્વ અને પરનો ઉપકાર કરવામા અને પારણા કરવામા વિનય રાખવો જોઈએ સયમની આરાધના કરવી તે પોતાના ઉપર ઉપકાર કર્યો ગણાય છે અને ગ્લાન આદિ અવસ્થામા અન્ય સાધુઓનુ વૈયાવૃત્ય-વૈયાવચ્ચ-કરવી તે પરના ઉપરનો ઉપકાર છે તપનુ પારણુ કરવુ અથવા શ્રુતને પાર પહોચવુ તે પણ પારણુ છે એ બન્ને સ્થિતિમા મૃદુ સ્વભાવથી રહેવુ તે જ પારણાનો વિનય કરવાની રીત છે એ જ રીતે " वायणपरियट्टणासु " સૂત્રની વાચનામા અને તેનુ પરિવર્તન કરવામા-સ્વાધ્યાય કરવામા સાધુએ " विणओ पउजियव्वो " વડણી

अध्ययनमुपसंहरति–' एवमिण ' इत्यादि ।

मूलम्–एवमिणं संवरस्सदारं सम्मं चरियं होइ सुपणिहियं, इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एसो जोगो नेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिण-मणुण्णाओ । एवं तइयं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं सम्मं आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ । एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं

भावना है । अपने से जो दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ है, उन साधुओं में विनय धर्म का पालन करना तथा स्वयं संयम के पालन करने में और पारणा में मृदु स्वभाव रखना, इत्यादि विनय संबधी जितनी भी क्रियाएँ हैं उन्हें मोक्षमार्ग के साधनों में यथायोग्यरूप से पालन करते रहना उनके प्रति अविनयरूपता का भाव चित्त में नहीं आने देना यह विनय भावना है। तात्पर्य यह है कि ज्ञानादि मोक्षमार्ग और उसके साधनों के प्रति योग्यरीति से बहुमान रखना यह विनयधर्म है। इस धर्म से भावित हुआ अंतरात्मा अविनय रूप सावद्य कर्म के करने कराने, और उसकी अनुमोदना जन्य पापक्रिया से विरक्त हो जाता है और इस भावना का पालक बन जाता है ॥ सू० १० ॥

પર્યાયમાં જે પોતાના કરતાં મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા નિજ સંયમનું પાલન કરવામાં તથા પારણામાં મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ વિનય સંબંધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમાં યોગ્ય રીતે પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય ભાવને ચિત્તમાં પ્રવેશવા ન દેવો તે વિનય ભાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાનો પાલક બની જાય છે. ॥ સૂ ૧૦ ॥

तपः अपि तु विनयोऽपि आभ्यान्तरतपोभेदेषु पठितः, तथा— तवो वि ' तपोऽपि ' धम्मो ' धर्मः=न केवलं संयमएव धर्मः, किन्तु तपोऽपि धर्मः, तस्य चारित्रांशत्वात्, ' तम्हा ' तस्मात् ' गुरुसु ' गुरुषु ' साहूसु ' साधुषु ' तवस्सिसु य ' तपस्विषु च विनयः प्रयोक्तव्यः। एवं विनयेन भावितोऽन्तरात्मा नित्यमधिकरणकरणकारणपापकर्मविरतो अधिकरणस्य = अविनयरूपसावद्यकर्मणो यत्करणं कारणमुपलक्षणत्वादनुमोदनं च, एतद्रूपं यत्पापकर्म, ततोविरतो=निवृत्तो दत्तानुज्ञातावग्रहरुचि भवति। एतद् व्याख्यापूर्वमुक्ता ॥ सू०१० ॥

रहना चाहिये। क्यों कि (विणओ वि तवो) यह विनय भी आभ्यतर तप है-केवल अनशन आदि ही तप नही है। तथा (तवो वि धम्मो) चारित्र का अंश होने से तप भी धर्म है, केवल संयम ही धर्म नहीं है। (तम्हा विणओ पउजियव्वो गुरूसु साहूसु तवस्सिसु य) इसलिये गुरुजनो के विषय में, साधुजनों के विषय में और तपस्वी जनों के विषय में विनय धर्म का व्यवहार अवश्य ही करना चाहिये। (एवं-विणएण भाविओ अन्तरप्पा निच्च अहिकरणकरणकारावणपाव-कम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ) इस प्रकार विनय धर्म से भावित जीव नित्य अविनयरूप सावद्यकर्म के करने, कराने और उसकी अनुमोदनारूप पापकर्म से निवृत्त हो जाता है और दत्तानुज्ञात अवग्रह मे रुचिवाला वन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा अदत्तादानविरमण रूप की पाचवी भावना का स्वरूप प्रदर्शित किया है इस भावना का नाम विनय

वि तवो " આ વિનય પણ અભ્યતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી " तवो वि धम्मो " ચારિત્રનો અંશ હોવાથી તપ પણ ધર્મ છે, ફક્ત સંયમ જ ધર્મ નથી " तम्हा विणओ पउजियव्वो गुरुसु तवस्सिसु य " તે કારણે ગુરૂ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ " एवं विणएण भाविओ अंतरप्पा निच्च अहिकरण करणकारावणपावकम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ " આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમા રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રતની પાચમી ભાવનાનુ સ્વરૂપ દર્શાવ્યુ છે તે ભાવનાનુ નામ " વિનય ભાવના " છે દીક્ષા

अध्ययनमुपसंहरति-' एवमिण ' इत्यादि ।

मूलम्-एवमिण संवरस्सदारं सम्म चरियं होइ सुपणिहियं, इमेहि पचहि वि कारणेहि मणवयणकायपरिरक्खिएहि निच्चं आमरणतच एसो जोगो नेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिण-मणुण्णाओ । एव तइयं सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय सम्मं आराहिय आणाए अणुपालिय भवइ। एव नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धि

भावना ह । अपने से जो दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ हैं, उन साधुओं में विनय धर्म का पालन करना तथा स्वय सयम के पालन करने में और पारणा में मृदु स्वभाव रखना, इत्यादि विनय सबधी जितनी भी क्रियाए ह उन्हें मोक्षमार्ग के साधनों मे यथायोग्यरूप से पालन करते रहना उनके प्रति अविनयरूपता का भाव चित्त में नहीं आने देना यह विनय भावना है। तात्पर्य यह है कि ज्ञानादि मोक्षमार्ग और उसके साधनो के प्रति योग्यरीति से बहुमान रखना यह विनयधर्म है। इस धर्म से भावित हुआ अतरात्मा अविनय रूप सावद्य कर्म के करने कराने, और उसकी अनुमोदना जन्य पापक्रिया से विरक्त हो जाता है और इस भावना का पालक बन जाता है ॥ सू० १० ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનુ પાલન કરવુ, તથા નિજ સયમનુ પાલન કરવામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ વિનય સબધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનુ મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે પાલન કરતા રહેવુ, તેમના પ્રત્યે અવિનય ભાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો તે વિનય ભાવના ગણાય છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવુ તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાનો પાલક બની જાય છે, ॥ સૂ ૧૦ ॥

तपः अपि तु विनयोऽपि आभ्यान्तरतपोभेदेषु पठितः, तथा— 'तवो वि' तपोऽपि 'धम्मो' धर्मः=न केवल संयमएव धर्मः, किन्तु तपोऽपि धर्मः, तस्य चारित्राशत्वात्, 'तम्हा' तस्मात् 'गुरुसु' गुरुषु 'साहुसु' साधुषु 'तवस्सिसु य' तपस्विषु च विनयः प्रयोक्तव्यः। एवं विनयेन भावितोऽन्तरात्मा नित्य मधिकरणकरणकारणपापकर्मविरतो-अधिकरणस्य = अविनयरूपसावद्यकर्मणो यत्क रण कारणमुपलक्षणत्वादनुमोदनं च, एतद्रूपं यत्पापकर्म, ततोविरतो=निवृत्तो दत्ता नुज्ञातावग्रहरुचि र्भवति। एतद् व्याख्यापूर्वमुक्ता ॥ सू०१० ॥

रहना चाहिये। क्यों कि (विणओ वि तवो) यह विनय भी आभ्यंतर तप है-केवल अनशन आदि ही तप नहीं है। तथा (तवो वि धम्मो) चारित्र का अश होने से तप भी धर्म है, केवल सयम ही धर्म नहीं है। (तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरुसु साहुसु तवस्सिसु य) इसलिये गुरुजनों के विषय में, साधुजनों के विषय में और तपस्वी जनों के विषय में विनय धर्म का व्यवहार अवश्य ही करना चाहिये। (एवं-विणएण भाविओ अन्तरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपाव-कम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ) इस प्रकार विनय धर्म से भावित जीव नित्य अविनयरूप सावद्यकर्म के करने, कराने और उसकी अनुमोदनारूप पापकर्म से निवृत्त हो जाता है और दत्तानुज्ञात अवग्रह में रुचिवाला बन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा अदत्तादानविरमण रूप की पांचवी भावना का स्वरूप प्रदर्शित किया है इस भावना का नाम विनय

वि तवो" આ વિનય પણ અભ્યંતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી "तवो वि धम्मो" ચારિત્રનો અંશ હોવાથી તપ પણ ધર્મ છે, ફક્ત સંયમ જ ધર્મ નથી "तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरुसु तवस्सिसु य" તે કારણે ગુરૂ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ "एवं विणएण भाविओ अंतरप्पा निच्चं अहिकरण करणकारावणपावकम्मविरए दत्तमणुण्णाय उग्गहरुई भवइ" આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રતની પાંચમી ભાવનાનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે તે ભાવનાનું નામ "વિનય ભાવના" છે દીક્ષા

अध्ययनमुपसंहरति-' एवमिण ' इत्यादि।

मूलम्-एवमिणं संवरस्सदारं सम्मं चरियं होइ सुपणिहियं, इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एसो जोगो नेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ। एवं तइयं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं सम्मं आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ। एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं

भावना है। अपने से जो दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ हैं, उन साधुओं में विनय धर्म का पालन करना तथा स्वयं संयम के पालन करने में और पारणा में मृदु स्वभाव रखना, इत्यादि विनय संबंधी जितनी भी क्रियाएं हैं उन्हें मोक्षमार्ग के साधनों में यथायोग्यरूप से पालन करते रहना उनके प्रति अविनयरूपता का भाव चित्त में नहीं आने देना यह विनय भावना है। तात्पर्य यह है कि ज्ञानादि मोक्षमार्ग और उसके साधनों के प्रति योग्यरीति से बहुमान रखना यह विनयधर्म है। इस धर्म से भावित हुआ अंतरात्मा अविनय रूप सावद्य कर्म के करने कराने, और उसकी अनुमोदना जन्य पापक्रिया से विरक्त हो जाता है और इस भावना का पालक बन जाता है ॥ सू० १० ॥

પર્યાયમાં જે પોતાના કરતાં મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા નિજ સંયમનું પાલન કરવામાં તથા પારણામાં મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઈત્યાદિ વિનય સંબંધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમાં યોગ્ય રીતે પાલન કરતાં રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય ભાવને ચિત્તમાં પ્રવેશવા ન દેવો તે વિનય ભાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવદ્ય કર્મ કરતાં, કરાવતાં અને તેની અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાનો પાલક બની જાય છે, ॥ સૂ. ૧૦ ॥

वरसासणमिणं आघविय सुदेसियपसत्थ तइय संवरदारं समत्त त्तिबेमि ॥ सू० ११ ॥

॥इय पण्हावागरणे तइयं संवरदार समत्त॥

टीका—एव पूर्वोक्तप्रकारेण 'इण' इद 'सवरस्स' सवरस्य 'दार' द्वारम् अदत्तादानविरमणनामक तृतीय द्वारमित्यर्थः, 'सम्म' सम्यक् 'चरिय' चरित सत् 'होइ' भवति 'सुप्पणिहिय' सुप्रणिहित=समाराधितम् । तथा—'इमेहिं' एभि 'पचहिं' वि=पञ्चभिरपि 'कारणेहिं' कारणैः=भावनाभिः, कीदृशैः कारणैः ? इत्याह—' मणवयणकायपरिरक्खिएहिं ' मनोवचनकायपरिरक्षितैः= मनोवाक्कायैः परिरक्षितैः,मनोवाक्काययोगयुक्ताभिः पञ्चभावनाभिरित्यर्थः, 'निच्च' नित्यम् 'आमरणत च' आमरणान्त=मरणपर्यन्त च 'एस जोगो' एष योगः= अदत्तादानविरमणरूपो योग 'णेयव्वो' नेतव्यः=पालनीय. 'धिइमया' धृतिमता 'मइमया' मतिमता । कथ भूतोऽय योगः ? इत्याह—'अणासवो' अना-

अब सूत्रकार इस अध्ययन का उपसहार करते हुए कहते हैं—'एवमिण' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एव) पूर्वोक्त प्रकार से (इण) यह (सवरस्स दार अदत्तादानविरमण नाम का तृतीय सवरद्वार (सम्म चरिय) अच्छी तरह से पाले जाने पर (सुपणिहिय) सुरक्षित (होइ) हो जाता है। इसलिये (मणवयणकायपरि रक्खिणहिं) मन, वचन, काय इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित कीये गये (इमेहिं) इन (पचहिं विकारणेहिं) पाच भावना रूप कारणों से (निच्च) सदा (आमरणत च) जीवन भर तक (एस जोगो) यह अदत्तादानविरमण रूप योग (धिइमया मइमया) चित्त स्वस्थता से तथा हेयोपादेय की विवेकता से

હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે-"एवमिण" ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ-"एव" પૂર્વોક્ત પ્રકારે "इणं" આ "सवरस्सदार" અદત્તાદાન વિરમણ નામનું ત્રીજું સવરદ્વાર "सम चारिय" સારી રીતે પાળવામા આવે તો "सुपणिहिय' સુરક્ષિત થઈ જાય છે તેથી "मणवयणकाय परिरक्खिएहिं" મન, વચન અને કાયાના યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ "इमेहिं" આ "पचहिं वि कारणेहिं" પાચ ભાવનારૂપ કારણોથી "निच्च" સદા "आमरण त च' જીવન પર્યંત "एसजोगो" આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ યોગ "धिइमया मइमया" ચિત્તની સ્વસ્થા તથા હેયોપાદેયના વિવેકથી

स्रवः=नूतनकर्मागमनरहितत्वात्, 'अकलुसो' अकलुषः = अशुभाध्यवसायरहितत्वाद्, 'अच्छिद्दो' अच्छिद्र =छिन्नपापस्रोतस्त्वात् 'अपरिस्सावी' अपरिस्रावी=बिन्दुरूपेणापि कर्मजलप्रवेशरहितत्वात्, 'असंकिलिट्ठो' असंक्लिष्टः =असमाधिभाववर्जितत्वात्, 'सुद्धो' शुद्धः-कर्ममलवर्जितत्वात्, 'सव्वजिणमणुण्णाओ' सर्वजिनानुज्ञातः=सकलप्राणिहितकारकत्वात्सर्वेषामर्हतामनुमतश्चास्ति। एवम्=एतादृशमिदं' 'तइय' तृतीय संवरद्वारम् 'फासिय' स्पृष्ट कायेनाचरित, 'पालिय' पालित-सततमुपयोगेनसेवित 'सोहिय' शोधित=अतीचारवर्जनेन शुद्धी

युक्त हुए मुनिजन को (नेयव्वो) पालन करने योग्य है। क्यों कि यह अदत्तादानविरमण रूप योग (अणासवो) नूतनकर्मो के आगमन से रहित होने के कारण अनास्रवरूप है, (अकलुसो) अशुभ अध्यवसाय से वर्जित होने के कारण अकलुष है, (अच्छिद्दो) पाप का स्रोत इससे छिन्न हो जाता है अतः अच्छिद्र है (अपरिस्सावी) बिन्दुरूप से भी कर्मरूपजल इसमें प्रवेश नहीं कर सकता है इसलिये यह अपरिस्रावी है। (असकिलिट्ठो) असमाधिभाव से वर्जित होने के कारण यह असंक्लिष्ट है। (सुद्धो) कर्ममल से रहित होने के कारण शुद्ध है (सव्वजिणमणुण्णायो समस्त प्राणियो का इससे हित होता है इस लिये समस्त अरहत भगवतो को यह मान्य हुआ है। (एव) ऐसा यह (तइय) तृतीय सवर द्वार है। इस सवरद्वार को जो (फासिय) अपने शरीर से आचरित करते हैं, (पालिय) निरन्तर उपयोग पूर्वक इसे सेवित करते हैं (सोहिय) अतिचारों से इसे रहित करते हैं

युक्त मुनिजनोने "नेयव्वो" पालन करवा योग्य छे आ अदत्तादान विरमण रूप योग "अणासवो" नवा कर्मोना आगमनथी रहित होवाने कारणे अनास्रवरूप छे, "अकलुसो" अशुભ अध्यवसायथी रहित होवाने कारणे अकलुष छे, "अच्छिद्दो" पापनो स्रोततेनाथी छिन्न थई जाय छे तेथी अछिद्र छे, "अपरिस्सावी" कर्म रूप जળनु બिंदु पण तेमा प्रवेशी शकतु नथी तेथी ते अपरिस्रावी छे, "असकिलिट्ठो" असमाधि ભाव रहित होवाने कारणे ते असक्लिष्ट छे, "सुद्धो" कर्म मળथी रहित होवाने कारणे ते शुद्ध छे, "सव्वजिणमणुण्णाओ" समस्त प्राणीओनु तेनाथी कल्याण थाय छे, ते कारणे समस्त अर्हत ભगवानोने ते मान्य थयेल छे, "एव" એवु "तइय" आ तृतीय सवरद्वार छे आ सवरद्वारने जे "फासिय" पोताना शरीरथी आचरे छे, "पालिय" निरतर उपयोग पूर्वक तेनु सेवन करे छे, "सोहिय" अतिचारोथी

छे "किट्टिय" तेनु

वरसासणमिणं आघविय सुदेसियपसत्थं तइयं संवरदारं समत्तं त्तिबेमि ॥ सू० ११ ॥

॥इय पण्हावागरणे तइयं संवरदारं समत्तं॥

टीका—एवं पूर्वोक्तप्रकारेण 'इणं' इदं 'संवरस्स' संवरस्य 'दारं' द्वारम् अदत्तादानविरमणनामकं तृतीयं द्वारमित्यर्थः, 'सम्मं' सम्यक् 'चरियं' चरितं सत् 'होइ' भवति 'सुप्पणिहियं' सुप्रणिहितं=समाराधितम्। तथा-'इमेहिं' एभिः 'पंचहिं' वि=पञ्चभिरपि 'कारणेहिं' कारणैः=भावनाभिः, कीदृशैः कारणैः? इत्याह-'मणवयणकायपरिरक्खिएहिं' मनोवचनकायपरिरक्षितैः=मनोवाक्कायैः परिरक्षितैः,मनोवाक्काययोगयुक्ताभिः पञ्चभावनाभिरित्यर्थः, 'निच्चं' नित्यम् 'आमरणंतं च' आमरणान्तं=मरणपर्यन्तं च 'एस जोगो' एष योगः=अदत्तादानविरमणरूपो योगः 'णेयव्वो' नेतव्यः=पालनीयः 'धिइमया' धृतिमता 'मइमया' मतिमता। कथं भूतोऽयं योगः? इत्याह-'अणासवो' अना-

अब सूत्रकार इस अध्ययन का उपसंहार करते हुए कहते हैं— 'एवमिणं' इत्यादि०।

टीकार्थ—(एवं) पूर्वोक्त प्रकार से (इणं) यह (संवरस्स दारं अदत्तादानविरमण नाम का तृतीय संवरद्वार (सम्मं चरियं) अच्छी तरह से पाले जाने पर (सुपणिहियं) सुरक्षित (होइ) हो जाता है। इसलिये (मणवयणकायपरिरक्खिएहिं) मन, वचन, काय इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित कीये गये (इमेहिं) इन (पंचहिं विकारणेहिं) पांच भावना रूप कारणों से (निच्चं) सदा (आमरणंतं च) जीवन भर तक (एस जोगो) यह अदत्तादानविरमण रूप योग (धिइमया मइमया) चित्त स्वस्थता से तथा हेयोपादेय की विवेकता से

હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે-"एवमिणं" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-"एवं" પૂર્વોક્ત પ્રકારે "इणं" આ "संवरस्सदारं" અદત્તા દાન વિરમણ નામનું ત્રીજું સંવરદ્વાર "सम्मं चारियं" સારી રીતે પાળવામાં આવે તો "सुपणिहियं" સુરક્ષિત થઇ જાય છે તેથી "मणवयणकाय परिरक्खिएहिं" મન, વચન અને કાયાના યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ "इमेहिं" આ "पंचहिं वि कारणेहिं" પાંચ ભાવનારૂપ કારણોથી "निच्चं" સદા "आमरणंतं च" જીવન પર્યંત "एसजोगो" આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ યોગ "धिइमया मइमया" ચિત્તની સ્વસ્થા તથા હેયોપાદેયના વિવેકથી

'सुदेसियं' सुदेशितं=सदेवमनुजासुरायां पर्षदि सुष्ठुप्रदिष्टम् 'पसत्थं' प्रशस्तं=सर्वप्राणिहितकरत्वान्मङ्गलमयं 'तइयं संवरदारं' तृतीयं संवरद्वारं 'समत्तं' समाप्तम्। 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि। अस्यार्थं पूर्वमुक्तं ॥ सू० ११ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकला
पालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक– वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रप
तिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराज-
गुरु–बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री–घासीलाल–
व्रतिविरचितायां दशमाङ्गस्य श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्या
ख्यायां व्याख्यायां संवरात्माके द्वितीयेभागेऽदत्तादान-
विरमणनामकं तृतीयं संवरद्वारं समाप्तम् ॥

सर्व भाव से इसके विषय में कहा है और (सुदेसियं) देवो, मनुजों तथा असुरो से युक्त परिषदा में इसका उपदेश दिया है। (पसत्थं) सर्वप्राणीयो का हितकारक होने से मंगलमय है (तइयं संवरदारं समत्तं) यह तृतीय संवर द्वार समाप्त हुआ (त्ति बेमि) ऐसा मैं कहता हूं। अर्थात् हे जम्बु! इस तृतीय संवर द्वार का जैसा कथन मैंने साक्षात् भगवान् महावीर के मुख से सुना है वैसा ही मैंने तुम से कहा है–अपनी तरफ से इसमें मैंने कुछ भी मिश्रित नही किया है।

भावार्थ—इस तृतीय संवर द्वार का उपसंहार करते हुए सूत्रकार समझा रहे है कि इस तृतीय संवर द्वार का जो मुनिजन तीन करण तीनयोग से सुरक्षित की गई पांच भावनाओ से जीवन भर पालते हैं–

વિષે કહ્યું છે અને 'सुदेसियं' દેવો, મનુષ્યો અને અસુરોવાળી યુક્ત પરિષદામાં તેનો ઉપદેશ દીધો છે "पसत्थं" સર્વ પ્રાણીઓનું હિતકરનાર હોવાથી તે મંગલમય છે, "तइयं संवरदारसमत्तं" આ તૃતીય સંવરદ્વાર સમાપ્ત થયું, "त्तिबेमि" એવું હું કહું છું એટલે કે હે જમ્બૂ! આ તૃતીયસંવરદ્વારનું કથન જે પ્રમાણે સાક્ષાત ભગવાન મહાવીરના મુખે સાભળ્યું હતું તે જ પ્રમાણે તમને કહું છું–મારા તરફથી તેમાં કંઈ પણ ઉમેરવા આવ્યું નથી

ભાવાર્થ—આ ત્રીજા સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતાં સૂત્રકાર સમજાવે છે કે આ ત્રીજા સંવરદ્વારનું જે મુનિજન ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી સુરક્ષિત કરવામાં આવેલ પાંચ ભાવનાઓ સહિત પાલન કરે છે–તે પ્રમાણે પોતાની દરેક

कृत' 'तीरिय' तीरित=तीर मापित पूर्णरूपेण सेवित, 'किट्टिय' कीर्त्तितम्-अन्येषामुपदिष्टम्, 'आराहिय' आराधितम् त्रिकरणत्रियोगैः-सम्यगाचरितम्, 'आणाए' आज्ञया=सर्वज्ञवचनानुसारेण 'अणुपालिय' अनुपालित भवति। एवम्=अमुना प्रकारेण 'नायमुणिणा' ज्ञातमुनिना=ज्ञातार्यप्रसिद्धक्षत्रियवंशोद्भवेन मुनिना भगवता महावीरेण 'पण्णविय' प्रज्ञापित=शिष्येभ्यः सामान्यतया कथित, 'परूविय' प्ररूपित-भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथित, 'पसिद्ध' प्रसिद्ध=जिनवचने प्रख्यात, 'सिद्धवरसासणमिण' सिद्धवरशासनमिद, सिद्धाना=निष्ठितार्थाना वरशासन-प्रधानाज्ञारूपम्, 'आघविय' आख्यात=सर्वतोभावेन कथित,

(तीरिय) पूर्णरूप से इसका सेवन करते हैं (किट्टिय) दूसरों को इसके पालन करने का उपदेश देते हैं, (सम्म) तीन करण तीन योगों से इस की भली प्रकार से (आराहिय) अनुपालना करते हैं (आणाए अणुपालिय भवइ) उन के द्वारा यह योग तीर्थंकर प्रभु की आज्ञानुसार ही पालित होता माना जाता है। (एव) इस प्रकार से (णायमुणिणा भगवया) ज्ञातनामक प्रसिद्ध क्षत्रियवंश में उत्पन्न हुए मुनिराज भगवान महावीर ने (पण्णविय) शिष्यों के लिये इस विषय का सामान्यरूप से समझाया है। (परूविय) बाद में भेद प्रभेद पूर्वक उसका कथन किया है। इसीलिये (पसिद्धे) जिनवचन में यह प्रख्यात हुवा है अर्थात् जिनवचन के अनुसार ही आचार्य परपरा से इसका पालन करना इसी रूप से चला आ रहा है। तथा (सिद्धवरसासणमिण) भूतकाल में जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह प्रधान आज्ञारूप शासन है। (आघविय) ऐसा भगवान् महावीर प्रभु ने

પાલન કરવાનો અન્યને ઉપદેશ આપે છે "सम्म" ત્રણ કરણ ત્રણ યોગોથી તેનુ સારી રીતે "आराहिय" અનુપાલન કરે છે, "आणाए अणुपालिय भवइ" તેમના દ્વારા આ યોગનુ, તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞા અનુસાર પાલન થાય છે એમ માનવામા આવે છે "'एव" આ પ્રકારે "णायमुणिणा भगवया" જ્ઞાત નામના પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમા ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન મહાવીરે "पण्णविय" શિષ્યોને માટે આ વિષય સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યો છે, "परूविय" ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ સહિત તેનુ કથન કર્યું છે તેથી "पसिध्धे" જિનવચનમા તે પ્રખ્યાત થયેલ છે એટલે કે જિનવચન અનુસાર જ આચાર્ય પરપરાથી તેનુ આ રીતે પાલન કરવાનુ ચાલ્યુ આવે છે તેથી "सिद्धवरसासणमिण" ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમનુ આ મુખ્ય આજ્ઞા રૂપ શાસન છે "आघविय" એવુ ભગવાન મહાવીરે સર્વ ભાવથી તેને

॥ अथ चतुर्थं संवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यातं तृतीयमदत्तादानविरमणनामकं संवरद्वारम्। अथ ब्रह्मचर्यं नामकं क्रमप्राप्तं चतुर्थं संवरद्वारमभिधीयते। अस्य पूर्वेण सहायमभिसम्बन्ध –पूर्वत्रादत्तादानविरमणमुक्तं तच्च मैथुनविरमणमन्तरेण न सम्भवतीत्यनेन सम्बन्धेनायातमिदं चतुर्थं संवरद्वारम्। तस्येदमादिमं सूत्रम्–' जंबू ' इत्यादि।

मूलम्–जंबू ! एत्तो य बंभचेरं उत्तमतवनियमनाणदंसण-चरित्तसम्मत्तविणयमूलं जमनियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवंतमहंततेयमंतं पसत्थगंभीरथिमियमज्झं अज्जवसाहुजणाचरियं मोक्खमग्गं विसुद्धसिद्धिगइनिलयं सासयमव्वाबाहमपुणब्भवं पसत्थं सोम्मं सुहं सिवमचलमक्खयकरं जइवरसारक्खियं सुचरियं सुभासियं नवरि मुणिवरेहिं महापुरिसधीरसूरधम्मियधिइमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचरियं निस्संकियं निब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुवलेवं निव्वुइघरं नियमनिप्पकंपं तव-

चतुर्थ संवर द्वार प्रारंभ—

तृतीय अदत्तादान विरमण नामक संवरद्वार का व्याख्यान हो चुका, अब क्रम प्राप्त चतुर्थ ब्रह्मचर्य नामका संवरद्वार का व्याख्यान प्रारंभ किया जाता है। इसका पूर्व संवरद्वार के साथ इस प्रकार से संबंध है–जबतक मैथुन विरमण नहीं होगा तब तक तृतीय संवरद्वार की संभवता नहीं हो सकती, इसलिये उसके अनन्तर सूत्रकार अब इस चतुर्थ संवरद्वार को प्रारंभ कर रहे हैं। उसका यह सर्व प्रथम सूत्र है—' जंबू ' इत्यादि ०।

ચોથા સંવરદ્વારનો પ્રારંભ

ત્રીજા અદત્તાદાનનો વિરમણ નામના સંવરદ્વારનું વર્ણન પૂરૂં થયું, હવે અનુક્રમે આવતા ચોથા બ્રહ્મચર્ય નામના સંવરદ્વારનું વર્ણન શરૂ કરવામાં આવે છે તેનો આગળના સંવરદ્વાર સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે–જ્યાં સુધી મૈથુન વિરમણ થાય નહીં ત્યાં સુધી ત્રીજું સંવરદ્વાર સંભવિત થઈ શકતું નથી, તેથી તેનું કથન કર્યાં પછી હવે સૂત્રકાર આ ચોથા સંવરદ્વારની શરૂઆત કરે છે તેનું સૌથી પહેલું સૂત્ર આ પ્રમાણે છે-" जंबू " ઈત્યાદિ—

इसके अनुसार अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति पर अङ्कुश रखते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं, नवीन कर्मों का उनको बंध नहीं होता है और संचित कर्मों की निर्जरा होती रहती है। पापों का स्रोत इसके प्रभावसे बंध हो जाता है। यह अपरिस्रावी आदि विशेषणोंवाला है। त्रिकालवर्ती समस्त अरिहंत भगवंतोंने इसका पालन कियाहै। उन्हीं के अनुसार भगवान् महावीर प्रभु ने भी इसका उन्हीं की मान्यतानुसार स्वरूपादि प्रदर्शन द्वारा कथन किया है। अपनी परिषदा में आये हुए समस्त जीवों को इसी प्रकार से इसका विवेचन किया है, अतः यह मंगलमय है इसे धारण कर प्रत्येक जीव को-समस्त संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मनुष्यों को-अपना जन्म सफल बना लेना चाहिये। इस प्रकार जंबू स्वामी को इस तृतीय संवर द्वार के विषय में सुधर्मास्वामी ने समझाया है ॥ सू० ११ ॥

॥ तृतीय संवरद्वार समाप्त ॥

પ્રવૃત્તિ પર અંકુશ મૂકે છે, તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોનો બંધ બંધાતો નથી, અને સચિત્ત કર્મોની નિર્જરા થતી રહે છે તેના પ્રભાવથી પાપોનો સ્રોત બંધ પડી જાય છે તે અપરિસ્રાવી આદિ વિશેષણોથી યુક્ત છે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહંતોએ તેનું પાલન કરેલ છે તેમના પ્રમાણે જ ભગવાન મહાવીરે તેનું તેમની માન્યતા અનુસાર સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન દ્વારા કથન કર્યું છે પોતાની પરિષદામાં આવેલ સમસ્ત જીવો સમીપ એ જ પ્રકારે તેનું વિવેચન કર્યું છે, તેથી તે મંગલમય છે તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક જીવે-સમસ્ત પંચેન્દ્રિય પર્યાપ્ત મનુષ્યોએ-પોતાનો જન્મ સફળ કરવો જોઈએ આ પ્રમાણે સુધર્મા સ્વામીએ જંબૂસ્વામીને આ ત્રીજા સંવર દ્વાર વિષે સમજાવ્યું છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ તૃતીય સંવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

तथा-' जमनियमगुणप्पहाणजुत्त ' यमनियमगुणप्रधानयुक्तम्=तत्र-यमाः=प्राणातिपातविरमणादय , नियमाः=अभिग्रहादयस्ते च ते गुणप्रधाना. = गुणमुख्याः-गुणाना मध्ये यमा नियमाश्च सर्वत श्रेष्ठ इत्यर्थ , तैर्युक्तम्, तथा-'हिमवतमहततेयमत ' हिमवन्महत्तेजस्वि=हिमवानिव=पर्वतविशेष इव महद्=विशाल तेजस्वि च यत्तत्तथोक्त, अय भाव.-यथा हिमवान् सकलपर्वतापेक्षया महान् तेजस्वी च वर्तते, तथैवेद ब्रह्मच सकलव्रतापेक्षया विशाल तेजस्विचेति । उक्त च—

" व्रताना ब्रह्मचर्यहि, निर्दिष्ट गुरुक व्रतम्।
तज्जन्यपुण्यसभार, सयोगाद् गुरु रुच्यते ॥ १ ॥" इति ।

तथा— ' पसत्थगभीरथिमियमज्झ ' प्रशस्तगभीरस्तिमितमध्य प्रशस्त=शुभ गम्भीरम्=अगाधम् , स्तिमितं=स्थिर च मध्यम्=अन्त. करण यस्मिन् सति तत्तथो

(जमनियमगुणप्पहाणजुत्त) यह प्राणातिपात विरमण आदि यमों से एव अभिग्रह आदि नियमो से कि जो समस्तगुणो में श्रेष्ठ माने गये हैं युक्त है, तथा (हिमवतमहततेयमत) जो हिमवान् पर्वत की तरह विशाल और तेजस्वी है, अर्थात् जिस प्रकार हिमवान् पर्वत सकल पर्वतों की अपेक्षा महान् और तेजस्वी माना जाता है, उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य व्रत भी सकलव्रतो की अपेक्षा विशाल तेजस्वी व्रत माना गया है। कहा भी है-

" व्रताना ब्रह्मचर्य हि, निर्दिष्टं गुरुक व्रतम् ।
तज्जन्य पुण्यसभार,-सयोगाद् गुरुरुच्यते ॥ १ ॥

व्रतो मे सब से बडा व्रत ब्रह्मचर्य है । क्यों कि ब्रह्मचर्य के पालन करने से जो पुण्यसमूह प्राप्त होता है-उसी के सबध से गुरु माना जाता है । अर्थात्- इसी ब्रह्मचर्य का पालक ही सच्चा गुरु कहलाता है। तथा-(पसत्थगभीरथिमियमज्झ) इस ब्रह्मचर्य के सद्भाव से पालन

" जमनियमगुणप्पहाणजुत्त " પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ યમોથી અને અભિગ્રહ આદિ નિયમોમાથી, કે જે સર્વ ગુણોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે યુક્ત છે તથા " हिमवतमहततेयमत " જે હિમાલય પર્વતની જેમ વિશાળ અને તેજસ્વી છે, એટલે કે જેમ હિમાલય પર્વત સઘળા પર્વતો કરતા મહાન અને તેજસ્વી મનાય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને પણ સઘળા વ્રતોના કરતા વિશાળ તેજસ્વી વ્રત માનવામા આવે છે કહ્યુ પણ છે—

" व्रताना ब्रह्मचर्य हि, निर्दिष्ट गुरुक व्रतम् ।
तज्जन्यपुण्यसभार, – सयोगाद् गुरुरुच्यते ॥ १ ॥

વ્રતોમા સૌથી મોટુ વ્રત બ્રહ્મચર્ય છે કારણ કે બ્રહ્મચર્યના પાલનથી જે પુન્ય સમૂહ પ્રાપ્ત થાય છે-તેના કારણે તેને ગુરુ મનાય છે એટલે કે આ બ્રહ્મચર્યનો પાલક જ સાચો ગુરુ કહેવાય છે તથા " पसत्थगभीरथि

संजममूलदलियणिभ पंचमहव्वयसुरक्खिय समिइगुत्तिगुत्त झाणवरकवाडसुकयरक्खणमज्झप्पदिण्णफलिह सन्नद्धबद्धोच्छइय दुग्गइपहं सुगइपहदेसग च लोगुत्तम च वयमिण पउमसरतला-गपालिभूय महासगडअरगतुवभूयं महाविडिमरुक्खक्खधभूयं महानगरपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ विसु-णेगगुणसंपिणद्धं ॥ सू० १ ॥

टीका--' जबू ' हे जम्बू । ' एत्तो य ' इतश्च=अदत्तादानविरमणसवरद्वार-समाप्त्यनन्तर च ' बभचेर ' ब्रह्मचर्यं नाम चतुर्थं सवरद्वारमभिधीयते । तत्कि स्वरूपमित्याह-' उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल ' उत्तमतपोनियमज्ञानद र्शनचारित्रविनयमूलम्=तत्र उत्तमा =प्रधानाः ये तपो नियमज्ञानदर्शनचारित्रविनया तत्र-तपः=अनशनादिक द्वादशविधम्, नियमा=अभिग्रहादय, ज्ञान=पदार्थाना विशिष्टबोधः, दर्शनम्=तत्त्वश्रद्धानरूपम्, चारित्र=सावद्ययोगविरतिलक्षणम्, वि नयः=अभ्युत्थानादिलक्षण., एतेषा द्वन्द्व', तेषा मूलमिवमूल कारण यत्तत्तथोक्तम्,

टीकार्थ—(जबू) हे जम्बू ! (एत्तो य) अदत्तादानविरमण नामक सवरद्वार की समाप्ति के अनन्तर अब मैं (बभचेर) ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थ सवर द्वार को कहता हू । उसका स्वरूप इस प्रकार है—(उत्तम-तवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल) अनशन आदि बारह प्रकार के उत्तमतपों का, उत्तम अभिग्रह आदि रूप नियमो का, पदार्थो का विशिष्टबोध रूप उत्तमज्ञान का, पदार्थों का श्रद्धानरूप उत्तमदर्शन का सावद्ययोग विरतिरूप उत्तम चारित्र का, और अभ्युत्थान आदि रूप उत्तम विनय का, मूल की तरह यह ब्रह्मचर्य मूल कारण है, तथा-

ટીકાર્થ—" जबू " હે જબૂ ! " एत्तो य " અદત્તાન વિરમણ નામના સવરદ્વારની સમાપ્તિ પછી હવે હુ " बभचेर " બ્રહ્મચર્ય નામના ચોથા સવર દ્વારનુ વર્ણન કરૂ તેનુ સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે " उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्त विणयमूल " અનશન આદિ બાર પ્રકારના ઉત્તમ તપનુ, ઉત્તમ અભિગ્રહ આદિ રૂપ નિયમોનુ, પાદાર્થોના વિશિષ્ટ બોધરૂપ ઉત્તમ જ્ઞાનનુ, પદાર્થોના શ્રદ્ધાન રૂપ ઉત્તમ દર્શનનુ સાવદ્યયોગ વિરતિરૂપ ઉત્તમ ચારિત્રનુ, અને અભ્યુત્થાન આદિ રૂપ ઉત્તમ વિનયનુ, મૂળની જેમ આ બ્રહ્મચર્ય મૂળકારણ છે તથા

तथा-' सुह ' सुख-सुखस्वरूपत्वात्, ' सिव ' शिवम्=निरुपद्रवत्वात्, तथा-' अयल ' अचलम्-स्पन्दनादिवर्जितत्वात्, तथा ' अक्खयकर ' अक्षयकरम्=अक्षयो मोक्षस्तत्करम्=भवबीजाङ्कुराजननात्, तथा-' जइवरसारक्खिय ' यतिवरसंरक्षितम्=यतिवरै'= मुनिप्रधानैः तीर्थङ्करगणधरादिभिः सरक्षित=परिपालितम्, तथा ' सुचरिय ' सुचरितम्=शोभनानुष्ठानम्, तथा-' मुणिवरेहिं ' मुनिवरैः=तीर्थंकरादिभिः ' नवरि ' केवल 'सुभासिय ' सुभाषित=सुष्ठु प्रतिपादितम्, च =पुनः-इद ब्रह्मचर्यं ' महापुरिसधीरसूरधम्मियधिइमताण ' महापुरुषधीर शूरधार्मिकधृतिमताम्=महापुरुषाः=पुरुषश्रेष्ठा, धीरशूराः=धीराणां मध्ये शूरा =अत्यन्तसाहससपन्नाः, धार्मिका =धर्मपरायणाः, धृतिमन्तो=धैर्यवन्तः, एषा कर्मधारयः, तेषा तथोक्तानाम् ' सया ' सदा=कुमारादिसर्वावस्थासु ' सुविसुद्ध ' सु-

होने से यह प्रशस्त है। (सोम्म) समस्त मनुष्यों के मन को प्रफुल्लित करने वाला होने से यह सौम्य है। (सुह) सुखस्वरूप होने से यह एक सुख है। (सिवमयलमक्खयकर) उपद्रव रहित होने से यह शिवरूप है। स्पन्दनादि क्रिया से वर्जित होने के कारण यह अचल है। भवरूप बीज के अकुरका उत्पादक नहीं होने से अक्षय-मोक्ष का कारक है अतः यह अक्षयकर है-। (जइवरसारक्खिय) मुनिप्रधान-तीर्थंकर एव गणधर आदि देवों द्वारा पाला गया होने से यह यतिवर सरक्षित है। (सुचरिय) शोभन आचार रूप होने से यह सुचरित है। (नवरिं मुनिवरेहिं सुभासिय केवल मुनिवरों-तीर्थंकरों द्वारा ही यह अच्छी तरह से प्रतिपादित किया गया है। तथा यह ब्रह्मचर्य महापुरिस-धीर-सूर- धम्मिय-धिइमताण य सया विसुद्ध) महापुरुषों का, धीरों के

" पसत्थ " निर्भળ હોવાથી તે પ્રશસ્ત છે " सोम्म " સમસ્ત મનુષ્યોમા મનને પ્રફુલ્લિત કરનાર હોવાથી તે સૌમ્ય છે " सुह " સુખસ્વરૂપ હોવાથી તે એક સુખ છે " सिवमयलमक्खयकर " ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તે શિવ-રૂપ છે સ્પન્દનાદિ ક્રિયાથી રહિત હોવાથી તે અચળ છે ભવરૂપ બીજના અ કુરનુ ઉત્પાદક નહી હોવાથી તે અક્ષય-મોક્ષકારક છે, તેથી તે અક્ષયકર " जइवरसारक्खिय " મુનિપ્રધાન-તીર્થંકર અને ગણધરો આદિ દેવો દ્વારા પળાયેલ હોવાથી તે યતિવર સરક્ષિત છે " सुचरिय " સુદર આચારરૂપ તે સુચરિત છે " नवरिं मुनिवरेहिं सुभासिय " કેવળ મુનિવરો-તીર્થંકરો દ્વારા જ તેનુ સારી રીતે પ્રતિપાદન કરાયુ છે તથા " महापुरिस-धीर-सूर-धम्मिय-धिइमताण य सया विसुद्ध " મહાપુરુષો, ધીરોની વચ્ચે પણ ધીર

क्तम्, ब्रह्मचारिणोऽन्तःकरण प्रशस्ततागाम्भीर्यस्थैर्ययुक्त भवतीति भावः । तथा -' अज्जवसाहुजणाचरिय ' आर्जवसाधुजनाचरितम्=आर्जवे=सरलभावे सलग्ना ये साधुजनास्तैराचरितम् । तथा ' मोक्खमग्गे ' मोक्षमार्गः=मोक्षस्थानप्रापक इत्यर्थ तथा ' विसुद्धसिद्धिगइनिलये ' विशुद्धसिद्धगतिनिलय =विशुद्धा=रागादिदोषव र्जितत्वान्निर्मलाया सिद्धिः=कृतकृत्यता, सैव गम्यमानत्वाद् गतिस्तस्या निलयो-गृहम्=सिद्धिगतिप्रापकत्वात्सिद्धिस्थानमित्यर्थ, तथा ' सासय ' शाश्वत=साध-पर्यवसितशिवसुखजनकत्वात्, ' अव्वाबाह ' अव्याबाध=शारीरिकमानसिकदुःखवर्जितत्वात् ' अपुणब्भव ' अपुनर्भवम्=पुनर्जन्मप्रतिरोधकत्वात्, ' पसत्थ ' प्रशस्तम्-निर्मलत्वात्, तथा-' सोम्म ' सौम्यम्--सज्जनमनोमोदजनकत्वात्,

कर्ता का अतःकरण शुभ, गभीर-अगाध, एव स्थिर हो जाता है । तथा (अज्जवसाहुजणाचरिय) यह ब्रह्मचर्य, आर्जव में-सरलभाव में-सलग्न बने हुए साधुजनों के द्वारा आचरित किया जाता है । तथा-(मोक्खमग्गे) यह ब्रह्मचर्य अपने पालनकर्ता को मोक्ष स्थान की प्राप्ति कराने वाला होता है तथा (विसुद्धसिद्धिगइ निलये) यह ब्रह्मचर्य विशुद्ध-रागादि दोषो से वर्जित होने के कारण निर्मल-जो कृतकृत्यता रूप गति है उसका घर है-सिद्धि गति का प्रापक होने से सिद्धि का स्थान है तथा (सासय) साद्यपर्यवसित शिव सुख का जनक होने से यह ब्रह्मचर्य शाश्वत है (अव्वाबाह) शारीरिक एव मानसिक दुःखों से रहित होने के कारण यह ब्रह्मचर्य अव्याबाध-बाधा से रहित है। (अपुणब्भव) इसके प्रभाव से ससार मे जीव का पुनर्जन्म नहीं होता, उसका यह प्रतिरोधक है इसलिये यह अपुनर्भवरूप है। (पसत्थ/निर्मल

मियमज्झ " તે બ્રહ્મચર્યના પાલનથી તેનુ પાલન કરનારનુ અતઃકરણ શુભ, ગભીર, અગાધ, અને સ્થિર થઇ જાય છે તથા " अज्जवसाहुजण चरिय " આ બ્રહ્મચર્ય, આર્જવ, સરલ ભાવમા લીન થયેલ સાધુજનો દ્વારા આચરવામા આવે છે તથા " मोक्खमग्गे " આ બ્રહ્મચર્ય, તેનુ પાલન કરનારને મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરાવનાર હોય છે તથા " विसुद्धसिद्धिगइनिलये " આ બ્રહ્મચર્ય વિશુદ્ધ રાગાદિ દોષોથી રહિત હોવાને લીધે નિર્મળ-કે કૃતકૃત્યતા રૂપ ગતિ છે તેનુ ઘર છે-સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી સિદ્ધિનુ સ્થાન છે, તથા " सासय " કાયમી શિવ સુખનુ જનક હોવાથી આ બ્રહ્મચર્ય શાશ્વત છે " अव्वावाह " શારીરિક અને માનસિક દુ ખોથી રહિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવ્યા-બાધ-બાધાથી રહિત છે, " अपुणब्भव " તેના પ્રભાવથી સસારમા જીવને પુનર્જન્મ લેવો પડતો નથી તેનુ તે પ્રતિરોધક છે તેથી તે અપુનર્ભવરૂપ છે.

तयवेद ब्रह्मचर्यमपि शुभ्रमिति भाव., तथा-' निरायास ' निरायास=खेदाजनकम्, ' निरुवलेव ' निरुपलेपम्-विषयस्नेहवर्जितम् , तथा-' निव्वुइघर ' निर्वृतिगृहम्=निर्वृतेः=चित्तसमाधेः गृह=स्थानम् , ' नियमनिप्पकप ' नियमनिष्प्रकम्प=नियमेन=निश्चयेन, निष्प्रकम्प=अविचलम्-निरतिचारत्वात् , तथा-' तव

रूप तुप से विहीन होने के कारण बिलकुल शुभ्र-पवित्र है। (निरायास) इसके पालन करने से किसी भी प्रकार का पालनकर्त्ता को आयास-अर्थात्-कष्ट नहीं उठाना पड़ता है इसलिये खेद का अजनक होने से यह निरायासरूप है। (निरुवलेव) वैपयिक पदार्थों की ओर ब्रह्मचारी के चित्त मे थोड़ा सा भी स्नेह-रागभाव नहीं होता है, अतः विषय स्नेहवर्जित होने से यह ब्रह्मचर्य निरुपलेप है। (निव्वुइघर) ब्रह्मचारी के हि चित्त की स्वस्थता रहती है, क्यों कि विषयों की ओर उसकी लालसा नहीं जाती है, अत उस सबध को लेकर उसके चित्त में असमाधिरूप आकुल व्याकुल परिणति नहीं रहती है इसलिये यह ब्रह्मचर्य चित्त समाधि का एक घर है। (नियमनिप्पकप) अतिचारों से विहीन होने के कारण यह ब्रह्मचर्य नियम से-निश्चय से निष्प्रकम्प-अविचलित होता है। तात्पर्य यह है कि गृहस्थों के ब्रह्मचर्य व्रत में अतिचार लग सकने के कारण उनका वह ब्रह्मचर्य विचलित नहीं होता है परन्तु सकल सयमी जनों का ब्रह्मचर्य अतिचारों से विहीन होता है, इसलिये यह यहा अविचलित कहा गया है। (तवसजम-

હોવાથી તેન શુભ્ર પવિત્ર છે "निरायास" તેનુ પાલન કરવાથી પાલન કર્તાને કોઇ પણ પ્રકારનો આયાસ-ખેદ એટલે કે કષ્ટ ઉઠાવવો પડતુ નથી તેથી ખેદનુ જનક ન હોવાને કારણે તે નિરાયાસરૂપ છે "निरुवलेव" વૈષયિક પદાર્થોની તરફ બ્રહ્મચારીના ચિત્તમા જરી પણ સ્નેહ-રાગભાવ થતો નથી, તેથી વિષયસ્નેહ રહિત હોવાથી બ્રહ્મચર્યને નિરુપલેપ છે "निव्वुइघर" બ્રહ્મચારીના ચિત્તની સ્વસ્થતા રહે છે, કારણ વિષયોની પ્રત્યે તેને લાલસા થતી નથી તે સબધને લીધે તેના ચિત્તમા અસમાધિરૂપ આકુળ વ્યાકુળતાના રૂપ પરિણતિ રહેતી નથી તેથી આ બ્રહ્મચર્ય ચિત્ત સમાધિનુ એક ઘર છે "नियमनिप्पकप" અતિચારોથી રહિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવશ્ય નિષ્પ્રકમ્પ-અવિચલિત હોય છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ગૃહસ્થોના બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા અતિચાર લાગી શકે છે તે કારણે તેમનુ બ્રહ્મચર્ય અવિચલિત હોતુ નથી, પણ સકળ સયમીજનોનુ બ્રહ્મચર્ય અતિચારોથી રહિત હોય છે, તે

विशुद्ध=निर्दोषम् , एवमेव ब्रह्मचर्यं निर्दोषं भवतीति भावः, तथा-' भद्र' भव्य=कल्याणरूपम् , ' भव्वजणाणुचरियं ' भव्यजनानुचरितम्=भव्यजनसमाराधितम् , तथा-' निस्संकियं ' निःशङ्कितं, ब्रह्मचारी हि विषयस्पृहाशून्यत्वाज्जनानां मध्ये निःशङ्कनीयो भवतीति ब्रह्मचर्यमपि निश्शङ्कितम् , तथा ' निब्भयं ' निर्भयं, ब्रह्मचारिणो हि निर्भया भवन्ति, निर्भयताकारणत्वात् ब्रह्मचर्यमपि निर्भयम् तथा-' नितुसं ' निस्तुषं-विशुद्धमित्यर्थः, यथा-तुषनिर्गतं तण्डुलं शुभ्रं भवति

भी बीच में धीर कहे जाने वाले शूरों का अत्यन्त साहससंपन्न व्यक्तियों के, धार्मिक पुरुषों के, और धैर्यशाली पुरुषों को यह सदा-कुमार आदि अवस्थाओं में भी सुविशुद्ध-निर्दोष रहता है। (भद्द) यह ब्रह्मचर्य कल्याणरूप है। (भव्वजणाणुचरियं) भव्यपुरुषों द्वारा यह आराधित किया हुआ है। (निस्संकियं) यह ब्रह्मचर्य निश्शंकित होता है। क्यों कि ब्रह्मचारी विषयलालसा से शून्य होने के कारण मनुष्यों के भीतर किसी भी तरह से शंकास्पद नहीं होता है अतः यह प्रभाव उसके ब्रह्मचर्य का ही है इसीलिये यहां पर सूत्रकार ने निशंकित वृत्ति का कारण होने से ब्रह्मचर्य को भी निश्शंकित कहा है। इसी तरह यह ब्रह्मचर्य (निब्भयं) निर्भय होता है। क्यों कि ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले पुरुष रत्न सर्वत्र निर्भय रहा करते हैं, अतः निर्भयता का कारण होने से ब्रह्मचर्य को निर्भय विशेषण से सूत्रकार ने विशिष्ट किया है। तथा यह ब्रह्मचर्य (नित्तुसं) निस्तुष है-तुषविहीन तण्डुल जिस प्रकार शुभ्र होता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी विषय लालसा

તરીકે ઓળખાતા શૂરો, અત્યંત સાહસયુક્ત વ્યક્તિઓ, ધાર્મિક પુરુષો, અને ધૈર્યશાળી પુરુષોને તે સદા કુમાર આદિ અવસ્થાઓમાં પણ સુવિશુદ્ધ નિર્દોષ રહે છે " भद्दं " આ બ્રહ્મચર્ય કલ્યાણરૂપ છે " भव्वजणाणुचरियं " ભવ્ય પુરુષો દ્વારા તેનું આરાધન થાય છે " निस्संकियं " આ બ્રહ્મચર્ય નિઃશંકિત હોય છે, કારણ કે બ્રહ્મચારી વિષય લાલસા રહિત હોવાથી મનુષ્યોમાં કોઈ પણ પ્રકારે શંકાને પાત્ર થતો નથી આ તેના બ્રહ્મચર્યનો જ પ્રભાવ હોવાથી અહીં સૂત્રકારે નિઃશંકિત વૃત્તિનું કારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને પણ નિઃશંકિત કહ્યું છે એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય " निब्भयं " નિર્ભય હોય છે કારણ કે બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર પુરુષો સર્વત્ર નિર્ભય રહી શકે છે તેથી નિર્ભયતાનું કારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને સૂત્રકારે નિર્ભય વિશેષણ લગાડયું છે તથા આ બ્રહ્મચર્ય " नित्तुसं " નિસ્તુષ-તુષ વિહીન (ફોતરા વિનાના) ચોખા જેમ શુભ્ર હોય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય પણ વિષય લાલસા રૂપી તુષ વિહીન

हदेसग च ' सुगतिपथदेशक च=सुगते =स्वर्गापवर्गस्य पन्था'-सुगतिपथस्तस्य देशक=दर्शक यत्तत् तथा-' लोगुत्तम च ' लोकोत्तम च=लोकत्रयश्रेष्ठश्च 'वयमिण' व्रतमिदम्-इद ब्रह्मचर्यरूप व्रत 'पउमसरतलागपालिभूय' पद्मसरस्तडागपालिभूतम् -पद्मप्रधानः सरस्तडागः-पद्मसरस्तडाग', पद्मसरस्तडागइव सुखदत्वेन प्रमोदकत्वेन हरत्वेन च समुपादेयत्वाद् धर्मोऽपि पद्मसरस्तडागः, तस्य पालिभूत=रक्षकत्वेन पालिकल्प यत्तत् , तथा ' महासगडअगर तुम्बभूय' महाशकटारकतुम्बभूतम्-महाशकटस्य=अरका इव=अराइव अरका' क्षान्तादयोगुणास्तेषा तुम्बभूतम्, आधार भूतम् तथा 'महाविडिमरुक्खक्खधभूय' महाविटपवृक्षस्कन्धभूतम्-महान्तो विटपाः शाखा

पदेसग च) और उसे स्वर्ग और अपवर्गरूप सुगति के मार्ग को दिखलाता रहता है। इसीलिये (वयमिण) यह व्रत (लोगुत्तम च) लोकत्रय में श्रेष्ठ है। तथा यह व्रत (पउमसरतलाग पालिभूय) पद्मप्रधान सरोवर और तडाग की पालि जैसा है, अर्थात् सुखद होने के कारण, प्रमोद कारक होने के कारण, और मन को हरण करने वाला होने के कारण जैसे पद्मप्रधान सरोवर और तडाग समुपादय होते हैं उसी प्रकार सुखदाता प्रमोदक और मनोहर होने के नाते धर्म भी समुपादेय होता है-अतः धर्म भी पद्मप्रधान सरोवर और तडाग जैसा है। उस धर्म रूप सरोवर और तडाग का यह रक्षक होने के कारण पालि-पाल जैसा है। तथा (महासगडअरगतुम्बभूय) महाशकट के आरों के समान क्षान्त्यादिक गुणों का यह तुम्बभूत-आधारभूत है। तथा (महाविडिमरुक्खक्खधभूय) महाशाखा वाली वृक्ष के समान आश्रितों

સદ્દતર રોકી દે છે "सुगइपदेसगच" અને તેને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ રૂપ સુગતિનો માર્ગ દર્શાવતુ રહે છે તેથી "वयमिणं" આ વ્રત "लोगुत्तमच" ત્રણે લોકમા શ્રેષ્ઠ છે તથા આ વ્રત "पउमसरतलागपालिभूय" કમળોથી યુક્ત સરોવર અને તળાવની પાળ જેવુ છે એટલે કે સુખદ હોવાને કારણે, પ્રમોદકારક હોવાને કારણે, અને મનોહર હોવાને કારણે જેમ પદ્મપ્રધાન સરોવર અને તળાવ સમુપાદેય હોય છે તે જ પ્રકાર સુખદાતા, પ્રમોદક અને મનોહર હોવાને કારણે ધર્મ પણ સમુપાદેય હોય છે તેથી ધર્મ પદ્મયુક્ત સરોવર અને તળાવ જેવો છે તે ધર્મરૂપ સરોવર અને તળાવનુ તે (બ્રહ્મચર્ય રક્ષક હોવાથી પાળ જેવુ છે તથા "महासगडअरगतुनभूय" મહા શકટ-ગાડા-ની ધરીના સમાન ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણોનુ તે તુમ્બભૂત છે તથા "महाविडिमरुक्ख-क्खधभूय ' મહા શાખાવાળા વૃક્ષની જેમ આશ્રિતોનુ પરમ સુખકારી હોવાથી

मजममूलदलियणिभ ' तपः-संयममूलदलिकनिभम्=तपः संयमयो मूलदलिक=मूलद्रव्यम्=मूलधनमित्यर्थः, तस्य निभं=सदृशं यत्तत्तथा, तथा-' पचमहव्वयसुरक्खिय ' पञ्चमहाव्रतसुरक्षित=पञ्चमहाव्रतानां मध्यस्थितत्वेन सुष्ठुरक्षितमिव यत्तत्तथोक्तम्, तथा ' समिइगुत्तिगुत्त ' समितिगुप्तिगुप्तम्-समितिभिः=ईर्यासमित्यादिभिः, गुप्तिभिः=मनोगुप्त्यादिभिश्च गुप्तम्=रक्षितम्, तथा-'झाणवरकवाडसुकयरक्खण ' ध्यानवरमेव=धर्मध्यानमेव कपाटम्-तेन सुष्ठु=शोभनतया कृतं रक्षणं यस्य तत्, तथा-' अज्झप्पदिण्णफलिह' अध्यात्मदत्तपरिघम्=अध्यात्ममेव=सद्भाव एव कपाटदृढीकरणार्थं दत्तः परिघ-अर्गला रक्षायै यस्य तत्, तथा-' सनद्धबद्धोच्छइयदुग्गइपह ' सनद्धबद्धाच्छादितदुर्गतिपथम्—सनद्धोबद्धआच्छादितश्च अर्थात् सर्वतो निरुद्धो दुर्गतिपथो=दुर्गतिमार्गो येन तत्तथोक्तम्, तथा-' सुगइप-

मूलदलियणिभ) तप और संयम का यह ब्रह्मचर्य मूल धन जैसा है। (पचमहव्वयसुरक्खिय) जिस प्रकार पांच पुरुषों के बीच में रहा हुआ पुरुष सुरक्षित रहता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी पांच महाव्रतों के बीच में स्थित होने के कारण सुरक्षित के जैसा है। (समिइगुत्तिगुत्त) ईर्यासमिति आदि पांच समितियों से एवं मनोगुप्ति आदि तीन गुप्तियों से भी इसकी सदा रक्षा होती रहती है इसलिये यह समिति और गुप्तियों से भी गुप्त-सुरक्षित कहा गया है। तथा (झाणवरकवाडसुकयरक्खण) इसकी रक्षा सदा धर्मध्यान रूप मजबूत किवाड़ों से भी बहुत अच्छी तरह होती रहती है (अज्झप्पदिण्णफलिह इसकी रक्षा के निमित्त इन किवाडों में मजबूती लाने वाला अर्गला जैसा अध्यात्म-सद्भाव बड़ा काम करता है। (सन्नद्धबद्धोच्छइयदुग्गइपह) यह ब्रह्मचर्य अपने पालक के दुर्गतिमार्ग को सर्वथा रोक देता है, (सुगइ-

કારણે તેને અહીં અવિચલિત દર્શાવ્યું છે ' तवसंजममूलदलियणिभ " તપ અને સંયમનું આ બ્રહ્મચર્ય મૂળધન સમાન છે " पचमहव्वयसुरक्खिय " જે રીતે પાંચ પુરુષોની વચ્ચે રહેતો પુરુષ સુરક્ષિત રહે છે, તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય પણ પાંચ મહાવ્રતોની વચ્ચે રહેલ હોવાથી સુરક્ષિત છે " समिइगुत्तिगुत्त "ઇર્યા સમિતિ આદિ પાંચ સમિતિઓથી અને મનોગુપ્તિ આદિ-ત્રણ ગુપ્તિથી પણ તેનું સદા રક્ષણ થતું રહે છે, તે કારણે તે સમિતિ અને ગુપ્તિયોથી પણ ગુપ્ત-સુરક્ષિત કહેવાયું છે તથા " झाणवरकवाडसुकय रक्खण " તેનું રક્ષણ હંમેશા ધર્મ ધ્યાનરૂપી મજબૂત કમાડોથી પણ ઘણી સારી રીતે રીતે થયા કરે છે " अज्झप्पदिण्णफलिह " તેની રક્ષાને નિમિત્તે તે કમાડોમાં મજબૂતી લાવનાર આગળીયા જેવું અધ્યાત્મ-સદ્ભાવ ત્યાં કામ આપે છે " सन्नद्धबद्धोच्छइयदुग्गइपह " આ બ્રહ્મચર્ય તેનું સેવન કરનારના દુર્ગતિમાર્ગને

पुनरपि ब्रह्मचर्यमाहात्म्यमाह–' जम्मिय भग्गे ' इत्यादि ।

मूलम्–जम्मि य भग्गे होइ सहसा सव्व संभग्गमहियचुण्णियकुसल्लियपल्लट्टपडिय-खडियपरिसडियविणासिय विणयसीलतवनियमगुणसमूहं त बंभ भगवत गहगणणक्खत्ततारगाणं च जहा उडुवई मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागराणं च जहा समुद्दो, वेरुलिओ चेव जहा मणीणं, जह मउडो चेव भूसणाणं वत्थाणं चेव खोमजुयल अरविंद चेव पुप्फजेट्ठ गोसीस चेव चदणाणं हिमवतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं उदहीसु जहा सयभूरमणोरुयगवरो चेव मडलिगपव्वयाणपवरे

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार चतुर्थ सवरद्वार का विवेचन कर रहे हैं। इसमें नौ कोटि से अब्रह्म का पूर्ण त्याग हो जाता है, इस–लिये यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है। व्रत का तात्पर्य यही है कि दोषों को समझ कर उनके त्याग का नियम करने के बाद फिर से उनका सेवन नहीं करना। ब्रह्मचर्य व्रत को परिपालन करने के लिये अतिशय उपकारक कितने ही गुण हैं, जैसे आकर्षक स्पर्श, रस, गध, रूप, शब्द और शरीरसस्कार आदि में न फँसना, त्रुटियों को हटाने के लिये ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करना, एव गुरुकी आधीनता के लिये गुरुकुल मे वास करना। इस सूत्र मे इसी ब्रह्मचर्य महाव्रत के गुण गौरव का व्याख्यान सूत्रकार ने किया है॥ सू० १ ॥

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ચોથા સવરદ્વારનુ વિવેચન કરેછે તેમા નવ પ્રકારે અબ્રહ્મનો સપૂર્ણ ત્યાગ થઇ જાય છે તેથી તે બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કહેવાય છે વ્રતનુ તાત્પર્ય એ છે કે દોષોને સમજીને તેમના ત્યાગનો નિયમ કર્યા પછી ફરીથી તેનુ સેવન ન કરવુ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ પરિપાલન કરવાને માટે અતિશય ઉપકારક કેટલાક ગુણો છે, જેમા કે આકર્ષક સ્પર્શ, રસ, ગધ, રૂપ શબ્દ અને શરીર સસ્કાર આદિમા ફસાવુ નહી, ત્રુટિયોને દૂર કરવા માટે જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોનો અભ્યાસ કરવો, અને ગુરુની આધીનતાના સેવનને માટે ગુરુકુલમા વાસ કરવો આ સૂત્રમા એ જ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતના ગુણ ગૌરવનુ વર્ણન સૂત્રકારે કર્યુ છે ॥ ૧ ॥

यस्य स महाविटपः,स चासौ वृक्षश्च आश्रितानां परमोपकारकत्वसाधर्म्याद् धर्मस्तस्य स्कन्धभूतं यत्तत्तथोक्तम्, अयं भावः-यथा स्कन्धो वृक्षशाखाऽऽधारभूतस्तथैवब्रह्मचर्यं धर्मशाखाऽऽधारभूतम्। तथा-' महानगरपागारकवाडफलिहभूय ' महानगरप्राकारकपाटपरिघभूतम्-महानगरमिव महानगर विविधसुखहेतु साधर्म्याद् धर्मः, तस्य रक्षकत्वात् प्राकाररूपं, कपाटरूपं परिघभूतम् = अर्गलारूपम्, यत्तथोक्तम् तथा-' रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ ' रज्जुपिनद्धइन्द्रकेतुः-यथा-रज्जुबद्धेन्द्रध्वजो महोत्सवे सर्वोपरि वर्तमानः परमशोभां जनयति, तथैवेदं सर्वव्रतश्रेष्ठ ब्रह्मचर्यम्। तथा-' विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध = विशुद्धानेकगुणसंपिनद्ध विशुद्धा येऽनेकगुणास्तैः संपिनद्ध संग्रथितमिदं ब्रह्मचर्यमस्ति ॥ सू० १ ॥

का परम उपकारी होने से धर्म का यह स्कंध जैसा है। अर्थात् जिस प्रकार स्कंध वृक्ष की शाखाओं का आधारभूत होता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी धर्म की शाखाओं का आधारभूत है। तथा (महानगरपागारकवाडफलिहभूय) महानगर के समान विविध सुखों का हेतुभूत होने के कारण धर्मरूप नगर का यह रक्षक होने से प्राकार जैसा, कपाट जैसा और अर्गला जैसा है। तथा (रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ) जिस प्रकार रज्जु बद्ध इन्द्रध्वज महोत्सव में सर्वोपरि वर्तमान होता हुआ परम शोभा को विस्तारता है उसी तरह यह ब्रह्मचर्यव्रत भी सर्वव्रतों में श्रेष्ठ है और परम शोभा का जनक होता है। तथा (विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध) विशुद्ध अनेक गुणों से यह ब्रह्मचर्य अच्छी रीति से (संपिणद्ध) ग्रथित-युक्त है।

તે ધર્મના સ્કંધ જેવું છે એટલે કે જેમ થડ વૃક્ષની શાખાઓને માટે આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર રૂપ છે તથા " महानगर पागार कवाड फलिहभूय " મહાનગરના સમાન વિવિધ સુખોનું હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનું તે રક્ષક હોવાના પ્રાકાર જેવું, કપાટ જેવું અને અગલા જેવું છે તથા "रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ" જેમ રજ્જુ (દોરડું) બદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવમાં સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ શોભાનું જનક હોય છે તથા ' विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध " વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે " संपिणद्ध " ગ્રથિત-યુક્ત છે

पुनरपि ब्रह्मचर्यमाहात्म्यमाह–' जम्मिय भग्गे ' इत्यादि ।

मूलम्–जम्मि य भग्गे होइ सहसा सव्वं सेभग्गमहियचुण्णियकुसल्लियपल्लट्टपडिय-खंडियपरिसडियविणासिय विणयसीलतवनियमगुणसमूहं तं बंभ भगवंत गहगणणक्खत्ततारगाणं च जहा उडुवई मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागरण च जहा समुद्दो, वेरुलिओ चेव जहा मणीण, जह मउडो चेव भूसणाणं वत्थाणं चेव क्खोमजुयल अरविंद चेव पुप्फजेट्ठ गोसीसं चेव चंदणाण हिमवंतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं उदहीसु जहा सयभूरमणोरुयगवरो चेव मडलिगपव्वयाणपवरे

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार चतुर्थ सवरद्वार का विवेचन कर रहे हैं। इसमें नौ कोटि से अब्रह्म का पूर्ण त्याग हो जाता है, इसलिये यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है। व्रत का तात्पर्य यही है कि दोषों को समझ कर उनके त्याग का नियम करने के बाद फिर से उनका सेवन नहीं करना। ब्रह्मचर्य व्रत को परिपालन करने के लिये अतिशय उपकारक कितने ही गुण हैं, जैसे आकर्षक स्पर्श, रस, गध, रूप, शब्द और शरीरसस्कार आदि में न फँसना, त्रुटियो को हटाने के लिये ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करना, एव गुरुकी आधीनता के लिये गुरुकुल मे वास करना। इस सूत्र मे इसी ब्रह्मचर्य महाव्रत के गुण गौरव का व्याख्यान सूत्रकार ने किया है ॥ सू० १ ॥

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ચોથા સવરદ્વારનુ વિવેચન કરેછે તેમા નવ પ્રકારે અબ્રહ્મનો સપૂર્ણ ત્યાગ થઇ જાય છે તેથી તે બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કહેવાય છે વ્રતનુ તાત્પર્ય એ છે કે દોષોને સમજીને તેમના ત્યાગનો નિયમ કર્યા પછી ફરીથી તેનુ સેવન ન કરવુ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ પરિપાલન કરવાને માટે અતિશય ઉપકારક કેટલાક ગુણો છે, જેમા કે આકર્ષક સ્પર્શ, રસ, ગધ, રૂપ શબ્દ અને શરીર સસ્કાર આદિમા ફસાવુ નહી, ત્રુટિયોને દૂર કરવા માટે જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોનો અભ્યાસ કરવો, અને ગુરુની આધીનતાના સેવનને માટે ગુરુકુલમા વાસ કરવો આ સૂત્રમા એ જ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતના ગુણ ગૌરવનુ વર્ણન સૂત્રકારે કર્યુ છે ॥ ૧ ॥

रस्य स महाविटपः,स चासौ वृक्षश्च आश्रितानां परमोपकारकत्वात् साधर्म्याद् धर्मस्तस्य स्कन्धभूत यत्तत्तथोक्तम्, अय भावः-यथा स्कन्धो वृक्षशाखाऽऽधारभूतस्तथैवब्रह्मचर्यं धर्मशाखाऽऽधारभूतम्। तथा-' महानगरपागारकवाडफलिहभूय ' महानगरप्राकारकपाटपरिघभूतम्-महानगरमिव महानगरं विविधसुखहेतु साधर्म्याद् धर्मः, तस्य रक्षकत्वात् प्राकाररूप, कपाटरूप परिघभूतम् = अर्गलारूपम्, यत्तत्थोक्तम् तथा-' रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ ' रज्जुपिनद्धइव इन्द्रकेतुः=यथा-रज्जुबद्धइन्द्रध्वजो महोत्सवे सर्वोपरि वर्तमानः परमशोभा जनयति, तथैवेद सर्वव्रतश्रेष्ठ ब्रह्मचर्यम्। तथा-' विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध = विशुद्धानेकगुणसपिनद्ध विशुद्धा येऽ नेकगुणास्तैः सपिनद्ध सग्रथितमिदं ब्रह्मचर्यमस्ति ॥ सू०१ ॥

का परम उपकारी होने से धर्म का यह स्कध जैसा है। अर्थात् जिस प्रकार स्कध वृक्ष की शाखाओं का आधारभूत होता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी धर्म की शाखाओं का आधारभूत है। तथा (महानगरपागारकवाडफलिहभूय) महानगर के समान विविध सुखों का हेतुभूत होने के कारण धर्मरूप नगर का यह रक्षक होने से प्राकार जैसा, कपाट जैसा और अर्गला जैसा है। तथा (रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ) जिस प्रकार रज्जु वद्ध इन्द्रध्वज महोत्सव में सर्वोपरि वर्तमान होता हुआ परम शोभा को विस्तारता है उसी तरह यह ब्रह्मचर्यव्रत भी सर्वव्रतों में श्रेष्ठ है और परम शोभा का जनक होता है। तथा (विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध) विशुद्ध अनेक गुणो से यह ब्रह्मचर्य अच्छी रीति से (सपिणद्ध) ग्रथित-युक्त है।

તે ધર્મના સ્કધ જેવુ છે એટલે કે જેમ થડ વૃક્ષની શાખાઓને માટે આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર રૂપ છે તથા " महानगर पागार कवाड फलिहभूय " મહાનગરના સમાન વિવિધ સુખોનુ હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનુ તે રક્ષક હોવાના પ્રાકાર જેવુ, કબાટ જેવુ અને અગલા જેવુ છે તથા "रज्जुपिणद्धोव्वइदकेऊ" જેમ રજ્જુ (દોરડુ) બદ્ધ ઇદ્રધ્વજ મહોત્સવમા સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમા શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ શોભાનુ જનક હોય છે તથા ' विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध " વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે " सपिणद्ध " ગ્રથિત-યુક્ત છે

ग्नमथितचूर्णितकुशल्यितपर्यस्तपतितखण्डित-परिशटितविनाशितम्=तत्र 'सभग्ग' सभग्न=घट इव, 'महिय' मथित=दधीव विलोडित 'चुण्णिय' चूर्णित=चणकवत् पिष्टम् 'कुसल्लिय' कुशल्यितम्=कु=कुत्सितम्-अन्तः प्रविष्टतोमरादि शल्यमिव शल्य, यत् प्रविष्ट सत्, केनाप्युपायेन न निःसरति तत्कुशल्यं, तत्सजात यस्येति कुशल्यित दुष्टशल्ययुक्त, यथा वक्रतया प्रविष्टेन शल्येन शरीर विदारित भवति, तथैव विनयादिक विदारित भवति, 'पल्हट्ट' पर्यस्त=पर्वतशिखराद् स्थूलपाषाणखण्ड इव स्वस्थानाच्चलितम्, 'पडिय' पतितम्=प्रासादशिखरात्कलश इवाधोनिपतितम् 'खडिय' खण्डितम्=दण्ड इव विभागेन च्छिन्नम्, 'परिसडिय' परिशटित = कुष्ठाद्युपहताङ्गमिव विगलितम्, 'विणासिय' विनाशित=विनष्टम्, 'होइ' भवति। अथोपमया ब्रह्मचर्यस्य माहात्म्य वर्ण्यते-'त बभ भगवत' इत्यादि। 'त'=तत्-प्रसिद्ध 'भगवत' भगवद्=सर्वोत्कृष्टैश्वर्यशालि 'बभ' ब्रह्म=ब्रह्मचर्य 'गहगणनक्खत्ततारगाण च' ग्रहगणनक्षत्रतारकाणा च, ग्रहगणः =मङ्गलादि, नक्षत्राणि=अश्विन्यादयः, तारका =प्रसिद्धाः, आसा मध्ये 'जहा'

डिय विणासिय होइ) घटकी तरह सभग्न टुकडे २ हो जाते हैं-नष्ट हो जाते हैं, दधि की तरह विलोडित-अस्तव्यस्त हो जाते हैं, चना आदि की तरह-चूर्णित-पिसे जाते हैं, कुशल्य-टेढे-वक्र बाण से विदारित हुए शरीर की तरह विदारित हो जाते हे, पर्वत की चोटी से पतित पाषाणखण्ड की तरह अपने स्थान से च्युत हो जाते हैं, पतित प्रासाद की छत से गिरे हुए कलश की तरह अधोनिपतित हो जाते हैं, फाडे गये दड की तरह खडित होते जाते हैं, परिशटित-कुष्ठादि से उपहत अग की तरह गलित हो जाते हैं, और विनाशित-विनष्ट-हो जाते हे। (त बभ भगवत) सर्वोत्कृष्ट ऐश्वर्यशाली प्रसिद्ध यह ब्रह्मचर्य (गहगणनक्खत्ततारगाण च जहा उडुवई) मगल आदि

જેમ ટુકડે ટુકડા થઈ જાય છે,-નષ્ટ થઈ જાય છે, દહીની જેમ વિલોડિત-અસ્તવ્યસ્ત થઈ જાય છે, ચણા આદિની જેમ ચૂરે ચૂરા થઈ જાય છે, કુશલ્ય-વક્રબાણુથી વીધાયેલ શરીરની જેમ વિદારિત થઇ જાય છે પર્વતના શિખર પરથી પાષાણુખડની જેમ પોતાને સ્થાનેથી ભ્રષ્ટ થઇ જાય છે, પતિત-મહેલની છત ઉપરથી પડેલા કલશની જેમ અધોનિપતિત થઇ જાય છે ચીરાયેલ લાકડીની જેમ ખડિત થઈ જાય છે, પરિશટિત-કોઢ આદિથી ઉપહત અગની જેમ ગલિત થઇ જાય છે અને વિનષ્ટ થઇ જાય છે "त बभ भगवत" સર્વોત્કૃષ્ટ ઐશ્વર્યશાળી પ્રસિદ્ધ છે બ્રહ્મચર્ય "गहगणनक्खत्ततारगाण च जहा उडुवई"

एरावण इवकुंजराणं सीहो जहा मिगाण पवरो सुपन्नगाणं च वेणुदेव धरेण जहा पण्णग इंदराया कप्पाणं चेव बंभलोए, सभासु य जहा भवे सुहम्मा ठिईसु लवसत्तम०वपवरा दाणाणं चेव अभओ दाणं किमिराओ चेव कंबलाण संघयणे चेव वज्जरिसभे संठाणे चेव समचउरंसे झाणेसु य परं सुक्कज्झाणं नाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं लेसासु य परमसुक्कलेसा तित्थ-करो चेव जहा मुणीणं वासेसु जहा विदेहे गिरिराया चेव मंदरवरे वणेसु जहा णंदणवण पवरं दुमेसु जहा जंबू सुदंसणा वीस्सुयजसा जीयानामेण अयं दीवो, तुरगवई गयवई रह-वई नरवई जह वीसुए चेव राया रहिए चेव जहा महारहगए एवमणेगगुणा अहीणा भवंति एगम्मि बंभचेरे ॥ सू० ३ ॥

टीका—'जम्मि य' इत्यादि। 'जम्मि य' यस्मिंश्च ब्रह्मचर्ये 'भग्गे' भग्ने=विराधिते सति 'सव्वं' सर्वं 'विणयसीलतवनियमगुणसमूहं' विनयशील-तपोनियमगुणसमूहः-विनयो=गुरुप्रतिपत्तिलक्षणः, शील=सदाचारः, तपः=अन-शनादिकं द्वादशविधं, नियमः=अभिग्रहः, गुणसमूहः=ज्ञानादिगुणसमुदायः, एषां समाहारे विनयशीलतपोनियमगुणसमूहं क्रियाज्ञानं चेतिद्वयमपीत्यर्थः, सहसा= झटिति 'संभग्गमहियचुण्णिय कुसल्लियपल्लट्टपडिय खंडियपरिसडियविणासियं'संभ-

---

फिर ब्रह्मचर्य का माहात्म्य कहते हैं—'जम्मिय भग्गे' इत्यादि०।

टीकार्थ—(जम्मिय भग्गे) जिस ब्रह्मचर्य के विराधित होने पर (सव्व विणयसीलतवणियमगुणसमूहं) समस्त विनय, शील, तप, नियम और गुण समूह—अर्थात्—क्रिया और ज्ञान ये दोनों ही (सहसा) इकदम (संभग्गमहिय—चुण्णिय—कुसल्लिय—पल्लट्ट—पडिय—खंडिय—परिस

હવે સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્યનું મહાત્મ્ય કહે છે- " जम्मिय भग्गे " ઇ०।

ટીકાર્થ—"जम्मिय भग्गे " જે બ્રહ્મચર્ય વિરાધના થતા " सव्व विणय सीलतवणियमगुणसमूहं " સમસ્ત વિનય, શીલ, તપ, નિયમ અને ગુણસમૂહ એટલે કે ક્રિયા અને જ્ઞાન એ બને " सहसा " અચાનક " संभग्गमहियचु ण्णियकुसल्लिय-पल्लट्ठ-पडिय खंडिय-परिसडिय-विणासियं होइ " ફૂટેલા ઘડાની

हिण' ओषधीनाम्=ओष युत्पत्तिस्थानाना म ये हिमवान पर्वत इव। 'सीतोदा चेव' सीतोदेव=स्वनामख्याता महानदीव 'निन्नग.ना' निम्नगानाम्=नदीना मध्ये। 'उदहीसु' उदधिषु=समुद्रेषु 'सयभूरमणो' स्वयभूरमण समुद्रः 'रुय गवरो चेव' रुचकवर इव-यथा रुचकवरः=रुचकाभिधानत्रयोदशद्वीपवर्त्तीपर्वत-विशेषः, 'मडलिकपव्वयाण' माण्डलिकपर्वताना मानुषोत्तरकुण्डलवररुचकवरा भिधाना म ये 'पवरे' प्रवर श्रेष्ठ। 'एरावण इव' ऐरावण इव 'कुजराण' कुञ्जराणा म य, यथा हस्तिना मध्य ऐरावत प्रवर इत्यर्थ.। 'जहा' यथा 'सीहो' सिंह 'मिगाण' मृगाणाम्=अरण्यपशूना मध्ये 'पवरो' प्रवरः यथा-'सुपण्णगाण च' सुपर्णकाना=सुपर्णकुमाराणा मध्ये 'वेणुदेवे' वेणुदेवः प्रवरः यथा च 'पन्नग इदराया' पन्नगेन्द्रराज, 'धरणे' धरणो=धरणेन्द्रो नागकुमा-राणा मध्ये प्रवर', तथैवेद ब्रह्मचर्य व्रताना मध्ये प्रवरम्। तथा-'कप्पाण' कल्पाना=देवलोकाना मध्ये 'बभलोए चेव' ब्रह्मलोक इव=पञ्चमो देवलोकः

पर्वत, (निन्नगाण सीतोदा चेव) नदियों मे जैसे सीतोदा नदी, (उदहीसु जहा सयभूरमणो) समुद्रों मे जैसे स्वयभूरमणसमुद्र, (मडलिग-पव्वयाण रुयगवरो चेव) माडलिक पर्वतों में जैसे रुचक वरपर्वत, (पवरे) श्रेष्ठ माना जाता है, उसी प्रकार समस्तव्रतो में यह व्रत श्रेष्ठ माना गया है। तथा (कुजराण एरावण इव) हाथीओ मे जैसे ऐरावत हाथी श्रेष्ठ होता है (मिगाण जहा सीहो पवरो) मृगो के बीच में-जगली जानवरों मे-जैसे सिंह श्रेष्ठ होता है (सुपन्नगाण च वेणुदेवे सुपर्णकुमारों में जैसे वेणुदेव श्रेष्ठ होता है, (जहा पन्नग इदराया-धरणे) पन्नगों का इन्द्रराज धरणेन्द्र जैसे नागकुमारों में श्रेष्ठ होता है, (कप्पाण चेव बभलोए) कल्पो में जैसे पाचवा ब्रह्मलोक प्रवर होता है,

"ओसहीण हिमवतो चेव" ઔષધિઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનોમા જેમ હિમાલય પર્વત, "निन्नगाण सीतोदा चेव" નદીઓમા જેમ શીતોદા નદી "उदही सुजहा सयभूरमणो" સમુદ્રોમા જેમ સ્વયભૂરમણ સમુદ્ર "मडलिगपव्वयाणरुयगवरो चेव" માડલિક પર્વતોમા જેમ રુચકવર પર્વત, "पवरे" શ્રેષ્ઠ મનાય છે, તે જ પ્રકારે સઘળા વ્રતોમા આ બ્રહ્મચર્યવ્રત શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા "कुज-राण एरावण इव" હાથીઓમા જેમ ઐરાવત હાથી શ્રેષ્ઠ હોય છે, "मिगाण जहा सीहा पवरो" મૃગોના વચ્ચ-જગલી જાનવરોની વચ્ચે-જેમ સિંહ શ્રેષ્ઠ હોય તે, "सुपन्नगाण च वेणुदेवे" સુપર્ણ કુમારોમા જેમ વેણુદેવ શ્રેષ્ઠ હોય છે, "जहा पन्नग इदराया धरणे" પન્નગોનો ઇન્દ્રરાજ ધરણેન્દ્ર જેમ નાગકુ મારોમા શ્રેષ્ઠ હોય છે, "कप्पाण चेव बभलोए" કલ્પોમા જેમ પાચમો

यथा 'उडुवई' उडुपतिः=चन्द्रः सर्वश्रेष्ठस्तथैवव्रतानां मध्ये सर्वश्रेष्ठमस्ति। तथा- 'मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागराणं' मणिमुक्ताशिलाप्रवालरक्तरत्नाकराणां=मणय =चन्द्रकान्ताद्याः, मुक्ताफलानि=शिलाप्रवालानि विद्रुमाणि, रक्तरत्नानि=पद्मरागादीनि तेषामाकरा उत्पत्तिभूमयः, ये ते तथा, तेषां मध्ये 'जहा' यथा 'समुद्दो' समुद्रः, श्रेष्ठस्तथैवेदं व्रतानां मध्ये श्रेष्ठम्, एवं सर्वत्र सयोज्यम्। तथा-'जह चेव' यथा चैव 'मणीण' मणीनां मध्ये 'वेरुलिओ' वैडूर्य=वैडूर्यमणिः। 'जह चेव' यथा चैव 'आभूसणाणं' आभूषणानां मध्ये 'मउडो' मुकुटः। 'वत्थाणं' वस्त्राणां मध्ये 'खोमजुयलं चेव' क्षौमयुगमिव। 'अरविंद चेव' अरविन्दमिव=कमलमिव 'पुप्फजेट्ठं' पुष्पज्येष्ठम्-पुष्पेषु अरविन्दं श्रेष्ठमित्यर्थः। 'गोसीसं चेव' गोशीर्षं हरिचन्दनमिव 'चंदणाणं' चन्दनानां मध्ये 'हिमवंतो चेव' हिमवानिव 'ओस

ग्रहों में, अश्विनी आदि नक्षत्रों में, और ताराओं में जैसे चन्द्रमा सर्व श्रेष्ठ माना जाता है उसी तरह सर्व व्रतों में श्रेष्ठ माना गया है। तथा (मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागराणं च जहा समुद्दो) चन्द्रकान्त आदि मणियों की, मुक्ताफलों की, मूगों की और पद्मराग आदि रक्त-रत्नों की उत्पत्ति स्थानों में जैसे समुद्र श्रेष्ठ होता है उसी तरह यह व्रत भी सर्वव्रतों में श्रेष्ठ माना गया है। तथा-(जह चेव मणीण वेरुलियो) जैसे मणियों में वैडूर्यमणि, (जह चेव आभूसणाणं मउडो) आभूषणों में जैसे मुकुट, (वत्थाणं खोमजुयलं चेव) वस्त्रों में जैसे क्षौम युगल, (अरविंदचेव पुप्फजेट्ठं) पुष्पों में जैसे अरविंद (कमल) (चंदणाणं गोसीसं चेव) चंदनों में जैसे हरिचंदन, (ओसहीणं हिमवंतो चेव) औषधियों की उत्पत्ति के स्थानों में जैसे हिमवान्

મંગળ આદિ ગ્રહોમાં, અશ્વિની આદિ નક્ષત્રોમાં, અને તારાઓમાં જેમ ચન્દ્રમા સર્વશ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવ્યું છે તથા "मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागराणं च जहा समुद्दो" ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિઓની, મોતીની, મૂંગાની અને પદ્મરાગ આદિ રક્તરત્નોની ઉત્પત્તિ કરવાના સ્થાનોમાં જેમ સમુદ્ર શ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે આ વ્રત પણ સર્વ વ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા "जहचेव मणीण वेरुलिओ" જેમ મણિઓમાં વૈડૂર્યમણી, 'जह चेव आभूसणाणं मउडो" આભૂષણોમાં જેમ મુગટ "वत्थाणं खोमजुयलं चेव" વસ્ત્રોમાં જેમ ક્ષૌમયુગલ "अरविंद चेव पुप्फजेट्ठं" પુષ્પોમાં જેમ અરવિંદ, "चंदणाणं गोसीसं चेव" ચંદનોમાં જેમ હરિચંદન

प्रवर तथैव व्रताना मध्ये इद ब्रह्मचर्य प्रवरम्। तथा–' झाणेसु य ' ध्यानेषु च–ध्यानमध्ये यथा ' परमसुक्कज्झाण ' परमशुक्लध्यान–शुक्लध्यानस्य चतुर्थपादरूपं प्रवरम् , तथा–नाणेसु य ' ज्ञानेषु च यथा परमकेवल तु परिपूर्णविशुद्धकेवल-ज्ञान अर्थात्–क्षायिकज्ञान सिद्ध=प्रवरत्वेन प्रसिद्धम् , तथैवेद ब्रह्मचर्य व्रताना–मध्ये प्रसिद्धम्–तथा–' लेसासु य ' लेश्यासु=कृष्णाद्यासु च यथा, ' परमसुक्क लेस्सा ' परमशुक्ललेश्या–शुक्लध्यानस्य तृतीयभेदवर्तिनी प्रवरा । ' तित्थकरो चेव ' तीर्थकरश्चैव ' जहा ' यथा ' मुणीण ' मुनीना मध्ये प्रवर ' वासेसु ' वर्षेषु क्षेत्रेषु ' जहा ' यथा ' विदेहे ' विदेह –महाविदेहक्षेत्र प्रवरम्, तथैवेद व्रत=व्रताना मध्ये प्रवरम् । यथा जम्बूद्वीपे ' मदरवरे ' मन्दरवरो ' गिरिराया ' गिरिराजो=मेरुपर्वतश्चैव पर्वताना मध्ये प्रवरः, ' वणेसु ' वनेषु ' जहा ' यथा–

स्नसस्थान प्रवर माना जाता है–उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य व्रतों मे प्रधान व्रत माना जाता है। इसी तरह (झाणेसु वर सुक्कज्झाण) चार ध्यानों में जैसे परम शुक्ल ध्यान शुक्लध्यानका चौथा भेद, उत्तम होता है और (नाणेसु य परमकेवल सिद्ध) आभिनिबोधिक आदि पांच ज्ञानों मे जैसा केवलज्ञान उत्तम होता है (लेसासु य परमसुक्कलेसा) कृष्ण आदि छह लेश्याओं में जैसे परमशुक्ललेश्या–शुक्लध्यान के तीसरे (पाये) पादमें होनेवाली लेश्या–उत्तम होती है (जहा मुणीण तित्थयरो) मुनियो के बीच में जैसे तीर्थंकर सर्वोत्तम होते है, तथा (वासेसु जहा विदेहे) क्षेत्रों में जैसे विदेहक्षेत्र सब से उत्तम क्षेत्र होता है, उसी तरह व्रतों में यह ब्रह्मचर्य व्रत सबसे प्रधान व्रत है। तथा—(मदरवरे गिरि-राया) जैसे जबूद्वीप मे पर्वतों के मध्य में मदर वर गिरिराज श्रेष्ठ है,

---

સસ્થાન જેમ શ્રેષ્ઠ મનાય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સઘળા વ્રતોમા મુખ્ય મનાય છે એ જ પ્રમાણે " झाणेसु वर सुक्कज्झाण " ચાર ધ્યાનોમા જેમ પરમ શુકલધ્યાનનો ચોથો ભેદ ઉત્તમ હોય છે, અને " नाणेसु य परम केवल सिद्ध " આભિનિબોધિક આદિ પાચ જ્ઞાનોમા જેમ કેવળજ્ઞાન ઉત્તમ હોય છે, " लेसासु य परमसुक्कलेसा " કૃષ્ણ આદિ છ લેશ્યાઓમા જેમ શુકલ લેશ્યા–શુકલધ્યાનના ત્રીજા પદમા–પાયામા થનારી લેશ્યા–ઉત્તમ હોય છે " जहा मुणीण तित्थयरो " મુનિયોની વચ્ચે જેમ તિર્થંકર સર્વોત્તમ હોય છે, " वासेसु जहा विदेहे " ક્ષેત્રોમા જેમ વિદેહ ક્ષેત્ર સર્વોત્તમ છે, એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત સઘળા વ્રતોમા પ્રધાન વ્રત છે તથા " मदरवरे गिरिराया " જેમ જબૂદ્વીપમા પર્વતોમા ગિરિરાજ મદરવર શ્રેષ્ઠ છે, " वणेसु जहा णदण

क्षेत्रस्य महत्त्वादिन्द्रियस्यापि शुभपरिणामत्वाच्च प्रवरः। 'सभासु' सभासु= प्रविभक्तविमान भाविनीषु सुधर्मसभोत्पातसभाऽभिषेकसभाऽलङ्कारसभाव्यवसायसभासु च मध्ये 'जहा' यथा 'सुहम्मा' सुधर्मा सभा प्रवरा 'भवे' भवति तथैवेद ब्रह्मचर्यं व्रतेषु प्रवर भवति। तथा-'ठिइसु' स्थितिषु=आयुष्केषु मध्ये 'लवसत्तमव्व' लवसप्तमेव=अनुत्तरदेवभवस्थितिर्यथा प्रवरा। 'दाणाण चेव अभओदाण' दानाना मध्ये अभयदानमिवेद ब्रह्मचर्य प्रवरम्। 'कवलाण' कम्बलाना मध्ये 'किमिराओ चेव' क्रमिराग इव-क्रमिरागकम्बल इव क्रमेः= रक्तकीट विशेषस्य राग इव रागो यस्य कम्बलस्य भवति स कम्बलः क्रमि राग कम्बल प्रोच्यते, रक्तकम्बल इत्यर्थः, तथा-'सघयणे' सहनने=सहननमध्ये वज्र- ऋषभादीना षण्णा सहननाना मध्ये 'वज्जरिसभे' वज्रऋषभ सहनन प्रवरम् 'सठाणे' सस्थाने=षड्विधसस्थानमध्ये यथा 'समचउरस' समचतुरस्र सस्थान

(सभासु जहा सुहम्मा भवे सभाओं में जैसे सुधर्मा सभा श्रेष्ठ होती हैं, अर्थात् सुधर्मा सभा उत्पात सभा, अभिषेकसभा, अलकार- सभा, व्यवसायसभा, इन सभाओं में जैसे सुधर्मा सभा सब से श्रेष्ठ मानी जाती है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्यव्रत भी समस्त व्रतो मे श्रेष्ठ माना जाता है। तथा (ठिईसु जहा लवसत्तमव्वपवरा) आयुओं में अनुत्तरविमानवासी देवों की जैसे आयु उत्तम मानी जाती है और (दाणाण चेव अभयो दाण) दानो के बीच मे जैसे अभयदान श्रेष्ठ माना जाता है उसी तरह यह ब्रह्मचर्यव्रत भी समस्तव्रतो में प्रधान व्रत माना जाता है। तथा (कवलाण किमिराओ चेव) कवलो में जैसे रक्त कम्बल, (सघयणे चेववज्जरिसभे) छह सहननो मे जैसे वज्रऋषभ सहनन, (सठाणे चेव समचउरसे) छह सस्थानो मे जैसे समचतुर-

બ્રહ્મલોક શ્રેષ્ઠ હોય છે, "सभासु जहा सुहम्मा भवे" સભાઓમા જેમ સુધર્મા સભા શ્રેષ્ઠ હોય છે, એટલે કે સુધર્માસભા, ઉત્પાદસભા, અભિષેકસભા, અલ કારસભા વ્યવસાયસભા, એ સભાઓમા જેમ સુધર્માસભાને શ્રેષ્ઠ માનવામા આવે છે, એ જ પ્રકારે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને પણ સર્વે વ્રતોમા શ્રેષ્ઠ માનવામા આવે છે તથા "ठिइसु जहा लवसत्तमव्वपवरा" આયુષ્યોમા જેમ અનુત્તર વિમાનવાસી દેવોનુ આયુષ્ય જેમ ઉત્તમ મનાય છે, અને "दाणाण चेवअभ ओदाण" દાનોમા જેમ અભયદાન શ્રેષ્ઠ મનાય છે, એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સમસ્ત વ્રતોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા "कवलाण किमिराओ चेव" કમળોમા જેમ રક્ત કમળ સઘયણે चेव वज्जरिसभे" છ સહનનોમા જેમ વજ્રઋષભ સહનન, "सठाणे चेव समचउरसे" છ સ સ્થાનોમા જેમ સમચતુરસ્ર

शन्तीत्यर्थः । अयमाशयः-व्रताना मध्ये ब्रह्मचर्यं व्रत सर्वत श्रेष्ठम् । अतस्तदाराधकाः सर्वत श्रेष्ठा भवन्तीति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—जम्मि य आहिय वयमिण सच्च सीलं तवो य विणयो य सजमो य खत्ती गुत्ती मुत्ती, तहेव इहलोइय परलोइयजसो य कित्ती य पच्चाओ य, तम्हा निहुएणं बभचेरं चरियव्वं सव्वओ विसुद्ध जावज्जीवाए जावसेयट्ठी संजओत्ति, एव भणियं वय भगवया । तं च इम—"पचमहव्वयसुव्वयमूल समणमणाइलसाहुसुचिण्ण । वेरविरामणपज्जवसाण सव्वसमुद्दमहोदहितित्थं ॥ १ ॥ तित्थगरेहिं सुदेसियमग्गं नरगतिरिच्छविवज्जियमग्गं । सव्वपवित्तसुनिम्मियसारं सिद्धिविमाणअवगुयदारा॥ २ ॥ देवनरिंदनमसियपुज्ज सव्वजगुत्तममगलमग्ग । दुद्धरिस गुणनायगमेक्कं मोक्खपहस्स वडिसगभूयं" ॥ ३ ॥ जेण सुद्धचरिएणं भवइ सुवभणो सुसमणो सुसाहू सुइसी सुमुणी सुसजए स एव भिक्खू, जो सुद्ध चरइ वभचेर ॥ ३ ॥

जाते है । इसलिये व्रतों के बीच में यह ब्रह्मचर्यव्रत सर्व श्रेष्ठ व्रत है, अतः इसके आराधकजन भी सर्वतःश्रेष्ठ होते है ।

भावार्थ—इस एक ब्रह्मचर्य महाव्रत के आराधित होने पर समस्त सद्गुण स्वय आराधितहो जाते हैं और इसके विनष्ट होनेपर वे समस्त सद्गुण नष्ट हो जाते हैं। अत.समस्त व्रतोंमे यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है। सू०२॥

व्रतने આચરવાથી સમસ્ત ગુણ તે પુરુષમા આવી જાય છે તે કારણે વ્રતો મધ્યે આ બ્રહ્મચર્યવ્રત સર્વ શ્રેષ્ઠ વ્રત છે, તેથી તેની આરાધના કરનાર વ્યક્તિ સર્વ શ્રેષ્ઠ હોય છે

ભાવાર્થ—આ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતની અરાધના કરવામા આવે તો સમસ્ત સદ્ગુણ તેની જાતે જ આરાધિત થઇ જાય છે અને તેનો નાશ થતા તે સમસ્ત સદ્ગુણોનો નાશ થઈ જાય છે તેથી સઘળા વ્રતોમા આ વ્રત સર્વશ્રેષ્ઠ છે ॥સૂ.૨॥

'णदणवण' नन्दनवन 'पवर' प्रवर 'दुमेसु' द्रुमेषु-वृक्षेषु 'जहा' यथा-'सुदसणा' सुदर्शना-सुदर्शनाख्या 'जबू' जम्बूः=द्वीपनिः वृक्षविशेषः, सा 'विस्सुयजसा' विश्रुतयशाः-यशसा विख्याता। जम्ब्वा किं नाम यशः? इत्याह —'जीय यस्याः 'नामेण' नाम्ना अय 'दीवे' द्वीपो=जम्बूद्वीपोऽस्ति, तथैवेद ब्रह्मचर्यं व्रतानां मध्ये विख्यातम्। तथा-'जहा चेव' यथा चैव 'तुरगवई' तुरगपतिः=अश्वसेनायुक्तः 'गयवई' गजपतिः=गजसेनायुक्त 'रहवई' रथपतिः-रथसेनायुक्तः 'नरवई' नरपतिः=नरसेनायुक्तो 'राया' राजा विश्रुतः, 'जहा चेव' यथा चैव 'रहिए' रथिके=रथारोहिमध्ये 'महारहगए' महारथगत =महारथारोही विश्रुत'। तथैव व्रताना मध्ये इद व्रत विश्रुतम्=प्रसिद्धम् एवम्=एवम्प्रकाराः 'अणेगगुणा' अनेकगुणाः=प्रवरत्वविश्रुतत्वादयोऽनेकेगुणा 'एगम्मि वभचेरे' एकस्मिन् ब्रह्मचर्ये 'अहीणा' अधीना=स्वाधीना भवन्ति, एकस्मिन् ब्रह्मचर्ये समाराधिते सति सर्वे गुणाः समागत्य तस्मिन् पुरुषे समाश्रि

(वणेसु जहा णदणवण पवर) वनो में जैसे नदनवन श्रेष्ठ है, (दुमेसु जहा सुदसणा जबूविस्सुयजसा) वृक्षो में जैसे जम्बू वृक्ष प्रसिद्धयश सपन्न है कि (जीयनामेण अय दीवो) जिसके नाम से यह द्वीप जबुद्वीप कहलाता है, उसी प्रकार व्रतों में ब्रह्मचर्य व्रतश्रेष्ठ है। तथा (तुरगवई, गयवई, रहवई, नरवई, राया जहाचेव रहिए महारहगए, एवमणेगगुणा एगम्मि बभचेरे अहीणा भवति) जैसे अश्वसेनायुक्त, गजसेनायुक्त, रथसेनायुक्त, नरसेनायुक्त, राजा प्रसिद्ध होता है, तथा रथारोहियों के बीच मे महारथारोही प्रख्यात होता है, उसी तरह व्रतों में यह ब्रह्मचर्यव्रत प्रख्यात है। इस तरह प्रवरत्व, विश्रुतत्व आदि अनेक गुण एक इस ब्रह्मचर्य में अधीन होते हैं, अर्थात् एक ब्रह्मचर्य के आराधित कर लेने पर समस्तगुण आकार उस पुरुष में आश्रित हो

वण पवर " वनोमा જેમ નદનવન શ્રેષ્ઠ છે, " दुमेसु जहा सुदसणा जबू विस्सुयजसा " वृक्षोमा જેમ જબૂવૃક્ષ પ્રસિદ્ધ યશ સપન્ન છે, કે " जिय नामेण अय दीवो " જેના નામથી આ દ્વીપ જબૂદ્વીપ કહેવાય છે, એજ પ્રમાણે વ્રતોમા બ્રહ્મચર્ય વ્રત શ્રેષ્ઠ છે તથા " तुरगवई, गयवई, रहगई, नरवई राया, जहा चेव रहिए महारहगए, एवमणेगगुणा एगम्मि बभचेरे अहीणा भवति " જેમ હયદળવાળો, ગજદળવાળો, રથદળવાળો અને પાયદળવાળો રાજા પ્રસિદ્ધ હોય છે તથા રથારોહિયોની વચ્ચે મહારથારોહી પ્રખ્યાત હોય છે, એ જ પ્રમાણે વ્રતોમા પણ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પ્રખ્યાત છે આ પ્રમાણે શ્રેષ્ઠતા, વિશ્રુતત્વ, આદિ અનેક ગુણ આ એક બ્રહ્મચર્યને આધીન હોય છે, એટલે કે એક બ્રહ્મચર્ય

पञ्च ' चरितव्यम्=आसेवितव्यम् कीदृश ब्रह्मचर्यमासेवितव्यम् ? इत्याह— ' सव्वओ विसुद्ध ' सर्वतो विशुद्धम् ? मनः प्रभृति त्रिकरणत्रियोगनिर्मल, कियत्कालमासेवितव्यम् ? इत्याह—'जावज्जीवाए' यावज्जीवया प्रतिज्ञया यावज्जीवतया वा जीवनपर्यन्तमित्यर्थः, तथा-'जावसेयट्ठि सजओत्ति ' यावत् श्वेतास्थि सयत, इति, श्वेतानि=दुष्कर तप' करणाद्रुधिराभावेन शुक्लानि अस्थीनि यस्मिन्तत्-श्वेतास्थि=अस्थिपञ्जरप्राय शरीर तत्र सयतः प्रतिबद्धो जीवो यावद् भवेत् , मरणपर्यन्तमित्यर्थः । अय भावः-साधुना दुश्चर तपश्चरणादिना स्वशरीर रुधिर निशोष्य मरणावधि ब्रह्मचर्यं पालनीयमिति । अथवा यावच्छ्रेयोऽर्थि सयत ' इतिच्छाया, श्रेयो मोक्षस्तदर्थयितु शील यस्य स श्रेयोऽर्थी, स चासौ सयतश्चेति कर्मधारयः अय भाव'-साधुर्यावत्काल मोक्ष न प्राप्नोति, तावत्काल तेन ब्रह्मचर्यं पालनीयमिति । ' एव ' इत्येव ' भणिय ' भणित ' भगवया ' भगवता महा-

---

गण) निश्चलभाव से (बभचेर) इस ब्रह्मचर्य महाव्रत का (जावज्जीवाए) जीवनपर्यन्त (चरियव्व) पालन करना चाहिये । (जाव सेयट्ठिसजयो त्ति) यावत् श्वेतास्थि सयतः अर्थात् चाहे भले ही दुश्चर तपश्चरण आदि द्वारा अपने शरीर का खून सूक जाने से श्वेत हड्डियां ही उसमें अवशेष रह गई हो तबतक । अथवा यावत् श्रेयोऽर्थि सयत-अर्थात्-साधु को जबतक मुक्ति की प्राप्ति न हो जावे,तबतक इस महाव्रत का अवश्य पालन करते रहना चाहिये । " जाव सेयट्ठि सजओ " इसकी एक तो श्वेतास्थिसयतः " ऐसी सस्कृत छाया होती है और दूसरी-" श्रेयोऽर्थिसयत. " ऐसी भी होती है । (एव भणिय वय भगवया) इस प्रकार से इस व्रत का भगवान् महावीर ने जो कि अन्तिम तीर्थ-

---

નિશ્ચલ ભાવથી " बभचेर " આ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતનુ "जावज्जीवाए " જીવન પર્યન્ત चरियव्व " પાલન કરવું જોઈએ जाव सेयट्ठिसजओत्ति " ' यावत् श्वेतास्थिसयत " એટલે કે કઠોર તપશ્ચરણ આદિ દ્વારા પોતાના શરીરનુ લોહી સૂકાઈ જવાથી સફેદ હાડકા જ તેમા બાકી રહ્યા હોય એવી સ્થિતિમા પણ આ વ્રતનુ પાલન કરવુ જોઈએ અથવા यावत् श्रेयोऽर्थि सयत-એટલે કે જ્યા સુધી સાધુને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ન થાય ત્યા સુધી આ મહાવ્રતનુ પાલન કરતા રહેવુ જોઈએ "जाव सेयट्ठिसजओ" તેની એક સસ્કૃત છાયા "श्वेतास्थिसयत " થાય છે, અને બીજી "श्रेयोऽर्थिसयत " એવી પણ છાયા થાય છે " एव भणिय वय भगवया " આ પ્રમાણે અન્તિમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરે આ વ્રતનુ

टीका—' जम्मि य ' इत्यादि—

' जम्मि य ' यस्मिंश्च=ब्रह्मचर्ये आराधिते ' इण ' इद प्रव्रज्या—लक्षण ' वय ' व्रतम् ' आराहिय ' आराधित भवति । तथा पुनरपि यदाराधित भवति, तदाह–' सच्च ' सत्य ' सील ' शील=साध्वाचारः–' तवो य ' तपश्च ' विणओ य ' विनयश्च ' सजमो य ' सयमश्च, तथा–' खती ' क्षान्तिः ' गुत्ती ' गुप्तिः–मनोगुप्त्यादिका, ' मुत्ती ' मुक्तिः–निर्लोभता ' तहेव ' तथैव ' इहलोइय परलोइय ' ऐहलौकिकपारलौकिक ' जसो य ' यशश्च–यशः=एकदिग्गामिनीख्यातिः ' कित्तीय ' कीर्तिश्च=सर्वदिग्गामिनीप्रसिद्धि , ' पचओ य ' प्रत्ययश्च=' साधुरयम् ' एव रूपो विश्वासः, एतत्सर्वं ब्रह्मचर्ये समाराधिते भवतीति भावः । 'तम्हा' तस्माद् हेतोः ' निहुएण ' निभृतेन=निश्चलभावेन ' बभचेर ' ब्रह्मचर्य ' चरि-

'जम्मिय' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(जम्मिय आराहिए) जिस ब्रह्मचर्य व्रत के आराधित कर लेने पर (इण वय आराहिय) यह प्रव्रज्यारूपव्रत आराधित हो जाता है तथा–(सच्च सीलतवो य विणयो य सजमो य खति, गुत्ती, मुत्ती, तहेव इहलोइय, परलोइय, जसो य कित्ती य पच्चओ य) सत्य, शील–सदाचार, (मुनि का आचार) तप, विनय, सयम, क्षान्ति मनोगुप्ति आदि तीन गुप्तिया, निर्लोभतारूप मुक्ति, तथा इहलोक सबधी, और परलोक सबधी यश–एक दिशामे फैलानेवाली प्रसिद्धि, कीर्ति–सब दिशा में फैलाने वाली प्रसिद्धि, तथा–प्रत्यय–" यह साधु है " इस रूप विश्वास, ये सब आराधित हो जाते है। (तम्हा) इसलिये (सव्वओ विसुद्ध) नौ कोटि–त्रिकरण त्रियोग से निर्मल बनाकर (निहु

" जम्मिय " ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ–" जम्मिय आराहिए " જે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ સેવન કરવાથી " इण वय आराहिय " આ પ્રવ્રજ્યારૂપ વ્રત આરાધિત થઈ જાય છે, તથા " सच्च सील तवो य विणयो य सजमो य खत्ती, गुत्ती, मुत्ती इहलोइय परलोइय जसो य कित्ती य पच्चओ य " સત્ય, શીલ, સદાચાર, (મુનિનો આચાર) તપ, વિનય, સયમ, ક્ષાતિ, મનોગુપ્તિ આદિ ત્રણ ગુપ્તિ, નિર્લોભતારૂપ મુક્તિ, તથા આલોક સબધી તથા પરલોક સબધી યશ–એક દિશામા ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ–સઘળી દિશાઓમા ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, તથા પ્રત્યય–" આ સાધુ છે " એ પ્રકારનો વિશ્વાસ, એ બધા આરાધિત થઈ જાય છે ' तम्हा " તેથી " सव्वओ विसुद्ध " નવ પ્રકારે–ત્રિકરણ ત્રિયોગથી નિર્મળ બનાવીને " निहुएण "

तथा—' सव्वसमुद्दमहोदहितित्थ ' सर्वसमुद्रमहोदधितीर्थम्-सर्वे च ते समुद्राः सर्व समुद्रास्तेषु महान् उदधिः=स्वयम्भूरमण समुद्रस्तत्तुल्य विशालत्वात्स-सारोऽपि महोदधिस्तस्य तीर्थमिव=पारगमनाय नौकेव यत्तत्तथाऽस्ति ॥ १ ॥

' तित्थगरेहिं ' इत्यादि-' तित्थगरेहिं ' तीर्थकरैः=जिनैः ' सुदेसियमग्गं ' सुदेशितमार्गम्=सुदेशितः=सुदर्शितः मार्गः=गुप्त्यादि तत्पालनोपायो यस्मिस्त-त्तथा, तथा-' नरगतिरिच्छविवज्जियमग्ग ' नरकतिर्यग्विवर्जितमार्ग -नरकस्य= नरकगते , तिरश्चः=तिर्यग्गतेश्च विवर्जित =प्रतिरोधितो मार्गो गतिर्येन तादृशम्। तथा-' सव्वपवित्तसुनिम्मियसार ' सर्वपवित्रसुनिर्मितसार=सर्वपवित्राणि=सर्वाणि पावनानि सुनिर्मितानि=सुविहितानि साराणि=प्रधानानि येन तत्तथा, सकलव्रत-

---

सर्प उसके लिये हार जैसा बन जाता है और विप भी सुसाधु जैसा हो जाता है-जो नौ कोटि से शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत का पालक होता है। यह ब्रह्मचर्य का ही प्रभाव है जो शत्रु भी मित्र बन जाता है।

(सव्वसमुद्दमहोदहितित्थ) समस्त समुद्रों में अंतिम स्वयभूर-मणसमुद्र एक बहुत विशाल समुद्र है-इसके जैसे विशाल होने से ससार भी एक महोदधि जैसा है, उससे पार होने के लिये यह ब्रह्म-चर्य एक नौका के समान है ॥ १ ॥ (तित्थगरेहिं सुदेसियमग्ग) तीर्थंकर भगवतो ने इसके पालने का गुप्ति आदि रूप उपाय कहा है। (नरगतिरिच्छविवज्जियमग्ग) इसके प्रभाव से नरकगति और तिर्यञ्चगति का मार्ग रुक जाता है (सव्वपवित्तसुनिम्मियसार) तथा

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો આરાધક હોય છે તેને માટે સાપ હાર જેવો બની જાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવુ થઈ જાય છે બ્રહ્મચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની જાય છે, " सव्वसमुद्द-महोदहितित्थ " સઘળા સમુદ્રોમા અતિમ સ્વયભૂરમણ સમુદ્ર એક ઘણો વિશાળ સમુદ્ર છે-તેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો છે, તેને પાર જવાને માટે આ બ્રહ્મચર્ય એ એક નૌકા જેવુ છે ॥ ૧ ॥ " तित्थगरेहिं सुदेसियमग्ग " તીર્થંકર ભગવાનોએ તેના પાલન માટે ગુપ્તિ આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે " नरगतिरिच्छविवज्जियमग्ग " તેના પ્રભાવથી નરકગતિ અને તિર્યંચ ગતિનો માર્ગ અટકી જાય છે " सव्वपवित्त सुनि-म्मियसार " અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે, એટલે કે આ વ્રત સઘળા વ્રતોને પવિત્ર દૃઢ કરનાર છે " सिद्धविमाणअ वगुयदार " તથા મોક્ષ ગતિનુ અને અનુત્તર વિમાનોનુ દ્વાર તેનાથી ઉઘડી જાય

वीरेण चरमतीर्थङ्करेण । ' त च ' तच्चव्रतम् ' इम ' इदम्=अग्रे-वक्ष्यमाणस्वरूपमस्ति । तदाह तिसृभिर्गाथाभिः-

' पचमहव्वय० ' इत्यादि ।

' पचमहव्वयसुव्वयमूल' पञ्चमहाव्रतसुव्रतमूलम्=पञ्च=पञ्चसख्यकानि यानि महाव्रतानि=प्राणातिपातविरमणादि लक्षणानि, तान्येव सुव्रतानि तेषा मूलम्=कारणम् इद ब्रह्मचर्यव्रतमस्ति । तथा-इद ब्रह्मचर्यव्रत, ' समण ' शमन=चित्त समाधिजनक, तथा-' अनाविलसाधुसुचीर्णम्= अनाविला. = अकलुषाः-निर्मल चारित्रा ये साधवस्तैः सुचीर्ण=समाराधितम् , तथा-' वेरविरामणपज्जवसाण ' वैरविरमणपर्यवसानम्=वैर=शत्रुभावस्तस्य विरमण=निवृत्तिः पर्यवसानेऽन्ते यस्य तत् , ब्रह्मचर्य हि वैर विनिवार्य परमप्रीतिमुपजनयतीति भावः ।

उक्त च—

सप्पो हारायए तस्स, विस चावि सुहायए ।
बभचेरप्पभावेण, रिऊ मित्तायए सया ॥ १ ॥

छाया —सर्पो हारायते तस्य विष चापि सुधायते ।
ब्रह्मचर्यप्रभावेण रिपुर्मित्रायते सदा ॥ १ ॥ इति ।

कर हुए है कथन किया है । (त च इम) इस महाव्रत का स्वरूप तीन गाथाओ से कहते हैं—

(पचमहव्वयसुव्वयमूल) यह ब्रह्मचर्य महाव्रतरूप सुव्रतों का मूल-कारण है, (समण) चित्तसमाधि का जनक है, (अणाइलसाहुसुचिण्ण) निर्मल चारित्रधारी साधुओं द्वारा अच्छी तरह आराधित किया हुआ है (वेरविरामणपज्जवसाण) वैरविरोध का यह अत करके परम प्रीती का जनक होता है । कहा भी है—

" सप्पो हरायए तस्स, विस चावि सुहायए ।
बभचेरप्पभावेण, रिऊ मित्तायए सया ॥ १ ॥

કથન કર્યું છે "तच इम" આ મહા વ્રતનુ સ્વરૂપ ત્રણ ગાથાઓ દ્વારા કહે છે

"पचमहव्वयसुव्वयमूल" આ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ પાચ મહાવ્રતરૂપ સુવ્રતોનુ મૂળકારણ છે "समण" ચિત્ત સમાધિનુ જનક છે, "अणाइल साहु सुचिण्ण" નિર્મળ ચરિત્રધારી સાધુઓ દ્વારા સારી રીતે અરાધિત થયેલ છે, "वेरविरामणपज्जवसाण" વેર વિરોધનો અન્ત લાવીને તે પરમ પ્રીતિનુ જનક થાય છે કહ્યુ પણ છે-

" सप्पो हारायए तस्स विस चावि सुहायए।
बभचेरप्पभावेण, रिऊ मित्तायए सया ॥ १ ॥

तथा—' सव्वसमुद्दमहोदहितित्थ ' सर्वसमुद्रमहोदधितीर्थम्-सर्वे च ते समुद्राः सर्वे समुद्रास्तेषु महान् उदधिः=स्वयम्भूरमण समुद्रस्तत्तुल्य विशालत्वात्संसारोऽपि महोदधिस्तस्य तीर्थमिव=पारगमनाय नौकेव यत्तत्तथाऽस्ति ॥ १ ॥

' तित्थगरेहिं ' इत्यादि-' तित्थगरेहिं ' तीर्थकरैः=जिनैः ' सुदेसियमग्गं ' सुदेशितमार्गम्=सुदेशितः=सुदर्शितः मार्गः=गुप्त्यादि तत्पालनोपायो यस्मिंस्तत्तथा, तथा-' नरगतिरिच्छविवज्जियमग्गं ' नरकतिर्यग्विवर्जितमार्गम्=नरकस्य=नरकगतेः, तिरश्च=तिर्यग्गतेश्च विवर्जितः=प्रतिरोधितो मार्गो गतिर्येन तादृशम्। तथा-' सव्वपवित्तसुनिम्मियसारं ' सर्वपवित्रसुनिर्मितसारं=सर्वपवित्राणि=सर्वाणि पावनानि सुनिर्मितानि=सुविहितानि साराणि=प्रधानानि येन तत्तथा, सकलव्रत-

---

सर्प उसके लिये हार जैसा बन जाता है और विष भी सुसाधु जैसा हो जाता है-जो नौ कोटि से शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत का पालक होता है। यह ब्रह्मचर्य का ही प्रभाव है जो शत्रु भी मित्र बन जाता है।

(सव्वसमुद्दमहोदहितित्थ) समस्त समुद्रों में अंतिम स्वयभूरमणसमुद्र एक बहुत विशाल समुद्र है-इसके जैसे विशाल होने से ससार भी एक महोदधि जैसा है, उससे पार होने के लिये यह ब्रह्मचर्य एक नौका के समान है ॥ १ ॥ (तित्थगरेहिं सुदेसियमग्ग) तीर्थंकर भगवतो ने इसके पालने का गुप्ति आदि रूप उपाय कहा है। (नरगतिरिच्छविवज्जियमग्ग) इसके प्रभाव से नरकगति और तिर्यञ्चगति का मार्ग रुक जाता है (सव्वपवित्तसुनिम्मियसार) तथा

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને આરાધક હોય છે તેને માટે સાપ હાર જેવો બની જાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવું થઈ જાય છે બ્રહ્મચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની જાય છે, " सव्वसमुद्दमहोदहितित्थ " સઘળા સમુદ્રોમાં અંતિમ સ્વયભૂરમણ સમુદ્ર એક ઘણો વિશાળ સમુદ્ર છે-તેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો છે, તેને પાર જવાને માટે આ બ્રહ્મચર્ય એ એક નૌકા જેવું છે ॥ ૧ ॥ " तित्थगरेहिं सुदेसियमग्ग " તીર્થંકર ભગવાનોએ તેના પાલન માટે ગુપ્તિ આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે " नरगतिरिच्छविवज्जियमग्ग " તેના પ્રભાવથી નરકગતિ અને તિર્યંચ ગતિનો માર્ગ અટકી જાય છે " सव्वपवित्त सुनिम्मियसार " અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે, એટલે કે આ વ્રત સઘળા વ્રતોને પવિત્ર દૃઢ કરનારૂં છે " सिद्धविमाणअवगुयदार " તથા મોક્ષ ગતિનું અને અનુત્તર વિમાનોનું દ્વાર તેનાથી ઉઘડી જાય

पवित्रदृढकारीत्यर्थः, तथा-' सिद्धिविमाणअवंगुयदारं ' सिद्धिविमानापावृतद्वारम्=सिद्धेः-मोक्षगते, विमानानाम्=अनुत्तरविमानानाम् च, अपावृतम्=उद्घाटित द्वार=प्रवेशमुख येन तत्तथा, स्वर्गापवर्गद्वारोद्घाटकमित्यर्थः ॥ २ ॥ पुनः कीदृश ब्रह्मचर्यम् ? इत्याह-' देवनरिंद ' इत्यादि । 'देवनरिंदनमसिय पुज्ज' देवनरेन्द्र नमस्यितपूज्यम्-देवाः=भवनपत्यादयः, नरेन्द्रा =चक्रवर्त्यादयस्तैः नमस्यिता = नमस्कृता ये महापुरुषास्तेषा पूज्यम्=आदरणीयम् । तथा-' सव्वजगुत्तममगलमग्ग ' सर्वजगदुत्तममगलमार्गः=सर्वजगत्सु=त्रिपु लोकेपु उत्तमो मङ्गलश्च यो मार्गः उपाय, सोऽस्ति । तथा-' दुद्धरिस ' दुर्द्धर्षम्=देवदानवैरप्यपरिभवनीयम्, 'गुण नायग ' गुणनायक=गुणान=ज्ञानादिरूपान नयति=प्रापयति यत्तत्तादृशम्=गुणनायकमित्यर्थ', तथा-' एक्क ' एक-प्रधानम्=निरुपमम इत्यर्थ, तथा ' मोक्खपहस्स ' मोक्षपथस्य=मोक्षमार्गस्य ' वडिंसगभूय ' अवतसकभूतम्=शिरोभूपणसदृशमिद ब्रह्मचर्यमस्ति ॥ ३ ॥

इसका ही प्रभाव सब को पवित्र और सारभूत बना देता है। अर्थात् यह व्रत समस्त व्रतों को पवित्र और दृढ करने वाला है। (सिद्धिविमाणअवगुयदार) तथा मोक्षगति का और अनुत्तर विमानो का द्वार इससे खुल जाता है, अर्थात् स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) के द्वारका यह उद्घाटक है-खोलनेवाला है ॥ २ ॥ (देवनरिंदनमसियपुज्ज) भवनपति आदि देवों द्वारा चक्रवर्ती आदि नरेन्द्रों द्वारा, नमस्कृत हुए ऐसे महापुरुषों के यह पूजनीय-आदरणीय है। तथा-(सव्वजगुत्तममगलमग्ग) यह तीनो लोकों मे उत्तम और मगलकारी मार्ग है। तथा (दुद्धरिस) देव और दानवोसे भी यह पराजित होनेवाला नही है (गुणनायग)ज्ञानादि सद्गुणो को यह प्राप्त कराने वाला है। (एक्क) यह प्रधाननिरुपम है (मोक्खपहस्स वडिंसगभूय) और मोक्ष मार्गका यह शिरोभूषणरूप है॥३॥

છે એટલે સ્વર્ગ અને અપવર્ગના દ્વારનુ તે ઉદ્ઘાટન કરનાર છે-ઉઘાડનાર છે ॥૨॥ " देवनरिंदनम सियपुज्ज" ભવનપતિ આદિ દેવો અને ચક્રવતી આદિ નરેન્દ્રો પણ જેમને નમન કરે છે એવા મહાપુરુષોને તે પૂજનીય અને આદરણીય છે તથા " सव्व जगुत्तममगलमग्ग " તે ત્રણે લોકમા ઉત્તમ અને મગળકારી માર્ગ છે, તથા " दुद्धरिस " દેવો અને દાનવો દ્વારા પણ તે પરાજિત થાય એવુ નથી " गुणनायण " જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોને તે પ્રાપ્ત કરાવનાર છે ' एक्क " તે પ્રધાન -શ્રેષ્ટ-અનુપમ છે " मोक्खपहस्स वडिंसगभूय " અને મોક્ષમાર્ગનુ તે શિરો ભૂષણ રૂપ છે ॥ ૩ ॥

तथा—' सुद्धचरिएण ' शुद्धचरितेन=सम्यगाचरितेन ' जेण ' येन=ब्रह्मचर्येण, ' भवइ ' भवति ' सुबंभणो ' सुब्राह्मणः=आत्मज्ञानतत्परः, सुसमणो' सुश्रमण =सुतपस्वी ' सुसाहू ' सुसाधुः=निर्वाणसाधकः ' सुईसी ' सुऋषिः, यथावद्वस्तुदर्शक', ' सुमुणी ' सुमुनिः=जिनाज्ञाधारकः, 'सुसजए' सुसयतः= परमयतनापरायणः । तथा स एव ' भिक्खू ' भिक्षुः=सर्वत्यागी परमपुरुषार्थ-साधको वा,' जो' यः 'सुद्ध' शुद्धं 'बभचेर' ब्रह्मचर्यं 'चरइ' चरति=पालयति॥सू३॥

(सुद्धचरिएण जेण सुबंभणो भवइ) अच्छी तरह आचरित हुए इस ब्रह्मचर्य से ही मनुष्य सुब्राह्मण–आत्म ज्ञान में तत्पर-होता है, (सुसमणो) सुश्रमण–सुतपस्वी, (सुसाहू) सुसाधु–निर्वाण साधक, (सुईसी) सुऋपि–यथावत् वस्तुदर्शक (सुमुणी) सुमुनि–जिनाज्ञा का आराधक, और (सुसजए) सुसयत परम यतना में परायण होता है। तथा (स एव भिक्खू) वही सच्चा भिक्खु है–सर्व त्यागी–अथवा–परम पुरुषार्थ साधक है, (जो सुद्ध बभचेर चरइ) जो इस ब्रह्मचर्य को शुद्ध रीति से पालता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस ब्रह्मचर्य की गुणगरिमा (महिमा) का ही कथन किया है। वे कहते हैं कि इस एक ब्रह्मचर्य व्रतके पूर्णरूपसे आराधित होनेपर सत्य, शील आदि जितने भी सद्गुण हैं वे सब आराधित हो जाते हैं। यह ब्रह्मचर्य पचमहाव्रतों का मूलकारण है। अतःयावज्जीव साधु को इसका सेवन करते रहना चाहिये। जिस

" सुद्धचरिएण जेण सुबंभणो भवइ ' सारी रीते आचरवामा आवेल आ ब्रह्मचर्यथीज मनुष्य सुब्राह्मण–आत्म ज्ञानमा तत्पर थाय छे, "सुसमणो" सुश्रमण–सुतपस्वी–" सुसाहू " सुसाधु–निर्वाण साधक, "सुईसी"सुऋपि–यथावत् वस्तु दर्शक, " सुमुणी " जिन आज्ञानो आराधक, अने "सुसजए" सुसयत–परम यतनामा परायण थाय छे, तथा "स एव भिक्खू " ते ज साचो भिक्खु छे-सर्वत्यागी अथवा परम पुरुषार्थ साधक छे, "जो सुद्ध बभचेर चरइ " जे आ ब्रह्मचर्यने शुद्ध रीते पाळे छे

भावार्थ—सूत्रकारे आ सूत्रद्वारा ब्रह्मचर्यना गुण गौरवनु ज वर्णन कर्यु छे तेओ कहे छे के आ एक ब्रह्मचर्य व्रतनु पूर्ण स्वरूपे अराधना करवामा आवे तो सत्य, शील आदि जेटला सद्गुणो छे तेमनु आराधन आपोआप थई जाय छे आ ब्रह्मचर्य पाच महाव्रतोनु मूळ कारण छे तेथी साधुओ जीवन-पर्यन्त तेनु सेवन करवु जोईए जे रीते मूळ विना कोई पण, वस्तुनी

ब्रह्मचारिणां किं निमनाचरणीयम् ? किं किं चाचरणीयम् ? इति दर्शयति-'इम च' इत्यादि ।

मूलम्—इमं च रइरागदोसमोहपवड्डणकरं किं मज्झप्पमाय दोसपासत्थसीलकरण अब्भंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कक्खसीसकरचरणवयणधोवणसंबाहणगायकम्मपरिमद्दणाणुलेवणचुण्णवासधूवणसरीरपरिमंडणबाउसि य हसियभणिय-नट्ट-गीय-वाइयनडनट्टग-जल्लमल्ल—पेच्छणवेलवगजाणिय सिंगारागाणि अण्णाणि य एवमाइयाणि तवसंजमबंभचेरघाओवघाइयाइं अणुचरमाणेण बंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं। भावेयव्वो भवइ अंतरप्पा इमेहिं तवनियमसीलजोगेहिं णिच्चकाल, किं ते, अण्हाणक अदंतधोवणसेयमल्लधारणमूणवयकेसलोयखमदमअचेलगखुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ठसेज्जाभूमिनिसेज्जपरघरप्पवेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिंदण—दंसमसकफासनियमतवगुणविणयमाइएहिं जहा से थिरतरगं होइ बंभचेरं॥सू ४॥

टीका—'इम च' इत्यादि । 'इम च' इद च वक्ष्यमाणम्—अवसन्नपार्श्वस्थादीनामाचरणीयमाचारजातम् , 'रइरागदोसमोहपवड्डणकर' रतिरागद्वेषमो

प्रकार मूल के विना किसी भी वस्तु की स्थिरता नहीं होती है—उसी प्रकार इस एक व्रत के अभाव में किसी भी व्रत की किसी भी सद्गुण की स्थिरता और शोभा नहीं होती है। इत्यादि रूप से इस सूत्र में इसकी महत्ता का प्रदर्शन किया गया है ॥ सू० ३ ॥

अब सूत्रकार ब्रह्मचारी को किस किस बात का आचरण करना

સ્થિરતા સંભવી શકતી નથી, એ જ રીતે આ એક વ્રતનો અભાવ હોય તો બીજા કોઈ વ્રત કે સદ્‌ગુણની સ્થિરતા અને શોભા સંભવતી નથી ઇત્યાદિ રીતે આ સૂત્રમાં બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું મહત્ત્વ બતાવવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ. ૩ ॥

હવે બ્રહ્મચારીએ કેવા પ્રકારનું આચરણ કરવું જોઈએ અને કેવા

हमवर्द्धनकर, तत्र-रति'=विषयानुरागः, रागः=स्वजनेषु स्नेहः, द्वेषः=शत्रुभावः, मोहः=अज्ञानम्, एषां यत्प्रवर्द्धन=प्रवृद्धिस्तस्य कर=कारकम्, पुन' 'किमज्झ-प मायदोस-पासत्थसील-करण' किमध्यप्रमाददोषपार्श्वस्थशीलकरणम्-तत्र-कि-मध्य=कि=कुत्सित म ये यस्य तत्तथोक्तम्-असारमित्यर्थः, तथा-प्रमाददोषः, प्रमादोऽसावधानता, सएव दोषः=प्रमाददोषः, पार्श्वस्थशील=पार्श्वस्थाना=ज्ञाना-चारादि वहिर्वर्तिना साधाभामाना शीलम्=अनुष्ठान निष्कारणनित्यपिण्डपरिभो-गादि, एतेषा करणम्=कारक भवति। सम्प्रति तदेव विशदयति-' अब्भगणाणि य' अभ्यञ्जनानि च=घृतनवनीतादिना शरीरमर्दनानि ' तेल्लमज्जणाणि य' तैलमज्जनानि च=तैलाभ्यङ्गपूर्वकस्नानानि, तथा-तथा-'अभिक्खण' अभीक्ष्णम्

चाहिये और किस किस का नहीं ? इस बात को प्रदर्शित करते है— ' इम च इत्यादि०।

टीकार्थ--(इम च) यह वक्ष्यमाण अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील, ससक्त, यथाछद साधुओं का आचार (रइरागदोसमोहपवड्ढणकर) रति-विषयों में अनुराग, राग-स्वजनों मे स्नेह, द्वेष-शत्रुता, और मोह-अज्ञान, इनकी वृद्धिकरने वाला होता है और (किमज्झ-पमाय-दोस-पासत्थ-सील-करण) कि मध्य-असार प्रमाददोषअसावधानता-रूप दोष का, पार्श्वस्थ शील-ज्ञानाचारादि से वहिर्भूत शिथिलाचारियो के अनुष्टान का-निष्कारण नित्य पिण्डपरिभोगादिरूप स्वभाव का, जनक होता है। अब सूत्रकार इसी पार्श्वस्थ आदि के आचार को विश दरूप से समझाते है-(अब्भगणाणि य) अभ्यगन-घृत नवनीत आदिसे शरीर का मर्दन करना (तेल्लमज्जणाणिय) तेलका मालीस करना तथा

પ્રકારનુ ન કરવુ જોઈએ તે સૂત્રકાર બતાવે છે-' इम च " ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ-" इम च " આ પ્રમાણે જોવામા આવતા અવસન્ન, પાર્શ્વસ્થ, કુશીલ, સસક્ત, સ્વછદી સાધુઓના આચાર " रइरागदोसमोहपवड्ढणकर " રતિ-વિષયોમા આસક્તિ, રાગ-સ્વજનો પર સ્નેહ, દ્વેષ-શત્રુતા અને મોહ-અજ્ઞાન, એ સૌની વૃદ્ધિ કરનાર હોય છે અને ' किमज्झ-पमायदोस-पासत्थ-सीलकरण " કિ મધ્ય-અસાર, પ્રમાદદોષ,-અસાવધાનતારૂપ દોષનુ પાર્શ્વસ્થશીલ-જ્ઞાનાચારાદિથી બાહ્ય શિથિલતા ચારીઓના અનુષ્ઠાનનુ, નિષ્કારણ નિત્ય પરિ ભોગાદિ રૂપ સ્વભાવનુ જનક થાય છે હવે સૂત્રકાર આ પાર્શ્વસ્થ આદિના આચારને વિસ્તારપૂર્વક સમજાવે છે-" अब्भगणाणिय " અભ્યજન-ઘી, માખણ આદિથી શરીરને માલીસ કરવુ, " तेल्लमज्जणाणिय " તેલનુ માલીસ કરીને

=वारंवारम् , 'कक्खसीसकरचरणवयणधोवणसंवाहणगायकम्मपरिमद्दणाणुलेवण चुण्णवासधूवणसरीरपरिमंडणवाउसियहसियभणियनट्टगीयवाइयनडनट्टगजल्लमल्लपेच्छणवेलंबग' कक्षाशीर्षकरचरणवदनधावनसंवाहनगात्रकर्मपरिमर्दनानुलेपनचूर्णवासधूपनशरीरपरिमण्डनवाकुशिकहसितभणितनाट्यगीतवादितनटनर्त्तकजल्लमल्लप्रेक्षणविडम्बक तत्र-कक्षा=बाहुद्वयमूलाधोवर्त्तिस्थानम् , शीर्ष=शिरः, करचरण=प्रसिद्धम् , वदन=मुख, तेषां यद् धावनं=प्रक्षालनं, संवाधन=हस्ताभ्यां पादपीडन गात्रकर्म=शरीरपरिकर्म=समर्दनादि कर्मपरिमर्दन=सर्वतः शरीरमर्दनम् , तथा अनुलेपनचूर्णवासधूपनशरीरपरिमण्डनम्, तत्र अनुलेपनम्=शरीरे चन्दनानुलेपनम् ,चूर्णवास =सुगन्धिद्रव्यचूर्णम् , धूपनम्=अगुरुधूपादिकरणम् , शरीरपरिमण्डनम्=वस्त्रादिभिः शरीरशृङ्गारकरणम् , तथा-वाकुशिक नखवस्त्रकेशसमारचनम्=वकुश=कर्बुरचारित्र तदेवप्रयोजन यस्य तद् वाकुशिक शृङ्गारप्रयोजनक नखकेशवस्त्रसमारचनादिक, हसित=हासः, भणित-स्त्रीणां विकृतभणनम् , नाट्य=नटकर्म, गीत=गानम् , वादि

(अभिक्खण कक्खसीस कर-चरण वयण-धोवण संवाहण गायकम्मपरिमद्दणाणुलेवेण चुण्णवासधूवणसरीरपरिमंडणवाउसियहसियभणिय नट्ट-गीय वाइय नड नट्टग जल्ल मल्ल पेच्छण वेलंबग) वारंवार काख मस्तक-हाथ-पैर और मुहका धोना, दोनो हाथोंसे शरीरका दाबना, गात्रकर्म-शरीर की सफाई पर विशेष ध्यान रखना परिमर्दक-दूसरों से शरीर को रातदिन दबवाना,अनुलेपन शरीर पर चदन का बार २ लेप करना,चूर्णवास सुगन्धित द्रव्यों के चूर्ण से,धूपन अगुरु आदि के धूप से शरीर को अलंकृत करना, तथा वाकुशिक-शृंगार के प्रयोजन को लेकर नख, वस्त्र और-केशों को समारना तथा हसित-हासका हँसी मजाक-मश्करी आदि का करना, भणित-स्त्रियों के जैसा गाली आदि भाण्ड वचनों का बोलना

સ્નાન કરવુ, તથા "अभिक्खण कक्खसीस, कर, चरणनयण-धोवण-सवाहण गायकम्मपरिमद्दणाणुलेवण-चुण्ण-वासधूवण-सरीर-परिमंडणवाउसियहसिय-भणिय-नट्ट-गीय-वाइय-नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-पेच्छण-वेलंबग" વારવાર બગલ, માથુ, હાથ-પગ અને મોને ધોવુ, બન્ને હાથથી શરીરને દબાવવુ, ગાત્રકર્મ-શરીરની સ્વચ્છતા પર વધારે ધ્યાન આપવુ, પરિમર્દન-બીજા પાસે શરીરને રાતદિવસ દબાવવુ, અનુલેપન-વારવાર શરીરે ચદનનો લેપ કરવો, ચૂર્ણવાસ-સુગધિત દ્રવ્યોના ચૂર્ણથી, ધૂપન અગરૂ આદિના ધૂપથી શરીરને અલકૃત કરવુ, તથા વાકુશિક-શ્રૃગારને માટે નખ, વસ્ત્ર અને કેશને સમારવા તથા હસિત-ઠઠ્ઠા મશ્કરી આદિ કરવુ, ભણિત-સ્ત્રીઓના જેવી ગાળો આદિ અશિષ્ટ વચનો

तम्=पटहादिवादनम् तथा–नटाः=नाटयितारः, नर्तकाः=नृत्यकारिणः, जल्ला = चर्ममयरज्जूपरिनृत्यकारकाः, मल्लाः=मल्लयुद्धकारिणः, तेषां प्रेक्षणम्=अवलोकनम् तथा–विडम्बकाः=विदूषकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, वर्जयितव्या इति योगः। तथा–'जाणि य सिंगारागाराणि य' यानि च शृङ्गारागाणि च=शृङ्गारागारभूतानि अङ्गचेष्टादीनि तानि तथा–'अण्णाणि य' अन्यानि च=एभ्यइतराणि च 'एवमाइयाणि' एवमादिकानि=एवं प्रकाराणि यानि 'तवसंजमबंभचेरघाओवघाइयाइ' तपः संयमब्रह्मचर्यघातोपघातिकानि, तत्र तपः संयमब्रह्मचर्याणां घातो देशतः, उपघातः सर्वतो जायते यद्वशात् तानि तथोक्तानि 'बंभचेरं' ब्रह्मचर्यम्, 'अणुचरमाणेण' अनुचरता=पालयता 'सव्वकालं' सर्वकालं–सर्वदा 'वज्जेयव्वाइं' वर्जितव्यानि=त्याज्यानिभवन्ति, वर्जितव्यानीत्यस्यैकवचनविपरिणामेनान्यत्राऽप्यन्वयो बोध्यः। तथा–'भावेयव्वो य' भावितव्यश्च भवति 'अंतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवः। के र्भावितव्यो भवति ? इत्याह–'इमेहिं' एभिः 'तवणियमसील-

नाट्य–नाटक का देखना, गीत–गान का, वादित–पटह आदि बजते हुए बाजों का सुनना, नट–नटों का, नर्तक–नृत्यकारी जनों का जल्ल–जल्लों का–चर्ममयरज्जु के ऊपर नाचने वालो का, मल्ल–मल्लों के–बाहु युद्ध का प्रेक्षण–रुचिपूर्वक अवलोकन करना, तथा–विडम्बकों–विदूपकों को देखना यह सब वर्जना चाहिये तथा 'जाणिय' जो भी (सिंगारागाराणि) शृंगार के आधारभूत ऐसे, तथा (एवमाइयाणि अण्णाणि य) इसी तरह के और भी जो (तव संजमबंभचेरघाओवघाइयाइ) तप, संयम एवं ब्रह्मचर्य में एक देश से दूषण लगाने वाले हों अथवा सर्व–देश से उनका घात करने वाले हों, इन सब को (बंभचेर अणुचरमाणेण) जो इस ब्रह्मचर्य महाव्रत के पालन करने वाले संयमी जन हैं उन्हें (सव्वकाल वज्जेयव्वाइ) सदा के लिये छोड देना चाहिये।

જોવા, નાટકો જોવા, ગીત તથા પટહ આદિ વાજિત્રોનો અવાજ સાંભળવો, નટોના, નૃત્ય કરનારના, ચર્મમય દોરડાઓ પર નાચનારાઓના, મલ્લોના દ્વંદ્વયુદ્ધનું નિરીક્ષણ કરવાનું તથા વિદૂષકોને જોવાનું એ બધાનો ત્યાગ કરવો જોઈએ તથા "जाणिय" જે કોઈ "सिंगारागाराणि" શૃંગારના સાધનરૂપ એવા તથા "एवमाइयाणि अण्णाणिय" એવા પ્રકારનું બીજું પણ જે કંઈ "तवसंजमबंभचेरघाओवघाइयाइ" તપ સંયમ અને બ્રહ્મચર્યમાં એક દેશથી દૂષણ લગાડનાર હોય અથવા સર્વ દેશથી તેમનો ઘાત કરનાર હોય, તે બધાનો "बंभचेरअणुचरमाणेण" જે આ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતનું પાલન કરનાર સંયમી જનો છે તેમણે "सव्वकाल वज्जेयव्वाइ" સદાને માટે ત્યાગ કરવો

जोगेहिं' तपोनियमशीलयोगै =तपः प्रभृतिव्यापारैः 'निच्चकाल' नित्यकाल= सर्वदाऽन्तरात्मा भावितव्य'। 'किंते' के ते=कथम्भूतास्ते तपोनियमशीलयोगाः? इत्याह-' अण्हाणग अदतधोवणसेयमलजल्लधारणमूणवयकेसलोयखमदम अचेलग खुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ठ-सेज्जाभूमिनिसेज्जापरघरपवेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिंदणदसमसगफासनियमतवगुणविणयमाइएहिं ' अस्नानकादन्तधावनस्वेदमलजल्लधारणमौनव्रतकेशलोच क्षमादमाचेलकक्षुत्पिपासालाघवशीतोष्णकाष्ठशय्याभूमिनिषद्यापरगृहप्रवेशलब्धापलब्धमानापमाननिन्दनदंशमशकस्पर्शनियमतपोगुणविनयादिकैः-तत्र-अस्नानकः=स्नानवर्जनम्, अदन्तधावन=दन्तधावनवर्जनम्, तथा-स्वेदमलजल्लधारण, तत्र-स्वेद =प्रस्वेद', मल=स्वेदरजः संसर्गात्समुत्पन्न घनीभूतम्

तथा (इमेहिं तवणियमसीलजोगेहिं) इन तप, नियम और शील-सदाचार, इन सबसे उस ब्रह्मचर्य महाव्रतधारी को (अतरप्पा) अपनी अन्तरात्मा (निच्चकाल) सर्वदा (भावियव्वो भवइ) भावित करना चाहिये। (किं ते) वे तप नियम-शील योग कौन हैं ? उन्हें दिखलाते हैं- अण्हाणग-अदतधोवणसेय-मल्ल-जल्ल-धारण-मूणवय-केसलोय-खमदम-अचेलग-खुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ठ सेज्जा भूमिनिसेज्ज परघरप्पवेस-लद्धावलद्ध-माणावमाण-निंदणदसममगफासनियमतव गुणविणयमाइएहिं) उस साधुके तप, नियन और शील इस प्रकार के होना चाहिये-वह साधु यावज्जीव स्नान न करे, अर्थात् उस महाव्रती को जीवन भर तक स्नान करने का त्याग कर देना चाहिये, कभी भी दंतौन नहीं करना चाहिये, शरीर में प्रस्वेद -पसीना आता हो, तो उसे वायु आदि करके नहीं सुखाना चाहिये। इस पसीने में आकर

જોઈએ તથા 'इमेहिं तवणियम सीलजोगेहिं એ તપ, નિયમ, અને શીલ-સદાચાર એ બધાથી તે બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતધારીએ " अतरप्पा " પોતાનો અતરાત્મા " निच्चकाल " સદા " भावियव्वो भवइ " ભાવિત કરવો જોઈએ " किं ते " તે તપ નિયમ-શીલયોગ કેવો હોય છે તે બતાવે છે-" अण्णाणग-अदतधोवण-सेय-मल्ल-जल्ल-धारण-मूणवय-केसलोय-खमदम-अचेलग - खुप्पिवास - लाघव सीतोसिणकट्ठसेज्जाभूमि-निसेज्ज -परघरप्पवेसलद्धावलद्धामाणावमाण निंदणदसम सगफासनियमतवगुणविणयमाइएहि " તે સાધનુ તપ, નિયમ અને શીલ આ પ્રકારનુ હોવુ જોઈએ-તે સાધુ જીવન પર્યન્ત સ્નાન ન કરે એટલે કે આ મહાવ્રતધારીઓ જીવે ત્યા સુધી સ્નાન કરવાનો ત્યાગ કરવો જોઈએ, કદી પણ દાતણુ કરવુ જોઈએ નહી, શરીરે પરસેવો વળતો હોય તો પવન નાખીને તેને સૂકવવો જોઈએ નહી, તે પરસેવામા રજકણો ચોટી ગયા હોય તો તેને શરીર પરથી દૂર કરવા જોઈએ નહી કાન, નાક આદિ ઇન્દ્રિયોમા

जल्ल=कर्णनासिकादि समुत्थ मलम्, तेषा धारणम्, तथा-मानव्रतम्, केशलोचः, एतौ प्रसिद्धौ, क्षमा=क्रोधनिग्रह, दम=इन्द्रियनिग्रह., अचेलकम्=धर्मोपकरणातिरिक्तवस्त्राभाव, क्षुत्पिपासे प्रसिद्धे, लाघवम्=अल्पोपधित्वम्, शीतोष्णे प्रसिद्धे, काष्ठशय्या=काष्ठफलकशयनम्, भूमिनिषद्या=भूमावुपवेशनम्, तथा-परगृहप्रवेशलब्धापलब्धमानापमाननिन्दनानि, भिक्षार्थं परगृहप्रवेश', तत्रापि लब्धापलब्धौ=लाभालाभौ, मानः=सम्मान', अपमानः=अवमानना, निन्दन=कुत्सितवचन च, तथा-' दशमशकस्पर्शः=दशमशकदशनम्, तथा-नियमः=द्रव्याद्यभिग्रहः,

यदि रजःकण ससक्त हो गये हों तो उन्हें शरीर से नहीं छुडाना चाहिये। कर्ण, नासिका आदि इन्द्रियो में लगे हुए मैल को भी दूर नहीं करना चाहिये। मौनव्रत रखना चाहिये तथा अपने केशो का लौच करना चाहिये। क्षमा-क्रोध का निग्रह करना दम-इन्द्रियों का निग्रह करना चाहिये। अचेलक-धर्मोपकरणो के सिवाय अतिरिक्त वस्त्र नहीं रखना चाहिये क्षुधा और पिपासा कि बाधा को सहना चाहिये। अल्प उपधिरखना चाहिये, शीत और उष्ण जन्य परीषह को सहन करना चाहिये। काष्ठ के फलक पर शयन करना चाहिये। जमीन पर बैठना चाहिये। भिक्षा के निमित्त पर घर जाना चाहिये। भिक्षा का लाभ हो अथवा न हो दोनो अवस्थाओ में समताभाव रखना चाहिये। मान और अपमान मे समवृत्ति रहना चाहिये। कोई अपनी निंदा करता हो तो उसमें अक्षमता नहीं आनी चाहिये। दशमशकों को दशन-रूपबाधा से उद्विग्न नही होना चाहिये। द्रव्यादि का अभिग्रह रूप नियम का, अनशन आदि तपस्याओं का मूलगुणो का और अभ्युत्था

લાગેલા મેલને ઉખેડવો ન જોઈએ મૌનવ્રત રાખવુ જોઈએ તથા પોતાના કેશનો લોચ કરવો જોઈએ ક્ષમા-ક્રોધનો નિગ્રહ કરવો જોઈએ, દમ-ઇન્દ્રિયોનો નિગ્રહ કરવો જોઈએ અચેલક-ધર્મના ઉપકરણો સિવાય વધારાના વસ્ત્રાદિ રાખવા જોઈએ નહી, ભૂખ અને તરસની મુશ્કેલી સહન કરવી જોઈએ, થોડા જ ઉપધિ રાખવા જોઈએ, શીત અને ઉષ્ણુતા જન્ય પરિષહો સહન કરવા જોઈએ લાકડાની પાટ પર સૂવુ જોઈએ, જમીન પર બેસવુ જોઈએ ભિક્ષાને નિમિત્તે પર ઘેર જવુ જોઈએ ભિક્ષાનો લાભ મળે કે ન મળે છતા પણ આ બન્ને પરિસ્થિતિમા સમભાવ રાખવો જોઈએ માન અને અપમાનમા સમવૃત્તિથી રહેવુ જોઈએ કોઈ પોતાની નિંદા કરતુ હોય તો તેથી અક્ષમતા થવી જોઈએ નહી ડાસ, મચ્છરના ડસરૂપ મુશ્કેલીથી ઉદ્વિગ્ન થવુ જોઈએ નહી દ્રવ્યાદિના અભિગ્રહ રૂપ નિયમનુ અનશન આદિ તપસ્યાઓના મૂળ

तपः=अनशनादि गुणा'=मूलगुणा'यः, विनय'=अभ्युत्थानादिः, एषां द्वन्द्वः, एतान्यादौ येषां तैस्तथोक्तैर्योगैरयमात्मा भावितव्यः।

अस्नानाऽदन्तधावनादीनां सहनेन नियमादीनामाचरणेन च सदात्मा सयोजितव्य इत्यर्थ । किमर्थमित्याह–'जहा' यथा–येन कृत्वा ' बंभचेर ' ब्रह्मचर्यं ' थिरतरग ' स्थिरतरकं=सुस्थिर 'होइ' भवति ॥ सू० ४ ॥

नादिरूप विनय का पालन करना चाहिये। ये सब बाते साधु के आचार के अन्तर्हित रहती है। सो वह इन सब बातों से ओतप्रोत हुए तप, नियम और शील से अपनी आत्मा को भावित करता रहे अर्थात् अस्नान, अदन्तधावन आदि जो साधू के मूलगुण हैं उनका वह शास्त्रोक्त विधि के अनुसार पालन करता हुआ और नियमादिकों का आचरण करता हुआ अपनी आत्मा को विशुद्ध करता रहे कि (जहा से बंभचेरं थिरतरगं होइ) जिससे उसका ब्रह्मचर्य सुस्थिर बना रहे।

भावार्थ—ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी सकल सयमी जन अपने आचार विचार को इस प्रकार का स्वच्छ और निर्मल बनावे कि जिससे उनमें अवसन्न पार्श्वस्थ कुशील आदिपना लेशमात्र भी न आने पावे। साधु पद प्राप्त करके भी विषयों मे अनुराग बना रखना स्वजनों मे स्नेह रखना तथा द्वेषी के प्रति द्वेषभावना रखना, आदि परिणति अवसन्न पार्श्वस्थ साधुओ की है। शारीरिक सस्कार मे ही विशेष ध्यान रखना, गीत नृत्य, वादित्र आदि मे चित्त की प्रवृत्ति करना, तप सयम आदि की आराधना सिर्फ लक्ष्य न होना, ये सब ब्रह्मचर्य

ગુણોનુ અને અભ્યુત્થાનાદિરૂપ વિનયનુ પાલન કરવુ જોઇએ આ બધી વાતો સાધુના આચારમા આવી જાય છે તો તે એ બધી વાતોમા ઓતપ્રોત થઇને તપ, નિયમ અને શીલથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતો રહે એટલે કે અસ્નાન, અદન્તધાવન આદિ જે સાધુના મૂળગુણ છે તેમનુ શાસ્ત્રોક્ત વિધિ પ્રમાણે પાલન કરીને નિયમાદિનુ આચરણ કરીને તે પોતાના આત્માને વિશુદ્ધ કરતો રહે " जहा से बंभचेरं थिरतरगं होइ " જેથી તેનુ બ્રહ્મચર્ય સુસ્થિર બનતુ રહે

ભાવાર્થ—બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારી સકલ સયમી જન પોતાના આચાર વિચારને એવા સ્વચ્છ અને નિર્મળ બનાવે કે જેથી તેમનામા અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ આદિ સાધુઓના આચાર વિચારની ઝલક લેશમાત્ર પણ ન આવી શકે સાધુનુ પદ પ્રાપ્ત કરીને પણ વિષયોમા અનુરાગ ચાલુ રાખવો, સ્વજનો પ્રત્યે સ્નેહ અને દુશ્મનો પ્રત્યે દ્વેષ રાખવો આદિ પરિણતિ અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ સાધુઓની છે શારીરિક સસ્કારોનુ જ વધારે ધ્યાન રાખવુ, ગીત, નૃત્ય, વાજિત્ર આદિમા ચિત્તને રોકવુ, તપ, સયમ આદિની આરાધનાને જ લક્ષ્ય

मूलम्—इमं च अबभचेरवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविय आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विउसमणं ॥सू०५॥

टीका—'इमं च' इत्यादि—

'इमं च' इदं च 'पावयणं' प्रवचनम् 'अबभचेरवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए' अब्रह्मचर्यविरमणपरिरक्षणार्थं=चतुर्थमहाव्रतरक्षणनिमित्तं भगवता सुकथितम् आत्महितं, आत्महितकारकम्, आगमिष्यद् भद्रं शुद्धं नैयायिकम् अकुटिलम् अनुत्तरं सर्वदुःखपापानां व्युपशमनम्। एषामर्थः पूर्वं तृतीयसंवरद्वारे मोक्तः ॥सू० ५॥

के घातक हैं, अतः साधु को अपने मूल गुणों की रक्षा करते हुए तप संयम एवं ब्रह्मचर्य से अपनी आत्मा को भावित करते रहना चाहिये। इस तरह से उसका ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़तर हो जाता है ॥ सू० ४ ॥

फिर कहते हैं—'इमं च' इत्यादि०।

टीकार्थ—(इमं च पावयणं) यह प्रवचन (अबभचेर वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए भगवया सुकहियं) अब्रह्मचर्य विरमण की परिरक्षा के निमित्त भगवान् ने कहा है। (अत्तहियं) यह आत्मा का हितकारक है, (पेच्चाभाविय) परलोक में भी शुभफल का दाता है। (आगमेसि-भद्दं) इसी कारण यह भविष्यत् काल में कल्याणप्रद कहा गया है। (सुद्धं) निर्दोष होने से यह शुद्ध है। (नेयाउयं) वीतराग, सर्वज्ञ और हितोपदेशक प्रभु द्वारा भाषित होने से न्यायसंपन्न है। (अकुडिलं)

न गणवु, એ બધુ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ ઘાતક થાય છે તો સાધુએ પોતાના મૂળ ગુણોની રક્ષા કરતા કરતા તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યવ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતા રહેવુ જોઈએ આ પ્રમાણે કરવાથી તેનુ બ્રહ્મચર્યવ્રત વધારે દૃઢ થતુ જાય છે ॥સૂ.૪॥

વળી સૂત્રકાર કહે છે— "इमं च" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"इमं च पावयणं" આ પ્રવચન "अबभचेरविरमणपरिरक्खणट्ठयाए भगवया सुकहियं" આ બ્રહ્મચર્ય વિરમણની પરિરક્ષાને નિમિત્તે ભગવાને કહેલ છે "अत्तहियं" તે આત્માને માટે હિતકારક છે, "पेच्चाभाविय" પરલોકમા પણ શુભ ફળ દેનારૂ છે "आगमेसिभद्दं" તે કારણે તે ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણ દાયક બતાવવમા આવ્યુ છે "सुद्धं" નિર્દોષ હોવાથી તે શુદ્ધ છે "नेयाउयं" વીતરાગ, સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત હોવાથી ન્યાય યુક્ત છે, "अकुडिलं" ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી અકુટિલ છે,

अथ चतुर्थव्रतस्य पञ्चभावनाः प्रतिपादयन् तत्र पूर्वमसंसक्तवासवसति नाम्नीं प्रथमां भावनामाह—' एयस्स ' इत्यादि—

मूलम्—एयस्स इमा पंचभावणा चउत्थवयस्स हुंति अबंभचेरवेरमणपरिरक्खणट्टयाए । पढमं सयणासणघरदुवार अंगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुकपसाहण गण्हाणिकावगासा अवगासा जे य वेसियाणं अत्थतिट्ठंति य जत्थ इत्थियाओ अभिक्खणं मोहदोसरइरागवड्ढणाओ कहिंति य कहाओ बहुविहाओ ते हु वज्जणिज्जा इत्थिससत्तसंकिलिट्ठा । अण्णे वि य एवमाई य अवगासा ते हु वज्जणिज्जा, जत्थ मणोविब्भमो वा भंगो वा भंसणा वा अट्टं रुद्दं च होज्जा झाणं तं तं च वज्जेज्जवज्जाभीरू अणायतणअंतपंतवासी । एवमसंसत्तवासवसहीसमिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—' एयस्स ' एतस्य ' चउत्थवयस्स ' चतुर्थव्रतस्य ब्रह्मचर्याभिधेयस्य

ऋजुभाव का जनक होने से अकुटिल है। (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ट होनेसे अनुत्तर है। तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमणं) समस्त दुःखोंके जनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का यह उपशमकारक है ॥सू०५ ॥

अब सूत्रकार इस चतुर्थ महाव्रत की पांच भावनाओं को प्रतिपादन करने के अभिप्राय से सर्वप्रथम असंसक्तवासवसति नाम की पहिली भावना को प्रकट करते हैं—' एयस्स ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एयस्स चउत्थवयस्स इमा पंच भावणा हुंति) इस

"अणुत्तर" सर्व श्रेष्ठ होवाथी अनुत्तर छे, तथा 'सव्वदुक्खपावाण विउसमणं' समस्त दु:खोना जनक ज्ञानावरणीय आदि आठ प्रकारना कर्मोनु ते उपशम करनार छे सू ५

हवे सूत्रकार आ चोथा महा व्रतनी पांच भावनाओनु प्रतिपादन करवाने माटे सौथी पहेला "असंसक्तवासवसति" नामनी पहेली भावनानु स्पष्टीकरण करे छे- "एयस्स" इत्यादि—

टीकार्थ—"एयस्स चउत्थवयस्स इमा पंच भावणा हुंति" आ ब्रह्मचर्य

इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्चभावनाः, 'अबभचेरवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए' अब्रह्मचर्यविरमणपरिरक्षणार्थं=चतुर्थव्रतरक्षणनिमित्त, 'हुति' भवन्ति। तत्र-'पढम' प्रथमा=स्त्रीपशुपण्डकससक्ताश्रयवर्जनलक्षणां भावनामाह-'सयणासणघरदुवारअगण आगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुगपसाहणण्हाणिकावगासा' शयनासनगृहद्वाराङ्गनाकाशगवाक्षशालाऽभिलोकनपश्चाद् वास्तुकप्रसाधनकस्नानिकावकाशाः तत्र-शयन=शय्या, आसन-प्रसिद्धम्, गृह-गेहम्, द्वारम्=गृहद्वारम्, अङ्गणं=गृहाङ्गणम्, आकाशः=अनावृत स्थानम्, गवाक्षो=वातायनम्, शालाः = भाण्डशालादयः, अभिलोकनम्=अभिलोक्यते दूरस्थित वस्तु यदास्थाय तद् अभिलोकनम्=उन्नत स्थानम्, तथा-पश्चाद्-वास्तुक=पृष्ठभागवर्त्तिगृह, तथा-प्रसाधनकस्य मण्डनस्य स्नानिकायाः=स्नानक्रियायाश्च येऽवकाशाः=गृहाः, एषां द्वन्द्वः, एते स्त्रीससक्तेन सक्लिष्टा वर्जनीयाः। तथा-'जे य' ये च 'अवकासा' अवकाशा

ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थव्रत की ये वक्ष्यमाण पाच भावनाएँ हैं। इनसे (अबभचेरविरमणपरिरक्खणट्ठयाए) अब्रह्मचर्य विरमण रूप ब्रह्मचर्यव्रत की अच्छी तरह से रक्षा होती है। (पढम) इनमें स्त्री, पशु पडक से ससक्त वसति का वर्जन करने रूप प्रथम भावना है। वह इस प्रकार है— (सयणासणघरदुवारअगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुग) शयन-शय्या, आसन, गृह द्वार, आगन, खुला, हुआ स्थान, झरोखा, शाला, अभिलोकन-वह स्थान कि जिसके सहारे से दूर की वस्तु देखी जा सके ऐसी ऊँची जगह पश्चाद् वास्तुक-पीछे के भाग में रहा हुआ घर, तथा (पसाहणग-ण्हाणीकावासा) मडन घर और नहाने के घर, ये सब यदि स्त्रियों से ससक्त हों तो साधु का कर्त्तव्य है कि वह इनका परित्याग करे। तथा-(जे य अव-

નામના ચોથા વ્રતની આ પ્રમાણે પાચ ભાવનાઓ છે તેમનાથી "अबभचेर विरमणपरिरक्खणट्ठयाए" આ બ્રહ્મચર્ય વિરમણ રૂપ બ્રહ્મચર્ય વ્રતની સારી રીતે રક્ષા થાય છે "पढम" તેમા સ્ત્રી, પશુ, પડકના સસર્ગથી યુક્ત વસવાટનો ત્યાગ કરવા રૂપ પહેલી ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે-"सयणासणघरदुवारअगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुग" શયન--શય્યા, આસન, ગૃહ, દ્વાર, આગણુ, ખુલ્લી જગ્યા, ઝરુખો, શાલા, અભિલોકન-એવી ઉચી જગ્યા કે જ્યાથી દૂરની વસ્તુઓ દેખી શકાય, પશ્ચાદ્વાસ્તુક-પાછળના ભાગમા આવેલુ ઘર, તથા "पसाहणग-ण्हाणिकावासा" મડન ઘર અને નહાવાના ઘર, એ બધા સ્થાનો જો સ્ત્રીઓથી યુક્ત હોય તો તેમનો પરિત્યાગ કરવો તે સાધુનુ કર્તવ્ય છે તથા "जे य अवगासा" જે સ્થાન

गृहा =स्थानानीत्यर्थ , 'वेसियाणं' वेश्यानाम् 'अट्ठ' अर्थ=निमित्त 'तिट्ठंति' तिष्ठन्ति=सन्ति, तथा—'जत्थ' यत्र 'इत्थियाओ' स्त्रियो हि 'अभिक्खण' अभीक्ष्ण=मुहुर्मुहु 'मोहदोसरइरागवड्ढणाओ' मोहदोषरतिरागवर्धनाः=मोहदोष रइरागान् वर्द्धयन्ति यास्ताः=मोहादिवृद्धिकारिण्य इत्यर्थः, 'बहुविहाओ' बहु-विधाः–जातिकुलरूपनेपथ्यविषयाः 'कहाओ' कथाः 'कहिंति' कथयन्ति, 'ते खलु 'इत्थी ससत्तसकिलिट्ठा' स्त्रीससक्तसंक्लिष्टाः = स्त्रीसंसर्गयुक्ता गृहाः, 'वज्जणिज्जा' वर्जनीया भवन्ति । तथा-'अण्णे वि य' अन्येऽपि च 'एवमाई' एवमादय –एव मकारा येऽवकाशा भवन्ति, 'ते हु' ते खलु 'वज्जणिज्जा' वर्जनीया भवन्ति । किं बहुना-'जत्थ' यत्र यत्र-उत्तरत्र 'त त' इति वीप्सा-प्रयोगादत्रापि वीप्सा बोद्धव्या, ज्ञायते, 'मणो विब्भमो वा' मनो विभ्रमो वा =शृङ्गाररससमुत्पन्न चित्तस्याऽस्थिरत्वम् , 'भगो वा' ब्रह्मचर्यस्य सर्वभङ्गः,

---

गासा) जो स्थान (वेसियाण अट्ठ–तिट्ठंति) वेश्याओं के निमित्त बने हुए हों तथा (जत्थ) जिन स्थानों पर बैठ कर (इत्थियाओ) स्त्रिया (अभिक्खण) वार वार (मोहदोसरइराग वड्ढणाओ) मोह दोष रति और रागको वढानेवाली (बहुविहाओ) विविध प्रकारकी (कहाओ) कथाओंको (कहेंति) कहती हों, (ते हु) वे स्थान (इत्थी ससत्त सकिलिट्ठा) स्त्रीयोंसे ससक्त होनेके कारण साधुको उनका परित्याग कर देना चाहिये । तथा (अण्णे वि) और भी कोइ (एवमाई य अवगासा) ऐसे स्थान हों तो (ते हु) उनका भी साधु को (वज्जणिज्जा) परित्याग कर देना चाहिये । अधिक और क्या कहा जाय (जत्थ जत्थ) जिस २ स्थान पर साधु का (मणोविब्भमो) मन विभ्रम युक्त बन जावे (वा) अथवा (भगो) उसके ब्रह्मचर्य व्रत का भग होने की सभावना (वा) अथवा

" वेसियाणअट्ठ–तिट्ठति " વેશ્યાઓને નિમિત્તે બનેલા હોય, તથા " जत्थ " જે સ્થાનો પર બેસીને " इत्थियाओ " સ્ત્રીઓ " अभिक्खण " વાર વાર " मोहदोसरइरागवड्ढणाओ " મોહ, દોષ, રતિ અને રાગને વધારનારી " बहुविहाओ " વિવિધ પ્રકારની " कहाओ " કથાઓ " कहेंति " કહેતી હોય " ते हु " તે સ્થાનો " इत्थी ससत्त सकिलिट्ठा " સ્ત્રીઓથી યુક્ત હોવાને કારણે સાધુઓએ તેમનો પરિત્યાગ કરવો જોઈએ તથા " अण्णे वि " એવા બીજા પણ કોઈ ' एव माईय अवगासा " સ્થાન હોય તો " ते हु " તેમનો પણ સાધુએ " वज्जणिज्जा " પરિત્યાગ કરી દેવો જોઈએ વધુ શું કહું ! " जत्थ जत्थ " જે જે સ્થાન પર સાધુનુ " मणोविब्भमो ' મન વિભ્રમયુક્ત બની જાય " वा " અથવા ' भगो " તેના બ્રહ્મચર્ય વ્રતના ભંગની શકયતા

' भसणा वा ' भ्रशना वा=ब्रह्मचर्यस्य देशतो भङ्गो वा, तथा–' अट्ट ' आर्त्तम्= इष्ट संयोगाभिलापरूपम्, ' रुद्द ' रौद्र तदुपायभूतहिंसाऽनृतादत्तादानग्रहणानुबन्धरूपम्, ' झाण ' ध्यान ' होज्जा ' भवेत् ' त त च ' तत्त्च ' वज्जेज्ज ' वर्जयेत्, कः ? इत्याह–य ' वज्जभीरुः ' अवद्यभीरुः=सावद्यवसतिवासजन्य-पापभीरुः, अत एव–' अणायतणअंतपतवासी ' अनायतनान्तप्रान्तवासी न आयतन स्त्रीपशुपण्डकानामित्यनायतनम्, स्त्रीपशुपण्डकरहितमित्यर्थः, अन्तम्=इन्द्रियाननुकूल, पर्णकुटयादि, प्रान्त=तदेव प्रकृष्ट श्मशान-शून्यगृहवृक्षमूलादिक वा स्थान तत्र वस्तु शील यस्यासौ–निर्दोष वसतिवासीत्यर्थः, स तादृश स्थान वर्जयेदिति भाव । उपसहरन्नाह—' एव ' एवम्=अनेन प्रकारेण ' असंसत्तवासवसइसमिइ-जोगेण ' असंसक्तवासवसतिसमितियोगेन=असंसक्तः=स्त्रीपशुपण्डकसंसर्गरहितो यो

(भसणा) एक देश से वह भग होने की सभावना हो तथा (अट्ट रुद्द च झाण होज्जा) इष्ट सयोगाभिलापरूप आर्त्तध्यान, हिंसा, झूठ, चोरी आदि मे आनद मानने रूप रौद्रध्यान, उसके चित्त में जग जाने की संभावना हो, तो साधु को (त त च) उस स्थान का (वज्जेज्ज) परित्याग कर देना चाहिये। क्यों कि साधु (अवज्जभीरू) सावद्य-वसति वास जन्य पाप से सदा भीरु–डरने वाला होता है। (अणाय-तणअंतपतवासी) और वह ऐसे ही निर्दोष स्थान में ठहरता है कि जहा स्त्री, पशु, पडक नहीं रहते हो, तथा जो अपनी इन्द्रियों के अनुकूल न हो, किन्तु श्मशान, शून्यगृह, वृक्षमूल आदिरूप हो। इसलिये जब सिद्धात में निर्दोष वसति मे ठहरने की आज्ञा प्रभु की हैं तो यह बातनिश्चित है कि वह सदोषवसति मे न ठहरे। (एव असंसत्तवास-

" वा " અથવા " भसणा " એક દેશથી તેમા ભગ થવાની સભવિતતા હોય તથા " अट्ट रुद्द च झाण होज्जा " ઇષ્ટ સયોગાભિલાષા રૂપ આર્ત્તધ્યાન, હિંસા, જૂઠ, ચોરી આદિમા આનદ માનવારૂપ રૌદ્રધ્યાન, તેના ચિત્તમા ઉત્પન્ન થવાની શકયતા હોય તો સાધુએ " त त च " તે તે સ્થાનનો " वज्जेज्ज " પરિત્યાગ કરી દેવો જોઇએ કારણ કે સાધુ ' अवज्ज-भीरू " સાવદ્ય વસતિ વાસ જન્ય પાપોથી સદા ડરનાર હોય છે " अणायतण अतपतवासी " અને તે એવા નિર્દોષ સ્થાનમા રહે છે કે જ્યા સ્ત્રી, પશુ, પડક રહેતા હોય નહી' તથા જે પોતાની ઇન્દ્રિયોને અનુકૂળ ન હોય, પણ સ્મશાન, ખાલી મકાન, વૃક્ષમૂળ આદિ રૂપે હોય તેથી નિર્દોષ વસતિ (વસવાટ) મા રહેવાની સિદ્ધાતમા પ્રભુએ આજ્ઞા આપેલી છે તો એ વાત નિશ્ચય જ છે કે તેમણે સદોષ વસતિમા રહેવુ જોઈએ નહી " एव असंसत्तवासवसतिसमिइजोगेण "

वास.=स्थानम् तत्र या वसतिः=निवासस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन 'भाविओ' भावितः=वासितः 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवः 'आरयमणा' आरतमना-आ=समन्तात् रत=ब्रह्मचर्ये समक्त मनो यस्य स तथा, पुन'-'विरयगामधम्मे' विरतग्रामधर्मः=निवृत्तो ग्रामधर्मात्=मैथुनाद् य स तथा, अत एव-'जिइंदिए' जितेन्द्रिय =वशीकृतेन्द्रियः, 'बभचेरगुत्ते' ब्रह्मचर्यगुप्तः=नवविध ब्रह्मचर्यमहितः दशविधब्रह्मचर्य-समाधिस्थानयुक्तो वा 'भवइ' भवति ॥सू० ६ ॥

वसति समिइजोगेण) इस प्रकार स्त्री, पशु, पडक के समर्ग से रहित स्थान में ठहरने रूप समिति के योग से (भाविओ अतरप्पा) भावित अतरात्मा-मुनि (आरयमणा) सर्व प्रकार से ब्रह्मचर्य व्रत में ससक्त मन वाला हो जाता हैं और--(विरयगामधम्मो) ग्रामधर्म-मैथुन से विरत हो जाता है। अतएव-वह (जिइदिए वभचेरगुत्तेभवइ) जितेन्द्रिय वनकर नवविधब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा दशविध ब्रह्मचर्य समाधी स्थान से युक्त वन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत को स्थिर रखने वाली पाच भावनाओं में से प्रथम स्त्रीपशु पडक सेवित शयनासन वर्जन रूप भावना का स्वरूप स्पष्ट किया है। साधुजन को ऐसी ही वसति-स्थान में निवास करने को प्रभु की आज्ञा है कि जो निर्दोष हो। स्त्री पशु पडक आदि के ससर्ग से रहित हो। क्यो कि ऐसे स्थान में निवास करने से साधु के ब्रह्मचर्य व्रत का देश से भग अथवा सर्वथा भग हो सकता है। तथा जिस स्थान पर बैठकर स्त्रिया विविध

આ રીતે સ્ત્રી, પશુ, અને પડકના સસર્ગથી રહિત સ્થાનમા રહેવા રૂપ સમિતિના યોગથી "भाविओ अतरप्पा" ભાવિત અતરાત્મા-મુનિ "आरयमणा" દરેક પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા દૃઢ મનવાળા થઈ જાય છે અને "विरयगामधम्मो" ગ્રામધર્મ-મૈથુનથી મુક્ત થઇ જાય છે તેથી તે "जिइदियवभचेरगुत्ते भवइ" જિતેન્દ્રિય થઇને નવ વિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યસમાધિ સ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતને સ્થિર રાખવાની પાચ ભાવનાઓમાથી સૌથી પહેલી સ્ત્રી, પશુ, પડક સેવિત શયનાસન વર્જનરૂપ ભાવનાનુ સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કર્યું છે સાધુજનોને એવા સ્થાનમા વસવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે કે જે નિર્દોષ હોય, સ્ત્રી, પશુ, પડક આદિના સસર્ગથી રહિત હોય કારણ કે એવા સ્થાનમા વસવાથી સાધુના બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો અશત ભગ થાય છે અથવા સર્વથા ભગ થઇ શકે છે. તથા જે સ્થાને બેસીને

द्वितीया स्त्रीकथाविरतिनाम्नीं भावनामाह–' बीय ' इत्यादि–

मूलम्—बीय नारीजणस्स मज्झे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विव्वोकविलाससपउत्ता हास सिंगार लोइयकहव्व मोहजणणी न आवाहवरकहावि य इत्थीणं वा सुभगदुब्भगकहाचउसट्ठि महिलागुणाणं च न देसजातिकुलरूवणामनेवत्थपरिजणकहाओ इत्थियाण अण्णावि य एवमाइयाओ कहाओ सिंगारकलुणाओ तवसंजमबंभचेरघाओवघाइयाओ अणुचरमाणेण बंभचेर न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चितियव्वा। एवं इत्थीकहा विरइजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जितिदिए बंभचेरगुत्ते ॥सू०७॥

प्रकार की शृंगार आदि वर्धक कथाएँ किया करती हों, जो स्थान वेश्याओं के लिये निर्मित हुए हों, जो मनःक्षोभ कारक हो, आर्त्तरौद्रध्यान के प्रवर्त्तक हों, ऐसे भी स्थानों में साधु को नहीं ठहरना चाहिये, किन्तु जो स्त्री आदि के संसर्ग से रहित हों, इन्द्रियों में क्षोभ कारक न हो ऐसे श्मशान, शून्य गृह आदि स्थानों मे ही साधु को निवास करना चाहिये। इस प्रकार इस असंसक्तवासवसति नामक प्रथम भावना से भावित हुआ जीव ब्रह्मचर्य व्रत की सर्वप्रकार से रक्षा करता हुआ मैथुन से विरक्त होकर उसकी नौ कोटि से पूर्णपालना करने में सावधान रहता है ॥ सू०६ ॥

સ્ત્રીઓ વિવિધ પ્રકારની શૃંગાર આદિ વર્ધક કથાઓ કહેતી હોય, જે સ્થાન વેશ્યાઓ માટે જ બનાવ્યા હોય, જે મનમા ક્ષોભ કરનાર હોય, આર્ત રૌદ્ર ધ્યાન તરફ દોરનાર હોય, એવા સ્થાનોમા પણ સાધુઓએ વસવુ જોઈએ નહી, પણ જે સ્થાન સ્ત્રી આદિના સંસર્ગથી રહિત હોય, ઇન્દ્રિયોમા ક્ષોભ કરનાર ન હોય એવા સ્મશાન, ખાલી ઘર આદિ સ્થાનોમા સાધુએ નિવાસ કરવો જોઈએ આ પ્રકારે આ "અસંસક્ત વાસ વસતી" નામની ભાવનાથી ભાવિત થયેલ જીવ બ્રહ્મચર્ય વ્રતની દરેક રીતે રક્ષા કરતો મૈથુનથી રહિત બનીને તેનુ નવ પ્રકારે પાલન કરવામા સાવધાન રહે છે ॥ સૂ ૬ ॥

टीका—'बीय' द्वितीया स्त्रीकथाविरतिलक्षणा भावनामाह—

'नारीजणस्स' नारीजनस्य=स्त्रीपर्षदो 'मज्झे' मध्येऽन्तराले न=नैव 'कहेयव्वा' कथयितव्या 'कहा' कथा=वाक्यप्रबन्धरूपा। कथामेव विशिनष्टि-'विचित्ता' विचित्रा=विचित्रवृत्तान्तसमन्विता, तथा-'विव्वोकविलाससंपउत्ता' 'विव्वोकविलाससम्प्रयुक्ता-' विव्वोकः=अत्यभिमानवशादिष्टेऽपि वस्तुन्यनादरकरणम्, तदुक्तम्-' विव्वोकस्त्वतिगर्वेण वस्तुनीष्टेऽप्यनादरः, इति। विलासः= स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणा चैव यो विशेषः स;।तदुक्तम्-" स्थानासनगमनाना हस्तभ्रूनेत्रकर्मणा चैव।

उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलास' स्यात्॥" इति। विव्वोकवि-

---

अब सूत्रकार स्त्रीकथाविरति नामकी द्वितीय भावना को प्रदर्शित करते हैं—'बीय नारीजणस्स' इत्यादि०।

टीकार्थ--(बीय दूसरी स्त्रीकथाविरति नामकी भावना इस प्रकार से है- (नारीजणस्स मज्झे) स्त्रियों के बीच में बैठकर साधु को (कहा) कथाएँ कि जो (विचित्ता) विचित्र वृत्तान्तो से युक्त हों (विव्वोकविलाससपउत्ता) इष्ट वस्तु में भी अनादर कराने वाली हों तथा विलासभाव बढानेवाली हों (न कहेयव्वा) नहीं करना चाहिये। अति अभिमान के वश से इष्ट वस्तु में भी अनादर करना इसका नाम विव्वोक है, तथा स्थान, आसन, गमन में एवं हस्त, भ्रू, नेत्र इन की क्रियाओं मे विशेषता आना इसका नाम विलास है। ये दोनों प्रकार की विशेष चेष्टाएँ स्त्रियों मे शृंगारभावजनित हुआ करती हैं। विव्वोक और विलास इन दोनों से जो कथाएँ युक्त हो वे साधु को

હવે સૂત્રકાર "स्त्रीकथाविरति" નામની બીજી ભાવના બતાવે છે- "बीय नारी जणस्स" ઇત્યદિ—

ટીકાર્થ— 'बीय" સ્ત્રી કથા નામની ભાવના આ પ્રમાણે છે-"नारीजणस्स मज्झे" સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને સાધુએ એવી "कहा" કથાઓ કે જે "विचित्ता" વિચિત્ર વર્ણનો વાળી હોય "विव्वोकविलाससपउत्ता" ઇષ્ટવસ્તુમા પણ અનાદર કરાવનારી હોય તથા વિલાસભાવ વધાવનારી હોય "न कहेयव्वा' તે કહેવી જોઇએ નહી અતિ અભિમાનને વશ થઈ ને ઇષ્ટ વસ્તુનો પણ અનાદર કરવો તેને વિવ્વોક કહે છે, તથા સ્થાન, આસન, ગમનમા અને, હાથ, ભ્રૂ નેત્ર વગેરેની ક્રિયામા વિશેષતા આવે તે વિલાસ ગણાય છે એ બન્ને પ્રકારની વિશેષ ચેષ્ટાઓથી સ્ત્રીઓમા શૃંગાર ભાવ પેદા થાય છે વિવ્વોક અને વિલાસ એ બન્નેથી

लासी=स्त्रीणां श्रृङ्गारभावजनितो चेष्टाविशेषो, ताभ्यां समयुक्ताः,तथा-'हाससिंगारलोइयकहा' तत्र हासश्रृङ्गारलौकिककथा=हास्यः=हास्यस्थायिभावो रसविशेषः, श्रृङ्गारः=रतिस्थायिभावोरसविशेष, एतत्प्रधाना या लौकिकीकथा सा तथा, 'मोहजणणी' मोहजननी=मोहोदीरिका कथा न वक्तव्या। तथा-'आवाहविवाहवरकहाविय' आवाहविवाहवरकथापि च=आवाहः=अभिनवपरिणीतस्य वधूवरस्य आनयनम्, विवाहः=पाणिग्रहणम्, तत्प्रधाना या वरकथा=परिणेतृकथा साऽपि च न वक्तव्या। तथा-'इत्थीण' स्त्रीणा 'सुभगदुब्भगकहा' सुभगदुर्भगकथा="इदृग्नेत्रनासिकाकपालादियुक्ता च स्त्री दुर्भगा भवति" इत्यादिरूपा कथा वा न

स्त्रियों के बीच बैठकर कभी नहीं कहना चाहिये, क्यों कि ऐसी कथाओं के कहने में रागभाव की संयुक्तता साधु के जानी जाती है। इससे उसके ब्रह्मचर्यव्रत में दोष आता है। इसी तरह (हाससिंगारलोइयकहा) जो लौकिक कथा हास्य और श्रृंगाररस प्रधान हो, तथा (मोहजणणी) मोह की जनक हो वह भी नहीं कहना चाहिये। तथा (आवाहविवाहवरकहाविय) जो कथा नव दंपतियों के आगमन से संबंध रखती हों, अर्थात्-जिस कथा का विषय नव परिणित वधू और वर के संबंध को लिये हुए तथा जिस कथा में विवाह संबंधी चर्चा हो, ऐसी आवाह और विवाह प्रधान वाली वरकथा भी साधु को नहीं कहनी चाहिये। इसी तरह (इत्थीण वा सुभगदुब्भगकहा) स्त्रियों संबंधी सुभग दुर्भग कथा भी नहीं कहना चाहिये, अर्थात्-'इस प्रकारके नेत्र, नासिका और कपाल आदिवाली स्त्री सुभग होती है और इस प्रकारके नेत्र नासिका,

युक्त होय तेवी કથાઓ સાધુએ સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને કદી પણ કહેવી જોઈએ નહીં, કારણ કે એવી કથાઓ કહેવામાં રાગ ભાવની સંયુક્તતા આવી જાય છે તેથી બ્રહ્મચર્ય વ્રતમાં દોષ આવી જાય છે એ જ રીતે "हाससिंगारलोइयकहा" જે લૌકિક કથા હાસ્ય અને શ્રૃંગાર રસ પ્રધાન હોય, તથા "मोहजणणी" મોહ પેદા કરનાર હોય, તે પણ કહેવી જોઈએ નહીં તથા "आवाहविवाहवरकहाविय" જે કથા નવ દંપતિઓના આગમન સાથે સંબંધ ધરાવતી હોય, એટલે કે જે કથાનો વિષય નવ પરિણિત વધૂ અને વરના સંબંધમાં હોય, તથા જે કથામાં વિવાહ સંબંધી ચર્ચા આવતી હોય, એવી આવાહ અને વિવાહ પ્રધાન વર કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં એ જ પ્રમાણે "इत्थीण वा सुभगदुब्भगकहा" સ્ત્રીઓ સંબંધી સુભગ, વિરૂપ કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ નહીં, એટલે કે "આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને કપાળવાળી સ્ત્રી સુભગ હોય છે અને આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને

वक्तव्या। तथा-'चउसट्ठीमहिलागुणा' चतुष्षष्टिर्महिलागुणा =आलिङ्गनादीनामष्टानां प्रत्येकस्याष्टविधत्वेन ये चतुष्षष्टिसंख्यका महिलागुणास्तेऽपि च न वक्तव्याः। तथा-' देसजाइकुलरूवणामनेवत्थपरिजणकहाओ ' देशजातिकुलरूपनामनेपथ्यपरिजनकथाः तत्र-देशकथा=लाटादिदेशसम्बन्धिस्त्रीणां वर्णनम्, यथा-' लाटयः

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, इस प्रकार ये स्त्रीयों की सुभगता और दुर्भगता से संबंध रखने वाली कथा भी साधु को नहीं कहना चाहिये। तथा (चउसट्ठि महिलागुणाण च) जिस कथा में स्त्रियों के चौसठ गुणों से संबंध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को लेकरजो कथा चलती हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये। आलिङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, इस तरह ८×८=६४ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये है। सो ये चौसठ ६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये। तथा (देसजाति कुलरूवणामनेवत्थपरिजणकहाओ इत्थियाण अण्णावि य एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ संजमबंभचेरघाओवघाइयाओ बंभचेरं अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चिंतियव्वा) देश, जाति, कुल, रूप, नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे संबंध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी नही कहनी चाहिये-लाटादि-देश संबंधी स्त्रियों का वर्णन जिस कथामे होता है वह देश कथा है, जैसे-लाट देश की स्त्रिया बहुत ही कोमल-

કપોળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે" આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા સાથે સંબંધ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં "चउसट्ठि महिला गुणाण च" જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણો સાથે સંબંધ હોય એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતી હોય તે પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાંનો પ્રત્યેક ગુણ આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે ૮×૮=૬૪ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ બતાવ્યા છે તો તે ચોસઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામાં ચર્ચવાને યોગ્ય નથી તથા "देसजातिकुलरूवणाम-नेवत्थ-परिजण-कहाओ इत्थियाण अण्णा वि य एवमाइयाओ कहाओ सिंगारकलुणाओ संजमबंभचेरघाओवघाइयाओ बंभचेरं अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा नचिंतियव्वा" દેશ, જાતિ કુળ, રૂપ, નામ, નેપથ્ય, પરિજન, વગેરે સાથે સંબંધ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના વર્ણન જે કથામાં હોય તે દેશ કથા છે, જેમકે "લાટ દેશની સ્ત્રીઓ બહુ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

कोमलवचनाः इति निपुणा या भवन्ती " इत्यादि । जातिकथा=ब्राह्मणादिजाति सम्बन्धिकथा, यथा–" धिग्ब्राह्मणीर्धवाभावे या जीवन्तिमृता इव । धन्यामन्ये शूद्रीः पतिलक्षेऽप्यनिन्दिताः ॥

कुलकथा, यथा–अहो चौलुक्यपुत्रीणा साहस जगतोऽधिकम् ।
पत्या मृते विशन्त्यग्निं याः प्रेमरहिता अपि" इति । रूपकथा–
यथा–चन्द्रवक्त्रा सरोजाक्षी, सद्गीः पीनघनस्तनी ।
किंलाटीनो मता सा स्या, देवानामपि दुर्लभा ॥ १ ॥ " इति ।

वचनवाली और निपुणता युक्त हुआ करती है ब्राह्मण आदि जाति से संबध रखनेवाली स्त्रियो की कथा कहना इसका नाम जाति कथा है । जैसे पति के अभाव मे जीवन व्यतीत करने वाली ब्राह्मणियों को धिक्कार है–क्यों कि ये जीती हुई भी एक तरह से मरी हुई जैसी हैं । और वे शूद्र जाति की स्त्रिया धन्य है जो लाख पतिवाली होने पर भी निन्दित नहीं होती है । कुल से संबध रखनेवाली स्त्री संबधी कथा कुल कथा है–जैसे–अहो ! चौलुक्यवश की स्त्रियो का साहस जगत मे सबसे अधिक होता है–क्यों कि ये पति के मर जाने पर प्रेम से विहीन होती हुई जीती २ अग्नि में जल जाती हैं । स्त्रियों के रूप से संबध रखने वाली कथा रूप कथा है–जैसे लाटदेश की स्त्रिया चन्द्रमा के जैसी मुखवाली होती हैं कमल जैसी आंखो वाली होती हैं वाणी मे इनके मिठास रहता है, उनके दोनो कूच पुष्ट और स्थूल होते हैं ।भला ऐसी सुन्दर स्त्री किसको नहीं अच्छी लगेगी ? ऐसी स्त्री तो देवो को भी दुर्लभ हुआ करती

છે " બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સાથે સબધ રાખનાર સ્ત્રિઓની કથા કહેવી તે જાતિ કથા કહેવાય છે ' જેમ કે ' પતિ વિના જીવન વ્યતીત કરનારબ્રાહ્મણીઓને ધિક્કાર છે, કારણ કે તેઓ જીવતી હોવા છતા પણ એક રીતે તો મૃત જેવીજ છે " " તે શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રિઓને ધન્ય છે કે જે લાખપતિ હોવા છતા પણ નિંદિત થતાં નથી " આ બીજી જાતિ કથાના દૃષ્ટાતો છે જે કુળ સાથે સબધ રાખનારી સ્ત્રી વિષેની કથાને કુળ કથા કહે છે જેમ કે " અહો ! ચાલુક્ય વંશની સ્ત્રીઓના સાહસ જગતમા સૌથી વધારે હોય છે, કારણ કે પતિનુ મૃત્યુ તથા તે પ્રેમભગ્ન થવાથી જીવતી અગ્નિમા પ્રવેશ કરી બળી મરે છે " સ્ત્રીઓના રૂપ સાથે સબધ રાખનારી કથાઓને રૂપકથા કહે છે જેમ કે લાટ દેશની સ્ત્રિઓ ચન્દ્રમુખી હોય છે, કમળનયની હોય છે, તેમની વાણીમા મીઠાશ હોય છે, તેમના બન્ને કુચ પુષ્ટ અને સ્થૂળ હોય છે એવી સુદર સ્ત્રી કોને ન ગમે ? એવી સ્ત્રીઓ તો દેવોને પણ

वक्तव्या। तथा-'चउसट्ठीमहिलागुणा' चतुष्षष्टिमहिलागुणा =आलिङ्गनादीनामष्टानां प्रत्येकस्याष्टविधत्वेन ये चतुष्षष्टिसंख्यका महिलागुणास्तेऽपि च न वक्तव्याः। तथा-' देसजाइकुलरूवणामनेवत्थपरिजणकहाओ ' देशजातिकुलरूपनामनेपथ्य परिजनकथाः तत्र-देशकथा=लाटादिदेशसम्बन्धिस्त्रीणां वर्णनम् , यथा-' लाटयः

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, इस प्रकार से स्त्रियों की सुभगता और दुर्भगता से संबंध रखने वाली कथा भी साधु को नहीं कहना चाहिये । तथा (चउसट्ठि महिलागुणाण च) जिस कथा में स्त्रियों के चौसठ गुणों से संबंध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को लेकरजो कथा चलती हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये। आलिङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, इस तरह ८×८=६४ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये है। सो ये चौसठ ६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये। तथा (देसजाति कुलरूवणामनेवत्थपरिजणकहाओ इत्थियाण अण्णावि य एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ संजमबंभचेर घाओवघाइयाओ बंभचेर अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चिंतियव्वा) देश,जाति, कुल, रूप,नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे संबंध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी नहीं कहनी चाहिये-लाटादि-देश संबंधी स्त्रियों का वर्णन जिस कथामे होता है वह देश कथा है, जैसे-लाट देश की स्त्रियां बहुत ही कोमल-

કપોળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે ” આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા સાથે સંબંધ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં "चउसट्ठि महिला गुणाण च ” જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણો સાથે સંબંધ હોય એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતી હોય તે પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાનો પ્રત્યેક ગુણ આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે ૮×૮=૬૪ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ બતાવ્યા છે તો તે ચોસઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામા ચર્ચવાને યોગ્ય નથી તથા "देसजातिकुलरूवणाम-नेवत्थ-परिजण-कहाओ इत्थियाण अण्णा वि य एवमाइयाओ कहाओ सिंगारकलुणाओ संजमबंभचेरघाओवघाइयाओ बंभचेरअणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा नचिंतियव्वा" દેશ,જાતિ કુળ,રૂપ,નામ, નેપથ્ય, પરિજન, વગેરે સાથે સંબંધ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના વર્ણન જે કથામા હોય તે દેશ કથા છે, જેમકે " લાટ દેશની સ્ત્રીઓ બહુ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

कोमलवचनाः इति निपुणा ना भवन्तो " त्यादि । जातिकथा=ब्राह्मणादिजाति सम्बन्धिकथा, यथा–" धिग् ब्राह्मणीर्धवाभावे या जीवन्तिमृता इव । धन्यामन्ये शूद्रीः पतिलक्षेऽप्यनिन्दिताः ॥

कुलकथा, यथा–अहो चौलुक्यपुत्रीणा साहस जगतोऽधिकम् ।
पत्या मृते विशन्त्यग्नि याः प्रेमरहिता अपि" इति । रूपकथा–
यथा–चन्द्रवक्त्रा सरोजाक्षी, सद्गीः पीनघनस्तनी ।
किंलाटीनो मता सा स्या, देवानामपि दुर्लभा ॥ १ ॥ " इति ।

वचनवाली और निपुणता युक्त हुआ करती है ब्राह्मण आदि जाति से सबध रखनेवाली स्त्रियों की कथा कहना इसका नाम जाति कथा है । जैसे पति के अभाव मे जीवन व्यतीत करने वाली ब्राह्मणियों को धिक्कार है–क्यों कि ये जीती हुई भी एक तरह से मरी हुई जैसी है । और वे शूद्र जाति की स्त्रिया धन्य है जो लाख पतिवाली होने पर भी निन्दित नहीं होती है । कुल से सबध रखनेवाली स्त्री सबधी कथा कुल कथा है–जैसे–अहो ! चौलुक्यवश की स्त्रियों का साहस जगत मे सबसे अधिक होता है–क्यों कि ये पति के मर जाने पर प्रेम से विहीन होती हुई जीती २ अग्नि में जल जाती हैं । स्त्रियों के रूप से सबध रखने वाली कथा रूप कथा है–जैसे लाटदेश की स्त्रिया चन्द्रमा के जैसी मुखवाली होती हैं कमल जैसी आंखो वाली होती हैं वाणी मे इनके मिठास रहता है, उनके दोनो कूच पुष्ट और स्थूल होते हैं ।भला ऐसी सुन्दर स्त्री किसको नहीं अच्छी लगेगी ? ऐसी स्त्री तो देवो को भी दुर्लभ हुआ करती

છે " બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સાથે સબધ રાખનાર સ્ત્રિઓની કથા કહેવી તે જાતિ કથા કહેવાય છે ' જેમ કે ' પતિ વિના જીવન વ્યતીત કરનાર બ્રાહ્મણીઓને ધિક્કાર છે, કારણ કે તેઓ જીવતી હોવા છતા પણ એક રીતે તો મૃત જેવી જ છે " " તે શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રિઓને ધન્ય છે કે જે લાખપતિ હોવા છતા પણ નિંદિત થતી નથી " આ બીજી જાતિ કથાના દૃષ્ટાતો છે જે કુળ સાથે સબધ રાખનારી સ્ત્રી વિષેની કથાને કુળ કથ કહે છે જેમ કે " અહો ! ચાલુક્ય વશની સ્ત્રીઓના સાહસ જગતમા સૌથી વધારે હોય છે, કારણ કે પતિનુ મૃત્યુ તથા તે પ્રેમભગ્ન થવાથી જીવતી અગ્નિમા પ્રવેશ કરી બળી મરે છે " સ્ત્રીઓના રૂપ સાથે સબધ રાખનારી કથાઓને રૂપકથા કહે છે જેમ કે લાટ દેશની સ્ત્રિઓ ચન્દ્રમુખી હોય છે, કમળનયની હોય છે, તેમની વાણીમા મીઠાશ હોય છે, તેમના બન્ને કુચ પુષ્ટ અને સ્થૂળ હોય છે એવી સુદર સ્ત્રી કોને ન ગમે ? એવી સ્ત્રીઓ તો દેવોને પણ

नामकथा-यथा-इय यथा नाम्ना सुदरी, तथा-रूपगुणाभ्यामपि। नेपथ्य कथा, यथा-" धिग्नारीरौदीच्या बहुवसनाच्छादिताङ्गलतिकत्वात्। यद्यौवन न यूनां चक्षुर्मोदाय सभवति ॥" इति।

परिजनकथा—यथा—" चेटिकापरिवारोऽपि तस्याः कान्तो विचक्षणः। भावज्ञः स्नेहवान् दक्षो विनीतः सुकुलस्तथा ॥" इति।

एताः कथा न कर्तव्याः। तथा-' इत्थियाण' स्त्रीणाम् ' अण्णाविय ' अन्या अपि च ' एवमाइयाओ कहाओ ' एवमादिका कथाः या हि ' सिंगारकलुणाओ ' शृङ्गारकरुणाः=शृङ्गाररसकरुणरसयुक्ताः, तथा ' सजमबभचेरघाओव-

---

हैं। नाम कोलेकर जिस कथा में स्त्री सबधी सौन्दर्य का वर्णन किया जाताहै वह नाम कथा है,जैसे-यह स्त्री जैसे नाम से सुन्दर है वैसे ही यह रूप और गुणों से भी सुन्दर है, स्त्री सबधी वेशभूषा आदी की चर्चा-जिस कथा में रहती है वह नेपथ्यकथा है, जैसे-उत्तरदिशा की स्त्रियों को धिक्कार है-जो अनेक वस्त्रों से आच्छादित रहा करती हैं, क्यों कि इसतरह रहने से इनका यौवन युवापुरुषो की आखो को आनदप्रदान नही करता है। स्त्रियों के परिजनों को लेकर जो कथाएँ कही जाती हैं वे परिजन कथाएँ हैं, जैसे-उस स्त्रि का चेटिका जन-दासी जन रूप परि वार-भी वडा सुन्दर, निपुण, भावज्ञ, स्नेहयुक्त, दक्ष-व्यवहार-कुशल, विनीत एव कुलीन है। साधु को ऐसी स्त्री सबधी देशादि कथाएँ रागभाव से युक्त होकर नहीं करना चाहिये। तथा इसी तरह की और भी स्त्रियों से सबध रखने वाली शृगार रस एव करुण रस

દુર્લભ છે નામને અનુલક્ષીને જે કથામા સ્ત્રી સબધી સૌન્દર્યનુ વર્ણન કરાયુ હોય છે તે નામ કથા કહેવાય છે કે " આ સ્ત્રીનુ નામ જેટલુ સુદર છે એટલી જ તે રૂપ અને ગુણમા પણ સુદર છે સ્ત્રીની વેશભૂષા આદિની ચર્ચા જે કથામા હોય છે તે નેપથ્ય કથા કહેવાય છે જેમ કે " ઉત્તરની સ્ત્રીઓને ધિક્કાર છે, જે અનેક વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત રહે છે, કારણ કે તે પ્રમાણે રહેવાથી તેમનુ યૌવન યુવાનોની આખોને આનદ પ્રદાન કરતુ નથી " સ્ત્રિઓના પરિજનોને અનુલક્ષીને જે કથા કહેવાય છે તે પરિજન કથાઓ છે જેમ કે તે સ્ત્રીનો દાસિજન રૂપ પરિવાર પણ ઘણો સુદર, નિપુણ, ભાવજ્ઞ, સ્નેહાળ, દક્ષ-વ્યવહાર કુશળ, વિનીત અને કુલીન છે " સાધુએ એવી સ્ત્રી સબધી દેશાદિ કથાઓ રાગ ભાવથી યુક્ત થઈને કહેવી જોઈએ નહી તથા એ જ પ્રકારની સ્ત્રિઓ સાથે સબધ રાખનારી શૃગાર રસ અને કરુણ રસ

घाइयाओ ' संयमब्रह्मचर्यघातोपघातविशास्ताः कथाः, ' वभचेर ' ब्रह्मचर्यम्, 'अणुचरमाणेण' अनुचरता न कहेयव्वा ' स्वयं कथितव्याः, न=नापि च ' सुणेयव्वा ' अन्यस्य कथयतः श्रोतव्या न ' चिंतियव्वा' चिन्तितव्या', न चिन्ताविषयीकर्तव्या'। एवम् ' इत्थीकहाविरइसमिइजोगेण ' स्त्रीकथाविरतिसमितियोगेन=स्त्रीणा या कथास्ततो या विरतिस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन भावितोऽन्तरात्मा आरतमना ब्रह्मचर्यासक्तमना', विरतग्रामधर्म=निवृत्तमैथुनभावः। जितेन्द्रियः=वशीकृतेन्द्रिय', ब्रह्मचर्यगुप्तः=नवविधब्रह्मचर्यगुप्तिसहितः, उत्तराध्ययनसूत्रषोडशाध्ययनोक्त दशविधब्रह्मचर्य समाधिस्थानयुक्तो वा भवति ॥ सू० ७ ॥

प्रधानकथाओं को नहीं कहना चाहिये। तथा जिन कथाओ से संयम और ब्रह्मचर्य का घात और उपघात होना हो ऐसी कथाएँ भी ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले साधु को न स्वय कहना चाहिये, न सुनना चाहिये और न ऐसी कथाओं का विचार ही करना चाहिये। (एवं इत्थी कहाविरइ समिइजोगेण भाविओ अतरप्पा विरयगामधम्मे जिइदिए बभचेर गुत्ते भवइ) इस प्रकार से स्त्रीकथाविरतिरूप समिति के संबंध से भावित हुआ जीव ब्रह्मचर्य मे आसक्त मनवाला हो जाता है और ग्रामधर्म-मैथुन क्रिया से निवृत्त हो जाता है, अतएव वह जीव जितेन्द्रिय बनकर नवविध ब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा उत्तराध्ययन सूत्र के सोलहवे अध्ययन में कहे हुए दशविध ब्रह्मचर्य समाधि स्थान से युक्त बन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत की द्वितीय-भावना का स्वरूप प्रकट किया है। इसमें उन्हो ने रागभाव से स्त्रीमात्र

પ્રધાન કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ નહીં તથા જે કથાઓથી સંયમ અને બ્રહ્મચર્યનો ઘાત અને ઉપઘાત થતો હોય એવી કથાઓ પણ બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર સાધુએ કહેવી ન જોઈએ, સાંભળવી ન જોઈએ અને એવી કથાઓનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહિ " एव इ थीकहाविरइसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा विरयगामधम्मे जि दिए वभचेरगुत्ते भवइ " આ પ્રમાણે સ્ત્રી કથા વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત થયેલ જીવ બ્રહ્મચર્યમા આસક્ત મનવાળો બની જાય છે અને ગ્રામધર્મ-મૈથુનક્રિયાથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તેથી તે જીવ જિતેન્દ્રિય બનીને નવવિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રના સોળમા અધ્યયનમા કહેલ દશવિધ બ્રહ્મચર્યસમાધિ સ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની બીજી ભાવનાનું સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું છે તેમા તેમણે રાગભાવથી સ્ત્રી માત્રની કથાઓ કહેવાનો

तृतीया भावनामाह—' तइय ' इत्यादि—

मूलम्—तइयं नारीणं हसिय- भणिय चिट्ठिय विप्पेक्खिय गइविलासकीलियं विब्बोइ य नट्टगीयवाइय सरीर सठाण वण्णकरचरणनयणलावण्णरूवजोवणपयोधराधरवत्थालकार- भूसणाणि य गुज्झोवकासियाइ अण्णाणि य एवमाइयाणि तव संजमबंभचेरघाओवघाइयाइ अणुचरमाणेणं बंभचेर न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइ पावकम्माइं एव इत्थीरूव विरइ समिइजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥सू० ८॥

टीका–'तइय' ततीया स्त्रीरूपनिरीक्षणवर्जनरूपा भावनामाह–'नारीण' नारीणां ' हसियभणियचिट्ठियविप्पेक्खियगइविलासकीलिय ' हसितभणितचेष्टितनिमेक्षित

की कथा करने का निषेध किया है, क्यों कि ऐसी बाते कामवर्धक हुआ करती है, अतः ब्रह्मचारी को अपने ब्रह्मचर्य व्रत में एकदेश अथवा सर्वदेश से बाधक ऐसी कोई भी बात स्त्रियो के बीच मे बैठकर नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार उस ब्रह्मचारी का मन हर समय सुरक्षित बना रहता है ॥ सू०७ ॥

अब सूत्रकार इस व्रत की तृतीय भावना को कहते है—' तइय नारीण ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तइय) इस व्रत की रक्षा करने वाली तृतीय भावना स्त्री रूप निरीक्षणवर्जन करने रूप है। इस मे (नारीणं) स्त्रियों के

નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે એવી વાત કામ વર્ધક હોય છે, તેથી બ્રહ્મચારીએ પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા એક દેશથી અથવા સર્વદેશથી બાધક એવી કોઇ પણ વાત સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને કહેવી જોઇએ નહી આમ કરવાથી તે બ્રહ્મચારીનુ વ્રત સદાકાળ સુરક્ષિત બની જાય છે ॥ સૂ ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે " तइय नारीण "ઇત્યાદિ–

ટીકાર્થ—" तइय " આ વ્રતનુ રક્ષણ કરનારી ત્રીજી ભાવના સ્ત્રીના રૂપનુ નિરીક્ષણ કરવાનો પરિત્યાગ કરવાની છે તેમા " नारीण " સ્ત્રિઓના

गतिविलासक्रीडितम् , तत्र हसित=हास्यम् , भणित=जल्पितम् , चेष्टितम्=हस्तपादन्यासादि, विप्रेक्षितम्=निरीक्षितम् , गतिः=गमनम् , विलासः=नेत्रजनितचेष्टाविशेषः, क्रीडित=स्वसखीभिः सह खेलनम्, एषां समाहारद्वन्द्वः, तथा--' विव्वोइयनट्टगीयवाइयसरीरसठाणवण्णकरचरणनयणलावण्णरूवजोवणपयोधराधरवत्थालंकारभूसणाणि य ' बिब्बोकितनाटयगीतवादित्रशरीरसस्थानवर्णकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनपयोधराधरवस्त्रालङ्कारभूषणानि च, तत्र-बिब्बोकित=पूर्वोक्तलक्षणोबिब्बोकः, नृत्य=नर्तनम् , गीत=गानम् , वादित=वीणादिवादनम् , शरीरसस्थान=ह्रस्वदीर्घादिशरीराकृतिः, वर्ण =गौरत्वादिलक्षण , तथा-करचरणनयनलावण्यम्=करचरणनयनाना लावण्य=सौन्दर्यम् , रूप=स्वरूपम् , यौवन=तारुण्यम् पयोधरौ=स्तनौ, अधरः=अधरोष्ठः, वस्त्राणि=प्रसिद्धानि, अलङ्काराः = हारादय , भूषणानि=मण्डनानि, एतेषा द्वन्द्व , तानि । तथा-गुज्झोवकासियाइ ' गुह्यावकाशिकानि=गुह्यभूताल्लज्जनीयत्वात् स्वगनीया अवकाशा =शरीरानयवा इत्यर्थः, त

(हसियभणियचिट्ठियविप्पेक्खियगइविलासकीलिय) हास्य का, भणित बोलने का, उनकी चेष्टाओ का, चितवन का, चाल का, नेत्र जनितचेष्टाविशेपरूप विलास का, अपनीसखियो के साथ उनके खेल खेलने का, तथा उनके (विव्वोइ य नट्टगीइ वाइय सरीर-सठाणवण्णकरचरण-नयण लावण्णरूवजोवणपयोधराधरवत्थालकारभूसणाणि य) बिब्बोक का, नृत्य का, उनके द्वारा गाये गये गीतो का उनके वीणादिवादन का, उनके ह्रस्व, दीर्घ आदि शारीरिक सस्थान का उनके गौर आदि वर्ण का, कर-हाथ, चरण-पैर, नयन-नेत्र इनके लावण्य-सौंदर्य का, रूप का, यौवन का, उनके स्तनों का, उनके अधरो का, उनके द्वारा पहरे हुए वस्त्रों का हार आदि अलकारो का, भूषणो का तथा (गुज्झोवकासियाइ) उनके कामोद्दीपक गुप्त अगो का, तथा (एवमाइयाणि

" हसियभणियचिट्ठियविप्पेक्खियगइविलासकीलिय " હાસ્યનુ, ભણિત-બોલીનુ, તેમના હાવભાવનુ, ચિતવનનુ ચાલનુ, આખોના ઇશારારૂપ વિલાસનુ, પોતાની સખિયો સાથેની તેની ક્રીડાનુ, તથા તેમના " विव्वोइय नट्टगीइवाइय सरीर-सठाणवण्णकरचरणनयणलावण्णरूवजोवणपयोधराधरवत्थालकारभूसणाणि य " બિબ્બોકનુ, નૃત્યનુ તેમના દ્વારા ગવાતા ગીતોનુ, તેમના વીણાદિ વાદનનુ, તેમના હ્રસ્વ, દીર્ઘ આદિ શરીર બધારણનુ, તેમના ગોરા આદિ વર્ણનુ, કર-હાથ, ચરણ નેત્ર, આદિના સૌદર્યનુ, રૂપનુ, યૌવનનુ તેમના સ્તનોનુ, તેમણે પહેરેલ વસ્ત્રનુ, હાર આદિ અલકારોનુ, આભૂષણોનુ તથા " गुज्झोवकासियाइ " તેમના કામોત્તેજક ગુપ્ત અગોનુ, તથા " एवमाइयाणि

एव गुह्यावकाशिकानि स्त्रीणा गुह्याङ्गानीत्यर्थः। तथा-'अण्णाणि य एवमाइयाणि' अन्यानि च एवमादिकानि हसितादिसदृशान्यन्यान्यपि, 'तवसंयमबभचेरघाओव-घाइयाइ' तपः संयमब्रह्मचर्यघातोपघातकानि, 'पावकम्माइ' पापकर्माणि 'ब-भचेर' ब्रह्मचर्यम् 'अणुचरमाणेण' अनुचरता 'न चक्खुसा' न चक्षुषा 'न मणसा' न मनसा 'न वयसा' न वचसा 'पत्थेयव्वाइ' मार्थयितव्यानि=न चक्षुषा द्रष्टव्यानि, न मनसा चिन्तयितव्यानि, न वचसा प्रार्थयितव्यानीत्यर्थः। एवम्=अनेन प्रकारेण 'इत्थीरूवविरइसमिइजोगेण' स्त्रीरूपविरतिसमितियोगेन= स्त्रीणा यद् रूप ततो या विरतिस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन भावितोऽन्तरात्मा= जीवः 'आरयमणा' आरतमनाः=ब्रह्मचर्यासक्तचित्तो विरतग्रामधर्मो जितेन्द्रियो ब्रह्मचर्यगुप्तश्च भवति ॥सू०८॥

पावकम्माइ तवसजमबभचेरघाओवघाइयाइ) इसी प्रकार की और भी पाप कर्मरूप बातों का कि जो तप, सजम एव ब्रह्मचर्य व्रत को एकदेश से अथवा सर्वदेश से घात करने वाली हों (बभचेर अणुचर-माणेण) ब्रह्मचर्य व्रत की आराधना करने वाले साधु को (न चक्खुसा) राग संयुक्त होकर न आंखों से निरीक्षण करना चाहिये, (न मणसा) न मन से विचार करना चाहिये, और (न वयसा) न वचन से (पत्थेयव्वाइ) प्रार्थना करना चाहिये। (एव इत्थीरूवविरइसमिइ जोगेण भाविओ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइदिए बभचेर-गुत्ते भवइ) इस तरह से स्त्रीरूप निरीक्षण विरतिरूप समिति के योग से सबधित जीव ब्रह्मचर्य व्रत में आसक्त मनवाला हो जाता है और ग्रामधर्म-मैथुन सेवन से निवृत्त हो जाता है। अत एव वह जीव-जितेन्द्रिय बनकर नव विध ब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा दशविध ब्रह्म-

---

पावकम्माइ तवसजमबभचेरघाओवघाइयाइ" એ પ્રકારની બીજી પણ પાપ કર્મરૂપ વાતો કે જે તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યવ્રતનો એક દેશથી અથવા સર્વદેશથી ઘાત કરનારી હોય "बभचेरअणुचरमाणेण' બ્રહ્મચર્યવ્રતનુ પાલન કરનાર સાધુએ "न चक्खुसा" રાગ યુક્ત થઈને તેમનુ નિરીક્ષણ કરવુ જોઈએ નહીં, "न मणसा" મનથી વિચાર કરવો જોઇએ નહીં અને "न वयसा" વચનથી ન "पत्थेयव्वाइ" પ્રાર્થના કરવી જોઇએ "एव इत्थीरूव विरइसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइदिए बभचेरगुत्ते भवइ" આ પ્રમાણે સ્ત્રીરૂપ નિરીક્ષણ વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત જીવ બ્રહ્મચર્યવ્રતમા આસક્ત મનવાળો થઈ જાય છે, અને ગામધર્મ મૈથુનના સેવનથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તેથી તે જીવ જિતેન્દ્રિય બનીને નવવિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ

चतुर्थभावनामाह–'चउत्थं' इत्यादि।

मूलम्–चउत्थ पुव्वरय–पुव्वकीलियपुव्वसगथसथुया जे ते आवाहविवाहचोलकेसु य तिहिसु जण्णेसु उस्सवेसु य सिगारागारचारुवेसाहि हावभावललियविक्खेवविलास सालिणीहि अणुकूलपेमियाहि सद्धि अणुभूया सयणसंपओगा उ उ मुहवरकुसुमसुरभिचदणसुगधवरवासधूवसुहफरिसवत्थभूसणगुणोववेया रमणिज्जा उज्जगेज्जपउरणडणट्टगजल्लमल्लमुट्टियवेलवगकहगपवगलासगआइक्खलखमंखतूणइल्लतुंववीणियतालायरपकरणाणि य वहूणि महुर–सरगीय–सुस्सराइ अण्णाणि य एवमाइयाणि तव–संजमवंभचेरघाओवघाइयाइ अणुचरमाणेण वंभचेर न ताइ समणेण लभा दट्ठु न कहेउ न वि य सुमरेउं जे, एवं पुव्वरय पुव्वकीलिय विरइसमिइजोगेण भाविओ भवइ अंतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए वभचेरगुत्ते ॥ सू० ९ ॥

टीका–'चउत्थ' चतुर्थी–पूर्वरतपूर्वक्रीडितस्मरणविरतिरूपां भावनामाह–'पुव्वरयपुव्वकीलियपुव्वसगथसथुया' पूर्वरतपूर्वक्रीडितपूर्वसग्रन्थसस्तुताः, तत्र–पूर्वं तम्-

---

चर्य समाधि स्थान से युक्त बन जाता है।

भावार्थ–इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत की तृतीय भावना का कथन किया है। इस मे रागभाव से युक्त बनकर साधु को स्त्री के रूपादि निरीक्षण करने का सर्वथा त्याग करना कहागया है॥सू०८॥

સમાધિસ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનુ વર્ણન કર્યુ છે તેમા રાગ ભાવથી યુક્ત થઇને સ્રીના રૂપાદિનુ નિરીક્ષણુ કરવાનો સાધુએ પરિત્યાગ કરવો જોઇએ તે બતાવ્યુ છે ॥ સૂ. ૮ ॥

=गृहस्थावस्थाकालिकी कामरति, पूर्वक्रीडितम्=गृहस्थावस्थाश्रितं स्त्रीभिः सह क्रीडनम्, पूर्वसग्रन्थसस्तुता.=पूर्वं=गृहस्थावस्थाया ये सग्रन्था =श्वशुरकुलसम्बन्ध सवद्धा श्यालकश्यालिकादयः श्यालकभार्यादयश्च, तथा-सस्तुता दर्शनभाषणादिभिः परिचिताः, एषा द्वन्द्व', एते श्रमणेन न द्रष्टुं न कथयितुं न वा स्मर्तु लभ्याः इति परेण सम्बन्धः। तथा-' जे ते ' ये ते ' आवाहविवाहचोल्लकेसु' आवाहविवाहचूलकेषु, तत्र-आवाहो-वध्वानयनगृहानयनम्, विवाहः=पाणिग्रहण, चूलक

अब इस व्रत की चौथी भावना को कहते हैं--' चउत्थ पुव्वरय०' इत्यादि०।

टीकार्थ--(चउत्थ) ब्रह्मचर्य व्रत की पूर्वरत पूर्वक्रीडित स्मरण-विरतिनाम की चौथी भावना इस प्रकार है-(जे ते) जो वे (पुव्वरय पुव्वकीलियपुव्वसगथसथुरा) पूर्वरत गृहस्थावस्था में जो कामकेलि की गई हो वह पूर्वरत है। गृहस्थावस्था में जो स्त्रियों के साथ क्रीडा की गई हो वह पूर्वक्रीडित है। तथा-गृहस्थावस्था मे जिनके साथ श्वसुर, साले, साली, आदि का सबध रहा हो, वे पूर्व सग्रन्थ हैं और जिनके साथ दर्शन भाषण आदि से अधिक परिचय रहा हो वे पूर्वसस्तुत हैं। इन सब का ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करने बाद साधु को न स्मरण करना चाहिये, न उनका कथन करना चाहिये और न सबधी आदि जनों को देखने की लालसा ही रखनी चाहिये। तथा (आवाहविवाह

હવે આ વ્રતની ચોથી ભાવનાનુ કથન કરે છે " चउत्थ पुव्वरय " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" चउत्थ " બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ચોથી ભાવના" पूर्वरतपूर्वक्रीडित स्मरणविरति ' નામની છે તે આ પ્રમાણે છે--" जे ते पुव्वरयपुव्वकीलिय पुव्वसगथसथुरा " પૂર્વરત-ગૃહસ્થાવસ્થામા જે કામક્રીડા કરાઇ હોય તે પૂર્વરત કહેવાય છે ગૃહસ્થાવસ્થામા સ્ત્રીઓની સાથે જે ક્રીડા કરાઇ હોય તે પૂર્વ ક્રીડિત કહેવાય છે તથા ગૃહસ્થાવસ્થામા જેમની સાથે સસરા, સાળા, સાળી આદિનો સબધ રહ્યો હોય ને પૂર્વ સગ્રન્થ કહેવાય છે અને જેમની સાથે દર્શન, ભાષણ આદિથી વધારે પરિચય રહ્યો હોય તેઓ પૂર્વ સસ્તુત કહેવાય છે બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારણ કર્યા પછી સાધુએ એ બધાનુ સ્મરણ કરવુ જોઈએ નહી, તેમની વાત કરવી જોઈએ નહીં અને સબધી આદિ જનોને જોવાની લાલસા રાખવી જોઇએ નહી તથા आवाहविवाहचोल्लकेसु ' આવાહ--વધૂને વરના ઘેર લાવતી વખતે, વિવાહ પ્રસગે, તથા બાળકોના ચૂડાકર્મ સસ્કારના

=चूडाकर्म=बालाना शिखाधारणम् , एषा द्वन्द्व , तेषु तथोक्तेषु च=पुनः 'तिहिसु' तिथिषु=मदनत्रयोदशीप्रभृतिषु, तथा–'जण्णेसु' यज्ञेषु = नागादिपूजाप्रकरणेषु, तथा 'उस्सवेसु' उत्सवेषु=इन्द्रोत्सवादिषु च 'सिंगारागारचारुवेसाहिं' शृङ्गारागारचारुवेषाभिः=शृङ्गारस्य = शृङ्गाररसस्य आगारभूता याश्चारुवेषाः=शोभन नेपथ्यसपन्नास्ताभिः ,तथा–'हावभावलल्यिविक्खेवविलासमालिणीहिं' हावभावल लितविक्षेपविलासशालिनीभि –तत्र हाव =कामजनितो मुखविकार., भावः=काम-जनिताःचित्तसमुन्नाति',तदुक्तम् 'हावो मुखविकारः स्याद् भावश्चित्तसमुन्नति.'इति। ललितम्=चेष्टाविशेषः, तदुक्तम्—

" हस्तपादाङ्गविन्यासो भ्रूनेत्रोष्ठप्रयोजितः ।
सुकुमारो विधानेन ललित तत्प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥ " इति ।

विक्षेपः—चेष्टाविशेषः, तल्लक्षण त्विदम्—

अप्रयत्नेन रचितो, धम्मिल्लः श्लथबन्धनः ।
एकाशदेशधरणैस्ताम्बूलरलाञ्छनम् ॥ १ ॥
ललाटैकान्तलिखिता, विषमा पत्रलेखिकाम् ।
असमञ्जसविन्यस्त मज्जन नयनाञ्जयो ॥ २ ॥

तथा–अनादरबद्धत्वाद् ग्रन्थेर्जघनवासस ।

वसुगालम्बित' प्रान्तः, स्कन्धात्स्रस्तस्तथाऽशुक ॥ ३ ॥
जघने हारविन्यासो रशनायास्तथोरसि ।
इत्यवज्ञाकृत यत्स्यादज्ञानादिप्रमण्डनम् ॥ ४ ॥
वितनोति परा शोभा स विक्षेप इति स्मृतः ॥ "

विलास.–चेष्टाविशेष , सतु–" स्थानासनगमनाना हस्तभ्रूनेत्रकर्मणा चैव। उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥ १ ॥ " इति ।

चोलकेसु य) आवाह–वधू को वर के घर पर लाने के समय मे, विवाह के अवसर मे, बालको के चूडा (चोटी) कर्म सस्कार के प्रसग में, तथा (तिहिसु) मदनत्रयोदशी आदि तिथियो मे, तथा (जण्णेसु) नागा दिकों की पूजा के अवसर रूप यज्ञों मे, तथा (उस्सवेसु य) इन्द्रोत्सव आदि उत्सवों मे, (सिंगारागारचारुवेसाहिं) शृ गाररस की घरभूतबनी हुई तथा सुन्दर वेषभूषा से सज्जित हुई ऐसी तथा (हावभावललिय–

પ્રસગમા તથા "तिहिसु" મદન ત્રયોદશી આદિ તિથિઓમા, તથા " जण्णेसु " નાગાદિ કોની પૂજાના અવસરરૂપ યજ્ઞોમા તથા " उस्सवेसु य" ઇન્દ્રોત્સવ આદિ ઉત્સવોમા, ' सिंगारागारचारुवेसाहिं " શૃ ગાર રસના આગારરૂપ બનેલી તથા સુદર વેષભૂષાથી સુસજ્જિત થયેલી તથા " हावभावललियविक्खेवविलाससा

एभिः शालन्ते शोभन्ते यास्ताभिः, तथा-' अणुकूलपेमियाहिं ' अनुकूल प्रेमिकाभिः=अनुकूल=मनोऽभिरुचिकर प्रेम=प्रीतिर्यासा ताभिः, एतादृशीभिः ' सद्धिं ' सार्धम्, 'अणूभूया ' अनुभूताः=अनुभवविषयीकृता' 'सयणसपजोगा' शयनसप्रयोगाः=शयनानि च सप्रयोगाः=सम्पर्काश्चेति इतरेतरयोगद्वन्द्वः, शयन सप्रयोगा ? इत्याह-' उ उ सुहवरकुसुमसुरभिचदणसुगधवरवासधूव सुहफरिस वत्थभूसणगुणोववेया' ऋतुसुखवरकुसुमसुरभिचन्दनसुगन्धवरवासधूप सुखस्पर्शवस्त्रभूषणगुणोपपेताः, तत्र-ऋतुसुखानि=कालोचितानि यानि वरकुसुमानि, तथा-सुरभि चन्दनस्य सुगन्धो शोभनामोदयुक्तो वरः=श्रेष्ठो यो वासः=गन्धः सः, तथा-धूपः, तथा-सुखस्पर्शानि यानि वस्त्राणि, तथा-भूषणानि च, तेषां ये गुणास्तैरुपपेता स्ते श्रमणेन द्रष्टु कथयितु स्मर्तुं वा न योग्याः । तथा-'रमणिज्जा उज्ज गेज्जप

विक्खेवविलाससालिणीहिं) हाव, भाव, ललित, विक्षेप और विलास से सुहावना स्त्रियों के साथ तथा (अणुकूलपेमियाहिं) जिनकी प्रीति मन को मुदित करने वाली होती है ऐसी (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीयों के साथ भोगे गये शयन सबधी और सपर्क सबधी पूर्वकालिक भोगों का कि जो (उ उमुहवरकुसुमसुरभि चदण सुगध-वर-वासधूव-सुहफरिस-वत्थभूसण-गुणोववेया) कालोचित कुसुमों की सुगधि आदि रूप गुणों से विशेष रूप में आकर्षक होते थे, सुरभिचदन की श्रेष्ट गध से जो मनोमोहक बने रहते थे, कृष्णागुरु आदि सुगधित द्रव्यों की धूप के ससर्ग से जिनमे से महक उड़ा करती थी तथा वस्त्र और आभूषणों के आडम्बर की छटा से जिन्हे भोगने लिए चित्त परवस लालायित बन जाया करता था, उन सब साधु को कभी भी स्मरण नहीं करना चाहिये, किसी से ऐसे भोगों की बाते नही करना चाहिये और न ऐसे

लिणीहिं " હાવ, ભાવ, વિક્ષેપ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા " अणुकूलपेमियाहि " જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી " इत्थीहि सद्धि " સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સબધી કે સંસર્ગ સબધી પૂર્વ કાલિક ભોગોનુ કે જે ' उ उमुहवर-कुसुमसुरभि-चदण-सुगध-वरसाधूवसुह फरिसवत्थ-भूसण-गुणोववेया " કાલોચિત પુષ્પોના સુગધી આદિરૂપ ગુણોથી વિશેષ આકર્ષક થતુ હતુ, સુરભિ ચદનની શ્રેષ્ઠ ગધથી જે મનોહર બનતુ હતુ, કૃષ્ણાગરૂ આદિ સુગધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉઠયા કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આડબરની છટાથી જેને ભોગવવાને માટે મન લલચાઈ ગયા કરતુ હતુ, એ બધી વાતનુ સાધુએ કદીપણ સ્મરણ કરવુ જોઇએ નહી, કોઇની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી જોઇએ નહી,

भोगों की ओर लक्ष्य ही रखना चाहिये। काम से जो मुख पर एक प्रकार की विकृति आ जाती है उसका नाम हाव है। काम से उद्भूत जो चित्त में एक प्रकार की उन्नति आ जाती है उसका नाम भाव है। एक विशेष प्रकार की चेष्टा का नाम ललित है। यह चेष्टा स्त्रियों के हस्त, पाद, शरीर, भ्रू, नेत्र और ओष्ठ आदि मे होती है। विक्षेप नाम चित्त की असावधानी का है। जब ललना जनों का चित्त इस विक्षेपनाम की चेष्टाविशेष से युक्त हो जाता है तो उनमे विशेष प्रकार की चेष्टाएँ जाग्रत होने लगती हैं जैसे वे अपनी चोटी को ढीली बांध लेती है। नीवी उनकी शिथिल बंध वाली हो जाती है। मस्तक पर सिन्दुर बिन्दु की जगह कज्जल की रेखा और आखो मे सिन्दूर की रेखा लगाली जाती है। अथवा आँखों में जो अजन लगाती ह वह भी अस्त व्यस्त रूप में लगा लेतीं है। इत्यादि सब प्रकार की उनकी मण्डन विधि अवज्ञाकृत होती है। फिर भी इस स्थिति मे उनकी शोभा मे न्यूनता नहीं आती है। स्थान, आसन, गमन आदि में जो एक प्रकार की विशेषता आ जाती है वह विलास है। इसी तरह (रमणिज्जा 'उज्जगेज्जपउरणडणट्टग जल्लमल्लमुट्ठिकवेलम्बग-कहगपवग-लासग-आइक्खग-लख मख-तूणइल्ल

અને એવા ભોગોની તરફ લક્ષ પણ રાખવુ જોઈએ નહીં કામ ભાવથી મુખ પર જે એક પ્રકારની વિકૃતિ આવી જાય છે તેને 'હાવ' કહે છે કામાતુર ચિત્તમા જે એક પ્રકારની ઉન્નતિ આવી જાય છે તેને 'ભાવ' કહે છે એક વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાનુ નામ લલિત છે તે ચેષ્ટા સ્ત્રિઓના હાથ, પગ, શરીર ભ્રૂ, નેત્ર અને ઓષ્ઠ આદિમા થાય છે ચિત્તની અસાવધાનીને વિક્ષેપ કહે છે જ્યારે સ્ત્રિઓનુ ચિત્ત આ વિક્ષેપ નામની વિશિષ્ટ ચેષ્ટાથી યુક્ત થઇ જાય છે ત્યારે તેમનામા વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાઓ જાગૃત થવા માડે છે જેમ કે તેઓ પોતાના ચોટલાને ઢીલો બાંધી લે છે તેની નાડીનુ બધન શિથિલ થઈ જાય છે મસ્તક પર સિન્દૂરના બિન્દુની જગ્યાએ કાજળની રેખા અને આખોમા કાજળને બદલે સિન્દૂરની રેખા લાગી જાય છે અથવા આખોમા જે આજણ આજવામા આવે છે તે પણ અસ્તવ્યસ્ત રીતે અજાઇ જાય છે ઇત્યાદિ બધા પ્રકારની તેમની મડનવિધિ અવગણવાને પાત્ર છે છતા પણ એવી પરિસ્થિતિમા પણ તેમના રૂપમા ન્યૂનતા આવતી નથી સ્થાન, આસન, ગમન આદિમા જે એક પ્રકારની વિશિષ્ટતા આવી જાય છે તેનુ નામ વિલાસ છે એ જ રીતે "रमणिज्जा—उज्जगेज्ज—पउरणडणट्टगजल्लमल्ल-मुट्ठियवेलम्बग-कहगपवग लासग आइक्खग लखमख-तूणइल्ल-तुम्ब वीणिय तालायर-पकरणाणि य" સુદર વાદ્ય અને

एभिः शालन्ते शोभन्ते यास्ताभिः, तथा-' अणुकूलपेमियाहिं ' अनुकूल प्रेमिकाभिः=अनुकूल=मनोऽभिरुचिकर प्रेम=प्रीतिर्यासा ताभिः, एताद्दशीभिः ' सद्धिं ' सार्धम्, 'अणूभूया ' अनुभूताः=अनुभवविषयीकृता 'सयणसपओगा' शयनसप्रयोगा'=शयनानि च सप्रयोगा =सम्पर्काश्चेति इतरेतरयोगद्वन्द्वः, शयन सप्रयोगा ? इत्याह-' उ उ सुहवरकुसुमसुरभिचंदणसुगंधवरवासधूव सुहफरिस वत्थभूसणगुणोववेया' ऋतुसुखवरकुसुमसुरभिचन्दनसुगन्धवरवासधूप सुखस्पर्शवस्त्रभूषणगुणोपपेता', तत्र-ऋतुसुखानि=कालोचितानि यानि वरकुसुमानि, तथा-सुरभि चन्दनस्य सुगन्धो शोभनामोदयुक्तो वरः=श्रेष्ठो यो वास'=गन्धः सः, तथा-धूप', तथा-सुखस्पर्शानि यानि वस्त्राणि, तथा-भूषणानि च, तेषां ये गुणास्तैरुपपेता स्ते श्रमणेन द्रष्टु कथयितु स्मर्तुं वा न योग्या । तथा-'रमणिज्जा उज्ज-गेज्जप

विक्खेवविलाससालिणीहिं) हाव, भाव, ललित, विक्षेप और विलास से सुहावना स्त्रियों के साथ तथा (अणुकूलपेमियाहिं) जिनकी प्रीति मन को मुदित करने वाली होती है ऐसी (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीयों के साथ भोगे गये शयन सबधी और सपर्क संबंधी पूर्वकालिक भोगों का कि जो (उ उसुहवरकुसुमसुरभि चदण सुगध-वर-वासधूव-सुहफरिस-वत्थभूसण-गुणोववेया) कालोचित कुसुमों की सुगधि आदि रूप गुणों से विशेष रूप में आकर्षक होते थे, सुरभिचदन की श्रेष्ट गध से जो मनोमोहक बने रहते थे, कृष्णागुरु आदि सुगधित द्रव्यों की धूप के ससर्ग से जिनमे से महक उड़ा करती थी तथा वस्त्र और आभूषणों के आडम्बर की छटा से जिन्हे भोगने लिए चित्त परवस लालायित बन जाया करता था, उन सब साधु को कभी भी स्मरण नहीं करना चाहिये, किसी से ऐसे भोगों की बाते नहीं करना चाहिये और न ऐसे

लिणीहिं " હાવ, ભાવ, વિક્ષેપ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા "अणुकूलपेमियाहि " જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી "इत्थीहि सद्धिं " સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સબંધી કે સસર્ગ સબંધી પૂર્વ કાલિક ભોગોનુ કે જે ' उ उसुहवर-कुसुमसुरभि-चदण-सुगध-वरसाधूवसुह फरिसवत्थ-भूसण-गुणोववेया " કાલોચિત પુષ્પોના સુગંધી આદિરૂપ ગુણોથી વિશેષ આકર્ષક થતુ હતુ, સુરભિ ચંદનની શ્રેષ્ઠ ગંધથી જે મનોહર બનતુ હતુ, કૃષ્ણાગરૂ આદિ સુગંધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉઠયા કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આડંબરની છટાથી જેને ભોગવવાને માટે મન લલચાઈ ગયા કરતુ હતુ, એ બધી વાતનુ સાધુએ કદીપણુ સ્મરણુ કરવુ જોઇએ નહીં, કોઇની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી જોઇએ નહીં,

भवइ अंतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—'पचम' पञ्चमीं प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह–'आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए' आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविवर्जनः–आहारः = अशनादिः, स च प्रणीतः=प्रगलत्स्नेहबिन्दुश्च, तथा–स्निग्धः=चिक्कण च तद् भोजन च=स्निग्धभोजनम्, अनयो द्वन्द्व', तस्य विवर्जकः=परित्यक्ता, तथा 'सजए' सयतः=सयमवान् 'सुसाहू' सुसाधु =निर्वाणसाधक योगसाधनतत्परः, तथा–'ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियखज्जगविगइपरिचत्तकयाहारो' व्यपगतक्षीरदधिसर्पिर्नवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिकमधुखाद्यकविकृतिपरित्यक्तकृताहारः–तत्र–व्यपगताः=परिहृताः क्षीर= दुग्ध, दधि–प्रसिद्धम्, सर्पिः=घृतम्, नवनीत='मक्खन' इति भाषाप्रसिद्धम्, तैल प्रसिद्धम्, गुडः=प्रसिद्ध' खण्ड =शर्करा,

---

अथ सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते है—'पचम-आहारपणीय' इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है–(आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए) जो आहार प्रणीत–जिसमे से घृत की बिन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे कामोद्दीपक तथा स्निग्ध–रसयुक्त हो साधु को वह नही खाना चाहिये। क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण साधक मनोवाक्काय योग के साधन करने में तत्पर रहता है, इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडिय महुखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मक्खन, तैल, गुड,

---

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે–"पचम आहारपणीय" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–"पचम" આ વ્રતની પાચમી ભાવના "प्रणीतभोजन" ત્યાગ નામની છે તે આ પ્રમાણે છે–"आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए' જે પ્રણીત, એટલે કે જેમાથી ઘીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કામોદ્દીપક તથા સ્નિગ્ધરસ યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈએ નહી કારણ કે તે 'सजए' સયમી હોય છે અને "सुसाहू" નિર્વાણસાધક મનો વાક્કાય યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે તેથી તેમણે "ववगय खीर दहिसप्पि–नवणीयतेलगुडखडमच्छडियमहुखज्जगविगइ परचित्तकयाहारो" દૂધ, દહી, ઘી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાંડ વગેરેથી

अथ पञ्चमी भावनामाह—' पचम ' इत्यादि—

मूलम्—पचम आहारपणीयणिद्धभोयणविवज्जए संजए सुसाहू ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छंडिय-महुखज्जगविगइपरिचत्तकयाहारो न दप्पणं नवहुसो न निइगं न सायसूवाधियं न खद्ध तहा भोत्तव्व जहा से जायामायाए भवइ, न य भवइ विब्भमो य भंसणा य धम्मस्स, एव पणीयाहारविरइसमिइजोगेणं भाविओ

विरयगामधम्मे जिइंदिए बभचेरगुत्ते भवइ) इस प्रकार से पूर्वरत, पूर्वक्रीडीतों में विरतिरूप समिति के योग से भावित अतरात्मा—जीव-ब्रह्मचर्य में स्थिर मन वाला बन जाता है और ग्रामधर्म से मैथुन-कृत्य से—विरक्त हो जाता है। ऐसा वह महात्मा अपनी इंद्रियों को जीत कर नवविध ब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा दशविध ब्रह्मचर्य के समाधिस्थान से युक्त बन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत की चौथी भावना प्रकट की है। इस मे यह कहा गया है कि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले साधु को प्रव्रज्या लेने के पहिले गृहस्थाश्रम में भोगे गये विविध प्रकार के भोगों की याद नही करनी चाहिये। इस भावना का नाम पूर्वरत पूर्वक्रीडीत स्मरणविरति है। इसी विषय का विशेष वर्णन इस सूत्र में किया गया है ॥ सू० ९ ॥

यमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए बभचेरगुत्ते भवइ " આ પ્રકારે પૂર્વરત, પૂર્વ-ક્રીડિતોમા વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત થયેલ અતરાત્મા—જીવ બ્રહ્મ ચર્યમા આસક્ત મનવાળો બની જાય છે અને ગ્રામધર્મથી—મૈથુન ક્રિયાથી વિરક્ત થઇ જાય છે એવો તે મહાત્મા પોતાની ઇન્દ્રિયોને જીતીને બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યના સમાધિસ્થાનથી યુક્ત થઇ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ચોથી ભાવના પ્રગટ કરી છે તેમા એ બતાવવામા આવ્યુ છે કે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ પાલન કરનાર સાધુએ દીક્ષા લીધા પછી પહેલા ગૃહસ્થાશ્રમમા ભોગવેલ વિવિધ પ્રકારના ભોગોને યાદ કરવા જોઇએ નહીં આ ભાવનાનુ નામ " પૂર્વરત પૂર્વક્રીડિત સ્મરણ વિરતિ "છે આ જ વિષયનુ વધુ વર્ણન આ સૂત્રમા કર્યુ છે ॥ સૂ ૯ ॥

भवइ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—' पचम ' पञ्चमी प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह—' आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए ' आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविवर्जनः—आहार' = अशनादिः, स च प्रणीतः=प्रगलत्स्नेहबिन्दुश्च, तथा–स्निग्ध=चिक्कण च तद् भोजन च=स्निग्धभोजनम् , अनयो द्वन्द्व', तस्य विवर्जकः=परित्यक्ता, तथा ' सजए ' सयतः=सयमवान् ' सुसाहू ' सुसाधु =निर्वाणसाधक योगसाधनतत्परः, तथा– ' ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियखज्जगविगइपरिचत्तकयाहारो' व्यपगतक्षीरदधिसर्पिर्नवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिकमधुखाद्यकविकृतिपरित्यक्तकृताहारः–तत्र–व्यपगताः=परिहृताः क्षीर= दुग्ध, दधि–प्रसिद्धम् , सर्पि'=घृतम् , नवनीत='मक्खन' इति भाषाप्रसिद्धम् , तैल प्रसिद्धम् , गुडः=प्रसिद्धः खण्ड =शर्करा,

---

अथ सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते है—' पचम· आहारपणीय ' इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है–(आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए) जो आहार प्रणीत–जिसमे से घृत की बिन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे कामोद्दीपक तथा स्निग्ध–रसयुक्त हो साधु को वह नहीं खाना चाहिये। क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण साधक मनोवाकाय योग के साधन करने में तत्पर रहता है, इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियमहुखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मक्खन, तैल, गुड,

---

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે–"પચમ आहारपणीय"ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ–" पचम" આ વ્રતની પાચમી ભાવના " प्रणीतभोजन " ત્યાગ નામની છે તે આ પ્રમાણે છે–"आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए ' જે પ્રણીત, એટલે કે જેમાથી ઘીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કામોદ્દીપક તથા સ્નિગ્ધરસ યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈએ નહી કારણ કે તે ' सजए ' સયમી હોય છે અને "सुसाहू" નિર્વાણનાસાધક મનો વાકાય યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે તેથી તેમણે " ववगय खीर दहिसप्पि-नवणीयतेलगुडखडमच्छडियमहुखज्जगविगइ परचित्तकयाहारो " દૂધ, દહી, ઘી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાડ વગેરેથી

मत्स्यण्डिका='मिश्री'ति प्रसिद्धा च यस्मात्सः, तथा-मधुप्रसिद्धम् , खाद्यकः='खाजा' इति प्रसिद्धम् , इत्यादि लक्षणाभि विकृतिभिः परित्यक्तो यः सः, अनयोः कर्मधारयः, एतद्रूपो यः आहारः स कृतो येन स तथोक्तः, अन्त=प्रान्तभोजीत्यर्थः निष्ठान्तस्य पूर्वनिपातः, एतादृशः साधु' 'न' नैव 'दप्पण' दर्पण=दर्पकारक भोजन भुञ्जीत । तथा-न 'बहुसो' बहुशः=दिनमध्येऽनेकवार भोजन कुर्वीत । तथा-'न निइग' नैत्यिक-नित्यपिण्ड भुञ्जीत, तथा-न 'सायसूप्पाहिग' शाकसूपाधिकभोजन भुञ्जीत । तथा-'खद्ध' प्रचुर भुञ्जीत । कथ तर्हि भोक्तव्यम् ? इत्याह-'तहा' तथा भोत्तव्व' भोक्तव्यम् , 'जहा' यथा—तद् भोजन 'से' तस्य ब्रह्मचारिणः, 'जायमायाए' यात्रामात्रार्थ, यात्रार्थ=सयमयात्रानिर्वाहार्थ या मात्रा=आहारपरिमाणरूपा भगवन्निर्दिष्टा सा यात्रामात्रा तस्यै,

---

शर्करा, मिश्री, इनसे रहित तथा मधु खाजा, इत्यादिरूप विकृतियोंसे रहित आहार करना चाहिये। अर्थात् साधुको अन्त प्रान्तभोजी होना चाहिये। जो साधु इस प्रकार का आहार लेता है वह युक्त नहीं हैं-उसे (न दप्पण) दर्पकारक भोजन नही करना चाहिये (न बहुसो) न दिन में अनेक बार भोजन करना चाहिये (न निइगं) न उसे नित्य पिंड भोजी ही होना चाहिये ओर (न सायसूवाहिय) न उसे शाक और दाल की अधिकतावाला भोजन ही करना चाहिये (न खद्द) न उसको प्रचुरमात्रा में भोजन करना चाहिये। किन्तु इस प्रकार से भोजन करना चाहिये कि (जहा) जिससे वह भोजन (से) उस ब्रह्मचारी की (जायामायाए भवइ) यात्रा मात्रा के लिये हो अर्थात् सयम के निर्वाह के लिये हो। यात्रामात्रा को तात्पय है कि सयमनिर्वाह रूप यात्रा के लिये आहार का परिमाण जितना प्रभु ने निर्दिष्ट किया है वह आहार

રહિત તથા મધ, ખાજા ઇત્યાદિ વિકૃતિઓથી રહિત આહાર કરવો જોઈએ એટલે કે સાધુએ અન્ત પ્રાન્તભોજી થવુ જોઈએ જે સાધુ આ પ્રકારનો આહાર લે છે તેણે "न दप्पण" દર્પકારક ભોજન લેવુ જોઈએ નહી "न बहुसो" દિવસમા અનેક વાર ભોજન લેવુ જોઇએ નહી 'न निइग" તેણે નિત્યપિંડ ભોજી થવુ જોઈએ નહી, અને "न सायसूवाहिय" તેણે વધારે દાળશાક યુક્ત ભોજન લેવુ નહી 'न खद्द" તેણે વધારે પ્રમાણમા ભોજન કરવુ જોઈએ નહી પણ એવી રીતે ભોજન કરવુ જોઇએ કે "जहो" જેથી તે ભોજન "से" તે બ્રહ્મચારીની "जायामायाए भवइ" યાત્રમાત્રાને માટે જ હોય, એટલે કે સયમના નિર્વાહને માટે જ હોય યાત્રામાત્રાનુ તાત્પર્ય એવુ છે કે સયમ નિર્વાહરૂપ યાત્રાને માટે ભગવાને આહારનુ જેટલુ પ્રમાણ દર્શાવ્યુ

सयमयात्रार्थमित्यर्थः, 'भवइ' भवति। एव सति 'धम्मस्स' धर्मस्य विषये, 'विब्भमो वा' विभ्रमो=धातूपचयेन मनसोऽस्थिरत्वाद् भ्रान्तिश्च न भवति, तथा—धर्मस्य 'भसणा' भ्रशना नाशश्च न भवति। एवम्=अनेन प्रकारेण 'पणीयाहारविरइसमिइजोगेण' प्रणीताहारविरतिसमितियोगेन=प्रणीतो य आहार-स्तस्माद् या विरतिस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन भावितोऽन्तरात्मा आरतमना विरतग्रामधर्मो जितेन्द्रियो ब्रह्मचर्यगुप्तश्च भवति ॥ सू०१० ॥

उतना ही होना चाहिये। ऐसा होने पर (धम्मस्स विब्भमो वा भसणा य न य भवइ) धर्म के विषय मे, धातु के उपचय से मानसिक अस्थिरता होने के कारण जो भ्रान्ति होती है वह नही हो सकती है, और न उसके धर्म का ध्वस (नाश) ही हो सकता है। (एव पणीयाहार-विरइसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइदिए बभचेरगुत्ते भवइ) इस प्रकार प्रणीताहारविरतिरूप समिति के योग से भावित बना हुआ मुनि अपने द्वारा ग्रहीत ब्रह्मचर्य मे सलग्न मनवाला बन जाता है और ग्रामधर्म–मैथुन से–विरत हो जाता है। इस प्रकार अपनी इन्द्रियोंको जीत कर वह महात्मा नवविध ब्रह्मचर्य की गुप्तिसे अथवा दशविध ब्रह्मचर्यके समाधिस्थानसे युक्त बन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत की पाचवी भावना प्रकट की है। इस भावना का नाम प्रणीताहार वर्जन है। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले साधु को ऐसा भोजन नही करना चाहिये जो

છે તેટલા પ્રમાણમા જ તે આહાર હોવો જોઈએ એવુ થતા "धम्मस्स विब्भमो वा भसणा य न य भवइ" ધર્મના વિષયમા, ધાતુનો સગ્રહ થવાને કારણે માનસિક અસ્થિરતા થવાથી જે ભ્રાન્તિ થાય છે, તે થઈ શકતી નથી, "एवं पणीयाहारविरइसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइदिए बभचेरगुत्ते भवइ" આ પ્રકારે પ્રણીતાહાર વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત થયેલ મુનિ પોતે ગ્રહણ કરેલ બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા આસક્ત મનવાળો થઈ જાય છે અને ગ્રામધર્મ–મૈથુનથી વિરક્ત થઈ જાય છે આ રીતે પોતાની ઈન્દ્રિયોને જીતીને તે મહાત્મા નવવિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યના સમાધિસ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ –આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્યવ્રતથી પાચમી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે આ ભાવનાનુ નામ "પ્રણીતાહાર વર્જન" છે બ્રહ્મચર્યવ્રત ધારણ કરનાર સાધુએ એવુ ભોજન લેવુ ન જોઈએ કે જે કામોદ્દીપક રસ યુક્ત

अथोपसंहरन्नाह—' एवमिण ' इत्यादि ।

मूलम्—एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संचरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं णिच्चं आमरणंतं एसो जोगो णेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्साई असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ । एवं चउत्थं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं सम्मं आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ । एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं चउत्थं संवरदारं समत्तं त्तिबेमि ॥सू०११॥

॥ इय पण्हावागरणाणं चउत्थं संवरदारं समत्तं ॥

टीका—' एवं ' एवम्=पूर्वोक्तप्रकारेण ' इणं ' इदम् ' संवरस्स ' संवरस्य=चतुर्थस्य ब्रह्मचर्यनामकस्य संवरस्य ' दारं ' द्वारं 'सम्मं ' सम्यक् 'संचरियं'

कामोद्दीपक रसयुक्त हो । साधु तो अन्त प्रान्त भोजी होता है अतः उसको दर्पकारक भोजन का परित्याग करते हुए दिन में अनेक बार भी भोजन नहीं करना चाहिये और न उसे नित्यपिंड भोजी ही होना चाहिये । अधिक भोजन संयमाचार में प्रमाद और प्रणीत रसवाला भोजन मानसिक अस्थिरताका कारण बनता है इसलिये उसे नित्य इस प्रणीताहार विरतिरूप समितिके योगसे अवश्य भावित रहनाचाहिये॥१०॥

अब सूत्रकार इस विषय का उपसंहार करते हुए कहते हैं—'एवं

હોય સાધુ તો અન્તપ્રાન્ત ભોજી હોય છે તેથી તેણે દર્પકારક ભોજનનો પરિત્યાગ કરવો જોઈએ દિવસમા અનેક વાર ભોજન લેવુ જોઈએ નહીં અને તેણે નિત્ય પિંડ ભોજી પણ થવુ જોઈએ નહીં અધિક ભોજન સયમાચારમા પ્રમાદ અને પ્રણીન રસવાળુ ભોજન માનસિક અસ્થિરતાનુ કારણ બને છે તેથી તેણે હમેશા આ પ્રણીતાહાર વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી અવશ્ય ભાવિત રહેવુ જોઈએ ॥ સૂ ૧૦ ॥

संचरित=सम्यगाचरित, 'सुप्पणिहिय' सुप्रणिहितम्- एकाग्रतया समाराधित 'होइ' भवति। 'इमेहिं पंचहिं वि' एभिः=अनुपद प्रोक्तैःपञ्चभिरपि 'कारणेहिं' कारणैः=भावनारूपैः, कीदृशैः कारणैरित्याह—'मणवयणकायपरिरक्खिएहिं' मनोवचनकायपरिरक्षितैः मनोवाक्कायैः सम्यक् समाराधितैः। कियत्कालम्? इत्याह-'णिच्च' नित्य=सर्वदा 'आमरणंतं' आमरणान्त=मरणपर्यन्तम् 'एसो' एष=पूर्वोक्तो 'जोगो' योग=ब्रह्मचर्यरूपो 'णेयव्वो' नेतव्य=पालनीय, केन? इत्याह—'धिइमया मइमया' धृतिमता मतिमता, कीदृशोऽय योगः? इत्याह—'अणासवो' अनाश्रवः 'अकलुसो' अकलुषः 'अच्छिद्दो' अच्छिद्रः 'अपरिस्साई' अपरिस्रावी 'असंकिलिट्ठो' असंक्लिष्टः 'सुद्धो' शुद्धः 'सव्व-मिण' इत्यादि०।

टीकार्थ—(एवमिणं) इस प्रकार से यह (संवरस्स दारं) चौथा ब्रह्मचर्य नामका संवरद्वार (सम्मं संचरियं) अच्छी तरह से पाले जाने पर (सुप्पणिहियं भवइ) स्थिर हो जाता है। इसलिये (इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं) मन, वचन और काय, इन तीनों योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये इन पांच—भावनारूप कारणों से (निच्चं) सदा (आमरणंतं) जीवनभरतक (एसोजोगो) यह ब्रह्मचर्यरूप योग (णेयव्वो) चित्त की स्वस्थता एवं हेयोपादेय की विवेकता से युक्त हुए मुनिजन को पालन करना चाहिये। क्यों कि यह ब्रह्मचर्यरूप योग (अणासवो) नूतनकर्मों के आगमन से रहित होने के कारण अनाश्रवरूप है, (अकुलसो) अशुभ अध्यवसाय से वर्जित होनेके कारण अकलुष है, (अच्छिद्दो) पाप का स्रोत

હવે સૂત્રકાર આ વિષયનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે—" एवमिणं " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—" एवमिणं " આ પ્રકારે આ " संवरस्स दारं " ચોથું બ્રહ્મચર્ય નામનું સંવરદ્વાર " सम्मं संचरियं " સારી રીતે પાળવામાં આવે તો " सुप्पणिहियं भवइ " સ્થિર થઈ જાય છે " इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं " મન, વચન અને કાય, એ ત્રણે યોગથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ એ પાંચ ભાવના રૂપ કારણોથી " निच्चं " સદા आमरणंतं " જીવન પર્યન્તના "एसो जोगो" આ બ્રહ્મચર્યરૂપ યોગ 'णेयव्वो" ચિત્તની સ્વસ્થતા અને હેયોપાદેયની વિવેકતાપૂર્વક મુનિ જનોએ પાળવો જોઈએ કારણ કે આ બ્રહ્મચર્યરૂપ યોગ " अणासवो " નૂતન કર્મોના આગમન રહિત હોવાને કારણે અનાસ્રવ છે " अकलुसो " અશુભ અધ્યવસાયથી રહિત હોવાથી અકલુષ છે, "अच्छिद्दो" પાપનો સ્રોત તેનાથી છિન્ન થવાને કારણે અચ્છિદ્ર છે "अपरिस्साई"

जिणमणुण्णाओ ' सर्वजिनानुज्ञातः । एवम्-अनेन प्रकारेण ' चउत्थ ' चतुर्थं 'स वरदार ' सवरदार ' संवरद्वार ' फासिय ' स्पृष्ट ' पालिय ' पालित ' सोहिय' शोधित ' तीरिय ' तीरित ' किट्टिय ' कीर्तितम् , ' सम्म ' सम्यक् ' आराहिय' आराधितम् आणाए ' आज्ञया ' अनुपालिय ' अनुपालित ' भवइ ' भवति । एवम्=अनेन प्रकारेण 'नायमुणिणा ' ज्ञातमुनिना=ज्ञातवंशोद्भवेन मुनिना ' भग-वया ' भगवता महावीरेण ' पण्णविय ' प्रज्ञापित ' परूविय प्ररूपित ' पसिद्ध'

इससे छिन्न हो जाने के कारण अच्छिद्र है। (अपरिस्सवाई) बिन्दुरूप से भी कर्मरूप जल इसमें प्रवेश नहीं कर सकता है इसलिये यह अप रिस्रावी है (असकिलिट्ठो) असमाधि भाव से वर्जित होने से यह असंक्लिष्ट है, (सुद्धो) कर्ममल से रहित होने के कारण शुद्ध है, (स-व्वजिणमणुण्णाओ) समस्त प्राणियो का इससे हित होने के कारण समस्त अरहत भगवनों का यह मान्य हुआ है, (एव) इस प्रकार से जो इस (चउत्थ सवरदार) चतुर्थ सवर द्वार को (फासिय) अपने शरीर से स्पृष्ट करते हैं, (पालिय) निरन्तर उपयोगपूर्वक उस का सेवन करते हैं (सोहिय) अतिचारों से इसको रहित करते हैं, (तीरिय) पूर्णरूप से इसका सेवन करते है, (किट्टिय) दूसरों को इसके पालन करने का उपदेश देते हैं (सम्म) तीन करण तीन योगों से इसकी भलीप्रकार से (आराहिय) अनुपालना करते है सो उनके द्वारा यह योग (आणाए अणुपालिय भवइ)) तीर्थंकर प्रभुकी आज्ञानुसार ही पालित होता है। (एव) इस प्रकार से (नायमुणिणा भगवया महा

કર્મરૂપ જળનુ બિંદુ પણ તેમા પ્રવેશ કરી શકતુ નથી તેથી તે અપરિસ્રાવી છે " असकिलिट्ठो " અસમાધિ ભાવથી રહિત હોવાથી તે અસંક્લિષ્ટ છે, "सुद्धो" કર્મમળથી રહિત હોવાને કારણે શુદ્ધ છે ' सव्वजिणमणुण्णाओ " સમસ્ત જીવોનુ તેનાથી હિત થવાને કારણે સમસ્ત અર્હંત ભગવાનો દ્વારા તે માન્ય થયેલ છે, " एव " આ પ્રકારે જે આ " चउत्थ सवरदार " ચોથા સંવરદ્વારનો " फासिय " પોતાના શરીરથી સ્પર્શ કરે છે, " पालिय " નિરંતર ઉપયોગ પૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, ' सोहिय " અતિચારોથી તેનુ રક્ષણ કરે છે, ' तीरिय" પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે, " किट्टिय " બીજાને તેનુ પાલન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, ' सम्म " ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી તેનુ સારી રીતે " आराहिय " અનુપાલન કરે છે, તેમના દ્વારા આ યોગનુ " आणाए अणुपालिय भवइ " તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞાનુસાર પાલન થાય છે " एव " આ પ્રકારે " नाय मुणिणा भगवया महावीरेण " જ્ઞાત વંશમા ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ ભગવાન મહા

प्रसिद्ध ' ' सिद्धवरसासणमिण ' सिद्धवरशासनमिदम्, ' आघविय ' आख्यात ' सुदेसिय ' सुदेशित ' पसत्थ ' प्रशस्त ' चउत्थं संवरदारं ' चतुर्थं संवरद्वार ' समत्तं ' समाप्तम् । ' त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि । अस्य सूत्रस्य व्याख्याऽ पूर्ववद् बोध्या ॥ सू०११ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ – प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित–ललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक– वादिमानमर्दक–श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचिताया श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया संवरात्माके द्वीतीये–भागे ब्रह्मचर्यनामक चतुर्थं संवरद्वार समाप्तम् ॥ ४ ॥

वीरेण) ज्ञातवंश में उत्पन्न हुए मुनि भगवान् महावीर ने (पण्णविय) इस चतुर्थ संवरद्वार को शिष्यों के लिये सामान्यरूप से समझाया है। (परूविय) बाद में भेद–प्रभेद पूर्वक उसका कथन किया है । (पसिद्ध) इसीलिये जिनवचन में यह प्रसिद्ध हुआ है । तथा (सिद्धवरसासणमिण) भूतकाल में जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह प्रधान आज्ञारूप शासन है । (आघविय) ऐसा भगवान महावीर प्रभुने इसके विषय में सर्वभाव से कहा है और (सुदेसिय) देवों मनुजों तथा असुरों से युक्त परिषदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) समस्त प्राणियों का हितकारक होने से प्रशस्त–मंगलमय है (चउत्थ संवरदार समत्त) यह चतुर्थ संवरद्वार समाप्त हुआ (त्तिबेमि) हे जम्बू ! जैसा मैंने भगवान से सुना है वैसा ही मैं कहता हूं ।

वीरे " पण्णविय " આ ચોથા દ્વારને શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યુ છે " परूविय " ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનુ કથન કર્યું છે ' पसिद्ध " તે કારણે જિનવચનમા તે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે તથા " सिद्धवरसासणमिण " ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધ થઈ ગયા છે તેમનુ આ મુખ્ય આજ્ઞા રૂપ શાસન છે " आघविय " એવુ ભગવાન મહાવીરે તેને વિષે સર્વ ભાવથી કહ્યુ છે અને " सुदेसिय " દેવો, માણસો તથા અસુરોથી યુક્ત પરિષદામા તેનો ઉપદેશ આપ્યો છે "पसत्थ" સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે હિતકારક હોવાથીપ્રશસ્ત મંગળમય છે ' चउत्थ संवरदार समत्त"આ ચોથુ સંવરદ્વાર સમાપ્ત થયુ "त्तिबेमि" હે જમ્બૂ! જેવુ ભગવાનને મુખે સાભળ્યુ હતુ તેવુ જ તેનુ કથન કરૂ છુ

भावार्थ—इस चतुर्थ संवरद्वार का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं कि जो मुनिजन इस चतुर्थ संवरद्वार को मन वचन और काय, इन तीन योगों से शुद्धिपूर्वक पांच भावनाओं सहित मरणपर्यंत पालते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं। नवीन कर्मों का बंध बंद हो जाता है। संचित कर्मों की निर्जरा होने लगती है। पापों का स्रोत रुक जाता है। यह अपरिस्रावी आदि विशेषणों वाला है त्रिकाल-समस्त अरहंत भगवंतों ने इसका पालन किया है। उन्हीं के कथनानुसार भगवान महावीर प्रभुने भी इसका स्वरूपादि प्रदर्शन पूर्वककथन किया है। इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी ने अपने शिष्य अंतिम केवली श्री जंबू स्वामी को समझाया है ॥ सू०११ ॥

॥ चतुर्थ संवरद्वार समाप्त॥४॥

ભાવાર્થ —આ ચોથા સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સંવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાંચ ભાવનાઓ સહિત મરણ સુધી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય બંધ થઈ જાય છે નવીન કર્મોનો બંધ પણ અટકી જાય છે સંચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માંડે છે, પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે તે અપરિસ્રાવી આદિ વિશેષણો વાળુ છે ત્રિકાળવર્તી સમસ્ત અર્હંત ભગવાનોએ તેનુ પાલન કરેલ છે તેમના કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વ-રૂપ આદિ દર્શાવીને તેનુ કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ પોતાના શિષ્ય અંતિમ કેવલી શ્રી જંબૂસ્વામીને સમજાવ્યુ છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચોથું સંવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वार प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थ सवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत स्यैव सभवतीति क्रमप्राप्त परिग्रहविरमणनामक पञ्चम सवरद्वारमभिधीयते। तस्येदमादिम सूत्रम्—'जबू' इत्यादि।

मूलम्–जंबू! अपरिग्गहसवुडे य समणे आरभपरिग्गहाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव रागदोसा, तिण्णि य दंडा, गारवाय गुत्तीओ तिण्णि, तिण्णि य विराहणाओ, चत्तारि कसाया, झाणसण्णा, विगहा तहा य हुति चउरो, पच–किरियाओ, समिइ, इदिय, महव्वयाइं य ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया, अट्ठमया, नवचेव य वभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्मे एक्कारस उवासगाणं, वारस य भिक्खूणं पडिमा, तेरस किरियाट्ठाणाइ, चउद्दस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया, सोलस गाहा सोलस य, असजम १७, अवभ १८, णाय १९, असमाहिट्ठाणा २०, सवला २१, य परीसहा २२ य, सूयगडज्झयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८, पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाइगुणा ३१, य जोगसंगह ३२, सुरिणा ३३, तित्तीसासायणा। आदि एक्काइय करेत्ता एगुत्तरियाए वुड्डीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव य भवेतिगाहिया। विरइपणिहिसु अविरईसु य अण्णेसु य एवमाइसु वहुसु ट्ठाणेसु जिणप्पसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु सकं कंख निराकरित्ता सद्दहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

भावार्थ—इस चतुर्थ संवरद्वार का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं कि जो मुनिजन इस चतुर्थ संवरद्वार को मन वचन और काय, इन तीन योगों से शुद्धिपूर्वक पांच भावनाओं सहित मरणपर्यंत पालते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं। नवीन कर्मो का बंध बंद हो जाता है। संचित कर्मो की निर्जरा होने लगती है। पापों का स्रोत रुक जाता है। यह अपरिस्रावी आदि विशेषणों वाला है त्रिकाल समस्त अरहंत भगवंतों ने इसका पालन किया है। उन्हीं के कथनानुसार भगवान महावीर प्रभुने भी इसका स्वरूपादि प्रदर्शन पूर्वककथन किया है। इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी ने अपने शिष्य अंतिम केवली श्री जंबू स्वामी को समझाया है ॥ सू०११ ॥

॥ चतुर्थ संवरद्वार समाप्त॥४॥

ભાવાર્થ—આ ચોથા સંવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સંવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાંચ ભાવનાઓ સહિત મરણ સુધી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય બંધ થઈ જાય છે નવીન કર્મોનો બંધ પણ અટકી જાય છે સંચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માંડે છે, પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે તે અપરિસ્રાવી આદિ વિશેષણો વાળુ છે ત્રિકાળવર્તી સમસ્ત અર્હંત ભગવાનોએ તેનુ પાલન કરેલ છે તેમના કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વરૂપ આદિ દર્શાવીને તેનુ કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ પોતાના શિષ્ય અંતિમ કેવલી શ્રી જંબૂસ્વામીને સમજાવ્યુ છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચોથુ સંવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थ सवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत स्यैव सभवतीति क्रमप्राप्त परिग्रहविरमणनामक पञ्चम सवरद्वारमभिधीयते। तस्येदमादिम सूत्रम्—'जबू' इत्यादि।

मूलम्–जंबू! अपरिग्गहसवुडे य समणे आरभपरिग्गहाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव रागदोसा, तिण्णि य दडा, गारवाय गुत्तीओ तिण्णि, तिण्णि य विराहणाओ, चत्तारि कसाया, झाणसण्णा, विगहा तहा य हुंति चउरो, पंच–किरियाओ, समिइ, इदिय, महव्वयाइ य ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया, अट्ठमया, नवचेव य बभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्मे एक्कारस उवासगाणं, बारस य भिक्खूणं पडिमा, तेरस किरियाट्ठाणाइ, चउद्दस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया, सोलस गाहा सोलस य, असजम १७, अवभ १८, णाय १९, असमाहिट्ठाणा २०, सबला २१, य परीसहा २२ य, सूयगडज्झयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८, पावसुय २९, मोहणिज्जं ३०, सिद्धाइगुणा ३१, य जोगसंगह ३२, सुरिणा ३३, तित्तीसासायणा। आदि एक्काइयं करेत्ता एगुत्तरियाए वुड्ढीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव य भवेतिगाहिया। विरइपणिहिसु अविरईसु य अण्णेसु य एवमाइसु बहुसु ट्ठाणेसु जिणप्पसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु संकं कंख निराकरित्ता सद्दहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

अलुद्धे अमूढे मणवयणकायगुत्ते जो सो वीर-वरनयण-विरइ पवित्थर वहुविहपगारो समत्तविसुद्धवद्धमूलो धिइकदो विणय वेइओ निग्गयतेलोक्क विउलजसनिचियपीणपीवर-सुजाय-खंघो पचमहव्वयविसालसालो भावणातयंतज्झाणसुभग जोगनाणपल्लववरकुरधरो वहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अणण्हयफलो पुणो य मोक्खवरवीयसारो मंदरगिरिसिहर-चूलिया इव इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ सवर-पायवो चरिम सवरदार ॥ १ ॥

टीका—'जबू' हे जम्बू ! 'अपरिग्गहसवुडे' अपरिग्रहसवृतः=परिग्रहः= धर्मोपकरणातिरिक्त वस्तुग्रहणम्, धर्मोपकरणे मूर्च्छा च, तद्भिन्नोऽपरिग्रहाः, तत्र-सवृत =सलग्नो यः स चकाराद् ब्रह्मचर्यादि गुणयुक्तश्च यः स, 'समणे'

पाचवा सवरद्वार प्रारभ

ब्रह्मचर्य नाम का चतुर्थ सवरद्वार समाप्त हो चुका। यह ब्रह्मचर्य नामका चतुर्थ सवर उसी व्यक्ति के होता है जो परिग्रह से सर्वथा विरत होता है। इसलिये क्रम प्राप्त परिग्रह विरमण नाम का पाचवा सवर द्वार कहा जाता है, उसका यह प्रथम सूत्र है—'जबू' इत्यादि।

धर्मोपकरणों से अतिरिक्त वस्तुओ का ग्रहण करना और धर्मोपकरणों में मूर्च्छाभाव का रखना इसका नाम परिग्रह है। इस परिग्रह से जो भिन्न है वह अपरिग्रह है। (जबू) हे जबू! (अपरिग्गहसवुडे य समणे) जो इस अपरिग्रह मे सलग्नचित्त होता है एव ब्रह्मचर्य आदि

પાચમા સવરદ્વારનો પ્રારભ

બ્રહ્મચર્ય નામનુ ચોથુ સવરદ્વાર સમાપ્ત થયુ તે બ્રહ્મચર્ય નામનો ચતુર્થ સવર એજ વ્યક્તિને થાય છે કે જે પરિગ્રહથી સર્વથા વિરક્ત બને છે તે કારણે અનુક્રમે આવતા પરિગ્રહ વિરમણ નામના પાચમા સવરદ્વારનુ વર્ણન કરવામા આવે છે, તેનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે-" जबू " ઇત્યાદિ-

ધર્મોપકરણો કરતા વધારે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરવી અને ધર્મોપકરણોમા મૂર્છાભાવ રાખવો તેને પરિગ્રહ કહે છે આ પરિગ્રહથી જે ઉલટુ છે તે અપરિગ્રહ કહેવાય છે "जबू"! 'अपरिग्गहसवुडेय समणे' જે આ અપરિગ્રહમા આસક્ત ચિત્તવાળા હોય છે અને બ્રહ્મચર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય

श्रमणो भवति। एतदेव वर्ण्यते-'आरंभ परिग्गहाओ' आरम्भपरिग्रहात्-आरम्भः =पृथिव्याद्युपमर्दः, परिग्रहः=बाह्याभ्यन्तरभेदाद् द्विविधः, तत्र-बाह्य परिग्रहः धर्मोपकरणातिरिक्तभिन्नवस्तुग्रहण, धर्मोपकरणेषु मूर्च्छा च। आन्तर' परिग्रह स्तु-मिथ्याविरतिकषायप्रमादाशुभयोगरूप', अनयोः समाहारद्वन्द्व, तस्माद् 'विरए' विरतो यः स श्रमणो भवति। तथा यः 'कोहमाणमायालोभा' क्रोध-मानमायालोभात्, अत्र-समाहारत्वादेस्त्वम् 'विरए' विरतः स श्रमणो भवति। अथैतादि सत्यया मिथ्यात्वादि लक्षणाऽऽभ्यन्तरपरिग्रहविरति विशदयन्नाह— 'एगे' इत्यादि, 'एगे असजमे' एकोऽसयमः-अविरतिलक्षणः, 'दो चेव राग-दोसा' द्वौ चैव रागद्वेषौ। तथा-'तिण्णि य' त्रयश्च 'दडा' दण्डा', तथा-त्रीणि 'गारवा य' गौरवाणि च, 'गुत्तीओ' गुप्तयः, 'तिण्णि य' तिस्रश्च। तथा-

गुणो से युक्त होता है वही श्रमण है। यह श्रमण (आरंभपरिग्गहाओ विरए) आरंभ और परिग्रह से सर्वथा विरत होता है। पृथिवी आदि जीवों का उपमर्दन जिन क्रियाओं से होता है वे सब आरंभ है। परिग्रह बाह्य और आभ्यन्तर के भेद से दो प्रकार का होता है। धर्मोपकरणों से भिन्न वस्तुओं का अपनाना-पास में रखना-तथा धर्मोपकरणों पर मूर्च्छाभाव-ममत्वभाव रखना यह बाह्यपरिग्रह है। मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, प्रमाद और अशुभयोग, ये सब अभ्यन्तर परिग्रह हैं। श्रमण वही हो सकता है जो आरंभ और बाह्याभ्यन्तर परिग्रह से सर्वथा विरत होता है। (विरए कोहमाणलोभा) इसी तरह जो क्रोध, मान, माया और लोभ, इनसे विरत होता है वही श्रमण कहलाता है। (एगे असजमे, दो चेव रागदोसा, तिण्णि य दडा-गारवाय, गुत्तीओ तिण्णि, तिण्णि य विराहणाओ, चत्तारिकसाया, झाणसण्णा, विगहा तहा

છે એજ શ્રમણ છે તે શ્રમણ "आरंभपरिग्गहाओ विरए" આરંભ અને પરિગ્રહથી તદ્દન વિરક્ત હોય છે પૃથિવી આદિ જીવોનું ઉપમર્દન જે ક્રિયાઓથી થાય છે તે સઘળાને આરંભ કહે છે પરિગ્રહના બે ભેદ છે-બાહ્ય પરિગ્રહ અને અભ્યાન્તર પરિગ્રહ ધર્મોપકરણો સિવાયની વસ્તુઓ પાસે રાખવી તથા ધર્મોપકરણો ઉપર મૂર્છાભાવ મમત્વભાવ રાખવો તે બાહ્યપરિગ્રહ છે મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, કષાય, પ્રમાદ અને અશુભ યોગ એ બધા આભ્યાન્તર પરિગ્રહ છે જે બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિગ્રહથી સર્વથા વિરક્ત હોય છે તે શ્રમણ થઈ શકે છે "विरए कोहमाणमायालोभा" એજ પ્રમાણે જ ક્રોધ, માન, માયા અને લોભથી રહિત હોય છે તે જ શ્રમણ કહેવાય છે "एगे असजमे, दोचेव रागदोसा, तिण्णियदडा-गारवाय, गुत्तीओ तिण्णि, तिण्णि य विराहणाओ,

'तिण्णि य' तिस्रश्च 'विराहणाओ' विराधनाः। तथा-'चत्तारि' चत्वारः 'कसाया' कषायाः। तथा-चत्तारि 'झाणा' ध्यानानि, 'तहा य' तथा च 'चउरो' चतस्रः 'विगहा' विकथा', 'हुंति' भवन्ति। तथा-'पंच' पञ्च 'किरियाओ' क्रियाः, तथा-पञ्च 'समिइंदियमहव्वयाइ य' समितीन्द्रियमहाव्रतानि च। पञ्च समितयः, पञ्चेन्द्रियाणि, पञ्च महाव्रतानि च। तथा-'छज्जीवनिकाया' षड्जीवनिकायाः। छच्चलेसाओ' षट् च लेश्याः। तथा-'सत्त भया' सप्त भयानि। तथा-'अट्ठमया' अष्टमदाः'। 'नव चेव य' नव चैव च 'बंभचेरगुत्तीओ' ब्रह्मचर्यगुप्तयः। 'दसप्पकारे य' दशप्रकारश्च = दशविधः, 'समणधम्मे' श्रमण धर्मः। तथा-'एक्कारस' एकादश 'उवासगाण' उपासकाना 'बारस य' द्वादश च 'भिक्खूण' भिक्षुणा 'पडिमा' प्रतिमाः। 'तेरस' त्रयोदश 'किरियाठाणाइ' क्रियास्थानानि। 'चउद्दस' चतुर्दश 'भूयगामा' भूतग्रामाः। ''पन्नरस' परमाहम्मिया' पञ्चदश परमाधार्मिकाः'। 'सोलसगाहा

य हुंति चउरो) तथा ये जो असयमादिक एक से लेकर तेतीस बोल हैं, जैसे-अविरतिरूप एक असयम, दो राग और द्वेष तीन दण्ड, तीन गौरव, तीन गुप्ति, तीन विराधना, चार कषाय, चार ध्यान, चार सज्ञा, चार विकथा, (पचकिरियाओ) पाच क्रिया, (समिइंदियमहव्वयाइ) पाच समिति, पाच इन्द्रिय पाच महाव्रत, (छज्जीवनिकायछच्चलेसाओ सत्तभयाअट्ठमया नव चेव य बभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समण धम्मे, एक्कारस उवासगाण बारसय भिक्खूण पडिमा) छह्जीवनिकाय छह लेश्या, सात भय, आठ मद, नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति, दश प्रकार का श्रमणधर्म, ग्यारहश्रावको की, बारह भिक्षुओ की प्रतिमाएँ, (तेरस किरियाट्ठाणाइ, चउद्दसभूयग्गामा, पन्नरसपरमाहम्मिया, सोलसगाहा

चत्तारि कसाया, झाणसण्णा विगहातहा य हुति चउरो" तथा આ જે અસયમાદિક એકથી લઈને તેત્રીસ બોલ છે, જેવા કે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ, બે રાગ અને દ્વેષ, ત્રણ દડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ ગુપ્તિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર કષાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્ઞા, ચાર વિકથા, "पच किरियाओ" પાચ ક્રિયા "समिइंदियमहव्वयाइ" પાચ સમિતિ પાચ ઇન્દ્રિય, પાચ મહાવ્રત, छज्जीवनिकाय छचलेसाओ सत्तभया अट्ठमया नवचेव य बभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्मे, एक्कारस, उवासगाण बारसयभिक्खूण पडिमा" છ જીવનિકાય, છ લેશ્યા, સાત ભય આઠ મદ, નવ બ્રહ્મચર્ય ગુપ્તિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, બાર ભિક્ષુઓની પ્રતિમાઓ, "तेरस किरियाट्ठाणाइ, चउद्दस-भूयगामा पन्नरसपरमाहम्मिया, सोलसगाहा सोलसा य असजम १७,

य' षोडशगाथा षोडशकानि च=गाथेति षोडशमध्ययनं येषां तानि गाथाषोड शकानि सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धाध्ययनानि, तानि च षोडशसंख्यकानि। तथा –सप्तदशविधः ' असंजमे ' असंयमः। अष्टादशविधम्, ' अबंभ ' अब्रह्मचर्यम्। तथा–एकोनविंशति संख्यकानि, ' णाय ' ज्ञातानि=ज्ञाताध्ययनानि। विंशति ' असमाहिट्ठाणा ' असमाधिस्थानानि, एकविंशतिः ' सबला य ' शबलाश्च। द्वाविंशति' ' परीसहा य ' परीषहाश्च। तथा–त्रयोविंशति संख्यकानि, ' सूयगडज्झयणा ' सूत्रकृताध्ययनानि। चतुर्विंशतिः ' देवा ' देवाः। पञ्चविंशति ' भावणा ' भावनाः षट्विंशतिः ' उद्देस ' उद्देशाः। सप्तविंशति' ' गुण ' गुणाः=अनगारगुणा। अष्टविंशति. ' कप्पा ' कल्पाः–आचारप्रकल्पा'। एकोनत्रिंशतिः ' पावसुय ' पापश्रुतानि। त्रिंशत्–' मोहणिज्ज ' मोहनीयानि= मोहनीयस्थानानि। एकत्रिंशत्–' सिद्धाइगुणा य ' सिद्धादिगुणाश्च सिद्धसहभा- विगुणाः। द्वात्रिंशत्–' जोगसंगह ' योगसंग्रहाः, तथा–द्वात्रिंशत्–' सुरिंदा '

सोलसा य असंजम १७, अबंभ १८, णाय १९, असमाहिट्ठाणा २०, सबला २१, य परीसहा २२ य, सूयगडज्झयणा २३) १३ क्रियास्थान, १४भूतग्राम, १५परमाधार्मिक, १६ सूत्रकृताङ्गके प्रथम श्रुतस्कंधके अध्ययन, १७ प्रकारका असंयम, १८ प्रकारका अब्रह्मचर्य, १९ ज्ञाताके अध्ययन, २० प्रकारके असमाधिस्थान, २१ प्रकारके शबल, २२ परीषह, २३ सूत्र- कृताङ्गके अध्ययन (देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८ पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाइगुणा ३१, य जोगसंगह ३२, सुरिंदा ३३, तित्तीसासायणा) २४ देव, २५ भावना, २६ उद्देश, २७ अनगार गुण, २८ आचारप्रकल्प, २९ पापश्रुत, ३० मोहनीयस्थान, ३१ सिद्धसहभाविगुण, ३२ योगसंग्रह, ३३ सुरेन्द्र–भवनपतियोंमें २०,

---

અબંભ ૧૮, ણાય ૧૯, અસમાહિટ્ઠાણા ૨૦, સબલા ૨૧, ય પરીસહા ૨૨ ય, સૂયગડજ્ઝયણા ૨૩ " ક્રિયાસ્થાન, ૧૪ ભૂતગ્રામ, ૧૫ પરમાધાર્મિક, ૧૬ સૂત્રકૃતાંગના પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના અધ્યયન, ૧૭ પ્રકારના અસંયમ, ૧૮ પ્રકારનું અબ્રહ્મચર્ય, ૧૯ જ્ઞાતાના અધ્યયન, ૨૦ પ્રકારના અસમાધિ સ્થાન, ૨૧ પ્રકારના શબલ, ૨૨ પરીષહ, ૨૩ સૂત્રકૃતાંગના અધ્યયન, " દેવ ૨૪, ભાવણા ૨૫, ઉદ્દેસ ૨૬, ગુણ ૨૭, કપ્પ ૨૮, પાવ સુય ૨૯, મોહણિજ્જ ૩૦, સિદ્ધા ઇગુણા ૩૧, ય જોગસંગહ ૩૨, સુરિંદા ૩૩ તિત્તીસાસાયણા " ૨૪ દેવ, ૨૫ ભાવના, ૨૬ ઉદ્દેશ, ૨૭ અણગાર ગુણ, ૨૮ આચાર પ્રકલ્પ, ૨૯ પાપશ્રુત, ૩૦ મોહનીય સ્થાન, ૩૧ સિદ્ધ સહભાવિ ગુણ ૩૨ યોગ સંગ્રહ, ૩૩ સુરેન્દ્ર,

'तिण्णि य' तिस्रश्च 'विराहणाओ' विराधनाः। तथा-'चत्तारि' चत्वारः 'कसाया' कषाया। तथा-चत्वारि 'झाणा' ध्यानानि, 'तहा य' तथा च 'चउरो' चतस्रः 'विगहा' विकथा', 'हुंति' भवन्ति। तथा-'पंच' पञ्च 'किरियाओ' क्रियाः, तथा-पञ्च 'समिइंदियमहव्वयाइं य' समितीन्द्रियमहाव्रतानि च। पञ्च समितयः, पञ्चेन्द्रियाणि, पञ्च महाव्रतानि च। तथा-'छज्जीवनिकाया' षड्जीवनिकाया। छच्चलेसाओ' षड् च लेश्याः। तथा-'सत्त भया' सप्त भयानि। तथा-'अट्ठमया' अष्टमदाः। 'नव चेव य' नव चैव च 'बंभचेरगुत्तीओ' ब्रह्मचर्यगुप्तयः। 'दसप्पकारे य' दशप्रकारश्च = दशविधः, 'समणधम्मे' श्रमण धर्मः। तथा-'एक्कारस' एकादश 'उवासगाणं' उपासकाना 'बारस य' द्वादश च 'भिक्खूण' भिक्षुणा 'पडिमा' प्रतिमा'। 'तेरस' त्रयोदश 'किरियाठाणाइं' क्रियास्थानानि। 'चउद्दस' चतुर्दश 'भूयगामा' भूतग्रामाः। ''पन्नरस' परमाहम्मिया' पञ्चदश परमाधार्मिकाः। 'सोलसगाहा

य हुंति चउरो) तथा ये जो असंयमादिक एक से लेकर तेतीस बोल है, जैसे-अविरतिरूप एक असंयम, दो राग और द्वेष तीन दण्ड, तीन गौरव, तीन गुप्ति, तीन विराधना, चार कषाय, चार ध्यान, चार संज्ञा, चार विकथा, (पंचकिरियाओ) पांच क्रिया, (समिइंदियमहव्वयाइं) पांच समिति, पांच इन्द्रिय पांच महाव्रत, (छज्जीवनिकायछच्चलेसाओ सत्तभयाअट्ठमया नव चेव य बंभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समण धम्मे, एक्कारस उवासगाण बारसय भिक्खूण पडिमा) छहजीवनिकाय छह लेश्या, सात भय, आठ मद, नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति, दश प्रकार का श्रमणधर्म, ग्यारहश्रावको की, बारह भिक्षुओ की प्रतिमाएँ, (तेरस किरियाट्ठाणाइं, चउद्दसभूयग्गामा, पन्नरसपरमाहम्मिया, सोलसगाहा

चत्तारि कसाया, झाणसण्णा विगहातहा य हुंति चउरो" तथा આ જે અસંયમાદિક એકથી લઈને તેત્રીસ બોલ છે, જેવા કે-અવિરતિરૂપ એક અસંયમ, બે રાગ અને દ્વેષ, ત્રણ દંડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ ગુપ્તિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર કષાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સંજ્ઞા, ચાર વિકથા, "पंच किरियाओ" પાંચ ક્રિયા "समिइंदियमहव्वयाइं" પાંચ સમિતિ પાંચ ઇન્દ્રિય, પાંચ મહાવ્રત, छज्जीवनिकाय छचलेसाओ सत्तभया अट्ठमया नवचेव य बंभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्मे, एक्कारस, उवासगाण बारसयभिक्खूण पडिमा" છ જીવનિકાય, છ લેશ્યા, સાત ભય આઠ મદ, નવ બ્રહ્મચર્ય ગુપ્તિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, બાર ભિક્ષુઓની પ્રતિમાઓ, "तेरस किरियाट्ठाणाइं, चउद्दस-भूयगामा पन्नरसपरमाहम्मिया, सोलसगाहा सोलसा य असंजम १७,

अविरतिषु=अविरतिरूपेण भगवता कथितेषु प्राणातिपातादिषु च, तथा-'अण्णेसु य' अन्येषु च 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एवं विधेषु 'बहुसु ट्ठाणेसु' बहुषु स्थानेषु=अनेकविधेषु पदार्थेषु सत्यास्थानेषु वा चतुस्त्रिंशदादिषु, कीदृशेष्वेषु? 'जिणपसत्थेसु' जिनप्रशस्तेषु=जिनकथितेषु, अतएव—'अवितहेसु' अवितथेषु=सत्येषु, पुनः-'सासयभावेसु' शाश्वतभावेषु=ओघतोऽक्षयस्वभावेषु, अतएव-'अवट्ठिएसु' अवस्थितेषु=सर्वदा भाविषु 'सकं' शङ्का=सन्देह, 'कख' काङ्क्षा=परमतवाञ्छा 'निराकरित्ता' निराकृत्य=दूरीकृत्य श्रमणः, 'सद्दहति' श्रद्धाति 'भगवओ' भगवतो जिनस्य 'सासण' शासनम् कीदृश' सन् श्रमणो जिनस्य शासन श्रद्धातीत्याह — 'अणियाणे' अनिदान =देवर्द्ध्यादिवाञ्छारहितः, 'अगारवे' अगौरव'= ऋद्ध्यादिगारववर्जितः, 'अलुद्धे' अलुब्ध =विषयेष्वलम्पट' 'अमूढे' अमूढः, तथा-'मणोवयणकाय

एकाग्रतारूप प्रणिधानो में (अविरइसु) भगवान के द्वारा अविरतरूपसे कथित प्राणातिपात आदिको में तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु) और भी इसी तरहके दूसरे (बहुसु ट्ठाणेसु) अनेक पदार्थो मे अथवा (जिणपसत्थेसु) चोंतीस आदि सत्यास्थानो में जो कि जिनकथित है और इसी कारण (अवितहेसु) जिन मे असत्यता का थोड़ा साभी स्थान नहीं, अर्थात सर्वथा सत्य है, तथा (सासयभावेसु) सामान्यकी अपेक्षा जिनका अक्षय स्वभाव है, और इसीसे (अवट्ठिएसु) जिनकी सत्ता सदा रहती है उनमें (सक) शका-सदेह को (कख) काक्षा-परमतवाछा को (निराकरित्ता) दूर करके जो श्रमण (अनियाणे) निदान-देवर्द्ध्यादि प्राप्तिकी इच्छा से विहीन बन कर (अगारवे) ऋद्ध्यादि गौरव से रहित हो कर (अलुद्धे) विषयों मे लपटतासे रिक्त होकर और

"अविरइसु" ભગવાન દ્વારા અવિરતરૂપે કથિત પ્રાણાતિપાત આદિ તથા "अण्णेसु य एवमाइएसु" બીજા પણ એ જ પ્રકારના 'बहुसु ट्ठाणेसु" અનેક પદાર્થોમા અથવા "जिणपसत्थेसु" ચોત્રીસ આદિ સત્યા સ્થાનોમા કે જે જિન કથિત છે અને એજ કારણે "अवितहेसु" જેમનામા અસત્યતાનુ જરા પણ સ્થાન નથી એટલે કે જે સર્વથા સત્ય છે, તથા "सासय भावेसु" સામાન્યની અપેક્ષાએ જિનનો અક્ષય સ્વભાવ છે, અને તેથી જ "अवट्ठिएसु" જેની સત્તા સદા રહે છે, તેમનામા "सक" શકા-સદેહને "कख" કાક્ષા-પરમત વાચ્છનાને 'निराकरित्ता' દૂર કરીને જે શ્રમણ "अनियाणे" નિદાન-દેવર્દ્ધ્યાદિ પ્રાપ્તિની ઇચ્છાથી રહિત બનીને "अगारवे" ઋદ્ધ્યાદિ ગૌરવથી રહિત થઈને "अलुद्धे" વિષયોની લાલસાથી રહિત

सुरेन्द्राः, विंशतिर्भवनपतिषु, द्वादशसु कल्पेषु दश, तत्र-अष्टसु कल्पेष्वष्टौ, नवम दशमयोरेक', एकादश द्वादशयोरेक इति, द्वौ ज्योतिष्केषु, चन्द्रसूर्याणामसंख्या तत्वेऽपि जातिग्रहणाद् द्वाभ्याम्, एवं द्वात्रिंशदिन्द्राः। 'तित्तीसासायणा' त्रय स्त्रिंशदाशातनाः, असंयमाद्याशातनान्तानामेषा व्याख्याऽऽवश्यकसूत्रस्यास्मत्कृत मुनितोषण्याख्याया व्याख्याया द्रष्टव्या। एते हि 'आदि एकाइय' आदिका दिकम्=आदेः=प्रथमतः एकादिकम्=एकद्व्यादिकं 'करेत्ता' कृत्वा=आश्रित्य 'एकुत्तरियाए' एकोत्तरिकया=एक उत्तरे यस्याः सा तया 'वुड्ढीए' वृद्ध्या क्रमश एकैक वृद्ध्येत्यर्थः, 'वुड्ढिएसु' वर्द्धितेषु=वृद्धिप्राप्तेषु सत्सु 'जाव य' यावच्च 'तिगाहिया' त्रिकाधिकाः=त्र्यधिकाः 'तीसा' त्रिंशत्=त्रयस्त्रिंशत् 'भवे' भवति। अत्र 'एएसु' इति गम्यम्, एतेष्वनुपदमुक्तेषु असंयमादिषु, तथा— 'विरइपणिहिसु' विरतिप्रणिधिषु=विरतयः=प्राणातिपातविरमणानि, प्रणिधय= प्रणिधानानि चित्तैकाग्रतारूपाणि, अनयोर्द्वन्द्वः, तेषु तथोक्तेषु, तथा 'अविरइसु'

बारह कल्पों में १०=८ आठ कल्पों में ८, नवमें दसवे कल्पमें १ ग्यारहवे बारहवे १) ज्योतिषियों में जाति की अपेक्षा चन्द्र और सूर्य २ इस प्रकार ३२। और आशातना ३३। इन सबकी व्याख्या आवश्यक सूत्र की पूज्यश्री घासीलालजी महाराजद्वारा की गई मुनि-तोषणी नामकी टीका मे की गई है-अतः जिज्ञासुजन इस विषयको वहां से देखलें। (आदि एक्काइय करेत्ता) इस प्रकार ये प्रथम एकादि संख्याको लेकर के क्रमशः (एगुत्तरियाए वुड्ढिए वुड्ढिएसु) एक२ की वृद्धिसे वर्द्धित होते २ (तीसाओ जाव य भवे तिगहिया) तीन अधिक तीस अर्थात् तेतीस हो जाते हैं। इन असंयमादि तेतीस प्रकार तक के संख्या स्थानों में तथा (विरइपणिहिसु) प्राणातिपात विरमणरूप विरतियों मे, चित्त की

ભવનપતિઓમા૨૦, બાર કલ્પોમા૧૦ (આઠ કલ્પોમા૮,નવમા અને દશમા કલ્પમા ૧ અને અગિયાર તથા બારમા કલ્પમા એક) જ્યોતિષિયોમા જાતિની અપેક્ષાએ સૂર્ય અને ચન્દ્ર એમ બે સુરેન્દ્ર એ રીતે કુલ ૩૨ સુરેન્દ્રો થયા અને અશાતના ૩૩ આ બધાની વ્યાખ્યા આવશ્યક સૂત્રની પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ દ્વારા કરાયેલ મુનિતોષણી નામની ટીકામા આપેલ છે તો જિજ્ઞાસુ જન તે વિષયને તેમાથી જોઇ લે "आदि एक्काइय करेत्ता" આ રીતે પહેલેથી એકાદિ સખ્યાને લઇને ક્રમશ "एगुत्तरियाए वुड्ढिए वुड्ढिएसु" એક એક વધારતા જતા "तीसाओ जाव य भवेतिगाहिया" તેત્રીસ થઇ જાય છે એ અસયમાદિ તેત્રીસમા પ્રકાર સુધીના સખ્યા સ્થાનોમા તથા "विरइ पणिहिसु" પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ વિરતિઓમા, ચિત્તની એકાગ્રતારૂપ પ્રણિધાનોમા

सः, तथा-'धिइकदो' धृतिकन्द.=धृतिः=चित्तस्वास्थ्य सैव कन्दो मूलाधोभाग रूपो यस्य स', तथा-'विणयवेइओ' विनयवेदिकः=विनय एव वेदिका=वेदिर्यस्य स, तथा-'निग्गयतेलोक्कविपुलजसनिचियपीणपीवरसुजायखंधो' निर्गतत्रैलोक्यविपुलयशोनिचितपीनपीवरसुजातस्कन्ध.=तत्र निर्गत=व्याप्त त्रैलोक्ये यत्त न्निर्गतत्रैलोक्य लोकत्रयव्याप्तमित्यर्थः, एतादृश यद् विपुल=विशाल यश.=ख्यातिस्तदेव निचितो=निविड' पीनो=महान् पीवर =पुष्टः सुजात.=सुनिष्पन्नः स्कन्धो यस्य सः, तथा-'पचमहव्वयविसालसालो' पञ्चमहाव्रतविशालशालः=पञ्चमहाव्रतान्येव विशालाः=विस्तृताः शालाः=शाखा यस्य सः, तथा-'भावणातयतज्झाणसुभगजोगनाणपल्लववरंकुरधरो' भावनात्वगन्त ध्यानसुभगयोगज्ञानपल्लववराङ्कुरधर, तत्र-भावनैव=अनित्यत्वादिचिन्तनलक्षणैव त्वगन्त'=त्वग्रूपोऽन्तयो यस्य स, भावनारूपत्वचासम्पन्नइत्यर्थ, तथा-ध्यानम्=धर्मध्यानादि, शुभयोगा'=शुभमनोवाक्कायव्यापाराः, ज्ञान=बोध' तान्येव पल्लवावराङ्कुराश्च तेषा धरो य' सः, अनयो कर्मधारय, तथा-'बहुगुणकुसुमसमिद्धो' बहुगुणकुसुमसमृद्धः=बहवो ये

विशुद्ध मूल सम्यग्दर्शन है। (धिइकदो) चित्तस्वास्थ्यरूप धैर्य ही इस का कद है, (विणयवेइओ) विनय ही इसकी वेदिका-उत्पत्ति भूमि है। (निग्गय-तेल्लोक्कविउलजसनिचियपीणपीवरसुजायखधो) त्रैलोक्य में व्याप्त यश ही इसका निविड, पीन-बडा-पीवर-पुष्ट और सुजात-सुहावना-स्कध है। (पचमहव्वयविसालसालो) पाँच महाव्रत ही इसकी विशाल शाखाएँ हैं। (भावणातयतज्झाणसुभगजोगनाणपल्लववरकुरधरो) अनित्य आदि भावनाएँ ही इसकी त्वचा-छाल है, धर्मध्यान आदि ध्यान, मन, वचन और काय की शुभ प्रवृत्तिरूप, व्यापार एव सम्यक्ज्ञान, ये सब ही इसके पत्ते और उत्तम पल्लवाङ्कुर हैं, (बहुगुण कुसुमसमिद्धो (क्षान्त्यादि अनेक गुणोरूपी पुष्प से यह सदा समृद्ध

મૂળ છે "धिइकदो" ચિત્ત સ્વસ્થતારૂપ ધૈર્ય જ તેનુ કદ છે "विणय वेइओ" વિનય જ તેની વેદિકા ઉત્પત્તિની ભૂમિકા છે "निग्गयतेल्लोक्कविउलजस निचियपीवरसुजायखधो" ત્રિલોકમા વ્યાપ્ત યશ જ તેનુ નિવિડ, પીન-મોટુ-પીવર-મજબૂત અને સુજાત-સુદર થડ છે "पचमहव्वय विसालसालो" પાચ મહાવ્રત જ તેની વિશાળ શાખાઓ છે "भावणातयतज्झाणसुभगजोगनाण पल्लववरकुरधरो" અનિત્ય આદિ ભાવના જ તેની છાલ છે, ધર્મધ્યાન આદિ ધ્યાન, મન, વચન અને કાયની શુભ પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યાપાર, અને જ્ઞાન, એ સૌ તેના પત્તા, અને ઉત્તમ પલ્લવાકુરો છે "बहुगुणकुसुमसमिद्धो" ક્ષાન્ત્યાદિ

गुप्ते' मनोवचनकायगुप्तश्च श्रमणो भवति। अथाऽपरिग्रहसंवरं वृक्षोपमया वर्णयन्नाह–'जो सो' यः सः=संवरपादपो यः सः स चरमं संवरद्वारमिति योगः कीदृशः संवरपादपः इत्याह—'वीरवरवयणविरइपवित्थरबहुविहप्पगारो' वीरवरवचनविरतिप्रविस्तरबहुविधप्रकारः=वीरवरस्य=भगवतो महावीरस्य यद्वचनम्=आज्ञा, तत' सकाशाद् या विरति'=परिग्रहान्निवृत्ति सैव प्रविस्तरो विस्तरयुक्तो बहुविध'=अनेकविधः–विचित्रविषयापेक्षया क्षायोपशमाद्यपेक्षया च पादपपक्षे मूलकन्दाद्यपेक्षयाऽनेकविध प्रकारः भेदो यस्य स', तथा–'समत्तविसुद्धबद्धमूलो' सम्यक्त्वविशुद्धबद्धमूल:=सम्यक्त्वमेव=सम्यग्दर्शनमेव विशुद्ध = बद्ध मूल यस्य

(अमूढे) मूढता से वर्जित होकर तथा (मणवयणकायगुत्ते) मन, वचन और काय की सरलता से सपन्न बनकर (भगवओ) भगवान् जिनेन्द्र के (सासण) शासन का (सद्दहइ) श्रद्धान करता है वही श्रमण सच्चा श्रमण है। अब सूत्रकार इस अपरिग्रहसवर का वृक्ष की उपमा देकर वर्णन करते हैं—(जो सो) जो यह अन्तिम सवरद्वार रूप सवरवृक्ष है वह (वीरवरवयणविरइपवित्थरबहुविहप्पगारो) अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर की आज्ञा से जो परिग्रह से जीव की निवृत्ति होती है उस रूप है। यह परिग्रह से निवृत्ति ही इस वृक्ष के विस्तृत अनेक प्रकार–भेद हैं। तात्पर्य इस का यह है कि जिस प्रकार मूल कन्द आदि की अपेक्षा को लेकर एक ही वृक्ष विविध प्रकारों वाला माना जाता है उसी प्रकार यह परित्यागरूप अपरिग्रह भी विचित्र विषयों के त्याग की अपेक्षा और कर्मों के क्षयोपशम आदि की अपेक्षा से अनेक प्रकार का होता है। (समत्तविसुद्धबद्धमूलो) इस वृक्ष का–

બનીને અને "अमूढे" મૂઢતાથી રહિત થઇને તથા "मणवयणकायगुत्ते" મન, વચન અને કાયની સરળતાથી યુક્ત બનીને 'भगवओ' ભગવાન જિનેન્દ્રના "सासण" શાસનનુ "सद्दहइ" શ્રદ્ધાન કરે છે તે શ્રમણ જ સાચો શ્રમણ છે

હવે સૂત્રકાર આ અપરિગ્રહ સવરને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનુ વર્ણન કરે છે–"जो सो" જે આ છેવટના પરિગ્રહદ્વાર રૂપ અપરિગ્રહ સવર વૃક્ષ છે તે "वीरवरवयणविरइपवित्थरबहुविहप्पगारो" અતિમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરની આજ્ઞાથી જે પરિગ્રહથી જીવની નિવૃત્તિ થાય છે તે રૂપ છે તે પરિગ્રહથી નિવૃત્તિ લેવી એ જ આ વૃક્ષના વિસ્તૃત અનેક પ્રકાર–ભેદ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે જેમ મૂળ, કદ આદિની અપેક્ષાએ એક જ વૃક્ષ જેમ અનેક પ્રકારો વાળુ મનાય છે તેમ આ પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહ પણ વિચિત્ર વિષયોના ત્યાગની અપેક્ષાએ તથા કર્મોના ક્ષયોપશમ આદિની અપેક્ષાએ અનેક પ્રકારનુ હોય છે "समत्तविसुद्धबद्धमूलो" સમ્યગ્દર્શન આ વૃક્ષનુ વિશુદ્ધ

भावार्थ—चतुर्थ संवर द्वार के प्ररूपण के बाद अब सूत्रकार पंचम संवर द्वारका वर्णन कर रहे हैं। इसके वर्णन करने का प्रयोजन उन्हों ने इस प्रकार कहा है कि जब तक जीव की बाह्याभ्यन्तर रूप परिग्रहसे निवृत्ति नहीं होती तब तक वह चतुर्थ संवरद्वारका पूर्ण रूप से आराधक नहीं बनता है। धर्मोपकरणो के सिवाय अन्य पदार्थो का ग्रहण करना अथवा धर्मोपकरणों में मूर्च्छाभाव रखना इसका नाम परिग्रह है। मूर्च्छा का नाम आसक्ति है। वस्तु छोटी हो, बडी हो, चेतन हो चाहे अचेतन हो बाह्य हो या आन्तरिक हो कैसी ही हो, चाहे न भी हो, तो भी उसमें आसक्तिसे बंधे रहना–उसकी लगन में विवेक खो बैठना परिग्रह है। इस परिग्रहसे युक्त हुआ प्राणी क्रोध, मान, माया और लोभ कषायों से बंधा रहता है। राग द्वेष उसकी आत्मा मे हिलोरे लेते रहते हैं। संयमके महत्त्व की गणना उसके चित्त मे नही होती है। प्रभु द्वारा प्रतिपादित अपरिग्रह के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा वह विचार नहीं कर सकता है, अतः सच्चे अर्थ में श्रमण वही है जो इस परिग्रह से दूर है–विरक्त है। अपरिग्रही जीवके लिये प्रभुका आदेश है कि वह प्रभु द्वारा प्रतिपादित शासन में न शंका करे न कांक्षा करे–

ભાવાર્થ—ચોથા સંવરદ્વારનું વર્ણન કર્યા પછી હવે સૂત્રકાર પાંચમાં સંવરદ્વારનું વર્ણન કરે છે તેનું વર્ણન કરવાનો હેતુ તેમણે એવો બતાવ્યો છે કે જ્યાં સુધી બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિગ્રહથી જીવ નિવૃત્ત થતો નથી ત્યાં સુધી તે ચોથા સંવરદ્વારનો પૂર્ણ રીતે આરાધક બની શકતો નથી ધર્મો પકરણો સિવાયના અન્ય પદાર્થોને અપનાવવા અથવા ધર્મોપકરણોમાં (મૂર્છા-ભાવ) મમત્વભાવ રાખવો તેનું નામ પરિગ્રહ છે મૂર્છા એટલે આસક્તિ વસ્તુ નાની હોય કે મોટી હોય, જડ હોય કે ચેતન હોય, બાહ્ય હોય કે આન્તરિક હોય, ભલે ગમે તેવી હોય, ભલે ન પણ હોય, તો પણ તેમાં આસક્તિથી બંધાઈ રહેવું–તેની લગનમાં વિવેકને ગુમાવી બેસવો તે પરિગ્રહ ગણાય છે આ પરિગ્રહ વાળો માણસ ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ કષાયો વડે બંધાયેલો રહે છે રાગદ્વેષ તેના આત્મામાં તોફાન મચાવે છે સંયમનું મહત્ત્વ તેના ચિત્તમાં નહી જેવું હોય છે પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત અપરિગ્રહના સિદ્ધાન્તની પ્રતિષ્ઠાનો તે વિચાર કરી શકતો નથી, તેથી સાચો શ્રમણ તો એ જ છે કે જે આ પરિગ્રહથી વિરક્ત છે અપરિગ્રહી જીવને માટે પ્રભુનો આદેશ છે કે તે પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત શાસનમાં શંકા ન કરે ન કાંક્ષા ન

गुणाः क्षान्त्यादिरूपास्त एव कुसुमानि=पुष्पाणि तैः समृद्धः, तथा 'सीलसुगंधो' शीलसुगन्धः, शील सदाचारो ब्रह्मचर्यं वा, तदेव शोभनो गन्धो यस्मिन् सः, तथा–'अणण्हवफलो' अनाश्रवफल =आश्रवो=नवकर्मोदयः, न आश्रवोऽनाश्रव, स एव फल यस्य सः, आस्रवनिरोधरूपफलसम्पन्न इत्यर्थः, 'पुणो य' पुनश्च 'मोक्खवरवीयसारो' मोक्षवरबीजसारः=मोक्षवर= वरमोक्षः–अव्याबाध सुख रूपः, तस्य बीजसारः–श्रेष्ठ बीजरूपः, तथा– 'मदरगिरिसिहरचूलिया इव' मन्दरगिरिशिखरचूलिकेव मन्दगिरेः=मेरुपर्वतस्य यत् शिखर तस्य या चूलिका= चूडा सेव, तथा 'इमस्स' अस्य–प्रसिद्धस्य 'मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स' मोक्षवर मुक्तिमार्गस्य=मोक्षः=सकलकर्मक्षयलक्षण ,तदर्थो वरः=श्रेष्ठो मुक्तिरूपो=निर्लोभता रूपएव मार्गः=पन्थास्तस्य 'सिहरभूओ' शिखरभूतः एतादृश 'सवरवरपायवो' सवरवरपादपः=सवरः=आस्रवनिरोधः, स एव वरपादप =श्रेष्ठवृक्षोऽस्ति । एतादृशमिद 'चरिम' चरमम् = पञ्चसु सवरद्वारेष्वन्तिमम्, 'सवरदार' सवरद्वारम्, अस्ति ॥ सू० १ ॥

बना रहता है। (सीलसुगधो) सदाचार अथवा ब्रह्मचर्य इसकी सुहावनी गध है, अणण्हवफलो) आस्रव–नवीन कर्मों के आगमन का जो रुकना होता है वही इसका फल है—इन फलो से ही यह युक्त बना हुआ है। (पुणो य) फिर (मोक्खवरवीयसारो) अव्याबाध सुखवाले मोक्ष का यह एक श्रेष्ठ बीज है। (मदरगिरिसिहरचूलिया इव) सुमेरु पर्वत के शिखर की चूलिका के समान है (इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ) इस प्रसिद्ध सकल कर्मक्षय मोक्ष का जो निर्लोभतारूप मार्ग है उसका शिखरभूत है। (सवरपायवो) इस तरह का यह सवररूप श्रेष्ठ वृक्ष है। इस प्रकार (चरिम सवरदार) पाच सवर द्वारोमें यह अन्तिम सवर द्वार कहा गया है।

અનેક ગુણો રૂપી પુષ્પોથી તે સદા સમૃદ્ધ રહે છે "सीलसुगधो" સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્ય જ તેની સુદર ગધ છે, "अणण्हवफलो" આસ્રવ–નવા કર્મોના આગમનનુ અટકવુ–એજ તેના ફળ છે એ ફળોથી જ તે યુક્ત હોય છે "पुणोय" વળી "मोक्खवरवीयसारो" અવ્યાબાધ સુખવાળા મોક્ષનુ તે એક શ્રેષ્ઠ બીજ છે "मदरगिरिसिहरचूलियाइव" સુમેરુ પર્વતના શિખરની ટોચ સમાન છે, "इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ" એ પ્રસિદ્ધ સકળ કર્મક્ષય મોક્ષનો જે નિર્લોભતા રૂપ માર્ગ છે તે તેના શિખર સમાન છે "सवरपायवो" આ પ્રકારનુ આ સવરરૂપ શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ છે આ પ્રકારે "चरिम सवरदार" પાચ સવરદ્વારમાનુ આ અતિમ સવરદ્વાર કહેવાયુ છે

सजमनायगेहि तित्थंकरेहि सव्वजगजीववच्छलेहि तिलोयमहिएहि जिणवरिंदेहि एस जोणी जगाणं दिट्ठा, न कप्पइ जोणी समुच्छिदोत्ति । तेण हि वज्जेति समणसीहा ॥सू०२॥

टीका—'जत्थ' यत्र=परिग्रहविरमणलक्षणे चरमसवरद्वारे 'गामागरणगरखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमगय' ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमगत च, ग्रामादीना व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, तेषु गत=स्थित च 'किंचि' किञ्चित्=किमपि वस्तु 'अप्प वा' अल्प वा=स्वल्पमूल्यकपर्दिकादिक वा 'बहु वा' बहु च=बहुमूल्य रत्नादिक वा 'अणु वा' अणु वा=प्रमाणतो लघु मुक्ताफलादिक वा, 'थूल वा' स्थूल वा=प्रमाणत स्थूल काष्ठादिक वा, अत्र सर्वत्र च शब्दो वाऽर्थकः, 'तसथावरकायदव्वजाय' त्रसस्थावरकायद्रव्यजात=तत्र—त्रसकाय=शिष्यादिक स्थावरकाय=रत्नादिक, तद्रूप द्रव्यजात 'मणसा वि' मन

अब सूत्रकार त्रस स्थावरविषयक अपरिग्रह का वर्णन करते हैं—'जत्थ न कप्पइ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(जत्थ) जिस परिग्रहविरमणरूप अन्तिमचरमसवरद्वार मे स्थित साधु को (गामागरनगरखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमगय च) ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्वट, मडब, द्रोणमुख, पत्तन और आश्रम, इनमे रक्खी हुई, भूली हुई, पडी हुई (किंचि वि) कुछ भी चीज (अप्प वा) चाहे वह कोडी आदि जैसी अल्पमूल्यवाली हो (बहु वा) चाहे रत्नादिक जैसी बहुमूल्यवाली हो (अणु वा) चाहे छोटी हो (थूल वा) चाहे बडी हो, (तसथावरकायदव्वजाय) चाहे त्रस, स्थावरकायरूप द्रव्य जात हो—शिष्यादिक त्रसकाय है, रत्नादिक स्थावरकाय हैं उन्हें

હવે સૂત્રકાર ત્રસ સ્થાવર સબધી અપરિગ્રહનુ વર્ણન કરે છે—

'जत्थ न कप्पइ" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—'जत्थ" જે પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અતિમ સવરદ્વારનુ આરાધન કરતા સાધુને "गामागरनगरखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमगय च" ગ્રામ, આકર નગર, ખેટ, કબર, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન અને આશ્રમ, તેમા રાખેલી, ભૂલથી પડી રહેલી, પડી રહેલી "किंचि वि" કોઈ પણ ચીજ "अप्प वा" ભલે તે કોડી આદિ જેવી નજીવી કીમતની હોય, "बहुवा" ભલે તે રત્નાદિ બહુ મૂલ્યવાન હોય, "अणुवा" ભલે નાની હોય, "थूलवा" કે મોટી હોય, 'तसथावरकायदव्वजाय" ભલે ત્રસ, સ્થાવરકાય રૂપ દ્રવ્ય જાત હોય—શિષ્યાદિક ત્રસકાય ગણાય છે, રત્નાદિક સ્થાવરકાય ગણાય

त्रसस्थावरादि विषयकापरिग्रहं वर्णयति—'जत्थ न' इत्यादि ।

मूलम्—जत्थ न कप्पइ गामागरणगर—खेडकब्बडमडब-दोणमुहपट्टणासमगयं च किंचि अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा तसथावरकायदव्वजायं मणसा वि परिघेत्तुं न धनहिरण्णसुवण्णखेत्तवत्थु, न दासीदास–भयक –पेसहय गयगवेलगं वा, न जाणजुग्गसयणासणाइं, न छत्तकं, न कोंडिकं, नोवाणहं, न पेहुणवीयणतालियंटगा, ण यावि अयतउयतंबसीसगकंसरयय—जायरूवमणिमुत्ताहारपुडग-संखदंतमणिसिंगसेलकायवरचेलचम्मपत्ताइं महारिहाइं परस्स अज्झोववायलोभजणणाइं परिकड्ढिउं गुणवओ, न यावि पुप्फफलकंदमूलादिकाइं सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइं तीहिं वि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसहभेसज्जभोयणट्ठयाए संजयाणं किं कारणं अपरिमियणाणदंसणधरेहिं सीलगुणविणयतव-

केवल इनसे विहीन होकर वह उनके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वोंमें अपनी पूर्ण अडिग श्रद्धा रखे। प्रभुने जो यहां पर एक आदिसे लेकर तेतीस तक के संख्यास्थान कहे हैं, उनमें तथा अविरति आदि जो और भी स्थान कहे हैं उनमें निःशंकित भावसे श्रद्धा करनी चाहिए, तभी जा कर वह सच्चा श्रमण कहला सकता है। इत्यादि विषय को प्रतिपादन करते हुए सूत्रकारने इस अपरिग्रहरूप संवर द्वारकी विवेचना वृक्षकी उपमा समता लेकर की है ॥ सू० १ ॥

करे ફક્ત તેનાથી રહિત થઈને તે તેમના દ્વારા પ્રતિપાદિત તત્ત્વોમાં પોતાની પૂર્ણ તથા અડગ શ્રદ્ધા રાખે પ્રભુએ અહીં જે એક આદિથી લઈને તેત્રીસ સુધીનાં સંખ્યાસ્થાન બતાવ્યાં છે તેમનામાં, તથા અવિરતિ આદિ જે બીજા પણ સ્થાન બતાવ્યાં છે તેમાં નિઃશંકિત ભાવથી શ્રદ્ધા રાખવી જોઈએ, ત્યારેજ તેને સાચો શ્રમણ કહી શકાય છે ઈત્યાદિ વિષયનું પ્રતિપાદન કરતા સૂત્રકારે આ અપરિગ્રહ રૂપ સંવરદ્વારને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનું વિવેચન કર્યું છે સૂ૦૧

साऽपि परिग्रहीतु न्कल्पते। तथा न 'उवाणह' उपानहम्-उपलक्षणत्वात्पादुका-मोजादिकं चाऽपि परिग्रहीतुं न कल्पते, तथा-न 'पेहुणवीयणतालियंटगा' पेहुण व्यजनतालवृन्तकानि, पेहुण=मयूरपिच्छम्, व्यजन=वंशादि निर्मितम्, ताल वृन्तक=तालपत्रनिर्मित व्यजनम्, एतानि 'पंखा' इति भाषाप्रसिद्धानि, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः तानि मनसापि परिग्रहीतु न कल्पन्ते, तथा-'ण यावि' न चापि ' अयतउयतम्बसीसकंसरययजायरूवमणिमुत्ताहारपुडगसंखदंतमणिसिंगसेल-कायवरचेलचम्मपत्ताइ' अयस्त्रपुताम्रसीसकांस्यरजतजातरूपमणिमुक्ताहारपुटक-शङ्खदन्तमणिशृङ्गशैलकाचवरचेलचर्मपात्राणि, तत्र = अयो = लोहः, त्रपु=रङ्गम्, 'कथीर' 'रांगा' इति प्रसिद्धम्, ताम्र=प्रसिद्धम्, सीस='सीसा' इति प्रसिद्धम्, कांस्यम्=त्रपुताम्रसंयोगज द्रव्यम्, रजतम्='चान्दी' प्रसिद्धम्, जातरूपम्=सुवर्णम्, मणयः=इन्द्रनीलाद्याः, मुक्ताः=मुक्ताफलानि, हारपुटक=लोहविशेषः, शङ्ख=प्रसिद्धः, दन्तमणिः=गजमस्तकसमुत्पन्नोमणिः, शृङ्ग=हरिणप्रभृतीना

कमण्डलु भी वह नहीं रखता है। (नोवाणह) जूते, खडाऊँ आदि भी वह रखने की इच्छातक नहीं करता है। (न पेहुण वीयण तालियंटगा) पेहुणमयूरपिच्छ,वंश शलाकादिनिर्मित बीजना, तालपत्र निर्मित व्यजन -पंखा, इन्हें भी वह रखने की मन से भी चाहना नहीं करता है। (ण यावि अय-तउय-तंबसीस-कंस-रयय-जायरूव-मणि-मुत्ता-हार-पुडग-संख-दंत-मणि-सिंग-सेल-कायवर-चेल-चम्म-पत्ताइं गुणवओ परिकड्डिउ) लोहे का पात्र, त्रपु-रांगा का पात्र, तांबे का पात्र, सीसा का पात्र, कांसे का पात्र, चांदी का पात्र, सुवर्ण का पात्र, इन्द्रनील आदि मणि का पात्र, मुक्ताफल-मोती का पात्र, हारपुटक-लोहविशेष का पात्र, शंख का पात्र, गजमोती का पात्र, हरिण आदि पशुओं के शृंग

પાણી આદિ રાખવા માટે કમંડળને પણ તે રાખી શકતા નથી "नो वाणह" જોડા, આદિ રાખવાની તે ઇચ્છા પણ કરતા નથી "न पेहुणवीयणतालियंटगा" પેહુણ-મયૂરપિચ્છ, વંશ શલાકાદિ નિર્મિત વિંજણો, તાલપત્ર નિર્મિત પંખો, તેમને રાખવાની તે મનથી પણ તે ઇચ્છા કરતા નથી "ण यावि अय-तउय-तंब-सीस-कंस-रयय-जायरूव-मणि-मुत्ता-हार पुडग-संख दंत-मणि-सिंग-सेल-कायवर-चेलचम्म-पत्ताइ गुणवओ परिकड्डिउ" લોઢાનું પાત્ર, ત્રપુ-રાંગાનું પાત્ર, તાંબાનું પાત્ર, સીસાનું પાત્ર, કાંસાનું પાત્ર ચાંદીનું પાત્ર, સોનાનું પાત્ર, ઇન્દ્રનીલ આદિ મણિનું પાત્ર, મોતીનું પાત્ર, હારપુટક-લોહવિશેષનું પાત્ર, ગજમોતીનું પાત્ર, શંખનું પાત્ર, હરણ આદિ પશુઓના શિંગડાનું પાત્ર,

साऽपि परिवेत्तु ' परिग्रहीतु ' न कप्पइ ' न कल्पते इममेवार्थ विशदयति, ' हिरण्णसुवण्णखेत्तवत्थु ' हिरण्यसुवर्णक्षेत्रवस्तु मनसाऽपि परिग्रहीतु न कल्पते, तथा- ' दासीदासभयकपेसहयगयगवेलग वा ' दासीदासभृतकप्रैष्यहयगजगवेलक वा, दासीदास=प्रसिद्धम् , भृतकाः=वेतन गृहीत्वा कार्यकराः, प्रैष्या'-कार्ये समुपस्थिते ग्रामान्तरे प्रेषणीय भृत्या', हयाः=अश्वा., गजाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः= मेपाः एषा समाहार द्वन्द्व., मनसाऽपि परिग्रहीतु न कल्पते, तथा-' जाणजुग्गसयणासणाइ ' यान युग्यशयनासनानि, यान=रथादिकम् , युग्य=वाहनमात्रम् , शयन=शय्या, आसन-प्रसिद्धम् , एतानि मनसापि परिग्रहीतु न कल्पते । तथा- ' न छत्तक ' न छत्रकम्=न छत्रम् , ' न कोडिका ' न कुण्डिका=कमण्डलु. मन

(मणसा वि परिघेत्तु न कप्पइ) साधु को मन से भी ग्रहण करना योग्य नहीं है । अब इसी विषय को सूत्रकार विषदरूप से समझाते हैं- जो अपरिग्रही साधु हैं उसको (न धनहिरण्णसुवण्णखेत्तवत्थु) हिरण्य, सुवर्ण, क्षेत्र, वास्तु तथा (न दासीदास भयक-पेस-हय-गय-गवेलगवा) दासी, दास, भृतक, प्रैष्य, हय, गज, गवेलक तथा-(न जाणजुग्गसयणासणाइ) यान, युग्य, शयन, आसन, ये सब वस्तुएँ मन से भी चाहने योग्य नहीं होती है । ग्रामादिक शब्दों की व्याख्या पहिले संवर द्वारों में की जा चुकी है । वेतन लेकर जो काम करते हैं वे भृतक कहलाते हैं । तथा कार्य आने पर जो उसके निमित्त बाहर गाँव भेजे जाते हैं वे प्रैष्य कहलाते हैं । गवेलक नाम मेष का है । रथ आदि यान और वाहनमात्र युग्य हैं । इसी तरह (न छत्तग) धूपनिवारण करने के लिये छत्र को, (न कोडिक) पानी आदि रखने के लिये

છે, તેમને "मणसा वि परिवेत्तु न कप्पइ" મનથી ગ્રહણ કરવાનુ સાધુને માટે યોગ્ય નથી હવે એજ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારથી સમજાવે છે-જે સાધુ અપરિગ્રહી છે તેણે " न धनहिरण्णसुवण्णखेत्तवत्थु " હિરણ્ય, સુવર્ણ, ક્ષેત્ર, વસ્તુ તથા " न दासीदास भयक-पेस-हय-गय-गवेलगवा " દાસ, દાસી, ભ્રતક, પ્રૈષ્ય હય, ગજ, ગવેલક તથા " न जाणजुग्गसयणासणाइ " યાન, યુગ્ય શયન, આસન, એ બધી વસ્તુઓ મનથી પણ ચાહવા યોગ્ય હોતી નથી ગ્રામાદિક શબ્દોની વ્યાખ્યા આગળના સવરદ્વારોમા આપવામા આવી છે પગાર લઈને કામ કરનારને "भृतक" નોકર કહે છે તથા કામ પડતા જેમને કાર્યને નિમિત્તે બહાર ગામ મોકલાય છે તેમને ,'प्रैष्य" (દૂત) કહે છે ઘેટાને ગવેલક કહે છે રથ આદિ યાન અથવા દરેક વાહનને "युग्य" કહે છે એ જ પ્રકારે " न छत्तग ' તડકાથી બચવા માટે છત્રને તથા " न कोडिक"

पुनरप्यकल्पनीयानि प्रदर्शयति—' जपि य ' इत्यादि ।

मूलम्—जपि च ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-पलल-सूपसकुलि वेढिम वरिसोलग- चुण्णकोसग-पिंड सिहरिणीवट्टग-मोयक- खीर-दहि--सप्पि नवणीय-तिल्ल-गुड -खड-मच्छंडिय--मधु--खज्जक--वंजण--विहिमाइय पणीय उवस्सए परघरे रण्णे वा न कप्पइ तपि सनिहीकाउ सुविहियाण, ज पिय उद्दिट्ठविय रइयग पज्जवजायपाकिण्णपा-

अपने मूलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों मे पडी हुई, भूली हुई, रखी हुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोडी हो, बहुत हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नही करे। इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी इच्छा न करे। दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह रखने का विचार तक भी न करे। न वह औषध भैषज्य और आहार आदि के निमित्त फल पुष्पादिको को अपने उपयोग मे लावे। समस्त प्रकार के सचित्तपदार्थो का उसको तीनकरण तीनयोगो से परित्याग कर देना चाहिये। क्यो कि ऐसे पदार्थ ज्ञानियों ने जीवों की उत्पत्ति के योनि भूत कहे हैं। मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का आदेश नही है। लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधुचर्या मे कल्पित नही है ॥ सू-२ ॥

ણોની રક્ષા કરવા માગતો હોય તો ગ્રામ આદિ સ્થાનોમા પડેલી, ભૂલથી રહી ગયેલી, મૂકેલી કોઇ પણ વસ્તુને-ભલે તે નાની હોય કે મોટી હોય, કીમતી હોય કે કીમતી પણ ન હોય, ઉપાડી લેવાનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી એ જ પ્રમાણે તેણે ધાતુની કોઈ પણ વસ્તુને ગ્રહણ કરવાની પણ ઇચ્છા કરવી જોઇએ નહી દાસદાસી આદિ કોઇ પણ પ્રકારનો પરિગ્રહ રાખવાનો તેણે વિચાર પણ કરવો જોઇએ નહી તેણે ઔષધ, ભૈષજ્ય અને આહાર આદિને નિમિત્તે ફળ, પુષ્પ આદિને પોતાના ઉપયોગમા લેવા જોઇએ નહી સમસ્ત પ્રકારના સચિત્ત પદાર્થોને તેણે ત્રણે યોગથી પરિત્યાગ કરવો જોઈએ કારણ કે એવા પદાર્થોને જ્ઞાનીઓએ જીવોની ઉત્પત્તિના સ્થાનરૂપ-યોનીરૂપ બતાવ્યા છે મયૂરપિચ્છ આદિ રાખવાનો પણ પ્રભુનો આદેશ નથી લોઢુ,-વસ્ત્ર આદિના પાત્ર રાખવા તે પણ સાધુને કલ્પતુ નથી ॥ સૂ ૨ ॥

मान्यैः, एतादृशैः 'जिणवरिंदेहिं' जिनवरेन्द्रैः=जिनाः=अवधिज्ञानमनः पर्यवज्ञानधराश्छद्मस्थजिनाः, तेषु वराः=श्रेष्ठाः केवलिनस्तेषामिन्द्रास्तीर्थंकर नाम कर्मोदयवर्तित्वाद्येते तैः 'एस' एषा=पुष्पफलकन्दमूलादिसर्वधान्यरूपा 'जोणी' योनिरुत्पत्तिस्थानम्, 'जणाण' जगताम्=प्राणिनां 'दिट्ठा' दृष्टा केवलज्ञानेन, तस्मात्-कारणात्तेषां प्राणिनां 'न कप्पइ' न कल्पते 'जोणीसमुच्छिद्दोत्ति' योनिसमुच्छेदः इति=योनिध्वंसं कर्तुमिति, 'हि' यतः-'तेण' न हेतुना एतानि पुष्पफलादि सर्वधान्यानि 'समणसीहा' श्रमणसिंहाः श्रमणेषु सिंहाः मुनिश्रेष्ठाः 'वज्जेंति' वर्जयन्ति-न सघट्टयन्ति ॥ सू० २ ॥

लोयमहिएहिं) तीनो लोकों में मान्य ऐसे (जिणवरेहिं जिनवरेन्द्रोंने-अवधिज्ञानी और मन. पर्ययज्ञानीरूप छद्मस्थजिनों में श्रेष्ठ जो केवली भगवान है, उनके भी तीर्थंकर नामकर्म के उदय से युक्त होने के कारण जो इन्द्र बने हुए है ऐसे जिनवरेन्द्रों ने (एस) ये पुष्प, फल, कन्द, मुल, आदि सर्वधान्य (जणाण जोणीदिट्ठा) जीवो की उत्पत्तिस्थान होने से योनि रूप देखे है। इसलिये सकल सयमी जन को (न कप्पइजोणी समुच्छिदोत्ति) जीवो की योनिरूप पुष्पफलादिको का ध्वस करना कल्पित नहीं है। (तेण हि) इसलिये ये पुष्पफलादि समस्त धान्य (समणसिंहा) मुनिसिंहो के लिये (वज्जेति) वर्जनीय हे अत इसी कारण वे इनकी सघट्टना नहीं करते है।

भावार्थ—इस परिग्रहविरमणरूप अन्तिम सवरद्वार मे सूत्रकार ने सकल सयमी अपरिग्रही श्रमण के लिये यह कहा है कि वह यदि

देहिं" જિનવરેન્દ્રોએ-અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાનીરૂપ છદ્મસ્થ જિનોમા શ્રેષ્ઠ જે કેવલી ભગવાન છે, તેમના પણ તીર્થંકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત હોવાને કારણે જેઓ ઇન્દ્ર બન્યા છે એવા જિનવરેન્દ્રોએ "एस" તે પુષ્પ, ફળ, કંદ, મૂળ આદિ સર્વ ધાન્યને "जणाण जोणी दिट्ठा" જીવોનુ ઉત્પત્તિ સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે સકલ સયમી જને "न कप्पइ जोणीसमुच्छिद्दोत्ति' જીવોની યોની રૂપ પુષ્પ, ફળ આદિનો ધ્વસ કરવો કલ્પતો નથી "तेण हि" તેજ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ સમસ્ત ધાન્ય "समण सिंहा" સિંહ સમાન મુનિઓને માટે "वज्जेति" ત્યાગ કરવાને યોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તેજ કારણે તેઓ તેમને ગ્રહણ કરતા નથી

ભાવાર્થ—આ પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અતિમ સવરદ્વારમા સૂત્રકારે સકલ સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યુ છે કે જો તે પોતાના મૂળગુ

पुनरप्यकल्पनीयानि प्रदर्शयति—' जंपि य ' इत्यादि ।

मूलम्—जंपि य ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-पलल-सूपसकुलि वेढिम-वरिसोलग-चुण्णकोसग-पिंड सिहरिणीवट्टग-मोयक- खीर-दहि- सप्पि नवणीय-तिल्ल-गुड -खंड-मच्छंडिय--मधु--खज्जक--वंजण--विहिमाइय पणीय उवस्सए परघरे रण्णे वा न कप्पइ तंपि सन्निहीकाउ सुविहियाणं, जं पिय उद्दिट्ठठविय रइयग पज्जवजायपकिण्णपा-

---

अपने मूलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों मे पडी हुई, भूली हुई, रही हुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोडी हो, बहुत हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नहीं करे। इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी इच्छा न करे। दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह रखने का विचार तक भी न करे। न वह औषध भैषज्य और आहार आदि के निमित्त फल पुष्पादिको को अपने उपयोग मे लावे। समस्त प्रकार के सचित्तपदार्थो का उसको तीनकरण तीनयोगो से परित्याग कर देना चाहिये। क्यो कि ऐसे पदार्थ ज्ञानियो ने जीवों की उत्पत्ति के योनि भूत कहे है। मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का आदेश नही है। लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधुचर्या में कल्पित नही हे ॥ सू–२ ॥

ણોની રક્ષા કરવા માગતો હોય તો ગ્રામ આદિ સ્થાનોમા પડેલી, ભૂલથી રહી ગયેલી, ભૂલેલી કોઇ પણ વસ્તુને–ભલે તે નાની હોય કે મોટી હોય, કીમતી હોય કે કીમતી પણ ન હોય, ઉપાડી લેવાનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી એ જ પ્રમાણે તેણે ધાતુની કોઈ પણ વસ્તુને ગ્રહણ કરવાની પણ ઇચ્છા કરવી જોઇએ નહી દાસદાસી આદિ કોઇ પણ પ્રકારનો પરિગ્રહ રાખવાનો તેણે વિચાર પણ કરવો જોઇએ નહી તેણે ઔષધ, ભેષજ્ય અને આહાર આદિને નિમિત્તે ફળ, પુષ્પ આદિને પોતાના ઉપયોગમા લેવા જોઇએ નહી સમસ્ત પ્રકારના સચિત્ત પદાર્થોને તેણે ત્રણે યોગથી પરિત્યાગ કરવો જોઈએ કારણ કે એવા પદાર્થોનો જ્ઞાનીઓએ જીવોની ઉત્પત્તિના સ્થાનરૂપ–યોનીરૂપ બતાવ્યા છે મયૂરપિચ્છ આદિ રાખવાનો પણ પ્રભુનો આદેશ નથી લોઢુ,–વસ્ત્ર આદિના પાત્ર રાખવા તે પણ સાધુને કલ્પતુ નથી ॥ સૂ ૨ ॥

मान्यैः, एतादृशे' 'जिणवरिंदेहिं' जिनवरेन्द्रैः=जिनाः=अवधिज्ञानमनः पर्ययज्ञानधराश्छद्मस्थजिनाः, तेषु वरा'=श्रेष्ठाः केवलिनस्तेषामिन्द्रास्तीर्थकर नाम कर्मोदयवर्तित्वाद्येते तैः 'एस' एषा=पुष्पफलकन्दमूलादिसर्वधान्यरूपा 'जोणी' योनिरुत्पत्तिस्थानम्, 'जणाण' जगताम्= प्राणिनां 'दिट्ठा' दृष्टा केवलज्ञानेन, तस्मात्-कारणात्तेषां प्राणिनां 'न कप्पइ' न कल्पते 'जोणीसमुच्छेदोत्ति' योनिसमुच्छेद' इति = योनिध्वंस कर्तुमिति, 'हि' यत'-'तेण' न हेतुना एतानि पुष्पफलादि सर्वधान्यानि 'समणसीहा' श्रमणसिंहा श्रमणेषु सिंहाः मुनिश्रेष्ठाः 'वज्जेंति' वर्जयन्ति-न संघट्टयन्ति ॥ सू० ७ ॥

लोयमहिएहिं) तीनो लोकों में मान्य ऐसे (जिणवरेहिं जिनवरेन्द्रोंने-अवधिज्ञानी और मन. पर्ययज्ञानीरूप छद्मस्थजिनों में श्रेष्ठ जो केवली भगवान है, उनके भी तीर्थंकर नामकर्म के उदय से युक्त होने के कारण जो इन्द्र बने हुए है ऐसे जिनवरेन्द्रों ने (एस) ये पुष्प, फल, कन्द, मुल, आदि सर्वधान्य (जणाण जोणीदिट्ठा) जीवों की उत्पत्तिस्थान होने से योनि रूप देखे है। इसलिये सकल सयमी जन को (न कप्पइजोणी समुच्छि दोत्ति) जीवो की योनिरूप पुष्पफलादिको का ध्वस करना कल्पित नहीं है। (तेण हि) इसलिये ये पुष्पफलादि समस्त धान्य (समणसिहा) मुनिसिहो के लिये (वज्जेति) वर्जनीय ह अत इसी कारण वे इनकी सघट्टना नहीं करते है।

भावार्थ—इस परिग्रहविरमणरूप अन्तिम सवरद्वार मे सूत्रकार ने सकल सयमी अपरिग्रही श्रमण के लिये यह कहा है कि वह यदि

देहिं" જિનવરેન્દ્રોએ-અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાનીરૂપ છદ્મસ્થ જિનોમા શ્રેષ્ઠ જે કેવલી ભગવાન છે, તેમના પણ તીર્થંકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત હોવાને કારણે જેઓ ઈન્દ્ર બન્યા છે એવા જિનવરેન્દ્રોએ "एस" તે પુષ્પ, ફળ, કદ, મૂળ આદિ સર્વ ધાન્યને "जणाण जोणी दिट्ठा" જીવોનુ ઉત્પત્તિ સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે સકલ સયમી જને "न कप्पइ जोणीसमुच्छिदोत्ति' જીવોની યોની રૂપ પુષ્પ, ફળ આદિનો ધ્વસ કરવો કલ્પતો નથી "तेण हि" તે જ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ સમસ્ત ધાન્ય "समण सिहा" સિહ સમાન મુનિઓને માટે "वज्जेति" ત્યાગ કરવાને યોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તે જ કારણે તેઓ તેમને ગ્રહણ કરતા નથી

ભાવાર્થ—આ પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અતિમ સવતદ્વારમા સૂત્રકારે સકલ સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યુ છે કે જો તે પોતાના મૂળગુ

शष्कुली='पूडी' इति प्रसिद्धा', वेष्टिमा ='वेढमी' इति प्रसिद्धाः, वर्पोलका'= खाद्यविशेषा', चूर्णकोशकानि=चूर्णभृताः कोपकाकृतिका भक्ष्यभेदाः 'गूजा' 'कचोरी' इति भाषा प्रसिद्धा, पिण्ड' = गुडादिपिण्ड', शिखरिणी ='श्रीखण्ड इति प्रसिद्धा, वर्त्तक='वडा' इति भाषा प्रसिद्धम्, मोदका =प्रसिद्धाः, क्षीर= दुग्धम्, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पि =घृतम्, नवनीतम्='मक्खन' इति प्रसिद्धम्, तैलगुड प्रसिद्धम्, खण्डम्='खाड' इति प्रसिद्धम्, मत्स्यण्डिका=' मिश्री ' इति प्रसिद्धा, मधु=प्रसिद्धम्, एते पदार्था आधाकर्मादिदोषदूषिताः साधुभिर्वर्जनीया। तथा—खाद्यकाः='खाजा' इति भाषा प्रसिद्धा, व्यञ्जनानि=तक्रादीनि-रसयुक्त-शाकपदार्था वा 'कढी' आदि भाषा प्रसिद्धाः, तेषां ये विधय =प्रकाराः, एतेऽपि सदोषा वर्जनीया'। एषां द्वन्द्व, एते आदौ यस्य तत्तथोक्तम्, एवं विध 'पणीय' प्रणीत=स्निग्धमशन च कारण विना वर्जनीयम्। एतत्सर्वं निर्दोषमपि-'उस्सण'

भर्जित—अग्नि में भुंजेहुए जो गेहुं आदि धान्य—तिलपिष्ट, सूप-मूग आदि की दाल, शष्कुली-पुडी, वेष्टिम-वेढमी, वर्पोलक-एक प्रकार का खाद्यविशेष, चूर्णकोशक-कचौड़ी, गुजा, पिण्ड-गुड आदि, शिखरणी-श्रीखंड, वर्त्तक वडा, मोदक लड्डू, क्षीर-दूध, सर्पि-घृत, नवनीत-मक्खन, तिल, गुड, खंड-खांड, मत्स्यण्डिका-मिश्री, मधु-शहद ये पदार्थ यदि आधाकर्म आदि दोषसे दूषित हों तो साधुपुरुषोंद्वारा सदा वर्जनीयहैं। खाजा, तक्र आदि व्यंजन, अथवा रसयुक्त साक पदार्थ जैसे कढीआदि, तथा इन भक्ष्य पदार्थोंके जो और भी भेद होते है वे सब भी यदि सदोष हों तो साधु को वर्जनीय है। तथा भोज्य ये ओदनादि रूप स्निग्ध पदार्थ निर्दोष भी हों तो भी साधु विना कारण के अपने उपयोग में इन्हें नहीं लेना चाहिये और इन सब निर्दोष भोज्यपदार्थों का

શેકેલ જવ, ઘઉ આદિ ધાન્ય,पलल–ખાંડેલ તલ, सूप–મગ આદિની દાળ, शष्कुली-પુરી, वेष्टिम–વેઢમી, वर्पोलक–એક પ્રકારનું ખાદ્ય, चूर्णकोशक–કચોડી ગૂજા, पिण्ड–ગોળ આદિ शिखरिणी=શિખંડ, वर्त्तक–વડા, मोदक લાડૂ क्षीर–દૂધ, દહીં सर्पि–ઘી नवनीत–માખણ, તલ, ગોળ, खंड–ખાંડ, मत्स्यण्टिका–મિશ્રી, સાકર मधु–મધ એ પદાર્થો જો અધાકર્મ આદિ દોષથી દૂષિત હોય તો સાધુઓએ તેમનો ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે તથા દારૂ અને માંસતો સર્વથા ત્યાજ્ય છે ખાજા, તક્ર આદિ વ્યજન, અથવા રસયુક્ત શાક, કઢી વગેરે પદાર્થ, તથા એ ભક્ષ્યપદાર્થોના બીજા પણ જે ભેદ હોય છે, તે બધાનો પણ જો તે સદોષ હોય તો સાધુએ ત્યાગ કરવો જોઇએ તથા ભોજનને યોગ્ય તે ઓદનાદિ સ્નિગ્ધ પદાર્થ નિર્દોષ હોય તો પણ સાધુએ કારણ વિના તેમનો

ओकरणपामिच्च मीसगकीयगड पाहुड वा दाणट्ट पुण्णट्टपगड समणवणीमगट्टयाए वा कय पच्छाकम्म पुरेकम्म नितिगमुदगमक्खियं अइरित्त मोहर सयगाह आहड मट्टि ओवलित्तं अच्छेज्ज चेव अणिसिट्ठं, ज त तिहिसु जण्णेसु उस्सवेसु य अतो वा वहिं वा होज्ज समणट्टयाए ठविय ठविय हिंसासावज्जसपउत्ते न कप्पइ त पि य परिघेत्तुं ॥सू०३॥

टीका—'जपि य' इत्यादि।

'ज पि य' यदपि च 'ओदणकुम्मासगजतप्पणमथुभज्जियपललमूवस कुलिवेढिमवरिसोलगचुण्णकोसगपिंडसिहरिणीवट्टगमोयगखीरदहिसप्पिनवणीय तिलगुडखंडमच्छडियमधुखज्जकवजणविहिमाइय' ओदनकुल्माषगञ्जतर्पणमन्थु–भर्जितपललसूपशष्कुलिवेष्टिमवर्षोलकचूर्णकोशकपिण्डशिखरिणीवर्तकमोदकक्षीर–दधिसर्पिर्नवनीततिलगुडखण्डमत्स्यण्डिकामधुखाद्यकव्यञ्जनविध्यादिकम्, तत्र – ओदनाः–प्रसिद्धाः, कुल्माषाः = माषाईपक्वा मुद्गादयो वा, गञ्जः = भोज्यविशेषः, तर्पणाः = सक्तव, मन्थु = बदरादिचूर्णम्, भर्जित=केवला–ग्निपक्वयवगोधूमधानादिकम्, पललम् = तिलपिष्टम्, सूप' = मुद्गादिदालि',

---

फिर भी अकल्पनीय वस्तुओं को कहते हैं—'जपिय' इ०

टीकार्थ—(जपि य–ओदण–कुम्मास–गज–तप्पण–मथु–भज्जिय–पलल–सूव–सकुलि–वेढिम–वरिसोलग–चुण्णकोसग–पिंड–सिहरिणी वट्टग–मोयग–खीर–दहि–सप्पि–नवणीय–तिल–गुड–खड–मच्छडिय—मधु—खज्जक—वजण— विहिमाइय—पणीय) जो भी ओदन—भात, कुल्माष–माष–उडद अथवा कुछ २ पके हुए मूग आदि अन्न गज्ज–भोज्यविशेष तर्पण–सत्तू, मथु–बदर (बेर) आदि का चूर्ण,

---

वणी बीजी पणु अકલ્પનીય વસ્તુઓ સૂત્રકાર બતાવે છે–"जपिय' ઇत्याहि–

ટીકાર્થ–"जविय–ओदण–कुम्मास–गज्ज–तप्पण–मथु–भज्जिय–पलल–सूव–स कुलिवेढिम–वरिसोलग–पिंड–सिहरिणी वट्टग–मोयग–खीर दहि–सप्पि–नवणीय–तिल –गुड–मच्छडिय—मस–खज्जक–वजण–विहिमाइय पणीय " જે ઓદન–ભાત, કુલ્માષ–માષ–અડદ અથવા થોડુ થોડુ પકાવેલુ મગ આદિ અન્ન, गज्ज–એક પ્રકારનું ભોજન, तर्पण–સત્તુ, मथु–બોર આદિનું ચૂર્ણ, भजित અગ્નિમાં

स्वहस्तेनाशनादेर्ग्रहणमित्यर्थः, अयमपरिणताभिधानदोषउक्तः । दायकस्यदानेऽपरिणतत्वात् । तथा-आहड ' आहृतम्=स्वपरग्रामादेः साध्वर्थमानीतमशनादिकमाहृतमुच्यते । तदुक्तम्—'सग्गामपरग्गामा आणिय आहड होइ ' छाया—स्वग्रामपरग्रामादानीतमाहृत भवति । इति । तथा—' मट्टिओवलित्त ' मृत्तिकोपलिप्तम्=मृत्तिकया, उपलक्षणत्वाज्जतुगोमयादिना चोपलिप्त सद्यदुद्भिद्यदीयते तत्, उद्भिन्नमित्यर्थः । तथा ' अच्छिज्ज ' आच्छेद्य, यदशनादिक स्वामी भृत्यादिभ्य आच्छिद्य साधुभ्यो ददाति तदशनादिकमाच्छेद्यम् । ' चेव ' चैव-चकार' पुनरर्थक. एवकारो निश्चयार्थ. । ' अणिसिट्ठ ' अनुसृष्टम्=अनेकस्वामिक यदशनादिकम् एक एव ददाति तदनिसृष्टम् , तथा-' ज त ' यत्तदशनादिकम् , ' तिहिसु ' तिथिषु=शरत्पूर्णिमादि तिथिषु ' जण्णेसु ' यज्ञेषु=नागपूजादिषु ' उस्सवेसु य ' उत्सवेषु च=इन्द्रोत्सवेषु च ' अतो व ' अन्तर्वा=उपाश्रयस्याभ्यन्तरे वा, ' वर्हि

गाह) स्वयग्राह हो-दाता ने जिसे न दिया हो किन्तु अपने ही हाथ से जो उठाकर ले लिया गया हो, (आहड) आहृत हो-स्व और पर के ग्राम आदि से जो साधु के निमित्त लाया गया हो, (मट्टिओवलित्त) मृतिकोपलिप्त हो जो आहार किसी कुभ आदि मे रखकर मिट्टी से, गोबर से, तथा लाख आदि से वद किया हुआ हो और देते समय उस मिट्टी आदि को हटाकर बाहिर किया गया हो, (अच्छेज्ज चेव) अच्छेद्य हो-भृत्यादिकों से छीनकर दाता जिसे साधु के लिये दे रहा हो-जिस आहार के अनेक स्वामी हो परन्तु एक ही व्यक्ति उसको साधु के लिये दे रहा हो, ऐसा आहार भी साधु को लेना कल्पता नहीं है । तथा (ज त) जो वह आहार (तिहिसु) शरत्पूर्णिमा आदि तिथियों के समय मे (जण्णेसु) नागपूजादिक यज्ञों के समय में और

दीधो होय पण पोताने ज हाथे जे उठावी लीधो होय, " आहड " आहृत होय-स्व अने पारके ग्राम आदिमाथी जे साधुने निमित्ते लाववामा आव्यो होय, " मट्टिओवलित्त " मृत्तिकोपलिप्त होय,-जे आहार कोई पात्र आदिमा मूकीने माटीथी, गोमयथी तथा लाख आदिथी बध करेल होय अने आपती वखते ते माटी अदिने उखेडी बहार काढेल होय, "अच्छेज्ज चेव " आच्छेद्य होय-नोकर आदिके पासेथी छीनवीने दाता जे साधुने माटे आपतो होय जे आहारना मालिक अनेक होय पण एक ज व्यक्ति ते साधुने माटे आपी रही होय, एवो आहार पण लेवानु साधुने कल्पतु नथी तथा " जत " जो ते आहार " तिहिसु " शरद पूर्णिमा आदि तिथिओना समये तथा " जण्णेसु "

ष्पादितमित्यर्थ 'पच्छाकम्म' पश्चात्कर्म, पश्चात्-दानान्तर कर्म=भाजनप्रक्षालनादि यत्राशनादौ तत्, तथा 'पुरेकम्म' पुराकर्म = पुरा = दानात्पूर्वं कर्म=हस्तलाघवादि यत्र तथा-' नितिग ' नैत्यिकम् = नित्यपिण्ड, दातृपोषणप्रमाण वाऽवस्थितम्, 'उदगमक्खिय' उदकम्रक्षितम्=उदकादिना, आदिशब्दात्-सचित्तपृथिवीकायादिभिरवगुण्ठितम्, उक्तञ्च "मक्खियमुदगाइणाउज जुन्न" इति। 'अइरित्त' अतिरिक्तम्=द्वात्रिंशत्, कवला आहारः पुरुषस्य कुक्षिपूरको भवति, स्त्रियश्चाष्टाविंशति कवला, नपुंसकस्य चतुर्विंशति कवला आहारः। ततोऽधिक आहारोऽतिरिक्तमुच्यते। तथा-' मोहर ' मौखरम्=पूर्वसंस्तवमातापित्रादि पश्चात्संस्तवश्वशुरश्यालकादिना सह मौखर्येण=बहुभाषित्वेन यल्लभ्यते, तदशनादिक मौखरमुच्यते। तथा 'सयगाह' स्वय ग्राह्यम्=दायकेनादत्त यद्गृह्यते तत्

याचक जनो को देने के प्रयोजन से बनाया गया हो, ऐसा आहार साधु को लेना नहीं कल्पता है। इसी प्रकार जो आहार (पच्छाकम्म) पश्चात् कर्म से युक्त हो, और (परेकम्म) पराकर्म से युक्त हो, तथा (नितिगमुदगमक्खिय) नैत्यिक-नित्यपिंड हो, अथवा-दाता ने जिसे अपने खाने के जितना ही बनाया हो, उदक मुक्षित हो-सचित्त उदक से सचित्त पृथिवीकाय आदि से अवगुंठित हो (अइरित्त) अतिरिक्त हो-पुरुषो की अपेक्षा से बत्तीस ग्रास से, स्त्रियों की अपेक्षा अट्ठाईस ग्रास से और नपुसक की अपेक्षा चोईस ग्रास से जो अधिक हो, वह आहार भी मुनियों के लिये कल्पित नही है। इसी तरह (मोहर) जो आहार मौखर हो-पूर्वसंस्तव मातापिता आदि के साथ तथा पश्चात्संस्तव श्वशुर श्यालक आदि के साथ अधिक बातचीत करने से प्राप्त होता हो, (सय

અથવા યાચકજનોને દેવાને માટે બનાવાયો હોય, એવો આહાર લેવો સાધુને કલ્પતો નથી એ જ પ્રમાણે જે આહાર "पच्छाकम्म" પશ્ચાતકર્મથી યુક્ત હોય અને "पुरेकम्म" પુરા કર્મથી યુક્ત હોય તથા ' नितिगमुदगमक्खिय" નૈત્યિક નિત્ય પિંડ હોય, અથવા દાતાએ જે પોતાને ખાવા જેટલો જ બનાવ્યો હોય, ઉદક મુક્ષિત હોય--સચિત્ત પાણીથી, સચિત્ત પૃથ્વીકાય આદિથી અવગુંઠિત હોય," अइरित्त" અતિરિક્ત હોય--પુરુષોની અપેક્ષાએ બત્રીસ ગ્રાસથી, સ્ત્રીઓની અપેક્ષાએ અઠ્ઠાવીસ ગ્રાસથી, અને નપુંસકની અપેક્ષાએ ચોવીસ ગ્રાસથી જે વધારે હોય તો તે આહાર પણ મુનિઓને કલ્પતો નથી એ જ પ્રમાણે "मोहर" જે આહાર મૌખર હોય પૂર્વસંસ્તવ માતા પિતા આદિની સાથે તથા પશ્ચાત્ સંસ્તવ સસરા, સાળા આદિની સાથે અધિક વાત ચીત કરવાથી પ્રાપ્ત થતો હોય, "सयगाह" સ્વયગ્રાહ હોય-દાતાએ જે ન

व ओसहभेसज्जभत्तपाणं च, तं पि सण्णिहिकयं । जं पि य समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवइ, भायणभंडोवहि – उवगरण–परिग्गहो–पायबंधण – पायकेसरिया पायट्ठवणं च पडलाइं तिण्णि चेव रयत्ताणं गोच्छाओ तिन्नि य पच्छागा रओहरणचोलपट्टक मुहणंतगमादीयं एयं पि य संजमस्स उववूहणट्ठयाए वायायवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरियव्वं संजएणं णिच्चं पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेणं होइ सययं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायणभंडोवहि उवकरणं ॥ सू० ४ ॥

टीका–सम्प्रति कीदृशमशनादिकं कल्पते? इत्याह–'अह केरिसयं' इत्यादि।

'अह' अथेति प्रकरणान्तरद्योतकः, अथ अकल्पनीयाहारकथनानन्तरं 'केरिसयं' कीदृशं 'तं' तत्=अशनादिकं 'कप्पइ' कल्पते परिग्रहीतुम्? इत्याह 'जं तं' यत्तत् 'एगारसपिंडवायसुद्धं' एकादशपिण्डपातशुद्धम्, एकादशभिः पिण्डपातैः = आचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धस्थितपिण्डैषणानामकप्रथमाध्ययनस्य विधिप्रतिपादकैरेकादशभिरुद्देशैः तत्रोक्तविधानैरित्यर्थः शुद्धं तत्रोक्तदोषवर्जितमि-

अब सूत्रकार साधु को कैसा अशनादि कल्पता है? सो कहते हैं—'अह केरिसयं' इत्यादि।

टीकार्थ—(अह) पूर्वोक्त आहार अकल्पनीय है तो (केरिसयं) किस प्रकार का आहार साधु को (कप्पइ) कल्पता है इस पर कहते हैं (एगारसपिंडवायसुद्धं जं तं) जो अशन ग्यारह पिण्डपातों से शुद्ध हो–अर्थात् आचाराङ्ग के द्वितीय श्रुतस्कंध के पिण्डैषणा नामक प्रथम अध्ययन में विधिप्रतिपादक जो ग्यारह उद्देश हैं उन से जो आहार

હવે સાધુને કેવા અશનાદિ કલ્પે છે તે સૂત્રકાર કહે છે–"अह केरिसयं" ઇત્યાદિ–

ટીકાર્થ—"अह" પૂર્વોક્ત આહાર અકલ્પનીય છે તો "केरिसयं" કયા પ્રકારનો આહાર સાધુને "कप्पइ" કલ્પે છે? તો તે વિષે સૂત્રકાર કહે છે કે–"एगारसपिंडवायसुद्धं जं तं" જે આહાર અગિયાર પિંડપાતોથી શુદ્ધ હોય એટલે કે આચારાંગના દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધના પિંડૈષણા નામના પહેલા અધ્યયનમાં વિધિ પ્રતિપાદક જે અગિયાર ઉદ્દેશા છે તેમના વડે જે આહાર શુદ્ધ

वा ' बहिर्वा=उपाश्रयाद् बहिर्वा ' समणट्ठयाए ' श्रमणार्थतया = श्रमणनिमित्त मित्यर्थः, ' ठविय ' स्थापित ' होज्ज ' भवेत् , " हिंसासावज्जसपउत्त ' हिंसा-सावद्यसमयुक्तम्=हिंसया=षट्कायोपमर्दनेन सावद्येन=सदोषेण कर्मणा च समयुक्त 'तपि य' तदपि च अशनादिक 'परिघेत्तु' परिग्रहीतुं 'न कप्पइ' न कल्पते॥सू० ३॥

कीदृशमशनादि कल्पते ? इत्याह—' अहकेरिसय ' इत्यादि ।

मूलम्—अह केरिसय पुणो त कप्पइ ? जं त एगारसपिं-डवायसुद्ध किणणहणण-पयण-कयकारियाणुमोयण--नव-कोडीहि सुपरिसुद्ध दसहि य दोसेहि विप्पमुक्क उग्गम उप्पायणेसणाहि सुद्ध ववगयचुयचवियचत्तदेह च फासुयं च ववगयसजोगमणिगालं विगयधूम छट्ठाणानिमित्त छक्काय परि-रक्खणट्ठ हणि हणि फासुएण भिक्खेण वट्टियव्वं । ज पि य समणस्स सुविहियस्स रोगायके वहुप्पगारम्मि समुपन्ने वायाहिग – पित्तसिंभाइरित्तकुवियतहसणिवाए जाए तह उदयप्पत्ते उज्जलवल विउलकक्खड पगाढदुक्खे असुभकडुय फरुसचडफलविवागमहब्भए जीवियतकरणे सव्वसरीर परितावणकरणे न कप्पइ । तारिसे वि तह अप्पणो परस्स

(उस्सवेसु) इन्द्रोत्सवों के समय मे तथा (अतो वा वहिं वा) उपाश्रय के भीतर अथवा उपाश्रय से बाहिर (होज्जसमणट्ठयाए ठविय) मु-नियो के निमित्त स्थापित कर रखा हो ऐसा वह (हिंसासावज्जसपउत्त) षट्कायोपमर्दनरूप हिंसा से एव सदोष कर्म से सप्रयुक्त अशनादि (न कप्पइ त पि य परिघेत्तु) वह भी आहार साधु को लेना नही कल्पता है।सू०३।

નાગપૂજાદિક યજ્ઞોના સમયે અને " उस्सवेसु ' ઈન્દ્રોત્સવોને સમયે તથા " अतो वा बहिवा " ઉપાશ્રયની અંદર અથવા ઉપાશ્રયની બહાર " होज्ज समणट्ठयाए ठविय " મુનિયોને માટે રાખી મૂકેલો હોય એવો તે " हिंसासावज्जसपउत्त " છકાય ઉપમર્દનરૂપ હિંસાથી તથા સદોષ કર્મથી યુક્ત અશનાદિ " न कप्पइ त पि य परिघेत्तु " તે આહાર પણ સાધુને લેવો કલ્પતો નથી ॥ સૂ ૩ ॥

द्विषोडशविधा, एषणा=दशविधा, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः ताभिः, 'सुद्ध' शुद्धम्, तथा–'ववगयचुयचवियचत्तदेह च' व्यपगतच्युतच्यावितत्यक्तदेह च, तत्र-व्यपगतम्=ओघतश्चेतनापर्यायादचेतनतत्व मासम्, च्युतम्=जीवनादिक्रियाभ्यो विनिर्गतम्, च्यावितम् = चेतनापर्यायेभ्यो पृथक्कारितम्, तथा–त्यक्तदेहम्= त्यक्तः=परित्यक्तो जीवेन देहो यस्य तत् जीवसम्बन्धरहितमित्यर्थः, एषा समाहार द्वन्द्वः, तद्, उक्तार्थं स्पष्टयति–'फासुय च' प्रासुक च=प्रगता असवः प्राणा यस्मात्तत्तथोक्तम्, तथा 'ववगयसजोग' व्यपगत-सयोगम्=सयोजनादोषवर्जितम्, 'अणिंगाल' अनङ्गारम्=अङ्गारदोषवर्जितम्, तथा–'विगयधूम' विगत

उत्पादन दोषों से, तथा दशविध एषणा दोषों से जो शुद्ध हो, तथा–(ववगय चुयचवियचत्तदेह च) जो आहार व्यपगत हो, च्युत हो, च्यावित हो और त्यक्त देह हो, अर्थात् व्यपगत–सामान्यरूप में जो चेतना पर्याय से रहित होकर अचेतनत्व अवस्था को प्राप्त हुआ हो–सचित्त न हो किन्तु अचित्त हो, च्युत–जीवनादि क्रियाओं से जो सर्वथा रहित हो, च्यावित–भृत्यादि द्वारा चेतना पर्यायों से पृथक् कराया गया हो और त्यक्तदेह–जीव के सम्बध से विहीन हो। इसी बात को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं–(फासुय) जिस आहार को साधु अपने उपयोग में लेवे वह प्रासुक होना चाहिये। प्रासुक में "प्र" रहित अर्थ का बोधक है, असु प्राण का वाचक है–अर्थात्–जो आहार प्राणों से–जीवों से रहित होता है वह प्रासुक है। तथा (ववगयसजोग) सयोजनादोष से वह आहार रहित होना चाहिये। (अणिंगाल) अगार

સોળ પ્રકારના ઉત્પાદન દોષોથી, તથા દશ પ્રકારના એષણા દોષોથી જે શુદ્ધ હોય, તથા "ववगयचुय–चवियचत्तदेह च" જે આહાર વ્યપગત હોય, ચ્યુત હોય, ચ્યાવિત હોય, અને ત્યક્ત દેહ હોય, વ્યપગત એટલે સામાન્ય રીતે જે ચેતના પર્યાયથી રહિત થઈને અચેતનત્વ અવસ્થા પામ્યો હોય–સચિત્ત ન હોય, ચ્યુત એટલે જીવનાદિ ક્રિયાઓથી સર્વથા રહિત હોય તેવો, ચ્યાવિત એટલે નોકર આદિ દ્વારા ચેતના પર્યાયોથી અલગ કરાવેલ હોય, ત્યક્ત દેહ–જીવના સબંધથી રહિત હોય, એવો આહાર સાધુએ લેવો જોઈએ એ જ વાતને સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે–"फासुय" જે આહાર સાધુ પોતાના ઉપયોગમા લે તે પ્રાસુક હોવો જોઈએ પ્રાસુકમા "प्र" રહિત અર્થનો બોધક છે, "असु" પ્રાણનો બોધક છે, એટલે કે જે આહાર પ્રાણોથી–જીવોથી રહિત હોય છે તે પ્રાસુક આહાર કહેવાય છે તથા "ववगयसजोय" સયોજના દોષથી તે આહાર રહિત હોવો જોઈએ "अणिंगाल" અગાર દોષથી રહિત

त्यर्थः, यत्तथा, तथा=किणण हणणपयणकयकारियाणुमोयणानवकोडीहिं 'क्रयण हननपचनकृतकारितानुमोदननवकोटिभिः, तत्र-क्रयणं=मूल्येन ग्रहणम्, हनन= प्राणवियोजनम्, पचनम्=अग्निना, एषां यानि कृतकारितानुमोदनानि=स्वयं करणं परेण कारणं कुर्वतोऽनुमोदनम्, तान्येव नवकोटयः = नवविभागास्ताभिः 'सुपरिसुद्ध' सुपरिशुद्ध=निर्दोषम्, तथा-'दसहिं य दोसेहिं' दशभिश्च दोषै शङ्कितादिभिः, 'विप्पमुक्क' विमुक्त=रहितम्, तथा-'उग्गम-उप्पायणेसणाहिं' उद्गमोत्पादनैषणाभिः तत्र-उद्गमः=आधाकर्मादिः-षोडशविधः, उत्पादना=धात्र्या-

शुद्ध हो, उन उद्दशों में जो आहार के दोष कहे गये हैं उनसे वर्जित हो, तथा (किणण-हणणपयणकय-कारियाणुमोयण-नवकोडीहिं सुपरिसुद्ध) जो आहार क्रयण, हनन और पचन, की कृत, कारित और अनुमोदनरूप नवकोटियो से परिशुद्ध हो, अर्थात् जो आहार स्वय मूल्य देकर न खरीदा गया हो, दूसरो से मूल्य देकर न खरीदवाया गया हो और न उसकी अनुमोदना की गई हो, ३ इसी प्रकार जिस आहार के निमित्त हनन-प्राणियों के प्राणों का वियोजन स्वय न किया हो, दूसरों से न कराया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ६, इसी तरह जो आहार अग्नि से स्वय न पकाया गया हो, दूसरों से न पकवाया गया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ९, इन नव कोटियों से निर्दोष हो, तथा (दसहिं दोसेहिं विप्पमुक्क) शकित आदि दश दोषो से जो रहित हो, तथा-(उग्गम-उप्पायणेसणाहिं सुद्ध) आधा कर्म आदि सोलह प्रकार के उद्गम दोषों से-धात्र्यादि सोलह प्रकार के

હોય, તે ઉદ્દેશોમા આહારના જે દોષો બતાવ્યા છે તેમનાથી રહિત હોય, તથા " किणण-हणणपयण-कयकारियाणुमोयणनवकोडीहिं सुपरिसुद्ध " જે આહાર ક્રયણ, હનન અને પચનની કૃત, કારિત અને અનુમોદકરૂપ નવ પ્રકારે પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે જે આહાર જાતે કીમત આપીને ખરીદ્યો ન હોય, બીજાઓ મારફત મૂલ્ય આપીને ખરીદ કરાવાયો ન હોય, અને તેની અનુમોદના પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહારને નિમિત્તે હનન-પ્રાણીઓના પ્રાણોની હત્યા પોતે ન કરી હોય, બીજાની પાસે કરાવી ન હોય, અને તેની અનુમોદના પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહાર અગ્નિ વડે પોતે રાંધ્યો ન હોય, બીજા પાસે રંધાવ્યો ન હોય અને તેની અનુમોદના પણ ન કરાઈ હોય, એ નવ પ્રકારે જે આહાર નિર્દોષ હોય, તથા " दसहिं दोसेहिं विप्पमुक्क " શકિત આદિ દસ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા " उग्गम-उप्पायणेसणाहिं सुद्ध " આધાકર્મ આદિ સોળ પ્રકારના ઉદ્ગમ દોષોથી, ધાત્ર્યાદિ

च औषधादि तदपि सनिधीकृत न कल्पते इत्येवमन्वय' कर्तव्य, कस्य न कल्पते? इत्याह—'समणस्स 'श्रमणस्य=साधोः, कीदृशस्य तु श्रमणस्य न कल्पते इत्याह –'सुविहियस्स उ' सुविहितस्य तु = शोभनानुष्ठानसम्पन्नस्य, कस्मिन् सति ? इत्याह–'बहुपगारम्मि' बहुप्रकारे=अनेकप्रकारे 'रोगायके' रोगातङ्के=रोगो ज्वरादिः, आतङ्कः = सद्योघातीहृदयशूलादि', अनयोः कर्मधारयः, तस्मिन् समुप्पन्ने' समुत्पन्ने, रोगातङ्काना बहुप्रकारत्वमेव स्पष्टयति–'वायाहिगपित्त-सिंभाइरित्तकुवियतहसणिवाए' वाताधिक्य पित्तश्लेष्मातिरिक्तकुपिततथासन्निपाते तत्र–वातधिक्य=वातस्याधिक्य=प्राचुर्यम्, तथा–पित्तश्लेष्मातिरिक्त–पित्तश्ले ष्मणोरतिरेक =आधिक्य, तत् कुपितम्=कोपावस्था प्राप्तम्–कुपितवातपित्तकफा-नामाधिक्यमित्यर्थ, तथेति तथाभूतः=एतत्त्रितयरूपः सनिपातस्तस्मिन्, जाते= समुत्पन्ने सति 'तह' तथा–'उदयपत्ते' उदयप्राप्ते=उदयावस्था प्राप्ते सति,

---

इन पूर्वोक्त छह स्थानरूप कारणों के ध्यान से षट्कायके जीवों की रक्षा करते हुए साधु को भिक्षा वृत्ति करना चाहिये। तथा–(जपि य) जो औषध आदि है उनका भी सनिधि–संग्रह नहीं करना चाहिये सो कहते हैं–(समणस्स सुविहियस्स) सुविहित श्रमण के (बहुप्पगारम्मि रोगायके समुप्पन्ने) बहुत प्रकार के रोगातक उत्पन्न होने पर, जैसे– (वायाहियपित्तसिंभाइरित्तकुवियतहसणिवाए) कुपितवात की अधि कता, कुपितपित्त और कुपितकफ की अधिकता हो तथा इन दोषों से अन्य उसे सन्निपात भी (जाए) हो गया हो, तथा ऐसा दुःख कि जो (उज्जलबलविउल कक्खड पगाढदुक्खे) उज्ज्वल–सुख के लेशसे वर्जित हो, बल–बलवान् महाकष्टकारक हो, विपुल–आत्मा के प्रतिप्र-देश में नदी वेग की तरह प्रवर्द्धमान हो कर्कश–कठोर हो और प्रगाढ– प्रतिक्षण असमाधिजनक हो (तह) तथा ऐसे रोगातक (उदयपत्ते)

સાધુએ ભિક્ષાવૃત્તિ કરવી જોઈએ તથા "जपिय" જે ઔષધ આદિ ગણાય છે તેનો પણ સગ્રહ ન કરવો જોઈએ તે બાબતમા સૂત્રકાર કહે છે કે— "समणस्स सुविहियस्स" સુવિહિત શ્રમણને "बहुप्पगारम्मि रोगायके समुप्पन्ने" અનેક પ્રકારના રોગો ઉત્પન્ન થતા, જેવા કે "वायाहियपित्तसिंभाइरित्तकुवियतहसणिवाए" કુપિત વાયુની અધિકતા કુપિત પિત્ત અને કુપિત કફની અધિકતા હોય તથા એ દોષોથી તેને સન્નિપાત પણ "जाए" થઇ ગયો હોય, તથા એવુ દુખ કે જે "उज्जलबलविउलकक्खडपगाढदुक्खे" ઉજ્જ્વલ–લેશ પણ સુખ વિનાનુ હોય, અતિશય કષ્ટકારક હોય, વિપુલ–આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા નદીના વેગની જેમ વધતુ જતુ હોય, કર્કશ–કઠોર હોય અને પ્રગાઢ–પ્રતિક્ષણ અસમાધિ જનક હોય "तह" તથા એવા રોગાતક "उद

धूम=धूमदोषवर्जितम्, एतादृशम् अशनादिकं ग्रहीतुं कल्पते । साधुभिः-कथं वर्त्तव्यम् ? इत्याह—' छट्ठाणनिमित्त ' षट्स्थाननिमित्तम्=षट्स्थानानि=आहारकारणस्य षट्कारणानि, तेषां निमित्तं=षट्कारणार्थमित्यर्थः। षट्कारणानि-वेदन=क्षुद्वेदनं वैयावृत्त्य=शुश्रूषा, ईर्या=गमनम्, संयमरक्षा, प्राणधारणं, धर्मचिन्तनं च उक्तञ्च—

" वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ " ॥ इति ॥

तथा—' छकायपरिक्खणट्ठ षट्कायपरिरक्षणार्थम्, ' हणि हणि ' अहन्यहनि=प्रतिदिनम् ' फासुएण ' प्रासुकेन ' भिक्खेण ' भैक्षेण=सामुदानिकभिक्षया, ' वट्टियव्वं ' वर्तितव्यम्, प्राणधारणं कर्तव्यमित्यर्थः । तथा-' जंपि य ' यदपि

दोषों से रहित होना चाहिये और (विगयधूम) धूमदोष से भी रहित होना चाहिये । तभी जाकर वह साधुओं के लिये कल्पित हो सकता है । (छट्ठाणनिमित्त) छह कारणों से साधु आहार ग्रहण करते हैं-वे छह स्थानरूप कारण यह हैं-क्षुधावेदना १, वैयावृत्य २, ईर्या-गमन ३, संयमरक्षा ४, प्राणधारणा ५, और धर्मचिन्तन ६ । कहा भी है-

" वेयण १, वेयावच्चे २, इरियट्ठाए ३ य संजमट्ठाए ४ ।
तह पाणवत्तियाए ५, छट्ठं पुणधम्मचिंताए ६ ॥१॥ "

तथा (छकायपरिक्खणट्ठ) आहारग्रहण करने से छहकाय जीवों की रक्षा होती है । इसलिये साधु को (हणिहणि) प्रतिदिन (फासुएण भिक्खेण) प्रासुक भिक्षा से (वट्टियव्व) प्राणधारण करना चाहिये-अर्थात्

હોવો જોઈએ અને " विगयधूम " ધૂમ દોષથી રહિત હોવો જોઈએ ત્યારે જ તે સાધુઓને કલ્પે તેવો બને છે " छट्ठाणनिमित्त " છ કારણોથી સાધુ આહાર ગ્રહણ કરે છે-તે છ સ્થાનરૂપ કારણ આ પ્રમાણે છે-(૧) ક્ષુધા વેદના (૨) વૈયાવૃત્ય, (૩) ઇર્યા-ગમન, (૪) સંયમ રક્ષા (૫) પ્રાણધારણ અને (૬) ધર્મ ચિન્તન કહ્યુ પણ છે—

" वेयण १ वेयावच्चे २ इरियट्ठाए ३ य संजमट्ठाए ४ ।
तह पाणवत्तियाए ५, छट्ठं पुणधम्मचिंताए ६ ॥ १ ॥ "

તથા " छकायपरिक्खणट्ठाए " આહાર ગ્રહણ કરવાથી છકાયના જીવોની પણ રક્ષા થાય છે તેથી સાધુને " हणि हणि " પ્રતિદિન " फासुएण भिक्खेण " પ્રાસુક ભિક્ષાથી " वट्टियव्व " પ્રાણધારણ કરવો જોઈએ એટલે કે તે પૂર્વોક્ત છ સ્થાનરૂપ કારણોને ધ્યાનમા લઈને છકાયના જીવોની રક્ષા કરતા થકા

'सणिहिकय' सन्निधीकृत 'न कप्पइ' न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य। अथ यत्कल्पते तदाह-'जंपि य' यदपि च किञ्चित् 'समणस्स' श्रमणस्य 'सुविहियस्स तु' सुविहितस्य=शोभनाचाररतस्तु, 'पडिग्गहधारिस्स' पतद्ग्रहधारिणः =पात्रधारकस्य 'भायणभंडोवहि उवकरण पडिग्गहो' भाजनमाण्डोपध्युपकरण पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधिः=वस्त्रादिः, तद्रूप यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-'पडिग्गहो' पतद्ग्रहः=भोजनपात्र 'भवइ' भवति। तथा-'पायबंधणपायकेसरियापायट्ठवण च' पात्रबन्धनपात्रकेसरिका पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रबन्धन=' झोली ' इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका= पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापन=यत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषां समाहार द्वन्द्व, 'तिण्णि य' त्रीणि च 'पडलाइ' पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणसमये पात्रपरिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-'रयत्ताण' रजस्त्राण=

परिग्रह विरत साधु को (सन्निहिकय) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पइ) नहीं कल्पता है। उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुविहित शोभनाचारसपन्नश्रमण-साधुके पास (जंपि य) जो भी (भायणभंडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ) भाजनउन्दक, भांड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा-(पायबंधणपायकेसरिया पायट्ठवण च) पात्रबंधन—झोली, पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनपटल-ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खंड, (रयत्ताण) जलपात्र ढकने

સગ્રહના રૂપમા પોતાની પાસે રાખવા "न कप्पइ" કલ્પતા નથી તે પરિગ્રહ વિરત સાધુને માટે પોતાની પાસે કયી કયી ચીજો રાખવી કલ્પે છે? તો તે સૂત્રકાર કહે છે કે—"समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स" પાત્રધારી તે સુવિહિત સદાચારયુક્ત સાધુની પાસે "जंपिय' જે કોઇ "भायण भडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ" ભાજન-ઉન્દક, ભાડ-જળપાત્ર, ઉપધિ-વસ્ત્રાદિરૂપ ઉપકરણ, તથા પતદ્ગ્રહ-ભોજન પાત્ર હોય તે તથા 'पायबंधण पायकेसरिया पायट्ठवण च" પાત્રબંધન-ઝોળી, પાત્રકેસરિકા પાત્ર પ્રમાર્જિકા, પાત્રસ્થાપન વસ્ત્ર તથા "तिण्णयपडलाइ" ત્રણપટલ-પાત્રોને એક બીજાની ઉપર મૂકવાને વખતે તે પાત્રોની રક્ષાને માટે પાત્રોની વચ્ચે રાખેલ ત્રણ વસ્ત્રખંડ, "रयत्ताण"

कस्मिन् ? इत्याह—' उज्जलबलविउलकक्खडपगाढदुक्खे ' उज्ज्वलबलविपुलकर्कशप्रगाढदुःखे, तत्र-उज्ज्वल=सुखलेशवर्जितम् , बल=बलवत्=महाकष्टजनकम् विपुलम्=आत्मप्रतिप्रदेशे नदीवेगवत्प्रवर्द्धमानम् , कर्कश = कठोरम्, दुःसह्यत्वात्, प्रगाढ=प्रकृष्ट प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात् यद्दुःखं तस्मिन , कथम्भूते दुःखे ? ' असुभकडुयफरुसचडफलविवागे ' अशुभकटुकपरुषचण्डफलविपाके, अशुभः= अशुभरूपः, कटुकनिम्बरस इवानिष्टः, परुषः=परुषस्पर्शद्रव्यमिवानिष्टः, तथा-चण्डो=दारुणो यः फलविपाकस्तादृशे, पुनः—' महभये ' महाभये = महद्भय यस्मात्तस्मिन् , महाभयजनके इत्यर्थः, पुनः—' जीवियतकरणे ' जीवितान्तकरणे= जीवितस्य=जीवनस्य अन्तकरण=नाशो यस्मात्तस्मिन् , प्राणनाशसमर्थे इत्यर्थः, पुनः कीदृशे ? ' सव्वसरीरपरितावणकरणे ' सर्वशरीरपरितापनकरणे=अङ्गप्रत्यङ्ग सन्तापजनके, ' तह ' तथा ' तारिसेवि ' तादृशेऽपि=यादृशः सोढु न शक्यते तादृशेऽपि रोगातङ्कादौ ' अप्पणो परस्स व ' आत्मनः परस्य वा निमित्त यदपि ' ओसहभेसज्जभत्तपाण ' औषधभैपज्यभक्तपानम् ' त पि य ' तदपि च

उदय प्राप्त हो रहे हो (असुभकडुयफरुसचडफलविवागे) कि जिसका फलरूपविपाक अशुभरूप ही हो, निम्बरस के जैसा कटुक अनिष्ट हो, परुस-परुष स्पर्श द्रव्य की तरह जो अरुचिकारक हो, और चड-दारुण हो तथा (महभये) महाभयकर हो (जीवियतकरे) जिसमें जीवन के नाश होने की भी सभावना हो रही हो, (सव्वसरीरपरितावणकरे) अग, प्रत्यग मे जिसके कारण असह्य सताप बढ रहा हो (तह तारिसे वि) ऐसे पूर्वोक्त प्रकार के रोगातको के समय में भी (अप्पणोपरस्सव) चाहे ये रोगातक अपने लिये हो रहे हों चाहे दूसरे साधु के लिये हो रहे हों उस समय अपने और पर के निमित्त जो (ओसहभेसज्ज-भत्तपाण) औषध, भैषज्य एव भक्तपान हो (तपि य) वह भी उस

यपत्ते" उदय पाम्या होय ' असुभकडुयफरुसचडफलविवागे " के जेना फળ ३प विपाक अशुभ ३प ज होय, लीबु जेवा કटुक अनिष्ट होय, परुष-કठोर स्पर्शद्रव्यना जेवा जे अरुचि કारક होय, अने चड-दारुण होय तथा " महभये " अति भयકर होय, " जीवियतकरे " जेमा જીवनना अत आववानी पण शक्यता होय " सव्वसरीर-परितावणकरे " अग, अत्यगमा जेने કारण असह्य सताप वधतो जतो होय " तह तारिसे वि " भले ते रोगातક पोताने माटे थता होय के भले बीजा साधुने माटे थई रह्या होय, ते समये पोताने के अन्यने निमित्ते जे " ओसहभेसज्जभत्तपाण " औषध, भैषज्य अने भकतपान होय " तविय " ते पण ते परिग्रह विरક्त साधुने " मनिहिकय "

'सणिहिकय' सन्निधीकृत 'न कप्पइ' न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य। अथ यत्कल्पते तदाह-'जंपि य' यदपि च किञ्चित् 'समणस्स' श्रमणस्य 'सुविहियस्स तु' सुविहितस्य=शोभनाचारवतस्तु, 'पडिग्गहधारिस्स' पतद्ग्रहधारिणः=पात्रधारकस्य 'भायणभंडोवहि उवकरण पडिग्गहो' भाजनभाण्डोपध्युपकरण पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधिःवस्त्रादिः, तद्रूप यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-'पडिग्गहो' पतद्ग्रहः=भोजनपात्र 'भवइ' भवति। तथा-'पायबंधणपायकेसरियापायट्ठवण च' पात्रबन्धनपात्रकेसरिका पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रबन्धनं=' झोली ' इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका=पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापन=यत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषां समाहार द्वन्द्व, 'तिण्णि य' त्रीणि च 'पडलाइ' पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणसमये पात्रपरिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-'रत्ताण' रजस्त्राण=

परिग्रह विरत साधु को (सनिहिकय) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पइ) नहीं कल्पता है। उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुविहित शोभनाचारसपन्नश्रमण-साधुके पास (जंपि य) जो भी (भायणभंडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ) भाजनउन्दक, भांड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा-(पायबंधणपायकेसरिया पायट्ठवण च) पात्रबंधन—झोली, पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनपटल-ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खड, (रयत्ताण) जलपात्र ढकने

સગ્રહના રૂપમા પોતાની પાસે રાખવા "न कप्पइ" કલ્પતા નથી તે પરિગ્રહ વિરત સાધુને માટે પોતાની પાસે કયી કયી ચીજો રાખવી કલ્પે છે? તો તે સૂત્રકાર કહે છે કે—"समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स" પાત્રધારી તે સુવિહિત સદાચારયુક્ત સાધુની પાસે "जंपिय" જે કોઈ "भायण भंडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ" ભાજન-ઉન્દક, ભાંડ-જળપાત્ર, ઉપધિ-વસ્ત્રાદિરૂપ ઉપકરણ, તથા પતદ્ગ્રહ-ભોજન પાત્ર હોય તે તથા 'पायबंधण पायकेसरिया पायट्ठवण च" પાત્રબંધન-ઝોળી, પાત્રકેસરિકા પાત્ર પ્રમાર્જિકા, પાત્રસ્થાપન વસ્ત્ર તથા "तिण्णयपडलाइ" ત્રણપટલ-પાત્રોને એક બીજાની ઉપર મૂકવાને વખતે તે પાત્રોની રક્ષાને માટે પાત્રોની વચ્ચે રાખેલ ત્રણ વસ્ત્રખંડ, "रयत्ताण"

जलादिपात्राच्छादनवस्त्रखण्डम् , 'गोच्छओ' गोच्छकः=प्रमार्जिका, तथा-'तिण्णि य पच्छागा' त्रयश्च प्रच्छादकाः, 'चादर' प्रसिद्धाः, तत्र-द्वौ सूत्रनिर्मितौ, एक ऊर्णनिर्मितः, तथा-'रओहरणचोलपट्टकमुहणंतकमाईयं' रजोहरणचोलपट्टकमुखानन्तकादिकम् , तत्र-रजोहरणं प्रसिद्धम् , चोलपट्टकं परिधानवस्त्रम् , मुखानन्तकं=सदोरकमुखवस्त्रिका, एतान्यादौ यस्य तत्तथा, 'एयपि य' एतदपि च 'उवगरणं' उपकरणम् 'संजमस्स' संयमस्य=सावद्ययोगविरतिलक्षणसप्तदशविधस्य 'उववूहणट्ठयाए' उपबृंहणार्थतायै, वृद्ध्यर्थमित्यर्थः, अत्र स्वार्थे तल्प्रत्ययः। तथा-'वायायवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए' वातातपदंशमशकशीतपरिरक्षणार्थतायै, तत्र वातातपादि संरक्षणार्थं, रागदोसरहियं',रागद्वेषरहितं यथा भवति तथा 'णिच्चं' नित्यं 'परिहरियव्वं' परियोढव्यम्=परिधर्तव्यं, 'संजएण' संयतेन। 'पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए' प्रतिलेखनप्रस्फोटनप्रमार्जनायाम् , तत्र-प्रतिलेखन=

का वस्त्र, (गोच्छओ) गोच्छक-प्रमार्जिका, तथा (तिण्णि य पच्छागा) तीन प्रच्छादक-चादर (इनमें २ सूतके चादर और १ ऊनका कंबल रहता है) (रओहरणचोलपट्टग-मुहणंतगमाईयं) रजोहरण, चोलपट्टक, मुखानन्तक,-सदोरकमुखवस्त्रिका आदि ये उपकरण रहते हैं सो (एयंपि य) ये उपकरण भी (संजमस्स उववूहणट्ठयाए) उस साधु के सत्रह प्रकार के संयम की रक्षा के निमित्त एवं वृद्धिके निमित्त ही होते हैं तथा- (वायायवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए) वात, आतप -धूप दंशमशक, और शीत से रक्षा करने के लिये है। इसलिये (संजएण) संयत को (रागदोसरहियं) रागद्वेष से विहीन होकर (णिच्चं) सर्वदा ये धर्मोपकरण (परिवहियव्वं) धारण करना चाहिये अर्थात् अपने पास रखना चाहिये। और इनकी (पडिलेहणपप्फोडणपमज्ज

જળપાત્ર ઢાંકવાનું વસ્ત્ર, "गोच्छओ" ગોચ્છક-પ્રમાર્જિકા તથા "तिण्णी य पच्छागा" ત્રણ પ્રચ્છાદક-ચાદર (તેમાં બે સૂતરાઉ અને એક ઉનની કામળ હોય છે) 'रओहरण-चोलपट्टग-मुहण-तगमाईयं" રજોહરણ, ચોલપટ્ટક, મુખાનન્તક-દોરા સહિતની મુહપત્તી, આદિ ઉપકરણો-રહે છે, વળી "एयपिय" તે ઉપકરણ પણ "संजमस्स उववूहणट्ठयाए" તે સાધુના સત્તર પ્રકારના સંયમની રક્ષાને માટે અને વૃદ્ધિને માટે જ હોય છે તથા "वायायवदंसमसग सीयपरिरक्खणट्ठयाए" વાત, તડકો, દંશ મશક અને શીતથી રક્ષણ કરવાને માટે છે તેથી "संजएण" સંયતને "रागदोसरहियं" રાગદ્વેષથી રહિત થઈને "णिच्चं" સર્વદા તે ધર્મોપકરણ "परिवहियव्वं" ધારણ કરવા જોઈએ, એટલે કે પોતાની પાસે રાખવા જોઈએ અને તેમની "पडिलेहण

प्रत्युपेक्षणम्=चक्षुषा निरीक्षणमित्यर्थ, प्रस्फोटनम्=यतनापूर्वकमास्फालनम्, आभ्या सहिता या प्रमार्जना तस्या कृताया सत्याम् 'सयय' सतत 'अहो य राओ य' अह्नि च रात्रौ च, 'भायणभडोवहि उवगरण' भाजनभाण्डोपध्युपकरणम्, 'अप्पमत्तेण' अप्रमत्तेन=प्रमादवर्जितेन सयतेन 'निक्खियव्व' निक्षेप्तव्य=यतनया स्थापयितव्य च, 'गिण्हियव्व च' यतनया ग्रहीतव्य च 'होइ' भवति। एषा-चतुर्थसमित्याराधना विज्ञेया॥ सू० ४॥

णाए) प्रतिलेखनाचक्षु द्वारा अच्छी तरह अवलोकन क्रिया और प्रस्फोटन-यतना पूर्वक झटकारना रूप क्रिया तथा प्रमार्जना कर लेने पर (अहो य राओ य) दिन में तथा रात्रि मे जब कभी रखने और लेने काम पडे तो इन (भायणभडोवहिउवगरण) भाजन, भाड और वस्त्रादि रूप उपधि को (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त होकर साधु को (सयय) नित्य (निक्खियव्व) यतनासे धरना चाहिये और (गिण्हियव्व च होइ) यतना से उठाना चाहिये।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने कैसा आहार मुनि को लेना चाहिये और क्या २ सामग्री अपने पास रखना चाहिये-यह सब प्रकट किया है। आचाराङ्ग के द्वितीय श्रुतस्कध में जो पिण्डैषणा नामका प्रथम अध्ययन है उसमे ग्यारह उद्देशों मे आहार के जो दोष प्रतिपादित किये गये हैं उन दोषो से जो आहार वर्जित हो, क्रयण आदि की कृत आदि रूप नौकोटियों से जो शुद्ध हो, उद्गम, उत्पादना और एषणा से जो शुद्ध हो, व्यपगत आदि विशेषणो वाला हो, प्रासुक हो, सयोजनादोष

પપ્ફોડણપમજ્જણાએ" પ્રતિલેખના – આખ વડે સારી રીતે અવલોકન અને પ્રસ્ફોટન-યતનાપૂર્વક ઝટકારવારૂપ ક્રિયા તથા પ્રમાર્જન કર્યા પછી "અહોય રાઓય" દિવસે કે રાત્રે જ્યારે પણ લેવા કે મૂકવાની જરૂર પડે ત્યારે તે "ભાયણભડોવહિઉવગરણ" ભાજન ભાડ અને વસ્ત્રાદિરૂપ ઉપધિને "અપ્પમત્તેણ" અપ્રમત્ત થઈને સાધુએ "સયય" સદા "નિક્ખિયવ્વ" યતનાપૂર્વક મૂકવા જોઈએ અને "ગિણ્હિયવ્વ ચ હોઇ" યતનાપૂર્વક ઉઠાવવા જોઈએ

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે કેવો આહાર મુનિએ લેવો જોઈએ અને કયી કયી સામગ્રી પોતાની પાસે રાખવી જોઈએ તે બધુ બતાવ્યુ છે આચારાગના બીજા શ્રુતસ્કધમા જે પિંડૈષણા નામનુ પહેલુ અધ્યયન છે તેના અગિયાર ઉદ્દેશોમા આહારના જે દોષોનુ પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યુ છે તે દોષોથી જે આહાર રહિત હોય, ક્રયણ આદિના કૃત આદિરૂપ નવ પ્રકારે જે શુદ્ધ હોય, ઉદ્ગમ, ઉત્પાદના અને એષણાથી જે શુદ્ધ હોય, વ્યપગત આદિ વિશેષણો વાળો હોય, પ્રાસુક હોય, સયોજના દોષ વિનાનો હોય, અગાર

से हीन हो, अंगार और धूम दोष से विगत हो ऐसा ही आहार मुनि को क्षुधा वेदना आदि छह कारणो के निमित्त को लेकर छहकाय के जीवों की रक्षा के अभिप्राय से लेना चाहिये। तथा इस परिग्रह विरत साधु के लिये कभी भी चाहे किसी भी प्रकार का कैसा ही रोगातक उदय मे आ रहा हो अपने निमित्त एव पर के निमित्त औषधि आदि का सग्रह नही करना चाहिये। मुनि के लिये आगम में जिन २ धर्मोपकरणों को रखने का विधान है-वे २ धर्मोपकरण उसे शीत आतप आदि जन्य बाधा की निवृत्ति के लिये और सावद्ययोगविरतिरूप सत्रह प्रकार के सयम की रक्षा करने के लिये विना किसी रागद्वेषपरिणति के अपने पास रखना चाहिये। उनकी प्रतिदिनयतना पूर्वक प्रमार्जना आदि करके दिन या रात्रि में उन्हें यतनापूर्वक धरनो और उठाना चाहिये। सूत्र में जो " ववगयचुय चवियचत्तदेह " यह पद आया है उसका शब्दार्थ इस प्रकार है-सामान्यरूप में जो आहार चेतन पर्याय से रहित होकर अचेतन बन जाता है। वह व्यपगत कहलाता है। विशेष रूप में जीवन आदि क्रिया से जो विनिर्गत होता है वह च्युत कहलाता है। चेतना पर्याय से जो भृत्यादि द्वारा रहित कराया जाता है वह च्यावित कहा जाता है। एव जो जीवों के सबध से रहित होता है वह

અને ધૂમ દોષથી રહિત હોય, એવો જ આહાર મુનિએ ક્ષુધાવેદના આદિ છ કારણોને નિમિત્તે છકાયના જીવોની રક્ષાના અભિપ્રાયથી લેવો જોઈએ તથા એ પરિગ્રહ વિરત સાધુએ ગમે તે પ્રકારનો રોગાતકનો ઉદય થયો હોય તો પણ પોતાને માટે કે અન્યને માટે કદી પણ ઔષધિ આદિનો સગ્રહ કરવો જોઈએ નહી મુનિને માટે જે જે ઉપકરણો રાખવાનુ આગમમા વિધાન છે, તે તે ઉપકરણ તેણે શીત, તડકો આદિથી નડતી મુશ્કેલીઓથી બચવા માટે અને સાવદ્યયોગ વિરતિરૂપ સત્તર પ્રકારના સયમની રક્ષાને માટે કોઈ રાગદ્વેષ પરિણતિ વિના પોતાની પાસે રાખવા જોઈએ તેની દરરોજ યતનાપૂર્વક પ્રમાર્જના આદિ કરીને રાત્રે કે દિવસે તેમને યતનાપૂર્વક મૂકવા તથા લેવા જોઈએ સૂત્રમા જે "ववगयचुयचवियचत्तदेह" આ પદ આવે છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-સામાન્ય રીતે જે આહાર ચેતન પર્યાયથી રહિત થઈને અચેતન બની જાય છે તેને વ્યપગત આહાર કહે છે વિશેષ રૂપે જીવન આદિ ક્રિયાથી જે વિનિર્ગત થાય છે તે ચ્યુત અહાર કહેવાય છે ભૃત્યાદિ દ્વારા જે ચેતના પર્યાયથી રહિત થાય છે તે ચ્યાવિત કહેવાય છે અને જે જીવોના સબધથી

मूलम्—एवं से सजए विमुत्ते निस्संगो निप्परिग्गहरुई निम्ममे निस्सिणेहवधणे सव्वपावविरए वासीचदणसमाणकप्पे समतिणमणिमुत्तलेट्ठुकचणसमे समे य माणावमाणणाए समियरए समियरागदोसे समिए समिइसु सम्मद्दिट्ठी समे य जे सव्वपाणभूएसु से हु समणे सुयधारए उज्जुए सजए सुमाहु सरण सव्वभूयाण सव्वजगवच्छले सच्चभासए संसारते ठिएय ससारसमुच्छिन्ने सययं सरणाण पारए पारए य सव्वेसि समयाण पवयणमयाहि अट्ठहि अट्ठकम्मगंठी विमोयगे अट्ठमयमहणे ससमयकुसले य भवइ, सुहदुहनिव्विसेसे अब्भितरवाहिरम्मि सया तवोवहाणम्मि य सुट्ठुज्जुए खंते दंते य हियनिरए इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चारपासवणखेल -जल्लसिघाणपरिट्ठावणासमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवभयारी चाई लज्जुधण्णो तवस्सी खंतीखमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अवहिलेस्से अममे अकिचणे छिन्नगथे निरुवलेवे सुविमलवरकसभायण चेव मुक्कतोए सखे विव निरजणे विगयरागदोसमोहे कुम्मोइव इदियसुगुत्ते, अच्चकणग व जायरूवे, पुक्खरपत्त व निरुव-

---

त्यक्त कहा जाता है। इस तरह इस सूत्र द्वारा चौथी समिति की आराधना प्रकट की गई है ऐसा जानना चाहिये ॥ सू-४ ॥

રહિત થાય છે તે ત્યક્ત આહાર કહેવાય છે, આ રીતે આ સૂત્ર દ્વારા ચોથી સમિતિની આરાધના પ્રગટ કરવામા આવી છે તેમ સમજવુ જોઈએ ॥ સૂ ૪ ॥

लेवे, चंदो इव सोमयाए सूरोव्व दित्ततेये, अचले जहमंदरे गिरिवरे, अक्खोभो सागरोव्व थिमिय पुढवी विय सव्व-फासविसहे तवसावि य भासरासिच्छन्नेव जायतेए जलियहुयासणो विव तेयसा जलते गोसीसचंदणं पिव सीयले सुगंधीय हरओ विव, समियभावे उग्घोसियसुनिम्मलं आय-समंडलतलं व पागडभावेण सुद्धभावे, सोंडीरो कुंजरो व, वसभो व जायथामे, सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्प-धरिसे, सारयसलिलं व सुद्धहियए भारंडे चेव अप्पमत्ते खग्गिविसाणं एगजाए खाणू व उड्ढकाए सुण्णागारेव्व अप्प-डिकम्मे सुण्णागारा वणस्सतो निवायसरणप्पईवज्झाणमिव निप्पकंपे जहा खुरोचेव एगधारे जहा अहीचेव एगदिट्ठी आगास चेव निरालंबे विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के कय-परनिलए जहा चेव उरए, अप्पडिबद्धो अनिलोव्व, जीवोव्व अप्पडिहयगई, गामे गामे य एगराय णगरे णगरे पंचराय दूइज्जंते य जितिंदिए जियपरिसहे य निब्भए विऊ सचि त्ताचित्तमीसएहिं दव्वेहिं विरागयगए संचयओ विरए मुत्ते लहुगे निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के निस्संध निव्वण चरित्त धीरे काएण फासयंते सययं अज्झप्पज्झाणजुत्ते निहुए एगे चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ५ ॥

'एवं' इत्यादि—

टीका—'एवं' एवम् = उक्तप्रकारेण साधुधर्मनिरतः 'से संजए' स संयतः=संयमी 'विमुत्ते' विमुक्तः संग्रहकरणाद् विमुक्तः 'निस्संगो' निःसङ्ग =

आसक्तिवर्जितः ' निप्परिग्गहरुई ' निष्परिग्रहरुचिः-परिग्रहरुचिरहित इत्यर्थः, ' निम्ममे ' निर्मम =ममत्वभाववर्जितः ' निस्सिनेहवधणे ' नि स्नेहवन्धन.= निर्गत स्नेहवन्धन यस्मात्सः-स्नेहवन्धनरहित इत्यर्थः, ' सव्वपावविरए ' सर्वपापविरतः-कायिकवाचिकमानसिकसर्वविधपापवर्जित इत्यर्थ, तथा-' वासीचदणसमाणकप्पे ' वासीचन्दनसमानकल्पः, वासी=' वसुला ' इति भाषाप्रसिद्धा, सेव-वासी=तक्षकत्वेन अपकारी, तस्मिन् तथा चन्दनमित्रोपकारकत्वेन चन्दनम्= उपकारी, तस्मिश्च अपकारके उपकारके द्वयोरपि समानः=सदृशः कल्पः=आचारो यस्य स तथोक्तः । यथोक्तम्—

" योमामपकरोत्येष, तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।
शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥ "

' एव से ' इत्यादि-

टीकार्थ—(एव) इस प्रकार साधु धर्म में लवलीन बना हुआ (से सजए) वह सयमीसाधु (विमुत्ते) सग्रह करने से विमुक्त बन जाता है (निस्सगो) आसक्ति से वर्जित हो जाता है (निप्परिग्गहरुई) परिग्रह की रुचि से रहित हो जाता है (निम्ममे) ममत्वभाव से विहीन हो जाता है (निस्सिणेहवधणे) स्नेहरूपबधन से मुक्त बन जाता है (सव्वपावविरए) कायिक, वाचिक एव मानसिक सर्वप्रकार के पापों से विरत हो जाता है (वासीचदणसमाणकप्पे) तथा वासी (वसुला) के जैसे अपकारक में और चदन के जैसे उपकारक में एकसा आचार वाला बन जाता है । जैसे कहा है—

" यो मामपकरोत्येष, तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।
शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥१॥ "

ટીકાર્થ—આ પ્રકારે સાધુ ધર્મમા લીન બનેલ " से सजए " તે સયમી સાધુ " विमुत्ते " સગ્રહ કરવાના કાર્યથી વિમુક્ત થઈ જાય છે, " निस्सगो " આસક્તિથી રહિત બની જાય છે, "निप्परिग्गहरुई " પરિગ્રહની રુચિથી રહિત થઇ જાય છે, " निम्ममे " મમત્વ ભાવ વિનાનો બની જાય છે, " निस्सिणेह वधणे " સ્નેહરૂપ બધનથી મુક્ત થઇ જાય છે, " सव्वपावविरए " કાયિક, વાચિક અને માનસિક એ સર્વ પ્રકારના પાપોથી વિરક્ત થઇ જાય છે " वासी चदणसमाणकप्पे " તથા વાસલા " वसुला " ના જેવા અપકારક પ્રત્યે તથા ચદનના જેવા ઉપકારક પ્રત્યે એક સરખા બની જાય છે જેમકે કહ્યુ છે-

" यो मामपकरोत्येष, तत्त्वेनोपकरोत्यसौ ।
शिरामोक्षाद्युपायेन, कुर्वाण इव नीरुजम् ॥ १ ॥

'सरण ' शरणम् 'सव्वजगवच्छले' सर्वजगद्वत्सल –सर्वजीवयोनिषु करुणाभावयुक्तः, 'सच्चभासए य' सत्यभाषकश्च, सत्यभाषाविवेकतत्पर तथा–' ससारते ठिये य ' ससारान्ते स्थिताश्च–भाविजन्मरहितत्वात्, इममेवार्थं शब्दान्तरेणाह ' ससारसमुच्छिन्ने ' ससारसमुच्छिन्नः=ससार =चतुर्गतिलक्षणः समुच्छिन्नो येन सः, अतएव ' सयय ' सततम् ' मरणाण ' मरणाना ' पारए ' पारगः=मुक्तस्यो त्पत्त्यभावेन मरणाभावान्मरणपारगत्व बोध्यम्। तथा–' पारगे य ' पारगश्च ' सव्वेसिं ससयाण' सर्वेषा सशयानाम्=सर्वसशयोच्छेदक इत्यर्थ, तथा 'पवयण मायाहिं अट्ठहिं प्रवचनमातृभिरष्टाभि =पञ्चसमितित्रिगुप्ति रूपाभिः=साधनभूताभिः

करनेमें तत्पर–बन जाता है। तथा (सरण सव्वभूयाण) समस्त भूतो का रक्षक बना हुआ वह साधु (सव्वजगवच्छले) सर्व प्रकारकी जीव योनियों के ऊपर अपार करुणाभाव से सहित हो जाता है। (सच्चभासए) उसकी भाषा में सत्यवादिता की छाप लग जाती है और वह (ससारते ठिए) आगामी जन्मसे रहित होनेके कारण ससार के अत में स्थित हो जाता है। इसी बातको सूत्रकार शब्दान्तरसे समझाते हैं–(ससारसमुच्छिन्ने) उस साधुका चतुर्गतिरूप ससार समुच्छिन्न हो जाता है। अत एव (सयय मरणाणपारए) वह सतत् मरण का पारगामी बन जाता है। क्यो कि मुक्त जीव की फिर ससार मे उत्पत्ति नही होती है, इसलिये उसका मरण भी नही होता है, अत इसी भाव को लेकर ' वह मरण का पारगामी बन जाता है ' ऐसा कहा गया है। (सव्वेसिं ससयाण पारए) वह समस्त प्रकारके संशयो का उच्छेदक

નિર્વાણુ સાધવાને તત્પર બની જાય છે તથા "सरण सव्वभूयाण" સમસ્ત જીવોનો રક્ષક બનેલ તે સાધુ "सव्वजगवच्छले" સર્વ પ્રકારની જીવ યોનિયો પર અપાર કરુણાભાવથી યુક્ત બના જાય છે "सच्च भासए" તેની વાણીમા સત્યવાદિતાની છાપ લાગી જાય છે અને તે "ससार ते ठिए" આવતા જન્મથી રહિત હોવાને કારણે સસારના અન્તમા સ્થિત થઈ જાય છે એ જ વાતને સૂત્રકાર બીજી રીતે શબ્દાદિક ફેરફારથી સમજાવે છે–"ससारसमुच्छिन्ने" તે સાધુનો ચારગતિરૂપ સસાર સમુચ્છિન્ન થઇ જાય છે તેથી "सयय मरणाणपारए" તે કાયમને માટે મરણુનો પારગામી બની જાય છે, કારણુ કે મુક્ત જીવની સસારમા ફરીથી ઉત્પત્તિ થતી નથી, તેથી તેનુ મરણુ પણુ થતુ નથી તેથી એ ભાવને કારણે "તે મરણુનો પારગામી બની જાય છે" એવુ કહ્યુ છે "सव्वेसिं ससयाण पारए" તે સમસ્ત પ્રકારના સશયોનો ઉચ્છેદક–નિવારક થઇ જાય છે

'अट्ठकम्मगंठीविमोयगे' अष्टकर्मग्रन्थिविमोचकः=अष्टौ=अष्टसंख्यका ये कर्मग्रन्थयस्तेषां विमोचकः, तथा-'अट्ठमयमहणे' अष्टमदमथनः=अष्टमदस्थाननाशकः 'ससमयकुसलेय' स्वसमयकुशलश्च=स्वसिद्धान्तनिपुणश्च, चकारात् परसमयकुशल 'भवइ' भवति। तथा-'सुहदुक्खनिव्विसेसे' सुखदुःखनिर्विशेषः=सुखदुःखयोर्हर्षशोकादिरहित इत्यर्थः, 'अब्भितरबाहिरम्मि तवोवहाणम्मि' आभ्यन्तरबाह्ये तपउपधाने, तत्र-चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मक्षपणहेतुत्वात्प्रायश्चित्तादिषट्कम्-आभ्यन्तरम्। बाह्यशरीरस्य परिशोषणेन कर्मक्षपणहेतुत्वादनशनादिषट्कं बाह्यम्, अनयोर्द्वन्द्वः, तस्मिन्, तप उपधाने=तपएव मोक्षमार्गस्योपष्टम्भकत्वादुपधानं तस्मिन्, 'सया' सदा 'सुट्ठुज्जए' सुष्ठुद्यत =सम्यक्तया तदाराधने तत्पर

हो जाता है। तथा (पावयणमायाहिं अट्ठहिं) पांचसमिति, तीन गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन माताओं के बलपर वह (अट्ठकम्मगंठीविमोयणे) आठ प्रकारके कर्मो की ग्रन्थियों को छोड़ानेवाला बन जाता है। (अट्ठमयमहणे) शुद्ध सम्यग्दर्शन का पालनकर्ता होनेके कारण वह आठ मदों का विनाशक होता है। (ससमयकुसले य) स्वसमयमें पूर्ण निष्णात बन जाता हैं तथा चकारसे परसमयका ज्ञाता भी बन जाता है। (सुहदुक्ख निव्विसेसे) सुख और दुःख उसे एकसे प्रतीत होने लगजाते हे। वह उनमें हर्ष और विषाद नहीं करता है। (अब्भितरबाहिरम्मि तवोवहाणम्मि) चित्तनिरोधकी प्रधानतासे कर्मक्षपण के हेतुभूत होने के कारण प्रायश्चित्त आदि छह प्रकार के आभ्यन्तर तप रूप उपधान में तथा बाह्य में शरीर के परिशोषण से कर्मक्षपण के हेतु होने से अनशन आदि बारह प्रकार के बाह्य तपरूप उपधान मे सदा (सुट्ठुज्जए) अच्छी तरह

"पवयणमायाहिं अट्ठहिं" પાંચ સમિતિ ત્રણગુપ્તિથી આઠ પ્રવચન માતાઓના બળથી તે "अट्ठकम्मगंठीविमोयणे" આઠ પ્રકારના કર્મોની ગાંઠોને છોડાવનાર બની જાય છે "अट्ठमयमहणे" શુદ્ધ સમ્યગ્દર્શનનો પાલનકર્તા હોવાને કારણે તે આઠ મદનો વિનાશક હોય છે "ससमयकुसले य" સ્વસમયમાં પૂર્ણ નિષ્ણાત બની જાય છે તથા चकारथी પર સમયનો જાણકાર બની જાય છે "सुहदुक्खनिव्विसेसे" સુખ અને દુઃખ તેને સરખા લાગવા માંડે છે તે તેમાં હર્ષ કે વિશાદ કરતો નથી "अब्भितरबाहिरम्मि तवोवहाणम्मि" ચિત્તનિરોધની પ્રધાનતાથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે પ્રાયશ્ચિત્ત આદિ છ પ્રકારના આભ્યન્તર તપરૂપ હોવાને ઉપધાનમાં તથા બાહ્યમાં શરીરના પરિશોષણથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે અનશન આદિ બાર પ્રકારના બાહ્ય તપ રૂપ ઉપધાનમાં સદા "सुट्ठुज्जए" સારી રીતે તે તત્પર થઇ જાય છે, એટલે

इत्यर्थः, तथा 'खते' क्षान्तः=क्षमावान् 'दते य' दान्तश्च=इन्द्रियदमनकारी च, तथा-'हियनिरए' हितनिरतः=आत्मकल्याणपरायण इत्यर्थः, तथा-'इरियासमिए' ईर्यासमितः, 'भासासमिए' भाषासमित 'एसणासमिए' एषणासमितः 'आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए' आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः 'उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठावणियासमिए' 'उच्चारपासवणखेल सिंघाणसमिए' उच्चारप्रस्रवणश्लेष्मसिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमित, 'मणगुत्ते' मनोगुप्त -'वयगुत्ते' वचोगुप्तः, 'कायगुत्ते' कायगुप्तः 'गुत्तिंदिए' गुप्तेन्द्रियः, 'गुत्तबंभयारी' गुप्तब्रह्मचारी, एषामर्थाः पूर्वं व्याख्याताः । तथा

वह तत्पर हो जाता है अर्थात् बाह्य और आभ्यन्तर तपों की आराधना वह बहुत अच्छी तरह से किया करता है। (खते) सब जीवों पर वह क्षमाभाव रखता हुआ (दते) और अपनी इन्द्रियों का दमन करता हुआ (हियनिरए) आत्मकल्याण करने में परायण बन जाता है। तथा (इरियासमिए) ईर्यासमिति से युक्त (भासासमिए) भाषा समिति से युक्त, (एसणासमिए) एषणासमिति से युक्त (आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए) आदानभांडमत्रनिक्षेपणा समिति से युक्त तथा (उच्चार पासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिए) उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनिका समिति से युक्त (मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति कायगुप्ति इन तीन गुप्तियों से गुप्त-रक्षित आत्मप्रवृत्ति वाला बना हुआ (गुत्तिंदिए) अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण अंकुश रखने वाला बन जाता है (गुत्त बंभयारी) ब्रह्मचर्य-व्रत की नौ कोटि से सदा रक्षा करने वाला होता है। तथा फिर

કે બાહ્ય અને અભ્યંતર તપોની આરાધના તે બહુ સારી રીતે કર્યા કરે છે "खते" દરેક જીવો પર તે સમાનભાવ રાખતો "दते" અને પોતાની ઇન્દ્રિયોનું દમન કરતો "हियनिरए" આત્મકલ્યાણ કરવામાં પરાયણ બની જાય છે તથા "इरियासमिए" ઈર્યા સમિતિથી યુક્ત "भासासमिए" ભાષા સમિતિથી યુક્ત, "एसणासमिए" એષણા સમિતિથી યુક્ત, "आयाण-भंड मत्तनिक्खेवणासमिए" આદાન ભાંડ માત્ર નિક્ષેપણા સમિતિથી યુક્ત તથા उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठावणियासमिए" ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલજલ્લ સિંઘાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિથી યુક્ત मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते" મનોગુપ્તિ વચન-ગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, એ ત્રણે ગુપ્તિઓથી ગુપ્ત-રક્ષિત આત્મ પ્રવૃત્તિ વાળો બનીને "गुत्तिंदिए" પોતાની ઇન્દ્રિયોપર પૂર્ણ અંકુશ રાખનાર બની જાય છે "गुत्तबंभयारी" બ્રહ્મચર્ય વ્રતની નવ કોટીએ સદા રક્ષા કરનાર

'चाई' त्यागी सर्वसङ्गत्यागात्, 'लज्जू' लज्जावान्=सयमी 'धण्णो' धन्यः — सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शनसम्यक्चारित्ररूपधनलाभयोग्यत्वात्, 'तवस्सी' तपस्वी=प्रशस्ततपोयुक्तत्वात्, 'खतिक्खमे' क्षान्तिक्षम =लब्ध्यादि सामर्थ्ये सत्यपि क्षान्त्या-क्षमागुणेन क्षमते=सहते यः स तथोक्तः, तथा-'जिइंदिए' जितेन्द्रियः, 'सोहिए' शोधित =शुद्धः - क्षालितमिथ्यात्वादिकर्ममलत्वात्, 'अणियाणे' अनिदानः-निदानवर्जितः, 'अबहिल्लेस्से' अबहिर्लेश्यः - 'अ' अविद्यमाना बहिः=सयमाद् बहि लेश्या=अन्त. करणवृत्तिः, यस्य सोऽबहिर्लेश्यः, सयमान्त करण इत्यर्थः, तथा 'अममे' अमम'-ममत्ववर्जित, 'अकि-

(चाई) सर्व सग का परित्याग कर देने से वह त्यागी कहलाने लगता है। (लज्जू) लज्जावान् बन जाता है-वह सदा इस बात का ध्यान रखता है कि कहीं ऐसी प्रवृत्ति मुझसे न बन जावे जो सयम मार्ग के विरुद्ध होकर मुझे लजाने वाली हो। ऐसा वह सयमी (धण्णो) सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र रूप धन लाभ के योग्य हो जाने के कारण धन्य माना जाता है। तथा (तवस्सी) प्रशस्त-तपों को आचरित करने वाला होने से तपस्वी कहलाने लगता है, तथा (खतिक्खमे) लब्धि आदि रूप सामर्थ्यसपन्न होने पर भी वह क्षमागुण से सब कुछ सहने वाला स्वभाव बन जाता है। इस तरह (जिइदिए) जितेन्द्रिय, (सुद्ध) मिथ्यात्वादि कर्ममलक्षालित होने से शुद्ध (अणियाणे) निदान से रहित, (अबहिलेस्सो) अबहिर्लेश्य-सयमयुक्त अन्तः करण वाला (अममे) ममता से रहित (अकिंचणे)

થાય છે તથા 'चाई" સર્વ સગનો ત્યાગ કરી દેવાથી તે ત્યાગી કહેવાવા લાગે છે "लज्जू" તે અદરથી તથા બહારથી દોરીના જેવો સરળ થઈ જાય છે અથવા લજ્જાવાન બની જાય છે તે હમેશા તે વાતની કાળજી રાખે છે કે મારાથી કદાચ એવી પ્રવૃત્તિ થઈ ન જાય કે જે સયમ માર્ગની વિરૂદ્ધ હોવાને કારણે મારે લજાવુ પડે એવા તે સયમી "धण्णो" સમ્યક્જ્ઞાન, સમ્યક્ દર્શન, અને સમ્યક્ ચારિત્રરૂપ ધનલાભને યોગ્ય થઈ જવાને કારણે ધન્ય મનાય છે તથા "तवस्सी" પ્રશસ્ત તપો કરનાર હોવાથી તપસ્વી કહેવાવા લાગે છે, તથા "खतिक्खमे" લબ્ધિ આદિરૂપ સામર્થ્ય યુક્ત હોવા છતા પણ તે ક્ષમાગુણથી બધુ સહન કરવાની વૃત્તિવાળો થઇ જાય છે આ રીતે "जिइदिए" જિતેન્દ્રિય, "सुद्ध" મિથ્યત્વાદિ કર્મમળનો ક્ષય થવાને કારણે શુદ્ધ, "अणियाणे" નિદાનથી રહિત, "अबहिल्लेस्सो" અબહિર્લેશ્ય-સયમી અત કરણવાળો "अममे" મમતાથી રહિત, "अकिंचणे" અકિંચન

चणे ' अकिञ्चनः-निर्द्रव्यः, ' छिन्नगये ' छिन्नग्रन्थः-बाह्याभ्यन्तरपरिग्रहरहितः, तथा-' निरुवलेवे ' निरुपलेपः=रागद्वेषवर्जितः, तथा-' सुविमलवरकंसभायण चेव ' सुविमलवरकांस्यभाजनमिव=सुविमलं=निर्मलं यद्वरकांस्यभाजनं तदिव 'विमुक्ततोए' विमुक्ततोयः=जललेपरहित , श्रमणपक्षे सम्बन्धहेतुस्नेहवर्जित इत्यर्थः तथा-' सखे विव निरञ्जणे' शंख इव निरञ्जनः, अयं भावः-यथा शंखो निर-ञ्जनोऽर्थाच्छुक्लो भवति, तथा साधुरपि निरञ्जनः=रागादिकृष्णतारहितो भवति। अत एव ' विगयरागदोसमोहे ' विगतरागद्वेषमोहः, विगतानष्टा रागद्वेष मोहाः यस्मात् सः तथा 'कुम्मो इव' कूर्म इव इंदिए सुगुत्ते' इन्द्रियेषु गुप्त -यथा कच्छपो ग्रीवादि स्वाङ्गानि संगोप्य गुप्तो भवति तथैव साधुरपि विषयेभ्य इन्द्रियाणि संगोप्य गुप्तो भवति। तथा-'जच्चकणग व' जात्यकनकमिव=शुद्धकाञ्चनमिव 'जाय रूवे ' जातरूपः=रागादिविकाररहितत्वात् , स्वस्वरूपसम्पन्नः, तथा 'पुक्खरपत्त व '

अकिंचन भाव से युक्त, (छिन्नगथे) बाह्य और आभ्यतर परिग्रह से वर्जित, बना हुआ वह साधु (निरुवलेवे) राग और द्वेष से निर्लिप्त बन जाता है और (सुविमलवरकसभायण चेव विमुक्ततोए) निर्मल कांस्यपात्र की तरह जल से मुनिपक्ष में सम्बन्ध के हेतुभूत स्नेह से रहित होता हुआ (सखेविव निरजणे) शख की तरह निरजन-शुक्ल अर्थात रागादिक की कृष्णता से रहित हो जाता है। इसिलिये वह (विगयरागदोसमोहे) राग द्वेष एव मोह से रहित हो जाता है तथा (कुमो इव इदिय सुगुत्ते) कूर्म-कच्छप की तरह इन्द्रियगुप्त कहलाता है अर्थात् जिस प्रकार कच्छपग्रीवादिक अपने अवयवों को छुपाकर शरीर में गुप्त हो जाता है उसी प्रकार वह साधु भी विषयों से इन्द्रियो को हटाकर सुरक्षित बन जाता है। तथा (जच्चकणग व जायरूवे)

ભાવથી યુક્ત, " छिन्नगथे" બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિગ્રહથી રહિત બનેલ તે સાધુ "निरुवलेवे" રાગ અને દ્વેષથી અલિપ્ત બની જાય છે, અને " सुविमलवर-कसभायणं चेव विमुक्ततोए ' નિર્મળ કાંસાના પાત્રથી જેમ જળથી રહિત-મુનિપક્ષે સંબંધના હેતુભૂત સ્નેહથી રહિત-થઈને " सखेविव निरजणे " શંખના જેવો નિરંજન-સફેદ એટલે કે " विगयरागदोसमोहे " રાગાદિકની કાળાશથી રહિત થઈ જાય છે, તથા " कुमो इव इदियसुगुत्ते " કાચબાના જેવો ઈન્દ્રિયગુપ્ત કહેવાય છે એટલે કે જેમ કાચબો પોતાના ગ્રીવાદિક અવયવોને શરીરમાં છુપાવીને ગુપ્ત થઇ જાય છે તેમ સાધુ પણ વિષયોમાંથી ઈન્દ્રિયોને હટાવીને સુરક્ષિત બની જાય છે તથા "जच्चकणग व जायरूवे " શુદ્ધ સુવર્ણની જેમ

पुष्करपत्रमिव–कमलपत्रमिव ' निरुवलेवे ' निरुपलेप'–भोगगृद्धिलेपापेक्षया, तथ ' सोमायाए ' सौम्यतया=सौम्यपरिणामेन 'चदो इव' चन्द्र इव, तथा–' सूरोव्व ' सूर इव ' दित्ततेए , दीप्ततेजाः = दीप्त तेजो यस्य स, तथा–' गिरिवरे मदरे ' गिरिवरो मन्दरः ' जह ' यथा – इव सकलपर्वतश्रेष्ठमेररिव ' अचले ' अचल =परीपहादौ सत्यपि निश्चलः, तथा–' अक्खोभे ' अक्षोभः=क्षोभवर्जितः–निस्तरङ्ग , ' सागरोव्व ' सागर इव ' थिमिए ' स्तिमितः=कषायतरङ्गवर्जितः, तथा–' पुढवी विव ' पृथिवीव ' सव्वफासविसहे ' सर्वस्पर्शविषहः–शुभाशुभस्पर्शेषु समचित्त इत्यर्थः' तथा–' तवसावि य ' तपसाऽपि च हेतुभूतेन ' भासरासिछन्नेव ' जाततेए ' भस्मराशिच्छन्न इव जाततेजा , यथा–भस्माच्छन्नो वह्निरुपरि-

शुद्ध सुवर्ण की तरह वह रागादिकरूप क्षार से रहित होने के कारण अपने निजरूप से सम्पन्न हो जाता है। (पुक्खरपत्त व निरुवलेवे) कमल पत्र की तरह भोगों में गृद्धिरूप लेप से वह रहित बन जाता है । (सोमायाए चदोइव) सौम्यता से वह चद्र की तरह (सूरोव्वदित्ततेए) सूर्य की तरह वह दीप्त तेज चमकने वाला हो जाता है। तथा (गिरि–वरे मदरे जह अचले) गिरि वर सुमेरु पर्वत की तरह वह परिषह आदि के आने पर अचल सुस्थिर बना रहता है । और (अक्खोभो सागरोव्व) निस्तरग सागर की तरह अक्षोभ–क्षोभ से रहित बन जाता है (थिमिए) स्तिमित–कषायरूपतरङ्गो से रहित बन जाता है । तथा (पुढवीविय सव्वफासविसहे) जिस प्रकार पृथवी समस्त प्रकार के स्पर्शो को सहन करती है उसी प्रकार वह भी शुभ और अशुभ स्पर्शो में समचित्त हो जाता है। (तवसा वि य भासरासिच्छन्नेव

તે રાગાદિક રૂપ ક્ષારથી રહિત હોવાને કારણે પોતાના નિજરૂપથી સંપન્ન થઇ જાય છે ' पुक्खरपत्तव निरुवलेवे " કમળ પત્ર જેમ પાણીથી અલિપ્ત રહે છે તેમ તે ભોગોથી અલિપ્ત થઇ જાય છે " सोमायाए चदो इव " સૌમ્યતામા તે ચન્દ્રના જેવો " सूरोव्व दित्ततेए " સૂર્યની જેમ તે દીપ્ત તેજ–તેજસ્વી થઇ જાય છે તથા ' गिरिवरे मदरे जह अचले " ગિરિવર સુમેરુની જેમ તે પરીષહ આદિ નડે તો પણ અચલ, સુસ્થિર રહે છે અને " अक्खोभो सागरोव्व " તરંગરૂપી સાગરના જેવો તે અક્ષોભ–ક્ષોભ રહિત બની જાય છે " थिमिए" સ્તિમિત–કષાયરૂપ તરંગોથી રહિત બની જાય છે તથા " पुढवीविय सव्व फासविसहे " જેમ પૃથ્વી બધા પ્રકારના સ્પર્શોને સહન કરે છે તેમ તે પણ શુભ અને અશુભ સ્પર્શોમા સમભાવવાળો થઇ જાય છે " तवसा विय भास-

ाहकत्वमप्रकाशयन्नप्यन्तर्जाज्वल्यमानो भवति, तथैव श्रमणो बहिः शुष्को रूक्षः ान्तिरहितोऽप्यन्तः स्तपोजनितदीप्त्यादेदीप्यमानो भवतीति भाव । तथा- जलियहुयासणो विव ' ज्वलितहुताशनइव=प्रदीप्ताग्निरिव ' तेयसा ' तेजसा= ानरूपतेजसा ' जलते ' ज्वलन्=दीप्यमानः, भावतमोविनाशकत्वात् ' गोसीस दणपिव ' गोशीर्षचन्दनमिव ' सीयले ' शीतलः=मनस्तापोपशमनात् ' सुगधी ' सुगन्धिना, सुरभिगन्धेन शीलमोगन्ध्यात् ' हरओ विव ' ह्रदक इव=जला- ाय इव ' समियभावे ' समिकभावः=सम एव समिकः, स भावो यस्य सः, अय ाव -यथा ह्रदो वाताभावे तरङ्गाभावेन निम्नोन्नतराहित्येन समाकारतया परि

जायतेए) भस्म राशि से छन्न अग्नि जिस प्रकार ऊपर से अपने दाह- कत्व परिणामको प्रकाशित नहीं करती हुई भी भीतरमें जाज्वल्यमान रहा करती है उसी तरहसे यह साधु भी बाहिरसे शुष्ककाय, रूक्ष और कान्तिरहित होता हुआ भी भीतरमें तपजनित दीप्तिसे देदीप्यमान होता है । तथा-(जलिय हुयासणोविव तेयसा जलते) प्रदीप्तवह्नि जिस प्रकार अपनी प्रभा से चमकती रहती है उसी प्रकार यह भी भावतम का विनाशक होने से ज्ञानरूप तेज से चमकता रहता है। (गोसीसचदणं- पिव सीयले) गोशीर्ष चदन जिस प्रकार शीतल और सुगधित होता है उसी प्रकार यह साधु भी मनस्ताप के उपशमन से शीतल होता है और (सुगधीय हरओविव समियभावे) शील की सुगंधी से ह्रद की तरह समभाववाला अर्थात् जिस प्रकार जलाशय वायु के अभाव से तरगो के उत्थान पतन से रहित होने के कारण ऊँचा नीचा नहीं

राशिच्छन्नेव जायतेए' રાખના ઢગલા નીચે રહેલી અગ્નિ જેમ ઉપરથી પોતાની દાહકતા પ્રગટ કરતી નથી છતા અદર સળગતી પ્રકાશિત રહે છે, તેમ તે સાધુ પણ બહારથી શુષ્ક શરીર વાળો, રૂક્ષ અને કાન્તિ રહિત હોવા છતા પણ અદરથી તપ જનિત તેજથી દેદીપ્યમાન હોય છે " जलिय हुयासणोविव तेयसा जलते " પ્રદીપ્ત અગ્નિ જેમ પોતાના તેજથી ચળકતી રહે છે તેમ તે પણ ભાવતમનો વિનાશક હોવાથી જ્ઞાન રૂપ તેજથી ચમકતો રહે છે " गो सीसचदणपिव सीयले ' જેમ ગોશીર્ષ ચદન શીતલ અને સુગધિત હોય છે તેજ પ્રકારે મનના તાપનુ ઉપશમન થવાને કારણે શીતલ હોય છે અને " सुग धियहरओविव समियभावे " શીલની સુગધથી સરોવરના સમાન સમભાવ વાળો હોય છે, એટલે કે જેમ વાયુના અભાવે તરગોના ઉત્થાન તથા પત નથી રહિત હોવાને કારણે સરોવરની સપાટી ઊચીનીચી લાગતી નથી પણ

लक्ष्यते, तथैव श्रमणोऽपि मानापमानयोरननुभवात् हर्षग्लान्योरभावात्सर्वदैकरूप एव भवतीति । तथा-उग्घोसियसुनिम्मल ' मार्जितसुनिर्मलम्-मार्जित=तलोपरिस्थितमलापनयनेन, अतएव-सुनिर्मल=सुप्रसन्नम् , ' आयममडलतल व ' आदर्शमण्डलतलमिव=आदर्शः=दर्पणस्तस्य यन्मण्डलतल=मण्डलाकार तल तदिव 'पागडभावेण ' प्रकटभावेन=अमायित्वादनिगूहितभावेन ' सुद्धभावे ' शुद्धभावः=शुद्धः भावः स्वरूपो यस्य स, तथा-' कुजरो व ' कुञ्जर इव ' सोंडीरो ' शौण्डीरः= परीपहसैन्यनिर्दलनसमर्थः, ' वसभो व ' वृपभ इव ' जायथामे ' जातस्थामा= यथा वृपभो भारोद्वहने सामर्थ्ययुक्तो भवति, तथैव स्वीकृतमहानतभारोद्वहने सामर्थ्यसपन्न इत्यर्थ । तथा-' सीहो व ' सिंह इव श्रमणः, अमुमेवार्थं स्पष्टयति— ' जहा ' यथा सिंह ' मिगाहिवे , मृगाधिप -अथ च तैः ' दुप्पधरिसे ' दुष्प्रधृ-

दिखता है किन्तु एकसा आकार वाला परिलक्षित होता है उसी प्रकार यह साधु भी मान और अपमान के अनुभव से रहित होने के कारण हर्ष और ग्लानि, इन दोनों प्रकार के भावो से रहित बन जाता है, अतःवह सर्वदा एक रूप में ही रहा करता है। (उग्घोसिय मडल आयसमडलतल व पागडभावेण सुद्धभावे) माजने से-ऊपर के मैल के हटा देने से-निर्मल बने हुए दर्पणमडल की तरह इस का स्वरूप अमायी होने के कारण प्रकट रूप से शुद्ध रहता है । (सोंडीरो कुजरो व) कुजर के जैसा यह शौ डीर-परीपहरूपी सैन्य के निर्दलन करने में समर्थ-होता है । (वसभोव जायथामे) वृपभ की तरह जातस्थाम-स्वीकृत महाव्रतरूप भार के वहन करने में शक्तिशाली होता है । (सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्पधरिसे) सिंह जैसे मृगो का अधिपति और उनके द्वारा अपराभवनीय होता है उसी तरह वह साधु भी

એક સરખી લાગે છે એ જ પ્રમાણે સાધુ પણ માન અને અને અપમાનના અનુભવથી રહિત હોવાને કારણે હર્ષ અને શોક એ બન્ને પ્રકારના ભાવોથી રહિર બની જાય છે તેથી તે હમેશા સમભાવથી જ રહે છે " उग्घोसियमडल आय सम डलतलव पागडभावेण सुद्धभावे " માજવાથી - ઉપરનો મેલ દૂર કરી નાખવાથી નિર્મળ બનેલ દર્પણની જેમ તેનુ સ્વરૂપ અમાયી હોવાને કારણે પ્રગટ રૂપે શુદ્ધ રહે છે "सोडीरो कुजरोव" હાથીની જેમ તે શૌ ડીર-પરીષહરૂપી સૈન્યનો ઉચ્ચરઘાણ કાઢી નાખવાને સમર્થ હોય છે "वसभोव जायथामे" વૃષભની જેમ તે સ્વીકૃત મહાનતરૂપ બોજાનુ વહન કરવાને શક્તિશાળી હોય છે " सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्पधरिसे " જેમ સિહ મૃગોનો અધિપતિ તથા તેમનાથી

ध्यः-अपरिभवनीयो ' होइ ' भवति, तथैव साधुः परीषहैरपराजितो भवति। तथा 'सारयसलिलं व' शारदसलिलमिव=शरदृतुसम्बन्धिजलमिव 'सुद्धहियए' शुद्धहृदयः =स्वच्छान्तः करण इत्यर्थः, तथा 'भारंडे चेव' भारण्ड इव=भारण्डपक्षीव ' अप्पमत्ते ' अप्रमत्तः=प्रमादवर्जित 'खग्गिविसाणं व' खड्गिविषाणमिव खड्गी=' गेंडा' इतिप्रसिद्धो वन्यश्चतुष्पदविशेषः, तस्य विषाणं=शृङ्गमिव ' एग जाए' एकजातः-यथा-खड्गिनः शृङ्गमेकं भवति, तथैव साधुरपि रागद्वेषरहित एकाकी भवति। तथा-' खाणूव ' स्थाणुरिव ' उड्ढकाए ' ऊर्ध्वकायः कायोत्सर्गकाले, तथा ' सुण्णागारेव्व' शून्यागारमिव अप्रतिकर्मा=शरीरसंस्कारवर्जित इत्यर्थः, तथा 'सुण्णागारावणस्सतो ' शून्यागारापणस्यान्तः=शून्यस्यागारस्यापणस्य च अन्तः=मध्ये ' निवायसरणप्पदीवज्झाणमिव ' निर्वातशरणप्रदीपध्यानमिव-निर्वातो=वातरहितो यः शरणप्रदीपः=गृहप्रदीपस्तस्य ध्यापनमिव=प्रज्वलितशिखेव ' निप्पकंपे '

देशविरति श्रावकों की अपेक्षा सकलसंयम का अधिपति और परिषहों से अपराजित होता है। (सारयसलिलं व सुद्धहियए) वह शरद् ऋतु संबंधी जल के समान स्वच्छ अंतः करण वाला होता है, (भारंडे चेव अप्पमत्ते) भारंडपक्षी के समान वह प्रमाद से वर्जित होता है, (खग्गिविसाणं व एगजाए) गेंडो के सींग के समान वह एक जात होता है-अर्थात् जैसे गेंडा का शृंग एक ही होता है उसी तरह साधु भी रागद्वेष रहित होने से एकाकी ही होता है। (खाणूव उड्ढकाए) स्थाणु जिस प्रकार उर्ध्वकाय होता है उसी प्रकार साधु भी कायोत्सर्ग के समय उर्ध्वकाय होता है। (सुण्णागारेव्व अपडिकम्मे) शून्य गृह जैसे संस्कार विहीन होता है उसी प्रकार साधु भी शारीरिक संस्कार से वर्जित होता है। (सुण्णागारावणस्सतो निवायसरणप्पईवज्झाणमिव

અજેય હોય છે તેમ સાધુ પણ દેશ વિરતિ શ્રાવકોની અપેક્ષાએ સકળ સંયમનો અધિપતિ અને પરીષહોથી અપરાજિત હોય છે " सारयसलिलं व सुद्धहियए " તે શરદ ઋતુના જળની સમાન સ્વચ્છ અંતઃકરણવાળો હોય છે " भारण्डे चेव अप्पमत्ते " ભારંડ પક્ષીના જેવો તે પ્રમાદ રહિત હોય છે खग्गिविसाणं व एगजाए " ગેંડાના શિંગડાની જેમ તે એકાકી હોય છે એટલે કે જેમ ગેંડાને એક જ શિંગડુ હોય છે તે પ્રમાણે સાધુ પણ રાગદ્વેષ રહિત હોવાથી એકાકી જ હોય છે " खाणूरवड्ढकाए " સ્થાણુ જેમ ઉર્ધ્વકાય છે તેમ સાધુ પણ કાયોત્સર્ગના સમયે ઉર્ધ્વકાય હોય છે " सुण्णागारेव्व अपडिकम्मे " ખાલી મકાન જેમ સંસ્કાર વિહીન હોય છે તેમ સાધુ પણ શારીરિક સંસ્કાર રહિત હોય છે, " सुण्णागारावणस्सतो निवायसरणप्पइ

निष्पकम्पः=दिव्याद्युपसर्गससर्गेऽपि धर्मध्यानाद्रो निश्चल इत्यर्थ, जहा खुरो ' यथा क्षुर'=क्षुर इव ' एगधारे चेव ' एकधारश्चैव, यथा क्षुरएकधारस्तथैव साधुरुत्सर्गरूपैकधारो भवति, वर्द्धमानपरिणामधारकइत्यर्थ, जहा अही' यथाऽहिः=अहिरिव-सर्प इव ' एगदिट्ठी चेव ' एकदृष्टिश्चैव=मोक्षे बद्धलक्ष्य इत्यर्थः, तथा-' आगास चेव निरालवे ' आकाशमिव निरालम्ब' । यथाऽकाशआलम्बनवर्जितस्तथैव श्रमणोऽपि ग्रामदेशकुलाद्यालम्बनरहित इत्यर्थ, तथा-' विहगे विव' विहग इव पक्षीव ' सव्वओ ' सर्वतः ' विप्पमुक्के विमुक्तः निष्परिग्रह इत्यर्थः, तथा—' उरए

निप्पकपे) शून्य घर और शून्य आपण-दुकानके भीतर निर्वात (वायुरहित) प्रदेश में रखे हुए दीपक की प्रज्वलित लौ जेसे निष्प्रकप होती है उसी प्रकार साधु भी देवादिकृत उपसर्गों के आने पर भी धर्मध्यान आदि में निष्प्रकप निश्चल बना रहता है। (जहाखुरो चेव एगधारे) जैसे क्षुरा उस्तरा-एक धार वाला होता है उसी प्रकार साधु भी उत्सर्गरूप एक धार वाला होता है। अर्थात्-साधु के परिणाम प्रकृष्ट विशुद्धि को लिये बढते ही रहते हैं, वे प्रतिपाती परिणामों वाले नहीं होते हैं। (जहा अही चेव एगदिट्ठीं) सर्प जिस प्रकार एक दृष्टिवाला होता है उसी प्रकार साधु भी अपने लक्ष्यरूप एक मोक्ष में निबद्ध दृष्टिवाला होता है। (आगास चे व निरालवे) आकाशकी तरह वह आलबन-सहारा से रहित होता है अर्थात् साधु को ग्राम देश, कुल आदी का आलबन नहीं होता है। वह इन सब ग्रामादि से सर्वथा रहित ही होता है। (विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के) विहग-पक्षी की तरह वह सर्वत. विप्रमुक्त होता है परिग्रह से वर्जित होता

व ज्झामणमिव निप्पकपे " ખાલી ઘર અને ખાલી દુકાનની અદર વાયુની અસર રહિત સ્થાનમા રાખેલ દીવાની ઝગઝગતી જ્વાળા જેમ નિષ્પ્રકપ (સ્થિર) હોય છે તેમ સાધુ પણ દેવાદિકૃત ઉપસર્ગો નડતા છતા પણ ધર્મધ્યાન આદિમા અચલ રહે છે " जहा खुरो चेव एगधारे " જેમ ક્ષુરા-અસ્રો એક ધારવાળો હોય છે તેમ સાધુ પણ ઉત્સર્ગરૂપી એક ધારવાળો હોય છે-એટલે કે સાધુની મનોવૃત્તિ પ્રકૃષ્ટ વિશુદ્ધિઓને માટે વધતી જ રહે છે, તે પ્રતિપાતિ પરિણામોવાળો હોતો નથી " जहा अहीचेव एगदिट्ठी " જેમ સાપ એક દૃષ્ટિવાળો હોય છે તેમ સાધુ પણ પોતાના લક્ષ્યરૂપ એક મોક્ષમાજ લીન દૃષ્ટિવાળો હોય છે " आगास चेव निरालवे " આકાશની જેમ તે નિરાવલબી હોય છે એટલે કે સાધુને ગામ, દેશ, કુળ આદિનુ અવલબન હોતુ નથી તે ગ્રામાદિ સમસ્ત અવલબનોથી રહિત હોય છે " विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के " વિહગ-પક્ષીની જેમ તે સર્વ પ્રકારે મુક્ત હોય છે-પરિગ્રહ રહિત હોય છે " कय.

जहा ' उरगो यथा-सर्प इव ' कयपरनिलए चेव' कृतपरनिलयश्चैव=कृत =आश्रयीकृतः परनिलयो येन सः, अय भावः-यथा सर्पोऽन्यकृतनिले तिष्ठति, तथैव श्रमणः परकृतगृहे तिष्ठति । तथा-' अनिलोव्व ' अनिल इव=पवन इव 'अप्पडिवद्धो ' अप्रतिवद्धः-अप्रतिवन्धविहारीत्यर्थः, तथा ' जीवोव्व ' जीव इव ' अप्पडिहयगई ' अप्रतिहतगतिः= सर्वदेशविहारीत्यर्थः । अत्र सर्वत्र ' चैव ' शब्दः समुच्चयार्थः, ' गामे गामे य ' ग्रामे ग्रामे च ' एगराय' एकरात्र 'णगरे णगरे' नगरे नगरे ' पचराय' पञ्चरात्रम्, ' दूइज्जतो ' द्रवन्=विहरन् , निवास कुर्वन्नित्यर्थः, तथा ' जिइदिए ' जितेन्द्रियः, ' जियपरीसहे ' जितपरिषह , अतएव ' निब्भए ' निर्भयः ' विऊ ' विद्वान=तत्त्वज्ञ इत्यर्थः, ' सचित्ताचित्तमीसएहिं '

है (कयपरनिलए जहा चेव उरए) सर्प की तरह वह दूसरे ने अपने निमित्त बनाये हुए घर मे रहता है, अर्थात् जिस प्रकार सर्प अन्य चूहे आदि से बनाये गये बिल में रहता है उसी प्रकार साधु भी गृहस्थ के बनाये हुए घर मे रहता है। (अप्पडिबद्धो अनिलोव्व) अनिल पवन-की तरह वह अप्रतिबद्ध -प्रतिबन्ध से रहित होता है अर्थात् वह साधु अप्रतिबन्ध विहारी होता है। तथा (जीवोव्व अप्पडिहयगई) जीव की तरह वह अप्रतिहत गतिवाला होता है-उसका विचरण सर्वत्र होता है-उसे कीसी भी देश में विचरण करने का निषेध नहीं होता है । (गामे गामे य एगराय) वह हर एक ग्राम में एक रात्री तथा (णगरे णगरे य पचराय) तथा प्रत्येक नगर में पाच रात्रि तक (दूइज्जते) ठहरता है । तथा (जिइदिए) जितेन्द्रिय (जियपरिसहे य) जितपरीषह अत एव (निब्भए) निर्भय (विऊ) विद्वान्-तत्त्वज्ञ, वह

परनिलए जहा चेव उरए" सर्पनी જેમ તે બીજાએ પોતાના માટે બનાવેલા ઘરમા રહે છે, એટલે કે જેમ સર્પ ઉદર આદિએ બનાવેલા દરમા રહે છે તેમ સાધુ પણ ગૃહસ્થે બનાવેલા ઘરમા રહે છે "अप्पडिबद्धो अनिलोव्व" અનિલ-પવનની જેમ તે અપ્રતિબદ્ધ-પ્રતિબંધથી રહિત હોય છે-એટલે કે તે અપ્રતિબધવિહારી હોય છે "जीवोव्व अप्पडिहयगई" જીવની જેમ તે અપ્રતિહત ગતિવાળો હોય છે તેનુ વિચરણ સર્વત્ર હોય છે તેને કોઇ પણ પ્રદેશમા વિચરવાનો નિષેધ હોતો નથી "गामे गामे य एगराय" તે દરેક ગામમા એક રાત્રી તથા "णगरे णगरे च पचराय" તથા પ્રત્યેક નગરમા પાચ રાત્રિ સુધી "दूइज्जते" રોકાય છે તથા "जिइ दिए" જિતેન્દ્રિય "जियपरिसहेय" પરીષહોને જીતનાર હોવાથી "निब्भए" નિર્ભય "विऊ" विद्वान-

सचित्ताचित्तमिश्रकेषु 'दव्वेहिं' द्रव्येषु 'विरागयगए' विरागतां गतः=मूर्छा-राहित्यं प्राप्त, 'संचयओ' सञ्चयतः-सञ्चयकरणात् 'विरए' विरतः 'मुत्ते' मुक्तः=बाह्याभ्यन्तरपरिग्रहरहितः, 'लहुए' लघुकः-गौरवत्रयत्यागात्, 'निरवकखे' निरवकाङ्क्षः=आकाङ्क्षावर्जितत्वात्, 'जीवियमरणासविप्पमुत्ते' जीवितमरणाशा-विप्रमुक्तः=जीविताशामरणाशाभ्यां रहितः, 'धीरे' धीरः=बुद्धिमान्, 'निस्संध' सन्धिरहित=चारित्रपरिणामव्यवच्छेदाभावात्, 'निव्वण' निर्व्रण=निरतिचारम् 'चरित्त' चारित्र=संयम 'काएण' कायेन=कायव्यापारेण न तु मनोरथमात्रेण 'फासयते' स्पृशन्, तथा-'सयय' सततम् 'अज्झप्पज्झाणजुत्ते' अध्यात्मध्यानयुक्त 'निहुए' निभृत=उपशान्तः 'एगे' एकः=रागादिसहायवर्जितः 'धम्म' धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण 'चरेज्ज' चरेत्=अनुपालयेत् ॥सू०५॥

साधु (सचित्ताचित्तमीसएहिं दव्वेहिं विरागयगए) सचित्त, अचित्त और मिश्र द्रव्यों में मूर्च्छा रहितपने को प्राप्त होकर (संचयओ विरए) संचय करने से विरक्त हो जाता है और (मुत्ते) बाह्य और आभ्यतर परिग्रह से रहित हो जाता है। इस तरह (लहुए) गौरव त्रय के त्याग से लघु बना हुआ श्रमण (निरवकखे) आकाक्षा से वर्जित होने के कारण (जीवियमरणासविप्पमुत्ते) जीवन की आशा और मरण की भयसे रहित हो जाता है। इस प्रकार (धीरे) इन समस्त पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट बना हुआ तत्त्वज्ञ श्रमण (निस्संध) चारित्र-परिणाम की संधि-व्यवच्छेद के अभाव से (निव्वणं) निरतिचार (चरित्त) चारित्रसंयम को (काएण) काय के व्यापार से, नहीं की मनोरथ मात्र से (फासयते) धारण कर (अज्झप्पज्झाणजुत्ते) अध्यात्मध्यान में लवलीन बनता हुआ (निहुए) उपशान्त भाव से संपन्न

तत्त्वज्ञ એવો તે સાધુ "सचित्ताचित्तमीसएहिं दव्वेहिं विरागयगए' સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર દ્રવ્યોમાં મમત્વ રહિતતાને પ્રાપ્ત કરીને "संचयओ विरए" સંગ્રહ કરવાથી વિરક્ત થઈ જાય છે અને "मुत्त" બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિગ્રહથી રહિત થઈ જાય છે આ રીતે "लहुए" ગૌરવત્રયના ત્યાગથી લઘુ બનેલ શ્રમણ 'निरवकखे" આકાંક્ષાથી રહિત હોવાને કારણે "जीवियमरणासविप्पमुत्ते" જીવનની આશા અને મરણની આશાથી રહિત થઈ જાય છે આ રીતે "धीरे" તે સઘળા વિશેષણોથી યુક્ત બનેલ તત્ત્વજ્ઞ શ્રમણ "निस्संध" ચારિત્ર પરિણામની સંધિ-વ્યવચ્છેદને અભાવે "निव्वण" નિરતિચાર "चरित्त" ચારિત્ર-સંયમને 'काएण" કાયના વ્યાપારથી-મનોરથથી જ નહીં-"फासयते" ધારણ કરીને "अज्झप्पज्झाणजुत्ते" અધ્યાત્મધ્યાન લીન બનીને "निहुए"

मूलम्-इमं परिग्गहवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विउसमणं, तस्स इमा पंचभावणाओ चरिमस्स वयस्स हुति, परिग्गहवेरमणरक्खणट्ठयाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' इम च ' इत्यादि—

' इम च ' इदं चापरिग्रहनामकं पञ्चमं संवरद्वारं 'परिग्गहवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए' परिग्रहविरमणपरिरक्षणार्थतया परिग्रहविरमणस्य परिरक्षणमेव अर्थः प्रयोजनं यस्य तत्, तदेव तत्ता, तया अत्र स्वार्थे तल्, परिग्रहविरतिपरित्राणायेत्यर्थः

होकर (एगे) रागादिक भावोंसे वर्जित होनेसे एक, ऐसा जो होता है वही (धम्म) चारित्ररूप धर्मको (चरेज्ज) पालन करनेवाला हो सकता है।

भावार्थ-सूत्रकारने इस सूत्र द्वारा यह स्पष्ट किया है कि परिग्रह-विरत रूप साधु धर्म में लवलीन बने हुए मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है। तथा जब वह इस स्थिति से संपन्न बनेगा तब ही पूर्णरूप से वह श्रमण धर्म के पालन करने का अधिकारी बन सकता है अन्यथा नहीं। सूत्र में यही विषय शब्दान्तरों से समझाया गया है ॥ सू०५ ॥

फिर भी कहते हैं- ' इम च ' इत्यादि०।

टीकार्थ—(इम च) यह अपरिग्रह नाम का पांचवां संवर द्वाररूप (पावयण) प्रवचन (परिग्गहवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए) परिग्रहविरमण

ઉપશાન્ત ભાવથી યુક્ત થઈ ને 'एगे" રાગાદિક ભાવોથી રહિત હોવાથી એક, એવો જે થાય છે તે જ "धम्म" ચારિત્રરૂપ ધર્મનું "चरेज्ज" પાલન કરનાર થઈ શકે છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં એ સ્પષ્ટ કર્યું છે કે પરિગ્રહથી વિરક્ત થવા રૂપ ધર્મમાં લીન બનેલ મનુષ્યની સ્થિતિ કેવી થઈ જાય છે તથા જ્યારે તે આ સ્થિતિએ પહોંચે ત્યારે જ તે સંપૂર્ણ રીતે શ્રમણ ધર્મનું પાલન કરવાને પાત્ર બની શકે છે બીજી કોઈ પણ રીતે નહીં સૂત્રમાં એ જ વિષય જુદા જુદા શબ્દો દ્વારા સમજાવવામાં આવ્યો છે ॥ સૂ ૫

વળી કહે છે—" इम च " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"इम च" આ પરિગ્રહ નામના પાંચમા સંવરદ્વારનું "पावयण' પ્રવચન " परिग्गहवेरमणपरिक्खणट्ठयाए " પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષાને માટે " भग

' पावयण ' प्रवचन ' भगवया ' भगवता ' सुकहिय ' सुकथितम् , ' अत्तहिय ' आत्महितम् , ' पेच्चाभाविय ' प्रेत्यभाविकम् ' आगमेसिभद ' आगमिष्यद्भद्रं ' सुद्ध ' शुद्ध ' नेयाउय ' नयायिकम् ' अकुडिल ' अकुटिलम् ' अणुत्तर ' अनुत्तर ' सव्वदुक्खपावाण ' सर्वदुःखपापाना ' विउसमण ' व्युपशमनम् । एषा व्याख्या पूर्वं गता । ' तस्स ' तस्य–अपरिग्रहनामकस्य ' चरिमस्स' चरमस्य=अन्तिमस्य ' सवरदारस्स ' सवरद्वारस्य ' इमा पच भावणाओ ' इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्च भावना ' हुति ' भवन्ति । किमर्थं भवन्ति ? इत्याह–' परिग्गहवेरमणरक्खणट्ठयाए ' परिग्रहविरमणरक्षणार्थतायै–अपरिग्रहपरिरक्षणार्थमित्यर्थः ॥ सू० ६ ॥

व्रत की रक्षा के लिये (भगवया सुकहिय) भगवान् ने कहा है। यह (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है। (पेच्चाभाविय) परलोक में भी शुभ फल का दाता है। इसी निमित्त से यह (आगमेसि भद्द) भविष्यत् काल में कल्याण प्रद है यह (सुद्ध) सर्वथा निर्दोष है। (नेयाउय) वीतराग सर्वज्ञ एव हितोपदेशक प्रभु द्वारा भाषित होने से न्याय सपन्न है। (अकुडिल) ऋजुभाव का जनक होने से अकुटिल है। (अणुत्तर) सर्व श्रेष्ठ होने से अनुत्तर है। तथा (सव्वदुक्खपावाण) समस्त प्रकार के दुःख जनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का (विउसमण) उपशामक है। (तस्स चरिमस्स सवरदारस्स) उस अन्तिम सवरद्वार की (इमा पचभावणाओ) ये वक्ष्यमाण पाच भावनाएं हैं जो (परिग्गहवेरमणरक्खणट्ठयाए हुति) परिग्रह विरमण व्रत की रक्षा करने वाली होती है ॥ सू० ६ ॥

वया सुकहिय" ભગવાને કહેલ છે " अत्तहिय " આત્માનુ હિતકારક છે " पेच्चाभाविय " પરલોકમા પણ શુભ ફળ દેનારૂ છે એ જ કારણે તે " आगमेसि भद्द "ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણદાયી છે, તે " सुद्ध " તદ્દન નિર્દોષ છે " नेयाउय " વીતરાગ સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત હોવાથી તે ન્યાયયુક્ત છે " अकुडिल " ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી તે અકુટિલ છે " अणुत्तर " સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી તે અનુત્તર છે તથા " सव्वदुक्खपावाण " સમસ્ત પ્રકારના દુખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનુ " विउसमण " ઉપશમન કરનાર છે ' तस्स चरिमस्स सवरदारस्स " તે અન્તિમ સવરદ્વારની " इमा पचभावणाओ " આ પ્રમાણે પાચ ભાવનાઓ છે જે "परिग्गहवेरमणरक्खणट्ठयाए हुति " પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષા કરનારી હોય છે ॥ સૂ ૬ ॥

सम्प्रति पञ्च भावना अभिधातुकामः प्रथमा भावनामाह–' पढम ' इत्यादि–

मूलम्–पढम सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं मणुण्णभद्दगाइं, किंते, वरमुरयमुइंगपणवदद्दुरकच्छभीवीणा–विपंचिवल्लईवद्धी सक सुघोस-णंदि-सूअर-परिवादिणि वसतूणग पव्वय तती-तलताल-तुडिय-निग्घोस- गीयवाइयाइ णडणट्टगजल्लमल्लमु-ट्ठिगवेलवंग-कहगपवगलासग-आइक्खग- लंख- मख--तुणइल्ल तुंववीणिय-तालायर-पकरणाणि य वहूणि महुरसगीयसुस्स-राइ कची मेहलाकलावगपतरक- पतरेकपाय -- जालकघटिय खिखिणि रयणोरुजालय छुद्दियनेउरचलणमालियकणगनिग डंजालकभूसणसद्दाणि लीलचकम्ममाणाणुदीरियाइ तरुणीज णहसिय भणिय कलरिभियमजुलाइ गुणवयणाणि य वहूणि महुरजणभासियाइ अण्णेसु य एवमाइएसु सद्देसु मणुण्णभद्द-एसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्व न विनिग्धाय आवज्जियव्व न लुभियव्वं न तुसियव्व न हसियव्व न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा । पुण-रवि य सोइदिएण सोच्चा सद्दाइ अमणुण्णपावगाइ किंते, अक्कोसफरुसखिसण अवमाणण तज्जणनिब्भच्छण दित्तवयण तासण उक्कूजिय रुण्णरडियकंदिय निग्घुट्टरसियकलुणविल-वियाइ अण्णेसु य एवमाइएसु सद्देसु अमणुण्णपावएसु-न तेसु समणेण रुसियव्व न हीलियव्व न निंदियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दु गुछावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ। एव सोइदियभावणाभाविओ

भवइ अंतरप्पा मणुण्णामणुण्ण सुब्भिदुब्भिरागदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ७ ॥

टीका-'पढमं' प्रथमा निःस्पृहताभिधेया भावनामाह-'सोइंदिएण' श्रोत्रेन्द्रियेण=कर्णेन 'सोच्चा' श्रुत्वा 'सद्दाइं' शब्दान्, कीदृशान्? 'मणुण्णभद्दगाइं' मनोज्ञभद्रकान्=मनोज्ञाः=मनोहरा अतएव भद्रकाः=कर्णेन्द्रिय सुखजनकास्तान् 'किं ते' कांस्तान्=कथभूताँस्तान्? इत्याह-' वरमुरयमुइंगपणवदद्दुरकच्छभी वीणविपंचिवल्लइवद्धीसकसुघोसणदिसूसरपरिवादिणि वंसतूणगपव्वयततीतलतालतुडियनिग्घोस

अथ सूत्रकार इस व्रत की पांच भावनाओं को प्रकट करने के अभिप्राय से सर्व प्रथम उसकी प्रथम भावना को कहते हैं--' पढमं ' इत्यादि०।

टीकार्थ--(पढमं) इस व्रत की पहिली भावना का नाम निस्पृहता है, वह भावना इस प्रकार से है-(सोइंदिएण) श्रोत्रेन्द्रिय से, (मणुण्णभद्दगाइं) मनोज्ञ अतएव मधुर ऐसे (सद्दाइं) शब्दों को (सोच्चा) सुन करके साधु का कर्तव्य है कि वह कभी भी उनमें आसक्ति न करे रागभाव से उनमें न बँधे, उनमें वह गृद्धिभाव न करे और मोहित न हो तथा जो द्वेष पैदा करने वाले हों उनमें वह रुष्ट न हो। इसी विषय को सूत्रकार इन नीचे की पङ्क्तियों द्वारा स्पष्ट करते हैं-(किं ते) वे कौन २ से हैं-इस प्रकार की शका करने वाले के प्रति वे कहते हैं कि सुनो वे इस प्रकार से हैं (वरमुरयमुयगपणवदद्दुरकच्छभी वीण विपंचि-वल्लइ-वद्धीसक-सुघोस-णदि-सूसर-परिवादिणिवंसतूणक-

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાંચ ભાવનાઓ પ્રગટ કરવાના ઉદ્દેશથી સૌથી પહેલા તેની પ્રથમ ભાવના વિષે કહે છે-" पढमं " ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ-"पढमं" આ વ્રતની પહેલી ભાવનાનું નામ નિસ્પૃહતા છે, તે ભાવના આ પ્રમાણે છે-"सोइंदिएण" શ્રોત્રેન્દ્રિયથી, "मणुण्णभद्दगाइं" મનોજ્ઞ હોવાથી મધુર લાગે છે " सद्दाइं " શબ્દો " सोच्चा " સાંભળીને તેમાં આસક્ત થવું જોઈએ નહીં એ સાધુનું કર્તવ્ય છે, તેમાં રાગભાવ ન રાખે, તેમનામાં તેણે ગૃદ્ધિભાવ કરવો જોઇએ નહીં, મોહિત થવું જોઇએ નહીં એ જ વિષયને સૂત્રકાર નિચેની લીટીઓ દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-" किं ते " તે શબ્દો કયા કયા કયા છે એ પ્રકારની શંકા કરનાર તે કહે છે કે સાંભળો તે આ પ્રમાણે છે-"वर-मुरय-मुयंग-पणव-दद्दुरकच्छभी-वीण-विपंचि-वल्लइवद्धीसक-सुघोस- णदिसूसर

गीयवाइयाइ ' वरमुरजमृदङ्गपणवदर्दुरकच्छपी वीणाविपञ्चीवल्लकी बद्धीशकसुघो पनन्दीसुस्वरपरिवादीनीवंशतूणकपर्वजतन्त्रीतलतालत्रुटितनिर्घोषगीतवादितानि, तत्र-वरमुरजाः=श्रेष्ठमृदङ्गाः, मृदङ्गाः-प्रसिद्धा, पणवाः=लघुपटहा, दर्दुराः=चर्मावनद्धमुखा कलशाः कच्छपी=कच्छपाकारी वाद्यविशेषः, वीणाविपञ्चीवल्लक्य एतास्तिस्रो वीणाभेदाः, बद्धीशक वाद्यविशेष, सुघोषा घण्टाविशेषः, नन्दिः=द्वादशतूर्यसमुदायः, द्वादशविधतूर्याणि यथा—

" भभा १ मुकुद २ मद्दल ३ कडव ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कसाला ७। कलह ८ तलिमा ९ वसो १० सखो ११ पणवो १२ यबारसमो ॥१॥" इति।

सुस्वरपरिवादिनी=वीणाविशेषः, वंश =वेणुः, तूणको वाद्यविशेषः, पर्वजो-वंशपर्वनिर्मितो वाद्यविशेषः, तन्त्री=वीणाविशेषः, तालहस्ता, ताल'=कांसिकाः,

पव्वयततीतल ताल-तुडिय निग्घोसगीयवाइयाइ) वरमुरजउत्तम एक जात का मृदग, मृदग-सामान्य मृदग, पणव-छोटाढोल, दर्दुरचमडे से मडे हुए मुखवाले कलश, कच्छपी-कच्छपाकार वाद्यविशेष, वीणा, विपञ्ची, वल्लकी-ये तीनों वीणा के ही भेद हैं, बद्धीशक-वाद्यविशेष, सुघोषा-एक प्रकार का वाद्यविशेष घट, नन्दि-बारह प्रकार के बाजों का समूह वे इस प्रकार है-भभा १, मुकुद २, मद्दल ३, कडब ४, झालर ५, हुडुक्क ६, कसाल ७, कलह ८, तलिमा ९, वस १०, शख ११, पणव १२, सुस्वरपरिवादिनि एक विशेष प्रकार की वीणा वश-बाँसुरी, तूणक-एक प्रकार का वाद्यविशेष जिसे हिन्दी भाषा में रमतूला कहते हैं, पर्वज-वश के पर्वों से निर्मित किया हुआ एक प्रकार का विशेष वाद्य, तन्त्री-वीणा विशेष-जिसे हिन्दी में सारगी कहते हैं, तल-

-परिवादिण-वसतूणक-पव्वय-ततीतलताल-तुडिय-निग्घोस-गीय वाइयाइ " वर मुरज-એક જાતનો ઉત્તમ મૃદગ, મૃદગ-સામાન્ય મૃદગ, પણવ-નાનો ઢોલ, દર્દુર-ચામડાથી મઢેલ મુખવાળો કળશ, કચ્છપી-કાચબાના આકારનુ એક વાજિત્ર, વીણા, વિપચી, વલ્લકી-એ ત્રણે વીણાના પ્રકારો છે, બદ્ધીશક-એક પ્રકારનુ વાદ્ય, સુઘોષા-એક પ્રકારનો ખાસ ઘટ, નન્દિ-બાર પ્રકારના વાજિત્રોનો સમૂહ તે આ પ્રમાણે છે-(૧) ભભા (૨) મુકુદ, (૩) મર્દલ, (૪) કડબ, (૫) ઝાલર, (૬) હુડુક્ક, (૭) કસાલ (૮) કલહ, (૯) તલીમા, (૧૦) વસ (૧૧) શખ, અને (૧૨) પણવ સુસ્વર પરિવાદિની-એક પ્રકારની વીણા, વશ-બસરી, તૂણક-એક પ્રકારનુ ખાસ વાદ્ય જેને હિદી ભાષામા રમતૂલા કહે છે, પર્વજ-વાસમાથી બનાવેલ એક પ્રકારનુ ખાસ વાદ્ય, તન્ત્રી-સારગી, તલ-હાથ, તાલ-મજીરા, અથવા તલતાલ-હાથોથી પડાતી તાલી,

अथवा-तलताला:=हस्तताला:, त्रुटित=वाद्यविशेष, एषां यो निर्घोषो निनादः, तथा-गीत=गानम्, वादित=सामान्यवाद्यम्, एषां द्वन्द्वः, तानि तथोक्तानि, तथा 'णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठिगवेलम्बग-कहगपवगलासग-आइक्खगलंखमंख तूणइल्ल-तुंबवीणियतालायरपकरणाणि य' नटनर्तकजल्लमल्लमौष्टिकविडम्बक-कथक प्लवकलासकाख्यायकलङ्खमङ्खतूणिकतुम्बवीणिक तालाचरप्रकरणानि च, तत्र-नटाः =नाट्यकारिणः, नर्तकाः=नृत्यकारिणः, जल्लाः=चर्मरज्जूमवलम्ब्य क्रीडाकारकाः, मल्लाः=मल्लयुद्धकारिणः, मौष्टिकाः=मुष्टियुद्धकारकाः, विडम्बकाः=विदूषकाः, कथका ='कत्थक' इतिप्रसिद्धा गान्धर्वविद्याविशारदा, प्लवकाः=कूर्दनकारिणः, लासकाः='लास्य' इति नाटक विशेषकारिण, आख्यायकाःकथाकारकाः, लङ्खाः=महावंशाग्रभागमधिरुह्य क्रीडाकारिण', मङ्खा:=चित्रफलकहस्ताः क्रीडकाः,

---

हाथ, ताल-कंसिका-झांजे, अथवा तलताल-हाथो की ताल, त्रुटित-वाद्यविशेष, इन सब के निर्घोषों-शब्दों को तथा गीतों को एव सामान्य वाजों की आवाजों को तथा (नड़-नट्टगजल्लमल्ल-मुट्ठिग-वेलंबग-कहगपवगलासग-आइक्खग-लखमखतूणइल्ल तुंबवीणियतालायर पकरणाणि) नट-नाटक करने वाले नटों के, नर्तकों-नृत्य करने वालो के, जल्ल चर्म रज्जू का अवलम्बन कर के क्रीडा करने वालों के, मल्ल-मल्ल युद्ध करने वालों के, मौष्टिक-मुष्टि से युद्ध करने वालों के, विड-म्बक-विदूषकों के, कथन-गाधर्वविद्या विशारदो के, प्लवक-उछल-कूद करने वाले मनुष्यो के, लासक-लास्य नामकनाटक विशेष को करने वालों के, आख्यायक-कथा कहने वालों के, लंख-बडे २ वंश के अग्र-भाग पर चढ़कर विविध प्रकार के खेल करने वालो के, मख चित्र फलकों को हाथ मे लेकर खेल तमासा करने वालो के तूणिक-तूण

त्रुटित-એક જાતનુ વાદ્ય, એ બધાના અવાજને તથા ગીતોને તથા સામાન્ય વાજિંત્રોના અવાજને તથા "नडनट्टगजल्लमल्लमुट्ठिगवेलंबगकहगपवगलासग आइक्खग-लखमखतूण-इल्लतुंबवीणिय-तालायरपकरणाणि" નટ—નાટક કરનાર નટોના, નર્તકો-નૃત્યકરનારના, જલ્લ-ચામડાની દોરી પર ક્રીડા કરનારના, મલ્લ-મલ્લયુદ્ધ કરનારના, મૌષ્ટિક-મુષ્ટિયુદ્ધ કરનારના, વિડમ્બક-વિદૂષકોના, કથક-ગાંધર્વવિદ્યા વિશારદોના, પ્લવક-કૂદકા ભરનાર માણસોના, લાસક-લાસ્યનામના એક ખાસ પ્રકારના નાટક કરનારના, આખ્યાયક કથા કરનારના લંખ ઉંચા ઉંચા વાંસની ટોચે ચડીને વિવિધ પ્રકારના ખેલ કરનારના, મંખ-ચિત્રના ફલકો હાથમાં લઈને ખેલ તમાસા કરનારના, તૂણિક-તૂણનામનુ વાજિંત્ર વગા

तूणिकाः=तूणाभिधानवाद्यविशेषवादकाः, तुम्बवीणिकाः=तुम्बवीणावादका , तालाचराः=ताल=हस्ताघातरूपमाचरन्ति ये ते तथोक्ताः-तालवादिन इत्यर्थः, एषां द्वन्द्व , तेषां यानि प्रकरणानि=प्रकर्षेण करणानि तानि तथोक्तानि, कानि तानी ? त्याह— 'बहूणि' बहूनि=अनेकप्रकाराणि, 'महुरसरगीयसुस्सराणि' मधुरस्वराणि=मधुरस्वराणां गायकानां गीतानि=गानानि च तानि सुस्वराणि । तथा- ' कंचीमेहलाकलावगपतरकपयरेकपायजालकघंटियखिंखिणिरयणोरुजालयछुद्दिय नेउयचलणमालियकणगनिगडजालकभूसणसद्दाणि ' काञ्चीमेखलाकलापकप्रतरकप्रतरेकपादजालकघण्टिकाकिङ्किणी-रत्नोरु-जालक-क्षुद्रिका-नूपुर-चरणमालिका कनकनिगड़ -जालकभूषणशब्दान् । तत्र-काञ्ची=कटिभूषणम्, मेखलाऽपि कटिभूषणभेदः, कलापको ग्रीवाऽभरणम् , प्रतरकाणि प्रतरेकाश्च आभरणविशेषा', पादजालक=चरणाभरणम् , घण्टिका = प्रसिद्धा, किङ्किण्यः = क्षुद्रघण्टिकाः, रत्नोरुजालकम् रत्ननिर्मित जङ्घाभरणम् , क्षुद्रिका आभरणविशेषाः, नूपुर=पादभूषणम् , चरणमालिका -पादाभरणविशेषाः, कनकनिगड़ाःस्वर्णभूषणविशेषाः, जालक चाप्या

नामक वाद्यविशेष को बजाने वालों के, तुम्बवीणिक-तुम्बवीणा को बजाने वालों के, तालाचर-ताली बजाने वालों के द्वारा अच्छी तरह से किये गये (बहूणि) अनेक प्रकार के (महुरसरगीयसुस्सराइ) मधुर स्वरगर्भित गीतरूप स्वरों को, तथा- (कंची मेहलाकलावग-पतर-कपय—रेक-पाय-जालक—घंटिय-खिंखिणि —रयणोरुजालयछुद्दिय-नेउयचलणमालियकणगनिगड-जालक-भूसणसद्दाणि) कांची-कटिभूषण, मेखला, कलापक-ग्रीवाभरण-प्रतरक, प्रतेरक ये दोनो एक प्रकार के आभरण विशेष होते है, पादजालक-चरणाभरण, घण्टिका, किङ्किणी-छोटी २ घटिकाएँ, रत्नोरुजालक-रत्ननिर्मित जघाभरण, क्षुद्रिका-आभरणविशेष, नूपुर-पादभूषण-विछिया, चरणमालिका-पादाभरणविशेष,कनकनिगड-स्वर्णनिर्मितभूषणविशेष, और

-ડનાર દ્વારા સારી રીતે કરવામા આવેલ “ बहूणि ” અનેક પ્રકારના “ महुर-सरगीयसुस्सराइ ” મધુર સ્વરયુક્ત ગીતરૂપ સ્વરોને તથા “ कंची मेहलाक-लावग-पतरक-पयरेक--पायजालक- घंटिय--खिंखिणिरयणोरुजालय—छुद्दियनेउय-चलण-मालिय-कणग-निगड-जालक-भूसणसद्दाणि ” કાંચી-કટિભૂષણ, મેખલા-સેર, કલાપક-ડોકનુ ઘરેણુ-પ્રતરક, પ્રતેરક એ બન્ને એક પ્રકારના ખાસ આભૂષણો છે, પાદજાલક-પગનુ આભૂષણ, ઘંટિકા,-ઘૂઘરી, કિંકિણી-નાની નાની ઘૂઘરીઓ, નૂપુર-ઝાંઝર, વિછિયા, ચરણમાલિકા, એ બધા આભૂષણોના અવાજને

भूषणविशेष', एषामितरेतयोगद्वन्द्वः, एतान्येव भूषणानि, तेषां शब्दास्तांस्तथोक्तान्, तथा-' लीलचक्कममाणुदीरियाइ' लीलाचङ्क्रम्यमाणोदीरितान्=लीलया चङ्क्रम्यमाणानां=सलील गच्छन्तीनाम्, उदीरितान्=भूषणजनितान् शब्दान्, तथा-'तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ' तरुणीजनहसितभणितकलरिभितमञ्जुलानि-तरुणीजनस्य यानि हसितानि भणितानि, कलरिभितानि=मधुररणनानि=मञ्जुलानि=मनोहराणि च तानि तथोक्तानि, तथा-' गुणवयणाणि य' गुणवचनानि च=कामगुणवर्द्धकवचनानि च 'बहूणि ' बहूनि-अनेकविधानि तथा 'महुरजणभासियाइ' मधुरजनभाषितानि=मधुराणि यानि जनभाषितानि=ताल स्वरयुक्तानि गायकजनगानानि तानि श्रुत्वा, ' समणेण ' श्रमणेन - साधुना ' तेसु ' तेषु मणुण्णभद्दएसु ' मनोज्ञभद्रकेषु ' सद्देसु ' शब्देषु तथा ' अण्णेसु य ' अन्येषु च ' एव माइएसु ' एवमादिकेषु शब्देषु न ' सज्जियव्व ' न सक्तव्यम्-आसक्तिर्न कर्तव्येत्यर्थः, तथा-' न रज्जियव्व ' न रक्तव्य-रागो न कर्तव्यः, 'न गिज्झियव्व' न गर्धितव्यम्=गृद्धिभावो न कर्तव्यः, तथा-' न मुज्झि-

---

जालक-एक प्रकार का आभूषण विशेष, इन सब शब्दों को तथा (लीलचक्कममाणु दीरियाइ) लीलासहित जाती हुई स्त्रीयों के भूषणों के शब्दों को, तथा (तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ) तरुणियों के हसित, भणित, कलरिभित और मनोहर, ऐसे (बहूणि गुणवयणाणि) अनेक प्रकार के कामगुणवर्धक वचनो को तथा (महुरजण भासियाइ तालस्वरयुक्त गायकजनो के गानो को सुनकर के साधुको (तेसु मणुण्णभद्दएसु) उन मनोज्ञ एव मधुर (सद्देसु) शब्दो में तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु) इसी प्रकार के और भी दूसरे शब्दों में (न सज्जियव्वं) आसक्ति नहीं करना चाहिये, (न रज्जियव्व) राग नहीं करना चाहिये, (न गिज्जियव्व) गृद्धिभाव नही करना चाहिये, अर्थात्

તથા " लीलचक्कममाणुदीरियाइ " લીલાસહિત જતી સ્ત્રીઓના આભૂષણોના અવાજને તથા "तरुणीजण-हसिय-भणिय-कलरिभिय-मजुलाइ " તરુણીઓના હસિત, ભણિત, કલરિભિત અને મનોહર, એવા " बहूणि गुणवयणाणि " અનેક પ્રકારના કામ વર્ધક શબ્દોને તથા " महुरजणभासियाइ " ગાયકોના તાલ સ્વરયુક્ત ગીતોને સાંભળીને સાધુએ " तेसु मणुण्णभद्दएसु " તે મનોજ્ઞ અને મધુર " सद्दसु " શબ્દોમાં તથા " अण्णेसु य एवमाइएसु ' એવા પ્રકારના બીજા શબ્દોમાં પણ " न सजियव्व " આસક્તિ કરવી જોઈ એ નહી " न रजियव्व " રાગ કરવો જોઈએ નહી, " न गिज्झियव्व " ગૃદ્ધિભાવ ન

यव्व ' न मोहितव्यम्–तत्र मोहो न कर्तव्य इत्यर्थः, तथा–'विणिघाय' विनिघातः =तदर्थं चारित्रभ्रंशः, आवज्जियव्व ' आपत्तव्यः=कर्तव्यइत्यर्थः, तथा–' न लुभियव्व ' न लोब्धव्यम्=लोभो न कर्तव्य इत्यर्थ, ' न तुसियव्व ' न तोष्टव्यम्-मनोज्ञशब्दादिषु प्रसन्नमनसा न भाव्यमित्यर्थः, तथा–' न हसियव्व ' न हसितव्यम्=विस्मयेन हासो न कर्तव्यः, तथा—श्रमणः 'तत्थ' तत्र–मनोज्ञभद्रकशब्द विषये ' सइ ' स्मृतिं—स्मरण च ' मइ ' मतिं=बुद्धिनिवेश च ' न कुज्जा ' न कुर्यात् । ' पुणरवि य ' पुनरपि चामनोज्ञादि शब्दविषये प्रोच्यते–' सोइंदिएण' श्रोत्रेन्द्रियेण ' सोचा ' श्रुत्वा ' सद्दाइ ' शब्दान् कीदृशान् ? ' अमणुण्णपावगाइ ' अमनोज्ञपापकान्=अमनोज्ञा.=अमनोहरा अतएव–पापका =अशुभास्तान् ' किं ते '

ललचाना नहीं चाहिये, (न मुज्झियव्व) उनमे मोह नहीं करना चाहिये, (न विणिघाय आवज्जियव्व) उनके निमित्त अपने चारित्र को भ्रष्ट नही करना चाहिये, (न लुभियव्व) उनमें लुभाना नहीं चाहिये, (न तुसियव्व) उनसे प्रसन्नमन नहीं बनाना चाहिये, (न हसियव्व) हसना नही चाहिये, और (न सइ च तत्थकुज्जा) न उन मनोज्ञशब्दादिकों की याद करना चाहिये और न उनमें अपनी बुद्धि को ही लगाना चाहिये ।

इसी प्रकार (पुणरवि य) फिर (सोइंदिएण) श्रोत्र इन्द्रिय से (अमणुण्णपावगाइ) अमनोज्ञ अतएव अरुचि कारक अशुभ (सद्दाइ) शब्दों को (सोच्चा) सुनकर साधु का कर्तव्य है कि वह उन पर द्वेष भी न करे–नाक मुँह न सिकोडे, इसी विषय को अब सूत्रकार इन पंक्तियो द्वारा स्पष्ट करते हैं—वे कौन से है इस शंका के समाधान

કરવો જોઈએ એટલે કે લલચાવુ જોઈએ નહી " न मुज्झियव्व " તેમનામા મોહ કરવો જોઇએ નહી ' न विणिघाय आवज्जियव्व " તેમના નિમિત્તે પોતાના ચારિત્રને ભ્રષ્ટ કરવુ જોઈએ નહી, " न लुभियव्व " તેમા લલચાવુ જોઈએ નહીં " न तुसियव्व " તેમા મનને પ્રસન્ન રાખવુ જોઇએ નહી " न हसियव्व " હસવુ જોઇએ નહી, અને " न सइ च मइ ज तत्थ कुज्जा " તે મનોજ્ઞ શબ્દાદિકોને યાદ કરવા જોઇએ નહીં અને તેમા પોતાના મનને ખેંચાવા દેવુ નહીં' એજ પ્રમાણે ' पुणरवि य " વળી ' सोइंदिएण " શ્રોત્રેન્દ્રિયથી " अमणुण्णपावगाइ " અમનોજ્ઞ અને તે કારણે અરુચિકારક અશુભ " सद्दाइ " શબ્દોને " सोच्चा " સાભળીને તેના પ્રત્યે દ્વેષ પણ ન કરવો જોઇએ તે સાધુનુ કર્તવ્ય છે–તેના તરફના તિરસ્કારથી નાક કે મોઢુ સંકોચવુ બગાડવુ જોઈ એ નહી, એ જ વિષયને સૂત્રકાર આ પંક્તિઓ દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે–તે કયા કયા પ્રકારના છે તે શંકાના નિવારણના માટે તેઓ તે અમ

कांस्तान्=कथम्भूतांस्तान् शब्दान् इत्याह— 'अक्कोसफरुसखिसणअवमाणण-तज्जणनिब्भछणदित्तवयणतासणउक्कूजियरुण्णरडियकंदियणिग्घुट्ठरसियकलुणविलवियाइ' आक्रोशपरुषखिसनावमाननतर्जननिर्भर्त्सनदीप्तवचनत्रासनोत्कूजितरुदितरटितक्रन्दितनिर्घुष्टरसितकरुणविलपितानि-तत्र—आक्रोश = 'रे दुष्ट ! म्रियस्वे' त्यादिवचनम्, परुष-रे मूर्ख ! रे चौर ! इत्यादि, खिसनम्=निन्दावचन 'कुशीलोऽसि, निर्लज्जोऽसी' त्यादिरूपम्, अवमाननम्=अपमानजनकवचन, त्वङ्कारादिरूपम्, तर्जनम्='ज्ञास्यसि रे दुष्ट ! ममावज्ञायाः फलम्' इत्यादिरूपम्=निर्भर्त्सनम्='अपसर रे निर्दय ? मम दृष्टिपथादित्यादिरूपम्, दीप्तवचनम्=कुपितवचनम्=त्रासनम्=अन्धकारादौ फेत्कारादिरूपः शृगालादिशब्दः, उत्कूजितम्=

निमित्त वे उन अमनोज्ञ पापक शब्दों को कहते है—(अक्कोस-फरुस-खिसण-अवमाणण- तज्जण- निब्भच्छण-दित्तवयण-तासण-उक्कूजिय-रुण्ण-रडिय-कंदिय--णिग्घुट्ठ-रसिय-कलुण-विलवियाइ) 'रे दुष्ट ! मर जा' इत्यादि प्रकार के जो शब्द होते हैं-वे आक्रोश शब्द हैं, कठोर शब्दों का नाम परुष है-जैसे-'ओ मूर्ख ! अरे ओ चौर !' आदि। निंदात्मक शब्दो का नाम खिसन है, जैसे-'तु बडे खोटे स्वभाव का है, तू बडा बे शरम है' इत्यादि। 'तू' आदि शब्द अपमान जनक शब्द हैं। जिन शब्दों से दूसरों को डाटना होता है वे तर्जना शब्द है, जैसे-'ओ दुष्ट ! अवज्ञा करने का फल मैं तुझे बताऊँगा। तथा 'ओ निर्दय ! मेरे सामने से हट जा' इत्यादि प्रकार के वाक्य निर्भत्सन वाक्य कहलाते है। कुपित वचनों का नाम दीप्तवचन है। अधकार आदि मे फुत्कार आदि रूप शब्दों का

નોજ્ઞ પાપક શબ્દોને બતાવે છે "अक्कोस-फरुस-खिसण-अवमाणण-तज्जण-निब्भच्छण-दित्तवयण-तासण-उक्कूजिय-रुण्ण-रडिय-कंदिय-णिग्घुट्ठ-रसिय-कलुण-विलवियाइ" "હે દુષ્ટ ! મરી જા" ઇત્યાદિ પ્રકારના શબ્દોને આક્રોશ શબ્દ કહે છે, કઠોર શબ્દોને પરુષ શબ્દો કહે છે, જેવા કે "એ મૂર્ખ ! અરે એ ચોર" આદિ પરુષ શબ્દો છે 'તુ ઘણા ખરાબ સ્વભાવવાળો છે, તુ ઘણો બેશરમ છે" આદિ નિંદાત્મક શબ્દોને ખિસન કહે છે "તુ" આદિ અપમાનજનક શબ્દો છે જે શબ્દો દ્વારા બીજાને ધમકી અપાય છે તે શબ્દોને તર્જના શબ્દો કહે છે, જેવા કે "રે દુષ્ટ મારી અવજ્ઞા કરવાનુ ફળ હુ તને ચખાડીશ" તથા 'અરે નિર્દય ! મારી નજરથી દૂર થા" ઇત્યાદિ પ્રકારના વાક્યોને નિર્ભત્સના વાક્ય કહે છે ક્રોધયુક્ત વચનોને દીપ્ત વચન કહે છે

अव्यक्तमहाध्वनिकरणम्, रुदितम्=साश्रुरोदनम्, रटित=कलहायित-कलहवाक्य मित्यर्थः क्रन्दितम्=इष्टवियोगादौ क्रन्दम्, निर्घुष्टम्=उच्चैर्नादकरणम्, रसितम् =शूकरादिवत् शब्दकरणम्, करुणविलपितम्=पुत्रादिमृत्या सकरुणविलापकरणम्, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तानि श्रुत्वा श्रमणेन 'तेसु' तेषु 'अमणुण्णपावएसु' अमनोज्ञपापकेषु=अमनोज्ञाशुभेषु, 'सद्देसु' शब्देषु तथा-'अण्णेसु य एवमाइएसु' अन्येषु च एवमादिकेषु समुपस्थितेषु शब्देषु 'न रुसियव्व' न रोषितव्यम्-रोषो न कर्तव्य, 'न हीलियव्व' न हीलितव्यम्=अवज्ञा न कर्तव्येत्यर्थ, 'न निंदियव्व' न निन्दितव्यम्=निन्दा न कर्त्तव्या, 'न खिंसियव्व' न खिंसितव्यम्=

नाम त्रासन है। जिस प्रकार शृगाल आदि के शब्द होते है। अस्पष्ट जोर २ से बोलने का नाम उत्कूजित है। आन्सु निकाल २ कर रोने का नाम रुदित है। कलहवर्धक वाक्यों का नाम रटित है। इष्ट के वियोग आदि होने पर जो रुदन करते समय वचन निकलते हैं वे क्रदित वचन हैं। ऊँचे स्वर से जो बोलने मे आते हैं वे निर्घुष्ट शब्द हैं। सूअर आदि के जैसे शब्दों का बोलना इसका नाम रसित है। पुत्र आदि के मर जाने पर जो करुण विलाप किया जाता है। और उस समय जो शब्द मुँह से निकलते हैं वे करुण विलपित है। ऐसे शब्दों मे तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु सद्देसु) इसी प्रकार के और भी शब्द जो (अमणुण्णपावएसु) अमनोज्ञ अशुभ हों उन शब्दों में (समणेण) श्रमण का कर्तव्य है कि वह उनमें (न रुसियव्व) रोष न करे।

અંધકાર આદિમાં હુંકાર આદિરૂપ શબ્દોનું નામ ત્રાસન છે, શિયાળ આદિના અવાજ તે પ્રકારનો હોય છે જોર જોરથી અસ્પષ્ટ બોલવું તેને ઉત્કૂજિત શબ્દો કહે છે આંસુ પાડી પાડીને રડવાના અવાજને રુદિત શબ્દ કહે છે કલહ વર્ધક વાકયોને રટિત વાકય કહે છે ઇષ્ટનો વિયોગ આદિ થતાં રુદનની સાથે જે વચન નીકળે છે તેને ક્રંદિતવચન કહે છે ઊંચા આવાજથી બોલતા વચનને નિર્ઘુષ્ટ શબ્દ કહે છે સૂઅર આદિ જેવા શબ્દો બોલવા તે રસિત શબ્દ કહેવાય છે પુત્ર આદિનું મૃત્યુ થતાં જે કરુણ વિલાપ કરાય છે અને ત્યારે જે શબ્દો મોઢામાંથી નીકળે છે તે કરુણ વિલપિત કહેવાય છે એવા શબ્દો પ્રત્યે તથા "अण्णेसुय एवमाइएसु सद्देसु" એવા જ પ્રકારના બીજા શબ્દો કે જે "अमणुण्णपावएसु" અમનોજ્ઞ અને અશુભ હોય તે શબ્દોથી "न रुसियव्व" રોષ ન કરવો. "समणेण" તે શ્રમણનું કર્તવ્ય છે "न हीलियव्व" તેમની અવજ્ઞા કરવી નહીં, "न निंदियव्व" નિંદા ન કરવી, "न

परसमक्ष च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियव्व' न छेत्तव्यम्=अमनोज्ञ शब्दकर्तुर्द्रव्यस्य छेदो न कार्यः, तथा-'न भिदियव्व' न भेत्तव्यम्, तस्यैव न भेदः कर्त्तव्यः, 'न वहेयव्व' न हन्तव्यम्=तस्यानिष्ट शब्दकर्तुर्वधो न कर्तव्य, तथा-'दुगुछावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि शब्दविषये स्वस्य परस्य वा घृणावृत्तिरपि, 'उप्पाएउ' उत्पादयितु 'न लब्भा' न लभ्या-नोचिता, यथा-स्वस्य परस्य वा हृदि शब्दविषया जुगुप्सा प्रादुर्भवेन्न तथा कर्तव्यमिति भावः। अथ प्रथमभावनानिगमनार्थमाह—एवम्=उक्तरीत्या 'सोइंदियभावणाभाविओ' श्रोत्रेन्द्रियभावनाभावित श्रोत्रेन्द्रिय निरोद्धव्यम्, अन्यथा-महदनर्थगमनः, इत्येव रूपया भावनया भावित, 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवो 'भवइ' भवति, ततश्च 'मणुण्णामणुण्णसुब्भिदुब्भिरागदोसे' मनोज्ञामनोज्ञसुरभिदुरभिरागद्वेषो=मनोज्ञामनोज्ञ

(न हीलियव्व) उनकी अवज्ञा न करे, (न निंदियव्व) निंदा न करे (न खिसियव्व) उन पर खिसियावे नहीं—दूसरो के समक्ष उनकी निंदा न करे (न छिदियव्व) जो अमनोज्ञ शब्दों करने वाला विणादि द्रव्य है उसका वह न छेदन करे और (न भिदियव्व) न भेदन करे (न वहेयव्व) अनिष्ट शब्द करने वाले मनुष्य आदि का वध न करे। और (न दुगुछा वत्तिया विलब्भा उप्पाए उ) न उन अनिष्ट शब्दो के विषय मे अपने एव पर के घृणावृत्ति उत्पन्न करने की कोशिश ही करे। अब सूत्रकार इस प्रथम भावना का उपसहार करने के लिये कहतेते है-(एव) इस प्रकार (सोइदियभावणाभाविओ) श्रोत्रेन्द्रिय की भावना से भावित हुआ 'मुझे श्रोत्रेन्द्रिय का निरोध करना चाहिये नहीं तो बडा भारी अनर्थ होगा' इस प्रकार की विचारधारा से वासित हुआ (अतरप्पा) अन्तरात्मा मुनि (मणुण्णामणुण्णसुब्भिदुब्भि रागदोसे पणिहियप्पा) मनोज्ञ रूप शुभ और अमनोज्ञ–

खिंसियव्व" તેના પર ખિસિયાએ નહી–બીજા પાસે તેની નિંદા કરવી જોઇએ નહી, "न छिदियव्व" અમનોજ્ઞ અવાજ કરનાર વીણાદિ જે વસ્તુ હોય તેનુ તે છેદન ન કરે, "न भिदियव्व" તેનુ ભેદન ન કરે "न वहेयव्व" અનિષ્ટ શબ્દ કરનાર મનુષ્ય આદિનો તે વધ ન કરે, અને "न दुगुछावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ" તે અનિષ્ટ શબ્દ પ્રત્યે પોતે ઘૃણા ન કરે ને બીજાઓમા ઘૃણા વૃત્તિ પેદા કરવાની કોશિશ ન કરે હવે સૂત્રકાર આ પહેલી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા કહે છે–"एव" આ રીતે "सोइदियभावणाभाविओ" શ્રોત્રેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થયેલ "મારે શ્રોતેન્દ્રિય પર અંકુશ રાખવો જોઇએ નહી તો ઘણો ભારે અનર્થ થશે" એ પ્રકારની વિચારધારાથી પ્રભાવિત થયેલ "अंतरप्पा" અન્તરાત્મા-મુનિ "मणुण्णामणुण्णसुब्भिदुब्भिरागदोसे पणिहिं

ये सुरभिदुरभयः=शुभा शुभाः शब्दास्तेषु यद्रागद्वेष तत्र, 'पणिहियप्पा' प्रणिहितात्मा=संवृतात्मा 'साहू' साधु 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः, 'संवुडे' संवृतः-संवरवान् 'पणिहिइंदिए' प्रणिहितेन्द्रियः-प्रणिहितः=वशीकृतः इन्द्रियो येन तथाभूतः सन् 'धम्म' धर्मं 'चरेज्ज' चरेत् ॥ सू० ७ ॥

द्वितीयां भावनामाह—'वीय" इत्यादि—

मूलम्-वीय चक्खु इंदिएण पासिय रूवाणि मणुण्णभद्दगाइं सचित्ताचित्तमीसगाइं कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे

रूप अशुभ शब्दों में रागद्वेष करने की परिणति से रहित हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति से सपन्न हुआ (साहू) साधु (मणवयकायगुत्ते) अपने मन, वचन और काय को शुभाशुभ के व्यापार से सुरक्षित कर लेता है। और (संवुडे) संवर से युक्त बन कर (पणिहिइंदिए) अपनी श्रोत इन्द्रिय को वश में करके (धम्म) चारित्ररूप धर्म को (चरेज्ज) पालन करने वाला बन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने परिग्रह विरमणव्रत की प्रथम भावना का विवेचन किया है। इसमें उन्होंने यह कहा है कि साधु को इष्ट श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में ललचाना नहीं चाहिये और अनिष्ट विषय में द्वेष नहीं करना चाहिये। इस प्रकार से इस भावना से भावितमुनि अपने व्रत की रक्षा और उसकी सुस्थिरता करता हुआ संवर से युक्त बन जाता है और चारित्ररूप धर्म की परिपालना अच्छी तरह से कर सकता है॥सू०७॥

यप्पा" મનોજ્ઞરૂપ શુભ અને અશુભ શબ્દોમા રાગદ્વેષની પરિણતિથી રહિત થઇ જાય છે આ પ્રકારની સ્થિતિથી યુક્ત બનેલ "साहू" સાધુ "मणवयकायगुत्ते" પોતાના મન, વચન અને કાયને શુભાશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત કરી નાખે છે અને "संवुडे' સંવરથી યુક્ત બનીને 'पणिहिइंदिए" પોતાની શ્રોત્રેન્દ્રિયને વશ કરીને "धम्म" ચારિત્રરૂપ ધર્મનુ "चरेज्ज" પાલન કરનાર થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પહેલી ભાવનાનુ વિવેચન કર્યું છે તેમા તેમણે એ બતાવ્યુ છે કે સાધુએ શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઇષ્ટ વિષયમા લલચાવુ જોઈએ નહી અને અનિષ્ટ વિષય પ્રત્યે દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં આ રીતે આ ભાવનાથી ભાવિત થયેલ મુનિ પોતાના વ્રતની રક્ષા તથા સુસ્થિરતા કરતો કરતો સંવરથી યુક્ત થઇ જાય છે, અને ચારિત્રરૂપ ધર્મનુ સારી રીતે પાલન કરી શકે છે ॥ સૂ૦ ૭ ॥

सेले य दंतकम्मे य, पंचहि वण्णेहि अणेगसंठाणसंठियाइं गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमणि य मल्लाइ बहुविहाणि य नयणमणसुहकराइं वणसंडे पव्वए य गामागरनगराणि य खुड्डियपुक्खरिणी वावीदीहिय-गुंजालिय सरसरपंतिय सागर-बिलपंतिय खाइय-नई-सर-तलाग-वप्पिणो फुल्लुप्पलपउम-परिमंडियाभिरामे, अणेगसउणगणमिहुणवियरिए, वरमंडव-विविह भवण-तोरण-चेइय-देवकुल-सभप्पवावसह-सुकय-सयणासण--सीयरह-सगडजाणजुग्गय--संदणे नरनारिगणे य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे, अलंकिय विभूसिय, पुव्वकय तवप्प-भावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग लंख मंख तूणइल्ल तुंबवीणिय-तालायर पकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि अण्णेसु य एवमाइएसु रूवेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्व, जाव न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि चक्खुइंदिएण पासिय रूवाइं अमणुन्नपावगाइं, किं ते ? गंडि-कोढि-कुणि-उदरि- कच्छुल्ल--पइल्ल-- कुज्ज---पंगुल---वामण-अंधिल्लग--एगचक्खु विणिहय सप्पिसल्लगवाहिरोगपीलिय विगयाणि य मयककलेवराणि सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं अन्नेसु य एवमाइएसु अमणुन्नपावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, जाव न दुगुंछावत्तियावि लब्भा उप्पाएउं, एवं चक्खुइंदियभावणाभाविओ भवइ अंतरप्पा मणुण्णामणुण्ण-

सुब्भिदुब्भिरागदोसे पणिहियप्पा साहूमणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ८ ॥

टीका—' बीय ' इत्यादि—

' बीय ' द्वितीया चक्षुरिन्द्रियसंवराभिधेया भावनामाह– ' चक्खुइंदिएण ' चक्षुरिन्द्रियेण ' पासिय ' दृष्ट्वा ' रूवाणि ' रूपाणि=आकारान् कीदृशानि ? ' मणुण्णभद्दगाइ ' मनोज्ञभद्रकाणि–मनोज्ञानि=मनोहराणि च तानि भद्रकाणि= सुन्दराणि चेति कर्मधारयः, तथा–' सचित्ताचित्तमीसगाइ' सचित्ताचित्तमिश्रकाणि, तत्र–सचित्तानि=नरयुग्मादीनि, अचित्तानि=तत्प्रतिकृतिरूपाणि, मिश्रकाणि =वस्त्राभरणभूपितानि तान्येव, काष्ठपाषाणादीनि वा दृष्ट्वा तेषु श्रमणेन न सक्तव्यमित्यग्रेण सम्बन्ध । कस्मिन् स्थाने दृष्ट्वा ,इत्याह–'कट्ठे' काष्ठे=काष्ठफलके ' पोत्थे य ' पुस्ते च=पुस्तके च ' चित्तकम्मे ' चित्रकर्मणि ' लेप्पक

इस व्रत की द्वितीय भावना को कहते हैं–' बीय इत्यादि० ।

टीकार्थ—(बीय) दूसरी चक्षुरिन्द्रिय संवर नाम की भावना है वह इस प्रकार से है–(चक्खुइंदिएण) चक्षुइन्द्रिय से (मणुण्णभद्दगाइं) मनोज्ञ अतएव सुन्दर ऐसे (रूवाइ) रूपों को कि जो (सचित्ताचित्त मीसगाइ) सचित्त, अचित्त और मिश्रद्रव्य से आश्रित हो उन्हें (पासिय) देख करके साधु को चाहिये कि वह उनमे आसक्तचित्त न बने, यह आगे से संबन्ध है । नर नारी आदि सचित्त द्रव्य हैं, इन के प्रतिकृति–फोटो अचित्तद्रव्य हैं । वस्त्र आभूषण आदि से विभूषित नर नारी आदि मिश्रद्रव्य हैं । इनके आश्रित जो मनोहर आकार होता है वह मनोज्ञ भद्रकरूप है । इन सब का आकार (कट्ठे) काष्ठ के

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની બીજી ભાવના બતાવે છે–" बीय " ઈત્યાદિ–

ટીકાર્થ—" बीय " બીજી ચક્ષુરિન્દ્રિય સંવર નામની ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે–" चक्खुइंदिएण " ચક્ષુ ઇન્દ્રિયથી " मणुण्णभद्दगाइ " મનોજ્ઞ અને સુંદર એવા " रूवाइ " રૂપોને કે જે " सचित्ताचित्तमीसगाइ " સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર દ્રવ્યને આશ્રિત હોય, તેમને "पासिय" જોઈને તેમાં સાધુએ આસક્ત થવું જોઈએ નહીં નર, નારી આદિ સચિત્ત દ્રવ્ય છે તેમની પ્રતિકૃતિ–ફોટો અચિત્ત દ્રવ્ય છે વસ્ત્ર, આભૂષણ આદિથી વિભૂષિત નર–નારી આદિ મિશ્ર દ્રવ્ય છે તેમના પર આધાર રાખનાર જે મનોહર આકાર હોય છે તે મનોજ્ઞ ભદ્રકરૂપ છે તે બધાનો આકાર " कट्ठे " લાકડાના પાટીયા પર

म्मे' लेप्यकर्मणि भित्यादौ, 'सेले य शैले=पाषाणे च 'दतकम्मे' दन्तकर्मणि=हस्तिदन्तादिषु यच्चरयुगादीनामाकृतिरुत्कृत्यते तद्दन्तकर्म तस्मिंश्च 'पचहिं वण्णेहिं' पञ्चभिर्वर्णैर्युक्तानि, 'अणेगसठाणसठियाइ' अनेक संस्थानसंस्थितानि' अनेकानि=अनेकप्रकाराणि यानि संस्थानानि=आकृतयस्तैः संस्थितानि=युक्तानि, तथा-'गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाणि य' ग्रन्थिमवेष्टिमपूरिमसंघातिमानि च, तत्र-ग्रन्थिम=ग्रन्थस्तेन निर्वृत्त मालावत्, वेष्टिमम्=वेष्टनेन निर्वृत्तम् पुष्पगेन्दुकवत्, पूरिम=पूरणेन निर्वृत्त, यन्त्रे पित्तलादि रसपूरणेन निष्पादित पुत्तलिकादिकम्, संघातिमम्=संघातेन निर्वृत्तम्, कपर्दिकादिसंघातेन निष्पादित कुक्कुटा-

पट्टियों पर उकेरा जाता है (पोत्थे य) पुस्तकों से छापा जाता है, (चित्तकम्मे य) कागज आदि पर चित्रित किया जाता है मृत्तिका आदि में बनाया जाता है (लेप्पकम्मे) रँग आदि से भित्ति आदि पर लिखा जाता है (सेले य) पाषण के ऊपर अंकित किया जाता है (दतकम्मे य) हाथी दात पर खोदा जाता है। इन सब पदार्थो के ऊपर उकेरे गये उन २ आकारो को (पचहिं वण्णेहिं) पाँच वर्णो से भरा जाकर बहुत ही सुन्दर रूप से आकर्षक बनाया जाता है। (अणेगसठाणसठियाइ) भिन्न २ रूप में उन चित्रों को सजाया जाता है। इसी प्रकार (गथिम वेढिमपूरिमसघाइमाणि य) माला की तरह गूथ २ कर जो चित्र बनाये जाते हैं वे ग्रन्थिम, पुष्पगेद की तरह जो वेष्टित करके चित्र बनाये जाते हैं वे वेष्टिम, किसी पदार्थ पर जो पुत्तलिकादि की तरह रग से भरकर चित्र बन जाते है वे पूरिम, तथा कौडी आदि के परस्पर जोड़ने से कुक्कुट आदि के जैसा जो रूप बनाया जाता है वह सघातिम है। इन सब

ચિતરાય છે, "पोत्थेय" પુસ્તકોમા છપાય છે चित्तकम्मेय" કાગળ આદિ પર ચિતરવામા આવે છે, માટી આદિથી બનાવવામા આવે છે, "लेप्पकम्मे" રગ આદિથી દિવાલ આદિ પર આલેખાય છે, "सेलेय" પથ્થર પર કોતરાય છે, "दतकम्मेय" હાથીદાત પર કોતરવામા આવે છે, તે સઘળા પદાર્થો ઉપર અંકિત કરેલ તે આકારોને "पचहिं वण्णेहिं" પાચ રગો લગાડીને બહુજ સુદર અને આકર્ષક બનાવાય છે "अणेगसठाणसठियाइ" ભિન્ન ભિન્ન રીતે તેની સજાવટ કરાય છે એ જ રીતે "गंथिमवेढिमपूरिमसघाइमाणि य" માળાની જેમ ગૂથી ગૂથીને જે ચિત્રો બનાવવામા આવે છે તે ગ્રથિમ, પુષ્પના દડાની જેમ જે ચિત્ર વેષ્ટિત કરીને બનાવાય છે વેષ્ટિમ, કોઈ પદાર્થ પર પુતળી આદિની જેમ રગથી ભરીને જે ચિત્ર બનાવાય છે તે પૂરિમ, તથા કોડી આદિને એક બીજામા પરોવીને કૂકડા આદિ જેવો જે આકાર બનાવાય છે તે

दिस्तरूपम्, एषां द्वन्द्वः, तानि तथोक्तानि दृष्ट्वा, तथा–' बहुविधानि=अनेकप्रकाराणि च=पुनः ' अहिय ' अधिकम्–अत्यर्थं यथा स्यात्तथा 'नयणमणसुहकराइ' नयनमनःसुखकराणि = नयनयोर्मनसश्च सुखकराणि=सुखोत्पादकानि ' मल्लाइ ' माल्यानि ' माला ' इति भाषा प्रसिद्धानि तथा–' वणसडे ' वनषण्डान्=एकजातीयानामनेकजातीयानां च वृक्षाणां समूहान्, ' पव्वए य ' पर्वतांश्च ' गामागरनगराणि य ' ग्रामाकरनगराणि च दृष्ट्वा, तथा–' खुद्दियपुक्खरिणी–वावी–दीहिय=गुजालिय–सरसरपंतिय–सागर–बिलपंतिय–खाइय–नई–सर–तलाग–वप्पिणो ' क्षुद्रिका पुष्करिणी वापी दीर्घिका गुञ्जालिका सरः सरः पङ्क्तिका सागर–बिलपङ्क्तिका–खातिका–नदी–सरस्तडागवप्रान्, तत्र–क्षुद्रिका=लघुजलाशयविशेषः, पुष्करिणी=कमलवती वर्तुलाकारा वापी=चतुष्कोणा, दीर्घिका=दीर्घाकार-वापी, गुञ्जालिका=वक्राकारवापी, सरः सरःपङ्क्तिका=येषां मध्ये एकस्मात्तडागादपरस्मिँस्तडागे जलं समायाति, एतादृशजलाशयसमूहः सरसरः पङ्क्तिके-

यों निहार कर, (देखकर) तथा (बहुविहाणि) अनेक प्रकार की (मल्लाइ) मालाओं को कि जो (अहिय नयणमणसुहकराइ) अधिक से अधिक रूप में नेत्र एवं मन को आह्लादकारक होती हों देखकर (वणसडे) एक जातीय और अनेक जातीय वृक्षों के समूहों को (पव्वए य) पर्वतों को गामागरणगराणि) ग्राम, आकर, नगरों को (खुद्दिय पुक्खरिणी–वावी –दीहिय–गुजालिय–सरसर–पंति य–सागर–बिलपंति य–खाइय–नई–सर–तलाग–वप्पिणो) क्षुद्रिका–लघु–जलाशय, पुष्करिणी–कमलों से युक्त गोल आकारवाली वावड़ी, वापी–चार कोनो वाली वावडी, दीर्घिका –लम्बे आकार वाली वावडी, गुञ्जालिका–वक्र आकारवाली वावडी, सरः सरः पंक्ति–एक तालाव से दूसरे तालावों मे जल जाने वाले तालाब के समूह, सागर–समुद्र बिलपंक्ति–बिलोंके जैसे आकार वाले कूओं की,

સઘાતિમ કહેવાય છે તે બધાને જોઈને તથા"बहुविहाणि" અનેક પ્રકારની "मल्लाइ" માળાઓ કે જે " अहिय नयणमणसुहकराइ" આખ અને મનને વધારેમા વધારે આનંદદાયક હોય છે, તેમને જોઈને "वणसडे" એક જાતના કે અનેક જાતના વૃક્ષના સમૂહોને "पव्वएय" પર્વતોને, "गामागरणगराणि" ગામ, આકર, નગરોને "खुद्दिय पुक्खरिणी वावी- दीहिय गुजालिय सरसर प तिय-सागर बिलप तिय खाइय नई -सर-तलाग-वप्पिणो" ક્ષુદ્રિકા–નાનુ જળાશય, પુષ્કરિણી–કમળોથી યુક્ત ગોળાકારની વાવ, વાપી–ચાર ખૂણાવાળી વાવ સર સર પંક્તિ–એક તળાવમાથી બીજા તળાવોમા પાણી જતુ હોય તેવા તળાવોનો સમૂહ, સાગર, બિલપંક્તિ–દરના

त्युच्यते, सागरः=समुद्रः, बिलपङ्क्तिका=बिलानीवबिलानि=कूपास्तेषां पङ्क्तिका =कूपश्रेणिरित्यर्थः, खातिका=परिखाः, नदी=प्रसिद्धा, सरः=स्वाभाविकस्तडागः, तडागः=कृत्रिमः सरोवरः, वप्राः=धान्यक्षेत्राणि, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ताँस्त-थोक्तान्, दृष्ट्वा, कीदृशानेतान् ? इत्याह–'फुल्लुप्पलपउमपरिमंडियाभिरामे' फुल्लो त्पलपद्मपरिमण्डिताभिरामान् तत्र फुल्लानि=विकासितानि यानि उत्पलानि=चन्द्र विकाशिकमलानि, पद्मानि=सूर्यविकासिकमलानि च तैः परितः=समन्तान्मण्डिता अतएव–अभिरामाः=मनोहरास्ताँस्तथोक्तान्, पुनः कथम्भूतान् ? 'अणेगसउण-गणमिहुणविचरिए' अनेकशकुनगणमिथुनविचरितान्=अनेकानि–बहुविधानि यानि शकुनगणमिथुनानि–पक्षिगणयुगलानि, विचरितानि–सचरितानि यत्र तान्, फुल्लो-त्पलादिपदानि क्षुद्रिकादिवप्रान्तविशेषणानि । तथा–'वरमंडव–विविह–भवण–तोरण–चेइय–देवकुल–सभप्पवा–वसह–सुकयसयणासण–सीयरह–सगड – जाण–जुग्ग–संदणे ' वरमण्डपविविधभवनतोरण चैत्य देवकुलसभाप्रपावसथसुकृतशयना-सनशिबिकारथशकटयानयुग्यस्यन्दनान् , तत्र–वरमण्डपाः=श्रेष्ठमण्डपाः, विविध भवनानि, तोरणानि प्रसिद्धानि, चैत्यानि=उद्यानानि, देवकुलानि प्रसिद्धानि,

---

श्रेणि, खातिका–परिखाए नदी–नदियां, सर–सामान्यतालाव तडाग–कृत्रिम सरोवर, वप्र–धान्य के खेत जो (फुल्लुप्पलपउमपरिमंडियाभि-रामे) विकाशित–उत्पलों से, चद्रविकाशिकमलो से सब और मंडित हो रहे हो, और इसी कारण जिनसे मन में विशेष प्रफुल्लिता आती, हो, तथा जो (अणेगसउणगणमिहुणविचरिए) अनेक पक्षियों के युगल जहां विचरण कर रहे हों इन सब को देखकर साधु इनमें आसक्ति न करे। तथा (वरमंडवविविहभवणतोरणचेइयदेवकुलसभप्पवावसहसु-कयसयणासणसीयरहसगडजाणजुग्गसंदणे) वरमंडप–श्रेष्ठमंडप, वि-विधभवन, तोरण, चैत्य–उद्यान, देवकुल, सभा, प्रपा–पानीयशाला,

---

જેવા આકારના કૂવાઓની હાર, ખાતિકા–ફરતી આવેલી ખાઈઓ, નદીઓ, સર–સામાન્ય તળાવો, તડાગ–કૃત્રિમ સરોવર, વપ્ર–ધાન્યના ખેતરો જે "फुल्लुप्पलपउमपरियमंडियाभिरामे" વિકસિત ઉત્પલોથી ચન્દ્રવિકાસી કમળોથી બધી તરફ ઘેરાયેલા હોય, અને એ જ કારણે મનને વધારે પ્રફુલ્લિત બનાવતા હોય, તથા "अणेगसउणगणमिहुणविचरिए" અનેક પક્ષીઓના યુગલ જ્યાં વિચરતા હોય, તે બધું જોઈને સાધુએ તેમાં આસક્તિ કરવી જોઈએ નહીં તથા 'वरमंडव–विविहभवण–तोरण–चेइय–देवकुल–सभप्प–वावसह–सयणासण–सीयरह सगडजाणजुग्गसंदणे" વરમંડપ શ્રેષ્ઠમંડપ, વિવિધભવન, તોરણ,-ચૈત્ય,-ઉદ્યાન, દેવકુલ, સભા, પ્રપા પરબ, આવસથ પરિવ્રાજકોના સ્થાન, સારી રીતે સજાવ-

सभा=प्रसिद्धा, प्रपा=पानीयशाला, आवसथः=परिव्राजकवसति, सुकृतशयनासनानि =सुकृतानि=सुष्ठु कृतानि=विहितानि यानि शयनानि=शय्याः, आसनानि=सिंहासनानि च तानि तथोक्तानि, शिबिका='पालकी' ति प्रसिद्धा, रथः=प्रसिद्धः, शकटम्='गाड़ा' इति भाषा प्रसिद्धम्, यानम्=गमनसाधन रथादिकम्, युग्यम्=अश्वादिवाहनम्, स्यन्दनो=रथविशेषः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्व, तास्तथोक्तम्, तथा 'नरनारिगणेय' नरनारिगणाश्च=स्त्रीपुरुषसमुदायाश्च, दृष्ट्वा, कथम्भूतानेतान्? इत्याह—'सोमपडिरूवदरिसणिज्जे' सोमप्रतिरूपदर्शनीयान्-सोमवत् सौम्यतया चन्द्रवत् प्रतिरूपा=सुन्दराः, अतएव-दर्शनीयाः=द्रष्टुं योग्यस्तान् पुनः कथभूतान्? 'अलंकियविभूसिए' अलंकृतविभूषितान्=अलङ्कृताः=मुकुटाद्यलङ्कारै विभूषिताः वस्त्रादिभिः सज्जिताः ये तान्, पुनः कथभूतान्? 'पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते' पूर्वकृततपः प्रभावसौभाग्यसंप्रयुक्तान् पूर्वकृततपः प्रभावेण प्राप्त यत्सौभाग्य तेन संप्रयुक्ता ये ते तथा तान् दृष्ट्वा, तथा-'नड-नट्टग जल्ल मल्लमुट्ठियवेलंवगकहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायरपकरणाणि' नट नर्त्तक जल्लमल्लमौष्टिकविडम्बक- कथक-

---

आवसथ-परिव्राजकों के स्थान, सुकृत-अच्छी तरह से सजाये गये शयन, आसन, पालकी, रथ, गाडा, यान-गमन के साधनभूत वाहन, युग्य-अश्वादिकवाहन, स्यदन-रथविशेष, इन सबको, तथा (नरनारिगणे य) नर और नारी के वृन्द को कि जो (सोमपडिरूवदरिसणिज्जे) चन्द्रमा के जैसा सुन्दर आकार वाला है और इसी से जो दर्शनीय बना हुआ है (अलकियविभूसिए) मुकुट आदि विवध अलकारों से एवं वस्त्रादिको से सुसज्जित है, (पुव्वकय तवप्पभावसोहग्ग संपउत्ते) पूर्वकृत तप के प्रभाव से प्राप्त सौभाग्य से जो युक्त है इन सब को देखकर के तथा (नड-नट्टग-जल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आईक्खग-लख-मंख-तूण-इल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि)

ટવાળા શયનસ્થાન, આસન, પાલખી, રથ ગાડા, યાન મુસાફરીના સાધનરૂપ વાહન, યુગ્ય અશ્વાદિ વાહન, સ્યદન ખાસ પ્રકારના રથ, એ બધાને તથા "नरनारिगणेय" નર અને નારીના સમૂહને કે જે "सोमपडिरूवदरिसणिज्जे" ચન્દ્રમા જેવા સુદર આકારવાળા છે અને તેથી જ જે જોવા ગમે તેવા છે, "अलंकियविभूसिए" મુગટ આદિ વિવિધ અલકારો તથા વસ્ત્રોથી વિભૂષિત છે, "पुव्वकयतवप्पभावसोहग्ग संपउत्ते" પૂર્વકૃત તપના પ્રભાવથી પ્રાપ્ત થયેલ સૌભાગ્યથી જેઓ યુક્ત છે, એ સૌને જોઈને તથા "नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंवग-कहग-पवग-लासग आइक्खग-लंख-मंख-तूण-इल्ल-त [illegible] -ता

प्लवक-लासकाख्यायक-लङ्ख-मङ्ख तूणिक तुम्बवीणिक तालाचर प्रकरणाणि च, नटनर्त्तकादिपदानां व्याख्याऽस्यैवप्रथमभावनातोऽवगन्तव्याः, ' बहूणि ' बहूनि-अनेकविधानि ' सुकरणाणि ' सुकरणानि=शोभनक्रियायुक्तानि दृष्ट्वा, नटनर्तकादीनां बहुविधान् मनोहरव्यापारान् दृष्ट्वेत्यर्थः, तेषु तथा 'अण्णेसु य ' अन्येषु चैतद्भिन्नेषु ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु=एवंविधेषु 'मणुन्नभद्दएसु' मनोज्ञभद्रकेषु ' रूवेसु ' रूपेषु=चक्षुर्ग्राह्यविषयेषु 'समणेण' श्रमणेन=साधुना ' न सज्जियव्व' न सक्तव्यम्, न रज्जियव्व' न रक्तव्यम् 'जाव' यावत्=यावत्करणात् 'न गिज्झियव्व' न गर्धितव्यम्' 'न मुज्झियव्व न मोहितव्यम्, 'न विणिघायमावज्जियव्व' न विनिघातआपत्तव्य. तथा-'न लुभियव्व न लोब्धव्यम्, 'न तुसियव्व' न तोष्टव्यम्,

---

नट,-नर्त्तक, जल्ल, मल्ल, मौष्टिक, वेलवक, कथक, पूलवक, लासक, आख्यायिक, लख, मख, तृणिक, तुम्बवीणिक, तालाचार, इन सब के मनोहर व्यापारों को जो (बहूणि) अनेक प्रकार के होते हैं और (सुकराणि) शोभन क्रिया संपन्न रहा करते हैं उनको देख करके, तथा (अण्णेसु एवमाइएसु रूवेसु मणुण्णभद्दएसु) और भी जो इसी प्रकार के मनोज्ञभद्रक रूप हों उन्हें देख करके (समणेण) साधु को (तेसु) उनमें (न सज्जियव्व) आसक्त नहीं बनना चाहिये। (न रज्जियव्व) राग नहीं करना चाहिये। यहां यावत् शब्द से (न गिज्झियव्व) गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये-अर्थात्-उनमें ललचाना नहीं चाहिये। (न मुज्झियव्व) न मोह करना चाहिये, (न विणिघाय आवज्जि-यव्व) उनके लिये चारित्र का भंग न करे, (न लुभियव्व) लोभ न करे, (न तुसियव्व) प्रसन्न मन नहीं होना चाहिये, (न हसियव्व)

लायर-पकरणाणि" नट, नर्तक, जल्ल, मौष्टिक, वेलवक, कथक, प्लवक, लासक आख्यायिक, लंख, मंख, तुणिक, तुंबवीणिक, तालाचार, એ બધાના મનોહર વ્યાપારો કે જે ' बहूणि " અનેક પ્રકારના હોય છે, અને " सुकराणि " સુંદર ક્રિયા યુક્ત હોય છે, તેમને જોઈને તથા " अण्णेसु एवमाइएसु रूवेसु मणुण्ण भद्दएसु" એ જ પ્રકારના બીજા પણ જે મનોજ્ઞ ભદ્રકરૂપ હોય તેમને જોઈને "समणेण" સાધુએ " तेसु" તેમનામાં " न सज्जियव्व " આસક્ત થવું જોઈએ નહીં, " न रज्जियव्व " રાગ કરવો જોઈએ નહીં, " न गिज्झियव्व " તેમાં લલચાવું જોઈએ નહીં, " न मुज्झियव्व " તેને માટે મોહ કરવો જોઈએ નહીં, " न विणिघाय आवज्जियव्व " તેને માટે ચારિત્રનો ભંગ ન કરવો જોઈએ " न लुभियव्व " લોભ કરવો જોઈએ નહીં, " न तुसियव्व "

'न हसियव्व' न हसितव्यम् , तथा-श्रमणस्तत्र 'न सइ च मइ च' न स्मृतिं च मतिं च ' कुज्जा ' कुर्यात् । एतत्सर्वमस्यैव प्रथमभावनाया व्याख्यातम् । ' पुणरवि ' पुनरप्युच्यतेऽश्रमणः ' चक्खुइंदिएण ' चक्षुरिन्द्रियेण ' अमणुण्णपावगाइं ' अमनोज्ञपापकानि ' रुवाणि ' रूपाणि ' पासिय ' दृष्ट्वा ' किं ते ' कानि तानि-कथम्भूतानि तानि रूपाणि ? इत्याह-' गंडि-कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल -कुज्ज-पंगुल-वामण-अंधिल्लग-एगचक्खु-विणिहय सपिसल्लग-वाहिरोगपीलिय ' गण्डिकुष्ठिकुण्युदरिकच्छुल्लश्लीपदकुब्ज पङ्गुलवामनान्धिल्लैकचक्षुर्विनिहत सपिशाचकव्याधिरोगपीडित-तत्र-गण्डी=गण्डो=हि कण्ठरोगविशेषः,स च वातपित्त श्लेष्मसन्निपातैर्जायमानत्वाच्चतुर्विधः, स यस्यास्ति स गण्डी, गण्डमालावानित्यर्थः, कुष्ठी=कुष्ठमस्यास्तीति कुष्ठी-कुष्ठरोगवान् , कुष्ठमष्टादशविधम् , तत्र महाकु

आश्चर्य से हसना नहीं चाहिये, तथा (न सइ च मइ च तत्थकुज्जा) और न उनकी याद करना चाहिये और न उनमें अपनी बुद्धि को ही लगाना चाहिये। (पुणरवि) इसी तरह (अमणुण्णपावगाइ) अमनोज्ञ अशुभ (रूवाइ) रूपों को (चक्खुइंदिएण) चक्षु इंद्रिय से (पासिय) देखकर साधु को उनमें रोष-द्वेष नहीं करना चाहिये। (किं ते !) वे अमनोज्ञ अशुभ रूप कौन २ से हैं इस प्रकार की शंका का समाधान करते हुए सूत्रकार अब उन्हें इन निम्नलिखित पदों द्वारा प्रकाशित करते हैं-(गंडि-कोढि-कुणि-उदरि कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पंगुल-वामण-अंधिल्लग-एगचक्खु-विणिहय सपिसल्लग-वाही-रोग-पीलियं) गंडी-गडमाल-रोगवाले, कुष्ठी-कुष्ठरोगवाले, कुणि-कुष्ठरोगी, उदररोगी, कच्छुल्लरोगी, श्लीपदरोगी, कुब्ज-कुबडा, पंगुल,

---

તેનાથી મનમા આનંદ પામવો નહી, " न हसियव्व " તેને જોઈ ને આશ્ચર્યથી હસવુ ન જોઇએ, તથા " न सइ च मइ च तत्थकुज्जा " તેને યાદ કરવુ જોઈ એ નહી કે તેમા ધ્યાન પરોવવુ જોઇ એ નહી

" पुणरवि " એ જ પ્રમાણે " अमणुण्णपावगाइ " અમનોજ્ઞ અશુભ " रूवाइ " રૂપોને ' चक्खुइंदिएण '' ચક્ષુઇન્દ્રિયથી " पासिय " જોઇને તેના પ્રત્યે રોષ-દ્વેષ કરવો જોઇએ નહી, " किं ते ? " તે અશુભ રૂપ કયા કયા છે તે શંકાનુ સમાધાન કરવાને માટે સૂત્રકારે નીચેના પદો દ્વારા તેમને જાહેર કરે છે—" गंडि-कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल- पइल्ल-कुज्ज-पंगुल-वामण-अंधिल्लग-एगचक्खु-विहिय-सपिसल्लग-वाहिरोग-पीलिय " ગંડી-કંઠમાળના રોગવાળા, કુષ્ટરોગી, કુણિ-કંઠરોગવાળા, ઉદરરોગી, કચ્છુલ્લરોગી, શ્લીપદરોગી, કુબડા,

ष्ठस्य सप्तभेदाः । तद्यथा अरुग[1]-दुम्बर[2]-स्पर्शजिह्व[3]-करकपाल[4]-काकन[5]-पौण्डरीक[6]-दद्रूणि[7] । इति, महत्त्व चैषामसाध्यत्वात्। सामान्यकुष्ठस्यैकादश भेदाः, स्थूलामारुक १ महाकुष्ठ २ एककुष्ठ ३ चर्मदल ४ विसर्प ५ परीसर्प ६ विचर्चिका ७ सिध्म ८ कटिभ ९ पामा १० शतारुष्क ११ सञ्ज्ञकाः । एवं सर्वाणि कुष्ठान्यष्टादश । यद्यपि सर्वं कुष्ठं सन्निपातजमेव जायते, तथापि-वातादिदोषोत्कटतया

वामन, अधिल्लग-जन्मान्ध, एकचक्षु-काना, विनिहतचक्षु-जन्म के बाद होने वाला अंधा, सपिसल्लक-सपिशाच-भूतादि आवेश वाला, अथवा सर्पिशल्यक-घसीते हुए चलने वाला हृदयरोगी, व्याधि-पीडित, इन सब को देखकर इनमें द्वेष तथा घृणा नहीं करनी चाहिये।

पूर्वोक्त पदों का अलग-अलग अर्थ इस प्रकार है-गडी-वातपित्त और सन्निपात-वातादि त्रिदोष मिश्रित विकार से उत्पन्न होने के कारण चार प्रकार के कंठ रोगवाला, कुष्ठी-कुष्ठ अठारह प्रकार का होता है, जिसमे सात प्रकार के महाकुष्ठ होते हैं और ग्यारह प्रकार के सामान्यकुष्ठ होते हैं। (१) अरुण २ दुम्बर ३ स्पर्शजिह्व ४ करकपाल ५ काकन ६ पौण्डरिक और ७ दद्रु । ये असाध्य होने से महाकुष्ठ माने गये हैं। सामान्य कुष्ठ ग्यारह प्रकारके ये है-१स्थूलामारुक्क २ महाकुष्ठ ३ एककुष्ठ४ चर्मदल ५ विसर्प ६ परिसर्प७ विचर्चिका ८ सि म ९ किटिभ १० पामा शतारुष्क ११ । यद्यपि सब ही कुष्ठ सन्निपात से ही उत्पन्न होते हैं तथापि वातादिक दोषों की उत्कटता से इसमे भेद माना गया

લૂલા, વામન, જન્માધ, કાણીયા જન્મ પછી આધળા બનેલા, સપિસલ્લક-સપિશાચ-ભૂતાદિ વળગાડવાળા, અથવા સપિશલ્યક-ઢસડાતા ચાલના હ્રદયરોગી, વ્યાધિપીડિત અને રોગ પીડિત એ બધાને જોઇને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ અથવા ઘૃણા કરવી જોઇએ નહી પૂર્વોક્ત પદોનો અલગ અલગ અર્થ આ પ્રમાણે છે—"ગડી"-વાત પિત્ત અને સન્નિપાત-વાતાદિ ત્રિદોષ મિશ્રિત વિકારથી ઉત્પન્ન થવાને કારણે ચાર પ્રકારના કંઠરોગવાળા, "કુષ્ઠી"- કુષ્ટ અઢાર પ્રકારના હોય છે, જેમા સાત પ્રકારના મહાકુષ્ટ હોય છે અને અગિયાર પ્રકારના સામાન્ય કુષ્ટ હોય છે (૧) અરુણ, (૨) દુમ્બર, ૩) સ્પર્શજિહ્વ, (૪) કર કપાલ, (૪) કાકન, (૬) પૌંડરીક અને (૭ દદ્ર એ સાતે અસાધ્ય હોવાથી મહાકુષ્ઠ ગણાય છે અગિયાર પ્રકારના સામાન્ય કુષ્ટ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્થૂલા-મારુક્ક, (૨) મહાકુષ્ટ,(૩) એક કુષ્ઠ(૪) ચર્મદલ, (૫) વિસર્પ (૬) પરીસર્પ (૭) વિચર્ચિકા, (૮) સિધ્મ(૯) કિટિભ (૧૦) પામા, (૧૧) શતારુષ્ક જો કે બધા જ કુષ્ટ સન્નિપાતથી જ ઉત્પન્ન થાય છે છતા પણ વાતાદિક દોષોની પ્રબળતાને

भेदभाग्भवतीति विज्ञेयम्। तथा–कुणिः=कुण्ट., अय हि गर्भाधानादि दोषाद् ह्रस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा भवति। तथा – उदरी=उदररोगवान्, उदररोगा अष्टप्रकारा तदुक्तम्—

पृथक् समस्तैरपिचानिलौघैः प्लीहोदरं वद्धगुदं तथैव।

आगन्तुकं वेसरमष्टमं तु जलोदरं चेति भवन्ति तानि " ॥ इति।

एतेषु जलोदरमसाध्यं शेषाणि तु साध्यानि। तथा–कच्छुल्ल'=कण्डूतिमान्, श्लीपदः=श्लीपदरोगयुक्तः, श्लीपदलक्षणमेवमुक्तम्–" प्रकुपिता वातपित्तश्लेष्माणोऽधोऽधः प्रपन्ना वक्षस्थलोरुजङ्घा–स्ववतिष्ठमाना' कालान्तरे पादमाश्रित्य शनैः शनैः शोथमुपजनयन्ति " तदेवश्लीपदमुच्यते। अन्यदप्युक्तम्–

है इन अठारह प्रकार के कुष्ठरोगवाला, कुणी–कुण्ठरोगी (२) यह रोग गर्भाधानादि के दोष से होता है। इसमें एक पैर छोटा हो जाता है या एक हाथ छोटा हो जाता है। उदररोगी–उदररोग आठ प्रकार का होता है, कहा भी है—

" पृथक् १ समस्तै २ रपि चानिलौघैः ३, प्लीहोदरं ४ बद्धगुद ५ तथैव। आगन्तुकं ६ वेसर ७–मष्टमं तु जलोदरं ८ चेति भवन्ति तानि ॥ १ ॥ "

पृथक् १, समस्त २, अनिलौघ ३ प्लीहोदर ४ बद्धगुद ५ आगन्तुक ६ वेसर ७ जलोदर ८ उदररोग के ये ८ प्रकार हैं। इनमें जलोदर रोग असाध्य है, बाकी सब साध्य हैं। कच्छुल्ल–खुजली रोगवाला, श्लीपदरोगी–इस रोग के लक्षण इस प्रकार कहे हैं—

" कुपि तावातपित्तश्लेष्माणोऽधोध प्रपन्ना वक्ष'स्थलोरुजङ्घा स्ववतिष्ठमाना कालान्तरे पादमाश्रित्य शनै शनःशोथमुपजनयन्ति ॥ "

કારણે તેમા ભેદ માનવામા આવ્યા છે આ રીતે અઢાર પ્રકારના કુષ્ટરોગી, કુણિ–કુષ્ઠરોગી–આ રોગ ગર્ભાધાનાદિ દોષથી થાય છે તે રોગમા એક હાથ કે એક પગ ટૂંકો થઈ જાય છે ઉદરરોગી-ઉદરરોગ આઠ પ્રકારના હોય છે કહ્યુ પણ છે કે–

" पृथक्१ समस्ते २ रपि चानिलौघैः ३ प्लीहोदर ४ बद्धगुद ५ तथैव।
आगन्तुक ६ वेसर७ मष्टम तु जलोदर ८ चेति भवन्ति तानि ॥१॥"

(૧) પૃથક્, (૨) સમસ્ત, (૩) અનિલૌઘ, (૪) પ્લીહોદર (૫) બદ્ધગુદ (૬) આગન્તુક, (૭) વેસર અને (૮) જલોદર, એ આઠ પ્રકારના ઉદરરોગ હોય છે તેમા જલોદર અસાધ્ય રોગ છે, બાકીના બધા સાધ્ય છે ", कच्छुल " દાદર, ખરજવુ, ખસ, વગેરે ખુજલીરોગો, શ્લીપદરોગી–(હાથીપગાનો રોગી) આ રોગના લક્ષણો નીચે પ્રમાણે કહેલ છે—

" कुपिता वातपित्तश्लेष्माणोऽधोध' प्रपन्ना वक्ष'स्थलोरुजङ्घास्ववतिष्ठमाना कालान्तरे पादमाश्रित्य शनै. शनै. शोथमुपजनयन्ति "

'पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्तुषु च शीतलाः ।
ये देशास्तेपु जायन्ते श्लीपदानि विशेषतः ॥ १ ॥'
पादयो र्हस्तयोर्वाऽपि जायते श्लीपद नृणाम् ।
कर्णौष्ठनासास्वपि च, क्वचिदिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥ इति ।

इद च 'फील पाँव' हाथी पगा ' इत्यादि नामभिर्लोके प्रसिद्धम् । तथा–कुब्जः=गड्डलः कुनडा' इति भाषाप्रसिद्धः । पङ्गुलः=पङ्गुः=गमनासमर्थः, वामन = खर्वः—ह्रस्वशरीर इत्यर्थः । एते कुब्जवामनादयो मातापितृशुक्रशोणितदोषेण भवन्ति । तदुक्तम्—

यह रोग प्रकुपित होकर जब वात पित्त और कफ नीचे नीचे शारीरिक भागों में पहुँच जाते है और वक्षस्थल, उरु, जघा, इनमें प्रवेश कर जाते हैं तब वे कालान्तर में पैर मे पहुँच कर धीरे २ उसमें शोथ–सूजन को उत्पन्न कर देते है इसी का नाम श्लीपद रोग है, इस रोग का नाम फिलपाव हाथीपगा आदि भी है । इसके और भी लक्षण कहे हैं—

" पुराणोदकभूयिष्ठा', सर्वर्तु च शीतलाः ।
येदेशास्तेपु जायन्ते, श्लीपदानि विशेषतः ॥ १ ॥
पादयो र्हस्तयो र्वाऽपि, जायतेश्लीपदन्नृणाम् ।
कर्णौष्ठनासास्वपि च, क्वचिदिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥

यह रोग उन देशो में विशेष कर होता है जिनदेशों में पुराना पानि अधिक रूप मे भरा रहता है तथा जो सर्व ऋतुओं में शीतल रहा करते है, कितनेक यह भी कहते है कि यह रोग हाथ, पैर, कान,

---

જ્યારે વાત, પિત્ત અને કફ પ્રકુપિત થઈને શરીરના નીચેના ભાગોમા પહોંચી જાય છે અને વક્ષસ્થળ, ઉરુ જઘા આદિમા પ્રવેશ કરે છે ત્યારે સમય જતા પગમા પહોચીને ધીમે ધીમે તેમા સોજો ઉત્પન્ન કરે છે તે રોગનુ નામ શ્લીપદરોગ છે આ રોગના બીજા નામો ફિલપગા હાથીપગા આદિ પણ છે તેના બીજા લક્ષણો પણ કહેલ છે—

" पुराणोदकभूयिष्ठाः, सर्वर्तुषु च शीतलाः
येदेशास्तेपु जायन्ते, श्लीपदानि विशेषतः ॥ १॥
पादयो र्हस्तयोर्वाऽपि जायते श्लीपद नृणाम् ।
कर्णौष्ठ नासास्वपि च क्वचिदिच्छन्ति तद्विदः ॥ १॥

જે દેશોમા પ્રાચીન પાણી વિશેષ પ્રમાણમા ભરાઈ રહે છે તે દેશોમા આ રોગ વધુ પ્રમાણમા થાય છે વળી જે પ્રદેશ બધી ઋતુઓમા શીતળ રહે છે ત્યા પણ આ રોગ વધારે પ્રમાણમા થાય છે કેટલાક એમ પણ કહે

गर्भे वातप्रकोपेण, दोहदे वाऽपमानिते।
भवेत्कुब्जः कुणिः पङ्गुर्मूको मन्मन एव च ॥ १ ॥ इति।

तथा—अन्धिल्लकः=जात्यन्धः, एकचक्षुः=काणः, एतद् दोषद्वयं च गर्भगतस्य जातस्य चापि भवति। गर्भगतो यथैतद्दोषद्वयभाग्भवति, तदेव विज्ञातव्यम्—यदा हि गर्भस्थजीवस्य नेत्रद्वयं तेजो न प्रतिपद्यते तदा स गर्भस्थो जात्यन्धो भवति। यदा चैकं नेत्रं प्रतिपद्यते नापरं, तदा स काणो भवति। तदेव

ओठ और नासिका मे भी होता है। कुब्ज पगु और वामन, ये माता पिता के शुक्र शोणित के दोष से उत्पन्न होते हैं, कहा भी है—

"गर्भे वातप्रकोपेण, दोहदे वाऽपमानिते।
भवेत्कुब्जःकुणि.पङ्गु मूंको मन्मन एव च ॥ १ ॥

अर्थात्–गर्भ मे वात के प्रकोप होने से तथा दोहद–गर्भिणी मनोरथ की तर्फ ध्यान नहीं देने से अर्थात् उसका अपमान करने से कुब्जक, कुणि–कुष्ठ–पङ्गु और लूले तथा तुतलाने वाले बालक उत्पन्न होते है। अधिल जन्मान्ध, काना ये दोनो प्रकार के व्यक्ति जब गर्भ अवस्था सपन्न होते हैं तब उस समय यदि दोनों नेत्र इनमें से किसी एक के तेज को प्राप्त नहीं कर पाते हैं तो वह गर्भ जन्मान्ध होकर उत्पन्न होता है–यदि एक ही नेत्र तेज को प्राप्त कर लेता है दूसरा नहीं कर पाता तो वह उस समय काना उत्पन्न होता है। वही तेज यदि रक्तानुगत हो जाता है तो शिशु रक्ताक्ष उत्पन्न होता है, पित्तानुगत होना है तो शिशु पिङ्गाक्ष होता है और यदि श्लेष्मानुगत होता

છે કે આ રોગ હાથ, પગ, કાન, હોઠ અને નાકમા પણ થાય છે કુબ્જ–પાગળાપણુ અને વામનતા માતાપિતાના શુક્ર તથા રક્તનાદોષથી થાય છે કહ્યુ પણ છે

" गर्भे वातप्रकोपेण, दोहदे वाऽपमानिते।
भवेत्कुब्ज कुणिः पङ्गुर्मूको मन्मथ एव च ॥ १॥ "

એટલે કે ગર્ભમા વાયુનો પ્રકોપ થવાથી તથા ગર્ભિણીનો દોહદ–મનોરથ પૂરો નહીં કરવાથી, તેના દોહદની અવગણના કરવાથી કૂબડો કુણિ–કુષ્ટ, લૂલો, મૂગો અથવા તોતડો બાળક જન્મે છે अधिल–જન્માંધ, કાણો, એ એ બન્ને પ્રકારના બાળકો જ્યારે ગર્ભમા હોય ત્યારે જો બન્ને આંખો તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે બાળક જન્મથી જ અધ પેદા થાય છે જો એક જ આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લે છે પણ બીજી આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે જન્મથી જ કાણો હોય છે એ જ તેજ જો રક્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક રક્તાક્ષ–લાલ નેત્રવાળુ થાય છે, પિત્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક પિંગાક્ષ પીળી આખવાળો જન્મે તે, અને જો શ્લેષ્માનુગત થાય તો તે શુકલાક્ષ પેદા

तेजो यदि रक्तानुगतं पित्तानुगतं श्लेष्मानुगतं च भवति, तदा जातकः क्रमेण रक्ताक्षः पिङ्गाक्षः शुक्लाक्षश्च भवति। तथा—'विनिहतः'=विनिहतचक्षुष्क इत्यर्थः, उत्पत्त्यनन्तरं यस्य नेत्रद्वयं नष्टं स विनिहत उच्यते। तथा 'सप्पिसल्लग' सपिशाचकः= पिशाचगृहीत इत्यर्थः। अथवा—सर्पिशल्यकः, इतिच्छाया। तत्र—सर्पी-सर्पतीति सर्पी, सर्पणशील इत्यर्थः। अयं हि पीठे समुपविश्य तत् जङ्घायोः कट्यां च दृढं बद्ध्वा हस्तयोः पादुके आदाय, तदाश्रयणेन सर्पति= सरति, अत एवायं सर्पीत्युच्यते। अयं किल गर्भदोषात्कर्मदोषाच्च भवति। शल्यकः=हृदयशल्यादि रोगवान्। उभयोः कर्मधारयः। तथा-व्याधिरोगपीडितः= व्याधिना-चिरस्थायिपीडया, रोगेण-सद्योघातिपीडया च पीडितो यः स तथोक्त एषां समाहारद्वन्द्वस्तत्तथोक्तम्, तथा-'विगयाणि य मयकलेवराणि' विकृतानि च मृतकलेवराणि तथा-'सकिमिणकुहियं च' सकृमिकुथितं च-सह कृमिभिः,

---

है तो वह शुक्लाक्ष उत्पन्न होता है। विनिहत-विनिहतचक्षुउत्पत्ति के बाद जिसके नेत्र फूट जाते हैं वह विनिहतचक्षुक कहलाता है ऐसे प्राणी सपिसल्लग-पिशाचगृहीत अथवा सर्पिशल्यक-सर्पी-पीठ पर बैठ कर जो उसे दोनों जघाओं से कटि पर मजबूती के साथ बांधकर और दोनों में दो काष्ठ आदि की पादुकाओं को लेकर उसके सहारे से सरकता है उसका नाम सर्पी है ऐसे सरकने वाले व्यक्ति को कि जो गर्भदोष से और अपने कर्म के दोष से-अशुभ कर्म के उदय से उत्पन्न होता है, ऐसा शल्यक-हृदय शल्यादि रोगवाला, व्याधिरोग पीडित-व्याधिरोग से पीडित प्राणी, अर्थात्-चिरस्थायी पीडारूप व्याधिसे तथा सद्योघाति रोगरूप पीडा से जो कष्ट पा रहा है ऐसे दुःखित जीव, इन सब को देख कर इनमें द्वेष तथा घृणा नहीं करनी चाहिये। (विगयाणिय मयकलेवराणि) विकृत हुए मृतक कलेवरों को, (सकिमिण

થાય છે વિનિહત-વિનિહતચક્ષુ-જન્મ પછી જેની આંખો ફૂટી જાય છે તે વિનિહતચક્ષુ કહેવાય છે સપિસલ્લગ-પિશાચગૃહિત અથવા સર્પિશલ્યક-સાર્પી-પીઠપર બેસીને અથવા બન્ને જાંઘને કટિ પર મજબૂત રીતે બાંધીને અને બન્ને હાથમાં બે લાકડા આદિની ઘોડી લઇને તેની મદદથી જે જમીનપર સરકે છે તેને સર્પિ કહે છે એ રીતે સરકનાર વ્યક્તિ કે જે ગર્ભદોષથી અશુભ કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાયછે, "શલ્યક"-હૃદયશલ્ય આદિ રોગવાળા, વ્યાધિ રોગપીડિતવ્યાધિ રોગથી પીડાતા પ્રાણી એટલે કે દીર્ઘકાળથી ચાલ્યા આવતા પીડારૂપ વ્યાધિથી તથા હમેશ રોગરૂપ પીડાથી પીડાતા દુખી જીવો એ બધાને જોઈને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ કે ઘૃણા કરવી જોઇએ નહી "विगयाणिय मयकलेवराणि" વિકૃત થયેલ મૃત શરી-

कुथितो दुर्गन्धयुक्तो यः स तथोक्तस्तं ' दव्वरासिं ' द्रव्यराशि-पुरीषादिद्रव्यसमूहं च दृष्ट्वा 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एवं प्रकारेषु 'अमणुन्नपावगेसु' अमनोज्ञपापकेषु, तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु च 'तेसु' तेषु अमनोज्ञपापकेषु समुपस्थितेषु ' समणेण ' श्रमणेन-साधुना ' न रुसियव्वं ' न रोष्टव्यम् , ' जाव ' यावत्पदात् ' न हीलितव्यम् , न निन्दितव्यम् , न खिंसितव्यम् , न छेत्तव्यम् , न भेत्तव्यम् न हन्तव्यम् , इति । षट्पदानि सग्राह्याणि । तथा-श्रमणेन , दुगुंछावत्तियावि ' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि ' न ' लब्भा ' लभ्या ' उप्पाएउ ' उत्पादयितुम् । एवम्=अ-

---

कुहिय च दव्वरासिं) कृमिसहित सडे हुए दुर्गंधित पदार्थ को और पुरीष आदि द्रव्य समूह को देख कर के इनमें तथा (अन्नेसु य एवमाइएसु) इनसे भिन्न और जो इसी तरह के (अमणुण्णपावएसु तेसु) अमनोज्ञ अशुभ पदार्थ समक्ष उपस्थित हो उनके ऊपर (समणेण) साधुको (न रुसियव्व) रोष नहीं करना चाहिये । यावत् पद से (न हीलियव्व) अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, उनकी (न निंदियव्व) निंदा नहो करना चाहिये, (न खिसियव्व) उनकी दूसरे के सामने निंदा नही करनी चाहिये । इसी तरह (न छिंदियव्व) अमनोज्ञरूप आकृति का छेदन नहीं करना चाहिये । (न भिंदियव्व) न भेदन करना चाहिये। (न वहेयव्व) न अनिष्ट रूपवाले व्यक्तिका वध करना चाहिये । इसी प्रकार से इन पदार्थों के ऊपर साधु को (न दुगुछा वत्तियावि लब्भा उप्पाएउ) जुगुप्सावृत्ति भी उत्पन्न करना उचित नहीं है । (एव) इस

શેને " सकिमिणकुहिय च दव्वरासिं " કૃમિસહિત સડતા દુર્ગંધ યુક્ત પદાર્થોને અને પુરીષ આદિ દ્રવ્ય સમૂહને જોઈ ને તેમા તથા " अन्नेसुय एवमाइएसु " એ ઉપરાંત એ જ પ્રકારના બીજા " अमणुण्णपावएसु तेसु " અમનોજ્ઞ, અશુભ પદાર્થ પાસે મોજૂદ હોય તેમના પર " समणेण " સાધુએ " न रुसियव्व " રોષ ન કરવો જોઈએ, " न हीलियव्व " તેની અવજ્ઞા ન કરવી જોઈએ, " न " निंदिव्य " તેમની નિંદા ન કરવી જોઈ એ, "न खिसियव्व " બીજાની આગળ નિંદા ન કરવી જોઈએ, એ જ પ્રમાણે " न छिंदियव्व " અમનોજ્ઞ દેખાવની વસ્તુનું છેદન કરાવવું નહી, " न भिंदियव्व ' ભેદન કરાવવું નહી, ' न वहे यव्व " અનિષ્ટ રૂપવાળી વ્યક્તિને વધ કરાવવો જોઈ એ નહી એ જ પ્રમાણે એ પદાર્થો પ્રત્યે સાધુએ " न दुगुछा--वत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ " જુગુપ્સા વૃત્તિ પણ રાખવી તે યોગ્ય નથી " एव " આ રીતે " चक्खुइंदिय

नेन प्रकारेण ' चक्खुइंदियभावणाभाविओ ' चक्षुरिन्द्रियभावनाभावितो ' भवइ ' भवति ' अंतरप्पा ' अन्तरात्मा=जीवः। ततश्च 'मणुण्णामणुण्णसुब्भिदुब्भिरागदोसे' मनोज्ञामनोज्ञसुरभिदुरभिरागद्वेषे, ' पणिहियप्पा ' प्रणिहितात्मा ' साहू ' साधुः ' मणवयणकायगुत्ते ' मनोवचनकायगुप्तः, ' संवुडे ' संवृतः 'पणिहिइंदिए' प्रणिहितेन्द्रियो ' धम्मं ' धर्मं ' चरेज्ज ' चरेत्। एषां पदानां व्याख्याऽस्यैव प्रथम भावनायां द्रष्टव्या॥ सू० ८ ॥

प्रकार से (चक्खु इंदिय भावणाभाविओ अंतरप्पा) जब चक्षु इन्द्रिय की भावना से भावित अंतरात्मा होता है तब वह (मणुण्णामणुण्ण-सुब्भिदुब्भिरागदोसे पणिहियप्पा) मनोज्ञरूप चक्षुइन्द्रिय के अशुभ विषयमें रागद्वेष से रहित होने से व्यवस्थित आत्मावाला (साहू) साधु(मणवयणकायगुत्ते) अपने मन, वचन और कायरूप योगोंको शुभ अशुभके व्यापार से सुरक्षित कर लेता है और (संवुडे) संवर से युक्त बन कर (पणिहिइंदिए) अपनी चक्षुइन्द्रिय को वशमें कर के (धम्मं) चारित्र रूप धर्म का (चरेज्ज) पालक बन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकारने इस सूत्रद्वारा परिग्रह विरमण व्रतकी द्वितीय भावना जो चक्षु इन्द्रिय संवर नामकी है वह कही है। इस भावनामें साधु को ऐसा विचार करना समझाया गया है कि वह इस प्रकार से अपनी चक्षुरिन्द्रिय की परिणति को ऐसी विचारधारा से सुदृढरूप में बांध कर रखे कि जिससे वह चक्षुरिन्द्रिय के विषयभूत मनोज्ञ रूपमें

भावणा भाविओ अन्तरप्पा " જ્યારે અંતરાત્મા ચક્ષુ ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થાય છે ત્યારે તે " मणुण्णामणुण्णसुब्भिदुब्भिरागदोसेपणिहियप्पा " મનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના શુભ વિષયમા અને અમનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના અશુભ વિષયમા રાગદ્વેષથી રહિત થવાથી વ્યવસ્થિત આત્માવાળો "साहू" સાધુ " मणवयणकायगुत्ते " પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ યોગોને શુભ અશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત બનાવી લે છે અને " संवुडे " સંવરથી યુક્ત બનીને " पणिहिइंदिए " પોતાની ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને કાબૂમા રાખીને " धम्मं " ચારિત્રરૂપ ધર્મ નો " चरेज्ज " પાલક બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની ચક્ષુઇન્દ્રિય સંવર નામની બીજી ભાવના બતાવી છે આ ભાવના દ્વારા સાધુને એ વિષય સમજાવવામા આવ્યો છે કે તે એવી પોતાની ચક્ષુઇન્દ્રિયની પ્રવૃત્તિને એવા પ્રકારની વિચાર ધારાથી બાંધી રાખે કે જેથી ચક્ષુઇન્દ્રિય વડે દૃષ્ટિગત થતા

तृतीयां भावनामाह—' तइय ' इत्यादि—

मूलम्—तइयं घाणिदिएण अग्घाइय गधाइ मणुन्नभद्दगाइं, किं ते ? जलयर- थलयर -सरस- पुप्फल--पाणभोयण-कुट्ठ--तगर--पत्त--चोय- दमणग--मरुय- एलारस -पक्कमासि -गोसीस- सरसचंदण--कप्पूरलवग -अगुरुकुकुमकक्कोल उसीर सेसचंदण सुगंधसारगजुत्तिवरधूववासे उउयपिडिमणिहारिमगंधिएसु अन्नेसु य एवमाइएसु गधेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेन सज्जियव्व जाव न सइं च मइ च तत्थ कुज्जा, पुणरवि घाणिंदिएण अग्घाइय गंधाणि अमणुन्नपावगाइं, किं ते? अहिमड--अस्समड--हत्थिमड--गोमड--विग--सुणग सियाल--मणुय -मज्जार--सीह--दीविय- मय -कुहिय--विणट्ठ-

---

तथा अमनोज्ञरूपमें रागद्वेष न कर सके। मनोज्ञरूप समक्ष उपस्थित हो तो उसे देख कर उसमे रागादि परिणतिसे उसे बंध नहीं जाना चाहिये और अशुभ रूप हो तो उसमे द्वेष परिणति से अपने आपको दु'खित नही करना चाहिये। दोनों प्रकारकी विषय सन्निधानता में उसको सम-भावी रहना चाहिये। जो ऐसा नहीं करताहै वह महान् अनर्थका भागी बनता है। इस प्रकार चक्षुरिन्द्रिय की भावना से भावित हुआ वह साधु अपने त्रियोगों को शुभाशुभ रूप व्यापार से सुरक्षित रखता हुआ चक्षु इन्द्रिय को वशमें कर लेता है और चारित्ररूप धर्मका पालक बन कर अपने परिग्रह विरमणरूप व्रतको सुस्थिर बना लेता है ॥ सू०८ ॥

મનોજ્ઞ તથા અમનોજ્ઞ રૂપમા તેને રાગદ્વેષ ન થાય જો તેની સમક્ષ મનોજ્ઞ પદાર્થ હાજર થાય તો તેમનામા રાગાદિ પરિણતિથી બંધાવુ જોઇએ નહી અને જો અશુભ રૂપ હોય તો તેના પ્રત્યે દ્વેષ વૃત્તિ રાખવીને પોતાની જાતને દુ ખી કરવી જોઈ એ નહી બન્ને પ્રકારના વિષયો સમક્ષ તેને તો સમભાવ યુકત રહેવુ જોઇએ જે તે પ્રમાણે કરતો નથી તે મહા અનર્થને પાત્ર થાય છે આ પ્રમાણે ચક્ષુન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિતબનેલ તે સાધુ પોતાના ત્રણે યોગને શુભાશુભ પ્રવૃત્તિઓથી સુરક્ષિત રાખીને ચક્ષુ ઇન્દ્રિય પર કાબૂ જમાવે છે અનેચારિત્રરૂપ ધર્મનુ પાલન કરીને પોતાના પરિગ્રહ વિરમણવ્રતને સુસ્થિર બનાવે છે ॥સૂ.૮॥

किमिण बहुदुरभिगंधाइं, अन्नेसु य एवमाइएसु गंधेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्व जाव पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्म ॥ सू० ९ ॥

टीका—'तइय' तृतीया घ्राणेन्द्रियसंवरणाभिधेयां भावनामाह— 'घाणिंदिएण' घ्राणेन्द्रियेण 'मणुन्नभद्दगाइ' मनोज्ञ भद्रकान् 'गंधाइ' गन्धान् 'अग्घाइय' अघ्राय 'किंते' कान् तान्=कथम्भूताँस्तान् गन्धान्? इत्याह– 'जलयर–थलयर–सरस–पुप्फफलभोयण–कुट्ठ–तगर–पत्त–चोय दमणग–मरुय –एलारस पक्कमसि – गोसीस–सरस–चदण–कप्पूर–लवग– अगर–कुंकुमक्कोल्ल– उसीर–सेस–चदण–सुगंधसारग–जुत्तिवरधूववासे' जलचर–स्थलचर–सरस–पुष्प-फल–पानभोजन–कुष्ठ–तगरपत्रत्वचा दमनक–मरुकैलारस–पक्कमांसी–गोशीर्ष–

अब सूत्रकार परिग्रह विरमण व्रत की तीसरी भावना को समझाते हैं—'तइय' इत्यादि।

टीकार्थ–(तइय) इस व्रतकी तीसरी भावनाका नाम घ्राणेन्द्रिय संवरण है। इस भावनावाले साधु को घ्राणेन्द्रियके मनोज्ञ भद्रक गंध को सूंघ करके राग नहीं करना चाहिये और अमनोज्ञ पापक अशुभगंधो को सुघकर द्वेष नहीं करना चाहिये। इस सूत्रमें इसी विषय को सूत्रकार विशेषरूप से स्पष्ट करते हैं (किं ते) वह मनोज्ञ भद्रक गध कौन है इस प्रकार की आशंका का उत्तर देते हुए सूत्रकार कहते है–(जलचर–थलचर–सरस–पुप्फफल–पाणभोयण–कुट्ठ–तगर–पत्त–चोय – दमणक–मरुय–एलारस–पक्कवमसिगोसीस–सरसचदण – कप्पूर–लवग – अगुरु कुंकुम–कक्कोलल–उसीर–सेसचदण–सुगध–सारग–जुत्तिवर–धूववासे)

હવે સૂત્રકાર પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની ત્રીજી ભાવના સમજાવે છે—"तइय" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—"तइय" આ વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનુ નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય સવરણ છે આ ભાવનાવાળા સાધુએ ઘ્રાણેન્દ્રિયને માટે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગધને સૂંઘીને તેમા રાગ કરવો જોઈએ નહી અને અમનોજ્ઞ પાપક અશુભ ગધોને સૂંઘીને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં એ જ વિષયનુ સૂત્રકાર વિસ્તારથી સ્પષ્ટીકરણ કરે છે "किं ते" તે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગધ શેની શેની હોય છે તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે—"जलयर-थलयर-सरस–पुप्फफल–पाणभोयण–कुट्ठ–तगर–पत्त–चोय–दमणक–मरुय–एलारसपक्कमसि–गोसीस–सरसचदण–कप्पूर–लवग–अगुरु–कुंकुम–ककोल्ल–उसीर–सेसचदण–सुगध सारग जुत्तीवर

सरमचन्दन-कर्पूर-लवङ्गागरुकुङ्कुमकक्कोलोशीरश्वेतचन्दनसुगन्धसारङ्गयुक्तिवरधूप-वासान्-तत्र-जलचराणि=जले समुत्पन्नानि पुष्पादीनि, स्थलचराणि=स्थले समुत्पन्नानि सुगन्धिपुष्पादीनि, सरसानि-रसयुक्तानि पुष्पफलपानभोजनानि, कुष्ठ=सुगन्धिद्रव्यविशेषः, तगरः, धूपविशेषः, पत्रम्=तमालपत्रम् , 'चोय' त्वचा=सुगन्धिवृक्षत्वचा, दमनकः=पुष्पजातिविशेषः, मरुकः='मरुआ' इति भाषाप्रसिद्धो वनस्पतिविशेषः, एलारसः=एलायाः 'इलायची' इति प्रसिद्धाया रसः, 'पिक्कमसी' पक्वमासी-परिपक्वगन्धद्रव्यविशेषः, गोशीर्षम्=एतन्नामक चन्दनम्=सरसचन्दनम् =श्रीखण्डचन्दनम्, कर्पूर -प्रसिद्धः, लवङ्गानि-प्रसिद्धानि, अगुरु=धूपविशेषः, कुङ्कुमम्='केसर' इति प्रसिद्धम् , कक्कोल=फलविशेषः, उशीरम्=वीरणमूल 'खश' इतिप्रसिद्धम् , श्वेतचन्दन प्रसिद्धम् , सुगन्धसारङ्गयुक्तिवरधूपवासः=सुगन्धानां=शोभनगन्धवतां सारङ्गाणां=कमलपत्राणां युक्तिर्योजनं यत्रैतादृशो यो वरधूपवासः= धूपद्रव्यविशेषः, एतेपामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तांस्तथोक्तानाघ्राय 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'उउयपिंडिमणिहारिमगंधिएसु' ऋतुजपिण्डिमनिर्हारिमगन्धिकेषु=

जलचर-जल मे उत्पन्न हुए सुगंधित पुष्पो की, स्थलचर-स्थल में उत्पन्न हुए खुशबूदार फुलों की, सरस-रस युक्त पुष्प, फल, पान, भोजनों की, कुष्ठ-सुगंधित द्रव्य की, तगर-धूपविशेष की, पत्र-तमालपत्र की, चोय-सुगधित वृक्ष की छाल की, दमनक-पुष्पजाति विशेष की, मरुक-मरुआ की, इलायची के रस की, पक्वमसी-परिपक्वगधद्रव्य विशेष की, गोशीर्ष चदन की, श्रीखडचदन की, कपूर की, लवग-लोगो की, अगुरुधूप की, कुकुम-केशर की, कक्कोल नामक फलविशेष की, उशीर-खश की, श्वेतचदन की, तथा जिसमें शोभन गधवाले कमल पत्रों का योजन-समिश्रण-हुआ हो ऐसे उत्तम धूपविशेष की, सुगध को सूघ करके, तथा (उउयपिंडिमणिहारिमगधिएसु) ऐसी सुगन्ध से युक्त द्रव्यों के

धूववासे " જલચર-જળમા ઉત્પન્ન થયેલા સુગધિત પુષ્પોની, સ્થળચર-જમીન પર ઉત્પન્ન થયેલા સુગધિત ફૂલોની, સરસ-રસદાર ફુલ, ફળ, પાન, ભોજનોની કુષ્ઠ-સુગધિત દ્રવ્યની, તગર-એક જાતના ધૂપની, પત્ર-તમાલપત્રની, ચોય-સુગધિત વૃક્ષની છાલની, દમનક-એક જાતના ફૂલની, મરુક-ડમરાની, એલાય-ચીના રસની, પકવમસી-એક જાતનુ સુગધિ દ્રવ્યના, ગોશીર્ષ ચદનની, શ્રી ખડ ચદનની, કપૂરની, લવીગની, અગુરુ ધૂપની, કુકુમ-કેશરની, કકોલ નામના એક જાતના ફૂલની, ઉશીર-સુગધિવાળાની શ્વેતચદનની, તથા જેમા સુદર ગધવાળા કમળ પત્રોનુ મિશ્રણ થયુ હોય એવા ઉત્તમ પ્રકારના ધૂપની સુગધ સૂઘીને તથા " उउय पिंडिमणिहारिमगंधिएसु " જે દ્રવ્યોમા ઋતુને

ऋतुजः=कालोचितः पिण्डिमः=पिण्डिभूतो=बहुलो निर्हारिमो दूरतरप्रदेशगामी यो गन्धः, स विद्यते येषु तेषु द्रव्येषु, तथा–' अण्णेसु य एवमाइएसु गन्धेसु 'अन्येषु चैवमादिकेषु गन्धेषु, कथम्भूतेषु ? इत्याह ' मणुण्णभद्दएसु' मनोज्ञभद्रकेषु 'तेसु' तेषु गन्धेषु ' न सज्जियव्व ' न सक्तव्यम् 'जाव ' यावत्–यावत्करणात्–न रक्तव्यम्, न गर्द्धितव्यम्, न मोहितव्यम् , न विनिघातआपत्तव्यः, न लोब्धम् , न तोष्टव्यम् , न हसितव्यम्, इतिसंग्राह्यम् । तथा–श्रमणः ' तत्थ ' तत्र गन्धविषये 'सइ च मइ च' स्मृतिं च मतिं च 'न कुज्जा' न कुर्यात् । ' पुणरवि ' पुनरप्युच्यते–' घाणिंदिएण ' घ्राणेन्द्रियेण ' अमणुण्णपावगाइ ' अमनोज्ञपापकान् ,

कि जिनमें सुगन्ध ऋतु के अनुकूल पिण्डीभूत होकर रह रही हो और दूर प्रदेशतक जिन की वह सुगंध फैल रही हो उपस्थित होने पर उन में तथा (अण्णेसु एवमाइएसु मणुगभद्दएसु) इन से भिन्न इसी प्रकार के और भी जो मनोज्ञ भद्रक गधयुक्त पदार्थ हों उनके समक्ष मे आने पर (समणेण) साधु को उनकी (तेसु) उन मनोज्ञ भद्रक गंधो मे (न सज्जियव्व जाव न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) आसक्त नही होना चाहिये–यावत् उनमें स्मृति को और अपनी मति को नही लगाना चाहिये । यहा यावत् शब्द से " न रज्जियव्व न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न तुसियव्व न हसियव्व " इन पदों का सग्रह किया गया है । इनका अर्थ पहले कर दिया गया है वहा से समझ लेना चाहिये ।

इसी तरह अमनोज्ञ पाप गध में रोष आदि न करना चाहिये इसी बात को कहते हैं–(पुणरवि) इसी तरह से (घाणिंदिएण) घ्राणेन्द्रिय

અનુકૂળ સુગધ ભરેલી હોય અને તેમની તે સુગધ દૂર દૂરના પ્રદેશ સુધી ફેલાતી હોય, એવા સુગધિત દ્રવ્યો મોજૂદ હોય તો તેમા તથા " अण्णेसु एवमाइएसु मणुण्णभद्दएसु " ઉપરાંત તેમના જેવા જ મનોજ્ઞ ભદ્રક ગધવાળા જે પદાર્થો હોય તે પાસે હોય તો પણ " समणेण " સાધુએ તેમની " तेसु " તે તે મનોજ્ઞ ગધોમા " न सज्जियव्व जाव न सइ च मइ च तत्थकुज्जा " આસક્ત થવુ જોઈએ નહી ત્યાથી શરૂ કરીને તેને યાદ કરવી નહી કે તેનો વિચાર પણ કરવો નહી ત્યા સુધી સમજી લેવાનુ છે અહી यावत् શબ્દથી " न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिवाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न तुसियव्व, न हसियव्व " એ પદોનો અર્થ ગ્રહણ કરવાનો છે તેમના અર્થ આગળ આવી ગયા છે તો ત્યાથી સમજી લેવા

એ જ પ્રમાણે અમનોજ્ઞ પાપક ગધ પ્રત્યે રોષ આદિ કરવા જોઈએ નહીં એ વાત સૂત્રકાર કહે છે–" पुणरवि " આ રીતે ' घाणिदिएण " ઘ્રાણે

गुप्तः संवृतः, ' इत्येतेषा संग्रहः, तथा-' पणिहिइंदिए' प्रणिहितपञ्चेन्द्रियः-प्रणिहितानि=वशीकृतानि इन्द्रियाणि येन स तथोक्तः सन् ' धम्म ' धर्म ' चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ९ ॥

रूप घ्राणेन्द्रिय के शुभ और अमनोज्ञ के अशुभ विषय में रागद्वेष करने से रहित हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति से युक्त बना हुआ साधु अपने मन वचन और कायरूप योगों को शुभ अशुभ व्यापार से सुरक्षित कर लेता है और घ्राणेन्द्रिय के शुभाशुभ विषय में शुभाशुभ-परिणति जन्य कर्मबंधन की निवृत्तिरूप संवर से युक्त हो जाता है और (पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्म) वशीकृत इंद्रियों वाला होकर चारित्ररूप धर्म का पालक बन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा परिग्रह-विरमण व्रत की तीसरी भावना का उल्लेख किया है। इस भावनाका नाम घ्राणेन्द्रिय संवरण है। इसमें साधु अपनी घ्राणेन्द्रियको सुगंध और दुर्गन्धके संबन्ध होने पर पक्षपातिनी नहीं बनता है। यदि वह ऐसा करता है तो महान् अनर्थ का पात्र होता है। उसे नवीन कर्मों का बंधक माना जाता है। सुगंध और दुर्गन्ध के विषयभूत कितनेक पदार्थों को सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा समझाया है। अतः चरित्रधर्म को पूर्णरूप से पालन करने के लिये साधु का कर्त्तव्य है कि वह इस प्रकार की जब२ स्थिति उसके समक्ष हो तो वह समभावी बना रहे ॥ सू० ९ ॥

बना शुभ अने अमनोज्ञरूप अशुभ विषयोमा राग अने द्वेषथी रहित थई जाय छे आ प्रकारनी स्थितिथी युक्त थयेल साधु पोताना मन, वचन अने कायरूप योगोने शुभ अशुभ व्यापारथी सुरक्षित करी नाखे छे, अने घ्राणेन्द्रियना शुभाशुभ विषयमा शुभाशुभ परिणतिजन्य कर्मबंधननी निवृत्तिरूप संवरथी युक्त थई जाय छे अने " पणिहिंइंदिए चरेज्ज धम्म " संयमी ईन्द्रियवाळो थईने चारित्ररूप धर्मनु पालन करनार बने छे

भावार्थ—सूत्रकारे आ सूत्रद्वारा परिग्रह विरमणव्रतनी त्रीजी भावनानु स्पष्टीकरण कर्युं छे ते भावनानु नाम घ्राणेन्द्रिय संवरण छे तेमा ए बताव्यु छे के सुगंध अने दुर्गंधनो संबंध थता साधु पोतानी घ्राणेन्द्रियने पक्षपाती बनावतो नथी जो ते एवु करे तो महान अनर्थने पात्र थाय छे, तेने नवीन कर्मनो बांधनार मानवामा आवे छे सुगंध अने दुर्गंधयुक्त केटलाक पदार्थो सूत्रकारे आ सूत्रमा दर्शाव्या छे तेथी चारित्रधर्मनु संपूर्ण रीते पालन करवाने माटे साधुनु कर्तव्य छे के तेणे घ्राणेन्द्रियना विषयभूत सुगंध तथा दुर्गंधयुक्त पदार्थो प्रत्ये समभाव राखवो जोईए ॥ सू०९ ॥

चतुर्थी भावनामाह—'चउत्थ' इत्यादि—

मूलम्—चउत्थं जिब्भिदिएण साइय रसाणिउ मणुण्ण भद्दगाइं, किं ते? उग्गाहिम विविहपाणभोयण गुलकय खंडकय तेल्लघयकयभक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु, बहुप्पकारमज्जियनिट्ठाणगदालियंब सेहंब दुद्धदहि--सरयमज्ज-वरवारुणी सीहुकाविसायण सागट्ठारसबहुप्पगारेसु य भोयणेसु य मणुण्णवण्णगन्धरसफासबहुदव्वसंभिएसु अण्णेसु य एवमाइएसु रसेसु मणुण्णभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा। पुणरवि जिब्भिदिएण साइयरसाइं अमणुण्णपावगाइ, किं ते? अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पमाणभोयणाइ दोसी वावण्णकुहिय पूइय अमणुण्णविणट्ठप्पसूय बहुदुब्भिगंधियाइ तित्तकडुय-कसाय अंबिलरसलिंदनीरसाइ अण्णेसु य एवमाइएसु रसेसु अमणुण्णपावएसु न तेसु समणेणं रुसियव्वं जाव चरेज्ज धम्मं ॥ सू०१०॥

टीका—'चउत्थ' चतुर्थी जिह्वेन्द्रिय संवरणलक्षणा भावनामाह–'जिब्भिदिएण' जिह्वेन्द्रियेण 'मणुण्णभद्दगाइ' मनोज्ञभद्रकान् 'रसाणि उ' रसाँस्तु

अब सूत्रकार इस व्रत की चौथी भावना को कहते हैं—
'चउत्थ' इत्यादि।

टीकार्थ–(चउत्थ) चौथी भावना का नाम जिह्वेन्द्रियसंवरण है। इस भावनाके वशवर्ती हुए साधुको जिह्वा इन्द्रियके मनोज्ञभद्रक विषयमे और अमनोज्ञ अभद्रक विषय में रागद्वेष नहीं करना चाहिये–प्रत्युत समभाव

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ચોથી ભાવના બતાવે છે—"चउत्थ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"चउत्थ" ચોથી ભાવનાનુ નામ જિહ્વેન્દ્રિય સંવરણ છે આ ભાવનાનુ પાલન કરનાર સાધુએ જિહ્વા ઇન્દ્રિયના મનોજ્ઞ ભદ્રક વિષયોમા અને અમનોજ્ઞ અભદ્રક વિષયોમા રાગ દ્વેષ રાખવો જોઈએ નહી, પણ સમ

=वक्ष्यमाणपदार्थेषु स्थितान् 'साइय' स्वादयित्वा=अस्वितगृहस्थानस्थायामास्वाद्य, 'किं ते' कॉस्तान्=केषु केषु पदार्थेषु स्थितांस्तान् ? इत्याह–'उग्गहिमविविह-पाणभोयणगुलकयखंडकय तेलघयकयभक्खेसु' अवगाहिमविविधपानभोजनगुडकृतखण्डकृततैलघृतकृतभक्ष्येषु–तत्र अवगाहिमानि अवगाहनेन=घृततैलादिषु बोलनेन पाकतो निष्पन्नानि यानि तानि पक्वान्नानि खण्डखाद्यादीनि 'अवगाहिमानि' कथ्यन्ते, तथा–विविधानि=बहुविधानि पानभोजनानि, तथा–गुडकृतानि=गुडेन निष्पादितानि, खण्डकृतानि=खण्डेन निष्पादितानि, तैलघृतानि=तैलेन घृतेन च

ही धारण करना चाहिये, इसी विषय को सूत्रकार विशेषरूप से इस सूत्र द्वारा समझाते हैं–(जिब्भिदिएण) साधु जिह्वा इन्द्रिय से (मणुण्ण भद्दगाइ रसाणिउ) मनोज्ञ–भद्रक रसको (साइय) अस्वादित करके उसमें राग आदि न करे इस प्रकार का यहा सबध लगा लेना चाहिये, (किं ते) यह मनोज्ञ रस किन २ पदार्थो के सहारे रहता है, इस प्रकार की आशका का उत्तर देने के निमित्त सूत्रकार यहां उन कितनेक पदार्थो के नाम निर्दिष्ट करते हैं (उग्गाहिमविविहपाणभोयणगुलकय खडकयतेल्लधयकयभक्खेसु) घृत, तैल आदिका जिनमें पहिले भोंन (तला जाता) दिया जाता है और फिर बादमें जो उनमें ही चुराये जाकर पकाये जाते है ऐसे खाजा आदि पक्वान्न अवगाहिम कहलाते हैं तथा अनेक प्रकारका जो पान भोजन होताहै वह विविध पान भोजन कहलाता है गुड मिला कर बनाया गया ' एव खाड मिश्रित कर बनाया गया विशेष भोजन गुड़कृत भोजन और खडकृत भोजन कहलाता है। तैल

ભાવ જ રાખવો જોઈએ એ જ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારપૂર્વક આ સૂત્રદ્વારા સમજાવે છે " जिब्भिदिएण " સાધુએ જીભથી " मणुण्णभद्दगाइ रसाणिउ " મનોજ્ઞ-ભદ્રક રસનો " साइय " આસ્વાદ કરીને તેમા રાગ આદિ કરવા જોઇએ નહી " किं ते " એ મનોજ્ઞ રસ કયા કયા પદાર્થોમા હોય છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર અહીં એવા કેટલાક પદાર્થોના નામનો ઉલ્લેખ કરે છે " उग्गाहिम–विविहपाण–भोयण–गुलकय–खडकय–तेल्ल–घयकय–भक्खेसु" ઘી, તેલ આદિનુ જેમા પહેલા જેમા મોણ દેવાય છે અને પછી તેમા જ તળીને પક વવામા આવે છે એવા ખાજા આદિ પકવાનને અવગાહિમ કહે છે તથા અનેક પ્રકારના જે પાન (પી શકાય તેના) ભોજન હોય છે તેમને વિવિધ પાન ભોજન કહે છે, ગોળ નાખીને બનાવેલા ભોજનને ગુડકૃત અને ખાડ નાખીને બનાવેલા ભોજનને ખાડકૃત ભોજન કહે છે તેલ અને ઘીમા બનાવેલ લાડુ

निष्पादितानि यानि भक्ष्याणि=मोदकादीनि तानि, एषां द्वन्द्वस्तेषु तथोक्तेषु तथा 'बहुविहेसु' बहुविधेषु-विविधप्रकारेषु 'लवणरससजुत्तेसु' लवणरससंयुक्तेषु भक्ष्येषु= शाकवटकादिषु तथा-' बहुप्पगारमज्जिय-निट्ठाणगदालियंबसेहंबदुद्धदहि सरय-मज्जवरवारुणी सीहुकाविसायणसागट्ठारसबहुप्पगारेसु' बहुप्रकारमज्जिकानिष्ठानक दालिकाम्लसैन्धाम्लदुग्धदधिसरकमद्यवरवारुणी सीधुकापिशायनशाकाष्टादशबहुप्रकारेषु-तत्र-एतदास्वादन गृहस्थावस्थासु बोध्यम्, संयमावस्थासु सर्वथा तद्वर्जनात्, बहुप्रकारा=बहुविधा, मार्जिता=रसाला=दधिशर्करादिनिष्पादितसुगन्धद्रव्यवासित खाद्यविशेष, श्रीखण्डेतिभाषाप्रसिद्ध', निष्ठानक=प्रकृष्टमूल्यनिष्पादितो भक्ष्यविशेषः तदुक्तम्- 'निट्ठाणति जा सयसहस्स' इति, अय भावः-यल्लक्षमुद्राभिर्निष्पाद्यते तद् भक्ष्यविशेषो निष्ठानमुच्यते। यद्वा-भक्ताधन्नोपसेचनेन संपादिते दध्यादिव्यञ्जने 'करना' इतिभाषाप्रसिद्धे, तथा दालिकाम्लम्=मरीचराजिकादि संस्कृतोद्विदलनि-

और घृतमें बनायागया मोदकादि भोजनीय पदार्थ तैलकृत और घृतकृत भोजन कहलाता है। इन खाद्य पदार्थों में तथा और भी (बहुविहेसु) अनेक प्रकारके (लवणरससजुत्तेसु) लवणरसमिश्रित शाक, वड़ा आदि खाद्यपदार्थ विशेष है उनमें तथा (बहुप्पगार-मज्जिय-निट्ठाणग -दालियव-सेहंव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-का विसायण-सागट्ठारस बहुप्पगारेसु भोयणेसु य) पहिले गृहस्थावस्था में उपयोगमें लाये गये बहुविध भोजनीयपदार्थ जैसा मार्जिता रसाला-दधि शर्करा आदिसे निष्पादित तथा सुगंधित द्रव्यसे वासित खाद्यविशेष कि जिसे श्रीखंड कहते है, उनमे निष्ठानक-एक लाख रुपये लगा कर निष्पादित किये गये भक्ष्य विशेषमें अथवा मेहरी-रावडी मे, दालिकाम्लमें-मरीच राई में संस्कृत हुए तथा द्विदल चना आदि के आटे-वेसन आदिसे

આદિ ખાદ્ય પદાર્થને તૈલકૃત અને ઘૃતકૃત ભોજન કહે છે એ ખાદ્ય પદાર્થોમા તથા બીજા પણ જે " बहुविहेसु " અનેક પ્રકારના " लवणरससजुत्तेसु " લવણરસ મિશ્રિત શાક, વડા આદિ ખાદ્ય પદાર્થો છે તેમા તથા " बहुप्पगार -मज्जिय-निट्ठाणग-दालियव-सेहंव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायण-सागट्ठारसबहुप्पगारेसु भोयणेसु य " પહેલા ગૃહસ્થાવસ્થામા ઉપયોગમા લીધેલ અનેક પ્રકારના ખાદ્યો જેવા કે દહી, ખાડ આદિમાથી તૈયાર કરેલ તથા સુગંધિત દ્રવ્યથીયુક્ત એક ખાસ ભોજન જેને શિખંડ કહે છે તેમા निष्ठानक-એક લાખ રૂપીયા ખરચીને તૈયાર કરાવેલ ખાસ ભોજનમા અથવા मेहरी-દૂધપાકમા, દાલિકામ્લમા-મરચા, રાઈ, મેથી, જીરૂ આદિનો વઘાર કરેલ તથા ચણા આદિના

ष्पादितोव्यञ्जनविशेषः 'कढ' इतिभाषाप्रसिद्धो, सेधाम्लम्=खाद्यविशेषः, पक्व सद् यदम्लेन संस्क्रियते तत्खाद्य सेधाम्लमुच्यते । दुग्धदधि च प्रसिद्धम्, सरकः=गुड धातकीपुष्पादिना सिद्धः 'सरका' इति भाषाप्रसिद्धाः, मद्य-पैष्ट गोधूमादिचूर्ण-निष्पन्नम्, वरवारुणी=श्रेष्ठमदिरा, सीधुः=आसवः-इक्ष्वादिजनितमद्यम्, कापिशायनम्=कापिशी नाम नगरी तस्या जात द्राक्षानिर्मित विशिष्टमद्यम्, एतान्यपि मद्यानि गृहस्थावस्थायांसमास्वादितानि न तु संयमावस्थायामिति बोध्यम्, तथा शाका अष्टादश-अष्टादशसंख्यकाः शाका, एषा बहुव्रीहिसमासे तानि तथोक्तानि, तानि च बहुप्रकाराणीतिकर्मधारयः, तेपु तथोक्तेपु 'मणुन्नवन्नगंधरसफासबहुदव्वसभिएसु' मनोज्ञवर्णगन्धरसस्पर्शबहुद्रव्यसभृतेपु=मनोहरवर्णगन्धरसस्पर्शवद् बहुविधद्रव्यसस्कृतेपु 'भोयणेसु' भोजनेपु च स्थितान् रसान् गृहस्थावस्था

बनाये गये " कढी " रूप व्यजनमे, सेंधाम्लमें पका कर के जो खटाई से सस्कृत किया गया हो, ऐसे खाद्यविशेष में, दुग्ध, दधिमें गुड, धातकी पुष्प-महुआ-इन दोनों के मेल से बनाये गये सरका में, गोधूम-गेहूंके आटेसे निष्पन्न किये गये मद्य-पैष्ट मद्य में, वरवारुणी-उत्तम मदिरा मे मुनि अवस्था मे नहीं, किन्तु गृहस्थावस्थामें उपयोग में लाई गई श्रेष्ठ मदिरा वराण्डी मे, सीधु-आसव इक्षु आदिके रससे बनाये गये मद्यमें; कापिशायन-कापिशी नामकी नगरी मे द्राक्षाओ से बनाये विशिष्ट मद्यमे तथा अठारह प्रकार के शाकों में, इत्यादि अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थो मे तथा (मणुन्नवन्नगंधरसफासबहुदव्वसंभिएसु भोयणेसु य) मनोज्ञ वर्ण गध, रस और स्पर्शवाले अनेकविध द्रव्यों से निष्पन्न हुए भोजनो मे स्थित रसो को गृहस्थावस्थामें आस्वादित करके उनमे, तथा

લોટમાથી બનાવેલ ' કઢી ' નામના વ્યજનમા, સેધામ્લમા-પકાવીને ખટાશ ઉમેરવામા આવી હોય એવા ખાદ્યોમા, દૂધ, દહીમા ગોળ, ધાતકી પુષ્પ-મહુડા એ બન્નેના મિશ્રણથી બનાવેલ સરકામા, ગોધૂમ-ઘઉ ના લોટમાથી તૈયાર કરેલ મદ્ય-પૈષ્ટમદ્યમા, વરવારુણી ઉત્તમ મદિરામા, મુનિ અવસ્થામા નહી પણ ગૃહસ્થાવસ્થામા ઉપયોગમા લીધેલ શ્રેષ્ઠ મદિરા-વરાડીમા, સીધુ-આસવ-શેરડી આદિના રસમાથી બનાવેલ મદિરામા, કાપિશાયન-કાપિશી નામની નગરીમા દ્રાક્ષમાથી બનાવેલ એક વિશિષ્ટ મદ્યમા, તથા અઢાર પ્રકારના શાકમા ઈત્યાદિ અનેક પ્રકારના ખાદ્ય પદાર્થોમા તથા "मणुन्नवन्नगधरसफासबहुदव्व संभिएसु भोयणेसु य" મનોહર વર્ણ, ગધ, રસ અને સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના દ્રવ્યોમાથી તૈયાર કરાવેલ ભોજનોમા રહેલ રસોનો ગૃહસ્થાવસ્થામા સ્વાદ

यामास्वाद्य तेषु तथा—' अन्नेसु य ' अन्येषु च = एतद्भिन्नेषु ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु = पूर्वोक्तसदृशेषु—' मणुण्णभद्दएसु ' मनोज्ञभद्रकेषु रसेषु कथम्भूतेषु रसेषु ? तेषु=ये रसा अविरतगृहस्थावस्थायामास्वादितास्तेषु ' समणेण ' श्रमणेन=श्रमणावस्थास्थितेन मुनिना 'न सज्जियव्वं' न सक्तव्यम् 'जाव' यावत्= यावत्करणात्–न रक्तव्यम्, न गर्द्धितव्यम्, न मोहितव्यम्, न विनिघात आपत्तव्यः, न लोब्धव्यम्, न तोष्टव्यम्, न हसितव्यम्, एषामर्थ प्रथमभावनायामुक्तः। न च श्रमणः ' तत्थ ' तत्र–गृहस्थावस्थोपभुक्तरसेषु ' सइं च ' स्मृतिं च=स्मरणमपि, ' मइं च ' मतिं च=श्रमणावस्थाया तदुपभोगबुद्धिमपि 'कुज्जा ' कुर्यात्। ' पुणरवि ' पुनरप्युच्यते–' जिब्भिदिएण ' जिह्वेन्द्रियेण ' अमणुन्नपा

(अन्नेसु एवमाइएसु मणुन्नभद्दएसु) दूसरे और इसी प्रकारके मनोज्ञ भद्रक रसों में कि जो अविरत नित्य गृहस्थावस्थामे आस्वादित किये हुए थे (समणेण) श्रमण अवस्थामें स्थित हुए मुनि को (न सज्जियव्व जाव न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) आसक्तचित्त नहीं बनना चाहिये यावत् उसे उनकी स्मृति नहीं करना चाहिये और उनमें अपनी कि मैं श्रमणावस्था में इनका भोग करू इस प्रकार बुद्धि को भी नहीं लगाना चाहिये। यहा यावत् शब्द से " न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न तुसियव्व, न हसियव्व " इन पूर्वोक्त पदो का ग्रहण किया गया है। इन सबका अर्थ प्रथम भावना मे लिखा जा चुका है। (पुणरवि) इसी तरह फिर (जिब्भिदिएण) जिह्वा इन्द्रिय से (अमणुन्नपावगाइ रसाइ) अरुचिका-

---

લઈને તેમનામા તથા " अन्नेसु एवमाइएसु मणुन्नभद्दएसु " એ જ પ્રકારના બીજા ભદ્રક મનોજ્ઞ રસોમા કે જેનો ગૃહસ્થાવસ્થામા સદા સ્વાદ લેવાતો હતો તેમા " समणेण " સાધુ અવસ્થામા રહેલ મુનિએ " न सज्जियव्व जाव न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा " " આસક્ત થવુ જોઈએ નહી " ત્યાથી શરૂ કરીને "તેણે તેમને યાદ કરવા જોઈએ નહી અને હુ શ્રમણ – અવસ્થામા તેમનો ઉપભોગ કરૂ એવો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી " ત્યા સુધીનો અર્થ ગ્રહણ કરવાનો છે

અહી ' यावत् ' શબ્દથી " न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न तुसियव्व न हसियव्व " એ પૂર્વોક્ત પદો ગ્રહણ કરાયેલ છે એ બધાનો અર્થ પહેલી ભાવનામા અપાઇ ગયો છે " पुणरवि " એ રીતે " जिब्भिदिएण " જીભથી " अमणुन्नपावगाइ रसाइ "

वगाइ" अमनोज्ञपारकान्=अरुचिकरान् , ' रसाइ ' रसान् 'साइय' स्वादयित्वा, ' किं ते ' कांस्तान्=कथभूतांस्तान् रसान् । इत्याह–' अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइ' अरसविरसशीतरूक्षनिर्याप्यपानभोजनानि, तत्र–अरसानि =रसरहितानि=हिङ्ग्वादिसंस्कारवर्जितानि, विरसानि=विगतरसानि=पर्युषितानि, शीतानि=शीतलानि रूक्षाणि=घृतादिलेशवर्जितानि, निर्याप्याणि=बलवर्द्धनशक्ति रहितानि यानि पानभोजनानि तानि तथोक्तानि, तथा–' दोसीणवावन्नकुहिय-पूइय–अमणुन्नविणट्ठ–पसूय–बहुदुब्भिगन्धियाइ ' दोषान्नव्यापन्नकुथितपूतिकामनोज्ञ विनष्टप्रसूतबहुदुरभिगन्धितानि, तत्र–' दोसीण ' त्ति–दोषान्न=दोषा–रात्रिस्तत्र पक्व यदन्न, रात्रिपर्युषितमित्यर्थः, व्यापन्न=विनिष्ट,,वर्णम् , कुथित=कोथयुक्तम्, शटितमित्यर्थः, पूतिकम्=गन्धयुक्तम्, अत एव–अमनोज्ञम्=असुन्दरम् , विनष्टम्= अत्यन्तविकृतावस्थापन्नम् , ततः प्रसूत.=प्रादुर्भूतो यो बहु दुरभिगन्धः=अतिदुर्गन्धः स जातो येषु तानि तथोक्तानि, तथा–' तित्तकडुयकसायअंबिलरसलिंदनीरसाइ '

रक रसों का (साइय) आस्वादन करके उनमें साधु को राग द्वेषभाव धारण नहीं करना चाहिये । (किं ते ?) अरुचिकारक रस कौन २ से हैं इस प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं—(अरसविरससीयलुक्खणिज्जपाणभोयणाइ) अरस–हिङ्गु आदिके वघार से वर्जित, विरस—रस से विहीन–पर्युषित, शीत–शीतल–ठडे, रूक्ष–घृतादि के लेश से रहित, निर्याप्य–बल बढाने की शक्ति से रहित, तथा (दोसीणवावन्नकुहिय पूइय अमणुन्नविणट्ठपसूयबहुदुब्भिगंधियाइ) दोसीणरात्रिमें पकाये गये व्यापन्न–विनष्ट वर्णवाले, कुथित–सडे हुए पूतिक दुर्गंधयुक्त, अतएव मनोज्ञ–असुन्दर तथा विनष्ट–अत्यत विकृत अवस्था वाले और इसी कारण जिनमें से अत्यत दुर्गंध निकल रही हो ऐसे तथा जो (तित्तकडुयकसायअंबिलरसलिंदनीरसाइ) मरीच–मिर्च के जैसा

અરુચિકર રસોનુ "साइय" આસ્વાદન કરીને તેમનામા સાધુએ દ્વેષભાવ રાખવો જોઈએ નહી "किं ते ?" અરુચિકારક રસ કયા કયા છે એ પ્રશ્નનુ સમાધાન કરવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—"अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइ" અરસ–હિંગ આદિના વઘારથી રહિત, વિરસ–રસરહિત–પર્યુષિત, શીત –શીતળ–ઠડા, રૂક્ષ–ઘી વિનાનુ, નિર્યાપ્ય–બળ વધારવાની શક્તિથી રહિત, તથા "दोसिणवावन्नकुहियपूइयअमणुन्नविणट्ठपसूयबहुदुब्भिगंधियाइ" દોસીણ –રાત્રે રાંધેલ, વ્યાપન્ન–વિનષ્ટ વર્ણ વાળુ–કુથિત–સડેલ, પૂતિક–દુર્ગંધવાળા, તેથી અમનોજ્ઞ–અસુદર તથા વિનષ્ટ–અત્યત વિકૃત અવસ્થાવાળા અને એ કારણે જેમાથી અત્યત દુર્ગંધ નીકળતી હોય તેવા, તથા જે "तित्तकडुयकसायअंबिल

तिक्तकटुककषायाम्लरसलिन्द्रनीरसानि = तत्र तिक्त-मरीचवत्, कटुक-निम्नवत्, कषायम्=आमलफलवत्, आम्लरसम्=अम्लिका 'इमली' कावत्, लिन्द्र=सशैवाल-पुराणजलवत्, नीरस=विगतरसम् एषा द्वन्द्वस्तानि तथोक्तानि' आस्वाद्य-उपर्युक्तारसविरसादि पानभोजनस्थितानमनोज्ञपापकान् रसानास्वाद्येत्यर्थः, 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'तेसु' तेषु=उक्तेषु 'अमणुन्नपावएसु' अमनोज्ञपापकेषु 'रसेसु' रसेषु तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एवंप्रकारेषु च-अमनोज्ञपापकेषु रसेषु 'न रोसियव्व' न रोष्टव्यम्, 'जाव' यावत्करणात्-न हीलितव्यम्, 'न निंदितव्य, न खिंसितव्यम्, न छेत्तव्यम्, न

तिक्त हो-चरपरा हो, कटुक-नीम के जैसा कडुवा हो, आमले के जैसा कषाय रसवाला हो, कच्ची कैरी-अमिया के जैसा जो खट्टा हो, लिंद्र-शैवालसहित पुराने जलके समान हो, विगतरस हो ऐसे इन उपर्युक्त अरस विरस आदि पान भोजनमे स्थित अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक रसों को आस्वादित करके (समणेण) मुनि को (तेसु) उन (अमणुन्नपावएसु) अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक-रसोंमे तथा (अण्णेसु एवमाइएसु रसेसु) इसी प्रकार के और भी इनसे भिन्न रसों मे (न रुसियव्व जाव चरेज्ज धम्म) रोष नही करना चाहिये। "न हीलियव्व, न निंदियव्व, न खिंसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुछावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" उनकी अवज्ञा नही करनी चाहिये, उन्हे देखकर उनपर खिसयाना-परोक्ष में निंदा नही करनी चाहिये। तथा अमनोज्ञ रसस्थित द्रव्यका छेदन नही करना चाहिये, भेदन एव

रसलिंद्नीरसाइ ' મરીચ-મરચા જેવા તીખા હોય, ચરપરા હોય, કટુક-લીમડા જેવા કડવા હોય, આમળા જેવા તુરા હોય, કાચી કેરી જેવા ખાટા હોય, લિંદ્ર-જે શેવાળયુક્ત પુરાણુ પાણી જેવા હોય, વિગત રસ હોય, એવા ઉપર કહેલા અરસ વિરસ આદિ ભોજનોમા રહેલ અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકર રસોનુ આસ્વાદન કરીને 'समणेण" મુનિએ "तेसु" તે "अमणुन्नपावएसु" અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકર રસોમા તથા "अण्णेसु एवमाइएसु रसेसु" એ જ પ્રકારના બીજા રસોમા પણ "न रुसियव्व जाव चरेज्जधम्म" રોષ કરવો જોઇએ નહી "न हीलियव्व', न निंदियव्व, न खिंसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुछावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" તેમની અવજ્ઞા ન કરવી જોઇએ, તેમને જોઈને તેમની પરોક્ષ રીતે નિંદા ન કરવી જોઈએ, તથા અરુચિકર રસવાળા દ્રવ્યનુ છેદન ન કરવુ જોઇએ, ભેદન અને નાશ ન કરવો

भेत्तव्यम् न हन्तव्यम् न जुगुप्सावृत्तिकाऽपि लभ्या उत्पादयितुम्। एवं जिह्वेन्द्रियभावनाभावितो भवति अन्तरात्मा=जीवः मुनिः। ततश्च-मनोज्ञामनोज्ञसुरभि दुरभिरागद्वेषे प्रणिहितात्मा साधुर्मनोवचनकायगुप्तः संवृतः प्रणिहितेन्द्रियः-एषां संग्रहो योग्य 'धम्म' धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० १० ॥

नाश नहीं करना चाहिये। और न अपने मनमें भी उस पर जुगुप्सा वृत्ति जगे ऐसी चेष्टा ही करनी चाहिये। इस प्रकार से 'जिह्वाइन्द्रिय मुझे वशमें करनी चाहिये अन्यथा महान् अनर्थ का भागी मुझे होना पडेगा' इस प्रकारकी जिह्वा इन्द्रियकी भावना से भावित जब मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञरूप एव अमनोज्ञरूप सुरभिदुरभि इस में राग द्वेष करने से रहित बन जाता है। इस प्रकारकी स्थिति से सपन्न बना हुआ साधु अपने मन, वचन, और कायरूप तीन योगों को शुभ और अशुभ के व्यापार से रहित कर लेता है और इस इन्द्रिय के सवरणसे युक्त बन जाता है। इस तरह रसनेन्द्रिय के सवरणसे युक्त होकर वह चारित्ररूप धर्मका पालन करने में सर्व प्रकारसे दृढ हो जाता है।

भावार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकारने इस व्रत की चौथी भावना का स्वरूप प्रदर्शित किया है। उसमे उन्होंने यह समझाया है कि साधुको अपनी रसना इन्द्रिय को रुचिकारक एव अरुचिकारक रसो के आस्वादजन्य रागद्वेषके पक्षपात से रहित कर लेनी चाहिये, तभी जा कर वह रसनेन्द्रिय विजयी हो सकता है। ऐसा नहीं होना चाहिये कि

જોઈએ પોતાના મનમા કે પારકાના મનમા તેના પ્રત્યે જુગુપ્સાવૃત્તિ થાય તેવુ વર્તન કરવુ જોઈએ નહી, આ રીતે "મારે જિહ્વા ઇન્દ્રિયને વશ રાખવી જોઇએ નહી તો મારે મહાન અનર્થને પાત્ર બનવુ પડશે" આ પ્રકારની જિહ્વા ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી જ્યારે મુનિ ભાવિત થાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ અને અમનોજ્ઞ રૂપ, સુદર અને અસુદર દ્રવ્યો પ્રત્યે રાગ દ્વેષથી રહિત બની જાય છે આ પ્રકારની ભાવનાથી યુક્ત બનેલ સાધુ મન, વચન અને કાય, એ ત્રણે યોગોને શુભ અને અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે અને આ ઇન્દ્રિયના સવરણથી યુક્ત બની જાય છે આ રીતે રસના ઇન્દ્રિયના સવરણથી યુક્ત થઈને તે ચારિત્રરૂપ ધર્મનુ પાલન કરવામા બધી રીતે દઢ બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે આ વ્રતની ચોથી ભાવનાનુ સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું છે તેમા તેમણે સમજાવ્યુ છે કે સાધુએ પોતાની રસના ઇન્દ્રિયને રુચિકર અને અરુચિકર રસોના આસ્વાદનને કારણે ઉત્પન્ન થતા રાગદ્વેષને પક્ષ પાતથી રહિત કરવી જોઇએ, ત્યારે જ તે રસનેન્દ્રિય પર વિજય મેળવી શકે

पञ्चमीं भावनामाह—'पंचम' इत्यादि—

मूलम्—पंचमं पुण फासिंदिएण फासिय फासाइं मणुन्नभद्दकाइं, किं ते ? दग मंडव-हार-सेयचंदण-सीयल-विमल-जल-विविह-कुसुमसत्थर -ओसीरमुत्तिय- मुणालदोसिणा पेहुण उक्खेवग-तालियंटवीयणग-जणिय-सुहसीयले य पवणे गिम्हकाले, सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि य आसणाणि णे य पाउरणगुणे य सिसिरकाले, अगारप्पवावणा

रुचिकारक रस मिल जावे तो चित्तमे उसके प्रति रागभाव उद्भूत हो जावे और अरुचिकारक रस मिल जावे तो उसमें द्वेषभाव उत्पन्न हो जावे। दोनों प्रकारके रसो में समता भाव धारण करना साधु का सर्व प्रथम कर्तव्य है। इसी विषयको लेकर इस सूत्रमे रुचिकारक रसके आश्रयभूत उग्गाहिम आदि कितनेक पदार्थों को तथा अरुचिकारक रस के आश्रयभूत अरसविरस आदि पदार्थों को कहा गया है। तथा साथर में यह समझाया गया है कि गृहस्थावस्था में जिन रुचिकारक रसों का आस्वाद लिया था वे रस साधु अवस्था मे स्मरण करने योग्य नहीं है। कारण कि उनकी स्मृति से जिह्वा इन्द्रिय मे रस के प्रति लोलुपता बढ़ती है। इस प्रकार से रसना इन्द्रिय के विषय मे समभाव रखनेवाला साधु चारित्र धर्मका निर्वाह अच्छी तरह से करनेवाला हो जाता है ॥सू०१०॥

છે એવુ ન બનવુ જોઇએ કે રૂચિકર રસ મળે તો તેના પ્રત્યે ચિત્તમા રાગભાવ પેદા થઇ જાય છે, અને અરૂચિકર રસ મળે તો દ્વેષભાવ પેદા થાય બન્ને પ્રકારના રસો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો તે સાધુનુ પહેલુ કર્તવ્ય છે એ વિષયનુ વર્ણન કરતા આ સૂત્રમા રૂચિકર રસયુક્ત ઉગ્ગાહિમ આદિ કેટલાક પદાર્થોને તથા અરૂચિકર રસયુક્ત અરસવિરસ આદિ પદાર્થોને બતાવ્યા છે તથા સાથે સાથે એ સમજાવ્યુ છે કે ગૃહસ્થાવસ્થામા જે રૂચિકારક રસોનો સ્વાદ લીધો હતો તે રસોનુ સાધુ અવસ્થામા સ્મરણ કરવુ તે પણ યોગ્ય નથી કારણ કે તેને યાદ કરવાની જિહ્વા ઇન્દ્રિયમા રસના પ્રત્યે લાલસા વધે છે આ રીતે રસના ઇન્દ્રિયની બાબતમા સમભાવ રાખનાર સાધુ ચરિત્ર ધર્મનુ સારી રીતે પાલન કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

य आयवनिद्धमउय–सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, न गिज्झियव्वं, न मुज्झियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभियव्वं, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्वं, न हसियव्वं, न सइं च मइं च तत्थकुज्जा। पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाइ अमणुन्नपावगाइ, किं ते? अणेगवहबंध–तालणं-कण–अइभारारोवण–अंगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारसखारतेल्लकलकलत-- -तउसीसककाललोह- -सिंचण-हडिबंधण रज्जुनिगल-संकलन हत्थडुयकुंभिपाकदहण सीहपुच्छण सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयण-जिब्भच्छेयण वसणनयण हियद्दंतभंजण जोत्तलयकसप्पहारपादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणक --विकच्छुअगणि विच्छुयडक्कवायायवदंसमसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, न हीलियव्वं, न निंदियव्वं, न गरहियव्वं, न खिंसियव्वं, न छिंदियव्वं, न भिंदियव्वं, न वहेयव्वं, न दुगुंछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं एवं फासिंदियभावणाभाविओ भवइ अंतरप्पा मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ११ ॥

टीका—' पुण ' पुनः ' पचम ' पञ्चमी स्पर्शेन्द्रियसवरणाभिधेया भावना-माह—' फासिदिएण ' स्पर्शेन्द्रियेण ' मणुण्णभद्दगाइ ' मनोज्ञभद्रकान् 'फासाइं' स्पर्शान् 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'किं ते' कांस्तन्-कथम्भूतांस्तान्? इत्याह-'दगमडव-हार-सेय चदणसीयलविमलजलविविहकुसुमसत्थर उसीर मुत्तियमुणालदोसिणा ' दकमण्डपहारश्वेतचन्दनशीतलविमलजलविविधकुसुमसस्तरोशीरमौक्तिकमृणालज्योत्स्नाः, तत्र-दकमण्डपा =उदकमण्डपाः, जल यन्त्रस्थानानीत्यर्थः, हाराः प्रतीताः, श्वेतचन्दनानि=श्रीखण्डचन्दनानि, शीतलविमलजलानि = शीतलानि = विमलानि

अव सूत्रकार इस व्रतकी पाचवी भावना कहते है-'पचम पुण' इ०

टीकार्थ—(पचम पुण) पाँचवीं भावना स्पर्शनेन्द्रिय सवर नाम की है । वह इस प्रकार से है-(फासिदिएण) स्पर्शन इन्द्रिय से (मणुण्ण-भद्दगाइ फासाइ) मनोज्ञ भद्रक-स्पर्शन इन्द्रिय को सुखकारक-स्पर्शो को (फासिय) स्पर्श कर के साधु को उन में रुचिभाव-रागपरिणति नही करना चाहिये, इस प्रकार से यहा सवध लगा लेना चाहिये— (किं ते ?) रुचिकारक स्पर्श के विषयभूत कौन २ से पदार्थ है, इस प्रकार के प्रश्नका उत्तर देते हुए सूत्रकार उन कितनेक पदार्थो को नाम निर्देशपूर्वक कहते हैं—(गिम्हकाले दगमडव-हार-सेयचदण-सीयल विमल-जलविविहकुसुमसत्थ-ओसीर-मुत्तिय-मुणाल-दोसिणा-पेहुण-उक्खेवग-तलियट-वीयणग-जणिय सुहसीयले य पवणे) ग्रीष्मकालमें दकमडप-जल के फुआरे जहा जल वरसाकर स्थान को ठडा रखते हों,-ऐसा जल यत्र स्थान, हार श्वेतचदन-श्रीखडचदन, शीतल, निर्मल

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—

"પચમ પુણ " ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—' પચમ પુણ " પાચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે તે આ પ્રમાણે છે "फासिंदिएण" સ્પર્શેન્દ્રિયથી "मणुण्णभद्दगाइ फासाइ" મનોજ્ઞભદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય સુખકારક સ્પર્શોના "फासिय" સ્પર્શ કરીને સાધુએ તેમના પ્રત્યે રૂચિભાવ-રાગપરિણતિ કરવી જોઇએ નહી

"किं ते ?" રૂચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા કેટલાક પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

" गिम्हकाले दगमडव-हार सेयचदण सीयलविमलजल विविहकुसुमसत्थर - ओसीर मुत्तिय मुणाल -दोसिणा–पेहुण–उक्खेवग तालियट वीयणग -जणिय सुहसी यले य पवणे " ગ્રીષ્મ ઋતુમા દકમડપ જ્યા પાણીના ફુવારા પાણીને ઉડાડીને

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, न गिज्झियव्वं, न मुज्झियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्व, न हसियव्व, न सइं च मइं च तत्थकुज्जा। पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाइ अमणुन्नपावगाइं, किं ते? अणेगवहवध-तालणं-कण-अइभारारोवण-अगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारसखारतेल्लकलकलत-- -तउसीसककाललोह- -सिंचण-हडिवधण रज्जुनिगल-संकलन हत्थंडुयकुभिपाकदहण सीह-पुच्छण-सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयण-जिब्भच्छेयण वसणनयण हिययद्तभजण जोत्तलयकस-प्पहारपादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणक --विकच्छुअगणि विच्छुयडक्कवायायवद्समसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया कक्खड गुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्व, न हीलियव्व, न निंदियव्य, न गरहियव्वं, न खिंसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्वं, न दुगुंछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं एव फासिंदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मयवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्म ॥ सू० ११ ॥

टीका—' पुण ' पुनः ' पचम ' पञ्चमी स्पर्शेन्द्रियसवरणाभिधेया भावनामाह—' फासिदिएण ' स्पर्शेन्द्रियेण ' मणुण्णभद्दगाइ ' मनोज्ञभद्रकान् 'फासाइ' स्पर्शान् 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'किं ते' कांस्तन्–कथम्भूतांस्तान्? इत्याह–'दगमडव–हार–सेय चदणसीयलविमलजलविविहकुसुमसत्थर उसीर मुत्तियमुणालदोसिणा ' दकमण्डपहारश्वेतचन्दनशीतलनिर्मलजलविविधकुसुमसस्तरोशीरमौक्तिकमृणालज्योत्स्नाः, तत्र–दकमण्डपा =उदकमण्डपाः, जल यन्त्रस्थानानीत्यर्थः, हारा॰ मवीताः, श्वेतचन्दनानि=श्रीखण्डचन्दनानि, शीतलनिर्मलजलानि = शीतलानि = विमलानि

अब सूत्रकार इस व्रतकी पाचवी भावना कहते हैं–'पचम पुण' इ०

टीकार्थ—(पचम पुण) पाँचवीं भावना स्पर्शनेन्द्रिय सवर नाम की है। वह इस प्रकार से है–(फासिदिएण) स्पर्शन इन्द्रिय से (मणुण्ण–भद्दगाइ फासाइ) मनोज्ञ भद्रक–स्पर्शन इन्द्रिय को सुखकारक–स्पर्शों को (फासिय) स्पर्श कर के साधु को उन में रुचिभाव–रागपरिणति नहीं करना चाहिये, इस प्रकार से यहा सबध लगा लेना चाहिये—(किं ते ?) रुचिकारक स्पर्श के विषयभूत कौन २ से पदार्थ हैं, इस प्रकार के प्रश्नका उत्तर देते हुए सूत्रकार उन कितनेक पदार्थों को नाम निर्देशपूर्वक कहते हैं—(गिम्हकाले दगमडव–हार–सेयचदण–सीयल विमल-जलविविहकुसुमसत्थ–ओसीर–मुत्तिय–मुणाल–दोसिणा–पेहुण–उक्खेवग–तलियट–वीयणग–जणिय सुहसीयले य पवणे) ग्रीष्मकालमें दकमडप–जल के फुआरे जहा जल बरसाकर स्थान को ठडा रखते हों,–ऐसा जल यत्र स्थान, हार श्वेतचदन–श्रीखडचदन, शीतल, निर्मल

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—

"पचम पुण" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—' पचम पुण " પાચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે તે આ પ્રમાણે છે "फासिदिएण" સ્પર્શેન્દ્રિયથી "मणुण्णभद्दगाइ फासाइ" મનોજ્ઞભદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય સુખકારક સ્પર્શોનો "फासिय" સ્પર્શ કરીને સાધુએ તેમના પ્રત્યે રૂચિભાવ–રાગપરિણતિ કરવી જોઇએ નહી

"किं ते ?" રૂચિકારક સ્પર્શવાળા ક્યા ક્યા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા કેટલાક પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

" गिम्हकाले दगमडव–हार सेयचदण सीयलविमळजल विविहकुसुमसत्थर - ओसीर मुत्तिय मुणाल दोसिणा–पेहुण–उक्खेवग तालियट वीयणग -जणिय सुहसी यले य पवणे " ગ્રીષ્મ ઋતુમા દકમડપ જ્યા પાણીના ફુવારા પાણીને ઉડાડીને

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्वं, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्व, न हसियव्व, न सइं च मइं च तत्थकुज्जा। पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाइं अमणुन्नपावगाइ, किं ते ? अणेगवहवध--तालणं-कण-अइभारारोवण-अगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारसखारतेल्लकलकलंत-- -तउसीसककाललोह- -सिंचण-हडिवधण रज्जुनिगल-संकलन हत्थंडुयकुंभिपाकदहण सीह-पुच्छण सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयण-जिब्भच्छेयण वसणनयण हिययदंतभजण-जोत्तलयकसप्पहारपादपणिहजाणुपत्थरनिवायपीलणक -- विकच्छुअगणि विच्छुयडक्कवायायवदंसमसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया कक्खड गुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्व, न हीलियव्व, न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं एव फासिदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्म ॥ सू० ११ ॥

यारणा य ' शरीरस्य अङ्गारमतापनाश्च=वह्निनिपेवणानि च, ' आयवनिद्धमउयमीयउसिणलहुया य ' आतपस्निग्धमृदुकशीतोष्णलघुकाँश्च, तत्र-आतपः=सूर्यतापः, स्निग्धाः=चिक्कणा , मृदुकाः=कोमलाः, उष्णा ऊष्मयुक्ताः, लघुकाः=मनोज्ञाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ' जे ' ये ' उउसुहफासा ' ऋतुसुखस्पर्शाः-ऋतुषु=हेमन्तादिषु सुखः=सुखकरः स्पर्शो येषा ते तथोक्ताः, ' अगसुहनिव्वुइकरा ' अङ्गसुखनिर्वृतिकराः=अङ्गसुख=शरीरसुख, निर्वृतिः=मनः स्वास्थ्य च कुर्वन्ति ये ते तथोक्ताः, ' ते ' तान् स्पृष्ट्वा, ' समणेण ' श्रमणेन=साधुना ' तेसु ' तेषु-पूर्वोक्तेषु ' मणुन्नभद्दएसु फासेसु ' मनोज्ञभद्रकेषु स्पर्शेषु, तथा-एभ्यः ' अन्नेसु य ' अन्येषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु ' फासेसु ' स्पर्शेषु ' न सज्जियव्व ' न सक्तव्यम्=आसक्तिर्नैव कर्तव्या, तथा--' न रज्जियव्व ' न रक्तव्यम्-रागो न कर्तव्यः, ' न गिज्झियव्व ' न गर्द्धितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्त्तव्यः, ' न मुज्झियव्व ' न मोहितव्यम्-तत्र मोहो न कर्तव्य , तथा-न ' विणिघाय' विनिर्घात = तदर्थं चारित्रभ्रंशः, ' आवज्जियव्व ' आपत्तव्यः-कर्तव्य इत्यर्थः, 'न लुभियव्व ' न लोभव्यम्-लोभो न कर्तव्य', ' अज्झोववज्जियव्व ' न अध्युपपत्तव्यम्=तत्रा-

---

(आयवनिद्धमउयसीय उसिणलहुया य) सूर्य के ताप को, चिक्कणपदार्थ को, कोमलपदार्थ को उष्ण पदार्थ को, हलके पदार्थ को, कि (जे) जो (उउसुहफासा) ऋतु के अनुसार जिनका स्पर्श सुखजनक होता है और (अगसुहनिव्वुइकरा) शरीर को एव मन को आनद प्रदान करता है, उनको शरीर से स्पर्श करके (समणेण) साधु को (तेसु) उन २ (मणुन्नभद्दएसु फासेसु) मनोज्ञभद्रक-रुचिकारक-स्पर्शों मे तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु फासेसु) इन से अतिरिक्त और भी स्पर्शों में (न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व, न

यसीय-उसिण-लहुया य " सूर्यना तापनो, मुलायम पदार्थनो, कोमळ पदार्थनो, उष्ण पदार्थनो, हलका पदार्थनो, के "जे" जे "उउसुहफासा" जे ऋतु प्रमाणे जेनो जेनो स्पर्श सुखदायक लागे छे अने "अगसुहनिव्वुइकरा" शरीरने तथा मनने आनंद आपे छे, तेमनो शरीरथी स्पर्श करीने "समणेण" साधुए "तेसु" ते दरेक "मणुन्नभद्दएसु फासेसु" मनोज्ञभद्रक-रुचिकारक स्पर्शोमा तथा "अण्णेसु एवमाइएसु फासेसु" ते सिवायना बीजा पण स्पर्शोमा "न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिधाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व,

=निर्मलानि च यानि जलानि तानि, तथा-विविधकुसुमसंस्तरा = विविधानाम्=अनेकप्रकाराणां कुसुमानां=पुष्पाणां ये संस्तराः=शय्यास्ते, तथा-उशीराणि =सुगन्धितृणानि, ' खश ' इति प्रसिद्धानि, मौक्तिकानि=मुक्ताफलानि, मृणालानि=पद्मनालानि, ज्योत्स्नाः=चन्द्रिकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ताः, तथा-' पेहुणउक्खेवगतालियंटवीयणगजणियसुहसीयले ' पिच्छोत्क्षेपकतालवृन्तव्यजनकजनितसुखशीतलान्, तत्र-पिच्छोत्क्षेपकाः=पिच्छानां=मयूरपिच्छकानां ये उत्क्षेपकाः=व्यजनानि, तालवृन्तानि=तालपत्रव्यजनानि, व्यजनकानि=वंशदलनिर्मितव्यजनानि तज्जनिताः सुखाः=सुखकराः शीतलास्तांस्तथोक्तान् ' पवणे य ' पवनांश्च ' गिम्हकाले ' ग्रीष्मकाले। तथा-'सुहफासाणि य ' सुखस्पर्शानि च सुखः =सुखकरः स्पर्शो येषां तानि-स्पर्शसुखानहानीत्यर्थः', ' बहूनि-अनेकप्रकाराणि 'सयणाणि आसणाणि य' शयनान्यासनानि च, प्रावरणगुणांश्च=मृदुस्पर्शान् शीतापहारकानुत्तरीयांश्च ' सिसिरकाले ' शिशिरकाले=शीतकाले, तथा-' अगारप्प

जल, विविध प्रकार के पुष्पों से रचित शय्या, उशीर-खस, मुक्ताफल, मृणाल-कमलनाल, और दोसिणाचन्द्रिका-चांदनी को, तथा पेहुणउक्खेवग-मयूर के पिच्छों के बने हुए पंखों की, ताडपत्र के बने हुए पंखों की और वांस की शलाकाओं से बने हुए पंखों की, सुखदायक शीतल वायु को तथा-सुखप्रद स्पर्शवाले अनेक प्रकार के शयन और आसनों को, (सिसिरकाले) शीतलकाल में तथा (सुहफासाणि य) नरम स्पर्शवाले शीतापहारक (बहूणि सयणाणि आसणाणि य) अनेक प्रकार के शयन और आसनों को, तथा (पाउरणगुणे य) ओढने के चद्दर आदि वस्त्रों को (अगारप्पयावणा य) अग्नि के उष्णस्पर्श को,

જગ્યાને ઠંડી રાખના હેય, એવા જલાશયવાળા સ્થાન, હાર, શ્વેત ચંદન, શીતલ નિર્મળ જળ, વિવિધ પ્રકારના પુષ્પો વડે બનાવેલી શય્યા, ઉશીર ખશ, મુક્તાફળ, મૃણાલ કમળનાળ, અને દોસિણા-ચંદ્રિકા-ચાંદનીની, તથા પેહુણ ઉક્ખેવગ-મોરના પીંછાના બનાવેલ પંખાના, તાડપત્રમાંથી બનાવેલ પંખાના અને વાંસની સળીઓમાંથી બનાવેલ પંખાના, સુખદાયક શીતળ વાયુનો તથા સુખપ્રદ સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના શયન અને આસનોનો સ્પર્શ કરવો જોઇએ નહીં તથા " सिसिरकाले " શિયાળાના " सुहफासाणि य " નરમ સ્પર્શવાળા શીત દૂર કરનારા "बहूणि सयणाणि आसणाणि य" અનેક પ્રકારના શયનો અને આસનોનો, તથા " पाउरणगुणे य " ઓઢવાના ચાદર આદિ વસ્ત્રોનો, " अगारप्पयावणा य " અગ્નિના ઉષ્ણ સ્પર્શનો, " आयवनिद्धमउ

यारणा य ' शरीरस्य अङ्गारमतापनाश्च=वह्निनिपेवणानि च, ' आयवनिद्धमउयमीयउसिणलहुया य ' आतपस्निग्धमृदुकशीतोष्णलघुकांश्च, तत्र-आतपः=सूर्यतापः, स्निग्धाः=चिक्कणा, मृदुकाः=कोमलाः, उष्णा ऊष्मयुक्ताः, लघुकाः=मनोज्ञाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ' जे ' ये ' उउसुहफासा ' ऋतुसुखस्पर्शाः-ऋतुषु=हेमन्तादिषु सुखः=सुखकरः स्पर्शो येषां ते तथोक्ताः, ' अगसुहनिव्वुइकरा ' अङ्गसुखनिर्वृतिकरा'=अङ्गसुख=शरीरसुख, निर्वृतिः=मनः स्वास्थ्य च कुर्वन्ति ये ते तथोक्ताः, ' ते ' तान् स्पृष्ट्वा, ' समणेण ' श्रमणेन=साधुना ' तेसु ' तेषु-पूर्वोक्तेषु ' मणुन्नभद्दएसु फासेसु ' मनोज्ञभद्रकेषु स्पर्शेषु, तथा-एभ्यः ' अन्नेसु य ' अन्येषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु ' फासेसु ' स्पर्शेषु ' न सज्जियव्व ' न सक्तव्यम्=आसक्तिर्नैव कर्तव्या, तथा--' न रज्जियव्व ' न रक्तव्यम्-रागो न कर्तव्य', ' न गिज्झियव्व ' न गर्द्धितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्त्तव्यः, ' न मुज्झियव्व ' न मोहितव्यम्-वा मोहो न कर्तव्य , तथा-न ' विणिघाय' विनिर्घात = तदर्थं चारित्रभ्रशः, ' आवज्जियव्व ' आपत्तव्य.-कर्तव्य इत्यर्थः, 'न लुभियव्व ' न लोब्धव्यम्-लोभो न कर्तव्य', ' अज्झोववज्जियव्व ' न अध्युपपत्तव्यम्=तत्प्रा-

---

(आयवनिद्धमउयसीय उसिणलहुया य) सूर्य के ताप को, चिक्कणपदार्थ को, कोमलपदार्थ को उष्ण पदार्थ को, हल्के पदार्थ को, कि (जे) जो (उउ सुहफासा) ऋतु के अनुसार जिनका स्पर्श सुखजनक होता है और (अगसुहनिव्वुइकरा) शरीर को एव मन को आनद प्रदान करता है, उनको शरीर से स्पर्श करके (समणेण) साधु को (तेसु) उन २ (मणुन्नभद्दएसु फासेसु) मनोज्ञभद्रक-रुचिकारक-स्पर्शो मे तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु फासेसु) इन से अतिरिक्त और भी स्पर्शों में (न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व, न

यसीय-उसिण-लहुया य " सूर्यना तापने, मुलायम पदार्थने, કોમળ પદાર્થને, ઉષ્ણ પદાર્થને, હલકા પદાર્થને, કે " जे " જે " उउसुहफासा " જે ઋતુ પ્રમાણે જેના જેના સ્પર્શ સુખદાયક લાગે છે અને " अगसुहनिव्वुइकरा " શરીરને તથા મનને આનંદ આપે છે, તેમના શરીરથી સ્પર્શ કરીને " समणेण " સાધુએ " तेसु " તે દરેક " मणुन्नभद्दएसु फासेसु " મનોજ્ઞભદ્રક-રુચિકારક સ્પર્શોમા તથા " अण्णेसु एवमाइएसु फासेसु " તે સિવાયના બીજા પણ સ્પર્શોમા " न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व,

=निर्मलानि च यानि जलानि तानि, तथा-विविधकुसुमसस्तरा=विविधानाम्=अनेकप्रकाराणां कुसुमाना=पुष्पाणा ये सस्तराः=शय्यास्ते, तथा-उशीराणि=सुगन्धितृणानि, 'खश' इति प्रसिद्धानि, मौक्तिकानि=मुक्ताफलानि, मृणालानि=पद्मनालानि, ज्योत्स्नाः=चन्द्रिकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ताः, तथा-'पेहुणउक्खेवगतालियटवीयणगजणियसुहसीयले' पिच्छोत्क्षेपकतालवृन्तव्यजनकजनितमुखशीतलान्, तत्र-पिच्छोत्क्षेपकाः=पिच्छाना=मयूरपिच्छकाना ये उत्क्षेपकाः=व्यजनानि, तालवृन्तानि=तालपत्रव्यजनानि, व्यजनकानि=वंशदलनिर्मित व्यजनानि तज्जनिताः सुखाः=सुखकराः शीतलास्तांस्तथोक्तान् 'पवणे य' पवनांश्च 'गिम्हकाले' ग्रीष्मकाले। तथा-'सुहफासाणि य' सुखस्पर्शानि च सुखः=सुखकरः स्पर्शो येषां तानि-स्पर्शसुखावहानीत्यर्थः, 'बहूनि-अनेकप्रकाराणि 'सयणाणि आसणाणि य' शयनान्यासनानि च, प्रावरणगुणांश्च=मृदुस्पर्शान शीतापहारकानुत्तरीयांश्च 'सिसिरकाले' शिशिरकाले=शीतकाले, तथा-' अगारप्प

जल, विविध प्रकार के पुष्पों से रचित शय्या, उशीर-खस, मुक्ताफल, मृणाल-कमलनाल, और दोसिणाचंद्रिका-चांदनी को, तथा पेहुणउक्खेवग-मयूर के पिच्छों के बने हुए पंखों को, ताडपत्र के बने हुए पंखों की और बांस की शलाकाओं से बने हुए पंखों की, सुखदायक शीतल वायु को तथा-सुखप्रद स्पर्शवाले अनेक प्रकार के शयन और आसनों को, (सिसिरकाले) शीतलकाल में तथा (सुहफासाणि य) नरम स्पर्शवाले शीतापहारक (बहूणि सयणाणि आसणाणि य) अनेक प्रकार के शयन और आसनों को, तथा (पाउरणगुणे य) ओढने के चद्दर आदि वस्त्रों को (अगारप्पयावणा य) अग्नि के उष्णस्पर्शों को,

---

જગ્યાને ઠંડી રાખતા હોય, એવા જલયંત્રવાળા સ્થાન, હાર, શ્વેત ચંદન, શીતલ નિર્મળ જળ, વિવિધ પ્રકારના પુષ્પો વડે બનાવેલી શય્યા, ઉશીર ખશ, મુક્તાફળ, મૃણાલ કમળનાળ, અને દોસિણા-ચંદ્રિકા-ચાંદનીની, તથા પેહુણ ઉક્ખેવગ-મોરના પીંછાના બનાવેલ પંખાના, તાડપત્રમાંથી બનાવેલ પંખાના અને વાંસની સળીઓમાંથી બનાવેલ પંખાના, સુખદાયક શીતળ વાયુનો તથા સુખપ્રદ સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના શયન અને આસનોનો સ્પર્શ કરવો જોઈએ નહીં તથા "सिसिरकाले" શિયાળામાં "सुहफासाणि य" નરમ સ્પર્શવાળા શીત દૂર કરનારા "बहूणि सयणाणि आसणाणि य" અનેક પ્રકારના શયનો અને આસનોનો, તથા "पाउरणगुणे य" ઓઢવાના ચાદર આદિ વસ્ત્રોનો, "अगारप्पयावणा य" અગ્નિના ઉષ્ણ સ્પર્શનો, "आयवनिद्धमउ-

यावणा य ' शरीरस्य अङ्गारमतापनाश्च=वह्निनिषेवणानि च, ' आयवनिद्धमउयसी-यउसिणलहुया य ' आतपस्निग्धमृदुकशीतोष्णलघुकाँश्च, तत्र-आतपः=सूर्यतापः, स्निग्धाः=चिक्कणाः, मृदुकाः=कोमलाः, उष्णा ऊष्मयुक्ताः, लघुकाः=मनोज्ञाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ' जे ' ये ' उउसुहफासा ' ऋतुसुखस्पर्शाः-ऋतुषु=हेमन्तादिषु सुखः=सुखकरः स्पर्शो येषां ते तथोक्ताः, ' अंगसुहनिव्वुइकरा ' अङ्ग-सुखनिर्वृतिकराः=अङ्गसुख=शरीरसुख, निर्वृतिः=मनः स्वास्थ्य च कुर्वन्ति ये ते तथोक्ताः, ' ते ' तान् स्पृष्ट्वा, ' समणेण ' श्रमणेन=साधुना ' तेसु ' तेषु-पूर्वोक्तेषु ' मणुन्नभद्दएसु फासेसु ' मनोज्ञभद्रकेषु स्पर्शेषु, तथा-एभ्यः ' अन्नेसु य ' अन्येषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु ' फासेसु ' स्पर्शेषु ' न सज्जियव्व ' न सक्तव्यम्=आसक्तिर्नैव कर्तव्या, तथा--' न रज्जियव्व ' न रक्तव्यम्-रागो न कर्तव्य', ' न गिज्झियव्व ' न गर्द्धितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्त्तव्यः, ' न मुज्झियव्व ' न मोहितव्यम्-तत्र मोहो न कर्तव्य , तथा-न ' विणिघाय' विनिर्घात = तदर्थं चारित्रभ्रंशः, ' आवज्जियव्व ' आपत्तव्यः-कर्त्तव्य इत्यर्थः, 'न लुभियव्व ' न लोब्धव्यम्-लोभो न कर्तव्यः, ' अज्झोववज्जियव्व ' न अध्युपपत्तव्यम्=तत्प्रा-

---

(आयवनिद्धमउयसीय उसिणलहुया य) सूर्य के ताप को, चिक्कणपदार्थ को, कोमलपदार्थ को उष्ण पदार्थ को, हल्के पदार्थ को, कि (जे) जो उ उ सुहफासा) ऋतु के अनुसार जिनका स्पर्श सुखजनक होता है और (अगसुहनिव्वुइकरा) शरीर को एव मन को आनद प्रदान करता है, उनको शरीर से स्पर्श करके (समणेण) साधु को (तेसु) उन २ (मणुन्नभद्दएसु फासेसु) मनोज्ञभद्रक-रुचिकारक-स्पर्शों मे तथा (अण्णेसु य एवमाइएसु फासेसु) इन से अतिरिक्त और भी स्पर्शों मे (न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व, न

यसीय-उसिण-लहुया य " सूर्यना तापनो, मुलायम पदार्थनो, कोमळ पदार्थनो, उष्णु पदार्थनो, हलका पदार्थनो, के "जे" जे "उउसुहफासा" जे ऋतु प्रमाणे जेनो जेनो स्पर्श सुखदायक लागे छे अने " अगसुहनिव्वुइकरा " शरीरने तथा मनने आनद आपे छे, तेमनो शरीरथी स्पर्श करीने " समणेण " साधुओ " तेसु " ते दरेक " मणुन्नभद्दएसु फासेसु " मनोज्ञभद्रक-रुचिकारक स्पर्शोमा तथा " अण्णेसु एवमाइएसु फासेसु " ते सिवायना बीजा पण स्पर्शोमा " न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्झियव्व, न मुज्झियव्व, न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व,

प्यर्थं नैवाधिको यत्नो विधेयः, 'न तुसियव्व' न तोष्टव्य-तत्प्राप्तौ परितोषो न कर्तव्य, 'न हसियव्व न हसितव्यम्-प्राप्तौ विस्मयेन हासो न कर्तव्यः। तथा श्रमण 'तत्थ' तत्र=पूर्वोक्तभुक्तविषये 'सइ च' स्मृतिं=स्मरण च' मतिं= बुद्धिनिवेश च 'न कुज्जा' न कुर्यात्। 'पुणरवि' पुनरपि उच्यते-' फासिंदिएण' स्पर्शेन्द्रियेण 'अमणुण्णपावगाइ' अमनोज्ञपापकान्=अरुचिकरानित्यर्थ', 'फासाइ' स्पर्शान् 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'किंते' कॉस्तान=कथम्भूतांस्तान् ? इत्याह—'अणेगवह-वध-तालण-कण- अइभारारोवण-अग-भजण-सूईनखप्पवेस

हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नही करना चाहिये। गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उन में मुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके निमित्त अपने चारित्र का परित्याग नहीं कर देना चाहिये। उनमें लुभाना नहीं चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना चाहिये। यदि ये अनायास प्राप्त हो भी जावें तो उनकी प्राप्ति मे परि-तोष नही मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नही करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शों में अपनी स्मृति को एव बुद्धि को भी नहीं लगाना चाहिये। (पुणरवि) इसी तरह फिर (फासिंदिएण) स्पर्शन इन्द्रिय से (अमणुण्णपावगाइ) अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शो को स्पर्श करके उनमे साधु को द्वेष नही करना चाहिये। (किं ते ?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २ पदार्थो मे रहते है, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि (अणेगवहवध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्व, न सइ च मइच तत्थ कुज्जा" કદી પણ આસક્તિથી પોતાના ચિત્તને બાધવુ નહી, તેમનામા રાગભાવ કરવો નહી તેની લાલસા રાખવી નહી તેમા મુગ્ધ થવુ નહી,-તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન કરવો જોઈએ તેમા લોભાવુ ન જોઇએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન પણ કરવો જોઇએ નહી જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ માનવો જોઈએ નહી તેની પ્રાપ્તિમા વિસ્મય પણ બતાવવુ જોઈએ નહી અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલ સ્પર્શોનુ સ્મરણ કરવુ જોઇએ નહી અને તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી "पुणरवि" એ જ રીતે 'फासिंदिएण" સ્પર્શેન્દ્રિયથી "अमणुण्णपावगाइ" અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઇએ નહીં "किं ते ?" અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે "अणेगवहबध तालणंकण-अइभारारोवण

-गायपच्छण लक्खारस-खारतेल्ल कलकलत तउअसीसककाललोहसिंचण हडिबंधण रज्जुनिगल-सकलहत्थडुय-कुंभिपागदहण-सीहपुच्छण- उब्बंधण- सूलभेय-गय चलणमलण-करचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयण-जिब्भछेयणवसणनयणहिययदंतभंजण-जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविकच्छुअगणि-विच्छुय डक्कवायायव-दंसमसग-निवाए 'अनेकवधबन्धताडनाङ्कनातिभारारोपणाङ्गभञ्जन-सूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लाक्षारस क्षारतैलकलकलायमानत्रपुक सीसककाललोहसेचनहडिबन्धनरज्जुनिगडसकलहस्तान्दुक कुम्भीपाकदहनसिंहपुच्छोद्बन्धन शूल भेद-गजचरणमर्दन-करचरणकर्णनासाष्ठ शीर्षच्छेदनवृषणनयन हृदयदन्तभञ्जनयो-त्रलताकशाप्रहारपादपार्ष्णिजानुप्रस्तरनिपातपीडनकपिकच्छ्वग्नि-वृश्चिक- दंशवाता-तपदंशमशकनिपातान्, तत्र-अनेको बहुविधो यो वधः=यष्ट्याद्याघातः, रज्ज्वा-दिभिर्बन्धः, ताडनम्=चपेटादिताडनम्, अङ्कनम्=तप्तायः शलाकादिना गात्रे चिह्नक-रणम्, अतिभारारोपणम्=प्रमाणाधिकभारसमारोपणम्, अङ्गभञ्जनम्=शरीरावयव-त्रोटनम्, 'सूईनखप्पवेस' सूचीनखप्रवेश'=सूचीनां नखेषु प्रवेशः=प्रवेशकरणम्,

अंगभंजणसूईनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतेल्लकलकलत-तउ सीसककाललोहसिंचण-हडिबंधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुय कुंभि-पाकदहण- सीहपुच्छण-उब्बंधण-सूलभेय-गयचलणमलण- करचरणकन्न नासोट्ठसीसच्छेयणजिब्भछेयण-वसण-- नयणहियय-दंतभंजण- जोत्तल-यकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविकच्छुअगणिविच्छु-यडक्कवायायवदंसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्ट्यादि द्वारा आघात करने रूप वध, बंधण-रज्ज्वादि द्वारा बांधनेरूप बंधन, तालण-चपेटा-थप्पड आदि मारने रूप ताडन, अंकण-तपी हुई लोहे की सलाई से शरीर में चिह्न करने रूप अंकन, (अईभारारोवण) प्रमाण से अधिक भार का लादना, (अंगभंजण) शारीरिक अवयव को तोडना (सूईन-

अंगभंजण-सूईनखप्पवेस-गायपच्छण--लक्खारस खारतेल्लकलकलत--तउसीसककाल लोहसिंचण-हडिबंधण रज्जुनिगल सकलन हत्थडुयकुंभिपाकदहणसीहपुच्छण उब्ब-धण--सूलभेय गयचलणमलण करचरणकन्ननासोट्ठ सीसछेयण जिब्भछेयण -वसण नयण हिययदंतभंजण-जोत्तलयकसप्पहार पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पीलणकवि कच्छु-अगणिविच्छुय-डक्कवायायवदंसमसगनिवाए " ते अनेक प्रकारनी लाकडी आदिना प्रहाररूप वध, बंधण-दोरडा आदि बांधवारूप बंधन तालण-थप्पड आदिना मार रूप ताडन, अंकण-तपावेला लोढाना सळीया वडे शरीर पर डाम देवारूप निशान, अइभारारोवण-वधारे प्रमाणमां भार लादवो, अंगभंजण-शरीरना अंगनुं छेदन सूईनखप्पवेस-सोयने नखमां भोंकी देवी, गायपच्छण-

प्यर्थं नैवाधिको यत्नो विधेयः, ' न तुसियव्व ' न तोष्टव्यं-तत्प्राप्तौ परितोषो न कर्तव्य, ' न हसियव्व न हसितव्यम्-प्राप्तौ विस्मयेन हासो न कर्तव्यः। तथा श्रमण ' तत्थ ' तत्र=पूर्वोक्तशुक्तद्विषये ' सइ च ' स्मृतिं=स्मरण च ' मतिं= बुद्धिनिवेश च ' न कुज्जा ' न कुर्यात्। ' पुणरवि ' पुनरपि उच्यते-' फासिंदिएण ' स्पर्शेन्द्रियेण ' अमनुण्णपावगाइ ' अमनोज्ञपापकान्=अरुचिकरानित्यर्थः, ' फासाइ ' स्पर्शान् ' फासिय ' स्पृष्ट्वा ' किंते ' कॉस्तान=स्वभूतोंस्तान् ? इत्याह—'अणेगवह-वध-तालण-कण- अइभारारोवण-अग-भजण-सूईनखप्पवेस

हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नही करना चाहिये। गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उन में मुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके निमित्त अपने चारित्र का परित्याग नहीं कर देना चाहिये। उनमें लुभाना नहीं चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना चाहिये। यदि ये अनायास प्राप्त हो भी जावें तो उनकी प्राप्ति मे परि-तोष नही मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नही करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शों में अपनी स्मृति को एव बुद्धि को भी नही लगाना चाहिये। (पुणरवि) इसी तरह फिर (फासिंदिएण) स्पर्शन इन्द्रिय से (अमणुण्णपावगाइ) अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शो को स्पर्श करके उनमे साधु को द्वेष नही करना चाहिये। (किं ते ?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २ पदार्थो मे रहते है, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये सूत्रकार कहते है कि (अणेगवहवध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्व, न सइ च मइच तत्थ कुज्जा " કદી પણ આસક્તિથી પોતાના ચિત્તને બાધવુ નહી, તેમનામા રાગભાવ કરવો નહી તેની લાલસા રાખવી નહી તેમા મુગ્ધ થવુ નહી,-તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન કરવો જોઈએ તેમા લોભાવુ ન જોઈએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન પણ કરવો જોઈએ નહી જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ માનવો જોઈએ નહી તેની પ્રાપ્તિમા વિસ્મય પણ બતાવવુ જોઈએ નહી અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલ સ્પર્શોનુ સ્મરણ કરવુ જોઈએ નહી અને તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી "पुणरवि" એ જ રીતે ' फासिंदिएण " સ્પર્શેન્દ્રિયથી " अमणुण्णपावगाइ " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં " किं ते ? " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે " अणेगवहवध--तालणकण--अइभारारोवण

-गायपच्छण लक्खारस-खारतेल्ल कलकलत तउअसीसककाललोहसिंचण हडिबधण रज्जुनिगल-सकलहत्थडुय-कुंभिपाकदहण-सीहपुच्छण- उब्बंधण- सूलभेय-गय चलणमलण-करचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयण-जिब्भछेयणवसणनयणहिययदतभजण-जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविकच्छुअगणि-विच्छुय डक्कवायायव-दसमसग-निवाए' अनेकवधबन्धताडनाङ्कनातिभारारोपणाङ्गभञ्जन-सूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लाक्षारस क्षारतैलकलकलायमानत्रपुक सीसककाललोहसेचनहडिबन्धनरज्जुनिगडसकलहस्तान्दुक कुम्भीपाकदहनसिंहपुच्छोद्बन्धन शूल भेद-गजचरणमर्दन-करचरणकर्णनासोष्ठ शीर्षच्छेदनवृषणनयन हृदयदन्तभञ्जनयोत्रलताकशाप्रहारपादपार्ष्णिजानुप्रस्तरनिपातपीडनकपिकच्छ्वग्नि वृश्चिक-दशवातातपदंशमशकनिपातान् , तत्र-अनेको बहुविधो यो वधः=यष्ट्याद्याघातः, रज्ज्वादिभिर्बन्धः, ताडनम्=चपेटादिताडनम्, अङ्कनम्=तप्तायः शलाकादिना गात्रे चिह्नकरणम् , अतिभारारोपणम्=प्रमाणाधिकभारारोपणम्, अङ्गभञ्जनम्=शरीरावयवत्रोटनम् , 'सूईनखप्पवेस' सूचीनखप्रवेशः=सूचीनां नखेषु प्रवेशः=प्रवेशकरणम् ,

---

अगभजणसूईनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतेल्लकलकलत-तउ सीसककाललोहसिंचण-हडिबधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुय कुंभिपाकदहण- सीहपुच्छण-उब्बधण-सूलभेय-गयचलणमलण- करचरणकन्न नासोट्ठसीसच्छेयणजिब्भछेयण-वसण-- नयणहियय-दतभजण- जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविकच्छुअगणिविच्छुयडक्कवायायवदसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्ट्यादि द्वारा आघात करने रूप वध, बधण-रज्ज्वादि द्वारा बाधनेरूप बधन, तालण-चपेटा-थप्पड आदि मारने रूप ताडन, अकण-तपी हुई लोहे की सलाई से शरीर में चिह्न करने रूप अकन, (अईभारारोवण) प्रमाण से अधिक भार का लादना, (अगभजण) शारीरिक अवयव को तोडना (सूईन-

---

अगभजण-सूईनखप्पवेस-गायपच्छण—लक्खारस खारतेल्लकलकलत--तउसीसककाल लोहसिंचण-हडिबधण रज्जुनिगल सकलन हत्थडुयकुंभिपाकदहणसीहपुच्छण उब्ब-धण--सूलभेय गयचलणमलण करचरणकन्ननासोट्ठ सीसछेयण जिब्भछेयण -वसण नयण हिययद तभजण-जोत्तलयकसप्पहार- पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पीलणकवि कच्छु-अगणिविच्छुय-डक्कवायायवदसमसगनिवाए " ते અનેક પ્રકારની લાકડી આદિના પ્રહારરૂપ વધ, બધણ-દોરડા આદિ બાધવારૂપ બધન, तालण-થપ્પડ આદિના માર રૂપ તાડન, अकण-તપાવેલા લેઢાના સળીયા વડે શરીર પર ડામ દેવારૂપ નિશાન, अइभारारोवण-વધારે પ્રમાણમા ભાર લાદવો, अगभजण-શરીરના અંગનુ છેદન सूईनखप्पवेस-સોયને નખમા ભોંકી દેવી, गायपच्छण-

त्यर्थ नैवाधिको यत्नो विधेयः, ' न तुसियव्व ' न तोष्टव्य-तत्प्राप्तौ परितोषो न कर्तव्य, ' न हसियव्व न हसितव्यम्-प्राप्तौ विस्मयेन हासो न कर्तव्यः। तथा श्रमण ' तत्थ ' तत्र=पूर्वोक्तभुक्तविषये ' सइ च ' स्मृतिं=स्मरण च ' मतिं= बुद्धिनिवेश च ' न कुज्जा ' न कुर्यात्। ' पुणरवि ' पुनरपि उच्यते-' फासिंदिएण ' स्पर्शेन्द्रियेण ' अमनुण्णपावगाइ ' अमनोज्ञपापकान्=अरुचिकरानित्यर्थः, ' फासाइ ' स्पर्शान ' फासिय ' स्पृष्ट्वा ' किंते ' कॉस्तान्=कथम्भूतांस्तान् ? इत्याह—'अणेगवह-वध-तालण-कण- अइभारारोवण-अग-भजण-सूईनखप्पवेस

हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नही करना चाहिये। गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उन में मुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके निमित्त अपने चारित्र का परित्याग नही कर देना चाहिये। उनमें लुभाना नही चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना चाहिये। यदि ये अनायास प्राप्त हो भी जावें तो उनकी प्राप्ति में परितोष नही मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नही करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शो में अपनी स्मृति को एव बुद्धि को भी नही लगाना चाहिये। (पुणरवि) इसी तरह फिर (फासिंदिएण) स्पर्शन इन्द्रिय से (अमणुण्णपावगाइ) अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शो को स्पर्श करके उनमे साधु को द्वेष नही करना चाहिये। (किं ते ?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २ पदार्थो मे रहते है, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये सूत्रकार कहते है कि (अणेगवहवध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्व, न सइ च मइच तत्थ कुज्जा " કદી પણ આસક્તિથી પોતાના ચિત્તને બાંધવુ નહી, તેમનામા રાગભાવ કરવો નહી તેની લાલસા રાખવી નહી તેમા મુગ્ધ થવુ નહી,-તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન કરવો જોઈએ તેમા લોભાવુ ન જોઇએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન પણ કરવો જોઇએ નહી જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ માનવો જોઈએ નહી તેની પ્રાપ્તિમા વિસ્મય પણ બતાવવુ જોઈએ નહી અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલ સ્પર્શોનુ સ્મરણ કરવુ જોઇએ નહી અને તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહી " पुणरवि ' એ જ રીતે ' फासिंदिएण " સ્પર્શેન્દ્રિયથી " अमणुण्णपावगाइ " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઇએ નહીં " किं ते ? " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે " अणेगवहवध तालणंकण-अइभारारोवण

ष्ठशीर्षच्छेदनम्=' जिब्भछेयण ' जिह्वाच्छेदनम् , ' वसणनयणहिययदतभंजण ' वृषणनयनहृदयदन्तभञ्जनम्=वृषणस्य=अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्ताना च भञ्जनम्=विनाशनम् , ' जोत्तलयकसप्पहार ' योक्त्रलताकशाप्रहारः-योक्त्रेण =रज्जुविशेषेण, लतया=वेत्रादिलतया कशया च यः प्रहार , प्रहारः, 'पादपण्हि-जाणुपत्थरनिवाय ' पादपार्ष्णिजानुप्रस्तरनिपात'=पादयोः=चरणयोः, पार्ष्ण्योः= पादपश्चाद्भागयो , जानुनोः=' घुटना ' इतिभाषा प्रसिद्धयोश्च प्रस्तरनिपातः= पाषाणपात', ' पीलण ' पीडन=यन्त्रे पीडनम् , ' कविक च्छु ' कपिकच्छुः=तीव्रक-ण्डूतिकारकवनस्पतिविशेषः, 'अगणि' अग्निः, 'विच्छुयडक' वृश्चिकदश 'वायातव-दसमसगनिवाए' वातातपदंशमशकनिपातः=वातस्य आतपस्य दशाना मशकाना च निपतनम् , एतेषा द्वन्द्व , तॉस्तथोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा-'दुट्ठणिसिज्ज दुन्निसी-हिया' दुष्टनिषद्यादुर्नैषेधिक्यः=दुष्टनिषद्या' क्षुद्रासनानि, दुर्नैषेधिक्य=कष्टकर स्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, 'तेसु तेसु-उक्तेषु 'अमणुन्नपावगेसु' अमनोज्ञपापकेषु

नासिका, होठ और मस्तक का छेदन करना, ' जिब्भच्छेयण ' जीभ का छेदन करना ' वसण-नयण-हियय-दत-भंजण' अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दांतोंका भागना, 'जोत्त लय कस प्पहार' चमडे की रस्सी से, वेत्रा-दिलता से, तथा चाबुक से प्रहार करना, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पाव, एडी, घुटना, इन पर पत्थर का गिरना, 'पीलण' यत्र में पीलना, 'कवि कच्छु-अगणि-विच्छुय-डक' करेंच की फली, अग्निऔर बिच्छू का डक -स्पर्श, ' वायायवदसमसगनिवाए ' शीतकाल मे ठडे पवन का लगाना उष्णकाल में धूप का लगना, तथा डांस और मच्छरों का शरीर पर गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके(दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया)कष्ट कारकआसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

વવુ, " जिब्भच्छेयण " જીભનુ છેદન કરવુ, "वसण-नयण-हियय-दत-भजण" અડકોષ, નેત્ર, હૃદય અને દાત તોડવા, " जोत्त-लय-कस प्पहार " ચામડાની દોરીથી નેતર-આદિ લતાથી તથા ચાબુકથી ફટકારવુ, " पादपण्हिजाणुपत्थर-निवाय " પગ, એડી અને ઘૂટણ પર પત્થરનુ પડવુ, " पीलण "-યત્રમા પીલવુ, "कविकच्छु-अगणि-विच्छुय डक "-કરેચની ફળી, અગ્નિ અને વિછીનો ડખ, " वायायवदसमसगनिवाए " શિયાળામા ઠડો પવન લાગવો, ઉનાળામા તડકો લાગવો, તથા ડાસ અને મચ્છરોનુ શરીર પર પડવુ, એ બધા સ્પર્શનો શરીર પર અનુભવ કરીને " दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया " કષ્ટકારક આસન અને સ્વાધ્યાયની ભૂમિના સ્પર્શને અનુભવીને " तेसु अमणुन्नपावगेसु " તે

'गायपच्छण' गात्रप्रतक्षण=वास्यादिना शरीरच्छोलनम्, 'लक्खारसखारतेल्ल कलकलतउअ-सीसककाललोहसिंचण' लाक्षारसक्षारतैलकलकलायमानत्रपुकसीसककाललोहसेचनम्, लाक्षारसेन=लाक्षा=जतु तस्या रसेन=तप्तेन द्रवेण क्षार तैलेन=क्षारपदार्थमिश्रिततैलेन, कलकलायमानेन=अतितप्ततया शब्दायमानेन त्रपुकेण=रङ्गेण सीसकेन='सीसा' इतिप्रसिद्धद्रव्येण, काललोहेन=कृष्णलोहेन च यत्सेचनम् 'हडिबंधण' हडिबन्धनम्=खोडकक्षेपः, 'रज्जुनिगलसंकलन' रज्जुनिगडसङ्कलनम्=रज्ज्वा निगडेन च सकलनं=बन्धनम् 'हत्थदुय' हस्तान्दुकम्=काष्ठादिनिर्मितहस्तबन्धनसाधनेन यद्बन्धनं तद्धस्तान्दुकमुच्यते, 'कुंभिपाक' कुम्भीपाकः=कुम्भ्या=पात्रविशेषे पाकः=पचनम् 'दहण' दहनम्=अग्निना दाहकरणम्, 'सीहपुच्छण' सिंहपुच्छनम्=लिङ्गत्रोटनम्, 'उब्बंधण' उद्बन्धनं=पाशोलम्बनम्, 'सूलभेय' शूलभेदः, शूलेनभेदः=भेदनम्, 'गयचलणमलण' गजचरणमर्दकम्=गजचरणैर्मर्दनम्, 'करचरणकन्ननासोट्ठसीसच्छेयण' करचरणकर्णनासो

खप्पवेस) सूईयों को नखो मे भोकना, (गायपच्छण) वसूला आदि से शरीर के अवयवो को छोलना, 'लक्खारस' तपे हुए लाखके रससे, (खारतेल्ल) क्षारपदार्थ मिश्रित तपे हुए तैल से तथा (कलकलन) अत्यत उकलने से पिघले हुए (तउ) त्रपु-कथीर से, (सीसक) सीसे से (काललोह) काले लोहे से, (सिंचण) शरीर को सींचना-शरीर पर छिडकना (हडिबंधण) खोडे मे डालना, 'रज्जुनिगलसकलन' रस्सी और बेडी बाधना, 'हत्थडुय' हथकडी में बाधना 'कुभीपाग' कुभी में पकाना, 'दहण' अग्नि मे जलाना, 'सीहपुच्छण' लिङ्ग को तोडना, 'उब्बंधण' फासी में लटकाना, 'सूलभेय' सूलीपर चढाना, 'गयचलण'-हाथी के पैरो से कुचलना, 'करचरणकन्ननासोट्ठसीसच्छेयण' हाथ-पैर, कान,

વાસલા આદિથી શરીરના અવયવોને છોલવાની ક્રિયા, लक्खारस-ગરમ લાખના રસથી खारतेल्ल-ક્ષારયુક્ત પદાર્થથી તપાવેલા તેલથી, તથા कलकलत—અત્યત ગરમ કરવાથી ઓગળેલા "तउ" કથીરથી, "सीसक"-સીસાથી "काललोह"-કાળા લોઢાથી, "सिंचण"-શરીર પર રેડવાની ક્રિયા, "हडिबंधण"-હેડમા પૂરવુ, "रज्जुनिगलसकलन"-દોરડા અને બેડી વડે બાધવુ, "हत्थडुय"-હાથકડીમા બાધવુ, "कुभीपाग" કુભીમા પકાવવુ, "दहण"-અગ્નિમા બાળવુ "सीहपुच्छण"-લિગને તોડવુ, "उब्बंधन' ફાસીએ લટકાવવુ, "सूलभेय"-સૂળી પર ચડાવવુ, "गयचलण"-હાથીના પગ તળે ચગદાવવુ "करचरण-कन्नकासोट्ठसीसच्छेयण" હાથ, પગ, કાન, નાક, હોઠ અને મસ્તકનુ છેદન કરા

पृष्ठशीर्षच्छेदनम्=' जिब्भछेयण ' जिह्वाच्छेदनम् , ' वसणनयणहियय दंतभंजण ' वृषणनयनहृदयदन्तभञ्जनम्=वृषणस्य=अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्तानां च भञ्जनम्=विनाशनम् , ' जोत्तलयकसप्पहार ' योक्त्रलताकशाप्रहारः-योक्त्रेण =रज्जुविशेषेण, लतया=वेत्रादिलतया, कशया च यः प्रहारः, प्रहारः, 'पादपण्हि-जाणुपत्थरनिवाय ' पादपार्ष्णिजानुप्रस्तरनिपात'=पादयोः=चरणयोः, पार्ष्ण्योः= पादपश्चाद्भागयो , जानुनो.=' घुटना ' इतिभाषा प्रसिद्धयोश्च प्रस्तरनिपातः= पाषाणपात', ' पीलण ' पीडन=यन्त्रे पीडनम् , ' कविकच्छु ' कपिकच्छुः=तीव्रक-ण्डूतिकारकवनस्पतिविशेषः, 'अगणि' अग्नि., 'विच्छुयडक' वृश्चिकदंश 'वायातव-दंसमसगनिवाए' वातातपदंशमशकनिपातः=वातस्य आतपस्य दंशानां मशकानां च निपतनम् , एतेषां द्वन्द्व , तान्स्तथोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा-'दुट्ठणिसिज्ज दुन्निसी-हिया' दुष्टनिषद्यादुर्नैषेधिक्यः=दुष्टनिषद्या' क्षुद्रासनानि, दुर्नैषेधिकस्य=कष्टकर स्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, 'तेसु' तेषु-उक्तेषु 'अमणुन्नपावगेसु' अमनोज्ञपापकेषु

नासिका, होठ और मस्तक का छेदन करना, ' जिब्भच्छेयण ' जीभ का छेदन करना ' वसण-नयण-हियय-दंत-भंजण' अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दांतोंका भागना, 'जोत्त लय कस प्पहार' चमडे की रस्सी से, वेत्रा दिलता से, तथा चाबुक से प्रहार करना, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पाव, एडी, घुटना,इन पर पत्थर का गिरना, 'पीलण' यंत्र में पीलना, 'कवि कच्छु-अगणि-विच्छुय-डक' करेंच की फली,अग्निऔर बिच्छू का डंक -स्पर्श, ' वायायवदंसमसगनिवाए ' शीतकाल में ठंडे पवन का लगाना उष्णकाल में धूप का लगना, तथा डांस और मच्छरों का शरीर पर गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके(दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया)कष्ट कारकआसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

વવુ, " जिब्भच्छेयण " જીભનુ છેદન કરવુ, "वसण-नयण-हियय-दंत-भंजण" અંડકોષ, નેત્ર, હૃદય અને દાંત તોડવા, " जोत्त-लय-कस प्पहार " ચામડાની દોરીથી નેતર-આદિ લતાથી તથા ચાબુકથી ફટકારવુ, " पादपण्हिजाणुपत्थर-निवाय " પગ, એડી અને ઘૂટણ પર પત્થરનુ પડવુ, " पीलण "-યંત્રમા પીલવુ, "कविकच्छु-अगणि-विच्छुय डक्क "-કરેચની ફળી, અગ્નિ અને વિંછીનો ડંખ, " वायायवदंसमसगनिवाए " શિયાળામા ઠંડો પવન લાગવો, ઉનાળામા તડકો લાગવો, તથા ડાંસ અને મચ્છરોનુ શરીર પર પડવુ, એ બધા સ્પર્શનો શરીર પર અનુભવ કરીને " दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया " કષ્ટકારક આસન અને સ્વાધ્યાયની ભૂમિના સ્પર્શને અનુભવીને " तेसु अमणुन्नपावगेसु " તે

अरुचिकरेष्वित्यर्थः, ' फासेसु ' ' स्पर्शेषु तथा, 'अन्नेसु' अन्येषु च ' बहुविहेसु ' बहुविधेषु ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु—एवं प्रकारेषु ' कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु' कर्कशगुरुशीतोष्णरूक्षेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः =शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रूक्षाः=परुषाः एषां द्वन्द्वस्तेषु तथोक्तेषु स्पर्शेषु च ' समणेण ' श्रमणेन—साधुना 'न रुसियव्वं' न रोषितव्यम्=रोषो न कर्तव्य इत्यर्थः, ' न हीलियव्वं ' न हीलितव्यम्=अवज्ञा न कर्तव्या, ' न निंदियव्वं ' न निन्दितव्यम्, स्वमनसि निन्दा न कर्त्तव्या, ' न खिसियव्वं ' न खिसितव्यम्=परसमक्षं च निन्दा न कर्तव्या, ' न छिंदियव्वं ' न छेत्तव्यम्=छेदनं न कर्त्तव्यम् । ' न भिंदियव्वं ' न भेत्तव्यम्—भेदनं न कर्त्तव्यम्, 'न वहेयव्वं' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा—तद्विषये ' दुगुंछावत्तियावि ' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउं' उत्पादयितुं 'न लब्भा' न लभ्या—नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्श—श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेन्न तथा कर्तव्यमिति भावः ।

अमणुन्नपावगेसु) उन अमनोज्ञपापक—अरुचिकारक-स्पर्शों में, तथा (एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रूक्ष स्पर्श हैं उनमें (समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व, न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुंछावत्तियावि लब्भाउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। निंदा नहीं करनी चाहिये । गर्हा नहीं करनी चाहिये । उन पर खिसयाना नहीं चाहिये । उस अमनोज्ञ स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये । भेदन नहीं करना चाहिये । नाश नहीं करना चाहिये । और न अपने तथा परके मन मे उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોમા, તથા ' एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु " તે ઉપરાંત બીજા પણ જે કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ, સ્પર્શ છે તેમના પ્રત્યે " समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न, वहेयव्व, न दुगुंछावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ " સાધુએ રુષ્ટ થવુ જોઇએ નહી, તેમની અવહેલના ન કરવી જોઇએ નિંદા ન કરવી જોઇએ ગર્હા ન કરવી જોઈએ તેમના પર ખિજાવુ જોઇએ નહી તે અમનોજ્ઞ સ્પર્શવાળા દ્રવ્યનુ છેદન કરવુ જોઈએ નહી, ભેદન કરવુ જોઇએ નહી નાશ કરવો જોઇએ નહી અને પોતાના કે અન્યના મનમા તેમના પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરવાની પ્રવૃત્તિ ન

सम्प्रति पञ्चमीं भावनामुपसंहरन्नाह—एवम्=अनेन प्रकारेण ' फासिंदियभावणा-भाविओ' स्पर्शेन्द्रियभावनाभावित. 'अंतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः ' भवइ' भवति। ततश्च ' मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागद्वेषप्रणिहितात्मा=मनोज्ञाऽमनोज्ञा ये सुरभिदुरभय.=शुभाशुभस्पर्शास्तेषु यद्रागद्वेष तत्र प्रणिहितात्मा=संवृतात्मा, 'साहू' साधु. ' मणवयणकायगुत्ते ' मनोवचनकायगुप्तः ' संवुडे' संवृत.=संवरवान् ' पणिहिइंदिए ' प्रणिहितेन्द्रियः, प्रणिहित =वशीकृत इन्द्रियो येन तथाभूतः सन् 'धम्म' धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण धर्मं ' चरेज्ज ' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

की चेष्टा ही करना चाहिये। अब सूत्रकार इस पांचवीं भावना का उपसंहार करते हुए कहते हैं (एव फासिंदियभावणाभाविओ अंतरप्पाभवइ मणुन्नसुब्भिदुब्भिरागोदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए धम्म चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से भावित जब मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श मे रागद्वेष करने से रहित बन जाता है। इस तरह उनमें रागद्वेष करने से संवृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन, वचन और कायरूप त्रियोगों को स्पर्श संबंधी शुभ अशुभ के व्यापार से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के संवरण से युक्त बन जाता है। इस प्रकार इस इन्द्रिय के संवरण से युक्त बना हुआ वह साधु चारित्ररूप धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस परिग्रह विरमणव्रत की पांचवीं भावना का स्वरूप प्रगट किया है। इस पांचवीं भावना का

કરવી જોઈએ હવે સૂત્રકાર આ પાચમી ભાવનાનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે " एव फासिंदियभावणाभाविओ अंतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भि राग-दोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए धम्म चरेज्ज " આ રીતે જ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ જાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત બની જાય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ સબધી શુભ અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની સારી રીતે આરાધના કરવા લાગી જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાચમી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાચમી ભાવનાનુ નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

अरुचिकरेष्वित्यर्थः, 'फासेसु' 'स्पर्शेषु' गम्यः, 'अन्नेसु' अन्येषु च 'बहुविहेसु' बहुविधेषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु—एव प्रकारेषु 'कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु' कर्कशगुरुशीतोष्णरूक्षेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः =शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रूक्षाः=परुषाः, एषा द्वन्द्वस्तेषु तथोक्तेषु स्पर्शेषु च 'समणेण' श्रमणेन–साधुना 'न रुसियव्वं' न रोषव्यम्=रोषो न कर्तव्य इत्यर्थः, 'न हीलियव्वं' न हीलितव्यम्=अवज्ञा न कर्तव्या, 'न निंदियव्वं' न निन्दितव्यम्, स्वमनसि निन्दा न कर्त्तव्या, 'न खिसियव्वं' न खिसितव्यम्=परसमक्षे च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिंदियव्वं' न छेत्तव्यम्=छेदन न कर्त्तव्यम्। 'न भिंदियव्वं' न भेत्तव्यम्–भेदन न कर्त्तव्यम्, 'न वहेयव्वं' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा–तद्विषये 'दुगुंछावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउं' उत्पादयितु तु 'न लब्भा' न लभ्या–नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्शा –श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेन्न तथा कर्तव्यमिति भावः।

अमणुन्नपावगेसु) उन अमनोज्ञपापक–अरुचिकारक-स्पर्शों में, तथा (एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रूक्ष स्पर्श हैं उनमें (समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व, न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुंछावत्तियावि लब्भाउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। निंदा नहीं करनी चाहिये। गर्हा नहीं करनी चाहिये। उन पर खिसयाना नहीं चाहिये। उस अमनोज्ञ स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये। भेदन नहीं करना चाहिये। नाश नहीं करना चाहिये। और न अपने तथा परके मन मे उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોમા, તથા 'एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु" તે ઉપરાત બીજા પણ જે કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ, સ્પર્શ છે તેમના પ્રત્યે "समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न, वहेयव्व, न दुगुंछावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ" સાધુએ રુષ્ટ થવુ જોઈએ નહી, તેમની અવહેલના ન કરવી જોઈએ નિંદા ન કરવી જોઈએ ગર્હા ન કરવી જોઈએ તેમના પર ખિસિયાવુ જોઈએ નહી તે અમનોજ્ઞ સ્પર્શવાળા દ્રવ્યનુ છેદન કરવુ જોઈએ નહી, ભેદન કરવુ જોઈએ નહી નાશ કરવો જોઈએ નહી અને પોતાના કે અન્યના મનમા તેમના પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરવાની પ્રવૃત્તિ ન

सम्प्रति पञ्चमीं भावनामुपसंहरन्नाह—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिदियभावणाभाविओ' स्पर्शेन्द्रियभावनाभावित. 'अतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ' भवति। ततश्च 'मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागद्वेषपणिहितात्मा=मनोनाऽमनोज्ञा ये सुरभिदुरभयः=शुभाशुभस्पर्शास्तेषु यद्रागद्वेष तत्र प्रणिहितात्मा=संवृतात्मा, 'साहू' साधु. 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'सवुडे' सवृत.=सवरवान् 'पणिहिइदिए' प्रणिहितेन्द्रियः, प्रणिहित.=वशीकृत इन्द्रियो येन तथाभूत. सन् 'धम्म' धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

की चेष्टा ही करना चाहिये। अब सूत्रकार इस पांचवीं भावना का उपसहार करते हुए कहते हैं (एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पाभवइ मणुन्नसुब्भिदुब्भिरागोदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते सवुडे पणिहिइदिए धम्म चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से भावित जब मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श मे रागद्वेष करने से रहित बन जाता है। इस तरह उनमें रागद्वेष करने से सवृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन, वचन और कायरूप त्रियोगों को स्पर्श सबधी शुभ अशुभ के व्यापार से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के सवरण से युक्त बन जाता है। इस प्रकार इस इन्द्रिय के सवरण से युक्त बना हुआ वह साधु चारित्ररूप धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस परिग्रह विरमणव्रत की पांचवीं भावना का स्वरूप प्रगट किया है। इस पांचवी भावना का

કરવી જોઈએ હવે સૂત્રકાર આ પાંચમી ભાવનાનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે "एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भि रागदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते सवुडे पणिहिइदिए धम्म चरेज्ज" આ રીતે જ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ જાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત બની જાય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ સબધી શુભ અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે આ રીતે આ ઈન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની સારી રીતે આરાધના કરવા લાગી જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાંચમી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાંચમી ભાવનાનુ નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

अरुचिकरेष्वित्यर्थः, ' फासेसु ' ' स्पर्शेषु तेषु', 'अन्नेसु' अन्येषु च ' बहुविहेसु ' बहुविधेषु ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु—एवं प्रकारेषु ' कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु' कर्कशगुरुशीतोष्णरूक्षेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः =शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रूक्षाः=परुषाः, एषां द्वन्द्वस्तेषु तथोक्तेषु स्पर्शेषु च ' समणेण ' श्रमणेन—साधुना 'न रुसियव्वं' न रोषव्यम्=रोषो न कर्तव्य इत्यर्थः, ' न हीलियव्वं ' न हीलितव्यम्=अवज्ञा न कर्तव्या, ' न निंदियव्वं ' न निन्दितव्यम्, स्वमनसि निन्दा न कर्तव्या, ' न खिसियव्वं ' न खिंसितव्यम्=परसमक्षे च निन्दा न कर्तव्या, ' न छिंदियव्वं ' न छेत्तव्यम्=छेदन न कर्तव्यम्। ' न भिंदियव्वं ' न भेत्तव्यम्—भेदन न कर्तव्यम्, 'न वहेयव्वं' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा—तद्विषये ' दुगुञ्छावत्तियावि ' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउ' उत्पादयितु 'न लब्भा' न लभ्या—नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्श—श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेन्न तथा कर्तव्यमिति भावः।

अमणुन्नपावगेसु) उन अमनोज्ञपापक—अरुचिकारक—स्पर्शो में, तथा (एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रूक्ष स्पर्श है उनमें (समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व, न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुञ्छावत्तियावि लब्भाउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नही करनी चाहिये। निंदा नही करनी चाहिये। गर्हा नहीं करनी चाहिये। उन पर खिस याना नही चाहिये। उस अमनोज्ञ स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नही करना चाहिये। भेदन नही करना चाहिये। नाश नही करना चाहिये। और न अपने तथा परके मन मे उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોમા, તથા ' एवमाइएसु बहुविहेसु कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु " તે ઉપરાંત બીજા પણ જે કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ, સ્પર્શ છે તેમના પ્રત્યે " समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व न निंदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न, वहेयव्व, न दुगुछावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ " સાધુએ રુષ્ટ થવુ -જોઇએ નહી, તેમની અવહેલના ન કરવી જોઇએ નિંદા ન કરવી જોઇએ ગર્હા ન કરવી જોઈએ તેમના પર ખિસિયાવુ જોઇએ નહી તે અમનોજ્ઞ સ્પર્શવાળા દ્રવ્યનુ છેદન કરવુ જોઈએ નહી, ભેદન કરવુ જોઇએ નહી નાશ કરવો જોઇએ નહી અને પોતાના કે અન્યના મનમા તેમના પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરવાની પ્રવૃત્તિ ન

सम्प्रति पञ्चमीं भावनामुपसंहरन्नाह—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिंदियभावणा-भाविओ' स्पर्शेन्द्रियभावनाभावित, 'अंतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ' भवति। ततश्च 'मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहितात्मा=मनोज्ञाऽमनोज्ञा ये सुरभिदुरभय =शुभाशुभस्पर्शास्तेषु यद्रागद्वेष तत्र प्रणिहितात्मा=संवृतात्मा, 'साहू' साधु, 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'संवुडे' संवृत.=संवरवान् 'पणिहिइंदिए' प्रणिहितेन्द्रियः, प्रणिहित.=वशीकृत इन्द्रियो येन तथाभूत. सन 'धम्म' धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

की चेष्टा ही करना चाहिये। अब सूत्रकार इस पांचवीं भावना का उपसंहार करते हुए कहते हैं (एवं फासिंदियभावणाभाविओ अंतरप्पाभवइ मणुन्नमणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए धम्मं चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से भावित जब मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श मे रागद्वेष करने से रहित बन जाता है। इस तरह उनमें रागद्वेष करने से संवृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन, वचन और कायरूप त्रियोगों को स्पर्श संबंधी शुभ अशुभ के व्यापार से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के संवरण से युक्त बन जाता है। इस प्रकार इस इन्द्रिय के संवरण से युक्त बना हुआ वह साधु चारित्ररूप धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस परिग्रह विरमणव्रत की पांचवीं भावना का स्वरूप प्रगट किया है। इस पांचवीं भावना का

કરવી જોઈએ હવે સૂત્રકાર આ પાંચમી ભાવનાનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે "एवं फासिंदियभावणाभाविओ अंतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भि राग दोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहिइंदिए धम्मं चरेज्ज" આ રીતે જ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ જાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત બની જાય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ સંબંધી શુભ અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સંવરથી યુક્ત થઈ જાય છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સંવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની સારી રીતે આરાધના કરવા લાગી જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાંચમી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાંચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સંવરણ

अपरिस्रावी=कर्मजलप्रवेशरहितत्वात्, 'असकिलिट्ठो' असंक्लिष्टः=असमाधिभावर्जितत्वात् 'सुद्धो' शुद्धः-कर्ममलवर्जितत्वात्, 'सव्वजिणमणुण्णाओ' सर्वे जिनानुज्ञातः- सकलप्राणिहितकारकत्वात्सर्वैरर्हद्भिरङ्गीकृतश्चास्ति। एवम्=उक्तप्रकारेण 'पचमं संवरदारं' पचमं संवरद्वारं 'फासिय' स्पृष्टं कायेन, 'पालिय' पालित-सततमुपयोगेन सेवितम् 'सोहिय' शोधितम्-अतीचारवर्जनेन 'तीरिय' तीर्ण-तीरं प्रापितं सम्यक्पालनात्, 'किट्टिय' कीर्त्तितम्-स्तुतम्=कल्याणकारकत्वात्, 'आराहिय' आराधितम्-त्रिकरणत्रियोगैः, सम्यगाचरितत्वात्, 'आणाए' आज्ञया-सर्वज्ञवचनेन 'अणुपालिय' अनुपालित=दृढमनस्कत्वाच्च

है, (अपरिस्साई) बिन्दुमात्र भी कर्मजल इसमें प्रविष्ट नहीं हो पाता है इसलिये यह अपरिस्रावी है। (असकिलिट्ठो) असमाधिभाव से रहित होने के कारण यह असक्लिष्ट है, और (सुद्धो) कर्ममल से वर्जित होने के कारण यह शुद्ध है। (सव्वजिणमणुण्णाओ) इससे समस्त प्राणियों का हित हुआ है और आगे भी हित होगा ऐसा जानकर ही समस्त अरिहंतभगवतों ने इसे अंगीकृत किया है। (एव पचम संवरदार) इस उक्त प्रकार से जो इस संवरद्वार को (फासिय) अपने शरीर से आचरित करते हैं (पालिय) निरन्तर उपयोगपूर्वक इसका सेवन करते हैं, (सोहिय) अतिचारों से इसे रहित करते हैं, (तीरिय) पूर्णरूप से इसका सेवन करते हैं, (किट्टिय) दूसरों को इसके पालन करने का उपदेश देते हैं (आराहिय) तीनकरण तीन योग से इसकी भली प्रकार से अनुपालना करते हैं, (अणाए अणुपालिय भवइ) उनके द्वारा यह योग तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा अनुसार ही पालित

તેનાથી પાપનો સ્રોત છિન્ન થઈ જાય છે તેથી તે અચ્છિદ્ર છે, "अपरिस्साई" બિન્દુ જેટલુ પણ કર્મજળ તેમા પ્રવેશ પામી શકતુ નથી, તે અપરિસ્રાવી છે, "असकिलिट्ठो" અસમાધિભાવથી રહિત હોવાને કારણે તે અસંક્લિષ્ટ છે અને 'सुद्धो" કર્મમળ વિનાનુ હોવાથી તે શુદ્ધ છે "सव्वजिणमणुण्णाओ" તેનાથી સમસ્ત પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે અને ભવિષ્યમા પણ હિત થશે એવુ જાણીને જ સમસ્ત અરિહંત ભગવાનોએ તેને માન્ય કરેલ છે 'एव पचम संवरदार" આ સૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે જે આ પાચમા સંવરદ્વારનુ "फासिय' પોતાના શરીરથી આચરણ કરે છે, 'पालिय" નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, 'सोहिय" અતિચારોથી તેને રહિત કરે છે, 'तीरिय" પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે "किट्टिय" અન્યને તેના પાલનનો ઉપદેશ આપે છે "आराहिय" ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગથી સારી રીતે તેની આરાધના કરે છે, "आणाए अनुपालिय भवइ" તેમના દ્વારા તે યોગનુ તીર્થંકર પ્રભુની

भवति । एवम्=उक्तरूप पचम सवरद्वार, 'णायमुणिणा' ज्ञातमुनिना—प्रसिद्धक्षत्रियवंशोद्भवेन मुनिना भगवता महावीरेण 'पण्णविय' प्रज्ञापितम्=शिष्येभ्य सामान्यतया कथितम् 'परूविय' प्ररूपितम्=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथितम्, 'पसिद्ध' प्रसिद्धम्=प्रख्यातम्, प्रमाणप्रतिष्ठितत्वात् 'सिद्धवरसासण' सिद्धवरशासनम्=सिद्धाना—निष्ठितार्थाना=कृतकृत्यानामितियावत् वरशासन=प्रधानाज्ञारूपम्, 'इण' इदम् 'आघविय' आख्यात=सर्वतोभावेन कथितम्, 'सुदेसिय' सुदेशितम्=सदेवमनुजासुराया सभाया सुष्ठूपदिष्ट 'पसत्थ' प्रशस्त 'पचम सवरदार' पचम सवरद्वार 'समत्त' समाप्तम् 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि, अस्यार्थः पूर्वमुक्तः ॥ सू–१२ ॥

हुआ माना जाता है । (एव) इस प्रकार से (नायमुणिणा भगवया) ज्ञात नामक क्षत्रियवश में उत्पन्न हुए मुनिराज भगवान् महावीर ने (पण्णविय) शिष्यों के लिये इस पचम सवर द्वार को सामान्यरूप से समझाया, (परूविय) भेद प्रभेदपूर्वक उसका कथन किया है । (पसिद्ध) प्रमाणप्रतिष्ठित होने से जिन वचन में यह प्रख्यात हुआ है, अर्थात् जिनवचन के अनुसार ही आचार्यपरपरा से इसका पालन करना इसी रूप से चला आ रहा है । तथा (सिद्धवरसासणमिण) भूतकाल में जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह प्रधान आज्ञारूपशासन है । (आघविय) ऐसा भगवान महावीर प्रभुने सर्वभाव से इसके विषय में कहा है और (सुदेसिय) देवों, मनुजों तथा असुरो से युक्त परिषदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) सर्व प्राणियों का हितकारक होने से मगलमय है, इस प्रकार यह (पचम सवरदार समत्त) पचमसवरद्वार समाप्त हुआ, (त्तिबेमि) ऐसा मैं कहता हू । अर्थात्

આજ્ઞા પ્રમાણે જ પાલન થયુ ગણાય છે "एव" આ રીતે "नायमुणिणा भगवया" જ્ઞાતૃ કુળ નામના ક્ષત્રિય વ શમા ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન મહાવીરે "पण्णविय" શિષ્યોને માટે આ પાચમા સ વરદ્વારને સામાન્યરૂપે સમજાવ્યુ છે, "परूविय" ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનુ વિવેચન કર્યુ છે, "पसिद्ध" પ્રમાણ પ્રતિષ્ઠિત હોવાથી જિનવચનમા તે પ્રખ્યાત થયુ છે, એટલે કે જિન વચન પ્રમાણે જ આચાર્ય પરપરાથી તેનુ આ રીતે પાલન થતુ આવ્યુ છે, તથા "सिद्धवरसासणमिण" ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધો થઇ ગયા તેમનુ આ પ્રધાન આજ્ઞારૂપ શાસન છે, "अघविय" એવુ ભગવાન મહાવીરે સર્વ ભાવથી તેને વિષે કહ્યુ છે, અને "सुदेसिय" દેવો મનુષ્યો અને અસુરોની પરિષદામા તેનો ઉપદેશ દીધો છે "पसत्थ" તે સર્વ પ્રાણીઓનુ હિત કરનાર હોવાથી મ ગળમય છે, આ રીતે આ "पचम" પાચમુ "सवरदार समत्तं" સ વરદ્વાર સમાપ્ત થયુ 'त्तिबेमि" એમ હુ કહુ છુ. એટલે કે

अपरिस्रावी=कर्मजलप्रवेशरहितत्वात्, 'असंकिलिट्ठो' असंक्लिष्टः=असमाधिभाववर्जितत्वात् 'सुद्धो' शुद्धः-कर्ममलवर्जितत्वात्, 'सव्वजिणमणुण्णाओ' सर्वजिनानुज्ञातः- सकलप्राणिहितकारकत्वात्सर्वैरर्हद्भिरङ्गीकृतश्चास्ति। 'एवम्=उक्तप्रकारेण 'पचमं संवरदारं' पचम संवरद्वार 'फासियं' स्पृष्ट कायेन, 'पालियं' पालित-सततमुपयोगेन सेवितम् 'सोहियं' शोधितम्-अतीचारवर्जनेन 'तीरियं' तीर्ण-तीर प्रापित सम्यक्पालनात्, 'किट्टियं' कीर्तितम्-स्तुतम्=कल्याणकारकत्वात्, 'आराहियं' आराधितम्-त्रिकरणत्रियोगै, सम्यगाराधितत्वात्, 'आणाए' आज्ञया-सर्वज्ञवचनेन 'अणुपालियं' अनुपालित=दृढमनस्कतयाऽन्च

है, (अपरिस्साई) बिन्दुमात्र भी कर्मजल इसमें प्रविष्ट नहीं हो पाता हैं इसलिये यह अपरिस्रावी है। (असंकिलिट्ठो) असमाधिभाव से रहित होने के कारण यह असंक्लिष्ट है, और (सुद्धो) कर्ममल से वर्जित होने के कारण यह शुद्ध है। (सव्वजिणमणुण्णाओ) इससे समस्त प्राणियों का हित हुआ है और आगे भी हित होगा ऐसा जानकर ही समस्त अरिहंतभगवंतो ने इसे अंगीकृत किया है। (एवं पचम संवरदार) इस उक्त प्रकार से जो इस संवरद्वार को (फासियं) अपने शरीर से आचरित करते हैं (पालियं) निरन्तर उपयोगपूर्वक इसका सेवन करते हैं, (सोहियं) अतिचारों से इसे रहित करते हैं, (तीरियं) पूर्णरूप से इसका सेवन करते हैं, (किट्टियं) दूसरों को इसके पालन करने का उपदेश देते हैं (आराहियं) तीनकरण तीन योग से इसकी भली प्रकार से अनुपालना करते हैं, (अणाए अणुपालियं भवइ) उनके द्वारा यह योग तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा अनुसार ही पालित

તેનાથી પાપનો સ્રોત છિન્ન થઈ જાય છે તેથી તે અચ્છિદ્ર છે, "अपरिस्साई" બિન્દુ જેટલુ પણ કર્મજળ તેમા પ્રવેશ પામી શકતુ નથી, તે અપરિસ્રાવી છે, "असंकिलिट्ठो" અસમાધિભાવથી રહિત હોવાને કારણે તે અસંકિલષ્ટ છે અને 'सुद्धो" કર્મમળ વિનાનુ હોવાથી તે શુદ્ધ છે "सव्वजिणमणुण्णाओ" તેનાથી સમસ્ત પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે અને ભવિષ્યમા પણ હિત થશે એવુ જાણીને જ સમસ્ત અરિહંત ભગવાનોએ તેને માન્ય કરેલ છે 'एवं पचम संवरदार" આ સૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે જે આ પાચમા સંવરદ્વારનુ "फासियं' પોતાના શરીરથી આચરણ કરે છે, "पालियं" નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, 'सोहियं" અતિચારોથી તેને રહિત કરે છે, 'तीरियं" પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે "किट्टियं" અન્યને તેના પાલનનો ઉપદેશ આપે છે "आराहियं" ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગથી સારી રીતે તેની આરાધના કરે છે, "आणाए अनुपालियं भवइ" તેમના દ્વારા તે યોગનુ તીર્થંકર પ્રભુની

अपि ' वयाइ ' व्रतानि–अहिंसादीनि ' महव्वयाइ ' महाव्रतानि ' हेउसयविचित्त-पुक्खलाइ ' हेतुशतविचित्तपुष्कलानि=हेतुशतैः= उपपत्तिशतैः विचित्रैः=निर्दोषैः कृत्वा पुष्कलानि=विस्तीर्णानि ' कहियाइ ' कथितानि 'अरिहतसासणे' अर्हच्छासने–जिनप्रवचने । ते च ' सवरा ' ' समासेण ' समासेन सक्षेपेण ' पच' पञ्च–पञ्चसख्यकाः, ' वित्थरेण उ ' विस्तरेण तु ' पणवीसइ ' पञ्चविंशतिः–प्रतिसवरद्वार पञ्चपञ्चभावनासत्त्वेन पञ्चविंशतिसख्यकाः भवन्ति । अथ सवरधारिणा भाविनी दशा वर्ण्यते–' सजए ' सयत –साधु' ' समिए ' समितः–ईर्यासमित्यादिभिः पञ्चविंशतिभावनाभिर्युक्त , ' सहिए ' सहितः-ज्ञानादर्शनाभ्या युक्त , ' सवुडे ' सवृतः=कषायेन्द्रियसवरणयुक्तः ' सया ' सदा ' जयणघडणसुविसुद्ध-

अब सूत्रकार पाचो सवरों का उपसहार करते हुए कहते हैं—' एयाइ ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(सुव्वय !) शोभनव्रत सपन्न हे जम्बू ! (एयाइ पचवि महव्वयाइ) ये पाचों ही अहिंसा आदिक महाव्रत (अरिहतसासणे हेउसयविचित्तपुक्खलाइ कहियाइ) अर्हत प्रभु के शासन में सैकडो निर्दोष युक्तियों से विस्तृत करके कहे गये हैं । (सवरा समासेण पच) वे सवर सक्षेप से पाच हैं परन्तु (वित्थरेण उ पणवीसई) विस्तार से पाच २ अपनी२ भावनाओं से सहित होने के कारण ये पचीस हो जाते हैं । (सजए) इन सवरद्वारों का पालन करने वाला सयत (समिए) ईर्यासमिति आदि पच्चीस भावनाओ से युक्त (सहिए) ज्ञानदर्शन से सहित और (सवुडे) कपाय एव इन्द्रियो के सवरण से युक्त होता हुआ (सया) सदा (जयणघडण सुविसुद्दसणे) अपने तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप दर्शन को

હવે સૂત્રકાર પાચે સવરોનો ઉપસહાર કરતા કહે છે " एयाइ ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—' सुव्वय ! " શોભનવ્રત યુક્ત હે જબૂ ! " एयाइ पचवि मह व्वयाइ " અહિંસા આદિ તે પાચે મહાવ્રત "अरिहत सासणे हेउसयविचित्त पुक्खलाइ कहियाइ " અર્હંત પ્રભુના શાસનના સેકડો નિર્દોષ યુક્તિયોથી વિસ્તારથી કહેવામા આવ્યા છે " सवरा समासेण पच " તે સવર સક્ષિપ્તમા પાચ છે પણ " वित्थरेण उ पणवीसई " વિસ્તારથી પોત પોતાની પાચ પાચ ભાવનાઓ સહિત હોવાને કારણે પચીસ થાય છે "सजए" એ સવરદ્વારનુ પાલન કરનાર સયત "समिए" ઈર્યાસમિતિ આદિ પચીસ ભાવનાઓથી યુક્ત"सहिए" જ્ઞાનદર્શનથી યુક્ત અને " सवुडे " કપાય અને ઇન્દ્રિયોના સવરણથી યુક્ત થઈને " सया ' સદા ", जयणघडणसुविसुद्धदसणे " પોતાના તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાન

अथ संवरपञ्चकमुपसंहरन्नाह—' एयाइं ' इत्यादि ।

मूलम्–एयाइं वयाइं पंचवि सुव्वय महव्वयाइं हेउसय विवित्तपुक्खलाइं कहियाइं अरिहंतसासणे पत्र समासेण संवरा वित्थरेण उ पणवीसई समिए सहिए संवुडे सया जयण घडण सुविसुद्धदंसणे एए अणुचरिय संजए चरमसरीरधरे भविस्स तीति ॥ सू० ॥ १३ ॥

॥ इय पंचम संवरदार समत्तं ॥

टीका—' एयाइं ' इत्यादि—

' सुव्वय ' सुव्रत–हे शोभनव्रत जम्बूः । ' एयाइं ' एतानि ' पंचवि ' प-

---

हे जम्बू ! इस पचम संवरद्वार का जैसा कथन मैं ने साक्षात् भगवान् महावीर के मुख से सुना है वैसा ही यह मैं ने तुमसे कहा है। अपनी तरफ से इसमें मैंने कुछ भी मिश्रित कर नहीं कहा है।

भावार्थ—इन पूर्वोक्त पाच भावनाओं से अच्छी तरह सेवित होने पर यह अपरिग्रह नामक पाचवा संवरद्वार स्थिर हो जाता है। इस-लिये मुनिजन को इसका पालन इस रूप से करना अवश्य है। समस्त तीर्थंकरों ने इसे सर्वप्राणियों का हितकारक जानकर पालित किया है। यह अनाश्रव आदि विशेषणों वाला है। भगवान् महावीर प्रभु ने भी इसके पालन करने का उपदेश परिषदा में जीवों को दिया है। ऐसा मंगलमय यह पाचवा संवरद्वार समाप्त हुआ ॥ सू० १२ ॥

" હે જબૂ ! આ પાચમા સવરદ્વારનુ કથન જે પ્રમાણે મેં સાક્ષાત્ મહાવીર પ્રભુને મુખે સાભળ્યુ હતુ, એ જ પ્રમાણે તે હુ તમને કહુ છુ મારી તરફથી તેમા કઈ પણ ઉમેરવામા આવ્યુ નથી

ભાવાર્થ—પૂર્વોક્ત પાચ ભાવનાઓનુ સારી રીતે સેવન કરવામા આવે તો અપરિગ્રહ નામનુ પાચમુ સવરદ્વાર સ્થિર થઈ જાય છે તેથી મુનિજને તેનુ તે રીતે પાલન કરવુ અતિ આવશ્યક છે બધા તીર્થંકરોએ તેને સઘળા પ્રાણીઓનુ હિતકારક સમજીને તેનુ પાલન કરેલ છે તે અનાશ્રવ આદિ વિશેષણો વાળુ છે ભગવાન મહાવીરે પણ પરિષદાઓમા તેનુ પાલન કરવાનો ઉપદેશ જીવોને આપ્યો છે એવુ મંગળમય આ પાચમુ સવરદ્વાર સમાપ્ત થયુ સૂ૧૨

विलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएण अग जहा आयारस्स ॥सू०१४॥

॥ इय पण्हावागरणं संमत्तं ॥

टीका—' पण्हावागरणेण ' इत्यादि–

प्रश्नव्याकरणे खलु एकः श्रुतस्कन्धः दश अध्ययनानि, एतानि कीदृशानि ? एकसरकाणि=उद्देशविभागादिरहितानि । एतान्यध्ययनानि दशस्वेव दिवसेषूद्दिश्यन्ते । तथा–एकान्तरेषु आचाम्लेषु निरुद्धेषु=स्वीकृतेषु सत्सु आयुक्तभक्तपानेन=भक्तपाने आयुक्त –आयुक्तभक्तपानस्तेन तथा, अशनादौ दत्तोपयोगेनेत्यर्थ , इदमङ्गमुद्दिश्यते। अस्यावशिष्ट सर्व यथा आचारस्य=आचाराङ्गस्य तथैव विज्ञेयम्१४

॥ इतिप्रश्नव्याकरण नाम दशमाङ्ग संपूर्णम् ॥

अब सूत्रकार इस दशवे अग मे कितने श्रुतस्कंध आदि है यह दिखलाते हैं—' पण्हावागरणेण ' इत्यादि० ।

टीकार्थ— (पण्हावागरणेण) इन प्रश्नव्याकरण में (एगो सुयक्खधो) एक श्रुतस्कध है । (दस अज्झयणा) दश अध्ययन है । ये दशों ही अध्ययन (एक्क सरगा) उद्देश विभाग आदि से रहित है । (दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति) और दश ही दिनों में इनकी वाचना की जाती है । (एगतरेसु आयविलेसु निरूद्धेसु आउत्तभत्तपाणएण) सभा में इसकी वाचना करने वाले साधु को दशदिन तक एकान्तर से आयविल करना चाहिये । आचाम्लव्रत करने मे अशनादि सामग्री पर एषणादि शुद्धि का विशेष ध्यान रखना चाहिये ।इस सूत्र का अवशिष्ट अश जैसा आचाराग सूत्र का है वैसा ही जानना चाहिये ॥ सू–१५ ॥

॥ इस तरह प्रश्नव्याकरण नामका यह दशवां अग समाप्त हुआ ॥

હવે આ દશમા અગમા કેટલા શ્રુતસ્કધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—" पण्हावागरणेण " ઇત્યાદિ–

ટીકાર્થ—" पण्हावागरणेण " આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા "एगो सुयक्खधो" એક શ્રુતસ્કધ છે "दस अज्झयणा" દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન 'एक्कसरगा" ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે "दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति" અને દસ દિવસમા જ તેનુ વાચક કરી શકાય છે "एगतरेसु आयविलेसु निरुद्धेसु आउत्त भत्तपाणएण" સભામા તેનુ વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ સુધી એકાન્તરે આય બિલ કરવા જોઈએ આય બિલવ્રત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એષણાદિ શુદ્ધિનુ ખાસ ધ્યાન રાખવુ જોઈએ આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અ ગ જેવો આચારાગ સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો જોઇએ ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામનુ આ દશમુ અગ સમાપ્ત થયુ ॥

दंसणे ' यतनघटनसुविशुद्धदर्शनः, यतनेन=प्राप्तसंयमसंयोगेषु प्रयत्नेन, घटनेन=अप्राप्तसंयमसंयोगप्राप्त्यर्थघटनया च सुविशुद्धं दर्शनं=श्रद्धानरूपं यस्य, स तथा, 'एए' एतान् उक्तरूपान् संवरान् अणुचरिय ' अनुचर्य आसेव्य 'चरमसरीरधरे' चरमशरीरधरः=अन्तिमशरीरधारी भविस्सतीति-भविष्यतीतिविज्ञेयम् ॥सू०१३॥

इति पञ्चम संवरद्वारं समाप्तम् ॥

साम्प्रतं दशमाङ्गेऽस्मिन् कियन्तःश्रुतस्कन्धादि तद्दर्शयति ' पण्हावागरणेण ' इत्यादि—

मूलम्—पण्हावागरणेणं एगो सुयक्खंधो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु अद्दिसिज्जंति, एगंतरेसु आयं-

यतन से-प्राप्तसंयम के संरक्षणरूप प्रयत्न से तथा घटन से-अप्राप्तसंयम की प्राप्ति करने की घटना से सुविशुद्ध रखता है। (एए अणुचरिए) इन पूर्वोक्तरूप संवरों को पालन करके (चरिमसरीरधरे) अन्तिमशरीरधारी (भविस्सइ) होवेगा। ऐसा जान लेना चाहिये।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा समझाया है कि जो मुनि इन पांचों संवरद्वारों का शास्त्रमर्यादा के अनुसार पालन करेगा और पच्चीस भावनाओंसे इन्हे स्थिर रखेगा, वह चरमशरीरी होगा, अर्थात् उसका पुनः जन्म संसार में नही होगा, वह अवश्य ही मोक्ष प्राप्त करने वाला होगा। ये संक्षेपतः संवरद्वार पांच ही हैं-परन्तु विस्तार की अपेक्षा अपनी २ पांच भावनाओं से सहित होने के कारण ये पच्चीस भी हो जाते हैं ॥ सू० १३ ॥

॥ पांचवां संवरद्वार समाप्त ॥

રૂપ દર્શનને પ્રયત્નપૂર્વક-પ્રાપ્ત સંયમના સંરક્ષણરૂપ પ્રયત્નથી તથા ઘટનથી અપ્રાપ્ત સંયમની પ્રાપ્તિ કરવાની ઘટનાથી અત્યંત વિશુદ્ધ રાખે છે " एए अणुचरिए " એ પૂર્વોક્ત સંવરોનું પાલન કરીને " चरिमसरीरधरे " અન્તિમ શરીરધારી " भविस्सइ " થશે એ પ્રમાણે સમજી લેવું

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સમજાવ્યું છે કે જે મુનિ આ પાંચે સંવરદ્વારોનું શાસ્ત્રમર્યાદા અનુસાર પાલન કરશે અને પચીસ ભાવનાઓ વડે તેમને સ્થિર રાખશે, તે ચરમ શરીરી થશે, એટલે કે તેને સંસારમાં ફરી જન્મ લેવો પડશે નહીં, તે અવશ્ય મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે સંક્ષિપ્તમાં પાંચ જ સંવરદ્વાર છે, પણ વિસ્તારની અપેક્ષાએ પોત પોતાની પાંચ પાંચ ભાવનાઓ સહિત હોવાને કારણે તે પચીસ પણ કહી શકાય છે॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

॥ પાંચમું સંવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

विलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएणं अंग जहा आयारस्स ॥सू०१४॥

॥ इय पण्हावागरणं संमत्त ॥

टीका—' पण्हावागरणेण ' इत्यादि-

प्रश्नव्याकरणे खलु एकः श्रुतस्कन्ध. दश अध्ययनानि, एतानि कीदृशानि ? एगसरकाणि=उद्देशविभागादिरहितानि । एतान्यध्ययनानि दशस्वेव दिवसेपूद्दिश्यन्ते । तथा-एकान्तरेषु आचाम्लेषु निरुद्धेषु=स्वीकृतेषु सत्सु आयुक्तभक्तपानेन=भक्तपाने आयुक्त -आयुक्तभक्तपानस्तेन तथा, अशनादौ दत्तोपयोगेनेत्यर्थ, इदमङ्गमुद्दिश्यते । अस्यावशिष्ट सर्वं यथा आचारस्य=आचाराङ्गस्य तथैव विज्ञेयम् १४

॥ इतिप्रश्नव्याकरण नाम दशमाङ्ग संपूर्णम् ॥

अब सूत्रकार इस दशवे अग मे कितने श्रुतस्कंध आदि है यह दिखलाते हैं—' पण्हावागरणेण ' इत्यादि० ।

टीकार्थ— (पण्हावागरणेण) इन प्रश्नव्याकरण में (एगो सुयक्खधो) एक श्रुतस्कध है । (दस अज्झयणा) दश अध्ययन हैं । ये दशों ही अध्ययन (एक्क सरगा) उद्देश विभाग आदि से रहित हैं । (दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति) और दश ही दिनों में इनकी वाचना की जाती है । (एगतरेसु आयविलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएण) सभा में इसकी वाचना करने वाले साधु को दशदिन तक एकान्तर से आयबिल करना चाहिये । आचाम्लव्रत करने में अशनादि सामग्री पर एपणादि शुद्धि का विशेप ध्यान रखना चाहिये ।इस सूत्र का अवशिष्ट अश जैसा आचाराग सूत्र का है वैसा ही जानना चाहिये ॥ सू-१५ ॥

॥ इस तरह प्रश्नव्याकरण नामका यह दशवा अग समाप्त हुआ ॥

હવે આ દશમા અગમા કેટલા શ્રુતસ્કધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—" पण्हावागरणेण " ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ—" पण्हावागरणेण " આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા "एगो सुयक्खधो" એક શ્રુતસ્કધ છે "दस अज्झयणा" દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન 'एक्कसरगा" ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે "दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति" અને દસ દિવસમા જ તેનુ વાચક કરી શકાય છે "एगतरेसु आयबिलेसु निरुद्धेसु आउत्त भत्तपाणएण" સભામા તેનુ વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ સુધી એકાન્તરે આય બિલ કરવા જોઈએ આય બિલવ્રત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એષણાદિ શુદ્ધિનુ ખાસ ધ્યાન રાખવુ જોઈએ આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અગ જેવો આચારાગ સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો જોઈએ ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણુ નામનુ આ દશમુ અગ સમાપ્ત થયુ ॥

॥ अथ शास्त्रप्रशस्तिः ॥

सौराष्ट्रे मुनिभि सार्क, विहार कुर्वता मया ।
चातुर्मास्य,मुदेनैव, नीतं जेतपुरे पुरे ॥ १ ॥
ततो विहरमाणोऽहं, धोराजीनाम विश्रुते ।
पुरे समागतः शेष,-काले तैर्मुनिभिः सह ॥ २ ॥
सप्ताधिके वैक्रमाब्दे, सहस्रद्वयसंख्यके ।
पौषे पुष्ये पौर्णमास्या, शुभद भौमवासरे ॥ ३ ॥
प्रश्नव्याकरणस्येय, वृत्तिर्नाम्ना सुदर्शनी ।
रचिता घासिलालेन, श्रीसंघेन समादृता ॥ ४ ॥
लिमड़ी संघस्थापित-पौषधशाला च विद्यते तत्र ।
प्रवचनरहस्यपूर्णा, सेयं शिवसौख्यदा पूर्णा ॥ ५ ॥

टीकाकार की प्रशस्ति

सौराष्ट्रदेश मे मुनिजनो के साथ विहार करते हुए मैं ने जेतपुर में आनदपूर्वक चौमासा किया। वहा से विहार कर मैं उन मुनिजनों के साथ धोराजी नाम से प्रसिद्ध शहर में आया। शेप काल वहाँ रहकर विक्रम सवत् २००७ के पौष मास, पौर्णमासी तिथि मगलवार और पुष्यनक्षत्रके दिन प्रश्नव्याकरणकी यह वृत्ति जिसका नाम सुदर्शिनी है मैं ने-घासीलाल ने-रची है। वहा के श्रीसघ ने इसका अच्छा आदर किया। उस शहर में लिमड़ी सघ के द्वारा स्थापित की हुई एक पौषध शाला है। उसमें ठहर कर प्रवचन के रहस्य से परिपूर्ण और शिव के सुख की दाता यह वृत्ति पूर्ण हुई है ॥

॥ ટીકાકારની પ્રશસ્તિ ॥

સૌરાષ્ટ્રમા મુનિજનોની સાથે વિહાર કરતા મે જેતપુરમા, આનદપૂર્વક ચોમાસુ વ્યતીત કર્યું, ત્યાથી વિહાર કરીને હુ મુનિઓ સાથે ધોરાજી નામના પ્રસિદ્ધ શહેરમા આવ્યો શેષ કાળમા ત્યા રહીને વિક્રમ સવત ૨૦૦૭ના પોષ માસની પૂર્ણિમાની તિથિને મગળવાર અને પુષ્પ નક્ષત્રના દિવસે પ્રશ્નવ્યાકરણની આ વૃત્તિ જેનુ નામ સુદર્શિની છે, તે મે-ઘાસીલાલે રચી છે ત્યાનો શ્રી સઘે તેનો ઘણો આદર કર્યો તે શહેરમા લિમડી સઘ દ્વારા સ્થપયેલ એક પૌષધશાળા છે ત્યા રહીને પ્રવચનના રહસ્યથી પરિપૂર્ણ અને મોક્ષના સુખની દાતા આ વૃત્તિ મે પૂરી કરી છે ॥ ૫ ॥

सचमहिमा-

धोराजी नगरस्य एष परमोदारो महाधार्मिकः,
शुद्धस्थानकवासिधर्मनिरतः सम्यक्त्वभावान्वितः।
तत्त्वातत्त्वपयोविवेचनविधौ हंसायमानः सदा,
सर्वेषामुपकारको विजयते श्री जैनसङ्घोमहान् ॥ ६ ॥
देवे गुरौ धर्मपथे च भक्ति र्येषा सदाचाररुचिश्च नित्यम्।
ते श्रावका धर्मरता उदारा, सुश्राविकाः सन्ति गृहे गृहेऽत्र ॥ ७ ॥
मङ्गल भगवान् वीरो मङ्गल गौतमः प्रभुः।
सुधर्मा मङ्गल जम्बू-जैनधर्मश्च मगलम्।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ - प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक- वादिमानमर्दक-श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचिता दशमाङ्गस्य श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्या व्याख्या समाप्ताः

॥ शुभ भूयात् ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

संघमहिमा—

धोराजी शहर का यह महान् श्री जैनसंघ अत्यन्त उदार है, परमधार्मिक है, शुद्धस्थानकवासी धर्म में लवलीन है, सम्यक्त्व भाव से युक्त है, तत्त्व अतत्त्व का क्षीर नीर की तरह विवेक करने में हंस के जैसा है। समस्त प्राणियों का उपकारक है, अतः यह सदा जयवंता वर्तो ॥ ६ ॥ जिनकी देव गुरु और धर्म में नित्य भक्ति है। तथा सदाचार में जिनकी रुचि है ऐसे धर्मरत उदार श्रावक और सुश्राविकाएँ यहाँ घर २ में है ॥ ७ ॥

अंतिम मंगलाचरण

अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर मंगलरूप हैं, गौतमप्रभु मंगल रूप हैं, सुधर्मास्वामी मंगलरूप है अन्तिम केवली जम्बूस्वामी मंगलरूप हैं और यह जैनधर्म मंगलरूप है ॥ ८ ॥

॥ श्रीरस्तु-शुभं भूयात् ॥

સંઘમહિમા

ધોરાજી શહેરનો તે મહાન શ્રીસંઘ અત્યંત ઉદાર છે, ઘણો જ ધાર્મિક છે, શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમાં દૃઢ રીતે માનનાર છે, સમ્યકત્વ ભાવથી યુક્ત છે, તત્ત્વ અતત્ત્વનો દૂધ અને પાણીની જેમ વિવેક કરવામાં હંસ સમાન છે સઘળા પ્રાણીઓનો ઉપકાર કરનાર છે, તેથી તેનો સદા જય જયકાર હો ॥૬॥

જેમનો દેવ, ગુરૂ અને ધર્મ પ્રત્યે નિત્ય ભકિતભાવ છે, તથા સદાચાર પ્રત્યે જેમની અભિરૂચિ છે એવા ધર્મરત ઉદાર શ્રાવક અને સુશ્રાવિકાઓ અહીં દરેક ઘરમાં છે ॥ ૭ ॥

અંતિમ મંગલાચરણ

અન્તિમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર મંગળરૂપ છે, ગૌતમપ્રભુ મંગલરૂપ છે સુધર્માસ્વામી મંગળરૂપ છે અન્તિમ કેવળી જંબૂસ્વામી મંગળરૂપ છે, અને આ જૈન ધર્મ મંગળરૂપ છે ॥ ૮ ॥

॥ श्रीरस्तु-शुभं भूयात् ॥